# हिंदी शब्दसागर

## दसवाँ भाग

[ 'स' से 'सौह्य' तक, शब्दसख्या–२१,००० ]

मूल संपादक

श्यामसुंदरदास

मूल सहायक संपादक

बालकृष्ण भट्ट रामचंद्र शुक्ल
अमीरसिंह जगन्मोहन वर्मा
भगवानदीन रामचद्र वर्मा




संपादकमंडल

कमलापति त्रिपाठी

धीरेंद्र वर्मा
हरवंशलाल शर्मा
नगेंद्र
शिवनंदनलाल दर
रामधन शर्मा
सुधाकर पांडेय

करुणापति त्रिपाठी ( सयोजक सपादक )

सहायक संपादक

विश्वनाथ त्रिपाठी

हिंदी शब्दसागर के संशोधन संपादन का संपूर्ण तथा प्रथम एवं द्वितीय भाग के प्रकाशन का आठ
प्रतिशत व्ययभार भारत सरकार के शिक्षामंत्रालय ने वहन किया ।

परिवर्धित, संशोधित, नवीन संस्करण

शकाब्द १८९५ सं० २०३० वि० १९७३ ई०



पूर्ण एकादश भागों का २७५ ००

शंभुनाथ वाजपेयी
द्वारा
नागरी मुद्रण, वाराणसी
में मुद्रित

# प्रकाशिका

'हिंदी शब्दसागर' अपने प्रकाशनकाल से ही कोश के क्षेत्र मे भारतीय भाषाओ के दिशानिर्देशक के रूप में प्रतिष्ठित है। तीन दशक तक हिंदी की मूर्धन्य प्रतिभाओ ने अपनी सतत तपस्या से इसे सन् १९२८ ई० मे मूर्त रूप दिया था। तब से निरंतर यह ग्रथ इस क्षेत्र मे गभीर कार्य करनेवाले विद्वत्समाज में प्रकाशस्तभ के रूप में मर्यादित हो हिंदी की गौरवगरिमा का आख्यान करता रहा है। अपने प्रकाशन के कुछ समय बाद ही इसके खड एक एक कर अनुपलब्ध होते गए और अप्राप्य ग्रथ के रूप में इसका मूल्य लोगो को सहस्र मुद्राओ से भी अधिक देना पडा। ऐसी परिस्थिति में अभाव की स्थिति का लाभ उठाने की दृष्टि से अनेक कोशो का प्रकाशन हिंदी-जगत् में हुआ, पर वे सारे प्रयत्न इसकी छाया के ही बल जीवित थे। इसलिये निरतर इसकी पुन अवतारणा का गभीर अनुभव हिंदी-जगत् और इसकी जननी नागरीप्रचारिणी सभा करती रही, किंतु साधन के अभाव मे अपने इस कर्तव्य के प्रति सजग रहती हुई भी वह अपने इस उत्तरदायित्व का निर्वाह न कर सकने के कारण मर्मातक पीडा का अनुभव कर रही थी। दिनोत्तर उसपर उत्तर-दायित्व का ऋण चक्रवृद्धि सूद की दर से इसलिये और भी बढता गया कि इस कोश के निर्माण के बाद हिंदी की श्री का विकास बडे व्यापक पैमाने पर हुआ। साथ ही, हिंदी के राष्ट्रभाषा पद पर प्रतिष्ठित होने पर उसकी शब्दसपदा का कोश भी दिनोत्तर गतिपूर्वक बढ़ते जाने के कारण सभा का यह दायित्व निरतर गहन होता गया।

सभा की हीरक जयती के अवसर पर, २२ फाल्गुन, २०१० वि० को, उसके स्वागताध्यक्ष के रूप मे डा० सपूर्णानद जी ने राष्ट्रपति राजेंद्रप्रसाद जी एव हिंदीजगत् का ध्यान निम्नाकित शब्दो मे इस ओर आकृष्ट किया—'हिंदी के राष्ट्रभाषा घोषित हो जाने से सभा का दायित्व बहुत बढ गया है।' हिंदी मे एक अच्छे कोश और व्याकरण की कमी खटकती है। सभा ने आज से कई वर्ष पहले जो हिंदी शब्दसागर प्रकाशित किया था उसका वृहत् सस्करण निकालने की आवश्यकता है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि इस काम के लिये पर्याप्त धन व्यय किया जाय और केंद्रीय तथा प्रादेशिक सरकारो का सहारा मिलता रहे।'

उसी अवसर पर सभा के विभिन्न कार्यों की प्रशसा करते हुए राष्ट्रपति ने कहा—'वैज्ञानिक तथा पारिभाषिक शब्दकोश सभा का महत्वपूर्ण प्रकाशन है। दूसरा प्रकाशन हिंदी शब्दसागर है जिसके निर्माण मे सभा ने लगभग एक लाख रुपया व्यय किया है। आपने शब्दसागर का नया सस्करण निकालने का निश्चय किया है। जब से पहला सस्करण छपा, हिंदी में बहुत बातो में और हिंदी के अलावा ससार मे बहुत बातो मे बडी प्रगति हुई है। हिंदी भाषा भी इस प्रगति से अपने को वचित नही रख सकती। इसलिये शब्दसागर का रूप भी ऐसा होना चाहिए जो यह प्रगति प्रतिबिंबित कर सके और वैज्ञानिक युग के विद्यार्थियो के लिये भी साधारणत पर्याप्त हो। मैं आपके निश्चयो का स्वागत करता हूँ। भारत सरकार की ओर से शब्दसागर का नया सस्करण तैयार करने के सहायतार्थ एक लाख रुपए, जो पाँच वर्षों मे बीस बीस हजार करके दिए जाएँगे, देने का निश्चय हुआ है। मैं आशा करता हूँ कि इस निश्चय से आपका काम कुछ सुगम हो जाएगा और आप इस काम मे अग्रसर होगे।'

राष्ट्रपति डा० राजेंद्रप्रसाद जी की इस घोषणा ने शब्दसागर के पुन सपादन के लिये नवीन उत्साह तथा प्रेरणा दी। सभा द्वारा प्रेषित योजना पर केंद्रीय सरकार के शिक्षामत्रालय ने अपने पत्र स० एफ।४—३।५४ एच० दिनाक ११।५।५४ द्वारा एक लाख रुपया पाँच वर्षों मे, प्रति वर्ष बीस हजार रुपए करके, देने की स्वीकृति दी।

इस कार्य की गरिमा को देखते हुए एक परामर्शमडल का गठन किया गया, इस सबध मे देश के विभिन्न क्षेत्रो के अधिकारी विद्वानो की भी राय ली गई, किंतु परामर्शमडल के अनेक सदस्यो का योगदान सभा को प्राप्त न हो सका और जिस विस्तृत पैमाने पर सभा विद्वानो की राय के अनुसार इस कार्य का सयोजन करना चाहती थी, वह भी नही उपलब्ध हुआ। फिर भी, देश के अनेक निष्णात अनुभवसिद्ध विद्वानो तथा परामर्शमडल के सदस्यो ने गभीरतापूर्वक सभा के अनुरोध पर अपने बहुमूल्य सुझाव प्रस्तुत किए। सभा ने उन सबको मनोयोगपूर्वक मथकर शब्दसागर के सपादन हेतु सिद्धात स्थिर किए जिनसे भारत सरकार का शिक्षामत्रालय भी सहमत हुआ।

उपर्युक्त एक लाख रुपए का अनुदान बीस बीस हजार रुपए प्रति वर्ष की दर से निरतर पाँच वर्षों तक केंद्रीय शिक्षा मत्रालय देता रहा और कोश के सशोधन, सवर्धन और पुन सपादन का कार्य लगातार होता रहा, परतु इस अवधि मे सारा कार्य निपटाया नहीं जा सका। मत्रालय के प्रतिनिधि श्री डा० रामधन जी शर्मा ने बड़े मनोयोगपूर्वक यहाँ हुए कार्यों का निरीक्षण परीक्षण करके इसे पूरा करने के लिये आगे और ६५००० ) अनुदान प्रदान करने की सस्तुति की जिसे सरकार ने कृपापूर्वक स्वीकार करके पुन. उक्त ६५०००) का अनुदान दिया। इस प्रकार सपूर्ण कोश का सशोधन सपादन दिसबर, १९६५ मे पूरा हो गया।

इस ग्रथ के सपादन का सपूर्ण व्यय ही नही, इसके प्रकाशन के व्ययभार का ६० प्रतिशत बोझ भी दो खडो तक भारत सरकार ने वहन किया है, इसीलिये यह ग्रथ इतना सस्ता निकालना सभव हो सका है। उसके लिये शिक्षामत्रालय के अधिकारियो का प्रशसनीय सहयोग हमे प्राप्त है और तदर्थ हम उनके अतिशय आभारी हैं।

जिस रूप मे यह ग्रथ हिंदीजगत् के समुख उपस्थित किया जा रहा है, उसमे अद्यतन विकसित कोशशिल्प का यथासामर्थ्य उपयोग और

# संकेतिका

[ उद्धरणों में प्रयुक्त संदर्भग्रंथों के इस विवरण में क्रमशः ग्रंथ का संकेताक्षर, ग्रंथनाम, लेखक या संपादक का नाम और प्रकाशन के विवरण दिए गए हैं ]

| | |
|---|---|
| अँधेरे० | अँधेरे की भूख, डा० रांगेय राघव, किताब महल, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण |
| अंबिकादत्त (शब्द०) | अंबिकादत्त व्यास |
| अकबरी० | अकबरी दरबार के हिंदी कवि, डा० सरजूप्रसाद अग्रवाल, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, सं० २००७ |
| अखबार | 'आज' दैनिक, वाराणसी |
| अखिलेश (शब्द०) | अखिलेश कवि |
| अग्नि० | अग्निशस्य, नरेंद्र शर्मा, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं० |
| अजात० | अजातशत्रु, जयशंकर प्रसाद, १६वाँ सं० |
| अणिमा | अणिमा, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', युग मंदिर, उन्नाव |
| अतिमा | अतिमा, सुमित्रानंदन पंत, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं० |
| अधखिला (शब्द०) | अधखिला फूल (उपन्यास), अयोध्यासिंह उपाध्याय |
| अनामिका | अनामिका, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', प्र० सं० |
| अनुराग० | अनुरागसागर, संपा० स्वामी युगलानंद बिहारी, वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई, प्र० सं० |
| अनुराग बाग (शब्द०) | अनुराग बाग |
| अनेक (शब्द०) | अनेकार्थ नाममाला |
| अनेकार्थ० | अनेकार्थमंजरी और नाममाला, संपा० बलभद्रप्रसाद मिश्र, युनिवर्सिटी आव इलाहाबाद स्टडीज, प्र० सं० |
| अपरा | अपरा, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग |
| अपलक | अपलक, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', राजकमल प्रकाशन, प्र० सं०, १९५३ ई० |
| अभिशप्त | अभिशप्त, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४४ ई० |
| अमिट० | अमिट स्मृति, महावीरप्रसाद द्विवेदी, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, १९३० ई० |
| अमृतसागर (शब्द०) | अमृतसागर |
| अयोध्या (शब्द०) | अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' |
| अरस्तू० | अरस्तू का काव्यशास्त्र, डा० नगेंद्र, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० सं०, २०१४ वि० |
| अर्चना | अर्चना, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', कला-मंदिर, इलाहाबाद |
| अर्थ० | अर्थशास्त्र, कौटिल्य (५ खंड), संपा० आर० शाम शास्त्री, गवर्नमेंट ब्रांच प्रेस, मैसूर, प्र० सं०, १९१९ ई० |
| अर्ध० | अर्धकथानक, संपा० नाथूराम प्रेमी, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बंबई, प्र० सं० |
| अष्टांग (शब्द०) | अष्टांगयोग संहिता |
| अष्टांग० | अष्टांगयोग संहिता |
| आँधी | आँधी, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, इलाहाबाद, पंचम सं० |
| आ० अं० रा० | आज की अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, रामनारायण यादवेंदु, आर्यावर्त प्रकाशन मंदिर, पटना, १९५१ ई० |
| आकाश० | आकाशदीप, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, इलाहाबाद, पंचम सं० |
| आचार्य० | आचार्य रामचंद्र शुक्ल, चंद्रशेखर शुक्ल, वाणी वितान, वाराणसी, प्र० सं० |
| आग्नेय अनु-क्रमणिका (शब्द०) | आग्नेय अनुक्रमणिका |
| आदि० | आदिभारत, अर्जुन चौबे काश्यप, वाणी विहार, बनारस, प्र० सं०, १९५३ ई० |
| आधुनिक० | आधुनिक कविता की भाषा |
| आनंदघन (शब्द०) | कवि आनंदघन |
| आ० रा० शुक्ल | आलोचक रामचंद्र शुक्ल |
| आराधना | आराधना, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', साहित्यकार संसद, इलाहाबाद, प्र० सं० |
| आर्द्रा | आर्द्रा, सियारामशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० सं०, १९८४ वि० |
| आर्य भा०, आ० भा० | आर्यकालीन भारत |
| आर्यों० | आर्यों का आदिदेश, संपूर्णानंद, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, १९९७ वि०, प्र० सं० |
| इंद्र० | इंद्रजाल, जयशंकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० सं० |
| इंद्रा० | इंद्रावती, संपा० श्यामसुंदरदास, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं० |

प्रयोग किया गया है, किंतु हिंदी की और हमारी सीमा है। यद्यपि हम अर्थ और व्युत्पत्ति का ऐतिहासिक क्रमविकास भी प्रस्तुत करना चाहते थे, तथापि साधन की कमी तथा हिंदी ग्रथो के कालक्रम के प्रामाणिक निर्धारण के अभाव मे वैसा कर सकना सभव नही हुआ। फिर भी यह कहने मे हमे सकोच नही कि अद्यतन प्रकाशित कोशो मे शब्दसागर की गरिमा आधुनिक भारतीय भाषाओ के कोशो मे अतुलनीय है, और इस क्षेत्र मे काम करनेवाले प्राय सभी क्षेत्रीय भाषाओ के विद्वान् इससे आधार ग्रहण करते रहेगे। इस अवसर पर हम हिंदीजगत् को यह भी नम्रतापूर्वक सूचित करना चाहते हैं कि सभा ने शब्दसागर के लिये एक स्थायी विभाग का सकल्प किया है जो बराबर इसके प्रवधन और सशोधन के लिये कोशशिल्प सबधी अद्यतन विधि से यत्नशील रहेगा।

शब्दसागर के इस सशोधित प्रवर्धित रूप मे शब्दो की सख्या मूल शब्दसागर की अपेक्षा दुगुनी से भी अधिक हो गई है। नए शब्द हिंदी साहित्य के आदिकाल, सत एव सूफी साहित्य (पूर्व मध्यकाल), आधुनिक काल, काव्य, नाटक, आलोचना, उपन्यास आदि के ग्रथ, इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, वाणिज्य आदि और अभिनदन एव पुरस्कृत ग्रथ, विज्ञान के सामान्य प्रचलित शब्द और राजस्थानी तथा डिंगल, दक्खिनी हिंदी और प्रचलित उर्दू शैली आदि से सकलित किए गए है। परिशिष्ट खड मे प्राविधिक एव वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दो की व्यवस्था की गई है।

हिंदी शब्दसागर का यह सशोधित परिवर्धित सस्करण कुल दस खडो मे पूर्ण होगा। इसका पहला खड पौष, सवत् २०२२ वि० मे छपकर तैयार हो गया था। इसके उद्घाटन का समारोह भारत गणतत्र के प्रधान मत्री स्वर्गीय माननीय श्री लालबहादुर जी शास्त्री द्वारा प्रयाग मे ३ पौष, स० २०२२ वि० (१८ दिसबर, १९६५) को भव्य रूप से सजे हुए पडाल मे काशी, प्रयाग एव अन्यान्य स्थानो के वरिष्ठ और सुप्रसिद्ध साहित्यसेवियो, पत्रकारो तथा गण्यमान्य नागरिको की उपस्थिति मे सपन्न हुआ। समारोह मे उपस्थित महानुभावो मे विशेष उल्लेख्य माननीय श्री प० कमलापति जी त्रिपाठी, हिंदी विश्वकोश के प्रधान सपादक श्री डा० रामप्रसाद जी त्रिपाठी, पद्मभूषण कविवर श्री प० सुमित्रानदन जी पत, श्रीमती महादेवी जी वर्मा आदि हैं। इस सशोधित सर्वधित सस्करण की सफल पूर्ति के उपलक्ष्य मे इसके समस्त सपादको को एक एक फाउटेन पेन, ताम्रपत्र और ग्रथ की एक एक प्रति माननीय श्री शास्त्री जी के करकमलो द्वारा भेट की गई। उन्होने अपने सक्षिप्त सारगर्भित भाषण मे इस सभा की विभिन्न प्रवृत्तियो की चर्चा की और कहा 'सार्वजनिक क्षेत्र मे कार्य करनेवाली यह सभा अपने ढग की अकेली सस्था है। हिंदी भाषा और साहित्य की जैसी सेवा नागरीप्रचारिणी सभा ने की है वैसी सेवा अन्य किसी सस्था ने नही की। भिन्न भिन्न विषयो पर जो पुस्तके इस सस्था ने प्रकाशित की है वे अपने ढग के अनूठे ग्रथ है और उनसे हमारी भाषा और साहित्य का मान अत्यधिक बढा है। सभा ने समय की गति को देखकर तात्कालिक उपादेयता के वे सब कार्य हाथ मे लिए हैं जिनकी इस समय नितात आवश्यकता है। इस प्रकार यह निस्सकोच कहा जा सकता है कि भाषा और साहित्य के क्षेत्र मे यह सभा अप्रतिम है'।

प्रस्तुत दसवें खड मे 'श' से लेकर 'सौह्य' तक के शब्दो का सचयन है। नए नए शब्द, उदाहरण, यौगिक शब्द, मुहावरे, पर्यायवाची शब्द और महत्वपूर्ण ज्ञातव्य सामग्री 'विशेष' से सवलित इस भाग की शब्दसख्या लगभग २१,००० है। अपने मूल रूप मे यह अश कुल ३५० पृष्ठो मे था जो अपने विस्तार के साथ इस परिवर्धित सशोधित सस्करण मे लगभग ४९६ पृष्ठो मे आ पाया है।

सपादकमडल के प्रत्येक सदस्य ने यथासामर्थ्य निष्ठापूर्वक इसके निर्माण मे योग दिया है। स्व० श्री कृष्णदेवप्रसाद गौड नियमित रूप से नित्य सभा मे पधारकर इसकी प्रगति को विशेष गभीरतापूर्वक गति देते थे और प० करुणापति त्रिपाठी ने इसके सपादन और सयोजन मे प्रगाढ निष्ठा के साथ अस्वस्थ होते हुए भी घर पर, यहाँ तक कि यात्रा पर रहने पर भी, पूरा कार्य किया है। यदि ऐसा न होता तो यह कार्य सपन्न होना सभव न था। हम अपनी सीमा जानते हैं। सभव है, हम सबके प्रयत्न मे त्रुटियाँ हो, पर सदा हमारा परिनिष्ठित यत्न यह रहेगा कि हम इसको और अधिक पूर्ण करते रहे क्योकि ऐसे ग्रथ का कार्य अस्थायी नही, सनातन है।

अत मे शब्दसागर के मूल सपादक तथा सभा के संस्थापक स्व० डा० श्यामसुदरदास जी को अपना प्रणाम निवेदित करते हुए, यह सकल्प हम पुन दुहराते है कि जबतक हिंदी रहेगी तबतक सभा रहेगी और उसका यह शब्दसागर अपने गौरव से कभी न गिरेगा। इस क्षेत्र मे यह नित नूतन प्रेरणादायक रहकर हिंदी का मानवर्धन करता रहेगा और उसका प्रत्येक नया सस्करण और भी अधिक प्रभोज्वल होता रहेगा।

ना० प्र० सभा, काशी
दीपमालिका, २०३० वि०

**सुधाकर पाण्डेय**
**प्रधान मंत्री**

# संकेतिका

[ उद्धरणों मे प्रयुक्त संदर्भग्रंथो के इस विवरण मे क्रमश: ग्रंथ का संकेताक्षर, ग्रंथनाम, लेखक या संपादक का नाम और प्रकाशन के विवरण दिए गए है ]

| | |
|---|---|
| अँधेरे० | अँधेरे की भूख, डा० रांगेय राघव, किताब महल, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण |
| अंबिकादत्त (शब्द०) | अंबिकादत्त व्यास |
| अकबरी० | अकबरी दरबार के हिंदी कवि, डा० सरजूप्रसाद अग्रवाल, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, सं० २००७ |
| अखबार | 'आज' दैनिक, वाराणसी |
| अखिलेश (शब्द०) | अखिलेश कवि |
| अग्नि० | अग्निशस्य, नरेंद्र शर्मा, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं० |
| अजात० | अजातशत्रु, जयशंकर प्रसाद, १६वाँ सं० |
| अणिमा | अणिमा, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', युग मंदिर, उन्नाव |
| अतिमा | अतिमा, सुमित्रानंदन पंत, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं० |
| अधखिला (शब्द०) | अधखिला फूल (उपन्यास), अयोध्यासिंह उपाध्याय |
| अनामिका | अनामिका, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', प्र० सं० |
| अनुराग० | अनुरागसागर, संपा० स्वामी युगलानंद बिहारी, वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई, प्र० सं० |
| अनुराग बाग (शब्द०) | अनुराग बाग |
| अनेक (शब्द०) | अनेकार्थ नाममाला |
| अनेकार्थ० | अनेकार्थमंजरी और नाममाला, संपा० बलभद्रप्रसाद मिश्र, युनिवर्सिटी आव इलाहाबाद स्टडीज, प्र० सं० |
| अपरा | अपरा, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग |
| अपलक | अपलक, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', राजकमल प्रकाशन, प्र० सं०, १९५३ ई० |
| अभिशप्त | अभिशप्त, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४४ ई० |
| अमिट० | अमिट स्मृति, महावीरप्रसाद द्विवेदी, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, १९३० ई० |
| अमृतसागर (शब्द०) | अमृतसागर |
| अयोध्या (शब्द०) | अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' |
| अरस्तू० | अरस्तू का काव्यशास्त्र, डा० नगेंद्र, लीडर प्रेस इलाहाबाद, प्र० सं०, २०१४ वि० |
| अर्चना | अर्चना, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', कला-मंदिर, इलाहाबाद |
| अर्थ० | अर्थशास्त्र, कौटिल्य (५ खंड), संपा० आर० शाम शास्त्री, गवर्नमेंट ब्रांच प्रेस, मैसूर, प्र० सं०, १९१९ ई० |
| अर्ध० | अर्धकथानक, संपा० नाथूराम प्रेमी, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बंबई, प्र० सं० |
| अष्टांग (शब्द०) | अष्टांगयोग संहिता |
| अष्टांग० | अष्टांगयोग संहिता |
| आँधी | आँधी, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, इलाहाबाद, पंचम सं० |
| आ० अं० रा० | आज की अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, रामनारायण यादवेंदु, आर्यावर्त प्रकाशन मंदिर, पटना, १९५१ ई० |
| आकाश० | आकाशदीप, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, इलाहाबाद, पंचम सं० |
| आचार्य० | आचार्य रामचंद्र शुक्ल, चंद्रशेखर शुक्ल, वाणी वितान, वाराणसी, प्र० सं० |
| आत्रेय अनुक्रमणिका (शब्द०) | आत्रेय अनुक्रमणिका |
| आदि० | आदिभारत, अर्जुन चौबे काश्यप, वाणी विहार, बनारस, प्र० सं०, १९५३ ई० |
| आधुनिक० | आधुनिक कविता की भाषा |
| आनंदघन (शब्द०) | कवि आनंदघन |
| आ० रा० शुक्ल | आलोचक रामचंद्र शुक्ल |
| आराधना | आराधना, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', साहित्यकार संसद, इलाहाबाद, प्र० सं० |
| आर्द्रा | आर्द्रा, सियारामशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० सं०, १९८४ वि० |
| आर्य भा०, आ० भा० | आर्यकालीन भारत |
| आर्यों० | आर्यों का आदिदेश, संपूर्णानंद, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, १९९७ वि०, प्र० सं० |
| इंद्र० | इंद्रजाल, जयशंकर प्रसाद लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० सं० |
| इंद्रा० | इंद्रावती, संपा० श्यामसुंदरदास, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं० |

| | |
|---|---|
| ईशा० | ईशा, उनका काव्य तथा रानी केतकी की कहानी, सपा०, ब्रजरत्नदास, कमलमणि ग्रंथ-माला, बुलानाला, काशी, प्र० सं० |
| इशाअल्ला (शब्द०) | इशा अल्ला खाँ (रानी केतकी की कहानी) |
| इति० | इतिहास और आलोचना, नामवर सिंह, प्र० सं० |
| इतिहास | हिंदी साहित्य का इतिहास, प० रामचंद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, वाराणसी, नवाँ स० |
| इत्यलम् | इत्यलम्, 'अज्ञेय,' प्रतीक प्रकाशन केंद्र, दिल्ली |
| इनशा (शब्द०) | इनशा अल्ला खाँ |
| इरा० | इरावती, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, इलाहाबाद, चतुर्थ सं० |
| उत्तर० | उत्तररामचरित नाटक, अनु०प० सत्यनारायण कविरत्न, रत्नाश्रम, आगरा, पचम स० |
| एकांत० | एकांतवासी योगी, अनु० श्रीधर पाठक, इंडियन प्रेस, प्रयाग, प्र० सं०, १९८६ वि० |
| कंकाल | कंकाल, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, सप्तम स० |
| कठहार | कठहार ऋषभचरण जैन, हिंदी साहित्य मंडल बाजार सीताराम, दिल्ली, द्वि स० |
| कठ० उप० (शब्द०) | कठवल्ली उपनिषद् |
| कढ़ी० | कढ़ी में कोयला, पाडेय बेचन शर्मा 'उग्र', गऊघाट, मिर्जापुर, प्र० स० |
| कबीर ग्रं० | कबीर ग्रंथावली, सपा० श्यामसुंदरदास, ना० प्र० सभा, काशी |
| कबीर० बानी | कबीर साहब की बानी |
| कबीर बीजक | कबीर बीजक, कबीर ग्रंथ प्रकाशन समिति, बाराबकी, २००७ वि० |
| कबीर बी० (शिशु०) | कबीर बीजक, सपा० हसदास, कबीर ग्रंथ प्रकाशन समिति, बाराबकी, २००७ वि० |
| कबीर मं० | कबीर मसूर ( २ भाग ), वेंकटेश्वर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, बबई, सन् १९०३ ई० |
| कबीर० रे० | कबीर साहब की ज्ञानगुदडी व रेख्ते, बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, इलाहाबाद |
| कबीर० श० | कबीर साहब की शब्दावली (४ भाग), बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, इलाहाबाद, सन् १९०८ |
| कबीर (शब्द०) | कबीरदास |
| कबीर सा० | कबीर सागर (४ भा०), सपा० स्वा० श्री युगलानद विहारी, वेंकटेश्वर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, बंबई |
| कबीर सा० सं० | कबीर साखी सग्रह, बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, इलाहाबाद, १९११ ई० |
| कमलापति (शब्द०) | कवि कमलापति |
| करुणा० | करुणालय, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, तृ० स० |
| कर्ण० | सेनापति कर्ण, लक्ष्मीनारायण मिश्र, किताब महल, इलाहाबाद, प्र० स० |
| कर्पूर मजरी (शब्द०) | कर्पूरमंजरी नाटक, भारतेंदु लिखित |
| कविंद (शब्द०) | 'कविंद' उपनाम के कवि |
| कविता कौ० | कविता कौमुदी (१–४ भा०), संपा० रामनरेश त्रिपाठी, हिंदी मदिर, प्रयाग, तृ० स० |
| कवित्त० | कवित्तरत्नाकर, सपा० उमाशकर शुक्ल, हिंदी परिषद्, विश्वविद्यालय, प्रयाग |
| कादंबरी (शब्द०) | कादबरी ग्रंथ अनुवाद |
| कानन० | काननकुसुम, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, पचम स० |
| कामायनी | कामायनी, जयशकर प्रसाद, नवम स० |
| काया० | कायाकल्प, प्रेमचद, सरस्वती प्रेस, बनारस, ९वाँ स० |
| काले० | काले कारनामे, 'निराला,' कल्याण साहित्य मदिर, प्रयाग, २००७ वि० |
| काव्य कलाधर (शब्द०) | काव्य कलाधर |
| काव्यकलाप (शब्द०) | काव्यकलाप |
| काव्य० | काव्यशास्त्र |
| काव्य० निबंध | काव्य और कला तथा अन्य निबध, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, चतुर्थ स० |
| काव्य० प्र० | काव्य प्रभाकर 'भानु' विरचित |
| काव्य० य० प्र० | काव्य यथार्थ और प्रगति, डा० रागेय राघव, विनोद पुस्तक मदिर, आगरा, प्र० स०, २०१२ वि० |
| काशीराम (शब्द०) | काशीराम कवि |
| काश्मीर० | काश्मीर सुषमा, श्रीधर पाठक, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स० |
| काष्ठजिह्वा (शब्द०) | काष्ठजिह्वा स्वामी |
| कासीराम (शब्द०) | कासीराम कवि |
| किन्नर० | किन्नर देश में, राहुल साकृत्यायन, इंडिया पब्लिशर्स, प्रयाग, प्र० स० |
| किशोर (शब्द०) | किशोर कवि |
| कीर्ति० | कीर्तिलता, स० बाबूराम सक्सेना, ना० प्र० सभा, वाराणसी, तृ० स० |
| कुकुर० | कुकुरमुत्ता, 'निराला', युगमदिर, उन्नाव |
| कुणाल | कुणाल, सोहनलाल द्विवेदी |
| कृषि० | कृषिशास्त्र |
| केशव (शब्द०) | केशवदास |
| केशव ग्रं० | केशव ग्रंथावली, संपा० पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० स० |
| केशव० अमी० | केशवदास की अमीघूंट |
| केशवराम (शब्द०) | केशवराम कवि |
| कोई कवि (शब्द०) | अज्ञातनाम कोई कवि |
| कुलार्णव तत्र (शब्द०) | कुलार्णव तत्र |
| कौटिल्य अ० | कौटिल्य का अर्थशास्त्र |
| क्वासि | क्वासि, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', राजकमल प्रकाशन, बंबई, १९५३ ई० |
| खानखाना (शब्द०) | अब्दुर्रहीम खानखाना |
| खालिक० | खालिकबारी, सपा० श्रीराम शर्मा, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०, २०२१ वि० |
| खिलौना | खिलौना ( मासिक ) |

| | |
|---|---|
| खुदाराम | खुदाराम और चंद हसीनो के खतूत, पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', गऊघाट, मिर्जापुर, आठवाँ सं० |
| खुसरो (शब्द०) | अमीर खुसरो |
| खेती की पहली पुस्तक (शब्द०) | खेती की पहली पुस्तक |
| खेती विद्या (शब्द०) | खेती विद्या |
| गंग क० | गंग कवित्त (ग्रंथावली), संपा० बटेकृष्ण, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं० |
| गदाधर० | श्रीगदाधर भट्ट जी की बानी |
| गदाधर सिंह (शब्द०) | गदाधर सिंह |
| गबन | गबन, प्रेमचद, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, २६वाँ स० |
| गर्ग संहिता (शब्द०) | गर्ग संहिता |
| गालिब० | गालिब की कविता, सं० कृष्णदेवप्रसाद गौड, वाराणसी, प्र० सं० |
| गि० दा०, गि० दास, गिरिधरदास (शब्द०) | गिरिधरदास (बा० गोपालचद्र) |
| गिरिधर (शब्द०) | गिरिधर राय (कुडलियावाले) |
| गीतिका | गीतिका सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला', भारती भडार, इलाहाबाद, प्र० स० |
| गुजन | गुजन, सुमित्रानदन पत, भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० सं० |
| गुबर (शब्द०) | गुबर कवि |
| गुमान (शब्द०) | गुमान मिश्र |
| गुरुदास (शब्द०) | गुरुदास कवि |
| गुलाब (शब्द०) | कवि गुलाब |
| गुलाल० | गुलाल बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९१० ई० |
| गोकुल (शब्द०) | कवि गोकुल |
| गोदान | गोदान, प्रेमचंद, सरस्वती प्रेस, बनारस, प्र० सं० |
| गोपाल उपासनी (शब्द०) | गोपाल उपासनी |
| गोपाल० (शब्द०) | गिरिधर दास (गोपालचंद्र) |
| गोपालभट्ट (शब्द०) | गोपालभट्ट, वाल्मीकि रामायण के अनुवादक |
| गोरख० | गोरखबानी, सं० डा० पीतांबरदत्त बडथ्वाल, हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग, द्वि० स० |
| गोल० (शब्द०) | गोलविनोद (ग्रथ) |
| ग्राम० | ग्राम साहित्य, संपा० रामनरेश त्रिपाठी, हिंदी मदिर, प्रयाग, प्र० स० |
| ग्राम्या | ग्राम्या, सुमित्रानदन पत, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० सं० |
| घट० | घट रामायण (२ भाग), सतगुरु तुलसी साहिब, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, द्वि० सं० |
| घनानंद | घनानंद, संपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, प्रसाद परिषद्, वाणीवितान, ब्रह्मनाल, वाराणसी |
| घाघ० | घाघ और भड्डरी, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद |
| घासीराम (शब्द०) | घासीराम कवि |
| चद० | चद हसीनो के खतूत 'उग्र', हिंदी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता, प्र० स० |
| चंद्र० | चद्रगुप्त, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग नवाँ स० |
| चक्र० | चक्रवाल, रामधारी सिह 'दिनकर', उदयाचल, पटना प्र० स० |
| चरण (शब्द०) | चरणदास |
| चरणचद्रिका (शब्द०) | चरणचद्रिका |
| चरण० बानी | चरणदास की बानी बेलवेडियर प्रेस इलाहाबाद, प्र० स० |
| चाँदनी० | चाँदनी रात और अजगर उपेंद्रनाथ अश्क नीलाभ प्रकाशन गृह, प्रयाग, प्र० स० |
| चाणक्य नीति (शब्द०) | चाणक्य नीति |
| चाणक्य (शब्द०) | चाणक्य नीति दर्पण |
| चिता | चित ; ज्ञेय सरस्वती प्रेस, प्र० स० सन १९४० ई० |
| चिंतामणि | चिंतामणि (२ भाग), रामचद्र शुक्ल, इडियन प्रेस, लि०, प्रयाग |
| चिंतामणि (शब्द०) | कवि चिंतामणि त्रिपाठी |
| चित्रा० | चित्रावली, स० जगन्मोहन वर्मा, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं० |
| चुभते० | चुभते चौपदे, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध,' खड्गविलास प्रेस, पटना, प्र० स० |
| चोखे० | चोखे चौपदे, ,, , ,, |
| चोटी० | चोटी की पकड, 'निराला,' किताब महल इलाहाबाद, प्र० सं० |
| छंद० | छद प्रभाकर, भानु कवि, भारतजीवन प्रेस, काशी, प्र० सं० |
| छत्र० | छत्रप्रकाश, स० विलियम प्राइस, एजुकेशन प्रेस, कलकत्ता, १८२९ ई० |
| छिताई० | छिताई वार्ता, सपा० माताप्रसाद गुप्त, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स० |
| छीत० | छीत स्वामी, संपा० व्रजभूषण शर्मा, विद्या विभाग, अष्टछाप स्मारक समिति, काकरोली, प्र० स०, सवत् २०१२ |
| जंतुप्रबंध (शब्द०) | जतुप्रबंध ग्रंथ |

| | |
|---|---|
| जग० बानी | जगजीवन साहब की बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १६०६, प्र० स० |
| जग० श० | जगजीवन साहब की शब्दावली |
| जगन्नाथ (शब्द०) | जगन्नाथप्रसाद 'भानु', काव्य प्रभाकर और छद प्रभाकर के रचयिता |
| जगन्नाथ शर्मा (शब्द०) | जगन्नाथ शर्मा (लेखक) |
| जनमेजय० | जनमेजय का नागयज्ञ, जयशकर 'प्रसाद' भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, पचम स० |
| जनानी० | जनानी ड्योढी, अनु० यशपाल, अशोक प्रकाशन, लखनऊ |
| जमाना (शब्द०) | जमाना अखबार |
| जय० प्र० | जयशकर प्रसाद, नददुलारे वाजपेयी, भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०, १९९५ वि० |
| जयसिंह (शब्द०) | जयसिंह कवि |
| जरासधवध (शब्द०) | जरासधवध नाम का काव्य |
| जायसी ग्र० | जायसी ग्रथावली, सपा० रामचद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, द्वि० स० |
| जायसी ग्र० (गुप्त) | जायसी ग्रथावली, सपा० माताप्रसाद गुप्त, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० स०, १९५१ ई० |
| जायसी (शब्द०) | मलिक मुहम्मद जायसी, पद्मावत के रचयिता |
| जिप्सी | जिप्सी, इलाचद्र जोशी, सेंट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद, प्र० स०, १९५२ ई० |
| जुगलेश (शब्द०) | जुगलेश कवि |
| ज्ञानदान | ज्ञानदान, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ १९४२ ई० |
| ज्ञानरत्न | ज्ञानरत्न, दरिया साहब, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद |
| झरना | झरना, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, सातवाँ स० |
| झाँसी० | झाँसी की रानी, वृदावनलाल वर्मा, मयूर प्रकाशन, झाँसी, द्वि० स० |
| टैगोर० | टैगोर का साहित्यदर्शन, अनु० राधेश्याम पुरोहित, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, प्र० सं० |
| ठडा० | ठडा लोहा, धर्मवीर भारती, साहित्य भवन लि०, प्रयाग, प्र० स०, १९५२ ई० |
| ठाकुर प्र० | ठाकुरप्रसाद |
| ठाकुर० | ठाकुर शतक, सपा० काशीप्रसाद, भारतजीवन प्रेस, काशी, प्र० स०, सवत् १९६१ |
| ठेठ० | ठेठ हिंदी का ठाठ, अयोध्यासिंह उपाध्याय, खड्गविलास प्रेस, पटना, प्र० सं० |
| ढोला० | ढोला मारू रा दूहा, सपा० रामसिंह, ना० प्र० सभा, काशी, द्वि० स० |
| तितली | तितली, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग, सातवाँ स० |
| तिथितत्व (शब्द०) | तिथितत्व निर्णय |
| तुलसी | तुलसीदास, 'निराला', भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, चतुर्थ स० |
| तुलसी ग्रं० | तुलसी ग्रथावली, सपा० रामचद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, काशी, तृतीय स० |
| तुलसी सुधाकर (शब्द०) | तुलसी सुधाकर |
| तुरसी श०, तुलसी श० | तुलसी साहब (हाथरसवाले) की शब्दावली, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९०६, १९११ |
| तेग अली (शब्द०) | तेग अली, बदमाश दर्पण के रचयिता |
| तेग० तेगबहादुर (शब्द०) | गुरु तेगबहादुर |
| तेज० | तेजोबिंदूपनिषद् |
| तोष (शब्द०) | कवि तोष |
| त्याग० | त्यागपत्र, जैनेंद्रकुमार, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, प्र० स० |
| द० सागर | दरिया सागर, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९१० ई० |
| दक्खिनी० | दक्खिनी का गद्य और पद्य, सपा० श्रीराम शर्मा, हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद, प्र० स० |
| दयानंद (शब्द०) | स्वामी दयानंद जी |
| दयानिधि (शब्द०) | दयानिधि कवि |
| दरिया० बानी | दरिया साहब की बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, द्वि० स० |
| दश० | दशरूपक, सपा० डा० भोलाशकर व्यास, चौखभा विद्याभवन, वाराणसी, प्र० सं० |
| दशम० (शब्द०) | भाषा दशम स्कध, भागवत |
| दहकते० | दहकते अगारे, नरोत्तमप्रसाद नागर, अभ्युदय कार्यालय, इलाहाबाद |
| दादू० | (श्री) दादूदयाल की बानी, सपा० महामहोपाध्याय प० सुधाकर द्विवेदी, ना० प्र० सभा, वाराणसी |
| दादूदयाल ग्रं० | दादूदयाल ग्रथावली |
| दादू० (शब्द०) | दादूदयाल |
| दिनेश (शब्द०) | कवि दिनेश |
| दास (शब्द०) | कवि भिखारीदास |
| दिल्ली | दिल्ली, रामधारी सिंह 'दिनकर,' उदयाचल, पटना, प्र० स० |
| दिव्या | दिव्या, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४५ ई० |
| दीन० ग्र० | दीनदयाल गिरि ग्रथावली, संपा० श्यामसुदरदास, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं० |
| दीनदयाल (शब्द०) | कवि दीनदयाल गिरि |

| | |
|---|---|
| दीप० | दीपशिखा, महादेवी वर्मा, किताबिस्तान, इलाहाबाद, प्र० स०, १९४२ ई० |
| दी० ज०, दीप ज० | दीप जलेगा, उपेंद्रनाथ 'अश्क,' नीलाभ प्रकाशन गृह, प्रयाग |
| दुर्गाप्रसाद मिश्र (शब्द०) | दुर्गाप्रसाद मिश्र |
| दुर्गाप्रसाद (शब्द०) | दुर्गाप्रसाद कवि |
| दुर्गेशनदिनी (शब्द०) | दुर्गेशनदिनी, उपन्यास, मूल लेखक बकिमचंद्र चटर्जी (अनुवाद) |
| दूलह (शब्द०) | कवि दूलह |
| देवकीनंदन (शब्द०) | देवकीनदन खत्री |
| देव० ग्र० | देव ग्र थावली, ना० प्र० सभा, काशी, प्र०स० |
| देव (शब्द०) | देव कवि |
| देव (शब्द०) | देव कवि (मैनपुरीवाले) |
| देवदत्त (शब्द०) | देवदत्त कवि |
| देवीप्रसाद (शब्द०) | मुशी देवीप्रसाद |
| देशी० | देशी नाममाला |
| दैनिकी | दैनिकी, सियारामशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० स०, १९९९ वि० |
| दो सौ बावन० | दो सौ बावन वैष्णवो की वार्ता ( दो भाग ), शुद्धाद्वैत एकेडमी, काँकरोली, प्रथम स० |
| द्वद्व० | द्वद्वगीत, रामधारी सिंह 'दिनकर,' पुस्तक भडार, लहेरियासराय, पटना, प्र० स० |
| द्वि० अभि० ग्रं० | द्विवेदी अभिनदन ग्र थ, ना० प्र० सभा, वाराणसी |
| द्विज (शब्द०) | द्विज कवि |
| द्विजदेव (शब्द०) | अयोध्यानरेश महाराजा मानसिंह 'द्विजदेव' |
| द्विवेदी (शब्द०) | आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी |
| धरनी० बानी | धरनी साहब की बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९११ ई० |
| धरम० शब्दा०, धरम० | धरमदास की शब्दावली |
| धीर (शब्द०) | 'धीर' कवि |
| धूप० | धूप और धूआँ, रामधारीसिंह 'दिनकर,' अजता प्रेस, लि०, पटना ४ |
| ध्रुव० | ध्रुवस्वामिनी, प्रसाद, भारती भडार, प्रयाग |
| नद० ग्रं०, नददास ग्रं० | नददास ग्र थावली, सपा० ब्रजरत्नदास, ना०प्र० सभा, काशी, प्र० स० |
| नई० | नई पौध, नागार्जुन, किताब महल, इलाहाबाद, प्र० स०, १९५३ |
| नकछेदी (शब्द०) | नकछेदी तिवारी, कवि भडौआ सग्रह या मदन-मजरी के सपादक |
| नट० | नटनागर विनोद, सपा० कृष्णबिहारी मिश्र, इडियन प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स० |
| नदी० | नदी के द्वीप, 'अज्ञेय,' प्रगति प्रकाशन, दिल्ली, प्र० स०, १९५१ ई० |
| नया० | नया साहित्य नए प्रश्न, नददुलारे वाजपेयी, विद्यामदिर, वाराणसी, २०११ वि० |
| नरेश (शब्द०) | 'नरेश' कवि |
| नागयज्ञ | जनमेजय का नागयज्ञ, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग, सप्तम स० |
| नागरी (शब्द०) | नागरीदास कवि |
| नागरी० उर्दू० | नागरी और उर्दू का स्वाँग अर्थात् नागरी और उर्दू का एक नाटक, पं० गौरीदत्त, देवनागरी प्रचारिणी सभा, विद्यादर्पण यत्रालय, मेरठ, प्र० स० |
| नाथ (शब्द०) | नाथ कवि |
| नाथसिद्ध० | नाथसिद्धो की बानियाँ, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स० |
| नानक (शब्द०) | सत नानक गुरु |
| नाभादास (शब्द०) | नाभादास सत |
| नारायणदास (शब्द०) | नारायणदास |
| निबधमालादर्श (शब्द०) | निबधमालादर्श (म० प्र० द्विवेदी), निबंधसग्रह |
| निश्चलदास (शब्द०) | सत निश्चलदास जी |
| नील० | नीलकुसुम, रामधारीसिंह 'दिनकर', उदयाचल पटना, प्र० स० |
| निहाल (शब्द०) | निहाल कवि |
| नूतनामृतसागर (शब्द०) | नूतनामृतसागर नाम का ग्रथ |
| नूर (शब्द०) | 'नूर' उपनाम के कवि |
| नृपशभु (शब्द०) | शिवाजी के पुत्र महाराज शभाजी |
| नेपाल० | नेपाल का इतिहास, प० बलदेवप्रसाद, वेंकटेश्वर प्रेस, बबई, १९६१ वि० |
| पचवटी | पचवटी, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० स० |
| पजनेस० | पजनेस प्रकाश, सपा० रामकृष्ण वर्मा, भारत जीवन यत्रालय, काशी, प्र० स० |
| पदमावत | पदमावत, स० वासुदेवशरण अग्रवाल, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० स० |
| पदु०, पदुमा० | पदुमावती, सपा० सूर्यकात शास्त्री, पजाब विश्वविद्यालय, लाहौर, १९३४ ई० |
| पद्माकर ग्र० | पद्माकर ग्र थावली, सपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स० |
| पद्माकर (शब्द०) | पद्माकर भट्ट |
| पन्नालाल (शब्द०) | पन्नालाल कवि |
| प० रा०, प० रासो | परमाल रासो, सपा० श्यामसुदरदास, ना०प्र० सभा, काशी, प्र० स० |
| परमानद० | परमानदसागर |
| परमेश (शब्द०) | परमेश कवि |

| | |
|---|---|
| परिमल | परिमल, 'निराला', गगा ग्र थागार, लखनऊ, प्र० स० |
| पर्दे० | पर्दे की रानी, इलाचन्द्र जोशी, भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०, १९९९ वि० |
| पलटू० | पलटू साहब की बानी ( १-३ भाग ), बेलवे डियर प्रेस, इलाहाबाद, १९०७ ई० |
| पल्लव | पल्लव, सुमित्रानदन पत, इडियन प्रेस लि०, प्रयाग, प्र० स० |
| पाणिनि० | पाणिनिकालीन भारतवर्ष, वासुदेवशरण अग्रवाल, मोतीलाल बनारसीदास, प्र० स० |
| पारिजात० | पारिजातहरण, बगाल और विहार रिसर्च सोसायटी, प्र० सं० |
| पार्वती | पार्वती, रामानद तिवारी शास्त्री, भारतीभवन, मगलभवन, नयापुरा कोटा (राजस्थान), प्र० स०, १९५५ ई० |
| पा० सा० सि० | पाश्चात्य साहित्यालोचन के सिद्धात, लीलाधर गुप्त, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० स०, १९५२ ई० |
| पिंजरे० | पिंजरे की उडान, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४६ ई० |
| पीतल० | पीतल की मूर्ति (जार्ज विलियम रेनाल्ड के ब्रान्ज स्टैच्यू का अनुवाद), पांच भाग, वर्मन प्रेस कलकत्ता, प्र० स०, सं० १९७४ वि० |
| पूर्ण (शब्द०) | पूर्ण कवि |
| पू० म० भा० | पूर्वमध्यकालीन भारत, वासुदेव उपाध्याय भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० सं०, २००९ वि० |
| पृ० रा० | पृथ्वीराज रासो ( ५ खड ), सपा० मोहनलाल विष्णुलाल पडया, श्यामसुदर दास, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स० |
| पृ० रा० (उ०) | पृथ्वीराज रासो (४ खड), स० कविराज मोहनसिंह, साहित्य सस्थान, राजस्थान विश्वविद्यापीठ, उदयपुर, प्र० स० |
| पोद्दार अभि० ग्र ० | पोद्दार अभिनदन ग्र ०, सपा० वासुदेवशरण अग्रवाल, अखिल भारतीय ब्रज साहित्यमडल, मथुरा, स० २०१० वि० |
| प्र० सा० | प्रगतिशील (वादी) साहित्य |
| प्रताप ग्र ० | प्रतापनारायण मिश्र ग्र थावली, सपा० विजयशकर मल्ल, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स० |
| प्रताप (शब्द०) | व्यग्यार्थ कौमुदी के रचयिता प्रताप कवि |
| प्रताप सिंह (शब्द०) | प्रताप सिंह |
| प्रबध० | प्रबधपद्म, 'निराला', गंगा पुस्तकमाला, लखनऊ, प्र० स० |
| प्रभावती | प्रभावती, 'निराला,' सरस्वती भडार, लखनऊ, प्र० स० |
| प्राण० | प्राणसगली, सपा० सत सपूरणसिंह, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स० |
| प्रा० भा० प० | प्राचीन भारतीय परपरा और इतिहास डा० रागेय राघव, आत्माराम ऐंड सस, दिल्ली, प्र० स०, १९५३ ई० |
| प्रिय० | प्रियप्रवास, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', हिंदी साहित्य कुटीर, बनारस, षष्ठ सं० |
| प्रिया० (शब्द०) | प्रियादास |
| प्रेम० | प्रेमपथिक, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, तृ० स० |
| प्रेम० और गोर्की | प्रेमचद और गोर्की, सपा० शचीरानी गुर्टू, राजकमल प्रकाशन लि०, बबई, १९५५ ई० |
| प्रेमघन० | प्रेमघन सर्वस्व, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, प्र० स०, १९९६ वि० |
| प्रे० सा० (शब्द०) | प्रेमसागर, लल्लूलाल कृत |
| प्रेमाजलि | प्रेमाजलि, ठा० गोपालशरण सिंह, इडियन प्रेस लि०, प्रयाग, १९५३ ई० |
| फिसाना० | फिसाना ए आजाद (चार भाग), प० रतननाथ सरशार', नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, चतुर्थ सं० |
| फूलो० | फूलो का कुर्ता, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, प्र० स० |
| बंगाल० | बंगाल का काल, हरिवश राय 'बच्चन,' भारती भडार, इलाहाबाद, प्र० स०, १९४६ ई० |
| बदन० | बदनवार, देवेंद्र सत्यार्थी, प्रगति प्रकाशन, दिल्ली, १९४९ ई० |
| बद० | बदमाश दर्पण, तेगअली, भारतजीवन प्रेस, बनारस, प्र० स० |
| बलवीर (शब्द०) | बलवीर कवि |
| बलभद्र (शब्द०) | बलभद्र कवि |
| बाँकी० ग्र ०, बाँकीदास ग्र० } | बाँकीदास ग्रथावली (तीन भाग), सपा० रामनारायण दूगड़, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स० |
| बाँगेदरा | बाँगेदरा |
| बापू | बापू, कवितासग्रह, सियारामशरण गुप्त, प्र० सं० |
| बालकृष्ण ( शब्द० ) | बालकृष्ण |
| बालमुकुद (शब्द०) | बालमुकुद गुप्त |
| बिरहा ( शब्द० ) | प्रचलित बिरहा गीत |
| बिल्ले० | बिल्लेसुर बकरिहा, निराला, युगमदिर, उन्नाव, प्र० स० |
| बिसराम (शब्द०) | बिसराम कवि |
| बिहारी र० | बिहारी रत्नाकर, सपा० जगन्नाथदास 'रत्नाकर', गगा ग्र थागार, लखनऊ, प्र० स० |
| बिहारी (शब्द०) | कवि बिहारी |

| | |
|---|---|
| बी० रासो | बीसलदेव रासो, सपा० सत्यजीवन वर्मा, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स० |
| बीसल० रास | बीसलदेव रास, सपा० माताप्रसाद गुप्त, प्र० स० |
| बी० श० महा० | बीसवीं शताब्दी के महाकाव्य, डा० प्रतिपालसिंह, ओरिएटल बुकडिपो, देहली, प्र० स० |
| बुद्ध च० | बुद्धचरित, रामचद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स० |
| बृहत्० | बृहत्संहिता |
| बृहत्संहिता (शब्द०) | बृहत्संहिता |
| बेनी (शब्द०) | कवि बेनी प्रवीन |
| बेला | बेला, 'निराला,' हिंदुस्तानी पब्लिकेशस, इलाहाबाद, प्र० स० |
| बेलि० | बेलि क्रिसन रुक्मिणी री, सपा० ठाकुर रामसिंह, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० स०, १६३१ ई० |
| बैताल (शब्द०) | बैताल कवि |
| बोधा (शब्द०) | कवि बोधा |
| ब्रज० | ब्रजविलास, सपा० श्रीकृष्णदास, लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, बबई, तृ० स० |
| ब्रज० ग्रं० | ब्रजनिधि ग्रथावली, सपा० पुरोहित हरिनारायण शर्मा, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स० |
| ब्रज चरित्र० | ब्रज चरित्र वर्णन |
| ब्रजमाधुरी० | ब्रजमाधुरी सार, सपा० वियोगी हरि, हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग, तृ० स० |
| ब्रह्म (शब्द०) | ब्रह्म कवि (बीरबल) |
| भक्तमाल (प्रि०) | भक्तमाल, टीका० प्रियादास, वेंकटेश्वर प्रेस, बबई, १६५३ वि० |
| भक्तमाल (श्री०) | भक्तमाल, श्रीभक्तिसुधाबिंदु स्वाद, टीका० सीतारामशरण, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, द्वि० स०, १६८३ वि० |
| भक्ति० | भक्तिसागरादि, स्वामी चरणदास, वेंकटेश्वर प्रेस, बबई, सवत् १६६० वि० |
| भक्ति प० | भक्ति पदार्थ वर्णन, स्वामी चरणदास, वेंकटेश्वर प्रेस, बबई, सवत् १६६० |
| भगवतरसिक (शब्द०) | भगवत रसिक |
| भजन (शब्द०) | भजन |
| भट्ट (शब्द०) | बालकृष्ण भट्ट |
| भस्मावृत० | भस्मावृत चिनगारी, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १६४६ ई० |
| भा० इ० रू० | भारतीय इतिहास की रूपरेखा, जयचद्र विद्यालकार, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० स०, १६३३ वि० |
| भा० प्रा० लि० | भारतीय प्राचीन लिपिमाला, गौरीशंकर हीराचद ओझा, इतिहास कार्यालय, राजमेवाड़, प्र० स०, १६५१ वि० |
| भारत० | भारतभारती, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्यसेदन, चिरगाँव, झाँसी, नवम स० |
| भा० भू०, भारत० नि० | भारत भूमि और उसके निवासी, जयचद्र विद्यालकार, रत्नाश्रम, आगरा, द्वि० स०, १६८७ वि० |
| भारतीय० | भारतीय राज्य और शासनविधान |
| भारतेंदु ग्रं० | भारतेंदु ग्रथावली (४ भाग), सपा० ब्रजरत्नदास, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स० |
| भा० सैन्य० | भारत का सैन्य इतिहास, सर जदुनाथ सरकार, अनु० सुशील त्रिवेदी, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रथ अकादमी, भोपाल, प्र० स० |
| भा० शिक्षा | भारतीय शिक्षा, राजेंद्रप्रसाद, आत्माराम ऐंड सस, दिल्ली, १६५३ ई० |
| भाषा शि० | भाषाशिक्षण, प० सीताराम चतुर्वेदी |
| भिखारी ग्रं० | भिखारीदास ग्रंथावली (दो भाग), सपा० प० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, ना० प्र० सभा, काशी |
| भीखा श० | भीखा शब्दावली, प्र० स० |
| भुवनेश (शब्द०) | भुवनेश कवि |
| भूधर (शब्द०) | भूधर कवि |
| भूपति (शब्द०) | भूपति कवि |
| भूमि० | भूमि की अनुभूति (कवितासग्रह) |
| भूषण ग्रं० | भूषण ग्रथावली, सपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, साहित्य सेवक कार्यालय, काशी, प्र० सं० |
| भूषण (शब्द०) | कवि भूषण त्रिपाठी |
| भोज० भा० सा० | भोजपुरी भाषा और साहित्य, डा० उदयनारायण तिवारी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, प्र०स० |
| मतपरीक्षा (शब्द०) | मतपरीक्षा (पुस्तक) |
| मति० ग्र० | मतिराम ग्रथावली, सपा० कृष्णबिहारी मिश्र, गगा पुस्तकमाला, लखनऊ, द्वि० स० |
| मतिराम (शब्द०) | कवि मतिराम त्रिपाठी |
| मधु० | मधुकलश, हरिवशराय 'बच्चन,' सुषमा निकुज, इलाहाबाद, द्वि० स०, १६३६ ई० |
| मधुज्वाल | मधुज्वाल, सुमित्रानदन पंत, भारती भडार, इलाहाबाद, द्वि० स०, १६३६ ई० |
| मधु मा० | मधुमालती वार्ता, सपा० माताप्रसाद गुप्त, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स० |
| मधुशाला | मधुशाला, हरिवश राय 'बच्चन,' सुषमा निकुज, इलाहाबाद, प्र० स० |
| मधुसूदन (शब्द०) | मधुसूदनदास कवि |
| मनविरक्त० | मनविरक्तकरन गुटका सार (चरणदास) |
| मनु० | मनुस्मृति |
| मन्नालाल (शब्द०) | कवि मन्नालाल |
| मलूक० बानी | मलूकदास की बानी, वेलवेडियर प्रेस, प्रयाग |

| | |
|---|---|
| मलूक० (शब्द०) | मलूकदास |
| महा० | महाराणा का महत्व, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, इलाहाबाद, चतुर्थ सं० |
| महावीरप्रसाद (शब्द०) | पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी |
| महाभारत (शब्द०) | महाभारत |
| महाराणा प्रताप (शब्द०) | महाराणा प्रताप, पुस्तक |
| माधव० | माधवनिदान, लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई, चतुर्थ सं० |
| माधवानल० | माधवानल कामकंदला, बोधा कवि, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, प्र० सं०, १८९१ ई० |
| मान० | मानसरोवर, प्रेमचंद, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद |
| मानव | मानव, कवितासंकलन, भगवतीचरण वर्मा |
| मानव० | मानवसमाज, राहुल सांकृत्यायन, किताब महल, इलाहाबाद, द्वि० सं० |
| मानस | रामचरितमानस, संपा० शंभुनारायण चौबे, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं० |
| मा० स०, मा० स० रू० | मानवसमाज या मानव समाज की रूपरेखा |
| मिट्टी० | मिट्टी और फूल, नरेंद्र शर्मा, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं०, १९९९ वि० |
| मिलन० | मिलनयामिनी, हरिवंश राय 'बच्चन,' भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, प्र० सं०, १९५० ई० |
| मिश्रबंधु (शब्द०) | 'मिश्रबंधु' नाम से ख्यात |
| मीर हसन (शब्द०) | मीर हसन |
| मीरा (शब्द०) | भक्त मीरा बाई |
| मुंशी अभि० ग्रं० | मुंशी अभिनंदन ग्रंथ, संपा० डा० विश्वनाथप्रसाद, हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ आगरा विश्वविद्यालय, आगरा |
| मुकुंदलाल (शब्द०) | मुकुंदलाल कवि |
| मुबारक (शब्द०) | कवि मुबारक अली |
| मुरारिदान (शब्द०) | कवि मुरारिदान |
| मृग० | मृगनयनी, वृंदावनलाल वर्मा, मयूर प्रकाशन, झाँसी |
| मैला० | मैला आँचल, फणीश्वरनाथ 'रेणु,' समता प्रकाशन, पटना–४, प्र० सं० |
| मोहन० | मोहनविनोद, सं० कृष्णबिहारी मिश्र, इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, प्र० सं० |
| यमुना (शब्द०) | यमुनाशंकर |
| यशो० | यशोधरा, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० सं० |
| यामा | यामा, महादेवी वर्मा, किताबिस्तान, प्रयाग, प्र० सं० |
| युग० | युगवाणी, सुमित्रानंदन पंत, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं० |
| युगपथ | युगपथ ,, ,, ,, |

| | |
|---|---|
| युगलेश (शब्द०) | कवि युगलेश |
| युगांत | युगांत, सुमित्रानंदन पंत, इंद्र प्रिंटिंग प्रेस, अल्मोड़ा, प्र० सं० |
| योग० | योगवाशिष्ठ (वैराग्य मुमुक्षु प्रकरण), गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, लक्ष्मी वेंकटेश्वर छापाखाना, कल्याण, बंबई, सं० १९६७ वि० |
| रंगभूमि | रंगभूमि, प्रेमचंद, गंगा ग्रंथागार, लखनऊ, प्र० सं०, १९८१ वि० |
| रघु० रू० | रघुनाथ रूपक गीतांरो, संपा० महताबचंद्र खारैड, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं० |
| रघु० दा०, रघुनाथदास (शब्द०) | रघुनाथदास |
| रघुनाथ (शब्द०) | रघुनाथ |
| रघुनाथ बंदीजन (को०) | रघुनाथ बंदीजन |
| रघुराज, रघुराजसिंह (शब्द०) | रीवाँनरेश महाराज रघुराजसिंह, सं० १८८०-१९३६ वि० |
| रजत० | रजतशिखर, सुमित्रानंदन पंत, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, २००८ वि० |
| रजिया० | रजिया की बेटी, (अनु०) नरोत्तम नागर, साहित्य प्रकाशन, माली वाडा, दिल्ली, प्र० सं० |
| रज्जब० | रज्जब जी की बानी, ज्ञानसागर प्रेस, बंबई, १९७५ वि० |
| रतन० | रतनहजारा, संपा० श्री जगन्नाथप्रसाद श्रीवास्तव, भारतजीवन प्रेस, काशी, प्र० सं०, १९८२ ई० |
| रति० | रतिनाथ की चाची, नागार्जुन, किताब महल, इलाहाबाद, द्वि० सं०, १९५३ ई० |
| रत्न० (शब्द०) | रत्नसार |
| रत्नपरीक्षा (शब्द०) | रत्नपरीक्षा |
| रत्नाकर | रत्नाकर [ दो भाग ], ना० प्र० सभा, काशी, चतुर्थ, द्वि० और प्रथम सं० १९८० |
| रत्नावली (शब्द०) | रत्नावली नाटिका |
| रश्मि० | रश्मिबंध, सुमित्रानंदन पंत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली |
| रस० | रसमीमांसा, संपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, ना० प्र० सभा, काशी, द्वि० सं० |
| रस क० | रसकलश, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध,' हिंदी साहित्य कुटीर, बनारस, तृतीय सं० |
| रसखान० | रसखान और घनानंद, संपा० अमीरसिंह, ना० प्र० सभा, द्वि० सं० |
| रसखान (शब्द०) | सैयद इब्राहीम रसखान |
| रस र०, रसरतन | रसरतन, संपा० पुहकर कवि कृत, शिवप्रसाद सिंह, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं० |
| रसनिधि (शब्द०) | राजा पृथ्वीसिंह 'रसनिधि' |
| रसिया (शब्द०) | रसिया कवि ? रसिया गीत ? |
| रहिमन (शब्द०) | रहीम कवि |

| | |
|---|---|
| रहीम (शब्द०) | अब्दुर्रहीम खानखाना |
| रहीम० | रहीम रत्नावली |
| रा० कृ० वर्मा (शब्द०) | रामकृष्ण वर्मा |
| राज० इति० | राजपूताने का इतिहास, गौरीशंकर हीराचंद ओझा, अजमेर, १९९७ वि०, प्र० सं० |
| राज० | राजतरंगिणी |
| रा० रू० | राजरूपक, संपा० पं० रामकर्ण, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं० |
| रा० वि० | राजविलास, संपा० मोतीलाल मेनारिया, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं० |
| राजनीतिक० | राजनीतिक विचारधाराएँ |
| राज्यश्री | राज्यश्री, जयशंकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, सातवाँ सं० |
| राम० | रामचरितमानस, संपा० विजयानंद त्रिपाठी, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं० १९७३ वि० |
| राम, रामकवि (शब्द०) | राम कवि |
| रामकृष्ण (शब्द०) | रामकृष्ण |
| राम० चं० | संक्षिप्त रामचंद्रिका, संपा० लाला भगवानदीन, ना० प्र० सभा, वाराणसी, षष्ठ सं० |
| राम० धर्म० | रामस्नेह धर्मप्रकाश, संपा० मालचंद्र जी शर्मा, चौकसराम जी ( सिंहथल ), बड़ा रामद्वारा, बीकानेर। |
| राम० धर्म० सं० | रामस्नेह धर्मसंग्रह, संपा० मालचंद्र जी शर्मा, चौकसराम जी ( सिंहथल ), बड़ा रामद्वारा, बीकानेर। |
| रामरसिका० | रामरसिकावली (भक्तमाल) |
| रामसहाय (शब्द०) | रामसहाय कवि कृत सतसई |
| रामानंद० | रामानंद की हिंदी रचनाएँ, संपा० पीतांबरदत्त बड़थ्वाल, ना० प्र० सभा, प्र० सं० |
| रामाश्व० | रामाश्वमेध, मन्नालाल द्विज, त्रिपुरा भैरवी, वाराणसी, १९३९ वि० |
| रिखिनाथ (शब्द०) | कवि रिखिनाथ |
| रेणुका | रेणुका, रामधारी सिंह 'दिनकर,' पुस्तक भंडार, लहेरियासराय, पटना, प्र० सं० |
| रै० बानी | रैदास बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद |
| लक्ष्मणसिंह (शब्द०) | राजा लक्ष्मणसिंह |
| लल्लू, लल्लूलाल (शब्द०) | लल्लूलाल |
| लवकुश चरित्र (शब्द०) | लवकुश चरित्र |
| लहर | लहर, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, इलाहाबाद, पंचम सं० |
| लाल (शब्द०) | लाल कवि (छत्रप्रकाशवाले) |
| वर्ण०, वर्णरत्नाकर | वर्णरत्नाकर |
| वल्लभ पु० (शब्द०) | वल्लभपुष्टिमार्ग, ग्रंथ |
| वाल्मीकीय० (शब्द०) | वाल्मीकीय रामायण |
| विद्यापति | विद्यापति, संपा० खगेंद्रनाथ मित्र, यूनाइटेड प्रेस, लि०, पटना |
| विनय० | विनयपत्रिका, टीका० पं० रामेश्वर भट्ट, इंडियन प्रेस लि०, प्रयाग, तृ० सं० |
| विशाख | विशाख, जयशंकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग, तृ० सं० |
| विश्राम (शब्द०) | विश्रामसागर |
| विश्वनाथसिंह (शब्द०) | रीवाँ नरेश महाराज विश्वनाथसिंह जी (सं० १८४६ १९११ वि०) |
| विश्वप्रिया | विश्वप्रिया, 'अज्ञेय' स० ही० वात्स्यायन |
| विश्वास (शब्द०) | विश्वास ? |
| वीणा | वीणा, सुमित्रानंदन पंत, इंडियन प्रेस, लि० प्रयाग, द्वि० सं० |
| वेणी (शब्द०) | वेणी (या वेनी) कवि |
| वेनिस (शब्द०) | वेनिस का बाँका |
| वैशाली०, वै० न० | वैशाली की नगरवधू, चतुरसेन शास्त्री, गौतम बुकडिपो, दिल्ली, प्र० सं० |
| वो दुनिया | वो दुनिया, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४१ ई० |
| व्यंग्यार्थ० | व्यंग्यार्थ कौमुदी प्रताप कवि कृत, बाबू रामकृष्ण वर्मा, भारत जीवन प्रेस, काशी, प्र० सं०, संवत् १९५७ |
| व्यंग्यार्थ (शब्द०) | व्यंग्यार्थ कौमुदी |
| व्यास (शब्द०) | अंबिकादत्त व्यास |
| ब्रज (शब्द०) | ब्रज विलास |
| शं० दि० (शब्द०) | शंकरदिग्विजय |
| शंकर (शब्द०) | शंकर कवि |
| शंकर० | शंकरसर्वस्व, संपा० हरिशंकर शर्मा, गयाप्रसाद ऐंड संस, आगरा, प्र० सं० |
| शंभु ( शब्द० ) | शंभु कवि |
| शकुं० | शकुंतला, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी |
| शकुंतला | शकुंतला नाटक, अनु० राजा लक्ष्मणसिंह, हिंदी साहित्य संमेलन, प्रयाग, चतु० सं० |
| शब्द चंद्रिका (शब्द०) | शब्दचंद्रिका (संस्कृत) |
| शब्द रत्नावली (शब्द०) | शब्दरत्नावली |
| शब्दावली (शब्द०) | शब्दावली ग्रंथ |
| शाहजहाँनामा (शब्द०) | शाहजहाँनामा |
| शार्ङ्गधर सं० | शार्ङ्गधर संहिता, टी० सीताराम शास्त्री, मुंबई वैभव मुद्रणालय, संवत् १९७१ |
| शिखर० | शिखर वंशोत्पत्ति संपा० पुरोहित हरिनारायण शर्मा, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०, १९८५ |
| शिरमौर (शब्द०) | कवि शिरमौर |
| शिवप्रसाद (शब्द०) | राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद |

शिवराम (शब्द०) शिवराम कवि
शिवशंभु (शब्द०) शिवशंभु का चिट्ठा
शुक्ल० अभि० ग्रं० शुक्ल अभिनंदन ग्रंथ, मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य समेलन
शृं० सत० (शब्द०) शृंगार सतसई
शृंगार सुधाकर (शब्द०) शृंगार सुधाकर
शेखर (शब्द०) शेखर कवि
शेर० शेर श्रो सुखन, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, प्र स
शैली शैली, प० करुणापति त्रिपाठी, प्र० स०
श्यामबिहारी (शब्द०) श्यामबिहारी मिश्र ('मिश्रबंधु')
श्यामा० श्यामास्वप्न, सपा० डा० कृष्णलाल, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
श्रद्धानंद (शब्द०) स्वामी श्रद्धानंद
श्रद्धाराम (शब्द०) श्रद्धाराम फुल्लौरी
श्रीकृष्णसंदेश (शब्द०) श्री कृष्णसंदेश
श्रीधर (शब्द०) श्रीधर कवि
श्रीधर पाठक (शब्द०) श्रीधर पाठक
श्रीनिवास ग्रं० श्रीनिवास ग्रंथावली, सपा० डा० कृष्णलाल, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
श्रीपति (शब्द०) श्रीपति कवि
संतति० चंद्रकांता संतति, देवकीनंदन खत्री, वाराणसी
संचिता संचिता ( कवितासंग्रह )
संत तुरसी० संत तुरसीदास की शब्दावली, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद।
सं० दरिया, संत० दरिया संत कवि दरिया, सं० धर्मेंद्र ब्रह्मचारी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, प्र० स०
सं० दा० (शब्द०) संगीत दामोदर
सं० शा० (शब्द०) संगीत शाकुंतल
संत र० संत रविदास और उनका काव्य स्वामी रामानंद शास्त्री, भारतीय रविदास सेवासंघ, हरिद्वार, प्र० स०
संतवाणी०, संत०सार० संतवाणी सार संग्रह (२ भाग), बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद
सन्यासी सन्यासी, इलाचंद्र जोशी, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०
संपूर्णा० अभि० ग्रं० संपूर्णानंद अभिनंदन ग्रंथ, सपा० आचार्य नरेंद्रदेव, ना० प्र० सभा, वाराणसी
स० दर्शन समीक्षादर्शन, रामलाल सिंह, इंडियन प्रेस, प्रयाग, प्र० स०
सत्य० कविरत्न सत्यनारायण जी की जीवनी, श्री बनारसीदास चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग, द्वि० स०
सत्यार्थप्रकाश (शब्द०) सत्यार्थप्रकाश, स्वामी दयानंद
सबल (शब्द०) सबलसिंह चौहान (महाभारत)
सभा० वि० (शब्द०) सभाविलास
सरस्वती (शब्द०) सरस्वती मासिक पत्रिका
सर्पाघातचिकित्सा (शब्द०) सर्पाघात चिकित्सा
स० शास्त्र समीक्षाशास्त्र, प० सीताराम चतुर्वेदी, अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, काशी, प्र० स०
स० सप्तक सतसई सप्तक, सपा० श्यामसुंदरदास, हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयाग, प्र० स०
सरलाबाई (शब्द०) सरलाबाई, कवयित्री
सहजो० सहजो बाई की बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९०८ वि०
साकेत साकेत, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्यसदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० स०
सागरिका सागरिका, डा० गोपालशरण सिंह, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०
सात सतक हस्तलेख, छत्रपति संभा जी, उपनाम शंभु, नृपशंभु कवि
साम० सामधेनी, रामधारी सिंह 'दिनकर,' उदयाचल, पटना, द्वि० स०
सा० दर्पण साहित्यदर्पण, सपा० शालिग्राम शास्त्री, श्री मृत्युंजय औषधालय, लखनऊ, प्र० स०
सा० द० साहित्य दर्शन
सा० लहरी साहित्यलहरी, सपा० रामलोचनशरण बिहारी, पुस्तक भंडार, लहेरियासराय, पटना
सा० समीक्षा साहित्य समीक्षा, कालिदास कपूर, इंडियन प्रेस, प्रयाग
साहित्य० साहित्यालोचन, श्री श्यामसुंदर दास, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद
सिद्धांतसंग्रह (शब्द०) सिद्धांतसंग्रह
सीतल (शब्द०) कवि सीतल
सीताराम (शब्द०) सीताराम कवि
सुंदर० सुंदरदास ग्रंथावली (दो भाग), सपा० हरिनारायण शर्मा, राजस्थान रिसर्च सोसायटी, कलकत्ता
सुंदरीसिंदूर (शब्द०) सुंदरी सिंदूर, कवितासंग्रह
सुकवि (शब्द०) सुकवि उपनाम के कवि
सुखदा सुखदा, जैनेंद्रकुमार, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, प्र० स०
सुखदेव (शब्द०) कवि सुखदेव
सुधाकर (शब्द०) महामहोपाध्याय प० सुधाकर द्विवेदी
सुजान० सुजानचरित (सूदनकृत), सपा० राधाकृष्ण, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी, प्र० स०

| | |
|---|---|
| सुधानिधि | कवि तोष और सुधानिधि, सं० सुरेंद्र माथुर, ना० प्र० स० काशी, प्र० स० |
| सुनीता | सुनीता, जैनेंद्रकुमार, साहित्यमंडल, बाजार सीताराम, दिल्ली, प्र० सं० |
| सुंदर (शब्द०) | सुंदर कवि, सुंदरदास जी |
| सूत० | सूत की माला, पंत और बच्चन, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० स० |
| सूदन (शब्द०) | सूदन कवि (सुजानचरित के रचयिता, भरतपुरवाले) |
| सूर० | सूरसागर (दो भाग), ना० प्र० सभा, द्वितीय स० |
| सूर० (शब्द०) | सूरदास |
| सूर० (राधा०) | सूरसागर, सपा० राधाकृष्णदास, वेंकटेश्वर प्रेस, प्र० स० |
| सेवक (शब्द०) | 'सेवक' कवि |
| सेवक श्याम (शब्द०) | सेवक श्याम कवि |
| सेवासदन | सेवासदन, प्रेमचद, हिंदी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता द्वि० स० |
| सैर कु० | सैर कुहसार, प० रतननाथ 'सरशार', नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ च० स०, १९३४ ई० |
| सौ अजान० (शब्द०) | सौ अजान और एक सुजान, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' |
| स्कद० | स्कदगुप्त, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स० |
| स्वर्ण० | स्वर्णकिरण, सुमित्रानदन पत, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स० |
| स्वाधीनता (शब्द०) | स्वाधीनता |
| स्वामी रा०, स्वामी रामकृष्ण (शब्द०) | स्वामी रामकृष्ण |
| स्वामी हरिदास (शब्द०) | स्वामी हरिदास |
| हंस० | हंसमाला, नरेंद्र शर्मा, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स० |
| हंसराज (शब्द०) | हंसराज |
| हकायके० | हकायके हिंदी, ले० मीर अब्दुल वाहिद, प्र० सपा० 'रुद्र' काशिकेय, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स० |
| हनुमन्नाटक (शब्द०) | हनुमन्नाटक |
| हनुमान (शब्द०), हनुमान कवि (शब्द०) | हनुमान कवि |
| हम्मीर० | हम्मीरहठ, सपा० जगन्नाथदास 'रत्नाकर,' इंडियन प्रेस लि०, प्रयाग |
| ह० रासो० | हम्मीर रासो, संपा० डा० श्यामसुंदरदास, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स० |
| हरिजन (शब्द०) | कवि हरिजन |
| हरिदास (शब्द०) | स्वामी हरिदास |
| हरिश्चद्र (शब्द०) | भारतेंदु हरिश्चद्र |
| हरिसेवक (शब्द०) | हरिसेवक कवि |
| हरी घास० | हरी घास पर क्षण भर, अज्ञेय, प्रगति प्रकाशन, नई दिल्ली, १९४९ ई० |
| हर्ष० | हर्षचरित एक सांस्कृतिक अध्ययन, वासुदेवशरण अग्रवाल, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, प्र० स०, १९५३ ई० |
| हाला'हल | हालाहल, हरिवंशराय बच्चन, भारती भडार, प्रयाग, १९४६ ई० |
| हिंदी आ० | हिंदी आलोचना |
| हिं० क० का० | हिंदी कवि और काव्य, गणेशप्रसाद द्विवेदी हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० स० |
| हिंदी का० | हिंदी काव्य की अन्तश्चेतना |
| हिं० का० प्र० | हिंदी काव्य पर आंग्ल प्रभाव, रवींद्रसहाय वर्मा, पद्मजा प्रकाशन, कानपुर, प्र० स० |
| हिंदी काव्य० | हिंदी काव्य में प्रकृतिचित्रण |
| हिं० ना० | हिंदी के नाटक |
| हिंदी प्रदीप (शब्द०) | हिंदी प्रदीप |
| हिंदी प्रेमगाथा० | हिंदी प्रेमगाथा काव्यसंग्रह, गणेशप्रसाद द्विवेदी, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, १९३९ ई० |
| हिंदी प्रेमा० | हिंदी प्रेमाख्यानक काव्य, डा० कमल कुलश्रेष्ठ, चौधरी मानसिंह प्रकाशन, कचहरी रोड |
| हिं० प्र० चि० | हिंदी काव्य में प्रकृतिचित्रण, किरणकुमारी गुप्त, हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग |
| हिं० सा० भू० | हिंदी साहित्य की भूमिका, हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बबई, तृ० सं०, १९४८ |
| हिंदु० सभ्यता | हिंदुस्तान की पुरानी सभ्यता, बेनीप्रसाद, हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग, प्र० स० |
| हित हरिवश (शब्द०) | वैष्णव संत हित हरिवंश दास |
| हिम कि० | हिमकिरीटिनी, माखनलाल चतुर्वेदी, सरस्वती प्रकाशन मदिर इलाहाबाद, तृ० स० |
| हिम त० | हिमतरंगिणी, माखनलाल चतुर्वेदी, भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स० |
| हिम्मत० | हिम्मतबहादुर विरुदावली, लाला भगवानदीन, ना० प्र० सभा, काशी, द्वि० स० |
| हिल्लोल | हिल्लोल, शिवमंगल सिंह 'सुमन', सरस्वती प्रेस, बनारस, द्वि० स० |
| हुमायूं० | हुमायूँनामा, अनु० ब्रजरत्नदास, ना० प्र० सभा, वाराणसी, द्वि० सं० |
| हृदय० | हृदयतरंग, सत्यनारायण कविरत्न |
| हृदयराम (शब्द०) | कवि हृदयराम |

[ व्याकरण, व्युत्पत्ति आदि के संकेताक्षरों का विवरण ]

| | |
|---|---|
| अं० | अंग्रेजी |
| अ० | अरबी |
| अक० रूप | अकर्मक रूप |
| अनु० | अनुकरण शब्द |
| अनुध्व० | अनुध्वन्यात्मक |
| अनु० मू० | अनुकरणार्थमूलक |
| अनुर० | अनुरणनात्मक रूप |
| अप० | अपभ्रंश |
| अर्ध मा० | अर्धमागधी |
| अल्पा० | अल्पार्थक |
| अव० | अवधी |
| अव्य० | अव्यय |
| इता० | इतालवी |
| इब० | इबरानी |
| उ० | उदाहरण |
| उच्चा० | उच्चारण सुविधार्थ |
| उड़ि० | उड़िया |
| उप० | उपसर्ग |
| उभय० | उभयलिंग |
| एकव० | एकवचन |
| कनाडी | कन्नड भाषा |
| कहावत | कहावत |
| काव्यशास्त्र | काव्यशास्त्र |
| (कौ०), (को०) | अन्य कोश |
| * | संभाव्य व्युत्पत्ति |
| ^ | अनिश्चित व्युत्पत्ति |
| कोंक० | कोंकणी |
| क्रि० | क्रिया |
| क्रि० अ० | क्रिया अकर्मक |
| क्रि० प्र० | क्रिया प्रयोग |
| क्रि० वि० | क्रिया विशेषण |
| क्रि० स० | क्रिया सकर्मक |
| क्व० | क्वचित् |
| गीत | लोकगीत |
| गुज० | गुजराती |
| चीं० | चीनी भाषा |
| छं० | छंद |
| जापा० | जापानी |
| जावा० | जावा द्वीप की भाषा |
| जी०, जीवन | जीवनचरित |
| ज्या० | ज्यामिति |
| ज्यो० | ज्योतिष |
| डिं | डिंगल |
| त० | तमिल |
| तद० | तद्भव |
| ति० | तिब्बती भाषा |
| तु० | तुर्की |
| तुल० | तुलनीय |
| दू० | दूहा या दूहला |
| दे० | देखिए |
| देश० | देशज |
| देशी | देशी शब्द |
| धर्म० | धर्मशास्त्र |
| नाम० | नामधातु |
| ना० धा० | नामधातुज क्रिया |
| नामिक धातु | नामिक धातु |
| ने० | नेपाली |
| न्याय० | न्याय या तर्कशास्त्र |
| पं० | पंजाबी |
| परि० | परिशिष्ट |
| पा० | पाली |
| पुं० | पुंलिंग |
| पुर्त० | पुर्तगाली |
| पु० हिं० | पुरानी हिंदी |
| पू० हिं० | पूर्वी हिंदी |
| पृ० | पृष्ठ |
| प्र० | प्रकाशकीय या प्रस्तावना |
| प्रत्य० | प्रत्यय |
| प्रा० | प्राकृत |
| प्रे० | प्रेरणार्थक रूप |
| फ० | फरांसीसी भाषा |
| फकीर० | फकीरों की बोली |
| फा० | फारसी |
| बँग० | बँगला भाषा |
| बरमी० | बरमी भाषा |
| बहुव० | बहुवचन |
| बुं० खं० | बुंदेलखंड की बोली |
| बुंदेल० | ,, ,, |
| बोल० | बोलचाल |
| भाव० | भाववाचक संज्ञा |
| भू० | भूमिका |
| भू० कृ० | भूत कृदंत |
| मरा० | मराठी |
| मल० | मलयाली या मलयालम भाषा |
| मला० | मलाया की भाषा |
| मि० | मिलाइए |
| मुसल० | मुसलमानों द्वारा प्रयुक्त |
| मुहा० | मुहावरा |

| | | | |
|---|---|---|---|
| यू० | यूनानी | संयो० क्रि० | संयोजक क्रिया |
| यौ० | यौगिक | स० | सकर्मक |
| राज० | राजस्थानी | सक० रूप | सकर्मक रूप |
| लश० | लशकरी | सधु० | सधुक्कडी भाषा |
| ला० | लाक्षणिक | सर्व० | सर्वनाम |
| लैं० | लैटिन | सिंहली | सिंहली भाषा |
| व० कृ० | वर्तमान कृदंत | स्पे० | स्पेनी भाषा |
| वर्ण वि० | वर्णविपर्यय | स्त्रि० | स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त |
| वि० | विशेषण | स्त्री० | स्त्रीलिंग |
| वि० द्वि० मू० | विषमद्विरुक्तिमूलक | हिं० | हिंदी |
| वै० | वैदिक | ⓟ | काव्यप्रयोग, पुरानी हिंदी |
| व्या० | व्याकरण | > | व्युत्पन्न |
| व्यंग्य | व्यंग्यार्थ में प्रयुक्त | † | प्रांतीय प्रयोग |
| (शब्द०) | शब्दसागर प्र० सं० | ‡ | ग्राम्य प्रयोग |
| सं० | संस्कृत | √ | धातुचिह्न |
| संयो० | संयोजक अव्यय | | |

---

# हिंदी शब्दसागर

## स

स—हिंदी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यजन। यह ऊष्म वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान दंत है, इसलिये यह दंती 'स' कहा जाता है।

स¹—अव्य० [सं० सम्] १ एक अव्यय जिसका व्यवहार शोभा, समानता, संगति, उत्कृष्टता, निरंतरता, औचित्य आदि सूचित करने के लिये शब्द के आरंभ मे होता है। जैसे,—सभोग, सयोग, सतार, सतुष्ट आदि। कभी कभी इसे जोडने पर भी मूल शब्द का अर्थ ज्यों का त्यों बना रहता है, उसमे कोई परिवर्तन नही होता। २ मे।

स(पु)²—प्रत्य० [हिं०] करण कारक और अपादान कारक का चिह्न। से। उ०—नै एते स तनु गुण हरयौ। न्याइ वियोगु विधाता करयौ।—छिताई०, पृ० ९३।

सक(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्का] दे० 'शंका'। उ०—(क) जलधि पार मानस अगम रावण पालित लक। सोच विकल कपि भालु सब दुहु दिस सकट सक।—तुलसी (शब्द०)। (ख) श्रीफल कनक कदलि हरपाही। नेकु न सक सकुच मन माही। मानस, ३।२४।

सकट¹—वि० [सं० सम+कृत, सङ्कट, प्रा० सकट] १ एकत्र किया हुआ। २ घनीभूत। ३ तग। क्षीण। ४. दुर्गम। दुर्लघ्य। ५ भयानक। कष्टप्रद। दु खदायी। ६ सकीर्ण। सँकरा। तग। ७ पूर्ण। भरा हुआ (को०)।

सकट²—संज्ञा पु० १ विपत्ति। आफत। मुसीबत। उ०—लालन गे जब ते तब ते विरहानल जालन ते मन डाढे। पालत है ब्रजगायन ग्वाल हुतो जब आवत सकट गाढे।—दीनदयाल (शब्द०)। २ दु ख। कष्ट। तकलीफ। ३ भीड। समूह। ४ सँकरी राह। ५ वह तग पहाडी रास्ता जो दो बडे और ऊँचे पहाडो के बीच से होकर गया हो। जैसे, गिरिसकट।

यौ०—सकटचतुर्थी = दे० 'सकटचौथ'। सकटनाशन = विपत्तियो का नाश करनेवाला। सकटमुख = तग या सँकरे मुँह का। सकटमोचन = (१) काशी मे गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा स्थापित हनुमानजी की एक प्रसिद्ध मूर्ति। (२) सकट से मुक्त करनेवाला। सकटनाशन।

सकट³—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का वत्तख।

सकट चौथ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सकट + चौथ] माघ मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी।

विशेष—इस दिन सकट दूर करनेवाले गणेश देवता के उद्देश्य से व्रत आदि रखा जाता है। कुछ लोग श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को भी सकट चौथ कहते है।

सकटस्थ—वि० [सं० सङ्कटस्थ] १ सकट मे पडा हुआ। विपद्ग्रस्त। २ दु खी।

सकटा—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कटा] १ एक प्रसिद्ध देवी मूर्ति जो वाराणसी मे है और सकट या विपत्ति का निवारण करनेवाली मानी जाती है। २ ज्योतिष के अनुसार आठ योगिनियो मे से एक योगिनी।

विशेष—बाकी सात योगिनियाँ ये हैं—मगला, पिंगला, धन्या, भ्रमरी, भद्रिका, उल्का और सिद्धि।

सकटाक्ष¹—संज्ञा पु० [सं० सङ्कटाक्ष] धौ का पेड। धव।

सकटापन्न—वि० [सं० सङ्कटापन्न] सकट या विपत्ति मे पडा हुआ। उ०—छुरे की धार के समान दुर्गम और सकटापन्न है। —सत० दरिया, पृ० ५६।

सकटी—वि० [सं० सङ्कटिन्] विपद्ग्रस्त। दुखी। सकटापन्न (को०)।

सकटोत्तीर्ण—वि० [सं० सङ्कटोत्तीर्ण] जो सकट को पार कर गया हो (को०)।

सकत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सङ्केत] दे० 'सकेत'।

सकथन—संज्ञा पु० [सं० सकथन, सङ्कथन] १ वार्ता। बातचीत। २. वर्णन। व्याख्या (को०)।

सकथा—संज्ञा स्त्री० [सं० सकथा, सङ्कथा] १ वार्ता। बातचीत। २. व्याख्या। प्रतिपत्ति (को०)।

सकथित—वि० [सं० सकथित, सङ्कथित] कहा हुआ। वर्णित। व्याख्यात (को०)।

सकना(पु)†—क्रि० अ० [सं० शङ्कन] १ शका करना। सदेह करना। २ डरना। भयभीत होना। उ०—पाँड परे पनिका पै परी जिन सकति सोनिन होति न सोंही।—देव (शब्द०)।

सकनी†—संज्ञा स्त्री० [सं० शाकिनी] दे० 'शाकिनी'। उ०—डकनी सकनी घेरि मारी।—रामानद०, पृ० ४।

सकर¹—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कर] १ वह धूल जो झाड देने के कारण उडती है। २ आग के जलने का शब्द। ३. दो पदार्थो का परस्पर मिश्रण। दो चीजो का आपस मे मिलना। ४ न्याय के अनुसार किसी एक स्थान या पदार्थ मे अत्यताभाव और समानाधिकरण का एक ही मे होना। जैसे,—मन मे मूर्तत्व

तो हे, पर भूतत्व नहीं हे, और आकाश मे भूतत्व है, पर मूर्त्तत्व नहीं हे। परतु पृथ्वी मे भूतत्व भी है और मूर्त्तत्व भी हे। ५ वह जिसकी उत्पत्ति भिन्न वर्ण या जाति के पिता और माता से हुई हो। दोगला। ६ मल। विष्ठा (को०)। ७ काव्यशास्त्र के अनुसार एक वाक्य मे दो या अधिक अलकारो का मिश्रण (को०)। ८ ऐसी वस्तु जो किसी वस्तु से छू जाने पर दूषित हो जाय (को०)। ९ भिन्न जाति या वर्ण का मिश्रण। दो भिन्न वर्णों का एक मे (विवाहादि द्वारा) मिलना (को०)।

यौ०—वर्णसकर = दोगला।

सकर²—सज्ञा पुं० [स० शङ्कर, प्रा० सकर] दे० 'शकर'। शिव। उ०—करेहु सदा सकर पद पूजा। नारि धरम पतिदेव न दूजा।—मानस, १।१०२।

सकर(पु)³—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्खल, प्रा० सकल] दे० 'सकल¹'। उ०—सकर सिंघ कि छुट्टि, छुट्टि इद्रह कि गरुअ गज।—पृ० रा०, ५।५६।

सकरक—वि० [स० सङ्करक] मिश्रण करनेवाला।

संकरकारक—वि० [स० सङ्करकारक] मिश्रण या घालमेल करनेवाला।

सकरकारी—वि० [स० सङ्करकारिन्] १ किसी अन्य वर्ण की स्त्री से अवैध सबध रखनेवाला। २ दे० 'सकरकारक' (को०)।

सकरघरनी(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्कर+गृहणी] शकर की पत्नी, पार्वती।

संकरज—वि० [स० सङ्करज] जो दो विभिन्न वर्णों के सयोग से उत्पन्न हो। मिश्र जाति से उत्पन्न (को०)।

संकरजात—वि० [सं० सङ्करजात] दे० 'सकरज' (को०)।

सकरजाति, सकरजातीय—वि० [स० सङ्करजाति, सङ्करजातीय] दे० 'सकरज' (को०)।

सकरता—सज्ञा स्त्री० [सं० सङ्करता] १ सकर होने का भाव या धर्म। २ सांकर्य। मिलावट। घालमेल।

सकरपन(पु)—सज्ञा पुं० [स० सङ्कर्षण] १ शेषनाग। सकर्षण। उ०—सकरपन फुकरै काल हुकरै उतलै।—हम्मीर०, पृ० १३। २ बलराम।

सकरा सज्ञा पु० [स० शङ्कर] एक राग। दे० 'शकरा'।

सकराश्व—सज्ञा पुं० [स० सङ्कराश्व] खच्चर।

सकरित —वि० [स० सङ्करित] जिसमे मिलावट हो। मिला हुआ।

संकरिया—सज्ञा पु० [स० सङ्कर+हिं० इया (प्रत्य०)] एक प्रकार का हाथी जो कमरिया और मिरगी के बीच की श्रेणी का होता है। इसका मूल्य कमरिया से कम होता है।

सकरी¹—सज्ञा पु० [स० सङ्करिन्] १ वह जो भिन्न वर्ण या जाति के पिता और माता से उत्पन्न हो। सकर। दोगला। २ मिला हुआ। मिश्रित। ३ अवैध सबध रखनेवाला (को०)।

सकरी²—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्करी] दे० 'शकरी'।

सकरीकरण—सज्ञा पुं० [स० सङ्करीकरण] १. नौ प्रकार के पापो मे से एक प्रकार का पाप जो गधे, घोडे, ऊँट, मृग, हाथी, बकरी, भेड, मीन, साँप या भैंसे का बध करने से होता हे। इसके प्रायश्चित्त के लिये कृच्छ्र या अतिकृच्छ्र व्रत करने का विधान है। २ दो पदार्थों को एक मे मिलाने की क्रिया। ३ वर्णसकरता करना। दो विभिन्न वर्ण या जातियो मे सबध करना।

सकर्प—सज्ञा पु० [स० सङ्कर्ष] अपनी ओर खीचना। नजदीक लाना। समीप लाना (को०)।

सकर्षण—सज्ञा पुं० [स० सङ्कर्षण] १ खीचने की क्रिया। २ हल मे जोतने की क्रिया। ३. कृष्ण के भाई बलराम का एक नाम। ४ एकादश रुद्रो मे से एक रुद्र का नाम। ५ वैष्णवो का एक सप्रदाय जिसके प्रवर्तक निवार्काचार्य थे। ६. आकर्षण (को०)। ७ छोटा करना (को०)। ८ शेषनाग (को०)। ९ गर्व घमड। अहकार। (को०)।

सकर्षण विद्या—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की विद्या जिससे किसी स्त्री के गर्भ को दूसरी स्त्री मे स्थापित किया जाता था। (देवकी के सातवें गर्भ को इसी विद्या द्वारा रोहिणी मे स्थापित किया गया था। इसी से बलराम का एक नाम सकर्षण है)।

सकर्षी—वि० [स० सङ्कर्षिन्] १ खीच लेनेवाला। पास मे कर लेनेवाला। २ छोटा करनेवाला। सकुचित करने या सिकोड लेनेवाला (को०)।

सकल¹—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्खला, प्रा० सकल] १ दरवाजे मे लगाने की सिकडी या जजीर। २ पशुओ को बाँधने का सिक्कड। ३ सोने या चाँदी की जजीर जो गले मे पहनी जाती है। जजीर। ४ शृखला। बधन। उ०—सकल ही तें सब लहै माया इहि ससार। ते क्यूँ छूटैं बापुडे बाँधे सिरजनहार।—कबीर ग०, पृ० ३४।

सकल²—सज्ञा पुं० [स० सङ्कल] १ बहुत सी चीजो को एक स्थान पर एकत्र करना। सकलन। एकत्रीकरण। २ योग। मिलाना। ३ गणित की एक क्रिया जिसे जोड कहते हैं। योग। दे० 'सकलन'। ४. राशि। ढेर (को०)।

सकलन—सज्ञा पु० [स० सङ्कलन] [स्त्री० सकलना] [वि० सकलित] १ एकत्र करने की क्रिया। सग्रह करना। २ सग्रह। ढेर। ३ गणित की योग नाम की क्रिया। जोड। ४ अनेक ग्रथो से अच्छे अच्छे विषय चुनने की क्रिया। ५ वह ग्रथ जिसमे ऐसे चुने हुए विषय हों। ६. सपर्क। सबध। ७ योग (को०)। ८ टक्कर। धक्का। मुठभेड (को०)। ९ योजन। मिलाना। लपेटना (को०)।

सकलना—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्कलना] दे० 'सकलन' (को०)।

सकलप—सज्ञा पु० [स० सङ्कल्प] दे० 'सकल्प'। उ०—जाइ उपाय रचहु नृप एहू। सबत भरि सकलप करेहू।—मानस, १।१६८।

सकलपना(पु)¹—क्रि० स० [स० सङ्कल्प+हिं० ना (प्रत्य०) अथवा सकल्पना] १ किसी बात का दृढ निश्चय करना। उ०—जैसो पति तेरे लिये में सकलप्यो आप। तैसो तै पायो सुता अपने पुन्न प्रताप।—लक्ष्मणसिह (शब्द०)। २. किसी धार्मिक कार्य के निमित्त कुछ दान देना। सकल्प करना।

सकलपना²—क्रि० अ० विचार करना। इच्छा करना। इरादा करना।

सकला¹—सज्ञा पु० [सं० शाक] शक द्वीप।

सकला[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खला, प्रा० सकला] दे० 'सकल'। उ०—मनो सकला हेम ते सिघ छुट्ट।—पृ० रा०, २।५०३।

सकला[३]—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कला] एकत्रीकरण। जोडना। मिलाना [को०]।

सकलित[१]—वि० [सं० सङ्कलित] १ चुना हुआ। संगृहीत। २ जोड लगाया हुआ। योजित। ३ इकट्ठा किया हुआ। एकत्र किया हुआ। ४. गृहीत। पुन प्राप्त किया या पकडा हुआ (को०)।

सकलित[२]—संज्ञा पु० जोड। योग [को०]।

संकलुष—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कलुष] कालुष्य। अशुद्धता [को०]।

सकल्प—संज्ञा पु० [सं० सङ्कल्प] १ कार्य करने की वह इच्छा जो मन मे उत्पन्न हो। विचार। इरादा। २ दान, पुण्य या और कोई देवकार्य आरभ करने से पहले एक निश्चित मत्र का उच्चारण करते हुए अपना दृढ निश्चय या विचार प्रकट करना। ३ वह मत्र जिसका उच्चारण करके इस प्रकार का निश्चय या विचार प्रकट किया जाता है।

विशेष—इस मत्र मे प्राय सवत्, मास, तिथि, वार, स्थान, दाता या कर्ता का नाम, उपलक्ष और दान या कृत्य आदि का उल्लेख होता है।

४ दृढ निश्चय। पक्का विचार। जैसे,—मैंने तो अब यह सकल्प कर लिया है कि कभी उसके साथ कोई व्यवहार न रखूँगा। ५ उद्देश्य। लक्ष्य (को०)। ६. विमर्श। ऊहा। कल्पना (को०)। ७. मन। हृदय (को०)। ८. पति के साथ सती होने की आकाक्षा (को०)।

यौ०—सकल्पज। सकल्पजन्मा। सकल्पजूति = सकल्प या कामना द्वारा प्रेरित। सकल्पप्रभव। सकल्पभव। सकल्पमूल = विचार या दृढ इच्छाशक्ति जिसके मूल मे हो। सकल्पयोनि। सकल्परूप = इच्छा के अनुरूप। सकल्पसपत्ति = कामना की पूर्ति। सकल्पसभव = (१) सकल्प या विचार से उत्पन्न। (२) कामदेव। सकल्पसिद्ध = विचार मात्र से पूर्ण होनेवाला। सकल्पसिद्धि = उद्देश्य की वह सिद्धि जो सकल्प द्वारा पूर्ण हो।

संकल्पक—वि० [सं० सङ्कल्पक] विचार करनेवाला। इच्छा करनेवाला। सकल्प करनेवाला [को०]।

संकल्पज[१]—वि० [सं० सङ्कल्पज] इच्छा, विचार या सकल्प से उत्पन्न होनेवाला [को०]।

सकल्पज[२]—संज्ञा पुं० १ इच्छा। काम। २ कामदेव [को०]।

सकल्पजन्मा—संज्ञा पु० [सं० सङ्कल्पजन्मन्] दे० 'सकल्पज'।

सकल्पन—संज्ञा पु० [सं० सङ्कल्पन] उद्देश्य। अभिलाषा। इच्छा [को०]।

सकल्पना[१]—क्रि० स०, क्रि० अ० [सं० सकल्प + हिं० ना (प्रत्य०)] दे० 'सकलपना'। उ०—सकलपि सिय रामहि समर्पी सील सुख सोभामई।—तुलसी ग्र०, पृ० ५८।

सकल्पना[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कल्पना] १ सकल्प करने की क्रिया। २. वासना। इच्छा। अभिलाषा।

सकल्पनीय—वि० [सं०] १ कामना करने योग्य। जिसकी कामना या चाह की जाय। २. प्रतिज्ञा करने योग्य। जिसके लिये निश्चय किया जाय [को०]।

सकल्पप्रभव—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव [को०]।

सकल्पभव—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

संकल्पयोनि—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव। मदन। २. आकाक्षा। इच्छा। कामना [को०]।

सकल्पा—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कल्पा] दक्ष की एक कन्या जो धर्म की भार्या थी।

सकल्पात्मक—वि० [सं० सङ्कल्पात्मक] जिसमे सकल्प या दृढ इच्छाशक्ति निहित हो। जिसका निश्चय किया गया हो [को०]।

सकल्पित—वि० [सं० सङ्कल्पित] १ कल्पित। जिसकी कल्पना की गई हो। २ जिसका दृढ निश्चय किया गया हो। जिसके लिये प्रतिज्ञात हो। ३. इच्छित। विचारित। लक्षित [को०]।

सकष्ट—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कष्ट] दुख। कष्ट। दे० 'सकट'। उ०—भक्त सकष्ट अवलोकि पितुवाक्य कृत गमन किय गहन वैदेहिभर्ता।—तुलसी ग्र०, पृ० ४८८।

सकसुक—वि० [सं० सङ्कसुक] १. जो स्थिर न हो। चचल। २. सदिग्ध। सदेहास्पद। अनिश्चित। ३. बुरा। बदमाश। ४. कमजोर। बलहीन [को०]।

सका—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्का] दे० 'शका'। उ०—देखि प्रताप न कपि मन सका। जिमि अहिगन महुँ गरुड असका।—मानस, ५।२०।

सकार[१]—संज्ञा पु० [सं०] १. कूडा करकट या धूल जो झाड़ू देने से उडे। २ आग के जलने का शब्द।

यौ०—सकारकूट = कूडे कचरे की राशि।

सकार(पु)[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्केत, या हिं० सनकार ?] इशारा। सकेत।

सकारना—क्रि० स० [हिं० सकार + ना (प्रत्य०), या हिं० सनकारना] सकेत करना। इशारा करना।

सकारी[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कारी] वह कन्या जिसका कौमार्य सद्य भग हुआ हो [को०]।

सकारी[२]—वि० [सं० सङ्कारिन्] १. सकीर्ण। मिश्रित। सकर। २ मिश्रित या सकर जाति से उत्पन्न [को०]।

सकाश[१]—अव्य० [सं० सङ्काश] १ समान। सदृश। मिलता जुलता। (समासात मे)। उ०—तुषाराद्रि सकाश गौर गभीर।—मानस, ७।१०८। २ समीप मे। निकट या पास मे (को०)।

सकाश[२]—अव्य० समीप। निकट। पास।

सकाश[३]—संज्ञा पु० १. उपस्थिति। मौजूदगी। २ पडोस। प्रतिवेश। सकास [को०]।

संकाश[४]—संज्ञा पुं० [सं० सम् + काश् (= चमकना)] प्रकाश। चमक। दीप्ति।

सकास(पु)—अव्य० [सं० सङ्काश] दे० 'सकाश'। उ०—(क) देव-रिक्ष मर्कट विकट सुभट उद्भट समर सैल सकास रिपु त्रासकारी। बद्ध पाथोधि सुर निकर मोचन सकुल दलन दससीस भुज बीस भारी।—तुलसी (शब्द०)। (ग) स्वन गैल सकास कोटि रवि तरुन तेज घन।—तुलसी (शब्द०)।

सकित(पु)—वि० [सं० शङ्कित] दे० 'शकित'। उ—(क) साहिब महेस सदा सकित रमेस मोहि, महातप साहस विरचि लीन्हे मोल है।—तुलसी ग्र०, पृ० १७६। (ख) तेवरो को देख उन्हें सकित सराहिए।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० २०१।

सकिल—संज्ञा पुं० [सं० साङ्किल] लुकारी। जलती हुई लकड़ी या मशाल [को०]।

सकिस्त†—वि० [सं० सङ्कृष्ट या सङ्कष्ट = सकट (= सकरा)] जो अधिक चौड़ा न हो। सँकरा। तग।

सकीरन‡—वि० [सं० सङ्कीर्ण] दे० 'सकीर्ण'।

सकीर्ण¹—वि० [सं० सङ्कीर्ण] १ जो अधिक चौड़ा या विस्तृत न हो। सकुचित। तग। सँकरा। २ मिश्रित। मिला हुआ। ३ क्षुद्र। छोटा। ४ नीच। तुच्छ। ५ वर्णसकर। ६ बिखरा हुआ। छिटकाया हुआ (को०)। ७ मदमत्त (हाथी) (को०)। ८ अव्यवस्थित। क्रमहीन। अस्पष्ट (को०)।

यौ०—सकीर्णजाति = (१) वर्ण की सकरता से उत्पन्न व्यक्ति। (२) दोगली नस्ल का। जैसे, खच्चर। सकीर्णयुद्ध = वह युद्ध जिसमे अनेक प्रकार के अस्त्र शस्त्रों का प्रयोग किया जाय। सकीर्णयोनि = दे० सकीर्णजाति।'

सकीर्ण²—संज्ञा पुं० १ वह राग या रागिनी जो दो अन्य रागों या रागिनियों को मिलाकर बने।

विशेष—इसके १६ भेद कहे गए हैं—चैत्र, मगलक, नगनिका, चर्चा, अतिनाठ, उत्नवी, दोहा, वहुला, गुरुवला, गीता, गोवि, हेम्ना, कोपी, कारिका, त्रिपदिका, और अग्रा।

२ सकट। विपत्ति। ३ अतर्जातीय सबध से उत्पन्न या सकर जाति का व्यक्ति (को०)। ४ मतवाला हाथी (को०)।

सकीर्ण³—संज्ञा पुं० साहित्य मे एक प्रकार का गद्य जिसमे कुछ वृत्तिगधि और कुछ अवृत्तिगधि का मेल होता है।

सकीर्णता—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कीर्णता] १ सकीर्ण होने का भाव। २ तगी। सँकरापन। ३ नीचता। ४ क्षुद्रता। ओछापन।

सकीर्णा—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कीर्णा] पहेली का एक भेद [को०]।

सकीर्तन—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कीर्तन] [स्त्री० सकीर्तना] [वि० सकीर्तित] १ भली भाँति किसी की कीर्ति का वर्णन करना। प्रशसा करना। २ किसी देवता की सम्यक् रूप से की हुई वदना या भजन नाम आदि जपना। ३ किसी देवता की स्तुति। स्तवन (को०)।

सकीर्तित—वि० [सं० सङ्कीर्तित] १ जिसका सकीर्तन किया गया हो। स्तुत। प्रशसित [को०]।

सकील—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कील] पुराणानुसार एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सकुचित—वि० [सं० सङ्कुभित] भरा हुआ। बन्द। ढँका [को०]।

सकु¹—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कु] विवर। सूराख। छिद्र [को०]।

सकु(पु)²—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कु] १ कोई नोकदार वस्तु। २ भाला। बरछा।

सकुचन—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कुचन] १ सकुचित होने की क्रिया। सिकुड़ना। २ बालकों का एक प्रकार का रोग जिसकी गणना बालग्रह मे होती है। ३ लज्जित होने की क्रिया [को०]।

सकुचित—वि० [सं० सङ्कुचित] १ सकोचयुक्त। लज्जित। जैसे, सकुचित दृष्टि। २ सिकुड़ा हुआ। सिमटा हुआ। ३ तग। सँकरा। सकीर्ण। ४ उदार का उलटा। अनुदार। क्षुद्र। ५. मुँदा हुआ। बंद (को०)। ६ नम्र। नत। मुड़ा हुआ (को०)।

सकुट—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कट] दे० 'सकट'। उ०—(क) सकुट सबा नरक न सेहु, ताको कबहूँ काल न खाइ। सपन माहि भै भ्रम भागै, सब विधि तेसो सग लगाइ।—दादू०, पृ० ६६७।

सकुटि†—संज्ञा पुं० [सं० शकट, हि० सकट, साटा] सामग्री गाड़ी। उ०—स्वादै हि सकुटि परा देखत ही सब भरो रे। सुरति मूठी छाडि दे हाडि रह्यो निरवरो रे।—दादू०, पृ० ५८६।

सकुपित—वि० [सं० सङ्कुपित] क्रुद्ध। नाराज। उत्तेजित [को०]।

सकुल¹—वि० [सं० सङ्कुल] १ सकुचित। सकीर्ण। घना। २. भरा हुआ। परिपूर्ण। ३. अव्यवस्थित (को०)। ४ विद्ध (को०)। ५ आगत (को०)। ६. उग्र। प्रबल। प्रचड (को०)। ७ घबड़ाया हुआ (को०)।

सकुल²—संज्ञा पुं० १. युद्ध। समर। लड़ाई। २ समूह। झुंड। ३. भीड़। ४. जनता। ५ परस्पर विरोधी वाक्य। ६ ऐसे वाक्य जिनमे परस्पर किसी प्रकार की सगति न हो। असगत वाक्य। ७ नाश (को०)।

सकुलता—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कुलता] १ सकुलित होने का भाव। परिपूर्णता। २ गड़बड़ी। असगति। अव्यवस्थिति। ३. घनता। घनापन। ४ जटिलता [को०]।

सकुलित—वि० [सं० सङ्कुलित] १. जो सकुल या पूर्ण हो। भरा हुआ। २ एकत्र। ३ घना। ४ अव्यवस्थित। घबराया हुआ (को०)। ५ बँधा हुआ। उ०—शिरसि सकुलित कलकूट पिगला जटा, पटल शत कोटि विद्युच्छटाभम्।—तुलसी ग्र०, पृ० ४६०।

सकुश—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कुश] एक प्रकार की मछली जिसे शकु भी कहते हैं।

सकूजित—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कूजित] १ चकवा पक्षी की आवाज। २. पक्षियों का कूजन [को०]।

सकृति¹—वि० [सं० सङ्कृति] १ इकट्ठा करनेवाला। २ ठीक करनेवाला। ३ तैयार करनेवाला [को०]।

सकृति²—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छद [को०]।

सकृति³—संज्ञा पुं० एक साम [को०]।

सकृत्त—वि० [सं०] टुकड़े टुकड़े काटा हुआ। काटकर टुकड़े टुकड़े किया हुआ [को०]।

संक्रुष्ट—वि० [सं०] १. खींचकर पास लाया हुआ। खींचा हुआ। २ एक साथ किया हुआ [को०]।

संकेत—संज्ञा पुं० [सं०] १ अपना भाव प्रकट करने के लिये किया हुआ कायिक परिचालन या चेष्टा। इशारा। इंगित। २ प्रेमी प्रेमिका के मिलने का पूर्वनिर्दिष्ट स्थान। वह स्थान जहाँ प्रेमी और प्रेमिका मिलना निश्चित करे। सहेट। ३ कामशास्त्र संबंधी इंगित। शृंगार चेष्टा। ४ प्रेमी और प्रेमिका द्वारा किया गया निश्चय (को०)। ५ परंपरा। करार। ठहराव (को०)। ६ व्यवस्था। विधान। शर्त (को०)। ७ चिह्न। निशान। ८ पते की बातें। उ०—सरुष जानकी जानि कपि कहे सकल संकेत। दीन्हि मुदिका लीन्हि सिय प्रीति प्रतीति समेत।—तुलसी (शब्द०)। ९ न्याय, व्याकरण आदि में एक वृत्ति। यह शब्द या पद इस प्रकार का अर्थबोधन करे यह संकेत या इच्छा (को०)।

यौ०—संकेतकेतन, संकेतगृह, संकेतनिकेत, संकेतनिकेतन, संकेतभूमि, संकेतस्थल, संकेतस्थान = प्रेमी प्रेमिका का मिलन स्थान। सहेट।

संकेतक—संज्ञा पुं० [सं०] १ निर्धारण। सहमति। निश्चय। २ संकेतस्थल। ३ मिलन का निश्चय करनेवाली नायिका या नायक [को०]।

संकेतग्रह, संकेतग्रहण—संज्ञा पुं० [सं० सङ्केतग्रह, सङ्केतग्रहण] शब्दार्थ ग्रहण करने की क्रिया। शब्द की अर्थ बोध कराने की शक्ति का आधारभूत धर्म। संकेत या अभिप्राय का ग्रहण। उ०—शब्द की अर्थबोधन शक्ति, शब्द और अर्थ का संबंध अथवा संकेतग्रहण भाषाज्ञान के लिये आवश्यक है।—भाषा शि०, पृ० १८।

विशेष—वक्ता द्वारा कहे गए शब्द सुनने पर श्रोता जिस क्रिया से वक्ता के शब्द का ठीक ठीक अभिप्राय आत्मगत करता है उसे संकेतग्रह या संकेतग्रहण कहते हैं।

संकेतन—संज्ञा पुं० [सं० सङ्केतन] १ आपसी निश्चय। २ सहेट। मिलने का स्थान [को०]।

संकेतवाक्य—संज्ञा पुं० [सं०] स्वपक्ष के व्यक्ति का परिचायक विशिष्ट शब्द [को०]।

संकेतित—वि० [सं० सङ्केतित] १ निश्चित किया हुआ। ठहराया हुआ। २ आहूत। निमंत्रित। ३ इशारा किया हुआ। इंगित [को०]।

यौ०—संकेतितार्थ = वह अर्थ जो संकेतित या इंगित हो।

संकोच—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कोच] १ सिकुड़ने की क्रिया। खिंचाव। तनाव। जैसे, अंगसंकोच, गात्रसंकोच। २ लज्जा। शर्म। ३ भय। ४ आगा पीछा। पसोपेश। हिचकिचाहट। ५ कमी। ६ एक प्रकार की मछली। ७ केसर। कुमकुम। ८ एक अलंकार जिसमें 'विकास अलंकार' से विरुद्ध वर्णन होता है या किसी वस्तु का अतिशय संकोच वर्णन किया जाता है। ९ बहुत सी बातों को थोड़े में कहना। १० बंद होना। मुँदना। जैसे, कमलसंकोच, नेत्रसंकोच (को०)। ११ शुष्क होना। सूखना। उ०—जलसंकोच विकल भइ मीना।—मानस, ४। २०। १२ बंधन। बंध (को०)। झुकना। नम्र होना (को०)।

यौ०—संकोचकारी = (१) नम्र होनेवाला। (२) लज्जालु। शरमीला। संकोचपत्रक। संकोचपिशुन। संकोचरेखा = सिकुड़न की रेखा। झुर्री।

संकोचक—वि० [सं० सङ्कोचक] जो संकुचित करे। संकोचन करनेवाला [को०]।

संकोचन[1]—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कोचन] १ सिकुड़ने की क्रिया। २ एक पर्वत का नाम (को०)।

संकोचन[2]—वि० १ लज्जा करनेवाला २ सिकुड़नेवाला [को०]।

संकोचनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कोचनी] लजालू नाम की लता।

संकोचपत्रक—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कोचपत्रक] वृक्षों का एक प्रकार का रोग जिसमें उनके पत्तों के ऊपर कुछ दाने से निकल आते हैं और पत्ते सिकुड़ जाते हैं।

संकोचपिशुन—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कोचपिशुन] कुंकुम। केसर।

संकोचित[1]—वि० [सं० सङ्कोचित] १ संकोचयुक्त। जिसमें संकोच हो। २ जो विकसित या प्रफुल्लित न हो। अप्रफुल्लित। ३ लज्जित। शर्मिंदा।

संकोचित[2]—संज्ञा पुं० तलवार के बत्तीस हाथों में से एक हाथ। तलवार चलाने का एक ढंग या प्रकार।

संकोची—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कोचिन्] १ संकोच करनेवाला। २. सिकुड़नेवाला। ३. जिसे संकोच या लज्जा हो। शर्म करनेवाला।

संकोपना(पु)—क्रि० अ० [सं० सम् + कोप + हिं० ना० (प्रत्य०)] क्रोध करना। क्रुद्ध होना। गुस्सा करना।

संक्रंद—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्रन्द] १ युद्ध। लड़ाई। २ कोलाहल। शोरगुल। ३. रोना। आक्रंदन। विलपना। ४ सोमरस को निकालने या निचोड़ने का साधन। अभिषवण [को०]।

संक्रंदन—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्रन्दन] १ शक्र। इंद्र। सुरपति। उ०—संक्रंदन कृपाल सुरत्राता। वज्री भुक्ति मुक्ति के दाता।—गिरिधर (शब्द०)। २ पुराणानुसार भौत्य मनु के पुत्र का नाम। ३ लड़ाई। युद्ध। संग्राम (को०)। ४. दे० 'क्रंदन'।

यौ०—संक्रंदननंदन, संक्रंदनपुत्र = (१) वालि नामक वानर। (२) अर्जुन। पार्थ।

संक्रम—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्रम] १ कष्ट या कठिनतापूर्वक बढ़ने की क्रिया। संप्रवेश। २ पुल आदि बनाकर किसी स्थान में प्रवेश करना। ३ पुल। सेतु। ४ प्राप्ति। ५ संक्रमण। संक्रांति। ६ साथ गमन करना। साथ जाना (को०)। ७ गमन। गति (को०)। ८ भ्रमण। संचलन (को०)। ९ दुर्गम रास्ता। तंग राह (को०)। १० उल्कापात। तारा टूटना (को०)। ११ विभिन्न राशियों में आकाशीय पिंड या ग्रहों के संचरण की कक्षा या मार्ग (को०)। १२ सोपान। सीढ़ी (को०)। १३ किसी लक्ष्य को प्राप्त करने का साधन या मार्ग (को०)।

**सक्रमण**—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्रमण] १ गमन। चलना। २ अतिक्रमण। ३ सूर्य का एक राशि से निकलकर दूसरी राशि मे प्रवेश करना। ४ घूमना। फिरना। पर्यटन। ५ मिलन। सयोग (को०)। ६ एक अवस्था से दूसरी अवस्था मे प्रवेश। ७ सूर्य के उत्तरायण होने का दिन (को०)। ८ परलोक यात्रा। मृत्यु (को०)। ९ सगमन। सहमति (को०)। १० मार्ग (को०)। ११ हस्तातरण (को०)।

**सक्रमणका**—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्क्रमणका] दीर्घिका। गैलरी (को०)।

**सक्रमित**—वि० [सं० सङ्क्रमित] १ परिवर्तित। २ प्रविष्ट (को०)।

**सक्रमिता**—वि० [सं० सङ्क्रमिता] १ सक्रमण करनेवाला। २ गमन करनेवाला। ३ प्रवेश करनेवाला (को०)।

**सक्रात**¹—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्रात] १ दायभाग के अनुसार वह धन जो कई पीढियो से चला आया हो। २ सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि मे जाना। विशेष दे० 'सक्राति'। ३ वह सपत्ति जो पति द्वारा स्त्री को प्राप्त हो। पति से प्राप्त स्त्री की सपत्ति (को०)।

**सक्रात**²—वि० १ मिला हुआ। प्राप्त। २ बीता हुआ। गत। ३ प्रविष्ट (को०)। ४ स्थानातरित। न्यस्त (को०)। ५ ग्रस्त। गृहीत (को०)। ६ प्रतिफलित। प्रतिबिंबित (को०)। ७ चित्रित (को०)। ८ सक्रातियुक्त (को०)।

**सक्राति**—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्क्रान्ति] १ एक राशि से दूसरी राशि मे गमन। २ सूर्य का एक राशि से दूसरी मे प्रवेश करने का समय।

**विशेष**—प्राय सूर्य एक राशि मे ३० दिन तक रहता है। और जब वह एक राशि से निकलकर दूसरी राशि मे जाता है, तब उसे सक्राति कहते हैं। वास्तव मे सक्राति काल वही होता है जब सूर्य दो राशियो की ठीक सीमा पर या बीच मे होता है। यह सक्राति काल बहुत थोडा होता है। पुराणानुसार यह काल बहुत पुनीत माना जाता है और इस समय लोग स्नान, दान, पूजन इत्यादि करते है। इस समय का किया हुआ शुभ काय बहुत पुण्यजनक माना जाता है।

३ वह दिन जिसमे सूर्य एक राशि से दूसरी राशि मे जाता है। ३, सगमन। मेल (को०)। ४ एक विंदु से दूसरे विंदु तक का मार्ग (को०)। ५ हस्तातरण (को०)। ६ प्रतिबिंब। ७ अकन। चित्रण (को०)। ८ विद्या दान की शक्ति (को०)।

**सक्रातिचक्र**—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्रान्तिचक्र] फलित ज्योतिष के अनुसार मनुष्यो के शुभ अशुभ जानने के हेतु बनाया हुआ मनुष्य के आकार का नक्षत्रो से अकित एक प्रकार का चक्र जिससे यह जाना जाता है कि मनुष्य के लिये किस सक्राति का फल शुभ और किसका अशुभ होगा।

**सक्राम**—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्राम] कष्ट या कठिनाई से युक्त प्रगति। सप्रवेश। दे० 'सक्रम'।

**सक्रामक**—वि० [सं० सङ्क्रामक] जो (रोग या दोष आदि) ससर्ग या छूत आदि के कारण एक से औरो मे फैलता हो। जैसे,—चेचक, प्लेग, महामारी, क्षयी आदि रोग सक्रामक होते है।

**सक्रामयितव्य**—वि० [सं० सङ्क्रामयितव्य] सक्रामित कराने के योग्य (को०)।

**सक्रामित**—वि० [सं० सङ्क्रामित] १ हस्तातरित। दिया हुआ। २ बतलाया हुआ (को०)।

**सक्रामी**—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्रामिन्] १ वह जो लोगो मे रोगो का सक्रमण कराता हो। रोग फैलानेवाला। २ वह जो सक्रमण करे या फैले। अन्य के पास जानेवाला (को०)।

**सक्रीड**—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्रीड] १ परिहास। हँसी ठट्ठा। क्रीडा। विनोद। २ एक साम का नाम।

**सक्रीडन**—संज्ञा पुं० [सं० सक्रीडन] १ खेल क्रीडा। विनोद। २ बहुतो का एक साथ क्रीडा, हास परिहास आदि करना (को०)।

**सक्रीडित**¹—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्रीडित] रथ चलने के समय होनेवाली आवाज (को०)।

**सक्रीडित**²—वि० क्रीडित। खेला हुआ (को०)।

**सक्रुद्ध**—वि० [सं० सङ्क्रुद्ध] बहुत अधिक क्रुद्ध (को०)।

**सक्रोन**(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्क्रमण] सक्रमण। सक्राति। विशेष दे० 'सक्राति'। उ०—तिय तिथि तरनि किसोर वय, पुन्य काल सम दोन। काहू पुन्यनि पाइयत, बैस सधि सक्रोन।—बिहारी (शब्द०)।

**सक्रोश**—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्रोश] १ जोर से शब्द करना। एक साथ चिल्लाना। २ एक साम का नाम। ३ क्रोध आदि के आवेश मे बोलना (को०)।

**सक्लिन्न**—वि० [सं० सङ्क्लिन्न] गीला। तरबतर। आर्द्र। (को०)।

**सक्लिष्ट**—वि० [सं० सङ्क्लिष्ट] १ मर्दित। कुचला हुआ। २ धब्बेदार (जैसे—आईना)। ३ कठिनाइयो से भरा हुआ। जो क्लिष्ट हो (को०)।

यौ०—सक्लिष्टकर्मा = वह जो किसी काम को बडी कठिनाई से करता हो।

**सक्लेद**—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्लेद] १ नमी। गीलापन। २ गर्भाशय से स्रवित होनेवाला वह द्रव पदार्थ जो गर्भाधान के बाद उत्पन्न होता है और जिससे भ्रूण को पोषण प्राप्त होता है (को०)।

**सक्लेश**—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्लेश] कष्ट। पीडा (को०)।

यौ०—सक्लेशनिर्वाण = कष्ट से मुक्ति। पीडा से छुटकारा।

**सक्लेशन**—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्लेशन] क्लेश देना (को०)।

**सक्षय**—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्षय] १ सम्यक् प्रकार से नाश। पूरी तरह बरबादी। २ विनाश। ध्वस। बरबादी। ३ प्रलय। ४ आश्रय। गृह। ५ हानि। क्षति (को०)। ६ समाप्ति। अत। लोप (को०)। ७ मृत्यु। मौत। ८ एक मरुत्वान् (को०)।

संक्षर—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्षर] १ वह स्थान जहाँ दो नदियाँ आदि मिलती हों। संगम। २ साथ साथ बहना (को०)। ३ एक साम का नाम।

संक्षालन—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्षालन] १ नहाने धोने के काम आनेवाला जल। २. प्रक्षालन। धोना (को०)।

संक्षालना—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्क्षालना] १ धोने की क्रिया। संक्षालन। २ मज्जन। स्नान (को०)।

संक्षिप्त—वि० [सं० संक्षिप्त, सङ्क्षिप्त] १ जो संक्षेप में कहा या लिखा गया हो। जो संक्षेप में किया गया हो। खुलासा। २ थोड़ा। अल्प। छोटा। ३ छोड़ा या फेंका हुआ। ४ पुंजीकृत। राशीकृत (को०)। ५. क्षीण किया हुआ। घटाया हुआ (को०)। ६ संयत। नियंत्रित (को०)। ७ अधिगृहीत (को०)।

संक्षिप्तत्व—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्षिप्तत्व] संक्षिप्त होने का भाव (को०)।

संक्षिप्तदैर्घ्य—वि० [सं० सङ्क्षिप्त दैर्घ्य] जिसकी दीर्घता कम की गई हो। जो कम लंबा हो (को०)।

संक्षिप्तलिपि—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक लेखनप्रणाली। संकेत लिपि।

विशेष—इसमें ध्वनियों के लिये ऐसे संक्षिप्त चिह्न या रेखाएँ नियत रहती हैं जिनके द्वारा लिखने से थोड़े काल और स्थान में बहुत सी बातें लिखी जा सकती हैं। व्याख्यान आदि के लिखने में यह अधिक सहायक होती है। व्यापारिक कार्यालयों में भी इसका प्रयोग होता है।

संक्षिप्ता—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्क्षिप्ता] ज्योतिष में बुध ग्रह की सात प्रकार की गतियों में से एक प्रकार की गति।

विशेष—बुध जिस समय पुष्य, पुनर्वसु, पूर्व फल्गुनी और उत्तर फल्गुनी नक्षत्र में होता है, उस समय उसकी गति संक्षिप्ता होती है। यह गति २२ दिन तक रहती है।

संक्षिप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] नाटक में चार प्रकार की आरभटियों में से एक प्रकार की आरभटी, जहाँ क्रोध आदि उग्र भावों की निवृत्ति होती है (जैसे,—रामचंद्रजी की बातों से परशुराम के क्रोध की निवृत्ति होना) वहाँ यह वृत्ति मानी जाती है। विशेष दे० 'आरभटी'। २ साथ साथ फेंकने की क्रिया (को०)। ३ संक्षेपीकरण। घटाना। ठोस या घना करना (को०)। ४. प्रेषण। भेजना (को०)। ५ घात में रहना। किसी गुप्त स्थान में छिपना (को०)।

संक्षेप—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्षेप] १ थोड़े में कोई बात कहना। २ संकोचन। घटाना। कम करना। ३ समाहार। संग्रह। समास। ४ चुंबक। ५ एक साथ फेंकना। ६ प्रेषण। भेजना (को०)। ७ संक्षिप्त करने का साधन (को०)। ८ अपहरण। ले लेना (को०)। ९ किसी दूसरे व्यक्ति के कार्य में सहायता पहुँचाना (को०)। १० संहार (को०)।

संक्षेपक—वि० [सं० सङ्क्षेपक] १. नष्ट करनेवाला। २ फेंकनेवाला। ३ संक्षेप करनेवाला। छोटा रूप देनेवाला (को०)।

संक्षेपण—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्षेपण] १ कम करना। संक्षेप करना। २ काट छाँट करने की क्रिया। ३. एकत्र करना। ढेर करना। ढेर लगाना (को०)। ४ प्रेषण। भेजना (को०)।

संक्षेपणीय—वि० [सं० सङ्क्षेपणीय] १. फेंकने योग्य। २ संक्षेप करने योग्य (को०)।

संक्षेपत—अव्य० [सं० सङ्क्षेपतस्] संक्षेप में। थोड़े में। मारांशत।

संक्षेपतया—अव्य० [सं० सङ्क्षेपतया] थोड़े में। संक्षेप में।

संक्षेपदोष—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्षेप दोष] साहित्य में एक प्रकार का दोष। जिस बात को जितने विस्तार से कहने या लिखने की आवश्यकता हो, उसे उतने विस्तार से न कह या लिखकर कम विस्तार से कहना या लिखना, जिससे प्राय सुनने या पढ़नेवाले की समझ में उसका ठीक ठीक अभिप्राय न आवे।

संक्षोभ—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्षोभ] १ चंचलता। २ कंपन। काँपना। ३. विप्लव। ४ उलट पुलट। ५ गर्व। घमंड। अभिमान। शेखी।

संख—संज्ञा पुं० [सं० शङ्ख, प्रा० संख] दे० 'शंख'। उ०—झाँझि मृदंग संख सहनाई।—मानस, १।२६३।

संखड†—संज्ञा पुं० [देशी] कलह। झगड़ा। संकट (को०)।

संखनारी—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्खनारी] एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक पद में दो यगण (य, य) होते हैं। इसे सोमराजी वृत्त भी कहते हैं।

संखला(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खला, प्रा० संखला सखला] दे० 'शृंखला'। उ०—आनँदघन कुलकानि संखला जरी तोरि महा मदमातो।—घनानंद, पृ० ३६६।

संखहुली—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'शंखपुष्पी'।

संखा—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कु] चक्की के ऊपरी पाट में लगी हुई लकड़ी की खूँटी जिसमें एक ओर छोटी लकड़ी जड़ी रहती है। हथबड़। हथ्था।

संखार—संज्ञा पुं० [हिं०] एक प्रकार का पक्षी जिसका रंग अबलक होता है और जिसकी चोंच चिपटी होती है।

संखाज†—संज्ञा पुं० [देशी] मृग की एक जाति। साँभर मृग (को०)।

संखिया—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गिका या शृङ्गविष] १ एक प्रकार की बहुत जहरीली प्रसिद्ध उपधातु या पत्थर।

विशेष—यह उपधातु कुमाऊँ, चितराल, स्वात, बाजौर (काफिर), उत्तरी बरमा और चीन आदि में पाई जाती है। प्राय इसका रंग सफेद या मटमैला होता है और यह चिकना तथा चमकीला होता है। जिस समय यह खान से निकलता है, उस समय बहुत कड़ा होता है और कठिनता से गलता है। पाश्चात्य वैज्ञानिक हरताल और मैनसिल को भी इसी के अंतर्गत मानते हैं। शास्त्रकार प्राय यही समझते हैं कि पत्थर पर रहनेवाले जहरीले बिच्छू के डंक मारने से यह संखिया बनता है।

२ उक्त धातु से तैयार किया हुआ भस्म जो देखने में सफेद होता है और विषैला भी।

विशेष—यह बाजारों में सफेद, पीले, लाल, काले आदि कई रंगों का मिलता है और प्रायः ओषधों में काम आता है। कुछ लोग कृत्रिम रूप से भी सखिया बनाते हैं। यह बहुत विकट विष होता है और प्रायः हत्या आदि के लिये काम में आता है। वैद्यक के अनुसार यह वीर्य तथा बलवर्धक, कांतिजनक, लोहभेदक, दाहजनक, वमनकारक, रेचक, त्रिदोषघ्न तथा सब प्रकार के दोषों का नाश करनेवाला माना जाता है। वैद्यक के अतिरिक्त हिकमत और डाक्टरी में भी इसका व्यवहार होता है और उनमें भी इसे बहुत बलवर्द्धक माना गया है।

पर्या०—आखुपाषाण। शखविष। शृंगिक। गौरीपाषाण। सोमल। सबुल। समुलखार।

सखोली(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सख + ओली (प्रत्य०)] छोटा शंख। उ०—दीनी एक सखोली हाथ। पूजा की सामग्री साथ। —अर्ध०, पृ० २१।

सख्य¹—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ख्य] युद्ध। समर। लड़ाई।

सख्य²—वि० दे० 'सख्येय' (को०)।

सख्यक—वि० [सं० सङ्ख्यक] जिसमें संख्या हो। संख्यावाला (समासांत में प्रयुक्त) जैसे, बहुसंख्यक।

सख्यता—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्ख्यता] संख्या का भाव या गुण। सख्यत्व।

सख्यत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सख्यता'।

सख्या—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्ख्या] १ वस्तुओं का वह परिमाण जो गिनकर जाना जाय। एक, दो, तीन, चार, आदि की गिनती। तादाद। शुमार। २ गणित में वह अंक जो किसी वस्तु का, गिनती में, परिमाण बतलाये। अदद। ३ वैद्यक में संप्राप्ति के पाँच भेदों में से एक भेद। अन्य चार भेद विकल्प, प्राधान्य बल और काल है। ४ बुद्धि। ५ विचार। ६ रीति। पद्धति। ढंग (को०)। ७ योग। जोड़ (को०)। ८ नाम। आख्या। संज्ञा (को०)। ९ समाचार पत्रों पर दिया गया क्रमांक (को०)। १० किसी सामयिक पत्र आदि की विशिष्ट संख्यावाली प्रति (को०)। ११ रेखागणित में कोणमान (को०)। १२ संग्राम। युद्ध (को०)।

यौ०—संख्यापद = अंक। संख्यापरित्यक्त = असंख्य। संख्यातीत। संख्यामंगलग्रंथि = बरसगाँठ समारोह। संख्यालिपि। संख्यावाचक = (१) संख्यासूचक। संख्या बतानेवाला। (२) अंक। संख्याविधान = गणना करना। संख्याशब्द = अंक। संख्याविधान संख्यासमापन = शिव। संख्यासूचक = संख्यावाचक।

सख्याक—वि० [सं० सङ्ख्याक] संख्यावाला। सख्यक। जैसे, शतसंख्याक।

सख्यात¹—वि० [सं० सङ्ख्यात] १ परिगणित। गिना हुआ। २ गिनती मिलाया हुआ। विचारित (को०)।

सख्यात²—संज्ञा पुं० १ संख्या। २ राशि। समूह (को०)।

सख्याता¹—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्ख्याता] एक प्रकार की पहेली (को०)।

सख्याता²—वि० [सं० सङ्ख्यातृ] परीक्षक। जाँच पड़ताल करनेवाला। गणक। जैसे, गो सख्याता (को०)।

सख्यातिग—वि० [सं० सङ्ख्यातिग] दे० 'संख्यातीत' (को०)।

सख्यातीत—वि० [सं० सङ्ख्यातीत] जिसकी गिनती न की जा सके। जो गणना से परे हो। अनगिनत (को०)।

सख्यान—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ख्यान] १, संख्या। गिनती। २. गिनने की क्रिया। शुमार। ३ ध्यान। ४ प्रकाश। ५ माप (को०)।

सख्यालिपि—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्ख्यालिपि] एक प्रकार की लेखनप्रणाली जिसमें वर्णों के स्थान पर संख्यासूचक चिह्न या अंक लिखे जाते हैं।

सख्यावान्¹—वि० [सं० सङ्ख्यावत्] १ संख्यावाला। गिना हुआ। २ हेतु या तर्क से युक्त (को०)।

सख्यावान्²—संज्ञा पुं० विद्वान् व्यक्ति (को०)।

सख्येय वि० [सं० सङ्ख्येय] १ जिसकी गणना की जा सके। गिना जाने के योग्य। गण्य। २ विचारणीय (को०)।

संग¹—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ग] १ मिलने की क्रिया। मिलन। २ संसर्ग। सहवास। सोहबत। जैसे,—बुरे आदमियों के संग में अच्छे आदमी भी बिगड़ जाते हैं।

क्रि० प्र०—करना।—छोड़ना।—टूटना।—रखना।

मुहा०—संग सोना = सहवास करना। समागम करना। उ०—संग सोई तो फिर लाज क्या (कहा०)। (किसी के) संग = साथ होलेना। पीछे लगना। (किसी को) संग लगना लेना = अपने साथ लेना या ले चलना। जैसे,—जब चलने लगना, तब हमें भी संग ले लेना।

३ विषयों के प्रति होनेवाला अनुराग। विषयवासना। ४ वासना। आसक्ति। ५ वह स्थान जहाँ दो नदियाँ मिलती हों। नदियों का संगम। ६ मैत्री। संपर्क। साथ (को०)। ७ योग। संगम (को०)। ८ मुठभेड़। लड़ाई (को०)। ९ बाधा (को०)।

यौ०—संगकर = आसक्त करनेवाला। संगत्याग = विराग। संगरहित, संगवर्जित = अनासक्त। आसक्तिरहित। संगविच्युति = विषयों से विराग।

संग²—क्रि० वि० साथ। हमराह। सहित। जैसे,—(क) उनके संग चार आदमी आए हैं। (ख) मरने पर क्या कोई हमारे संग जायगा? (ग) हम भी तुम्हारे संग चलेंगे।

संग³—संज्ञा पुं० [फा०] पत्थर। पाषाण। जैसे,—संगमूसा, संगमरमर, संग असवद।

यौ०—संग अंदाज = (१) ढेला फेंकने का यंत्र। गोफन। ढेलवास। (२) पत्थर फेंकनेवाला व्यक्ति। (३) किले की दीवारों में बने हुए छेद जिनसे शत्रु पर गोली तीर, पत्थर आदि फेंकते है। संग आसिया = चक्की का पाट। संगखारा। संगख्वार = शुतुरमुर्ग। संगचीनी = एक तरह का पत्थर। संगजराहत। संगतराश = बाट। बटखरा। संगदिल। संगपुश्त। संगफर्श = पत्थर का फर्श। संगबसरी। संगबार = पत्थर फेंकनेवाला।

सगवारान = ढेलो की वर्षा। सग मरमर = दे० 'सगमर्मर'। सगमुरदार = मुरदासख। सगयशब। सगमार। सग सुर्ख = एक प्रकार का लाल रग का पत्थर। सग सुलेमानी।

सग॑—वि० पत्थर की तरह कठोर। बहुत कडा।

विशेष—इस अर्थ मे इस शब्द का प्रयोग प्राय यौगिक शब्द बनाने मे उनके आरभ मे होता है। जैसे,—सगदिल = पाषाण हृदय। कठोर हृदय।

सग अंगूर—सज्ञा पु० [सग? हिं० अगूर] एक प्रकार की वनस्पति।

विशेष—यह हिमालय पर पाई जाती है और ओषधि के काम मे आती है। इसे अगूरशेफा, गिरी बूटी या पेवराज भी कहते हैं।

सग असवद—सज्ञा पुं० [फा० सग + अ० असवद] काले रंग का एक बहुत प्रसिद्ध पत्थर।

विशेष—यह काबा की दीवार मे लगा हुआ है और इसको हज करने के लिये जानेवाले मुसलमान बहुत पवित्र समझते तथा चूमते है। मुसलमानो का यह विश्वास है कि यह पत्थर स्वर्ग से लाया गया है, और इसे चूमने से पापो का नष्ट होना माना जाता है।

संगकूपी—सज्ञा स्त्री० [हिं०] एक प्रकार की वनस्पति जो ओषधि के काम मे आती है।

सगखारा—सज्ञा पुं० [फा० सग + खार] एक प्रकार का पत्थर जो कुछ नीलापन लिए भूरे रग का और बहुत कडा होता है। चकमक पत्थर।

सगजराहत—सज्ञा पु० [फा० सग + अ० जराहत] एक प्रकार का सफेद चिकना पत्थर जो घाव भरने के लिये बहुत उपयोगी होता है।

विशेष—इसे पीसकर बारीक चूर्ण बनाते हैं जिसे 'गच' कहते हैं और जो साँचा बनाने के काम मे भी आता है। इसका गुण यह है कि पानी के साथ मिलने पर यह फूलता है और सूखने पर कडा हो जाता है। इसलिये इससे मूर्तियाँ आदि भी बनाते है। इसे कुलगार, कारसी, सफेद सुरमा या सिल खडी भी कहते है।

सगट(पु)—सज्ञा पु० [स० सङ्कट] दे० 'सकट'। उ०—सगट तै हरि लेह उवारी। निसदिन सिवरौं नाँव तुमारी।—रामानद०, पृ० २६।

सगठन—सज्ञा पु० [स० सघटन, सङ्घटन या सम् + हिं० गठना] १ बिखरी हुई शक्तियो, लोगो या अगो आदि को इस प्रकार मिलाकर एक करना कि उनमे नवीन जीवन या बल आ जाय। किसी विशिष्ट उद्देश्य या कार्यसिद्धि के लिये बिखरे हुए अवयवो को मिलाकर एक और व्यवस्थित करना। एक मे मिलाने और उपयोगी बनाने के लिये की हुई व्यवस्था।

विशेष—वास्तव मे यह शब्द शुद्ध सस्कृत नही है, गलत गढा हुआ है, पर आजकल यह बहुत प्रचलित हो रहा है। कुछ लोग इससे, सस्कृत व्याकरण के नियमो के अनुसार 'सगठित', 'सगठनात्मक' आदि शब्द भी बनाते है, जो अशुद्ध है। कुछ लोगो ने इसके स्थान पर 'सघटन' शब्द का व्यवहार करना आरभ किया है, जो शुद्ध सस्कृत है।

२ वह सस्था या सघ आदि जो इस प्रकार की व्यवस्था से तैयार हो।

सगठित—वि० [सघटित हिं० सगठन] जो भलीभाँति व्यवस्था करके एक मे मिलाया हुआ हो। जो व्यवस्थित रूप मे और काम करने के योग्य मिलाकर बनाया गया हो।

सगणक—सज्ञा पु० [स० स + गणक] उच्च कोटि की सूक्ष्मतम एव जटिलतम गणना करनेवाला आधुनिक यत्र विशेष। (अ० कप्यूटर)।

सगणिका—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्गणिका] अप्रतिरूप कथा। सुदर वार्ता।

सगत॑—वि० [स० सङ्गत] १ मिला या जुडा हुआ। सयुक्त। २ एकत्र किया हुआ। एक मे मिलाया हुआ। ३ शादीशुदा। विवाहित। ४ मैथुन सबध मे ससक्त। सभोग मे लगा हुआ। ५ समुचित। युक्तियुक्त। उपयुक्त। ठीक। ६ कुचित। सिकुडा हुआ [को०]।

यौ०—सगतगात्र = सकुचित शरीरवाला।

संगत॑—सज्ञा पुं० १ मिलन। २ साथ। साहचर्य। ३ मित्रता। दोस्ती। अतरगता। ४ सामजस्यपूर्ण या उपयुक्त वाणी। युक्तियुक्त टिप्पणी (को०)।

सगत॑—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्गति] १ सग रहने या होने का भाव। साथ रहना। सोहबत। सगति। २ सग रहनेवाला। साथी। ३ वेश्याओ या भाँडो आदि के साथ रहकर सारगी, तबला, मँजीरा आदि बजाने का काम।

क्रि० प्र०—बजाना।—मे रहना।

मुहा०—सगत करना = गानेवाले के साथ साथ ठीक तरह से तबला, सारगी, सितार आदि का बजाना।

४ वह जो इस प्रकार किसी गाने या नाचनेवाले के साथ रहकर साज बजाता हो। ५ वह मठ जहाँ उदासी या निर्मले आदि साधु रहते है। ६ सबध। ससर्ग। ७ प्रसग। मैथुन। ८ दे० 'सगति'।

सगतसधि—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्गतसन्धि] १ कामदक नीति के अनुसार अच्छे के साथ सधि जो अच्छे और बुरे दिनो मे एक सी बनी रहती है। काचन सधि। २ मित्रता के अनतर होनेवाली सधि या सुलह (को०)।

संगतरा—सज्ञा पुं० [पुर्त्त० > फा०] एक प्रकार की बडी और मीठी नारगी। सतरा।

संगतराश—सज्ञा पुं० [फा०] पत्थर काटने या गढनेवाला मजदूर। पत्थरकट। २ एक औजार जो पत्थर काटने के काम मे आता है।

संगतार्थ॑—वि० [स०] ठीक ठीक अर्थ देनेवाला। उपयुक्त अर्थ का बोधक [को०]।

सगतार्थ॑—सज्ञा पुं० वह अर्थ जो ठीक या सगत हो [को०]।

संगति—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्गति] १ मिलने की क्रिया। मेल। मिलाप। २ संग साथ। सोहबत। संगत। ३ प्रसंग। मैथुन। ४ संबंध। ताल्लुक। ५ ज्ञान। ६ किसी विषय का ज्ञान प्राप्त करने के लिये बार बार प्रश्न करने की क्रिया। ७ युक्ति। ८ पहले लिखी या कही हुई बात के साथ बाद मे लिखी या कही हुई बात का मेल। आगे पीछे कहे जानेवाले वाक्यो आदि का मिलान।

क्रि० प्र०—बैठना।—मिलना।—लगना।—लगाना।

९ दे० 'संगत'। १० योग्यता। उपयुक्तता (को०)। ११ दैवयोग। संयोग (को०)। १२ संघ (को०)। १३ अधिकरण के पाँच अवयवो मे से एक (को०)।

संगतिया—संज्ञा पुं० [हिं० संगत+इया (प्रत्य०)] १ वह जो किसी गाने या नाचनेवाले के साथ रहकर सारंगी, तबला या और साज बजाता हो। साजिंदा। २ दे० 'संगाती'।

संगती—संज्ञा पुं० [हिं० संगत+ई (प्रत्य०)] १ वह जो साथ मे रहता हो। संग रहनेवाला। २ दे० 'संगतिया'।

संगथ—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गथ] संग्राम। युद्ध।

संगथा—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्गथा] नदियो का संगम (को०)।

संगदिल—वि० [फा०] जिसका हृदय पत्थर की तरह कठोर हो। कठोर-हृदय। निर्दय। दयाहीन।

संगदिली—संज्ञा स्त्री० [फा०] संगदिल होने का भाव। कठोर हृदयता। निर्दयता।

संगपुश्त—संज्ञा पुं० [फा०] पत्थर की तरह कड़ी पीठवाला, कच्छप। कछुआ। कमठ।

संगबसरी—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार की मिट्टी जिसमे लोहे का अंश अधिक होता है और जो इसी कारण दवा के काम मे आती है। यह फारस मे होती है और वही से आती है।

संगम—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गम] १ दो वस्तुओ के मिलने की क्रिया। मिलाप। समेलन। संयोग। समागम। मेल। उ०—आपुहि ते उठि यों चलै तिय पिय के संकेत। निसिदिन तिमिर प्रकास हू गनै न संगम हेत।—देव (शब्द०)। २ दो नदियो के मिलने का स्थान। जैसे,—गंगा यमुना का संगम प्रयाग मे होता है। उ०—ज्योति जगै यमुना सी लगै जग लाल विलोचन पाप विनासै। सूर सुता शुभ संगम तुंग तरंग तरंगिणि गंग सी भासै।—केशव (शब्द०)। ३ साथ। संग। सोहबत। उ०—पद्मावत सों कह्यो विहंगम। कंत लुभाय रहा जेहि संगम।—जायसी (शब्द०)। ४ स्त्री और पुरुष का संयोग। मैथुन। प्रसंग।

यौ०—संगम साध्वस = संयोग काल की घबराहट।

५ ज्योतिष मे ग्रहो का योग। कई ग्रहो आदि का एक स्थान पर मिलना या एकत्र होना। ६ उपयुक्त होने का भाव (को०)। ७ लड़ाई। समर (को०)। ८ संपर्क। स्पर्श (को०)।

संगमक—वि० [सं० सङ्गमक] मार्गदर्शक (को०)।

संगमन—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गमन] १ संयोग। मेल। संगम। २ यमराज का एक नाम (को०)।

संगमर—संज्ञा पुं० [देश०] वैश्यो की एक जाति।

संगमर्मर—संज्ञा पुं० [फा० संग+अ० मर्मर] एक प्रकार का बहुत चिकना, मुलायम और सफेद प्रसिद्ध पत्थर जो बहुत कीमती होता है।

विशेष—यह पत्थर मूर्ति, मंदिर तथा महल इत्यादि बनाने मे काम आता है। आगरे का ताजमहल इसी पत्थर का बना है। भारत मे यह जयपुर मे अधिक पाया जाता है। इसके अतिरिक्त अजमेर, किशनगढ़ और जोधपुर मे भी इसकी कुछ खाने है।

संगमित—वि० [सं० सङ्गमित] मिलाया हुआ। संयुक्त या इकट्ठा किया हुआ (को०)।

संगमूसा—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का काला, चिकना, कीमती पत्थर जो मूर्ति आदि बनाने के काम आता है।

संगयशब—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का कीमती पत्थर जिसका रंग कुछ हरापन लिए हुए होता है। इसे धो या घिसकर पीने से दिल का धड़कना कम हो जाता है। इसकी तावीज भी लोग पहनते है। हौल दिली।

संगर[1]—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गर] १ युद्ध। समर। संग्राम। २ आपद्। विपत्ति। ३ अंगीकार। स्वीकार। ४ प्रतिज्ञा। ५ प्रश्न। सवाल। ६ नियम। ७ विष। जहर। ८ शमी वृक्ष का फल। ९ निगल जाना (को०)। १० ज्ञान (को०)।

यौ०—संगरक्षम = युद्ध योग्य। युद्ध करने मे समर्थ या शक्त। संगरभूमि = लड़ाई का मैदान। युद्धभूमि। संगरस्थ = युद्धभूमि मे स्थित। युद्धलिप्त।

संगर[2]—संज्ञा पुं० [फा०] १ वह धुस या दीवार जो ऐसे स्थान मे बनाई जाती है, जहाँ सेना ठहरती है। रक्षा करने के लिये सेना के चारो ओर बनाई हुई खाई, धुस या दीवार। २ मोरचा।

संगरण—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गरण] किसी के पीछे चलना। पीछा करना।

संगराम ⓟ—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्राम] दे० 'संग्राम'।

संगरासिख—संज्ञा पुं० [हिं० या फा० हिं० का मिश्रण] ताँबे की मैल जो खिजाब बनाने के काम मे आती है।

संगरेजा—संज्ञा पुं० [फा०] पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े। कंकड़। बजरी।

संगल—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का रेशम जो अमृतसर से आता है।

विशेष—यह दो तरह का होता है—बरदवानी और बशीरी। यह बारीक और मजबूत होता है, इसलिये गोटा, किनारी आदि बनाने के काम मे बहुत आता है।

संगव—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गव] वह समय जब चरवाहा बछड़ो को दूध पिलाकर और गौओ को दुहकर चराने के लिये ले जाता है। प्रातःकाल के बाद तीन मुहूर्त का समय।

संगविनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्गविनी] वह बाड़ा या घर का जहाँ गाएँ दुहने के लिये एकत्र की जाती हैं [को०]।

संगसार¹—संज्ञा पुं० [फा०] प्राचीन काल का एक प्रकार का प्राणदंड।

विशेष—यह दंडविधान प्रायः अरब, फारस आदि देशों में प्रचलित था। इस दंड में अपराधी भूमि में आधा गाड़ दिया जाता था और लोग पत्थर मार मारकर उसकी हत्या कर डालते थे।

संगसार²—वि० नष्ट। चौपट। ध्वस्त।

संगसाल—संज्ञा पुं० [फा०] अफगानिस्तान की उत्तरी सीमा पर एक पहाड़ी में कटी हुई पत्थर की बहुत बड़ी मूर्ति का नाम।

विशेष—अफगानिस्तान की उत्तरीय सीमा पर तुर्किस्तान के मार्ग में समुद्र से आठ हजार फुट की ऊँचाई पर हिंदुकुश की घाटी में बहुत सी पुरानी इमारतों के चिह्न हैं। वहीं पहाड़ में बनी हुई दो बड़ी मूर्त्तियाँ भी हैं जिनमें से एक १८० और दूसरी ११७ फुट ऊँची है। वहाँवाले इन्हें संगसाल और शाहयम्मा कहते हैं।

संगसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सँड़सी] दे० 'सँड़सी'।

संगसुरमा—संज्ञा पुं० [फा०] काले रंग की वह उपधातु जिसे पीसकर आँखों में लगाने का सुरमा बनाया जाता है। विशेष दे० 'सुरमा'।

संग सुलेमानी—संज्ञा पुं० [फा० संग+अ० सुलेमानी] एक प्रकार के रंगीन पत्थर के नग जिनकी मालाएँ आदि बनाकर मुसलमान फकीर पहना करते हैं।

संगाती—संज्ञा पुं० [हिं० संग+आती (प्रत्य०)] १ वह जो संग रहता हो। साथी। संगी। २ दोस्त। मित्र।

संगाम(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्राम] दे० 'संग्राम'। उ०—राउत्ता पुत्ता चलए बहुत्ता अतरे पटरे सोहता। संगाम सुहव्वा जनि गधव्वा रूबें परमत मोहता।—कीर्ति०, पृ० ४८।

संगायन—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गायन] बहुतों का एक साथ गाना या स्तवन करना।

संगाव—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गाव] वार्तालाप। बातचीत [को०]।

संगिनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० संगी का स्त्री० रूप] १ साथ रहनेवाली स्त्री। सहचरी। २ पत्नी। भार्या। जोरू।

संगी¹—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गिन्, हिं० संग+ई (प्रत्य०)] १ वह जो सदा संग रहता हो। साथी। २ मित्र। बंधु।

संगी²—वि० १ संयुक्त। मिला हुआ। २ अनुरक्त। आसक्त। ३ कामुक। ४ अविच्छिन्न। सतत। ५ वांछा करनेवाला। स्पृही [को०]।

संगी³—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का कपड़ा जो विवाह आदि में वर का पाजामा तथा स्त्रियों के लहँगे इत्यादि के बनाने के काम में आता है।

संगी⁴—वि० [फा० संग (=पत्थर)] पत्थर का। संगीन। जैसे,—संगी मकान।

संगीत¹—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गीत] १ नृत्य, गीत और वाद्य का समाहार। वह कार्य जिसमें नाचना, गाना और बजाना तीनों हों।

विशेष—संगीत का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन है, और भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न प्रकार से मनोरंजन के लिये गाना बजाना हुआ करता है। संभवतः भारतवर्ष में ही सबसे पहले संगीत की ओर लोगों का ध्यान गया था। वैदिक काल में ही यहाँ के लोग मंत्रों का गान करते और उसके साथ साथ हस्तक्षेप आदि करते और बाजा बजाते थे। धीरे धीरे इस कला ने इतनी उन्नति की कि 'सामवेद' की रचना हुई। इस प्रकार मानो सामवेद भारतीय संगीत का सबसे प्राचीन और पूर्व-रूप है। पीछे संगीत का बड़ा प्रचार हुआ। सुर, नर सभी इससे प्रेम करने लगे। रामायण और महाभारत के समय में इस देश में इसका बड़ा आदर था। नाचने, गाने और बजाने का अभ्यास सभी सभ्य लोग करते थे। संगीत शास्त्र के प्रथम आचार्य 'भरत' माने जाते हैं। इनके पश्चात् काश्यप, मतंग, पार्ष्टि, नारद, हनुमत् आदि ने संगीत शास्त्र की आलोचना की। कहते हैं कि प्राचीन यूनान, अरब और फारसवालों ने भारतवासियों से ही संगीत शास्त्र की शिक्षा ग्रहण की थी।

कुछ लोगों का मत है कि स्वर, ताल, नृत्य, भाव, कोक और हस्त इन सातों के समाहार को संगीत कहते हैं, पर अधिकांश लोग गान, वाद्य और नृत्य को ही संगीत मानते हैं, और यदि वास्तविक दृष्टि से देखा जाय तो शेष चारों का भी समावेश इन्हीं तीनों में हो जाता है। इनमें से गीत और वाद्य को 'श्राव्य संगीत' तथा नृत्य को संगीत कहते हैं। संगीत के और भी दो भेद किए गए हैं—मार्ग और देशी। कहते हैं कि किसी समय महादेव के सामने भरत ने अपनी संगीतविद्या का परिचय दिया था। उस संगीत के पथप्रदर्शक ब्रह्मा थे और वह संगीत मुक्तिदाता था। वही संगीत 'मार्ग' कहलाता था। इसके अतिरिक्त भिन्न भिन्न देशों में लोग अपने अपने ढंग पर जो गाते बजाते और नाचते हैं, उसे देशी कहते हैं। कुछ लोग केवल गाने और बजाने को ही और कुछ लोग केवल गाने को ही, भ्रम से, संगीत कहते हैं।

२ सामूहिक गान। सहगान। एक साथ मिलकर गाया हुआ गान (को०)। ३ कई वाद्यों का एक स्वर ताल में बजना।

संगीत²—वि० जो साथ मिलकर गाया गया हो [को०]।

संगीतक—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गीतक] १. विभिन्न स्वरों या वाद्यों का पारस्परिक मेल। २ गीत, नृत्य और वाद्य द्वारा सामूहिक मनोरंजन [को०]।

संगीतज्ञ—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गीतज्ञ] वह जो संगीतविद्या का ज्ञाता हो।

सगीतविद्या सज्ञा स्त्री० [सं० सङ्गीत+विद्या] दे० 'सगीत शास्त्र'। विशेष दे० 'सगीत'[१]।

सगीतवेश्म—सज्ञा पुं० [सं० सङ्गीतवेश्मन्] दे० 'सगीतशाला' [को०]।

सगीतशाला—सज्ञा स्त्री० [सं० सङ्गीतशाला] वह भवन जहाँ सगीत होता हो [को०]।

सगीतशास्त्र—सज्ञा पुं० [स०] वह शास्त्र जिसमे गाने, बजाने, नाचने और हाव भाव आदि दिखलाने की कला का विवेचन हो।

सगीति—सज्ञा स्त्री० [सं० सङ्गीति] १ वार्तालाप। बातचीत। २ दे० 'सगीत'। ३ बौद्धो की धर्मसभा (को०)। ४ आर्या गीति का एक भेद (को०)।

सगीन[१]—सज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का अस्त्र जो लोहे का बना हुआ तिफला और नुकीला होता है। यह बदूक के सिरे पर लगाया जाता है। इससे शत्रु को भोककर मारते है।

सगीन[२]—वि० १ पत्थर का बना हुआ। जैसे,—सगीन इमारत। २ गफ। मोटा। जैसे,—सगीन कपडा। ३ टिकऊ। पायदार। मजबूत। जैसे,—कलाबत्तू का काम सगीन होता है। ४ विकट। असाधारण। जैसे,—सगीन जुर्म। सगीन मामला। ५ पेचीदा। ६ कठोर। जैसे,—सगीन दिल।

यौ०—सगीन जुर्म = विकट अपराध। असाधारण अपराध। सगीनदिल = कठोर हृदयवाला। बेरहम। सगीनदिली = बेरहमी।

सगीनी—सज्ञा स्त्री० [फा० सगीन] १ असाधारणता। २. कठोरता। कडापन। मजबूती।

सगीर्ण—वि० [स० सङ्गीर्ण] १ समर्थित। स्वीकृत। २. जिसका वादा किया हुआ हो। प्रतिज्ञात [को०]।

सगुप्त[१]—सज्ञा पुं० [स० सङ्गुप्त] एक बुद्ध का नाम।

सगुप्त[२]—वि० १ जो छिपाकर रखा गया हो। छिपाया हुआ। २ भलीभाँति सर्वधित या सुरक्षित [को०]।

संगुप्ति—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्गुप्ति] १ गोपनता। छिपाव। दुराव। २ त्राण। रक्षण। सुरक्षा [को०]।

सगूढ[१]—सज्ञा पुं० [स० सङ्गूढ] १ रेखा या लकीर आदि खीचकर निशान की हुई राशि या ढेर।

विशेष—प्राय लोग अन्न या और किसी प्रकार की राशि लगाकर उसे रेखाओ से घेर या अकित कर देते हैं, जिसमे यदि कोई उस राशि मे से कुछ चुरावे, तो पता लग जाय। इसी प्रकार अकित की हुई राशि को सगूढ कहते है।

सगूढ[२]—वि० १ पूर्णत गुप्त या छिपाया हुआ। २ सकुचित। सक्षिप्त। ३. मिला हुआ। सयुक्त। ४ एकत्रित। राशीकृत [को०]।

सगृभित—वि० [स० सङ्गृभित] एकाग्र किया हुआ। समाहित किया हुआ [को०]।

सगृहीत—वि० [स० सङ्गृहीत] सग्रह किया हुआ। एकत्र किया हुआ। जमा किया हुआ। सकलित। २ ग्रस्त। जकडा हुआ (को०)। ३ निग्रहीत या सयत किया हुआ। शासित (को०)। ४ आगत। प्राप्त। स्वीकृत (को०)। ५ सकोचित या सक्षिप्त किया हुआ (को०)।

यौ०—सगृहीतराष्ट्र = जिसने राज्यशासन सुव्यवस्थित कर लिया हो। सुशासित राज्यवाला (राजा)।

सगृहीता—सज्ञा पुं० [स० सङ्गृहीतृ] वह जो सग्रह करता हो। एकत्र करनेवाला। जमा करनेवाला।

सगृहीति—सज्ञा स्त्री० [सं० सङ्गृहीति] नियत्रण। वशीभूत करना। निगृहीत करना [को०]।

सगृहीतृ—वि० [स० सङ्गृहीतृ] १ जो पकड या काबू मे रखे अथवा शासित करे। २ अश्वशिक्षक। सारथी [को०]।

सगोतरा—सज्ञा पु० [हिं० सगतरा] एक प्रकार की नारगी। सगतरा। सतरा।

सगोपन[१]—सज्ञा पुं० [स० सङ्गोपन] छिपाने की क्रिया। पोशीदा रखना। छिपाना।

सगोपन[२]—वि० गुप्त रखने या छिपानेवाला [को०]।

संगोपनीय—वि० [स० सङ्गोपनीय] छिपाने के योग्य। पोशीदा रखने के लायक।

सग्रथन—सज्ञा पुं० [स० सङ्ग्रन्थन] एक साथ बाँधना या एक मे बाँधना।

सग्रथन—सज्ञा पुं० [स० सङ्ग्रथन] १ एकत्र बाँधना। २ व्यवस्थित करना या मरम्मत करना [को०]।

सग्रथित—वि० [सं० सङ्ग्रथित] एक साथ नत्थी किया हुआ, पिरोया हुआ या बँधा हुआ [को०]।

सग्रसन—सज्ञा पुं० [स० सङ्ग्रसन] १ बहुत अधिक भोजन करना। २ दबोच लेना। दबा देना (को०)।

सग्रह—सज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्रह] १ एकत्र करने की क्रिया। जमा करना। सकलन। सचय। २ वह ग्रथ जिसमे अनेक विषयो की बातें एकत्र की गई हो। ३ भोजन, पान, औषध इत्यादि खाने की क्रिया। ४ मत्र बल से अपने फेके हुए अस्त्र को अपने पास लौटाने की क्रिया। ५ सोम याग। ६ सूची। फेहरिस्त। ७ निग्रह। सयम। ८ रक्षा। हिफाजत। ९ कब्ज। कोष्ठबद्धता। १० शिव का एक नाम। ११ पाणिग्रहण। विवाह। १२ जमघट। जमाव। १३ सभा। गोष्ठी। १४ मैथुन। स्त्री प्रसग। १५ ग्रहण करने की क्रिया। १६ स्वीकार। मजूरी। उ०—तेहि ते कछु गुन दोष बखाने। सग्रह त्याग न बिनु पहिचाने।—मानस, १। १७ चगुल। पकड (को०)। १८ जोड। राशि। समष्टि (को०)। १९ भडारगृह (को०)। २० बडप्पन (को०)। २१ वेग (को०)। २२ हवाला। उल्लेख (को०)। २३ प्रयत्न। चेष्टा (को०)। २४ सयोजन (को०)। २६ वह जो सरक्षक हो (को०)। २७ कल्याण। मगल (को०)।

यौ०—सग्रहकार = सग्रह करनेवाला। सग्रहग्रहणी। सग्रह-वस्तु = सग्रह के योग्य वस्तु। सग्रह श्लोक = पूर्वकथित प्रसग को सक्षिप्त रूप मे बतानेवाला श्लोक।

सग्रहग्रहणी—सज्ञा स्त्री० [सं० सङ्ग्रहग्रहणी] दे० 'सग्रहणी'।

सग्रहण—सज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्रहण] १ स्त्री को हर ले जाने की क्रिया। २ ग्रहण। ३ प्राप्ति। ४ नगो को जडने की क्रिया। ५ मैथुन। सहवास। ६ व्यभिचार। ७ स्त्री के स्तन, कपोल, केश, जघा आदि वर्ज्य स्थानो का स्पर्श।

विशेष—स्मृतियो मे इस अपराध के लिये कठोर दड लिखा गया है।

८. सहारा देना। प्रोत्साहन। बढावा (को०)। ९ सकलन। सचय करना (को०)। १०. नियत्रण। वशीभूत या अपनी ओर करना (को०)। ११ त्राणा करना (को०)। १२ उल्लेख करना (को०)। १२ मिलावट। मिश्रण (को०)।

संग्रहणी—सज्ञा स्त्री० [सं० सङ्ग्रहणी] १ एक प्रकार का रोग जिसमे भोजन किया हुआ पदार्थ पचता नही, बराबर पाखाने के रास्ते निकल जाता है। ग्रहणी।

विशेष—इसमे पेट मे पीडा होती है और दस्त दुर्गंधयुक्त, कभी पतला कभी गाढा होता है। शरीर दुर्बल और निस्तेज हो जाता है। यह रोग चार प्रकार का होता है—वातज, कफज, पित्तज और सन्निपातज। रात की अपेक्षा दिन के समय यह रोग अधिक कष्ट देता है। यह रोग प्राय अधिक दिनो तक रहता और कठिनता से अच्छा होता है।

सग्रहणीय—वि० [सं० सङ्ग्रहणीय] १ सग्रह योग्य। २ ग्रहण करने या लेने योग्य। ३ सेवन करने योग्य (रोग शाति के लिये दवा आदि)। ४ नियत्रणीय (को०)।

सग्रहना(पु)—क्रि० स० [सं० सङ्ग्रहण] १ सग्रह करना। सचय करना। जमा करना। उ०—सग्रहै सनेह बस अधम असाध को। गिद्ध सेवरी को कहो करिहै सराध को।—तुलसी (शब्द०)। २ ग्रहण करना। पकडना। उ०—वायौ सु धरह विन सोसधार। सग्रह्यौ बाँह वामे कटार।—पृ०, रा०, ६१।२२८७।

सग्रहालय—सज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्रहालय] वह स्थान जहाँ विशिष्ट प्रकार की अलभ्य प्राचीन वस्तुओ का सग्रह किया जाय। अजायबघर।

सग्रही—सज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्रहिन्] १ सग्रह करनेवाला। जो एकत्र या जमा करता हो। उ०—नहिं जाचक नहि सग्रही सीस नाइ नहिं लेइ। ऐसे मानी माँगनेहिं को वारिद बिनु देइ।—तुलसी ग्र०, पृ० १२७। २ महसूल या लगान आदि उगाहनेवाला कर्मचारी। कर एकत्र करनेवाला।

सग्रहीता—सज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्रहीतृ] १ वह जो सग्रह करता हो। जमा करनेवाला। एकत्र करनेवाला। २ स्वीकार या ग्रहण करनेवाला (को०)। ३ घोडे आदि का नियमन करनेवाला। सारथी (को०)।

संग्राम—सज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्राम] युद्ध। लडाई। समर।

यौ०—सग्राम अगन(पु) = दे० 'सग्रामागण'। उ०—सग्राम अगन राम अग अनग बहु सोभा नही।—मानस, ६।१०२। सग्रामकर्म = लडाई। सग्रामतुला = युद्ध की कसौटी (हार जीत के रूप मे)। सग्रामतूर्य = लडाई या युद्ध का बिगुल। रणतूर्य। सग्रामपटह। सग्राममूर्धा = युद्धभूमि मे अगला मोर्चा। सग्राममृत्यु = युद्धभूमि मे मरना। वीरगति।

सग्रामजित्[1]—सज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्रामजित्] सुभद्रा के उदर से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

सग्रामजित्[2]—वि० युद्ध मे विजयी (को०)।

सग्रामपटह—सज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्रामपटह] रण मे बजनेवाला एक प्रकार का बाजा। रणभेरी। रण डिमडिम।

सग्रामभूमि—सज्ञा स्त्री० [सं० सङ्ग्राम भूमि] वह स्थान जहाँ सग्राम होता हो। लडाई का मैदान। युद्ध क्षेत्र। उ०—सग्रामभूमि-बिराज रघुपति अतुलबल कोसल धनी।—मानस, ६।७०।

सग्रामागण—सज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्रामाङ्गण] युद्धभूमि (को०)।

सग्रामार्थी—वि० [सं० सङ्ग्रामार्थिन्] लडाई चाहनेवाला। युद्धेप्सु (को०)।

सग्रामी—वि० [सं० सङ्ग्रामिन्] युद्ध करनेवाला। सग्रामलिप्त (को०)।

सग्राह—सज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्राह] १ ढाल का दस्ता या मूठ। २ पकडना। बलपूर्वक पकडना। बलात् पकडना। ३. हाथ की बँधी हुई मुट्ठा। मुष्टिबध। मुक्का। ४ मुट्ठी बाँधना। मुक्का बाँधना (को०)। ५. घोडे के उत्प्लवन का एक प्रकार। घोडे का हिनहिनाते हुए अगले पैरो से कूदना (को०)।

सग्राहक—सज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्राहक] १ वह जो सग्रह करता हो। एकत्र या जमा करनेवाला। सग्रहकारी। सकलन करनेवाला (को०)। २ रथ का सारथी (को०)। ३ कब्ज करनेवाला (को०)। ४ वह जो अपनी ओर खीचता या आकृष्ट करता हो (को०)।

सग्राहित—वि० [सं० सङ्ग्राहित] सग्रह किया हुआ। जो ग्रहीत या ग्रस्त हो।

सग्राही—सज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्राहिन्] १ वह पदार्थ जो कफादि दोष, धातु, मल तथा तरल पदार्थो को खीचता हो। २ वह पदार्थ जो मल के पेट से निकलने मे बाधक होता है। कब्जियत करनेवाली चीज। ३ कुटज वृक्ष। ४ दे० 'सग्राहक' (को०)।

सग्राह्य—वि० [सं० सङ्ग्राह्य] १ सग्रह करने योग्य। जो सग्रह या एकत्र करने योग्य हो। २ जमा करने लायक। ३ ग्रहण या स्वीकरण योग्य (को०)। ४. किसी कार्य मे लगाने, या रखने योग्य। ५. जिसे समझा जा सके। जिसे हृदयगम किया जा सके। (शब्द०)। ६, जिसका अवरोध किया जा सके। रोकने ... ाव आदि)।

... सङ्घ] १. समूह। समुदाय। दल। गण। ... । वह समुदाय जो किसी विशेष उद्देश्य से एकत्र

हुआ हो। समिति। सभा। समाज। ३. प्राचीन भारत का एक प्रकार का प्रजातंत्र राज्य जिसमें शासनाधिकार प्रजा द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों के हाथ में होता था। ४ इसी संस्था के ढंग पर बना हुआ बौद्ध श्रमणों आदि का धार्मिक समाज।

विशेष—इसकी स्थापना महात्मा बुद्ध ने की थी। पीछे से यह बौद्ध धर्म के त्रिरत्नों में से एक रत्न माना जाता था। शेष दो त्रिरत्न बुद्ध और धर्म थे।

५. साधुओं आदि के रहने का मठ। संगत। ६ अंतरंगता। घनिष्ठ संपर्क (को०)।

**संघक**—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घक] दल। झुंड। समूह। समुदाय [को०]।

**संघगुप्त**—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घगुप्त] वाग्भट के पिता का नाम।

**संघचारी**—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घचारिन्] १ जो अधिकांश लोगों का साथ दे। बहुमत, बहुपक्ष का अनुसरण करनेवाला। बहुमत के अनुसार आचरण करनेवाला। २ वे जो झुंड या समुदाय में चलते हों। जैसे,—वृक, मृग, हाथी इत्यादि। ३ मछली।

**संघजीवी**—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घजीवी] १. वह जो समूह के साथ रहता हो। दल या वर्ग के रूप में रहनेवाला। २ मजदूर। कुली [को०]।

**संघट[1]**—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घटन] १ संघटन। मिलन। संयोग। उ०—यह संघट तब होइ जब पुन्य पराकृत भूरि।—मानस, ११२०२। २. परस्पर संघर्ष। युद्ध। लड़ाई। झगड़ा। ३. समूह। उ०—सुभट मर्कट भालु कटक संघट सजत नमत पद रावणानुज निवाजा।—तुलसी (शब्द०)। ४ राशि। ढेर।

**संघट[2]**—वि० [सं० सङ्घट] [वि० स्त्री० संघटा] ढेरी लगाया हुआ। राशीकृत [को०]।

**संघटन**—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घटन] [स्त्री० संघटना] १ मेल। संयोग। २ संघर्ष। संघर्षण। ३ साहित्य में नायक नायिका का संयोग। मिलाप। ४ उपकरणों के द्वारा किसी पदार्थ का निर्माण। रचना। ५ बनावट। दे० 'संगठन'।

**संघटना**—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्घटना] १ दे० संघटन'। २ स्वरों या शब्दों का संयोजन [को०]।

**संघटबिधाई**(पु)—वि० [हिं० संघट+विधान] समूहबद्ध करनेवाला। जो समूह या दलबद्ध करे। उ०—जयति सौमित्रि रघुनंदनानंद कर रिच्छ कपि कटक संघटविधाई।—तुलसी ग्रं०, पृ० ४३७।

**संघटित**—वि० [सं० सङ्घटित] १ एक जगह किया हुआ। एकत्रित। मिला या जुड़ा हुआ (को०)। २ (वाद्य आदि) जो बजाया हुआ हो। अभिघातित। वादित (को०)। ३ टकराया हुआ। संघट्टित। उ०—सुर विमान हिमभानु भानु संघटित परस्पर।—तुलसी ग्रं०, पृ० १५७।

**संघट्ट**—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घट्ट] १ रचना। बनावट। गठन। २ संघर्ष। ३ मुठभेड़। स्पर्धा (को०)। ४ आघात। चोट। ५ संघर्षण। रगड़ (को०)। ६ आलिंगन (को०)। ७ मिलन। संयोग (को०)।

**संघट्ट चक्र**—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घट्टचक्र] फलित ज्योतिष में युद्धफल विचारने का नक्षत्रों का एक चक्र।

विशेष—इस चक्र के द्वारा यह जाना जाता है कि युद्ध में जीत होगी या हार। यदि युद्धार्थ प्रस्थान करनेवाले का जन्मनक्षत्र इस चक्र में शुभ होता है, तो वह युद्ध में विजय लाभ करता है, और यदि अशुभ होता है, तो पराजय। स्वरोदय में इस चक्र का विवरण इस प्रकार दिया है—एक त्रिकोण चक्र बना कर इस चक्र में टेढ़ी रेखाएं खींचकर उसमें अश्विनी आदि २७ नक्षत्र अंकित करने चाहिए। तीन नक्षत्रों का एक साथ वेध होता है। वेध क्रम इस प्रकार होता है। अश्विनी का रेवती के साथ, चित्रा नक्षत्र का श्लेषा और मूल के साथ, और ज्येष्ठा का मूल के साथ वेध होता है। यदि राजा का जन्म नक्षत्र इस चक्रवेध में न हो, या सौम्य ग्रह सहित वेध हो, तो उस समय युद्ध नहीं होगा। यदि क्रूर नक्षत्र के साथ वेध हो, तो उस समय भीषण युद्ध होगा। सौम्य, स्वामी, मित्रामित्र आदि ग्रहगणों से युक्त तथा अतिचार प्रभृति गति द्वारा भी शुभाशुभ का निर्णय होता है।

**संघट्टन**—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घट्टन] [स्त्री० संघट्टना] १ बनावट। रचना। गठन। २ मिलन। संयोग। ३ घटना। ४ दे० 'संघटन'।

**संघट्टा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] लता। वल्ली। बेल।

**संघट्टित**—वि० [सं० सङ्घट्टित] १ एकत्र किया हुआ। २ गठित। निर्मित। बना हुआ। रचित। ३ चलाया हुआ। चालित। ४ घर्षित। रगड़ा हुआ। ५ (आटा आदि) जो साना या गूँधा हुआ हो (को०)।

**संघट्टितपाणि**—संज्ञा पुं० [सं० संघट्टितपाणि] वर और वधू के आपस में जुड़े हुए हाथ [को०]।

**संघट्टी**—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घट्टिन्] वह जो साथ लगा रहे। अनुगामी। माननेवाला। जैसे, कृष्णसंघट्टी, रामसंघट्टी [को०]।

**संघतल**—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घतल] अंजलि [को०]।

**संघती**†—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घ, हिं० संग, सँघाती, सँगाती] साथी। सहचर। उ०—तुम्ह अस हित संघती पियारी। जियत जीउ नहिं करौं निनारी।—जायसी (शब्द०)।

**संघपति**—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घपति] वह जो किसी संघ या समूह का प्रधान हो। दलपति। नायक।

**संघपुरुष**—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घपुरुष] बौद्ध संघ का परिचारक संघ का सेवक [को०]।

**संघपुष्पी**—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्घपुष्पी] धातकी। धव। धौ।

**संघभेद**—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घभेद] बौद्ध संघ में मतभेद पैदा करना जो पाँच प्रकार के अक्षम्य अपराधों में एक माना गया है [को०]।

**संघभेदक**—वि० [सं० सङ्घभेदक] संघ में फूट पैदा करनेवाला [को०]।

**सघरना**Ⓟ—क्रि० स० [स० सहार+हिं० ना (प्रत्य०)] १ सहार करना। नाश करना। २ मार डालना। उ०—गरगज चूर चूर होइ परही। हस्ति घोर मानुष सघरही।—जायसी (शब्द०)।

**सघर्ष**—सज्ञा पु० [सं० सङघर्ष] १ एक चीज का दूसरी चीज के साथ रगड खाना। सघर्षण। रगड। घिस्सा। २ दो विरोधी व्यक्तियो या दलो आदि मे स्वार्थ के विरोध के कारण होनेवाली प्रतियोगिता या स्पर्धा। ३ वह अहकारसूचक वाक्य जो अपने प्रतिपक्षी के सामने अपना वडप्पन जतलाने के लिये कहा जाय। ४ किसी चीज को घोटने या रगडने की क्रिया। रगडना। घिसना। ५ असूया। ईर्ष्या। डाह (को०)। ६ कामोद्दीपन। कामोत्तेजना (को०)। ७ शत्रुता। वैर भाव (को०)। ८ धीरे धीरे चलना। टहलना। ९ शर्त लगाना। वाजी लगाना।

**संघर्षण**—सज्ञा पुं० [स० सङ्घर्षण] १ दे० 'सघर्ष'। २ अभ्यजन। अनुलेपन। उवटन (को०)।

**सघर्षजनन**—वि० [स० सङघर्षजनन] सघर्ष पैदा करनेवाला। जिसमे सघर्ष हो।

**सघर्षशाली**—वि० [स० सङघर्षशालिन्] १ द्वेष करनेवाला। द्वेष्टा। २ होड करनेवाला [को०]।

**सघर्षा**—सज्ञा स्त्री० [स० सङघर्षा] तरल या गीली लाह [को०]।

**सघर्षी**—सज्ञा पुं० [स० सङघर्षिन्] १ वह जो किसी प्रकार का सघर्ष करता हो। २ वह जो किसी के साथ प्रतियोगिता करता हो। प्रतिस्पर्धा करनेवाला। ३ रगडने या घिसनेवाला।

**सघवृत्त**—सज्ञा पुं० [स० सङघवृत्त] कौटिलीय अर्थशास्त्र के अनुसार श्रेणी, समूह, सघ की आचारविधि या व्यवहार [को०]।

**सघवृत्ति**—सज्ञा स्त्री० [स० सङघवृत्ति] साथ कार्य करने के निमित्त एकत्र होने या समिलित होने की क्रिया। सहयोग।

**सघस**—सज्ञा पु० [स० सम् (उप०)+√घस् (=खाना)] भोजन की वस्तु। आहार [को०]।

**सघाट**—सज्ञा पु० [स० सङघाट] १ दल, समूह या सघ आदि मे रहनेवाला। वह जो दल वाँधकर रहता हो। २ लकडी आदि को जोडना या मिलाना। जोडने का काम। वढईगिरी (को०)।

**सघाटि**—सज्ञा स्त्री० [स० सङघाटि] दे० 'सघाटी' [को०]।

**सघाटिका**—सज्ञा स्त्री० [स० सङघाटिका] १ स्त्रियो का प्राचीन काल का एक प्रकार का पहनावा। २ वह स्त्री जो प्रेमी प्रेमिका को मिलावे। दूती। कुट्टिनी। कुटनी। ३ युग्म। जोडा। ४ सिघाडा। ५ कुभी। ६ गध। महक। वास (को०)। ७ घ्राणेंद्रिय। नाक (को०)।

**सघाटी**—सज्ञा स्त्री० [स० सङघाटी] वौद्ध भिक्षुओ के पहनने का एक प्रकार का वस्त्र।

**सघाणक**—सज्ञा पुं० [स० सङघाणक] श्लेष्मा। कफ जो नाक से निकलता है।

**सघात**[1]—सज्ञा पु० [स० सङघात] १ जमाव। समूह। समष्टि। २ आघात। चोट। ३ हत्या। वध। ४ इक्कीस नरको मे से एक नरक का नाम। ५ कफ। ६ नाटक मे एक प्रकार की गति। ७ शरीर। उ०—सो लोचन गोचर मुखदाता। देखत चरण तमहुँ सघाता।—स्वामी रामकृष्ण (शब्द०)। ८ निवासस्थान। उ०—हो मुखराते सत्य के वाता। जहाँ सत्य तहँ धर्म सघाता।—जायसी (शब्द०)। ९ युद्ध। सघर्ष (को०)। १० यात्रियो का दल। कारवाँ (को०)। ११ अस्थि। हड्डी (को०)। १२ कठोर अश (को०)। १३ ओघ। गति। प्रवाह (को०)। १४ (व्या०) समास (को०)। १५ घनीभूत करना। ठोस वनाना (को०)। १६ समिश्रणो का निर्माण (को०)।

**सघात**[2]—वि० सघन। निविड। घना।

यौ०—सघातकठिन = (१) एक साथ मिलने पर कठिन हो जानेवाला। (२) जो जम जाने से कठोर हो जाय।

**सघातक**—सज्ञा पु० [स० सङघातक] १ घात करनेवाला। प्राण लेनेवाला। २ वह जो वरवाद करता हो। नष्ट करनेवाला। ३ एक प्रकार का नाटकीय अभिनय (को०)।

**सघातचारी**—सज्ञा पुं० [स० सङघातचारिन्] वह जो अपने वर्ग के और प्राणियो या लोगो के साथ मिलकर, या उनका सघ वनाकर रहता हो।

**सघातज**—वि० [सं० सङघातज] त्रिदोष से उत्पन्न। सान्निपातिक। सनिपातवाला [को०]।

**सघातपत्रिका**—सज्ञा स्त्री० [स० सङघातपत्रिका] १ शतपुष्पा। सोआ। २ सौफ। मिश्रेया।

**सघातन**—सज्ञा पु० [स० सङघातन] मारना। वध करना। नाश करना [को०]।

**सघातबलप्रवृत्त**—सज्ञा पु० [स० सङघातवल प्रवृत्त] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का आधिभौतिक और आगतुक रोग।

**सघातमृत्यु**—सज्ञा स्त्री० [स० सङघातमृत्यु] सामूहिक मृत्यु। वहुतो की एक साथ मौत होना [को०]।

**सघातशिला**—सज्ञा स्त्री० [स० सङघातशिला] १ पत्थर जैसा कडा पिंड। २ ठोस या वहुत कडा पत्थर [को०]।

**सघातिका**—सज्ञा स्त्री० [स० सङघातिका] अरणि की लकडी। अरणिकाष्ठ जिससे आग पैदा की जाती है [को०]।

**सघाती**[1]—सज्ञा पु० [स० सघ, हिं० सग+आती (प्रत्य०)] १ साथी। सहचर। २ मित्र।

**सघाती**[2]—सज्ञा पु० [स० सङघातिन्] सघातक। प्राणनाशक।

**सघात्य**—सज्ञा पुं० [स० सङघात्य] दे० 'सघातक'।

**सघाधिप**—सज्ञा पु० [स० सङघाधिप] सघ का स्वामी या प्रधान भिक्षु (जैन)।

**सघार**Ⓟ†—सज्ञा पु० [स० सहार] दे० 'सहार'।

**सघारना**Ⓟ—क्रि० स० [सं० सहार] १ सहार करना। नाश करना। २ मार डालना। हत्या करना। उ०—तहँ निपाद इक

क्रौंच सघारयौ। किय विलाप ताकी तिय मारयौ।—पद्माकर (शब्द०)।

संघाराम—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घाराम] बौद्ध भिक्षुओं तथा श्रमणों आदि के रहने का मठ। विहार।

संघावशेष—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घावशेष] बौद्ध मत के अनुसार एक प्रकार का पाप।

संघुषित¹—वि० [सं०] १ ध्वनित। २ घोषणा किया हुआ। घोषित [को०]।

संघुषित²—संज्ञा पुं० आवाज। ध्वनि। शोरगुल। हल्ला [को०]।

संघुष्ट¹—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घुष्ट] आवाज। ध्वनि [को०]।

संघुष्ट²—वि० १ जो घोषित किया गया हो। २ ध्वनित। ३ जिसे बेचने के लिये उपस्थित या घोषित किया गया हो [को०]।

संघृष्ट—वि० [सं० सङ्घृष्ट] घिसा हुआ। रगडा हुआ [को०]।

संघेला†—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ग+एला (प्रत्य०)] १ साथी। सहचर। संगी। २ मित्र। दोस्त।

संघोष—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घोष] १ जोर का शब्द। २ गोप ग्राम। घोष। आभीर पल्ली।

संच(पु)†¹—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चय] १ संग्रह करने की क्रिया। संचय। एकत्रीकरण। २ रक्षा। देखभाल। उ०—जननि जनक ते अधिक गाधि सुत करिहै संच तिहारो। कौशिक शासन सकल शीश धरि सिगरो काज सिधारो।—रघुराज (शब्द०)। ३ शांति। कुशल।

संच²—संज्ञा पुं० [सं० सञ्च] १ लिखने की स्याही। मसी। २ ग्रंथ आदि लिखने के निमित्त पत्रों का संचयन (को०)।

संच(पु)³—संज्ञा पुं० [सं० सत्य, प्रा० सच्च, सच] सत्य। सत्र। उ०—संच तेता करि मान्यौ।—पृ० रा०, २६।१३।

संचक¹—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चय, हिं० संच+क (प्रत्य०)] दे० 'संचकर'।

संचक²—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चक] साँचा जिसमें कोई वस्तु ढाली जाती है [को०]।

संचकर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चय+कर] १ संचय करनेवाला। २ कृपण। कंजूस।

संचकित—वि० [सं० सम्+चकित, सञ्चकित] [वि० स्त्री० संचकिता] १ आश्चर्यग्रस्त। २ भौचक। भयभीत। ३ बुरी तरह डरा हुआ [को०]।

संचक्ष—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चक्षस्] ऋषि। आचार्य। पुरोहित [को०]।

संचत्—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चत्] १ वंचक। ठग। प्रतारक। २ ठगी। वंचना [को०]।

संचना(पु)†—क्रि० स० [सं० सञ्चयन] १ एकत्र करना। संग्रह करना। संचय करना। उ०—निरधन के धन अहे स्याम अरु स्यामा दोऊ। सुकवि तिन्हहिं हम गह्यो और को संचहु कोऊ।—अंबिकादत्त (शब्द०)। २ रक्षा करना। देखभाल करना।

संचय—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चय] १ राशि। समूह। ढेर। २ एकत्र या संग्रह करने की क्रिया। एकत्रीकरण। संकलन। जमा करना। ३ अधिकता। ज्यादती। बहुतायत। ४. ग्रंथि। कांड। जोड। संधि (को०)।

संचयन—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चयन] १ संचय करने की क्रिया। एकत्र या संग्रह करने की क्रिया। जमा करना। २ जले हुए मुर्दे की अस्थियाँ बटोरना। अस्थिसंचय [को०]।

संचयिक—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चयिक] वह जो संचय करता हो। एकत्र करनेवाला। जमा करनेवाला।

संचयिता—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चयितृ] दे० 'संचयिक'।

संचयी—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चयिन्] १ संचय करनेवाला। जमा करनेवाला। २ कृपण। कंजूस। ३ धनवान्। धनी (को०)।

संचर¹—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चर] १ गमन। चलना। २ सेतु। पुल। ३ जल के निकलने का मार्ग। ४ मार्ग। पथ। रास्ता। ५ स्थान। जगह। ६ देह। शरीर। ७. साथी। सहायक। ८ ग्रहों का एक से दूसरी राशि में संक्रमण (को०)। ९ पतला रास्ता। सँकरा मार्ग (को०)। १० प्रवेशद्वार (को०)। ११ वध। मार डालना (को०)। १२ विकास (को०)।

संचर²—वि० इतस्तत घूमने या चलनेवाला [को०]।

संचरण—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चरण] १ संचार करने की क्रिया। चलना। गमन। २. प्रसारण। फैलाना। ३. गतिशील करना। प्रयोग में लाना (को०)। ४ काँपना।

संचरणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] रथ्या। वीथी। राह [को०]।

संचरना(पु)†—क्रि० अ० [सं० सञ्चरण] १ घूमना। फिरना। चलना। उ०—पवन न पावै संचरै भँवर न तहाँ बईठ।—पदमावत, पृ० १६२। २ फैलना। प्रसारित होना। उ०—सरद चाँदनी संचरत चहुँ दिसि आनि। विधुहि जोरि कर बिनवति कुल गुरु जानि।—तुलसी (शब्द०)। ३. चल निकलना। व्यवहृत होना। प्रचलित होना।

संचरिष्णु—वि० [सं० सञ्चरिष्णु] संचरण वा गमन के लिये व्यवस्थित [को०]।

संचर्वण—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चर्वण] चबाना। चर्वण करना [को०]।

संचल¹—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चल] सौवर्च्चल लवण। साँचर नमक।

संचल²—वि० कंपित। हिलता हुआ। भ्रमित [को०]।

संचलन—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चलन] १ हिलना डोलना। २. चलना फिरना। ३ काँपना।

संचलनाडी—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्चलनाडी] धमनी। रग। नस।

संचा(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० साँचा] दे० 'साँचा'। उ०—कुच सिरिफल संचा पूरि। कुंदि बइसाओल कनक कटोरि।—विद्यापति, पृ० २६६।

संचान—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चान] श्येन नामक पक्षी। बाज। शिकरा।

सचाय्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का यज्ञ।

सचार—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चार] १ गमन। चलना। २ फैलने या विस्तृत होने की क्रिया। ३ कष्ट। विपत्ति। ४ मार्ग प्रदर्शन। नेतृत्व। रास्ता दिखलाने की क्रिया। ५ चलाने की क्रिया। सचालन। ६ साँप की मणि। ७ देश। ८ ग्रहों या नक्षत्रों का एक राशि से दूसरी राशि में जाना।

विशेष—ज्योतिष के अनुसार सचार समय में चद्र जिस रूप का होता है, उसी प्रकार का फल भी होता है। यदि चद्र शुद्ध होता है, तो साथ में जिस ग्रह का शुभ भाव होता है, उस ग्रह के शुभ फल की वृद्धि होती है। यदि सचार काल में इदु शुद्ध नहीं होता, तो शुभ भाववाले शुभ ग्रह के शुभ फल में न्यूनता होती है। यदि कोई अशुभ ग्रह शुद्ध चद्र के साथ होता है, तो अशुभ फल की कमी होती है। फलित ज्योतिष में सचार के सबध में इसी प्रकार की और भी बहुत सी बातें दी हुई हैं।

९ उत्तेजन। बढावा देना। १० कष्टमय यात्रा (को०)। ११ मार्ग। पथ। राह (को०)। १२ दूत। गुप्तचर। सदेशवाहक (को०)। १३ दर्शन एव श्रवण द्वारा दूसरे का मोहन करना। १४ रतिमदिर की अवधि।

यौ०—सचारजीवी = खानाबदोश। सचारपथ = घूमने टहलने की जगह। सचारव्याधि = सक्रामक रोग।

सचारक—वि०, संज्ञा पुं० [सं० सञ्चारक] १ सचार करनेवाला। फैलानेवाला। २ वक्ता। ३ चलानेवाला। ४ दलपति। नायक। नेता। ४ स्कद का एक अनुचर (को०)।

सचारण—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चारण] १ पास लाना या करना। २ मिलाना। एक में करना। ३ (सदेशा) कहना [को०]।

सचारणी—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्चारिणी] बौद्धों की एक देवी [को०]।

सचारना—क्रि० स० [सं० सञ्चारण] १ सचार का सकर्मक रूप। किसी वस्तु का सचार करना। २ प्रचार करना। व्यवहार में प्रचलित करना। फैलाना। उत्पन्न करना। जन्म देना। उ०—नूर मुहम्मद देखि तौ भा हुलास मन सोइ। पुनि इबलिस सचारेउ डरत रहे सब कोइ।—जायसी (शब्द०)।

सचारयिता—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चारयितृ] नायक। नेता [को०]।

सचारिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्चारिका] १ सदेशवाहिका। दूती। २ कुट्टनी। कुटनी। ३ नाक। नासिका। ४ युग्म। जोडा। ५ गध। महक (को०)। ६ वह दासी जो रुपये पैसे की व्यवस्था करती हो (को०)।

सचारिणी¹—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्चारिणी] १ हसपदी नाम की लता। २ लाल लजालू।

सचारिणी²—वि० स्त्री० १ हिलती या काँपती हुई। २ भटकती हुई या घूमती हुई। ३ परिवर्तनशील। अस्थिर। ४ प्रभाव डालनेवाली। ५ आनुवशिक रूप से सक्रमण करनेवाली या सम्पर्क द्वारा उत्पन्न होनेवाली बीमारी। ६ प्रवृत्त करनेवाली [को०]।



सचारित¹—वि० [सं० सञ्चारित] १ जिसका सचार किया गया हो। चलाया या फैलाया हुआ। २ उकसाया हुआ। बढाया हुआ (को०)। ३ (व्याधि या रोग) जो सक्रमित किया जाय (को०)।

सचारित²—संज्ञा पुं० वह व्यक्ति जो अपने स्वामी की आकाक्षाओं को कार्यान्वित करता हो [को०]।

सचारी¹—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चारिन्] १ धूप नामक गध द्रव्य। २ धूप का उठा हुआ धूम्र (को०)। ३ वायु। हवा। ३ साहित्य में वे भाव जो रस के उपयोगी होकर जल की तरगों की भाँति उनमें सचरण करते हैं।

विशेष—ऐसे भाव मुख्य भाव की पुष्टि करते हैं और समय समय पर मुख्य भाव का रूप धारण कर लेते हैं। स्थायी भावों की भाँति ये रससिद्धि तक स्थिर नहीं रहते, बल्कि अत्यत चचलतापूर्वक सब रसों में सचरित होते रहते हैं। इन्हीं को व्यभिचारी भाव भी कहते हैं। साहित्य में नीचे लिखे ३३ सचारी भाव गिनाए गए हैं—निर्वेद, ग्लानि, शका, असूया, श्रम, मद, धृति, आलस्य, विषाद, मति, चिंता, मोह, स्वप्न, विबोध स्मृति, आमर्ष, गर्व, उत्सुकता, अवहित्था, दीनता, हर्ष, व्रीडा, उग्रता, निंद्रा, व्याधि, मरण, अपस्मार, आवेग, त्रास, उन्माद, जडता, चपलता और वितर्क।

४ अस्थिरता। चचलता। क्षणस्थायित्व। ५ सगीत शास्त्र के अनुसार किसी गीत के चार चरणों में से तीसरा चरण। ६ आगतुक।

सचारी²—वि० [वि० स्त्री० सञ्चारिणी] १ सचरण करनेवाला। गतिशील। अस्थिर। २ सक्रामक। जैसे, रोग (को०)। ३ चढने उतरनेवाला। जैसे, स्वर (को०)। ४ दुर्गम (को०)। ५ वशपरपरागत। आनुवशिक (को०)। ६ क्षणस्थायी (को०)। ७ सलग्न। लगा हुआ (को०)। ८ प्रवेश करनेवाला (को०)। ९ घूमनेवाला। भ्रमण करनेवाला (को०)।

सचाल—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चाल] १ कपन। काँपना। २ चलन। चलना।

सचालक—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चालक] १ वह जो सचालन करता हो। चलाने या गति देनेवाला। परिचालक। २ वह जो किसी प्रकार के उद्योग या सस्था आदि के ठीक से चलते रहने का प्रबंध करता हो (को०)।

सचालन—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चालन] १ चलाने की क्रिया। परिचालन। २ काम जारी रखना या चलाना। प्रतिपादन। ३ नियत्रण। ४. देखरेख।

सचाली—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्चाली] गुजा। घुँघची।

सचितन—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चिन्तन] चिंतन करना। विचारना [को०]।

सचितित—वि० [सं० सञ्चिन्तित] १ सम्यक् विचारित। सुविचारित। २. निश्चित किया हुआ। व्यवस्थित। ३ आकाक्षित। इच्छित [को०]।

सचित—वि० [सं० सञ्चित] १. सचय किया हुआ। २ ढेर लगाया हुआ। ३ गिना हुआ। गणना किया हुआ (को०)। ४. भरा

हुआ। सुसपन्न । युक्त (को०)। ५ बाधित । अवरुद्ध (को०)। ६ घना । सघन (को०)।

यौ०—सचितकर्म = पूर्वजन्म के वे एकत्रित कर्म जो वर्तमान जीवन मे प्रारब्ध के रूप मे प्राप्त होते है और जिनका फल भोगना पडता है। सचितकोष, सचितनिधि = (१) जमापूँजी। (२) वेतनभोगी कर्मचारियो के वेतन से हर महीने कटकर जमा होनेवाली वह निश्चित रकम जो उन्हें नौकरी मे अलग होने पर मिल जाती है। वेतन देनेवाला सस्थान भी कर्मचारियो की उस जमा रकम मे अपनी ओर से उतनी ही रकम मिलाता है। प्राविडेट फड (अ०)।

सचिता—सज्ञा स्त्री० [स० सञ्चिता] एक प्रकार की वनस्पति।

सचिति—सज्ञा स्त्री० [स० सञ्चिति] १ एक पर एक रखना। तही लगना। २ सग्रह। सचय (को०)। ३ शतपथ ब्राह्मण के नवम खड की आख्या (को०)।

सचित्रा—सज्ञा स्त्री० [सं० सञ्चित्रा] मूषाकर्णी। मूसाकानी।

सचु—सज्ञा पुं० [स० सञ्चु] टीका। व्याख्या (को०)।

सचूर्णन—सज्ञा पुं० [स० सञ्चूर्णन] अच्छी तरह चूर करना, टुकडे टुकडे करना या पीसना (को०)।

सचूर्णित—वि० [स० सञ्चूर्णित] पिसा हुआ। टुकडे टुकडे किया हुआ। चूर्ण किया हुआ (को०)।

सचेय—वि० [स० सञ्चेय] इकट्ठा करने योग्य। सग्रहणीय (को०)।

सचोदक—सज्ञा पुं० [स० सञ्चोदक] १ ललितविस्तर के अनुसार एक देवपुत्र का नाम।

सचोदन—सज्ञा पुं० [स० सञ्चोदन] प्रेरित करना। बढावा देना या उत्तेजित करना (को०)।

सचोदना—सज्ञा स्त्री० [सं० सञ्चोदना] १ वह वस्तु जो प्रेरणा या उत्तेजना प्रदान करती हो। २ उत्तेजना। प्रेरणा (को०)।

सचोदित—वि० [स० सञ्चोदित] उत्तेजित। आदिष्ट। प्रेरित (को०)।

सछन्न—वि० [स० सम् + छन्न] १ पूर्णत ढँका हुआ। आवृत। वस्त्राच्छादित। २ छिपा हुआ। छन्न। गुप्त। अज्ञात (को०)।

सछर्दन—सज्ञा पुं० [स० सञ्छर्दन] ग्रहण मे एक प्रकार का मोक्ष।

विशेष—राहु यदि ग्राह्यमडल मे पूर्व भाग से ग्रसना आरभ करके फिर पूर्व दिशा को ही चला आवे, तो उसको सछर्दन मोक्ष कहते है। फलित ज्योतिष के अनुसार इससे ससार का मगल और धान्य की वृद्धि होती है।

सछादन—सज्ञा पु० [सं० सञ्छादन] आच्छादित करना। छिपाना। ढँकना (को०)।

सछादनी—सज्ञा स्त्री० [स० सञ्छादनी] १ वह जो सछादन करे। २ त्वचा। खाल (को०)।

सछिदा—सज्ञा स्त्री० [स० सञ्छिदा] विध्वस। नाश (को०)।

सछिन्न—वि० [स० सञ्छिन्न] टुकडे टुकडे किया हुआ। छिन्न। काटा हुआ (को०)।

सछेत्ता—सज्ञा पुं० [स० सञ्छेत्तृ] वह जो सशय आदि को दूर करता या मिटाता हो (को०)।

सछेतव्य—वि० [स० सञ्छेतव्य] जो छेदन के योग्य हो। भद्य (को०)।

सछेद—सज्ञा पु० [स० सञ्छेद] १ काटना। अलग करना। २ हटाना। दूर करना (को०)।

सछेद्य—सज्ञा पु० [स० सञ्छेद्य] १ छेदने के योग्य। २ दो नदियो का साथ बहना अथवा सगम (को०)।

सज¹—सज्ञा पुं० [स० सञ्ज] १. शिव का एक नाम। २. ब्रह्मा का एक नाम।

सज²—वि० [फा०] तौलनेवाला। बया (को०)।

सज³—सज्ञा पु० झाझ या मजीरा नामक वाद्य (को०)।

सजन—सज्ञा पु० [स० सञ्जन] १ बाँधने की क्रिया। २. बधन। ३ बिखरे हुए अगो आदि को मिलाकर एक करना। सघट्टन।

सजनन¹—वि० [स० सञ्जनन] उत्पादक। उत्पन्न करनेवाला (को०)।

सजनन²—सज्ञा पु० १ निर्माण। उत्थान। २ बढाव। विकास (को०)।

सजनित—वि० [स० सञ्जनित] उत्पन्न किया हुआ। निर्मित। रचित (को०)।

सजनी—सज्ञा स्त्री० [स०] वैदिक काल का एक प्रकार का अस्त्र जिससे वध या हत्या की जाती थी।

सजम(पु)—सज्ञा पुं० [सं० सयम] दे० 'सयम'। उ०—राम करहु सब सजम आजू। जौं बिधि कुसल निबाहइ काजू। —मानस, २।१०।

सजमना(पु)—क्रि० स० [स० सयमन] एकत्र करना। बटोरना। सयमित करना। व्यवस्थित करना। उ०—पनटि पट सजमत केमनि मृदुल अग अँगौछि।—घनानद, पृ० ३०१।

सजमनी—सज्ञा स्त्री० [स० सयमनी] यमराज की नगरी। (डिं०)।

सजमनीपति—सज्ञा पुं० [स० सयमनीपति] यमराज। यमदेव। (डिं०)।

सजमी—सज्ञा पु० [स० सयमिन्] १ नियम से रहनेवाला। सयमी। २. व्रती। ३ जितेद्रिय।

सजय—सज्ञा पुं० [स० सञ्जय] १ धृतराष्ट्र का मत्री जो महाभारत के युद्ध के समय धृतराष्ट्र को उस युद्ध का विवरण सुनाता था।

विशेष—कहते है कि इसे दिव्य दृष्टि प्राप्त थी, अत यह हस्तिनापुर मे बैठा हुआ कुरुक्षेत्र मे सारी घटनाएँ देखता था और उनका वर्णन अधे धृतराष्ट्र को सुनाता था।

२ सुपार्श्व का पुत्र। ३ राजन्य के पुत्र का नाम। ४ ब्रह्मा। ५ शिव। ६ विजय। जीत (को०)। ७ एक प्रकार का सैनिक व्यूह (को०)।

सजर—सज्ञा पुं० [फा०] १ एक शिकारी पक्षी। २ बादशाह। उ०—यक तौ सरपजर कियो अतन तनै सर सूल। दूजे यह सिसिरौ भयौ खजर सजर तूल।—स० सप्तक, पृ० २४६।

सजल्प—सज्ञा पु० [स० सञ्जल्प] १ वार्तालाप। बातचीत। २ बकवाद। ऊटपटाँग वार्ता। ३ हल्ला गुल्ला (को०)।

सजवन—संज्ञा पुं० [सं० सञ्जवन] १ चार अट्टालिकाओं की वह विशिष्ट चतुष्कोण स्थिति जिससे उनके बीच में आँगन बन जाय। २ मार्गदर्शक चिह्न (को०)।

सजा¹—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्जा] बकरी।

सजा²—संज्ञा पुं० [फा० सजह्] बाट। तौलने का बटखरा (को०)।

सजात¹—वि० [सं० सञ्जात] १ उत्पन्न। २ प्राप्त। ३ व्यतीत। बीता हुआ (को०)।

यौ०—सजातकोप = कुपित। क्रुद्ध। सजातकौतुक = विस्मित। चकित। सजातनिर्वेद = विरक्त। उदासीन। सजातविश्रम = आश्वस्त। संतुष्ट। सजातवेपथु = काँपनेवाला। काँपता हुआ। कपित।

सजात²—संज्ञा पुं० पुराणानुसार एक जाति का नाम।

सजाफ¹—संज्ञा स्त्री० [फा० सजफ या सजाफ] १ झालर। किनारा। कोर। २ चौड़ी और आड़ी गोट जो प्राय रजाइयों और लिहाफों आदि के किनारे किनारे लगाई जाती है। गोट। मगजी।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

सजाफ²—संज्ञा पुं० एक प्रकार का घोड़ा जिसका रग या तो आधा लाल, आधा सफेद होता है या आधा लाल, आधा हरा।

सजाफी¹—वि० [हिं० सजाफ + ई (प्रत्य०)] जिसमें सजाफ लगी हो। किनारेदार। झालरदार।

यौ०—सजाफी गंजा = खल्वाट व्यक्ति जिसकी खोपड़ी के किनारे पर बाल हों।

सजाफी²—संज्ञा पुं० वह घोड़ा जिसका रग सजाफी हो। आधा लाल आधा हरा घोड़ा।

सजाव¹—संज्ञा पुं० [फा० सजाफ] १ एक प्रकार का घोड़ा। दे० 'सजाफ'। उ०—पचकल्यान सजाव बखानी। महि सायर सब चुन चुन आनी।—जायसी (शब्द०)। २ एक प्रकार का चमड़ा।

सजाव²—संज्ञा पुं० [फा०] चूहे के आकार का एक जतु जो प्राय तुर्किस्तान में होता है।

विशेष—इस जतु का मास वक्षस्थल की पीड़ा, कास और व्रण के लिये उपकारक माना जाता है। इसकी खाल पर बहुत मुलायम रोएँ होते हैं, और उससे पोस्तीन बनाते हैं।

सजावन—संज्ञा पुं० [सं०] जमाने के लिये गरम दूध में जामन डालना (को०)।

सजिदा—वि० [फा० सजिदह्] तौलनेवाला। बयाई करनेवाला (को०)।

सजिहानि—वि० [सं० सञ्जिहानि] (शय्या) त्याग करनेवाला। (बिस्तर) छोड़नेवाला (को०)।

सजी—संज्ञा स्त्री० [फा०] तराजू पर तौलना। वजन करना।

सजीदगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ विचार या व्यवहार आदि की गंभीरता। २ सहिष्णुता। शिष्टता। ३ सजीदा होना (को०)।

सजीदा—वि० [फा० सजीदह्] १ जिसके व्यवहार या विचारों में गंभीरता हो। गंभीर। शात। २ समझदार। बुद्धिमान्। ३ सहिष्णु (को०)। ४ सतुलित। तौला हुआ (को०)।

सजीव¹—संज्ञा पुं० [सं० सञ्जीव] १ मरे हुए को फिर से जिलाना। पुन जीवन देना। २ वह जो मरे हुए को जिलावे। फिर से जीवन दान करनेवाला। ३ बौद्धों के अनुसार एक नरक का नाम।

यौ०—सजीवकरण = फिर से जीवित करना। पुनर्जीवन देना। सजीवकरणी।

सजीव²—वि० जीवित। प्राणवान् (को०)।

सजीवक—संज्ञा पुं० [सं० सञ्जीवक] वह जो मरे हुए को जीवनदान देता हो। मुर्दे को जिलानेवाला।

सजीवकरणी—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्जीवकरणी] १ एक प्रकार की विद्या जिसके प्रभाव से मृत मनुष्य जीवित हो जाता है। (महाभारत में लिखा है कि शुक्राचार्य यह विद्या जानते थे)। २ एक प्रकार की कल्पित ओषधि जिसके सेवन से मृत व्यक्ति का जीवित होना माना जाता है।

सजीवन¹—संज्ञा पुं० [सं० सञ्जीवन] [वि० सजीवित] १ भलीभाँति जीवन व्यतीत करने की क्रिया। २ जीवन दान करना। पुन जिलाना। ३ मनु के अनुसार इक्कीस नरकों में से एक नरक का नाम। ४ दे० 'सजवन' (को०)।

सजीवन²—वि० जिलानेवाला। जीवन देनेवाला (को०)।

संजीवनी¹—वि० स्त्री० [सं० सञ्जीवनी] जीवनप्रदायिनी। जीवनदायिनी। जीवन देनेवाली।

सजीवनी²—संज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार की कल्पित ओषधि। कहते हैं कि इसके सेवन से मरा हुआ मनुष्य जी उठता है। २. वैद्यक के अनुसार एक औषध का नाम।

विशेष—इसके लिये पहले वायविडग, सोंठ, पिप्पली, हड़ का छिलका, आँवला, बहेड़ा, वच, गिलोय, भिलावाँ, सशोधित सिंगी मोहरा इन सबके चूर्ण को एक दिन गोमूत्र में खरल करके एक रत्ती की गोलियाँ बनाते हैं। कहते हैं कि इसकी एक गोली अदरक के रस के साथ खिलाने से अजीर्ण, दो गोलियाँ खिलाने से विसूचिका, तीन गोलियाँ खिलाने से सर्पविष और चार गोलियाँ खिलाने से सन्निपात नष्ट होता है।

३ अन्न। खाद्य वस्तु (को०)। ४ कालिदास के महाकाव्य कुमारसंभव पर मल्लिनाथ सूरि की टीका का नाम।

सजीवनी विद्या—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्जीवनी विद्या] एक प्रकार की कल्पित विद्या।

विशेष—कहते हैं कि इस विद्या के द्वारा मरे हुए व्यक्ति को जिलाया जा सकता है। महाभारत में लिखा है कि दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य यह विद्या जानते थे, और इसी के द्वारा वे उन दैत्यों को फिर से जिला देते थे जो देवताओं के साथ युद्ध करने में मारे जाते थे। देवताओं के कहने से बृहस्पति के पुत्र कच यह विद्या सीखने के लिये शुक्राचार्य के पास जाकर रहने लगे,

और अनेक कठिनाइयाँ सहने के उपरात अत मे उनसे यह विद्या सीखकर आए।

सजीवित—वि० [स० सञ्जीवित] फिर से जिलाया हुआ (को०)।

सजीवी—सज्ञा पु० [सं० सञ्जीविन्] वह जो मृतकों को जीवनदान देता हो। मुरदों को जिलानेवाला।

सजुक्त पु—वि० [स० सयुक्त] दे० 'सयुक्त'। उ०—जय प्रनतपाल दयाल प्रभु सजुक्त सक्ति नमामहे।—मानस, ७।१३।

सजुग पु—सज्ञा पुं० [स० सयुग] सग्राम। युद्ध। लडाई। उ०—जीतेहु जे भट सजुग माहीं। सुनु तापस मैं तिन्ह सम नाहीं।—मानस, ६।८६।

सजुत पु—वि० [स० सयुत] सयुक्त। मिश्रित। मिला हुआ। उ०—(क) उहँई कीन्हेउ पिंड उरेहा। भइ सजुत आदम कै देहा।—जायसी (शब्द०)। (ख) श्रुति समत हरिभक्ति पथ सजुत विरति विवेक।—मानस, ७।१००।

सजुता—सज्ञा स्त्री० [स० सयुक्ता] एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे स, ज, ज, ग, होते हैं। इसे 'सयुत' या 'सयुता' भी कहते हैं।

सजोग पु—सज्ञा पुं० [सं० सयोग] अवसर। मौका। सयोग।

सजोगिता—सज्ञा स्त्री० [हिं०] जयचद की कन्या का नाम जिसका पृथ्वीराज चौहान ने हरण किया था।

सजोगिनी पु—सज्ञा स्त्री० [सं० सयोगिनी] वह स्त्री जो अपने पति या प्रेमी के पास अथवा साथ हो। सयोगिनी। वह स्त्री जो वियोगिनी न हो।

सजोगी[1]—सज्ञा पुं० [सं० सयोगिन्] १, वह जो सयुक्त या मिला हुआ हो। २ वह जो भार्या सहित हो। प्रिया के सहित व्यक्ति। दे० सयोगी'। ३ दो जुडे हुए पिंजडे जो बहुधा तीतर पालनेवाले रखते है।

सजोगी[2]—वि० दे० 'सयोगी'।

सज्ञ[1]—सज्ञा पु० [सं० सज्ञ] १ वह जो सब बातें अच्छी तरह जानता हो। वह जो सब विषयो का अच्छा जानकार हो। २ पीतकाष्ठ। झाऊँ।

सज्ञ[2]—वि० १ सज्ञा का। नाम का। नामवाला। नामक। २ होश मे आया हुआ। चेतनायुक्त। ३ जिसके दोनो घुटने परस्पर टकराते हों। ४ पूर्णत जानकार। पूरी तौर से जानने वाला (को०)।

सज्ञक—वि० [सं० सज्ञक] १ सज्ञावाला। जिसकी सज्ञा हो। २ विनाशक (को०)।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग प्राय यौगिक बनाने मे शब्द के अत मे होता है।

सज्ञपन—सज्ञा पुं० [स० सज्ञपन] १ मार डालने की क्रिया। हत्या। वलि देना। २ कोई बात लोगों पर प्रकट करने की क्रिया। विज्ञापन। ३ प्रतारणा। धोखाधडी (को०)।

सज्ञपित—वि० [सं० सज्ञपित] १ बलि चढा हुआ। जिसकी बलि कर दी गई हो। २ सूचित। जो ज्ञापित किया गया हो (को०)।

सज्ञप्त—वि० [स० सज्ञप्त] दे० सज्ञपित' (को०)।

सज्ञप्ति—सज्ञा स्त्री० [स० सज्ञप्ति] दे० 'सज्ञापन'।

सज्ञा—सज्ञा स्त्री० [स० सज्ञा] १ चेतना। होश। २ बुद्धि। अक्ल। ३ ज्ञान। ४ किसी पदार्थ आदि का बोधक शब्द। नाम। आख्या। ५ व्याकरण मे वह विकारी शब्द जिससे किसी यथार्थ या कल्पित वस्तु का बोध होता है। जैसे,—मकान, नदी, घोडा, राम, कृष्ण, खेल, नाटक आदि। ६ हाथ, आँख या सिर आदि हिलाकर कोई भाव प्रकट करना। सकेत। इशारा। ७ गायत्री। ८ सूर्य की पत्नी का नाम जो विश्वकर्मा की कन्या थी। मार्कंडेय पुराण के अनुसार यम और यमुना का जन्म इसी के गर्भ से हुआ था। विशेष दे० 'छाया'—७। ९ पदचिह्न (को०)। १० आज्ञा। आदेश (को०)।

यौ०—सज्ञाकरण = (१) नामकरण। नाम धरना। (२) चेतना लाना। होश मे लाना। सज्ञापुत्र = यम। सज्ञापुत्री। सज्ञा विपर्यय = होश गायब होना। सज्ञासुत। सज्ञाहीन।

सज्ञाकरणरस—सज्ञा पुं० [स० सञ्ज्ञाकरणरस] वैद्यक के अनुसार चेतना लानेवाली एक औषध का नाम।

विशेष—इस औषध मे शुद्ध सिंगीमुहरा, सेंधा नमक, काली मिर्च रुद्राक्ष, कटाली, कायफल, महुआ और समुद्र फल आदि पडते है। इनकी मात्रा बराबर होती है। कहते हैं कि इसके सेवन से मनुष्य का सनिपात रोग दूर हो जाता है।

सज्ञात—वि० [स० सज्ञात] ठीक ढग से जाना या समझा हुआ। सुज्ञात (को०)।

यौ०—सज्ञातरूप = जिसका आकार प्रकार या रूपरेखा सर्वविदित हो।

सज्ञान—सज्ञा पु० [स० सज्ञान] १ सकेत। इशारा। २ सम्यग् अनुभूति। ३ ज्ञान। समझ। बोध (को०)।

सज्ञापन—सज्ञा पुं० [स० सज्ञापन] १ दूसरों पर कोई बात प्रकट करना। विज्ञापन। २ कथन। ३ शिक्षित करना। बतलाना। सिखाना (को०)। ४. मारना। वध (को०)।

सज्ञापुत्री—सज्ञा स्त्री० [स० सज्ञापुत्री] यमुना का एक नाम। उ०—सज्ञापुत्री स्फुरच्छाया चद्रावलि चद्रलेख्या। तापकारनी नयनी चद्र कातिका स्मृता।—गिरधर दास (शब्द०)।

सज्ञासुत—सज्ञा पुं० [सं० सज्ञासुत] शनि का एक नाम।

सज्ञासूत्र—सज्ञा पुं० [स० सज्ञासूत्र] व्याकरण के अनुसार वे सूत्र जो सज्ञा का विधान करते हैं।

सज्ञावान्—वि० [सं० सज्ञावत्] १ नामवाला। २ सचेत। होश मे आया हुआ। चेतनायुक्त (को०)।

सज्ञाहीन—वि० [स० सज्ञाहीन] जिसे सज्ञा या चेतना न हो। चेतनारहित। बेहोश। बेसुध।

संझिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्जिका] अभिधान। आख्या [को०]।

संज्ञित—वि० [सं० सञ्ज्ञित] १. विज्ञप्त। सूचित। २ संज्ञायुक्त। नामक। नामधारी।

संज्ञी¹—वि० [सं० सञ्ज्ञिन्] १ नाम धारण करनेवाला। २ ज्ञानवान्। जानकारी रखनेवाला। सज्ञान। ३ जिसका नाम रखा जाय [को०]।

संज्ञी²—संज्ञा पुं० वह जिसमे संज्ञा हो। चेतन। (जैन)।

संज्ञु—वि० [सं० सञ्ज्ञ] जिसके घुटने आपस मे टकराते हो। दे० 'संज्ञ²' [को०]।

संज्वर—संज्ञा पुं० [सं० सञ्ज्वर] [वि० संज्वरी] १ बहुत तीव्र ज्वर। बहुत तेज बुखार। २ किसी प्रकार का बहुत अधिक ताप। बहुत तेज गर्मी। ३. क्रोध आदि का बहुत अधिक आवेग।

संज्वरी—वि० [सं० सञ्ज्वरिन्] ज्वर या तापयुक्त [को०]।

संज्वलन—संज्ञा पुं० [सं० सञ्ज्वलन] इधन। ईंधन [को०]।

संझला‡—वि० [सं० सन्ध्या, प्रा० संझा + ल (प्रत्य०)] संध्या संबंधी। संध्या का।

संझवाती¹—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्ध्या + हिं० वाती] १ संध्या के समय जलाया जानेवाला दीपक। शाम का चिराग। उ०—चंद देख चकई मिलान सर फूले ऐसे, विपरीत काल है सुदेह कहियत है। वाती संझवाती घनसार नीर चंदन सो वारि लीजियत न अनल चहियत है।—हृदयराम (शब्द०)। २. वह गीत जो संध्या समय गाया जाता है। प्राय यह विवाह के अवसर पर होता है।

संझवाती²—वि० संध्या संबंधी। संध्या का।

संझा†—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्ध्या, प्रा० संझा] सूर्यास्त का समय। संध्या। शाम। उ०—संग के सकल अंग अचल उछाह भंग ओज बिन सूझन सरोज वन संझा सी।—देव (शब्द०)।

संड¹—संज्ञा पुं० [सं० सण्ड] षढ। हीजड़ा। नपुसक [को०]।

संड²—संज्ञा पुं० [सं० शण्ड] साँड।

यौ०—संडमुसंड।

संडमुसंड—वि० [सं० शण्ड, हिं० संड + मुसंड (अनु०)] हट्टा कट्टा। मोटा ताजा। बहुत मोटा।

संडा¹—वि० [सं० शण्ड] मोटा ताजा। हृष्ट पुष्ट।

संडा²—संज्ञा पुं० मोटा और बलवान् मनुष्य।

यौ०—संडा मुसंडा = दे० 'संडमुसंड'।

संड़ाई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० साँड] मशक की तरह बना हुआ भैंस आदि का वह हवा भरा हुआ चमड़ा जिसे नदी आदि पार करने के लिये नाव के स्थान पर काम मे लाते हैं।

संडास—संज्ञा पुं० [सं० सम् + न्यास (= त्याग, विसर्जन)] १. कूएँ की तरह का एक प्रकार का गहरा पाखाना। शौचकूप।

विशेष—यह जमीन के नीचे खोदा हुआ एक प्रकार का गहरा गड्ढा होता है जिसका ऊपरी भाग ढँका रहता है। केवल एक छिद्र बना रहता है जिसपर बैठकर मल त्याग करते है। मल उसी मे जमा होता जाता है। अधिक दुर्गंध होने पर उसमे खारी, नमक आदि कुछ ऐसी चीजें छोड़ते हैं जिनमे मल गलकर मिट्टी हो जाता है। इसका प्रचार अधिकतर ऐसे नगरो मे है, जिनमे नल नही होता और नित्य मल बाहर फेंकने मे कठिनता होती है। पर जबसे नल का प्रचार हुआ तबसे इस प्रकार के पाखाने बंद होने लगे है।

२. संडास से मिलता जुलता वह पाखाना जिसका आकार ऊँचे खड़े नल का सा होता है और जिसका नीचे का भाग पृथ्वी तल पर होता है। इसमे नीचे मकान से बाहर की ओर एक खिड़की रहती है जिसमे से मेहतर आकर मल उठा ले जाता है।

संडासी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सम् + दशिका, हिं० सँडसी] दे० 'सँडसी'। उ०—एक बार ए दोऊ कथा। संडासी लोहार की जथा।—अर्ध०, पृ० ४।

संडिश—संज्ञा पुं० [सं० सण्डिश] सँडसा। सँड़सी [को०]।

संडीन—संज्ञा पुं० [सं० सण्डीन] पक्षियो की एक तरह की सुंदर गति या उड़ान [को०]।

संढिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सण्ढिका] ऊँटनी। साँडिनी [को०]।

संत¹—संज्ञा पुं० [सं० सन्त] सहतल। अंजलि। अँजुरी [को०]।

संत(पु)†²—वि० [सं० शान्त] दे० 'शांत'। उ०—राए बधिअउँ संत हुअ रोस, लज्जाइअ निअ मनहि मन।—कीर्ति०, पृ० १८।

संत³—संज्ञा पुं० [सं० सत् शब्द के कर्ताकारक का बहुवचन] १. साधु, सन्यासी, विरक्त या त्यागी पुरुष। महात्मा। उ०—या जग जीवन को है यहै फल जो छल छाँडि भजै रघुराई। शोधि के संत महंतनहूँ पदमाकर बात यहै ठहराई।—पदमाकर (शब्द०)। २. हरिभक्त। ईश्वर का भक्त। धार्मिक पुरुष। ३ एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण मे २१ मात्राएँ होती हैं। ४ साधुओ की परिभाषा मे वह सप्रदायमुक्त साधु या संत जो विवाह करके गृहस्थ बन गया हो।

संतक्षण—संज्ञा पुं० [सं० सन्तक्षण] चुभने या लगनेवाली बात। व्यंग्य [को०]।

संतत¹—अव्य० [सं० सन्तत] सदा। निरंतर। बराबर। लगातार। उ०—संतत मोपर कृपा करेहू। सेवक जानि तजेहु जनि नेहूँ। मानस, १।६।

संतत²—वि० १ विस्तृत। फैलाया हुआ। २ हमेशा रहनेवाला। ३ बहुत। अधिक। ४. अविकल। अटूट [को०]।

संतत(पु)†³—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्तति] दे० 'संतति'।

संतत ज्वर—संज्ञा पुं० [सं० सन्तत ज्वर] वह ज्वर जो आठो पहर रहे। सदा बना रहनेवाला ज्वर।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यदि ऐसा ज्वर वायु की प्रबलता के कारण होता है तो लगातार सात दिनो तक, यदि पित्त की प्रबलता के कारण हो तो दस दिनो तक रहता है। इसकी गणना विषम ज्वर मे की जाती है।

सतत द्रुम -वि० [स० सन्ततद्रुम] घने वृक्षोवाला (जगल)। (वन) जो सघन वृक्षयुक्त हो। [को०]।

सततवर्षी—वि० [स० सततवर्षिन्] अविरल या अटूट वृष्टि करनेवाला [को०]।

सतति—सज्ञा स्त्री० [स० सन्तति] १ बच्चे। सतान। औलाद। २ प्रजा। रिआया। ३ गोत्र। ४ विस्तार। प्रसार। फैलाव। ५ समूह। दल। झुड। ६ किसी बात का लगातार होते रहना। अविच्छिन्नता। ७ मार्कडेय पुराण के अनुसार ऋतु की पत्नी का नाम जो दक्ष की कन्या थी। ८. अनुभूति (को०)।

सततिक—सज्ञा पु० [स० सन्ततिक] सतान। औलाद [को०]।

सततिनिग्रह—सज्ञा पुं० [स० सन्तति निग्रह] दे० 'सततिनिरोध'।

सततिनिरोध—सज्ञा पुं० [स० सन्ततिनिरोध] जनसख्या की वृद्धि रोकने के लिये प्रजनन रोकना। प्राकृतिक अथवा कृत्रिम उपायो से गर्भाधान न होने देना।

सततिपथ—सज्ञा पु० [स० सन्ततिपथ] योनि, जिसके मार्ग से सतान उत्पन्न होती है। स्त्री की जननेंद्रिय। भग।

सततिहोम—सज्ञा पुं० [सं० सन्तति होम] वैदिक काल का एक प्रकार का यज्ञ जो सतान की कामना से किया जाता था।

सतती७†—सज्ञा स्त्री० [स० सन्तति] दे० 'सतति'। उ०—सो वा कायस्थ के और कोऊ सतती नाही—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १६४।

सततेयु—सज्ञा पु० [स० सन्ततेयु] भागवत के अनुसार रौद्राश्व के एक पुत्र का नाम।

सतनु—सज्ञा पु० [स० सन्तनु] पुराणानुसार राधा के साथ रहनेवाले एक बालक का नाम।

सतपन[1]—सज्ञा पु० [स० सन्तपन] १ अच्छी तरह तपने की क्रिया। २ बहुत अधिक सताप या दुःख देना।

सतपन[2]—सज्ञा पुं० [हिं० सत+पन (प्रत्य०)] सत का भाव। सतई। साधुता।

सतपना†—सज्ञा पुं० [हिं० सत+पना (प्रत्य०)] दे० 'सतपन[2]'।

सतप्त[1]—वि० [स० सम्+तप्त, सन्तप्त] १ बहुत अधिक तपा हुआ। अत्यत तप्त। २ जला हुआ। दग्ध। ३ जिसे बहुत अधिक सताप हो। दुःखी। पीडित। ४ विमनस्। मलीन मन। ५ बहुत थका हुआ। श्रात। ६ शुष्क। मुरझाया हुआ (को०)। ७ ताप की अधिकता से द्रवीभूत या पिघला हुआ।

यौ०—सतप्तचामीकर=तपाया हुआ या ताप की अधिकता से द्रवीभूत स्वर्ण। सतप्तवक्षा=जिसे साँस लेने मे हृदयपीडा होती हो। सतप्तहृदय=मानसिक पीडा से युक्त।

सतप्त[2]—सज्ञा पुं० कष्ट। दुःख। शोक [को०]।

सतप्तायस्—सज्ञा पुं० [सं० सन्तप्तायस्] तप्त लौह। तपने के कारण लाल रग का लोहा [को०]।

सतमक—सज्ञा पुं० [स० सन्तमक] श्वासकष्ट [को०]।

सतमस्—सज्ञा पुं० [स० सन्तमस्] १ अधकार। तम। अँधेरा। २ मोह।

सतरण[1]—सज्ञा पु० [स० सन्तरण] अच्छी तरह से तरने या पार होने की क्रिया।

सतरण[2]—वि० १ तारनेवाला। पार करनेवाला। तारक। २. नष्ट करनेवाला। नाशक।

सतरा—सज्ञा पुं० [पुर्त्त० सगतरा] एक प्रकार का बडा और मीठा नीबू। बडी नारगी। दे० 'सगतरा'।

सतरी—सज्ञा पु० [अ० सेंटरी] १ किसी स्थान पर पहरा देनेवाला सिपाही। पहरेदार। उ०—जब पहरा तिनके ह्वै गयो। द्वितीय सतरी आवत भयो।—रघुराज (शब्द०)। २. द्वार पर खडा होकर पहरा देनेवाला। द्वारपाल। दौवारिक।

सतर्जन—सज्ञा पुं० [स० सन्तर्जन] १ डाँट डपट करना। भर्त्सना करना। डराना धमकाना। २ कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

सतर्जना—सज्ञा स्त्री० [सं० सन्तर्जना] सतर्जन की क्रिया। धमकी [को०]।

सतर्दन—सज्ञा पुं० [स० सन्तर्दन] भागवत के अनुसार राजा धृष्टकेतु के एक पुत्र का नाम।

सतर्पक—वि० [स० सन्तर्पक] सतुष्ट या प्रसन्न करनेवाला। तृप्त करनेवाला।

सतर्पण—सज्ञा पु० [स० सन्तर्पण] १. जो भली भाति तृप्त करता हो। वह जो प्रसन्नता एव सतोषदायक हो। २ अच्छी तरह तृप्त करना। प्रसन्न एव सतुष्ट करना। ३ वह पदार्थ जो शक्ति एव ओज का वर्धन करता हो। शक्तिवर्धक पदार्थ। ४ एक प्रकार का चूर्ण जिसमे दाख, अनार, खजूर, केला, शक्कर, लाजा (लाई) का चूर्ण, मधु और घृत पडता है।

सतर्पित—वि० [सं० सन्तर्पित] सतुष्ट एव तृप्त किया हुआ [को०]।

सतस्थान—सज्ञा पु० [स० सन्तस्थान] सतो के रहने का स्थान। साधुओ का निवास स्थान। मठ।

सतान—सज्ञा पुं० [स० सन्तान] १. बालबच्चे। लडके बाले। सतति। औलाद। २ कल्पवृक्ष। देवतरु। ३ वश। कुल। ४ विस्तार। फैलाव। ५. वह प्रवाह जो अविच्छिन्न रूप से चलता हो। धारा। ६ प्रबध। इतजाम। ७ महाभारत के अनुसार प्राचीनकाल के एक प्रकार के अस्त्र का नाम। ८ विचारो का अविच्छिन्न क्रम। विचारधारा। ९ रग। स्नायु नस (को०)।

यौ०—सतानकर्म=सतति उत्पादन। सतानकर्ता=सतान पैदा करनेवाला। सतानगणपति। सतानगोपाल। सताननिग्रह=दे० 'सततिनिरोध'। सतानवर्धन=(१) वश बढाना। (२) सतान को बढानेवाला। सतानसधि।

सतानक[1]—वि० [सं० सन्तानक] १ जो दूर तक व्याप्त हो। फैला हुआ। विस्तृत। २ सतान करनेवाला। विस्तार करनेवाला। ३ प्रबधक। इतजाम या व्यवस्था करनेवाला (को०)।

सतानक[2]—सज्ञा पुं० १ कल्पवृक्ष। देवतरु। २ पुराणानुसार एक लोक जो ब्रह्मलोक से परे कहा गया है।

सतान गणपति—सज्ञा पुं० [स० सन्तान गणपति] पुराणानुसार एक प्रकार के गणपति का नाम ।

सतान गोपाल—सज्ञा पुं० [स० सन्तान गोपाल] सतति देनेवाले कृष्ण । वासुदेव कृष्ण जिनकी पूजा सतानप्राप्ति के लिये की जाती है (को०) ।

सतानसधि—सज्ञा स्त्री० [स० सन्तानसन्धि] कामदकीय नीति के अनुसार वह सधि जो अपना लडका या लडकी देकर की जाय । (कामदक) ।

सतानिक—वि० [स० सन्तानिक] [वि० स्त्री० सतानिका] कल्पवृक्ष के पुष्पो से निर्मित । जैसे, हार, माला आदि (को०) ।

सतानिका—सज्ञा स्त्री० [स० सन्तानिका] १ क्षीर सागर । २ चाकू का फल । ३. फेन । ४ साढी । मलाई । ५ मर्कटजाल । सुश्रुत के अनुसार व्रणबधन मे प्रयुक्त एक द्रव्य । ६. पाकराजशेखर मे वर्णित एक प्रकार का मिष्ठान्न (को०) । ७ स्कद की एक मातृका (को०) ।

सतानिनी—सज्ञा स्त्री० [स० सन्तानिनी] मलाई । साढी (को०) ।

संतानी—सज्ञा पुं० [स० सन्तानिन्] अविच्छिन्न विचारप्रवाह का विषय या वस्तु (को०) ।

सताप—सज्ञा पुं० [स० सन्ताप] अग्नि या धूप आदि का ताप । जलन । आँच । २ दुख । कष्ट । व्यथा । ग्लानि । ३. मानसिक कष्ट । मनोव्यथा । पछतावा । ४. ज्वर । ५. शत्रु । दुश्मन । ६ दाह नाम का रोग । विशेष दे० 'दाह'—४ । ७ आवेश । रोप (को०) ।

यौ०—सतापकर, सतापकारक, सतापकारी = सताप देनेवाला । कष्टदायक । सतापहर, सतापहारक, सतापहारी = व्यथा या ताप का शमन करनेवाला ।

सतापन[1]—सज्ञा पु० [स० सन्तापन] १. सताप देने की क्रिया । जलाना । २ बहुत अधिक कष्ट या दुख देना । ३ कामदेव के पाँच बाणो मे से एक बाण का नाम । ४ पुराणानुसार एक प्रकार का अस्त्र जिसके प्रयोग से शत्रु को सताप होना माना जाता है । ५ आवेग । उत्तेजन । रोप (को०) । ६ शिव का एक अनुचर (को०) । ७. एक बालग्रह (को०) ।

सतापन[2]—वि० १ ताप पहुँचानेवाला । जलानेवाला । २ दुख देनेवाला । कष्ट पहुँचानेवाला ।

सतापना(पु)†—क्रि० स० [स० सन्तापन] सताप देना । दुख देना । कष्ट पहुँचाना । सताना । उ०—जाको काम क्रोध नित व्यापै । अरु पुनि लोभ सदा सतापै । ताहि असाधु कहत कवि सोई । साधु भेष धरि साधु न होई ।—सूर (शब्द०) ।

सतापवत्—सज्ञा पु० [स० सन्तापवत्] सताप या कष्ट से युक्त । जिसे सताप हो (को०) ।

सतापित—वि० [स० सन्तापित] १ जिसे बहुत सताप पहुँचाया गया हो । पीडित । सतप्त । २. तपाया हुआ । जलाया हुआ (को०) ।

सतापी—सज्ञा पु० [स० सन्तापिन्] वह जो सतप्त करता हो । सताप देनेवाला । दुखदायी ।

सताप्य—वि० [स० सन्ताप्य] १ जलाने के योग्य । २. कष्ट या दुख देने के योग्य । तकलीफ देने के लायक ।

सतार—सज्ञा पु० [स० सन्तार] १ पार करना । पार जाना । २ नदी आदि का वह छिछला स्थान जहाँ से हलकर नदी पार की जा सके । घाट । तीर्थ (को०) ।

सतावना(पु)—स० क्रि० [हिं० सतापना] दे० 'सतापना' । उ०—जिव दे जिव सतावते पलटू उनकी टेक ।—पलटू०, भा० १, पृ० १८ ।

यौ०—सतार नौ = वह नौका जिससे नदी आदि पार की जाय । घटहा ।

सति—सज्ञा स्त्री० [स० सन्ति] १. दान । भेट । अँकोर । २ अवसान । अत । समाप्ति ।

सतो[1]—अव्य० [स० सन्ति ? प्रा० सतिअ, सतिग < स० सत्क ?] बदले मे । एवज मे । स्थान मे । उ०—उसने उसकी पसलियो मे से एक पसली निकाली और उसकी सती मास भर दिया ।—दयानद (शब्द०) ।

सतो(पु)†[2]—अव्य० [प्रा० सुन्तो] से । द्वारा । उ०—सो न डोल देखा गजपती । राजा सत्त दत्त दुहुँ संती ।—जायसी (शब्द०) ।

सतुलन—सज्ञा पु० [स० सन्तुलन] १. तौल । वजन । २. आपेक्षिक भार बराबर होना । ठीक अनुपात होना । वजन ठीक कायम रहना । ३ तौलने की क्रिया ।

सतुलित वि० [स० सन्तुलित] १. ठीक ढग से तौला हुआ । २ समान अनुपात का । पूर्ण नियत्रित । जैसे,—सतुलित व्यवहार । ३. सयत । सुस्थिर । जसे,—सतुलित व्यक्ति ।

सतुषित—सज्ञा पुं० [स० सन्तुषित] ललितविस्तर के अनुसार एक देवपुत्र का नाम ।

सतुष्ट—वि० [स० सन्तुष्ट] १ जिसका सतोष हो गया हो । जिसकी तृप्ति हो गई हो । तृप्त । २ जो मान गया हो । जो राजी हो गया हो । जैसे,—इन्हे किसी तरह समझा बुझाकर सतुष्ट कर लो, फिर सब काम हो जायगा । ३ प्रसन्न । खुश (को०) ।

सतुष्टि—सज्ञा स्त्री० [स० सन्तुष्टि] सतुष्ट होने का भाव । २ इच्छा की पूर्ति । तृप्ति । २. प्रसन्नता (को०) ।

सतृण्ण—वि० [स० सम् + तृण्ण] १ परस्पर बँधा हुआ या सलग्न । जुडा हुआ । २. आच्छादित । ढँका हुआ (को०) ।

सतृप्त—वि० [स० सम् + तृप्त] पूर्ण रूप मे तृप्त या अघाया हुआ ।

सतृप्ति—सज्ञा स्त्री० [स० सम् + तृप्ति] पूर्ण सतृप्त होने का भाव । सतुष्टि ।

संतोख(पु)†—सज्ञा पुं० [स० सन्तोष] दे० 'सतोष' ।

सतोखी†—वि० [स० सन्तोषिन्] दे० 'सतोषी' ।

**संतोष**—संज्ञा पुं० [सं० सन्तोष] १ मन की वह वृत्ति या अवस्था जिसमे मनुष्य अपनी वर्तमान दशा मे ही पूर्ण सुख का अनुभव करता है, न तो किसी बात की कामना करता है और न किसी बात की शिकायत। हर हालत मे प्रसन्न रहना। संतुष्टि। सब्र। कनायत। उ०—गोधन, गजधन, वाजिधन और रतन धन खान। जब आवत संतोष धन सब धन धूरि समान। तुलसी (शब्द०)।

विशेष—हमारे यहाँ पातजल दर्शन के अनुसार 'संतोष' योग का एक अग और उसके नियम के अंतर्गत है। इसकी उत्पत्ति सात्विक वृत्ति से मानी गई है, और कहा गया है कि इसके पैदा हो जाने पर मनुष्य को अनंत और अखंड सुख मिलता है। पुराणानुसार धर्मानुष्ठान से सदा प्रसन्न रहना और दुःख मे भी आतुर न होना संतोष कहलाता है।

क्रि० प्र०—करना।—मानना।—रखना।—होना।

२ मन की वह अवस्था जो किसी कामना या आवश्यकता की भली-भाँति पूर्ति होने पर होती है। तृप्ति। शांति। इतमीनान। जैसे,—पहले मेरा संतोष करा दीजिए, तब मैं आपके साथ चलूँगा। ३ प्रसन्नता। सुख। हर्ष। आनंद। जैसे,—हमे यह जानकर बहुत संतोष हुआ कि अब आप किसी से वैमनस्य न करेंगे। ४ अंगूठा और तर्जनी (को०)।

**संतोषक**—वि० [सं० सन्तोषक] संतोष देनेवाला। संतोषदायक [को०]।

**संतोषण**—संज्ञा पुं० [सं० सन्तोषण] संतुष्ट या प्रसन्न करने का भाव। दे० 'संतोष'।

**संतोषणीय**—वि० [सं० सन्तोषणीय] १ संतोष करने योग्य। २ संतोष कराने योग्य।

**संतोषनि**—वि० स्त्री० [सं० सन्तोषिन्] जो संतोष करती हो। संतोष करनेवाली। उ०—गरीबिनी है। अच्छा बोलती बतलाती है और संतोषनि भी है।—त्याग०, पृ० ९०।

**संतोषना**⁽ᵖ⁾¹—क्रि० स० [सं० सन्तोष + हिं० ना (प्रत्य०)] संतोष दिलाना। संतुष्ट करना। तबीयत भरना। उ०—मेघनाद ब्रह्मा वर पायो। आहुति अगिनि जिवाइ संतोषी निकस्यो रथ बहु रतन बनायो। आयुध धरे समेत कवच सजि गरजि चढ्यो रणभूमिहि आयो। मनो मेघनायक ऋतु पावस बाण वृष्टि करि सैन खपायो।—सूर० (शब्द०)।

**संतोषना**²—क्रि० अ० संतुष्ट होना। प्रसन्न होना।

**संतोषित**¹—वि० [सं० सम्तोषित] प्रसन्न किया हुआ। इतमीनान कराया हुआ। संतोष कराया हुआ।

**संतोषित**²—वि० [सं० संतोष, सं० सन्तुष्ट] जिसका संतोष हो गया हो। संतुष्ट। उ०—नामदेव कह इतनहिं लैहौं। इतने महँ संतोषित ह्वैहौं।—रघुराज (शब्द०)।

विशेष—यह रूप अशुद्ध है, शुद्ध रूप संतुष्ट है। पर 'संतोषित' शब्द का भी प्रयोग कहीं कहीं हिंदी कविता मे पाया जाता है।

**संतोषी**—संज्ञा पुं० [सं० सन्तोषिन्] १ वह जो सदा संतोष रखता हो। जिसे बहुत लालसा न हो। २ सब्र करनेवाला। संतुष्ट रहनेवाला।

**संतोष्य**—वि० [सं० सन्तोष्य] संतोष करने के योग्य।

**संत्य**—संज्ञा पुं० [सं० सन्त्य] अग्निदेव का एक नाम जो सब प्रकार के फल देनेवाले माने जाते हैं।

**संत्यक्त**—वि० [सं० सम्त्यक्त] १ पूर्णतः परित्यक्त या छोड़ा हुआ। त्यक्त। २ वंचित या रहित किया हुआ [को०]।

**संत्यजन**—संज्ञा पुं० [सं० सन्त्यजन] त्याग करना। छोड़ना [को०]।

**संत्याग**—संज्ञा पुं० [सं० सन्त्याग] छोड़ देना। त्यागना [को०]।

**संत्याज्य**—वि० [सं० सन्त्याज्य] परित्याग करने योग्य। छोड़ देने लायक [को०]।

**संत्रस्त**—वि० [सं० संत्रस्त] अत्यंत भयभीत। डर से कंपित [को०]।

यौ०—संत्रस्तगोचर = जिसे देखकर डर लगे।

**संत्राण**—संज्ञा पुं० [सं० संत्राण] रक्षा। उद्धार [को०]।

**संत्रास**—संज्ञा पुं० [सं० सन्त्रास] भय। डर। त्रास [को०]।

**संत्रासन**—संज्ञा पुं० [सं० सन्त्रासन] [वि० संत्रासित] भयभीत या आतंकित करना [को०]।

**संत्रासित**—वि० [सं० सन्त्रासित] त्रस्त किया हुआ। भयभीत किया हुआ [को०]।

**संत्री**—संज्ञा पुं० [अं० सेन्ट्री, हिं० संतरी] दे० 'संतरी'।

**संत्वरा**—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्त्वरा] शीघ्रता। तत्परता। हड़बड़ी। जल्दबाजी [को०]।

**संथा**—संज्ञा पुं० [सं० संहिता या संस्था] १ चटसार। पाठशाला। २ एक बार मे पढ़ाया हुआ अंश। पाठ। सबक। उ०—किसने कहा कि हम लोग धर्म के शत्रु है? हम लोग गाने बजाते नही थे, संथा सीखते थे।—दुर्गाप्रसाद मिश्र (शब्द०)।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।—लेना।

**संथान**⁽ᵖ⁾—संज्ञा पुं० [सं० सन्धान] दे० 'संधान'। उ०—आनोजै गनिग राव परवत वेहान। तोरन गिरि संधार साथ सागर मिवानै।—पृ० रा०, १२।५४।

**संथाल**—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ बिहार का एक परगना। २ वहाँ की एक आदिवासी जाति और उसका मनुष्य।

**संथाली**¹—वि० [हिं० संथाल + ई० (प्रत्य०)] संथाल जाति, देश या भाषा से संबद्ध। संथाल का।

**संथाली**²—संज्ञा स्त्री० १ संथाल जाति की स्त्री। १ संथालो की भाषा।

**संदंश**—संज्ञा पुं० [सं० सन्दंश] १ सँडसी नाम का लोहे का औजार। २ न्याय या तर्क के अनुसार अपने प्रतिपक्षी को दोनो ओर से उसी प्रकार जकड़ या बाँध देना जिस प्रकार सँडसी मे कोई बरतन पकड़ते हैं। ३ सुश्रुत के अनुसार सँडसी के आकार का, प्राचीन काल का एक प्रकार का औजार जिसकी सहायता से शरीर मे गड़ा हुआ काँटा आदि निकालते थे।

ककमुख । ४ स्वर वा व्यजन आदि के उच्चारण के लिये जोर से दाँतो का सवरण, सपीडन या भीचना (को०) । ५ नरकविशेष का नाम (को०) । ६ पुस्तक का कोई परिच्छेद (को०) । ७ गाँव का किनारा या पार्श्व (को०) । ८ शरीर के उन अगो का नाम जिनसे कोई वस्तु पकडने का काम लेते हे (को०) ।

सदशक—सज्ञा पुं० [स० सन्दशक] १ सँडसी । २ चिमटा [को०] ।

सदशिका—सज्ञा पु० [स० सन्दशिका] १ सँडसी । २ चिमटी । ३ कैंची । ४ (चोच से) काटना, नोचना या पकडना (को०) ।

सदशित—वि० [स० सन्दशित] जो कवच धारण किए हो । कवचयुक्त ।

सदं'—सज्ञा पु० [स० सन्धि] दरार । छेद । बिल ।

संद²—सज्ञा पु० [स० (उप०) सम् + √दश्, दश् (=दबाना) अथवा सन्दान (=एक साथ बाँधना ?)] दवाव । उ०—बोलि लिए यशुमति यदनदहि । पीत भगुलिया की छवि छाजति बिज्जुलता सोहति मनो कदहि । बाजापति अग्रज अवाते अरजथान सुत माला गदहि । मनो सुरग्रह ते मुरिरपु कन्या सौतै आवति ठुरि सदहि ।—सूर (शब्द०) ।

सद(पु)³—सज्ञा पु० [स० सनन्दन] एक ऋषि । सनदन ऋषि ।

सदर्प—सज्ञा पुं० [स० सन्दर्प] घमड । गरूर [को०] ।

सदर्भ—सज्ञा पुं० [स० सन्दर्भ] १ रचना । बनावट । २. साहित्यिक रचना या ग्रथ । प्रवध । निवंध । लेख । ३ वह ग्रथ जिसमे किसी और ग्रथ के गूढ वाक्यो आदि का अर्थ या स्पष्टीकरण आदि हो । ४ कोई छोटी पुस्तक । ५ वह पुस्तक जिसमे अनेक प्रकार की बातो का सग्रह हो । ६ विस्तार । फैलाव । ७ एक साथ क्रमवद्ध करना नत्थी करना । गूँथना (को०) । ८ प्रसग । संवध । जैसे—इस बात का सदर्भ क्या है ? इस सदर्भ मे हमे कुछ नही कहना है । ९ सगीत । निरतरता (को०) । १० बुनना (को०) ।

यौ०—सदर्भविरुद्ध = असवद्ध । प्रसगरहित । सदर्भशुद्ध = जिसका सदर्भ या सवध ठीक हो । सदर्भशुद्धि = काव्यनिर्माण मे पूर्वापर क्रम से सवध निर्वाह की शुद्धता ।

सदर्श—सज्ञा पु० [स० सन्दर्श] झलक । दृश्य [को०] ।

सदर्शन—सज्ञा पुं० [स० सन्दर्शन] १ अच्छी तरह देखने की क्रिया । अवलोकन । २ घूरना । अपलक देखना । टकटकी लगाकर देखना (को०) । ३ दृष्टि । निगाह । नजर (को०) । ४ परीक्षा । इम्तहान । जाँच । पयवेक्षण । ५ ज्ञान । ६ आकृति । सूरत । शक्ल । ७ रामायण के अनुसार एक द्वीप का नाम । ८ व्यवहार (को०) । ९ दिखाना । प्रदर्शित करना (को०) ।

यौ०—सदर्शनद्वीप = एक द्वीप का नाम । सदर्शनपथ = दृष्टिपथ । आँख ।

सदर्शयिता—वि० [स० सन्दर्शयितृ] दिखाने या व्यक्त करनेवाला [को०] ।

सदर्शित—वि० [स० सन्दर्शित] दिखाया हुआ । व्यक्त किया हुआ ।

सदल—सज्ञा पुं० [फा०] श्रीखड । चदन । विशेष दे० 'चदन' ।

सदलित—वि० [स० सन्दलित] विद्ध । निभिन्न । छिद्रित, कुचला या दला हुआ । दलित [को०] ।

सदली¹—वि० [फा० सदल] सदल के रग का । हलका पीला (रग) । २ सदल का । चदन का । जैसे,—सदली कलमदान ।

सदली²—सज्ञा स्त्री० १ तिपाई । कुर्सी । चौघडिया । २ सदल की बनी हुई वस्तु [को०] ।

सदली³—सज्ञा पु० १ एक प्रकार का हलका पीला रंग ।

विशेष—यह रग कपडे को चंदन के बुरादे के साथ उबालने से आता है । इससे कपडे मे सुगधि भी आ जाती है । आजकल कई तरह की बुकनियो से भी यह रग तैयार किया जाता है ।

२ एक प्रकार का हाथी जिसे दाँत नही होते । ३ घोडे की एक जाति ।

सदष्ट¹—वि० [स० सन्दष्ट] १ आपस मे मिलाकर दवाया हुआ । २ जिसे दाँतो से काटा गया हो । ३ चर्वित । चबाया हुआ [को०] ।

सदष्ट²—सज्ञा पु० उच्चारण सवधी एक प्रकार का विशेष दोष जो दाँतो को दवाकर बोलने से होता है [को०] ।

सदाता—वि० [स० सन्दातृ] बाँधनेवाला [को०] ।

सदान¹—सज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार की निहाई जिसका एक कोना नुकीला और दूसरा चौडा होता है । अहरन । घन ।

सदान²—सज्ञा पु० [स० सन्दान] १ वधन । रस्सी । २ बाँधने की सिकडी आदि । ३ बाँधने की क्रिया । ४ हाथी का गंडस्थल जहाँ से उसका मद बहता है । ५ हाथी के पैरका वह भाग जिसमे साँकल बाँधी जाती हे (को०) । ६ काटना । विभक्त करना (को०) ।

सदानक—सज्ञा पु० [स० सन्दानक] कबूतर का घोसला [को०] ।

सदानिका—सज्ञा स्त्री० [स० सन्दानिका] १ दुर्गंध खैर । विट खदिर । बबुरी । २ एक प्रकार की मिठाई (को०) ।

सदानित—वि० [स० सन्दानित] १ बाँधा हुआ । बद्ध । २ पाशवद्ध । निगडित [को०] ।

सदानितक—सज्ञा पु० [स० सन्दानितक] एक वाक्य मे निबद्ध तीन श्लोको या पद्यो का नाम ।

सदानिनी—सज्ञा स्त्री० [स० सन्दानिनी] गौओ के रहने का स्थान । गोशाला ।

सदाय—सज्ञा पुं० [स० सन्दाय] प्रग्रह । पगहा । वल्गा [को०] ।

सदाव—सज्ञा पु० [स० सन्द्राव] भागने की क्रिया । पलायन ।

सदास—सज्ञा पु० [देश०] सफेद डामर धूप । मरहम । कहरुवा ।

विशेष—इसका वृक्ष प्राय पश्चिमी घाट मे पाया जाता है । यह सदा हरा रहता है ।

सदाह—सज्ञा पु० [स० सन्दाह] १ वैद्यक के अनुसार मुख, तालु और होठो की जलन । २ जलना (को०) ।

संदि पु—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धि] मेल। संधि। उ०—रूप सँवर संदि सो वह आपुयो अनयास। पाइ पूरण रूप को रमि भूमि केशवदास।—केशव (शब्द०)।

संदिग्ध¹—वि० [सं० सन्दिग्ध] १ जिसमे किसी प्रकार का संदेह हो। संदेहपूर्ण। संशयजनक। मुश्तवह। २ सना हुआ। ढका हुआ। ३ भ्रांत। विह्वल। ४ सशंक (को०)। ५ अव्यवस्थित। अस्पष्ट। जैसे,—वाक्य। ६ खतरनाक। असुरक्षित (को०)। ७ विष से भरा हुआ। विषाक्त (को०)।

संदिग्ध²—संज्ञा पुं० १ उत्तराभास। मिथ्या उत्तर का एक लक्षण। २ एक प्रकार का व्यंग्य जिसमे यह नही प्रकट होता कि वाचक या व्यंजक मे व्यंग्य है। ३ वह जिसपर किसी अपराध का संदेह किया जाय। जैसे,—राजनीतिक संदिग्ध। ४ संशय। अनिश्चय (को०)। ५ अनुलेपन। लेपन (को०)।

संदिग्धता—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्दिग्धता] दे० संदिग्धत्व' [को०]।

संदिग्धत्व—संज्ञा पुं० [सं० सन्दिग्धत्व] १ संदिग्ध होने का भाव या धर्म। संदिग्धता। २ अलंकार शास्त्रानुसार एक प्रकार का दोष जो उस समय माना जाता है जब कि किसी उक्ति का ठीक ठीक अर्थ प्रकट नही होता। अर्थ के संबंध मे कुछ संदेह बना रहता है।

संदिग्धनिश्चय—वि० [सं० सन्दिग्ध निश्चय] किसी बात या कार्य पर दृढ न हो सकनेवाला [को०]।

संदिग्धफल—वि० [सं० सन्दिग्धफल] १ विषाक्त वाण रखनेवाला। २ जिसकी नोक विषबुझी हो। जैसे,—तीर, गाँसी [को०]।

संदिग्धबुद्धि—वि० [सं० सन्दिग्धबुद्धि] संदेही। शंकी [को०]।

संदिग्धमति—वि० [सं० सन्दिग्धमति] दे० 'संदिग्धबुद्धि' [को०]।

संदिग्धार्थ¹—वि० [सं० सन्दिग्धार्थ] संदिग्ध अर्थवाला। जिसका मतलब संदेहास्पद हो [को०]।

संदिग्धार्थ²—संज्ञा पुं० वह विषय जिसपर मतैक्य न हो। २ वह अर्थ जो संदेहास्पद हो [को०]।

संदिग्धीकृत—वि० [सं० सन्दिग्धीकृत] जिसे संदिग्ध किया गया हो जिसे संशय युक्त या संदेहास्पद किया गया हो।

संदित—वि० [सं० सन्दित] बाँधा हुआ। ग्रस्त। निगडित [को०]।

संदिष्ट¹—वि० [सं० सन्दिष्ट] १ कथित। कहा हुआ। बताया हुआ। २ संकेतित। इंगित (को०)। ३ वादा किया हुआ। प्रतिज्ञात (को०)। ४ निर्दिष्ट (को०)।

संदिष्ट²—संज्ञा पुं० १ वार्ता। बातचीत। २ समाचार। खबर। ३ संदेशवाहक। चर (को०)।

संदिष्टार्थ—संज्ञा पुं० [सं० सन्दिष्टार्थ] वह जो एक का समाचार दूसरे तक पहुँचाता हो। सँदेसा ले जानेवाला दूत। कासिद।

संदिहान—वि० [सं० सन्दिहान] संदिग्ध। संशयपूर्ण [को०]।

संदी—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्दी] शय्या। पलंग। खाट।

संदीपक—वि० [सं० सन्दीपक] उद्दीपन करनेवाला। उद्दीपक।

संदीपन¹—संज्ञा पुं० [सं० सन्दीपन] १ उद्दीप्त करने की क्रिया। उद्दीपन। प्रज्वलित करना। २ कृष्ण के गुरु का नाम। विशेष दे० 'सांदीपनि'। ३ कामदेव के पाँच बाणों मे से एक बाण का नाम।

संदीपन²—वि० १ उद्दीपन करनेवाला। उत्तेजन करनेवाला। २ सुलगानेवाला। प्रज्वलित करनेवाला (को०)।

संदीपनी¹—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्दीपनी] संगीत मे पंचम स्वर की चार श्रुतियो मे से तीसरी श्रुति।

संदीपनी²—वि० संदीपन करनेवाली। उद्दीप्त करनेवाली।

संदीपित—वि० [सं० सन्दीपित] १ जिसका संदीपन किया गया हो। संदीप्त। उद्दीप्त। २ जलाया हुआ। प्रज्वलित।

संदीप्त—वि० [सं० सन्दीप्त] १ प्रज्वलित। २ उद्दीप्त। ३ उत्तेजित। उकसाया हुआ [को०]।

संदीप्य¹—संज्ञा पुं० [सं० सन्दीप्य] मयूरशिखा नामक वृक्ष।

संदीप्य²—वि० संदीपन करने के योग्य। संदीपनीय।

संदुष्ट—वि० [सं०] १ कलुषित किया हुआ। खराब। २ नीच। दुष्ट। ३ विकृत। कुरूप [को०]।

संदूक—संज्ञा पुं० [अ० संदूक] [अल्पा० संदूकचा, संदूकची] लकड़ी, लोहे, चमड़े आदि का बना हुआ चौकोर पिटारा जिसमें प्राय कपड़े, गहने आदि चीजें रखते हैं। पेटी। बकस।

संदूकचा—संज्ञा पुं० [अ० संदूक + चह् (प्रत्य०)] छोटा संदूक। छोटा बकस। छोटी पेटी।

संदूकची—संज्ञा स्त्री० [अ० संदूक + ची (प्रत्य०)] छोटी पेटी या संदूक।

संदूकडी—संज्ञा स्त्री० [अ० संदूक + डी (प्रत्य०)] छोटा संदूक। छोटा बकस।

संदूकिया†—संज्ञा स्त्री० [अ० संदूक + हिं० इया (प्रत्य०)] संदूक। बकस। पेटी।

संदूकी—वि० [अ० संदूक] संदूक सा। बकसनुमा। संदूक के आकार का। जैसे, संदूकी कब्र।

संदूख—संज्ञा पुं० [हिं० संदूक] दे० 'संदूक'।

संदूर पु—संज्ञा पुं० [सं० सिन्दूर] दे० 'सिंदूर'। उ०—नवल सिंगार बनाहत कीन्हा। सीस पसारहिं संदुर दीन्हा।—जायसी (शब्द०)।

संदूषण—संज्ञा पुं० [सं० सन्दूषण] संदुष्ट करना। कलुषित या खराब करना [को०]।

संदूषित—वि० [सं० सन्दूषित] १ दूषित किया हुआ। २ (रोग) जो असाध्य हो गया हो। जिसकी हालत और भी खराब हो उठी हो (मर्ज)। ३ जिसकी निंदा की गई हो।

संदृब्ध—वि० [सं० सन्दृब्ध] परस्पर गुँथा हुआ [को०]।

संदृश्य—वि० [सं० सन्दृश्य] १ किसी के अनुरूप या समान देख पड़नेवाला। २ दे० 'संदृष्ट'।

सदृष्ट—वि० [स० सन्दृष्ट] १ पूर्ण रूप से अवलोकित। भली भाँति देखा हुआ। २ निर्दिष्ट (को०)।

सदेग्धा—वि० [स० सन्देग्धृ] शक्की स्वभाव का। सदेहालु।

सदेव—सज्ञा पु० [स० सन्देव] हरिवश के अनुसार देवक से एक पुत्र का नाम।

सदेवा—सज्ञा स्त्री० [स० सन्देवा] वसुदेव की स्त्री और देवक की कन्या का नाम। इनका दूसरा नाम श्रीदेवा या सुदेवा भी है।

संदेश—सज्ञा पुं० [स०] १ समाचार। हाल। खबर। सवाद। २ एक प्रकार की बँगला मिठाई जो छेने और चीनी के योग से बनती है। ३ वाचिक कथन। सँदेसा। ४ दे० 'सदश'। ५ आज्ञा। आदेश (को०)।

यौ०—सदेशपद = समाचार के शब्द। सदेशवाक् = समाचार। हाल। सदेशवाहक, सदेशहारक, सदेशहारी = सदेश ले जानेवाला।

सदेशहर—सज्ञा पु० [स० सन्देशहर] सदेसा या समाचार ले जानेवाला। वार्तावाह। दूत। कासिद।

सदेशा—सज्ञा पु० [स० सन्देश] दे० 'सदेश'।

सदेशी—सज्ञा पु० [स० सन्देशिन्] सदेश लानेवाला। समाचार वाहक। बसीठ। दूत।

सदेस—सज्ञा पु० [स० सन्देश] दे० 'सदेश'।

सदेसड़ा पु—सज्ञा पु० [हिं० सदेस + राज० डा (प्रत्य०)] सदेश। हालचाल। समाचार। कथन। उ०—अवसर जे नहिं आविया, वेला जे न पहुत्त। सज्जण तिण सदेसडइ, करिजइ राज बहुत्त। —ढोला०, दू० १७६।

सदेसरा पु—सज्ञा पु० [हिं० सदेस + रा (प्रत्य०)] दे० 'सदेशडा'।

सदेसी†—सज्ञा पु० [स० सन्देशिन्] सदेशी। बसीठ। दूत।

सदेह—सज्ञा पु० [स० सन्देह] १ वह ज्ञान जो किसी पदार्थ की वास्तविकता के विषय मे स्थिर न हो। किसी विषय मे ठीक या निश्चित न होनेवाला मत या विश्वास। मन की वह अवस्था जिसमे यह निश्चय नही होता कि यह चीज ऐसी ही है या और किसी प्रकार की। अनिश्चयात्मक ज्ञान। सशय। शका। शक। उ०—तब खगपति विरचि पहिं गएऊ। निज सदेह सुनावत भएऊ।—मानस, ७।६०।

क्रि० प्र०—करना।—डालना।—मिटना।—मिटाना।—होना।

यौ०—सदेहगध = सदेह का आभास या झलक। सदेहच्छेदन = शक दूर करना। सदेह न रहना। सदेहदायी = शका उत्पन्न करनेवाला। शक धरानेवाला। सदेहदोला = दुवधा की स्थिति। अनिश्चय की अवस्था। सदेहनाश = सशय मिटना। सदेहपद = सशय की जगह। सदेह का स्थान। सदेहभजन = शक या शका दूर करना।

२. एक प्रकार का अर्थालकार।

विशेष—यह उस समय माना जाता है जब किसी चीज को देखकर सदेह बना रहता है, कुछ निश्चय नही होता। 'भ्राति' मे और 'सदेह' मे यह अतर है कि भ्राति मे तो भ्रमवश किसी एक वस्तु का निश्चय हो भी जाता है, पर इसमे कुछ भी निश्चय नही होता। कविता मे इस अलकार के सूचक प्राय धौं, किधौं, आदि सदेहवाचक शब्द आते हैं। जैसे,—(क) की तुम हरिदासन महँ कोई। मोरे हृदय प्रीति अति होई। की तुम राम दीन अनुरागी। आए मोहिं करन बडभागी। —तुलसी (शब्द०)। (ख) सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है कि सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है। कुछ आचार्यो ने इसके निश्चयगर्भ, निश्चयात और शुद्ध ये तीन भेद माने है।

३ जोखिम। खतरा। डर (को०)। ४ शरीर के भौतिक उपकरणो का उपचयन (को०)।

सदेहात्मक—वि० [स० सन्देहात्मक] सदिग्ध (को०)।

सदेहास्पद—वि० [स० सन्देहास्पद] सदेह का स्थान। सदिग्ध।

सदेही—वि० [सं० सन्देहिन्] १ सदेहवाला। शक्की। २ अनिश्चयात्मक (को०)।

सदोल—सज्ञा पु० [स० सन्दोल] कान मे पहनने का कर्णफूल नाम का गहना।

सदोह—सज्ञा पु० [स० सन्दोह] १ समूह। झुड। उ०—जयति निर्भरानद सदोह कपि केसरी सुवन भुवनैक भर्ता।—तुलसी (शब्द०)। २ दूध दुहना (को०)। ३. गायो आदि के झुड का सारा दूध (को०)।

सद्रव—सज्ञा पुं० [स० सन्द्रव] १ गूँथने की क्रिया। गुथन। २ पलायन। भागना (को०)।

संद्राव—सज्ञा पुं० [स०] १ युद्ध क्षेत्र से भागने की क्रिया। पलायन। २ चाल। गति (को०)। ३ दौडने का स्थान (को०)।

सध पु—सज्ञा स्त्री० [स० सन्धि] दे० 'सधि'।

सध¹—वि० [सं० सन्ध] १ रखनेवाला। धारण करनेवाला। २. मिला-हुआ। युक्त (को०)।

सध²—सज्ञा पुं० योग। लगाव। सबध (को०)।

सधना पु—क्रि० अ० [स० सन्धि] सयुक्त होना। मिलना। उ०—पक्ष दू सधि सध्या सधी है मनो।—केशव (शब्द०)।

सधा—सज्ञा स्त्री० [स० सन्धा] १ स्थिति। २ प्रतिज्ञा। करार। ३. सधान। सधि। मिलन। ४ सध्या काल। साँझ।

यौ०—सधा भाषा = अस्पष्ट भाषा जो साफ न व्यक्त हो। सधाभाष्य, सधावचन = अस्पष्ट कथन। घुमाफिरा कर कही हुई उलझन भरी उक्ति।

५ अनुसधान। तलाश। ६ सीमा। हद (को०)। ७ घनिष्ट या प्रगाढ सबध (को०)। ८ स्थिरता। स्थैर्य (को०)। ९. शराब चुवाना। मद्यसधान (को०)।

सधातव्य—वि० [स० सन्धातव्य] १. एक मे मिलाने या युक्त करने के योग्य। २. जिससे सधान या सधि की जाय (को०)।

**संधाता**—संज्ञा पुं० [सं० सन्धातृ] १ शिव । २ विष्णु ।

**संधान**—संज्ञा पुं० [सं० सन्धान] १ धनुष पर बाण चढाने की क्रिया । लक्ष्य करने का व्यापार । निशाना लगाना । २ शराब बनाने का काम । ३ मदिरा । शराब । ४ संघट्टन । योजन । मिलाना । मिश्रण (ओषधि या अन्य पदार्थो का)। ५ अन्वेषण । खोज । ६ मुरदे को जिलाने की क्रिया । पुनर्जीवन । संजीवन । ७ एक मिश्रित धातु । काँसा । कास्य । ८ संधि । जोड । ९ अच्छे स्वाद की चीज । १० काँजी । ११ मैत्री । मेल । दोस्ती (को०) । १२ अवधान (को०) । १३ निदेशन (को०) । १५ सँभालना । सहारा देना (को०) । १६ अँचार आदि बनाना (को०) । १७ रक्तस्राव का अवरोध करनेवाली ओषधियो के द्वारा चमडे की सिकुडन (को०) । १८ सौराष्ट्र या काठियावाड का एक नाम ।

यौ०—संधानकर्ता = संधान करनेवाला । संधानतान = संगीत मे एक तान । संधानभाड = अचार आदि बनाने का पात्र । संधानभाव = दे० 'संधानताल' ।

**संधानना**†—क्रि० स० [सं० सन्धान + ना (प्रत्य०)] १ धनुष चढाना । धनुष पर बाण चढाकर लक्ष करना । निशाना लगाना । २ बाण छोडना । तीर चलाना । ३ किसी अस्त्र को प्रयोग करने के लिये ठीक करना ।

**संधाना**—संज्ञा पु० [सं० सन्धानिका] अचार । खटाई । उ०—पुनि संधाने आए बसाँधे । दूह दही के मुरडा बाँधे ।—जायसी ग्रं०, पृ० १२४ ।

**संधानिका**—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धानिका] प्राचीन काल का एक प्रकार का आम का अचार ।

**संधानित**—वि० [सं० सन्धानित] १ मिलाया हुआ । साथ साथ नत्थी किया हुआ । २ बाँधा हुआ । कसा हुआ । ३ जिसका संधान किया गया हो (को०) ।

**संधानिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धानिनी] गौओ के रहने का स्थान । गोशाला ।

**संधानी**[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धानी] एक मे मिलने या मिश्रित होने की क्रिया । मिलन । २ प्राप्ति । ३ बंधन । ४ अन्वेषण । तलाश । ५ पालन । ६ काँजी । ७ अचार । खटाई । ८ वह स्थान जहाँ ढलाई की जाती है । ९ वह स्थान जहाँ मदिरा बनाई जाती है । १० दे० 'संधान' । ११ मदिरा बनाना । शराब चुआना (को०) ।

**संधानी**[2]—वि० [सं० सन्धानिन्] १ निशाना लगाने मे प्रवीण । २ मदिरा तैयार करनेवाला । ३ एक साथ मिलाने या युक्त करनेवाला (को०) ।

**संधापगमन**—संज्ञा पुं० [सं० सन्धापगमन] कामदकीय नीति के अनुसार समीपवर्ती शत्रु से संधि कर दूसरे शत्रु पर चढाई करना ।

**संधारण**—संज्ञा पुं० [सं० सन्धारण] [स्त्री० संधारणा] [वि० संधारणीय] १ रोक रखना । धारण करना । २ बरदाश्त करना । सहन करना । ३ अस्वीकार करना (प्रार्थना आदि) । ४ अनुसरण करना । अनुवर्तन करना (को०) ।

**संधारणीय**—वि० [सं० सन्धारणीय] धारण करने योग्य (को०) ।

**संधार्य**—वि० [सं० सन्धार्य] १ धारण या वहन करने लायक । २ अस्वीकृति के योग्य । ३ (नौकर) रखने योग्य (को०) ।

**संधालिका**—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धालिका] एक प्रकार का भोजन (को०) ।

**संधि**—संज्ञा [सं०] १ दो चीजो का एक मे मिलना । मेल । संयोग । २ वह स्थान जहाँ दो चीजें एक मे मिलती हो । मिलने की जगह । जोड । ३ राजाओं या राज्यों आदि मे होनेवाली वह प्रतिज्ञा जिसके अनुसार युद्ध बंद किया जाता है, मित्रता या व्यापार संबध स्थापित किया जाता है, अथवा इसी प्रकार का और कोई काम होता है ।

विशेष—पहले केवल दो योद्धा राज्यो मे ही संधि हुआ करती थी, पर अब बिना युद्ध के ही मित्रता का बंधन दृढ करने, पारस्परिक व्यवसाय वाणिज्य मे सहायता देने और सुगमता उत्पन्न करने अथवा किसी दूसरे राज्य मे राजनीतिक अधिकारो की प्राप्ति अथवा रक्षा के लिये भी संधि हुआ करती है । आजकल साधारणत राज प्रतिनिधि एक स्थान पर मिलकर संधि का मसौदा तैयार करते है, और तब वह मसौदा अपने अपने राज्य के प्रधान शासक अथवा राजा आदि के पास स्वीकृति के लिये भेजते है, और जब प्रधान शासक अथवा राजा उसपर स्वीकृति की छाप लगा देता है, तब वह संधि पूरी समझी जाती है और उसके अनुसार कार्य होता है । जिस पत्र पर संधि की शर्तें लिखी जाती हैं, उसे 'संधिपत्र' कहते है । मनु भगवान् ने संधि को राजा के छह् गुणो मे से एक गुण बतलाया है, (शेष पाँच गुण ये हैं—विग्रह, यान, आसन, द्वैध और आश्रय) । हमारे यहाँ प्राचीन काल मे किसी शत्रु राज्य पर आक्रमण करने के लिये भी दो राजा परस्पर मिलकर संधि किया करते थे । हितोपदेश मे संधि सोलह प्रकार की कही गई है—कपाल, उपहार, संतान, संगत, उपन्यास, प्रतीकार, संयोग, पुरुषांतर, अदृष्टनर, आदिष्ट, आत्मादिष्ट, उपग्रह, परिक्रय, ततोच्छिन, परभूषण और स्कंधोपनेय । जब संधि करनेवालो मे से कोई पक्ष उस संधि की शर्तो को तोडता या उनके विरुद्ध काम करता है, तो उसे संधि का भंग होना कहते है ।

४ सुलह । मित्रता । मैत्री । ५ शरीर मे कोई वह स्थान जहाँ दो या अधिक हड्डियाँ आपस मे मिलती हो । जोड । गाँठ । जैसे,—कुहनी, घुटना, पोर आदि ।

विशेष—वैद्यक के अनुसार ये संधियाँ दो प्रकार की है । चेष्टावान् और निश्चल । सुश्रुत के अनुसार सारे शरीर मे सब मिलाकर २१० संधियाँ है ।

६ व्याकरण मे वह विकार जो दो अक्षरो के पास पास आने के कारण उनके मेल से होता है ।

विशेष—संधि हिंदी में नहीं होती, संस्कृत के जो सामासिक शब्द आते हैं, उन्हीं के निरूपण के लिये हिंदी में संधि की आवश्यकता होती है। संस्कृत में संधि तीन प्रकार की होती है—(१) स्वर संधि (जैसे,—राम + अवतार = रामावतार), (२) व्यंजन संधि (जैसे,—जगत् + नाथ = जगन्नाथ), और (३) विसर्ग संधि (जैसे,—नि + अंतर = निरंतर)।

७ नाटक में किसी प्रधान प्रयोजन के साधक कथांशों का किसी एक मध्यवर्ती प्रयोजन के साथ होनेवाला संबंध। ये संधियाँ पाँच प्रकार की कही गई हैं—मुख संधि, प्रतिमुख संधि, गर्भ संधि, अवमर्श या विमर्श संधि और निर्वहण संधि। ८. चोरी आदि करने के लिये दीवार में किया हुआ छेद। सेंध। ९ एक युग की समाप्ति और दूसरे युग के आरंभ के बीच का समय। युगसंधि। १० किसी एक अवस्था के अंत और दूसरी अवस्था के आरंभ के बीच का समय। वय संधि। जैसे—शैशव और बाल्य अवस्था की संधि। ११ स्त्री की जननेंद्रिय। भग। १२ सघट्टन। १३. दो चीजों के बीच की खाली जगह। अवकाश। १४ भेद। १५ साधन। १६ वस्त्र आदि की तह। पर्त (को०)। १७ उपयुक्त अवसर (को०)। १८ संकट का समय (को०)। १९ मद्य संधान। मद्य निष्कर्ष (को०)। २०. वह भूमि आदि जो मंदिर के लिये धर्मार्थ दी गई हो (को०)। २१. प्रबंध करना (को०)। २२ संध्या। गोधूली। साँझ (को०)। २३ दो स्तरों या पर्तों के बीच की विभाजन रेखा (को०)। २४ लव और आधार का मिलनस्थल। वह स्थान जहाँ लव आधार से मिलता है (को०)। २५ दो त्रिभुजों की उभयनिष्ठ भुजा (को०)।

संधिक—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार सन्निपात रोग का एक भेद।

विशेष—इस रोग में शरीर की संधियों में वायु के कारण अधिक पीड़ा होती है और कफ, संताप, शक्तिहीनता, निद्रानाश आदि उपद्रव होते हैं। इसका वेग एक सप्ताह तक रहता है।

संधिकर्म—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिकर्म] संधि करना। सुलह करना।

विशेष—संधि के मुख्य दो भेद हैं—चालसंधि और स्थावरसंधि। चालसंधि वह है जिसे दोनों पक्ष शपथ करके करते हैं, और स्थावर संधि वह है जो कुछ दे लेकर की जाती है। कौटिल्य में चालसंधि को बहुत ही स्थायी कहा है, क्योंकि शपथ खाकर की हुई संधि राजा लोग कभी नहीं तोड़ते थे। कामंदक ने १६ प्रकार की संधियाँ कही हैं।

संधिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धिका] मद्य आदि चुवाना (को०)।

संधिकाल—संज्ञा पुं० [सं०] संधि का समय। दो के मिलने का क्षण। दो तिथियों, मुहूर्तों आदि के योग का काल। जैसे,—दिन और रात का संधिकाल।

संधिकाष्ठ—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिकाष्ठ] प्रासादशिखर के नीचे लगाई जानेवाली लकड़ी (को०)।

संधिकुशल—वि० [सं० सन्धिकुशल] जो संधि करने में प्रवीण हो।

संधिकुसुमा—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धिकुसुमा] त्रिसंधि नामक फूलदार पौधा।

संधिग—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिग] एक प्रकार का ज्वर। विशेष दे० 'संधिक'।

संधिगुप्त—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिगुप्त] वह स्थान जहाँ शत्रु की आनेवाली सेना पर छापा मारने के लिये सैनिक लोग छिपकर बैठते हैं।

संधिगृह—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिगृह] मधुमक्खी का छत्ता (को०)।

संधिग्रंथि—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धिग्रन्थि] शरीरावयवों के जोड़ पर की ग्रंथि या गाँठ (को०)।

संधिचोर, संधिचौर—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिचोर, सन्धिचौर] सेंध लगाकर चोरी करनेवाला। सेंधिया चोर।

संधिच्छेद—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिच्छेद] १ वह (पक्ष) जो संधि के नियमों का भंग करता हो। अहदनामे की शर्तें तोड़नेवाला। २ सेंध लगानेवाला (को०)।

संधिच्छेदक—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिच्छेदक] १ संधि तोड़नेवाला। २. संधिचोर। सेंधियाचोर।

संधिच्छेदन—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिच्छेदन] दे० 'संधिच्छेद' (को०)।

संधिज¹—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिज] १. (चुआकर तैयार किया हुआ) मद्य, आसव आदि। २. वह फोड़ा जो शरीर की किसी संधि या गाँठ पर हो।

संधिज²—वि० १ संधि द्वारा उत्पन्न। संधान द्वारा निर्मित (मद्य आदि)। २ ग्रंथि या गाँठ पर होनेवाला। जैसे,—संधिज व्रण। ३. व्याकरण में दो शब्दों की संधि से बना हुआ। जैसे,—संधिज शब्द (को०)।

संधिजीवक—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिजीवक] वह जो स्त्रियों को पुरुषों से मिलाकर जीविका चलाता हो। कुटना। टाल।

संधित¹—वि० [सं० सन्धित] १. जिसमें संधि हो। संधियुक्त। २ एक में मिलाया हुआ (को०)। ३ बद्ध। बँधा हुआ (को०)। ४. संधान किया हुआ। स्थिर किया हुआ। रखा हुआ। जैसे,—धनुष पर तीर (को०)। ५ अचार डाला हुआ (को०)। ६ जिसने संधि किया हो या जिससे संधि हुई हो (को०)।

संधित²—संज्ञा पुं० १ आसव। अर्क। २ अचार (को०)। ३. अलग हुए वालों को एक में बाँधना (को०)।

संधितस्कर—संज्ञा पुं० [सं० सन्धितस्कर] दे० 'संधिचोर' (को०)।

संधितटी—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धितटी] संधि का स्थान। दो वस्तुओं के मिलने का स्थान। उ०—सोभा सुमेरु की संधितटी किधौं मान मवास गढास की घाटी।—घनानंद, पृ० ३३।

संधिदूषण—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिदूषण] संधि या शर्त तोड़ना (को०)।

संधिनाल—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिनाल] नख या खुर (को०)।

संधिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धिनी] १. गाभिन गौ। २ वह गौ जो गाभिन होने पर भी दूध दे। ३ वह गौ जो बिना बछड़े के दूध दे। ४. वह गौ जो बेसमय या दिन रात में एक समय दूध दे।

संधिपूजा—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धिपूजा] शारदीय नवरात्र मे अष्टमी और नवमी के संधिकाल मे दुर्गा की अर्चना ।

संधिप्रच्छादन—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिप्रच्छादन] संगीत मे स्वर साधन की एक प्रणाली जो इस प्रकार होती है । आरोही—सा रे ग, रे ग म, ग म प, म प ध, प ध नि, ध नि सा । अवरोही—सा नि ध, नि ध प, ध प म, प म ग, म ग रे, ग रे सा ।

संधिप्रबंधन—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिप्रबन्धन] दे० 'संधिबंधन' ।

संधिबंध—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिबन्ध] १ भुइँ चंपा । २ स्नायु । नस (को०) । ३ दराज या संधि को जोड़नेवाली वस्तु । चूना या सीमेंट (को०) ।

संधिबंधन—संज्ञा पुं० [सं० संधिबन्धन] शिरा । नाड़ी । नस ।

संधिभंग—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिभङ्ग] १ वैद्यक के अनुसार हाथ या पैर आदि के किसी जोड़ का टूटना । २ संधि की शर्तों की अवहेलना करना (को०) ।

संधिभग्न—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिभग्न] एक प्रकार का रोग जिसमे अंग की संधियों मे अत्यंत पीड़ा होती है ।

संधिमुक्त—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिमुक्त] दे० 'संधिभंग' ।

संधिमुक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धिमुक्ति] जोड़ खुल जाना (को०) ।

संधिमोक्ष—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिमोक्ष] पुरानी संधि तोड़ना । संधिभंग । विशेष दे० 'समाधि मोक्ष' ।

संधिरंध्रका—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धिरन्ध्रका] सुरंग । सेंध ।

संधिराग—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिराग] १ सिंदूर । सेंदुर । २ साँझ या सवेरे की लाली (को०) ।

संधिला—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धिला] १ सुरंग । सेंध । दरार । २. गर्त । गड्ढा । ३ नदी । ४ मदिरा । शराब । ५ एकसाथ अनेक वाद्यों के बजने से उठनेवाली जोर की आवाज (को०) ।

संधिविग्रह—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिविग्रह] राजशासन की परराष्ट्र संबंधी दो नीतियाँ शांति और युद्ध । मैत्री और लड़ाई या शत्रुता ।

संधिविग्रहक—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिविग्रहक] दे० 'संधिविग्रहिक' ।

संधिविग्रहाधिकार—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिविग्रहधिकार] विदेश विभाग या परराष्ट्र संबंधी मंत्रालय (को०) ।

संधिविग्रहिक—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिविग्रहिक] परराष्ट्रों के साथ युद्ध या संधि का निर्णय करनेवाला मंत्री या अधिकारी ।

संधिविग्रही—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिविग्रहिन्] दे० 'संधिविग्रहिक' ।

संधिविचक्षण—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिविचक्षण] वह व्यक्ति जो संधि करने मे चतुर हो (को०) ।

संधिविच्छेद—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिविच्छेद] १. समझौता तोड़ना या टूटना । २ व्याकरण मे संधिगत शब्दों को अलग अलग करना (को०) ।

संधिविद्—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिविद्] संधि की वार्ता करनेवाला (को०) ।

संधिविद्ध—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिविद्ध] एक प्रकार का रोग जिसमे हाथ पैर के जोड़ों मे सूजन और पीड़ा होती है ।

संधिविपर्यय—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिविपर्यय] मैत्री और शत्रुता । शांति और युद्ध (को०) ।

संधिवेला—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धिवेला] १ संध्या का समय । सायंकाल । शाम । २ कोई भी संधिकाल । वह काल जिसमे दो काल-विभागों का मेल हो (को०) ।

संधिशूल—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिशूल] एक रोग । दे० 'आमवात' (को०) ।

संधिसंभव—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिसम्भव] संयुक्त स्वर या संधि से बना वर्ण । जैसे, आ = अ + अ, ए = अ + इ, क्ष = क् + ष्, ज्ञ = ज् + ञ आदि ।

संधिसितासित—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिसितासित] आँखों का एक प्रकार का रोग ।

संधिस्थल—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिस्थल] १ वह स्थल जहाँ राष्ट्रों मे संधि हो । २ किन्हीं दो के मिलन का स्थान । ३ सेंध लगाने का स्थान ।

संधिहारक—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिहारक] वह चोर जो सेंध लगाकर चोरी करता हो । सेंधिया चोर ।

संधी—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिन्] संधि का काम देखनेवाला मंत्री । सुलह समझौता करनेवाला मंत्री । परराष्ट्र मंत्री (को०) ।

संधुक्षण¹—संज्ञा पुं० [सं० सन्धुक्षण] [वि० संधुक्षित] १ जलाना । प्रदीप्त करना । २ उकसाना । उत्तेजित करना (को०) ।

संधुक्षण²—वि० उद्दीपक । उत्तेजक (को०) ।

संधुक्षित—वि० [सं० सन्धुक्षित] प्रज्वलित या उद्दीप्त किया हुआ (को०) ।

संधेय—वि० [सं० सन्धेय] १ जो संधि करने के योग्य हो । जिसके साथ संधि की जा सके । २ जिसे शांत किया जा सके । शांत करने या मनाने योग्य (को०) । ३ लक्ष्य साधने के योग्य (को०) । ४ जो पुनः जोड़ा या मिलाया जा सके । फिर से मिलने, जुड़ने या एक होने योग्य (को०) ।

संध्यंग—संज्ञा पुं० [सं० सन्ध्यङ्ग] नाटक मे मुखादि संधियों के अंग, उपांग (को०) ।

संध्य—वि० [सं० सन्ध्य] १ संधि संबंधी । संधि का । २. संधि पर आद्धृत (को०) । ३ जिसकी संधि होनेवाली हो (को०) । ४ विचारयुक्त । सोचता हुआ (को०) ।

संध्यर्क्ष—संज्ञा पुं० [सं० सन्ध्यर्क्ष] वह नक्षत्र जिसमे दो राशियाँ हों । दो राशियों के बीच का नक्षत्र । जैसे,—कृतिका नक्षत्र, जिसके पहले पाद मे मेष राशि और तीनों पादों मे वृष राशि है ।

संध्यांश, संध्यांशक—संज्ञा पुं० [सं० सन्ध्यांश, सन्ध्यांशक] युगांत काल । दो युगों का संधिकाल । वह काल जिसमे एक युग की समाप्ति और दूसरे का आरंभ हो (को०) ।

संध्या—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्ध्या] १ दिन और रात दोनों के मिलने का समय । संधिकाल ।

विशेष—दिन और रात के मिलने के दो समय हैं—प्रातःकाल और सायंकाल । शास्त्रों मे कहा है कि रात का अंतिम एक

दड और दिन का पहला एक दड ये दोनो मिलाकर प्रात सध्याकाल होते हे, और दिन का अतिम एक दड और रात का पहला एक दड ये दोनो मिलकर साय सध्याकाल होते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ लोग ठीक दोपहर के समय एक और सध्या मानते हे, जिसे मध्याह्न सध्या कहते है।

२ दिन का अतिम भाग। सूर्यास्त के लगभग का समय। शाम। सायकाल। ३ आर्यो की एक विशिष्ट उपासना।

विशेष—यह उपासना प्रतिदिन प्रात काल, मध्याह्न और सध्या के समय होती है। इसमे स्नान और आचमन करके कुछ विशिष्ट मत्रो का पाठ, अगन्यास, और गायत्री का जप किया जाता है। द्विजातियो के लिये यह उपासना अवश्य कर्तव्य कही गई है।

४ दूसरे युग की सधि का समय। दो युगो के मिलने का समय। युगमधि। ५ एक प्राचीन नदी का नाम। ६ सीमा। हद। ७ सधान। ८ एक प्रकार का फूल। ९ प्रतिज्ञा। वादा (को०)। १० चितन। मनन (को०)। ११ योग। मेल (को०)। १२ ब्रह्मा की पत्नी (को०)। १३ दिन का कोई भी प्रभाग, जैसे पूर्वाह्न, मध्याह्न, अपराह्न (को०)। १४ काल या सूर्य की स्त्री (को०)।

यौ०—सध्याकार्य, सध्यावदन = दे० 'सध्योपासन। सध्याकाल = (१) गोधूलि। झुटपुटा। (२) शाम। सायकाल। सध्याकालिक = शाम से सबधित। सध्यापयोद = सायकालीन वर्षा के वादल। शाम की वदली। सध्यापुष्पी। सध्यावल। सध्यावलि सध्यामगल = साँझ के धार्मिक कृत्य।

सध्याचल—सज्ञा पुं० [सं० सन्ध्याचल] अस्ताचल [को०]।

सध्यानाटी—सज्ञा पु० [स० सन्ध्यानाटिन्] शिव। महादेव।

सध्यापुष्पी—सज्ञा स्त्री० [स० सन्ध्यापुष्पी] १ जातीफल। जायफल। २ एक प्रकार की जूही या चमेली [को०]।

सध्यावधू—सज्ञा स्त्री० [स० सन्ध्यावधू] रात्रि। रात। निशि।

सध्यावल—सज्ञा पु० [स० सन्ध्यावल] निशाचर। राक्षस। निश्चर।

सध्यावलि—सज्ञा पु० [स० सन्ध्यावलि] १ शिव के मदिर मे वनी हुई नदी की प्रतिमा। २ सायकालीन वलिप्रदान आदि पूजा [को०]।

सध्याराग—सज्ञा पुं० [स०] १ श्यामकल्याण नाम का एक राग जिसका वर्ण सगीत शास्त्र के अनुसार काला माना गया है। २ सिंदूर। सेदुर।

सध्याराम—सज्ञा पु० [स० सन्ध्याराम] ब्रह्मा।

सध्यासन—सज्ञा पु० [स० सन्ध्यासन] कामदक नीति के अनुसार आपस मे लडकर शत्रुओ का कमजोर होकर वैठ जाना।

सध्योपासन—सज्ञा पु० [स० सन्ध्योपासन] सुवह, शाम और मध्याह्न के समय की जानेवाली उपासना। विशेष दे० 'सध्या' -३।

सध्वान—वि० [स० सन्ध्वान] सन् मन् की आवाज या ध्वनि उत्पन्न करनेवाला [को०]।

सनिक्षेप्ता—सज्ञा पु० [स० सम् + निक्षेप्तृ] कौटिल्य के अनुसार श्रेणी या सघ के धन को रखनेवाला। खजानची।

सन्यसन—सज्ञा पु० [स० सन्न्यसन] दे० 'सन्यसन'।

सन्यस्त—वि० [स० सन्न्यस्त] दे० 'सन्यस्त'।

सन्यास—सज्ञा पु० [स० सन्न्यास] १ भारतीय आर्यो के चार आश्रमो मे से अतिम आश्रम। वानप्रस्थ आश्रम के पश्चात् का आश्रम।

विशेष—प्राचीन भारतीय आर्यो ने जीवन के चार विभाग किए थे, जो आश्रम कहलाते हैं। (दे० 'आश्रम') इनमे से अतिम आश्रम सन्यास कहलाता है। पचीस वर्ष तक वानप्रस्थ आश्रम मे रहने के उपरात ७५वें वर्ष के अत मे इस आश्रम मे प्रवेश करने का विधान है। इस आश्रम मे काम्य और नित्य आदि सब कर्म किए तो जाते हे, पर विलकुल निष्काम भाव से किए जाते है, किसी प्रकार के फल की आशा रखकर नही किए जाते। विशेष दे० 'सन्यासी'।

२ भावप्रकाश के अनुसार मूर्च्छा रोग का एक भेद।

विशेष—यह बहुत ही भयानक कहा गया है। यह रोग प्राय निर्वल मनुष्यो को हुआ करता है और इसमे रोगी के मर जाने की भी आशका रहती हे। साधारण मूर्छा से इसमे यह अतर है कि मूर्च्छा मे तो रोगी थोडी देर मे आप से आप होश मे आ जाता है, पर इसमे विना औषध और चिकित्सा के होश नही होता।

३ जटामासी। (अन्य अर्थों के लिये दे० 'सन्यास' शब्द)।

सन्यासी—सज्ञा पुं० [स० सन्न्यासिन्] वह जो सन्यास आश्रम मे हो। सन्यास आश्रम मे रहने और उसके नियमो का पालन करनेवाला।

विशेष—सन्यासियो के लिये शास्त्रो मे अनेक प्रकार के विधान है, जिनमे से कुछ इस प्रकार है—सन्यासी को सब प्रकार की तृष्णाओ का परित्याग करके घर वार छोडकर जगल मे रहना चाहिए, सदा एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करना चाहिए, कही एक जगह जमकर न रहना चाहिए, गैरिक कौपीन पहनना चाहिए, दड और कमडलु अपने पास रखना चाहिए, सिर मुडाए रहना चाहिए, शिखा और सूत्र का परित्याग कर देना चाहिए, भिक्षा के द्वारा जीवन निर्वाह करना चाहिए, एकात स्थान मे निवास करना चाहिए, सव पदार्थो और सव कार्यो मे समदर्शी होना चाहिए, और सदुपदेश आदि के द्वारा लोगो का कल्याण करना चाहिए। आजकल सन्यासियो के गिरि, पुरी, भारती आदि अनेक भेद पाए जाते है। एक प्रकार के कौल या वाममार्गी सन्यासी भी होते है जो मद्य मास आदि का भी सेवन करते हे। इनके अतिरिक्त नागे, दगली, अघोरी, आकाशमुखी, मौनी आदि भी सन्यासियो के ही अंतर्गत माने जाते है।

२ वह जो छोड देता है या जमा करता हे (को०)। ३. वह जो पृथक् या अलग कर देता है (को०)। ४ भोजन का त्याग करनेवाला। त्यक्ताहार व्यक्ति (को०)।

सप—सज्ञा पुं० [स० सम्प] छोड़ना। त्यागना। अलग करना [को०]।

सपक्व—वि० [स० सम्पक्व] १ अच्छी तरह पकाया हुआ। २ पका हुआ (फल)। ३ बूढ़ा। मरने के करीब पहुँचा हुआ [को०]।

सपत्—सज्ञा स्त्री० [स० सम्पत्] दे० 'सपद्'।

सपति—सज्ञा स्त्री० [स० सम्पत्ति] दे० 'सपत्ति'। उ०—(क) सपति सब रघुपति कै आही।—मानस, २।१८६। (ख) जगत विदित बूँदी नगर सुख सपति को धाम।—मतिराम (शब्द०)। (ग) तहो कियो भगवत बिन सपति शोभा साज।—केशव (शब्द०)।

सपत्कुमार—सज्ञा पुं० [स० सम्पत्कुमार] विष्णु का एक रूप।

सपत्ति—सज्ञा स्त्री० [सं० सम्पत्ति] १ ऐश्वर्य। वैभव। २ धन। दौलत। जायदाद। मिलकियत। ३ सफलता। पूर्णता। सिद्धि। ४ प्राप्ति। लाभ। ५ अधिकता। बहुतायत। ६ सौभाग्य। अच्छे दिन (को०)। ७ एक जड़ी। वृद्धि (को०)।

सपत्नी—सज्ञा स्त्री० [स० सम्पत्नी] वह स्त्री जो अपने पति के साथ हो [को०]।

सपत्नीय—सज्ञा पुं० [स० सम्पत्नीय] पितरों को जल देने का एक भेद।

सपत्प्रदा—सज्ञा स्त्री० [स० सम्पत्प्रदा] १ सौभाग्य देनेवाली एक भैरवी का नाम। २ एक बौद्ध देवी [को०]।

सपद्—सज्ञा स्त्री० [स० सम्पद्] १ सिद्धि। पूर्णता। २ ऐश्वर्य। वैभव। गौरव। ३ सौभाग्य। अच्छे दिन। भले दिन। सुख की स्थिति।

यौ०—सपद्वर। सपद्वसु। सपद् विपद् = सुख दु:ख।

४ प्राप्ति। लाभ। फायदा। ५ अधिकता। ज्यादती। बहुतायत। ६ मोतियों का हार। ७ वृद्धि नाम की ओषधि। ८ धन। दौलत। ९ कोश। खजाना (को०)। १० सद्गुणों की वृद्धि (को०)। ११ सजावट। अलकरण (को०)। १२ ठीक ढग। सही ढग (को०)। १३ सौंदर्य। शोभा। काति (को०)।

सपद¹—वि० [स० सम्पद] सपन्न। पूर्ण [को०]।

सपद²—सज्ञा पुं० पैरों को एक समान या एक साथ करके खड़ा होना।

सपदा—सज्ञा स्त्री० [स० सम्पद्] धन दौलत। ऐश्वर्य। वैभव।

सपदी—सज्ञा स्त्री० [स० सम्पदिन्] अशोक के एक पौत्र का नाम।

सपद्वर—सज्ञा पु० [स० सम्पद्वर] भूभृत्। राजा [को०]।

सपद्वसु—सज्ञा पु० [स० सम्पद्वसु] सूर्य की सात प्रमुख रश्मियों में से एक का नाम जिससे भौम ग्रह को ताप की प्राप्ति होती है [को०]।

सपन्न¹—वि० [स० सम्पन्न] १ पूरा किया हुआ। पूर्ण। सिद्ध। साबित। मुकम्मल। २ सहित। युक्त। भरा पूरा। उ०—ससिसपन्न सोह महि कैसी।—तुलसी (शब्द०)। ३ जिसे कुछ कमी न हो। धन धान्य से पूर्ण। खुशहाल। ४ धनी। दौलतमद। ५ ठीक। उचित। सही (को०)। ६ पूर्ण विकसित। परिपक्व (को०)। ७ प्राप्त। हासिल (को०)। ८ घटित। जो हुआ हो (को०)। ९ भाग्यशाली (को०)।

सपन्न²—सज्ञा पुं० १ सुस्वादु भोजन। व्यजन। २ शिव (को०)। ३ धन दौलत (को०)।

सपन्नक—वि० [सं० सम्पन्नक] दे० 'सपन्न' [को०]।

सपन्नक्रम—सज्ञा पुं० [स० सम्पन्नक्रम] एक प्रकार की समाधि। (बौद्ध)।

सपन्नक्षीरा—वि० [स० सम्पन्नक्षीरा] अधिक दूध देनेवाली जो अधिक दूध देती हो। दुधारू [को०]।

सपन्नतम—[स० सम्पन्नतम] जो पूरी तौर से ठीक हो अथवा पूरा हो चुका हो [को०]।

सपन्नतर—वि० [स० सम्पन्नतर] अत्यत स्वादिष्ट [को०]।

सपन्नता—सज्ञा स्त्री० [स० सम्पन्नता] भरा पूरा या सपन्न होने का भाव। युक्तता [को०]।

सपराय—सज्ञा पुं० [सं० सम्पराय] १ मृत्यु। मौत। २ अनादि काल से स्थिति। ३ युद्ध। लड़ाई। झगड़ा। ४ आपत्ति। दुर्दिन। ५ भविष्य।

सपरायक, सपरायिक—सज्ञा पुं० [सं० सम्परायक, सम्परायिक] युद्ध। सग्राम। लड़ाई [को०]।

सपरिग्रह—सज्ञा पुं० [स० सम्परिग्रह] १ सौजन्यपूर्ण स्वीकार। दयालुता के साथ स्वीकार करना। २ धन दौलत। वैभव। सपत्ति [को०]।

सपरेत—वि० [सं० सम्परेत] १ जो मरनेवाला हो। आसन्न मृत्यु। २ मृत। मरा हुआ [को०]।

सपर्क—सज्ञा पुं० [सं० सम्पर्क] [वि० सपृक्त] १ मिश्रण। मिलावट। २ मेल। मिलाप। सयोग। ३ लगाव। ससर्ग। वास्ता। ४ स्पर्श। सटना। ५ योग। जोड़। (गणित)। ६ सभोग। मैथुन (को०)।

सपर्की—वि० [सं० सम्पर्किन्] सपर्क युक्त। सपर्क विशिष्ट।

सपर्कीय—वि० [सं० सम्पर्कीय] सपर्क विशिष्ट। सपर्की [को०]।

सपवन—सज्ञा पुं० [स० सम्पवन] शुद्ध करना। पवित्रीकरण [को०]।

सपा¹—सज्ञा स्त्री० [सं० सम्पा] विद्युत्। बिजली। उ०—सपा घन बीच ऐसो लसी बन बीच फलो, डारि सो टूटि कुसुमित सि फली डार गहें।—भिखारी० ग्र०, भा० १, पृ० १६८। २ साथ साथ पान करना या पीना (को०)।

सपा²—सज्ञा स्त्री० [देशी] काची। मेखला। करधनी [को०]।

सपाक¹—सज्ञा पुं० [स० सम्पाक] १ अच्छी तरह पकना। परिपाक होना। २ आरग्वध वृक्ष। अमलतास। ३ वह जो ठीक ढग से तर्क करे। ठीक तर्क करनेवाला।

सपाक²—वि० लपट। २ धूर्त। ३ अल्प। कम। ४ तर्कक। तर्क मे प्रवीण। तर्क करनेवाला (को०)।

सपाचन—सज्ञा पुं० [स० सम्पाचन] १ अच्छी तरह पकाना। २ पकाकर मुलायम करना। ३ सुश्रुत के अनुसार सेककर फोडे आदि को मुलायम करना [को०]।

सपाट—सज्ञा पु० [स० सम्पाट] १ किसी त्रिभुज की बढी हुई भुजा पर लब का गिरना । २ तकला । तकुआ ।

सपाठ—सज्ञा पु० [स० सम्पाठ] वह पाठ जो सिलसिलेवार हो (को०) ।

सपाठ्य—वि० [स० सम्पाठ्य] एक साथ पढने योग्य । लगातार पढने योग्य (को०) ।

सपात—सज्ञा पु० [स० सम्पात] १. एक साथ गिरना या पडना । २ ससर्ग । मेल । मिलान । ३ सगम । समागम । ४ सगम स्थान । मिलने की जगह । ५. कुदान । उडान । टूट पडना । झपट । ७. युद्ध का एक भेद । ८ प्रवेश । पहुँच । पैठ । ९. घटित होना । होना । १० द्रव पदार्थ के नीचे बैठी हुई वस्तु । तलछट । ११ अवशिष्ट अश । व्यवहार से बचा हुआ भाग । १२ अध पतन । उतरना (को०) । १३ अस्त्रशस्त्रो का प्रहार होना । बाण आदि का चलना (को०) । १४. भेजना । प्रेषित करना । जैसे, दूतसपात (को०) । १५ चलना । गमन । गतिशील होना (को०) । १६ हटाना । दूर करना (को०) । १७ गरुड के पुत्र का नाम (को०) ।

यौ०—सपातपाटव = झपटने या कूदने मे पटुता ।

सपाति—सज्ञा पु० [स० सम्पाति] १ एक गीध जो गरुड का ज्येष्ठ पुत्र और जटायु का भाई था । २ माली नाम राक्षस का उसकी वसुदा नामक भार्या से उत्पन्न चार पुत्रो मे से एक पुत्र, यह विभीषण का मत्री था । ३ राम की सेना का एक बदर ।

सपातिक—सज्ञा पुं० [स० सम्पातिक] दे० 'सपाति' (को०) ।

सपाती¹—वि० [स० सम्पातिन्] [वि० स्त्री० सपातिनी] १ एक साथ कूदने या झपटनेवाला । २. एक साथ उडनेवाला (को०) । ३. उडने मे स्पर्धा करनेवाला (को०) ।

सपाती²—सज्ञा पु० [स० सम्पाति] १ जटायु का भाई । उ०—गिरि कदरा सुनी सपाती ।—मानस, ४।२७ । २ दे० 'सपाति' ।

सपाद—सज्ञा पु० [स० सम्पाद] १ समाप्ति । पूर्ति । निष्पन्नता । सिद्धि । २ प्राप्ति । अधिग्रहण (को०) ।

सपादक—सज्ञा पु० [स० सम्पादक] १ सपन्न करनेवाला । कोई काम पूरा करनेवाला । काम का अजाम देनेवाला । २ प्रस्तुत करनेवाला । तैयार करनेवाला । ३ प्रदान करनेवाला । लाभ करनेवाला । ४ किसी समाचारपत्र या पुस्तक को क्रम से लगाकर निकालनेवाला । एडिटर । ५. उत्पादक । उत्पन्न करनेवाला (को०) ।

सपादकत्व—सज्ञा पु० [स० सम्पादकत्व] सपादन करने का भाव या अवस्था ।

सपादकीय¹—वि० [स० सम्पादकीय] सपादक सबधी । सपादक का ।

सपादकीय²—सज्ञा पु० वह लेख या टिप्पणी जो सपादक द्वारा लिखा गया हो । अग्रलेख । (अ० एडिटोरियल) ।

सपादन—सज्ञा पुं० [स० सम्पादन] [वि० सपादनीय, सपादी, सपाद्य] १ किसी काम को पूरा करना । अजाम देना । २ प्रस्तुत करना । प्रदान करना । ३ ठीक करना । तैयार करना । ४ किसी पुस्तक या सवादपत्र आदि को क्रम, पाठ आदि लगाकर प्रकाशित करना । ५ उत्पन्न करना (को०) ।

सपादना(पु)—क्रि० स० [स० सम्पादन] सपादित करना । प्रस्तुत करना । सपादन करना ।

सपादयिता—वि०, सज्ञा पु० [स० सम्पादयितृ] [स्त्री० सपादयित्री] १. सपादन करनेवाला । २ पूरा करने या प्रस्तुत करनेवाला । ३ ठीक करनेवाला । ४. उत्पादन करनेवाला । उत्पन्न करनेवाला (को०)

सपादित—वि० [स० सम्पादित] १ पूर्ण किया हुआ । अजाम दिया हुआ । २ तैयार । प्रस्तुत । ३. क्रम, पाठ आदि लगाकर ठीक किया हुआ । (पत्र, पुस्तक आदि) ।

सपादी—वि० [स० सम्पादिन्] [वि० स्त्री० सपादिनी] १. सपादन करनेवाला । २ प्रस्तुत करनेवाला । ३. जो सपादन कर सकता हो । उपयुक्त (को०) ।

सपिडित—वि० [स० सम्पिण्डित] १ एक साथ किया हुआ । ढेर लगाया हुआ । २. सिकुडा हुआ । सकुचित (को०) ।

सपित—सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का बाँस जिसका टोकरा बनता है । यह खसिया की पहाडियो मे होता है ।

सपिधान—सज्ञा पुं० [स० सम्पिधान] आच्छादन । ढकना । पिधान । ढक्कन (को०) ।

सपिष्ट—वि० [स० सम्पिष्ट] चूर किया हुआ । अच्छी तरह पीसा हुआ (को०) ।

सपीड़—सज्ञा पुं० [स० सम्पीड] १. पीडा देना । २. दलना, दबाना या निचोडना । ३ विक्षोभण । मथना । ४. भेजना । निर्देशन (को०) ।

सपीडन—सज्ञा पुं० [स० सम्पीडन] १ खूब दबाना या निचोडना । खूब मसना । खूब पीडा देना । ३ अतिशय पीडा । दड । ४ शब्दोच्चारण का एक दोष । ५. भेजना । प्रेषण (को०) । ६ क्षुब्ध करना (को०) ।

सपीडा—सज्ञा पु० [स० सम्पीडा] अत्यधिक व्यथा या कष्ट (को०) ।

सपीडित—वि० [स० सम्पीडित] १ जो पकड लिया गया हो । ग्रस्त । २ दबाया हुआ । ३ निचोडा हुआ (को०) ।

सपीति—सज्ञा स्त्री० [स० सम्पीति] मिलाकर पीना । साथ साथ पान करना (को०) ।

सपुज—सज्ञा पु० [स० सम्पुञ्ज] राशि । ढेर (को०) ।

सपुट¹—सज्ञा पु० [स० सम्पुट] १ पात्र के आकार की वस्तु । कटोरे या दोने की तरह चीज जिसमे कुछ भरने के लिये खाली जगह हो । २ खप्पर । ठीकरा । कपाल । ३ दोना । ४ ढक्कनदार पिटारी या डिबिया । डिब्बा । सपुटा । ५ अँजली । ६ फूल के दलो का ऐसा समूह जिसके बीच खाली जगह हो । कोश । ७ कपडे और गीली मिट्टी से लपेटा हुआ वह बरतन जिसके भीतर कोई रस या ओषधि फूँकते हैं । ८. कटसरैया का फूल । कुरबक । ९ हिसाब मे बाकी या उधार । १० एक तरह का रतिबध (को०) । ११ गोलाध (को०) । १२ घुँघरू (को०) ।

सपुट ⓤ॰—वि॰ ढका हुआ। मुँदा हुआ। बद। आवृत। जैसे, सपुट पाठ।

सपुटक—सज्ञा पु॰ [स॰ सम्पुटक] १ गोल डब्बा या पिटारी। आवरण। आच्छादन। ढक्कन। ३ एक प्रकार का रतिबध [को॰]।

सपुटका, सपुटिका—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ सम्पुटका, सम्पुटिका] १ मजूषा। पिटारो। २ सगह। निधि। ३ एक प्रकार का कवल। ऊर्णायु। ४ आच्छादन। ढक्कन [को॰]।

सपुटी—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ सम्पुट] छोटी कटोरी या तश्तरी जिसमे पूजन के लिये घिसा हुआ चदन, अक्षत आदि रखते हैं।

सपुटीकरण—सज्ञा पु॰ [स॰ सम्पुटीकरण] सपुट करना। आवृत करना। ढकना [को॰]।

सपुष्ट—वि॰ [स॰ सम्पुष्ट] १ पूर्णत पुष्ट। भरा पूरा। २ पूरी तरह समर्थित।

सपुष्टि—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ सम्पुष्टि] १ पूर्ण समृद्धता। २. सपुष्ट या समर्थन करना।

सपूजक—वि॰ [स॰ सम्पूजक] समान करनेवाला। आदर देनेवाला [को॰]।

सपूजन॰—वि॰ [स॰ सम्पूजन] [वि॰ स्त्री॰ सपूजनी] श्लाघ्य। वद्य। प्रशस्तियुक्त [को॰]।

सपूजन॰—सज्ञा पुं॰ १ समादृत करना। पूजित करना। प्रशसन। वदन। २ उपस्थित होना। समुख होना।

सपूजनीय—वि॰ [स॰ सम्पूजनीय] दे॰ 'सपूज्य'।

सपूजा—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ सम्पूजा] समान। स्तुति। प्रशसा। वदना।

सपूजित—वि॰ [स॰ सम्पूजित] जिसका भव्य रूप से आदर हुआ हो।

सपूज्य—वि॰ [स॰ सम्पूज्य] पूजनीय। मान्य। आदरणीय [को॰]।

सपूयन—सज्ञा पुं॰ [स॰ सम्पूयन] पूर्णत शुद्ध करना। पवित्र करना [को॰]।

सपूरक—वि॰ [स॰ सम्पूरक] पूरी तरह भरनेवाला। तृप्त या तुष्ट करनेवाला [को॰]।

सपूरण॰—सज्ञा पु॰ [स॰ सम्पूरण] पुष्टिकर भोजन से उदर पूरी तरह भरना [को॰]।

सपूरण ⓤ॰—वि॰ [सं॰ सपूर्ण, सम्पूर्ण] दे॰ 'सपूर्ण'।

सपूरन ⓤ॰—वि॰ [सं॰ सपूर्ण, सम्पूर्ण] दे॰ 'सपूर्ण'।

सपूर्ण॰—वि॰ [स॰ सम्पूर्ण] १ खूब भरा हुआ। पूरी तौर से भरा हुआ। २ सब। बिलकुल। समस्त। पूरा। ३ समाप्त। खत्म। सपन्न। ४ पूर्ण रूप से युक्त। ५ अत्यधिक। अतिशय।

यौ॰—सपूर्णकाम = (१) जिसकी सभी कामनाएँ पूर्ण हो चुकी हों। (२) आकाक्षाओं से युक्त। सपूर्णकालीन = जो उचित या पूरे समय पर हो। समय की पूर्णता या ठीक समय पर होनेवाला। पूरे समय का। सपूर्णपुच्छ = पूँछ फैलानेवाला—मयूर। मोर। सपूर्ण फलभाग् = पूर्ण फल प्राप्त करनेवाला। सपूर्णमूर्च्छा। सपूर्णलक्षण = सख्या या लक्षणों मे पूर्ण। सपूर्णविद्य = जो विद्याओं से पूर्ण हो। प्राप्तविद्य। सपूर्णस्पृह् = जिसकी आकाक्षा पूरी हो गई हो।

सपूर्ण॰—सज्ञा पु॰ १ वह राग जिसमे सातो स्वर लगते हों। २ आकाश भूत।

सपूर्णत—क्रि॰ वि॰ [स॰ सम्पूर्णतस्] पूरी तरह से। पूर्ण रूप से।

सपूर्णतया—क्रि॰ वि॰ [स॰ सम्पूर्णतया] पूरी तरह से। भली भाँति। अच्छी तरह।

सपूर्णतर—वि॰ [स॰ सम्पूर्णतर] पूर्णत भरा हुआ। भलीभाँति भरा हुआ। अधिक भरा हुआ।

सपूर्णता—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ सम्पूर्णता] १ सपूर्ण होने का भाव। पूरापन। २ समाप्ति।

सपूर्णत्व—सज्ञा पुं॰ [स॰ सम्पूर्णत्व] दे॰ 'सपूर्णता' [को॰]।

सपूर्णमूर्च्छा—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ सम्पूर्णमूर्च्छा] युद्ध करने की एक कला या रीति [को॰]।

सपूर्णा—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ सम्पूर्णा] एकादशीविशेष।

सपूर्ति—सज्ञा स्त्री॰ [स॰] पूर्णत भर जाना। पूर्ण हो जाना [को॰]।

सपृक्त—वि॰ [स॰ सम्पृक्त] १ ससर्ग मे आया हुआ। छूआ हुआ। २ मिला हुआ। मिश्रित। ३ मेल मे आया हुआ। ४. सयुक्त। सवद्ध (को॰)। ५ पूर्ण। भरा हुआ (को॰)। ६ खचित। जटित (को॰)।

सपृष्ट—वि॰ [स॰ सम्पृष्ट] जिससे पूछताछ की गई हो। जो पूछा गया हो [को॰]।

सपेष—सज्ञा पुं॰ [स॰ सम्पेष] दे॰ 'सपेषण'।

सपेषण—सज्ञा पु॰ [स॰ सम्पेषण] पीसना। पीसने की क्रिया। चूर्ण करना [को॰]।

सपै ⓤ—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ सम्पत्ति] वैभव। वढती।

सपोषण—सज्ञा पुं॰ [स॰ सम्पोषण] १ सवर्धन। पालन पोषण। २ समर्थन।

सपोषित—वि॰ [स॰ सम्पोषित] १ सवर्धित। पालित पोषित। २ जिसकी पुष्टि की गई हो। समर्थित [को॰]।

सपोष्य—वि॰ [स॰ सम्पोष्य] १ सपोषण या पालन के योग्य। २ समर्थन करने योग्य [को॰]।

सप्रकल्पित—वि॰ [सं॰ सम्प्रकल्पित] १ प्रतिष्ठित। व्यवस्थित। २. स्थापित। जिसकी प्रकल्पना की गई हो [को॰]।

सप्रकाश—सज्ञा पु॰ [स॰ सम्प्रकाश] १ देदीप्यमान उदय। तेजयुक्त आविर्भाव। २ विशद या निर्मल रूपाकृति [को॰]।

सप्रकाशक—वि॰ [स॰ सम्प्रकाशक] व्यक्त करनेवाला। प्रकाशित करनेवाला [को॰]।

सप्रकाशन—सज्ञा पुं॰ [सं॰ सम्प्रकाशन] व्यक्त वा प्रकाशित करना। समक्ष करना। सामने लाना [को॰]।

सप्रकाशित—वि॰ [स॰ सम्प्रकाशित] अभिव्यक्त। प्रकाशित [को॰]।

सप्रकाश्य—वि० [स० सम्प्रकाश्य] जो संप्रकाशन के योग्य हो अथवा जिसका सप्रकाशन किया जाय [को०]।

सप्रकीर्ण—वि० [स० सम्प्रकीर्ण] जो एक मे मिला हो। मिश्रित [को०]।

सप्रकीर्तित—वि० [स० सम्प्रकीर्तित] १ अभिहित। उक्त। कथित। २. वर्णित [को०]।

सप्रक्षाल—सज्ञा पु० [स० सम्प्रक्षाल] १ पूर्ण विधि से स्नान करनेवाला। २. एक प्रकार के यति या साधु। ३ प्रजापति के पैर धोए हुए जल से उत्पन्न एक ऋषि।

सप्रक्षालन—सज्ञा पु० [स० सम्प्रक्षालन] १ अच्छी तरह धोना। खूब धोना। २ पूर्ण स्नान। ३ जलप्रलय। जलप्लावन।

सप्रक्षालनी—सज्ञा स्त्री० [सं० सम्प्रक्षालनी] एक प्रकार की जीविका या वृत्ति। (बौद्ध)।

सप्रक्षुभित—वि० [स० सम्प्रक्षुभित] जो विशेष रूप से उत्तेजित या क्षुब्ध हो [को०]।

यौ०—सप्रक्षुभितमानस = जिसका मन क्षुब्ध हो। व्याकुल।

सप्रगर्जित—सज्ञा पु० [स० सम्प्रगर्जित] जोरो की चिल्लाहट। जोर से चिल्लाने की आवाज [को०]।

सप्रचोदित—वि० [स० सम्प्रचोदित] १ प्रेरित। उत्साहित। आगे किया हुआ। २. आकांक्षित। इच्छित। अभीष्ट [को०]।

सप्रजात—वि० [स० सम्प्रजात] उत्पन्न। उद्भूत। आविर्भूत। प्रकट। जात [को०]।

सप्रजाता—सज्ञा स्त्री० [सं० सम्प्रजाता] वह (गाय) जिसने बछडा जनन किया हो [को०]।

सप्रज्ञात[१]—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रज्ञात] योग मे समाधि के दो प्रधान भेदों मे से एक। वह समाधि जिसमे आत्मा विषयो के बोध से सर्वथा निवृत्त न होने के कारण अपने स्वरूप के बोध तक न पहुँची हो।

विशेष—ध्यान या समाधि की पूर्व दशा मे चार प्रकार की समापत्तियाँ कही गई है जिनमे शब्द, अर्थ, विषय आदि मे से किसी न किसी का बोध अवश्य बना रहता है। इन चारो मे से किसी समापत्ति के रहने से समाधि सप्रज्ञात कहलाती है। सप्रज्ञात समाधि या समापत्ति के चार भेद है—सवितर्क, निर्वितर्क, सविचार और निर्विचार।

सप्रज्ञात[२]—वि० अच्छी तरह विवेचित, ज्ञात या बोधयुक्त [को०]।

यौ०—सप्रज्ञात योगी = वह योगी जिसका विषयबोध बना हुआ हो। सप्रज्ञात समाधि = दे० 'सप्रज्ञात[१]'।

सप्रज्वलित—वि० [स० सम्प्रज्वलित] १ जलता हुआ। जिसमे से खूब लौ निकल रही हो। २ द्योतित। प्रकाशित। दीप्त [को०]।

सप्रणर्दित—वि० [स० सम्प्रणर्दित] चिल्लाया हुआ। शोर किया हुआ। नर्दित [को०]।

सप्रणाद—सज्ञा पुं० [सं० सम्प्रणाद] [वि० सप्रणादित] आवाज। शोर गुल [को०]।

सप्रणादित—वि० [सं० सम्प्रणादित] जो ध्वनित किया हुआ हो [को०]।

सप्रणीत—वि० [सं० सम्प्रणीत] १ एक साथ किया हुआ या उपस्थापित। २. विरचित। रचित। निबद्ध। जैसे, कविता, रचना आदि [को०]।

सप्रणेता—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रणेतृ] १. नायक (सेना आदि का)। २. विचारपति। शासक। ३ प्रणेता। विधान करनेवाला (दड, सजा आदि का)। ४ वह जो धारण, पालन या भरण करता हो [को०]।

सप्रतर्दन—वि० [स० सम्प्रतर्दन] चुभनेवाला। भेदन या विदारण करनेवाला।

सप्रतापन—सज्ञा पु० [स० सम्प्रतापन] १ प्रतप्त करना। तपाना। जलाना। २ कष्ट देना। पीडन। उत्पीडन। ३ मनु द्वारा उक्त एक नरक का नाम [को०]।

सप्रति[१]—अव्य० [स० सम्प्रति] १ इस समय। अभी। आजकल। २ मुकाबले मे। ३ ठीक तौर से। ठीक ढग से। ४. उपयुक्त समय पर। ठीक समय पर।

संप्रति[२]—सज्ञा पुं० १ पूर्व अवसर्पिणी के २४ वे अर्हत् का नाम। (जैन)। २ अशोक का पोता। कुनाल का एक पुत्र।

सप्रतिनदित—वि० [स० सम्प्रतिनन्दित] पूर्णत सत्कृत [को०]।

संप्रतिपत्ति—सज्ञा पु० [स० सम्प्रतिपत्ति] १ पहुँच। गुजर। २ प्राप्ति। लाभ। ३ सम्यक् बोध। ठीक ठीक समझ मे आना। ४ समझ। बुद्धि। ५ मतैक्य। एकमत होना। एक राय होना। ६ स्वीकृति। मजूरी। ७ अभियुक्त का न्यायालय मे सत्य बात स्वीकार करना। (स्मृति)। ८. सपादन। सिद्धि। कार्य की पूर्णता। ९ प्रत्युत्पन्नमतित्व (को०)। १० सहयोग (को०)। ११. हमला। आक्रमण (को०)। १२. मौजूदगी। उपस्थिति (को०)।

सप्रतिपन्न—वि० [स०] १ पहुँचा हुआ। गया हुआ। उपस्थित। २. स्वीकृत। मजूर। ३. उपस्थित बुद्धि का। तेज समझनेवाला। ४ सपन्न। पूर्ण किया हुआ (को०)।

संप्रतिपादन—सज्ञा पुं० [स० सम्प्रतिपादन] १ प्राप्त कराना। २. देना [को०]।

सप्रतिप्राण—सज्ञा पु० [स० सम्प्रतिप्राण] शरीरस्थ प्राणवायु [को०]।

सप्रतिभास—सज्ञा पु० [स० सम्प्रतिभास] वह उपलब्धि या अनुभव जो समिलन की ओर अभिमुख करता हो [को०]।

सप्रतिमुक्त—वि० [स० सम्प्रतिमुक्त] पूर्ण बद्ध। अच्छी तरह से कसा या बाँधा हुआ [को०]।

सप्रतिरोधक—सज्ञा पु० [स० सम्प्रतिरोधक] पूर्णत अवरोध, रोक या बधन। २ विघ्न। बाधा [को०]।

सप्रतिष्ठा—सज्ञा स्त्री० [स० सम्प्रतिष्ठा] [वि० सप्रतिष्ठित] १. सुरक्षण। २ सातत्य। नैरतर्य (शुरू होने या अत का उलटा)। ३ उच्च पद या श्रेणी [को०]।

सप्रतिष्ठित—वि० [स० सम्प्रतिष्ठित] १ दृढतापूर्वक स्थित। अच्छी तरह जमा हुआ। सुस्थिर। २ जो सप्रतिष्ठा से युक्त हो। ३. अस्तित्व युक्त। सत्तात्मक [को०]।

संप्रतीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्प्रतीक्षा] अपेक्षा। आशा [को०]।

संप्रतीत—वि० [सं० सम्प्रतीत] १ प्रत्यावर्तित। वापस आया हुआ। २ पूरी तरह विश्वस्त। पूर्ण विश्वासवाला। ३. पूर्णत विश्लेपित या निर्णीत। कृतनिश्चय। ४ पूर्ण ज्ञात। जिसे सब जानते हों। समान्य। ५ विनम्र। विनययुक्त [को०]।

संप्रतीति—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्प्रतीति] १ पूर्ण विश्वास या प्रतीति। पूर्ण निर्णय या ज्ञान। ३ ख्याति। प्रसिद्धि। ४ विनय [को०]।

संप्रत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्प्रत्ति] पूर्ण रूप से दे देना। पूरी तरह दे देना [को०]।

यौ०—संप्रत्तिकर्म = पूर्णत प्रदान करने की क्रिया।

संप्रत्यय—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रत्यय] १ स्वीकृति। मजूरी। मानने की क्रिया या भाव। २ दृढ विश्वास। पूरा यकीन। ३ ठीक ठीक समझ। सम्यक् बोध। ४ भावना। विचार।

संप्रत्यागत—वि० [सं० सम्प्रत्यागत] वापस। लौटा हुआ [को०]।

संप्रथित—वि० [सं० सम्प्रथित] जो लोगों में पूर्णत ज्ञात वा प्रसिद्ध हो [को०]।

संप्रद—वि० [सं० सम्प्रद] उदार। दानशील।

संप्रदत्त—वि० [सं० सम्प्रदत्त] १ हस्तांतरित किया हुआ। जिसे पूर्ण रूप से प्रदान कर दिया गया हो। २ विवाह में दिया हुआ [को०]।

संप्रदा‡—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रदाय] दे० 'संप्रदाय'।

संप्रदातन—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रदातन] इक्कीस नरकों में से एक।

संप्रदाता—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रदातृ] देने अथवा हस्तांतरित करनेवाला व्यक्ति [को०]।

संप्रदान—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रदान] १ दान देने की क्रिया या भाव। २ दीक्षा। मंत्रोपदेश। शिष्य को मंत्र देना। ३ उपहार। भेंट। नजर। ४ विवाह में देना [को०]। ५ हस्तांतरित करना या पूरी तौर से दे देना (को०)। ६ वह जो दान को ग्रहण करे। आदाता (को०)। ७ व्याकरण में एक कारक जिसमें शब्द देना क्रिया का लक्ष्य होता है।

विशेष—हिंदी में इस कारक के चिह्न 'को' और 'के लिये' है। जैसे,—राम को दो। उसके लिये लाया।

संप्रदानीय—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रदानीय] १ वह जो प्रदान करने के लिये हो। २ भेंट। उपहार। दान [को०]।

संप्रदाय—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रदाय] [वि० साम्प्रदायिक] १ देनेवाला। दाता। २ गुरुपरंपरागत उपदेश। गुरुमंत्र। ३ कोई विशेषधर्म संबधी मत। ४ किसी मत के अनुयायियों की मंडली। फिरका। ५ मार्ग। पथ। ६ परिपाटी। रीति। चाल। ७ भेंट। दान (को०)।

संप्रदायी—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रदायिन्] [स्त्री० संप्रदायिनी] १ देनेवाला। २ करनेवाला। सिद्ध करनेवाला। ३ किसी संप्रदाय से संबंध रखनेवाला। मत का माननेवाला। मतावलंबी।

संप्रदिष्ट—वि० [सं० सम्प्रदिष्ट] १ पूर्णत ज्ञात। जाना हुआ। २ पूर्ण रूप से निर्दिष्ट। प्रदर्शित [को०]।

संप्रधान—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रधान] विचार। निर्णय। निश्चय [को०]।

संप्रधारण—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रधारण] १ विचार विवेचना। २ किसी वस्तु के औचित्य अनौचित्य के विषय में निश्चय करना। निर्णय [को०]।

संप्रपद—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रपद] १ पादाग्र पर खड़ा होना। पादाग्र स्थिति। २ पर्यटन। भ्रमण [को०]।

संप्रपन्न—वि० [सं० सम्प्रपन्न] १ पहुँचा हुआ। २. पैठा हुआ। प्रविष्ट। ३ संयुक्त। युक्त [को०]।

संप्रभग्न—वि० [सं० सम्प्रभग्न] तितर बितर। बिखरा हुआ। जैसे, संप्रभग्न सेना [को०]।

संप्रभव—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रभव] उदय। प्रादुर्भाव [को०]।

संप्रभिन्न—वि० [सं० सम्प्रभिन्न] १ विदीर्ण। फटा हुआ। मदस्रावी (हाथी)। मतवाला [को०]।

संप्रमत्त—वि० [सं० सम्प्रमत्त] १ मदमत्त। मस्त (हाथी)। २ अत्यधिक लापरवाह [को०]।

संप्रमापण—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रमापण] वध। हत्या [को०]।

संप्रमार्ग—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रमार्ग] शुद्धि। शोधन। मार्जन [को०]।

संप्रमुखित—वि० [सं०] जो प्रमुख हो।

संप्रमुग्ध—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रमुग्ध] अस्तव्यस्तता। विशृंखलता [को०]।

संप्रमोद—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रमोद] हर्षातिरेक। अत्यंत आनंद।

संप्रमोह—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रमोह] पूर्ण विमूढता। विमुग्धता [को०]।

संप्रयाण—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रयाण] गमन। प्रयाण [को०]।

संप्रमोष—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रमोष] हानि। नाश [को०]।

संप्रयुक्त—वि० [सं० सम्प्रयुक्त] १ जोड़ा हुआ। एक साथ किया हुआ। २ जोता हुआ। नधा हुआ। ३ संबद्ध। मिला हुआ। ४ भिड़ा हुआ। ५ व्यवहार में लाया हुआ। वर्ता हुआ। ६ मैथुनरत। संभोगलग्न (को०)। ७ प्रेरित। प्रोत्साहित (को०)। ८ युक्त। संलग्न (को०)। ९ अवलंबित। निर्भर (को०)। १० संपर्कित। संपर्क में आगत (को०)।

संप्रयुक्तक—वि० [सं० सम्प्रयुक्तक] सहयोगी [को०]।

संप्रयुद्ध—वि० [सं० सम्प्रयुद्ध] युद्धरत। युद्धचमान [को०]।

संप्रयोग—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रयोग] १ जोड़ने की क्रिया या भाव। समागम। एक साथ करना। २ मेल। मिलाप। संयोग। ३. रति। रमण। ४ धनादि का विनियोग। ५ नक्षत्र में चंद्रमा का योग। ६ इंद्रजाल। ७ वशीकरण प्रभृति कार्य। ८ व्यवहार। प्रयोग (को०)। ९ सहयोग (को०)। १० क्रमबद्ध विधान। क्रमिक व्यवस्था (को०)। ११ पारस्परिक संबंध (को०)।

संप्रयोगी'—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रयोगिन्] [स्त्री० संप्रयोगिनी] १ कामुक। लंपट। २ इंद्रजालिक। इंद्रजाल दिखानेवाला। ३ जोड़ने-

वाला। सयोजक (को०)। ४ गुदाभजन करनेवाला। चुल्ली। गाड़ (को०)।

सप्रयोगी²--वि० १ आपस में जोड़नेवाला। २ अत्यधिक कामवासनायुक्त। कामुक। लपट (को०)।

सप्रयोजन--सज्ञा पुं० [स० सम्प्रयोजन] [वि० सप्रयोजनीय, सप्रयोज्य, सप्रयोजित, सप्रयुक्त, सप्रयोक्तव्य] अच्छी तरह जोड़ना या मिलाना।

सप्रयोजित--वि० [सं० सम्प्रयोजित] १ जोड़ा या मिलाया हुआ। २ प्रयुक्त या प्रयोग में आया हुआ। ३ जो प्रस्तुत किया गया हो। ४ उचित। उपयुक्त (को०)।

सप्रवदन--सज्ञा पुं० [स० सम्प्रवदन] १ बातचीत। वार्तालाप। कथोपकथन (को०)।

सप्रवर्तक--सज्ञा पुं० [स० सम्प्रवर्तक] [वि० सप्रवर्ती] १ चलानेवाला। आगे बढ़ानेवाला। २ जारी करनेवाला। चालू करनेवाला। ३ वह जो निर्माण करता हो। निर्माता (को०)।

सप्रवर्त्तन--[सज्ञा पुं० [स० सम्प्रवर्तन] [वि० सप्रवर्तिनी, सप्रवृत्त] १ चलाना। गति देना। २ घुमाना। ३ जारी करना। आरभ करना।

सप्रवर्ती--वि० [स० सम्प्रवर्ती] व्यवस्थित करनेवाला (को०)।

सप्रवाह--सज्ञा पु० [स० सम्प्रवाह] १ अटूट धारा। २ लगातार क्रम या सिलसिला (को०)।

सप्रवृत्त--वि० [स० सम्प्रवृत्त] १ आगे गया हुआ। बढ़ा हुआ। अग्रसर। २ उपस्थित। मौजूद। प्रस्तुत। ३ जारी किया हुआ। आरभ किया हुआ। ४ सलग्न। आसक्त (को०)। ५ बीता हुआ। व्यतीत। गत (को०)। ६ पार्श्वस्थित। समीपस्थित (को०)।

सप्रवृत्ति--सज्ञा स्त्री० [स० सम्प्रवृत्ति] १ आसक्ति। २ अनुकरण करने की इच्छा। ३ उपस्थिति। मौजूदगी। ४ सघटन। मेल।

सप्रविष्ट--सज्ञा पुं० [सं० सम्प्रवृष्ट] खूब पानी बरसना।

सप्रशात--वि० [सं० सम्प्रशान्त] १ मरा हुआ। मृत। २ अलक्षित। लुप्त (को०)।

सप्रश्न--सज्ञा पुं० [स० सम्प्रश्न] १ आश्रय। २ पूरी जाँच पड़ताल। ३ पूछताछ (को०)।

सप्रश्रय--सज्ञा पुं० [सं० सम्प्रश्रय] शिष्टता। विनम्रता (को०)।

सप्रश्रित--वि० [स० सम्प्रश्रित] शिष्ट। नम्र। विनयी (को०)।

सप्रसक्ति--सज्ञा स्त्री० [सं० सम्प्रसक्ति] दे० 'सप्रमाद'।

सप्रसाद--सज्ञा पुं० [स० सम्प्रसाद] २ प्रसन्न करना। तुष्टीकरण। २ अनुग्रह। कृपा। ३ शाति। सौम्यता। ४ विश्वास। भरोसा। ५ आत्मा। ६ सुषुप्त अवस्था की पूर्ण शाति। निद्रा में मानसिक विश्राति (को०)।

सप्रसादन--वि० [सं० सम्प्रसादन] प्रसन्न या शात करनेवाला।

सप्रसाधन--सज्ञा पुं० [स० सम्प्रसाधन] १ अगराग, आभूषण आदि शृगार का प्रसाधन। २ पूरा करना। पूरा करना (को०)।

सप्रसारण--सज्ञा पुं० [स० सम्प्रसारण] १ फैलाना। विस्तार करना। २ सस्कृत व्याकरण में य, व्, र, ल् का इ, उ, ऋ और लृ में परिवर्तन।

सप्रसिद्ध--वि० [स० सम्प्रसिद्ध] १ भली भाँति पकाया हुआ। २ अतीव ख्यात या प्रसिद्ध (को०)।

सप्रसिद्धि--सज्ञा स्त्री० [स० सम्प्रसिद्धि] १ सफलता। कृतकार्य होना। २ सौभाग्य (को०)।

सप्रस्थान--सज्ञा पुं० [स० सम्प्रस्थान] कूच करना। आगे बढ़ना (को०)।

सप्रहर्षण¹--वि० [सं० सम्प्रहर्षण] कामोत्तेजक (को०)।

सप्रहर्षण²--सज्ञा पु० प्रोत्साहन। प्रेरणा। उत्तेजना (को०)।

सप्रहार--सज्ञा पुं० [स० सम्प्रहार] १ परस्पर चोट करना। २ मुठभेड़। सग्राम। ३ गमन। गति (को०)।

सप्रहास--सज्ञा पु० [स० सम्प्रहास] हँसी उड़ाना। चिढ़ाना (को०)।

सप्रहित--वि० [स० सम्प्रहित] फेंका हुआ। धकेला हुआ। २ भेजा हुआ (को०)

सप्राप्त--वि० [स० सम्प्राप्त] १ पहुँचा हुआ। उपस्थित। २ पाया हुआ। ३ उत्पन्न (को०)। ४ प्रस्तुत (को०)। ५ घटित। जो हुआ हो।

यौ०--सप्राप्तयौवन = जवान। सप्राप्तविद्य = पडित।

सप्राप्ति--सज्ञा स्त्री० [सं० सम्प्राप्ति] १ प्राप्ति। लाभ। २ पहुँचना। उपस्थिति। ३ घटित होना। होना। ४ रोग का सन्निकृष्ट कारण। यह पाँच प्रकार का होता है --(१) सख्या, (२) विकल्प, (३) प्राधान्य, (४) बल और (५) काल।

सप्रिय--सज्ञा पुं० [सं० सम्प्रिय] परितोष। तृप्ति (को०)।

सप्रीणन--सज्ञा पुं० [स० सम्प्रीणन] परितुष्ट करना। प्रसन्न करना। प्रसादन (को०)।

सप्रीणित--वि० [स० सम्प्रीणित] जो पूरी तरह सतुष्ट या प्रसन्न किया गया हो (को०)।

सप्रीत--वि० [स० सम्प्रीत] सतुष्ट। प्रसन्न (को०)।

यौ०--सप्रीतमानस = जिसका मन सतुष्ट हो। प्रसन्नमन।

सप्रीति--सज्ञा [सं० सम्प्रीति] १ अनुराग। स्नेह। २ सद्भावना। मित्रतापूर्ण सद्भाव। ३. हर्ष। उल्लास आनद। ४ पूर्णत परितृप्ति (को०)।

सप्रीतिमत्--वि० [स० सम्प्रीतिमत्] सतुष्ट। प्रसन्न। हर्षित।

सप्रेक्षक--सज्ञा पुं० [स० सम्प्रेक्षक] दर्शक। देखनेवाला।

सप्रेक्षण--सज्ञा पुं० [सं० सम्प्रेक्षण] [वि० सप्रेक्षित, सप्रेक्ष्य] १ अच्छी तरह देखना। २. खूब देखभाल करना। जाँच करना। गवेषणा करना। निरीक्षण करना।

सप्रेष--सज्ञा पुं० [स० सम्प्रेष] दे० 'सप्रैष'।

सप्रेषण—संज्ञा पुं० [स० सम्प्रेषण] [वि० सप्रेषित, सप्रेष्य] १ अच्छी तरह भेजना। प्रेषण करना। २ छुडाना। बरखास्त करना। काम से हटाना।

सप्रेषणी—संज्ञा स्त्री० [स० सम्प्रेषणी] मृतक का एक कृत्य जो द्वादशाह को होता है।

सप्रेषित—वि० [स० सम्प्रेषित] १ भेजा हुआ। जिसका प्रेषण किया गया हो। २ आहूत (को०)।

सप्रैष—संज्ञा पुं० [स० सम्प्रैष] १ यज्ञादि मे ऋत्विजो को लगाना। नियुक्ति। २ आमत्रण। आह्वान। ३ प्रेषण। भेजना (को०)। ४ हटना (को०)।

सप्रोक्त—वि० [स० सम्प्रोक्त] १ कथित। कहा हुआ। बताया हुआ। जिसे घोषित किया गया हो। २ जिसे पुकारा गया हो। सबोधित (को०)।

सप्रोक्षण—संज्ञा पुं० [स० सम्प्रोक्षण] [वि० सप्रोक्षित, सप्रोक्ष्य] १ खूब पानी छिडकना। अभिषेचन। सिंचन। २ खूब पानी छिडक कर (मदिर आदि) साफ करना। धोना।

सप्रोक्षणी—संज्ञा स्त्री० [स० सम्प्रोक्षणी] अभिषेचन या सप्रोक्षण के निमित्त उपकल्पित जल (को०)।

सप्लव—संज्ञा पुं० [स० सम्प्लव] [वि० सप्लुत] १ जल से तराबोर होना। जल की बाढ। बढिया। २ भारी समूह। घनी राशि। ३ हलचल। शोरगुल। हल्ला। ४ जलप्लावन। जलप्रलय (को०)। ५ महोर्मि। कल्लोल। लहर (को०)। ६ अत। समाप्ति (को०)। ७ वर्षा। वृष्टि (को०)। ८ व्यतिक्रम। क्रम से न होना (को०)। ९ उच्छेद। विध्वस (को०)।

सप्लुत—वि० [स० सम्प्लुत] जल मे तराबोर। डूबा हुआ।

सप्लुति—संज्ञा स्त्री० [स० सम्प्लुति] पीछे से हाथी पर कूदना (को०)।

सफल—संज्ञा पुं० [स० सम्फल] १ वह जो फल या बीज से युक्त हो। २ दे० 'सफाल' (को०)।

सफाल—संज्ञा पुं० [स० सम्फाल] मेष। भेड।

सफुल्ल—वि० [स० सम्फुल्ल] जो पूर्णत विकसित हो। भली भाँति खिला हुआ (को०)।

सफेट—संज्ञा पुं० [स० सम्फेट] १ क्रोध मे परस्पर भिडना। भिडत। लडाई। २ झगडा। कहासुनी। तकरार। ३ नाट्य मे विमर्श सधि के तेरह भेदो मे से एक का नाम। ४ नाट्य मे आरभटी का एक भेद।

विशेष—नाट्यशास्त्र मे विमर्श के तेरह भेदो मे से एक सफेट भी है। रोष भरे भाषण को सफेट कहा गया है। जैसे,—राजसभा मे शकुतला और दुष्यत की कहा सुनी, वेणी सहार मे दुर्योधन और भीम की रोषपूर्ण कहासुनी जो धृतराष्ट्र की राजसभा मे हुई थी। आरभटी के चार भेदो मे से भी एक सफेट है जिसमे दो पात्र परस्पर भिडते और एक दूसरे को दबाने का प्रयत्न करते है। जैसे,—मालती माधव नाटक मे माधव और अघोरघट की मुठभेड।

सबध[1]—संज्ञा पुं० [स० सबन्ध सम्बन्ध] १ एक साथ बँधना, जुडना या मिलना। २ लगाव। सपर्क। वास्ता।

विशेष—दर्शन मे सबध तीन प्रकार के कहे गए हैं—समवाय, सयोग और स्वरूप।

३ एक कुल मे होने के कारण अथवा विवाह, दत्तक आदि सस्कारो के कारण परस्पर लगाव। नाता। रिश्ता। ४ गहरी मित्रता। बहुत मेलजोल। ५ सयोग। मेल। ६ विवाह। सगाई। ७ ग्रथ। पोथी। ८ एक प्रकार की ईति या उपद्रव। ९ किसी सिद्धात का हवाला। १० व्याकरण मे एक कारक जिससे एक शब्द के साथ दूसरे शब्द का सबध या लगाव सूचित होता है। जसे,—राम का घोडा।

विशेष—बहुत से वैयाकरण 'सबध' को शुद्ध कारक नही मानते। हिंदी मे सबध के चिह्न 'का', 'की' 'के' है।

११ योग्यता। औचित्य (को०)। ११ समृद्धि। सफलता (को०)। १२ नातेदारी। रिश्तेदारी (को०)।

सबंध[2]—वि० १ समर्थ। योग्य। २ उचित। उपयुक्त। ठीक (को०)।

सबधक[1]—संज्ञा पुं० [स० सम्बन्धक] १ मेल जोल। लगाव। मैत्री। २ जन्म या विवाहजन्य सबध। ३ मित्र। सखा। ४ वह जिससे रिश्ता या सबध हो। सबधी। ५ एक प्रकार की शाति-सधि। मैत्री सधि (को०)।

सबधक[2]—वि० १ सबद्ध। विषयक। २ उपयुक्त। योग्य। ठीक (को०)।

सबधयिता—वि० [स० सम्बन्धयितृ] सबध करने या जोडनेवाला (को०)।

सबधवर्जित—संज्ञा पुं० [स० सम्बन्धवर्जित] १ ससक्ति या अन्वय का अभाव। २ वह जो किसी से लगाव या सबध न रखता हो। ३ एक प्रकार का रचनागत दोष (को०)।

सबधातिशयोक्ति—संज्ञा स्त्री० [स० सम्बन्धातिशयोक्ति] अतिशयोक्ति अलकार का एक भेद जिसमे असबध मे सबध दिखाया जाता है। विशेष—दे० 'अतिशयोक्ति'।

सबधिभिन्न—वि० [स० सम्बन्धिभिन्न] सबधियो मे विभक्त। जो रिश्तो मे बँटा हुआ हो (को०)।

सबधिशब्द—संज्ञा पुं० [स० सम्बन्धिशब्द] वह शब्द जो दो व्यक्तियो या वस्तुओ मे सबध का द्योतन करे। सबध सूचित करनेवाला शब्द (को०)।

सबधी[1]—वि० [स० सम्बन्धिन्] [वि० स्त्री० सबधिनी] १ सबध रखनेवाला। लगाव रखनेवाला। २ विषयक। सिलसिले या प्रसग का। ३ सद्गुण सपन्न (को०)। ४ जिसके साथ विवाहादि सबध हो (को०)।

सबधी[2]—संज्ञा पुं० १ रिश्तेदार। २ जिनके पुत्र या पुत्री से अपनी पुत्री या पुत्र का विवाह हुआ हो। समधी। ३ वह जिसका सबध या लगाव हो (को०)।

सबधु—संज्ञा पुं० [स० सम्बन्धु] १ आत्मीय। भाई बिरादर। २ नातेदार। रिश्तेदार।

सब—संज्ञा पुं० [स० सम्ब] १ खेत की दुहरी जुताई। दे० 'शब'। २. जल। पानी (को०)।

सवत्—सज्ञा पुं० [स० सम्वत्] दे० 'सवत्' ।

सवत ⑤—सज्ञा पु० [स० सम्वत्] दे० 'सवत्' । उ०—सब्रत सोरह सै एकतीना । करो कथा हरिपद धरि सीसा ।—मानस, १।३४ ।

सवद्ध—वि० [स० सम्बद्ध] १ बँधा हुआ । जुडा हुआ । लगा हुआ । २ सम्बधयुक्त । मिला हुआ । ३ बद । ४ सयुक्त । सहित । ५ अनुरक्त (को०) । ६ विपयक (को०) ।

सवद्धदर्प—वि० [स० सम्बद्धदर्प] अभिमानी । घमडी । दर्पयुक्त (को०) ।

सवर—सज्ञा पु० [स० सम्बर] १ निग्रह । निरोध । प्रतिबध । रोक । २. सेतु । बाँध । पुल (को०) । ३ दे० 'शवर' ।

यौ०—सवररिपु = मनसिज । कामदेव ।

सवरण—सज्ञा पु० [स० सवरण] रोकना । दे० 'सवरण' ।

सवल—सज्ञा पु० [स० सम्वल] १ शालमली । सेमल का वृक्ष । २ रास्ते का भोजन । सफर खर्च । ३. गेहूँ की फसल का एक रोग जो पूरब की हवा अधिक चलने से होता है । ४ सेतु । बाँध (को०) । ५ सखिया । आखु पापाण । सोमलक्षार । शेष अर्थ के लिये दे० 'शवर' और 'शबल' ।

सवाद⑤—सज्ञा पु० [स० सम्वाद] दे० 'सँवाद' । उ०—सो सवाद उदार जेहि बिधि भा आगे कहब ।—मानस, १।१२० ।

सवाध[1]—सज्ञा पु० [स० सम्बाध] १ बाधा । अडचन । कठिनता । २ भीड । सघर्ष । ३ भग । योनि । ४. कष्ट । पीडा । दवाव । पीडन । ५ नरक का पथ । ६ डर । भय (को०) । ७ सँकरा रास्ता । तग राह (को०) ।

सवाध[2]—वि० १ सकीर्ण । तग । २ जनपूर्ण । भीड से भरा हुआ । ३ भरा । पूर्ण । सकुल ।

सवाधक—सज्ञा पु० [स० सम्बाधक] १ दवानेवाला । सतानेवाला । २ बाधा पहुँचानेवाला । ३ भीड करनेवाला (को०) ।

सवाधन—सज्ञा पुं० [स० सम्बाधन] १ दवाव । रेलपेल । २ रोकना । बाधा देना । ३ अवरोध । रोक । फाटक । ४ योनि । भग । ५ शूलाग्र । ६ द्वारपाल ।

सबाधना—सज्ञा स्त्री० [स० सम्बाधना] रगडने या घिसने की क्रिया । घर्पण (को०) ।

सबी—सज्ञा स्त्री० [स० शिम्बी] फली ।

सबुक—सज्ञा पुं० [स० शम्बुक, शम्बूक] १ दे० 'शबुक', 'शबूक' । उ०—सबुक भेक सेवार समाना । इहाँ न विपय कथा रस नाना । —मानस, १।३८ । २ दे० 'शबूक' ।

सबुद्ध[1]—वि० [स० सम्बुद्ध] १ जाग्रत । ज्ञानप्राप्त । सचेत । २. ज्ञानी । ज्ञानवान् । ३ पूर्ण रूप से जाना हुआ । ज्ञात ।

सबुद्ध[2]—सज्ञा पु० १ बुद्ध । २ जिन ।

सबुद्धि—सज्ञा स्त्री० [स० सम्बुद्धि] १ पूर्ण ज्ञान । सम्यक् बोध । २ बुद्धिमानी । होशियारी । ३ दूर से पुकार । आह्वान । ४ पदवी । उपाधि (को०) । ५ (व्याकरण मे) सबोधन कारक तथा उसकी विभक्ति का चिह्न (को०) । ६ पूर्ण चेतना (को०) ।

सबुल—सज्ञा पु० [फा० सुंबुल] १ एक सुगधित वनौपधि । बालछड । उ०—नकली नदियो के किनारो पर पत्थर के नकली टीले बने हुए थे, जिनपर छोटे छोटे पानी के हौज तथा चारो ओर सबुल के घने जगल लगे हुए थे ।—पीतल०, भा० २, पृ० ३७ । २ गेहूँ अथवा जौ की बाल । ३ केश । अलक । जुल्फ ।

सबुल खताई—सज्ञा पुं० [फा०] तुर्किस्तान का एक पौधा जो औषध के काम मे आता है और जिसकी पत्तियो की नसे मिठाई से पड़ती हैं ।

सबेसर—सज्ञा पुं० [सं० सम्+हि० बसेरा] निद्रा । नीद । (डिं०) ।

सबोध—सज्ञा पुं० [स० सम्बोध] १ सम्यक् ज्ञान । पूरा बोध । २ पूर्ण तत्वबोध । पूरी जानकारी । ३ धीरज । सात्वना । ढारस । ४ समझाना । व्याख्यान करना । सूचित करना (को०) । ५ प्रेपण । क्षेपण (को०) । ६ हानि । विनाश (को०) ।

सबोधन—सज्ञा पुं० [स० सम्बोधन] [वि० सबोधित, सबोध्य] १ जगाना । नीद से उठाना । २ पुकारना । आह्वान करना । ३ व्याकरण मे वह कारक जिससे शब्द का किसी को पुकारने या बुलाने के लिये प्रयोग सूचित होता है । जैसे,—हे राम ! ४ जताना । ज्ञान कराना । विदित कराना । ५ नाटक मे आकाशभाषित । ६ समझाना बुझाना । समाधान करना । ७ सबोधन मे प्रयुक्त किया जानेवाला शब्द (को०) । ८ जानकारी करना । समझना (को०) ।

सबोधना⑤—क्रि० स० [सं० सम्बोधन] समझाना । प्रबोध देना । सात्वना देना । उ०—(क) बाजी सत दीने बगसि सबोधे सात भ्रात ।—पृ० रा०, ५।३१ । (ख) ज्यो ज्यो ऐसी बातन मँदोदरी सबोधै त्यो त्यो, देव दुःख पावे कहे कैसे समुझाइए । याकी बात माने सिय लैके जाइ मिरो यह औरन बिसारि याको सौगुन बढाइए ।—हृदयराम (शब्द०) ।

सबोधि—सज्ञा स्त्री० [सं० सम्बोधि] (बौद्ध दर्शन मे) पूर्ण ज्ञान (को०) ।

सबोधित—वि० [सं० सम्बोधित] १ जिसे चेताया गया हो । बोध कराया हुआ । २ जिसका ध्यान आकृष्ट किया गया हो । आहूत । पुकारा हुआ (को०) ।

सबोध्य—सज्ञा पुं० [स० सम्बोध्य] १ वह जिसको सबोधन किया जाय । २ जिसे समझाया या जताया जाय ।

सबोसा—सज्ञा पुं० [फा० सबोसह् ?] एक पकवान जो सिंघाड़े के आकार का होता है । दे० 'समोसा' ।

सबौधिया—सज्ञा पुं० [देश०] वैश्यो की एक जाति ।

सबृहण—सज्ञा पुं० [स० सम्बृहण] १ अच्छी प्रकार से पुष्ट या तेजस्युक्त करना । २ वह जो पुष्टिकारक हो । शक्तिप्रद (को०) ।

सभक्त—वि० [सं० सम्भक्त] १ विभक्त । जो बाँट दिया गया हो । २ [illegible] ना । भाग लेनेवाला । ३ अत करण मे किसी [illegible] । भक्त । ४ उपभोग करनेवाला (को०) ।

सभक्ति [illegible] [सं० सम्भक्ति] १ प्रदान करने का भाव । २ [illegible] भाग या हिस्सा लेना । ३ श्रद्धा या [illegible] (को०) ।

स[illegible] [सं० सम्भक्ष] १ एक साथ भोजन [illegible] [illegible] ता हो । ३ भक्षण । भोजन

**सभग्न[1]**—वि० [सं० सम्भग्न] १ बहुत टूटा हुआ। बिलकुल खंडित। २ हारा हुआ। ३ विफल।

**सभग्न[2]**—संज्ञा पुं० शिव का एक नाम।

**सभर**—संज्ञा पुं० [सं० सम्भर] १ भरण करनेवाला। पोषण करनेवाला। २ साँभर झील। ३ शाकभरी प्रदेश।

**सभरण**—संज्ञा पुं० [सं० सम्भरण] [वि० सभरणीय, सभृत] १ पालन पोषण। २ एकत्र करना। सचय। जुटाना। ३ योजना। विधान। ४ तैयारी। सामान। ५ एक प्रकार की ईंट जो यज्ञ की वेदी में लगती थी।

**सभरणी**—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्भरणी] सोमरस रखने का एक यज्ञपात्र।

**सभरना**(पु)—क्रि० स० [सं० √सम्भालय् (=सुनना)] १ सँभारना। ग्रहण करना। श्रवण करना। उ०—सभरिय वत्त सभरि नरेस, आभासि चित्त अप्पा असेस।—पृ० रा०, १।६१६। २ सँभालना।

**सभरना**(पु)—क्रि० अ० दे० 'सँभलना'।

**सभरवै**(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सम्भर+पति, प्रा० वइ] शाकभरी प्रदेश का राजा, पृथ्वीराज।

**सभरि, सभरी**—संज्ञा पुं० [सं० सम्भर] १ शाकभरी प्रदेश। २ पृथ्वीराज चौहान।

यौ०—सभरिधनी=पृथ्वीराज। उ०—चल्यो व्याहि सभरिधनी।—पृ० रा०, १४।१२८। सभरिवै=दे० 'सभर वै'। सभरी राव=सोमेश्वर। उ०—सभरी राव सभारि छल।—पृ० रा०, १।६५६।

**सभरेस**(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सम्भर+ईश] पृथ्वीराज। सभर का राजा।

**सभल**—संज्ञा पुं० [सं० सम्भल] १ कन्यार्थी पुरुष। किसी लडकी से विवाह की इच्छा रखनेवाला व्यक्ति। २ चेटक। दलाल। ३ एक स्थान जहाँ विष्णु का दसवाँ कल्कि अवतार होनेवाला है। इसे कुछ लोग मुरादाबाद जिले का 'सभल' नाम का कसबा बतलाते है।

**सभली**—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्भली] कुटनी। दूती। शभली।

**सभव**—संज्ञा पुं० [सं० सम्भव] १ उत्पत्ति। जन्म। पैदाइश। जैसे,—कुमारसभव। २ एक साथ होना। मेल। सयोग। समागम। ३ सहवास। प्रसग। ४ अँटना। आ सकना। समाई। ५ हेतु। कारण। ६ होना। घटित होना। ७ हो सकने के योग्य होना। मुमकिन होना। जैसे,—उसका सुधरना सभव नहीं। ८ परिमाण का एक होना। एक ही बात होना। जैसे,—एक रुपया कहे या सोलह आने। (दर्शन)। ९ उपयुक्तता। समीचीनता। मुनासिबत। १० वर्तमान अवसर्पिणी के तीसरे अर्हत् (जैन)। ११ एक लोक का नाम। (बौद्ध)। १२ नाश। ध्वस। १३ युक्ति। उपाय। १४. उत्पादन। पालन पोषण (को०)। १५ जान पहचान। परिचय (को०)। १६ धन। दौलत। सपत्ति (को०)। १७ विद्या (को०)। १८ अस्तित्व। उपस्थिति (को०)।

**सभवत[1]**—अव्य० [सं० सम्भवतस्] हो सकता है। मुमकिन है। गालिबन्।

**सभवन**—संज्ञा पुं० [सं० सम्भवन] [वि० सभवनीय, सभव्य, सभूत] १ उत्पन्न होना। पैदा होना। २ हो सकना। मुमकिन होना। ३ धारण। पालन। पोषण। ४ होना। घटित होना।

**सभवना**(पु)[1]—क्रि० स० [सं० सम्भव+हिं० ना (प्रत्य०)] उत्पन्न करना। पैदा करना।

**सभवना**(पु)[2]—क्रि० अ० १ उत्पन्न होना। पैदा होना। २ सभव होना। हो सकना। उ०—धर्म स्थापन हेतु पुनि धारचो नर अवतार। ताको पुत्र कलत्र सो नहि सभवत पियार।—सूर (शब्द०)।

**सभवनाथ**—संज्ञा पुं० [सं० सम्भवनाथ] वर्तमान अवसर्पिणी के तीसरे तीर्थंकर (जैन)।

**सभवनीय**—वि० [सं० सम्भवनीय] जो हो सकता हो। मुमकिन।

**सभविष्णु**—संज्ञा पुं० [सं० सम्भविष्णु] उत्पादक। स्रष्टा। निर्माणकर्ता। निर्माता (को०)।

**सभवी**—वि० [सं० सम्भविन्] १ हो सकनेवाला। मुमकिन। २ होनेवाला। जैसे, स्वत सभवी।

**सभव्य[1]**—संज्ञा पुं० [सं० सम्भव्य] कपित्थ। कैथ।

**सभव्य[2]**—वि० जो हो सकता हो। सभवनीय। मुमकिन।

**सभार**—संज्ञा पुं० [सं० सम्भार] १ सचय। एकत्र करना। इकट्ठा करना। २ तैयारी। सामान। साज। सामग्री। रसद वगैरह। ३ धन। सपत्ति। वित्त। ४ पूर्णता। ५ समूह। दल। राशि। ढेर। ६ पालन। पोषण। ७ अधिकता। अतिशयता। प्राचुर्य (को०)।

**सभारना**(पु)—क्रि० स० [हिं० सँभालना] १ स्मरण करना। याद करना। उ०—सभारि श्रीरघुबीर धीर प्रचारि कपि रावन हन्यो।—मानस, ६।९४।२०। २ दे० 'सँभालना'।

**सभाराधिप**—संज्ञा पुं० [सं० सम्भाराधिप] शुक्रनीति के अनुसार राजकोष पदार्थों का अध्यक्ष। तोशाखाने का अफसर।

**सभारी**—वि० [सं० सम्भारिन्] [वि० स्त्री० सभारिणी] भरा हुआ। पूर्ण।

**सभार्य**—वि० [सं० सम्भार्य] १ आश्रय देने योग्य। सहारा देने योग्य। २ जिसे उपयोग करने लायक बनाया जा सके। ३. जिसके हिस्सों को बटोर कर एक साथ सघटित रखा जा सके (को०)।

**सभावन**—संज्ञा पुं० [सं० सम्भावन] [वि० सभावनीय, सभावित, सभावितव्य, सभाव्य] १ कल्पना। भावना। अनुमान। २ जुटाना। एकत्र करना। योग करना। ३ उपस्थित करना। सपादन। ४ आदर। सम्मान। पूजा। ५ पूज्यबुद्धि। प्रतिष्ठा का भाव। ६ योग्यता। पात्रता। अधिकार। काबिलीयत। ७ ख्याति। प्रसिद्धि। नाम। ८ स्वीकरण। स्वीकार। ९ सदेह (को०)। १० एक अलकार। दे० 'सभावना'—७। ११ प्रेम। लगाव। सबध (को०)। १२ दे० 'सभावना'।

**संभावना**—सज्ञा स्त्री० [स० सम्भावना] १ कल्पना। भावना। अनुमान। फर्ज। २ पूजा। आदर। सत्कार। ३ किसी बात के हो सकने का भाव। हो सकना। मुमकिन होना। ४ योग्यता। पात्रता। काबिलीयत। ५ ख्याति। प्रसिद्धि। नामवरी। ६ प्रतिष्ठा। मान। इज्जत। ७ एक अलकार जिसमे किसी एक बात के होने पर दूसरी बात का होना निर्भर कहा जाता है। उ०—(क) एहि बिधि उपजै लच्छि जय होइ सीय समतूल। (ख) सहस जीभ जौ होय, तौ बरनै जस आप को। ८ सदेह (को०)। ९ प्रेम (को०)। १० प्राप्ति। उपलब्धि (को०)।

**संभावनीय**—वि० [सं० सम्भावनीय] १ जो हो सकता हो। मुमकिन। २ कल्पना के योग्य। ध्यान मे आने लायक। ३ भाग लेने लायक। जिसमे भाग लिया जा सके। ४ आदर के योग्य। सत्कार के योग्य।

**सभावयितव्य**—वि० [स० सम्भावयितव्य] दे० 'सभावितव्य'।

**सभावित¹**—वि० [स० सम्भावित] १ कल्पित। विचारा हुआ। मन मे माना हुआ। २ जुटाया हुआ। उपस्थित किया हुआ। ३ पूजित। आदृत। ४ विख्यात। प्रसिद्ध। ५. योग्य। उपयुक्त। काबिल। ६ सभव। मुमकिन। ७ उत्पादित। गृहीत। प्राप्त (को०)। ८ तुष्ट (को०)। ९ जिसका आदर होनेवाला हो। १० अपेक्षित। आकाक्षित। समर्थित।

**संभावित²**—सज्ञा पुं० अनुमान। ऊहा। कल्पना (को०)।

**सभावितव्य**—वि० [स० सम्भावितव्य] १ कल्पना या अनुमान के योग्य। २ सत्कार के योग्य। ३ जिसका सत्कार होनेवाला हो। ४ सभव। मुमकिन।

**सभाव्य¹**—वि० [स० सम्भाव्य] १ जो हो सकता हो। मुमकिन। २ प्रशसनीय। श्लाघ्य। ३. पूजा या सत्कार के योग्य, अथवा जिसका सत्कार होनेवाला हो। ४ कल्पना या अनुमान के योग्य। ध्यान मे आने लायक।

**संभाव्य²**—सज्ञा पुं० १ मनु के एक पुत्र का नाम। २ उपयुक्तता। काबिलियत। योग्यता। पात्रता (को०)।

**सभाष**—सज्ञा पुं० [स० सम्भाष] १ कथन। सभाषण। बातचीत। २ वादा। करार। ३ नमस्कार। प्रणाम (को०)। ४ पहरा-देनेवाले आपसी पहचान के लिये जिस गुप्त शब्द का सकेत रूप मे व्यवहार करते है वह शब्द (को०)। ५ काम सबध। अवैधानिक मैथुन सबध (को०)।

**सभाषण**—सज्ञा पु० [स० सम्भाषण] [वि० सभाषणीय, सभाषित, सभाष्य] १ कथोपकथन। बातचीत। २ सभोग। मैथुन (को०)। ३ पहरुओ का सकेत शब्द (को०)। ४ करार। वादा (को०)। ५ अभिवादन (को०)।

**सभाषणीय**—वि० [स० सम्भाषणीय] जो बातचीत करने योग्य हो। जिससे भाषण करना उचित हो।

**सभाषा**—सज्ञा स्त्री० [सं० सम्भाषा] दे० 'सभाष', 'सभाषण' (को०)।

**संभाषित¹**—वि० [स० सम्भाषित] १ अच्छी तरह कहा हुआ। २. जिससे बातचीत हुई हो।

**सभाषित²**—सज्ञा पुं० बातचीत। वार्तालाप (को०)।

**सभाषी**—वि० [स० सम्भाषिन्] [वि० स्त्री० सभाषिणी] कहनेवाला। बोलनेवाला। बातचीत करनेवाला।

**सभाष्य**—वि० [स० सम्भाष्य] भाषण करने योग्य। जिससे बातचीत करना उचित हो।

**सभिन्न¹**—वि० [स० सम्भिन्न] १ भली भाँति अलग। २ पूर्ण भग्न। बिलकुल टूटा हुआ। ३ सक्षोभित। चालित। ४ गठा हुआ। ठोस। ५ प्रस्फुटित। खिला हुआ। ६ सपर्क मे आया हुआ (को०)। ७ युक्त। मिला हुआ (को०)। ८ अविश्वस्त। अविश्वास्य (को०)। ९ सकुचित। सिकुडा या सिकोडा हुआ (को०)। १० छोडा हुआ। त्यक्त। परित्यक्त (को०)।

यौ०—सभिन्न प्रलाप। सभिन्नप्रलापिक = व्यर्थ प्रलाप करनेवाला। सभिन्नबुद्धि = जिसकी बुद्धि नष्ट हो गई हो। सभिन्नमर्याद = जिसने मर्यादा का उल्लघन किया हो। सभिन्नवृत्त = सदाचार-रहित। दुराचारी। सभिन्नसर्वांग = जिसने अपने सभी अगो को सकुचित किया हो या कस लिया हो।

**सभिन्न²**—सज्ञा पु० शिव (को०)।

**संभिन्नप्रलाप**—सज्ञा पु० [स० सम्भिन्न प्रलाप] व्यर्थ की बातचीत जो बौद्धशास्त्रो मे एक पाप कहा गया है।

**सभीत**—वि० [स० सम्भीत] बेहद डरा हुआ। अत्यधिक भयभीत (को०)।

**सभु¹**—सज्ञा पुं० [सं० शम्भु, प्रा० सभु] शिव। महादेव। दे० 'शभु'। उ०—जनम कोटि लगि रगरि हमारी। बरौं सभु नतु रहौं कुआरी।—मानस, १।८१।

यौ०—सभुगन(पु) = शिव के गण। उ०—सिवहिं सभुगन करहिं सिगारा।—मानस, १।९२। सभुसुतसभुत सुत = शिव के औरस पुत्र, स्कद।

**सभु²**—वि० [स० सम्भु] उत्पन्न। निर्मित। जात (को०)।

**सभु³**—सज्ञा पुं० १ जनयिता। जनक। पिता। २. एक छद (को०)।

**सभुक्त**—वि० [स० सम्भुक्त] १ भोगा हुआ। भुक्त। २ खाया हुआ। ३ प्रयोग मे लाया हुआ। प्रयुक्त। व्यवहृत। ४ पार किया हुआ। जिसका अतिक्रम किया गया हो। अतिक्रात (को०)।

**सभुग्न**—वि० [स० सम्भुग्न] पूर्णत झुका हुआ। बल खाया हुआ (को०)।

**सभूत**—वि० [स० सम्भूत] १ एक साथ उत्पन्न या आगत। किसी के साथ जात, रचित या निर्मित। २ उत्पन्न। उद्भूत। जात। पैदा। ३ युक्त। सहित। ४ कुछ से कुछ हो गया हुआ। ५ उपयुक्त। योग्य। ६ तुल्य। बराबर। सदृश। समान (को०)।

**सभूति**—सज्ञा स्त्री० [स० सम्भूति] १ उत्पत्ति। उद्भव। २ बढती। विभूति। बरकत। ३ योग की विभूति। करामात। ४ क्षमता। शक्ति। ५ उपयुक्तता। योग्यता। ६ दक्ष प्रजापति

की एक कन्या जो मरीचि की पत्नी थी। ७ ज्ञान। विद्या (को०)। ८ संयोग। योग (को०)।

संभूय—अव्य० [सं० सम्भूय] एक में। एक साथ। साथ में। मिलकर। साझे में।

संभूयकारी—संज्ञा पुं० [सं० सम्भूयकारिन्] स्मृति के अनुसार संघ में मिलकर व्यापार करनेवाला व्यक्ति। वह जो किसी कंपनी का हिस्सेदार हो।

विशेष—वृहस्पति (स्मृति) के अनुसार यदि संघ को दैवी कारण से या राजा के कारण हानि पहुँचे तो उसके भागी सब हिस्सेदार हैं, पर यदि किसी हिस्सेदार की भूल या गलती से हानि पहुँचे तो उसका जिम्मेदार अकेला वही है।

संभूयक्रय—संज्ञा पुं० [सं० सम्भूयक्रय] कौटिल्य के अनुसार थोक माल बेचना या खरीदना।

संभूयगमन—संज्ञा पुं० [सं० सम्भूयगमन] १ कामदक नीति के अनुसार पूरी चढ़ाई जिसमें सामंत और मौल (तअल्लुकेदार) सब अपने दलबल के साथ हों। २ एक साथ जाना। समूह या दल के साथ जाना।

संभूययान—संज्ञा पुं० [सं० सम्भूययान] दे० 'संभूयगमन [को०]।

संभूयसमुत्थान—संज्ञा पुं० [सं० सम्भूयसमुत्थान] १ मिलकर किया हुआ व्यापार। साझे का कारबार। २ वह विवाद या मुकदमा जो साझेदारों में हो।

संभूयसमुत्थापन—संज्ञा पुं० [सं० सम्भूयसमुत्थापन] कंपनी खोलना। साझे का कारबार करना। सहकारी समिति द्वारा व्यापार करना।

संभूयासन—संज्ञा पुं० [सं० सम्भूयासन] कामदक नीति के अनुसार शत्रु से मेल करके और उसे उदासीन समझकर चुपचाप बैठ जाना।

संभृत¹—वि० [सं० सम्भृत] १ एकत्र। इकट्ठा। जमा किया हुआ। बटोरा हुआ। २ पूर्ण। भरा हुआ। लदा हुआ। ३ युक्त। सहित। ४ पाला पोसा हुआ। ५ समादृत। सम्मानित। जिसकी इज्जत की गई हो। ६ प्रस्तुत। तैयार। ७ निर्मित। बना हुआ। ८ प्राप्त। लब्ध। अवाप्त (को०)। ९ ले जाया गया हुआ। वहन किया हुआ (को०)। १० उत्पादित। पैदा किया हुआ (को०)। ११ शोभा से भरा हुआ। १२ उच्च। जैसे, स्वर (को०)।

यौ०—संभृतबल = जिसने सेना इकट्ठी कर ली हो। सेना इकट्ठा करनेवाला। संभृतश्री = अत्यंत सुंदर। संभृतश्रुत = विद्वान्। कृतविद्य। विज्ञ। संभृतसंभार = कार्य के लिये प्रस्तुत। तैयार। संभृतस्नेह = प्रेमयुक्त। प्रेमपूर्ण।

संभृत²—संज्ञा पुं० उच्च स्वर। चीख।

संभृतांग—वि० [सं० सम्भृताङ्ग] १ पोषित शरीरवाला। पुष्ट अंगोंवाला। २ जिसका शरीर आवृत या ढका हो [को०]।

संभृतार्थ—वि० [सं० सम्भृतार्थ] अधिक धन एकत्रित कर लेनेवाला।

संभृताश्व—वि० [सं० सम्भृताश्व] जिसके पास पुष्ट और दमदार अश्व हो [को०]।

संभृतौषध—वि० [सं० सम्भृतौषध] जिसके पास अनेक औषधियों का संचय हो [को०]।

संभृति—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्भृति] १ एकत्र करने की क्रिया या भाव। २ सामान। सामग्री। ३ समूह। भीड़। जमावड़ा। ४ राशि। ढेर। ५ अधिकता। बहुतायत। ६ सम्यक् भरण पोषण। खूब पालना पोसना।

संभृष्ट—वि० [सं० सम्भृष्ट] १ खूब भुना या तला हुआ। २ कुरकुरा। करारा। ३ सुखाया हुआ (को०)। ४ क्षीण। दुर्बल। दुबला पतला (को०)।

संभेद—संज्ञा पुं० [सं० सम्भेद] १ खूब छिदना या भिदना। २ शिथिल होना। ढीला होकर खिसकना। ३ वियोग। जुदाई। अलग होना। ४. मिले हुए शत्रुओं में परस्पर विरोध उत्पन्न करना। भेदनीति। ५ किस्म। प्रकार। ६ मिटना। जुटना। मिलना। ७ नदियों का संगम या नदी समुद्र का संगम। ८ तोड़ना। टुकड़े टुकड़े करना (को०)। ९ एकीभवन। मिलाप। मिश्रण (को०)। १० विकसित होना। खिलना (को०)। ११ सारूप्य। साम्य। एकरूपता (को०)। १२ मुष्टिबंध। मुट्ठी बाँधना (को०)।

संभेदन—संज्ञा पुं० [सं० सम्भेदन] [वि० संभेदनीय, संभेद्य, संभिन्न] १ खूब छेदना या आर पार घुसना। घँसना। विदीर्णन। २ जुटाना। मिलाना। भिड़ाना। ३ तोड़ना। टुकड़े टुकड़े करना (को०)।

संभेद्य—वि० [सं० सम्भेद्य] १ भेदने या छेदने योग्य। ३ जो संपर्क में लाने योग्य हो। मिलाने योग्य [को०]।

संभोक्ता—संज्ञा पुं० [सं० सम्भोक्तृ] १ खानेवाला। भक्षक। २ उपभोग करने या भोगनेवाला [को०]।

संभोग—संज्ञा पुं० [सं० सम्भोग] १ किसी वस्तु का भली भाँति उपयोग। सुखपूर्वक व्यवहार। २ सुरत। रति क्रीड़ा। मैथुन। ३ शृंगार रस के तीन भेदों में से एक। संयोग शृंगार। मिलाप की दशा। ४ हाथी के कुंभ या मस्तक का एक भाग। ५ स्थायित्व। सातत्य (को०)। ६ आनंद। विनोद (को०)। ७ अधिकृति। प्रयोग। व्यवहार (को०)।

यौ०—संभोगकाय = बुद्ध के तीन शरीर में से एक। भोग शरीर। संभोगक्षम = उपभोग लायक। संभोगयक्षिणी = एक योगिनी जिसे वीणा भी कहते हैं। संभोगवत् (वान्) = आनंदयुक्त। हर्षयुक्त। मौजमस्ती की जिंदगी बितानेवाला। संभोगवेश्म = रखेल का घर।

संभोगी¹—वि० [सं० सम्भोगिन्] [वि० स्त्री० संभोगिनी] १ संभोग करनेवाला। २ व्यवहार का आनंद लेनेवाला। ३ कामुक (को०)।

संभोगी²—संज्ञा पुं० लंपट पुरुष। कामी व्यक्ति [को०]।

संभोग्य—वि० [सं० सम्भोग्य] १ जिसका व्यवहार होनेवाला हो। जो काम में लाया जानेवाला हो। २ उपभोग करने योग्य। व्यवहार योग्य। वर्तने लायक।

संभोज—संज्ञा पुं० [सं० सम्भोज] भोजन। खाना।

संभोजक—संज्ञा पुं० [सं० सम्भोजक] १. भोजन करनेवाला। भक्षक।

खानेवाला। स्वाद लेनेवाला। २ भोजन परसनेवाला। रसोइया।

सभोजन —संज्ञा पु० [स० सम्भोजन] [वि० सभोजनीय, सभोज्य, सभुक्त] १ सामूहिक भोज। दावत। २ खाने की वस्तु। खाना।

सभोजनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्भोजनी] १. एक साथ मिलकर या सामूहिक रूप से भोजन करना। २. भोज के अत मे दी जाने-वाली दक्षिणा [को०]।

सभोजनीय—वि० [स० सम्भोजनीय] १ जो खाया जानेवाला हो। जिसे खिलाया जाय। २. खाने योग्य। भक्षणीय।

सभोज्य—वि० [सं० सम्भोज्य] १ जो खाया जानेवाला हो। खिलाने योग्य। २ खाने योग्य। भक्षणीय।

सभ्रम¹—संज्ञा पु० [स० सम्भ्रम] १ घूमना। चक्कर। फेरा। २. उतावली। हडबडी। आतुरता। ३ घबराहट। व्याकुलता। चकपकाहट। ४ हलचल। धूम। ५ सहम। सिटपिटाना। ६ उत्कठा। गहरी चाह। शौक। हौसला। उत्साह। उमग। ७. पूज्य भाव। आदर। मान। गौरव। ८ भूल। चूक। गलती। ९ श्री। शोभा। छवि। सौदर्य। १० शिव के एक प्रकार के गण। ११ मोह। भ्रम। भ्राति (को०)। १२ अबोधता। नादानी। गँवारपन (को०)।

सभ्रम²—वि० १ क्षुब्ध। २. इधर उधर घूमता हुआ। जैसे नेत्र [को०]।

यौ०—सभ्रमज्वलित = उतावली के कारण क्षुब्ध। सभ्रमभृत् = व्याकुल उद्विग्न। घबराया हुआ।

सभ्रम³—क्रि० वि० आतुरता के साथ। उतावली मे। उ०—(क) सुनि सिसुरुदन परम प्रिय बानी। सभ्रम चलि आई सब रानी।—मानस, १।१९३। (ख) सहित सभा सभ्रम उठेउ रविकुल कमल दिनेसु।—मानस, २।२७३।

सभ्रात—वि० [स० सम्भ्रान्त] १ घुमाया हुआ। चक्कर दिया हुआ। २ घबराया हुआ। उद्विग्न। चकराया हुआ। स्फूर्तियुक्त। तेजस्वी। ४ सम्मानित। प्रतिष्ठित। ५ उत्तेजित (को०)।

यौ०—सभ्रातजन = (१) वह जिसके साथी उद्विग्न हो। (२) आदरणीय व्यक्ति। सभ्रातमना = व्याकुल। उद्विग्नहृदय।

सभ्राति—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्भ्रान्ति] १. घबराहट। उद्वेग। आतुरता। हडबडी। ३. चकपकाहट।

सभ्राजना पु—क्रि० अ० [स० सम्भ्राज्] पूर्णत सुशोभित होना। उ०—राम सभ्राज सेपा सहित सर्वदा, तुलसि मानस रामपुर विहारी।—तुलसी (शब्द०)।

समत—वि० [सं० सम्मत] दे० 'सम्मत'।

समान—संज्ञा पुं० [सं० सम्मान] दे० 'सम्मान'।

समित¹—संज्ञा स्त्री० [स० सम्मित] दे० 'सम्मित'।

समित²—वि० दे० 'सम्मित'।

समेलन—संज्ञा पुं० [सं० सम्मेलन] दे० 'सम्मेलन'।

सयता—संज्ञा पुं० [स० सयन्तृ] १ सयम करनेवाला। रोकनेवाला। निग्रही। २. शासक। अधिकारी। नेता।

सयत्रित—वि० [स० सन्यन्त्रित] १ बँधा हुआ। जकडा हुआ। बद्ध। २ बद। ३ रोका हुआ। दबाया हुआ।

सय—संज्ञा पुं० [स०] ककाल। पजर।

सयत्¹—वि० [स०] १ सबद्ध। लगा हुआ। २ अखडित। लगातार।

सयत्²—संज्ञा पुं० १ नियत स्थान। बदी हुई जगह जहाँ मिला जाय। २ वादा। करार। ३ झगडा। लडाई। सघर्ष। ४ एक प्रकार की ईट जो यज्ञ की वेदी बनाने के काम आती थी।

सयत¹—वि० [सं०] १ बद्ध। बँधा हुआ। जकडा हुआ। २ पकड मे रखा हुआ। दबाव मे रखा हुआ। ३ रोका हुआ। दमन किया हुआ। काबू मे लाया हुआ। वशीभूत। ४ बद किया हुआ। कैद। ५ क्रमबद्ध। व्यवस्थित। नियमबद्ध। कायदे का पाबद। ६ उद्यत। तैयार। सन्नद्ध। ७ जिसने इद्रियो और मन को वश मे किया हो। चित्तवृत्ति का निरोध करनेवाला। निग्रही। ८ हद के भीतर रखा हुआ। उचित सीमा के भीतर रोका हुआ। जैसे,—सयत आहार।

यौ०—सयतचेता = सयत चित्तवाला। सयत प्राण। सयतमना = सयत चित्तवाला। सयतमुख = दे० 'सयतवाक्'। सयतमैथुन = जो मैथुन का त्याग कर चुका हो। सयतवस्त्र = चुस्त कपडे पहिननेवाला। सयतवाक् = कम बोलनेवाला।

सयत²—संज्ञा पुं० १ शिव का एक नाम। २ योगी।

सयतप्राण—वि० [स०] जिसने प्राणवायु या श्वास को वश मे किया हो। प्राणायाम करनेवाला।

सयताजलि—वि० [सं० सयताञ्जलि] बद्धाजलि।

सयताक्ष—वि० [स०] जिसकी आँखे खुली न हो। बद या मुँदी आँखवाला [को०]।

संयतात्मा—वि० [स० सयतात्मन्] जिसने मन को वश मे किया हो। चित्तवृत्ति का निरोध करनेवाला।

सयताहार—वि० [स०] भोजन मे सयम रखनेवाला। अल्पाहारी [को०]।

सयति—संज्ञा स्त्री० [स०] वश मे रखना। निरोध। रोक।

सयतद्रिय—वि० [सं० सयतेन्द्रिय] जिसने इद्रियो को वश मे कर रखा हो [को०]।

सयतोपस्कर—वि० [सं०] व्यवस्थित घरवाला। जिसके घर की साजसज्जा व्यवस्थित हो [को०]।

सयत्त—वि० [स०] १ तत्पर। तैयार। उद्यत। २ अवहित। सावधान। सतर्क [को०]।

सयत्ता—वि० [स० सयन्तृ] सयमन करनेवाला। नियता [को०]।

सयत्वर—वि० [स०] १ मौन। चुप। २ पशुसमूह [को०]।

सयद्वसु¹—वि० [सं०] बहुत धनवाला। धनवान।

सयद्वसु²—संज्ञा पु० सूर्य की सात किरणो मे से एक।

सयद्वाम—वि० [सं०] १ अभिमत। सुखकर। २ प्रिय को एकत्र करने अथवा मिलानेवाला [को०]।

सयम—संज्ञा पुं० [स०] [वि० सयमी, सयमित, सयत] १ रोक। दाब। वश मे रखने की क्रिया या भाव। २ इद्रियनिग्रह। मन और

इद्रियो को वश मे रखने की क्रिया। चित्तवृत्ति का निरोध। ३ हानिकारक या बुरी वस्तुओ से बचने की क्रिया। परहेज। जैसे,—सयम से रहो तो जल्दी अच्छे हो जाओगे। ४ बाँधना। बधन। जैसे,—केश सयम। ५ बद करना। मुँदना। ६ योग मे ध्यान, धारणा और समाधि या उनका साधन। ७ प्रयत्न। उद्योग। कोशिश। ८ धूम्राक्ष के एक पुत्र का नाम। ९ प्रलय। १० धार्मिक व्रत, अनुष्ठान आदि (को०)। ११ तपश्चरण। तपस्या (को०)। १२ मनुष्यता। मानवता। आदमियत (को०)। १३ व्रत, अनुष्ठान आदि करने के पूर्व किया जानेवाला धार्मिक कृत्य (को०)। १३ विनाश (को०)।

**सयमक**—वि० [सं०] १ नियता। नियत्रण करनेवाला। २ सयम करनेवाला। वृत्तियो का निरोध करनेवाला। सयमी (को०)।

**सयमन[1]**—सज्ञा पुं० [सं०] १ रोक। २ दमन। दबाव। निग्रह। ३ आत्मनिग्रह। मन को वश मे रखना। ४ बद रखना। कैद रखना। ५ बधन मे बाँधना। जकडना। कसना। ६ खीचना। तानना (लगाम आदि)। ७ यमपुर। ८ वह प्रागण जो चारो ओर चार मकान होने मे बन जाय (को०)। ९ वह जो सयमन करता हो (को०)।

**सयमन[2]**—वि० नियता। नियामक (को०)।

**सयमनी**—सज्ञा स्त्री० [सं०] यमराज की नगरी। यमपुरी जो मेरु पर्वत पर मानी गई है। उ०—इतनी बात के सुनते ही अर्जुन धनुष बाण ले वहाँ से उठा और चला चला सयमनी पुरी मे धर्मराज के पास गया।—लल्लू (शब्द०)।

**सयमित[1]**—वि० [सं०] १ रोक मे रखा हुआ। काबू मे लाया हुआ। २ दमन किया हुआ। ३ बँधा हुआ। कसा हुआ। ४ पकड मे लाया हुआ। कसकर पकडा हुआ। ५ जो मन को रोके हो। इद्रियनिग्रही। ६ बदी। कैदी (को०)। ७ धार्मिक प्रवृत्तिवाला (को०)। ८ एकत्रित (को०)।

**सयमित**—सज्ञा पुं० स्वरो का नियत्रण [को०]।

**सयमिनी**—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सयमनी' (को०)।

**सयमी[1]**—वि० [सं० सयमिन्] १ रोक या दबाव मे रखनेवाला। काबू मे रखनेवाला। २ मन और इद्रियो को वश मे रखनेवाला। आत्मनिग्रही। योगी। ३ जो बँधा हुआ या बधन मे हो। बद्ध (को०)। ४ बुरी या हानिकारक वस्तुओ से बचनेवाला। परहेजगार।

**सयमी[2]**—सज्ञा पुं० १ शासक। राजा। २ यति। ऋषि (को०)।

**सयम्य**—वि० [सं०] जो सयमन करने लायक हो। नियत्रण या दमन करने के योग्य [को०]।

**सयात**—वि० [सं०] १ एक साथ गया हुआ। साथ साथ लगा हुआ। २ आगत। पहुँचा हुआ। प्राप्त। दाखिल।

**सयाति**—सज्ञा पुं० [सं०] १ नहुष के एक पुत्र का नाम। २ बहुगव या प्रचिन्वान् के पुत्र का नाम।

**सयात्रा**—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ साथ साथ जाना। सहयात्रा। २ समुद्री यात्रा (को०)।

**सयान**—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० सयात, सयायी] १ सहगमन। साथ जाना। २ यात्रा। सफर।

यौ०—उत्तम सयान = मुरदे को ले चलना।

३ प्रस्थान। रवानगी। ४ गाडी। शकट। ५ घोडे को नियत्रण मे रखना (को०)। ६ आकार। आकृति। साँचा (को०)।

**सयाम**—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सयम' [को०]।

**सयाव**—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पकवान या मिठाई। पिराक। गोझिया।

**सयुक्**—वि० [सं० सयुज्] १ सबद्ध। जडा हुआ। २ गुणवान् [को०]।

**सयुक्त**—वि० [सं०] १ जुडा हुआ। लगा हुआ। २ मिला हुआ। जैसे,—सयुक्त अक्षर। ३ सबद्ध। लगाव रखता हुआ। ४ सहित। साथ। ५. पूर्ण। लिए हुए। समन्वित। ७ सबधी (को०)। ८ विवाहित (को०)। ९ समिलित रूप मे करनेवाला। १०. जडा हुआ (को०)।

यौ०—सयुक्त कुटुब, सयुक्त परिवार = वह कुटुब जिसमे परिवार के सभी लोग साथ मिलकर रहते है।

**सयुक्ता**—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ भगवतवल्ली। आवर्तकी लता। २ एक छद का नाम। ३ जयचद की कन्या।

**सयुग**—सज्ञा पुं० [सं०] १ मेल। मिलाप। सयोग। समागम। २ भिडना। भिडत। ३ युद्ध। लडाई। उ०—रोप्यो रन रावन, बोलाए वीर बानइत जानत जे रीति सब सयुग समाज की। चली चतुरग चमू, चपरि हने निसान, सेना सराहन जोग रातिचरराज की।—तुलसी (शब्द०)।

**सयुगगोष्पद**—सज्ञा पुं० [सं०] मामूली झगडा। सामान्य बात पर कलह [को०]।

**सयुगमूर्द्धा**—सज्ञा पुं० [सं० सयुगमूर्धन्] युद्ध का अग्रिम मोरचा [को०]।

**सयुज्**—वि०, सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सयुक्'।

**सयुजा**—सज्ञा स्त्री० [सं०] मेल। मिलान। जोड [को०]।

**सयुत[1]**—वि० [सं०] १ जुडा हुआ। मिला हुआ। बँधा हुआ। २ सबद्ध। एक साथ लगा हुआ। ३ सहित। साथ। ४ समन्वित।

**सयुत[2]**—सज्ञा पुं० एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे एक सगण, दो जगण और एक गुरु होता है।

**सयुति**—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ (गणित मे) दो या दो से अधिक सख्याओ का योगफल। २ ज्योतिष शास्त्र के अनुसार दो नक्षत्रो का योग [को०]।

**सयोग**—सज्ञा पुं० [सं०] १ दो वस्तुओ का एक मे या एक साथ होना। मेल। मिलान। मिलावट। मिश्रण। २ समागम। मिलाप।

विशेष—यह शृगार रस के दो भेदो मे से एक है। इसी को सभोग शृगार भी कहते है।

३ लगाव। सबध। ४ सहवास। स्त्री पुरुष का प्रसग। ५ विवाह सबध। ६ दो राजाओ की किसी बात के लिये सधि। ७ किसी विषय पर भिन्न व्यक्तियो का एकमत होना।

मतैक्य। 'भेद' का उलटा। ८ दो या अधिक व्यजनो का मेल। ९ जोड। योग। मोजान। १० दो या कई बातो का इकट्ठा होना। इत्तफाक। जैसे—(क) जब जैसा सयोग होता है, तब वैसा होता है। (ख) यह तो एक सयोग की बात है। ११ न्याय के २४ गुणो मे मे एक (को०)। १२ मचय। समान या पूरक वस्तुग्रो का समुदाय (को०)। १३ शिव (को०)। १४ भौतिक सपर्क (को०)।

मुहा०—सयोग से = बिना पहले से निश्चित हुए। इत्तफाक से। दैववशात्। जैसे,—यदि सयोग से वे आ जाते, तो झगडा हो जाता।

**सयोगपृथक्त्व**—सज्ञा पु० [सं०] न्याय के अनुसार ऐमा पृथक्त्व या अलगाव जो नित्य न हो।

**सयोगमत्र**—सज्ञा पु० [स० सयोगमन्त्र] विवाह के समय पढा जानेवाला वेदमत्र।

**सयोगविरुद्ध**—सज्ञा पु० [स०] वे पदार्थ जो परस्पर मिलकर खाने योग्य नही रहते, और यदि खाए जायँ तो रोग उत्पन्न करते है। जैसे,—बराबर मात्रा मे घी और मधु, मछली और दूध।

**सयोग शृगार**—सज्ञा पु० [स० सयोग शृङ्गार] शृगार रस का एक भेद जिसमे नायक नायिका के मिलन आदि का वर्णन होता है (को०)।

**सयोग सधि**—सज्ञा स्त्री० [स० सयोगसन्धि] कामदकीय नीति शास्त्र के अनुसार वह सधि जो किसी उद्देश्य से चढाई करने के उपरात उसके सबध मे कुछ तै हो जाने पर की जाय। (कामदक)।

**सयोगित**—वि० [स०] सयोगयुक्त। सयोजित (को०)।

**सयोगिनी**—सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जो अपने पति के साथ हो। वह स्त्री जो प्रिय से वियुक्ता न हो (को०)।

**संयोगी**—सज्ञा पु० [स० सयोगिन्] [स्त्री० सयोगिनी] १ मेल का। मिला हुआ। २ सयोग करनेवाला। मिलनेवाला। ३ वह पुरुष जो अपनी प्रिया के साथ हो। ४ ब्याहा हुआ। विवाहित।

**सयोजक**—वि०, सज्ञा पुं० [स०] १ मिलानेवाला। २ व्याकरण मे वह शब्द जो शब्दो या वाक्यो के बीच केवल जोडने के लिये आता है। ३ किसी सभा, समिति या किसी प्रकार के कार्य की योजना करनेवाला (को०)। ४ घटित या निर्मित करनेवाला (को०)।

**सयोजन**—सज्ञा पु० [स०] [वि० सयोगी, सयोजनीय, सयोज्य, सयोजित] १ जोडने या मिलाने की क्रिया। २. सहवास। स्त्री पुरुष का प्रसग। ३. ससार के बधन मे रखनेवाला। भवबधन का कारण (बौद्ध)। ४ आयोजन। व्यवस्था। प्रबध। इतजाम।

**सयोजना**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ आयोजन। व्यवस्था। इतजाम। तैयारी। २ मेल। मिलान। ३ सहवास। स्त्री पुरुष का प्रसग। ४ भवबधन का कारण। जन्म मरण के चक्र मे बद्ध रखनेवाली बाते (बौद्ध)।

विशेष—कामराग, रूपराग, अरूपराग, परिघ, मानस, दृष्टि, शीलव्रतपरमार्ष, विचिकित्सा, औद्धत्य और अविद्या इन सबकी गणना सयोजना मे होती है।

**सयोजनीय**—वि० [सं०] जिसका सयोजन किया जा सके। सयोजन करने के योग्य।

**सयोजित**—वि० [सं०] मिलाया हुआ। जोडा हुआ।

**सयोज्य**—वि० [स०] १ सयोजन के योग्य। मिलाने योग्य। २ जो मिलाया या जोडा जानेवाला हो।

**सयोध**—सज्ञा पु० [स०] युद्ध। सग्राम (को०)।

**सयोधकटक**—सज्ञा पु० [सं० सयोगकण्टक] १ युद्ध का काँटा। २ एक यक्ष का नाम।

**सरजन**[1]—वि० [स० सरञ्जन] १ प्रसन्न करने या रजन करनेवाला। आनद देनेवाला (को०)।

**सरजन**[2]—सज्ञा पुं० मन को प्रसन्न करना। रजन करना (को०)।

**सरभ**—सज्ञा पुं० [स० सरम्भ] १ ग्रहण करना। पकडना। २ आतुरता। आवेग। क्षोभ। उद्विग्नता। ३ खलबली। बेकली। ४ उत्कठा। लालसा। शौक। उत्साह। ५ क्रोध। कोप। ६ शोक। ७ ऐठ। ठसक। गर्व। ८ फोडे या घाव का सूजना या लाल होना (सुश्रुत)। ९ घनत्व। अधिकता। अतिरेक। बहुतायत। १० आरभ। शुरु। ११ एक अस्त्र का नाम। १२ गर्हा। जुगुप्सा। घृणा (को०)। १३ आक्रमण की प्रचडता (को०)।

यौ०—सरभताम्र = जो क्रोध या क्षोभ से लाल हो। सरभदृक् = क्रोध से जिसकी आँखे लाल हो गई हो। सरभपरुष = जो क्रोध के कारण कठोर या परुष हो। सरभरस = अत्यत क्रुद्ध। क्रोधपूर्ण। सरभरूक्ष = क्रोध के कारण अत्यत कठोर। सरभवेग = क्रोध का आवेश। क्रोधावेश।

**सरभी**—वि० [स० सरम्भिन्] १ क्रुद्ध। कोपाविष्ट। २ उत्तेजित। विक्षुब्ध। ३ घमडी। अहकारी। ४ उद्योगी। व्यवसायी (को०)।

**सरक्त**—वि० [सं०] १ अनुरक्त। आसक्त। प्रेममग्न। २ सुदर। मनोहर। ३ कुपित। क्रोध से लाल। ४ रगीन। लाल (को०)। ५ आवेश से भरा हुआ (को०)।

**सरक्ष**—सज्ञा पु० [सं०] देखभाल। रक्षण। (को०)।

**सरक्षक**—सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० सरक्षिका] १ रक्षा करनेवाला। रक्षक। २ देखरेख और पालन पोषण करनेवाला। ३. सहायक। ४ आश्रय देनेवाला।

**सरक्षकता**—सज्ञा स्त्री० [स०] सरक्षक होने का भाव। देखरेख करना (को०)।

**सरक्षण**—सज्ञा पु० [सं०] [वि० सरक्षी, सरक्षित, सरक्ष्य, सरक्षणीय] १ हानि या नाश आदि से बचाने का काम। हिफाजत। २. देखरेख। निगरानी। जैसे,—बालक उनके सरक्षण मे है। ३ अधिकार। कब्जा। ४ रोक। प्रतिबध। ५ रख छोडना।

**सरक्षणीय**—वि० [स०] [वि० स्त्री० सरक्षणीया] १ रक्षा करने योग्य। हिफाजत के लायक। २. रख छोडने लायक।

सरक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सरक्ष'।

सरक्षित—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सरक्षिता]। १ भलीभाँति रक्षित। हिफाजत से रखा हुआ। २ अच्छी तरह बचाया हुआ।

सरक्षितव्य—वि० [सं०] १ जिसका सरक्षण करना हो। २ जिसका सरक्षण उचित हो।

सरक्षितो—वि० [सं० सरक्षितिन्] रक्षा करनेवाला। जिसने रक्षण किया है [को०]।

सरक्षी—वि० [सं० सरक्षिन्] [वि० स्त्री० सरक्षिणी] १ सरक्षण करने वाला। २ देखभाल करनेवाला।

सरक्ष्य—वि० [सं०] १ जिसका सरक्षण करना हो। २ जिसका सरक्षण उचित हो।

सरब्ध—वि० [सं०] १ खूब मिला हुआ। खूब जुडा हुआ। आश्लिष्ट। २ जो एक दूसरे को खूब पकड़े हुए हो। ३ हाथ मे हाथ मिलाए हुए। ४ क्षुब्ध। उद्विग्न। ५ जोश में आया हुआ। उत्तेजित। ६ क्रोध से भरा हुआ। कोपपूर्ण। जैसे, —सरब्ध वचन। ७ क्रुद्ध। नाराज। ८ सूजा हुआ। फूला हुआ। ९ बढा हुआ। वर्धित (को०)।

सराग—संज्ञा पुं० [सं०] १ लाली। २ राग। प्रेम। प्यार। ३ उग्रता। क्रोध [को०]।

सराद्ध—वि० [सं०] १ सपन्न। पूरा किया हुआ। २ लब्ध। प्राप्त [को०]।

सराद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कार्य की पूर्णता। सफलता। २. प्राप्ति [को०]।

सरावक—संज्ञा पुं० [सं०] ध्यान करनेवाला। आराधना करनेवाला। पूजा करनेवाला।

सरावन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सराधनीय, सराधित, सराध्य] १ तुष्टीकरण। प्रसन्न करना। २ पूजा करना। पूजा द्वारा प्रसन्न या तुष्ट करना। ३ ध्यान। ४ जय जयकार।

सरावनीय—वि० [सं०] पूजा के योग्य।

सराधित—वि० [सं०] जिसे पूजा आदि के द्वारा प्रसन्न किया गया हो [को०]।

सराध्य—वि० [सं०] १ जो ध्यान के द्वारा प्राप्य हो। २ तुष्ट या प्रसन्न करने योग्य। ३ जिसे अनुकूल किया जा सके [को०]।

सराव, सरावण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सरावी] १ कोलाहल। शोर। २ हलचल। धूम।

सरावी—वि० [सं० सराविन्] कोलाहल करनेवाला [को०]।

सरिहाण—संज्ञा पुं० [सं०] प्रेमपूर्वक चाटने की क्रिया। जैसे, गौ का बछडे को चाटना [को०]।

सरुग्ण—वि० [सं०] छिन्न भिन्न। खडित। चूर चूर।

सरुजन—संज्ञा पुं० [सं०] दर्द। पीडा। व्यथा [को०]।

सरुद्ध—वि० [सं०] १ अच्छी तरह रोका हुआ। २ घेरा हुआ। ३ अच्छी तरह बद। ४ आच्छादित। ढँका हुआ। ५ ठसाठस भरा हुआ। ६ मना किया हुआ। वर्जित। ७ रुका हुआ (को०)। ८ अवरुद्ध। घिरा हुआ (को०)।

यौ०—सरुद्धचेष्ट = जिसकी चेष्टा या क्रिया रोक दी गई हो। रुद्ध चेष्टावाला। सरुद्ध प्रजनन = जिसकी प्रजनन शक्ति रोक दी गई हो।

सरुपित—वि० [सं०] चिढ़ा हुआ। क्रोधयुक्त। क्रुद्ध [को०]।

सरूढ—वि० [सं०] १ अच्छी तरह चढ़ा हुआ। २ खूब जमा हुआ। अच्छी तरह लगा हुआ। जिसने खूब जड़ पकड़ ली हो। ३ अकुरित। जमा हुआ। ४ अंगूर पैदा हुआ। भरा हुआ। सूखता या अच्छा होता हुआ (घाव)। ५ प्रकट। आविर्भूत। निकल पडा हुआ। ६ धृष्ट। प्रगल्भ। ७ प्रौढ़। दृढ़। ८ गहराई तक घुसा हुआ। जैसे, बाण (को०)।

सरोचन—संज्ञा पुं० [सं०] रामायण में वर्णित एक पर्वत का नाम।

सरोदन—संज्ञा पुं० [सं०] जोर जोर से रोना [को०]।

सरोध—संज्ञा पुं० [सं०] १ रोक। छेक। रुकावट। २ गढ़ आदि को चारों ओर से घेरना। घेरा। ३ परिमिति। हदबंदी। ४ बंद करने या मूँदने की क्रिया। ५ अड़चन। बाधा। प्रतिबंध। ६ हिंसा। नाश। ७ क्षेप। फेंकना। ८ बंधन। शृंखला (को०)। ९ क्षति। हानि (को०)। १० कैद। बंधन (को०)।

सरोधन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सरोधनीय, सरोद्ध, सरुद्ध] १ रोकना। छेंकना। रुकावट डालना। २ घेरना। ३ दृढ़ बाँधना। ४ बंद करना। मूँदना। ५ बाधा डालना। काम में हानि पहुँचाना। ६ बंदी करना। कैद करना।

सरोधनीय—वि० [सं०] रोकने, छेकने या घेरने योग्य।

सरोध्य—वि० [सं०] १. जो रोका, छेका या घेरा जानेवाला हो। २ जिसे रोकना या घेरना उचित हो। ३ जो बंधन में डालने योग्य हो (को०)।

सरोपण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सरोपणीय, सरोपित, सरोप्य] १ पेड पौधा लगाना। जमाना। बैठाना। २ घाव सुखाना। घाव अच्छा करना। ३ घाव पूजना। फोड़ा भरना।

सरोपित—वि० [सं०] जमाया, रोपा या लगाया हुआ।

सरोप्य—वि० [सं०] १ जो जमाया या लगाया जानेवाला हो। २ जिसे जमाना या लगाना उचित हो।

सरोपित—वि० [सं०] १ ऊपर लगाया हुआ। छोपा हुआ। लेप किया हुआ। (सुश्रुत)।

सरोह—संज्ञा पुं० [सं०] १ जमना। ऊपर छाना या पैठना। २ घाव पर पपडी जमना। घाव सूखना। अंगूर फेंकना। ३ अकुरित होना। जमना। ४ प्रकट होना। आविर्भूत होना।

सरोहण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सरोहणीय, सरोही] १ जमना। ऊपर छाना। २ घाव पर पपडी जमना। घाव सूखना। ३ (पेड पौधा) जमाना। लगाना।

सलघन—संज्ञा पुं० [सं० सलङ्घन] बीत जाना। व्यतीत होना [को०]।

सलघित—वि० [सं० सलङ्घित] बीता हुआ। अतीत। गत [को०]।

सलक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सलक्षणीय, सलक्षित, सलक्ष्य] १ रूप निश्चित करना। विशेष लक्षणो द्वारा भेद स्पष्ट करना। २ लखना। पहचानना। तमीज करना। ताडना।

संलक्षित—वि० [सं०] १ लखा हुआ। पहचाना हुआ। ताड़ा हुआ। २ रूप निश्चित किया हुआ। लक्षणों से जाना हुआ।

संलक्ष्य—वि० [सं०] १ जो लखा जाय। जो पहचाना जाय। जो देखने मे आ सके। २ जो लक्षणो से जाना जा सके। जो लक्षणो द्वारा लक्षित हो सके।

संलक्ष्यक्रम व्यंग्य—संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य शास्त्र के अनुसार व्यंग्य के दो भेदो मे से एक। वह व्यंजना जिसमे वाच्यार्थ से व्यंग्यार्थ की प्राप्ति का क्रम लक्षित हो।

विशेष—इसके द्वारा वस्तु और अलंकार की व्यंजना होती है। जैसे, 'पेड का पत्ता नही हिलता' इसका व्यंग्यार्थ हुआ कि 'हवा नही चलती'। इसमे वाच्यार्थ के उपरात व्यंग्यार्थ की प्राप्ति लक्षित होती है। इसके विपरीत जहाँ रसव्यंजना या भावव्यंजना मे क्रम लक्षित नही होता, उसे असंलक्ष्यक्रम व्यंग्य कहते है।

संलग्न—वि० [सं०] १ बिल्कुल लगा हुआ। सटा हुआ। मिला हुआ। २ भिडा हुआ। लडाई मे गुथा हुआ। ३. संबद्ध। जुडा हुआ। ४ निमग्न। सलीन (को०)।

संलपन—संज्ञा पुं० [सं०] इधर उधर की बात चीत। प्रलाप। गपशप।

संलप्तक—संज्ञा पुं० [सं०] शिष्ट व्यक्ति। वह व्यक्ति जिसमे बात चीत की जा सके [को०]।

संलब्ध—वि० [सं०] प्राप्त। पाया हुआ। गृहीत [को०]।

संलय—संज्ञा पुं० [सं०] १ पक्षियो का उतरना या नीचे बैठना। २. लीन होने की क्रिया। घुल जाना। ३ प्रलय। ४ निद्रा। नीद। लेटना। ५ घोसला (को०)।

संलयन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संलीन] १ पक्षियो का नीचे उतरना या बैठना। २ लय को प्राप्त होना। लीन होना। ३ नष्ट होना। व्यक्त न रहना। ४ दे० 'संलय'।

संलाप—संज्ञा पुं० [सं०] १ परस्पर वार्तालाप। आपस की बातचीत। प्रेमपूर्ण वार्तालाप या कथोपकथन (को०)। ३. गुप्त बातचीत। गोपनीय वार्ता (को०)। ४ स्वयं कुछ कहना। प्रिय या प्रिया के गुणों का प्रलपन (को०)। ५ नाटक मे एक प्रकार का संवाद जिसमे क्षोभ या आवेग नही होता, पर धीरता होती है।

संलापक—संज्ञा पुं० [सं०] १ नाटक मे एक प्रकार का संवाद। संलाप। २ एक प्रकार का उपरूपक या छोटा अभिनय।

संलापित—वि० [सं०] जिससे वार्तालाप किया गया गया हो। जिससे कहा गया हो [को०]।

संलापी—वि० [सं० संलापिन्] बातचीत या गपशप करनेवाला [को०]।

संलालित—वि० [सं०] जिसका भलीभाँति लालन किया गया हो [को०]।

संलिप्त—वि० [सं०] १. लीन। भली भाँति लिप्त। २ खूब लगा हुआ।

संलीढ—वि० [सं० संलीढ] १ अच्छी तरह चाटा हुआ। जिसे खूब चखा गया हो। २. जिसका भोग किया गया हो [को०]।

संलीन—वि० [सं०] १ खूब लीन। अच्छी तरह लगा हुआ। २. आच्छादित। ढका हुआ। छिपा हुआ। ३ संकुचित। सिकुडा हुआ। ४ जो घुलकर एकरूप हो। विलीन। गर्क (को०)।

यौ०—संलीन कर्ण = जिसके कान नमित या लटके हो। संलीन मानस = खिन्नमन। उदास।

संलुलित—वि० [सं०] १ जो ठीक दशा मे न हो। क्षुब्ध। अस्तव्यस्त। २, संपर्क या संसर्गप्राप्त [को०]।

संलेख—संज्ञा पुं० [सं०] पूर्ण संयम। (बौद्ध)।

संलेप—संज्ञा पुं० [सं०] कर्दम। कीचड [को०]।

संलोडन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संलोडित] १ (जल आदि को) खूब हिलाना या चलाना। क्षुब्ध करना। मथना। २ खूब हिलाना डुलाना। झकझोरना। ३ उलट पुलट करना। उथल पुथल करना। गडबड करना।

संवत्¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ वर्ष। संवत्सर। साल। २ वर्ष विशेष जो किसी संख्या द्वारा सूचित किया जाता है। चली आती हुई वर्ष गणना का कोई वर्ष। सन्। जैसे,—यह कौन संवत् है? ३ महाराज विक्रमादित्य के काल से चली हुई मानी जानेवाली वर्षगणना। ४ संग्राम। युद्ध (को०)।

संवत्²—संज्ञा स्त्री० भूमिविशेष। वह भूमि जो मिट्टी खनने के लिये प्रशस्त एवं पाषाण आदि से रहित हो [को०]।

संवत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० संवत्] दे० 'संवत्'। उ०—चंद्र नाग वसु पंच गिनि संवत माधव मास।—छिताई० (परिचय), पृ० ५।

संवत्सर—संज्ञा पुं० [सं०] १ वर्ष। साल। २ पाँच पाँच वर्ष के युगो का प्रथम वर्ष।

विशेष—प्रभवादि साठ संवत्सर १२ युगो मे विभक्त है जिसमे से प्रत्येक युग पाँच वर्ष का होता है। प्रत्येक युग के प्रथम वर्ष का नाम संवत्सर है। इसका देवता अग्नि कहा गया है।

३ शिव का एक नाम। ४ विक्रम संवत् (को०)।

यौ०—संवत्सरकर। संवत्सरनिरोध = एक वर्ष की कैद। बरस भर का कारावास। संवत्सरफल = साल का शुभाशुभ फल। संवत्सरभुक्ति = सूर्य का एक वर्ष का मार्ग। संवत्सरभृत = जो एक वर्ष के लिये रखा हो। संवत्सरभ्रमि = वर्ष भर मे परिक्रमा पूरी करनेवाला, जैसे सूर्य। संवत्सरमुखी = ज्येष्ट मास के शुक्लपक्ष की दशमी। संवत्सररय = एक वर्ष का पथ। वर्ष भर की राह।

संवत्सरकर—संज्ञा पुं० [सं०] शिव [को०]।

संवत्सरीय—वि० [सं०] संवत्सर से संबद्ध। वार्षिक। साल वाला। साल का [को०]।

संवदन—संज्ञा पुं० [सं०] १ परस्पर कथन। बातचीत। २ संवाद। संदेशा। पैगाम। ३ विचार। आलोचन। ४ जाँच। ५ जादू या मंत्र के द्वारा वश मे करना (को०)। ६ यंत्र। तावीज (को०)।

संवदना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वश मे करने की क्रिया। वशीकरण।

२ मत्र, ओपधि आदि से किसी को वश मे करने की क्रिया। दे० 'सवदन'।

सवनन—सज्ञा पु० [स०] दे० १ 'सवदन'। २ यत्र मत्र आदि के द्वारा स्त्रियो को फँसाना। ३ प्राप्ति। उपलब्धि (को०)। ४ अनुराग। आसक्ति। प्रीति (को०)।

सवनना—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सवदना'।

सवपन—सज्ञा पुं० [स०] बीज वपन करने की क्रिया। खेत मे बीज छीटना या बोना (को०)।

सवर—सज्ञा पुं० [स०] १ रोक। परिहार। दूर करना। जैसे,—कालसवर। २ इद्रियनिग्रह। मन को दबाना या वश मे करना। ३ बौद्ध मतानुसार एक प्रकार का व्रत। ४ बाँध। बद। ५ पुल। सेतु। ६ चुनना। पसद करना। ७ कन्या का वर चुनना। ८ आच्छादन। आवरण (को०)। ९ बोध। समझ (को०)। १० आड या ओट करना। सकोचन (को०)। ११ एक प्रकार का हिरन (को०)। १२ एक राक्षस का नाम दे० 'शबर' (को०)। १३ छिपाव। दुराव। गोपन (को०)। १४ पानी। जल (को०)। १५ एक प्रकार की मछली (को०)। १६ अपने को दृश्यमान ससार से दूर करना। (जैन)।

सवरण—सज्ञा पु० [स०] [वि० सवरणीय, सवृत्त] १ हटाना। दूर रखना। रोकना। २ बद करना। ढँकना। ३ आच्छादित करना। छोपना। ४ छिपाना। गोपन करना। ५ छिपाव। दुराव। ६ ढक्कन या परदा। ७ घेरा। जिसके भीतर सब लोग न जा सकें। बाँध। बद। ९ सेतु। पुल। १० किसी चित्तवृत्ति को दबाने या रोकने की क्रिया। निग्रह। जैसे,—क्रोध सवरण करना। ११ गुदा के चमडे की तीन परतो मे से एक। १२ कुरु के पिता का नाम। १३ लेने के लिये पसद करना। चुनना। १४ कन्या का विवाह के लिये वर या पति चुनना। १५ गुप्तभेद। रहस्य (को०)। १६ कपट। व्याज। छद्म (को०)।

सवरणीय—वि० [स०] १ निवारण करने योग्य। रोकने लायक। २ सगोपनीय। ३ विवाह के योग्य। वरने योग्य।

सवर्ग—सज्ञा पुं० [स०] [वि० सवर्ग्य] १ अपनी ओर समेटना। अपने लिये बटोरना। २ भक्षण। भोजन। चट कर जाना। ३ खपत। लग जाना। ४ एक वस्तु का दूसरी मे समा जाना या लीन हो जाना। जैसे, जीव का ब्रह्म मे लीन होना।

यौ०—सवर्गविद्या = विलय, तल्लीनता अथवा रूपातर प्राप्ति का ज्ञान।

५ गुणनफल। ६ अग्नि का एक नाम (को०)। ७ बलात् ले लेना। अपहरण करना (को०)।

सवर्गण—सज्ञा पुं० [स०] अपना लेना। आकर्षित करना। जैसे,—मित्र सवर्गण (को०)।

सवर्ग्य—वि० [स०] सवर्ग करने योग्य। गुणित करने योग्य (को०)।

सवर्जन—सज्ञा पु० [स०] [वि० सवर्जनीय, सवर्जित, सवृक्त] १ छीनना। खसोटना। ले लेना। हरण करना। २ खा जाना। उडा जाना।

सवर्त—सज्ञा पुं० [स०] १ जुटना। भिडना। (शत्रु से)। २ लपेटने की क्रिया भाव। लपेट। ३ फेरा। घुमाव। चक्कर। ४ प्रलय। कल्पात। ५ एक कल्प का नाम। ६ लपेटी या बटोरी हुई वस्तु। ७ पिंडी। गोला। ८ बट्टी। टिकिया। ९ घना समूह। घनी राशि। १० प्रलयकाल के सात मेघो मे से एक। ११ इद्र का अनुचर एक मेघ जिससे बहुत जल बरसता है।

विशेष—मेघो के द्रोण, आवर्त्त, पुष्कलावर्त आदि कई नाम कहे गए हैं। जिस प्रकार आवर्त बिना जल का माना गया है, उसी प्रकार सवर्त अत्यत अधिक जलवाला कहा गया है।

१२ मेघ। बादल। १३ सवत्सर। वर्ष। १४ एक दिव्यास्त्र। १५ एक केतु का नाम। १६ निश्चित समय पर होनेवाला प्रलय। खड प्रलय (को०)। १७ सकोच। आकुचन (को०)। १८ ग्रहो का एक योग। १९ विभीतक। बहेडा।

सवर्तक'—वि० [स०] १ लपेटनेवाला। २ लय या नाश करनेवाला।

सवर्तक²—सज्ञा पु० १ कृष्ण के भाई बलराम। २ बलराम का अस्त्र। लागल। हल। ३ बडवानल। ४ विभीतक वृक्ष। बहेडा। ७ प्रलय नामक मेघ। ८ प्रलय मेघ की अग्नि। ९ एक नाग। १० एक ऋषि।

सवर्तकल्प—सज्ञा पुं० [स०] प्रलय का एक भेद। (बौद्ध)।

सवर्तकी—सज्ञा पु० [स० सवर्त्तकिन्] कृष्ण के भाई बलराम।

सवर्तकेतु—सज्ञा पुं० [स०] एक केतु का नाम।

विशेष—यह सध्या समय पश्चिम दिशा मे उदय होता है और आकाश के तृतीयाश तक फैला रहता है। इसकी चोटी धूमिल रग लिए ताम्र वर्ण की होती है। इसके उदय का फल राजाओ का नाश कहा गया है।

सवर्तन—सज्ञा पुं० [स०] [वि० सवर्तनीय, सवर्तित, सवृत्त] १ लपेटना। २ फेरा या चक्कर देना। ३ किसी ओर फिरना। प्रवृत्त होना या करना। ४ पहुँचना। प्राप्त होना। ५ हल नामक अस्त्र। ६ हरिवश के अनुसार एक दिव्यास्त्र (को०)।

सवर्तनी—सज्ञा स्त्री० [स०] सृष्टि का लय। प्रलय।

सवर्तनीय—वि० [स०] लपेटने योग्य। फेरने योग्य।

सवर्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सवर्तिका'।

सवर्तिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ लपेटी हुई वस्तु। २ बत्ती। दीप की शिखा। ३ कमल की बँधी पत्ती। ४ कोई बँधा हुआ पत्ता। ५ बलराम का अस्त्र, हल। लागल। ६ वह पत्ती जो पराग केशर के पास हो (को०)।

सवर्तित—वि० [स०] १ लपेटा हुआ। २ फेरा या घुमाया हुआ।

सवर्द्धक सवर्धक—वि०, सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० सवर्द्धिका] १ बढाने वाला। वर्धन करनेवाला। २ अतिथियो का स्वागत सत्कार करनेवाला (को०)।

सवर्द्धन, सवर्धन'—सज्ञा पु० [स०] [वि० सवर्द्धनीय, सवर्धित, सवृद्ध] १ वृद्धि को प्राप्त होना। बढना। २ पालना। पोसना। ३ बढाना। उन्नत करना। ४ (बाल आदि) बढाने का साधन (को०)।

सवर्द्धन, सवर्धन[२]—वि० सवर्द्धक। बढानेवाला (को०)।

सवर्द्धनीय, सवर्धनीय—वि० [सं०] १ बढने या बढाने योग्य। २ पालने पोसने योग्य।

सवर्द्धित, सवर्धित—वि० [सं०] १ बढा हुआ। २ बढाया हुआ। ३ पाला पोसा हुआ।

सवर्मित—वि० [सं०] वर्म से युक्त। जिरहबक्तर पहने हुए [को०]।

सवल—संज्ञा पुं० [सं०] १ दे० 'सबल'। २ आधार। सहारा।

सवलन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सवलनीय, सवलित] १ मिलना। जुटना (शत्रु से)। २ मेल। मिलान। सयोग। ३ मिलावट। मिश्रण।

सवलित—वि० [सं०] १ मिला हुआ। जुटा हुआ (शत्रु से)। २ मिला हुआ। ३ युक्त। सहित। ४ घिरा हुआ। ५ तुटित। टूटा हुआ (को०)। ६ आर्द्र या तर किया हुआ (को०)। ७ मिश्रण युक्त। मिश्रित (को०)। ८ सबद्ध।

सवल्गन—संज्ञा पुं० [सं०] उछलना। उल्लसित होना [को०]।

सवल्गित[१]—वि० [सं०] अभिद्रवित। बरबाद (को०)।

सवल्गित[२]—संज्ञा पुं० ध्वनि [को०]।

सवसति—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुतो को एक साथ रहने की स्थिति। एक साथ वास करना [को०]।

सवसथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ बस्ती। गाँव या कस्बा। २ निवास। वसति। घर (को०)।

सवसन—संज्ञा पुं० [सं०] निवास स्थान। गृह (को०)।

सवस्त्रण—संज्ञा पुं० [सं०] एक समान वस्त्र धारण करना [को०]।

सवह—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो वहन करता हो। वहन करनेवाला। ले जानेवाला। २ एक वायु जो आकाश के सात मार्गों मे से तीसरे मार्ग मे रहती है। ३ अग्नि की सात जिह्वाओं मे से एक।

सवहन—संज्ञा पुं० [सं०] १ वहन करना। ले जाना। ढोना। २ दिखाना। प्रदर्शित करना। व्यक्त करना। ३ अगुआई या नेतृत्व करना (को०)।

सवाच्य—संज्ञा पुं० [सं०] ६४ कलाओ मे से एक का नाम। बातचीत करने या कथा कहने का ढग।

सवाटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सिंघाडा। शृगाटक।

सवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ बातचीत। कथोपकथन। खबर। हाल। समाचार। वृत्तात। ३ प्रसगकथा। चर्चा। ४ नियति। नियुक्ति। ५ मामला। मुकदमा। व्यवहार। ६ सहमति। एक राय। ७ स्वीकार। रजामदी। ८ वहस। मुबाहसा। ९ सादृश्य। एकरूपता। जैसे, रूप सवाद (को०)। १० समागम। भेट। मिलन (को०)।

सवादक—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] १ भाषण करनेवाला। बातचीत करनेवाला। २ सहमत होनेवाला। एक राय होनेवाला। ३ स्वीकार करनेवाला। माननेवाला। राजी होनेवाला। ४ बजानेवाला।

सवाददाता—संज्ञा पुं० [सं० सवाददातृ] सवाद देनेवाला। समाचार भेजनेवाला। समाचार पत्रो मे स्थानीय समाचार भेजनेवाला वह व्यक्ति जो उस कार्य के लिये नियुक्त किया गया हो। (अ० लोकल रिपोर्टर)।

सवादन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सवादनीय, सवादित, सवादी, सवाद्य] १ भाषण। बातचीत करना। २ सहमत करना। एकमत होना। ३ राजी होना। मानना। ४ बजाना।

सवादिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कीट। कीडा। २ पिपीलिका। च्यूँटी।

सवादित—वि० [सं०] १ बोलने मे प्रवृत्त किया हुआ। बातचीत मे लगाया हुआ। २ राजी किया हुआ। मनाया हुआ। ३ बजाया हुआ। वादित।

सवादिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सादृश्य। तुल्यता। समानता। २ एक मेल का होना।

सवादी[१]—वि० [सं० सवादिन्] [वि० स्त्री० सवादिनी] १ सवाद करनेवाला। बातचीत करनेवाला। २ सहमत होनेवाला। राजी होनेवाला। ३ अनुकूल होनेवाला। तुल्य। समान। ४ बजानेवाला।

सवादी[२]—संज्ञा पुं० सगीत मे वह स्वर जो वादी के साथ सब स्वरो के साथ मिलता और सहायक होता है। जैसे,—पचम से षडज तक जाने मे बीच के तीन स्वर सवादी होगे।

सवार—संज्ञा पुं० [सं०] १ आच्छादन। ढाँकना। छिपाना। २ शब्दो के उच्चारण मे कठ का आकुचन या दबाव। ३ उच्चारण के बाह्य प्रयत्नो मे से एक जिसमे कठ का आकुचन होता है। 'विवार' का उलटा। ४ बाधा। रोक। विघ्न। अडचन। ५ अपचय। क्षय। ह्रास। घटती (को०)। ६ रक्षण। सरक्षण (को०)। ७ उपकल्पन। व्यवस्थापन (को०)।

सवारण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सवारणीय, सवारित, सवार्य] १ हटाना। दूर करना। निवारण करना। २ रोकना। न आने देना। ३ निषेध करना। मना करना। ४ छिपाना। आवृत करना। ढाँकना।

सवारणीय—वि० [सं०] १ हटाने या दूर करने योग्य। २ रोकने योग्य। ३ छिपाने या ढाँकने योग्य।

सवारित—वि० [सं०] १ रोका हुआ। हटाया हुआ। २ मना किया हुआ। ३ ढाँका हुआ।

सवार्य—वि० [सं०] १ हटाने योग्य। दूर करने योग्य। २ मना करने योग्य। रोकने योग्य। ३ ढाँकने या छिपाने योग्य।

सवावदूक—वि० [सं०] १ ठीक ठीक कह देनेवाला। ज्यो का त्यो बताने या अभिव्यक्त करनेवाला। २ जो अतिशय तुल्यता का व्यजक हो [को०]।

सवास—संज्ञा पुं० [सं०] १ साथ बसना या रहना। २ परस्पर सबध। ३ सहवास। प्रसग। मैथुन। ४ वह खुला हुआ स्थान जहाँ लोग विनोद या मन बहलाव के निमित्त एकत्र हो। ५ सभा। समाज। ६ मकान। घर। रहने का स्थान। बसति। ७ सार्वजनिक स्थान। ८ घरेलू व्यवहार (को०)।

सवासित—वि० [सं०] सुगंधित किया हुआ। वासा हुआ। सुवासित। २ जो पूतिगंध से युक्त हो। दुर्गंधयुक्त। जैसे, श्वास (को०)।

सवासी—वि० [सं० सवासिन्] १ एक साथ निवास करनेवाला। एक जगह रहनेवाला। २ स्थानविशेष का रहनेवाला। ३ परिधानयुक्त। जो वस्त्र धारण किए हो (को०)।

सवाह—संज्ञा पुं० [सं०] १ ले जाना। ढोना। २ पैर दवाना। ३ खुला उपवन जहाँ लोग एकत्र हों। ४ बाजार। मंडी। ५ पीडन। सताना। जुल्म। ६ दे० 'मर्दनीक' (को०)। ८ सात वायुओं में से एक (को०)।

सवाहक—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सवाहिका] १ ले जानेवाला। २ ढोनेवाला। ३ वदन मलनेवाला। मर्दनीक। पैर दवानेवाला। पाँव पलोटनेवाला। ४ गति देनेवाला। चलानेवाला। संचालक (को०)।

सवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] [संज्ञा स्त्री० सवाहना] [वि० सवाहनीय, सवाहित, सवाही, सवाह्य] १ उठाकर ले चलना। ढोना। २ ले जाना। पहुँचाना। ३ चलाना। परिचालन। ४ शरीर की मालिश। हाथ पैर दवाना या मलना। ५ जिसकी मालिश की गई हो। ६ (मेघों का) जाना। गमन (को०)।

सवाहित—वि० [सं०] १ ले गया हुआ। वाहित। २ पहुँचाया हुआ। ढोया हुआ। ३ चलाया हुआ। परिचालित। ४ जिसका शरीर मर्दन हुआ हो। जिसके हाथ पाँव दबाए गए हों।

सवाही—वि० [सं० सवाहिन्] [वि० स्त्री० सवाहिनी] १ ले जानेवाला। पहुँचानेवाला। २ ढोनेवाला। ३ चलानेवाला। ४ अंग मर्दन करनेवाला। हाथ पैर दवानेवाला।

सवाह्य—वि० [सं०] १ वहन करने योग्य। २ मलने योग्य। दवाने योग्य। ३ व्यक्त करने या दिखाने योग्य (को०)।

सविक्त—वि० [सं०] जिसको चुनकर अलग किया गया हो।

सविग्न—वि० [सं०] १ क्षुब्ध। उद्विग्न। घबराया हुआ। २ भीत। आतुर। डरा हुआ। ३ इतस्तत आवागमन करता हुआ (को०)।

यौ०—सविग्नमानस, सविग्नहृदय = किंकर्तव्य विमूढ। हतबुद्धि।

सविघ्नित—वि० [सं०] विघ्नयुक्त। अतराययुक्त। जिसमें विघ्न डाला गया हो (को०)।

सविज्ञ—वि० [सं०] अच्छी तरह जानकार।

सविज्ञात—वि० [सं०] १ जिसे सभी जानते हों। सर्वज्ञात। सवविदित। २ जो सभी को मान्य या विधेय हो (को०)।

सविज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] १ सम्यक् बोध। पूर्ण ज्ञान। २ सहमति। एक मत। ३ स्वीकृति। मजूरी।

यौ०—सविज्ञान भूत = जिसे सभी जानते हों। जो सवको ज्ञात हो गया हो।

सवित्—संज्ञा स्त्री० [सं०] चेतना। दे० सविद्'।

सवितिकाफल—संज्ञा पुं० [सं०] सेव। सेवीफल।

सवित्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रतिप्रत्ति। २ अविवाद। ऐक्यमत। एक राय। ३ चेतना। संज्ञा। ४ अनुभव। ५ बुद्धि। ६ प्रति स्मरण (को०)।

सवित्पत्र—संज्ञा पुं० [सं०] शुक्रनीति के अनुसार वह पत्र जिसमें दो ग्रामों या प्रदेशों के बीच किसी बात के लिये मेल की प्रतिज्ञा या शर्तें लिखी हों।

सविद्—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चेतना। चैतन्य। ज्ञान शक्ति। २ बोध। ज्ञान। समझ। ३ बुद्धि। महत्तत्व। (सांख्य)। ४ संवेदन। अनुभूति। ५ योग की एक भूमि जिसकी प्राप्ति प्राणायाम से होती है। ६ समझौता। करार। वादा। ७ मिलने का स्थान जो पहले से ठहराया गया हो। ८ युक्ति। उपाय। तदवीर। ९ वृत्तात। हाल। सवाद। १० बँधी हुई परपरा। रीति। प्रथा। ११ नाम। १२ तोषण। तुष्टि। १३ भाँग। १४ युद्ध। लड़ाई। १५ युद्ध की ललकार। १६ संकेत। इशारा। निशान। १७ प्राप्ति। लाभ। १८ सपत्ति। जायदाद। १९ वार्तालाप। संलाप (को०)। २० विचारों की एकता। मतैक्य (को०)। २१ मैत्री। दोस्ती (को०)। २२ योजना (को०)। २३ स्वीकृति। सहमति (को०)। २४ संकेत शब्द। परिचायक शब्द (को०)।

सविद'—वि० [सं०] चेतन। चेतनायुक्त।

सविद²—संज्ञा पुं० वादा। समझौता। इकरार।

सविदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ समझौता। वादा। इकरार। २ भाँग का पौधा (को०)।

सविदात—वि० [सं०] १ जाननेवाला। प्रतिभाशाली। २ अनुरूप। सामजस्यपूर्ण (को०)।

सविदामजरी—संज्ञा स्त्री० [सं० सविदामञ्जरी] गाँजा।

सविदित'—वि० [सं०] १ पूर्णतया ज्ञात। जाना बूझा। सुविदित। २ ढूँढा हुआ। खोजा हुआ। ३ तै पाया हुआ। सबकी राय से ठहराया हुआ। ४ वादा किया हुआ। जिसका करार हुआ हो। ५ समझाया बुझाया हुआ। उपदिष्ट। ६ ख्यात। प्रसिद्ध (को०)। ७ स्वीकृत। माना हुआ (को०)।

सविदित²—संज्ञा पुं० वादा। करार। प्रतिज्ञा (को०)।

सविद्वाद—संज्ञा पुं० [सं०] यूरोपीय दर्शन का एक सिद्धात जिसमें वेदात के समान चैतन्य के अतिरिक्त और किसी वस्तु की पारमार्थिक सत्ता नहीं स्वीकार की गई है। चैतन्यवाद।

सविद्व्यतिक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] समझौते या करार का पालन न होना (को०)।

सविध्—संज्ञा स्त्री० [सं०] योजना। रूपरेखा। क्रम व्यवस्थापन (को०)।

सविधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रहन सहन। आचार व्यवहार। २ योजना। खाका। रूपरेखा (को०)। ३ व्यवस्था। आयोजन। प्रवध। डौल।

सविधातव्य—वि० [सं०] जो आयोजन, सपादन एवं निर्माण के योग्य हो।

संविधाता—संज्ञा पुं० [सं० संविधातृ] प्रबंधक। व्यवस्थापक। स्रष्टा। निर्माता (को०)।

संविधान—संज्ञा पुं० [सं०] १ व्यवस्था। आयोजन। प्रबंध। २. विधि। रीति। दस्तूर। ३ रचना। सजना। ४. विचित्रता। अनूठापन। ५ कथा मे घटनाओं का क्रम व्यवस्थापन (को०)। ६ किसी राष्ट्र का वह वैधानिक ढाँचा जिससे वह संचालित होता है। राष्ट्रविधान। वह विधान या सिद्धांतों का समूह जिसके आधार पर किसी राष्ट्र, राज्य या संस्था का संघटन और संचालन होता है। (अं० कांस्टिट्यूशन)।

यौ०—संविधानज्ञ, संविधान शास्त्री = संविधान को जाननेवाला। संविधान का विशेषज्ञ। संविधान सभा = संविधान का निर्माण करनेवाली सभा या समिति।

संविधानक—संज्ञा पुं० [सं०] १ विचित्र क्रिया या व्यापार। अलौकिक घटना। २ (कथावस्तु मे) घटनाओं का क्रम। किसी नाटक की पूरी कथावस्तु (को०)।

संविधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विधान। रीति। दस्तूर। २ व्यवस्था। प्रबंध। डौल।

संविधेय—वि० [सं०] १ जिसका डौल या प्रबंध करना हो। २ जिसे करना हो। करणीय। ३ जिसका प्रबंध उचित हो।

संविभक्त—वि० [सं०] १ अच्छी तरह बँटा या बाँटा हुआ। अच्छी तरह अलग किया हुआ। २ जिसके सब अंग ठीक हिसाब से हों। सुडौल। ३ प्रदत्त। दिया हुआ।

संविभक्ता—वि० [सं० संविभक्तृ] जो हिस्सा बँटाता हो। अन्य लोगों के साथ हिस्सा बँटानेवाला (को०)।

संविभजन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संविभजनीय] १ बाँट या हिस्सा लेना। बँटाई। २ साझा। हिस्सा।

संविभजनीय—वि० [सं०] जो लोगों मे विभक्त करने योग्य हो (को०)।

संविभाग—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संविभागी] १ पूर्णतया भाग करना। हिस्सा करना। बाँट। बँटाई। २ प्रदान। ३ भाग। अंश। हिस्सा (को०)।

संविभागी—संज्ञा पुं० [सं० संविभागिन्] १ साझीदार। २ भाग या हिस्सा प्राप्त करनेवाला। भाग लेनेवाला (को०)।

संविभाव्य—वि० [सं०] समझने योग्य (को०)।

संविमर्द—संज्ञा पुं० [सं०] वह युद्ध जिसमें अत्यधिक रक्तपात हो। भीषण संग्राम (को०)।

संविपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अतीस। अतिविपा।

संविष्ट—वि० [सं०] १ आगत। प्राप्त। पहुँचा हुआ। २ विश्राम करता हुआ। लेटा हुआ। सोया हुआ। ३. निविष्ट। बैठा हुआ। ४ वस्त्र से आच्छादित। वस्त्र मे आवृत (को०)।

संविहित—वि० [सं०] सम्यक् व्यवस्थित अथवा कृत। जिसका देखभाल या प्रबंध किया गया हो (को०)।

संवीक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संवीक्षणीय, संवीक्षित, संवीक्ष्य] १. इधर उधर देखने की क्रिया। अवलोकन। २. अन्वेषण। खोज। तलाश।

संवीत¹—वि० [सं०] १. आवृत। ढका हुआ। २ छिपा या छिपाया हुआ। ३ कवच धारण किए हुए। कवचयुक्त। ४ पहने हुए। ५ रुद्ध। रुका हुआ। ६ न दिखाई देता हुआ। नजर से गायब। अदृश्य। लुप्त। ७ अनदेखा किया हुआ। जिसे देखकर भी टाल गए हों। ८ अभिभूत (को०)। ९ वस्त्राच्छादित (को०)। १० परिवेष्टित। घिरा हुआ (को०)।

संवीत²—संज्ञा पुं० १ पहनावा। वस्त्र। आच्छादन। २ सफेद। कटभी। ३ यज्ञोपवीत (को०)।

संवीती—वि० [सं० संवीतिन्] जो यज्ञोपवीत पहने हो।

संवृक्त—वि० [सं०] १ छीना हुआ। हरण किया हुआ। २ नष्ट या उड़ाया हुआ। खरचा खाया हुआ।

संवृत—वि० [सं०] १ आच्छादित। ढका हुआ। बंद किया हुआ। २ घिरा हुआ। ३ लपेटा हुआ। ४ युक्त। सहित। पूर्ण। ५ रक्षित। ६ दबाया हुआ। दमन किया हुआ। ७ जो किनारे या अलग हो गया हो। ८ रुँधा हुआ (गला)। ९ धीमा किया हुआ। १० प्रच्छन्न। गोप्य। गुप्त (को०)। ११ बलपूर्वक छीना हुआ (को०)। १२ अस्पष्ट। जो स्पष्ट न हो (को०)। १३ जो अलग कर दिया गया हो या रखा हो (को०)।

संवृत²—संज्ञा पुं० १ वरुण देवता। २ गुप्त स्थान। ३ एक प्रकार का जलवेतस्। एक प्रकार का बेंत। ४ उच्चारण का एक ढंग (को०)।

संवृतकोष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] १ कोष्ठबद्धता। कब्जियत। २ वह जिसे कब्ज की बीमारी हो (को०)।

संवृतमंत्र—संज्ञा पुं० [सं० संवृतमन्त्र] १ वह व्यक्ति जो अपनी योजना गुप्त रखता हो। २ गुप्त मंत्रणा। भेद की बातचीत।

संवृतसंवार्य—वि० [सं०] गोप्य बात को प्रकट न करनेवाला (को०)।

संवृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ढकने या छिपाने की क्रिया। गुप्त रखने की क्रिया। २ गुप्त प्रयोजन। अभिसंधि (को०)। ३ बाधा (को०)। ४ दंभ। ढोंग। छद्म (को०)।

संवृत्त¹—वि० [सं०] १ पहुँचा हुआ। समागत। प्राप्त। २ घटित। जो हुआ हो। ३ जो पूरा हुआ हो। (कामना, इच्छा आदि)। ४ उत्पन्न। पैदा। ५ उपस्थित। मौजूद। ६ संचित। राशीकृत (को०)। ७ व्यतीत। गत (को०)। ८ आवृत। ढका हुआ (को०)। ९ युक्त या सज्जित (को०)।

संवृत्त²—संज्ञा पुं० १ वरुण देवता। २ एक नाग का नाम।

संवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ निष्पत्ति। सिद्धि। २ एक देवी का नाम। ३ होना। घटना (को०)। ४ आवरण। संवृति। आच्छादन (को०)।

संवृद्ध—वि० [सं०] १ पूर्ण अभिवृद्ध या बड़ा हुआ। २ उन्नत। जो ऊँचा और बड़ा हो गया हो। ३ विकसित होता हुआ। जो उन्नत हो रहा हो (को०)।

संवृद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बढने की क्रिया या भाव। बढती। अधिकता। २ धन आदि की अधिकता। अभ्युदय। समृद्धि। ३ शक्ति। ताकत (को०)।

संवेग—संज्ञा पुं० [सं०] १ पूर्ण वेग या तेजी। तीव्रता। २ आवेग। घबराहट। उद्विग्नता। खलबली। ३ भय। सहम। ४ जोर। अतिरेक। ५ बडता। उग्रता (को०)। ६ तीव्र पीडा (को०)।

संवेजन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संवेजनीय, संवेजित, संविग्न] १ उद्विग्न करना। घबरा देना। खलबली डालना। २ सहमाना। डराना। ३ भडकाना। उत्तेजित करना।

यौ०—रोमसंवेजन = रोंगटे खडे होना। पुलक होना। नेत्रसंवेजन = जर्राह का पिचकारी लगाना।

संवेजनीय—वि० [सं०] जो संवेजन करने योग्य हो। जिसे संवेजित किया जाय (को०)।

संवेजित—वि० [सं०] दे० 'संविग्न' (को०)।

संवेद—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुख दुख आदि का ज्ञान पडना। अनुभव। वेदना। ज्ञान। बोध।

संवेदन—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संवेदना] [वि० संवेदनीय, संवेदित, संवेद्य] १ अनुभव करना। सुख दुख आदि की प्रतीति करना। क्लेश, आनंद, शीत, ताप आदि को मन में मालूम करना। २ जताना। प्रकट करना। बोध कराना। ३ बोध। ज्ञान (को०)। ४ नकछिकनी नाम की घास। ५ देना। आत्मसमर्पण करना।

संवेदना—संज्ञा स्त्री० [सं०] अनुभूति। वेदना। दे० 'संवेदन'।

संवेदनीय—वि० [सं०] १ अनुभव योग्य। प्रतीति योग्य। २ जताने लायक। बोध कराने योग्य।

संवेदित—वि० [सं०] १ अनुभव किया हुआ। प्रतीत किया हुआ। २ जताया हुआ। बोध कराया हुआ। बताया हुआ।

संवेद्य¹—वि० [सं०] १ अनुभव करने योग्य। प्रतीत करने योग्य। मन में मालूम करने लायक। २ दूसरे को अनुभव कराने योग्य। जताने योग्य। बताने लायक। ३ समझने योग्य।

यौ०—स्वसंवेद्य = अपने ही अनुभव करने योग्य। जो दूसरे को बताया न जा सके, आप ही आप मालूम किया जा सके।

संवेद्य²—संज्ञा पुं० १ दो नदियों का संगम। २ एक तीर्थ (को०)।

संवेल्लित—वि० [सं०] सर्वलित (को०)।

संवेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ पास जाना। पहुँचना। २ प्रवेश। घुसना। ३ बैठना। आसन जमाना। ४ लेटना। सोना। पड रहना। ५ कामशास्त्रानुसार एक प्रकार का रतिबंध। ६ काष्ठासन। पीढा। पाटा। ७ अग्नि देवता, जो रति के अधिष्ठाता माने गए हैं। ८ शयन कक्ष। शयनागार (को०)। ९ सपना। स्वप्न (को०)।

यौ०—संवेशपति = निद्रा, आराम अथवा रति के अधिष्ठाता देवता अग्नि।

संवेशक—संज्ञा पुं० [सं०] १ जमा करने या ठीक ठिकाने में रखने वाला। सामान आदि को तरतीब देनेवाला। २ शयन करने, सोने में सहायता देनेवाला (को०)।

संवेशन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संवेशनीय, संवेशनीय, संवेशित, संवेश्य] १ बैठना। २ लेटना। पड रहना। सोना। ३ घुसना। प्रवेश करना। ४ रति। रमण। समागम। ५ शय्या या बैठने का आसन (को०)।

संवेशनीय—वि० [सं०] जो संवेशन करने लायक हो। जो संवेशन के योग्य हो।

संवेशी—वि० [सं० संवेशिन्] लेटनेवाला। शयन करनेवाला (को०)।

संवेश्य—वि० [सं०] १ लेटने योग्य। २ घुसने योग्य।

संवेष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] लपेटने का कपडा, इत्यादि। वेठन। आच्छादन।

संवेष्टन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संवेष्टित, संवेष्टनीय] १ लपेटना। ढाँकना। बंद करना। २ घेरना। ३ आच्छादन। वेष्टन। वेठन (को०)।

संवैधानिक—वि० [सं० सम् + वैधानिक] विधान के अनुसार। संविधान संबंधी। कानूनी।

संव्यवहरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ भली भाँति व्यवहार करना। २ अच्छा कारोबार करना। व्यापार आदि में उन्नति करना (को०)।

संव्यवहार—संज्ञा पुं० [सं०] १ अच्छी तरह का व्यवहार। अच्छा सलूक। एक दूसरे के प्रति उत्तम आचरण। २ मामला। प्रसंग। ३ संसर्ग। लगाव। ४ पूरा सेवन। व्यवहार। उपयोग। इस्तेमाल। ५ लेन देन करनेवाला। व्यवसायी। ६ वाणिज्य। व्यापार। ७ प्रचलित शब्द। आमफहम, लफ्ज।

संव्याध—संज्ञा पुं० [सं०] द्वंद्व युद्ध। लडाई (को०)।

संव्यान—संज्ञा पुं० [सं०] १ उत्तरीय वस्त्र। चादर। दुपट्टा। २ वस्त्र। कपडा। आच्छादन।

संव्याय—संज्ञा पुं० [सं०] १ आच्छादन। वस्त्र। २ ओढना।

संव्रात—संज्ञा पुं० [सं०] झुंड। गिरोह।

संशंसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] तारीफ। स्तुति (को०)।

संशप्त—वि० [सं०] १ जो शापग्रस्त हो। २ जिसने किसी के साथ प्रतिज्ञा की या शपथ खाई हो। वाग्बद्ध।

संशप्तक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह योद्धा जिसने बिना सफल हुए लडाई आदि से न हटने की शपथ खाई हो। २ वह जिसने यह शपथ खाई हो कि बिना मरे न लौटेंगे। ३ कुरुक्षेत्र के युद्ध में एक दल जिसने अर्जुन के वध की प्रतिज्ञा की थी, पर स्वयं मारा गया था। ४ चुना हुआ योद्धा (को०)। ५ युद्ध में सहयोग देनेवाला वीर योद्धा।

संशब्द—संज्ञा पुं० [सं०] १ ललकार। २ निर्वचन। कथन। ३ स्तुति। प्रशंसा। ४ हवाला। उल्लेख। उद्धरण (को०)।

संशब्दन—संज्ञा पुं० [सं०] १ ध्वनि या शब्द करना। २ प्रशंसा करना। ३ ललकारना या पुकारना। ४ उल्लेख करना। हवाला देना (को०)।

संशम—संज्ञा पुं० [सं०] १ पूर्ण तुष्टि। कामना की पूर्ण निवृत्ति।

संशमन—संज्ञा पुं० [सं०] १ शांत करना। निवृत्त करना। २ नष्ट करना। न रहने देना। ३ वह औषध जो दोषों को बिना घटाए बढ़ाए शोधन करे। ४ स्थिर करना।

संशमनवर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] वे ओषधियाँ जो संशमन करें। जैसे,—देवदारु, कुट, हल्दी आदि।

संशय—संज्ञा पुं० [सं०] १ लेट रहना। पड रहना। २ दो या कई बातों में से किसी एक का भी मन में न बैठना। अनिश्चयात्मक ज्ञान। अनिश्चय। संदेह। शक। शुबहा। दुबधा।

विशेष—यह न्याय के सोलह पदार्थों में से एक है।

३ आशंका। खतरा। डर। जैसे,—प्राण का संशय में पडना। ४ संदेह नामक काव्यालंकार। ५ संभावना (को०)। ६ विवाद का विषय (को०)।

यौ०—संशयकर = कठिनाई में डालनेवाला। खतरे से भरा हुआ। विपत्तिकर। संशयगत = जो विपत्ति या खतरे में पड गया हो। संशयच्छेद = संशय का विनाश। संदेह नाश। संशयच्छेदी = संशय दूर करनेवाला। संदेह का निराकरण करनेवाला। संशयसम। संशयस्थ।

संशयसम—संज्ञा पुं० [सं०] न्याय दर्शन में २४ जातियों अर्थात् खंडन की असंगत युक्तियों में से एक। वादी के दृष्टांत को लेकर उसमें साध्य और असाध्य दोनों धर्मों का आरोप करके वादी के साध्य विषय को संदिग्ध सिद्ध करने का प्रयत्न।

विशेष—वादी कहता है—'शब्द अनित्य है, उत्पत्ति धर्मवाला होने से, घडे के समान'। इसपर यदि प्रतिवादी कहे-'शब्द नित्य और अनित्य दोनों हुआ, मूर्त होने के कारण, घट और घटत्व के समान' तो उसका यह असंगत उत्तर 'संशयशम' होगा।

संशयस्थ—वि० [सं०] १ जो संदेह में पडा हो। २ जो खतरे में पडा हो (को०)।

संशयाक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] १ संशय का दूर होना। २ एक प्रकार का काव्यालंकार।

संशयात्मक—वि० [सं०] जिसमें संदेह हो। संदिग्ध। शुबहे का। अनिश्चित।

संशयात्मा—संज्ञा पुं० [सं० संशयात्मन्] जिसका मन किसी बात पर विश्वास न करे। विश्वासहीन। संदेहवादी।

संशयान—वि० [सं०] संदेह करनेवाला। संशयालु (को०)।

संशयापन्न—संज्ञा पुं० [सं०] संशययुक्त। अनिश्चित।

संशयालु—वि० [सं०] १ विश्वास न करनेवाला। २ बात बात में संदेह करनेवाला। शक्की।

संशयावह—वि० [सं०] १ संशययुक्त। संदेहास्पद। २ खतरनाक।

संशयित—वि० [सं०] १ संशययुक्त। दुबधा में पडा हुआ। २ संदिग्ध। अनिश्चित। ३ आपत्तिग्रस्त। खतरे में पडा हुआ (को०)।

संशयिता—संज्ञा पुं० [सं० संशयितृ] संशयकर्ता। संशय करनेवाला।

संशयी—वि० [सं० संशयिन्] १ संशय करनेवाला। संदेह करनेवाला। २ शक्की।

संशयोच्छेदी—वि० [सं० संशयोच्छेदिन्] संदेह को दूर करनेवाला। संदेहनाशक।

संशयोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का उपमा अलंकार जिसमें कई वस्तुओं के साथ समानता संशय के रूप में कही जाती है।

संशयोपेत—वि० [सं०] संशययुक्त। संदिग्ध। अनिश्चित।

संशर—संज्ञा पुं० [सं०] तोडना। विशीर्ण करना। चूर्ण करना (को०)।

संशरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ दलित करना। चूर्ण करना। २ भग करना। तोडना। ३ युद्ध का आरंभ। दे० 'ससरण'। ४ शरण में जाना। पनाह लेना।

संशारुक—वि० [सं०] १ तोडनेवाला। भग करनेवाला। २ दलन या मर्दन करनेवाला।

संशासन—संज्ञा पुं० [सं०] १ अच्छा शासन। उत्तम राज्यप्रबंध। २ आदेश। मंत्र। अनुशासन।

संशासित—वि० [सं०] १ सुशासित। अच्छे ढंग से शासित। २ आदिष्ट। अनुशासित। निर्देश प्राप्त (को०)।

संशित—वि० [सं०] १ सान पर चढाया हुआ। तेज किया हुआ। चोखा या तीखा किया हुआ। टेया हुआ। तीक्ष्ण। तेज। २ उद्यत। उतारू। तत्पर। आमादा। ३ दक्ष। निपुण। पटु। ४ नोकदार। नुकीला। अनीदार। ५ सर्वथा पूरा किया हुआ। निष्पन्न (को०)। ६ निर्णीत। सुनिश्चित (को०)। ७ अपने संकल्प को दृढतापूर्वक निभानेवाला (को०)। ८ कर्कश। कटु। अप्रिय। कठोर। जैसे,—संशित वचन।

यौ०—संशितवचन = (१) अप्रिय कथन। (२) कटुवक्ता। संशितवाक् = कटुभाषी। संशितव्रत।

संशितव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो नियम व्रत के पालन में पक्का हो। कठोरता से नियम या व्रत आदि का पालन करनेवाला।

संशितात्मा—वि० [सं० संशितात्मन्] १ दृढ मनवाला। २ अनुशासित मनवाला (को०)।

संशिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ संशय। संदेह। शक। २ खूब टेना या तेज करना। खूब सान पर चढाना।

संशिष्ट—वि० [सं०] बचा हुआ। बाकी रहा हुआ।

संशीत—वि० [सं०] १ जो ठंढा हुआ हो। २ ठंढ से जमा हुआ।

संशीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] संदेह। संशय। अनिश्चय (को०)।

संशीलन—संज्ञा पुं० [सं०] १ नित्य अभ्यास। नियमित अभ्यास। २ नित्य संपर्क या साहचर्य।

**संशुद्ध**—वि० [सं०] १ यथेष्ट शुद्ध। विशुद्ध। २ साफ किया हुआ। स्वच्छ या शुद्ध किया हुआ। चुकाया हुआ। चुकता किया हुआ। बेबाक (ऋण)। ४ जाँचा हुआ। परीक्षित। ५ अपराध या दंड आदि से मुक्त किया हुआ। ६ जो प्रायश्चित्त आदि विधानों द्वारा दोषरहित हो। जैसे,—संशुद्ध पातक।

यौ०—संशुद्धकिल्विष = निष्पाप। पापमुक्त। संशुद्धपातक = प्रायश्चित्त द्वारा पापमुक्त।

**संशुद्धि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पूरी सफाई। पूरी पवित्रता। २ शरीर की सफाई। ३ शुद्ध करना। स्वच्छ या विमल करना (को०)। ४ संशोधन। सुधार (को०)। ५ (ऋण का) भुगतान या परिशोध (को०)।

**संशुष्क**—वि० [सं०] १ बिल्कुल सूखा हुआ। खुश्क। २ नीरस। ३ जो सहृदय न हो। अरसिक। ४ कुम्हलाया हुआ (को०)।

**संशून**—वि० [सं०] अत्यंत शोथयुक्त या फूला हुआ (को०)।

**संश्रृंगी**—संज्ञा स्त्री० [सं० संश्रृङ्गी] एक प्रकार की गौ। वह गाय जिसके श्रृंग आमने सामने घूमे हों (को०)।

**संशोधक**—संज्ञा पुं० [सं०] १ शोधन करनेवाला। सुधारनेवाला। दुरुस्त या ठीक करनेवाला। २ संस्कार करनेवाला। बुरो से अच्छी दशा में लानेवाला। ३ अदा करनेवाला। चुकानेवाला।

**संशोधन**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संशोधनीय, संशोधित, संशुद्ध, संशोध्य] १ शुद्ध करना। साफ करना। स्वच्छ करना। २ दुरुस्त करना। ठीक करना। सुधारना। संस्कार करना। त्रुटि या दोष दूर करना। कसर या ऐब निकालना। ३ चुकता करना। अदा करना। बेबाक करना। (ऋण आदि)।

**संशोधन**[2]—वि० [सं०] १ जिसमें शुद्ध किया जाय। सुधारने, शुद्ध करने, संस्कार करने का साधन। सुधारनेवाला। २ विकारों (वात, पित्तादि) को दूर करनेवाला (को०)।

**संशोधनीय**—वि० [सं०] १ साफ करने योग्य। २ सुधारने या ठीक करने योग्य। ३ कर्ज आदि जो चुकता किया जाय। बेबाक करने योग्य (को०)।

**संशोधित**—वि० [सं०] १ खूब शुद्ध किया हुआ। २ सुधारा हुआ। ठीक किया हुआ। दुरुस्त किया हुआ। ३ बेबाक किया हुआ। चुकाया हुआ (को०)।

**संशोधी**—वि० [सं० संशोधिन्] [वि० स्त्री० संशोधिनी] १ सुधारनेवाला। दुरुस्त करनेवाला। ३ चुकानेवाला। जैसे,—ऋणसंशोधी (को०)।

**संशोध्य**—वि० [सं०] १ साफ करने योग्य। २ सुधारने या ठीक करने योग्य। ३ जिसका सुधार करना हो। ४ जिसे साफ करना हो। ४ जिसे चुकाना या बेबाक करना हो (को०)।

**संशोभित**—वि० [सं०] सजा हुआ। शोभित। अलंकृत (को०)।

**संशोष**—संज्ञा पुं० [सं०] १ शोषण। सोखना। जज्ब करना। २ शुष्क करना। सुखाना (को०)।

**संशोषण**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संशोषणीय, संशोषित, संशोष्य] १ बिलकुल सोखना। जज्ब करना। २ सुखाना।

**संशोषण**[2]—वि० सुखाने या सोखनेवाला (को०)।

**संशोषणीय**—वि० [सं०] संशोषण योग्य। सोखने योग्य।

**संशोषित**—वि० [सं०] सोखा या सुखाया हुआ।

**संशोषी**—वि० [सं० संशोषिन्] १ सोखने या जज्ब करनेवाला। २ सुखा देनेवाला। जैसे, बुखार, सुखंडी आदि रोग (को०)।

**संशोष्य**—वि० [सं०] सोखने योग्य। जिसे सोखना या सुखाना हो।

**संश्चत्**—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्रजाल। बाजीगरी। माया। जादू। २ छल। छद्म। धोखा। दाँवपेंच। ३ ऐंद्रजालिक। जादूगर। मायिक (को०)।

**संश्यान्**—संज्ञा पुं० [सं०] १ (शीत से) ठिठुरा हुआ। सिकुड़ा हुआ। २ जमा हुआ। ३ लिपटा या लपटा हुआ (को०)। ४ अवसन्न (को०)।

**संश्रय**—संज्ञा पुं० [सं०] १ संयोग। मेल। संबंध। समागम। लगाव। संपर्क। ३ आश्रय। शरण। पनाह। ४ सहारा। अवलंब। ५ राजाओं का परस्पर रक्षा के लिये मेल। अभिसंधि।

विशेष—स्मृतियों में यह राजा के छह् गुणों में कहा गया है और दो प्रकार का माना गया है—(१) शत्रु से पीड़ित हो कर दूसरे राजा की सहायता लेना, और (२) शत्रु से पहुँचनेवाली हानि की आशंका से किसी दूसरे बलवान् राजा का आश्रय लेना।

६. पनाह की जगह। शरण स्थान। ७ रहने या ठहरने की जगह। घर। ८ विश्राम की जगह। विश्रामस्थान (को०)। ९ उद्देश्य। लक्ष्य। मतलब। १० किसी वस्तु का अंग। हिस्सा।

**संश्रयण**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संश्रयणीय, संश्रयी, संश्रित] १. सहारा लेना। अवलंब पकड़ना। २ शरण लेना। पनाह लेना। ३ आसक्ति (को०)।

**संश्रयणीय**—वि० [सं०] १ सहारा लेने योग्य। २ शरण लेने योग्य।

**संश्रयी**[1]—वि० [सं० संश्रयिन्] [वि० स्त्री० संश्रयिणी] १ सहारा लेनेवाला। २ शरण लेनेवाला।

**संश्रयी**[2]—संज्ञा पुं० भृत्य। नौकर।

**संश्रव**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुनना। कान देना। २ अंगीकार। स्वीकार। मानना। रजामंदी। ३ वादा। प्रतिज्ञा। करार।

**संश्रव**[2]—वि० जो सुना जा सके। सुनाई पड़नेवाला।

**संश्रव**[3]—संज्ञा पुं० [सं० संश्रवस्] ख्याति। प्रसिद्धि। गौरव (को०)।

**संश्रवण**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संश्रवणीय, संश्रुत] १ सुनना। खूब कान देना। २ अंगीकार करना। स्वीकार करना। ३. वादा करना। करार करना। ४ श्रवण का क्षेत्र। जहाँ तक कान सुन सके वह क्षेत्र या दूरी (को०)। ४ कान। श्रवण (को०)।

**संश्रांत**—वि० [सं० संश्रान्त] बिलकुल थका हुआ। शिथिल। पसमाँदा।

संश्राव—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संश्रावणीय, संश्रावित, संश्राव्य] १. कान देना। सुनना। २ अंगीकार। स्वीकार।

संश्रावक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुननेवाला। श्रोता। २. चेला। शिष्य।

संश्रावयिता—वि० [सं० संश्रावयितृ] घोषित करनेवाला। सुनानेवाला [को०]।

संश्रावित—वि० [सं०] १ सुनाया हुआ। २. जोर जोर से पढकर सुनाया हुआ।

संश्राव्य—वि० [सं०] १. सुनाने योग्य। २. सुनाई पडनेवाला।

संश्रित¹—वि० [सं०] १ जुडा या मिला हुआ। संयुक्त। २ लगा हुआ। टिका या ठहरा हुआ। ४ आलिंगित। संश्लिष्ट। गले या छाती से लगाया हुआ। ५ भागकर शरण मे गया हुआ। जिसने जाकर पनाह ली हो। ६ जिसने आश्रय ग्रहण किया हो। जो निर्वाह के लिये किसी के पास गया हो। ७ जिसने सेवा स्वीकार की हो। ८ जो किसी बात के लिये दूसरे पर निर्भर हो। आसरे या भरोसे पर रहनेवाला। पराधीन। ९ आसक्त। परायण (को०)। १० न्यस्त। निहित (को०)। ११. उपयुक्त। उचित (को०)। १२ अंगीकृत। गृहीत। स्वीकृत (को०)। १३ संबंधी। विषयक (को०)।

संश्रित²—संज्ञा पुं० सेवक। भृत्य। परावलंबी व्यक्ति।

संश्रुत—संज्ञा पुं० [सं०] १ खूब सुना हुआ। २ खूब पढकर सुनाया हुआ। ३ स्वीकृत। माना हुआ। मंजूर। ४ प्रतिज्ञात। वादा किया हुआ (को०)।

संश्लिष्ट¹—वि० [सं०] १ खूब मिला हुआ। जुडा हुआ। सटा हुआ। २ एक साथ किया हुआ। ३ संमिलित। मिश्रित। ४ एक मे मिलाया हुआ। गड्डवड्ड। अस्पष्ट। अनिश्चित। ५ आलिंगित। परिरंभित। भेंटा हुआ। ६ सज्जित। युक्त। सहित (को०)।

यौ०—संश्लिष्ट कर्म = वे काम जिनमे अच्छाई बुराई का पता न चल सके। संश्लिष्टकर्मा = अविवेकी। भले बुरे की पहचान न करनेवाला।

संश्लिष्ट²—संज्ञा पुं० १ राशि। ढेर। समूह। २ एक प्रकार का चँदोवा या मंडप। (वास्तु)।

संश्लेप—संज्ञा पुं० [सं०] १ मेल। मिलाप। संयोग। २ मिलान। सटाव। ३ आलिंगन। परिरंभण। भेंटना। ४ चर्म रज्जु। तस्मा। बंधन। पाश (को०)। ५ जोड। संधि (को०)।

संश्लेषण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संश्लेषणीय, संश्लेषित, संश्लिष्ट] १ एक मे मिलाना। जुटाना। सटाना। २ लगाना। अँटकाना। टाँगना। ३ संबद्ध करना (को०)। ४ बाँधने या जोडनेवाली वस्तु।

संश्लेषणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'संश्लेषण'।

संश्लेषित—वि० [सं०] १ मिलाया हुआ। जोडा हुआ। सटाया हुआ। २ लगाया हुआ। अटकाया हुआ। ३ आलिंगन किया हुआ।

संश्लेषी—वि० [सं० संश्लेषिन्] [वि० स्त्री० संश्लेषिणी] १ मिलानेवाला। जोडनेवाला। २ आलिंगन करनेवाला। भेंटनेवाला।

संश्वत्—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'संश्चत्' [को०]।

ससंग—संज्ञा पुं० [सं० संसङ्ग] संयोग। लगाव। संबंध [को०]।

ससंगी—वि० [सं० संसङ्गिन्] १ साथ लगनेवाला। २ संसर्ग या संपर्क मे आनेवाला [को०]।

संस(पु)¹—संज्ञा पुं० [सं० संशय] संशय। आशंका। उ०—करुणा करी छाँडि पगु दीनो जानी सुख मन संस। सूरदास प्रभु असुर निकंदन दुष्टन के उर गंस।—सूर (शब्द०)।

संस†²—संज्ञा पुं० [देश० या सं० शस्य, प्रा० सस्स (= पैदावार, फसल)] उन्नति। बढती। वृद्धि [को०]।

संसइ(पु)†¹—संज्ञा पुं० [सं० संशय] दे० 'संशय'।

संसइ†²—वि० [सं० संशयिन्, प्रा० संसइ] संशययुक्त। शंका करनेवाला।

संसउ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० संशय] दे० 'संशय'। उ०—अजहूँ कछु संसउ मन मोरे। करहु कृपा बिनवौं कर जोरे।—मानस, १।१०९।

संसकिरत†—संज्ञा स्त्री० [सं० संस्कृत] संस्कृत भाषा। उ०—भाषा तो संतन ने कहिया, संसकिरत ऋषिन की बानी है।—कबीर रे०, पृ० ४६।

संसक्त—वि० [सं०] १ लगा हुआ। सटा हुआ। मिला हुआ। २ भिडा हुआ (शत्रु से)। ३ संबद्ध। जुडा हुआ। ४ प्रवृत्त। लगा हुआ। मशगूल। लिप्त। लीन। ५ आसक्त। लुभाया हुआ। लुब्ध। प्रेम मे फँसा हुआ। ६ विषय वासना मे लीन। ७ युक्त। सहित। पूर्ण। ८ संघन। घना। ९ अव्यवस्थित। मिश्रित (को०)। १० समीपवर्ती। निकटवर्ती (को०)। ११ अनवरत। लगातार। निरंतर (को०)। १२ अस्पष्ट (वाणी) (को०)।

यौ०—संसक्तचेता, संसक्तमना = जिसका मन किसी मे आसक्त या लीन हो। संसक्तयुग = जुए मे नँधा हुआ।

संसक्त सामंत—संज्ञा पुं० [सं० संसक्त सामन्त] पराशर स्मृति के अनुसार वह सामंत जिसकी थोडी बहुत जमीन चारो ओर हो और कही पूरे गाँव भी हो।

संसक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लगाव। मिलान। २. जोड। बंध। ३ संबंध। ४. आसक्ति। लगन। ५ लीनता। ६ प्रवृत्ति।

संसगर†—वि० [सं० शस्य (= अन्न, फसल) + आगार] १. उपजाऊ। जिसमे पैदावार अधिक हो। २ लाभदायक। फायदेमंद। बरकतवाला।

संसज्जमान वि० [सं०] १ साथ लगनेवाला। अनुषंगी। २ स्खलित। अस्पष्ट (स्वर)। जो शोक के कारण स्पष्ट न हो (वाणी)। ३ जो तैयार हो [को०]।

संसत्, संसद्¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ समाज। सभा। मंडली। २ राजसभा। दरबार। ३. धर्मसभा। न्याय सभा। न्यायालय।

अदालत। ४. चौबीस दिनों का एक यज्ञ। ५ समूह। राशि (को०)। ६ किसी देश की चुने हुए जन प्रतिनिधियों की सर्वोच्च सभा (अ० पार्लमेंट)। विशेष दे० 'पार्लमेंट'।

ससत्, ससद्'—वि० १ साथ साथ बैठनेवाला। २ यज्ञ में बैठने या भाग लेनेवाला (को०)।

ससद—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक यज्ञ जो २४ दिन का होता था। २ दे० 'पार्लमेंट'।

ससदन—संज्ञा पुं० [सं०] विषाद। खेद। खिन्नता (को०)।

ससनाना—क्रि० अ० [अनुध्व०] दे० 'सनसनाना'।

ससय—संज्ञा पुं० [सं० संशय] दे० 'संशय'। उ०—अस निज हृदय विचारि तजु ससय भजु रामपद।—मानस, १।११५।

ससरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० ससरणीय, ससरित, ससृत] १ चलना। सरकना। गमन करना। २ सेना की अबाध यात्रा। ३ एक जन्म से दूसरे जन्म मे जाने की परपरा। भवचक्र। ४ ससार। जगत्। ५ राजपथ। सडक। रास्ता। ६ नगर के तोरण के पास यात्रियो के लिये विश्राम स्थान। शहर के फाटक के पास मुसाफिरो के ठहरने का स्थान। धर्मशाला। सराय। ७ युद्ध का आरभ। लडाई का छिडना। ८ वह मार्ग जिससे होकर बहुत दिनो से लोग या पशु आते जाते हो।

विशेष—बृहस्पति ने लिखा है कि ऐसे मार्ग पर चलने से कोई (जमीदार भी) किसी को नही रोक सकता।

ससर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १ सबध। लगाव। सपर्क। २ मेल। मिलाप। सयोग। ३ सहवास। समागम। सग। साथ। ४ स्त्री पुरुष का सहवास। मैथुन। ५ घालमेल। घपला। अस्तव्यस्तता। ६ वात, पित्तादि मे से दो का एक साथ प्रकोप। (सुश्रुत)। ७ जायदाद का एक मे होना। इजमाल शराकत। साझेदारी। ८ वह बिंदु जहाँ एक रेखा दूसरी को काटती हो। (शुल्वसूत्र)। ९ रब्त जब्त। परिचय। घनिष्टता। १० समवाय (को०)। ११ अवधि (को०)। १२ स्थायित्व। स्थिरता। सातत्य (को०)।

ससर्गज—वि० [सं०] जो ससर्ग या लगाव से उत्पन्न हो (को०)।

ससर्गदोष—संज्ञा पुं० [सं०] वह बुराई जो किसी के साथ रहने से आवे। सगत का दोष।

ससर्गविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लोगो से मिलने जुलने का हुनर। व्यवहारकुशलता। २ सामाजिक विज्ञान। समाज विज्ञान (को०)।

ससर्गाभाव—संज्ञा पुं० [सं०] १ ससर्ग का अभाव। सबध का न होना। २ न्याय मे अभाव का एक भेद। किसी वस्तु के सबध मे दूसरी वस्तु का अभाव। जैसे,—घर मे घडा नही है। विशेष दे० 'अभाव'।

ससर्गी'—वि० [सं० संसर्गिन्] [वि० स्त्री० ससर्गिणी] १ ससर्ग या लगाव रखनेवाला। २ ससर्ग प्राप्त। सयुक्त। युक्त (को०)। ३ परिचित। रब्त जब्तवाला। हेली मेली (को०)।

ससर्गी'—संज्ञा पुं० १ मित्र। सहचर। २ वह जो पैतृक सपत्ति का विभाग हो जाने पर भी अपने भाइयो या कुटुबियो आदि के साथ रहता हो।

ससर्गी —संज्ञा स्त्री० शुद्धि। सफाई।

ससर्जन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० ससर्जनीय, ससर्जित, ससर्ज्य] १ सयोग होना। मिलना। २ जुडना। सबद्ध होना। ३ अपनी ओर मिलाना। राजी करना। ४ हटाना। दूर करना। त्याग करना। छोडना। ५ शुद्धता। स्वच्छता। सफाई (को०)।

ससर्जनीय—वि० [सं०] जो ससर्जन के योग्य हो।

ससर्जित —वि० [सं०] जिसका ससर्जन किया गया हो।

ससर्ज्य—वि० [सं०] जो ससर्जन के योग्य हो।

ससर्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ रेगना। सरकना। २ खिसकना। धीरे धीरे चलना। ३ वह अधिक मास जो क्षय मासवाले वर्ष मे होता है।

ससर्पण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० ससर्पणीय, ससर्पित, ससर्पी] १ रेगना। सरकना। २ खिसकना। धीरे धीरे चलना। ३ चढना। ४ सहसा आक्रमण। अचानक हमला।

ससर्पणीय —वि० [सं०] जो रेगने, खिसकने, चढने या एकाएक आक्रमण के योग्य हो।

ससर्पित—वि० [सं०] १ जिसने ससर्पण किया हो। २ जिसपर ससर्पण किया जाय।

ससर्पी—वि० [सं० ससर्पिन्] [वि० स्त्री० ससर्पिणी] १ रेंगनेवाला। सरकनेवाला। २ खिसकने या धीरे धीरे चलनेवाला। ३ फैलनेवाला। सचार करनेवाला। ४ पानी के ऊपर तैरनेवाला। उतरानेवाला (सुश्रुत)।

ससह —वि० [सं०] बराबरी वाला। जो समान हो (को०)।

ससा(ँ)'—संज्ञा पुं० [सं० सशय] दे० 'सशय'। उ० मन जोबन पर पटक्यो कसा। सो अरमान मम बानी ससा।—गोपाल (शब्द०)।

ससा(ँ)'—संज्ञा पुं० [सं० श्वास, हिं० साँस, सासा] श्वास। प्राणवायु। उ०—कबीर ससा जीव मे, कोई न कहै समुझाइ। नाना बाणी बोलता सो कित गया बिलाइ।—कबीर ग्र०, पृ० ३१।

ससा(ँ)'—संज्ञा पुं० [हिं० सँडसा] दे० 'सँडसा'। उ०—ससा खूटा सुख भया मिल्या पियारा कत।—कबीर ग्र०, पृ० १५।

ससाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ जमावडा। गोष्ठी। २ सभा। समाज। मडली।

ससादन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० ससादनीय, ससादित, ससाद्य] १ जुटाना। एकत्र करना। २ तरतीब मे लगाना। क्रमबद्ध करना।

ससादनीय—वि० [सं०] ससादन करने योग्य। जिसका ससादन किया जाय।

ससादित—वि० [सं०] १ एकत्र किया हुआ। जुटाया हुआ। २ तरतीब दिया हुआ। लगाया हुआ। सजाया हुआ।

**संसाधक**—संज्ञा पुं० [सं०] १ पूर्णतया साधन करनेवाला। संपन्न करनेवाला। अंजाम देनेवाला। २ जीतनेवाला। वश में करनेवाला।

**संसाधन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संसाधनीय, संसाधित, संसाध्य] १ अच्छी तरह करना। पूरा करना। अंजाम देना। २ तैयारी। आयोजन। ३ जीतना। दमन करना। वश में करना।

**संसाधनीय**—वि० [सं०] १ साधन के योग्य। पूरा करने योग्य। २ जीतने योग्य। वश में लाने योग्य।

**संसाध्य**—वि० [सं०] १ पूरा करने योग्य। २ जीतने योग्य। दमन करने योग्य। ३ जिसे करना हो। करने योग्य। ४ जिसे जीतना या वश में करना हो।

**संसार**—संज्ञा पुं० [सं०] १ लगातार एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाते रहना। २ बार बार जन्म लेने की परंपरा। आवागमन। भवचक्र। जगत्। दुनिया। विश्व। सृष्टि। ४ इहलोक। मर्त्यलोक। ५ मायाजाल। माया का प्रपंच। जीवन का जंजाल। ६ गृहस्थी। ७ दुर्गंध खदिर। विट् खदिर। ८ मार्ग। पथ (को०)।

यौ०—संसारगमन = जन्म मरण का चक्कर। संसारगुरु। संसारचक्र। संसारतिलक। संसारपथ। संसारपदवी। संसारबंधन = जागतिक जीवन का पाश या मोह। संसार भावन। संसार मार्ग। संसारमोक्ष = संसार से छुटकारा। संसारमोक्षण = संसारयात्रा। संसारवर्जित = सांसारिकता से मुक्त। संसारवर्त्म = संसार का मार्ग। संसारसंग = सांसारिकता। संसारसुख = संसार का आनंद। भौतिक सुख।

**संसारगुरु**—संज्ञा पुं० [सं०] १ संसार को उपदेश देनेवाला। जगद्गुरु। २ कामदेव। स्मर।

**संसारचक्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १ जन्म पर जन्म लेने की परंपरा। नाना योनियों में भ्रमण। २ माया का जाल। दुनिया का चक्कर। प्रपंच। ३ जगत् की दशा का उलट फेर।

**संसारण**—संज्ञा पुं० [सं०] चलाना। सरकाना। गति देना।

**संसारतिलक**—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का उत्तम चावल। उ०—कोरहन, बड़हन, जड़हन, मिला। औ संसारतिलक खँडविला।—जायसी (शब्द०)।

**संसारपथ**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सांसारिक प्रपंच। सांसारिक जीवन। २ संसार में आने का मार्ग। स्त्रियों की जननेंद्रिय।

**संसारपदवी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] संसारपथ। संसारमार्ग (को०)।

**संसारभावन**—संज्ञा पुं० [सं०] संसार को दुःखमय जानना।

विशेष—यह ज्ञान चार प्रकार का है—नरकगति, तिर्यग्गति, मनुष्यगति और देवगति।

**संसारमार्ग**—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्त्रियों की जननेंद्रिय। २ सांसारिक जीवन (को०)।

**संसारमोक्षण**—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो भवबंधन से मुक्त करे। २ संसार से छुटकारा (को०)।

**संसारयात्रा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ संसार में रहना। जीवन बिताना। २ जिंदगी। जीवन (को०)।

**संसारसारथि**—संज्ञा पुं० [सं०] १ संसारपथ को पार करानेवाला। २ शिव का एक नाम।

**संसारसरणि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'संसारमार्ग' (को०)।

**संसारी**[1]—वि० [सं० संसारिन्] [वि० स्त्री० संसारिणी] १ संसार संबंधी। लौकिक। जैसे,—संसारी बातें। २ संसार में रहनेवाला। संसार की माया में फँसा हुआ। दुनिया के जंजाल से घिरा हुआ। जैसे,—संसारी जीवों के कल्याण के लिये यह कथा है। ३ लोकव्यवहार में कुशल। दुनियादार। ४ बार बार जन्म लेनेवाला। भवचक्र में बँधा हुआ। जैसे—संसारी आत्मा। ५ संसरण करनेवाला। दूर तक जाने या व्याप्त होनेवाला (को०)।

**संसारी**[2]—संज्ञा पुं० १ प्राणी। जीव। २ जीवात्मा (को०)।

**संसि**—संज्ञा स्त्री० [सं० शस्य] दे० 'शस्य'। उ०—जिन संसिन को सीच तुम, करी सुहरी बहारि।—दीन० ग्रं०, पृ० २०१।

**संसिक्त**—वि० [सं०] खूब सींचा हुआ। जिसपर खूब पानी छिड़का गया हो। आर्द्र। तर।

**संसिद्ध**—वि० [सं०] १ पूर्णतया संपन्न। अच्छी तरह किया हुआ। २ प्राप्त। लब्ध। ३ अच्छी तरह सीझा या पका हुआ। (भोजन)। ४ जो नीरोग हो गया हो। चंगा। स्वस्थ। ५ तैयार। उद्यत। प्रस्तुत। ६ किसी बात में पक्का। कुशल। निपुण। ७ जिसका योग सिद्ध हो गया हो। मुक्त। ८ कृतसंकल्प (को०)। ९ तोषयुक्त। संतुष्ट (को०)।

**संसिद्धार्थ**—वि० [सं०] जिसका उद्देश्य या अभिप्राय सिद्ध हो गया हो (को०)।

**संसिद्धि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सम्यक् पूर्ति। किसी कार्य का अच्छी तरह पूरा होना। २ कृतकार्यता। सफलता। कामयाबी। ३ स्वस्थता। ४ पक्वता। सीझना। ५ पूर्णता। ६ मुक्ति। मोक्ष। ७ परिणाम। आखिरी नतीजा। ८ पक्की बात। निश्चित बात। न टलनेवाला वचन। ९ निसर्ग। प्रकृति। १० स्वभाव। आदत। ११ मदमस्त स्त्री। मदोग्रा।

**संसी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सँड़सी] दे० 'सड़सी'।

**संसीमित**—वि० [सं० सम् + सीमित] पूर्णत संकुचित। जो सीमा के भीतर ही हो। उ०—ये राज्य अपने क्षेत्र में ही संसीमित रहते थे।—भा० सैन्य०, पृ० ५।

**संसुखित**—वि० [सं०] पूर्णत तुष्ट। पूर्ण आनंदित (को०)।

**संसुप्त**—वि० [सं०] खूब सोया हुआ।

**संसूचक**—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संसूचिका] १. प्रकट करनेवाला। २ जतानेवाला। ३ भेद खोलनेवाला। ४ समझाने बुझानेवाला। कहने सुननेवाला। ५ डाँटने डपटनेवाला।

**संसूचन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संसूचनीय, संसूचित, संसूच्य] १ अच्छी तरह प्रकट करना। जाहिर करना। २ बात खोलना।

भेद खोलना। ३ कहना सुनना। ४ डाँटना डपटना। भला बुरा कहना। भर्त्सना करना। फटकारना। ५ जताना। इगित करना। सकेतित करना।

ससूचित—वि० [सं०] १ प्रकट किया हुआ। जाहिर किया हुआ। २ डाँटा डपटा हुआ। जिसे कुछ कहा सुना गया हो। ३ जो सूचित किया गया हो। जताया हुआ।

ससूची—वि० [सं० ससूचिन्] [वि० स्त्री० ससूचिनी] १ प्रकट करनेवाला। २ जतानेवाला। ३ भला बुरा कहनेवाला। फटकारनेवाला। दे० 'ससूचक'।

ससूच्य—वि० [स०] १ प्रकट करने योग्य। २ जनाने लायक। ३ जिसे जताना या प्रकट करना हो। ४ भला बुरा कहने योग्य। जिसे भला बुरा कहना हो, या जिसके लिये भला बुरा कहना हो।

ससृति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ जन्म पर जन्म लेने की परपरा। आवागमन। भवचक्र। २ ससार। जगत्। उ०—देव पाय सताप घन छोर ससृति दीन भ्रमत जग जोनि नहिं कोपि त्राता। —तुलसी (शब्द०)। ३ अनवरतता। सातत्य। नैरतर्य। प्रवाह (को०)। ४ गति। दशा। अवस्था (को०)।

ससृष्ट[1]—वि० [स०] १ एक साथ उत्पन्न या आविर्भूत। २ एक मे मिला जुला। सश्लिष्ट। मिश्रित। ३ सबद्ध। परस्पर लगा हुआ। ४ अतर्भूत। अतर्गत। शामिल। ५ जो जायदाद का बँटवारा हो जाने पर भी समिलित हो गया हो (भाई आदि)। ६ हिला मिला हुआ। बहुत मेल किए हुए। बहुत परिचित। ७ सपन्न किया हुआ। अजाम दिया हुआ। ८ किया हुआ। बनाया हुआ। रचित। निर्मित। ९ वमनादि द्वारा शुद्ध किया हुआ। कोठा साफ किया हुआ। १० जुटाया हुआ। इकट्ठा किया हुआ। सगृहीत। ११ स्वच्छ वस्त्रादि से युक्त (को०)। १२ मिला जुला। विभिन्न प्रकार का (को०)। १३ प्रभावित। अभिभूत। आक्रात। जैसे, रोगससृष्ट।

यौ०—ससृष्टकर्मा = भले बुरे हर प्रकार के कर्मोवाला। जिसके कर्म भले और बुरे दोनो हो। ससृष्टभाव = आत्मीयता। निकट सपर्क। ससृष्टमैथुन। ससृष्टरूप = (१) मिले जुले रूप या आकृतिवाला। (२) घालमेल वाला। मिलावटी। ससृष्टहोम।

ससृष्ट[2]—सज्ञा पु० १ घनिष्ठता। हेलमेल। निकट का सबध। २ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

ससृष्टता—सज्ञा स्त्री० [स०] 'ससृष्टत्व' [को०]।

ससृष्टत्व—सज्ञा पु० [स०] १ ससृष्ट होने का भाव। २ स्मृति के अनुसार जायदाद का बँटवारा हो जाने के पीछे फिर एक मे होना या रहना।

ससृष्टमैथुन—वि० [स०] [वि० स्त्री० ससृष्टमैथुना] १ जो मैथुनरत हो। २ जो सभोग कर चुका हो। जो मैथुन कार्य सपन्न कर चुका हो [को०]।

ससृष्टहोम—सज्ञा पुं० [स०] अग्नि और सूर्य की एक ही मे मिली हुई आहुति।

ससृष्टि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक साथ उत्पत्ति या आविर्भाव। २ एक मे मेल या मिलावट। मिश्रण। ३ परस्पर सबध। लगाव। ४ हेलमेल। घनिष्ठता। मेल मुआफिकत। ५ बनाने की क्रिया या भाव। सयोजन। रचना। ६ एकत्र करना। इकट्ठा करना। जुटाना। ७ सग्रह। समूह। राशि। ८ दो या अधिक काव्यालकारो का ऐसा मेल जिसमे सब परस्पर निरपेक्ष हो, अर्थात् एक दूसरे के आश्रित, अतर्भूत आदि न हो। ९ सहभागिता। साझेदारी (को०)। १० एक ही परिवार मे मिल जुलकर रहना। दे० 'ससृष्टत्व'–२।

ससृष्टी—सज्ञा पु० [स० ससृष्टिन्] १ बँटवारे के बाद फिर से एक मे हो जानेवाले सबधी। २ साझीदार। भागीदार [को०]।

ससेक—सज्ञा पु० [स०] अच्छी तरह पानी आदि का छिडकाव या सिंचाई।

ससेचन—सज्ञा पुं० [स०] अच्छी तरह तर करना, सींचना या छिडकाव करना [को०]।

ससेवन—सज्ञा पु० [स०] [वि० ससेवित, ससेवनीय, ससेव्य] १ पूर्णतया सेवन। हाजिरी मे रहना। नौकरी बजाना। २ खूब इस्तेमाल करना। व्यवहार करना। उपयोग मे लाना। बरतना। ३ लगाव मे रहना। सपर्क रखना (को०)।

ससेवा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ व्यवहार की क्रिया या भाव। २ पूजा। अर्चना। ३ हाजिरी। सेवा। ४ प्रवृत्ति। झुकाव [को०]।

ससेवित—वि० [स०] १ भलीभाँति उपयोग मे लाया हुआ। २ अच्छी तरह सेवा किया हुआ [को०]।

ससेविता—वि० [स० ससेवितृ] व्यवहार मे लानेवाला। उपयोग मे लानेवाला [को०]।

ससेवी—वि० [स० ससेविन्] १ व्यवहार करनेवाला। उपयोग करनेवाला। २ सेवा टहल करनेवाला [को०]।

ससेव्य—वि० [स०] १ सेवा या पूजा करने योग्य। सेव्य। २ व्यवहार्य [को०]।

ससौ—सज्ञा पु० [हि० साँस] श्वास। प्राणवायु [को०]।

सस्करण—सज्ञा पुं० [स०] १ ठीक करना। दुरुस्त करना। सजाना। २ शुद्ध करना। सुधार करना। ३ परिष्कृत करना। सुदर या अच्छे रूप मे लाना। ४ द्विजातियो के लिये विहित सस्कार करना। ५ पुस्तकों की एक बार की छपाई। आवृत्ति (आधुनिक)। ६ शवदाह करना (को०)।

सस्कर्तव्य—वि० [स०] १ व्यवस्थित या तैयार करने योग्य। २ परिष्कार करने योग्य [को०]।

सस्कर्ता—सज्ञा पुं० [स०] १ सस्कार करनेवाला। २ शुद्ध करनेवाला। शोधक (को०)। ३ भोजन पकानेवाला। पाचक (को०)। ४ वह जो छाप या मुद्रा डालता हो (को०)।

सस्कार—सज्ञा पु० [स०] १ ठीक करना। दुरुस्ती। सुधार। २ दोष या त्रुटि का निकाला जाना। शुद्धि। ३ सजाना। अच्छे

या सुंदर रूप मे लाना। ४ धो माँजकर साफ करना। परिष्कार। ५ बदन की सफाई। शौच। ६ मनोवृत्ति या स्वभाव का शोधन। मानसिक शिक्षा। मन मे अच्छी बातो का जमाना। ७ शिक्षा, उपदेश, संगत, आदि का मन पर पडा हुआ प्रभाव। दिल पर जमा हुआ असर। जैसे,—जैसा लडकपन का संस्कार होता है, वैसा ही मनुष्य का चरित्र होता है। ८ पूर्व जन्म की वासना। पिछले जन्म की बातो का असर जो आत्मा के साथ लगा रहता है (यह वैशेषिक के २४ गुणो मे से एक है)। जैसे,—बिना पूर्व जन्म के संस्कार के विद्या नही आती। ९ पवित्र करना। धर्म की दृष्टि से शुद्ध करना। १० वे कृत्य जो जन्म से लेकर मरणकाल तक द्विजातियो के संबंध मे आवश्यक होते हैं। वर्णधर्मानुसार किसी व्यक्ति के संबंध मे होनेवाला विधान, रीति या रस्म।

विशेष—द्विजातियो के लिये षोडश या द्वादश संस्कार कहे गए है। मनु के अनुसार उनके नाम ये हैं—गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकर्म, नामकर्म, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म, उपनयन, केशांत, समावर्तन और विवाह इनमे कर्णवेध, विद्यारंभ, वेदारंभ और अंत्येष्टि कर्म को गणना करने से इनकी संख्या १६ हो जाती है।

११ मृतक की क्रिया। १२ इंद्रियो के विषयों के ग्रहण से उत्पन्न मन पर जमा हुआ प्रभाव। १२ मन द्वारा कल्पित या आरोपित विषय। भ्रांतिजन्य प्रतीति। प्रत्यय। (जैसी जगत् की, जो वास्तविक नही है।)।

विशेष—पंच स्कधो मे चौथा स्कंध 'संस्कार' है जो भवबंधन का कारण कहा गया है।

१३ साफ करने या माँजने का झाँवाँ, पत्थर आदि। झवाँ। १४ चमकाना (को०)। १५ व्याकरण की दृष्टि से शब्दो की विशुद्धि (को०)। १६ खाना बनाना। भोग्य पदार्थ तैयार करना (को०)। १७ छाप। प्रभाव (को०)। १८ उपनयन संस्कार। यज्ञोपवीत कर्म (को०)। १९ धार्मिक कृत्य या अनुष्ठान। २० स्मरण शक्ति (को०)। २१ साथ साथ रखना (को०)। २२ पशुओ, पौधो आदि का पालन और रक्षण (को०)।

यौ०—संस्कारकर्ता=संस्कार करानेवाला। संस्कारज=संस्कार से उत्पन्न होनेवाला। संस्कारनाम=जो नाम संस्कार के समय दिया गया हो। संस्कारपूत=(१) शिक्षा के कारण परिष्कृत। (२) संस्कार द्वारा जो पवित्र किया गया हो। संस्कारभूषण। संस्काररहित=संस्कारहीन। संस्कारवर्जित। संस्कार-विशिष्ट=पाक द्वारा परिष्कृत। जो पाक क्रिया के कारण उत्तम बना हो। संस्कारसंपन्न। संस्कारहीन।

संस्कारक—संज्ञा पुं० [सं०] १ संस्कार करनेवाला। शुद्ध करनेवाला। ३ मन पर छाप डालनेवाला (को०)। वह जो तैयार करता हो (को०)। ५ वह जो सुधार करता हो। सुधारक (को०)। ६ वह जिसे पकाया जाय या पकाने योग्य हो (को०)।

संस्कारता—संज्ञा स्त्री० [सं०] संस्कार होने का भाव, क्रिया या स्थिति (को०)।

संस्कारत्व—संज्ञा पुं० [सं०, ?] 'संस्कारता'।

संस्कारभूषण—संज्ञा पुं० [सं०] कथन या भाषण, जो शुद्धता, सत्यता एवम् यथार्थता से शोभित या युक्त हो (को०)।

संस्कारवत्व—संज्ञा पुं० [सं०] संस्कारयुक्त होने का भाव (को०)।

संस्कारवर्जित—वि० [सं०] वह व्यक्ति जिसका संस्कार न हुआ हो। व्रात्य।

संस्कारवान्—वि० [सं० संस्कारवत्] १ जिसका संस्कार या परिष्कार किया गया हो। संस्कार से युक्त। संस्कारवाला। २ सुंदर गुणों से विभूषित (को०)।

संस्कारसंपन्न—वि० [सं० संस्कारसम्पन्न] संस्कार युक्त। सुशिक्षित।

संस्कारहीन—वि० [सं०] जिसका संस्कार न हुआ हो। व्रात्य।

संस्कारी[1]—वि० [सं० संस्कारिन्] जिसका संस्कार हुआ हो। अच्छे संस्कारवाला।

संस्कारी—संज्ञा पुं० सोलह मात्राओ का एक छंद।

संस्कार्य—वि०—[सं०] १, संस्कार करने योग्य। २ जिसकी सफाई या सुधार करना हो। ३ प्रभाव डालने योग्य। जिसपर प्रभाव डाला जाय (को०)।

संस्कृत[1]—वि० [सं०] १ संस्कार किया हुआ। शुद्ध किया हुआ। २ परिमार्जित। परिष्कृत। ३ धो माँजकर साफ किया हुआ। निखारा हुआ। ४ पकाया हुआ। सिझाया हुआ। ५ सुधारा हुआ। ठीक किया हुआ। दुरुस्त किया हुआ। ६ अच्छे रूप मे लाया हुआ। सँवारा हुआ। सजाया हुआ। आरास्ता। ७ जिसका उपनयन आदि संस्कार हुआ हो। ८ श्रेष्ठ। सर्वोत्तम (को०)। ९ अभिमंत्रित। पुनीत किया हुआ।

संस्कृत[2]—संज्ञा स्त्री० भारतीय आर्यो की प्राचीन साहित्यिक भाषा। पुराने आर्यो की लिखने पढने की उच्च भाषा। देववाणी।

विशेष—विद्वानो की राय है कि वेदों (संहिताओ) की भाषा अत्यंत प्राचीन है। यह सुदूर अतीत मे कभी बोलचाल की आर्यों की भाषा थी। जब उस भाषा मे परिवर्तन होने लगा और धीरे धीरे उसके समझनेवाले कम होने लगे, तब संहिताओ का संकलन हुआ। बाद मे यास्क ने निघंटु आदि बनाकर उस मंत्र-भाग की भाषा को विद्वानो मे सुरक्षित रखा। पीछे जो आर्य-भाषा प्रचलित होती गई, उसपर क्रमश द्रविड आदि आर्येतर भारतीय भाषाओं का प्रभाव पडता गया। अत इस प्रचलित या लौकिक आर्यभाषा को शुद्ध, व्यवस्थित और सुरक्षित रखने का इंद्र, शाकल्य शाकटायन, पाणिनि आदि वैयाकरणो ने प्रयत्न किया। पाणिनि आदि वैयाकरणो ने दूर दूर तक फैले हुए यथासंभव सब प्रयोगो और रूपो को ध्यान मे रखते हुए एक व्यापक आर्यभाषा का व्याकरणनिर्माण किया। यही 'भाषा या लौकिक संस्कृत कहलाई जो रूप स्थिर हो जाने के कारण साहित्य की सर्वमान्य भाषा हुई और अबतक चली आ रही है। लोगो की बोलचाल की भाषा मे अंतर पडता रहा, पर यह संस्कृत ज्यो की त्यों रही

और विद्वानो तथा शिष्यो की परपरा द्वारा अपने शुद्ध रूप मे व्यवहृत तथा प्रयुक्त होती चली आ रही है। आज भी उसमे साहित्य रचा जा रहा है और पत्र-पत्रिकाएँ आदि निकलती ह बोलचाल की भाषाएँ पाली, प्राकृत, अपभ्रश आदि प्राकृतिक कहलाईं और यह सस्कार की हुई प्राचीन भाषा सस्कृत या अमरभाषा कहलाई।

**सस्कृत[3]**—सज्ञा पु० १ व्याकरण के नियमो द्वारा व्युत्पन्न शब्द । २ द्विजाति का वह व्यक्ति जिसका सस्कार हो गया हो। ३ विद्वान् पुरुष । ४ धार्मिक परपरा । ५ बलि । आहुति [को०]।

**सस्कृति**—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ शुद्धि । सफाई । २ सस्कार । सुधार । परिष्कार । ३ सजावट । आराइश । ४ रहन सहन आदि की रुढि । भीतर बाहर से सस्कार की गई—सभ्यता । शाइस्तगी । ५ पूर्ण करना । पूरा करना (को०) । ६ निर्णय । निश्चयन (को०) । ७ उद्योग । चेष्टा (को०) । ८ २८ वर्ण के वृत्तो की सज्ञा । ९ अग्रेजी 'कल्चर' शब्द के अनुवाद रुप मे प्रयुक्त शब्द।

**सस्क्रिया**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सस्कार । सस्कृति । २ शुद्ध करना । मत्र आदि से पवित्र करना (को०)। ३ अत्येष्टि (को०)। ४ तैयार करना (को०)।

**सस्खलन**—सज्ञा पु० [स०] [वि० सस्खलित] १ च्युत होना । गिरना । २ भूल करना । चूकना ।

**सस्खलित[1]**—वि० [स०] १ च्युत । गिरा हुआ । २ भूला हुआ । चूका हुआ ।

**संस्खलित[2]**—सज्ञा पु० भूल चूक ।

**सस्तभ**—सज्ञा पुं० [स० सस्तम्भ] १ गति का सहसा रोध । एकबारगी रुकावट । २ चेष्टा का अभाव । निश्चेष्टता । ठक हो जाना । हाथ पैर रुक जाना । ३ शरीर की गति का मारा जाना । लकवा । ४ दृढ़ता । धीरता । ५ हठ । टेक । जिद । ६ आधार । टेक । सहारा ।

**सस्तभन**—सज्ञा पुं० [स० सस्तम्भन] [वि० सस्तभित, सस्तब्ध] १ गति का सहसा रुकना या रोकना । एकबारगी ठहर जाना । २ निश्चेष्ट करना या होना । ठक कर देना या हो जाना । ३ बद करना । ४ सहारा देना । टेकना । ५ रोकनेवाली वस्तु । ६ सकुचित करना । समेट लेना (को०) ।

**सस्तभनीय**—वि० [स० सस्तम्भनीय] १ दृढ करने योग्य । २ रोके जाने योग्य । ३ सहारा देने योग्य (को०) ।

**सस्तभित**—वि० [सं० सस्तम्भित] १ जिसे सहारा दिया गया हो। २ स्तब्ध । निश्चेष्ट । ३ लकवा रोग से ग्रस्त [को०]।

**सस्तभी**—[स० सस्तम्भिन्] सस्तभ करने या रोकनेवाला । निवारण करनेवाला [को०]।

**सस्तब्ध**—वि० [स०] १ एकबारगी रुका या ठहरा हुआ । २ निश्चेष्ट । ठक । भोचक्का । ३ सहारा दिया हुआ । जिसे टेक या सहारा दिया हो ।

**सस्तर[1]**—सज्ञा पु० [स०] १ तह । पर्त । पहल । २ घास फूस से बनाया हुआ आच्छादन । ३ घास फूस फैलाकर बनाया हुआ विस्तर । तृण शय्या । ४ विस्तर । शय्या । ५ बिखेरना । विकीर्णन (को०) । ६ विकीर्ण पुष्पराशि । फैलाए हुए फूलो का समूह । ७ यज्ञ या यज्ञ आदि का आयोजन (को०) । ८ विधि, व्यवस्था या आचारादि का प्रचार (को०) ।

**सस्तर[2]**—वि० छितराया हुआ । विकीर्ण किया हुआ ।

**सस्तरण**—सज्ञा पुं० [स०] १ बिछाना । फैलाना । पसारना । २ छितराना । बिखेरना । ३ तह चढाना । परत फैलाना । ४ विस्तर । शय्या ।

**सस्तव**—सज्ञा पुं० [सं०] १ प्रशसा । स्तुति । तारीफ । २ जिक्र । कथन । उल्लेख । ३ परिचय । जान पहचान । मेल जोल ।

**सस्तवन**—सज्ञा पु० [स०] [वि० सस्तवनीय, सस्तुत] १ स्तुति करना। प्रशसा करना । २ यश गाना । कीर्ति बखानना ।

**सस्तव प्रीति**—सज्ञा स्त्री० [स०] सस्तव अर्थात् परिचय के कारण होनेवाली प्रीति [को०]।

**सस्तवस्थिर**—वि० [स०] परिचय या घनिष्टता से दृढ [को०]।

**सस्तवान[1]**—वि० [स०] १ यश गान करनेवाला । स्तुति करनेवाला। २ वाग्मी । वाग्पटु [को०]।

**सस्तवान[2]**—सज्ञा पु० १ प्रसन्नता । आनद । २ गायक । गानेवाला। ३ उद्गाता [को०]।

**सस्तार**—सज्ञा पुं० [स०] तह । पहल । २ विस्तर । शय्या । ३ एक यज्ञ का नाम । ४ वितति । विस्तार । वृद्धि (को०) ।

**सस्तारक**—सज्ञा पुं० [स०] विस्तर । शय्या [को०]।

**सस्तार पक्ति**—सज्ञा स्त्री० [स० सस्तार पड्क्ति] एक वर्णवृत्ति जिसमे १२+८+८+१२ के योग के ४० वर्ण होते ह [को०]।

**सस्ताव**—सज्ञा पु० [स०] १ यज्ञ मे स्तुति करनेवाले ब्राह्मणों की अवस्थान भूमि । २ स्तुति । प्रशसा । ३ परिचय । जान पहचान । ४ समिलित स्तवन या स्तुति (को०) ।

**सस्तीर्ण**—वि० [स०] फैलाया हुआ । पसारा हुआ । बिछाया हुआ । २ बिखेरा हुआ । फैलाया हुआ । छितराया हुआ ।

**सस्तुत**—वि० [सं०] १ जिसकी खूब स्तुति या प्रशसा की गई हो। २ परिचित । ज्ञात । ३ एक साथ गिना हुआ । गिनती मे शामिल किया हुआ । ४ समान । तुल्य । सामजस्य युक्त। ५ अभीप्ट। इच्छित (को०)। ६ जिसकी एक साथ या समिलित होकर स्तुति की गई हो (को०) ।

**सस्तुतक**—वि० [स०] भद्र । शिप्ट । सभ्य [को०]।

**सस्तुति**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सम्यक् स्तुति । खूब प्रशसा । गहरी तारीफ । २ भावाभिव्यजन की एक आलकारिक पद्धति या शैली (को०) ।

**सस्तूप**—सज्ञा पुं० [स०] घूर । कूडे कचरे का ढेर [को०] ।

**सस्तृत**—वि० [स०] फैलाया या बिछाया हुआ । आच्छादित [को०]।

**सस्त्यान[1]**—वि० [स०] दृढ । जमा हुआ ।

**सस्त्यान[2]**—सज्ञा स्त्री० वह जो स्थिर या दृढ हो। जैसे,—गर्भस्थ भ्रूण या गर्भ [को०]।

संस्त्याय—संज्ञा पुं० [सं०] १ समूह । राशि । ढेर । २ सन्निधि । सामीप्य । घनिष्टता । ३ प्रसार । विस्तार (को०) । ४, घर । आवास (को०) । ५ मित्रों का वार्तालाप [को०] ।

संस्थ¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. निज देशवासी । स्वदेशवासी । अपने देश का । २. निवासी (को०) । ३ चर । दूत ।

संस्थ²—वि० १. टिकाऊ । ठहरनेवाला । २ पालतू । घरेलू । ३ स्थिर । अचल । ४. विद्यमान । मौजूद । ५ मृत । नष्ट । ६ पूर्ण । अंत को प्राप्त । ७ व्यक्त [को०] ।

संस्था—संज्ञा पुं० [सं०] १ ठहरने की क्रिया या भाव । ठहराव । स्थिति । २ व्यवस्था । बँधा नियम । विधि । मर्यादा । रूढ़ि । ३ प्रकट होने की क्रिया या भाव । अभिव्यक्ति । प्रकाश । ४ रूप । आकार । आकृति । ५ गुण । सिफत । ६ ठिकाने लगाना । ७ समाप्ति । अंत । खातमा । ८ जीवन का अंत । मृत्यु । ९ नाश । १० प्रलय । ११ यज्ञ का मुख्य अंग । १२ वध । हिंसा । १३ गुप्तचरों या भेदियों का वर्ग ।

विशेष—इसके अंतर्गत पाँच प्रकार के दूत कहे गए हैं—वणिक् भिक्षु, छात्र, लिंगी (संप्रदायी) और कृषक ।

१४ व्यवसाय । पेशा । १५ जत्था । गरोह । १६ समाज । मंडल । सभा । समिति । १७, राजाज्ञा । फरमान । १८. सादृश्य । समानता । १९ विराम । यति (को०) । २० शव के आग में जलने की आवाज या शव क्रिया (को०) । २१ सोमयज्ञ का एक प्रकार (को०) ।

यौ०—संस्थाकृत = स्थिरीकृत । निर्धारित । ठहराया हुआ । संस्थाजप = यज्ञांत में किया जानेवाला जप ।

संस्थागार—संज्ञा पुं० [सं०] वह भवन या कक्ष जहाँ सभा आदि की जाय [को०] ।

संस्थाध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ व्यापार का निरीक्षक । व्यापाराध्यक्ष ।

विशेष—कौटिल्य के अनुसार इसका मुख्य काम गिरवी रखे जानेवाले माल का तथा पुरानी चीजों का विक्रय करवाना था । तौल माप का निरीक्षण भी यही करता था । चंद्रगुप्त के समय में तुला द्वारा तौलने में यदि दो तोले का फरक पड़ जाता तो बनिए पर छह पण जुर्माना किया जाता था । क्रय विक्रय संबंधी राजनियमों को जो लोग तोड़ते थे, उनको भी दंड यही देता था । भिन्न भिन्न पदार्थों पर कितनी चुंगी लगे और कौन सा माल बिना चुंगी दिए शहर में जाय, इन संपूर्ण बातों का प्रबंध भी यही करता था । पदार्थों की कीमतें भी यही नियत करता था । सरकारी पदार्थों का विक्रय भी यही करवाता था और उनके विक्रय के लिये नौकर भी रखता था, इत्यादि ।

२ किसी समाज, समिति या संस्था का प्रधान व्यक्ति ।

संस्थान¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ ठहरने की क्रिया या भाव । ठहराव । स्थिति । २. खड़ा रहना । डटा रहना । जमा रहना । ३. सन्निवेश । बैठाना । स्थापन । विन्यास । ४. अस्तित्व । जीवन । ५ सम्यक् पालन । पूरा अनुसरण । पूरी पैरवी । ६ ठहरने या रहने की जगह । डेरा । घर । ७ बस्ती । जनपद । ८ सार्वजनिक स्थान । सर्वसाधारण के इकट्ठे होने की जगह । ९. रूप । आकृति । शक्ल । १०. कांति । सौंदर्य । ११ प्रकृति । स्वभाव । १२ रोग का लक्षण । १३ अवस्था । दशा । हालत । १४. मूल तत्वों की समष्टि । योग । जोड़ । १५ ठिकाने लगाना । समाप्ति । अंत । खातमा । १६ नाश । मृत्यु । १७ रचना । बनावट । निर्माण । १८ पड़ोस । सामीप्य । निकटता । १९ चौमुहानी । चौरास्ता । चौराहा । २० आयोजन । प्रबंध । व्यवस्था । डौल । २१ ढाँचा । चौखटा । २२ साँचा । ढाँचा । डौल । खाका । २३ राशि । समूह । संचय । ढेर (को०) । २४ उद्योग, व्यापार, साहित्य आदि के विभिन्न अंगों की उन्नति के लिये स्थापित संगठन या संस्था । २५ भाग । हिस्सा । खंड (को०) । २६ चिह्न । निशान । विशेषक चिह्न (को०) ।

संस्थान²—वि० १ स्थावर । २ सदृश । समान [को०] ।

संस्थापक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संस्थापिका] १ खड़ा करनेवाला । स्थापित करनेवाला । २ उठानेवाला । (भवन आदि) । ३. कोई नई बात चलानेवाला । जारी करनेवाला । प्रवर्तक । ४ कोई सभा, समाज या सर्वसाधारण के उपयोगी कार्य खोलनेवाला । ५ चित्र खिलौने आदि बनानेवाला । ६ रूप या आकार देनेवाला ।

संस्थापन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संस्थापनीय, संस्थापित, संस्थाप्य] १ खड़ा करना । उठाना । निर्मित करना । (भवन आदि) । २ स्थित करना । जमाना । बैठाना । ३ कोई नई बात चलाना । नया काम जारी करना । नया काम खोलना । ४. रूप या आकार देना । ५ एक साथ करना । एकत्र करना । संचयन करना (को०) । ७ निर्णीत करना । निश्चित करना (को०) । ८ नियंत्रित करना । प्रतिबंधित करना (को०) । ९ नियम । विधि (को०) ।

संस्थापना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रोकना । नियंत्रण । प्रतिबंध । २ शांत या स्थिर करने के उपाय । ३ दे० 'संस्थापन' [को०] ।

संस्थापनीय—वि० [सं०] संस्थापन के योग्य ।

संस्थापित—वि० [सं०] १ उठाया हुआ । खड़ा किया हुआ । निर्मित । २. जमाया हुआ । बैठाया हुआ । स्थित किया हुआ । प्रतिष्ठित । ३ जारी किया हुआ । चलाया हुआ । ४ संचित । बटोरा हुआ । ५ ढेर लगाया हुआ । ६ नियंत्रित । प्रतिबंधित । रोका हुआ (को०) ।

संस्थाप्य—वि० [सं०] १ संस्थापन के योग्य । २ जिसका संस्थापन करना हो । ३ पूर्ण या समाप्त करने योग्य । जैसे, यज्ञ आदि (को०) । ४ शांतिदायक वस्तिप्रयोग द्वारा चिकित्सा करने लायक (को०) ।

संस्थित¹—वि० [सं०] १ खड़ा । उठाया हुआ । २ ठहरा हुआ । टिका हुआ । ३ बैठा हुआ । जमा हुआ । दृढ़ता से खड़ा हुआ । ४ रूप में लाया हुआ । निर्मित । ५ ठिकाने लगाया हुआ । ६

समाप्त। खतम। ७ मृत। मरा हुआ। ८ ढेर लगाया हुआ। बटोरा हुआ। ९ मिलता जुलता। समान (को०) १० अंदर रखा हुआ। अंतवर्ती (को०)। ११ लगा हुआ। आसन्न (को०)। १२ प्रस्थान किया हुआ (को०)। १३ (भोजन आदि) अधिक समय से पड़ा हुआ (को०)। १४ आधृत। आधारित (को०)। १५ टिकाऊ (को०)। १६ भावी (को०)। १७ दक्ष। कुशल (को०)।

संस्थित[२]—संज्ञा पुं० १ आचरण। २ आकृति (को०)।

संस्थिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ खड़े होने की क्रिया या भाव। २ ठहराव। जमाव। ३ बैठने की क्रिया या भाव। ४ एक अवस्था में रहने का भाव। ज्यों का त्यों रहने का भाव। ५ दृढ़ता। धीरता। ६ अस्तित्व। हस्ती। ७ रूप। आकृति। सूरत। ८ व्यवस्था। तरतीब। ९ गुण। सिफत। १० प्रकृति। स्वभाव। ११ समाप्ति। खातमा (विशेषत यज्ञादि के लिये)। १२ मृत्यु। मरण। १३ कोष्ठबद्धता। कब्जियत। १४ राशि। ढेर। अटाला। १५ सामीप्य। आसन्नता (को०)। १६ निवास स्थान। आवासस्थल (को०)। १७ रोक। प्रतिबंध (को०)। १८ अवधि। कालावधि (को०)। १९ प्रलय (को०)।

संस्पर्द्धा, संस्पर्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी के बराबर होने की प्रबल इच्छा। बराबरी की चाह। २ ईर्ष्या। डाह।

संस्पर्द्धी, संस्पर्धी—वि० [सं० संस्पर्द्धिन्, संस्पर्धिन्] [स्त्री० संस्पर्द्धिनी] १ बराबरी की इच्छा करनेवाला। २ ईर्ष्यालु।

संस्पर्श—संज्ञा पुं० [सं०] १ अच्छी तरह छू जाने का भाव। एक के अंग का दूसरे से लगना।

विशेष—धर्मशास्त्रों में कुछ लोगों का संस्पर्श होने पर द्विजातियों के लिये प्रायश्चित्त का विधान है। यह संस्पर्शदोष शरीर के छू जाने, आलाप, निश्वन, सहभोजन तथा एक शय्या पर बैठने या सोने से कहा गया है।

२ घनिष्ठ संबंध। गहरा लगाव। ३ मिलाप। मेल। ४ मिलावट। मिश्रण। ५ इंद्रियों का विषय ग्रहण। ६ थोड़ा सा आविर्भाव। कुछ प्रभाव।

संस्पर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संस्पर्शनीय, संस्पृष्ट] १ छूना। अंग से अंग लगना। २ मिलना। सटना। ३ मिश्रण।

संस्पर्शा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जनी नामक गंध द्रव्य।

संस्पर्शी[१]—वि० [सं० संस्पर्शिन्] संपर्क में आनेवाला। स्पर्श करनेवाला। छूनेवाला।

संस्पर्शी[२]—संज्ञा पुं० जनी नामक गंध युक्त पौधा (को०)।

संस्पृष्ट—वि० [सं०] १ छूआ हुआ। २ सटा हुआ। लगा हुआ। मिला हुआ। ३ जुड़ा हुआ। परस्पर संबद्ध। ४ पास ही पड़ता हुआ। जो निकट ही हो। ५ लेश मात्र प्रभावित। जिसपर बहुत कम असर पड़ा हो। ६ प्राप्त (को०)।

संस्पृष्टमैथुना—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह लड़की जिसे वरगलाया गया हो या जिसे मैथुन का परिचय मिल गया हो। भ्रष्ट।

विशेष—ऐसी लड़की को विवाह के अयोग्य माना गया है।

संस्फाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ भेंड़। मेष। २ मेघ। बादल (को०)।

संस्फुट—वि० [सं०] १ खूब फूटा या खुल पड़ा हुआ। २. खूब खिला हुआ। विकसित। ३ सुस्पष्ट।

संस्फेट—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध। लड़ाई।

संस्फोट—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संस्फोटि] युद्ध। लड़ाई।

संस्मरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संस्मरणीय, संस्मृत] १ पूर्ण स्मरण। खूब याद। २ अच्छी तरह सुमिरना या नाम लेना। ३ संस्कारजन्य ज्ञान। ४ किसी व्यक्ति या विषय आदि की स्मृति का आधार बनाकर उसके संबंध में लिखा हुआ वह लेख जिससे उसकी विशिष्टताओं का आकलन हो सके।

संस्मरणी—वि० [सं०] १ पूर्ण स्मरण करने योग्य। २ नाम जपने योग्य। ३ महत्व का। न भूलनेवाला। जिसकी याद बराबर बनी रहे। ४ जिसका स्मरण मात्र रह गया हो। अतीत।

संस्मारक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संस्मारिका] १ वह जो स्मरण कराता हो। स्मरण करानेवाला। याद दिलानेवाला। २ वह निर्माण या वस्तु जो व्यक्ति, स्थिति या कार्यविशेष की स्मृति बनाया गया हो। स्मारक।

संस्मारक[२]—वि० स्मरण करानेवाला।

संस्मारण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संस्मारित] १ स्मरण कराना। याद दिलाना। २ गिनती करना। गिनना (चौपायों के विषय में)।

संस्मारित—वि० [सं०] १ याद दिलाया हुआ। स्मरण कराया हुआ। २ ध्यान में लाया हुआ। याद किया हुआ।

संस्मृत—वि० [सं०] १ स्मरण किया हुआ। याद किया हुआ। २ अभिहित। कथित (को०)। ३ आज्ञप्त। आदिष्ट (को०)।

संस्मृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] पूर्ण स्मृति। पूरी याद।

संस्यूत—वि० [सं०] १ अभेद्य रूप से अच्छी तरह एक में मिला हुआ। २ मिला हुआ। नत्थी किया हुआ। ३ अनुस्यूत। ओतप्रोत (को०)।

संस्रव—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संस्रवा] १ एक साथ बहना। २ पूरा बहाव, प्रवाह या धारा। ३ बहती हुई वस्तु। ४ बहता हुआ जल। ५ एक प्रकार का पिंडदान। ६ किसी वस्तु का नोचा हुआ अंश। उखड़ा हुआ चिप्पड़। ७ चूना। गिरना। भरना। रसना।

संस्रवण—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहना। प्रवाहित होना। २ चूना। झरना। गिरना।

यौ०—गर्भसंस्रवण = गर्भपात। गर्भस्राव।

संस्रष्टा—संज्ञा पुं० [सं० संस्रष्टृ] [स्त्री० संस्रष्ट्री] १ आयोजन करनेवाला। २ मिलाने जुलानेवाला। मिश्रण करनेवाला। ३ रचनेवाला। बनानेवाला। निर्माता। ४ भाग लेनेवाला। सहयोग देनेवाला (को०)। ५ भिड़नेवाला। लड़ाई में जुटनेवाला।

संस्राव--संज्ञा पुं० [सं०] १ बहाव। प्रवाह। २ मवाद का इकट्ठा होना। (सुश्रुत)। ३ किसी द्रव पदार्थ के नीचे जमा हुआ पदार्थ। तलछट। ४ एक प्रकार का पिंडदान। संस्रव (को०)।

संस्रावण--संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संस्राव्य] १ बहाना। प्रवाहित करना। २ बहना। प्रवाहित होना। ३ झरना। चूना टपकना।

संस्रावित--वि० [सं०] १ बहाया हुआ। २ बहा हुआ। ३ झरा हुआ। ४ टपका हुआ।

संस्राव्य--वि० [सं०] १ बहाने या टपकाने योग्य। २ जिसे बहाना या टपकाना हो।

संस्वार--संज्ञा पुं० [सं०] एक साथ स्वर निकालना। समवेत रूपेण शब्द करना [को०]।

संस्वेद--संज्ञा पुं० [सं०] स्वेद। पसीना।

संस्वेदज--वि० [सं०] पसीने से उत्पन्न (कृमि आदि)।

संस्वेदी--वि० [सं० संस्वेदिन्] जिसके शरीर से स्वेद या पसीना बह रहा है।

संहंता--संज्ञा पुं० [सं० संहन्तृ] [स्त्री० संहत्री] १ वध करनेवाला। मारनेवाला। २ संहत करनेवाला। संबद्ध करनेवाला।

संहत¹--वि० [सं०] १ खूब मिला। जुटा या सटा हुआ। बिलकुल लगा हुआ। पूर्ण संबद्ध। २ एक हुआ। एक में मिला हुआ। ३ संयुक्त। सहित। ४ जो मिलकर ठोस हो गया हो। मिलकर खूब बैठा हुआ। कड़ा। सख्त। ५ जो विरल या झीना न हो। गठा हुआ। घना। ६ दृढांग। मजबूत। दृढ। ७ एकत्र। इकट्ठा। ८ मिश्रित। मिला हुआ। ९ एक मत (को०)। १० अवरुद्ध। बद्ध (को०)। ११ चोट खाया हुआ। आहत। घायल।

यौ०--संहतकुलीन। संहतजानु। संहततल = अंजुलिबद्ध (हाथ)। जिसकी दोनों अँजुरियाँ मिली हुई हों। संहतपत्रिका। संहतबल = सुगठित सैन्य। संगठित सेना। संहतभ्रू = जिसकी भौंह परस्पर मिली हों। एक में मिली हुई भौंहोंवाला। कुंचित भ्रू वाला। संहतमूर्ति = जिसकी शरीराकृति हृष्ट पुष्ट हो। दृढ शरीरवाला। संहतस्तनी = पुष्ट और घने या अविरल स्तनोंवाली। संहतहस्त = हाथ से हाथ मिलाए हुए।

संहत²--संज्ञा पुं० नृत्य में एक प्रकार की मुद्रा।

संहतकुलीन--वि० [सं०] सम्मिलित परिवार का अथवा ऐसे कुटुंब का जो निकटतम संबंधी हो।

संहतजानु, संहतजानुक--संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसने घुटने मिलाए हुए हों। वह जिसने दोनों घुटने सटाए हों। २ बैठने की एक मुद्रा। ३ वह जिसके घुटने चलने में परस्पर टकराते हों। लग्नजानुक (को०)।

संहतता--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ घना संपर्क, संश्लेप, लगाव या मेल। २. निविडता। संपृक्तता। परस्पर संपृक्त होना। सांद्रता। ३ ऐक्य। सहमति। एकता। ४ सौमनस्य। अविरोधिता [को०]।

संहतत्व--संज्ञा पुं० [सं०] संहत होने की क्रिया, स्थिति या भाव। संहतता [को०]।

संहतपत्रिका--संज्ञा स्त्री० [सं०] सोआ। शतपुष्पा।

संहतल--संज्ञा पुं० [सं०] १ अंजलि। अँजुरी। २ दोहत्थल। दोहत्थड [को०]।

संहतांग--वि० [सं० संहताङ्ग] १ दृढांग। हृष्ट पुष्ट। मजबूत। २ परस्पर संपृक्त या मिला हुआ (को०)।

संहतांजलि--वि० [सं० संहताञ्जलि] जो हाथ जोड़े हो। करबद्ध।

संहताख्य--वि० [सं०] पवमान नामक अग्नि।

संहति--संज्ञा स्त्री० [सं०] मिलाव। मेल। २ जुटाव। बटोर। इकट्ठा होने का भाव। ३ राशि। ढेर। अटाला। ४ समूह। झुंड। ५ परस्पर मिलकर ठोस होने का भाव। निविड संयोग। गठन। ठोसपन। घनत्व। ६ संधि। जोड़। ७ शरीर। देह। जिस्म (को०)। ८ शक्ति। ताकत। बल (को०)। ९ संयुक्त यत्न। सामूहिक चेष्टा (को०)। १० परमाणु का परस्पर मेल।

संहतिशाली--वि० [सं० संहतिशालिन्] घन। ठोस। दृढ [को०]।

संहतिपुष्पिका--संज्ञा स्त्री० [सं०] सोआ। शतपुष्पा।

संहनन¹--संज्ञा पुं० [सं०] १ संहत करना। एक में मिलाना। जोड़ना। २ खूब मिलाकर घना या ठोस करना। ३ वध। मार डालना। ४ संयोग। मेल। मिलावट। ५ कड़ाई। ६ पुष्टता। मजबूती। बलिष्ठता। ७ मेल। मुआफिकत। सामंजस्य। अनुकूलता। ८ शरीर। देह। ९ कवच। बक्तर। वर्म। १० शरीर का मर्दन। मालिश।

संहनन²--वि० १ हंता। हनन करनेवाला। विनाशक। २ ठोस। दृढ। ३ मजबूत या दृढ करनेवाला। ४ एक दूसरे से टकरानेवाला [को०]।

संहननीय--वि० [सं०] १ दृढ। मजबूत। मिला हुआ। २ जो संहनन के योग्य हो [को०]।

संहरण--संज्ञा पुं० [सं०] १ एक साथ करना। बटोरना। एकत्र करना। संग्रह करना। २ एक साथ बाँधना। गूँथना (केशों का)। ३ जबरदस्ती ले लेना। छीनना। ४ लौटा लेना। जैसे, अभिमंत्रित अस्त्र या माया आदि। समेटना। संकुचित करना (को०)। ५ अवरोध करना। रोकना। ६ संहार करना। नाश करना। ध्वंस करना। ७ प्रलय।

संहरना⁹¹--क्रि० अ० [सं० संहार] नष्ट होना। संहार होना।

संहरना⁹²--क्रि० स० [सं० संहरण] संहार करना। ध्वंस करना। उ०--सुरनायक सो संहरी परम पापिनी वाम।--केशव (शब्द०)।

संहर्तव्य--वि० [सं०] १ संहरण के योग्य या जिसका संहरण किया जाय। २ एकत्र करने योग्य। ३ पहले जैसा करने योग्य। वापस करने लायक [को०]।

**सहर्त्ता**—वि० संज्ञा पुं० [सं० सहर्तृ] [स्त्री० सहर्त्री] १ इकट्ठा करनेवाला। बटोरने या समेटनेवाला। एकत्र करनेवाला। २ नाश करनेवाला। ३ वध करनेवाला। मारनेवाला।

**सहर्ष**—संज्ञा पुं० [सं०] १ उमग से रोओं का खड़ा होना। पुलक। उमग। २ भय से रोंगटे खड़े होना। ३ चढ़ा ऊपरी। एक दूसरे से बढ़ने की चाह। स्पर्द्धा। लाग डाँट। होड़। ४ ईर्ष्या। डाह। ५ वायु। हवा (को०)। ६ प्रसन्नता। आनंद। हर्ष (को०)। ७ काम का वेग। कामोत्तेजना (को०)। ८ सघर्ष। रगड़। ९ मर्दन। शरीर की मालिश।

**सहर्षण**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सहर्षित, सहृष्ट] १ पुलकित होना। २ स्पर्द्धा। लाग डाँट। चढ़ा ऊपरी।

**सहर्षण**[2]—वि० [वि० स्त्री० सहर्षिणी] पुलकित करनेवाला। आनंद से प्रफुल्लित करनेवाला।

**सहर्षा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पित्तपापड़ा। पर्पटक। शाहतरा।

**सहर्षित**—वि० [सं०] पुलकित। रोमांचित।

**सहर्षी**—वि० [सं० सहर्षिन्] [वि० स्त्री० सहर्षिणी] १ पुलकित होनेवाला। २ पुलकित करनेवाला। ३ स्पर्द्धा या ईर्ष्या करनेवाला।

**सहवन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ चार मकानों का चौकोर समूह। २ साथ मिलकर हवन करना। ३ उचित या ठीक ढंग से यज्ञादि करना। यथोचित रीति या सरणि से यज्ञ करना (को०)।

**संहात**—संज्ञा पुं० [सं०] १ संघात। समूह। जमावड़ा। वि० दे० 'संघात'। २ एक नरक का नाम। ३ शिव के एक गण का नाम।

**सहात्य**—संज्ञा पुं० [सं०] समझौते की शर्तों का परित्याग। संधि की शर्तों को न मानना या भंग करना (को०)।

**सहार**—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक साथ करना। इकट्ठा करना। समेटना। २ संग्रह। संचय। ३ संकोच। आकुंचन। सिकुड़ना। ४ समेटकर बाँधना। गूँथना (केशों का)। जैसे, केश-संहार। ५ छोड़े हुए बाण को फिर वापस लेना। ६ सुश्रासा। सार। संक्षेप करना। ७ नाश। ध्वंस। ८ समाप्ति। अंत। खातमा। जैसे,—रूपक के किसी अंक या रूपक का। काव्य-संहार। ९ कल्पांत। प्रलय। १० एक नरक का नाम। ११ कौशल। निपुणता। १२ व्यर्थ करने की क्रिया। निवारण। परिहार। रोक। जैसे,—किसी अस्त्र का संहार। १३ उच्चारण संबंधी एक दोष (को०)। १४ झुंड। समूह (को०)। १५ अभ्यास। निरंतर प्रवृत्ति (को०)। १६ भीतर की ओर करना। अंदर करना। सिकोड़ना। जैसे,—हाथी द्वारा अपनी सूँड़ (को०)। १७ संहारक। संहर्ता (को०)। १८ एक असुर (को०)।

**सहारक**—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संहारिका] १ संहार करनेवाला। संहर्ता। नाशक। २ संक्षेपण करनेवाला। संक्षिप्तकर्ता (को०)। ३ संग्रहकर्ता। एकत्र करनेवाला।

**सहारकारी**—वि० [सं० संहारकारिन्] [वि० स्त्री० संहारकारिणी] संहार या नाश करनेवाला।

**सहारकाल**—संज्ञा पुं० [सं०] विश्व के नाश का समय। प्रलयकाल। उ०—प्रबल बलिष्ठ खर को मारग न आयो। संहार काल जनु काल दरसात आयो।—केशव (शब्द०)।

**सहारना**‡—क्रि० स० [सं० संहरण] १ मार डालना। उ०—ग्राहि धनुष गगन लगाना। क्रोधि धनुष कालासुर मारा।—जायसी (शब्द०)। २ नाश करना। ध्वंस करना।

**सहार भैरव**—संज्ञा पुं० [सं०] भैरव के आठ रूपों या मूर्तियों में से एक। कालभैरव।

**सहार मुद्रा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] तांत्रिक पूजन में अंगों की एक प्रकार की स्थिति, जिसे विसर्जन मुद्रा भी कहते हैं।

**सहारिक**—वि० [सं०] सब कुछ संहार करनेवाला।

**सहारी**—वि० [सं० संहारिन्] नाश करनेवाला। विनाश करनेवाला। संहार करनेवाला (को०)।

**सहार्य**—वि० [सं०] १ समेटने या बटोरने योग्य। संग्रह करने योग्य। इकट्ठा करने लायक। २ एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर करने योग्य। हटाने लायक। ले जाने लायक। ३ जिसे ले जाया गया हो। ४ रोकने योग्य। निवारण या परिहार के योग्य। ५ जिसे रोकना हो। जिसका निवारण या परिहार करना हो। ६ फुसलाने या बहकाने योग्य। ७ जिसका किसी पर हक या अधिकार हो (को०)।

**सहित**—वि० [सं०] १ एक साथ किया हुआ। एकत्र किया हुआ। बटोरा हुआ। समेटा हुआ। २ संमिलित। मिलाया हुआ। ३ जुड़ा हुआ। लगा हुआ। संबद्ध। ४ संयुक्त। सहित। अन्वित। पूर्ण। ५ मेल में आया हुआ। हेल मेलवाला। मैत्री। ६ क्रम या परंपरागत संबंध या लगाव रखनेवाला। ७ लगा हुआ। संधान के लिये जो धनुष पर लगा गया हो (को०)। ८ प्रकृत (को०)। ९ स्थित। निहित (को०)।

**सहित पुष्पिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सोआ नाम का साग। २ धनिया।

**सहिता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मेल। मिलावट। संयोग। २ पाणिनि व्याकरण का एक पारिभाषिक शब्द जिसके अनुसार दो वर्णों का परस्पर अत्यंत (परम) सन्निकर्ष होता है। संधि। ३ ऋग्वेदादि चारों वेदों के मंत्रों का संकलन और उनके पदों का विशेष रीति का (जिसमें व्याकरणानुसारी संधि की गई हो) पाठ। वह ग्रंथ जिसमें पदपाठ आदि का क्रम नियमानुसार रखा गया हो। कोई ग्रंथ जिसका पाठ प्राचीन काल से गृहीत चला आता हो। जैसे—मनु, अत्रि आदि की धर्मसंहिताएँ या स्मृतियाँ।

विशेष—स्मृति या धर्मशास्त्र संबंधी १९ संहिताएँ कही जाती हैं जिनमें मनु, अत्रि, विष्णु, हारीत, कात्यायन, बृहस्पति, नारद, पराशर, व्यास, दक्ष, गौतम आदि प्रसिद्ध हैं। रामायण को भी कभी कभी संहिता कह देते हैं। वेदव्यास कृत एक 'पुराण संहिता' का भी उल्लेख मिलता है (दे० 'पुराण')। इसके अतिरिक्त और विषयों के ग्रंथ भी संहिता कहे जाते हैं। जैसे—भृगुसंहिता (फलित ज्योतिष), गर्गसंहिता (कृष्ण की कथा) आदि।

४ सकलन। मग्रह। मचय (को०)। ५ नियमानुसार विशिष्ट रूप मे क्रमबद्ध गद्य पद्य आदि का सग्रह (को०)। ६ ससार का भरणपोषण करनेवाली परम शक्ति (को०)। ७ वेदो का मत्र भाग। मुख्य वेद। विशेष दे० 'वेद'।

यौ०—सहिताकार=सहिता का रचयिता। सहितापाठ=वेद के मत्रो का सुव्यवस्थित क्रम।

सहिति—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक साथ रखना। लगाव या सपर्क-स्थापन [को०]।

सहूति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ शोर। हल्ला। २ एक साथ पुकारना। एक साथ चिल्लाना [को०]।

सहृत—वि० [स०] एकत्र किया हुआ। समेटा हुआ। २ सगृहीत। जुटाया हुआ। ३ नष्ट। ध्वस्त। ४ समाप्त। खत्म। ५ निवारित। रोका हुआ। ६ जिसे सक्षिप्त किया गया हो। सकुचित (को०)। ७ अपहृत (को०)।

सहृति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ बटोरने या समेटने की क्रिया। २ सग्रह। जुटाव। ३ नाश। ध्वस। ४ प्रलय। ५ अत। समाप्ति। ६ रोक। परिहार। ७ सक्षेप। खुलासा। ८ ग्रहण। धारण (को०)। ९ हरण। छीनना। लूट खसोट।

सहृषित—वि [स०] १ पुलकित। रोमाचित। सहर्षित। २ भय के कारण जड या निश्चेष्ट [को०]।

सहृष्ट—वि० [स०] १ अचित। खडा (रोम)। २ जिसके रोएँ उमग से खडे हो। पुलकित। प्रफुल्ल। ३ जिसके रोगटे डर से खडे हो। डरा हुआ। भीत। ४ प्रतिस्पर्धा के कारण दीप्त (को०)। ५ प्रज्वलित। जलता हुआ। प्रदीप्त (अग्नि)।

यौ०—सहृष्टमना=प्रसन्नमना। हर्षित हृदय। सहृष्टरोमाग, सहृष्टरोमा=प्रसन्नता के कारण जिसके शरीर के रोएँ खडे हो। सहृष्टवत्=प्रसन्नता या उल्लासपूर्वक। सहृष्टवदन=जिसका चेहरा प्रसन्नता से खिल या दमक रहा हो।

सहृष्टी—वि० [स० सहृष्टिन्] उत्तेजित। उत्थित। खडा। जैसे—पुरुष की जननेद्रिय [को०]।

सह्लाद—सज्ञा पुं० [स०] १ ऊँचा स्वर। चीख। २ एक असुर जो हिरण्यकशिपु का पुत्र था। ३ शोर। कोलाहल।

सह्लादन—सज्ञा पुं० [स०] चिल्लाना। कोलाहल करना। शोर मचाना। चीखना।

सह्लीण—वि० [स०] १ पूर्णतया लज्जित या शर्मिदा। २ सकोचशील। सलज्ज [को०]।

सह्लाद—सज्ञा पुं० [सं०] १ आनद विशेष। २ दे० 'सह्लाद' [को०]।

सह्लादी—वि [सं० सह्लादिन्] प्रसन्नता से भरा हुआ। प्रफुल्ल। हर्षित। आनदयुक्त [को०]।

सँइनना†—क्रि० स० [स० सञ्चय] १ लीपना। पोतना। चौका लगाना। २ सचय करना। ३ सुरक्षित रखना। ठिकाने से रखना। सहेजकर रखना। ४ यह देखना कि जितना और जैसा चाहिए, उतना और वैसा है या नही। सहेजना।



सउपना(पु)†—क्रि० स० [स० समर्पण, प्रा० समप्पण, हि० सौंपना] दे० 'सौंपना'।

सँकरा[१]—वि० [स० सङ्कीर्ण] [वि० स्त्री० सँकरी] जो अधिक चौडा या विस्तृत न हो। पतला और तग। जैसे,—सँकरा रास्ता।

सँकरा[२]—सज्ञा पुं० कष्ट। दुख। विपत्ति।

मुहा०—सँकरे मे पडना=दुख मे पडना। कष्ट मे पडना।

सँकरा(पु)†[३]—सज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खला] शृखला। साँकल। सीकड। जजीर। उ०—घुँघरवार अलक विष भरे। सँकरे प्रेम चहहुँ गये परे।—जायसी (शब्द०)।

सँकरा[४]—सज्ञा पुं० [स० शङ्कराभरण] एक राग। दे० 'शकराभरण'।

सँकराना[१]—क्रि० स० [हिं० सँकरा+आना (प्रत्य०)] १ सकुचित करना। तग करना। २ बद करना।

सँकराना†[२]—क्रि० अ० सकुचित या सकीर्ण होना। जैसे,—यह रास्ता आगे चलकर सँकरा गया है।

सँकलपना(पु)†—क्रि० अ० [स० सङ्कल्प] सकल्प करना। त्याग करना। छोड देना। उ०—सुख सँकलपि दुख साँवर लीन्हेउ।—पदमावत, पृ० १३७।

सँकाना(पु)†—क्रि० अ० [सं० शङ्क] शकित होना। भीत होना। डरना। उ०—मुँह मिठास दृग चीकने, भौह सरल सुभाय। तऊ खरे आदर खरी, छिन छिन हियो सँकाय।—बिहारी (शब्द०)।

सँकारा(पु)—सज्ञा पुं० [सं० सकाल] प्रात काल। उष काल। उ०—वहै पुकारहि साँझ सकारा।—पदमावत, पृ० १०८।

सँकुचना—क्रि० अ० [हि० सकुचना] सकुचित होना। दे० 'सकुचना'।

सँकुचाना—क्रि० अ० [हिं० सकुचाना] दे० 'सकुचाना'।

सँकेत†—वि० [हिं०] १ दे० 'सँकरा'। २ दे० 'सकेत'[१]।

सँकेतना[१]—क्रि० स० [स० सङ्कीर्ण] सकट मे डालना। कष्ट मे डालना। आपत्ति मे डालना। उ०—भएउ चेत, चेतन चित चेता। नैन झरोखे जीव सँकेता।—जायसी (शब्द०)।

सकेतना(पु)†[२]—क्रि० अ० सकीर्ण होना। सकुचित होना। मुँदना। उ०—कवल सँकेता कुमुदिनि फूली। चकई बिछुरि अचक मन भूली।—पदमावत, पृ० ५८२।

सँकेलना†—क्रि० स० [स० सङ्कलन] खीचकर एकत्र करना। समेटना। उ०—मानहु तिमिर अरुनमय रासी। बिरची बिधि सँकेलि सुखमा सी।—मानस, २।२३९। (ख) आएउ इहाँ समाज सँकेली।—मानस, २।२६७।

सँकोच—सज्ञा पु० [स० सङ्कोच] दे० 'सकोच'। उ०—नीच कीच बिच मगन जस मीनहि सलिल सँकोच।—मानस, २।२५१।

सँकोचना[१]—क्रि० स० [सं० सङ्कोच] सकुचित करना। सकोच करना। उ०—नीद न परनि राति प्रेम पनु एक भाँति सोचत सँकोचत बिरचि हरि हर कै।—तुलसी (शब्द०)।

सँकोचना[२]—क्रि० अ० सकुचित होना।

सँझवाती घनसार नीर चदन सो वारि लीजियत न अनल चहियतु है।—हृदयराम (शब्द०)। २ वह गीत जो सध्या समय गाया जाता है। प्राय यह विवाह के अवसर पर होता है।

सँझवाती[२]—वि० सध्या सबधी। सध्या का।

सँझिया, सँझैया—सज्ञा पुं० [सं० सन्ध्या] वह भोजन जो सध्या के समय किया जाता है। रात्रि का भोजन।

सँझोखा—सज्ञा पुं० [सं० सन्ध्या] दे० 'सँझोखे'।

सँझोखे(पु)—सज्ञा स्त्री० [सं० सन्ध्या] सध्या का समय। शाम का वक्त। उ०—गोप अथाइनि ते उठे गोरज छाई गैल। चलि बलि अलि अभिसारिके भली सझोखे सैल।—बिहारी (शब्द०)।

सँझौती‡—सज्ञा स्त्री०, वि० [हिं० सझा+औती (प्रत्य०) दे० 'सँझवाती'।

सँटिया—सज्ञा स्त्री० [देश०] बाँस की लबी पतली छडी। साँटी। पतला बेत या छडी। उ०—सँटिया लिए हाथ नँदरानी थरथरात रिस गात।—सूर०, १०।३४१।

सँठ[१]—सज्ञा पुं० [सं० शान्त] शाति। निस्तब्धता। खामोशी।

मुहा०—सँठ मारना = चुपकी साधना। चुप रहना। कुछ न बोलना। न बोलना।

सँठ[२]—सज्ञा पुं० [सं० शठ] १ शठ। धूर्त। २ नीच। वाहियात।

सँड़सा—सज्ञा पुं० [सं० सन्दश] [स्त्री० अल्पा० सडसी] लोहे का एक औजार जो दो छडो से बनता है। गहुआ। जबूरा।

विशेष—इसके एक सिरे पर थोडा सा छोडकर दोनो छडो को आपस मे कील से जड देते है। प्राय इसे लोहार गरम लोहा आदि पकडने के लिये रखते है।

सँड़सी—सज्ञा स्त्री० [सं० सन्दश] पतले छडो का एक प्रकार का सँडसा। जंबूरी।

विशेष—इसके दोनो छडो का अगला भाग अर्ध वृत्ताकार मुडा हुआ होता है। इसमे पकडकर प्राय चूल्हे पर से गरम बटुली आदि गोल मुँहवाले बरतन उतारते है।

सँडाई†—सज्ञा स्त्री० [हिं० साँड] दे० 'सडाई'।

सँडास(पु)†[१]—सज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सँडासी'।

सँड़ास‡[२]—सज्ञा स्त्री० [हिं०] सँडी हुई वस्तु को गध। सँडाँध।

सँड़ासी†—सज्ञा स्त्री० [सं० सन्दशिका] दे० 'सँडसी'। उ०—खिन खिन जीव सँडासिन्ह आँका। आवहि डाँव छुवावहि बाँका।—पदमावत, पृ० ७०३।

सँतरंज(पु)—सज्ञा पुं० [अ० शतरज, तुल० सं० चतुरङ्ग] दे० 'शतरज'। उ०—भया सूर परसन भा राजा। साहि खेल सँतरँज कर साधा।—पदमावत, पृ० ६१२।

सँदेस(पु)†—सज्ञा पुं० [सं० सन्देश] दे० 'सँदेसा'। उ०—पितु सँदेस सुनि कृपानिधाना।—मानस, २।९७।

सँदेसड़ा(पु)†—सज्ञा पुं० [हिं० सदेस+डा (प्रत्य०)] दे० 'सँदेसा'। उ०—पिउ सौ कहेहुँ सँदेसडा, हे भौरा! हे काग।—जायसी ग्र०, पृ० १५४।

सँदेसरा(पु)†—सज्ञा पुं० [हिं० सदेस+रा (प्रत्य०)] दे० 'सँदेसा'। उ०—जब लगि कह न सँदेसरा ना ओहि भूख न प्यास।—पदमावत, पृ० ३६५।

सँदेसा—सज्ञा पुं० [सं० सन्देश] किसी के द्वारा जबानी कहलाया हुआ समाचार आदि। खबर। हालचाल।

क्रि० प्र०—आना।—जाना।—पाना।—भेजना।—मिलना।

सँदसी†—सज्ञा पुं० [हिं० सदेसा+ई (प्रत्य०)] वह जो सदेसा ले जाता हो। सदेशवाहक। बसीठ।—उ०—राजा जाइ तहाँ वहि लागा। जहाँ न कोइ सँदेसी कागा।—जायसी (शब्द०)।

सँदेहिल(पु)—वि० [सं० सदेह+हिं०, इल (प्रत्य०)] सदेहास्पद। सदेहयुक्त। उ०—नाम धर्यो सदिग्ध पद सब्द सदेहिल जासु।—भिखारी० ग्र०, भा० २, पृ० २२२।

सँपुटो(पु)—सज्ञा स्त्री० [सं० सम्पुट] कटोरी। प्याली।

सँपूरन—वि० [सं० सम्पूर्ण] १ पूर्ण। उ०—अष्टम मास सँपूरन होई।—सूर०, ३।१३। २ सफल। सिद्ध। ३ समाप्त (को०)।

सँपेरा—सज्ञा पुं० [हिं० साँप+एरा (प्रत्य०)] [स्त्री० सँपेरिन] साँप पालनेवाला आदमी। मदारी। साँप का तमाशा दिखलानेवाला।

सँपोला—सज्ञा पुं० [हिं० साँप+ओला (अल्पा० प्रत्य०)] साप का बच्चा।

मुहा०—सँपोला पालना = ऐसे व्यक्ति को प्रश्रय देना जो आगे चलकर उसी पर वार करे। नितराम् अविश्वसनीय व्यक्ति को प्रश्रय देना।

सँपोलिया—सज्ञा पुं० [हिं० साँप+वाला] १ साँप पकडनेवाला। सँपेरा।† २ दे० 'सँपोली'—२।

सँपोली—सज्ञा स्त्री० [हिं० साँप+ओली (प्रत्य०)] १ वह पिटारी जिसमे सँपेरे साँप रखते है। २ बाँस के पोर पर से सूखकर अलग हो जानेवाली सूप के आकार की खोल। सुपेली।

सँभरना(पु)†—क्रि० अ० [हिं० सँभलना] दे० 'सँभलना'।

सँभलना—क्रि० अ० [हिं० सँभालना] १ किसी बोझ आदि का ऊपर लदा रह सकना। पकड मे रहना। थामा जा सकना। जैसे,—यह बोझ तुमसे नही सभलेगा। २ किसी सहारे पर रुका रह सकना। आधार पर ठहरा रहना। जैसे,—इस खभे पर यह पत्थर नही सँभलेगा। ३ होशियार होना। सचेत होना। सावधान होना। जैसे,—इन ठगो के बीच सँभल कर रहना। ४ चोट या हानि से बचाव करना। गिरने पडने से रुकना। जैसे,—वह गिरते गिरते सँभल गया। ५ बुरी दशा को फिर सुधार लेना। जैसे,—इस रोजगार मे इतना घाटा उठाओगे कि सँभलना कठिन होगा। ६ कार्य का भार उठाया जाना। निर्वाह सभव होना। जैसे,—हमसे इतना खर्च नहीं सँभलेगा। ७. स्वस्थता प्राप्त करना। आरोग्य लाभ करना। चगा होना। जैसे,—बीमारी तो बहुत कडी पाई, पर अब सँभल रहे हैं।

सँभला†—सज्ञा पुं० [हिं० सँभलना] एक बार बिगडकर फिर सुधरी हुई फसल।

सँभार(पु)†—सज्ञा पुं० [हिं० सँभालना, सं० सम्भार] १ देखरेख। खबरदारी। निगरानी। २ पालन पोषण। उ०—करिय सँभार कोसलराइ।—तुलसी (शब्द०)।

यौ०—सार सँभार=पालन पोषण और निरीक्षण का भार। उ०—सब कर सार सँभार गोसाईं।—तुलसी (शब्द०)। ३ वश मे रखने का भाव। रोक। निरोध। उ०—रे नृप बालक कालबस बोलत तोहि न सँभार।—तुलसी (शब्द०)। ४ तन बदन की सुधि। होश हवास। ५ तैयारी (क्व०)।

सँभारना(पु)†—क्रि० स० [सं० सम्भार] १ दे० 'सँभालना'। २ याद करना। स्मरण करना। मन मे इकट्ठा करके लाना। उ०—बदि पितर सब सुकृत सँभारे। जो कुछ पुन्य प्रभाव हमारे। तौ सिव धनुष मृनाल की नाई। तोरहिं राम, गनेस गोसाई।—तुलसी (शब्द०)।

सँभाल—सज्ञा स्त्री० [सं० सम्भार] १ रक्षा। हिफाजत। २ पोषण का भार। देखरेख। निगरानी। ४ प्रबध। इतजाम। जैसे,—घर की सँभाल वही करता है। ५ तन बदन की सुध। होश हवास। चेत। आपा। जैसे,—वह इतना विकल हुआ कि शरीर की सँभाल न रही।

सँभालना—क्रि० स० [सं० सम्भार]१ भार को ऊपर ठहराना। बोझ ऊपर रखे रहना। भार ऊपर ले सकना। जैसे,—इतना भारी बोझ कैसे सँभालोगे। २ रोक या पकड मे रखना। इस प्रकार थामे रहना कि छूटने या भागने न पावे। रोके रहना। काबू मे रखना। जैसे,—सँभालो, नही तो छूटकर भाग जायगा। ३ किसी वस्तु को अपनी जगह से हटने, गिरने पडने, खिसकने आदि से रोकना। यथास्थान रखना। च्युत न होने देना। थामना। जैसे—टोपी सँभालना, धोती सँभालना। ४ गिरने पडने से रोकने के लिये सहारा देना। गिरने से बचाना। जैसे,—मैने सँभाल लिया, नही तो वह गिर पडता। ५. रक्षा करना। हिफाजत करना। नष्ट होने या खो जाने से बचाना। जैसे,—इस पुस्तक को बहुत सँभालकर रखना। ६ बुरी दशा को प्राप्त होने से बचाना। बिगडी दशा मे सहायता करना। खराबी से बचाना। उद्धार करना। जैसे,—उसने बडे बुरे दिनो मे सँभाला है। ७ पालन पोषण करना। परवरिश करना। ८ देखरेख करना। निगरानी करना। ९ प्रबध करना। इतजाम करना। व्यवस्था करना। जैसे,—घर सँभालना। १० निर्वाह करना किसी कार्य का भार अपने ऊपर लेना। चलाना। जैसे,—उसका खर्च हम नही सँभाल सकते। ११ दशा बिगडने से बचाना। रोग, व्याधि, आपत्ति इत्यादि की रोक करना। जैसे,—बीमारी बढ जाने पर सँभालना कठिन हो जाता है। १२ कोई वस्तु ठीक ठीक है, इसका इतमीनान कर लेना। सहेजना। जैसे—देखो १००) है, इन्हे सँभालो। १३ स्मरण करना। याद करना। दे० 'सँभारना'। १४ किसी मनोवेग को रोकना। जोश थामना। जैसे,—उसकी कडी बाते सुनकर मै अपने को सँभाल न सका।

सयो० क्रि०—देना।—लेना।

सँभाला—सज्ञा पुं० [हिं० सँभालना] जीवन की ज्योति का बुझने के पूर्व टिमटिमा उठना। मरने के पहले कुछ चेतनता सी आ जाना। चैतन्य बाई होना। जैसे,—कल सभाला लिया था, आज मर गया।

क्रि० प्र०—लेना।

सँभालू—सज्ञा पु० [हिं० सिंधुवार] श्वेत सिंधुवार वृक्ष। मेउडी।

सँयोना पु—क्रि० स० [हिं० सँजोना अथवा सं० सयोजन] दे० 'सँजोना'।

सँवर(पु)†—सज्ञा स्त्री० [सं० स्मरण] १ याद। स्मरण। स्मृति। २ खबर। हाल चाल।

सँवरना१—क्रि० अ० [सं० सम् √वृ > सवरण (= व्यवस्थित करना)] १ बनाना। दुरुस्त होना। २ सजना। अलकृत होना।

सँवरना(पु)२—क्रि० स० [सं० स्मरण, हिं० सुमिरना] याद करना। उ०—सँवरौं आदि एक करतारू।—जायसी (शब्द०)।

सँवरा‡—वि० [हिं० साँवला] दे० 'साँवला'।

सँवरिया—वि० [हिं० साँवला + इया (प्रत्य०)] दे० 'साँवला'। उ०—बिरिख सँवरिया दहिने बोला।—जायसी (शब्द०)।

सँवाँ†१—सज्ञा पुं० [सं० श्यामाक] साँवाँ नाम का अन्न।

सँवाँ†२—वि० [सं० समान] समान। सदृश। तुल्य।

सँवाग‡—सज्ञा पुं० [हिं० स्वाँग] रूप बदलना। भेष बदलना। उ०—भीख लेहि जोगिनि फिर माँगू। केतन पाइय किए सँवागू।—पदमावत, पृ० ६०५।

सँवार(पु)†१—सज्ञा स्त्री० [सं० सवाद या स्मरण] हाल। समाचार। उ०—पुनि रे सँवार कहेसि अरु दूजी। जो बनि दीन्ह देवतन्ह दूजी।—जायसी (शब्द०)।

सँवार२—सज्ञा स्त्री० [हिं० सँवारना] १ सँवारने की क्रिया या भाव। २ एक प्रकार का शाप या गाली।

विशेष—कभी कभी लोग यह न कहकर कि 'तुम पर खुदा की मार या फटकार' प्राय 'तुम पर खुदा की सँवार' कह दिया करते हैं।

सँवारना—क्रि० स० [सं० सम्वर्णन या सवरण] १ सजाना। अलकृत करना। उ०—कठ कठुला नीलमनि अभोज माल सँवारि।—सूर०, १०।१६६। २ दुरुस्त करना। ठीक करना। उ०—सो देही नित देखि के चोच सँवारे काग।—कविता कौ०, भा०, १, पृ० १६७। ३ क्रम से रखना। ठीक ठीक लगाना। ४ कार्य सुचारु रूप से सपन्न करना। काम ठीक करना।

मुहा०—बिगडी सँवारना = बिगडी बात बनाना।

सँहरना पु—क्रि० अ० [सं० सहार] नष्ट होना। उ०—हैहय मारे नृपजन सँहरे। सो जस लै किन जुग जुग जीजै।—केशव (शब्द०)।

सँहारना(पु)—क्रि० स० [सं० सहरण] दे० 'सहारना'। उ०—उहाँ तो खड्ग नरदइ मारो। इहाँ तो बिरह तुम्हार सँहारो।—जायसी (शब्द०)।

सं१—सज्ञा पुं० [सं०] १ ईश्वर।। २ शिव। महादेव। ३ साँप। ४ पक्षी। चिडिया। ५ वायु। हवा। ६ जीवात्मा। ७ चद्रमा। ८ भृगु। ९ दीप्ति। काति। चमक। १० ज्ञान। ११ चिंता। १२ गाडी का रास्ता। सडक। १३ सगीत मे पडज स्वर

का सूचक अक्षर। जैसे,—रे, ग, म, ध, नि, स। १४ छंदशास्त्र मे 'सगण' शब्द का सूचक अक्षर या संक्षिप्त रूप। दे० 'सगण'। १५ घेरा। बाड (को०)।

स²—उप० एक उपसर्ग जिसका प्रयोग शब्दो के आरभ मे, कुछ विशिष्ट अर्थ उत्पन्न करने के लिये होता है। जैसे,—(क) बहुव्रीहि समास मे 'सह' के अर्थ मे। जैसे, —सजीव = सह + जीव। सपरिवार = सह + परिवार। (ख) 'स्व' या एक ही' के अर्थ मे। जैसे,—सगोत्र। (ग) 'सु' के स्थान मे। जैसे,—सपूत।

सआदत—संज्ञा स्त्री० [अ० सआदत] १ भलाई। कल्याण। २ प्रताप। इकबाल। ३ बरकत। शुभ होने का भाव [को०]।

यौ०—सआदतमद = (१) सौभाग्यशील। (२) आज्ञापालक। सआदतमदी = सआदतमद होने का भाव।

सइ पु¹—अव्य० [स० सह] से। साथ।

सइ पु²—अव्य० [प्रा० सु तो] एक विभक्ति जो करण और अपादान कारक का चिह्न है।

सइअन†—संज्ञा पु० [स० शोभाञ्जन, हि० सहिजन] दे० 'सहिजन'।

सइन†—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धि] नाड़ी का व्रण। नासूर।

सइना पु—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेना] दे० 'सेना'।

सइयो पु†—संज्ञा स्त्री० [सं० सखी, प्रा० सहीयो] सखी। सहेली।

सइल†¹—संज्ञा स्त्री० [स० शल्य] लकडी की वह खूँटी या गुल्ली जो गाडी के कँधावर मे लगाई जाती है। इसके लगने से बैल की गरदन दो सैलो के बीच रहरी मे ठहरी रहती है और वह इधर उधर नही हो सकता। कभी कभी यह लोहे की भी होती है। समदूल। सैला। घुल्ला।

सइल पु²—संज्ञा पुं० [स० शैल] दे० 'शैल'। उ०—मत्तभट मुकुट दसकध साहस सइल सृ ग बिद्दरनि जनु वज्र टाँकी।—तुलसी ग्र०, पृ० १९३।

सइवर†—संज्ञा पुं० [सं० शैवल] सेवार। शैवाल।

सई¹—संज्ञा स्त्री० [अ० सही] मल्लाहो की परिभाषा मे नाव खीचने की गून को कडा करना।

सई²—संज्ञा पुं० [अ०] पराक्रम। प्रयत्न। कोशिश।

यौ०—सई सिफारिश = दौड़धूप या कोशिश पैरवी।

सई पु³—संज्ञा स्त्री० [स० श्री] वृद्धि। बरकत। उ०—खग मृग सबर निसाचर सब की पूँजी बिनु बाढी सई।—तुलसी (शब्द०)।

सई†⁴—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक नदी का नाम जो शाहजहाँपुर से निकल कर जौनपुर मे गोमती से मिलती है। उ०—सई तीर बसि चले बिहाने। शृगबेरपुर सब निअराने।—मानस, २।१८९।

सई†⁵—संज्ञा स्त्री० [स० सखी, प्रा० सही] दे० 'सखी'।

सईकटा—संज्ञा पुं० [स० शतकण्टक या सकण्टक] एक प्रकार पेड।

सईद—वि० [अ०] १ तेजस्वी। २ भाग्यशाली। खुशनसीब। ३ कल्याणकारी। मागलिक। शुभ [को०]।

सईल—संज्ञा स्त्री० [सं० शैल, प्रा० सइल] दे० 'सइल'।

सईस—संज्ञा पुं० [अ० साइस] दे० 'साईस'।

सउँ पु—अव्य० [हिं० सों] दे० 'सों'।

सउख†—संज्ञा पु० [अ० शौक] दे० 'शौक'।

सउजा†—संज्ञा पु० [स० शावक या देशी] आखेट करने योग्य जतु। शिकार। साउज।

सउत†—संज्ञा स्त्री० [स० सपत्नी] दे० 'सौत'।

सउतिया†—संज्ञा स्त्री० [हि० सउत + इया (प्रत्य०)] दे० 'सौत'।

सउतेला†—वि० [हि० सौत + एला (प्रत्य०) तेला] दे० 'सौतेला'।

सऊर—संज्ञा पुं० [अ० शुऊर] दे० 'शउर'।

सककूर—संज्ञा पुं० [रूमी सकन्कूर, अ० सकन्कूर] गोह की तरह का एक जतु।

विशेष—इसका रग लाल या पीला होता है। इसका मास खारा और फीका होता है, पर बहुत बलवर्धक माना जाता है। इसे रेत की मछली या रेगमाही भी कहते है।

सकटक¹—संज्ञा पुं० [स० सकण्टक] १ करज वृक्ष। कजा। पूति करज। दुर्गधकरज। २ सिवार। शैवाल। सेवार।

सकटक²—वि० १ कंटकयुक्त। काँटो से भरा हुआ। कँटीला। २ खतरनाक। कष्टदायी [को०]।

सकपन—वि० [स० सकम्पन] १ जो कपन के साथ हो। २ कपनयुक्त। काँपता हुआ [को०]।

सक†¹—संज्ञा पुं० [स० शक] दे० 'शक'।

सक²—संज्ञा स्त्री० [हि० शक्ति, सकत] दे० 'शक्ति', 'सकत'।

सक पु³—संज्ञा पुं० [अ० शक] सदेह। शका शक।

सक पु⁴—संज्ञा पु० [स० शाका] साका। धाक।

मुहा०—सक बाँधना = (१) धाक बाँधना। (२) मर्यादा स्थापित करना।

यौ०—सकबधी = धाक बाँधने या मर्यादा स्थापित करनेवाला। उ०—हौ सो रतनसेन सकबधी। राहु बेधि जीता सैरधी।—जायसी (शब्द०)।

सकट¹—संज्ञा पुं० [स० शकट] शकट। गाडी। छकडा। सग्गड। उ०—कोटि भार सकटनि महँ भरि कै। भए पठावत आनँद करि कै।—गिरिधरदास (शब्द०)।

सकट²—संज्ञा पुं० [स०] शाखोट वृक्ष। सिहोर।

सकट³—वि० अधम। जघन्य। नीच। बुरा [को०]।

सकटान्न—संज्ञा पुं० [स०] जिसे किसी प्रकार का अशौच हो, उसका अन्न। अशौचान्न। अशुद्ध अन्न।

विशेष—शास्त्रो मे इस प्रकार का अन्न खाने का निषेध है, और कहा गया है कि जो ऐसा अन्न खाता है, उसे भी अशौच हो जाता है।

सकटी—संज्ञा स्त्री० [सं० शकटी] १ गाडी। २ छोटा सग्गड। डिं०)।

सकड़ी—संज्ञा स्त्री० [स० शृङ्खली] दे० 'सिकडी', 'सिकरी'।

सकत†¹—संज्ञा स्त्री० [स० शक्ति] १ बल। शक्ति। सामर्थ्य। ताकत। २ वैभव। सपत्ति।

**सकत** (पु)[2]—क्रि० वि० [स० शक्ति] जहाँ तक हो सके। भरसक। उ०—का तोहिं जीव मरावौं सकत आा। के दोस। जो नहिं बुझै समुदजल सो बुझाइ कित ओस।—जायसी (शब्द०)।

**सकता**[1]—संज्ञा स्त्री० [स० शक्ति] १ शक्ति। ताकत। २ सामर्थ्य। उ०—मिट्टी के बासन को इतनी सकता कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड सके। सच है जो बना हो सो अपने बनानेवाले को क्या सराहे।—इशाअल्लाह खाँ (शब्द०)।

**सकता**[2]—संज्ञा पुं० [अ० सकतह्] १ एक प्रकार का मानसिक रोग जिसमे रोगी बेहोश हो जाता है। बेहोशी की बीमारी। २ विराम। यति।

मुहा०—सकता पडना = छद मे यतिभग दोष होना। सकते का आलम = विस्मय से मुग्ध होने की स्थिति। स्तब्ध या ठक होना। सकते की हालत = भय आश्चर्य आदि मे स्तब्ध या निमग्न होने की स्थिति। बेहोशी की सी स्थिति। उ०—और हँसी का एक ऐसा ठहाका सुन पडा कि जिससे सबके सब सकते की हालत मे हो गए, मानो सबके होश हवास गायब हो गए हो, केवल शरीर वहाँ बठा हो।—पीतल०, भा० २, पृ० ६५।

**सकती**[1]—संज्ञा स्त्री० [स० शक्ति] १ शक्ति। बल। ताकत। २ शक्ति नामक अस्त्र। ३ दे० 'शक्ति'—८-१३। उ०—स्यो सकती दोउ सुप जीवत।—रामानद, पृ० १२।

**सकती** (पु)†[2]—संज्ञा स्त्री० [फा० सख्ती] कडाई। जोर जबरदस्ती। उ०—कवि किंचित् औसर जो अकती सकती नहो हाँ पर कीजिए जू। हम तो अपनो वर पूजती है सपने नहिं पीपर पूजिए जू।—कविता कौ०, भा० १, पृ० ४०३।

**सकन**—संज्ञा पुं० [देश०] लता कस्तूरी। मुश्कदाना।

**सकना**—क्रि० अ० [स० शक् या शक्य] कोई काम करने मे समर्थ होना। करने योग्य होना। जैसे,—खा सकना, चल सकना, कह सकना।

विशेष—इस क्रिया का व्यवहार सदा किसी दूसरी क्रिया के साथ सयोज्य क्रिया के रूप मे ही होता है, अलग नही होता। परतु बगाल मे कुछ लोग भूल से, या बँगला के प्रभाववश, कभी कभी अकेले भी इस क्रिया का व्यवहार कर बैठते हैं। जैसे,—हमसे नही सकेगा।

**सकपक**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ हिचक। २ चकपकाहट (को०)।

**सकपकाना**—क्रि० अ० [अनु० सकपक] १ चकपकाना। आश्चर्ययुक्त होना। २ हिचकना। आगापीछा करना। ३ लज्जित होना। शरमाना। ४ प्रेम, लज्जा या शका के कारण उदभूत एक प्रकार की चेष्टा। उ०—प्रथम समागम मे एहो कवि रघुनाथ कहा कहौं रावरो सो एतनी सकाई है। मिलिबे की चरचा सुनत ही सकपकाई स्वेद भरै तन परै मुखिया पियराई है।—रघुनाथ (शब्द०)। ५ हिलना। डोलना। लहराना। उ०—सकपकाहिं विष भरे पसारे। लहरि भरे लहकति अति कारे।—जायसी (शब्द०)।

**सकर** (पु)—वि० [स०] १ हस्तयुक्त। २ किरणयुक्त। ३ जिसके ऊपर कर लगा हो। ४ सूडवाला (हाथी) (को०)।

**सकर**—संज्ञा पुं० [अ० सकर] दोजख। नरक (को०)।

**सकर**[2]—संज्ञा स्त्री० [फा० शकर तुल० सं० शर्करा प्रा० सक्करा, अप० सक्कर 'जइ सक्कर सय खड थिय'—पुरानी हिंदी] शकरा। चीनी। खाँड।

**सकरकद**—संज्ञा पुं० [फा० शकरकद] दे० 'शकरकद'।

**सकरकदी**—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'शकरकद'।

**सकरकन**—संज्ञा पुं० [हि शकरकद] दे० 'शकरकद'।

**सकरखडो**†—संज्ञा स्त्री० [फा० शकर+हिं० खड+ई (प्रत्य०) तुल० सं० शर्कराखण्ड] लाल और बिना साफ की हुई चीनी। खाँड। शक्कर।

**सकरणक**—वि० [स०] जो शरीर के किसी अवयव द्वारा सवहन किया गया (को०)।

**सकरना**—क्रि० अ० [स० स्वीकरण] १ सकारा जाना। स्वीकृत या अगीकृत होना। मजूर होना। जैसे,—हुडी सकरना, दाम सकरना। २ कबूला जाना। माना जाना।

सयो० क्रि०—जाना।

**सकरपाला**—संज्ञा पुं० [फा० शकरपारा] १ शकरपारा नाम की मिठाई। वि० दे० 'शकरपाला'। २ एक प्रकार का कागुनी नीबू। ३ कपडे पर की एक प्रकार की सिलाई जो शकरपारे की आकृति की होती है। दे० 'शकरपारा'।

**सकरा**—वि० [स० सङ्कीर्ण, हिं० सँकरा] दे० 'सँकरा'।

**सकरिया**—संज्ञा स्त्री० [फा० शकर+हिं० इया] लाल शकरकद। रतालू।

**सकरुड**—संज्ञा पुं० [गुज०] सकुरुड या साकुड नाम का वृक्ष।

विशेष—इस वृक्ष की पत्तियों आदि का व्यवहार ओषधि के रूप मे होता है। वैद्यक के अनुसार यह कषाय, रुचिकर, दीपन और वातनाशक माना जाता है।

**सकरुण**—वि० [स०] १ जिसे करुणा हो। दयाशील। २ करुणा से भरा हुआ। करुणायुक्त। करुणार्द्र।

**सकरुन** (पु)—वि० [सं० सकरुण] १ सकरुण। दयाशील। २ करुणा से भरा हुआ। करुणार्द्र। उ०—सकरुन बचन सुनत भगवाना।—मानस, ६।६६।

**सकर्ण**[1]—संज्ञा पुं० [स०] वह जो सुनता या सुन सकता हो।

**सकर्ण**[2]—वि० [वि० स्त्री० सकर्णा, सकर्णी] १ कानवाला। जिसे कान हो।

**सकर्णक**—संज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

**सकर्णप्रावृत**—वि० [स०] जो कर्ण तक ढँका हुआ हो (को०)।

**सकर्तृक**—वि० [स०] १ कर्ता से युक्त। २ जिनके पास साधन हो। उपकरणवाला (को०)।

**सकर्मक**—वि० [स०] १ काम वाला। जिसके पास कार्य हो। २ कर्म कारक से युक्त। जैसे, सकर्मक क्रिया।

**सकर्मक क्रिया**—स्त्री० [स०] व्याकरण मे दो प्रकार की क्रियाओ मे से एक। वह क्रिया जिसका कार्य उसके कर्म पर समाप्त हो। जैसे,—'खाना'। खाने का कार्य उस वस्तु पर समाप्त होता

है, जो खाई जाती है, इसलिये यह सकर्मक क्रिया हुई। इसी प्रकार देना, लेना, मागना, उठाना आदि सकर्मक क्रियाएँ है।

सकर्मा--वि० [स० सकर्मन्] १ साथ साथ अथवा एक प्रकार का काम करनेवाला। २ दे० 'सकर्मक' [को०]।

सकल¹--वि० [स०] १ सब। सर्व। समस्त। कुल। २ कलाओ से युक्त (को०)। ३ मद और मधुर स्वरवाला (को०)। ४ जगत् से प्रभावित। ५ व्याज देनेवाला (को०)।

यौ०--सकलकामदुघ, सकलकामप्रद = सभी कामनाएँ पूर्ण करनेवाला। उ०--सकल कामप्रद तीरथराऊ।--मानस, २।२०३। सकलवर्ण = जो क और ल वर्ण से युक्त हो। कलह।

सकल²--सज्ञा पु० १ रोहित तृण। गध तृण। रोहिस घास। २ निर्गुण ब्रह्म और सगुण प्रकृति। ३ समग्र वस्तु। प्रत्येक वस्तु। हर एक चीज (को०)। ४ दर्शनशास्त्र के अनुसार तीन प्रकार के जीवो मे से एक प्रकार के जीव। पशु।

विशेष--जीव तीन प्रकार के माने गए हैं--विज्ञानाकल, प्रलयाकल, और सकल। सकल जीव मल, माया और कर्म से युक्त होता है। इसके भी दो भेद कहे गए है--पक्व कलुप और अपक्व कलुप।

सकल³--सज्ञा स्त्री० [अ० शक्ल] दे० 'शकल²'।

सकलकल--वि० [स०] सपूर्ण, सोलहो कलाओ से युक्त (चद्रमा)।

सकलखोरा--सज्ञा पु० [हिं० शकरखोरा] एक पक्षी। दे० 'शकरखोरा'।

सकलजननी--सज्ञा स्त्री० [स०] प्रकृति।

सकलदार(पु)--वि० [अ० शक्ल + फा० दार (प्रत्य०)] शक्लवाला। सूरतवाला। खूबसूरत। उ०--सकलदार मैं नही, नीच फिर जाति हमारी।--पलटू०, पृ ६।

सकलप्रिय--सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो सबको प्रिय हो। सबको अच्छा लगानेवाला। २ चना। चणक।

सकललक्षरण--सज्ञा पुं० [स०] शाल निर्यास। धूना। राल।

सकलसिद्धि--सज्ञा पुं० [स०] १ वह जिसे सब सिद्धियाँ प्राप्त हो। २ समग सिद्धियाँ। सभी विषयो मे सफलता।

सकलसिद्धिदा--सज्ञा पु० [स०] तात्रिको के अनुसार एक भैरवी का नाम।

सकलात--सज्ञा पुं० [स० सकाल (= ऋतु या अवसर के उपयुक्त)?] १ ओढने की रजाई। दुलाई। उ०--(क) लग्यो शीत गात सुनो वात प्रभु काँपि उठे दई सकलात आनि प्रीति हिये भोई है। (ख) शीत लगत सकलात विदित पुरुषोत्तम दीनी। शौच गए हरि सग कृत्य सेवक की कीनी।--भक्तमाल (शब्द०)। २ उपहार। भेट। सौगात। उ०--सौ गाडी सकलात सलौनी। पातसाह की जात पठौनी।--लाल कवि (शब्द०)।

सकलाधार--सज्ञा पुं० [स०] शिव का एक नाम।

सकली--सज्ञा स्त्री० [डिं०] मत्स्य। मछली।

सकलेंदु--सज्ञा पु० [स० सकलेन्दु] पूर्णिमा का चद्रमा।

यौ०--सकलेंदुमुख = जिसका मुख पूर्णिमा के चाँद जैसा हो।

सकलेश्वर--सज्ञा पुं० [स०] विष्णु का एक नाम।

सकल्प¹--सज्ञा पु० [स०] शिव का एक नाम।

सकल्प²--वि० वेद के एक अग कल्प से युक्त। वेद के उस अग से युक्त जिसमे यज्ञादि का विधान किया गया है [को०]।

सकवा†--सज्ञा पुं० [हिं० साखू] शाल। अश्वकर्ण।

सकषाय--वि० [स०] १ जो कषाय रस से युक्त हो। कसैला। २ जागतिक वासनाओ काम, क्रोध आदि से युक्त [को०]।

सकस†--सज्ञा पु० [अ० शख्स] दे० 'शख्स'।

सकसकाना†--क्रि० अ० [अनु०] बहुत डरना। डर के कारण काँपना। उ०--सकसकात तनु भीजि पसीना उलटि उलटि तन जोरि जँभाई।--सूर (शब्द०)।

सकसना†--क्रि० अ० [हिं० स + कसना] इतना कस उठना कि जरा सा भी स्थान स्थाली न रहे। २ डरना। भयभीत होना।

सकसाना(पु)†¹--क्रि० अ० [अनु०] डर मानना। भयभीत होना। उ०--दस्तेवाज वारन के द्वार ठाढे रस्ते पर छिति के अधीस दस्तवस्त सकसात है।--नकछेदी (शब्द०)।

सकसाना†²--क्रि० स० इतना अधिक भर देना कि जगह खाली न रह जाय। अडसाना। ठूसना।

सका†--सज्ञा पुं० [अ० सक्का] १. पानी भरनेवाला, भिश्ती। २ वह जो घूम घूमकर लोगो को पानी पिलाता हो, विशेषत मशक मे (मुसलमानोको) पानी पिलानेवाला।

सकाकुल--सज्ञा पुं० [?] १ एक प्रकार का कद जिसे अवर कद कहते है। २ एक प्रकार का शतावर। ३ शकाकुल मिस्री। सुधामूली।

सकाकुल मिसरी--सज्ञा स्त्री० [?] दे० 'सकाकुल मिस्री।

सकाकुल मिस्री--सज्ञा स्त्री० [?] १ सुधामूली। २ गभरकद।

सकाकोल--सज्ञा पुं० [स०] १ मनु के अनुसार एक नरक का नाम। २ नरक भूमि। यमपुरी जहाँ काकोल नाम का नरक है।

सकाना(पु)†¹--क्रि० अ० [स० शङ्कन] १ शका करना। सदेह करना। डरना। उ०--(क) जोरि कटक पुनि राजा घर कहँ कीन पयान। दिवसहिं भानु अलोप भा वासुक इद्र सकान।--जायसी (शब्द०)। (ख) देखि सैन ब्रज लोग सकात। यह आयो कीन्हे कछु घात।--सूर (शब्द०)। २ भय के कारण सकोच करना। हिचकना। ३ दुखी होना। रज होना।

सकाना†²--क्रि० स० 'सकना' का प्रेरणार्थक रूप। उ०--जिमि थल विनु जल रहि न सकाई। कोटि भाँति कोउ करै उपाई।--मानस, ७।११९।

विशेष--इसका क्वचित् हास्य प्रयोग भी प्राप्त होता है।

सकाम--सज्ञा पुं० [सं०] १ वह व्यक्ति जिसे कोई कामना या इच्छा हो। २ वह व्यक्ति जिसकी कामना पूर्ण हुई हो। लब्धकाम। ३ कामनामना युक्त व्यक्ति। मैथुन की इच्छा रखनेवाला व्यक्ति। कामी। ४ वह व्यक्ति जो कोई कार्य भविष्य मे फल मिलने की इच्छा से करे। जो निःस्वार्थ होकर कोई कार्य न करे, वरिक स्वार्थ के विचार से करे। ५ प्रेम करनेवाला। प्रेमी।

**सकाम निर्जरा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] जैनियों के अनुसार चित्त की वह वृत्ति जिसमें बहुत अधिक क्षति होने पर भी शत्रु या पीड़ा देनेवालों को परम शांतिपूर्वक क्षमा कर दिया जाता है। यह वृत्ति उपशांत चित्तवाले साधुओं में होती है।

**सकामा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो मैथुन की इच्छा रखती हो। कामपीड़िता। कामवती।

**सकामारि**—संज्ञा पुं० [सं०] कामियों या विषयी जीव के शत्रु, शिव [को०]।

**सकामी**—संज्ञा पुं० [सं० सकामिन्] १ वह जिसे किसी प्रकार की कामना हो। कामनायुक्त। वासनायुक्त। २ कामी। विषयी।

**सकार**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ 'स' अक्षर। २ 'स' वर्ण की सी ध्वनि। जैसे,—उसके मुँह से सकार भी न निकला। ३ सगण (॥ऽ)।

**सकार**[2]—वि० उत्साही। सक्रिय। फुर्तीला [को०]।

**सकारथ**‡—वि० [सं० सु+कार्यार्थ] १ सार्थक। उपयोग में आने लायक। २ सफल। अकारथ का उलटा।

**सकारना**—क्रि० अ० [सं० स्वीकरण] १ स्वीकार करना। मंजूर करना। २ महाजनों का हुंडी की मिती पूरी होने के एक दिन पहले हुंडी देखकर उसपर हस्ताक्षर करना।

**विशेष**—जो लोग किसी महाजन को हुंडी पर रुपए देते हैं, वे मिती पूरी होने से एक दिन पहले अपनी हुंडी उस महाजन के पास उसे दिखलाने और उससे हस्ताक्षर कराने के लिये ले जाते हैं। इससे महाजन को दूसरे दिन के दातव्य धन की सूचना भी मिल जाती है और रुपये पानेवाले को यह निश्चय भी हो जाता है कि कल मुझे रुपए मिल जायँगे।

**सकारा**[1]—संज्ञा पुं० [सं० स्वीकरण] १ महाजनी में वह धन जो हुंडी सकारने और उसका समय फिर से बढ़ाने के लिये लिया जाता है। २ सुबह का समय।

**सकारा**[2]—संज्ञा पुं० [ब० सकाल] सुबह। प्रभात।

**सकारे, सकारै**‡—क्रि० वि० [सं० सकाल] १ प्रातःकाल। सबेरे। तड़के। उ०—अवधेश के द्वारे सकारे गई, सुत गोद कै भूपति लै निकसे। अवलोकिहौं सोच विमोचन को ठगि सी रही, जे न ठगे धिक से।—तुलसी (शब्द०)।

**यौ०**—साँझ सकारे=सायंकाल और प्रातःकाल। सुबह शाम। उ०—गए मयूर तमचूर जो हारे। उन्हहिं पुकारे साँझ सकारे।—जायसी (शब्द०)।

२ नियत समय पर। ठीक वक्त पर। (क्व०)।

**सकारी**‡—क्रि० वि० [हिं० सकारे] दे० 'सकारे'।

**सकार्य**‡—वि० [हिं० सकारथ] दे० 'सकारथ'। उ०—नानक गुर मुखि छूटी औ जन्मु सकार्थ होय।—प्राण०, पृ० २१५।

**सकाल**[1]—वि० [सं०] समयोचित [को०]।

**सकाल**[2]—अव्य १ तड़के। सबेरे। २ ठीक समय पर [को०]।

**सकाल**‡—संज्ञा पुं० [ब०] प्रभात। सुबह। भोर।

**यौ०**—सकाल विकाल=(१) सुबह शाम। (२) हर समय। हर काल।

**सकालत**—संज्ञा स्त्री० [अ० सकालत] १ सकील या गरिष्ठ होने का भाव। २ गुरुता। भारीपन।

**सकाश**—वि० [सं०] दृश्यमान। पास। निकट। समीप।

**सकाश**[2]—संज्ञा पुं० १ सामीप्य। निकटता। २ पड़ोस। प्रतिवेश। ३ उपस्थिति [को०]।

**सकाश**[3]—अव्य० पास। निकट। समीप।

**सकिलना**‡[1]—क्रि० अ० [हिं० खिसकना या अनु०] १ खिसकना। सरकना। २ सिमटना। सिकुड़ना। उ०—उमगत्त वार सकिल गई नारा। नयो तहाँ ते करि प्रस्थाना।—जुगल (शब्द०)। ३ हो सकना। पूरा होना। जैसे,—तुमसे यह काम नहीं सकिल सकता। ४ एकत्र होना। बटुरना। पुंजीभूत होना। उ०—मेरा सरिगन सो जन पावन। सकिलि अननसग चलेउ सुहावन।—मानस, १।३६।

**सकिलाना**‡—क्रि० स० [हिं० सकिलना का सक० रूप] १ खिसकाना। सरकाना। २ सिमटना। समेटना। ३ पूरा करना। निष्पन्न करना। ४ एकत्र करना। बटोरना।

**सकीन**—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का जंतु।

**सकीबकी**Ⓟ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सक (=शक्ति)+बक (=बकने की क्रिया)] १ शक्ति। सामर्थ्य। २ बढ़ बढ़ करने की बात। बढ़ बढ़कर बोलना। उ०—सकीबकी सब गइल हिराई। प्रभु बिन तो कहँ कौन छोड़ाई।—गुलाल०, पृ० २८।

**सकीर्न**Ⓟ—वि० [सं० सङ्कीर्ण] दे० 'सकीर्ण'। उ०—थल सकीर्न ईकार लघु, दीर्घ दोन है नाहिं।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ५३३।

**सकील**[1]—वि० [अ० सकील] १ जो जल्दी हजम न हो। गरिष्ठ। गुरुपाक। २ भारी। वजनी। ३ जो कठिन हो। क्लिष्ट (शब्द०)।

**सकील**[2]—संज्ञा पुं० [सं०] संभोग कार्य में कमजोर पड़ने के कारण अपनी पत्नी को स्वयं संभोग करने के पहले किसी और व्यक्ति से संयुक्त करानेवाला पुरुष [को०]।

**सकुत**Ⓟ—संज्ञा पुं० [सं० शकुन्त, प्रा० सकुन्त] दे० 'शकुंत' (पक्षी)।—अनेकार्थ०, पृ० १०१।

**सकुक्षि**—वि० [सं०] एक ही पेट से पैदा होनेवाला। सहोदर [को०]।

**सकुच**Ⓟ†—संज्ञा पुं०, स्त्री० [सं० सङ्कोच] संकोच। लाज। शर्म। उ०—(क) सुनु मैया तेरी सौं करौं यारी टेव लरन की, सकुच बेचि सी खाई।—तुलसी (शब्द०)। (ख) सकुच सुरत आरंभ ही, बिछुरी लाज लजाय। ढरकि ढार ढुरि ढिग भई, ढीठ ढिठाई आय।—बिहारी (शब्द०)। (ग) हम सो उन सो कौन सगाई। हम अहीर अबला ब्रजवासी वै जदुपति जदुराई। कहा भयो जु भए नँदनंदन अब इह पदवी पाई। सकुच न आवत घोष बसत की तजि ब्रज गए पराई।—सूर (शब्द०)।

**सकुचना**—क्रि० अ० [सं० सङ्कोच, हिं० सकुच+ना (प्रत्य०)] १ संकोच करना। लज्जा करना। शरमाना। उ०—(क)

सकुची, डरी, मुरी मन वारी । गहु न बाँह रे जोगि भिखारी ।—जायसी (शब्द०) । (ख) मुनि पग धुनि चितई इतै, न्हाति दिए ही पीठि । चकी, झुकी, सकुची, डरी, हँसी लजीली दीठ ।—बिहारी (शब्द०) । २ (फूलों का) संपुटित होना । होना । सकुचित होना । उ०—गिरिधरदास कहै सकुची कुमोदिनी यों देखि पर पुरुष लजात जैसे खंडिता ।—गिरधर (शब्द०) ।

**सकुचाई**पु—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कोच, हिं० सकुच+आई (प्रत्य०)] सकुचित होने का भाव । २ संकोच । शर्म । लज्जा । हया ।

**सकुचाना**[1]—क्रि० अ० [सं० सङ्कोच, हिं० सकुच+आना (प्रत्य०)] सकुचित होना । लजाना । संकोच करना । जैसे,—वह आपके पास आने में सकुचाता है । उ०—(क) एहिं विधि भरत फिरत वन माहीं । नेम प्रेम लखि मुनि सकुचाहीं ।—मानस, २।३११ । (ख) राम की तो ऐसी बात-कज पात गात जाके सामने मरीच ताहि देख सकुचाइ है । —हृदयराम (शब्द०) ।

**सकुचाना**पु[2]—क्रि० स० [हिं० सकुचाना का प्रे० रूप] किसी को संकोच करने में प्रवृत्त करना । लज्जित करना ।

**सकुचाना**पु[3]—क्रि० स० [सं० संकुञ्चन] सिकोडना । उ०—श्रवण शरण ध्वनि सुनत लियो प्रभु तनु सकुचाई ।—सूर (शब्द०) ।

**सकुचावना**पु†—क्रि० स० [हिं० सकुचाना का प्रे० रूप] लज्जित करना । सकुचित करना । उ०—निज करनी सकुचेहि कत, सकुचावत इहि चाल । मोहूँ से नित विमुख त्यों सनमुख रहि गोपाल ।—बिहारी (शब्द०) ।

**सकुचावनी**पु—वि० स्त्री० [हिं० सकुचना] विनिंदित करनेवाली । लजानेवाली । सकुचित करनेवाली । उ०—खाँड की खजावनी सी, कंद की कुढ़ावनी सी, सिता की सतावनी सी सुधा सकुचावनी ।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ३०५ ।

**सकुची**—संज्ञा स्त्री० [सं० सकुलमत्स्य] एक प्रकार की मछली जो साधारण मछलियों से भिन्न और प्राय कछुए के आकार की होती है ।

विशेष—इसके छोटे छोटे चार पैर होते हैं और एक लंबी पूँछ होती है । इसी पूँछ से यह शत्रु को मारती है । जहाँपर इसकी चोट लगती है, वहाँ घाव हो जाता है और चमडा सडने लगता है । कहते हैं कि यह मछली ताड के वृक्ष पर चढ जाती है । पानी में और जमीन पर दोनों जगह यह रह सकती है ।

**सकुचीला**—वि० [हिं० सकुच+ईला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सकुचीली] जिसे अधिक संकोच हो । संकोच करनेवाला । शरमीला ।

**सकुचीली**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सकुचीला] लाजवंती । लज्जावती लता ।

**सकुचौहा**पु—वि० [सं० सङ्कोच, हिं० सकुच+औहाँ (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सकुचौहीं] संकोच करनेवाला । लजीला । शरमीला । उ०—गह्यो अबोलो बोलि प्यौ आपुहि पठै बसीठि । दीठि चुराई दुहुन की लखि सकुचौंही दीठि ।—बिहारी (शब्द०) ।

**सकुड़ना**—क्रि० अ० [हिं० सिकुडना] दे० 'सिकुडना' ।

**सकुन**पु[1]—संज्ञा पु० [सं० शकुन्त] पक्षी । चिडिया ।

यौ०—सकुनाधम ।

**सकुन**[2]—संज्ञा पुं० [सं० शकुन] दे० 'शकुन' (सगुन) ।

**सकुनाधम**पु—संज्ञा पुं० [सं० शकुन, प्रा०, सकुन+अधम] वह पक्षी जो पक्षियों में अत्यंत निम्नकोटि का माना जाय । काग । कौआ । उ०—सकुनाधम सब भाँति अपावन । प्रभु मोहि कीन्ह विदित जगपावन । —मानस, ७।१२३ ।

**सकुनी**पु†[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शकुन्त] पखेरू । चिडिया । पक्षी ।

**सकुनी**[2]—संज्ञा पुं० [सं० शकुनि] दुर्योधन का मामा । विशेष दे० 'शकुनि' । उ०—भीषम, द्रोन, करन अस्थामा सकुनी सहित काहु न सरी ।—सूर०, १।२४९ ।

**सकुपना**पु—क्रि० अ० [हिं० सकोपना] दे० 'सकोपना' ।

**सकुरुड**—संज्ञा पु० [सं० सकुरुण्ड ?, गुज०] साकुरुंड वृक्ष ।

**सकुल**[1]—संज्ञा पु० [सं०] १ अच्छा कुल । उत्तम कुल । ऊँचा खानदान । २ सकुची मछली । सकुल मत्स्य । ३ नेवला (को०) । ४ संबंधी । रिश्तेदार ।

**सकुल**[2]—वि० १ उत्तम कुलवाला । कुलीन । २ एक ही परिवार का । ३ सपरिवार । परिवार के साथ । उ०—सकुल सदल प्रभु रावन मार्‍यो ।—मानस, ६।११५ ।

**सकुलज**—वि० [सं०] एक ही कुल में उत्पन्न ।

**सकुला**—संज्ञा पुं० [सं० स+कुल] बौद्ध भिक्षुओं का नेता या सरदार ।

**सकुलादनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गरेठी । महाराष्ट्री लता । २ कुटकी ।

**सकुली**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सकुची' ।

**सकुल्य**—संज्ञा पु० [सं०] १ वह जो एक ही कुल का हो । सगोत्र । २ वह जो एक ही गोत्र का किंतु तीन पीढ़ी के ऊपर चौथी, पाँचवी, छठी, सातवीं, आठवीं या नवीं पीढ़ी का हो । ३ दूरवर्ती संबंधी (को०) ।

**सकूतरा**—संज्ञा पु० [देश०] एक द्वीप का नाम ।

विशेष—यह टापू अरब सागर में अफ्रीका के पूर्वी तट के समीप है । यहाँ मोती और प्रवाल अधिक मिलते हैं ।

**सकूनत**—संज्ञा स्त्री० [अ० सकूनत] [वि० सकूनती] रहने का स्थान । निवास स्थान । पता । जैसे,—अदालत में गवाहों की वल्दियत और सकूनत भी लिखी जाती है ।

**सकृत्**[1]—अव्य० [सं०] १ एक बार । एक मरतबा । २ सदा । ३ साथ । सह । ४ एक समय । किसी समय (को०) । ५ तुरंत । तत्काल (को०) ।

**सकृत्**[2]—संज्ञा पुं० १ पशुओं का मल । विष्ठा । गुह । २ कौआ । काक ।

**सकृत्प्रज**—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसके एक ही बच्चा हो । २ काक । कौआ । ३ सिंह । मृगेंद्र (को०) ।

सक्षणि—वि० [सं०] सेवा करने के योग्य। सेव्य।

सक्षत—वि० [सं०] क्षतयुक्त। अक्षत का उलटा। व्रणयुक्त। चुटैल।

सक्षम—वि [सं०] १ जिसमे क्षमता हो। क्षमताशाली। २ काम करने के योग्य। कार्य मे समर्थ। ३ जो क्षमाशील हो। क्षमा से युक्त (को०)।

सक्षार—वि० [सं०] खारी। क्षारयुक्त। नमकीन (को०)।

सख—संज्ञा पुं० [सं० सखि शब्द का कर्ताकारक एकवचन] १ सखा। मित्र। साथी। (समासांत मे) जैसे,—वसंतसख, सचिवसख। २ एक प्रकार का वृक्ष।

सखत†—वि० [अ० सख्त] दे० 'सख्त'।

सखती†—संज्ञा स्त्री० [अ० सख्त+ई] दे० 'सख्ती'।

सखत्व—संज्ञा पुं० [सं०] सखा होने का भाव। सखापन। मित्रता। दोस्ती।

सखर¹—संज्ञा पुं० [सं०] एक राक्षस का नाम।

सखर†²—वि० [हिं० सखरा] १ दे० 'सखरा'। २ खरा। चोखा। कटु। ३ 'खर' राक्षस से युक्त। जहाँ 'खर' की चर्चा हुई हो। उ०—सखरसुकोमल मंजु, दोपरहित दूपणसहित। —मानस,१।१४।

सखरच†—वि० [फा० शाहखर्च] दिल खोलकर व्यय करनेवाला। खर्च करने मे जो कंजूस न हो।

सखरज†—वि० [हिं० सखरच] दे० 'सखरच'।

सखरण†—संज्ञा पुं० [हिं० शिखरन] दे० 'शिखरन'।

सखरस—संज्ञा पुं० [सं० सख ? + हिं० रस] मक्खन। नैनू।

सखरा¹—संज्ञा पुं० [सं० सक्षार] १ खारा। क्षारयुक्त। २ निखरा का उलटा। दे० 'सखरी'।

सखरा²—संज्ञा पुं० [हिं० निखरी] वह भोजन जो घी मे न पकाया गया हो। कच्ची रसोई। दे० 'सखरी'।

सखरी¹—संज्ञा स्त्री० [हिं० निखरा या निखरी का उल्टा] कच्ची रसोई। कच्चा भोजन। जैसे,—दाल, भात, रोटी आदि जो हिंदू लोग चौके के बाहर या किसी अन्य आदमी के हाथ की नही खाते और जिसमे छूत मानते हैं। विशेष दे० 'निखरी'।

सखरी²—संज्ञा स्त्री० [सं० शिखर] छोटा पहाड। पहाडी (डिं०)।

सखस†—संज्ञा पुं० [फा० शख्स] दे० 'शख्स'।

सखसावन—संज्ञा पुं० [फा० शख्स + हिं० आवन, अथवा सं० सुख + शयन या सुखासन] १ पालकी। पीनस। २ आरामकुरसी। ३ पलंग।

सखा¹—संज्ञा पुं० [सं० सखि] १ वह जो सदा साथ रहता हो। साथी। संगी। २ मित्र। दोस्त। ३ सहयोगी। सहचर। ४ एक वृक्ष (को०)। ५ साहित्य मे वह व्यक्ति जो नायक का सहचर हो और जो सुख दुख मे उसके समान सुख दुख को प्राप्त हो।

विशेष—सखा चार प्रकार के होते है—पीठमर्द, विट, चेट और विदूषक।

६ पत्नी की बहन का पति। साढ़ू (को०)।

यौ०—सखाभाव = मित्रता। सखाविग्रह = आपसी तकरार। मित्रों की लडाई।

सखा²—संज्ञा स्त्री० [अ० सखा] दे० 'सखावत' (को०)।

सखावत—संज्ञा स्त्री० [अ० सखावत] १ सखी या दाता होने का भाव। दानशीलता। २ उदारता। फैयाजी।

सखिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सखी होने का भाव। २ बंधुता। मैत्री। दोस्ती।

सखित्व—संज्ञा पुं० [सं०] बंधुता। मित्रता। दोस्ती।

सखिपूर्व¹—संज्ञा पुं० [सं०] बंधुता। मित्रता।

सखिपूर्व²—जिसमे पहले मित्रता रही हो (को०)।

सखिल—वि० [सं०] मित्रता मे युक्त। मैत्रीपूर्ण। दोस्ती से भरा हुआ (को०)।

सखी¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सहेली। सहचरी। संगिनी। २ साहित्य ग्रंथो के अनुसार वह स्त्री जो नायिका के साथ रहती हो और जिससे वह अपनी कोई बात न छिपावे।

विशेष—सखी का चार प्रकार का कार्य होता है—मंडन, शिक्षा, उपालंभ और परिहास।

३ एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण मे १४ मात्राएँ और अंत मे एक मगण या एक यगण होता है। इसकी रचना मे आदि से अंत तक दो दो कलें होती है—२ + २ + २ + २ + २ + २ और कभी कभी २ + ३ + ३ + २ + २ + २ भी होता है और विराम ८ और ६ पर होता है। विरामभेद के अनुसार कवियो ने इसके दो भेद किए है—(१) विजात और (२) मनोरम।

यौ०—सखी भाव। सखी संप्रदाय।

सखी²—वि० [अ० सखी] दाता। दानी। दानशील। जैसे,—सखी से सूम भला जे तुरत दे जवाब। (कहावत)।

सखीभाव—संज्ञा पुं० [सं०] वैष्णवो के अनुसार भक्ति का एक प्रकार जिसमे भक्त अपने आपको इष्टदेवता श्री कृष्ण आदि की पत्नी या सखी मानकर उपासना करता है।

सखीसंप्रदाय—संज्ञा पुं० [सं० सखी सम्प्रदाय] वैष्णवो का एक संप्रदाय।

विशेष—इस संप्रदाय मे भगवत्प्राप्ति के लिये गोपीभाव को एकमात्र उन्नत साधन माना गया है। इसके प्रवर्तक स्वामी हरिदासजी हैं। यह संप्रदाय निंबार्क मत की ही एक अवांतर शाखा है।

सखुआ—संज्ञा पुं० [सं० शाल] शालवृक्ष। साखू। विशेष—दे० 'शाल'।

सखुन—संज्ञा पुं० [फा० सुखन] १ बातचीत। वार्तालाप। २ कविता। काव्य। उ०—जुल्म है गर न दो सखुन की दाद। कहर है गर न करो मुझको प्यार।—कविता को, भा० ४, पृ० ४६०। ३ कौल। वचन। जैसे,—मर्दो का सखुन एक होता है।

मुहा०—सखुन देना = वचन हारना। वादा करना। सखुन डालना = (१) कोई बात कहना। कुछ चाहना या माँगना। उ०—सखुन उन्ही पर डाले जो हँस हँस रखे मान।—(शब्द०)। (२) प्रश्न करना। पूछना। सवाल करना।

४ कथन। उक्ति।

सखुनचीन—संज्ञा पुं० [फा० सुखनचीं] चुगुलखोर। चवाई। इधर उधर बात लगानेवाला।

सखुनचीनी—संज्ञा स्त्री० [फा० सुखनचीनी] सखुनचीन का भाव। चुगलखोरी। चवाव।

सखुनतकिया—संज्ञा पुं० [फा० सुखनतकिया] वह शब्द या वाक्यांश जो कुछ लोगों की जबान पर ऐसा चढ़ जाता है कि वातचीत करने में प्राय मुँह से निकला करता है। तकियाकलाम।

विशेष—बहुत से लोग ऐसे होते हैं जो वातचीत करने में वार वार 'जो है सो', 'क्या नाम', 'समझ लीजिए कि' आदि कहा करते हैं। ऐसे ही शब्दों या वाक्यांशों को सखुनतकिया कहते हैं।

सखुनदाँ—संज्ञा पुं० [फा० सुखनदाँ] १ वह जो सखुन या काव्य अच्छी तरह समझता हो। काव्य का रसिक। २ वह जो वातचीत का मर्म अच्छी तरह समझता है।

सखुनदानी—संज्ञा स्त्री० [फा० सुखनदानी] १ वातचीत की समझदारी। २ काव्यमर्मज्ञता। काव्यरसिकता।

सखुनपरवर—संज्ञा पुं० [फा० सुखनपरवर] १ वह जो अपनी कही हुई वात का सदा पालन करता हो। जवान या वात का धनी। २ वह जो अपनी कही हुई अनुचित या गलत वात का भी वरावर समर्थन करता हो। हठी। जिद्दी।

सखुनफहम—वि० [फा० सुखनफह्म] काव्यमर्मज्ञ। सहृदय। उ०—हम सखुनफहम है गालिव के तरफदार नहीं।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० ४५४।

सखुनवर—संज्ञा पुं० [फा० सुखनवर] कवि। शायर। उ०—देख इस तरह से कहते हैं सखुनवर सेहरा।—कविता कौ० भा० ४, पृ० ४५५।

सखुनशनास—संज्ञा पुं० [फा० सुखनशनास] १ वह जो सखुन या काव्य भलीभाँति समझता हो। काव्य का मर्मज्ञ। २ वह जो वातचीत का मर्म वहुत अच्छी तरह समझता हो।

सखुनसज—संज्ञा पुं० [फा० सुखनसज] १ वह जो वात समझता हो। २ वह जो काव्य समझता हो।

सखुनसजी—संज्ञा स्त्री० [फा० सुखनसजी] सखुनसज का भाव।

सखुनसाज—संज्ञा पुं० [फा० सुखनसाज] १ वह जो सखुन कहता हो। काव्य रचना करनेवाला। कवि। शायर। २ वह जो सदा झूठी वाते गढ़ता हो। अपने मन से झूठी वाते वनाकर कहनेवाला।

सखुनसाजी—संज्ञा पुं० [फा० सुखनसाजी] १ सखुनसाज का भाव या काम। २ कवि होने का भाव या काम। ३ झूठी वाते गढ़ने का गुण या भाव।

सखोल—संज्ञा पुं० [सं०] राजतरंगिणी के अनुसार एक प्राचीन नगर का नाम।

सख्त—वि० [फ़ा० सख्त] १ कठोर। कड़ा। जो मुलायम न हो। २ मजबूत। दृढ़। ३ अत्यंत। वहुत ज्यादा। जैसे,—जान सख्त मुश्किल में आ पड़ी है। ४ तीव्र। तेज। प्रचंड। ५ निर्दय। वेरहम। ६ वहुत वड़ा। विशाल (को०)।

यौ०—सख्तकमान = (१) योद्धा। पहलवान। (२) ताकतवर। (३) धनुर्धर। सख्तकलाम = कटुभाषी। सख्तकलामी = कटु या दुर्वचन कहना। सख्तगीर = कड़ी सजा देनेवाला। सख्तगीरी = सख्तगीर का काम। सख्तजवान = कटुभाषी। सख्तजाँ = (१) कठिन परिश्रमी। (२) निलज्जता का जीवन वितानेवाला। (३) सख्तमीर। सख्तजानी = वेहया जीवन। सख्तदिल = निर्दय या वेरहम। सख्तदिली = कठोरहृदयता। सख्तवाजू = अत्यंत परिश्रमी। सख्तमिजाज = कड़े मिजाजवाला। सख्तमीर = जिसके प्राण कठिनता से निकले। सख्तमुश्किल = (१) भारी कठिनाई। गहरी बाधा। (२) अत्यंत कठिन। सख्तलगाम = मुँहजोर घोड़ा।

सख्ती—संज्ञा स्त्री० [फा० सख्ती] १ सख्त होने का भाव। कठोरता। कड़ाई। २ वेहयाई। निर्लज्जता। ३ कठिनाई। ४ निर्दयता। ५ तेजी। तीखापन। ६ दृढ़ता। ७ तंगी (को०)।

यौ०—सख्तीकश = कठिनाइयाँ झेलनेवाला।

मुहा०—सख्ती उठाना = (१) जुल्म सहना। (२) कठिनाइयाँ झेलना। सख्ती से पेश आना = कठोरता का व्यवहार करना।

सख्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ सखा का भाव। सखत्व। सखापन। २ मित्रता। दोस्ती। ३ वैष्णव मतानुसार ईश्वर के प्रति वह भाव जिसमें ईश्वरावतारको भक्त अपना सखा मानता है। जैसे,—महात्मा सूरदास का श्रीकृष्ण के प्रति सख्य भाव था। ४ दोस्त। मित्र (को०)। ५ समानता। वरावरी (को०)।

यौ०—सख्यभंग सख्यविसर्जन = मित्रता टूटना। मैत्रीभंग। दोस्ती खत्म होना।

सख्यता—संज्ञा स्त्री० [सं० सख्य + ता (प्रत्य०)] दे० 'सख्य'।

सगंध¹—वि० [सं० सगन्ध] १ जिसमें गंध हो। गंधयुक्त। महकदार। २ जिसे अभिमान हो। अभिमानी। ३ संबद्ध। संबंधी। संवधित (को०)।

सगंध²—संज्ञा पुं० जातिवंधु। ज्ञातिसंबंधी।

सगंधा¹—संज्ञा स्त्री० [सं० सगन्धा] एक प्रकार का चावल। सुगंधशालि। वासमती चावल।

सगंधा²—वि० दे० 'सगा'।

सगंधी¹—वि० पुं० [सं० सगन्धिन्] जिसमें गंध हो। महकदार।

सगंधी²—वि० दे० 'सगा'।

सग¹—संज्ञा पुं० [फा०] कुक्कुर। कुत्ता। श्वान।

यौ०—सगजाँ = (१) लालची। लोभी। (२) वेरहम। सगजादा = कुत्ते की औलाद (गाली)। सगवच्चा। पिल्ला। सगवान = कुत्ते की देखरेख करनेवाला। सगवानी = कुत्ते की देखरेख। सगसार = कुत्ते की तरह अपवित्र और निकृष्ट।

सग(पु)²—वि० [सं० स्वक् अथवा 'सगर्भ' (वर्णलोप)] सगा। (समस्त पदों में प्रयुक्त) जैसे, सगपन।

सग³—संज्ञा पुं० [सं० शाक, हिं० साग] शाक। साग। (समस्त पदों मे प्रयुक्त) जैसे, सगपहिता।

सगजुवान—संज्ञा पुं० [फा०] वह घोड़ा जिसकी जीभ कुत्ते के समान लंबी और पतली हो। ऐसा घोड़ा प्राय ऐवी समझा जाता है।

सगड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० शकटी, शकटिका, हिं० सग्गड] छोटा सग्गड।

सगण¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ छंद शास्त्र में एक गण जिसमें दो लघु और एक गुरु अक्षर होते हैं। इस गण का प्रयोग छंद के आदि में अशुभ है। इसका रूप ।।ऽ है। २ शिव का एक नाम।

**सगण**[2]—वि० १ जो गणों से युक्त हो। साथियों या दल से युक्त। सदल बल। २ सेना से युक्त। ससैन्य (को०)।

**सगत**†—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] १ शिव की भार्या, पार्वती। (डिं०)। २ शक्ति। ताकत। बल। सामर्थ्य।

**सगतिक**—वि० [सं०] १ उपसर्ग से युक्त (को०)। ⓟ २ जिसकी कहीं गति हो। अगतिक का विलोम।

**सगती**†—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] १ पार्वती। (डिं०)। २ एक अस्त्र। शक्ति। ३ ताकत। बल।

**सगदा**—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का मादक द्रव्य जो अनाज से बनाया जाता है।

**सगन**[1]—संज्ञा पुं० [सं० सगण] १ छंद शास्त्र का एक गण। दे० 'सगण[1]'।

**सगन**†[2]—संज्ञा पुं० [सं० शकुन, हिं० सगुन] दे० 'शकुन'। जैसे, सगनौती।

**सगनौती**—संज्ञा स्त्री० [हिं० शकुनौती] दे० 'शकुनौती'।

**सगपन**—संज्ञा पुं० [हिं० सगापन] दे० 'सगापन'।

**सगपहता, सगपहिता**‡—संज्ञा पुं० [सं० शाक प्रहित] दे० 'सगपहती'।

**सगपहती, सगपहिती**‡—संज्ञा स्त्री० [हिं० साग + पहिती] एक प्रकार की दाल जो साग मिलाकर बनाई जाती है।

**विशेष**—प्राय लोग सगपहिती बनाने के लिये उडद की दाल मे चना, पालक या बथुए का साग मिलाते हैं। कभी कभी अरहर की दाल भी मिलाकर बनाई जाती है।

**सगपिस्ताँ**—संज्ञा पुं० [फा०] लिसोडा। बहुवार।

**सगपु**—संज्ञा पुं० [सं०] अमरवल्ली।

**सगबग**[1]—वि० [अनु०] १ सराबोर। लथपथ। उ०—(क) बरसावत बहु सुमन को सौरभ मद धारि। सगबग बिंदु मरद सो, ब्रज की चलत बयारि।—अंबिकादत्त (शब्द०)। (ख) पिय चूम्यो मुँह चमि होत रोमाचन सगबग।—व्यास (शब्द०)। २ द्रवित। उ०—मुरली नलिका सो अमी नाय रहे बगराय। सगबग होत पषान जिहि सूखे तरु हरिराय।—(शब्द०)। ३ परिपूर्ण। उ०—कित तूठ्यो रतिराज साज सब सजि सुख पागे। किहि सुहाग सगबगे भाग काके पुनि जागे।—(शब्द०)। ४ शकित। डरा हुआ। भीत।

**सगबग**—क्रि० वि० तेजी से। जल्दी से। चटपट। उ०—उतरि पलँग ते न दियो है धरा पै पग तेऊ सगबग निसि दिन चली जाती है।—भूषण (शब्द०)।

**सगबगना**ⓟ—क्रि० अ० [अनु० सगबग + हिं० ना (प्रत्य०)] १ लथपथ या सराबोर होना। उ०—तन पुलकित किहिं हेतु कपोलन परि गई पीरी। रोम सेद सगबगे चाल हू भई अधीरी।—अंबिकादत्त (शब्द०)। २ दे० 'सगबगाना'।

**सगबगाना**—क्रि० अ० [अनु० सगबग] १ लथपथ होना। किसी वस्तु से भीगना या सराबोर होना। २ सकपकाना। शकित होना। भयभीत होना। ३ हिलना डुलना।

**सगभत्ता**†—संज्ञा पुं० [हिं० साग + भात] एक प्रकार का भात जो साग मिलाकर बनाया जाता है। इसमें पकाते समय चावल मे साग मिला देते हैं।

**सगर**[1]—संज्ञा पुं० [हिं० तगर] तगर का फूल और उसका पौधा।

**सगर**[2]—संज्ञा पुं० [सं०] १ अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जो बहुत धर्मात्मा तथा प्रजारजक थे।

**विशेष**—इनका विवाह विदर्भराजकन्या केशिनी से हुआ था। इनकी दूसरी स्त्री का नाम सुमति था। इन स्त्रियों सहित सगर ने हिमालय पर कठोर तपस्या की। इससे सतुष्ट होकर महर्षि भृगु ने आशीर्वाद दिया कि तुम्हारी पहली स्त्री से तुम्हारा वश चलानेवाला पुत्र होगा, और दूसरी स्त्री से ६० हजार पुत्र होंगे। सगर की पहली स्त्री से असमजस नामक पुत्र उत्पन्न हुआ जो बडा उद्धत था। उसे सगर ने अपने राज्य से निकाल दिया। इसके पुत्र का नाम अशुमान था। सगर की दूसरी स्त्री से साठ हजार पुत्र हुए। एक बार सगर ने अश्वमेध यज्ञ करना चाहा। अश्वमेध का घोडा इद्र ने चुरा लिया और उसे पाताल मे जा छिपाया। सगर के पुत्र उसे ढूँढते ढूँढते पाताल मे जा पहुँचे। वहाँ महर्षि कपिल के समीप अश्व को बँधा पाकर उन्होंने उनका अपमान किया। मुनि ने क्रुद्ध होकर उन्हें शाप देकर भस्म कर डाला। अपने पुत्रों के न आने पर सगर ने अशुमान को उन्हें ढूँढने के लिये भेजा। अशुमान ने पाताल मे पहुँच कर मुनि को प्रसन्न किया और वहाँसे घोडा लेकर अयोध्या पहुँचा। अश्वमेध यज्ञ समाप्त करके सगर ने तीस सहस्र वर्ष राज्य किया। राजा भगीरथ इन्हीं के वश के थे।

**सगर**[3]—वि० विष मिला हुआ। विषाक्त (को०)।

**सगर**[4]—संज्ञा पुं० [सं० सागर] सागर। तालाब।

**सगरा**†[1]—वि० [सं० सकल] [वि० स्त्री० सगरी] सब। तमाम। पूरा समग्र। सकल। कुल।

**सगरा**†[2]—संज्ञा पुं० [सं० सागर] १ तालाब। २ झील।

**सगरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नगरी का नाम।

**सगर्भ**[1]—वि० [सं०] १ एक ही गर्भ से उत्पन्न। सहोदर। सगा। (भाई, बहन आदि)। २ रहस्य युक्त। तात्पर्य युक्त। जिसमे भीतर कुछ हो। उ०—नारद वचन सगर्भ सहेतू। सुदर सब गुननिधि वृषकेतू।—मानस, १।७२। ३ जिसके पत्ते खुले न हों (को०)। ४ अनुरूप। समान (को०)।

**सगर्भ**[2]—संज्ञा पुं० सगा भाई (को०)।

**सगर्भा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह स्त्री जिसे गर्भ हो। गर्भवती स्त्री। २ सहोदरा। सगी बहन।

**सगर्भ्य**—वि० [सं०] एक ही गर्भ से उत्पन्न। सहोदर। सगा (भाई, बहन आदि)।

**सगल**ⓟ†—वि० [हिं० सकल] दे० 'सकल'।

**सगलगी**‡—संज्ञा स्त्री० [हिं० सगा + लगना] १ किसी से बहुत सगापन दिखाने की क्रिया। बहुत आपसदारी दिखलाना।

सगोता—वि० [सं० सगोत्र] एक ही गोत्र या कुल का।

सगोती¹—संज्ञा पुं० [सं० सगोत्रिन्] १ एक गोत्र के लोग। सगोत्र। २ आपसदारी के या रिश्ते नाते के लोग। भाई बंधु।

सगोती²—वि० समान या एक कुल या गोत्र का।

सगोत्र¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक गोत्र के लोग। सजातीय। २ कुल। जाति। ३ एक ही कुल का श्राद्ध, पिंड, तर्पण करनेवाला व्यक्ति (को०)। ४ दूर का संबंधी (को०)।

सगोत्र²—वि० एक ही कुल में उत्पन्न। बंधु (को०)।

सगोत्री—वि०, संज्ञा पुं० [सं० सगोत्र+ई] दे० 'सगोत्र', 'सगोती'।

सगोनोसर—संज्ञा पुं० [हिं० सागौन] सागौन। शाल वृक्ष।

सगोष्ठी—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहचर्य। मैत्री (को०)।

सगौती—संज्ञा स्त्री० [हिं० सगवती] खाने का मांस। गोश्त। कलिया।

सग्गड—संज्ञा पुं० [सं० शकट] सामान ढोने की गाडी या बोझ ढोने का ठेला।

सग्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] सहभोजन। एकत्र भोजन।

सग्धिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सग्धि'।

सग्म—संज्ञा पुं० [सं०] यजमान।

सग्रह—वि० [सं०] १ ग्रहण लगा हुआ। ग्रस्त (चंद्रमा)। २ ग्राहों से परिपूर्ण। जैसे—सग्रह नदी। ३ जिसपर कोई ग्रह लगा हो (को०)।

सघन—वि० [सं०] १ घना। गझिन। अविरल। गुंजान। जैसे,—सघन जंगल। उ०—सघन कुंज छाया सुखद शीतल मंद समीर।—बिहारी (शब्द०)। २ घन के साथ। बादलों से युक्त। मेघपूरित (को०)। ३ ठोस। ठस।

सघनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सघन होने का भाव। निविडता। अविरलता। गुंजानी।

सघली(पु)†—वि० स्त्री० [हिं० सगरी] समग्र। सब। सारी। सगरी।

सचंद्रक वि० [सं० सचन्द्रक] [वि० स्त्री० सचंद्रिका] जिसपर चंद्रमा के समान आकृतियाँ हों (को०)।

सच¹—वि० [सं० सत्य, प्रा० सत्त, अप० सच्च] जो यथार्थ हो। सत्य। वास्तविक। ठीक। दे० 'सत्य'।

सच²—वि० [सं० √सच्] १ जो आदर सम्मान करे। पूजक। अर्चक। २ लगा हुआ। संबद्ध (को०)।

सचकित—वि० [सं०] १ भौचक्का। जिसे विस्मय हुआ हो। २ डर के मारे काँपता हुआ (को०)।

सचक्र—वि० [सं०] १ पहियों या गडारी से युक्त। २ चक्करदार। घेरा या वलय से युक्त। मंडलाकार। ३ चक्र नामक आयुध से युक्त। ४ सेना से युक्त। जिसके पास सेना हो (को०)।

सचक्री—संज्ञा पुं० [सं० सचक्रिन्] वह जो रथ चलाता हो। सारथी।

सचन—संज्ञा पुं० [सं०] १ सेवा करने की क्रिया या भाव। सेवन। २ सम्मान। आदर (को०)। ३ सहयोगी। सहायक (को०)।

सचना(पु)†¹—क्रि० स० [सं० सञ्चयन] १ संचय करना। एकत्र करना। जमा करना। बटोरना। उ०—दान करन है दुइ जग तरा। रावन सचा अगिनि महँ जरा।—जायसी (शब्द०)। २ सज्जित करना। सजाना। ३ संपादित करना। पूरा करना। उ०—बहु कुंड शोनित सों भरे पितु तर्पणादि क्रिया सची।—केशव (शब्द०)।

सचना(पु)²—क्रि० अ०, क्रि० स० १ दे० 'सजना'। उ०—जो कछु सकल लोक की शोभा लै द्वारिका सची री।—सूर (शब्द०)। २ प्रसन्न होना। अनुकूल होना।

सचनावत्—संज्ञा पुं० [सं०] परमेश्वर, जिसका भजन सब लोग करते हैं।

सचमुच—अव्य० [हिं० सच+मुच (अनु०)] १ यथार्थतः। ठीक ठीक। वास्तव में। वस्तुतः। २ अवश्य। निश्चय। निस्संदेह।

सचर¹—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत झिरटी। सफेद कटसरैया।

सचर²—वि० [सं० स+√चर् (=गति)] सचल। जो चलता रहे। गतिशील। जंगम।

यौ०—सचराचर।

सचरना(पु)—क्रि० अ० [सं० सञ्चरण] १ किसी बात का विख्यात होना। संचरित होना। फैलना। २ किसी वस्तु या प्रथा का अधिक व्यवहार में आना। बहुत प्रचलित या प्रसिद्ध होना। ३ संचार करना। प्रवेश करना। उ०—कुटिल अलक भ्रुव चारु नैन मिलि सचरे श्रवण समीप सुमीति। वक्र बिलोकनि भेद भेदिआ जोइ कहत सोइ करत प्रतीति।—सूर (शब्द०)।

सचराचर¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ संसार की सब चर और अचर वस्तुएँ। स्थावर और जंगम सभी वस्तुएँ। २ जगत्। विश्व। संसार (को०)।

सचराचर²—वि० जिसमें सचल और अचल सभी आ जायँ। जंगम और स्थावर युक्त (को०)।

सचल¹—संज्ञा पुं० [सं०] वह वस्तु जिसमें गति की सामर्थ्य हो। सचर। चर। जंगम।

सचल²—वि० चलायमान। चर। चलनेवाला।

सचल लवण—संज्ञा पुं० [सं०] सौवर्चल लवण। साँचर नमक।

सचलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सचल होने का भाव। जंगम होने का भाव। सचरणशीलता (को०)।

सचा—संज्ञा पुं० [सं० सचा (=निकट)] दे० 'सखा'।

सचाई—संज्ञा स्त्री० [सं० सत्य, प्रा० सच्च+हिं० आई (प्रत्य०)] १ सच्चा होने का भाव। सत्यता। सच्चापन। ईमानदारी। २ वास्तविकता। यथार्थता।

सचान—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चान (=श्येन)] श्येनपक्षी। बाज। उ०—गएउ सहमि नहि कछु कहि आवा। जनु सचान बन झपटेउ लावा।—मानस, २।२९।

सचारना(पु)†—क्रि० स० [सं० सञ्चारण] सचरना का सकर्मक रूप। संचारित करना। फैलाना।

सचारु—वि० [सं०] जो बहुत सुंदर हो। चारुतायुक्त।

सचावट†—संज्ञा स्त्री० [हिं सच+आवट (प्रत्य०)] सच्चापन। सचाई। सत्यता।

सचिंक—वि० [सं० सचिङ्क] चेतनायुक्त।

सचिंत—वि० [सं० सचिन्त] [वि० स्त्री० सचिंता] जिसे चिंता हो। फिक्रमंद।

सचि¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ सखा। दोस्त। मित्र। २ मैत्री। दोस्ती। घनिष्ठता [को०]।

सचि²—संज्ञा स्त्री० इंद्र की पत्नी। शची [को०]।

सचिक्कण—वि० [सं०] अत्यंत चिकना। बहुत अधिक चिकना। जैसे—सचिक्कण केश।

सचिक्कन(पु)—वि० [सं० सचिक्कण] अत्यंत चिकना। अत्यंत स्निग्ध। उ०—सहज सचिक्कन स्याम रुचि, सुचि सुगध सुकुमार। गनत न मन पथ अपथ लखि बिथुरे सुथरे बार।—बिहारी (शब्द०)।

सचित्—वि० [सं०] चित् से युक्त। जिसे ज्ञान या चेतना हो।

सचित्क—संज्ञा पुं० [सं०] चिंतन। विचारना। मनन [को०]।

सचित्त¹—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसका ध्यान एक ही ओर लगा हो।

सचित्त²—वि० १ समान चित्तवाला। २ सावधान। सचेत। ३. प्रज्ञायुक्त। बुद्धिमान्। ४ जिसका चित्त किसी एक तरफ लगा हो [को०]।

सचित्र—वि० [सं०] १ चित्रों से शोभित। चित्रों से सजा हुआ या अलंकृत। २ जिसमे चित्र हो। चित्रों से युक्त। ३. शबलित। रंगबिरंगा। चित्रित [को०]।

सचिल्लक—संज्ञा पुं० [सं०] १ क्लिन्नचक्षु। २ जिसकी दृष्टि खराब हो।

सचिव—संज्ञा पुं० [सं०] १ मित्र। दोस्त। सखा। २ मंत्री। वजीर। (अं० सेक्रेटरी)। ३ सहायक। मददगार। ४ काला धतूरा या काले धतूरे का वृक्ष। ५ किसी संघटन या संस्था के संचालन का उत्तरदायित्व वहन करनेवाला व्यक्ति।

सचिवता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सचिव होने का भाव या धर्म।

सचिवत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सचिवता' [को०]।

सचिवामय—संज्ञा पुं० [सं०] १ पांडु रोग। पीलिया। २ विसर्प रोग।

सचिवालय—संज्ञा पुं० [सं० सचिव+आलय] वह स्थान या भवन जहाँ किसी राज्य के विभिन्न विभागीय मंत्रियों तथा सर्वोच्च अधिकारियों के कार्यालय हों (अं० सेक्रेटेरियट)।

सची—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ इंद्र की स्त्री का नाम। इंद्राणी। दे० 'शची'। २ अगर। अगरु।

यौ०—सचीनंदन = सचीसुत।

सचीसुत—संज्ञा पुं० [सं०] १. शची का पुत्र, जयंत। २ श्रीचैतन्यदेव।

सचु(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० √सच्] १ सुख। आनंद। उ०—(क) मुक्तामाल बाल बग पंगति करत कुलाहल कूल। सारस हंस मध्य शुक सैना, वैजयंति सम तूल। पुरइनि कपिश निचोल विविध रँग विहँसत सचु उपजावै। सूर श्याम आनंद कंद की शोभा कहत न आवै।—सूर (शब्द०)। (ख) अँखियन ऐसी धरनि धरी। नंदनँदन देखे सचु पावैं या सो रहति डरी।—सूर (शब्द०)। २ प्रसन्नता। खुशी।

सचेत—वि० [सं० सचेतन] १ चेतनायुक्त। दे० 'सचेतन'। २ सज्ञान। समझदार। ३ सजग। सावधान। होशियार। जैसे,—जब वह आया करे, तब तुम सचेत रहा करो।

सचेतक—संज्ञा पुं० [सं० सचेत+क] संसद् वा विधान सभा का वह अधिकारी जो सदस्यों को आवश्यक सूचना देने, अनुशासन का पालन कराने, मतदान के निमित्त बुलाने आदि की व्यवस्था करता है। (अं० ह्विप)।

सचेतन¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह प्राणी जिसे चेतना हो। विवेकयुक्त प्राणी। २ वह वस्तु जो जड न हो। चेतन।

सचेतन²—वि० १ चैतन्य। चेतनायुक्त। २ सावधान। होशियार। ३ समझदार। चतुर।

सचेता—वि० [सं० सचेतस्] १ एक मत होनेवाला। एक राय होनेवाला। सहमत। २ बुद्धि या समझ रखनेवाला। ३ सचेत। भावनायुक्त। भावुक [को०]।

सचेती—संज्ञा स्त्री० [हिं० सचेत+ई (प्रत्य०)] १ सचेत होने का भाव। २ सावधानी। होशियारी।

सचेल—वि० [सं०] वस्त्रयुक्त। जो कपड़ा पहने हुए हो। परिधानयुक्त। वस्त्राच्छादित [को०]।

यौ०—सचेलस्नान = वस्त्र पहने हुए स्नान करना।

सचेष्ट¹—वि० [सं०] १ जिसमे चेष्टा हो। २ जो चेष्टा करे।

सचेष्ट²—संज्ञा पुं० [सं०] आम्रवृक्ष। आम का पेड।

सचैयत†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सच्च+ऐयत (प्रत्य०)] सचावट। सच्चाई। सत्यता। सच्चापन।

सचोर—संज्ञा पुं० [देश०] गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति।

सच्चरित¹—वि० [सं०] जिसका चरित्र अच्छा हो। सच्चरित्र। उ०—सब सुखी सब सच्चरित सुंदर नारि नर सिसु जरठ जे।—मानस, ७।२८।

सच्चरित²—संज्ञा पुं० १ सत्पुरुषों का चरित्र या वृत्त। २ सत् आचरण। सदाचरण [को०]।

सच्चरित्र—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सच्चरित'।

सच्चर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम आचरण। अच्छी चाल चलन।

सच्चा—वि० [सं० सत्य, प्रा० सत्त, अप० सच्च] [वि० स्त्री० सच्ची] १ सच बोलनेवाला। जो कभी झूठ न बोलता हो। सत्यवादी। ईमानदार। २ जिसमे झूठ न हो। यथार्थ। ठीक। वास्तविक। जैसे,—सच्चा मामला। ३ असली। विशुद्ध। जैसे,—सच्चा सोना। सच्चा घी। ४. बिलकुल ठीक और पूरा। जितना या जैसा चाहिए, उतना या वैसा। जैसे,—(क) तुमने भी उसपर खूब सच्चा हाथ मारा। (ख) यह तसवीर बहुत सच्ची जडी गई है।

सच्चाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सच्चा+आई (प्रत्य०)] सच्चा होने का भाव। सच्चापन। सत्यता।

सच्चापन—संज्ञा पुं० [हिं० सच्चा+पन (प्रत्य०)] सत्य होने का भाव। सत्यता। सचाई।

सच्चार—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो सपत्ति की रक्षा करता है। २ कुशल दूत। चतुर गुप्तचर (को०)।

सच्चारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हलदी। हरिद्रा।

सच्चाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० सच्चा+हट(प्रत्य०)] सच्चा होने का भाव। सच्चापन। सत्यता।

सच्चिक्कन(पु)—वि० [सं० सचिक्कण] दे० 'सचिक्कण', 'सचिक्कन'।

सच्चित्—संज्ञा पुं० [सं०] सत् और चित् दोनो से युक्त, ब्रह्म।

सच्चिदानंद—संज्ञा पुं० [सं० सच्चिदानन्द] (सत्, चित् और आनंद से युक्त होने के कारण) परमात्मा का एक नाम। ईश्वर। परमेश्वर।

सच्चिन्मय—वि० [सं०] सत् और चित् अर्थात् चैतन्य से युक्त। सत् और चैतन्य का स्वरूप।

सच्छंद'—वि० [सं० सच्छन्द] [वि० स्त्री० सच्छदा] समान अथवा एक ही तरह के छंदोवाला [को०]।

सच्छंद(पु)²—वि० [सं० स्वच्छन्द] दे० 'स्वच्छंद'।

सच्छत(पु)—वि० [सं० स+क्षत] जिसे क्षत लगा हो। घायल। जख्मी। उ०—जिनको जग अच्छत सीस धरै। तिनको जग सच्छत कौन करै।—केशव (शब्द०)।

सच्छाक—संज्ञा पुं० [सं० सत्+शाक] अदरक का पत्ता। आदी का पत्ता [को०]।

सच्छाय—वि० [सं०] १ समान या एक रंग का। २ भासमान्। भास्वर। जो चमकनेवाला हो। ३ छायादार। छायायुक्त। जिसमे छाया हो। जैसे,—सच्छाय वृक्ष [को०]।

सच्छास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह ग्रंथ जो सिद्धांतो का अच्छे ढंग से प्रतिपादन करे [को०]।

सच्छिद्र—वि० [सं०] १ दोषयुक्त। जिसमे ऐब हो। २ छिद्रयुक्त। छेदवाला [को०]।

सच्छी(पु)¹—संज्ञा पुं० [सं० साक्षी] गवाह या दर्शक। दे० 'साक्षी'।

सच्छी²—संज्ञा स्त्री० गवाही। दे० 'साक्षी'।

सच्छील'—वि० [सं०] शीलयुक्त। उदात्त गुणोवाला [को०]।

सच्छील²—संज्ञा पुं० अच्छा या भला आचरण [को०]।

सच्छलोक—वि० [सं० सत्+श्लोक] जिसकी सुंदर कीर्ति हो। अच्छे नाम या ख्यातिवाला [को०]।

सच्युति'—संज्ञा स्त्री० [सं०] दल बल सहित चलना।

सच्युति²—वि० १ रेतस् स्खलन युक्त। २ स्खलन युक्त [को०]।

सछंद(पु)—वि० [सं० स+छन्द] १ जो छंद युक्त हो। २ स्वैराचारी। ३ चालवाला। चालबाज। ४. समूह या परिकर से युक्त।

सजबाल—वि० [सं० सजम्बाल] कीचड से युक्त। पंकिल [को०]।

सज'—संज्ञा स्त्री० [सं० सज्जा, हिं० सजावट] १ सजने की क्रिया या भाव।

यौ०—सजधज।

२ रूप। बनाव। डौल। शकल। ३ शोभा। सौंदर्य। सजावट। शृंगार।

सज²—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बहुत लंबा वृक्ष। असीन का पेड।

विशेष—इस वृक्ष के पत्ते शिशिर ऋतु मे झड जाते हैं। यह हिमालय, बंगाल और दक्षिण भारत मे अधिकता से पाया जाता है। इसके हीर की लकडी बहुत कडी और मजबूत होती है। इसकी लकडी का रंग स्याही लिए भूरा होता है और यह जहाज, नाव आदि बनाने मे काम आती है। इसे कहीं कहीं असीन भी कहते है। यह बहुत लंबा वृक्ष होता है।

सजग—वि० [हिं० जागना जागरूकता से युक्त)] सावधान। सचेत। सतर्क। होशियार। उ०—(क) तब आपुहि बस होइहै जिमि बनिया कर भृत। तदपि सजग रहिए सदा रिपु सम जानि कपूत।—(शब्द०)। (ख) जौ राजा अस सजग न होई। काकर राज कहाँ कर होई।—जायसी (शब्द०)।

सजडा†—संज्ञा पुं० [हिं० सहिजन] दे० 'सहिजन' (वृक्ष)।

सजदार—वि० [हिं० सज+फा० दार (प्रत्य०)] जिसकी आकृति अच्छी हो। सुंदर।

सजधज—संज्ञा स्त्री० [हिं० सज+धज अनु०] बनाव सिंगार। सजावट। जैसे,—उनकी बारात बहुत सजधज से निकली थी।

सजन'—संज्ञा पुं० [सं० सत्+जन (=सज्जन)] [स्त्री० सजनी] १ भला आदमी। सज्जन। शरीफ। २ पति। भर्ता। उ०—बहुत नारि सुभाग सुंदरि और घोष कुमारि। सजन प्रीतम नाऊँ लै लै देहि परस्पर गारि।—सूर (शब्द०)। ३ प्रियतम। आशना। यार।

सजन²—वि० [सं०] जनयुक्त। जनसहित। जहाँ लोग रहते हों। जिसमे लोग हो।

सजन³—संज्ञा पुं० १ एक ही परिवार या कुल के आदमी। संबधी जन। २ जनसमाज। लोग बाग [को०]।

सजनपद—वि० [सं०] समान या एक जनपद का [को०]।

सजना¹—क्रि० अ० [सं० सज्जा] १ भूषण, वस्त्र आदि से अपने को सज्जित करना। अलंकृत करना। शृंगार करना। उ०—तीज परब सौतिन सजे, भूषन बसन सरीर। सबै मरगजे मुँह करी, वहे मरगजे चीर।—विहारी (शब्द०)। २ शोभा देना। शोभित होना। भला जान पडना। जैसे,—यह गुलदस्ता भी यहाँ खूब सजता है। ३ शस्त्रास्त्र से सुसज्जित होना। रण के लिये तैयार होना। उ०—हमहीं चलिहै ऋषि संग अबै। सजि सैन चलै चतुरंग सबै।—केशव (शब्द०)।

सजना²—क्रि० स० १ वस्तुओं को उचित स्थान मे रखना जिसमे वे सुंदर जान पडें। व्यवस्थित करना। सजाना। सुसज्जित

करना। साजना। जैसे,—मकान सजना, थाली सजना। २ किसी वस्तु को धारण करना।

सजना¹—संज्ञा पुं० [हिं० सहिजन] दे० 'सहिजन'।

सजना पु⁴—संज्ञा पुं० [सं० सज्जन, हिं० सुजन] पति। प्रियतम।

सजनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० साजन] सखी। सहेली। मित्र स्त्री।

सजनाय—वि० [सं०] प्रसिद्ध। विख्यात। मशहूर।

सजनु—वि० [सं०] सहजात। एक साथ उत्पन्न या निर्मित (को०)।

सजन्य—संज्ञा पुं० [सं०] जो नातेदार या रिश्तेदार संबंधी हो (को०)।

सजप—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो तूष्णीम् या मौन भाव से जप में रत हो। २ एक प्रकार के सन्यासी (को०)।

सजबज—संज्ञा स्त्री० [हिं० सज + बज (अनु०)] दे० 'सजधज'।

सजल¹—वि० [सं०] १ जल से युक्त या पूर्ण। जिसमें पानी हो। २ अश्रुपूर्ण (नेत्र)। आँसुओं से पूर्ण (आँख)। उ०—लोचन सजल मकरंद भरे अरविंद खुली खुले बूँदपति मधुप किशोर को।—काव्यकलाधर (शब्द०)।

यौ०—सजलनयन, सजलनेत्र = आँसूभरी आँखोंवाला।

सजल पु²—वि० [सं० स + ज्वाल] १ स्नेहयुक्त। ज्वालायुक्त। जलता हुआ। २ दीप्त। प्रकाशित। उ०—उर नौगुल दीवउ सजल, छाजइ पुणग न माइ।—ढोला०, दू० ५०६।

सजला¹—वि० [हिं० मँझला का अनु०] [हिं० सजली] चार सहोदरों में से तीसरा। मँझले से छोटा पर सबसे छोटे से बड़ा।

सजला²—वि० स्त्री० [सं०] जल से भरी हुई। जलयुक्त।

सजवना पु†—संज्ञा पुं० [हिं० सजना] सजने की क्रिया या भाव। तैयारी। उ०—बहुतन्ह अस गढ कीन्ह सजवना। अंत भई लंका जस रवना।—जायसी (शब्द०)।

सजवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सज(ना) + वाई (प्रत्य०)] १ सजवाने की क्रिया। २ सुसज्जित करवाने का भाव। ३ सजाने की मजदूरी। जैसे,—इस टोपी की सजवाई दो रुपए लगे हैं।

सजवाना—क्रि० स० [हिं० सजाना का प्रे० रूप] किसी के द्वारा किसी वस्तु को सुसज्जित कराना। सुसज्जित करवाना। जैसे,—आज कल महाराज अपनी कोठी सजवा रहे हैं।

सजा¹—संज्ञा पुं० [अ० सजा'] तुक। अंत्यानुप्रास। अनुप्रास (को०)।

सजा²—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सजा] १ अपराध आदि के कारण होनेवाला दंड। २ प्रत्यपकार। बुराई का बदला (को०)। ३. अर्थदंड (को०)। ४ कारागार का दंड। जेल में रखने का दंड।

क्रि० प्र०—करना।—देना।—पाना।—भुगतना।—मिलना।—होना।

यौ०—सजायाफ्ता। सजायाब।

सजाइ पु†—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सजा] सजा। दंड। उ०—पर्वतसहित धोइ ब्रज डारौं देउ समुद्र बहाइ। मेरी बलि औरहि लै अरपत इनको करौं सजाइ।—सूर०, १०।८२२।

सजाई¹—संज्ञा स्त्री० [हिं० सजाना + आई (प्रत्य०)] १. सजाने की क्रिया। सजाने का काम। २ सजाने का भाव। ३. सजाने की मजदूरी।

सजाई पु²—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सजा] दे० 'सजा'। उ०—जो अस हठ करहु कछु कहव बनाई। तौ बिधि देइहि हमहि सजाई।—मानस, २।१६।

सजागर—वि० [सं०] १ जागता हुआ। २ सजग। होशियार।

सजात¹—वि० [सं०] १ सहजात। साथ साथ उत्पन्न। २ बंधु बांधव से युक्त (को०)।

यौ०—सजातकाम = परिजनों पर शासन करने की इच्छावाला।

सजात²—संज्ञा पुं० भाई (को०)।

सजाति¹—वि० [सं०] एक जाति का। समान जाति का। जैसे,—(क) वे तो हमारे सजाति ही हैं। (ख) ये दोनों वृक्ष सजाति हैं। २ समान। तुल्य (को०)।

सजाति²—संज्ञा पुं० १ वह बालक जो एक ही जाति के माता पिता से उत्पन्न हो (को०)।

सजातीय¹—वि० [सं०] १ एक जाति या गोत्र का। २ समान। तुल्य (को०)।

सजातीय²—संज्ञा पुं० दे० 'सजाति²'।

सजात्य¹—वि० [सं०] दे० 'सजातीय'।

सजात्य²—संज्ञा पुं० बंधुत्व। भाईचारा (को०)।

सजान पु—संज्ञा पुं० [सं० सज्ञान] १ जानकार। जाननेवाला। २ चतुर। होशियार।

सजाना—क्रि० स० [सं० सज्जा] १ वस्तुओं को यथास्थान रखना। यथाक्रम रखना। तरतीब लगाना। २ अलंकृत करना। सँवारना। शृंगार करना।

सजानि—वि० [सं०] पत्नी के सहित। सपत्नीक (को०)।

सजाय¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह जो अपनी स्त्री के सहित वर्तमान हो।

सजाय† पु²—संज्ञा स्त्री० [हिं० सजा] दे० 'सजा'। उ०—पैहहि सजाय नतु कहत बजाय तोहिं, बावरी न होहि बानि जानि कपिनाह की। आन हनुमान की दोहाई बलवान की, सपथ महाबीर की, जो रहै पीर बाँह की।—तुलसी (शब्द०)।

सजायाफ्ता—संज्ञा पुं० [फ़ा० सजायाफ़्तह्] वह जिसने दंड विधान के अनुसार दंड पाया हो। वह जो सजा भोग चुका हो। वह जो कैदखाने हो आया हो।

सजायाब—वि० [फ़ा० सजायाब] १ जो दंड पाने के योग्य हो। दंडनीय। २ जो कानून के अनुसार सजा भोग चुका हो। जिसे कारागार का दंड मिल चुका हो।

सजार, सजारु—संज्ञा पुं० [सं० शल्यक] साहिल। शल्यक। साही।

सजाल—वि० [सं०] अयालदार। केसरयुक्त (को०)।

सजाव¹—संज्ञा पुं० [सं० सद्य, प्रा० सज्ज + हिं० आव (प्रत्य०)] एक प्रकार का दही। मलाईदार मीठा दही।

विशेष—इसे बनाने के लिये दूध को पहले खूब उबाल कर गाढ़ा करते हैं और तब उसमें जामन छोड़ते हैं, इस प्रकार जमा हुआ दही बहुत उत्तम होता है, उसकी साढ़ी या मलाई बहुत मोटी और

चिकनी होती है। प्राय 'दही' शब्द के साथ ही इस शब्द का प्रयोग मिलता है और विशेष अर्थ देता है। जैसे,—भावभरी कोऊ लिए रुचिर सजाव दही कोऊ मही मजु दावि दलकति पाँसुरी। —रत्नाकर, भा० १ पृ० १५१।

सजाव²—संज्ञा स्त्री० दे० 'सजावट'।

सजावट—संज्ञा स्त्री० [हिं० सजाना + आवट (प्रत्य०)] १ सज्जित होने का भाव या धर्म। जैसे,—उनके मकान की सजावट भी देखने ही योग्य है। २ शोभा। ३ तैयारी।

सजावन(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० सजाना] १ सजाने की क्रिया। अलंकृतकरण। मडन। २ तैयार करने की क्रिया। सुसज्जित करना। उ०—अब तो नाथ विलव न कीजै। सैन सजावन शासन दीजै।—रघुराज (शब्द०)।

सजावल—संज्ञा पुं० [तु० सजावुल] १ सरकारी कर उगाहनेवाला कर्मचारी। तहसीलदार। २ राजकर्मचारी। ३ सिपाही। जमादार।

सजावली—संज्ञा स्त्री० [तु० सजावुल + ई (प्रत्य०)] १ सजावल का काम। २ सजावल का पद या ओहदा।

सजावार—वि० [फा० सजावार] १ जो दड का भागी हो। जो सजा पाने के योग्य हो। २ योग्य। सत्पात्र (को०)।

सजिना—संज्ञा पुं० [हिं० सहिंजन] दे० 'सहिंजन'।

सजीउ(पु)†—वि० [स० सजीव] दे० 'सजीव'।

सजीदा—वि० [फा० सजीदह्] लायक। पात्र। योग्य [को०]।

सजीया—संज्ञा पुं० [अ०] आदत। स्वभाव। प्रकृति [को०]।

सजीला—वि० [हिं० सजना + ईला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सजीली] १ सजधज के साथ रहनेवाला। छैला। छबीला। जैसे,—वह बहुत अच्छा और सजीला जवान है। २ सुदर। सुडौल। मनोहर।

सजीव¹—वि० [स०] १ जीवयुक्त। जिसमे प्राण हो। उ०—हस्ति सिंघली बाँधे बारा। जनु सजीव सब ठाढ पहारा।—जायसी (शब्द०)। २ फुरतीला। तेज। ३ ज्यायुक्त। प्रत्यचायुक्त (को०)। ४ ओजयुक्त। ओजस्वी। जैसे,—उनकी कविता बडी सजीव है।

सजीव²—संज्ञा पुं० प्राणी। जीवधारी।

सजीवता—संज्ञा स्त्री० [स०] सजीव होने का भाव। सजीवपन।

सजीवन—संज्ञा पुं० [स० सञ्जीवन] सजीवनी नामक बूटी। विशेष दे० 'सजीवनी'।

सजीवनबूटी—संज्ञा स्त्री० [स० सञ्जीवनी + हिं० बूटी] रुदती। रुद्रवती। विशेष दे० 'सजीवनी'।

सजीवनमूर सजीवनमूल(पु)—संज्ञा पुं० [स० सञ्जीवनी] सजीवनी बूटी। विशेष दे० 'सजीवनी'।

सजीवनी मत्र—संज्ञा पुं० [स० सञ्जीवन + मन्त्र] १ पुराणादि मे उक्त वह मत्र जिसके सबध मे लोगो का विश्वास है कि मरे हुए मनुष्य या प्राणी को जिलाने की शक्ति रखता है। २ वह मत्र जिससे किसी कार्य मे सुभीता हो। उपकारी मत्रणा।

सजीह—संज्ञा पुं० [फा०] स्वभाव।

सजु¹—वि० [स० सजुष्] १ जो प्रिय हो। प्यारा। २ परस्पर सबद्ध। एक साथ रहनेवाला [को०]।

सजु²—संज्ञा पुं० मित्र। दोस्त। साथी [को०]।

सजुग(पु)†—वि० [हिं० सजग] सजग। सचेत। होशियार। उ०—लोभी चोर दूत ठग छोरा रहहिं यह पाँव। जो यह हाट सजुग भा गँठ ताकर पै बाँच।—जायसी (शब्द०)।

सजुता—संज्ञा स्त्री० [स० सयुता] एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे एक सगण, दो जगण और एक गुरु होता है। (स ज ज ग) विशेष दे० 'सयुत'।

सजूरी—संज्ञा स्त्री० [स० सजुष् (= प्रिय) ?] एक प्रकार की मिठाई। उ०—(क) कमल नैन हरि करी बियारी। लुचुई लपसी सद्य जलेबी सोइ जेवहु जो लगै पियारी। घेवर मालपुआ मोतिलाडू सघर सजूरी सरस सवारी।—सूर०, १।२२७। (ख) माधुरि अति सरस सजूरी। सद परसि धरो घृत पूरी।—सूर (शब्द०)।

सजोना†—क्रि० स० [हिं० सजाना] १ सज्जित करना। शृगार करना। २ सामान करना। सरजाम करना।

सजोयल (पु)—वि० [हिं० सजोना] दे० 'सँजोइल'।

सजोष—वि० [सं०] (वे) जिनमे समान प्रीति हो। मेल से कोई काम करनेवाले।

सजोषण—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहुत दिनो से चली आई हुई समान प्रीति। २ साथ साथ आनद लेना। सम्मिलित रूपेण आनद मनाना या लेना (को०)।

सज्ज(पु)¹—संज्ञा पुं० [हिं० साज] दे० 'साज'।

सज्ज²—वि० [सं०] १ सज्जित। सजा हुआ। तैयार किया हुआ। २ परिधानयुक्त। कपडे धारण किए हुए। ३ सँवारा हुआ। भूषित। अलकृत। ४ शस्त्र आदि से सुसज्जित। सुरक्षित, दृढ या परिखा आदि से घेरा हुआ। ६ प्रत्यचायुक्त [को०]।

सज्जक—संज्ञा पुं० [स०] सज्जा। सजावट।

सज्जकर्म—संज्ञा पुं० [स० सज्जकर्मन्] १ सज्जित करना या होना। २ धनुष पर प्रत्यचा चढाना [को०]।

सज्जण¹—संज्ञा पुं० [स० सज्ज] फौज की तैयारी। (डिं०)।

सज्जण²—संज्ञा पुं० [स० सज्जन] प्रिय। प्रियतम। दे० 'सज्जन'। उ०—चाल सखी तिण मदिरइँ सज्जण रहियउ जेण। कोइक मीठउ बोलडइ लागो होसी तेण।—ढोला०, दू० ३५६।

सज्जता—संज्ञा स्त्री० [स०] सज्जा का भाव। सजावट।

सज्जन—संज्ञा पुं० [स० सत् + जन] १ भला आदमी। सत्पुरुष। शरीफ। २ अच्छे कुल का मनुष्य। ३ प्रिय मनुष्य। प्रियतम। ४ चौकीदार। सतरी। ५ घाट। ६ बाँधना या लटकाना (को०)। ७ तैयारी करना (को०)। ८. शस्त्रादि से सज्जित होना (को०)। ९ सजाने की क्रिया या भाव। सज्जा।

सज्जनता—संज्ञा स्त्री० [स०] सज्जन होने का भाव। सत्पुरुषता। भलमनसाहत। भलमनसी। सौजन्य। साधुता।

**सज्जनताई**पु—संज्ञा स्त्री० [सं० सज्जन + हिं० ताई (प्रत्य०)] दे० 'सज्जनता'।

**सज्जना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह हाथी जिसपर नायक या सवार चढता हो। २ अलंकृत करना। भूषित करना (को०)। ३ अलंकरण। प्रसाधन। भूषण। सजावट (को०)। ४ सवारी के पहले हाथी को सज्जित करना (को०)।

**सज्जा**¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सजाने की क्रिया या भाव। सजावट। २ वेशभूषा। ३ युद्ध का उपकरण। सैनिक साजसामान। शस्त्र, कवच आदि (को०)।

**सज्जा**²—संज्ञा स्त्री० [सं० शय्या, प्रा० सज्जा, सेज्जा] १ चारपाई। शय्या। २ चारपाई, तोशक, चादर आदि वे सामान जो किसी के मरने पर उसके उद्देश्य से महापात्र को दिए जाते है। विशेष दे० 'शय्यादान'।

**सज्जा**³—वि० [सं० सव्य] दाहिना। (पश्चिम)।

**सज्जाद**—वि० [अ०] आराधक। उपासना करनेवाला (को०)।

**सज्जादगी**—संज्ञा स्त्री० [फा०] गद्दीनशीनी (को०)।

**सज्जादा**—संज्ञा पु० [अ० सज्जादह्] १ बिछाने का वह कपडा जिसपर मुसलमान नमाज पढते हैं। मुसल्ला। जानमाज। २. आसन। ३. फकीरो या पीरो आदि की गद्दी।

**सज्जादानशीन**—संज्ञा पुं० [अ० सज्जादह् + फा० नशीन] १ वह जो गद्दी या तकिया लगाकर बैठता हो। २ मुसलमान पीर या बडा फकीर।

**सज्जित**—वि० [सं०] १ जिसकी खूब सजावट हुई हो। अलंकृत। आरास्ता। २. आवश्यक वस्तुओ से युक्त। तैयार। जैसे,—युद्ध के निमित्त सज्जित सैन्य। ३ परिधानयुक्त। वस्त्र आदि धारण किए हुए (को०)। ४ शस्त्रों से सजा हुआ। ५ बद्ध। सबद्ध। लगा हुआ (को०)।

**सज्जी**—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्जि, सर्जिका] एक प्रकार का प्रसिद्ध क्षार जो सफेदी लिए हुए भूरे रग का होता है।

**विशेष**—सज्जी दो प्रकार की होती है। एक वह जो मालाबार की ओर बनाई जाती है। इसमे बडी बडी खाइयाँ खोदकर उनमे वृक्षो की शाखाएँ और पत्ते आदि भरकर आग लगा देते है। जब वे जलकर जम जाते है, तब उनकी राख को खारी कहते हैं। इसी खारी से भूमि मे सज्जी बनाते हैं। दूसरे प्रकार की सज्जी खार (क्षार) वाली जमीन मे होती है। खार के कारण भूमि फूल जाती है और उसी फूली हुई मिट्टी को सज्जी कहते है। वैद्यक के अनुसार सज्जी गरम, तीक्ष्ण और वायुगोला, शूल, वात, कफ, कृमिरोग आदि को शात करनेवाली मानी जाती है।

**सज्जीखार**—संज्ञा पुं० [सं० सर्जिका क्षार] दे० 'सज्जी'।

**सज्जीबूटी**—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्जीवनी] क्षुप जाति की एक वनस्पति जो प्रति वर्ष उत्पन्न होती है।

**विशेष**—यह ६ से १८ इच तक ऊँची होती है। इसकी शाखाएँ कोमल और पत्ते बहुत छोटे और तिकोने होते हैं। पुष्प छोटे और एक से तीन तक साथ लगते है। बीजकोष १।४ इच तक के घेरे मे गोलाकार होता है। इसका रग प्राय चमकीला गुलाबी होता है। इसमे बहुत ही छोटे छोटे बीज होते हैं। प्राय इसी के डठलो और पत्तियो से सज्जीखार तैयार होता है। यह क्षुप तीन प्रकार का पाया जाता है।

**सज्जुई**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सज + ई (प्रत्य०)] दे० 'सजाव'।

**सज्जुता**—संज्ञा स्त्री० [सं० सयुता] सयुता नामक छद। वि० दे० 'सयुता'।

**सज्जुष्ट**—वि० [सं०] आनददायक। सुखकारी। सज्जनो को प्रियकर।

**सज्जे**†¹—[सं० सर्व] सब। बिलकुल। सपूर्ण।

**सज्जे**†²—अव्य० तमाम। सर्वत्र। सपूर्णत।

**सज्ञान**¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसे ज्ञान हो। ज्ञानवाला मनुष्य। २ बुद्धिमान या चतुर पुरुष। सयाना। ३ उस अवस्था को पहुँचा हुआ पुरुष जिसमे वह विवेकयुक्त हो जाता है। प्रौढ। बालिग।

**सज्ञान**²—वि० १ ज्ञानयुक्त। २ चतुर। बुद्धिमान्। ३ सचेत। सावधान। होशियार।

**सज्य**—वि० [सं०] ज्या अर्थात् प्रत्यचा से युक्त। (धनुष) जिसपर प्रत्यचा चढी हो (को०)।

**सज्या**†—संज्ञा स्त्री० [सं० शय्या] दे० 'शय्या'।

**सज्योत्स्ना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्योत्स्नायुक्त रात। चाँदनी रात।

**सझ**—संज्ञा स्त्री० [सं० सज्जा] १ सजावट। २ तैयारी। (डिं०)।

**सझर**—संज्ञा स्त्री० [सं० सज्जा] सेना को सज्जित करने की क्रिया। फौज तैयार करना (डिं०)।

**सझनी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का छोटा पक्षी जिसकी पीठ काली, छाती सफेद और चोच लबी होती है।

**सझिदार**†—संज्ञा पुं० [हिं० साझीदार] [स्त्री० सझिदारिन्, हिस्सेदार। साझीदार। शरीक।

**सझिदारी**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सझिदार + ई (प्रत्य०)] साझेदार होने का भाव। साझा। शिरकत। साझेदारी।

**सझिया**†—संज्ञा पुं० [हिं० साझा] १ साझीदार। हिस्सेदार। २ साझा। हिस्सा। भाग।

**सट**—संज्ञा पुं० [सं०] १ जटा। २ वह व्यक्ति जो ब्राह्मण पिता और भटिजातीय माता से उत्पन्न हो (को०)।

**सटई**‡—संज्ञा स्त्री० [देश०] अनाज रखने का एक प्रकार का पात्र।

**सटक**—संज्ञा स्त्री० [अनु० सट से] १ सटकने की क्रिया। धीरे से चपत होने या खिसकने का व्यापार। २ तबाकू पीने का लचा लचीला नैचा जो भीतर छल्लेदार तार देकर बनाया जाता है।

**विशेष**—यह रबर की नली की भाँति लचीला और लपेटने योग्य होता है। अधिक लबे बाँस की निगाली रखने मे अडचन होती है, अत लोग सटक का व्यवहार करते है।

३ पतली लचनेवाली छडी। उ०—बिलक बिलकई सटक सी लफति सटक लौ आय। नारि सलोनी साँवरो नागिन लौ डसि जाय।—बिहारी (शब्द०)।

**सटकना¹**—क्रि० अ० [अनु० सट से] धीरे से खिसक जाना। रफू चक्कर होना। चल देना। चंपत होना। उ०—असुर यह बात तकि गयो रण ते सटकि बिपति ज्वर दियो तब शिव पठाई।—सूर (शब्द०)।

**सटकना²**—क्रि० स० बालों में से अनाज निकालने के लिये उसे कूटने की क्रिया। डाँठ कूटना या पीटना।

**सटकाना**—क्रि० स० [अनु० सट से] १ किसी को छड़ी, कोड़े आदि से मारना जिसमें 'सट' शब्द हो। जैसे,—दो कोड़े सटकाऊँगा, ठीक हो जाओगे। २ सड सड या सट सट शब्द करते हुए हुक्का पीना। जैसे,—क्या बैठे सटका रहे हो।

**सटकार**—संज्ञा स्त्री० [अनु० सट] १ सटकाने की क्रिया या भाव। २ फटकारने या झटकारने की क्रिया। ३ गौ आदि को हाँकने की क्रिया। हटकार। उ०—सारथी पाय रुख दए सटकार हय द्वारकापुरी जब निकट आई।—सूर (शब्द०)।

**सटकारना**—क्रि० स० [अनु० सट से] १ पतली लचीली छड़ी या कोड़े आदि से किसी को सट से मारना। सट सट मारना। २ झटकारना। फटकारना।

**सटकारा**—वि० [अनु०] चिकना और लंबा। (केश, बाल)। उ०—छुटे छुटावत जगत तें सटकारे सुकुमार। मन बाँधत बेनी बँधे नील छबीले बार।—स० सप्तक, पृ० १०५।

**सटकारी**—संज्ञा स्त्री० [स० अनु०] लचनेवाली पतली छड़ी। साँटी।

**सटक्का**—संज्ञा पु० [अनु० सट से] १ दे० 'सटका'। २ दौड़। झपट। जैसे,—एक सटक्के में तो तुम पर पहुँच जायँगे।

मुहा०—सटक्का मारना = एक साँस से दौड़कर या बहुत जल्दी जल्दी जाना।

**सटना**—क्रि० अ० [सं० स + √स्था] १ दो चीजों का इस प्रकार एक में मिलना जिसमें दोनों के एक पार्श्व एक दूसरे से लग जायँ। जैसे,—दीवार से अलमारी सटना। २ चिपकना। जैसे,—दफ्ती पर कागज सटना। ३ संभोग होना। (बाजारू)। ४ लाठी या डंडे आदि से मार पीट होना। लाठी सोटा चलना। मार पीट होना। (बदमाश)। ५ साथ होना। मिलना।

संयो० क्रि०—जाना।

**सटपट**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ सिपपिटाने की क्रिया। चकपकाहट। उ०—अरी खरी सटपट परी, बिधु आगे मग हेरि। संग लगे मधुपन लई भागत गली अँधेरि।—बिहारी (शब्द०)। २ शील। संकोच। ३ संकट। दुविधा। असमंजस।

क्रि० प्र०—में पड़ना।—में डालना।

**सटपटाना¹**—क्रि० अ० [अनु०] १ सटपट की ध्वनि होना। २ दे० 'सिटपिटाना'। उ०—छुटै न लाज न लालचौ प्यौ लखि नैहर गेह। सटपटात लोचन खरे, भरे सकोच सनेह।—बिहारी (शब्द०)। ३ दब जाना। मंद या मौन होना। ४ चकपकाना।

**सटपटाना²**—क्रि० स० सटपट शब्द उत्पन्न करना।

**सटर पटर¹**—वि०, क्रि० वि० [अनु०अ०] १ छोटा मोटा। तुच्छ। हलका। जैसे,—सटर पटर काम करने से न चलेगा। २ बहुत साधारण। बिलकुल मामूली।

**सटर पटर²**—संज्ञा स्त्री० १ उलझन का काम। बखेड़े का काम। २ व्यर्थ या तुच्छ काम। जैसे,—इसी सटर पटर में दिन बीत जाता है।

क्रि० प्र०—करना।—लगाना।

**सट सट**—क्रि० वि० [अनु०] १ सट शब्द के साथ। सटासट। २ शीघ्र। बहुत जल्दी। तुरत। जैसे, —वह सब काम सट सट निपटा डालता है।

**सटाक**—संज्ञा पु० [स० सटाङ्क] सिंह। शेर।

**सटा**—संज्ञा स्त्री० [स०] १ चूड़ा। शिखा। २ जटा। ३ घोड़े या शेर के कंधे पर के बाल। अयाल। केसर। ४ शूकर का बाल (को०)। ५ केशपाश। वेणी। जूड़ा (को०)। ६ द्युति। दीप्ति। चमक (लाक्ष०)। ७ बाहुल्य। बहुलता। बहु संख्या (को०)।

**सटाक**—संज्ञा पुं० [अनु०] सट शब्द। 'सट' की आवाज।

**सटाका¹**—संज्ञा पुं० [अनु०] १ दे० 'सटाकी'। २ दे० 'सटाक'।

**सटाका²**—क्रि० वि० सट से। तुरत। झटपट।

**सटाकी**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] चमड़े की वह रस्सी या पट्टी जो पैना के सिरे पर बाँधी जाती है।

विशेष—पैना बाँस का एक पतला छोटा डंडा होता है जिससे हल जोतनेवाला या गाड़ी हाँकनेवाला बैल हाँकता है। इस पैना को कोड़े का आकार देने के लिये इसमें चमड़े की पतली पतली पट्टियाँ बाँधते हैं। इन्हीं पट्टियों को सटाकी कहते हैं। सटाकी और डंडा दोनों मिलकर 'पैना' होता है।

**सटान**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सटना + आन (प्रत्य०)] १ सटने की क्रिया या भाव। मिलान। २ दो वस्तुओं के सटने या मिलने का स्थान। जोड़।

**सटाना**—क्रि० स० [स० स + √स्था] १ दो चीजों को एक में संयुक्त करना। दो चीजों के पार्श्वों को आपस में मिलाना। मिलाना। जोड़ना। ३ लाठी, डंडे आदि से लड़ाई करना। मारपीट करना। (बदमाश)। ४ स्त्री और पुरुष का संयोग कराना। संभोग कराना। (बाजारू)।

**सटाय**—वि० [देश०] १ (दलालों की परिभाषा में) कम। न्यून। २ हलका। घटिया। खराब।

**सटाल¹**—संज्ञा पुं० [स०] सिंह। केसरी। शेर बबर।

**सटाल²**—जिसकी गर्दन पर अयाल हो। २ पूर्ण। युक्त (को०)।

**सटालु**—संज्ञा पुं० [सं०] अपक्व फल। वह फल जो पका न हो (को०)।

**सटि**—संज्ञा स्त्री० [स०] कचूर। शटी।

**सटिका**—संज्ञा स्त्री० [स०] वन आदी। जंगली कचूर।

**सटियल**—वि० [स० स्रस्त] जो रद्दी किस्म का हो। 'घटिया दरजे का।

**सटिया**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सटना] १ सोने या चाँदी की एक प्रकार की चूड़ी। २ चाँदी की एक प्रकार की कलम जिससे स्त्रियाँ माँग में सिंदूर देती हैं। ३ दे० 'साटी'। ४ अभिसंधि। गुप्त वार्ता या षडयंत्र करना।

सटी—संज्ञा स्त्री० [स०] वनआदी। जंगली कचूर।

सटीक¹—वि० [स०] जिसमें मूल के साथ टीका भी हो। टीका सहित। व्याख्या सहित। जैसे,—सटीक रामायण।

सटीक²—वि० [हिं० ठीक या स० सटीक] बिलकुल ठीक। जैसा चाहिए ठीक वैसा ही। जैसे,—यह तसवीर बन तो रही है, सटीक उतर जाय, तो बात है।

संयो० क्रि०—पड़ना।—बैठना।

सटैला—संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

सटोरिया—संज्ञा पु० [हिं० सट्टा] सट्टेबाज। सट्टा खेलनेवाला।

सट्ट¹—संज्ञा पु० [स०] दरवाजे की चौखटे में दोनों ओर की लकड़ियाँ। बाजू।

सट्ट²—संज्ञा पु० [हिं० सट्टा] दे० 'सट्टा'।

सट्टक—संज्ञा पु० [स०] १ प्राकृत भाषा में प्रणीत छोटा रूपक। एक उपरूपक। जैसे,—राजशेखर कृत कर्पूर मंजरी है। २ जीरा मिला हुआ मट्ठा।

सट्टा¹—संज्ञा पु० [देश०] १ वह इकरारनामा जो काश्तकारों में खेत के साझे आदि के संबंध में होता है। बटाई। २ वह इकरारनामा जो दो पक्षों में कोई निश्चित काम करने या कुछ शर्तें पूरी करने के लिये होता है। इकरारनामा। जैसे,—बाजेवालों को पेशगी रुपया दे दिया, पर उनसे सट्टा नहीं लिखाया।

सट्टा²—संज्ञा पु० [हिं० हाट या सट्टी] १ वह स्थान जहाँ लोग वस्तुएँ खरीदने बेचने के लिये एकत्र होते हैं। हाट। बाजार। २ बाजार की तेजी मंदी के अनुमान के आधार पर अधिक लाभ की दृष्टि से की हुई खरीदफरोख्त जो एक प्रकार का द्यूत माना जाता है। दे० 'सट्टेबाज'।

यौ०—सट्टा बाजार = वह बाजार जहाँ सट्टे का काम होता है। सट्टेबाज।

सट्टा³—संज्ञा स्त्री० [स०] १. एक प्रकार का पक्षी। २ बाजा।

सट्टा बट्टा—संज्ञा पुं० [हिं० सटना + अनु० बट्टा] १ मेल मिलाप। हेल मेल। २ सिद्धि के लिये की हुई धूर्ततापूर्ण युक्ति। चालबाजी।

मुहा०—सट्टा बट्टा लड़ाना = अपना कार्य सिद्ध करने के लिये किसी प्रकार की युक्ति करना।

सट्टी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाट या हट्टी] वह बाजार जिसमें एक ही मेल की बहुत सी चीजें लोग दूर दूर से लाकर बेचते हो। हाट। जैसे,—तरकारी की सट्टी, पान की सट्टी।

मुहा०—सट्टी मचाना = ऐसा शोर करना जैसा सट्टी में होता है। बहुत से लोगों का मिलकर जोर जोर से बोलना। जैसे,—पंडितजी के दरजे में तो लड़कों ने सट्टी मचा रखी है। सट्टी लगाना = बहुत सी चीजें इधर उधर फैला देना। जैसे,—तुमने यहाँ किताबों की सट्टी लगा रखी है।

सट्टेबाज—संज्ञा पुं० [हिं० सट्टा + फा० बाज (प्रत्य०)] वह आदमी जो अधिक लाभ की दृष्टि से बाजार में क्रय विक्रय करे। सट्टा खेलनेवाला।

विशेष—यह व्यापारियों का एक प्रकार का जुआ है। कभी कभी लाभ के स्थान पर व्यापारी इसमें अपना सर्वस्व गँवा देता है।

सट्टेबाजी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सट्टेबाज + ई (प्रत्य०)] सट्टेबाज का काम। सट्टा खेलने का काम।

सट्वा—संज्ञा पुं० [स०] १ एक प्रकार का पक्षी। २ प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा।

सठ¹—संज्ञा पुं० [सं० षष्टि, प्रा० सट्ठि, दे० हिं० साठ] साठ की संख्या। दे० 'साठ'।

सठ²—संज्ञा पु० [स० शठ] दे० 'शठ'।

सठई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सठ + ई (प्रत्य०)] शठ होने का भाव। सठता।

सठता—संज्ञा स्त्री० [स० शठ, हिं० सठ + ता (प्रत्य०)] १ शठ होने का भाव। शठ का धर्म। शठता। २ मूर्खता। बेवकूफी। उ०—जानी राम न कहि सके भरत लखन सिय प्रीति। सो सुनि समुझि तुलसी कहत हठ सठता की रीति।—तुलसी (शब्द०)।

सठि—संज्ञा स्त्री० [स०] कचूर [को०]।

सठियाना—क्रि० अ० [हिं० साठ + इयाना (प्रत्य०)] १ साठ वर्ष की अवस्था को प्राप्त होना। साठ बरस का होना। २ वृद्धावस्था के कारण बुद्धि तथा विवेकशक्ति का कम हो जाना।

विशेष—इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग व्यक्ति और बुद्धि दोनों के लिये होता है। जैसे,—(क) उनकी बात छोड़ दो, वे तो सठिया गए हैं। (ख) तुम्हारी तो अक्ल सठिया गई है।

संयो० क्रि०—जाना।

सठुरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीठी या साँठी] गेहूँ या जौ आदि के डंठलों का वह गँठीला अंश जिसका भूसा नहीं होता और जो ओसाकर अलग कर दिया जाता है। गठुरी। कूँटा। कूँटी।

सठेरा—संज्ञा पु० [हिं० साँठा] सन का वह डंठल जो सन निकल जाने पर बच रहता है। सठा। सरई। सलई।

सठोरा—संज्ञा पुं० [हिं० सोंठ + ओरा (प्रत्य०)] दे० 'सोंठौरा'।

सठ्ठो—संज्ञा पुं० [डिं०] ऊँट। क्रमेलक।

सड¹—संज्ञा पुं०, स्त्री० [अनु०] दे० 'सड़ाक'।

सड†²—संज्ञा पु० [स० सप्त] सात। सात की संख्या। समस्त शब्दों में पूर्व पद के रूप में प्रयुक्त। जैसे, सड़सठ।

सडक—संज्ञा स्त्री० [अ० शरक़] १ आने जाने का चौड़ा रास्ता। राजमार्ग। राजपथ। २ रास्ता। मार्ग।

सड़क्का—संज्ञा पुं० [हिं० सटक्का] दे० 'सटक्का'।

सडन—संज्ञा स्त्री० [हिं० सड़ना] सड़ने की क्रिया या भाव। गलन।

सड़ना—क्रि० अ० [स० शरण] १ किसी पदार्थ में ऐसा विकार होना जिससे उसके संयोजक तत्व या अंग बिलकुल अलग अलग हो जायँ, उसमें से दुर्गंध आने लगे और वह काम के योग्य न रह जाय। जैसे,—उँगली सड़ना, फल सड़ना। २ किसी पदार्थ में खमीर उठना या आना।

संयो० क्रि०—जाना।

३ दुर्दशा में पड़ा रहना। बहुत बुरी हालत में रहना। जैसे—रियासतों में लोग बरसों तक जेलखाने में यों ही सड़ते हैं।

सड़सठ¹—संज्ञा पु० [हिं० सड़ (सात का रूप) + साठ] साठ और सात की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६७।

सडसठ²—वि० जो गिनती मे साठ से सात अधिक हो।

सड़सठवाँ—वि० [हि० सडसठ+वाँ (प्रत्य०)] गिनती मे सडसठ के स्थान पर पडनेवाला।

सडसी—सज्ञा स्त्री० [हि० सँडसी] दे० 'सँडसी'।

सडा—सज्ञा पुं० [हि० सडना] वह औषध जो गौओ को बच्चा होने के समय पिलाते है। प्राय यह औषध सडाकर बनाते हैं, इसी से इसे सडा कहते है।

सडाइँद—सज्ञा स्त्री० [हि० सडना+गध] दे० 'सडायँध'।

सडाक—सज्ञा पुं०, स्त्री० [अनु० 'सड' से] १ कोडे आदि की फटकार की आवाज जो प्राय सड के समान होती है। २ शीघ्रता। जल्दी। जैसे,—सडाक से चले जाओ और चले आओ।

सडान—सज्ञा स्त्री० [हि० सडना] सडने का व्यापार या क्रिया। सडना।

सडाना—क्रि० स० [हि० सडना का सक० रूप] १ सडना का सकर्मक रूप। किसी वस्तु को सडने मे प्रवृत्त करना। किसी पदार्थ मे ऐसा विकार उत्पन्न करना कि उसके अवयव गलने लगे और उसमे से दुर्गंध आने लगे। जैसे,—(क) सब आम तुमने रखे रखे सडा डाले। (ख) महुए को सडाकर शराब बनाई जाती है। २ किसी वस्तु को बुरी दशा मे रखना अथवा उसका उपयोग न करना, न करने देना।

सयो० क्रि०—डालना।—देना।

सडायँध—सज्ञा स्त्री० [हि० सडना+गध] सडी हुई चीज की गध।

सडाव—सज्ञा पुं० [हि० सडना+आव (प्रत्य०)] सडने की क्रिया या भाव। सडना।

सडासड—अव्य० [अनु० 'सड' से] सड शब्द के साथ। जिसमे सडसड शब्द हो। जैसे,—चोर पर सडासड कोडे पडने लगे।

सडियल—वि० [हि० सडना+इयल (प्रत्य०)] १ सडा हुआ। गला हुआ। २ निकम्मा। रद्दी। खराब। ३ नीच। तुच्छ। जैसे,—सडियल आदमी सडियल एक्का, सडियल तसवीर।

सढ—सज्ञा पुं० [देश०] वैश्यो की एक जाति।

सण—सज्ञा पुं० [स० शण] दे० 'सन'।

सणगार(पु)†—सज्ञा पुं० [स० शृङ्गार] शृगार। सजावट। (डिं०)।

सणतूल—सज्ञा पुं० [स०] सन का रेशा। शणतंतु।

सणसूत्र—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'शणसूत्र'।

सणि—सज्ञा स्त्री० [स०] गाय के श्वास की गध (को०)।

सतद्र—वि० [स० सतन्द्र] तद्रायुक्त। क्लात। थका हुआ (को०)।

सत्¹—सज्ञा पुं० [स०] १ ब्रह्म। २ वह जो वस्तुत विद्यमान हो। अस्तित्व। सत्ता (को०)। ३ सचाई। वास्तविकता (को०)। ४ भद्र पुरुष। सद्गुणी व्यक्ति (को०)। ५ जल (वेद)। ६ कारण (को०)।

सत्²—वि० १ सत्य। २ साधु। सज्जन। ३ धीर। ४ नित्य। स्थायी। ५ विद्वान्। पंडित। ६ मान्य। पूज्य। ७ प्रशस्त। ८ शुद्ध। पवित्र। ९ श्रेष्ठ। उत्तम। अच्छा। भला। १० वर्तमान। विद्यमान (को०)। ११ ठीक। उचित (को०)। १२ मनोहर। सुदर (को०)। १३ दृढ। स्थिर (को०)।

सत¹—वि० [हि०] दे० 'सत्'।

सत²—सज्ञा पुं० [स० सत्] सत्यतापूर्ण धर्म।

मुहा०—सत पर चढना = पति के मृत शरीर के साथ सती होना। सत पर रहना = पतिव्रता रहना। सती रहना।

सत³—वि० [स० शत] दे० 'शत'।

सत⁴—सज्ञा पु० [स० सत्त्व] १ किसी पदार्थ का मूल तत्व। सार भाग। जैसे —मुलेठी का सत। २ जीवनी शक्ति। ताकत। जैसे,—चार दिन के बुखार मे शरीर का सारा सत निकल गया।

सत⁵—वि० [स० सप्त] १ 'सात' (सख्या) का सक्षिप्त रूप जिसका व्यवहार यौगिक शब्द बनाने मे होता है। जैसे,—सतमजिला।

सतकार पु—सज्ञा पुं० [स० सत्कार] दे० 'सत्कार।

सतकारना पु—क्रि० स० [स० सत्कार+हि० ना (प्रत्य०)] सत्कार करना। आदर करना। सम्मान करना। इज्जत करना। उ०—(क) गुरु को जेठो बधु विचारयो। करि प्रणाम अतिशय सतकारयो। (ख) राजा कियो ताहि परनामा। सादर सतकारयो मति धामा।—रघुराज (शब्द०)।

सतकोन—वि० [हि० सात+कोना] जिसमे सात कोने हो। सात कोनो वाला।

सतगँठिया—सज्ञा स्त्री० [हि० सात+गाँठ] एक प्रकार की वनस्पति जिसकी तरकारी बनाई जाती है।

सतगुरु—सज्ञा पुं० [हि० सत (=सच्चा)+गुरु या स० सद्गुरु] १ अच्छा गुरु। २ परमात्मा परमेश्वर।

सतजीत—सज्ञा पुं० [स० सत्यजित्] दे० 'सत्यजित्'।

सतजुग—सज्ञा पु० [स० सत्ययुग] दे० 'सत्ययुग'।

सतत—अव्य० [स०] निरतर। सदा। सर्वदा। हमेशा। बराबर।

सततक—वि० [स०] (ज्वर) जो दिन भर मे दो बार चढता हो (को०)।

सततग—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो सदा चलता रहता हो। २ पवन। वायु। हवा।

सततगति—सज्ञा पुं० [स०] वायु। हवा।

सततज्वर—सज्ञा पुं० [स०] वह ज्वर जो दिन मे दो बार आवे, या कभी दिन मे एक बार और फिर रात को भी एक बार आवे। द्विकालिक विषम ज्वर।

सततदुर्गत—वि० [स०] निरतर बुरी अवस्थावाला। जो सदा कष्ट मे रहे (को०)।

सततधृति—वि० [स०] निरतर धैर्यशील रहनेवाला। जो सर्वदा दृढ सकल्प युक्त हो (को०)।

सततपरिग्रह—अ० [स०] निरतर (को०)।

सततयायी—वि० [स० सततयायिन्] १ निरतर गतिशील। २ निरतर क्षयालु या क्षयशील (को०)।

सततयुक्त—वि० [स०] सदा तत्पर। सतत अनुरक्त या परायण (को०)।

सतत समिताभियुक्त--संज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम।

सतत स्पदन--वि० [सं० सततस्पन्दन] नित्य स्पदनशील।

सतताभियोग--संज्ञा पुं० [सं०] किसी न किसी कार्य में सदैव लगा रहना [को०]।

सतति--वि० स्त्री० [सं०] जो सदा चला करे या विच्छिन्न न हो।

सतत्व--संज्ञा पुं० [सं०] स्वभाव। प्रकृति।

सतदत--संज्ञा पुं० [हिं० सात+दाँत] [वि० सतदता] वह पशु जिसके सात दाँत हो गए हों।

विशेष--प्राय पशुओं को पूरे दाँत निकल आने के पूर्व उनके दाँतों की संख्या के अनुसार पुकारते हैं। जैसे, दुदता, चौदता, सतदता आदि शब्द क्रमश दो, चार और सात दाँतोंवाले बछड़े के लिये प्रयुक्त होते हैं।

सतदल(पु)--संज्ञा पुं० [सं० शतदल] १ कमल। २ सौ दलों या पँखुड़ियोंवाला कमल।

सतध्रत--संज्ञा पुं० [सं० शतधृत] ब्रह्मा। (डिं०)।

यौ०--सतध्रत सुत=नारदमुनि।

सतन--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का लाल चदन जिसकी गध भूमि या मिट्टी के समान होती है [को०]।

सतनजा--संज्ञा पुं० [हिं० सात+अनाज] सात भिन्न प्रकार के अन्नों का मेल। वह मिश्रण जिसमें सात भिन्न भिन्न प्रकार के अनाज हों।

सतनी†--संज्ञा स्त्री० [सं० सप्तपर्ण] १ सप्तपर्ण वृक्ष। सतिवन। छतिवन। २ एक प्रकार का बहुत ऊँचा वृक्ष।

विशेष--इस वृक्ष की छाल का रग कालापन लिए होता है। और लकड़ी सदूक आदि बनाने के काम में आती है। यह बगाल, दक्षिण भारत और हिमालय में अधिकता से पाया जाता है।

सतनु--वि० [सं०] जिसे तन हो। शरीरवाला।

सतपतिया¹--संज्ञा स्त्री० [हिं० सतपुतिया] दे० 'सतपुतिया'।

सतपतिया²--संज्ञा स्त्री० [हिं० सात+पति] १ वह स्त्री जिसने सात पति किए हों। २ पुश्चली। छिनाल।

सतपदी--संज्ञा स्त्री० [सं० सप्तपदी] दे० 'सप्तपदी'।

सतपरब†--संज्ञा पुं० [सं० शतपर्वा] १ शतपर्वा। बाँस। २ ऊख। गन्ना।

सतपात--संज्ञा पुं० [सं० शतपत्र, प्रा० सतपत्त] शतपत्र। कमल।

सतपुतिया--संज्ञा स्त्री० [सं० सप्तपुत्रिका] एक प्रकार की तोरई जो प्राय सब प्रांतों में होती है।

विशेष--इसके बोने का समय वर्षा ऋतु है। इसकी लता भूमि पर फैलती है या मँटे पर चढ़ाई जाती है। इसके फल साधारण तोरई से कुछ छोटे होते हैं और पाँच, सात या कभी कभी इससे भी अधिक संख्या में एक साथ गुच्छों में लगते हैं।

सतपुरिया--संज्ञा स्त्री० [हिं०] एक प्रकार की जगली मधुमक्खी।

सतफेरा(पु)--संज्ञा पुं० [हिं० सात+फेरा] विवाह के समय होनेवाला सप्तपदी नामक कर्म। विशेष दे० 'सप्तपदी'। उ०--फिरहिं दोउ सतफेर घुने के। सातहि फेर गाँठ सो एके।--जायसी (शब्द०)।

सतबरवा--संज्ञा पुं० [सं० शतपर्व (=बाँस)] एक प्रकार का वृक्ष जो नैपाल में होता और जिससे नैपाली कागज बनाया जाता है।

सतभइया--संज्ञा स्त्री० [हिं० सात+भाई] एक प्रकार की मैना (पक्षी) जिसे पेंगिया मैना भी कहते हैं।

विशेष--इसकी लबाई प्राय. एक बालिश्त होती है। इसका रग पीलापन लिए भूरा होता है। इसके पैर और पजे पीले होते है। ऋतुभेदानुसार यह रग बदलती है। यह झुड में रहती है और छोटे, घने वृक्षों या झाड़ियों में घोसला बनाती है। यह एक बार में प्राय तीन अडे देती है। यह बहुत शोर करती है। कहते हैं कि कोयल प्राय अपने अडे इसी के घोसले में रखती है।

सतभाव(पु)--संज्ञा पुं० [सं० सद्भाव] १ सद्भाव। अच्छा भाव। २ सरलता। सीधापन। ३. सच्चापन। सचाई।

सतभौरी--संज्ञा स्त्री० [सं० सप्त भ्रमण] हिंदुओं में विवाह के समय की एक रीति। इसमें वर और वधू को अग्नि की सात बार प्रदक्षिणा करनी पड़ती है। इसे 'भौरी पड़ना' भी कहते हैं।

सतमख--संज्ञा पुं० [सं० शतमख] जिसने १०० यज्ञ किए हों। शतक्रतु। इद्र (डिं०)।

सतमसा--संज्ञा स्त्री० [सं०] मार्कंडेय पुराण के अनुसार एक नदी का नाम।

सतमस्क--वि० [सं०] अधकारयुक्त। तमसाच्छन्न [को०]।

सतमासा--संज्ञा पुं० [हिं० सात+मास] १ सात मास पर उत्पन्न शिशु। वह बच्चा जो गर्भ में सातवें महीने उत्पन्न हुआ हो। (ऐसा बच्चा प्राय. बहुत रोगी और दुबला होता है और जल्दी जीता नहीं)। २ वह रसम जो शिशु के गर्भ में आने पर सातवें महीने की जाती है।

सतमूली--संज्ञा स्त्री० [सं० शतमूली] सतावर। शतावरी।

सतयुग--संज्ञा पुं० [सं० सत्ययुग] दे० 'सत्ययुग'।

सतरग--वि० [हिं० सतरगा] दे० 'सतरगा'।

सतरगा¹--वि० [हिं० सात+रग] जिसमें सात रग हों। सात रगों वाला। जैसे--सतरगा साफा, सतरगी साड़ी।

सतरगा²--संज्ञा पुं० इद्रधनुष जिसमें सात रग होते हैं।

सतरज--संज्ञा स्त्री० [अ० शतरज या सं० चतुरङ्ग] दे० 'शतरज'। उ०--सतरज को सो राज काठ को सब समाज महाराज बाजी रचो प्रथम हुति।--तुलसी (शब्द०)।

सतरजी--संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शतरजी] दे० 'शतरजी'।

सतर¹--संज्ञा स्त्री० [अ०] १ लकीर। रेखा।

क्रि० प्र०--खींचना।

२ पंक्ति। अवली। कतार।

सतर³—वि० १ टेढ़ा। वक्र। उ०—रमन कह्यो हँसि रमनि सों रति विपरीत विलास। चितई करि लोचन सतर सगरब सलज सहास। - बिहारी (शब्द०)। २ कुपित। क्रुद्ध। उ०—(क) कान्हहु पर सतर भौहैं महरि मनहि विचारु।—तुलसी ग्रं० पृ० ४३५। (ख) सुनहु श्याम तुमहूँ सरि नाहीं ऐसे गए बिलाइ। हम सों सतर होत सूरज प्रभु कमल देहु अब जाइ।—सूर (शब्द०)।

सतर⁴—संज्ञा स्त्री०, पुं० [अ०] १ मनुष्य का वह अंग जो ढका रखा जाता है और जिसके न ढके रहने पर उसे लज्जा आती है। गुह्य इंद्रिय।

मुहा०—बेसतर करना = (१) नंगा करना। विवस्त्र करना। (२) बेइज्जत करना।

२ ओट। आड़। परदा। ३ छिपाना। गोपन करना।

यौ०—सतरपोश = जिससे तन ढाँका जाय। सतरपोशी = शरीर ढाँकना। तन ढाँकना।

सतरकी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सत्रह] वह क्रिया जो किसी की मृत्यु के पश्चात् सत्रहवें दिन की जाती है। सत्रही।

सतरह†—वि० संज्ञा पुं० [हिं० सत्तरह] दे० 'सत्तरह'।

सतराना—क्रि० अ० [हिं० सतर या सं० सतर्जन] १ क्रोध करना। कोप करना। उ०—हम ही पर सतरात कन्हाई।—सूर (शब्द०)। २ कुढ़ना। चिढ़ना। बिगड़ना। उ०—(क) जु ज्यौं उझकि झाँपति वदन, झुकति विहँसि सतराइ। तु त्यौं गुलाल मुठी झुठी झझकावतु पिय जाइ।—बिहारी (शब्द०)। (ख) चंद दुति मंद भई, फंद में फँसी हौं आय, द्वंद नंद ठानैंगी रे, जोरे जुग पानि दै। सासु सतरैहे, जेठ पतिनी रिसैहे, उक वचन सुनैहै, छाँडि गर की भुजानि दै।—देव (शब्द०)।

क्रि० प्र०—जाना। उ०—लेहु अब लेहु, तब कोऊ न सिखायो मान्यो, कोई सतराइ जाइ जाहि जाहि रोकिए।—तुलसी (शब्द०)।

सतराहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० सतराना + हट (प्रत्य०)] कोप। गुस्सा। नाराजगी।

सतरी†—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पदंष्ट्रा] सर्पदंष्ट्रा नामक ओषधि।

सतरौहाँ†—वि० हिं० सतराना + औंहा (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सतरौंही] १ कुपित। क्रोधयुक्त। २ कोपसूचक। रिसाया हुआ सा। उ०—सकुचि न रहिए स्याम सुनि ये सतरौहै बैन। देत रचौहैं चित कहे नेह नचौंहै नैन।—बिहारी (शब्द०)।

सतर्क—वि० [सं०] १ तर्कयुक्त। युक्ति से पुष्ट। दलील के साथ। २ जो विवेकशील हो (को०)। ३ सावधान। होशियार। सचेत। खबरदार।

सतर्कता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सतर्क होने का भाव। सावधानी। होशियारी।

सतर्पना —क्रि० स० [सं० सन्तर्पण] भली भाँति तृप्त करना। संतुष्ट करना।

सतर्ष—वि० [सं०] तृषित। प्यासा।

सतल—वि० [सं०] १ तल या आधारयुक्त। २ पेंदेवाला। जिसमें पेंदा हो (को०)।

सतलज—संज्ञा स्त्री० [सं० शतद्रु] पंजाब की नदियों में से एक। शतद्रु नदी।

सतलड़ा—वि० [हिं० सात + लड़] [वि० स्त्री० सतलड़ी] जिसमें सात लड़ हों। जैसे,—सतलड़ा हार।

सतलड़ी, सतलरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सात + लड़ी] गले में पहनने की सात लड़ियों की माला या हार।

सतवंती—वि० स्त्री० [हिं० सत्य + वंती (प्रत्य०)] सतवाली। सती। पतिव्रता।

सतवर्ग—संज्ञा पुं० [फा० सदवर्ग] दे० 'सदवर्ग'।

सतसंग—संज्ञा पुं० [सं० सत्सङ्ग] दे० 'सत्संग'। उ०—बिनु सतसंग विवेक न होई।—मानस, १।३।

सतसंगति—संज्ञा स्त्री० [सं० सत्सङ्गति] दे० 'सत्संग'। उ०—सठ सुधरहिं सतसंगति पाई। पारस परस कुधातु सुहाई।—मानस, १।३।

सतसंगी—वि० [सं० सत्सङ्गिन्] दे० 'सत्संगी'।

सतसइया—संज्ञा स्त्री० [सं० सप्तशतिका] दे० 'सतसई'। उ०—सतसइया के दोहरे ज्यों नावक के तीर। देखन में छोटे लगें घाव करें गंभीर।

सतसई—संज्ञा स्त्री० [सं० सप्तशती, प्रा० सत्तसई] १ वह ग्रंथ जिसमें सात सौ पद्य हों। सात सौ पद्यों का समूह या संग्रह। सप्तशती।

विशेष—हिंदी साहित्य में 'सतसई' शब्द से प्रायः सात सौ दोहे ही समझे जाते हैं। जैसे,—बिहारी की सतसई।

सतसठ†—वि० [सं० सप्तषष्ठि, हिं० सड़सठ] दे० 'सड़सठ'।

सतसल—संज्ञा पुं० [देश०] शीशम का पेड़।

सतह—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ किसी वस्तु का ऊपरी भाग। बाहर या ऊपर का फैलाव। तल। जैसे,—मेज की सतह, समुंदर की सतह।

मुहा०—सतह चौरस या बराबर करना = समतल करना। उभार और गहराई अथवा खुरदुरापन निकालना।

२ रेखागणित के अनुसार वह विस्तार जिसमें लंबाई और चौड़ाई हो, पर मोटाई न हो। ३ जमीन की फर्श या छत।

सतहत्तर¹—वि० [सं० सप्तसप्तति, पा० सत्तसत्तति, प्रा० सत्तहत्तरि] सत्तर और सात। जो गिनती में तीन कम अस्सी हो।

सतहत्तर²—संज्ञा पुं० सत्तर से सात अधिक की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—७७।

सतहत्तरवाँ—वि० [हिं० सतहत्तर + वाँ (प्रत्य०)] जिसका स्थान सतहत्तर पर हो। जो क्रम में सतहत्तर के स्थान पर पड़ता हो।

सतांग—संज्ञा पुं० [सं० शताङ्ग] रथ। यान। उ०—कोउ तुरंग चढ़ि कोउ मतंग चढ़ि कोउ सतांग चढ़ि आए। अति उछाह नरनाह भरे सब संपति विपुल लुटाए।—रघुराज (शब्द०)।

सतानंद—संज्ञा पुं० [सं० सतानन्द] गौतम ऋषि के पुत्र जो राजा जनक के पुरोहित थे। उ०—सतानंद तब आएसु दीन्हा। सीता गमन समीपहिं कीन्हा।—मानस, १।२६३।

सताना—क्रि० स० [सं० सतापन, प्रा० सतावन] १ संताप देना। कष्ट पहुँचाना। दुःख देना। पीडित करना। उ०—(क) कह्यौ सुरन्ह तुम ऋषिहि सतायो। तातें फर रहि गयो उतायो।—सूर (शब्द०)। (ख) गई कालिंदी विरह सताई। चलि पराग अरइल विच आई।—जायसी (शब्द०)। २ तंग करना। हैरान करना। ३ किसी के पीछे पडना।

सतार—संज्ञा पुं० [सं०] जैनों के अनुसार ग्यारहवें स्वर्ग का नाम।

सतारुक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का कुष्ठ या कोढ जिसमें शरीर पर लाल और काली फुंसियाँ निकलती हैं।

सतारू—संज्ञा पुं० [सं० सतारुक] दे० 'सतारुक'।

सतालू—संज्ञा पुं० [सं० सप्तालुक, मि० फ़ा० शफ़्तालू] एक पेड जिसके गोल फल खाए जाते हैं। शफ्तालू। आडू।

विशेष—यह पेड मझोले कद का होता है और भारत के ठंढे प्रदेशों में पाया जाता है। इसके पत्ते लंबे, नुकीले और कुछ श्यामता लिए गहरे रंग के होते हैं। पतझड के पीछे नए पत्ते निकलने के पहले इसमें लाल रंग के फूल लगते हैं। फल गूलर की तरह गोल और पकने पर हरे और लाल रंग के होते हैं जिनके ऊपर बहुत महीन सफेद रोइँयाँ होती हैं। ये फल खाने में बड़े मीठे होते हैं। इसके बीज कडे छिलके के और बादाम की तरह के होते हैं। इसकी लकडी मजबूत और ललाई लिए होती है तथा उसमें से एक प्रकार की हलकी सुगंध भी निकलती है।

सतावना(पु)—क्रि० स० [प्रा० सतावण, हिं० सताना] दे० 'सताना'।

सतावर—संज्ञा स्त्री० [सं० शतावरी] एक झाड़दार बेल जिसकी जड और बीज औषध के काम में आते हैं। शतमूली। नारायणी।

विशेष—यह बेल भारत के प्रायः सभी प्रांतों में होती है। इसकी टहनियों पर छोटे छोटे महीन काँटे होते हैं। पत्तियाँ सोए की पत्तियों की सी होती हैं और उनमें एक प्रकार की क्षारयुक्त गंध होती है। फूल इसके सफेद होते हैं और गुच्छे में लगते हैं। फल जंगली बेर के समान होते हैं और पकने पर लाल रंग के हो जाते हैं। प्रत्येक फल में एक या दो बीज होते हैं। इसकी जड बहुत पुष्टिकारक और वीर्यवर्धक मानी जाती है। स्त्रियों का दूध बढाने के लिये भी यह दी जाती है। वैद्यक में इसका गुण शीतल, मधुर, अग्निदीपक, बलकारक और वीर्यवर्द्धक माना गया है। ग्रहणी और अतिसार में भी इसका क्वाथ देते हैं।

सतासी[1]—वि० [सं० सप्तशीति, प्रा० सत्तासी] अस्सी और सात। जो गिनती में अस्सी से सात अधिक हो।

सतासी[2]—संज्ञा पुं० सात ऊपर अस्सी की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है,—८७।

सतासीवाँ—वि० [सं० सप्ताशीतितम, हिं० सतासी + वाँ (प्रत्य०)] जिसका स्थान अस्सी से सात अधिक की संख्या पर हो। जो क्रम में सतासी पर पडता हो।

सति(पु)[1]—संज्ञा पुं० [सं० सत्य, प्रा० सत्ति] दे० 'सत्य' या 'सत'।

सति[2]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उपहार। भेंट। दान। २ अंत। नाश (को०)।

सतिभाउ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सत्यभाव या सद्भाव] दे० 'सद्भाव'। उ०—(क) दानिसिरोमनि कृपानिधि नाथ कहौं सतिभाउ।—मानस, १।१४६। (ख) कहति परस्पर बचन जसोमति लखि नहिं सकति कपट सतिभाऊ।—तुलसी ग्रं०, पृ० ४३४।

सतिवन—संज्ञा पुं० [सं० सप्तपर्ण, प्रा० सत्तवन्न] एक सदाबहार बडा पेड जिसकी छाल आदि दवा के काम में आती है। सप्तपर्णी। छतिवन।

विशेष—इसका पेड ४०-५० हाथ ऊँचा होता है और भारत के प्रायः सभी स्थानों में पाया जाता है। भारतवर्ष के बाहर आस्ट्रेलिया और अमेरिका के कुछ स्थानों में भी यह मिलता है। यह बहुत जल्दी बढता है। पत्ते सेमर के पत्तों के समान और एक सीके में सात सात लगते हैं। इसकी लकडी मुलायम और सफेद होती और सजावट के सामान बनाने के काम आती। फूल हरापन लिए सफेद होता है। फूलों के झड जाने पर हाथ भर के लगभग लंबी पतली रोईंदार फलियाँ लगती हैं। यह वसंत ऋतु में फूलता और वैशाख-जेठ में फलता है। फूलों में एक प्रकार की मदायन गंध होती है, इसी से कवियों ने कहीं कहीं इस गंध की उपमा गजमद से दी है। आयुर्वेद के अनुसार इसकी छाल त्रिदोषनाशक, अग्निदीपक, ज्वरघ्न और बलदायक होती है। ज्वर दूर करने में इसकी छाल का काढा कुनैन के समान ही होता है। ज्वर के पीछे की कमजोरी भी इससे दूर होती है।

सती[1]—वि० स्त्री० [सं०] अपने पति को छोड और किसी पुरुष का ध्यान मन में न लानेवाली। साध्वी। पतिव्रता।

सती[2]—संज्ञा स्त्री० १ दक्ष प्रजापति की कन्या जो भव या शिव को ब्याही गई थी। २ पतिव्रता स्त्री। ३ वह स्त्री जो अपने पति के शव के साथ चिता में जले। सहगामिनी स्त्री।

मुहा०—सती होना = (१) मरे हुए पति के शरीर के साथ चिता में जल मरना। सहगमन करना। (१) किसी के पीछे मर मिटना।

४ मादा। मादापशु। ५ गंधयुक्त मृत्तिका। सोंधी मिट्टी। ६ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण और एक गुरु होता है। ७ विश्वामित्र की स्त्री का नाम। ८ अंगिरा की स्त्री का नाम। ९ संन्यासिनी (को०)। १० दुर्गा या पार्वती का एक नाम (को०)।

सती(पु)[3]—संज्ञा पुं० [हिं० सत (= सत्य) + ई (प्रत्य०)] सत्यान्वेषी। सत्य का अनुगमन करनेवाला। उ०—

सतीक—संज्ञा पुं० [सं०] जल। पानी (को०)।

सतीचौरा—संज्ञा पुं० [सं० सती + हिं० चौरा] वह वेदी या छोटा चबूतरा जो किसी स्त्री के सती होने के स्थान पर उसके स्मारक में बनाया जाता है।

सतीत्व—संज्ञा पुं० [सं०] सती होने का भाव। पातिव्रत्य।

मुहा०—सतीत्व बिगाडना या नष्ट करना = किसी स्त्री से बलात्कार करना।

सतीत्वहरण—संज्ञा पुं० [सं०] परस्त्री के साथ बलात्कार। सतीत्व बिगाड़ना।

सतीदोषोन्माद—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रियों का वह उन्माद रोग जिसका प्रकोप किसी सतीचौरे को अपवित्र आदि करने के कारण माना जाता है।

सतीन¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का मटर। २ अपराजिता। ३ बाँस (को०)। ४ जल पानी (को०)।

सतीन²—वि० यथार्थ। वास्तविक [को०]।

सतीनक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का मटर [को०]।

सतीपन—संज्ञा पुं० [सं० सती + हिं० पन (प्रत्य०)] सती रहने का भाव। पातिव्रत्य। सतीत्व।

सतीपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] साध्वी स्त्री का पुत्र।

सती प्रथा—संज्ञा स्त्री० [सं० सती + प्रथा] पति के मरण के उपरांत पत्नी का उसके साथ सहगमन या जल जाना।

विशेष—अंगरेजी शासन काल में लार्ड विलियम बेंटिक ने कानून बनाकर इस प्रथा को बंद कर दिया। इस प्रथा के विरुद्ध आंदोलन के मुख्य प्रेरक राजा राम मोहन राय कहे जाते हैं।

सतीर्थ¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक ही आचार्य से पढ़नेवाला। सहपाठी। ब्रह्मचारी। २ शिव का एक नाम (को०)।

सतीर्थ²—वि० तीर्थवाला। तीर्थयुक्त [को०]।

सतीर्थ्य—संज्ञा पुं० [सं०] सहपाठी। ब्रह्मचारी।

सतील—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाँस। वंश। तृणराज। २ अपराजिता। ३ वायु। ४ एक प्रकार का मटर (को०)।

सतीलक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का मटर [को०]।

सतीला—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपराजिता। विष्णुक्रांता। कोयल लता।

सतीव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] पतिव्रत [को०]।

सतीव्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पतिव्रता स्त्री [को०]।

सतुआ†—संज्ञा पुं० [सं० सक्तुक, सतुआ] भ्रष्ट यवादि चूर्ण। भुने हुए जौ और चने का चूर्ण जो पानी डालकर खाया जाता है। सत्तू।

सतुआन†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सतुआ] दे० 'सतुआ संक्रांति'।

सतुआ संक्रांति—संज्ञा स्त्री० [हिं० सतुआ + संक्रांति] मेष की संक्रांति जो प्रायः वैशाख में पड़ती है। इस दिन लोग जल से भरा घड़ा, पंखा और सत्तू दान करते और खाते हैं।

सतुआसोंठ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सतुआ + सोंठ] सोंठ की एक जाति।

सतुष—वि० [सं०] जिसमें तुष अर्थात् छिलका हो। (अन्न) जो भूसी से युक्त हो [को०]।

सतून—संज्ञा पुं० [फ़ा०, मि० सं० स्थूण] स्तंभ। खंभा।

सतूना—संज्ञा पुं० [फ़ा० सतून (= खंभा)] बाज की एक झपट जिसमें वह पहले शिकार के ठीक ऊपर उड़ जाता है, और फिर एकबारगी नीचे की ओर उसपर टूट पड़ता है। उ०—काग आपनी चतुरई तब तक लेहु चलाइ। जब लगि सिर पर देइ नहिं लगर सतूना आइ।—रसनिधि (शब्द०)।

सतृट्—वि० [सं० सतृष्] दे० 'सतृष'।

सतृष—वि० [सं०] १ तृष्णा से युक्त। प्यासवाला। प्यासा। २ चाहनेवाला। इच्छुक।

सतृष्ण—वि० [सं०] दे० 'सतृष'।

सतेज—वि० [सं० सतेजस्] दे० 'सतेजा'।

सतेजा—वि० [सं० सतेजस्] तेजयुक्त। जिसमें तेज हो। दीप्तिमान्। प्रभायुक्त [को०]।

सतेर—संज्ञा पुं० [सं०] भूसी। तुस। तुष।

सतेरक—संज्ञा पुं० [सं०] ऋतु। मौसिम।

सतेरी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मधुमक्खी।

सतेस—संज्ञा स्त्री० [सं० स + तरस् (= वेग)] शीघ्रता। फुर्ती। तेजी।

सतोखना पु†—क्रि० स० [सं० सन्तोषण] १ संतुष्ट करना। प्रसन्न करना। २ संतोष दिलाना। समझाना। ढारस देना।

सतोगुण—संज्ञा पुं० [सं० सत्वगुण] दे० 'सत्वगुण'।

सतोगुणी—संज्ञा पुं० [हिं० सतोगुण + ई (प्रत्य०)] सत्वगुणवाला। उत्तम प्रकृति का। सात्विक।

सतोद—वि० [सं०] करकने या शल्य की तरह चुभनेवाली वेदना से युक्त [को०]।

सतोदर—संज्ञा पुं० [सं० शतोदर] दे० 'शतोदर'।

सतौला†—संज्ञा पुं० [हिं० सात + औला (प्रत्य०)] प्रसूता स्त्री का वह विधिपूर्वक स्नान जो प्रसव के सातवें दिन होता है।

सतौसर—संज्ञा पुं० [सं० सप्तसृक्] सात लड़ी का हार। सतलड़ा हार।

सत्कथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम कथा या मनोरंजक वार्ता। अच्छी बात चीत [को०]।

सत्कदंब—संज्ञा पुं० [सं० सत्कदम्ब] एक प्रकार का कदंब।

सत्करण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सत्करणीय, सत्कृत] १ सत्कार करना। आदर करना। २ मृतक की अंतिम क्रिया करना। क्रिया कर्म करना।

सत्करणीय—वि० [सं०] सत्कार करने योग्य। आदरणीय। पूज्य।

सत्कर्त्तव्य—वि० [सं०] १ सत्कार के योग्य। २ जिसका सत्कार करना हो।

सत्कर्त्ता¹—वि०, संज्ञा पुं० [सं० सत्कर्तृ] [स्त्री० सत्कर्त्री] १ अच्छा काम करनेवाला। सत्कर्म करनेवाला। २ हित करनेवाला। ३ आदर सत्कार करनेवाला।

सत्कर्त्ता²—संज्ञा पुं० विष्णु का एक नाम [को०]।

सत्कर्म—संज्ञा पुं० [सं० सत्कर्मन्] [वि० सत्कर्मा] १ अच्छा कर्म। अच्छा काम। २ धर्म या उपकार का काम। पुण्य। ३ अच्छा संस्कार। ४ सत्कार। ५ अभिवादन (को०)। ६ शुद्धि। प्रायश्चित्त। संस्कार (को०)। ६ अंत्येष्टि कर्म (को०)।

सत्कला—संज्ञा पुं० [सं०] उत्कृष्ट या ललित कला [को०]।

सत्कवि—संज्ञा पुं० [सं०] सुकवि। श्रेष्ठ या उत्कृष्ट कोटि का कवि [को०]।

सत्कांचनार—संज्ञा पुं० [सं० सत्काञ्चनार] रक्त कांचन वृक्ष। लाल कचनार [को०]।

सत्कांड—संज्ञा पुं० [सं० सत्काण्ड] १ चील। २ बाज। श्येन [को०]।

सत्काय दृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्ध मतानुसार मृत्यु के उपरांत आत्मा, लिंग, शरीर आदि के बने रहने का मिथ्या सिद्धांत।

सत्कार—संज्ञा पुं० [सं०] १ आए हुए के प्रति अच्छा व्यवहार। आदर। समान। खातिरदारी। २ आतिथ्य। मेहमानदारी। ३ पर्व। उत्सव। ४ देखभाल। ख्याल (को०)। ५ दावत। भोज (को०)।

सत्कार्य[1]—वि० [सं०] १ सत्कार करने योग्य। २ जिसका सत्कार करना हो। ३ जिस (मृतक) का क्रिया कर्म करना हो।

सत्कार्य[2]—संज्ञा पुं० १ उत्तम कार्य। अच्छा काम। २ कारण मे कार्य की स्थिति या सत्ता का होना (को०)।

सत्कार्यवाद—संज्ञा पुं० [सं०] सांख्य का यह दार्शनिक सिद्धात कि विना कारण के कार्य की उत्पत्ति नही हो सकती, अर्थात् इस जगत् की उत्पत्ति शून्य से नहा हो सकती, किसी मूल सत्ता से है। किसी कारण मे कार्य की सत्ता का सिद्धात। यह सिद्धात बौद्धो के शून्यवाद का विरोधी है।

सत्किष्कु—संज्ञा पुं० [सं०] लबाई की एक प्राचीन नाप जो सवा गज के लगभग होती थी।

सत्कीर्त्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम कीर्ति। यश। नेकनामी।

सत्कुल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम कुल। अच्छा या बडा खानदान।

सत्कुल[2]—वि० अच्छे कुल का। खानदानी।

सत्कुलीन—वि० [सं०] सत्कुल मे उत्पन्न। जो अच्छे कुल का हो। खानदानी (को०)।

सत्कृत—वि० [सं०] १ अच्छी तरह किया हुआ। २ जिसका आदर सत्कार किया गया हो। आदृत। ३ अलकृत। सजाया हुआ। बनाया हुआ।

सत्कृत[2]—संज्ञा पुं० १ सत्कार। समान। आदर। २ सत्कर्म। अच्छा काम। पुण्य। ३ शिव (को०)। ४ प्रातिथ्य (को०)।

सत्कृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आदर सत्कार। २. सद्गुण। सदाचार। ३ पुण्य। अच्छा कर्म (को०)।

सत्क्रिय—वि० [सं०] सत् कार्य करनेवाला (को०)।

सत्क्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सत्कर्म। पुण्य। धर्म का काम। २ सत्कार। आदर। अच्छा व्यवहार। खातिरदारी। ३ आयोजन। तैयारी। सजावट। ४ शिष्टाचार। अभिवादन (को०)। ५ शुद्धि सस्कार (को०)। ६ मृतक सस्कार। अत्येष्टि क्रिया (को०)।

सत्त[1]—संज्ञा पुं० [सं० सत्व, प्रा० सत्त] १ किसी पदार्थ का सार भाग। असली जुज। रस। जैसे,—गेहूँ का सत्त, मुलेठी का सत्त। २ तत्व। काम की वस्तु। जैसे,—अब तो उसमे कुछ भी सत्त बाकी नही रह गया।

सत्त†[2]—संज्ञा पुं० [सं० सत्य, प्रा० सत्त] १ सत्य। सच बात। २ सतीत्व। पातिव्रत्य।

सत्तम—वि० [सं०] १ अत्यत सुदर। सर्वोत्तम। २. सर्वश्रेष्ठ। सर्वजनपूज्य (को०)।

सत्तर[1]—वि० [सं० सप्तति, प्रा० सत्तरि] साठ और दस। जो गिनती मे साठ से दस अधिक हो।

सत्तर[2]—संज्ञा पुं० साठ से दस अधिक की सख्या या अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—७०।

सत्तरवाँ†—वि० [हिं० सत्तर + वाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० सत्तरवीं] जो क्रम मे सत्तर के स्थान पर हो।

सत्तरह[1]—वि० [सं० सप्तदश, प्रा० सत्तरह] दस और सात। जो गिनती मे दस से सात अधिक हो।

सत्तरह[2]—संज्ञा पुं० १ दस मे सात की अधिक सख्या या अक जो इस प्रकार लिखा जाता है-१७। २ पासे के खेल मे एक दाँव जिसमे दो छक्के और एक पजा तीनो एक साथ पडते हैं।

सत्तरहवाँ—वि० [हिं० सत्तरह + वाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० सत्तरहवी] जो क्रम मे सत्तरह के स्थान पर पडे।

सत्तालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] आस्तरण। दरी। बिछौना। कालीन। गलीचा (को०)।

सत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ होने का भाव। अस्तित्व। हस्ती। होना। भाव। २. शक्ति। दम। ३ वास्तविकता। यथार्थता (को०)। ४ जाति का एक भेद (को०)। ५ उत्तमता। श्रेष्ठता (को०)। ६ अधिकार। प्रभुत्व। हुकूमत। (मराठी मे गृहीत)।

मुहा०—सत्ता चलाना = अधिकार जताना। हुकूमत करना। उ०—जो लोग असभ्य है, जगली है उनपर सत्ता चलाने (हुकूमत करने) मे अनियंत्र शासन अच्छा होता है।—महावीरप्रसाद द्विवेदी (शब्द०)।

सत्ता[2]—संज्ञा पुं० [सं० सप्तक, या हिं० सात] ताश या गजीफे का वह पत्ता जिसम सात बूटियाँ हो।

सत्ताइस, सत्ताईस[1]—वि० [सं० सप्तविंशति, प्रा० सत्ताईसा] सात और बीस। जो गिनती मे बीस से सात अधिक हो।

सत्ताइस, सत्ताईस[2]—संज्ञा पुं० बीस से सात अधिक की सख्या या अक जो इस प्रकार लिखा जाता है,—२७।

सत्ताइसवाँ—वि० [हिं० सत्ताइस + वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम म सत्ताइस के स्थान पर पडता हो।

सत्ताधारी—संज्ञा पुं० [सं० सत्ताधारिन्] अधिकारी। अफसर हाकिम।

सत्तानवे[1]—वि० [सं० सप्तनवति, प्रा० सत्तानवइ] नब्बे और सात। जो गिनती मे सौ मे तीन कम हो।

सत्तानवे[2]—संज्ञा पुं० सौ से तीन कम की सख्या या अक जो इस प्रकार लिखा जाता है,—९७।

सत्तानवेवाँ—वि० [हिं० सत्तानवे + वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम मे सत्तानवे के स्थान पर पडता हो।

सत्तार—संज्ञा पुं० [अ०] १ परदा डालनेवाला। दोष ढाँकनेवाला। २ ईश्वर (को०)।

सत्तावन[1]—वि० [सं० सप्तपञ्चाशत, प्रा० सत्तावन्ना] पचास और सात। जो गिनती मे तीन कम साठ हो।

सत्तावन[2]—संज्ञा पुं० तीन कम साठ की सख्या या अक जो इस प्रकार लिखा जाता है,—५७।

**सत्तावनवाँ**—वि० [हिं० सतावन + वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम मे सत्तावन के स्थान पर पडा हो।

**सत्ताशास्त्र**—सज्ञा पुं० [सं०] पाश्चात्य दर्शन की वह शाखा जिसमे मूल या पारमार्थिक सत्ता का विवेचन हो।

**सत्तासामान्यत्व**—सज्ञा पुं० [सं०] अनेक रूपो के भीतर एक सामान्य द्रव्य का अस्तित्व। जैसे,—कुडल, कगण आदि अनेक गहनो मे, 'सोना' नामक द्रव्य सामान्य रूप से पाया जाता है।

विशेष—इस तथ्य का उपयोग वेदातो या दार्शनिक अनेक नामरूपात्मक जगत् की तह मे किसी एक अनिर्वचनीय और अव्यक्त सत्ता का प्रतिपादन करने मे करते है।

**सत्तासी¹**—वि० [सं० सप्ताशीति, प्रा० सत्तासी] अस्सी और सात। जो तीन कम नब्बे हो।

**सत्तासी²**—सज्ञा पुं० तीन कम नब्बे की सख्या या अक जो इस प्रकार लिखा जाता है,—८७।

**सत्तासीवाँ**—वि० [हिं० सत्तासी + वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम मे तीन कम नब्बे के स्थान पर हो।

**सत्ति¹**—सज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] शक्ति। सामर्थ्य।

**सत्ति²**—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ बैठने की क्रिया। उपवेशन। २ प्रारभ। शुरुआत [को०]।

**सत्तू**—सज्ञा पुं० [सं० सक्तुक, प्रा० सत्तुअ] भुने हुए जौ और चने या और किसी अन्न का चूर्ण या आटा जो पानी मे घोलकर खाया जाता है।

मुहा०—सत्तू बाँधकर पीछे पडना = (१) पूरी तैयारी के साथ किसी को तग करने मे लगना। सब काम धधा छोडकर किसी के विरुद्ध प्रयत्न करना। (२) पूर्ण तैयारी के साथ किसी काम मे लगना। सब काम धधा छोडकर प्रवृत्त होना।

**सत्पति**—सज्ञा पुं० [सं०] १ भले लोगो या वीरो का स्वामी। २ इद्र। देवराज। शक्र [को०]।

**सत्पत्र**—सज्ञा पुं० [सं०] कमल का नवीन पत्ता [को०]।

**सत्पथ**—सज्ञा पुं० [सं०] १ उत्तम मार्ग। २. सदाचार। अच्छी चाल। ३ उत्तम सप्रदाय या सिद्धात। अच्छा पथ।

**सत्पथीन**—वि० [सं०] सत्पथ या सुमार्ग पर चलनेवाला [को०]।

**सत्परिग्रह**—सज्ञा पुं० [सं०] सत् या योग्य व्यक्ति से दान ग्रहण करना [को०]।

**सत्पशु**—सज्ञा पुं० [सं०] देवताओ के बलि योग्य अच्छा पशु। वह पशु जो देव बलि देने के योग्य हो।

**सत्पात्र**—सज्ञा पुं० [सं०] १ दान आदि देने के योग्य उत्तम व्यक्ति। २ श्रेष्ठ और सदाचारी व्यक्ति। योग्य मनुष्य। ३ कन्या देने के योग्य उत्तम पुरुष। अच्छा वर।

**सत्पात्रवर्ष**—सज्ञा पुं० [सं०] योग्य व्यक्ति के प्रति उदारता का व्यवहार [को०]।

**सत्पात्रवर्षी**—वि० [सं० सत्पात्रवर्षिन्] पात्रता का विचार करके दान आदि देनेवाला [को०]।

**सत्पुत्र¹**—सज्ञा पुं० [सं०] १ योग्य पुत्र। २ वह पुत्र जो पितरो का विधिपूर्वक तर्पण आदि करे [को०]।

**सत्पुत्र²**—वि० [सं०] पुत्रवाला [को०]।

**सत्पुरुष**—सज्ञा पुं० [सं०] भला आदमी। सदाचारी पुरुष।

**सत्पुष्प**—सज्ञा पुं० [सं०] १ अच्छा पुष्प। उत्तम पुष्प। २ पूर्ण विकसित फूल [को०]।

**सत्प्रतिग्रह**—सज्ञा पुं० [सं०] योग्य पात्र से दान ग्रहण करना [को०]।

**सत्प्रतिपक्ष¹**—वि० [सं०] जिसका उचित खडन हो सके। जिसके विपक्ष मे बहुत कुछ कहा जा सके।

**सत्प्रतिपक्ष²**—सज्ञा पुं० [सं०] हेत्वाभास के पाँच प्रकारो मे से एक (यत्र साध्याभावसाधक हेत्वन्तर स प्रतिपक्ष) वह हेतु जिसके विपक्ष मे अन्य समकक्ष हेतु हो। जैसे शब्द नित्य है क्योकि वह श्रव्य है, शब्द अनित्य है क्योकि वह उत्पन्न है। यहाँ शब्द की नित्यता के हेतु 'श्रव्य' के समकक्ष उसकी अनित्यता का हेतु 'उत्पत्ति' है।

**सत्प्रमुदिता**—सज्ञा स्त्री० [सं०] साख्य दर्शन के अनुसार आठ सिद्धियो मे से एक सिद्धि [को०]।

**सत्फल**—सज्ञा पुं० [सं०] दाडिम। अनार।

**सत्यकार**—सज्ञा पुं० [सं० सत्यडकार] १ वचन को सत्य करना। २ वादा पूरा करना। ३ वादा पूरा करने की जमानत के तौर पर कुछ पेशगी देना।

**सत्यभरा**—सज्ञा स्त्री० [सं० सत्यम्भरा] एक नदी का नाम [को०]।

**सत्य¹**—वि० [सं०] १ जो बात जैसी है, उसके सबध मे वैसा ही (कथन)। यथार्थ। ठीक। वास्तविक। सही। यथातथ्य। जैसे,—सत्य बात, सत्य वचन। २ असल। ३ ईमानदार। निष्कपट। विश्वस्त [को०]। ४ सद्‌गुणी। सच्चरित्र। ५ जो झूठा न हो। सच्चा [को०]।

**सत्य²**—क्रि० वि० सचमुच। ठीक ठीक।

**सत्य³**—सज्ञा पुं० १ वास्तविक बात। ठीक बात। यथार्थ तत्व। जैसे,—सत्य को कोई छिपा नही सकता।

विशेष—बौद्ध धर्म मे चार आर्य सत्य कहे गए है—दुख सत्य (ससार दुख रूप है यह सत्य बात), दुखसमुदय (दुख के कारण), दुखनिरोध (दुख रोका जाता है) और मार्ग (निर्वाण का मार्ग)। बौद्ध दार्शनिक दो प्रकार का सत्य मानते हैं—सवृत्ति सत्य (जो बहुमत से माना गया हो) और परमार्थ सत्य (जो स्वत सत्य हो)।

२ उचित पक्ष। न्याय पक्ष। धर्म की बात। ईमान की बात। जैसे,—हम सत्य पर दृढ रहेंगे। ३ पारमार्थिक सत्ता। वह वस्तु जो सदा ज्यो की त्यो रहे, जिसमे किसी प्रकार का विकार या परिवर्तन न हो (वेदात)। जैसे,—ब्रह्म सत्य है और जगत् मिथ्या है। ४ ऊपर के सात लोको मे से सबसे ऊपर का लोक जहाँ ब्रह्मा अवस्थान करते हैं। ५ नवे कल्प का नाम। ६ अश्वत्थ वृक्ष। पीपल का पेड। ७ विष्णु का एक नाम। ८ रामचद्र का एक नाम। ९. नादीमुख श्राद्ध के अधिष्ठाता

देवता। १० विश्वेदेवा मे से एक। ११ शपथ। कसम। १२ प्रतिज्ञा। कौल। १३ चार युगो मे से पहला युग। कृतयुग। १४ एक दिव्यास्त्र। १५ ईमानदारी। निष्कपटता (को०)। १६ भद्रता। सद्‌गुण। शुचिता (को०)। १७ जल। पानी (को०)। १८ विशुद्धता। खरापन (को०)। १९ एक ऋषि। २०. सात व्याहृतियो मे से एक (को०)। २१ ब्रह्म (को०)। २२ मोक्ष (को०)।

यौ०—सत्यकृत् = उचित कार्य को करनेवाला। सत्यग्रथि = जिसकी ग्रथि सत्य हो। सच्ची और ठीक गाँठ बाँधनेवाला। सत्यघ्न = सत्य की हत्या करनेवाला। शपथ या प्रतिज्ञा भग करनेवाला। सत्यनिष्ठ = सचाई पर दृढ रहनेवाला। सत्यमेव = अत्रिमुनि के एक पुत्र का नाम। सत्यपाल = एक ऋषि। सत्यपूत = सत्य द्वारा शुद्ध। सत्यप्रतिश्रुत = बात का धनी। सत्यप्रतिष्ठान = जिसकी नीव सत्य पर आधृत हो। सत्यवध = जो सत्य से बँधा हुआ हो। सत्यवादी। सत्यभारत = महाभारतकार व्यासदेव का एक नाम। सत्यभेदी = वादा तोडनेवाला। सत्ययौवन। सत्यरत = (१) सत्यवादी। (२) व्यास। सत्यरथ = विदर्भ के एक राजा। सत्यरूप = (१) वास्तविक स्वरूप वाला। (२) विश्वास योग्य। सत्यवाहन = जो सत्य का वहन करनेवाला हो। सत्यविक्रम = सच्चा वीर। सत्यवृत्त = अच्छे आचरणवाला। सत्यवृत्ति = सदाचार। सत्यशपथ = (१) जिसकी प्रतिज्ञा पूरी होकर रहे। (२) जिसका शाप झूठा न हो। सत्यसरक्षण = सत्य की रक्षा करना। वचन का पालन। सत्यसार = जो पूर्णत सत्य हो। सत्यस्वप्न = जिसका सपना सच्चा हो।

सत्यक—वि० [स०] दे० 'सत्य'।

सत्यक—सज्ञा पु० [स०] १ अनुबध या सौदे का पुष्टिकरण। २ कृष्ण का एक पुत्र जिसकी माता का नाम भद्रा था। यह केकयराज की कन्या थी। ३ मनु रैवतक का एक पुत्र (को०)।

सत्यकाम—वि० [स०] सत्य का प्रेमी।

सत्यकीर्ति—सज्ञा पुं० [स०] १ एक अस्त्र जो मत्रबल से चलाया जाता था। २. सधान के पूर्व अस्त्र को अभिमत्रित करने का एक मत्र (को०)।

सत्यकेतु—सज्ञा पुं० [स०] १ एक बुद्ध का नाम। २ केकय देश के एक राजा का नाम। ३ अक्रूर के पुत्र का नाम।

सत्यक्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] वादा। प्रतिज्ञा। शपथ। (बौद्ध)।

सत्यजित्—सज्ञा पुं० [स०] १ वासुदेव का एक भतीजा। २. एक दानव। ३ एक यक्ष। ४ तीसरे मन्वतर के इद्र का नाम।

सत्यज्ञ—वि० [स०] जिसे सत्य की जानकारी हो।

सत्यतपा—सज्ञा पु० [स० सत्यतपस्] वाराहपुराण मे वर्णित एक ऋषि का नाम जो पहले व्याध थे।

सत्यत—अव्य० [स० सत्यतस्] ठीक ठीक। वास्तव मे। सचमुच।

सत्यता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सत्य होने का भाव। वास्तविकता। सचाई। २ नित्यता।

सत्यदर्शी[1]—वि० [सं० सत्यदर्शिन्] सत्य का पारखी। सत्य को पहचान लेनेवाला। सत्य और असत्य का विवेक करनेवाला (को०)।

सत्यदर्शी[2]—सज्ञा पुं० तेरहवें मन्वतर के एक ऋषि का नाम (को०)।

सत्यदृक्—वि० [सं० सत्यदृश्] दे० 'सत्यदर्शी'।

सत्यधन—वि० [स०] जिसका सर्वस्व सत्य हो। जिसे सत्य सबसे प्रिय हो।

सत्यधर्म—सज्ञा पुं० [स०] १. तेरहवें मनु के एक पुत्र का नाम। २ सत्य रूपी धर्म। शाश्वत सत्य। धर्म (को०)।

यौ०—सत्यधर्म पथ = सत्यरूपी धर्म का मार्ग। शाश्वत सत्य का मार्ग। सत्यधर्म परायण = सत्यरूपी धर्म को माननेवाला। सत्य को माननेवाला। सत्य का पालन करनेवाला।

सत्यधृति—वि० [सं०] अत्यत सत्यवादी। पूर्णत सत्यवक्ता (को०)।

सत्यनारायण—सज्ञा पु० [स०] विष्णु भगवान् का एक नाम जिसके सबध मे एक कथा रची गई है। इस कथा का प्रचार आजकल बहुत है।

विशेष—ऐसा पता लगता है कि अकबर के समय बग देश मे अकबर के नए मत 'दीन इलाही' के प्रचार के लिये पहले पहल यह कथा किसी पडित से लिखाई गई थी और उसका रूप कुछ दूसरा ही था। जैसे, नारद और विष्णु का सवाद उसमे न था, और 'दडी' के स्थान पर शाह या पीर नाम था। पीछे पडितो ने उस कथा मे आवश्यक परिवर्तन करके पौराणिक हिंदूधर्म के अनुकूल कर लिया और वह उसी परिवर्तित रूप मे प्रचलित हुई। बग भाषा मे भी सत्यपीर की कथा के नाम से यह कथा पाई गई है।

सत्यपर, सत्यपरायण—वि० [स०] सत्य मे प्रवृत्त। ईमानदार।

सत्यपारमिता—सज्ञा स्त्री० [स०] बौद्ध धर्मानुसार सत्य की प्राप्ति अथवा सिद्धि (को०)।

सत्यपुर—सज्ञा पुं० [स०] १ विष्णुलोक। २. सत्यरूपी नारायण का लोक (को०)।

सत्यपुरुष—सज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर। परमात्मा।

सत्यपूत—वि० [स०] सत्य द्वारा परिष्कृत या पवित्र (को०)।

सत्यप्रतिज्ञ—वि० [सं०] प्रतिज्ञा को सत्य करनेवाला। वचन का सच्चा।

सत्यफल—सज्ञा पुं० [स०] विल्व। श्रीफल। बेल।

सत्यभामा—सज्ञा स्त्री० [सं०] श्रीकृष्ण की आठ पटरानियो मे से एक जो सत्राजित की कन्या थी। इन्ही के लिये कृष्ण पारिजात लाने गए थे और इद्र से लडे थे।

सत्यमान—सज्ञा पु० [स०] ठीक नापजोख या नापतौल (को०)।

सत्यमूल—वि० [स०] जिसका मूल सत्य हो। सत्य पर आधृत। उ०—सत्यमूल सब सुकृत सुहाए। वेद पुरान विदित मुनि गाए।—मानस, २।२८।

सत्यमेधा—सज्ञा पुं० [सं० सत्यमेधस्] विष्णु (को०)।

**सत्ययुग**—संज्ञा पुं० [सं०] पौराणिक काल गणना के अनुसार चार युगों में से पहला युग। कृतयुग।

विशेष—यह युग सबसे उत्तम माना जाता है। इस युग में पुण्य और सत्यता की अधिकता रहती है। यह १७, २८,००,० वर्ष का कहा गया है। इसका आरंभ वैशाख शुक्ला तृतीया रविवार से माना गया है।

**सत्ययुगाद्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैशाख शुक्ल तृतीया जिस दिन से सत्ययुग का आरंभ माना गया है।

**सत्ययुगी**—वि० [सं० सत्ययुग + हिं० ई (प्रत्य०)] १ सत्ययुग का। सत्ययुग संबंधी। २ बहुत प्राचीन। ३ बहुत सीधा और सज्जन। सच्चरित्र। धर्मात्मा। कलियुगी का उलटा।

**सत्ययौवन**—संज्ञा पुं० [सं०] एक देव योनि। विद्याधर (को०)।

**सत्यरथा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] त्रिशंकु की पत्नी का नाम (को०)।

**सत्यलोक**—संज्ञा पुं० [सं०] ऊपर के सात लोकों में से सबसे ऊपर का लोक जहाँ ब्रह्मा रहते हैं। उ०—सत्यलोक नारद चले करत राम गुन गान।—मानस, १।१३८।

**सत्यवक्ता**—वि० [सं० सत्यवक्तृ] सत्य बोलनेवाला। सत्यवादी।

**सत्यवचन**—संज्ञा पुं० [सं०] सच कहना। यथार्थ कथन। २ प्रतिज्ञा। कौल। वादा।

**सत्यवचा¹**—संज्ञा पुं० [सं० सत्यवचस्] १ ऋषि। संत। २ भविष्यद्रष्टा सिद्ध पुरुष। ३ सचाई (को०)।

**सत्यवचा²**—वि० सच बोलनेवाला (को०)।

**सत्यवती¹**—वि० स्त्री० [सं०] सच बोलनेवाली। २ सत्य या धर्म का पालन करनेवाली।

**सत्यवती²**—संज्ञा स्त्री० १ मत्स्यगंधा नामक धीवरकन्या जिसके गर्भ से कुमारी अवस्था में ही पराशर के संयोग से कृष्ण द्वैपायन या व्यास की उत्पत्ति हुई थी। २ शमी वृक्ष। ३ गाधि की पुत्री और ऋचीक की पत्नी जिसके कौशिकी नदी हो जाने की कथा प्रसिद्ध है। ४ नारद की पत्नी का नाम (को०)।

**सत्यवती सुत**—संज्ञा पुं० [सं०] सत्यवती के पुत्र वेदव्यास।

**सत्यवदन**—संज्ञा पुं० [सं०] सच बोलना (को०)।

**सत्यवद्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसकी बात या प्रतिज्ञा आदि सच्ची हो। २ सच्ची बात। सचाई (को०)।

**सत्यवसु**—संज्ञा पुं० [सं०] विश्वेदेवा में से एक।

**सत्यवाक्य**—संज्ञा पुं० [सं०] सत्यवादिता। सत्य बोलना (को०)।

**सत्यवाच्**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सत्य वचन। २ वादा। करार। प्रतिज्ञा। ३ एक प्रकार का मन्त्रास्त्र। ४ काक। कौआ। ५ कश्यप मुनि का एक पुत्र (को०)। ६ सावर्णि मनु का एक पुत्र (को०)। ७ वह जो सत्य बोलता हो।

**सत्यवाचक**—वि० [सं०] सत्यवक्ता। सत्यवादी।

**सत्यवाद**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सत्यवादी] १ सत्य बोलना। सच कहना। २ धर्म पर दृढ़ रहना। ईमान पर रहना।

**सत्यवादिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दाक्षायिणी का एक नाम। २ बोधि द्रुम की एक देवी। ३ वह स्त्री जो सत्य बोलती हो। सच बोलनेवाली स्त्री।

**सत्यवादी**—वि० [सं० सत्यवादिन्] [वि० स्त्री० सत्यवादिनी] १ सत्य कहनेवाला। सच बोलनेवाला। २ प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला। वचन को पूरा करनेवाला। ३ धर्म पर दृढ़ रहनेवाला। धर्म कभी न छोड़नेवाला। जैसे,—राजा हरिश्चंद्र बड़े सत्यवादी थे। ४ निष्कपट (को०)।

**सत्यवान्¹**—वि० [सं० सत्यवत्] [वि० स्त्री० सत्यवती] १ सच बोलनेवाला। २ प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला।

**सत्यवान्²**—संज्ञा पुं० शाल्व देश के राजा द्युमत्सेन के पुत्र का नाम जिसकी पत्नी सावित्री के पातिव्रत्य के अलौकिक प्रभाव की कथा पुराणों में प्रसिद्ध है।

विशेष—इनके पिता अंधे हो गए थे और गद्दी से उतार दिए गए थे। वे उदास होकर पुत्र और पत्नी सहित वन में रहते थे। मद्र देश के राजा घूमते घूमते उस वन में आए और उन्होंने अपनी पुत्री का विवाह सत्यवान् के साथ कर दिया। पर सत्यवान् अल्पायु थे, इससे वे शीघ्र मर गए। सावित्री ने पातिव्रत्य के बल से अपने पति को जिला दिया।

२ चाक्षुष मनु का एक पुत्र। ३. अस्त्र संचालन में प्रयुक्त एक मंत्र। अस्त्र मंत्र (को०)।

**सत्यव्यवस्था**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्य की व्यवस्था, निरूपण या निश्चय (को०)।

**सत्यव्रत¹**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सत्य बोलने की प्रतिज्ञा या नियम। २ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ३ त्रेतायुग में सूर्यवंश के पचीसवें राजा जो त्रय्यारुण के पुत्र थे। आगे चलकर इन्हीं का नाम त्रिशंकु पड़ा (को०)। ४ महादेव (को०)।

**सत्यव्रत²**—वि० १ जिसने सत्य बोलने की प्रतिज्ञा की हो। सत्य का नियम पालन करनेवाला। २ ईमानदार। सच्चा (को०)।

**सत्यशील**—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सत्यशीला] सत्य का पालन करनेवाला। सच्चा।

**सत्यश्रवसी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] उषा का एक रूप (को०)।

**सत्यश्रावण**—संज्ञा पुं० [सं०] शपथ ग्रहण (को०)।

**सत्यसंकल्प**—वि० [सं० सत्यसङ्कल्प] जो विचारे हुए कार्य को पूरा करे। दृढ़संकल्प। उ०—राम सत्यसंकल्प प्रभु सभा काल बस तोरि।—मानस, ६।४१।

**सत्यसंकाश**—वि० [सं० सत्यसङ्काश] सत्य जैसा। सत्य के समान। सत्यवत् (को०)।

**सत्यसंगर¹**—वि० [सं० सत्यसङ्गर] दे० 'सत्यव्रत' या 'सत्यसंकल्प' (को०)।

**सत्यसंगर²**—संज्ञा पुं० कुबेर का एक नाम (को०)।

**सत्यसंध¹**—वि० [सं० सत्यसन्ध]। [स्त्री० सत्यसंधा] सत्यप्रतिज्ञ। वचन को पूरा करनेवाला। उ०—सत्यसंध दृढ़व्रत रघुराई।—तुलसी (शब्द०)।

सत्यसंध[2]—संज्ञा पुं० १ रामचंद्र का एक नाम। २ भरत का एक नाम। ३ जनमेजय का एक नाम। ४ स्कंद का एक अनुचर। ५ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

सत्यसंध(पु)[3]—वि० [सं० सत्य+सन्धान] जिसका निशाना अचूक हो। जिसका लक्ष्य न चूके। उ०—सत्यसंध प्रभु बध करि येही। आनहु चर्म कहति वैदेही।—मानस, ३।२१।

सत्यसंधा—संज्ञा स्त्री० [सं० सत्यसन्धा] द्रौपदी का एक नाम।

सत्यसंभव—संज्ञा पुं० [सं० सत्यसम्भव] वचन। वादा। प्रतिज्ञा [को०]।

सत्यसहित—वि० [सं०] वचन का पक्का। जिसका कथन सत्य हो [को०]।

सत्यसाक्षी—संज्ञा पुं० [सं० सत्यसाक्षिन्] प्रत्यक्षदर्शी या विश्वस्त गवाह [को०]।

सत्यांग—वि० [सं० सत्याङ्ग] जिसके सभी अंग सत्य के बने हों [को०]।

सत्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सच्चाई। सत्यता। २ दुर्गा का एक नाम। ३ सीता का एक नाम। ४ व्यास की माता सत्यवती। ५ द्रौपदी का एक नाम (को०)। ६ कृष्ण की पत्नी सत्यभामा (को०)। ७ विष्णु की माता (को०)।

सत्याकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पेशगी रकम। अग्रिम धन। २ (इकरारनामा या मसौदे में) दर निर्धारण [को०]।

सत्याग्नि—संज्ञा पुं० [सं०] अगस्त्य मुनि।

सत्याग्रह—संज्ञा पुं० [सं० सत्य+आग्रह] [वि० सत्याग्रही] सत्य के लिये आग्रह या हठ। सत्य या न्याय पक्ष पर प्रतिज्ञापूर्वक अड़ना और उसकी सिद्धि के उद्योग में मार्ग में आनेवाली कठिनाइयों और कष्टों को धीरतापूर्वक सहना और किसी प्रकार का उपद्रव या बल प्रयोग न करना।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

सत्याग्रही—वि० [सं० सत्याग्रहिन्] सत्य या न्याय के लिये आग्रह करनेवाला। सत्याग्रह का सहारा लेनेवाला।

सत्यात्मक—वि० [सं०] वह जिसका तत्त्व सत्य हो।

सत्यात्मज—संज्ञा पुं० [सं०] १ सत्या या सत्यभामा का पुत्र। २ सत्य का पुत्र [को०]।

सत्यात्मा—वि० [सं० सत्यात्मन्] १ सत्यपरायण। सत्याचरण करनेवाला। २ सत्यवादी [को०]।

सत्यानंद—संज्ञा पुं० [सं० सत्यानन्द] वास्तविक आनंद [को०]।

सत्यानास—संज्ञा पुं० [सं० सत्ता+नाश] सर्वनाश। मटियामेट। ध्वंस। बरबादी।

सत्यानासी[1]—वि० [हिं० सत्यानास+ई (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सत्यानासिन] १ सत्यानास करनेवाला। चौपट करनेवाला। २ अभागा। बदकिस्मत।

सत्यानासी[2]—संज्ञा स्त्री० एक कँटीला पौधा जो प्रायः खँडहरों और उजाड़ स्थानों पर जमता है। घमोई। भड़भाँड़। स्वर्णक्षीरी। पीतपुष्पा।

विशेष—इसके बीच में गोभी के पौधे की तरह एक काड ऊपर को गया होता है और चारों ओर नीलापन लिए हरे कटावदार पत्ते निकलते हैं जिनपर चारों ओर विषैले काँटे होते हैं। इस पौधे को काटने या दबाने से एक प्रकार का पीला दूध या रस निकलता है। इसका फूल पीला, कटोरे के आकार का और देखने में सुंदर पर गंधहीन होता है। फूल झड़ जाने पर गुच्छों में फल या बीजकोश लगते हैं जिनमें राई के से काले काले बीज भरे रहते हैं। इन बीजों से एक प्रकार का बहुत तीक्ष्ण तेल निकलता है जो खुजली पर लगाया जाता है। वैद्यक में सत्यानासी कड़वी, दस्तावर, शीतल तथा कृमि रोग, खुजली और विष को दूर करनेवाली मानी गई है।

सत्यानुरक्त—वि० [सं०] सत्य का प्रेमी। सचाई का भक्त [को०]।

सत्यानृत[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ सच और झूठ का मेल। सच और झूठ। २ वाणिज्य। व्यापार। दूकानदारी। ३ वह जो देखने में सत्य हो किंतु वास्तव में झूठ हो।

सत्यापन—संज्ञा पुं० [सं०] १ असनियत की जाँच। सत्य होने का निश्चय। २ सत्य का पालन अथवा सत्य कथन (को०)। ३ सौदे के दर का निर्धारण या निश्चयन (को०)।

सत्यापना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी सौदे या इकरार का पूरा होना। २ दे० 'सत्यापन' (को०)।

सत्याभिधान—वि० [सं०] सच बोलनेवाला [को०]।

सत्याभिसंध—वि० [सं० सत्याभिसन्ध] वादे का पक्का। जो अपना वचन पूरा करे [को०]।

सत्यालापी—वि० [सं० सत्यालापिन्] दे० 'सत्याभिधान' [को०]।

सत्याश्रम—संज्ञा पुं० [सं०] संसारत्याग। संन्यास [को०]।

सत्यापाढी—संज्ञा स्त्री० [सं० सत्यापाढी] कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा का नाम।

सत्येतर—संज्ञा पुं० [सं०] जो सत्य से पृथक् या भिन्न हो। जो सत्य न हो। असत्य [को०]।

सत्योत्कर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ सचाई में श्रेष्ठता या प्रमुखता। २. सच्ची श्रेष्ठता [को०]।

सत्योत्तर—संज्ञा पुं० [सं०] १ सत्य बात का स्वीकार। २ अपराध आदि का स्वीकार। इकबाल। (स्मृति)।

सत्योद्य—वि० [सं०] सच बोलनेवाला। सच्चा [को०]।

सत्योपपावन—संज्ञा पुं० [सं०] शरदंडा नदी के पश्चिम तट पर स्थित एक पवित्र फलप्रद वृक्ष। (पुराण)।

सत्रंग—संज्ञा पुं० [सं० सत्वङ्ग] एक प्रकार का पौधा।

सत्र—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्र] १ यज्ञ, हवन दान आदि। २ एक सोमयाग जो १३ या १०० दिनों में पूरा होता था। ३ परिवेषण। गोपन। ४ वह स्थान जहाँ मनुष्य छिप सकता हो। ५ कोठरी। घर। मकान। ६ धोखा। भ्रांति। ७ धन। ८ तालाब। ९ जंगल। १० वह स्थान जहाँ असहायों को भोजन

बाँटा जाता है। छेत्र। सदावर्त। जैसे,—अन्न सत्र। ११ विकट स्थान या समय।

विशेष—कौटिल्य ने लिखा है कि रेगिस्तान, सकटमय स्थान, दलदल, पहाड, नदी, घाटी, ऊँची नीची भूमि, नाव, गौ, शकट, व्यह, ध्रुव तथा रात ये सब सत्र कहे जाते हैं।

१२ उदारता। वदान्यता (को०)। १३ सद्गुण (को०)। १४ दो बडे अवकाशो के बीच किसी सस्था का लगातार चलनेवाला कार्यकाल (को०)। १५ घमड। अभिमान (को०)। १६. छद्म वेश (को०)।

यौ०—सत्रगृह = यज्ञ करने या आश्रय लेने का स्थान। सत्रपरिवेषण = यज्ञ मे भोजनदान। सत्रफल = सोमयाग का फल। सत्रफलद = यज्ञ या सत्र का फल देनेवाला। सत्रयाग = सोमयज्ञ। सत्रवसति, सत्रशाला = दे० 'सत्रगृह'। सत्रसद्म = दे० 'सत्रागार'।

सत्रप—वि० [स०] लाज सकोचवाला। विनयशील। लजालू [को०]।

सत्रह¹—सज्ञा पु० [हिं० सत्तरह] १ सत्तरह की सख्या। २ पासे के खेल मे एक दाँव जिसमे दो छक्के और एक पजा साथ पडते हैं। उ०—ढारि पासा साधु सगति फेरि रसना सारि। दाँव अब के परचो पूरो कुमति पिछली हारि। राखि सत्रह सुनि अठारह चोर पाँचो मारि।—सूर (शब्द०)।

सत्रह²—वि० दे० 'सत्तरह'।

सत्रही—सज्ञा पुं० [हिं० सत्तरह] मृत्यु के सत्रहवें दिन होनेवाला कृत्य।

सत्रा—अव्य० [सं० सत्त्रा] सहित। साथ [को०]।

सत्रागार—सज्ञा पुं० [स० सत्त्रागार] सत्रशाला। यज्ञशाला [को०]।

सत्राजित—सज्ञा [सं०] एक यादव जिसकी कन्या सत्यभामा श्रीकृष्ण को व्याही थी।

विशेष—इसने सूर्य की तपस्या करके दिव्य स्यमतक मणि प्राप्त की थी। उसके खो जाने पर इसने श्रीकृष्ण को चोरी लगाई। जब श्रीकृष्ण ने वह मणि ढूँढकर ला दी, तब सत्राजित बहुत लज्जित हुआ और उसने श्रीकृष्ण को अपनी कन्या सत्यभामा व्याह दी।

सत्राजिती—सज्ञा स्त्री० [स०] सत्राजित की कन्या सत्यभामा का एक नाम।

सत्रापश्रय—सज्ञा पुं० [स० सत्त्रापश्रय] आश्रय या पनाह का स्थान। आश्रय का स्थान [को०]।

सत्रायण—सज्ञा पुं० [स० सत्त्रायण] यज्ञादि का वह सिलसिला जो अनवरत चलता रहे [को०]।

सत्राहा—सज्ञा पु० [स० सत्त्राहन्] इद्र [को०]।

सत्रि—सज्ञा पुं० [सं० सत्त्रि] १ बहुत यज्ञ करनेवाला। २ हाथी। ३ मेघ। बादल।

सत्री—सज्ञा पु० [स० सत्त्रिन्] १ यज्ञ करनेवाला। २ किसी दूसरे राजा के राज्य मे अपने राजा या राज्य की ओर से रहनेवाला राजदूत। एलची। ३ यज्ञ का निरीक्षण करनेवाला पुरोहित। ब्रह्मा (को०)। ४ शिष्य। छात्र (को०)।

सत्रु(पु)—सज्ञा पुं० [स० शत्रु] दे० 'शत्रु'। उ०—सत्रु न काहू करि गनै मित्र गनै नहिं काहि। तुलसी यह मत सत के बोलै समता माहि।—तुलसी ग्र०, पृ० १०।

सत्रुघन, सत्रुहन(पु)†—सज्ञा पु० [स० शत्रुघ्न] दे० 'शत्रुघ्न'। उ०—(क) सुनि सत्रुघन मातु कुटिलाई।—मानस, २।१६३। (ख) जाके सुमिरत ते रिपु नासा। नाम सत्रुहन वेद प्रकासा।—मानस, १।१९७। (सत्रुसमन, सत्रुसाल, सत्रुसूदन, सत्रुहा आदि भी इनके नाम प्राप्त होते हैं)।

सत्व—सज्ञा पुं० [स० सत्त्व] १ सत्ता। होने का भाव। अस्तित्व। हस्ती। २ सार। तत्व। मूल वस्तु। असलियत। ३ अत-प्रकृति। खासियत। विशेषता। ४ चित्त की प्रवृत्ति। ५ आत्मतत्व। चैतन्य। चित्तत्त्व। ६ प्राण। जीव तत्व। ७ साख्य के अनुसार प्रकृति के तीन गुणो मे से एक जो सब मे उत्तम है और जिसके लक्षण ज्ञान, शाति, शुद्धता आदि हैं।

विशेष—इस गुण के कारण अच्छे कर्म मे प्रवृत्ति, विवेक आदि का होना माना गया है।

८. प्राणी। जीवधारी। ९ गर्भ। हमल। १०. भूत। प्रेत। ११ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। १२ दृढता। धीरता। साहस। शक्ति। दम। १३ मूल तत्व। जैसे—पृथ्वी, वायु, अग्नि आदि (को०)। १४. भद्रता। सद्गुण। श्रेष्ठता (को०)। १५. वास्तविकता। सचाई (को०)। १६ बुद्धिमत्ता। अच्छी समझ (को०)। १७ स्वाभाविक गुण या लक्षण (को०)। १८ सज्ञा। नाम (को०)। १९. लिंग शरीर (को०)।

यौ०—सत्वकर्ता = जीवो की सृष्टि करनेवाला। सत्वपति = प्राणियो का स्वामी। सत्वलोक = प्राणिलोक। सत्वसपन्न = (१) धीरजवाला। (२) जिसमे सत्वगुण हो।

सत्वक—सज्ञा पुं० [स० सत्त्वक] मृत मनुष्य को जीवात्मा। प्रेत।

सत्वगुण—सज्ञा पु० [सं० सत्त्वगुण] अच्छे कर्मो की ओर प्रवृत्त करनेवाला गुण। साधु और विवेकशील प्रकृति। विशेष दे० 'सत्व'।

सत्वगुणी—वि० [स० सत्त्वगुणिन्] साधु और विवेकी। उत्तम प्रकृति का।

सत्वतनु—सज्ञा पुं० [स० सत्त्वतनु] विष्णु का एक नाम [को०]।

सत्वधातु—सज्ञा पुं० [स० सत्त्वधातु] पशुश्रेणी। पशुमडल [को०]।

सत्वधाम—सज्ञा पुं० [स० सत्त्वधाम] विष्णु का एक नाम।

सत्वप्रधान—वि० [स० सत्त्वप्रधान] जिसकी प्रकृति मे सत्वगुण की अधिकता या प्रधानता हो।

सत्वभारत—सज्ञा पुं० [स० सत्त्वभारत] व्यास एक नाम।

सत्वमेजय—वि० [स० सत्त्वमेजय] पशुओ, प्राणधारियो, जीवो को कँपानेवाला [को०]।

सत्वयोग—सज्ञा पु० [स० सत्त्वयोग] १ गरिमा। माहात्म्य। गौरव। २ सजीवता [को०]।

सत्वर¹—अव्य० [स०] शीघ्र। जल्द। तुरत। झटपट।

सत्वर²—वि० तेज। फुर्तीला। गतिशील [को०]।

सत्वलक्षण—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्वलक्षण] गर्भद्योतक चिह्न या लक्षण [को०]।

सत्वलक्षणा—वि० स्त्री० [सं० सत्त्वलक्षणा] जिसमे गर्भ के लक्षण हो। गर्भवती। हामिला।

सत्ववती¹—वि० [सं० सत्त्ववती] १. गर्भवती। २ सत्वगुणवाली।

सत्ववती²—संज्ञा स्त्री० एक तांत्रिक देवी। (बौद्ध)।

सत्ववान्—वि० [सं० सत्त्ववत्] [स्त्री० सत्त्ववती] १ प्राणयुक्त। २ दृढतायुक्त। दृढ। ३ धीर। साहसी।

सत्वविप्लव—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्वविप्लव] चेतना का अभाव। अचेतनता [को०]।

सत्वविहित—वि० [सं० सत्त्वविहित] १ प्राकृतिक। २ सत्वगुण युक्त। पुण्यात्मा। धार्मिक [को०]।

सत्वशाली—वि० [सं० सत्त्वशालिन्] [वि० स्त्री० सत्त्वशालिनी] दृढतायुक्त। साहसी। धीर। दमवाला।

सत्वशील—वि० [सं० सत्त्वशील] सात्विक प्रकृति का। अच्छी प्रकृति का। सदाचारी। धर्मात्मा।

सत्वसंपन्न—वि० [सं० सत्त्वसम्पन्न] १ सतोगुण से युक्त। २ धीरता युक्त। शातचित्त।

सत्वसंप्लव—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्वसम्प्लव] १ बल या सामर्थ्य की हानि। २ प्रलय। विश्व का नाश।

सत्वसार—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्वसार] १ शक्ति का मूल या सार। २ अत्यत शक्तिशाली पुरुष [को०]।

सत्वस्थ¹—वि० [सं० सत्त्वस्थ] अपनी प्रकृति मे स्थित। २ दृढ। अविचलित। धीर। ३. सशक्त। ४. प्राणयुक्त। ५ सत्त्वगुण से युक्त (को०)। ६ उत्तम। श्रेष्ठ (को०)।

सत्वस्थ²—संज्ञा पुं० योगी [को०]।

सत्वात्मा¹—वि० [सं० सत्त्वात्मन्] जिसमे सत्व गुण हो [को०]।

सत्वात्मा²—संज्ञा पुं० लिंग शरीर [को०]।

सत्वाधिक—वि० [सं० सत्त्वाधिक] १ भला। जिसका स्वभाव अच्छा हो। २ हिम्मती। साहसवाला [को०]।

सत्वोद्रेक—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्वोद्रेक] १ उत्तम प्रकृति की अधिकता या उमग। २ साहस। उमग। उत्साह।

सत्संग—संज्ञा पुं० [सं० सत्सङ्ग] साधुओ या सज्जनो के साथ उठना बैठना। अच्छा साथ। भली सगत। अच्छी सोहबत।

सत्सगति—संज्ञा स्त्री० [सं० सत्सङ्गति] दे० 'सत्सग'। उ०—सत्सगति महिमा नहिं गोई।—तुलसी (शब्द०)।

सत्सगी—वि० [सं० सत्सङ्गिन्] [वि० स्त्री० सत्सगिनी] १ सत्सग करनेवाला। अच्छी सोहबत मे रहनेवाला। २ मेल जोल रखनेवाला। लोगो के साथ बातचीत आदि का व्यवहार रखनेवाला। जैसे,—वे बडे सत्सगी आदमी हैं।

सत्संसर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] भलेमानुसो का सग। सत्सग [को०]।

सत्सन्निधान—संज्ञा पुं० [सं०] सत्सग [को०]।

सत्समागम—संज्ञा पुं० [सं०] भले आदमियो का ससर्ग।

सत्सहाय¹—वि० [सं०] जिसके मित्र या सहायक सत्पुरुष हो।

सत्सहाय²—संज्ञा पुं० सन्मित्र। अच्छा दोस्त [को०]।

सत्सार¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ चित्रकार। चितेरा। २. कवि। ३ एक प्रकार का पौधा।

सत्सार²—वि० जिसका रस अच्छा हो। अच्छे रसवाला [को०]।

सथर (पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थल] पृथ्वी। भूमि।

सथरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० साथरी] दे० 'साथरी'।

सथिया—संज्ञा पुं० [सं० स्वस्तिक, प्रा० सत्थिग्र] १ एक प्रकार का मगलसूचक या सिद्धिदायक चिह्न जो कलश, दीवार आदि पर बनाते है और जो समकोण पर काटती हुई दो रेखाओ के रूप मे होता है—卐। स्वस्तिक चिह्न। उ०—द्वार बुहारत अष्ट सिद्धि। कौरेन सथिया चीतत नवनिधि।—सूर (शब्द०)। २ देवता आदि के पदतल का एक चिह्न। ३. फोडे आदि की चीरफाड करनेवाला। जर्राह।

सथूत्कार¹—वि० [सं०] (व्यक्ति) बोलते समय जिसके मुख से थूक के छीटे उडे [को०]।

सथूत्कार²—संज्ञा पुं० बातचीत करते समय मुँह से थूक के छीटे निकलना [को०]।

सदंजन—संज्ञा पुं० [सं० सदञ्जन] पीतल से निकलनेवाला एक प्रकार का अजन।

सदंभ—वि० [सं० सदम्भ] १. दभयुक्त। घमडी। गर्वीला। २ सत् अर्थात् स्वच्छ जल से युक्त [को०]।

सदंश—संज्ञा पुं० [सं०] १ कर्कट। केकडा। २ वह जिसका दश तीक्ष्ण हो [को०]।

सदंशक—संज्ञा पुं० [सं०] केकडा।

सदंशवदन—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का बगला [को०]।

सद्—संज्ञा स्त्री० [सं०] गोष्ठी। सभा। जमावडा [को०]।

सद¹—अव्य० [सं० सद्य] तत्क्षण। तुरत। तत्काल।

सद²—वि० १ ताजा। उ०—सद माखन साटौ दही धरचो रहे मन मद। खाइ न बिन गोपाल को दुखित जसोदा नद।—पृ० रा०, २।५५७। २ नया। नवीन। हाल का।

सद³—संज्ञा स्त्री० [सं० सत्त्व] प्रकृति। आदत। टेव। उ०—सदन सदन के फिरन की सद न छुटै हरि राय। रुचै तितै बिहरत फिरौ, कत बिहरत उर आय।—बिहारी (शब्द०)।

सद⁴—संज्ञा पुं० [सं० सदस्] १ सभा। समिति। मडली। २ एक छोटा मडप जो यज्ञशाला मे प्राचीन वश के पूर्व बनाया जाता था।

सद⁵—संज्ञा पुं० [अ० सदा (=आवाज)] गडरियो का एक प्रकार का गीत। (पजाब)।

सद⁶—वि० [फा०] शत। सौ [को०]।

यौ०—सदग्राफरी = सौ सौ साधुवाद। सदचाक। सदचिराग। सदया। सदबर्ग। सदशुक्र = (भगवान् को) सौ सौ धन्यवाद।

सद²—संज्ञा पुं० [सं०] १ पेड का फल। २ एक एकाह यज्ञ [को०]।

सदई(पु)—अव्य० [स० सदैव] सदैव। सदा। उ०—उथपे थपन उजार बसावन गई बहोर बिरद सदई है।—तुलसी (शब्द०)।

सदक¹—संज्ञा पुं० [स०] भूसीसहित अनाज।

सदक²—संज्ञा पुं० [अ० सिद्क] दे० 'सिदिक'।

सदका—संज्ञा पुं० [अ० सद्कह्] १ वह वस्तु जो ईश्वर के नाम पर दी जाय। दान। २ वह वस्तु जो किसी के सिर पर से उतार कर रास्ते मे रखी जाय। उतारन। उतारा।

क्रि० प्र०—उतारना।—करना।

यौ०—सदके का कौआ = कुरूप और काला कलूटा आदमी। सदके की गुड़िया = अत्यत भद्दी और कुरूप औरत।

३ निछावर। बलि।

मुहा०—सदके जाऊँ = बलि जाऊँ। (मुसल०)।

सदक्ष—वि० [स०] जिसमे अच्छे बुरे का ज्ञान हो। विवेकवाला। [को०]।

सदक्षिण—वि० [स०] जिसे दक्षिणा या भेंट मिली हो। दक्षिणावाला [को०]।

सदचाक—वि० [फा०] जो बहुत जगह से फटा हो। टुकडे टुकडे। तार तार [को०]।

सदचिराग—संज्ञा पुं० [फ़ा० सदचिराग] दीपाधार जो लकडी या प्रस्तर निर्मित हो और जिसपर बहुत दीप जलाए जा सकें।

सदन—संज्ञा पुं० [स०] १ रहने का स्थान। घर। मकान। २ विराम। थिराना। स्थिरता। ३ शैथिल्य। थकावट। ४ एक प्रसिद्ध कसाई का नाम जो बडा भगवद्भक्त हो गया है। ५ जल (को०)। ६ यज्ञभवन या यज्ञस्थल (को०)। ७ यमालय। यम का आवास (को०)। ८ म्लान होना। क्षीण होना (को०)।

सदना†—क्रि० अ० [स० सदन (= थिराना)] १ छेद मे से रसना। चूना। २ नाव के छेदो मे से पानी आना।

सदनि—संज्ञा पुं० [स०] पानी। जल [को०]।

सदनुग्रह—संज्ञा पुं० [स०] सत्पुरुषो पर अनुग्रह। भलेमानुसो पर कृपा करना [को०]।

सदपा—संज्ञा पुं० [फा०] गोजर। कनखजूरा [को०]।

सदफ—संज्ञा स्त्री० [अ० सदफ] सीप। शुक्ति [को०]।

यौ०—सदफे सादिक = सच्ची सीपी। वह सीपी जिसमे मोती हो।

सदबर्ग—संज्ञा पुं० [फा०] हजारा गेदा।

सदमा—संज्ञा पुं० [अ० सद्मह्] १ आघात। धक्का। चोट। २ मानसिक आघात। रज। दुःख।

क्रि० प्र०—पहुँचना।—लगना।—उठाना।

३ पछतावा। पश्चात्ताप (को०)। ४ पीडा। दर्द (को०)। ५ बडी हानि। भारी नुकसान।

क्रि० प्र०—उठाना। पहुँचना।

सदय—वि० [सं०] दयायुक्त। दयालु।

सदर¹—वि० [अ० सद्र] १ खास। प्रधान। मुख्य जैसे,—सदर अमीन। सदर दरवाजा। सदर मुकाम। २ वक्षस्थल। छाती (को०)।

सदर²—संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ कोई बडी कचहरी हो या बडा हाकिम रहता हो। केंद्रस्थल।

सदर³—वि० [स०] भययुक्त। डरा हुआ।

सदर⁴—संज्ञा पुं० [देश०] सज नाम का वृक्ष। विशेष दे० 'सज'। (बु देल०)।

सदर आला—संज्ञा पुं० [अ० सद्र आला] अदालत का वह हाकिम जो जज के नीचे हो। छोटा जज।

सदर दरवाजा—संज्ञा पुं० [अ० सद्र + फा० दरवाजा] खास दरवाजा। सामने का द्वार। फाटक।

सदरनशीन—संज्ञा पुं० [अ० सद्र + फा० नशीन] किसी सभा का सभापति। मीर मजलिस।

सदर बाजार—संज्ञा पुं० [अ० सद्र + फा० बाज़ार] १ बडा बाजार। खास बाजार। २ छावनी का बाजार।

सदर बोर्ड—संज्ञा पुं० [अ० सद्र + अ० बोर्ड] माल की सबसे बडी अदालत।

सदरी—संज्ञा स्त्री० [अ०] बिना आस्तीन की एक प्रकार की कुरती या बडी जो और कपडो के ऊपर पहनी जाती है। सीनाबद।

विशेष—इसका चलन अरब मे बहुत अधिक है। मुसलमानी मत के साथ इसका प्रचार अफगानिस्तान, तुर्किस्तान और हिंदुस्तान मे भी हुआ।

सदर्थ—संज्ञा पुं० [स०] १ असल बात। मुख्य विषय। साध्य विषय। २ धनाढ्य पुरुष।

सदर्थना(पु)—क्रि० स० [स० सदर्थ या समर्थन] समर्थन करना। पुष्टि करना। तसदीक करना।

सदर्प—क्रि० वि० [सं०] १ दर्पयुक्त। घमडी। २ दर्पपूर्वक। घमड के साथ [को०]।

सदश—वि० [स०] जिसमे पाड या किनारा हो। किनारेदार। हाशियेदार।

सदस्—संज्ञा पुं० [स०] १ रहने का स्थान। मकान। घर। २ सभा। समाज। मडली। ३ यज्ञशाला मे एक छोटा मडप जो प्राचीन वश के पूर्व बनाया जाता था। ४ आकाश। व्योम (को०)।

सदसत्¹—वि० [स० सत् + असत्] १ सच और झूठ। २ अस्तित्व और अनस्तित्व। ३ भला बुरा। अच्छा और खराब।

सदसत्²—संज्ञा पुं० १ किसी वस्तु के होने और न होने का भाव। २ सच्ची और झूठी बात (को०)। ३ अच्छाई बुराई।

सदसद्विवेक—संज्ञा पुं० [स०] अच्छे और बुरे की पहचान। भले बुरे का ज्ञान।

सदसि¹—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'सदस्'।

सदसि२—क्रि० वि० सदम् मे । सभा या गोष्ठी मे ।

सदस्य—सज्ञा पुं० [स०] १ यज्ञ करनेवाला । याजक । २ किसी सभा या समाज मे सम्मिलित व्यक्ति । सभासद । मेंबर ।

सदस्यता—सज्ञा स्त्री० [स० सदस्य+ता (प्रत्य०)] सदस्य होने का भाव [को०] ।

यौ०—सदस्यताशुल्क=सदस्य बनने का चंदा ।

सदहा१—सज्ञा पु० [स०] १ यज्ञ करनेवाला । याजक । सभासद । किसी सभा या समाज मे सम्मिलित व्यक्ति । मेंबर ।

सदहा२—वि० [फा०] सैंकड़ो ।

सदहा†३—सज्ञा पुं० [देश०] अनाज लादने की बड़ी बैलगाड़ी ।

सदा१—अव्य० [स०] १ नित्य । हमेशा । सर्वदा । २ निरंतर ।

यौ०—सदाकांता=एक नदी । सदाकालवह=सर्वदा गतिशील । सदा प्रवहमान । सदातोया=(१) वह नदी जिसमें निरंतर जल बना रहे । (२) सदानीरा । करतोया नदी । (३) एलापर्णी । सदापरिभूत=एक बोधिसत्व का नाम । सदापर्ण=जिसमे हमेशा पत्ते बने रहें । सदाभ्रम=नित्य भ्रमणशील ।

सदा२—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ गूँज । प्रतिध्वनि । २ ध्वनि । आवाज । शब्द । ३ पुकार ।

मुहा०—सदा देना या लगाना=फकीर का भीख पाने के लिये पुकारना ।

यौ०—सदाए गैब=आकाशवाणी । सदाए हक=सत्य की आवाज । इन्साफ की बात ।

सदाकत—सज्ञा स्त्री० [अ० सदाकत] सच्चाई । सत्यता । खरापन ।

यौ०—सदाकतपसद, सदाकतपरस्त=जिसे सच्चाई पसद हो । सत्यता पर दृढ रहनेवाला । सचाई या सत्यता पर दृढ ।

सदाकारी—वि० [स० सदाकारिन्] जिसका आकार सत् अर्थात् भला हो [को०] ।

सदाकुसुम—सज्ञा पुं० [स०] धव । धातकी ।

सदागति—सज्ञा पुं० [स०] १ वायु । पवन । २ वात । (आयुर्वेद) । ३ सूर्य । ४ विभु । ब्रह्म । ५ चरम सुख । निर्वाण । मोक्ष (को०) । ५ वह जो सर्वदा गतिशील रहता हो ।

सदागतिशत्रु—सज्ञा पु० [स०] एरड । अडी का पेड ।

सदागम—सज्ञा पु० [स०] १ सज्जन का आगमन । २. सत् शास्त्र । अच्छा सिद्धात ।

सदाचरण—सज्ञा पु० [स०] अच्छा चाल चलन । सात्विक व्यवहार ।

सदाचार—सज्ञा पु० [स०] १ अच्छा आचरण । सात्विक व्यवहार । सद्वृत्ति । २ शिष्ट व्यवहार । भलमनसाहत । ३ रीति । रवाज ।

सदाचारी—सज्ञा पुं० [स० सदाचारिन्] [स्त्री० सदाचारिणी] १ अच्छे आचरणवाला पुरुष । अच्छे चाल चलन का आदमी । सद्वृत्तिशील । २. धर्मात्मा । पुण्यात्मा ।

सदातन१—सज्ञा पुं० [स०] विष्णु ।

सदातन२—वि० सार्वकालिक । सदा या अनवरत रहनेवाला [को०] ।

सदात्मा—वि० [स० सदात्मन्] सत् स्वभाव का । नेक । भला [को०] ।

सदादान१—सज्ञा पु० [स०] १ वह हाथी जिसे सदा मद बहता हो । २ ऐरावत । ३ गणेश । ४ सदा दान देने की प्रकृति । दानशीलता । ५ गधद्वीप (को०) ।

सदादान२—वि० सर्वदा दान देनेवाला [को०] ।

सदानद—सज्ञा पु० [स० सदानन्द] १ वह जो सदा आनद मे रहे । २ शिव । ३ परमेश्वर । ४ विष्णु ५ सदा आनद की स्थिति । सर्वदा रहनेवाला आनद । ६ वह जो सदा आनदप्रद हो । सदा आनद देनेवाला ।

सदानन—वि० [स०] सुदर मुखाकृतिवाला [को०] ।

सदानर्त्त१—वि० [स०] जो बराबर नाचता हो ।

सदानर्त२—सज्ञा पु० ममोला । खजन ।

सदानीरा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ करतोया नदी । २ सर्वदा प्रवाहित होनेवाली नदी (को०) ।

सदानीपा—सज्ञा स्त्री० [स०] एलानी । एलापर्णी ।

सदाप१—वि० [स०] सत् अर्थात् स्वच्छ पानीवाला [को०] ।

सदाप(॒)२—वि० [स० सदर्प, प्रा० सदप्प > सदाप] सदर्प । गर्वयुक्त ।

सदापुर—सज्ञा पुं० [स०] केवटी मोथा । कैवर्त्त मुस्तक ।

सदापुष्प१—सज्ञा पुं० [स०] १ नारिकेल । नारियल । २ आक । सफेद मदार । ३ कुद का फूल ।

सदापुष्प२—वि० सदा पुष्पयुक्त । हमेशा फूलनेवाला [को०] ।

सदापुष्पी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ आक । २ लाल आक । ३ कपास । ४ मल्लिका । एक प्रकार की चमेली ।

सदाप्रसून१—सज्ञा पु० [स०] १ रोहितक वृक्ष । २ आक । मदार । ३ कुद का पौधा ।

सदाप्रसून२—वि० सदा पुष्प युक्त । हमेशा पुष्पित [को०] ।

सदाफर†—वि०, सज्ञा पुं० [स० सदाफल] दे० 'सदाफल' । उ०—फरे सदाफर अउर जँभीरी ।—जायसी (शब्द०) ।

सदाफल१—वि० [स०] जो सब दिन फले । सदा फलता रहनेवाला ।

सदाफल२—सज्ञा पुं० १ गूलर । ऊमर । २ श्रीफल । बेल । ३ नारियल । ४ कटहल । ५ एक प्रकार का नीबू ।

सदाफला, सदाफली—सज्ञा स्त्री० [स०] १ जपा पुष्प । गुडहर । देवीफूल । २ एक प्रकार का बैगन ।

सदाबरत†—सज्ञा पु० [हि० सदावर्त] दे० 'सदावर्त' ।

सदाबर्त—सज्ञा पुं० [स० सदाव्रत] १ नित्य भूखो और दीनो को भोजन बाँटने की क्रिया या नियम । रोज की खैरात ।

क्रि० प्र०—चलना ।—बँटना ।

२ वह अन्न या भोजन जो नियम से नित्य गरीबो को बाँटा जाय । खैरात ।

क्रि० प्र०—बँटना ।—बाँटना ।

३ नित्य होनेवाला दान ।

सदावर्ती—संज्ञा पुं० [हिं० सदाव्रत] १ सदाव्रत बाँटनेवाला। भूखो को नित्य अन्न बाँटनेवाला। २ बडा दानी। बहुत उदार।

सदावहार¹—वि० [हिं० सदा + फा० वहार (=वसत ऋतु, फूल पत्ती का समय)] १ जो सदा फूले। २. जो सदा हरा रहे। जिसका पतझड न हो। जिसमे बराबर नए पत्ते निकलते और पुराने झडते रहें।

विशेष—वृक्ष दो प्रकार के होते है। एक तो पतझडवाले, अर्थात् जिनकी सब पत्तियाँ शिशिर ऋतु मे झड जाती और वसत मे सब पत्तियाँ नई निकलती हैं। दूसरे सदावहार अर्थात् वे जिनके पत्ते झडने की नियत ऋतु नही होती और जिनमे सदा हरी पत्तियाँ रहती है।

सदावहार²—संज्ञा पुं० एक प्रकार के फूल का नाम।

सदाभद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गँभारी का पेड।

सदाभव—वि० [सं०] हमेशा होनेवाला। निरतर। अनवरत [को०]।

सदाभव्य—वि० [सं०] जो सर्वदा विद्यमान या सावधान हो [को०]।

सदाभ्रम—वि० [सं०] सर्वदा भ्रमणशील [को०]।

सदामडलपत्रक—संज्ञा पुं० [सं० सदामण्डलपत्रक] सफेद गदहपूरना। श्वेत पुनर्नवा।

सदामत्त¹—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार के यक्ष।

सदामत्त²—वि० १ जिसके गडस्थल से सदा मदस्राव होता हो (हाथी)। २ सर्वदा मस्त रहनेवाला [को०]।

सदामद¹—वि० [सं०] १ हमेशा नशे मे रहनेवाला। नित्यमत्त। २ हमेशा, मद वहानेवाला (हाथी)। ३ खुशी के मारे जो मतवाला हो गया हो। ४ घमड से चूर रहनेवाला [को०]।

सदामद²—संज्ञा पु० गणेश।

सदामर्ष—वि० [सं०] जो शात या धीर न हो। उच्छृखल। अमर्षयुक्त।

सदामासी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मासरोहिणी।

सदामुदित—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो सर्वदा मुदित रहता हो। २ एक प्रकार की सिद्धि [को०]।

सदायोगी¹—संज्ञा पुं० [सं० सदायोगिन्] विष्णु।

सदायोगी²—वि० सर्वदा योगाभ्यास करनेवाला। जो हमेशा योगाभ्यास करता हो [को०]।

सदार—वि० [सं०] सस्त्रीक। दारायुक्त।

सदारत—संज्ञा स्त्री० [अ०] सभापतित्व। अध्यक्षता। सदर का पद। उ०—मुहम्मद कुतुब कूँ सदारत दिखाया।—दक्खिनी०, पृ० ७४।

सदारुह—संज्ञा पुं० [सं०] बेल। बिल्व वृक्ष।

सदावरदायक—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार की समाधि [को०]।

सदावर्त, सदावर्ती—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सदाव्रत', 'सदावर्ती'।

सदाशय—वि० [सं०] जिसका भाव उदार और श्रेष्ठ हो। उच्च विचार का। अच्छी नीयत का। सज्जन। भलामानस।

सदाशयता—संज्ञा स्त्री० [सं० सदाशय + ता (प्रत्य०)] भलमनसाहत। सज्जनता। उ०—जाति जीवन हो निरामय, वह सदाशयता प्रखर दो।—अपरा, पृ० १६२।

सदाशिव—संज्ञा पु० [सं०] १ सदा कल्याणकारी। सदा कृपालु। २ सदा शुभ और मगल। ३ महादेव का एक नाम।

सदाश्रित—वि० [सं०] जो सर्वदा दूसरे के आश्रय मे रहता हो। परावलबी [को०]।

सदासुहागिन¹—वि० स्त्री० [हिं० सदा + सुहागिन] जो सदा सौभाग्यवती रहे। जो कभी पतिहीन न हो।

सदासुहागिन²—संज्ञा स्त्री० १ वेश्या। रडी। (विनोद)। २ सिंदूर-पुष्पी का पौधा। ३ एक प्रकार की छोटी चिडिया। ४ एक प्रकार के मुसलमान फकीर जो स्त्रियो के वेश मे घूमते है।

सदिच्छा—संज्ञा स्त्री० [सं० सद् + इच्छा] सद् विचार। अच्छी इच्छा। उ०—इसलिये उनकी सारी सदिच्छा सपना बनकर ही रह जाती है।—इति० आलो०, पृ० ५५।

सदिया—संज्ञा स्त्री० [फा० सादह् (=कोरा)] लाल पक्षी का एक भेद जिसका शरीर भूरे रग का होता है। बिना चित्ती की मुनियाँ।

सदियाना†—संज्ञा पुं० [फ़ा० शादियानह्] दे० 'शादियाना'। उ०—लागे मगल होन लगे बाजन सदियाना।—पलटू०, पृ० ८२।

सदी¹—संज्ञा स्त्री० [अ०, फा०] १ सौ वर्षों का समूह। शताब्दी। २ किसी विशेष सौ वर्ष के बीच का काल। जैसे,—१६वीं सदी। ३. सैकडा। जैसे,—५) फी सदी सूद।

सदी²—संज्ञा स्त्री० [अ० सद्द] स्तन। पयोधर। कुच [को०]।

सदीव㉤—अव्य० [सं० सदैव] दे० 'सदैव'। उ०—मच्छाँग जल जीव जिम, मवजी तराँ सदीव। अदताराँ धन जीव इम, जस दाताराँ जीव।—बाँकी ग्र०, भा० ३, पृ० ५०।

सदुक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत् उक्ति। अच्छी लगनेवाली बात। भले शब्द [को०]।

सदुद्य—वि० [सं०] सत्य बोलनेवाला [को०]।

सदुपदेश—संज्ञा पु० [सं०] १ अच्छा उपदेश। उत्तम शिक्षा। २ अच्छी सलाह।

सदुपयोग—संज्ञा पुं० [सं०] किसी वस्तु का सत्कार्य मे उपयोग। सत्कार्य मे लगाना। अच्छे कार्य मे प्रयुक्त करना।

सदुर्दिन—संज्ञा पु० [सं०] मेघाच्छन्न या बादलो से घिरा हुआ दिन [को०]।

सदूर㉤—संज्ञा पुं० [सं० शार्दूल] शार्दूल। सिह। उ०—बिरह हस्ति तन सालै घाय करै चित चूर। वेगि आइ पिउ बाजहु गाजहु होइ सदूर।—जायसी (शब्द०)।

सदृक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की मिठाई। (सुश्रुत)।

सदृक्ष—वि० [सं०] दे० 'सदृश'।

सदृश—वि० [सं०] १. जो देखने मे एक ही सा हो। एक रूप रग का। समान। अनुरूप। २ तुल्य। बराबर। ३ उपयुक्त। मुनासिब। योग्य।

यौ०—सदृशक्षम = समान क्षमतावाला। सदृशविनिमय = तुल्य वस्तुओं के ज्ञान में भ्रम। समान वस्तु की पहिचान करने में भ्रम होना। सदृशवृत्ति = समान वृत्ति का। समान आचरण, व्यवहार या जीविकावाला। सदृशस्त्री = समान जाति की पत्नीवाला। सदृशस्पदन = लगातार या किसी निश्चित समय पर होनेवाला स्पदन।

सदृशता—संज्ञा स्त्री० [सं०] अनुरूपता। समानता। तुल्यता।

सदेविक—वि० [स०] देवी के साथ। पत्नी के साथ। महिषी के साथ [को०]।

सदेश¹—वि० [स०] १ किसी एक ही देश या स्थान का। २ पडोसी। प्रतिवेशी। ३ देशवाला। देशयुक्त। जिसके पास देश हो।

सदेश²—संज्ञा पु० प्रतिवेश। पडोस।

सदेह—क्रि० वि० [स०] १ इसी शरीर से। विना शरीर त्याग किए। जैसे,—त्रिशकु सदेह स्वर्ग जाना चाहते थे। २ मूर्तिमान। सशरीर। उ०—सब शृगार सदेह मनो रति मन्मथ मोहै।—केशव (शब्द०)।

सदैकरस—वि० [स०] १ जो सदा एक रस हो। २ सर्वदा। एक आकाक्षा या इच्छायुक्त।

सदैव—अव्य० [स०] सदा ही। सर्वदा। हमेशा।

सदोगत—वि० [सं० सदस् + गत] जो सभा या समिति मे उपस्थित हो [को०]।

सदोगृह—संज्ञा पुं० [सं० सदस् + गृह] सभाभवन। सभाकक्ष। सभागृह [को०]।

सदोष—वि० [सं०] १ दोषयुक्त। जिसमे ऐब हो। २ अपराधी। दोषी। ३ जिसपर आपत्ति या एतराज किया जा सके (को०)। ४ रात्रि से सबद्ध। रात्रियुक्त।

सदोषक—वि० [स०] दोषयुक्त। जिसमे ऐब हो [को०]।

सद्गति—संज्ञा स्त्री० [स०] १ उत्तम गति। अच्छी अवस्था। भली हालत। २ मरण के उपरात उत्तम लोक की प्राप्ति। ३ अच्छी चाल चलन।

सद्गव—संज्ञा पु० [स०] उत्तम कोटि का साँड [को०]।

सद्गुण¹—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छा गुण। अच्छी सिफत। सज्जनता। उ०—जिमि सद्गुण सज्जन पहँ आवा।—तुलसी (शब्द०)।

सद्गुण²—वि० सत् गुणो से युक्त। सज्जनता युक्त [को०]।

सद्गुणी—संज्ञा पुं० [स० सद्गुणिन्] अच्छे गुणवाला।

सद्गुरु—संज्ञा पुं० [सं०] १ अच्छा गुरु। उत्तम शिक्षक या आचार्य। २ वह धर्मशिक्षक या मत्रदाता जिसके उपदेश से ससार के वधनो से छुटकारा और ईश्वर की प्राप्ति हो।

सद्ग्रंथ—संज्ञा पुं० [स० सत् + ग्रन्थ] अच्छा ग्रथ। सन्मार्ग वतानेवाला पुस्तक या ग्रथ। उ०—जिमि पापड विवाद तें लुप्त होहिं सद्ग्रथ।—तुलसी (शब्द०)।

सद्द(पु)†¹—संज्ञा पुं० [स० शब्द, प्रा० सद्द] १ शब्द। ध्वनि।

सद्द²—अव्य० [सं० सद्य] तुरत। फौरन। तत्काल।

सद्दी†—संज्ञा स्त्री० [हिं०] सादा। सुफेद। (पतगसाजी)

सद्धन—संज्ञा पुं० [स०] सत्कार्य द्वारा उपार्जित द्रव्य। अच्छी कमाई का धन [को०]।

सद्धर्म—संज्ञा पुं० [स०] १ उत्तम धर्म (बौद्ध या जैन धर्म के लिये प्रयुक्त)। २ अच्छा नियम या न्याय [को०]।

सद्धी—वि० [स० सत् + धी] सद्वुद्धि युक्त। बुद्धिमान् [को०]।

सद्ब्राह्मण—संज्ञा पु० [सं०] उत्तम कोटि का या सात्विक ब्राह्मण। कुलीन ब्राह्मण [को०]।

सद्भाग्य—संज्ञा पुं० [स०] अच्छी किस्मत। उत्तम भाग्य [को०]।

सद्भाव—संज्ञा पुं० [स०] १ अच्छा भाव। प्रेम और हित का भाव। शुभचिंतना की वृत्ति। २ मेलजोल। मैत्री। ३ निष्कपट भाव। सच्चा भाव। अच्छी नीयत। ४ होने का भाव। अस्तित्व। हस्ती। ५ वस्तुस्थिति। वास्तविकता (को०)। ६ भद्रता। साधुता (को०)। ७. प्राप्ति (को०)।

सद्भावश्री—संज्ञा पु० [स०] १ सद्भाव की श्री, शोभा या गौरव। २. एक देवी का नाम (को०)।

सद्भूत—वि० [स०] १ जो अस्तित्व या सत्तायुक्त हो। असद्भूत का विपरीतार्थक। २ जो वस्तुत सत्य या सत् हो।

सद्भृत्य—संज्ञा पु० [स०] भला नौकर। उत्तम सेवक।

सद्म—संज्ञा पुं० [स० सद्मन्] १. घर। मकान। रहने का स्थान। २. बैठनेवाला। ३. दर्शक। ४ सग्राम। युद्ध। ५ पृथ्वी और आकाश। ६ रुकने या ठहरने की जगह (को०)। ७ देवस्थान। मदिर। देवालय (को०)। ८ वेदी (को०)। ९ जल (को०)। १० पीठ। आसन (को०)।

सद्मा—वि० [स० सद्मन्] १ बैठनेवाला। २ निवास करने या रहनेवाला [को०]।

सद्मिनी—संज्ञा स्त्री० [स० सद्म] १ हवेली। वडा मकान। २ प्रासाद। महल।

सद्य¹—अव्य० [स०] १ आज ही। २ इसी समय। अभी। ३ तुरत। शीघ्र। झट। तत्काल। ४ कुछ ही समय पूर्व (को०)।

सद्य²—संज्ञा पुं० शिव का एक नाम। सद्योजात।

सद्य—अव्य० [स० सद्यस्] दे० 'सद्य'।

यौ०—सद्य कृत = तुरत किया हुआ। सद्य कृत = जो तत्काल काटा गया हो। सद्य कृत्तोत्त = जो अभी काता और बुना गया हो। सद्य क्रीत = (१) एक एकाह यज्ञ। (२) जो तुरत खरीदा गया हो। सद्य पर्युषित = जो एक दिन पूर्व का हो। वासी। सद्य पाती = शीघ्र गिरनेवाला। सद्य प्रक्षालक = वह जो तुरत काम मे लाने के हेतु अन्न आदि को साफ करे। सद्य प्रज्ञाकर = तुरत प्रज्ञा या वुद्धि देनेवाला। शीघ्र ज्ञान देनेवाला। सद्य प्राणकर = तुरत शक्ति प्रदान करनेवाला। सद्य प्राणहर = शीघ्र प्राण या शक्ति का नाश करनेवाला। सद्य फल = शीघ्र फलदायक। सद्य शक्तिकर = तुरत शक्ति देनेवाला। सद्य शुद्धि = दे० 'सद्य शौच'। सद्य शोथ = तुरत

शोथ या सूजन करनेवाला। सद्य शौच = तुरत की हुई शुद्धि या शुचिता। सद्य श्राद्धी = जिसने अभी अभी श्राद्ध कर्म किया हो। सद्य स्नात = जिसने अभी अभी स्नान किया हो। सद्य स्नेहन = शीघ्रस्नेह युक्त या स्निग्ध करना।

सद्य पाक'—वि० [सं०] जिसका फल तुरत मिले। जिसके परिणाम मे विलंब न हो।

सद्यापाक²—संज्ञा पुं० रात के चौथे पहर का स्वप्न (जो लोगो के विश्वास के अनुसार ठीक घटा करता है)।

सद्य प्रसूत—वि० [सं०] तुरत का उत्पन्न।

सद्य प्रसूता—वि० स्त्री० [सं०] जिसे अभी बच्चा हुआ हो।

सद्य शोथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कपिकच्छु। केवाँच।

विशेष—केवाँच छू जाने से तुरत खुजली और सूजन होती है।

सद्यश्छिन्न—वि० [सं०] जो तुरत काटा गया हो। अभी अभी काटकर छिन्न किया हुआ।

सद्यस्क, सद्यस्तन—वि० [सं०] १ नवीन। ताजा। टटका। २ उसी समय का [को०]।

सद्युक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अच्छी युक्ति या तरकीब। भला तरीका। भली युक्ति [को०]।

सद्योजात'—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सद्योजाता] तुरत का उत्पन्न।

सद्योजात²—संज्ञा पुं० १ शिव का एक स्वरूप या मूर्ति। २ तुरत का उत्पन्न बछडा।

सद्योबल—वि० [सं०] शीघ्र शक्ति देनेवाला।

यौ०—सद्योबलकर = दे० 'सद्योबल'।

सद्योभावी'—वि० [सं० सद्योभाविन्] तुरत का उत्पन्न। सद्योजात।

सद्योभावी²—संज्ञा पुं० तुरत का उत्पन्न बछडा [को०]।

सद्योमन्यु—वि० [सं०] जिससे तुरत क्रोध उत्पन्न हो। शीघ्र क्रोध पैदा करनेवाला [को०]।

सद्योऽमृत—वि० [सं० सद्यस् + अमृत] तुरत अमृत के समान फलदायक।

सद्योमृत—वि० [सं०] तत्काल का मरा हुआ [को०]।

सद्योव्रण—संज्ञा पुं० [सं०] वह घाव जो तुरत लगा हो। अभी अभी लगी चोट। ताजा घाव [को०]।

सद्योहत—वि० [सं०] जो तुरत या अभी अभी मारा गया हो।

सद्र—संज्ञा पुं० [अ०] दे० 'सदर'।

सद्रव्य—वि० [सं० सद्द्रव्य] १ स्वर्णाभ। स्वर्णिम। सुनहला। २ द्रव्ययुक्त। धनयुक्त।

सद्रि—संज्ञा पुं० [सं०] १ मेष। मेढा। २ पहाड। ३ हाथी [को०]।

सद्रु—वि० [सं०] १ आराम करने या बैठनेवाला। २ गमनोद्यत। जानेवाला [को०]।

सद्वंद्व—वि० [सं० सद्वन्द्व] मघषप्रिय। झगडा करनेवाला [को०]।

सद्वंश—संज्ञा पुं० [सं०] १ उत्तम जाति का बाँस। २ अच्छा कुल या खानदान [को०]।

यौ०—सद्वंशजात = सत्कुलोत्पन्न। खानदानी।

सद्वती—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुलस्त्य की कन्या और अग्नि की स्त्री।

सद्वत्सल—वि० [सं०] सत्पुरुषो के प्रति कृपालु या अनुग्रहयुक्त [को०]।

सद्वसथ—संज्ञा पुं० [सं०] गाँव। ग्राम [को०]।

सद्वस्तु—संज्ञा पुं० [सं०] १ वस्तु या कथानक जो सत् एवम् रोचक हो। २ सत्कार्य। अच्छा काम। ३ सत् पदार्थ या वस्तु [को०]।

सद्वाजी—संज्ञा पुं० [सं० सद्वाजिन्] शुभ लक्षणोवाला अश्व जो सवारी के लिये उत्तम हो [को०]।

सद्वादिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सद्वादित्व' [को०]।

सद्वादित्व—संज्ञा पुं० [सं०] सद्वादी होने का भाव।

सद्वादी—वि० [सं० सद्वादिन्] [वि० स्त्री० सद्वादिनी] सच बोलनेवाला। सत्यवादी [को०]।

सद्वार्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुसमाचार। शुभ सूचना। अच्छी खबर। २ वार्तालाप जो शोभन हो। अच्छी बात। भली बात [को०]।

सद्विगर्हित—वि० [सं०] जो सज्जनो द्वारा विगर्हित हो। सत्पुरुषो द्वारा निंदित [को०]।

सद्विद्य—वि० [सं०] पूर्ण शिक्षाप्राप्त। जिसने अच्छी और पूरी शिक्षा प्राप्त की हो [को०]।

सद्वृत्त'—वि० [सं०] १ सदाचारी। शिष्ट। २ सुंदर वर्तुलाकार। सुंदर घेरेदार। जिसका घेरा सुंदर और वर्तुल हो। जैसे,—स्तनमंडल का।

सद्वृत्त²—संज्ञा पुं० १ शोभन आचार। सदाचार। २ दोषरहित वृत्त या वर्तुल आकार।

सद्वृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अच्छा चालचलन। उत्तम व्यवहार।

सधन'—वि० [सं०] १ धनयुक्त। २ धनी। धनवान् [को०]।

सधन²—संज्ञा पुं० वह धन जो सामान्य या सम्मिलित हो।

सधना—क्रि० अ० [हिं० साधना] १ सिद्ध होना। पूरा होना। सरना। काम होना। जैसे,—काम सधना। २ काम चलना। मतलब निकलना। ३ अभ्यस्त होना। हाथ बैठना। मँजना। मश्क होना। जैसे,—अभी हाथ सधा नही है, इसी से देर लगती है। ४ प्रयोजन सिद्धि के अनुकूल होना। गा पर चढना। जैसे,—बिना कुछ रुपया दिए वह आदमी नही सधेगा। ५ लक्ष्य ठीक होना। निशाना ठीक होना। ६ घोडे आदि का शिक्षित होना। निकलना। ७ सँभलना। ८ समाप्त होना। खतम होना। खर्च होना। ९ ठीक नपना। नापा जाना। जैसे,—अँगरखा सधना।

सधर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अधर का अनु०] ऊपर का ओठ। ओष्ठ।

सधर्म, सधर्मक—वि० [सं०] १ समान गुण, धर्म, स्वभाव या क्रियावाला। एक ही प्रकार का। २ तुल्य। समान। ३ समान संप्रदाय या जाति का (को०)। ४ समान कर्तव्योवाला (को०)।

यौ०—सधर्मचारिणी = पत्नी। भार्या।

सधर्मा—वि० [स० सधर्मन्] समानधर्मा। समान गुण एव धर्मवाला। दे० 'सधर्म' [को०]।

सधर्मिणी—सज्ञा स्त्री० [स०] सधर्मचारिणी। पत्नी। भार्या [को०]।

सधर्मी—वि० [स० सधर्मिन्] [स्त्री० सधर्मिणी] समानधर्मा। दे० 'सधर्मा' [को०]।

सधवा—सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। जो विधवा न हो। सुहागिन। सौभाग्यवती।

सधाना—क्रि० स० [हिं० सधना का प्रेर० रूप] साधने का काम दूसरे से कराना। दूसरे को साधने मे प्रवृत्त करना।

सधावर—सज्ञा पु० [हिं० सधवा या स० सप्त, प्रा० सद्ध ? अथवा देशज] वह उपहार जो गर्भवती स्त्री को गर्भ के सातवें महीने दिया जाता है।

सधि¹—सज्ञा पु० [सं०] पावक। अग्नि [को०]।

सधि²—सज्ञा पु० [स० सधिस्] साँड। वृषभ [को०]।

सधी—वि० [स०] धी अर्थात् बुद्धियुक्त। बुद्धिमान् [को०]।

सधूम—वि० [स०] धूँए से आच्छादित। धूमयुक्त [को०]।

सधूमक—वि० [स०] १ धूम्रयुक्त। २ धूँए जैसा [को०]।

सधूमवर्णा—सज्ञा स्त्री० [स०] अग्नि की सात जिह्वाओं मे से एक जिह्वा।

सधूम्र—वि० [स०] १ धुँधला। २ धुँए से आच्छादित। ३ धूम्र वर्ण का। काला। श्यामवर्ण का [को०]।

यौ०—सधूम्रवर्णा = अग्नि की एक जिह्वा। सधूमवर्णा।

सधोर†—सज्ञा पु० [हिं० सधावर] दे० 'सधावर'।

सधौर†—सज्ञा पु० [हिं० सधावर] दे० 'सधावर'।

सध्रीच—सज्ञा पु० [स० सध्र्यञ्च] [स्त्री० सध्रीची (= पत्नी। सखी)] पति। सखा। स्वामी [को०]।

सध्रीची—सज्ञा स्त्री० [स० सध्रीचीन (= समान उद्देश्यवाला)] सखी (डिं०।

सध्रीचीन—वि० [स०] [स्त्री० सध्रीचीना] १ साथ साथ रहनेवाला। साथी। २ समान उद्देश्यवाला [को०]।

सध्वस—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'कारव', 'कारव'।

सनक†—सज्ञा पु० [अनु० सन सन्] सन्नाटा। स्तव्धता। नीरवता।

सनद—सज्ञा पु० [स० सनन्द] दे० 'सनदन'।

सनदन—सज्ञा पु० [स० सनन्दन] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रो मे से एक मानसपुत्र।

विशेष—ये कपिल के भी पूर्व साख्य मत के प्रवर्तक कहे गए है।

यौ०—सनक सनदन।

सन्—सज्ञा पुं० [अ०] १ वर्ष। साल। सवत्सर। २ कोई विशेष वर्ष। सवत्। जैसे,—सन इसवी, सन् हिजरी।

सन¹—सज्ञा पुं० [सं० शण] बोया जानेवाला एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी छाल के रेशे से मजबूत रस्सियाँ आदि बनती है।



विशेष—यह तीन साढे तीन हाथ ऊँचा होता है और इसका काड सीधी छडी की तरह दूर तक ऊपर जाता है। फूल पीले रग के होते हे। कुआरी फसल के साथ यह खेतो मे बोया जाता है और भादो कुआर मे तैयार होता है। रेशेदार छिलका अलग करने के लिये इसके डठल पानी मे डालकर सडाए जाते हे।

सन(पु)†²—प्रत्य० [प० सुन्तो या सङग] अवधी मे करणकारक का चिह्न। से। साथ।

सन³—सज्ञा स्त्री० [अनु०] वेग से निकल जाने का शब्द। जसे,—तीर सन से निकल गया।

सन⁴—सज्ञा पु० [स०] १ ब्रह्मा के चार मानस पुत्रो मे से एक मानस पुत्र। २. हाथी का कान फडफडाना (को०)। ३ समर्पण। भेंट (को०)। ४ भोजन। आहार को०)। ५ लाभ। प्राप्ति (को०)। ६ घटापाटलि वृक्ष।

सन⁵—वि० [अनु० सुन] १ सन्नाटे मे आया हुआ। स्तब्ध। ठक। २ मौन। चुप।

मुहा०—जी सन होना = चित्त स्तब्ध होना। घबरा जाना।

सनई सज्ञा स्त्री० [हिं० सन] छोटी जाति का सन।

सनक¹—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्क(= खटका)] १ किसी बात की धुन। मन की झोक। वेग के साथ मन की प्रवृत्ति।

मुहा०—सनक चढना या सवार होना = धुन होना।

२. उन्माद की सी वृत्ति। खब्त। जुनून।

मुहा०—सनक आना = पागल होना। खब्ती होना। सनक जाना = पागल होना। सनकना। सनक लेना = पागलो का सा काम करना।

सनक²—सज्ञा पु० [स०] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रो मे से एक।

विशेष—ये परम ज्ञानी और विष्णु के सभासद माने गए हैं। शेष के नाम है—सन, सनत्कुमार और सनदन।

सनकना¹—क्रि० अ० [हिं० सनक + ना (प्रत्य०)] पागल हो जाना। पगलाना। झक्की हो जाना।

सनकना²—क्रि० अ० [अनु० सनसन] वेग मे हवा मे जाना या फेंका जाना। जैसे,—तीर सनकना, गोले सनकना।

सनकाना—क्रि० स० [हिं० सनकना का प्रेर०] किसी को सनकने मे प्रवृत्त करना।

सनकारना(पु)†—क्रि० स० [हिं० सैन + करना] १ सकेत करना। इशारा करना। २ इशारे से बुलाना। ३. किसी काम के लिये इशारा करना। उ०—तुलसी सभीतपाल सुमिरे कृपालु राम समय सुकरुना सराहि सनकार दी।—तुलसी (शब्द०)।

सयो० क्रि०—देना।

सनकियाना¹—क्रि० स० [स० सङ्केतन, हिं० सन] इशारा करना। सकेत करना।

सनकियाना² - क्रि० अ० [हिं० सनक] दे० 'सनकना'।

सनकियाना³ - क्रि० स० दे० 'सनकाना'।

सनकुरगी—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बडा पेड।

विशेष—इसके हीर की लकड़ी बहुत मजबूत और स्याही लिए लाल होती है। इसकी कुर्सियाँ आदि बनती हैं। यह वृक्ष तिनेवली और ट्रावनकोर में अधिक पाया जाता है।

सनट्टा—संज्ञा पुं० [देश०] विलायती मेंहदी नाम का पौधा जो बागों में बाट के रूप में लगाया जाता है। विशेष दे० 'विलायती मेंहदी'।

सनत्—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

सनत्कुमार—संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक। वैधात्र।

विशेष—ये सबसे पहले प्रजापति कहे गए हैं।

२ बारह सार्वभौमों या चक्रवर्तियों में से एक। (जैन)। ३ जैनों के अनुसार तीसरे स्वर्ग का नाम। ४ वह संत जिसकी अवस्था हमेशा एक सी रहे। सर्वदा बाल्य या युवावस्था में रहनेवाला तपस्वी (को०)।

सनत्सुजात—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा के सात मानस पुत्रों में से एक मानसपुत्र।

सनत्ता—संज्ञा पुं० [हिं० सन] वह वृक्ष जिसपर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं। जैसे,—शहतूत, बेर।

सनद—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ तकियागाह। आश्रय। सहारा। २ भरोसा करने की वस्तु। ३ प्रमाण। सबूत। दलील। ४ प्रमाणपत्र। सर्टिफिकेट। ५ आदर्श। नमूना। (को०)। ६ उदाहरण। मिसाल (को०)।

सनदयाफ्ता—वि० [अ० सनद + फा० याफ्तह्] १ जिसे किसी बात की सनद मिली हो। प्रमाणपत्र प्राप्त। २ किसी परीक्षा में उत्तीर्ण।

सनदी'—वि० [अ० सनद] प्रमाणयुक्त। प्रामाणिक।

सनदी(पु)²—संज्ञा स्त्री० हालचाल। वृत्तांत। समाचार।

सनना—क्रि० अ० [सं० सन्धम् (= पिघल कर मिलना)] १ जल के योग से किसी चूर्ण के कणों का एक में मिलना या लगना। गीला होकर लेई के रूप में मिलना। जैसे,—आटा सनना। २ गीली वस्तु के साथ मिलना। आप्लावित होना। ओतप्रोत होना। जैसे,—कपड़ा कीचड़ में सन गया। ३ लिप्त होना। पगना। एक में मिलना। लीन होना। उ०—बोलत बैन सनेह सने।—सूर (शब्द०)।

संयो० क्रि०—जाना।

सननी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सनना] पानी में भिगाया हुआ भूसा या सूखा चारा जो चौपायों को दिया जाता है। सानी।

सनमध(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सम्बन्ध] दे० 'संबंध'। उ०—मात पिता जोर्‌यौ सनमधा। कै कछु आपुहि कीयौ धधा।—सुंदर ग्रं०, भा० १, पृ० ३२३।

सनम—संज्ञा पुं० [अ०] १ बुत। प्रतिमा। मूर्ति (को०)। २ प्रिय। प्रियतम। प्यारा।

यौ०—सनमकदा, सनमखाना = बुतखाना। मंदिर। सनमपरस्त = बुतपरस्त। मूर्तिपूजक। सनमपरस्ती = बुतपरस्ती। मूर्तिपूजा।

सनमान(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सम्मान] दे० 'सम्मान'। उ०—केहि करनी जन जानि कै सनमान किया रे। केहि अघ अवगुन आपनो करि डारि दिया रे।—तुलसी ग्रं०, पृ० ४७१।

सनमानना(पु)—क्रि० स० [सं० सम्मान + हिं० ना (प्रत्य०)] खातिर करना। आदर करना। सत्कार करना। उ०—नृप मुनि आगे आइ पूजि सनमानेउ।—तुलसी (शब्द०)।

सनमुख(पु)—अव्य० [सं० सम्मुख] दे० 'सम्मुख'। उ०—सनमुख आएउ दधि अरु मीना। कर पुस्तक दुइ विप्र प्रवीना।—मानस, १।३०३।

सनय—वि० [सं०] १ प्राचीन। पुराना। २ नीतियुक्त (को०)।

सनसन—संज्ञा पुं० [अनु०] दे० 'सनसनाहट'।

सनसनाना—क्रि० अ० [अनु० सन सन] १ हवा के झोंके में निकलने या जाने का शब्द होना। २ खौलते हुए पानी का शब्द होना। ३ हवा बहने का शब्द होना।

सनसनाहट—संज्ञा पुं० [हिं० सनसनाना] १ हवा बहने का शब्द। २ हवा में किसी वस्तु के वेग से निकलने का शब्द। ३ खौलते हुए पानी का शब्द। ४ सनसनी।

सनसनी—संज्ञा स्त्री० [अनु० सन सन] १ संवेदन सूत्रों में एक प्रकार का स्पंदन। झनझनाहट। झुनझुनी। जैसे,—दवा पीते ही शरीर में सनसनी सी मालूम हुई। २ अत्यंत भय, आश्चर्य आदि के कारण उत्पन्न स्तब्धता। ठक रह जाने का भाव। ३ उद्वेग। घबराहट। खलबली। क्षोभ।

क्रि० प्र०—फैलाना।

४ दे० 'सनसनाहट'। ५ सन्नाटा। नीरवता।

सनसूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] शण सूत्र। सन की डोरी या रस्सी (को०)।

सनहकी—संज्ञा स्त्री० [अ० सनहक] मिट्टी का एक बरतन जो बहुधा मुसलमान काम में लाते हैं।

सनहाना—संज्ञा पुं० [देश०] वह नाँद या बड़ा बरतन जिसमें भरे हुए खटाई मिले जल में धोने के पूर्व बरतन फूलने के लिये डाले जाते हैं।

सना'—अव्य० [सं०] हमेशा। सर्वदा। नित्य (को०)।

सना²—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ स्तुति। स्तवन। वंदना। २ तारीफ। प्रशंसा। श्लाघा (को०)।

सना³—संज्ञा पुं० [अ० सनह्] वत्सर। वर्ष। सन् (को०)।

सना⁴—संज्ञा स्त्री० [फा०] दे० 'सनाय'।

सनाढ्य—संज्ञा पुं० [सं० सन (= दक्षिणा) + आढ्य (= संपन्न)] ब्राह्मणों की एक शाखा जो गौड़ों के अंतर्गत कही जाती है।

सनात्—अव्य० [सं०] सर्वदा। हमेशा (को०)।

सनातन'—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राचीन काल। अत्यंत पुराना समय। अनादि काल। जैसे,—यह बात सनातन से चली आती है। २ प्राचीन परंपरा। बहुत दिनों से चला आता हुआ क्रम। ३ ब्रह्मा। ४ विष्णु। ५ शिव (को०)। ६ वह जिसे सब श्राद्धों

मे भोजन कराना कर्तव्य हो। ७ ब्रह्मा के एक मानसपुत्र। ८. एक प्राचीन ऋषि (को०)।

**सनातन²**—वि० १. अत्यंत प्राचीन। बहुत पुराना। जिसके आदि का पता न हो। अनादि काल का। २ जो बहुत दिनो से चला आता हो। परंपरागत। जैसे,—सनातन रीति, सनातन धर्म। ३. नित्य। सदा रहनेवाला। शाश्वत। ४. दृढ। निश्चल। अचल (को०)।

**सनातनतम**—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम (को०)।

**सनातनधर्म**—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राचीन धर्म। २ परंपरागत धर्म। ३ वर्तमान हिंदू धर्म का वह स्वरूप जो परंपरा से चला आता हुआ माना जाता है और जिसमे पुराण, तंत्र, बहुदेवोपासना, प्रतिमापूजन, तीर्थ माहात्म्य आदि सब समान रूप मे माननीय हे। साधारण जनता के बीच प्रचलित हिंदू धर्म।

**सनातनपुरुष**—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु भगवान्। उ०—पुरुष सनातन की वधू क्यों न चवला होय।—रहीम (शब्द०)।

**सनातनी¹**—वि०, संज्ञा पुं० [सं० सनातन + ई (प्रत्य०)] १ जो बहुत दिनो से चला आता हो। जिसकी परंपरा बहुत पुरानी हो। २ सनातन धर्म का अनुयायी।

**सनातनी²**—स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी। २ दुर्गा। ३ पार्वती। ४ सरस्वती (को०)।

**सनाथ**—वि० [सं०] [स्त्री० सनाथा] १ जिसकी रक्षा करनेवाला कोई स्वामी हो। जिसके ऊपर कोई मददगार या सरपरस्त हो। उ०—हौं सनाथ ह्वै हौ सही जौ लघुतहि न मितैहौ।—तुलसी (शब्द०)। २ प्रभु या पतियुक्त। ३ कब्जा किया हुआ। अधिकृत (को०)। ४ संपन्न। सहित। युक्त (को०)। ५ जो जनाकीर्ण हो। जैसे, सभा आदि (को०)। ६ कृतार्थ। कृतकृत्य। उ०—आइ रामपद नावहिं माथा। निरखि बदनु सब होहिं सनाथा।—मानस, ४।२२। ७ सफल।

मुहा०—सनाथ करना = शरण मे लेना। आश्रय देना। सहायक होना।

**सनाथा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। पतियुक्ता स्त्री। सधवा स्त्री। सपतिका नारी (को०)।

**सनाभ**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सहोदर या सगा भाई। २ नजदीकी रिश्तेदार। सगा संबधी (को०)।

**सनाभि¹**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सहोदर भाई। २ सन्निकट संबधी जो सात पीढी के अंदर हो (को०)। ३ संबंधी। रिश्तेदार (को०)। ४ एक ही पूर्वज से उत्पन्न पुरुष। सपिंड पुरुष।

**सनाभि²**—वि० १ समान केंद्र से संपृक्त या जुडा हुआ। जैसे,—रथचक्र का आरा। २ नाभियुक्त। ३ सदृश। तुल्य। समान। ४ सगा या सहोदर। ५ एक पूर्वज से उत्पन्न। सपिंड (को०)।

**सनाभ्य**—संज्ञा पुं० [सं०] एक ही कुल का पुरुष। सात पीढियो के भीतर एक ही वंश का मनुष्य। सपिंड व्यक्ति।

**सनाम, सनामक**—वि० [सं०] एक ही या समान नाम का (को०)।

**सनामा**—वि० [सं० सनामन्] [वि० स्त्री० सनाम्नी] दे० 'सनाम', 'सनामक' (को०)।

**सनाय**—संज्ञा स्त्री० [अ० सना] एक पौधा जिसकी पत्तियाँ दस्तावर होती है। स्वर्णपत्री। सोनामुखी।

विशेष—इस पौधे की अधिकतर जातियाँ अरब, मिस्र, यूनान, इटली आदि पश्चिम के देशो मे होती है। केवल एक जाति का पौधा भारतवर्ष के सिंध, पंजाब, मदरास आदि प्रांतो मे थोडा बहुत होता है। इसकी पत्तियाँ इमली की तरह एक सीके के दोनो ओर लगती हे। एक सीके मे ५ से ८ जोडे तक पत्तियाँ लगती है जो देखने मे पीलापन लिए हरे रंग की होती है। इसमे चिपटी लंबी फलियाँ लगती हे जो सिरे पर गोल होती हैं। इसकी पत्तियो का जुलाब हकीम और वैद्य दोनो साधारणत दिया करते हैं। इसकी फलियो मे भी रेचन गुण होता है, पर पत्तियो से कम। वैद्यक मे सनाय रेचक तथा मदाग्नि, विषम ज्वर, अजीर्ण, प्लीहा, यकृत्, पांडु रोग आदि को दूर करनेवाली कही गई हे।

**सनाल**—वि० [सं०] नाल या डठल से युक्त। जैसे,—सनाल कमल। उ०—सोहत जनु जुग जलज सनाला। ससिहि सभीत देत जयमाला।—मानस, १।२६४।

**सनाली**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो स्त्रियो को दलाली करती हो। कुटनी। दूती (को०)।

**सनासन**—संज्ञा पुं० [हिं० सनसन] दे० 'सनसन'।

**सनाह**†—संज्ञा पुं० [सं० सन्नाह] कवच। बकतर। उ०—उठि उठि पहिरि सनाह अभागे। जहँ तहँ गाल बजावन लागे।—तुलसी (शब्द०)।

**सनि**†¹—संज्ञा पुं० [सं० शनि] दे० 'शनि'।

**सनि²**—संज्ञा पुं०, स्त्री० [सं०] १. दान। भेंट। २ अर्चन। पूजन ४ विनय। निवेदन। ५ दिशा (को०)।

यौ०—सनिकाम = कुछ पाने के लिये इच्छुक। सनिवन्य = भिक्षा या याचना से प्राप्त।

**सनिकार**—वि० [सं०] निकारयुक्त। अपमानित। तिरस्कृत। अपमानजनक (को०)।

**सनिग्रह**—वि० [सं०] दस्ता या मूठ से युक्त (को०)।

**सनित¹**—वि० [हिं० सनना] मिश्रित। सना या साना हुआ। मिला हुआ (को०)।

**सनित²**—वि० [सं०] १ अंगीकृत। स्वीकृत। २ जो प्राप्त हो। पाया हुआ। लब्ध (को०)।

**सनिद्र**—वि० [सं०] सुप्त। निद्राभिभूत (को०)।

**सनियम**—वि० [सं०] १ नियम, धर्मानुष्ठान से युक्त। नियमवाला। २ नियमित। नियमपूर्वक (को०)।

**सनिया**†—संज्ञा पुं० [सं० शण] रेशमी धोती या वस्त्र।

**सनिर्घृण**—वि० [सं०] जिसमे दया न हो। निष्ठुर (को०)।

**सनिर्विशेष**—वि० [सं०] निरपेक्ष। उदासीन (को०)।

**सनिर्वेद**—वि० [सं०] अन्यमनस्क। निर्वेदयुक्त। खिन्न (को०)।

**सनिष्ठिव, सनिष्ठीव, सनिष्ठेव**—वि० [सं०] जिसमे थूक मिला हो।

**सनिष्ठिव, सनिष्ठीव, सनिष्ठेव[1]**—संज्ञा पुं० वह शब्द या कथन जिसके उच्चारण मे मुँह से थूक के छीटे उडते हो।

**सनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आदरयुक्त प्रार्थना या निवेदन। २ दिशा। ३. गौरी का एक नाम (को०)। ४ हाथी का कान फटफटाना। ५ काति। दीप्ति।

**सनीचर**—संज्ञा पुं० [सं० शनैश्चर] दे० 'शनैश्चर'।

**सनीचरी**—संज्ञा पुं० [हिं० सनीचर+ई (प्रत्य०)] शनि की दशा, जिसमे दु ख, व्याधि आदि की अधिकता होती है।

मुहा०—मीन की सनीचरी = मीन राशि पर शनि की स्थिति की दशा जिसका फल राजा और प्रजा दोनो का नाश माना जाता है। उ०—एक तौ कराल कलिकाल सूल मूल ता मे कोढ मे की खाज सी सनीचरी है मीन की।—तुलसी (शब्द०)।

**सनीड़[1]**—अव्य० [सं० सनीड] १ पडोस मे। बगल मे। २ समीप। निकट।

**सनीड[2]**—संज्ञा पुं० नैकट्य। प्रतिवेशिता। समीपता (को०)।

**सनीड[3]**—वि० १ पडोसी। बगल का। २ पास का। समीप का। ३ एक ही नीड मे रहनेवाला (को०)।

**सनील**—वि० [सं०] दे० 'सनीड'।

**सनेमि**—वि० [सं०] १ पूर्ण। पूरा। २ नेमियुक्त। परिधियुक्त। जिसमे मडल हो (को०)।

**सनेस, सनेसा**—संज्ञा पुं० [सं० सन्देश] दे० 'सदेश'।

**सनेह**(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्नेह] दे० 'स्नेह'।

**सनेहिया**(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सनेह+इया (प्रत्य०)] दे० 'सनेही'।

**सनेही[1]**—वि० [सं० स्नेही, स्नेहिन्] स्नेह या प्रेम करनेवाला। प्रेमी।

**सनेही[2]**—संज्ञा पुं० चाहनेवाला। प्रियतम। प्यारा।

**सनै सनै**(पु)—अव्य० [सं० शनै शनै] दे० 'शनै शनै'।

**सनोवर**—संज्ञा पुं० [अ०] चीड का पेड।

**सन्न[1]**—संज्ञा पुं० [सं०] १ चिरौजी का पेड। पियाल वृक्ष। २ परिमाण मे स्वल्पता। कमी। अल्पता (को०)। ३. नाश। ध्वस। विनाश (को०)।

**सन्न[2]**—वि० [सं० शून्य, हिं० सुन्न] १, सज्ञाशून्य। सवेदनारहित। बिना चेतना का सा। स्तब्ध। जड। जैसे,—यह भीषण सवाद सुनते ही वह सन्न रह गया। २ भौचक। ठक। स्तभित। ३ एकबारगी खामोश। सहसा मौन। एकदम चुप। ४ डर से चुप। भय से नीरव। जैसे,—उसके डाँटते ही वह सन्न हो गया।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

मुहा०—सन्न मारना = सन्नाटा खीचना। एकबारगी चुप हो जाना।

**सन्न[3]**—वि० [सं०] १ जो सिकुड गया हो। सकुचित। २ समाप्त। नष्ट। मृत। ३ दुर्बल। क्षीण। ४ सुस्त। विषण्ण। विषाद-युक्त। ६ जिसमे कोई हरकत न हो। गतिहीन। मद। ७. झुका हुआ। अवनत। म्लान। ८ निकटस्थ। समीपवर्ती। सटा हुआ। ९ बैठा हुआ। आसीन। १० गत। प्रस्थित। ११ धीमा। मद। जैसे,—स्वर (को०)।

यौ०—सन्नकठ = गद्गद कठवाला। रुँधे गलेवाला। सन्नजिह्व = जो चुप हो। मौन। सन्नधी = उत्साहरहित। विषण्ण। सन्नभाव = त्यक्ताश। म्लान। उद्विग्न। सन्नमुसल = कार्य मे अप्रयुक्त या रखा हुआ मूसल। सन्नवाक्, सन्नवाच् = मद स्वर मे बोलनेवाला। जो धीमी आवाज मे बोलता हो। सन्नशरीर = श्लथदेह। थका हुआ। सन्नहृष = आनदरहित। उत्साहहीन। विषण्ण।

**सन्नक[1]**—वि० [सं०] जो लबा न हो। नाटा। बौना (को०)।

**सन्नक[2]**—संज्ञा पुं० [सं०] पियाल वृक्ष। चिरौजी का पेड।

**सन्नकद्रु, सन्नकद्रुम**—संज्ञा पुं० [सं०] चिरौजी का पेड (को०)।

**सन्नत[1]**—वि० [सं०] १ झुका हुआ। २ नीचे गया हुआ। ३ खिन्न। उदास (को०)।

यौ०—सन्नतभ्रू = जिसकी भौहे झुकी हो। टेढी भौहोवाला।

**सन्नत[2]**—संज्ञा पुं० राम की सेना का एक बदर।

**सन्नतर**—वि० [सं०] अत्यत धीमा। अत्यत मद या मद्र। जसे,—स्वर (को०)।

**सन्नति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ झुकाव। २ नम्रता। विनय। ३ किसी ओर प्रवृत्ति। मन का झुकाव। ४ कृपादृष्टि। मेहरबानी। ५ दक्ष की पुत्री और क्रतु की स्त्री का नाम। ६. ध्वनि। आवाज। ७ एक प्रकार का यज्ञ (को०)।

**सन्नद्ध**—वि० [सं०] १ बँधा हुआ। कसा या जकडा हुआ। २ कवच आदि बाँधकर तैयार। ३ तैयार। आमादा। उद्यत। ४ लगा हुआ। जुडा हुआ। मिला हुआ। ५ पास का। समीप का। ६ हिंसक। घातक (को०)। ७ फूटने या खिलने की ओर अभिमुख। विकासोन्मुख (को०)। ८ आनदयुक्त। मोहक (को०)। ९ युक्त। सपन्न (को०)।

यौ०—सन्नद्धकवच = जिसने कवच या जिरहबख्तर धारण किया हो। कवची। सन्नद्धयोध = पूर्णत सज्जित या तैयार योद्धाओ से युक्त।

**सन्नय**—संज्ञा पुं० [सं०] १ समूह। झुड। सख्या। परिमाण। तादाद। २ पिछला हिस्सा। पिछला अश। ३ सेना का पिछला भाग (को०)।

**सन्नयन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक साथ करना। समीप लाना। २ सबद्ध करने की क्रिया (को०)।

**सन्नहन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक साथ अच्छी तरह बाँधना। नद्धना। पिरोना। २ तैयार होना। तत्पर होना। सन्नद्ध होना। ३ रस्सी। जेवर। ४ युद्धोपकरण, लडाई के हथियार आदि से युक्त होना। ५ उद्योग या प्रयत्न करना। ५ कसान। कसाव या खिंचाव। ७ तैयारी (को०)।

**सन्नाटा[1]**—संज्ञा पुं० [सं० शून्य, हिं० सुन्न+आटा (प्रत्य०)] १ चारो ओर किसी प्रकार का शब्द न सुनाई पडने की अवस्था।

निःशब्दता। नीरवता। निस्तब्धता। जैसे,—मेला उठ जाने पर वहाँ सन्नाटा हो गया।

क्रि॰ प्र॰—करना।—छाना।—फैलाना।—होना।

२ किसी प्राणी के न होने का भाव। निर्जनता। निरालापन। एकांतता। जैसे,—वहाँ सन्नाटे मे पुकारने से भी कोई न सुनेगा। ३ अत्यंत भय या आश्चर्य के कारण उत्पन्न मौन और निश्चेष्टता। ठक रह जाने का भाव। स्तब्धता।

मुहा॰—सन्नाटे मे आना = ठक रह जाना। स्तंभित हो जाना। कुछ कहते सुनते न बनना।

४ सहसा मौन। एकदम खामोशी। चुप्पी।

मुहा॰—सन्नाटा खीचना या मारना = एकबारगी चुप हो जाना। एकदम मौन हो जाना।

५ चहल पहल का अभाव। विनोद या मनोरंजन का न होना। उदासी।

मुहा॰—सन्नाटा बीतना = उदासी मे समय काटना।

६. काम धंधे से गुलजार न रहना। जैसे,—अब तो कारखाने मे सन्नाटा रहता है।

**सन्नाटा[2]**—वि॰ १ जहाँ किसी प्रकार का शब्द आदि न सुनाई पडता हो। नीरव। स्तब्ध। २. निर्जन। निराला। जैसे,—सन्नाटा मैदान।

**सन्नाटा[3]**—संज्ञा पुं॰ [अनु॰ सनसन] १ हवा के जोर से चलने की आवाज। वायु के बहने का शब्द। जैसे—आज तो बडे सन्नाटे की हवा है।

मुहा॰—सन्नाटे का = सन सन शब्द के साथ बहता हुआ।

२ हवा चीरते हुए तेजी से निकल जाने का शब्द। वेग से वायु मे गमन करने का शब्द।

मुहा॰—सन्नाटे के साथ या सन्नाटे से = वेग से। झोके से। बडी तेजी से। जैसे,—तीर सन्नाटे से निकल गया।

**सन्नादन**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] राम की सेना का एक यूथप बंदर।

**सन्नाम**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सन्नामन्] सत् नाम। अच्छा नाम। सुनाम [को॰]।

**सन्नाह**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ कवच। बकतर। उ॰—पिधउ दिढ सन्नाह वाह उप्परि पक्खर दइ।—इतिहास, पृ॰ २८। २. उद्योग। प्रयत्न। ३ स्वयं को शस्त्रास्त्र से सुसज्जित करना (को॰)। ४ युद्ध जैसी सज्जा (को॰)। ५. सामग्री। सामान। उपकरण (को॰)।

**सन्नाह्य**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] युद्ध के योग्य एक विशेष प्रकार का हाथी।

**सन्नि**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] खिन्नता। विषण्णता। निराशा [को॰]।

**सन्निकट**—अव्य॰ [सं॰] समीप। पास। निकट।

**सन्निकर्ष**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [वि॰ सन्निकृष्ट] १ संबंध। लगाव। २ नाता। रिश्ता। ३ सामीप्य। समीपता। ४ इंद्रियों का विषयों के साथ संबंध (न्याय)।

विशेष—यही ज्ञान का कारण है और लौकिक तथा अलौकिक दो प्रकार का कहा गया है।

५ पात्र। आधार। आश्रय। ५ निकट खीचना। समीप लाना (को॰)। ६ नूतन विषय या विचार (को॰)।

**सन्निकर्षण**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] दे॰ सन्निकर्ष [को॰]।

**सन्निकाश**—वि॰ [सं॰] उसी रूप रंग का। सदृश। समान।

**सन्निकोण**—अ॰ [सं॰] पूरी तौर से। छितराया हुआ। पूर्णत. फैला हुआ [को॰]।

**सन्निकृष्ट[1]**—वि॰ [सं॰] १ समीपवाला। नजदीक का। २ जो पास खिंच आया हो। समीप खीचा हुआ [को॰]।

**सन्निकृष्ट[2]**—संज्ञा पुं॰ पडोस।

**सन्निचय**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ बटोरना। एकत्र करना। ढेर करना। २ भंडार। राशि [को॰]।

**सन्निचित**—वि॰ [सं॰] १ राशीभूत। एकत्रित। २ अवरुद्ध। अवष्टंभित। रुका हुआ। जैसे,—सन्निचित मल। (सुश्रुत)।

**सन्निताल**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] संगीत मे एक प्रकार का ताल [को॰]।

**सन्निध**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ सामीप्य। २ आमने सामने की स्थिति।

**सन्निधाता**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सन्निधातृ] १ आकर्षण करने या पास लानेवाला। २ जो एकत्र या जमा करता हो। ३ वह जो अपनी निगरानी मे रखे। पास रखनेवाला। ४ न्यायपीठ के समक्ष लोगो को सविवरण उपस्थित करनेवाला अधिकारी। ५ वह जो चोरी का माल रखता हो [को॰]।

**सन्निधान**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ आमने सामने की स्थिति। २. निकटता। समीपता। ३. रखना। धरना। ४ स्थापित करना। ५ किसी वस्तु के रखने का स्थान। ६. वह स्थान जहाँ धन एकत्र किया जाय। निधि। ७ दृष्टिगोचरता (को॰)। ८ ग्रहण करना। भार लेना (को॰)। ९ समिश्रण (को॰)। १० इंद्रियो का विषय (को॰)।

**सन्निधि**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ समीपता। निकटता। २ आमने सामने की स्थिति। ३ पडोस। दे॰ 'सन्निधान'।

**सन्निपात**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ एक साथ गिरना या पडना। २ जुटना। भिडना। टकराना। ३ संयोग। मेल। मिश्रण। ४ इकट्ठा होना। एक साथ जुटना। ५ कफ, वात और पित्त तीनो का एक साथ बिगडना। त्रिदोष। सरसाम।

विशेष—यह वास्तव मे कोई अलग रोग नही है, बल्कि एक विशेष अवस्था है जो ज्वर या और किसी व्याधि के बिगडने पर होती है। यह कई प्रकार का होता है। सबसे साधारण रूप वह है जिसमे रोगी का चित्त भ्रांत हो जाता है, वह अंड-बंड बकने लगता है तथा उछलता कूदता है। आयुर्वेद मे १३ प्रकार के सन्निपात कहे गए हैं—संधिग, अंतक, रुग्दाह, चित्त-भ्रम, शीतांग, तंद्रिक, कंठकुब्ज, कर्णक, भग्ननेत्र, रक्तष्ठीव, प्रलाप, जिह्वक, और अभिन्यास।

६ एक साथ कई बातो का घटना या ठीक उतरना। ७. समाहार। समूह। ८ आना। पहुँचना (को॰)। ९. संगीत मे एक प्रकार का ताल (को॰)। १० मैथुन। संभोग (को॰)। ११ युद्ध। लडाई (को॰)। १२. ग्रहो का विशेष योग (को॰)।

सन्निपातक—संज्ञा पुं० [सं०] त्रिदोष विशेष। दे० 'सन्निपात'–५ [को०]।

सन्निपातित—वि० [सं०] १ च्युत। निमृत। २ समवेत। इकट्ठा। एकत्र [को०]।

सन्निपाती—वि० [सं० सन्निपातिन्] सामवायिक [को०]।

सन्निबंध—संज्ञा पुं० [सं० सन्निबन्ध] १ एक में बाँधना। जकड़ना। २ लगाव। संबंध। ३ प्रभाव। तासीर। ४ फल। परिणाम।

सन्निबद्ध—वि० [सं०] १ एक में बँधा हुआ। जकड़ा हुआ। २ लगा हुआ। अड़ा हुआ। फँसा हुआ। ३ सहारे पर टिका हुआ। आश्रित। ४ व्यवस्थित (को०)।

सन्निबर्हण—संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिरोध। प्रतिबंध [को०]।

सन्निभ—वि० [सं०] सदृश। समान। मिलता जुलता।

सन्निभृत—वि० [सं०] १ अच्छी तरह छिपाया हुआ। गुप्त। २ समझ बूझकर बोलनेवाला। ३ चतुर। शिष्ट (को०)।

सन्निमग्न—वि० [सं०] १ खूब डूबा हुआ। २ सोया हुआ।

सन्निमित्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ अच्छा सगुन २ जिसका कारण सत् या अच्छा हो। ३ भले लोगों का हित [को०]।

सन्नियंता—वि० [सं० सन्नियन्तृ] शासन करनेवाला। नियामक। व्यवस्थापक [को०]।

सन्नियोग—संज्ञा पुं० [सं०] १ अच्छा योग। संयोग। संबंध। २ नियुक्ति। ३ लगाव। ४ फरमान। आज्ञा। आदेश [को०]।

सन्निरुद्ध—वि० [सं०] १ रोका हुआ। ठहराया हुआ। अड़ाया हुआ। २ दबाया हुआ। दमन किया हुआ। ३ एक साथ रखा या बटोरा हुआ। जैसे,– ठसाठस भरा हुआ। कसा हुआ।

सन्निरोध—संज्ञा पुं० [सं०] १ रोक। रुकावट। बाधा। २ दमन। निवारण। ३ निग्रह। बंधन। कारागृह (को०)। ४ तंगी। संकोच। ५ तंग रास्ता। सँकरी गली।

सन्निवाय—संज्ञा पुं० [सं०] संहति। संघात [को०]।

सन्निवास—संज्ञा पुं० [सं०] १ भले लोगों के साथ रहना। साथ रहना। २ निवास। बसति। नीड [को०]।

सन्निविष्ट—वि० [सं०] १ एक साथ बैठा या मिला हुआ। २. जमा हुआ। धरा हुआ। ३ स्थापित। प्रतिष्ठित। ४ लगा हुआ। जड़ा हुआ। ५ अँटा हुआ। आया हुआ। ६ समाया हुआ। लीन। ७ पास का। समीप का। लगा हुआ। ८ जिसने शिविर या पड़ाव डाला हो (को०)।

सन्निवृत्त—वि० [सं०] १ जो लौट आया हो। प्रत्यावर्तित। २. ठहरा या रुका हुआ। ३ जो अलग हट गया हो। पराङ्मुख [को०]।

सन्निवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लौट आना। पलटना। प्रत्यावर्तन। २ ठहरना। रुकना। ३ अलग हटना। दूर होना। ४ रोकने की क्रिया [को०]।

सन्निवेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक साथ बैठना। २ जमना। स्थित होना। बैठना। ३ रखना। धरना। ठहरना। ४ लगाना। जड़ना। बैठाना। ५ अँटना। भीतर आना। समाना। ६. स्थिति। आधार। रखने की जगह। ७ आसन। बैठकी। ८ रहने की जगह। निवास। घर। ९ पुर या ग्राम के लोगों के एकत्र होने का स्थान। अथाई। चौपाल। १० एकत्र होना। जुटना। ११ समूह। समाज। १२ योजना। व्यवस्था। १३ रचना। १४ गढ़न। गठन। बनावट। आकृति। १५ स्तंभ, मूर्ति आदि की स्थापना। १६ गहरी पैठ। १७ उत्कट भक्ति (को०)। १८ संचय। समुच्चय (को०)। १९ डेरा डालना। शिविर स्थापित करना।

सन्निवेशन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सन्निवेशित, सन्निवेशी, सन्निवेश्य, सन्निविष्ट] १ एक साथ बैठना। २ बैठना। जमना। ३ रखना। धरना। ४ बैठाना। लगाना। जड़ना। ५ टिकाना। ठहराना। अड़ाना। ६. स्थापित करना। जैसे,— प्रतिमा या स्तंभ का सन्निवेशन। ७ वास। निवास। ८ विधान। व्यवस्था।

सन्निवेशित—वि० [सं०] १ बैठाया हुआ। जमाया हुआ। २ ठहराया हुआ। रखा हुआ। ३ स्थापित। प्रतिष्ठित। ४ अँटाया हुआ। भीतर डाला हुआ। ५ सौंपा हुआ (को०)।

सन्निसर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] सत् स्वभाव। विनयशीलता। उदारता [को०]।

सन्निहित[1]—वि० [सं०] १. एक साथ या पास रखा हुआ। २ समीपस्थ। निकटस्थ। ३ रखा हुआ। धरा हुआ। ४ ठहराया हुआ। टिकाया हुआ। अड़ाया हुआ। ५ जो कुछ करने पर हो। उद्यत। तैयार। ६ उपस्थित। विद्यमान (को०)।

सन्निहित[2]—संज्ञा पुं० १ सामीप्य। २. एक प्रकार की अग्नि [को०]।

सन्निहितापाय—वि० जिसका विनाश निकट ही हो। क्षणभंगुर [को०]।

सन्नी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सन] सन की जाति का एक प्रकार का छोटा पौधा।

विशेष—वह पौधा प्रायः सारे भारत और बरमा में पाया जाता है। इसके डंठलों से भी एक प्रकार का मजबूत रेशा निकलता है, पर लोग उसका व्यवहार कम करते हैं। यह देखने में बहुत सुंदर होता है, अतः कहीं कहीं लोग इसे बागों में शोभा के लिये भी लगाते हैं।

सन्नोदन—संज्ञा पुं० [सं०] १ पशु आदि को चलाना। हाँकना। २ प्रेरित करना। उभारना। उसकाना।

सन्मंगल—संज्ञा पुं० [सं० सन्मङ्गल] भला काम [को०]।

सन्मणि—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम कोटि का रत्न [को०]।

सन्मति—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सम्मति' [को०]।

सन्मातुर—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो साध्वी स्त्री का पुत्र हो। सती स्त्री का पुत्र [को०]।

सन्मात्र[1]—वि० [सं०] जिसका अस्तित्व मात्र स्वीकार्य हो [को०]।

सन्मात्र[2]—संज्ञा पुं० [सं०] आत्मा का एक नाम [को०]।

सन्मान—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सम्मान'।

सन्मानना पु—क्रि० स० [हिं० सनमानना] दे० 'सनमानना'।

सन्मार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] सत् मार्ग। अच्छा मार्ग।

यौ०—सन्मार्गगामी = सुमार्ग पर चलनेवाला। सन्मार्गयोधी = धर्म या नियम के अनुसार लडनेवाला योद्धा। सन्मार्गस्थ = सत्यमार्ग पर स्थित। सन्मार्गगामी।

सन्मार्गालोकन—संज्ञा पुं० [स०] सत्पथ पर चलना। सुमार्ग पर चलना।

सन्मार्गी—वि० [स० सन्मार्गिन्] सुपथ पर चलनेवाला। सत् पथ पर गमन करनेवाला।

सन्मुख—ग्रव्य० [स० सम्मुख] दे० 'सम्मख'।

सन्यासन—संज्ञा पुं० [स० सन्यसन, सन्यसन] [वि० सन्यस्त] १. फेंकना। छोडना। अलग करना। हटाना। दूर करना। २ सासारिक विषयो का त्याग। दुनिया का जजाल छोडना। ३ रखना। धरना। ४ बैठाना। जमाना। स्थापित करना। ५ खडा करना। ६ जमा करना (को०)। ७. सौपना (को०)।

सन्यस्त—वि० [स० सन्यस्त, सन्न्यस्त] १ फेंका हुआ। अलग किया हुआ। २ रखा हुआ। धरा हुआ। ३ बैठाया हुआ। जमाया हुआ। ४ सौंपा हुआ (को०)।

सन्यास—संज्ञा पुं० [स० सन्यास, सन्न्यास] १ छोडना। दूर करना। त्याग। २ सासारिक प्रपचो के त्याग की वृत्ति। दुनिया के जजाल से अलग होने की अवस्था। वैराग्य। ३ चतुर्थ आश्रम। यति धर्म।

विशेष—यह प्राचीन भारतीय आर्यों या हिंदुओ के जीवन की चार अवस्थाओ मे से अतिम है जो पुत्र आदि के सयाने हो जाने पर ग्रहण की जाती थी। इसमे मनुष्य गृहस्थी छोडकर जगल या एकात स्थान मे ब्रह्मचितन या परलोकसाधन मे प्रवृत्त रहते थे और भिक्षा द्वारा निर्वाह करते थे। इसमे किसी आचार्य से दीक्षा लेकर सिर मुँडाते और दड ग्रहण करते थे। सन्यास दो प्रकार का कहा गया है—एक सक्रम अर्थात् जो ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य और वानप्रस्थ आश्रम के उपरात ग्रहण किया जाय, दूसरा अक्रम जो बीच मे ही वैराग्य उत्पन्न होनेपर धारण किया जाय। बहुत दिनो तक 'सन्यास' कलिवर्ज्य माना जाता था, पर शकराचार्य ने बौद्ध भिक्षुओ और जैन यतियो को अपने अपने धर्म का प्रचार बढाते देख कलिकाल मे फिर सन्यास चलाया और गिरि, पुरी, भारती आदि दस प्रकार के सन्यासियो की प्रतिष्ठा की जो दशनामी कहे जाते हैं।

क्रि० प्र०—ग्रहण करना।—लेना।

४ सहसा शरीर का त्याग। एकबारगी मरण। ५ एकदम थक जाना। चरम शैथिल्य। ६ धरोहर। थाती। ७ वादा। इकरार। ८. बाजी। होड। खेल मे शर्त लगाना। ९ जटामासी।

सन्यासी—संज्ञा पुं० [स० सन्यासिन्, सन्न्यासिन्] [स्त्री० सन्यासिनी, सन्यासिन] १ वह पुरुष जिसने सन्यास धारण किया हो। चतुर्थ आश्रमी। २. विरागी। त्यागी। यति। ३ वह जो त्याग देता है (को०)। ४. भोजन का त्याग करनेवाला (को०)।

सपक(पु)—वि० [स० स + पङ्क] १ कीचड से भरा हुआ। २ मुसीबत से भरा हुआ। उ०—मन मानि अतका करि मत सका सिंधु सपका तरितरिगे।—पद्माकर ग्र०, १०,१६।

सपई—संज्ञा स्त्री० [हिं० साँप] १ एक प्रकार का लबा कीडा जो मनुष्यो और पशुओ की आँतो मे उत्पन्न होता है। पेट का केचुवा। २. बेला नामक फूल।

सपक्ष¹—संज्ञा पुं० [सं०] अनुकूल पक्ष। मुवाफिक राय।

सपक्ष²—वि० १ जो अपने पक्ष मे हो। तरफदार। २ समर्थक। पोषक। ३ पक्षयुक्त। डैनो वाला (को०)। ४ पक्षवाला। दलवाला (को०)। ४ परदार (बाण)। उ०—चले बान सपक्ष जनु उरगा।—मानस, ६।९३। ५ सदृश। समान (को०)। ६ एक जाति, वर्ग या श्रेणी का। ७ जिसमे साध्य या अनुमान का पक्ष हो (को०)।

सपक्ष³—संज्ञा पुं० १. तरफदार। मित्र। सहायक। २ न्याय मे वह बात या दृष्टात जिसमे साध्य अवश्य हो। जैसे,—जहाँ धूआँ होता है, वहाँ आग रहती है। जैसे,—रसोईघर का दृष्टात सपक्ष है। ३ सजातीय। रिश्तेदार (को०)।

सपक्षक—वि० [सं०] पक्षयुक्त। पखोंवाला (को०)।

सपक्षी—वि० [स० सपक्ष] दे० 'सपक्ष'।

सपच्छ(पु)—वि० [स० सपक्ष, प्रा० सपच्छ] दे० 'सपक्ष'।

सपटा†—संज्ञा पु० [देश०] १. सफेद कचनार। २ एक प्रकार का टाट। ३ मूँज की बनी एक प्रकार की पेटारी।

सपट्टी—संज्ञा स्त्री० [स०] द्वार के चौखट की दोनो खडी लकडियाँ। बाजू।

सपड़ना‡—क्रि० अ० [हिं० सपरना] दे० 'सपरना'।

सपडाना‡—क्रि० स० [हिं० सपराना] दे० 'सपराना'।

सपत(पु)—अव्य० [स० सपदि] दे० 'सपदि'।

सपताक—वि० [स०] पताका सहित। झडेवाला (को०)।

सपत्न¹—संज्ञा पुं० [स०] अरि। वैरी। विरोधी। शत्रु।

यौ०—सपत्नजित्। सपत्नदूषण, सपत्नबलनाशन = शत्रु का सहार करनेवाला। सपत्नवृद्धि = वैरियो की वृद्धि। सपत्नश्री = वैरी की विजय। सपत्नसूदन = शत्रुहता। शत्रुसूदन।

सपत्न²—वि० शत्रुता रखनेवाला। दुश्मन। वैरी। शत्रु (को०)।

सपत्नजित्—संज्ञा पुं० [स०] १. शत्रु को जीतनेवाला। २ सुदत्ता के गर्भ से उत्पन्न कृष्ण के एक पुत्र का नाम।

सपत्नता—संज्ञा स्त्री० [स०] वैर। शत्रुता।

सपत्नारि—संज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का ठोस बाँस जिससे डडे या छडियाँ बनती हैं।

सपत्नी—संज्ञा स्त्री० [स०] एक ही पति की दूसरी स्त्री। जो अपने पति की दूसरी स्त्री हो। सौत। सौतिन।

सपत्नीक—वि० [सं०] स्त्री के सहित। जोडे के साथ। जैसे,—आप सपत्नीक तीर्थ करने जायँगे।

सपत्र—वि० [स०] पत्तो या पत्रो के सहित (को०)।

**सपत्राकरण**—संज्ञा पुं० [सं०] १ ऐसा बाण मारना कि उसके पंख तक भीतर घुस जायँ। २ बहुत पीडित करना [को०]।

**सपत्राकृत**—वि० [सं०] १ जिसे ऐसा तीर लगा हो कि उसके पंख तक भीतर घुस गए हों। २ आहत। घायल [को०]।

**सपत्राकृति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अत्यंत कष्ट या पीडा। दारुण व्यथा [को०]।

**सपथ**—संज्ञा पुं० [सं० शपथ] दे० 'शपथ'। उ०—भामिनि राम सपथ सत मोही।—मानस, २।२६।

**सपदि**—अव्य० [सं०] उसी समय। तुरत। शीघ्र। जल्द। उ०—(क) सपदि जाइ रघुपतिहि सुनाई।—मानस, ६।८४। (ख) मठ स्वपक्ष तव हृदय बिसाला। सपदि होहि पक्षी चंडाला।—मानस, ७।११२।

**सपन**†—संज्ञा पुं० [हिं० सपना] दे० 'सपना'। उ०—सुनि सिय सपन भरे जल लोचन। भए सोचबस सोचविमोचन।—मानस, २।२२५।

**सपना**[1]—संज्ञा पुं० [सं० स्वप्न] १ वह दृश्य जो निद्रा की दशा में दिखाई पडे। नींद में अनुभव होनेवाली बात। २ निद्रा की दशा में दृश्य देखना।

मुहा०—सपना होना = देखने को भी न मिलना। दुर्लभ हो जाना।

**सपना**(पु)[2]—क्रि० अ० [सं० सर्पण, प्रा० सप्पण] चलना। गतिशील होना। उ०—लय पग्ग रमक्किय प्रेत दिस, वर वीर सु मंडिय चित्त रस। अविलंघ करी मकर बिरत, रिपु थान सपत सु मैं न मत।—पृ० रा०, १।५३०।

**सपरदा, सपरदाई**—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रदायी] गानेवाली तवायफ के साथ (तबला, सारंगी आदि) बजानेवाला। भँडवा। ममाजी। साजिंदा।

**सपरना**—क्रि० अ० [सं० सम्पादन, प्रा० सपाडन] १ किसी काम का पूरा होना। समाप्त होना। निबटना। २ काम का किया जा सकना। हो सकना। जैसे,—यह काम हमसे नहीं सपरेगा।

मुहा०—सपर जाना = मर जाना।

३ तैयारी करना। तैयार होना।

**सपरब**—वि० [सं० सपर्व] गाँठयुक्त। पोरदार। उ०—बेनु हरित मनिमय सब कीन्हे। सरल सपरब परहिं नहिं चीन्हे।—मानस, १।२८०।

**सपरस**(पु)—वि० [हिं० स (= सह) + परस (= स्पर्श)] छूने से युक्त। स्पृश्य। स्पर्श करने योग्य। 'असपरस' का विलोम। उ०—असपरस ठौर तहाँ मास जाइ कैसे, वासना न धोवैं तौं लौं तन के पखारे कहा।—घनानंद, पृ० १६८।

**सपराना**—क्रि० स० [हिं० सपरना] १ काम पूरा करना। निबटाना। खतम करना। २ पूरा कर सकना। कर सकना। ३ † नहलाना। स्नान कराना।

**सपरिकर**—वि० [सं०] १ अनुचर वर्ग के साथ। २ ठाठ बाट के साथ। जुलूस के साथ।

**सपरिक्रम**—वि० [सं०] दे० 'सपरिकर' [को०]।

**सपरिच्छद**—वि० [सं०] १ अनुचर वर्ग के साथ। २ तैयारी के साथ। ठाठ बाट के साथ। जुलूस के साथ।

**सपरिजन**—वि० [सं०] दे० 'सपरिकर'। उ०—बहुरि सपरिजन भरत कहु रिपि अस आयेसु दीन्ह।—मानस, २।२१३।

**सपरिबृंहण**—वि० [सं०] परिशिष्ट से युक्त (वेद)।

**सपरिवार**—वि० [सं०] कुटुंबियों या आत्मीयों के सहित [को०]।

**सपरिवाह**—वि० [सं०] १ जो पूरा भरा हो। लबरेज। २ सतह से ऊपर बहता हुआ [को०]।

**सपरिव्यय**—वि० [सं०] विविध प्रकार की सामग्री, मसाले आदि के योग से तैयार किया गया। जैसे,—खाद्य पदार्थ [को०]।

**सपरिहार**—वि० [सं०] १ परिहार या अपवाद युक्त। २ शालीनता या भीरुता से युक्त [को०]।

**सपर्ण**—वि० [सं०] पत्रयुक्त। पत्तियोंवाला [को०]।

**सपर्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पूजा। आराधना। उपासना। २ सत्कार। सेवा टहल (को०)।

**सपशु**—वि० [सं०] १ पशुयुक्त। जानवरों के सहित। २ जो पशुबलि से संबंधित हो [को०]।

**सपाट**—वि० [सं० स + पट्ट, हिं० पाटा (= पीढा)] १ बराबर। हमवार। समतल। २ जिसकी सतह पर कोई उभरी या जमी हुई वस्तु न हो। चिकना।

**सपाटा**—संज्ञा पुं० [सं० सर्पण (= सरकना)] १ चलने, दौडने या उडने का वेग। झोंक। तेजी। जैसे,—सपाट के साथ दौडना। २ तीव्र गति। दौड। झपट। झपटा।

क्रि० प्र०—भरना।—मारना।—लगाना।

यौ०—सैर सपाटा = घूमना फिरना।

**सपाद**—वि० [सं०] १ चरण सहित। २ चतुर्थांश युक्त। ३ चतुर्थांश और अधिक के साथ। जिसमें एक का चौथाई और मिला हो। जैसे, सवा दो, सवा तीन, सवा चार।

यौ०—सपादपीठ = पादपीठ के साथ। पादपीठिका से युक्त। पैर रखने की छोटी चौकी से युक्त। सपादमत्स्य = एक प्रकार का मत्स्य। सपादलक्ष = सवा लाख। एक लाख पचीस हजार।

**सपादुक**—वि० [सं०] जो पादुका, खडाऊँ या चट्टी पहने हो [को०]।

**सपाल**—वि० [सं०] १ पशुपालक से रक्षित या युक्त। जिसके साथ पशुपालक हो। २ राजा से युक्त [को०]।

**सपिंड**—संज्ञा पुं० [सं० सपिण्ड] एक ही कुल का पुरुष जो एक ही पितरों को पिंडदान करता हो। एक ही खानदान का।

विशेष—छह पीढी ऊपर और छह पीढी नीचे तक के लोग सपिंड की गणना में आते हैं। इनके अतिरिक्त माता नाना और पडनाना आदि, कन्या, कन्या का पुत्र और पौत्र आदि तथा पिता माता के भाई बहिन आदि बहुत से आते हैं।

सपिंडन—संज्ञा पुं० [सं० सपिण्डन] दे० 'सपिंडीकरण' [को०]।

सपिंडी—संज्ञा स्त्री० [सं० सपिण्डी] मृतक के निमित्त वह कर्म जिसमें वह और पितरों या परिवार के मृत प्राणियों के साथ पिंडदान द्वारा मिलाया जाता है।

सपिंडीकरण—संज्ञा पुं० [सं० सपिण्डीकरण] १ समान पितरों के समान में किया जानेवाला विशेष श्राद्ध का अनुष्ठान। यह श्राद्ध पहिले मृतक की मृत्यु तिथि के एक वर्ष बाद किया जाता था किंतु आजकल १२वें दिन ही किया जाने लगा है। २. किसी व्यक्ति को सपिंड का अधिकार देना [को०]।

सपीड—वि० [सं०] पीड़ा या वेदनायुक्त [को०]।

सपीतक—संज्ञा पुं० [सं०] घीया तुरई। नेनुवा।

सपीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुतों के एक साथ बैठकर पीने या खाने की क्रिया। सहपान या सहभोज [को०]।

सपीतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] लंबी घीया या कद्दू।

सपुर(पु)—वि० [सं०] पुरवासियों के साथ। उ०—देखि सपुर परिवार जनक हिय हारेउ।—तुलसी ग्रं०, पृ० ५३।

सपुलक—वि० [सं०] पुलक या हर्ष के साथ।

सपूत—संज्ञा पुं० [सं० सत्पुत्र, प्रा० सपुत्त, सउत्त] वह पुत्र जो अपने कर्त्तव्य का पालन करे। अच्छा पुत्र। उ०—सूर सुजान सपूत सुलच्छन गनियत गुन गरुआई।—तुलसी (शब्द०)।

सपूती—संज्ञा स्त्री० [हिं० सपूत+ई (प्रत्य०)] १ सपूत होने का भाव। लायकी। २ योग्य पुत्र उत्पन्न करनेवाली माता।

सपेत, सपेद(पु)†—वि० [फा० सफ़ेद, मि० सं० श्वेत] सफेद। श्वेत। धवल।

सपेती(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सफेदी] दे० 'सफेदी'।

सपेरा—संज्ञा पुं० [हिं० सँपेरा] दे० 'सँपेरा'।

सपेला—संज्ञा पुं० [हिं० साँप+ऐला (प्रत्य०)] साँप का छोटा बच्चा। उ०—जिमि कोउ करै गरुड सों खेला। डरपावै गहि स्वल्प सपेला।—मानस, ३।५०।

सपोत—वि० [सं०] जिसके पास नाव हो। पोत युक्त [को०]।

सपोला—संज्ञा पुं० [हिं० साँप+ओला (प्रत्य०)] साँप का छोटा बच्चा।

सपौष्णमैत्र—वि० [सं०] रेवती और अनुराधा नक्षत्र से युक्त [को०]।

सप्त—वि० [सं०] गिनती में सात।

यौ०—सप्तकोण=सात कोणों वाला। सप्तगंग=एक स्थान-विशेष जहाँ गंगा सात धाराओं में बहती है। सप्तगोदावरी=एक नदी। सप्तज्वाल=सप्तार्चि। अग्नि। सप्ततंतु, सप्ततंत्र=सात तारों से युक्त। सप्तदीधिति=अग्नि। सप्त द्वारावकीर्ण=सात द्वारों—पाँच इंद्रियाँ, मन और बुद्धि से युक्त। सप्तधातुक=सात धातुओं वाला। सप्तदिन, सप्तदिवस=सप्ताह। सप्तपद=सात पदों का। सप्तपुरुष=जो सात पीढ़ियाँ लगा हो। सप्तशोषग कुसुमाढ्य=एक बुद्ध का नाम। सप्तभूमिक, सप्तभूमिमय, सप्तभौम=सात मंजिलों वाला। सप्तमरीचि=सात मरीचि या किरणों वाला। सप्तार्चि। अग्नि। सप्तमहाभाग=विष्णु। सप्तमास्य=सतमासा। सप्त यम=सात स्वरों वाला। सप्तरात=सात रात्रि का व्रत। सप्ताह। सप्तरात्रक=जो सात रात तक चले। सप्ताह्निक। सप्तयुग=सात का समाहार। सप्तवर्ष=सात वर्ष का। सप्तविदार=एक वृक्ष का नाम। सप्तविध=सात प्रकार का। सप्तसमाधिपरिष्कारक, सप्तसमाधिपरिष्कारदायक=बुद्ध का एक नाम।



सप्तऋषि—संज्ञा पुं० [सं० सप्तर्षि] दे० 'सप्तर्षि'।

सप्तक'—संज्ञा पुं० [सं०] १ सात वस्तुओं का समूह। २ संगीत में सात स्वरों का समूह।

सप्तक'—वि० [वि० स्त्री० सप्तका, सप्तकी] १ सात से युक्त। २ जो छह के बाद हो। सात। ३ सप्तम। सातवाँ [को०]।

सप्तकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्रियों का कमरबंद।

सप्तकृत्—संज्ञा पुं० [सं०] विश्वेदेवा में से एक।

सप्तगुण—वि० [सं०] सात बार और। सतगुना।

सप्तग्रही—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक ही राशि में सात ग्रहों का योग या एकत्र होना।

सप्तचत्वारिंश—वि० [सं०] सैंतालीसवाँ।

सप्तचत्वारिंशत्—वि० [सं०] सैंतालीस।

सप्तच्छद—संज्ञा पुं० [सं०] सप्तपर्ण वृक्ष। छतिवन।

सप्तजिह्व'—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि, जिसकी सात जिह्वाएँ मानी गई है।

सप्तजिह्व'—वि० सात जिह्वावाला। जिसे सात जीभ हो [को०]।

सप्तति—वि० [सं०] सत्तर।

सप्ततितम—वि० [सं०] सत्तरवाँ।

सप्तत्रिंश—वि० [सं०] सैंतीसवाँ।

सप्तत्रिंशत्—वि० [सं०] सैंतीस।

सप्तदश'—वि० [सं०] सत्तरहवाँ।

सप्तदश' वि० [सं० सप्तदशन्] सत्तरह।

सप्तदशक—वि० [सं०] सत्रह से युक्त। जिसमें सत्रह हो [को०]।

सप्तदशम—वि० [सं०] सत्तरहवाँ।

सप्तद्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार पृथ्वी के सात बड़े और मुख्य विभाग।

विशेष—सात द्वीप ये हैं—जंबू द्वीप, कुश द्वीप, प्लक्ष द्वीप, शाल्मलि द्वीप, क्रौंच द्वीप, शाक द्वीप और पुष्कर द्वीप।

२ पृथ्वी, जो सात द्वीपों से युक्त है।

सप्तधा—वि० [सं०] १ सात भागों में। २ सात गुना [को०]।

सप्तधातु'—संज्ञा पुं० [सं०] आयुर्वेद के अनुसार शरीर के सात संयोजक द्रव्य अर्थात् रक्त, पित्त, मांस, वसा, मज्जा, अस्थि और शुक्र।

सप्तधातु'—वि० सात धातुओं से बना हुआ। जैसे,—शरीर।

सप्तधातु[2]—संज्ञा पुं० चंद्रमा के घोड़ों में से एक का नाम।

सप्तधान्य—संज्ञा पुं० [सं०] जौ, धान, उरद आदि सात अन्नों का मेल जो पूजा में काम आता है।

सप्तनली—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहेलियों का चिड़िया फँसाने का एक उपकरण। कंपा [को०]।

सप्तनवति—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्तानवे की संख्या—९७।

सप्तनाडिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सप्तनाडिका] सिंघाड़ा।

सप्तनाडी चक्र—संज्ञा पुं० [सं० सप्तनाडीचक्र] फलित ज्योतिष में सात टेढ़ी रेखाओं का एक चक्र जिसमें सब नक्षत्रों के नाम भरे रहते हैं और जिनके द्वारा वर्षा का आगम बताया जाता है।

सप्तनामा—संज्ञा स्त्री० [सं०] आदित्यभक्ता। हुलहुल नाम का पौधा।

सप्तपंचाश—वि० [सं० सप्तपञ्चाश] सत्तावनवाँ।

सप्तपंचाशत्—वि० [सं० सप्तपञ्चाशत्] सत्तावन।

सप्तपत्र[1]—वि० [सं०] १ जिसमें सात पत्ते या दल हों। २ जिसके वाहन सात घोड़े हों।

सप्तपत्र[2]—संज्ञा पुं० १ मोतिया। मोगरा बेला। २ सप्तपर्ण वृक्ष। छतिवन। ३ सूर्य।

सप्तपदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विवाह की एक रीति जिसमें वर और वधू अग्नि के चारों ओर सात परिक्रमाएँ करते हैं और जिसमें विवाह पक्का हो जाता है। भाँवर। भँवरी। २ किसी बात को अग्नि की साक्षी देकर पक्का करना।

सप्तपदी पूजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] विवाह के अवसर पर होनेवाला एक पूजन।

विशेष—इसमें एक लोढ़ा वर और वधू के आगे रखकर वर को उसे पूजने को कहा जाता है, पर वह उसे पैर से हटा देता है।

सप्तपराक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का तप।

सप्तपर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १ छतिवन का पेड़। २. एक प्रकार की मिठाई।

सप्तपर्ण[2]—वि० जिसमें सात दल या पत्ते हों [को०]।

सप्तपर्णक—संज्ञा पुं० [सं०] छतिवन वृक्ष [को०]।

सप्तपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लज्जालु। लज्जावती लता। २ एक मिठाई। ३ छतिवन का फूल (को०)।

सप्तपलाश—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सप्तपर्ण'।

सप्तपाताल—संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी के नीचे के सात लोक जिनके नाम ये हैं—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल।

सप्तपुत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] तुरई की तरह की सतपुतिया नाम की तरकारी।

सप्तपुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सात पवित्र नगर या तीर्थ जो मोक्षदायक कहे गए हैं।

विशेष—अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वार), काशी, कांची, अवंतिका (उज्जयिनी) और द्वारका ये सात पवित्र पुरियाँ हैं।

सप्तप्रकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] राज्य के सात अंग जो ये हैं—राजा, मंत्री, सामंत, देश, कोश, गढ़ और सेना।

सप्तबाह्य—संज्ञा पुं० [सं०] बाह्लीक देश। बलख।

सप्तभंगिनय—संज्ञा पुं० [सं० सप्तभङ्गिनय] दे० 'सप्तभंगी'—१।

सप्तभंगी—संज्ञा स्त्री० [सं० सप्तभङ्गी] १ जैन न्याय या तर्क के सात अवयव जिन पर स्याद्वाद की प्रतिष्ठा है।

विशेष—ये सातों अवयव या सूत्र स्यात् शब्द से आरंभ होते हैं। यथा—स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, स्यादस्तिच नास्ति, स्यादवक्तव्य, स्यादस्तिचावक्तव्य, स्यान्नास्तिचावक्तव्य, स्यादस्तिचनास्तिचावक्तव्य।

२ सप्तभंगी को माननेवाला। स्याद्वाद का अनुयायी जैन।

यौ०—सप्तभंगीनय = दे० 'सप्तभंगिनय'।

सप्तभद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ सिरिस। शिरीष वृक्ष। २ नेवारी। नवमल्लिका। ३ गुंजा। चिरमटी।

सप्तभुवन—संज्ञा पुं० [सं०] ऊपर के सात लोक। विशेष दे० 'लोक'।

सप्तभूम[1]—संज्ञा पुं० [सं०] मकान के सात खंड या मरातिब।

सप्तभूम[2]—वि० सात खंडों का। सतमंजिला।

सप्तभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रसातल। २ दे० 'सप्तभूम'।

सप्तमंत्र—संज्ञा पुं० [सं० सप्तमन्त्र] अग्नि। सप्तार्चि [को०]।

सप्तम—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सप्तमी] सातवाँ।

सप्तमातृका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सात माताएँ या शक्तियाँ जिनका पूजन विवाह आदि शुभ अवसरों के पहले होता है।

विशेष—इनके नाम ये हैं—ब्राह्मी या ब्राह्मणी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, ऐंद्री या इंद्राणी और चामुंडा।

सप्तमी[1]—वि० स्त्री० [सं०] सातवाँ।

सप्तमी[2]—संज्ञा स्त्री० १ किसी पक्ष की सातवीं तिथि। २ किसी पक्ष का सातवाँ दिन। ३ अधिकरण कारक की विभक्ति का नाम (व्याकरण)।

सप्तमुष्टिक—संज्ञा पुं० [सं०] ज्वर की एक औषधि जो कई द्रव्यों के योग से बनती है।

सप्तमृत्तिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] शांति पूजन में काम आनेवाली सात स्थानों की मिट्टी।

विशेष—राजद्वार की, गजशाला की तथा इसी प्रकार और स्थानों की मिट्टी मँगाई जाती है।

सप्तरक्त—संज्ञा पुं० [सं०] शरीर के सात अवयव जिनका रंग लाल होता है। यथा—हथेली, तलवा, जीभ आँख या पलक का निचला भाग, तालू और ओठ।

सप्तराव—संज्ञा पुं० [सं०] गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

सप्तराशिक—संज्ञा पुं० [सं०] गणित की एक क्रिया जिसमें सात राशियाँ होती हैं।

सप्तरुचि—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो सात रोचि या किरणों से युक्त हो। २ अग्नि का एक नाम।

सप्रज्ञ—वि०—[सं०] प्रज्ञा या बुद्धिवाला [को०]।

सप्रणय—वि० [सं०] प्रणययुक्त। स्नेहयुक्त। स्नेही। मिलता-पूर्ण [को०]।

सप्रतिभ—वि० [सं०] दूरदर्शी। प्रतिभावान्। विवेकी।

सप्रतिभय—वि० [सं०] जिसका कोई अनुमान न हो। सहसा आ पड़नेवाला। खतरनाक [को०]।

सप्रतीवाय—वि० [सं०] मिश्रणयुक्त [को०]।

सप्रतीश—वि० [सं०] आदरणीय। सभ्रात [को०]।

सप्रत्यय—वि० [सं०] १ विश्वास रखनेवाला। विश्वासयुक्त। २ निश्चित। विश्वस्त [को०]।

सप्रपंच—वि० [सं० सप्रपञ्च] अनेक प्रकार के इधर उधर के प्रपंचों से युक्त।

सप्रभ—वि० [सं०] १ चमकदार। कांतियुक्त। २ समान कांति या आभावाला [को०]।

सप्रमाण—वि० [सं०] १ प्रमाण सहित। सबूत के साथ। २ प्रामाणिक। ठीक।

सप्रमाद—वि० [सं०] अनवधानता युक्त। असावधान।

सप्रयास—क्रि० वि० [सं० स+प्रयास] चेष्टापूर्वक। कोशिश के साथ। उ०—प्राकृतिक दान वे, सप्रयास या अनायास आते हैं सब, सब में है श्रेष्ठ, धन्य मानव।—अनामिका, पृ० २३।

सप्रवाद—वि० [सं०] प्रवादयुक्त। जिसका प्रवाद हो।

सप्रश्रय—वि० [सं०] सविनय। अत्यंत आदरपूर्वक। अत्यंत विनय के साथ [को०]।

सप्रसव—वि० [सं०] एक ही मूल से संबद्ध [को०]।

सप्रसवा—वि० [सं०] १ गर्भवाली। सगर्भा। गर्भिणी। २ जिसे बच्चे हों। सवत्सा [को०]।

सप्लाई—संज्ञा स्त्री० [अं०] (व्यवहार या उपयोग के लिये कोई वस्तु) उपस्थित करना। पहुँचाना। मुहैया करना। जैसे,—ये ७ नं० घुड़सवार पलटन के घोड़ों के लिये घास दाना सप्लाई किया करते हैं।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

२ प्राप्ति। पहुँच। पूर्ति। रसद। दानापानी।

यौ०—सप्लाई अफसर=पूर्ति विभाग का अधिकारी। सप्लाई आफिस, सप्लाई डिपार्टमेंट, सप्लाई विभाग=पूर्ति या सप्लाई करने का महकमा। पूर्ति कार्यालय।

सप्लायर—संज्ञा पुं० [अं०] वह जो किसी को चीजें पहुँचाने का काम करता है। कोई वस्तु या माल पहुँचाने या मुहैया करनेवाला।

सप्लीमेंट—संज्ञा पुं० [अं०] १ वह पत्र जो किसी समाचारपत्र में अधिक विषय देने के लिये अतिरिक्त रूप से लगाया जाय। अतिरिक्त पत्र। क्रोड़ पत्र। २ किसी वस्तु का अतिरिक्त अंश।

सफ¹—संज्ञा पुं० [सं० शफ] दे० 'शफ'।

सफ²—संज्ञा स्त्री० [अ० सफ] १ पंक्ति। कतार।

क्रि० प्र०—बाँधना।

२ लंबी चटाई। सीतल पाटी। ३ बिछावन। फर्श। विस्तर। ४ रेखा। लकीर। ५ नमाज पढ़नेवालों की कतार (को०)।

यौ०—सफदर=युद्ध में सैन्यपंक्ति को विदीर्ण करनेवाला। रणशूर। योद्धा। सफबंदी=कतार में करना। पंक्तिबद्ध करना। सफबस्ता=पंक्तिबद्ध। सफशिकन=कतार तोड़नेवाला। पंक्ति को छिन्नभिन्न करनेवाला। वीर।

सफगोल—संज्ञा पुं० [हिं० इसबगोल] दे० 'इसबगोल'।

सफतालू—संज्ञा पुं० [सं० सप्तालु, फा० शफ्तालू] एक पेड़ जिसके गोल फल खाए जाते हैं। सतालू। आड़ू।

विशेष—यह हिंदुस्तान में ठंढी जगहों में होता है। पेड़ मझोले आकार का और लकड़ी लाल मजबूत और सुगंधित होती है। पत्ते लंबे नोकदार तथा कालापन लिए गहरे हरे रंग के होते हैं। पतझड़ के पीछे पत्तियाँ निकलने के पहले ही इसमें फूल लग जाते हैं जो गुलाबी रंग के होते हैं। फल पकने पर कुछ लाल और कुछ हरे रंग के होते हैं और उनके ऊपर महीन महीन रोइयाँ सी होती हैं। बीजों में बादाम की तरह का कड़ा छिलका होता है।

सफन ¹—वि० [हिं० स+अ० फन] गुण या हुनरवाला। होशियार। उ०—हाल हजूर बातून बासीन है सफन सर्बग है यार मेरा।—संत दरिया, पृ० ७२।

सफन²—संज्ञा पुं० [अ० सफन] १ मछली या मगर का खुरदरा चमड़ा। २ बसूला।

सफर—संज्ञा पुं० [अ० सफर] १ प्रस्थान। यात्रा। रास्ते में चलना। २ हिजरी सन् का दूसरा मास (को०)। ३ रास्ते में चलने का समय या दशा। जैसे,—सफर में बहुत सामान नहीं रखना चाहिए।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

यौ०—सफरखर्च=मार्ग व्यय। सफर जल=दे० 'बिही'। सफरनामा=यात्रा विवरण। भ्रमण वृत्तांत।

सफर²—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की छोटी चमकीली मछली। सफरी [को०]।

सफरदाई—संज्ञा पुं० [हिं० सपरदाई] दे० 'सपरदाई'।

सफरमैना—संज्ञा [अं० सैपर माइनर] सेना के वे सिपाही जो सुरंग लगाने तथा खाई आदि खोदने को आगे चलते हैं।

सफरा—संज्ञा पुं० [अ० सफरा] पित्त।

सफरी¹—संज्ञा पुं० [अ० सफरी] सफर में का। सफर में काम आनेवाला। यात्रा के समय का। जैसे,—सफरी बिस्तर।

सफरी²—संज्ञा पुं० १ राह खर्च। रास्ते का सामान। २ यात्री। पर्यटक (को०)। ३ अमरूद। उ०—श्रीफल मधुर चिरौंजी आनी। सफरी चिरुआ अरु नय वानी।—सूर (शब्द०)।

सफरी¹—संज्ञा स्त्री० [सं० शफरी] एक प्रकार की मछली। सौरी मछली।

सफरोन—संज्ञा पुं० [अ० कैम्फर आयल] कपूर के लाल तेल से तैयार होनेवाली एक दवा या मसाला।

सफल—वि० [सं०] [स्त्री० सफला] १ जिसमे फल लगा हो। फल से जिसका कुछ परिणाम हो। जो व्यर्थ न जाय। सार्थक। युक्त। २. जैसे,—तुम्हारा परिश्रम सफल हो गया। ३ पूरा होना। जैसे,—मनोरथ सफल होना। ४ कृतकार्य। कामयाब। जिसका प्रयोजन सिद्ध हुआ हो।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

५ अडकोश युक्त। जो वधिया न हो।

सफलक वि० [सं०] जिसके पास फलक या ढाल हो।

सफलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सफल होने का भाव। कामयाबी। सिद्धि। २ पूर्णता। ३ सार्थक होना। सार्थकता।

सफला संज्ञा स्त्री० [सं०] पौष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी जो विशेष रूप से व्रत का दिन है।

सफलित—वि० [सं० सफल] सार्थक। सफलीभूत।

सफलीकरण—संज्ञा पु० [सं०] १ सफल करना। २ सिद्ध करना। पूर्ण क°

सफलीभूत—वि० [सं०] जो सफल हुआ हो। जो सिद्ध या पूरा हुआ हो।

सफलोदय—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

सफलोदर्क—वि० [सं०] जिसमे सफलता की झलक दिखाई दे [को०]।

सफहा—संज्ञा पु० [अ० सफहह्] १ रुख। तल। सतह। २ वरक। पृष्ठ। पन्ना।

सफा—वि० [अ० सफा] १ साफ। स्वच्छ। निर्मल। २. पाक। पवित्र। उ०—कोई सफा न देखा दिल का।—काष्ठजिह्वा (शब्द०)। ३ जो खुरदुरा न हो। चिकना। बराबर।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

सफा—संज्ञा स्त्री० १ स्वच्छता। निर्मलता। २ चमक दमक [को०]।

सफाइन—संज्ञा पुं० [अ० सफाइन, सफीना (=नौका) का बहुवचन] नौकाएँ [को०]।

सफाई—संज्ञा स्त्री० [अ० सफा+ई(प्रत्य०)] १. सफा होने का भाव। स्वच्छता। निर्मलता। २ मैल, कूडा, करकट आदि हटाने की क्रिया। जैसे,—मकान की सफाई। ३ अर्थ या अभिप्राय प्रकट होने का गुण। ४ स्पष्टता। चित्त से दुर्भाव आदि का निकलना। मन मे मैल न रहना। जैसे,—सामने बातचीत कर लो, दिलो की सफाई हो जाय। ५ कपट या कुटिलता का अभाव। दुराव का न होना। जैसे,—आज उन्होने बडी सफाई से बात की। ६ दोषारोप का हटना। इलजाम का दूर होना। निर्दोषिता। जैसे,—उसने अपनी सफाई के लिये बहुत कुछ कहा। ७ ऋण का परिशोध। कर्ज या हिसाब का चुकता होना। बेबाकी। ८ मामले का निबटारा। निर्णय। ९ खात्मा। समाप्ति (को०)। १० ऊबडखाबड न रहना। खुरदुरापन का अभाव (को०)। ११ बरबादी। विनाश। तबाही। १२ चिकनापन। स्निग्धता (को०)।

मुहा०—सफाई कर देना = (१) साफ, बेबाक या स्वच्छ कर देना। (२) समाप्त या खत्म कर देना। (३) बरबाद कर देना। सफाई देना = निर्दोषिता प्रमाणित करना। कसूरवार न होने का सबूत देना।

सफाचट—वि० [हिं० सफा+चट] १ एकदम स्वच्छ। बिलकुल साफ। २ जिसपर कुछ जमा या लगा न रह गया हो। जो बिल्कुल चिकना हो। जैसे,—मैदान सफाचट होना। ३ जो जमा या लगा न रहने दिया जाय। जो निकाल, उखाड या दूर कर दिया जाय। जैसे,—बाल सफाचट होना। ४ जरा सा भी शेष न रहने देना (भोजन आदि)।

सफाया—संज्ञा पु० [हिं०] १ खत्म होने की स्थिति। समाप्ति। २ विनाश।

क्रि० प्र०—करना। होना।

सफाहत—संज्ञा स्त्री० [अ० सफाहत] कमीनापन। नीचता [को०]।

सफो—वि० [अ० सफो] १ साफ। स्वच्छ। धवल। २ पवित्रात्मा। शुद्ध भावना से युक्त। ३ मित्र। सखा। दोस्त [को०]।

सफोना संज्ञा पु० [अ० सफीनह्, अ० सब पेना] १. वही। किताब। नोटबुक। २ अदालती परवाना। इत्तलानामा। समन। ३. छोटी कश्ती। नाव। नौका (को०)।

सफीर¹—संज्ञा स्त्री० [अ० सफीर] १ चिडियो की आवाज। २ वह सीटी जो पक्षियो को बुलाने के लिये दी जाती है। ३ सीटी।

सफीर²—संज्ञा पुं० एलची। राजदूत।

सफील¹—संज्ञा स्त्री० [अ० फसील] पक्की चहारदीवारी। शहर-पनाह। परकोटा।

सफील² —संज्ञा स्त्री० [अ० सफील] दे० 'सफीर'।

सफूफ—संज्ञा पु० [अ० सफूफ] चूर्ण। बुकनी। फकी।

सफेद—वि० [फा० सुफेद, मि० सं० श्वेत] १ जो चूने के रग का हो। जिसपर कोई रग न हो। धौला। श्वेत। चिट्टा। जैसे,—सफेद घोडा। २ जिसपर कुछ लिखा या चिह्न न हो। कोरा। सादा। जैसे,—सफेद कागज।

यौ०—सफेद दाग = श्वेतकुष्ठ। सफेदरेश = बूढा, जिसकी दाढी पक गई हो।

मुहा०—किसी का रग सफेद पड जाना = विवर्णता होना। भय आदि से चेहरे का फीका पड जाना। स्याह सफेद = भला बुरा। इष्ट अनिष्ट। जैसे,—स्याह सफेद सब उसी के हाथ है।

सफेदधावी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सफेद+धावी] एक प्रकार का बडा पेड। चकडी।

विशेष—यह वृक्ष हिमालय पर पाया जाता है। इसकी लकडी की कंघियाँ बनाई जाती हैं। इसके फूलो मे सुगध होती है। इसके पत्ते खाद के काम मे आते है।

सफेदपलका—संज्ञा पुं० [फा० सुफ़ेद+हिं० पलक] वह कबूतर जिसके पर कुछ सफेद और कुछ काले हों।

सफेदपोश—संज्ञा पुं० [फा० सुफ़ेदपोश] १ साफ कपड़े पहननेवाला। २ शिक्षित और कुलीन। भलामानस। शिष्ट। ३ अमीर न होते हुए भी भले व्यक्ति की तरह रहनेवाला। ४ वह जो केवल सफेद कपड़े पहन कर शिष्टता का प्रदर्शन करता हो और जो वस्तुतः शिक्षित और भला आदमी न हो।

सफेदा—संज्ञा पुं० [फा० सुफ़ेदा] १ जस्ते का चूर्ण या भस्म जो दवा तथा लोहे, लकड़ी आदि पर रँगाई के काम में आता है। २ सफेद चमड़ा जो जूते आदि बनाने के काम में आता है। ३ आम का एक भेद जो लखनऊ के आसपास होता है। ४ खरबूजे का एक भेद। ५ पंजाब और काश्मीर में होनेवाला एक बहुत ऊँचा पेड़।

विशेष—यह वृक्ष खंभे की तरह एकदम सीधा ऊपर जानेवाला पेड़ है जिसकी छाल का रंग सफेद होता है। इसकी लकड़ी सजावट के सामान बनाने के काम में आती है।

सफेदार—संज्ञा पुं० [देश०] सीसम का पेड़।

सफेदी—संज्ञा स्त्री० [फा० सुफ़ेदी] १ सफेद होने का भाव। श्वेतता। धवलता।

मुहा०—सफेदी आना = बाल सफेद होना। बुढ़ापा आना।

२ दीवार आदि पर सफेद रंग या चूने की पोताई। चूनाकारी।

क्रि० प्र०—करना।—फेरना।

३ सूर्य निकलने के पहले का उज्ज्वल प्रकाश जो पूर्व दिशा में दिखाई पड़ता है।

मुहा०—(सुबह की) सफेदी फैलना = प्रभात होना। सूर्य का प्रकाश विकीर्ण होना।

सफेन—वि० [सं०] झागदार। फेनयुक्त। फेनिल।

सफेनपुंज—संज्ञा पुं० [सं० सफेनपुञ्ज] वह जो घने फेन से भरा हुआ या आच्छादित हो। जैसे, समुद्र [को०]।

सफ्क—संज्ञा पुं० [अ० सफ़्क] हिंसन। रक्तपात। हिंसा [को०]।

सफ्तालू—संज्ञा पुं० [हिं० सफतालू] दे० 'सफतालू'।

सफ्फाक—वि० [अ० सफ़्फ़ाक] १ निष्ठुर। बेरहम। २ हिंसक। ३ अत्याचारी [को०]।

सफ्फाकी—संज्ञा स्त्री० [अ० सफ़्फ़ाकी] १ निष्ठुरता। क्रूरता। बेरहमी। २ अत्याचार। जुल्म। ३ हिंसा। रक्तपात [को०]।

सबंध—वि० [सं० सबन्ध] जिसके लिये बंध या प्रतिभू, जमानत आदि दी गई हो [को०]।

सबंधक—वि० [सं० सबन्धक] दे० 'सबंध'।

सबंधु[1]—वि० [सं० सबन्धु] १ मित्रयुक्त। समित्र। २ एक ही कुल या वंश का। ३ सन्निकट संबंधी। नजदीकी रिश्तेदार [को०]।

सबंधु[2]—संज्ञा पुं० नातेदार। रिश्तेदार। संबंधी [को०]।

सब[1]—वि० [सं० सर्व, प्रा० सव्व] १ जितने हों, वे कुल। समस्त। जैसे,—(क) इतना सुनते ही सब लोग वहाँ से चल गए। (ख) सब किताबें आलमारी में रख दो।

मुहा०—सब मिलाकर = जितना हो, उतना सब। कुल। २ पूरा। सारा। समस्त।

सब—वि० [अ०] छोटा। गौण। अप्रधान।

विशेष—इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग प्रायः यौगिक शब्दों के आरंभ में होता है। जैसे,—सबइंसपेक्टर, सबजज, सबओवरसियर, सब आफिस।

सबक—संज्ञा पुं० [फा० सबक] १ उतना अंश जितना एक बार में पढ़ाया जाय। पाठ।

क्रि० प्र०—देना।—पढ़ना।—पढ़ाना।—लेना।

२ शिक्षा। नसीहत। ३ अनुभव। तजुर्बा।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।—लेना।

सबकत—संज्ञा स्त्री० [अ० सबकत] किसी विषय में औरों की अपेक्षा आगे बढ़ जाना। विशेषता प्राप्त करना।

क्रि० प्र०—करना।—ले जाना।

सबच्छी(पु)—वि० [सं० सवत्सा] बछड़ेवाली। बछड़े से युक्त। बछड़े के साथ। उ०—दीधो सोनो सोलहो, दीधी सुरह सबच्छी गाई।—बी० रासो, पृ० २५।

सबछ(पु)—वि० [सं० सवत्स, सवच्छ] बछड़ेवाली। बछड़ासहित। उ०—द्वै लख धेनु सबछ बहु दूधी। प्रथम प्रसूता सुंदर सूधी।—नंद० ग्रं०, पृ० २३४।

सबज—वि० [फा० सब्ज़] दे० 'सब्ज'।

सबजज—संज्ञा पुं० [अ०] छोटा जज। सदराला। सिविल जज।

सबडिवीजन—संज्ञा पुं० [अ० सबडिवीजन] किसी जिले का वह छोटा भूभाग जिसके अंतर्गत बहुत से गाँव और कसबे हों। परगना। जैसे, चाँदपुर सब डिवीजन।

विशेष—कई सब डिवीजनों का एक जिला होता है अर्थात् हर जिला कई सब डिवीजनों में बँटा हुआ होता है।

सबडिवीजनल—वि० [अ० सबडिवीजनल] सबडिवीजन का। उस भूभाग का जिसके अंतर्गत बहुत से गाँव और कसबे हों। सबडिवीजन संबंधी। जैसे,—सबडिवीजनल अफसर।

सबद(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० शब्द] १ शब्द। आवाज। उ०—हुता जो सुन्नम सुन्न, नाँव ठाँव ना सुर सबद। तहा पाप नहिं पुन्न, महमद आपुहि आपु महँ।—जायसी (शब्द०)। २ [स्त्री० सबदी] किसी महात्मा की वाणी या भजन आदि। जैसे,—कबीरजी के सबद, दादूदयाल के सबद।

सबनमी(पु)—वि० [फा० शबनम] जो शबनम की तरह एकदम श्वेत और महीन हो। उ०—धवल अटारी लखि खरी नवल वधू हरि दग। सादी सारी सबनमी लसत गुलाबी रंग।—स० सप्तक, पृ० २३४।

सबब—संज्ञा पुं० [अ०] १ कारण। वजह। मूल कारण। हेतु। जैसे,—उनके नाराज होने का तो मुझे कोई सबब नहीं मालूम। २. द्वार। साधन। जैसे,—बिना किसी सबब के वहाँ पहुँचना कठिन है। ३ दलील। तर्क।

सबमरीन—संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार की नाव जो जल के अंदर चलती है और युद्ध के समय शत्रु के जहाजों को नष्ट करने के काम मे आती है। गोताखोर जहाज। पनडुब्बी।

विशेष—यह घंटों जल के अंदर रह सकती है और ऊपर से दिखाई नहीं देती। हवा, पानी लेने के लिये इसे ऊपर आना पड़ता है। यह 'टारपीडो' नामक भयंकर अस्त्र साथ लिए रहती है और घात लगते ही शत्रु के जहाज पर टारपीडो चलाती है। यदि टारपीडो ठिकाने पर लगा तो जहाज में बड़ा सा छेद हो जाता है।

सबर(पु)[1]—वि० [सं० सबल] ताकतवर। बली। सबल।

सबर[2]—संज्ञा पुं० [अ० सब्र] दे० 'सब्र'।

सबरा(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सब] सब। कुल। तमाम।

सबरी[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शबरी] दे० 'शबरी'।

सबरी[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० शफरी = (कुदाल,)] सेंध मारने मे चोरों द्वारा प्रयुक्त लगभग हाथ भर लंबा एक औजार।

सबल[1]—वि० [सं०] १ जिसमे बहुत बल हो। बलवान्। बलशाली। ताकतवर। जैसे,—जो सबल होगा वह निर्बलों पर शासन करेगा। २ जिसके साथ सेना हो। फौजवाला।

सबल[2]—संज्ञा पुं० वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम [को०]।

सबल[3]—संज्ञा पुं० [अ०] १ अन्न की बाल। अनाज की बाल। २ एक नेत्र रोग। मोतियाबिंद [को०]।

सबलि[1]—वि० [सं०] १ जिसपर राजकर लगता हो। २ बलिकर्म से संबद्ध [को०]।

सबलि[2]—संज्ञा पुं० (बलि चढाने के लिये उपयुक्त) संध्या वेला। गोधूलि [को०]।

सबसिडियरी जेल—संज्ञा स्त्री० [अं०] हवालात।

सबा—संज्ञा स्त्री० [अ०] वह हवा जो प्रभात और प्रात काल के समय पूर्व की ओर से चलती है। उ०—बराबरी का तेरी गुल ने जब खयाल किया। सबा ने मार थपेड़ा मुँह उसका लाल किया। —कविता कौ०, भा० ४, पृ० ६७।

यौ०—सबाखराम, सबादम = वह घोड़ा जो बहुत तेज भागता हो।

सबात—संज्ञा स्त्री० [अ०] स्थायी या दृढ होने का भाव। स्थायित्व। दृढता [को०]।

सबाध—वि० [सं०] कष्ट पहुँचानेवाला। हानिकारक। पीडक [को०]।

सबार[1]—संज्ञा पुं० [हिं० सबेरा] दे० 'सबेरा'।

सबार[2]—क्रि० वि० जल्दी। शीघ्र। उ०—होइ अगीम्य कर तहँ फेरा। जाहि सबार मरन कै बेरा।—जायसी (शब्द०)।

सबारै—संज्ञा पुं०, क्रि० वि० [हिं० सबेर] दे० 'सबार'।

सबार्डिनेट जज—संज्ञा पुं० [अं०] दीवानी अदालत का वह हाकिम जो जज के नीचे हो। छोटा जज। सदराला। सिविल जज।

सबाष्प—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सबाष्पा] १ जिसकी आँखो मे आँसू हों। २. जिसमे से भाप निकल रही हो [को०]।

सबाष्पक—वि० [सं०] १ अश्रुयुक्त (नेत्र)। २. जिसमे से भाप निकल रही हो [को०]।

सबिंदु[1]—वि० [सं० सबिन्दु] बुँदकीदार। बिंदुसहित। बिंदु से युक्त [को०]।

सबिंदु[2]—संज्ञा पुं० एक पर्वत का नाम [को०]।

सबी (पु)—संज्ञा स्त्री० [अ० शबीह] चित्र। तसवीर। उ०—लिखन बैठि जाकी सबी गहि गहि गरब गरूर। भए न केते जगत के चतुर चितेरे कूर।—बिहारी र०, दो० ३४७।

सबीज—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सबीजा] १ बीजाक्षर से युक्त। उ०—लोग बियोग विषम विष दागे। मंत्र सबीज सुनत जनु जागे।—मानस, २।१८४। २ जिसमे बीआ हो। जैसे, सबीज फल (को०)। ३ कीटाणुयुक्त (को०)।

सबील—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ रास्ता। मार्ग। सड़क। २ उपाय। तरकीब। यत्न। जैसे,—वहाँ पहुँचने की कोई सबील निकालनी चाहिए। ३ वह स्थान जहाँपर पथिकों आदि को धर्मार्थ जल या शरबत पिलाया जाता है। पौसरा।

क्रि० प्र०—पिलाना।—रखना।—लगाना।

सबीह[1]—वि० [अ०] १ खूब गोरा। अत्यंत गौर वर्ण का।

सबीह[2]—संज्ञा पुं० [अ० शबीह] दे० 'शबीह'।

सबीह(पु)[3] वि० [सं० सभी, प्रा० सबीह] भययुक्त। भयालु। भयान्वित।

सबू—संज्ञा पुं० [फा० सुबू] मिट्टी का घड़ा। मटका। गगरी।

यौ०—सबूसाज = कुंभकार। कुम्हार।

सबूत—संज्ञा पुं० [अ० सुबूत] दे० 'सुबूत'।

सबूर—वि० [अ०] माफ करनेवाला। क्षमाशील। २ धैर्ययुक्त। धीरज या सब्र करनेवाला [को०]।

सबूरा—संज्ञा पुं० [अ० सब्र] काठ या चमड़े आदि का बना हुआ एक प्रकार का लंबा लिंगाकार खंड जिससे विधवा या पतिहीना स्त्रियाँ अपनी कामवासना तृप्त करती है। काष्ठ या चर्मनिर्मित लिंग। (मुसल० स्त्रि०)।

सबूस—संज्ञा स्त्री० [फा०] भूसी। तुष। चोकर [को०]।

सबूह, सबूही—संज्ञा स्त्री० [फा०] सबेरे पी जानेवाली मदिरा। तड़के पी जानेवाली शराब [को०]।

सबेरा—संज्ञा पुं० [सं० सु + हिं० बेर] सुंदर समय। प्रातकाल। सूर्योदय का समय।

सब्ज[1]—वि० [फा० सब्ज] १ कच्चा और ताजा (फल, फूल आदि)।

मुहा०—सब्ज बाग दिखलाना = अपना काम निकालने या फँसाने के लिये बड़ी बड़ी आशाएँ दिलाना।

२ हरा। हरित। (रंग)। ३ शुभ। उत्तम। जैसे,—सब्जवख्त = भाग्यशाली।

यौ०—सब्जपरी = (१) इंदर सभा की नायिका। (२) ताजापन या मस्ती देनेवाली, मदिरा। शराब (लाक्ष०)। सब्जपा = दे०

'सब्जकदम'। सब्जपुल = आसमान। सब्जपोश = हरी पोशाक पहने हुए। सब्जफोडा = एक प्रकार का कबूतर। सब्जबख्त। सब्जमुखी = कबूतर की एक जाति। सब्जरग = (१) हरे रग का। (२) सलोना। साँवला। सब्जरगी = सलोनापन। सब्जवार = मुर्गी की एक जाति।

**सब्जकदम**—वि० [फा० सब्ज + अ० कदम] जिसके कही पहुँचते ही कोई अशुभ घटना हो। जिसके चरण अशुभ हो।

विशेष—इस शब्द मे 'सब्ज' का प्रयोग व्यग्य रूप से होता है।

**सब्जा**—सज्ञा पुं० [फा० सब्जह्] १ हरी घास और वनस्पति आदि। हरियाली।

क्रि० प्र०—लहलहाना।

२ भग। भाँग। विजया। ३ पन्ना नामक रत्न। ४ स्त्रियो का कान मे पहनने का एक प्रकार का गहना। ५ घोडे का एक रग जिसमे सफेदी के साथ कुछ कालापन भी मिला होता है। ६ वह घोड़ा जो इस रग का हो। ७ एक जाति का आम। ८ खरबूजे की एक जाति।

**सब्जी**—सज्ञा स्त्री० [फा० सब्ज़ी] १ हरी घास और वनस्पति आदि। हरियाली। २ हरी तरकारी। ३ खाने के लिये तैयार की हुई तरकारी। ४ भग। भाँग। विजया।

यौ०—सब्जीखोर = शाकाहारी। सब्जीफरोश = हरी तरकारी बेचनेवाला। सब्जीमडी = वह जगह जहाँ सब्जी और ताजे फल बिकते हो।

**सब्जेक्ट**—सज्ञा पुं० [अ०] १ प्रजा। रैयत। जैसे,—ब्रिटिश सब्जेक्ट। २ विषय। मजमून।

**सब्जेक्ट कमिटी**—सज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'विषय निर्वाचिनी समिति'।

**सब्त**—सज्ञा पुं० [अ०] १ शनिवार। २ लेख (को०)।

**सब्बाक**—सज्ञा पुं० [अ०] सुनार। स्वर्णकार (को०)।

**सब्र**—सज्ञा पुं० [अ०] सतोष। धैर्य।

क्रि० प्र०—आना।—करना।—रखना।

मुहा०—सब्र करना = (१) धीरज धरना। ठहरना। रुकना। (२) जल्दबाजी या उतावली न करना। सब्र देना = धैर्य बँधाना। ढाँढस देना। सब्र की सिल छाती पर रखना = सबकुछ चुपचाप सह लेना। (किसी का) सब्र पडना = किसी के धैर्यपूर्वक सहन किए हुए कष्ट का प्रतिफल होना। जैसे,—तुमने उस गरीब का मकान ले लिया, तुमपर उसका सब्र पडा है जिससे तुम्हारा लडका मर गया। सब्र कर बैठना या लेना = कोई हानि या अनिष्ट होने पर चुपचाप उसे सह लेना। सब्र समेटना = किसी का शाप लेना। ऐसा काम करना जिसमे किसी का शाप पडे।

**सब्रह्म, सब्रह्मक**—वि० [स०] १ ब्रह्मा से युक्त। ब्रह्मा के साथ। २ ब्रह्मलोक सहित (को०)।

**सब्रह्मचर्य**—सज्ञा पुं० [स०] (एक ही गुरु से) साथ साथ पढना। सहाध्ययन (को०)।

**सब्रह्मचारी**—सज्ञा पुं० [स० सब्रह्मचारिन्] १ वे ब्रह्मचारी जिन्होने एक साथ एक गुरु से एक प्रकार की शिक्षा प्राप्त की हो। २ एक समान दु ख से ग्रस्त व्यक्ति। ३ एक सदृश या एक जैसा आदमी। ४ वेदादि की एक ही शाखा का अध्ययन करनेवाले छात्र। ५ साथी। मित्र (को०)।

**सभग**—वि० [स० सभङ्ग] जिसमे टुकडे या खड हो (को०)।

यौ०—सभगश्लेष = श्लेष अलकार का एक प्रकार, जिसमे शब्द को खड करके दूसरा अर्थ निकाला जाता है। दे० 'श्लेष'।

**सभक्ष**—वि० [स०] साथ खानेवाला। सहभोजी (को०)।

**सभय**—वि० [सं०] १ भययुक्त। उ०—सचिव सभय सिख देइ न कोई।—मानस १। २ डर उत्पन्न करनेवाला। भयकारक खतरनाक (को०)।

**सभर्तृका**—सज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। सधवा। सुहागिन।

**सभस्मा**—वि० [स० सभस्मन्] जिसने भस्म लगाया हो। भस्म युक्त।

यौ०—सभास्माद्विज = शैव या पाशुपत मतावलबी।

**सभा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह स्थान जहाँ बहुत से लोग मिलकर बैठे हो। परिषद। गोष्ठी। समिति। मजलिस। जैसे,—विद्वानो की सभा मे बैठा करो। २ वह स्थान जहाँ किसी एक विषय पर विचार करने के लिये बहुत से लोग एकत्र हो। ३ वह सस्था या समूह जो किसी विषय पर विचार करने अथवा कोई काम सिद्ध करने के लिये सघटित हुआ हो। ४ सामाजिक। सभासद। ५ जूआ। द्यूत। ६ घर। मकान। ७ समूह। झुड। ८ प्राचीन वैदिक काल की एक सस्था जिसमे कुछ लोग एकत्र होकर सामाजिक और राजनीतिक विषयो पर विचार करते थे। ९ न्यायपीठ। न्यायालय (को०)। १० अतिथिशाला। धर्मशाला। पथिकालय (को०)। ११ भोजनालय (को०)।

यौ०—सभागत = जो सभा या न्यायपीठ मे उपस्थित हो। सभाचातुरी, सभा- चातुर्य = सभा समाज मे व्यवहार करने की पटुता। सभानायक = दे० 'सभापति'। सभापूजा = नाटक की प्रस्तावना मे दर्शको के प्रति समान व्यक्त करना। सभाप्रवेशन = न्यायपीठ के समक्ष जाना। सभामडन = सभागृह या सभाकक्ष को सजाना। सभामडप = सभागृह। सभा का कक्ष। सभायोग्य = समाज या गोष्ठी के उपयुक्त। सभावशकर = सभा, समाज या गोष्ठी को प्रभावित या वशीभूत करनेवाला।

**सभाकार**—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो सभा करता हो। सभा करनेवाला। २ वह जो सभाकक्ष बनाता हो। सभागृह का बनानेवाला (को०)।

**सभाग**—वि० [स०] १ हिस्सेदार। जिसका भाग या हिस्सा हो। २ सार्वजनीन। सर्वजनसुलभ। सामान्य। ३ सभा मे जानेवाला (को०)।

**सभागा**(पु)—वि० [स० स + भाग्य] [वि० स्त्री० सभागी] १ भाग्यवान्। खुशकिस्मत। तकदीरवर। उ०—ओहि छुइ पवन बिरिछ जेहि

लागा। सोइ मलयगिरि भएउ मभागा।—जायसी (शब्द०)। २ सुदर। रूपवान्। उ०—आए गुपुत होइ देखन लागी। वह मूरति कस सती सभागी।—जायसी (शब्द०)।

सभागृह—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ किसी सभा या समिति का अधिवेशन होता हो। बहुत से लोगों के एक साथ बैठने का स्थान। मजलिस की जगह।

सभाचार—संज्ञा पुं० [सं०] १ सभा, गोष्ठी या समाज का रीति-रिवाज। समाज का आचार। २ धर्मसभा की पद्धति या नियम कायदा [को०]।

सभाजन—संज्ञा पुं० [सं०] अपने मित्रो, सबधियो आदि के आने पर उनसे गले मिलना, उनका कुशल मगल पूछना और स्वागत या शिष्टाचार करना। २ सेवा (को०)। ३ विनम्रता। शिष्टता (को०)।

सभाजित—वि० [सं०] १ आदृत। समानित। प्रसन्न। तुष्ट। २. प्रशसित। जिसकी प्रशस्ति की गई हो (को०)।

सभाज्य—वि० [सं०] आदरणीय। समान करने योग्य [को०]।

सभानर—संज्ञा पुं० [सं०] १ हरिवंश के अनुसार कक्ष के एक पुत्र का नाम। २ भागवत के अनुसार अणु के एक पुत्र का नाम।

सभापति—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो सभा का प्रधान या नेता बनकर उसका कार्य चलाता हो। सभा का मुखिया। मीर मजलिस। २. वह जो जुए का अड्डा चलाता हो। द्यूतगृह का सचालक [को०]।

सभापरिषद—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बहुत से लोगों का एकत्र होकर साहित्य या राजनीति आदि से सबध रखनेवाले किसी विषय पर विचार करना। २ वह स्थान जहाँ इस प्रकार के कार्य के लिये लोग एकत्र होते हैं। सभागृह। सभाभवन।

सभापर्व—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के एक पर्व का नाम।

सभापाल—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सार्वजनिक भवन अथवा सभाभवन का रक्षक हो [को०]।

सभारता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ भारयुक्तता। २ अधिकता। आधिक्य। पूर्णता। ३ अभ्युदय। वृद्धि [को०]।

सभार्य, सभार्यक—वि० [सं०] भार्या के साथ। भार्यानुगत। सपत्नीक।

सभावन—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

सभावी—संज्ञा पुं० [सं० सभाविन्] वह जो द्यूतगृह का प्रधान हो। जूएखाने का मालिक।

सभासद—संज्ञा पुं० [सं० सभासद्] १ वह जो किसी सभा मे समिलित हो और उसमे उपस्थित होनेवाले विषयो पर समति देने का अधिकार रखता हो। सदस्य। सामाजिक। पार्षद। २ वह जो किसी सभा या जलसे का सहायक हो (को०)। ३ दे० 'असेसर' (को०)।

सभासाह—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसने वादविवाद या शास्त्रार्थ मे विजय प्राप्त की हो [को०]।

सभास्तार—संज्ञा पुं० [सं०] सभासद्। सदस्य।

सभिक, सभीक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो लोगो को जूआ खेलाता हो। जूएखाने का मालिक।

सभीत(पु)—वि० [सं० सभीति] दे० 'सभीति'। उ०—सचिव सभीत सकै नहि पूछी।—मानस, २।३२।

सभीति—वि० [सं०] भयग्रस्त। डरवाला। भययुक्त।

सभेय—संज्ञा पुं० [सं०] सभा का सदस्य। सभासद। सभ्य।

सभोचित—संज्ञा पुं० [सं०] पडित। विद्वान्।

सभ्य[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ जो किसी सभा मे समिलित हो और उसके विचारणीय विषयो पर अपनी समति दे सकता हो। सभासद। सदस्य। वह जिसका व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन श्रेष्ठ हो। वह जिसका आचार व्यवहार और रहन सहन उत्तम हो। कुलीन व्यक्ति। वह जिसमे तहजीब हो। भला आदमी। ३. न्यायाधीश को सलाह देनेवाला जनप्रतिनिधि। दे० 'असेसर'। ४ द्यूतगृह का सचालक। ५. द्यूतगृह के सचालक का सेवक (को०)। ६ पाँच पवित्र अग्नियो मे से एक (को०)।

सभ्य[2]—वि० १ सभा से सबध रखनेवाला। २ सभा समाज के योग्य। ३ सस्कृत। परिष्कृत। शिष्ट। ४ सुशील। विनम्र। ५ विश्वस्त। ईमानदार (को०)।

सभ्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सभ्य होने का भाव। सदस्यता। २ व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन की वह अवस्था जिसमे लोगो का आचार व्यवहार बहुत सुधरकर अच्छा हो चुका हो। सुशिक्षित और सज्जन होने की अवस्था। ३ भलमनसाहत। शराफत। जैसे,—जरा सभ्यता का व्यवहार करना सीखो। ४ किसी भी काल या युग का सामाजिक जीवन या व्यवहार। सस्कृति। (अ० कल्चर)। जैसे—मोहनजोदडो सभ्यता, द्रविड सभ्यता।

सभ्येतर—वि० [सं०] सभ्य से इतर या भिन्न। जो सभ्य न हो। असभ्य। गँवार। जगली [को०]।

सभ्यत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सभ्यता' [को०]।

समक[1]—वि० [सं० समङ्क] एक समान प्रतीक या चिह्नो को धारण करनेवाला। समान चिह्नवाला [को०]।

समक[2]—संज्ञा पुं० १ हुक या अकुश। २ पीडा। कचट। दर्द। (लश०)। ३ खेती को नष्ट करनेवाला पशु [को०]।

समग[1]—वि० [सं० समङ्ग] जिसके सभी अग या अवयव पूर्ण हो। सर्वागयुक्त।

समग[2]—संज्ञा पुं० एक प्रकार की क्रीडा [को०]।

समंगल—वि० [सं० समङ्गल] मगलयुक्त। शुभ। मगलमय [को०]।

समगा—संज्ञा स्त्री० [सं० समङ्गा] १ मजीठ। २ लाजवती। लजाधुर। ३ वाराहक्राता। गेंठी। ४ बाला।

समगिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० समङ्गिनी] बौद्धो की, बोधिवृक्ष की एक देवी।

**समचन**—संज्ञा पुं० [सं० समञ्चन] १ आकर्षण। झुकाना। नवाना। २ आकुंचन [को०]।

**समजन**[1]—वि० [सं० समञ्जन] एक साथ मिलनेवाला। संयुक्त करनेवाला [को०]।

**समजन**[2]—संज्ञा पुं० लेपन। विलेपन। अभ्यंजन [को०]।

**समंजस**[1]—वि० [सं० समञ्जस] १ उचित। ठीक। वाजिब। २ जिसे किसी बात का अभ्यास हो। अभ्यस्त। ३ सही। सच। यथार्थ (को०)। ४ स्पष्ट। बोधगम्य (को०)। ५ स्वस्थ (को०)। ६ अच्छा। नेक (को०)।

**समंजस**[2]—संज्ञा पुं० १ पात्रता। औचित्य। योग्यता। २ यथार्थता। ३ सत्यकथन। सचाई। सत्यता। ४ समानता। ५ उपयुक्त या ठीक प्रमाण [को०]।

**समंठ**—संज्ञा पुं० [सं० समण्ठ] वे फल जिनकी तरकारी बनती हो। तरकारी के काम आनेवाले फल। जैसे,—पपीता, ककड़ी आदि। २ गड़ीर। पोय (को०)।

**समंत**[1]—संज्ञा पुं० [सं० समन्त] सीमा। प्रांत। किनारा। सिरा।

**समंत**[2]—वि० १ समस्त। सब। कुल। २ हर दिशा में मौजूद। विश्वव्यापी (को०)।

**समंतकुसुम**—संज्ञा पुं० [सं० समन्तकुसुम] ललितविस्तर के अनुसार एक देवपुत्र का नाम।

**समंतगंध**—संज्ञा पुं० [सं० समन्तगन्ध] बौद्धों के अनुसार एक देवपुत्र का नाम।

**समंतदर्शी**[1]—वि० [सं० समन्तदर्शिन्] जिसे सब कुछ दिखाई देता हो। सर्वदर्शी।

**समंतदर्शी**[2]—संज्ञा पुं० गौतम बुद्ध का एक नाम।

**समंतदुग्धा**—संज्ञा स्त्री० [सं० समन्तदुग्धा] स्नुही। थूहर।

**समंतनेत्र**—संज्ञा पुं० [सं० समन्तनेत्र] एक बोधिसत्व का नाम।

**समंतपंचक**—संज्ञा पुं० [सं० समन्तपञ्चक] कुरुक्षेत्र का एक नाम।

विशेष—कहते हैं कि एक बार परशुराम ने समस्त क्षत्रियों को मारकर उनके लहू से यहाँ पाँच तालाब बनाए थे। और उन्हीं में उन्होंने लहू से अपने पिता का तर्पण किया था। तभी से इस स्थान का नाम समंतपंचक पड़ा।

**समंतपर्यायी**—वि० [सं० समन्तपर्यायी] सबका अंतर्भाव करनेवाला। सबको अपने में समेटनेवाला [को०]।

**समंतप्रभ**—संज्ञा पुं० [सं० समन्तप्रभ] एक बोधिसत्व का नाम।

**समंतप्रभास**—संज्ञा पुं० [सं० समन्तप्रभास] गौतम बुद्ध का एक नाम।

**समंतप्रसादिक**—संज्ञा पुं० [सं० समन्तप्रसादिक] एक बोधिसत्व का नाम।

**समंतप्रासादिक**—वि० [सं० समन्तप्रासादिक] जो सर्वत्र सहायता करने में समर्थ या सक्षम हो [को०]।

**समंतभद्र**—संज्ञा पुं० [सं० समन्तभद्र] गौतम बुद्ध का एक नाम।

**समंतभद्रक**—संज्ञा पुं० [सं० समन्तभद्रक] एक प्रकार का लवा कवल [को०]।

**समंतभुज**—संज्ञा पुं० [सं० समन्तभुज्] अग्नि।

**समंतर**—संज्ञा पुं० [सं० समन्तर] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश का नाम। २ उस देश का निवासी।

**समंतरश्मि**—संज्ञा पुं० [सं० समन्तरश्मि] एक बोधिसत्व का नाम।

**समंतालोक**—संज्ञा पुं० [सं० समन्तालोक] ध्यान करने का एक प्रकार।

**समंतावलोकित**—संज्ञा पुं० [सं० समन्तावलोकित] एक बोधिसत्व का नाम।

**समंत्र**—वि० [सं० समन्त्र] मन्त्रयुक्त। मंत्रों से युक्त। [को०]।

**समंत्रक**—वि० [सं०] १ दे० 'समंत्र'। २ इंद्रजाल का ज्ञाता [को०]।

**समंत्रिक**—वि० [सं० समन्त्रिक] सचिव अमात्यादि से युक्त [को०]।

**समंद**—संज्ञा पुं० [फा०] १ वह बादामी रंग का घोड़ा जिसकी अयाल, दुम और पुट्ठे काले हों। उ०—नील समंद चाल जग जाने। हाँसल भौंर गियाह बखाने।—जायसी (शब्द०)। २ घोड़ा। अश्व।

**समंदर**—संज्ञा पुं० [फा०] १ एक कीड़ा जिसकी उत्पत्ति अग्नि से मानी जाती। २ समुद्र [को०]।

**सम्** अव्य० [सं०] दे० 'सं'।

**सम**[1]—वि० [सं०] १ समान। तुल्य। बराबर। २ सब। कुल। समस्त। पूरा। तमाम। ३ जिसका तल ऊबड़ खाबड़ न हो। चौरस। ४ (संख्या) जिसे दो से भाग देने पर शेष कुछ न बचे। जूस। ५ एक ही। वही। अभिन्न (को०)। ६ निष्पक्ष। तटस्थ। उदासीन। ७ ईमानदार। खरा (को०)। ८ भला। सद्गुणसंपन्न (को०)। ९ सामान्य। मामूली (को०)। १० उपयुक्त। यथार्थ। ठीक (को०)। ११ मध्यवर्ती। बीच का। १२ सीधा (को०)। १३ जो न बहुत अच्छा और न बहुत बुरा हो। मध्यम श्रेणी का (को०)।

यौ०—समचक्रवाल = वृत्त। समचतुरस्र, समचतुर्भुज, समचतुष्कोण = जिसके चारों कोण समान हों। समतीर्थक = जिसमें ऊपर तक जल भरा हो। लबालब पानी भरा हुआ। समतुला = समान मूल्य। समतुलित = जिसका भार समान हो। समतोलन = संतुलन। तराजू के दोनों पलड़े बराबर रखना। समान तौलना। समभाग। समभूमि।

**सम**[2]—संज्ञा पुं० १ वह राशि जो सम संख्या पर पड़े। दूसरी, चौथी, छठी आदि राशियाँ। वृष, कर्कट, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन ये छह् राशियाँ।

यौ०—समक्षेत्र = नक्षत्रों की एक विशेष स्थिति।

२ गणित में वह सीधी रेखा जो उस अंक के ऊपर दी जाती है जिसका वर्गमूल निकालना होता है। ३ संगीत में वह स्थान जहाँ गाने बजानेवालों का सिर या हाथ आपसे आप हिल जाता है।

विशेष—यह स्थान ताल के अनुसार निश्चित होता है। जैसे, तिताले में दूसरे ताल पर और चौताल में पहले ताल पर सम होता है। वाद्यों का आरंभ और गीतों तथा वाद्यों का अंत

इसी सम पर होता है। परंतु गाने बजाने के बीच बीच में भी सम बराबर आता रहता है।

४ साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें योग्य वस्तुओं के संयोग या संबंध का, कारण के साथ कार्य की सारूप्यता का, तथा अनिष्टबाधा के बिना ही प्रयत्नसिद्धि का वर्णन होता है। यह विषमालंकार का बिलकुल उलटा है। उ०—(क) जस दूलह तस बनी बराता। कौतुक विविध होहिं मग जाता। (ख) चिरजीवो जोरी जुरै क्यों न सनेह गँभीर। को कहिए वृषभानुजा वे हलधर के वीर। ५ समतल भूमि। चौरस मैदान (को०)। ६ याम्योत्तर रेखा अर्थात् दिकचक्र, आकाशवृत्त को विभाजित करनेवाली रेखा का मध्य बिंदु (को०)। ७ समान वृत्ति। समभाव। समचित्तता (को०)। ८ तुल्यता। सादृश्य। समानता (को०)। ९ तृणाग्नि (को०)। १० धर्म के एक पुत्र का नाम (को०)। ११ धृतराष्ट्र का एक पुत्र (को०)। ११ उत्तम स्थिति। अच्छी दशा (को०)।

**सम³**—संज्ञा पुं० [अ०] विष। जहर। सम्म। उ०—सम खायँगे पर तेरी कसम हम न खायँगे।

**सम(पु)⁴**—संज्ञा पुं० [सं० शम] दे० 'शम'। उ०—तापस सम दम दया निधाना। परम रय पथ परम सुजाना।—मानस, १। ४४।

**समकक्ष**—वि० [सं०] बराबरी का। समान। तुल्य। जैसे,—दर्शन शास्त्र में वे तुम्हारे समकक्ष हैं।

**समकक्षा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बराबरी। तुल्यता (को०)।

**समकन्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह कन्या जो विवाह के योग्य हो गई हो। व्याहने लायक लड़की।

**समकर**—वि० [सं०] १ मकर आदि समुद्री जंतुओं से युक्त। २ उचित रूप में महसूल लगानेवाला (को०)।

**समकर्ण**—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव का एक नाम। २ गौतम बुद्ध का एक नाम। ३ ज्यामिति में किसी चतुर्भुज के आमने सामनेवाले कोणों के ऊपर की रेखाएँ।

**समकर्मा**—वि० [सं० समकर्मन्] समान पेशेवाला।

**समकाल**—संज्ञा पुं० [सं०] एक ही काल या समय। समान क्षण (को०)।

**समकालीन**—वि० [सं०] जो (दो या कई) एक ही समय में हों। एक ही समय में होनेवाले। जैसे,—तुलसीदासजी जहाँगीर के समकालीन थे।

**समकृत**—संज्ञा पुं० [सं०] कफ। श्लेष्मा।

**समकोटिक**—वि० [सं०] सुडौल। (रत्न) समान पहल या कोणवाला (हीरा) (को०)।

**समकोण**—वि० [सं०] (त्रिभुज या चतुर्भुज) जिसके आमने सामने के दो कोण समान हों।

**समकोल**—संज्ञा पुं० [सं०] साँप।

**समकोश**—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश का नाम।

**समक्न**—वि० [सं०] १ जानेवाला। गता। २ एक साथ जानेवाला। एक काल में गमन करनेवाला। ३. नम्र। झुका हुआ (को०)।

**समक्रम**—वि० [सं०] जिसका पादविक्षेप समान दूरी पर पड़े। चलने में जिसके कदम समान दूरी पर पड़े (को०)।

**समक्रिय**—वि० [सं०] समान क्रियाएँ या कार्य करनेवाला (को०)।

**समक्वाथ**—संज्ञा पुं० [सं०] वह क्वाथ या काढ़ा जिसका पानी आदि जलकर आठवाँ भाग रह जाय।

**समक्ष¹**—अव्य० [सं०] आँखों के सामने। सामने। जैसे,—अब वह कभी आपके समक्ष न आवेगा।

**समक्ष²**—वि० जो आँखों के सामने हो रहा है। प्रत्यक्ष (को०)।

**समक्षता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दृश्यता। प्रत्यक्षता। गोचरता (को०)।

**समखात**—संज्ञा पुं० [सं०] घन के रूप में की गई खुदाई। वह खुदाई जिसकी लंबाई, चौड़ाई और गहराई समान हो (को०)।

**समगंधक**—संज्ञा पुं० [सं० समगन्धक] नकली धूप।

**समक्षदर्शन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ आँखों देखा प्रमाण या सबूत। २ आँखों देखना। प्रत्यक्ष दर्शन (को०)।

**समगंधिक**—संज्ञा पुं० [सं० समगन्धिक] १ वह जिसमें समान गंध हो। २ उशीर। खस।

**समगा**—संज्ञा पुं० [अ० समग] गोंद (को०)।

**समगति**—संज्ञा पुं० [सं०] वायु। हवा (को०)।

**समग्ग(पु)**—वि० [सं० समग्र] दे० 'समग्र'।

**समग्र**—वि० [सं०] १ समस्त। कुल। पूरा। सब। जैसे,—उसे समग्र लघुकौमुदी कंठ है। २ जिसके पास सब कुछ हो। सर्वसंपन्न (को०)।

यौ०—समग्रभक्षणशील=जो सब कुछ भक्षण करे या खा जाय। समग्रशक्ति=सभी शक्तियों से युक्त। समग्रसंपन्=जो सभी प्रकार के सुख या संपत्तियों से युक्त हो।

**समग्रणी**—वि० [सं०] लोगों में अग्रणी, श्रेष्ठ (को०)।

**समग्रेंदु**—संज्ञा पुं० [सं० समग्रेन्दु] चंद्रमा का पूर्ण मंडल। पूर्णचंद्र (को०)।

**समचतुर्भुज**—संज्ञा पुं० [सं०] वह चतुर्भुज जिसके चारो भुज समान हों।

**समचर**—वि० [सं०] समान आचरण करनेवाला। एक सा व्यवहार करनेवाला। उ०—नाम निठुर समचर सिखी सलिल सनेह न दूर। ससि सरोग दिनकर बड़े पयद प्रेमपथ क्रूर।—तुलसी (शब्द०)।

**समचार(पु)**—संज्ञा पुं० [सं० समाचार ?] दे० 'समाचार', खबर। उ०—(क) नाहर नरिंद जे दूत आइ। समचार सबै कहि ते सुनाइ।—पृ० रा०, ७।५५। (ख) सखी कहूँ मैं पठए चारा। आजि कालिह ऐहैं समचारा।—नंद० ग्रं०, पृ० १३४।

**समचित्त**—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसके चित्त की अवस्था सब जगह समान रहती हो। वह जिसका चित्त कहीं दुःखी या क्षुब्ध न होता हो। वह जो उदासीन या तटस्थ रहे। समचेता। २ वह जो धैर्ययुक्त हो। धैर्यशाली (को०)। ३ वह जिनको प्रज्ञा एक ही विषय पर केंद्रित हो (को०)।

**समचेता**—संज्ञा पुं० [सं० समचेतस्] वह जिसके चित्त की वृत्ति सब जगह समान रहती हो। दे० 'समचित्त'।

**समच्छेद, समच्छेदन**—वि० [सं०] वह भिन्न जिनके हर या हल समान हों (को०)।

**समज**—संज्ञा पुं० [सं०] १ वन। जंगल। २ पशुओं का झुंड। ३ मूर्खों का झुंड। मूर्खमंडल (को०)। ४ इंद्र (को०)।

**समजाति, समजातीय**—वि० [सं०] जो समान जाति का हो। समान वर्ग का (को०)।

**समज्ञा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कीर्ति। यश।

**समज्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सभा। गोष्ठी। वह स्थान जहाँ लोग मिलें जुलें। २ ख्याति। प्रसिद्धि। मशहूरियत (को०)।

**समझ**—संज्ञा स्त्री० [सं० संज्ञान] १ समझने की शक्ति। बुद्धि। अक्ल। जैसे, तुम्हारी समझ की बलिहारी।

मुहा०—समझ पर पत्थर पड़ना=बुद्धि नष्ट होना। अक्ल का मारा जाना। जैसे,—उसकी समझ पर तो पत्थर पड़ गए है, वह हिताहितज्ञानशून्य हो गया है।

२ खयाल। जैसे,—(क) मेरी समझ मे उसने ऐसा कोई काम नही किया कि जिसके लिये उसकी निंदा की जाय। (ख) मेरी समझ मे उन्होने तुमको जो उत्तर दिया, वह बहुत ठीक था।

**समझदार**—वि० [हिं० समझ+फा० दार] बुद्धिमान। अक्लमंद।

**समझना**—क्रि० अ० [सं० सम्यक् ज्ञान] १ किसी बात को अच्छी तरह जान लेना। अच्छी तरह मन मे बैठाना। भली भाँति हृदयंगम करना। अच्छी तरह ध्यान मे लाना। ज्ञान प्राप्त करना। बोध होना। बूझना। जैसे,—मैने जो कुछ कहा, वह तुम समझ गए होगे। २ ख्याल मे आना। ध्यान मे आना। विचार मे आना। जैसे,—(क) मैं समझता हूँ कि अब तुम्हारी समझ में यह बात आ गई होगी। (ख) तुम समझे न हो तो फिर समझ लो।

संयो० क्रि०—जाना।—पड़ना।—रखना।—लेना।

मुहा०—समझ बूझकर=अच्छी तरह जानकर। ज्ञानपूर्वक। जैसे,—तुमने बहुत समझ बूझकर यह काम किया है। समझ रखना=अच्छी तरह जान रखना। भली भाँति हृदयंगम करना। जैसे,—तुम समझ रखो कि अपने किए का फल तुम्हें अवश्य भोगना पड़ेगा। समझ लेना=(१) बदला लेना। प्रतिशोध लेना। जैसे,—कल तुम चौक मे आना, तुमसे समझ लेंगे। (२) समझौता करना। निपटारा। जैसे,—आप रुपए दे दीजिए, हम दोनो आपस मे समझ लेगे।

**समझाना**—क्रि० स० [हिं० समझना का सक०] कोई बात अच्छी तरह किसी के मन मे बैठाना। हृदयंगम कराना। ज्ञान प्राप्त कराना। ध्यान मे जमाना। बोध कराना।

यौ०—समझाना बुझाना।

**समझाव, समझावा**—संज्ञा [हिं० √समझ+आव (प्रत्य०)] राजीनामा। समझौता।

यौ०—समझाव बुझाव=समझाना बुझाना।

**समझौता**—संज्ञा पुं० [हिं० समझाना] आपस का वह निपटारा जिसमे दोनो पक्षों को कुछ न कुछ दबना या स्वार्थत्याग करना पड़े। राजीनामा।

क्रि० प्र०—करना।—कराना।—होना।

**समतट**—संज्ञा पुं० [सं०] १ समुद्र के एक ही किनारे पर के देश। २ एक प्राचीन प्रदेश का नाम जो आधुनिक बंगाल के पूर्व मे था।

**समतल**—वि० [सं०] जिसका तल सम हो, ऊबड़ खाबड़ न हो। जिसकी सतह बराबर हो। हमवार। जैसे,—इस पहाड़ के ऊपर बहुत दूर तक समतल भूमि चली गई है।

**समता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सम या समान होने का भाव। बराबरी। तुल्यता। जैसे,—इस तरह के कामों मे कोई आपकी समता नही कर सकता। २ तटस्थता। निष्पक्षता। औदासीन्य (को०)। ३ उदारता। औदार्य (को०)। ४ अभिन्नता। एकता। ऐक्य (को०)। ५ धीरता। धैर्यशलिता। धीरत्व (को०)। ६ पूर्णत्व। पूर्णता (को०)। ७ साधारण होने का भाव। साधारण्य (को०)।

**समताई**Ⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० समता+हिं० ई (प्रत्य०)] दे० 'समता'।

**समतिक्रम**—संज्ञा पुं० [सं०] अतिक्रमण। उपेक्षण। उल्लंघन (को०)।

**समतिक्रांत¹**—वि० [सं० समतिक्रान्त] १ उल्लंघित। उपेक्षित। २ जो बीत गया हो। व्यतीत। बीता या गुजरा हुआ। ३ जिसने अपना वचन या वादा पूरा किया हो। जिसने प्रतिज्ञा के अनुसार चलकर उसे पूर्ण किया हो (को०)।

**समतिक्रांत²**—संज्ञा पुं० १ लंघन। अतिक्रमण। २ त्रुटि। दोष (को०)।

**समतीत**—वि० [सं०] बीता हुआ। अतीत। गत। व्यतीत (को०)।

**समतूल**Ⓟ—वि० [सं० सम+तुल्य] समान। सदृश। तुल्य। उ०—एहि विधि उपजै लच्छि जब सुंदरता सुखमूल। तदपि समीत सकोच कवि कहहिं सीय समतूल।—मानस, १।२४७।

**समत्रय**—संज्ञा पुं० [सं०] हर्रे, नागरमोथा और गुड़ इन तीनो के समान भागो का समूह।

**समत्रिभुज**—संज्ञा पुं० [सं०] वह त्रिभुज जिसके तीनों भुज समान हों।

**समत्थ**Ⓟ—वि० [सं० समर्थ, प्रा० समत्थ] दे० 'समर्थ'। उ०—दूत रामराय को सपूत पूत वाय को, समत्थ हाथ पाय को सहाय असहाय को।—तुलसी ग्रं०, पृ० २४४।

**समत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] सम या समान होने का भाव। समता। तुल्यता। बराबरी।

**समत्विट्**—वि० [सं० समत्विष्] चारो ओर जिसका प्रकाश एक सा हो। समान रूप से दीप्तिमान् (को०)।

**समथ, समत्थ**Ⓟ—[सं० समर्थ, प्रा० समत्थ] उ०—जहँ जहँ राजन काज हुअ तहँ तहँ होइ समत्थ।—पृ० रा०, ५।१०२।

**समदंत**—वि० [सं० समदन्त] जिसके दाँत समान या एक से हो (को०)।

**समद**—वि० [सं०] १ गर्व से उन्नत। २ नशे मे मत्त या मतवाला। ३ प्रसन्न। हर्षित। ४ प्रेमोन्मत्त। प्रेम के नशे मे चूर (को०)।

**समदन¹**—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध। लड़ाई।

समदन(पु)[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० समादान] भेंट। उपहार। नजर। उ०—आपन देस खा, सब औ चँदेरी लेहु। समुद जो समदन कीन्ह तोहि ते पायी नग देहु।—जायसी (शब्द०)।

समदना (पु)[१]—क्रि० अ० [सं० समादान] प्रेमपूर्वक मिलना। भेंटना। उ०—समदि लोग पुनि चढ़ी विवाना। जेहि दिन डरी सो आइ तुलाना।—जायसी (शब्द०)।

समदना (पु)[२]—क्रि० स० १ भेंट करना। उपहार देना। नजर करना। २ विवाह करना। उ०—दुहिता समदौ सुख पाय अवै।—केशव (शब्द०)। ३ आदर सत्कार करना। उ०—सब विधि सबहि समदि नरनाहू। रहा हृदय भरि पूरि उछाहू।—मानस, १।३५४।

समदर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो सब मनुष्यों, स्थानों और पदार्थों को समान दृष्टि से देखता हो। सबको एक सा देखनेवाला। समदर्शी। २ समान रूप या आकृति का। एक रूप (को०)।

समदर्शी—संज्ञा पुं० [सं० समदर्शिन्] वह जो सब मनुष्यों, स्थानों और पदार्थों आदि को समान दृष्टि से देखता हो। जो देखने में किसी प्रकार का भेदभाव न रखता हो। सब को एक सा देखनेवाला।

समदाना(पु)—क्रि० स० [हिं० समाधान] १. सौंपना। रखना। जिम्मे करना। २ समाधान करना।

समदुःख—वि० [सं०] १ दूसरे के दुःख कष्ट को स्वयं अनुभूत करनेवाला। समवेदना प्रकट करनेवाला। २ समदुःखभाक्। सम दुःखी। सहभोगी (को०)।

यौ०—समदुःखसुख = (१) दुःख और सुख का साथी। (२) जिसमें दुःख और सुख समान रूप से हों।

समदृश्—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समदर्शी'।

समदृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह दृष्टि जो सब अवस्थाओं में और सब पदार्थों को देखने के समय समान रहे। समदर्शी की दृष्टि। २ दे० 'समदर्शी'।

समदेश—संज्ञा पुं० [सं०] चौरस मैदान। समतल क्षेत्र (को०)।

समद्युति—वि० [सं०] समान कांतिवाला (को०)।

समद्वादशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह क्षेत्र आदि जिसके बारह समान भुज हों। बारह बराबर भुजाओं वाला क्षेत्र।

समद्विद्विभुज—संज्ञा पुं० [सं०] वह चतुर्भुज जिसका प्रत्येक भुज अपने सामनेवाले भुज के समान हो। वह चतुर्भुज जिसके आमने सामने के भुज बराबर हों।

समद्विभुज—वि० [सं०] वह क्षेत्र जिसकी दोनों भुजाएँ बराबर हों।

समधर्मा—वि० [सं० समधर्मन्] समान धर्म, प्रकृति या स्वभाव का (को०)।

समधिक—वि० [सं०] अधिक। अतिशय। ज्यादा। बहुत।

समधिगत—वि० [सं०] पास पहुँचा हुआ। निकट आया हुआ। प्राप्त (को०)।

समधिगम—संज्ञा पुं० [सं०] पूरी तरह समझना या अनुभव करना (को०)।

समधिगमन—संज्ञा पुं० [सं०] आगे बढ़ जाना पार कर लेना। जीत जाना (को०)।

समधियान†—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'समधियाना'।

समधियाना—संज्ञा पुं० [हिं० समधी + इयाना (प्रत्य०)] वह घर जहाँ अपनी कन्या या पुत्र का विवाह हुआ हो। समधी का घर।

समधी—संज्ञा पुं० [सं० सम्बन्धी] [स्त्री० समधिन] पुत्र या पुत्री का ससुर। वह जिसकी कन्या से अपने पुत्र का अथवा जिसके पुत्र से अपनी पुत्री का विवाह हुआ हो। उ० सकल भाँति सम साज समाजू। सम समधी देखे हम आजू।—मानस, १।३२०।

समधीत—वि० [सं०] अच्छी तरह पढ़ा हुआ। जिसने सम्यक् रूप से अध्ययन किया हो। खूब पढ़ा हुआ (को०)।

समधुर—वि० [सं०] मिठास से युक्त। मिष्ट। मीठा (को०)।

समधुरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] द्राक्षा। अंगूर (को०)।

समधौरा†—संज्ञा पुं० [हिं० समधी + औरा (प्रत्य०)] विवाह की एक रीति जिसमें दोनों समधी परस्पर मिलते हैं।

समध्वग—वि० [सं०] सहयात्री। जो एक साथ यात्रा करे (को०)।

समनंतर—वि० [सं० समनन्तर] ठीक बगलवाला। बिलकुल सटा हुआ। बराबरी का।

समन(पु)[१]—संज्ञा पुं० [सं० शमन] १ दे० 'शमन'। २ यम। उ०—मातु मृत्यु पितु समन समाना।—मानस, ३।२।

समन[२]—वि० दे० 'शमन'। उ०—(क) समन अमित उतपात सब भरत चरित जप जाग।—मानस, १।४१। (ख) समन पाप संताप सोक के।—मानस, १।३२।

समन[३]—संज्ञा स्त्री० [फा०] चमेली का पुष्प (को०)।

यौ०—समनअदाम, समनपैकर = चमेली के फूल की तरह सुकुमार शरीरवाला। समनइजार, समनखद = चमेली के फूल जैसे कपोलवाला। समनजार = चमेली का बाग। समनबू = चमेली की गंधवाला। समनरू = चमेली के फूल जैसा कांतिमान। समनसाक = वह सुंदरी जिसकी पिंडलियाँ चमेली जैसी सफेद हों।

समन[४]—संज्ञा पुं० [अ०] कीमत। दाम। मूल्य (को०)।

समन[५]—संज्ञा पुं० [अं० समन्स] न्यायालय द्वारा प्रतिवादी या गवाहों को इजलास के समक्ष नियत तिथि पर उपस्थित रहने के लिये भेजी गई लिखित सूचना या बुलावा। दे० 'सम्मन'। जैसे,—समन बगरज इनफिसाल मुकदमा।

समनगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बिजली। विद्युत्। २ सूर्य की किरण।

समनीक—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध। लड़ाई।

यौ०—समनीक मूर्धा = युद्ध का अग्रिम मोर्चा।

समनुकीर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] अत्यंत प्रशस्ति करना। खूब प्रशंसा करना [को०]।

समनुज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ इजाजत। अनुमति। २ पूर्ण सहमति या स्वीकृति [को०]।

समनुज्ञात—वि० [सं०] १ जो (जाने के लिये) आज्ञप्त हो। आज्ञा-प्राप्त। २ अधिकार प्राप्त। ३ अनुगृहीत। पूरी तरह सहमत। पूर्णत स्वीकृत।

समनुज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समनुज्ञा'।

समनुवर्ती—वि० [सं० समनुवर्तिन्] [वि० स्त्री० समनुवर्तिनी] आज्ञाकारी। अनुगत [को०]।

समनुव्रत—वि० [सं०] पूरी तरह अनुगत। पूर्णत आज्ञापालन करनेवाला [को०]।

समन्मथ—वि० [सं०] कामयुक्त। कामपीडित [को०]।

समन्यु —संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

समन्यु[2]—वि० १ क्रोध से भरा हुआ। कोपयुक्त। २ दुखपूर्ण। वेदनामय [को०]।

समन्वय—संज्ञा पुं० [सं०] १ नियमित परंपरा या क्रमबद्धता। २ मिलन। मिलाप। संयोग। संसर्ग। संश्लेष। ३ कार्य कारण का प्रवाह या निर्वाह होना। ४ विरोध का अभाव। विरोध का न होना।

समन्वयन—संज्ञा पुं० [सं०] समन्वय करने की क्रिया या भाव। मेल बैठाना। क्रमबद्ध रूप मे करना।

समन्वित—वि० [सं०] १ मिला हुआ। संयुक्त। २ जिसमे कोई रुकावट न हो। ३ अनुगत (को०)। ४ सहित। युक्त। भरा हुआ (को०)। ५ प्रभावित। ग्रस्त (को०)।

समपद—संज्ञा पुं० [सं०] १ धनुष चलानेवालो का एक प्रकार का खडे होने का ढंग जिसमे वे अपने दोनो पैर बराबर रखते हैं। २ कामशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का रतिबंध या आसन।

समपाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ दे० 'समपद'। २ नृत्य मे पादन्यास की एक गति (को०)। ३ वह छंद या कविता जिसके चारो चरण समान या बराबर हो।

समप्पन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० समर्पण, प्रा० समप्पण] दे० 'समर्पण'।

समप्रभ —वि० [सं०] समान प्रभावाला। तुल्य कांतिवाला [को०]।

समबुद्धि—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसकी बुद्धि सुख और दुख, हानि और लाभ सबमे समान रहती हो। २ वह जो निष्पक्ष या तटस्थ हो (को०)।

समभाग[1]—संज्ञा पुं० [सं०] समान भाग। बराबर हिस्सा।

समभाग[2]—वि० समान भाग या अंश पानेवाला। बराबर के हिस्से का हकदार [को०]।

समभाव[1]—संज्ञा पुं० [सं०] तुल्यता। समता। समत्व।

समभाव[2]—वि० समान प्रकृति या भाववाला [को०]।

समभिद्रुत—वि० [सं०] १ ग्रस्त। बाधित। २ झपटनेवाला। किसी की ओर वेग से टूट पडनेवाला [को०]।

समभिधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] नाम। आख्या।

समभिप्लुत—वि० [सं०] १ जलप्लावित। २ उपसृष्ट। ग्रस्त। अभिभूत। आक्रांत। ३ किसी वस्तु मे सना या लिपटा हुआ (को०)।

समभिव्याहार—संज्ञा पुं० [सं०] १ साथ साथ उल्लेख या वर्णन करना। २ सामीप्य। साथ। संगति। सहयोग। ३ ऐसे शब्द का सामीप्य, सन्निधि या संगति जिसके द्वारा किसी शब्द का अर्थ निर्धारित या सुस्पष्ट हो सके [को०]।

समभिसरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ पाने की चेष्टा या यत्न करना। प्राप्तिकाम होना। २ किसी ओर बढना। पहुँचना [को०]।

समभिहार—संज्ञा पुं० [सं०] १ साथ करना। एकत्रीकरण। एक साथ ग्रहण। २ बार बार होने का भाव। आवृत्ति। ३ अधिकता। ज्यादती। बहुतायत।

समभूमि—संज्ञा पुं० [सं०] समतल भूमि। चौरस या हमवार जमीन [को०]।

समभ्यर्चन—संज्ञा पुं० [सं०] पूजन। समादरण [को०]।

समभ्याश—संज्ञा पुं० [सं०] सान्निध्य। सामीप्य। नैकट्य [को०]।

समभ्यास—संज्ञा पुं० [सं०] नियमित रूप से करना। अभ्यसन [को०]।

समभ्याहार—संज्ञा पुं० [सं०] १ समीप करना। निकट लाना। २ सामीप्य। निकटता।

सममंडल—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष मे प्रधान लंब रेखा [को०]।

सममति—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'समबुद्धि'।

सममय—वि० [सं०] समान मूल का। जिसका एक ही मूल हो।

सममात्र—वि० [सं०] १ समान परिमाण या नाप का। २ समान मात्राओ का। सममात्रिक [को०]।

सममिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] समान परिमाण।

समय—संज्ञा पुं० [सं०] १ वक्त। काल। जैसे,—समय परिवर्तनशील है।

मुहा० —समय पर = ठीक वक्त पर।

२ अवसर। मौका। उ०—का बरषा सब कृषी सुखाने। समय चूकें पुनि का पछिताने।—मानस १।२६१। ३ अवकाश। फुरसत। जैसे,—तुम्हें इस काम के लिये थोडा समय निकालना चाहिए।

क्रि० प्र० —निकालना।

४ अंतिम काल। जैसे,—उनका समय आ गया था, उन्हे बचाने का सब प्रयत्न व्यर्थ गया। ५ शपथ। प्रतिज्ञा। ६ आचार। ७ सिद्धांत। ८ संविद। ९ निर्देश। १० भाषा। ११ संकेत। १२ व्यवहार। १३ संपद। १४ कर्तव्य पालन। १५ व्याख्यान। प्रचार। घोषणा। १६ उपदेश। १७ दुख का अवसान। १८ नियम। १९ धर्म। २० सन्यासियो, वैदिको, व्यापारियो आदि के संघो मे प्रचलित नियम। (स्मृति)।

समराख्य — संज्ञा पुं० [सं०] संगीत में एक प्रकार का ताल (को०)।

समरागम — संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध आरंभ होना (को०)।

समराना†—क्रि० स० [हिं० सँवारना] । सजाना । सँवारना । पहनाना ।

समराजिर — संज्ञा पुं० [सं०] समरांगण । युद्धभूमि (को०)।

समरु ⓟ—संज्ञा पुं० [सं० स्मर] कामदेव । उ०—मकराकृति गोपाल कै सोहत कुंडल कान । धरयौ मनो हियधर समरु ड्योढ़ी लसत निसान ।—बिहारी र०, दो १०३ ।

समरोचित --वि० [सं०] युद्ध में प्रयुक्त करने लायक । युद्धोपयुक्त (को०)।

समरोद्देश—संज्ञा पुं० [सं०] लड़ाई का मैदान । युद्ध क्षेत्र ।

समरोद्यत — वि० [सं०] युद्ध के लिये उद्यत या प्रस्तुत (को०)।

समर्घ—वि० [सं०] कम दाम का । सस्ता । महर्घ या महँगा का उलटा ।

समर्चक—वि० [सं०] उपासना करनेवाला । अर्चना करनेवाला । भक्त । पूजक (को०)।

समर्चन — संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० समर्चना] अच्छी तरह अर्चन या पूजन करना ।

समर्चना — संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'समर्चन' ।

समर्ण—वि० [सं०] १ कष्टग्रस्त । पीडित । २ प्रार्थित । याचित (को०)।

समर्थ¹—वि० [सं०] १ जिसमें कोई काम करने का सामर्थ्य हो । कोई काम करने की योग्यता या ताकत रखनेवाला । उपयुक्त । योग्य । जैसे,—आप सब कुछ करने में समर्थ हैं । २ लंबा चौड़ा । प्रगल्भ । ३ जो अभिलषित हो । अभीष्ट । ४ युक्ति के अनुकूल । ठीक । ५ बलवान् । शक्त (को०)। ६ योग्य या उपयुक्त बनाया हुआ (को०)। ७ समान प्रयोजनवाला । समानार्थी (को०)। ८ सार्थक (को०)। ९ अत्यंत बलशाली (को०)। १० पास पास विद्यमान (को०)। ११ अर्थतः या अर्थ द्वारा संबद्ध (को०)।

समर्थ²—संज्ञा पुं० १ हित । भलाई । २ व्याकरण में सार्थक शब्द (को०)। ३ सार्थक वाक्य में मिलाकर रखे हुए शब्दों की समष्टि (को०)। ४ योग्यता (को०)। ५ बोधगम्यता (को०)।

समर्थक¹—वि० [सं०] जो समर्थन करता हो । समर्थन करनेवाला । २ सक्षम । योग्य (को०)।

समर्थक²—संज्ञा पुं० चंदन की लकड़ी ।

समर्थता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ समर्थ होने का भाव या धर्म । सामर्थ्य । शक्ति । ताकत । २ अर्थ आदि की समानता ।

समर्थत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समर्थता' (को०)।

समर्थन—संज्ञा पुं० [सं०] १ यह निश्चय करना कि अमुक बात उचित है या अनुचित । वाजिब और गैरवाजिब का फैसला करना । २ यह कहना कि अमुक बात ठीक है । किसी विषय में सहमत होना । किसी के मत का पोषण करना । जैसे,—मैं आपके इस कथन का समर्थन करता हूँ । ३ विवेचन । मीमांसा । ४. निषेध । वर्जन । मनाही । ५ संभावना । ६ उत्साह । ७ सामर्थ्य । शक्ति । ताकत । ८ विवाद की समाप्ति या अंत करना । ९ स्वीकृति (को०)। १० स्थापना (को०)। ११ उपस्थापन (को०)। १२ किसी हानि या अपराध की क्षतिपूर्ति करना (को०)।

समर्थना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी के काम के लिये प्रयत्न करना जो असंभव हो । असाध्य काम के लिये प्रयत्न । २ दे० 'समर्थन' । ३ अनुरोध । याचना (को०)।

समर्थनीय—वि० [सं०] १ समर्थन करने के योग्य । जिसका समर्थन किया जा सके । २ जो निश्चित या प्रमाणित करने योग्य हो (को०)।

समर्थित—वि० [सं०] १ जिसका समर्थन किया गया हो । समर्थन किया हुआ । २ जिसकी विवेचना हो चुकी हो । जिसपर अच्छी तरह विचार हो चुका हो । ३ जो निश्चित हो चुका हो । निश्चित किया हुआ । ४ प्रमाणित (को०)। ५ जो हो सकता हो । जो संभव हो । संभावित ।

समर्थ्य—वि० [सं०] जिसका समर्थन किया जा सके । समर्थन करने योग्य ।

समर्द्धक, समर्धक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वरदान देनेवाले देवता आदि । २ बढ़ाने या उन्नत या समृद्ध करनेवाला (को०)।

समर्पक—वि० [सं०] जो समर्पण करता हो । समर्पण करनेवाला ।

समर्पण—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी को कोई चीज आदरपूर्वक भेंट करना । प्रतिष्ठापूर्वक देना । जैसे,—वे यह पुस्तक किसी राजा या रईस को समर्पण करना चाहते हैं । २ दान देना । जैसे—आत्मसमर्पण करना । ३ स्थापित करना । स्थापना । ४ नाटक में पात्रों द्वारा पारस्परिक [illegible] (को०)।

समर्पना ⓟ—क्रि० स० [सं० समर्पण] देना । समर्पण करना । भेंट करना । अर्पित करना ।

समर्पयिता—वि० [सं० समर्पयितृ] भेंट करने या प्रदान करनेवाला । समर्पक (को०)।

समर्पित—वि० [सं०] १ जो समर्पण किया गया हो । समर्पण किया हुआ । २ जिसकी स्थापना की गई हो । स्थापित । ३ पूर्ण या भरा हुआ (को०)। ४ [illegible] (को०)।

समर्प्य—वि० [सं०] जो समर्पण किया जा सके । जो समर्पण करने के योग्य हो ।

समर्याद¹—वि० [सं०] १ निकट । पास । नजदीक । २ जिसकी चाल चलन अच्छी हो । अच्छे चरित्रवाला । ३ जो सीमा या मर्यादा में हो । ४ सम्मानपूर्ण । शिष्ट (को०)।

समर्याद²—संज्ञा पुं० सीमित । परिमित । २ नैकट्य । सामीप्य (को०)।

समर्याद³—अव्य० निश्चित रूप से (को०)।

समर्हण—संज्ञा पुं० [सं०] १ आदर । सम्मान । २ भेंट । उपहार (को०)।

समलंकृत—वि० [सं० समलङ्कृत] भलीभाँति अलंकृत । अच्छी तरह सज्जित । सुसज्जित (को०)।

समविषम—वि० [सं०] १ नतोन्नत। ऊबड़खाबड़। जैसे,—भूमि। २ संतुलित असंतुलित। उचित अनुचित। जैसे,—आहार-विहार।

समवीर्य—वि० [सं०] समान शक्ति का। तुल्यबल।

समवृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह छंद जिसके चारों चरण समान हों। २ वह वृत्त, घेरा या गोलाई जो समान हो।

समवृत्ति¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] मन स्थैर्य। धीरता।

समवृत्ति²—वि० समान वृत्तिवाला। धीर। स्थिर।

समवेक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] निरीक्षण।

समवेक्षित—वि० [सं०] ठीक तरह से देखा परखा हुआ। सुविचारित (को०)।

समवेत¹—वि० [सं०] १ एक में मिला या इकट्ठा किया हुआ। एकत्र। २ जमा किया हुआ। संचित। ३. किसी के साथ एक श्रेणी में आया हुआ। ४ जो किसी के साथ नित्य संबंध द्वारा संबद्ध हो। नित्य संबंध से बँधा हुआ।

समवेत²—संज्ञा पुं० १ संबंध। लगाव। ताल्लुक। २ दे० 'सभूयकारी'–२।

समव्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] वह सेना जिसमें २२५ सवार, ६७५ सिपाही तथा इतने ही घोड़े और रथ आदि के पादगोप हों।

समशंकु—संज्ञा पुं० [सं० समशङ्कु] वह समय जब कि सूर्य ठीक सिर पर आते हों। ठीक दोपहर का समय। मध्याह्न।

समशशी—संज्ञा पुं० [सं० समशशिन्] समान कोण या शृंगवाला चंद्रमा।

समशीतोष्ण—वि० [सं०] जहाँ न तो बहुत गर्मी हो और न शीत। मात दिल (को०)।

समशीतोष्ण कटिबंध—संज्ञा पुं० [सं० समशीतोष्ण कटिबन्ध] पृथ्वी के वे भाग जो उष्ण कटिबंध के उत्तर में कर्क रेखा से उत्तर वृत्त तक और दक्षिण में मकर रेखा से दक्षिण वृत्त तक पड़ते हैं।

विशेष—पृथ्वी के इन भूभागों में न तो बहुत अधिक सरदी पड़ती है और न बहुत अधिक गर्मी, दोनों प्राय समान भाव में रहती है।

समश्रुति—वि० [सं०] जिसकी श्रुति या विराम समान हो। संगीत में में समान श्रुतियुक्त (को०)।

समश्रेणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] समान श्रेणि या पंक्ति। वह पंक्ति या रेखा जो सीधी हो (को०)।

समष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] सब का समूह। कुल एक साथ। व्यष्टि का उलटा या विलोम। जैसे,—आप सब लोगों की अलग अलग बात जाने दें, समष्टि का विचार करें। २ संयुक्त अधिकार। समान अधिकार। सत्ता जो समवेत या संयुक्त हो। ३ सामूहिक होने का भाव। संपूर्णता।

समष्ठिल—संज्ञा पुं० [सं०] १ कोकुआ नाम का कँटीला पौधा जो प्राय पश्चिम में नदियों के किनारे होता है।

विशेष—वैद्यक में इसे कटु, उष्ण, रुचिर, दीपन और कफ तथा वात का नाशक माना है।

२ गडीर या गिडनी नाम का साग।

समष्ठिला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ समष्ठिल। कोकुआ। २ जमीकंद। सूरन। ३ गिडनी या गडीर नाम का साग।

समष्ठीला—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'समष्ठिला'।

समसंख्यात—वि० [सं० समसङ्ख्यात] जिसकी संख्या समान या बराबर हो।

समसंधि—संज्ञा स्त्री० [सं० समसन्धि] १ कौटिल्य के अनुसार वह संधि जिसमें संधि करनेवाला राजा या राष्ट्र अपनी पूरी शक्ति के साथ सहायता करने को तैयार हो। २ समानता के स्तर पर होनेवाली संधि या समझौता (को०)।

समसंस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] योग के अनुसार आसन का एक प्रकार (को०)।

समसन—संज्ञा पुं० [सं०] १ इकट्ठा करने का काम। जोड़ना। मिलाना संघटित करना। २ छोटा या संक्षिप्त करना। ३ व्याकरण के अनुसार समास करना। समास के रूप में ले आना (को०)।

समसमयवर्ती—वि० [सं० समसमयवर्तिन्] जो एक साथ हो। साथ साथ या युगपत् होनेवाला।

समसरि(पु)¹—संज्ञा स्त्री० [सं० समसदृश या सदृश, हिं० सरि ?] बराबरी। तुल्यता। समानता। उ०—दुहन देहु कछु दिन अरु मोकों तब करिहौ मो समसरि आई।—सूर०, १०।६६८।

समसरि(पु)²—वि० बराबर। समान। उ०—सहस सकट भरि कमल चलाए। अपनी समसरि और गोप जे तिनकों साथ पठाए।—सूर०, १०।५८३।

समसान(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्मशान] श्मसान (को०)।

समसामयिक—वि० [सं०] एक ही समय में होनेवाला। समकालिक (अं० कटेंपोररी)।

समसूत्र, समसूत्रस्थ—वि० [सं०] एक ही व्यास में अवस्थित (को०)।

समसिद्धांत—वि० [सं० समसिद्धान्त] जिसका लक्ष्य एक हो। समान सिद्धांत को लेकर चलनेवाला।

समसुप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] कल्पांत में होनेवाली विश्व की निद्रा। प्रलय (को०)।

समसेर—संज्ञा स्त्री० [फा० शमशेर] तलवार। कृपाण।

समस्त—वि० [सं०] १ सब। कुल। समग्र। जैसे,—(क) उन्हें समस्त रामायण कंठ है। (ख) इस समय समस्त देश में एक नए प्रकार की जाग्रति हो रही है। २ एक में मिलाया हुआ। संयुक्त। ३ जो समास द्वारा मिलाया गया हो। समासयुक्त। ४ जो थोड़े में किया गया हो। जो संक्षेप में हो। संक्षिप्त। ५ जो समग्र में व्याप्त हो (को०)। ६ सम्मिलित (को०)।

समस्तधाता—संज्ञा पुं० [सं० समस्तधातृ] वह जो सबका धारण-पोषण करनेवाला हो। विष्णु।

समस्थ—वि० [सं०] १ बराबर। समान। २ समतल। ३ अनुरूप। ४ जो फलने फूलने की या समृद्ध स्थिति में हो (को०)।

समस्थल—संज्ञा पुं० [सं०] समतल भूमि [को०]।

समस्थली—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा और यमुना के बीच का देश। गंगा यमुना का दोआबा। अंतर्वेद।

समस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] योग की एक विशेष मुद्रा जिसमें दोनों पैर सटा लिए जाते हैं।

समस्य—वि० [सं०] १ जो समास करने योग्य हो। छोटा या संक्षिप्त करने लायक। २ (श्लोक आदि) जिसके पद या चरण पूर्ण करने योग्य हों। पूरणीय [को०]।

समस्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ संघटन। २ मिलाने की क्रिया। मिश्रण। ३ किसी श्लोक या छंद आदि का वह अंतिम पद या टुकड़ा जो पूरा श्लोक या छंद बनाने के लिये तैयार करके दूसरों को दिया जाता है और जिसके आधार पर पूरा श्लोक या छंद बनाया जाता है।

क्रि० प्र०—देना।—पूर्ति करना।

४. कठिन अवसर या प्रसंग। कठिनाई। जैसे,—इस समय तो उनके सामने कन्या के विवाह की एक बड़ी समस्या उपस्थित है।

समस्यापूर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी समस्या के आधार पर कोई छंद या श्लोक आदि बनाना।

समह्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ख्याति। प्रसिद्धि [को०]।

समांघ्रिक—वि० [सं० समाङ्घ्रिक] अपने पैरों पर सम भाव में खड़ा रहनेवाला [को०]।

समांजन—संज्ञा पुं० [सं० समाञ्जन] सुश्रुत के अनुसार आँखों में लगाने का एक प्रकार का अंजन जो कई ओषधियों के योग से बनता है।

समांत—संज्ञा पुं० [सं० समान्त] १ प्रतिवेशी। वह जो पड़ोसी हो। २ साल का अंत या समाप्ति [को०]।

समांतक—संज्ञा पुं० [सं० समान्तक] कामदेव।

समांतर—वि० [सं० समान्तर] समानांतर। समान अंतरवाला [को०]।

समांश—संज्ञा पुं० [सं०] सम या बराबर का हिस्सा।

समांशक—वि० [सं०] बराबर का हिस्सेदार। समान भाग का हकदार [को०]।

समांशिक—वि० [सं०] दे० 'समांशक'।

समांशी—वि० [सं० समांशिन्] बराबरी का। समान अंशवाला [को०]।

समांस—वि० [सं०] १ जिसमें मांस हो। मांसयुक्त। २ पुष्ट। भरा हुआ। मांसल [को०]।

समांसमीना—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह गौ जो हर साल बछड़ा ब्याती हो [को०]।

समाँ¹—संज्ञा पुं० [सं० समय] समय। वक्त।

मुहा०—समाँ बँधना = (संगीत आदि कार्यों का) इतनी उत्तमता से होना कि सब लोग स्तब्ध हो जायँ। समाँ बाँधना = (संगीत आदि में) रंग जमाना या श्रोताओं पर प्रभाव डालना।

२ मौसिम। ऋतु। ३ बहार। आनंद। ४ चमक दमक। सजधज।

समाँ²—संज्ञा पुं० [अ०] नजारा। दृश्य [को०]।

समा¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वर्ष। साल।

समा²—संज्ञा पुं० [सं० समय] दे० 'समाँ'।

समा³—संज्ञा पुं० [अ०] अंबर। आकाश। गगन [को०]।

समाअ—संज्ञा पुं० [अ० समाअ] १ संगीत के स्वरों की तन्मयता में झूमना। २ संगीत श्रवण। गान सुनना [को०]।

समाअत—संज्ञा स्त्री० [अ० समाअत] १ श्रवण करना। सुनना। कान देना। २ सुनने की शक्ति। ३ मुकदमे की सुनवाई या विचार [को०]।

समाई¹—संज्ञा स्त्री० [हिं० समाना (= अँटना)] १ सामर्थ्य। शक्ति। बूता। समयता। २ समाने की क्रिया या भाव।

समाई²—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ सुनी हुई वार्ता। श्रुति पर आधारित बात। २. सामान्य लोगों द्वारा बोलने में सुना गया वह शब्द जिसकी व्युत्पत्ति व्याकरण के नियमों से सिद्ध न हो [को०]।

समाउ(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० समाना] १ दे० 'समाई¹'। २ निर्वाह। समाव। अटने की जगह। गुंजाइश।

समाकरण—संज्ञा पुं० [सं०] आह्वान करना। बुलाना [को०]।

समाकर्णितक—संज्ञा पुं० [सं०] वह आह्वान, संकेत या इशारा जो अपनी ओर ध्यान आकर्षित करे।

समाकर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समाकर्षण' [को०]।

समाकर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० समाकृष्ट] अपनी ओर खींचना या आकृष्ट करना [को०]।

समाकर्षिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत दूर तक फैलनेवाली गंध [को०]।

समाकर्षी—वि० [सं० समाकर्षिन्] [स्त्री० समाकर्षिणी] १ खींचनेवाला। जो अपनी ओर आकृष्ट करे। २ दूर तक सुगंध फैलानेवाला या प्रसार करनेवाला। जैसे,—समाकर्षी पुष्प या समाकर्षी गंध [को०]।

समाकर्षी¹—संज्ञा पुं० [सं०] प्रसरणशील सुगंध। दूर तक फैलनेवाली सुगंध [को०]।

समाकार—वि० [सं०] एक समान आकारवाला [को०]।

समाकुंचन—संज्ञा पुं० [सं० समाकुञ्चन] सिकोड़ना। सीमित करना।

समाकुंचित—वि० [सं० समाकुञ्चित] १ सीमित। २ समाप्त किया हुआ। जैसे,—समाकुंचित वक्तव्य या भाषण [को०]।

समाकुल—वि० [सं०] १ जिसको अक्ल ठिकाने न हो। बहुत अधिक घबराया हुआ। २ भरा हुआ। पूर्ण। आकीर्ण। भीड़भाड़ से युक्त (को०)।

समाकृष्ट—वि० [सं०] १ पास खींचा हुआ। निकट लाया हुआ। २ पूर्णत आकृष्ट। खींचा हुआ [को०]।

समाक्रमण—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुचलना। रौंदना। २ कदम रखना। डग भरना। ३ आक्रमण। धावा। हमला। चढ़ाई [को०]।

समाक्रांत—वि० [सं० समाक्रान्त] १ कुचला हुआ। रौंदा हुआ। २. जिसपर आक्रमण हुआ हो। अभिभूत। ३ पालन किया हुआ हो। आक्रांत पूरा किया हुआ [को०]।

समाक्षिक—वि० [सं०] मधु या शहद से युक्त। शहद के साथ (को०)।

समाख्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ख्याति। यश। कीर्ति। २ उपाधि। संज्ञा। नाम। ३ विश्लेषण। स्पष्टीकरण। व्याख्या (को०)।

समाख्यात—वि० [सं०] १ जो प्रसिद्ध या ख्यात हो। २ अच्छी तरह जिसका वर्णन या विवेचन किया गया हो। ३ गिने गिन लिया गया हो। ४ अभिहित। घोषित (को०)।

समाख्यान—संज्ञा पुं० [सं०] १ नाम लेना। उल्लेख करना। २ विवरण। व्याख्या। ३ आख्या। नाम (को०)।

समागत[1]—वि० [सं०] १ जिसका आगमन हुआ हो। आगत। आया हुआ। जैसे,—उन्होंने समस्त समागत सज्जनों की यथेष्ट अभ्यर्थना की। २ प्रत्यावर्तित। वापस आया हुआ (को०)। ३ जो संयुक्त स्थिति में हो (को०)। ४ मिला हुआ। सम्मिलित (को०)।

समागत[2]—संज्ञा पुं० गोष्ठी। समिति। समूह। दल (को०)।

समागता—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रहेलिका का एक भेद (को०)।

विशेष—इसमें पहेली का अर्थ शब्दों की संधि में छिपा होता है।

समागति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ संयोग। मिलन। एकत्र होना। २ पहुँचना। उपगमन। ३ समान दशा या गति (को०)।

समागम—संज्ञा पुं० [सं०] १ आगमन। आना। जैसे,—इस बार यहाँ बहुत से विद्वानों का समागम होगा। २ मिलना। मिलन। भेंट। जैसे,—इसी बहाने आज सब लोगों का समागम हो गया। ३ स्त्री के साथ संभोग करना। मैथुन। ४ (ग्रहों का) योग। ५ संघ। समूह (को०)।

यौ०—समागम क्षण = समागम काल। समागम प्रार्थना = समागम की इच्छा। समागम मनोरथ = मिलन की इच्छा।

समागमकारी—वि० [सं० समागमकारिन्] जो मिलाने या समागम कराने में सहायक हो (को०)।

समागमन—संज्ञा पुं० [सं०] १ समागम की क्रिया या भाव। मिलने की स्थिति। २ आगमन। आना। ३ संभोग। मैथुन (को०)।

समागमी—वि० [सं० समागमिन्] १ मिलने या समागम करनेवाला। २ आसन्न या उपस्थित भविष्य (को०)।

समागलित—वि० [सं०] जो गिरा हुआ हो। च्युत। पतित (को०)।

समागाढ—वि० [सं० समागाढ] प्रगाढ। सुदृढ।

समाघात—संज्ञा पुं० [सं०] १ युद्ध। लड़ाई। २ जान से मार डालना। हत्या। वध (को०)।

समाघ्राण—संज्ञा पुं० [सं०] सूँघने की क्रिया। खूब अच्छी तरह से सूँघना (को०)।

समाघ्रात—वि० [सं०] खूब सूँघा हुआ। जिसे अच्छी तरह सूँघा गया हो। अनाघ्रात का उलटा (को०)।

समाचक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १ ठीक ढंग से कहना। अच्छी तरह कहना। २ विवृत करना या विवरण उपस्थित करना (को०)।

समाचयन—संज्ञा पुं० [सं०] संग्रहण। चयन की क्रिया (को०)।

समाचरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ सम्यक् आचरण। २ पूरा करना। पूरा करना। ३ सेवन करना। व्यवहार में लाना। अमल करना।

समाचरित—वि० [सं०] जिसका अच्छी तरह व्यवहार या सेवन किया गया हो। सम्यक् रूप से आचरित (को०)।

समाचार—संज्ञा पुं० [सं०] १ संवाद। खबर। हाल। जैसे,—नया नया समाचार है। उ०—समाचार तेहि समय सुनि सीय उठी अकुलाइ।—मानस २।५७।

यौ०—समाचारपत्र। समाचार प्रसारण = रेडियो या समाचारपत्रों द्वारा खबर फैलाना। खबर प्रसारित करना। समाचार बुलेटिन = खबर की छोटी विवरणिका, सूचना या इश्तहार।

२ शिष्टाचार। अच्छा व्यवहार (को०)। ३ रीति। प्रथा (को०)। ४ गति। आगे बढ़ना (को०)। ५ आचरण। व्यवहार (को०)।

समाचारपत्र—संज्ञा पुं० [सं० समाचार + पत्र] वह पत्र जिसमें सब देशों के अनेक प्रकार के समाचार रहते हों। खबर का कागज। अखबार।

समाचीर्ण—वि० [सं०] १ जिसे पूरा कर लिया गया हो। २ व्यवहार में लाया हुआ (को०)।

समाचेष्टित[1]—वि० [सं०] १ जिसके लिये प्रयत्न किया जा चुका हो। २ जो व्यवहार में लाया गया हो (को०)।

समाचेष्टित[2]—संज्ञा पुं० १ व्यवहार। आचरण। चरित्र। २ अंग-संचालन का ढंग। भंगिमा (को०)।

समाज—संज्ञा पुं० [सं०] १ समूह। संघ। गरोह। दल। २ सभा। ३ हाथी। ४ एक ही स्थान पर रहनेवाले अथवा एक ही प्रकार का व्यवसाय आदि करनेवाले वे लोग जो मिलकर अपना एक अलग समूह बनाते हैं। समुदाय। जैसे,—शिक्षित समाज, ब्राह्मण समाज। ५ वह संस्था जो बहुत से लोगों ने एक साथ मिलकर किसी विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति के लिये स्थापित की हो। सभा। जैसे,—संगीत समाज, साहित्य समाज। ६ प्राचुर्य। समुच्चय। संग्रह (को०)। ७ एक प्रकार का ग्रहयोग। ८ मिलना। एकत्र होना (को०)।

समाजत—संज्ञा स्त्री० [अ०] खुशामद। अनुनय। विनय (को०)।

समाजवाद—संज्ञा पुं० [सं० समाज + वाद] एक राजनीतिक सिद्धांत।

विशेष—यह शब्द अंग्रेजी 'सोशलिज्म' का हिंदी रूप है। इस सिद्धांत के अनुसार उत्पादन और उसके समान वितरण पर पूरे समाज का अधिकार स्वीकार किया जाता है।

समाजवादी—वि० [सं० समाज + वादिन्] समाजवाद के सिद्धांत का अनुगमन करनेवाला।

समाजशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं० समाज + शास्त्र] वह शास्त्र जो मानव समाज का उसे सामाजिक प्राणी मानकर अध्ययन-विवेचन करता है।

समाजशास्त्री—वि० [सं० समाज + शास्त्रिन्] समाजशास्त्र का पंडित।

समाज सन्निवेशन—संज्ञा पुं० [सं०] समाज या जनसमूह के बैठने के उपयुक्त स्थान।

समाजसेवक—वि० [सं० समाज + सेवक] समाज की सेवा करनेवाला।

समाजसेवा—संज्ञा स्त्री० [सं० समाज + सेवा] वह सेवा जो सामाजिक हित की दृष्टि से की जाय।

समाजसेवी—संज्ञा पुं० [सं० समाजसेविन्] दे० 'समाजसेवक'।

समाजिक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सामाजिक' [को०]।

समाजी—संज्ञा पुं० [हिं० समाज + ई(प्रत्य०)] १. वह व्यक्ति जो वेश्याओं के यहाँ तबला, सारंगी आदि बजाता है। सपरदाई। २ किसी समाज का अनुयायी (विशेषतः आर्यसमाज का)। जैसे—आर्यसमाजी। ३ वह व्यक्ति जो सामाजिक हो।

समाज्ञप्त—वि० [सं०] जिसे आदेश दिया गया हो [को०]।

समाज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ यश। कीर्ति। बड़ाई। २ आख्या। संज्ञा। नाम [को०]।

समाज्ञात—वि० [सं०] १ भली भाँति जाना हुआ। पूर्णतः ज्ञात। २ मान्य। माना हुआ।

समातत—वि० [सं०] १ जिसका सिलसिला टूटा न हो। लगातार क्रमवाला। २ जिसे फैला दिया गया हो। पूर्णतः विस्तारित। ३ आकृष्ट। खींचा या ताना हुआ। जैसे—धनुष [को०]।

समाता—संज्ञा स्त्री० [सं० समातृ] १ वह जो माता के समान हो। २ माता की विपत्नी। विमाता। सौतेली माँ।

समातीत—वि० [सं०] एक वर्ष से अधिक आयु का। जो एक वर्ष पूरा कर चुका हो [को०]।

समातृक—वि० [सं०] मातासहित। माता के साथ। मातृयुक्त [को०]।

समादत्त—वि० [सं०] प्राप्त। गृहीत। जिसे ले लिया गया हो [को०]।

समादर—संज्ञा पुं० [सं०] आदर। संमान। खातिर।

समादरणीय—वि० [सं०] समादार करने के योग्य। आदर सत्कार करने के लायक।

समादान¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ बौद्धों का सौगताह्निक नामक नित्य कर्म। २ ग्रहण किए हुए व्रतों या आचारों की उपेक्षा (जैन)। ३ पूर्णतः स्वीकार या ग्रहण (को०)। ४ उचित दान स्वीकार करना। उपयुक्त उपहार लेना (को०)। ५ निश्चय। संकल्प (को०)। ६ प्रारंभ। आरंभ (को०)।

समादान²—संज्ञा पुं० [फा० शमादान] दे० 'शमादान'।

समादापक—वि० [सं०] उत्तेजक। विक्षोभक [को०]।

समादापन—संज्ञा पुं० [सं०] उकसावा। बढ़ावा। उत्तेजन [को०]।

समादिष्ट—वि० [सं०] आदिष्ट। आज्ञप्त। निर्दिष्ट [को०]।

समादृत—वि० [सं०] जिसका अच्छी तरह आदर हुआ हो। संमानित।

समादेय—वि० [सं०] १ आदर या प्रतिष्ठा करने योग्य। २ स्वागत या अभ्यर्थना करने योग्य। ३ ग्रहण या स्वीकरण योग्य [को०]।

समादेश—संज्ञा पुं० [सं०] आज्ञा। आदेश। हुक्म।

यौ०—समादेश याचिका = (राजाज्ञा प्राप्त करने के लिये) प्रार्थना पत्र (अं० रिट अप्लिकेशन)।

समाधा—संज्ञा पुं० [सं०] १ निराकरण। निपटारा। २ विरोध करना। ३ सिद्धांत। ४ दे० 'समाधान'।

समाधान—संज्ञा पुं० [सं०, वि० समाधानीय] १ चित्त को सब ओर से हटाकर ब्रह्म की ओर लगाना। मन को एकाग्र करके ब्रह्म में लगाना। समाधि। प्रणिधान। २ किसी के शंका या प्रश्न करने पर दिया जानेवाला वह उत्तर जिससे जिज्ञासु या प्रश्नकर्ता का संतोष हो जाय। किसी के मन का संदेह दूर करनेवाली बात। ३ इस प्रकार कोई बात कहकर किसी को संतुष्ट करने की क्रिया। ४ किसी प्रकार का विरोध दूर करना। ५ निष्पत्ति। निराकरण। ६ नियम। ७ तपस्या। ८ अनुसंधान। अन्वेषण। ९ ध्यान। १० मत की पुष्टि। सहमति। समर्थन। ११ मिलाना। मेल बैठाना। साथ रखना (को०)। १२ उत्सुकता। औत्सुक्य (को०)। १३ मन की स्थिरता। मनःस्थैर्य (को०)। १४ नाटक की मुखसंधि के उपक्षेप, परिकर आदि १२ अंगों में से एक अंग। बीज को ऐसे रूप में पुनः प्रदर्शित करना जिससे नायक अथवा नायिका का अभिमत प्रतीत हो।

समाधानना(पु)—क्रि० स० [सं० समाधान + हिं० ना (प्रत्य०)] समाधान करना। संतोष देना। सांत्वना प्रदान करना।

समाधि¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ समर्थन। २ नियम। ३ ग्रहण करना। अंगीकार। ४ ध्यान। ५ आरोप। ६ प्रतिज्ञा। ७ प्रतिशोध। बदला। ८ विवाद का अंत करना। झगड़ा मिटाना। ९. कोई असंभव या असाध्य काय करने के लिये उद्योग करना। कठिनाइयों में धैर्य के साथ उद्योग करना। १० चुप रहना। मौन। ११ निद्रा। नींद। १२ योग। १३ योग का चरम फल, जो योग के आठ अंगों में से अंतिम अंग है और जिसकी प्राप्ति सबके अंत में होती है।

विशेष—इस अवस्था में मनुष्य सब प्रकार के क्लेशों से मुक्त हो जाता है, चित्त की सब वृत्तियाँ नष्ट हो जाती हैं, बाह्य जगत् से उसका कोई संबंध नहीं रहता उसे अनेक प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं और अंत में कैवल्य की प्राप्ति होती है। योग दर्शन में इस समाधि के चार भेद बतलाए हैं—संप्रज्ञात समाधि, सवितर्क समाधि, सविचार समाधि और सानंद समाधि। समाधि की अवस्था में लोग प्रायः पद्मासन लगाकर और आँखें बंद करके बैठते हैं, उनके शरीर में किसी प्रकार की गति नहीं होती, और ब्रह्म में उनका अवस्थान हो जाता है। विशेष दे० 'योग' ३९ और ३८।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

१४ किसी मृत व्यक्ति की अस्थियाँ या शव जमीन में गाड़ना।

क्रि० प्र०—देना।

१५ वह स्थान जहाँ इस प्रकार शव या अस्थियाँ आदि गाड़ी गई हों। छतरी। १६ काव्य का एक गुण जिसके द्वारा दो घटनाओं का दैवसंयोग से एक ही समय में होना प्रकट होता है और जिसमें एक ही क्रिया का दोनों कर्ताओं के साथ अन्वय

होता है। १७ एक प्रकार का अर्थालंकार जो उस समय माना जाता है जब किसी आकस्मिक कारण से कोई काम बहुत ही सुगमतापूर्वक हो जाता है। उ०—(क) हरि प्रेरित तेहि अवसर चले पवन उनचास। (ख) मीत गमन अवरोध हित सोचत कछू उपाय। तब ही आकस्मात ते उठी घटा घहराय। १८ साथ मिलाना या करना (को०)। १९ गरदन का जोड़ या उसकी एक विशेष अवस्था (को०)। २० दुर्भिक्ष के समय अनाज बचाकर रखना। अन्न संचय (को०)। २१ तपस्या (को०)। २२ पूर्ति। संपन्नता (को०)। २३ प्रतिदान (को०)। २४ सहारा। आश्रय (को०)। २५ इंद्रियनिरोध (को०)। २६ मलरहवां कल्प (को०)।

यौ०—समाधिनिष्ठ = समाधिस्थ। समाधिभंग = समाधि टूटना। समाधिभृत् = समाधि में लीन। समाधिभेद = (१) समाधि के चार भेद। (२) समाधि भंग होना।

**समाधि**[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० समाधित या समाधान] दे० 'समाधान'। (क्व०)। उ०—व्याधि भूत जनित उपाधि काहू खल की समाधि कीजै तुलसी को जानि जन फुर कै।—तुलसी (शब्द०)।

**समाधिक्षेत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह स्थान जहाँ साधुओं आदि के मृत शरीर गाड़े जाते हैं। २ साधारण मुरदे गाड़ने की जगह। कब्रिस्तान।

**समाधिगर्भ**—संज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम।

**समाधित**—वि० [सं०] १ जिसने समाधि लगाई हो। समाधि अवस्था को प्राप्त। २ तुष्ट या प्रसन्न किया हुआ (को०)।

**समाधित्व**—संज्ञा पुं० [सं०] समाधि का भाव या धर्म।

**समाधिदशा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह दशा जब योगी समाधि में स्थित होता है और परमात्मा में प्रेमबद्ध होकर निमग्न और तन्मय होता है तथा अपने आप को भूलकर चारों ओर ब्रह्म ही ब्रह्म देखता है।

**समाधिमत्**—वि० [सं०] दे० 'समाधी' (को०)।

**समाधिमोक्ष**—संज्ञा पुं० [सं०] पुरानी संधि तोड़ना। समझौता तोड़ना। संधिभंग। (कौटि०)।

विशेष—चाणक्य ने इसके अनेक नियम दिए हैं। संधि के समय किसी पक्ष को दूसरे पक्ष से जो वस्तुएँ मिली हों, उन्हें किस प्रकार लौटाना चाहिए, किस प्रकार सूचना देनी चाहिए आदि बातों का उसने पूर्ण वर्णन किया है।

**समाधियोग**—संज्ञा पुं० [सं०] १ समाधियुक्त होना। २ ध्यान या विचार का प्रभाव या गुणवत्ता (को०)।

**समाधिविग्रह**—संज्ञा पुं० [सं०] ध्यान की प्रतिमूर्ति (को०)।

**समाधिशिला**—संज्ञा स्त्री० [सं० समाधि + शिला] किसी की समाधि पर लगाई जानेवाली वह शिला जिसपर समाधिस्थ व्यक्ति का नाम, जन्म और मृत्युतिथि अंकित हो।

**समाधिसमानता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्धों के अनुसार ध्यान का एक भेद।

**समाधिस्थ**—वि० [सं०] जो समाधि में स्थित हो। जो समाधि लगाए हुए हो।

**समाधिस्थल**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समाधिक्षेत्र'।

**समाधी**—वि० [सं० समाधिन्] १ समाधिस्थ। जो समाधि में हो। २ धर्मनिष्ठ। धार्मिक। उपासक (को०)।

**समाधूत**—वि० [सं०] जिसे दूर या तितर बितर कर दिया गया हो। भगाया हुआ (को०)।

**समाधेय**—वि० [सं०] १ समाधान करने के योग्य। जिसका समाधान हो सके। २ निर्देश योग्य। जिसे निर्देश किया जा सके (को०)। ३ अंगीकार योग्य। स्वीकरणीय (को०)। ४ जो क्रमयुक्त या व्यवस्थित किया जा सके (को०)।

**समाध्मात**—वि० [सं०] १ फूला हुआ। जैसे,—समाध्मात उदर। २ गर्वयुक्त। फूला हुआ। ३ फुलाया हुआ। जिसमें हवा भर दी गई हो (को०)।

**समान**[१]—वि० [सं०] जो रूप, गुण, मान, मूल्य, महत्व आदि में एक से हों। जिनमें परस्पर कोई अंतर न हो। सम। बराबर। सदृश। तुल्य। एकरूप। जैसे,—ये दोनों समान विद्वान् हैं, उनमें कोई अंतर नहीं है।

मुहा०—एक समान = एक सा। एक जैसा।

यौ०—समान वर्ण = ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण एक ही स्थान से होता हो। जैसे,—क, ख, ग, घ समान वर्ण हैं।

२ सामान्य। साधारण (को०)। ३. मध्यवर्ती। उभयनिष्ठ। बीच का (को०)। ४ क्रोधी। कोपाविष्ट। क्रोधयुक्त (को०)। ५ सज्जन। भला (को०)। ६ समादरणीय। समादृत। सम्मानित (को०)। ७ साकल्य। समग्रता। समास। जैसे, संख्या का (को०)।

**समान**[२]—संज्ञा पुं० १ सत्। २ शरीर के अंतर्गत पाँच वायुओं में से एक वायु जिसका स्थान नाभि माना गया है। ३ मित्र। साथी (को०)। ४ व्याकरण के अनुसार एक ही स्थान से उच्चरित होनेवाले वर्ण (को०)।

**समानकरण**—वि० [सं०] (स्वर) जिनका करण या उच्चारण स्थान एक हो (को०)।

**समानकर्तृक**—वि० [सं०] एककर्तृक। (वाक्य आदि) जिनका कर्ता एक ही हो (को०)।

**समानकर्म**—संज्ञा पुं० [सं० समानकर्मन्] १ वे जो एक ही तरह का काम करते हों। एक ही तरह का व्यवसाय या कार्य करनेवाले। हमपेशा। २ समान काम। एक ही काम (को०)। ३ वे वाक्य जिनके कर्म कारक समान या एक ही हों।

**समानकर्मक**—वि० [सं०] १ व्याकरण में एक ही कर्मवाला। २ समान कर्म करनेवाला (को०)।

**समानकाल, समानकालीन**—संज्ञा पुं० [सं०] वे जो एक ही समय में उत्पन्न हुए या अवस्थित रहे हों। समकालीन।

**समानक्षेत्र**—वि० [सं०] समान क्षेत्रवाला। आपस में एक दूसरे को संतुलित करनेवाला (को०)।

**समानगति**—वि० [सं०] एकमत, एक राय होनेवाले [को०]।

**समानगोत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] वे जो एक ही गोत्र में उत्पन्न हुए हों। सगोत्र।

**समानग्रामीय**—वि० [सं०] एक ही गाँव में निवास करनेवाले [को०]।

**समानजन्मा**—संज्ञा पुं० [सं० समानजन्मन्] १ वे जो प्राय एक साथ ही, अथवा एक ही समय में उत्पन्न हुए हों। जो अवस्था या उम्र में बराबर हों। समवयस्क। २ वे जिनका उत्पत्तिस्थान एक हो [को०]।

**समानतंत्र**—संज्ञा पुं० [सं० समानतन्त्र] १ वे जो एक ही काम करते हों। समान कर्म। हमपेशा। २ वे जो वेद की किसी एक ही शाखा का अध्ययन करते हों और उसी के अनुसार यज्ञ आदि कर्म करते हों।

**समानता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] समान होने का भाव। तुल्यता। बराबरी। जैसे,—इन दोनों में बहुत कुछ समानता देखने में आती है।

**समानतेजा**—वि० [सं० समानतेजस्] समान दीप्ति या कीर्तिवाले। जिनकी कांति या कीर्ति समान हो [को०]।

**समानतोऽर्थापद**—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के अनुसार एक ही साथ चारों ओर अर्थ सिद्धि।

**समानत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] समान होने का भाव। समानता। तुल्यता। बराबरी।

**समानदुःख**—वि० [सं०] समान कष्ट या या दुःखवाला। समान वेदनायुक्त। समवेदना व्यक्त करनेवाला [को०]।

**समदेवत, समदैवत्य**—वि० [सं०] जो एक ही या समान देवता संबधी हो [को०]।

**समानधर्मा**—वि० [सं०] समान गुण, धर्म, प्रकृतिवाला। तुल्य गुणवाला [को०]।

**समाननामा**—संज्ञा पुं० [सं० समाननामन्] वे जिनके नाम एक ही हों। एक ही नामवाले। नामरासी।

**समानयन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ अच्छी तरह अथवा आदरपूर्वक ले आने की क्रिया। २ एक साथ करना। एकत्र करना। संग्रह करना (को०)।

**समाननिधन**—वि० [सं०] जिनका निधन या परिणाम एक सा हो [को०]।

**समानप्रतिपत्ति**—वि० [सं०] समान मेधावाला। विवेकशील [को०]।

**समानप्रेमा**—वि० [सं० समानप्रेमन्] जिनका प्रेम सदा एक समान हो [को०]।

**समानमान**—वि० [सं०] तुल्य सम्मान प्राप्त करनेवाला। जो किसी के समान सम्मान का भागी हो [को०]।

**समानयम**—संज्ञा पुं० [सं०] एक ही या समान ऊँचाई का स्वर। समान तार स्वर (संगीत)।

**समानयोगित्व**—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो समान स्तर या योग का हो [को०]।

**समानयोनि**—संज्ञा पुं० [सं०] वे जो एक ही योनि या स्थान से उत्पन्न हुए हों।

**समानरुचि**—वि० [सं०] जिनकी रुचि एक समान हो [को०]।

**समानरूप**—वि० [सं०] जिनका रूप, रंग समान हो [को०]।

**समानर्ष, समानर्षि**—संज्ञा पुं० [सं०] वे जो एक ही ऋषि के गोत्र या वंश में उत्पन्न हुए हों।

**समानवयस्क**—वि० [सं०] दे० 'समानवया'।

**समानवया**—वि० [सं० समानवयस्] तुल्य वय का समान उम्रवाला। हमउम्र [को०]।

**समानवर्चस**—वि० [सं० समानवर्चस्] समान कांतिवाला। जिनकी कांति एक सदृश हो [को०]।

**समानवर्ण**—वि० [सं०] १ दे० 'समान रूप'। २ समान वर्णवाला। समानाक्षर युक्त [को०]।

**समानवसन, समानवस्त्र**—वि० [सं०] जिनका पहनावा एक सा हो। समान वस्त्र, परिधानवाले [को०]।

**समानविद्य**—वि० [सं०] किसी के समान ज्ञानवाला। समान विद्या से युक्त। समकक्ष (विद्वान्)।

**समानशब्दत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] एक समान शब्दों द्वारा भाव या विचारों को अभिव्यक्त करने की स्थिति [को०]।

**समानशब्दा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रहेलिका का एक भेद [को०]।

**समानशील**—वि० [सं०] जिनका शील स्वभाव समान या एक सा हो [को०]।

**समानसंख्य**—वि० [सं० समानसङ्ख्य] जिसकी संख्याएँ समान हों। समान संख्यावाला [को०]।

**समानसलिल**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समानोदक' [को०]।

**समानस्थान**—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ दिन और रात दोनों बराबर होते हैं।

**समानांतर**—वि० [सं० समानान्तर] १ जो हमेशा एक समान अंतर पर रहे। जैसे,—समानांतर रेखा। २ साथ साथ चलने या काम करनेवाला। जैसे,—समानांतर सरकार। ३ समकक्ष। तुल्य। बराबर (को०)।

**समाना'**—क्रि० अ० [सं० समाविष्ट] अंदर आना। भरना। अटना। जैसे,—यह समाचार सुनते ही सबके हृदय में आनंद समा गया। उ०—तासु तेज प्रभु बदन समाना। सुर मुनि सबहि अचंभौ माना।—मानस, ६।७०।

**समाना²**—क्रि० स० किसी के अंदर लाना। भरना। अटाना। जैसे—वे सब चीजें इसी बक्स के अंदर समा दो।

**समानाधिकरण'**—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में वह शब्द या वाक्यांश जो वाक्य में किसी समानार्थी शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिये आता है। जैसे,—लोगों से लड़ने फिरना, यही आपका काम है। इसमें 'यही' शब्द 'लड़ने फिरना' का समानाधिकरण है। २ समान स्थान या परिस्थिति (को०)। ३ एक ही कारक-विभक्ति में व्यक्त होना (को०)। ४ समान आधार। समान वर्ग या श्रेणी।

समानाधिकरण[1]—वि० १ समान आधारवाला। २ एक ही श्रेणी या वर्ग का। ३ एक ही कारक विभक्ति से युक्त (को०)।

समानाधिकार—संज्ञा पुं० [सं०] समानता का अधिकार। बराबरी का दर्जा (को०)।

समानाभिहार—संज्ञा पुं० [सं०] समान या एक ही प्रकार की वस्तुओं का सम्मिश्रण (को०)।

समानार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १ वे शब्द आदि जिनका अर्थ एक ही हो। पर्याय। २ वे जिनका प्रयोजन या उद्देश्य समान हो।

समानार्थक—वि० [सं०] दे० 'समानार्थ' (को०)।

समानिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की वर्णवृत्ति जिसमें रगण, जगण और एक गुरु होता है। समानी। उ०—देखि देखि कै सभा। विप्र मोहिया प्रभा। राजमंडली लसैं। देव लोक को हँसैं।—केशव (शब्द०)।

समानी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्ण वृत्त। दे० 'समानिका'।

समानोदक—संज्ञा पुं० [सं०] जिनकी ग्यारहवीं से चौदहवीं पीढ़ी तक के पूर्वज एक हों। इन्हें साथ साथ तर्पण करने का अधिकार होता है।

समानोदर्य—संज्ञा पुं० [सं० समानोदर्य्य] वे जिनका जन्म एक ही माता के गर्भ से हुआ हो। सहोदर भाई। सगा भाई।

समानोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] उपमा अलंकार का एक भेद।

विशेष—इसमें सभंगविच्छेद से एक ही उपमा दूसरी उपमा का भी काम दे जाती है। जैसे,—'सालकानन' में दो उपमाएँ छिपी हैं—(क) सालक+आनन अर्थात् अलकावली से युक्त आनन और (ख) साल+कानन अर्थात् वह जंगल जिसमें साल के ही वृक्ष हों।

समाप—संज्ञा पुं० [सं०] इष्ट देवता की सपर्या या पूजा (को०)।

समापक—संज्ञा पुं० [सं०] समाप्त करनेवाला। खतम करनेवाला। पूरा करनेवाला।

समापतित—वि० [सं०] सामने आया हुआ। जो घटित हो (को०)।

समापत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक ही समय में और एक ही स्थान पर उपस्थित होना। मिलना। २ संयोग। मौका। अवसर (को०)। ३ प्राप्ति। समाप्ति (को०)। ४ मूल रूप का ग्रहण या प्राप्ति (को०)।

यौ०—समापत्तिदृष्ट=संयोग से दिखाई पड़नेवाला।

समापन—संज्ञा पुं० [सं०] १ समाप्त करने की क्रिया। खतम करना। पूरा करना। २ मार डालना। हत्या करना। वध। ३ सूक्ष्म चिंतन। गूढ़ चिंतन (को०)। ४ खंड। अध्याय। विभाग (को०)। ५ प्राप्ति। उपलब्धि। अभिग्रहण (को०)। ६ समाधान।

समापना—संज्ञा स्त्री० [सं०] समाप्त होने का भाव। निष्पत्ति। परिसमाप्ति। सिद्धि। सफलता (को०)।

समापनीय—वि० [सं०] १ समाप्त करने योग्य। खतम करने के लायक। २ मार डालने योग्य। वध्य।

समापन्न[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ मार डालना। हत्या करना। वध। २ मरण। मृत्यु। ३ अंत। समाप्ति। पूर्ति (को०)।

समापन्न[2]—वि० १ खतम किया हुआ। समाप्त किया हुआ। २ वध किया हुआ। मारा हुआ। निहत (को०)। ३ आगत। पहुँचा हुआ (को०)। ४ घटित। गुजरा हुआ (को०)। ५ निष्णात। प्रवीण। कुशल (को०)। मिला हुआ। प्राप्त। ६ युक्त। अन्वित। उपेत (को०)। ७ आर्त। दुखित। अभिभूत (को०)। ८ क्लिष्ट। कठिन।

समापादन—संज्ञा पुं० [सं०] पूर्ण करना। रूप या आकार देना। संपादित करना (को०)।

समापादनीय—वि० [सं०] पूरा करने योग्य। आकारित करने योग्य। रूप देने योग्य (को०)।

समापाद्य—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण के अनुसार विसर्ग का 'स' और 'ष' में परिवर्तन।

समापिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्याकरण में दो प्रकार की क्रियाओं में से एक प्रकार की क्रिया जिससे किसी कार्य का समाप्त हो जाना सूचित होता है। जैसे,—वह परसों यहाँ से चला गया। इस वाक्य में 'चला गया' समापिका क्रिया है।

समापित—वि० [सं०] समाप्त किया हुआ। खतम या पूरा किया हुआ।

समापी—संज्ञा पुं० [सं० समापिन्] वह जो समाप्त करता हो। खतम करनेवाला।

समापूर्ण—वि० [सं०] पूरा पूरा भरा हुआ। सम्यक् आपूरित। लबरेज (को०)।

समाप्त—वि० [सं०] १ जिसका अंत हो गया हो। जो खतम या पूरा हो। जैसे,—(क) जब आप अपनी सब बातें समाप्त कर लीजिएगा, तब मैं भी कुछ कहूँगा। (ख) आपका यह ग्रंथ कबतक समाप्त होगा। २ निपुण। कुशल। चतुर (को०)। ३ परिपूर्ण (को०)।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

यौ०—समाप्तप्राय=जो लगभग समाप्त या पूर्ण हो। समाप्तभूयिष्ठ=जो प्रायः पूरा हो गया हो। समाप्तशिक्ष=जिसने शिक्षा पूर्ण कर ली हो।

समाप्तलंभ—संज्ञा पुं० [सं० समाप्तलम्भ] बौद्धों के अनुसार एक बहुत बड़ी संख्या का नाम।

समाप्ताल—संज्ञा पुं० [सं०] पति। स्वामी। मालिक। खाविंद।

समाप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी कार्य या बात आदि का अंत होना। उस अवस्था को पहुँचना जब कि उस संबंध में और कुछ भी करने को बाकी न रहे। खतम या पूरा होना। २ प्राप्त होने या मिलने का भाव। प्राप्ति। ३ निष्पन्नता। पूर्णता (को०)। ४ अंतर या मतभेद दूर करना (को०)। ५ शरीर आदि का विभिन्न तत्वों में विघटन। मृत्यु (को०)।

समाप्तिक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो समाप्त करता हो। खतम या पूरा करनेवाला। २ वह जो वेदों का अध्ययन समाप्त कर चुका हो।

समाप्तिक²—वि० समाप्ति का। अंत का। २ जिसने काम पूरा कर दिया हो (कौ०)।

समाप्य—वि० [सं०] समाप्त करने के योग्य। खतम या पूरा करने के लायक।

समाप्यायित—वि० [सं०] जो अच्छी तरह तृप्त, पोषित, संतुष्ट किया गया हो (कौ०)।

समाप्लव, समाप्लाव—संज्ञा पुं० [सं०] स्नान करने की क्रिया। नहाना। गोता लगाना।

समाप्लुत—वि० [सं०] १ जो गोता लगा चुका हो। नहाया हुआ। २. बाढग्रस्त। बाढ में डूबा हुआ। ३ भरा हुआ। पूर्ण (कौ०)।

सभाभाषण—संज्ञा पुं० [सं०] बातचीत। वार्तालाप (कौ०)।

समाम्नात—वि० [सं०] १ जिसे बार बार कहा गया हो। दोहराया हुआ। २ परंपरागत। परंपरा से प्राप्त (कौ०)।

समाम्नाता—संज्ञा पुं० [सं० समाम्नातृ] १ वह जो बारबार कहता हो। दुहरानेवाला। २ वह जो मूल पाठ का संग्रह या संपादन करता हो (कौ०)।

समाम्नान—संज्ञा पुं० [सं०] १ आवृत्ति करना। दुहराना। २ गणना। ३ परंपराप्राप्त पाठ या वर्णन (कौ०)।

समाम्नाय—संज्ञा पुं० [सं०] १ शास्त्र। २ समूह। समष्टि। जैसे,—अक्षर समाम्नाय। ३ परंपरा। अनुश्रुति (कौ०)। ४. पढना। पाठ करना। गान करना (कौ०)। ५ शिव (कौ०)। ६ संहार। प्रलय (कौ०)। ७ पवित्र ग्रंथ (कौ०)। ८ (शब्दों या वचनों का) परंपरागत संग्रह। जैसे, पशु समाम्नाय (कौ०)।

समाम्नायिक¹—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसे शास्त्रों का अच्छा ज्ञान हो। शास्त्रवेत्ता।

समाम्नायिक²—वि० शास्त्र संबंधी। शास्त्र का।

समाय—संज्ञा पुं० [सं०] १ पहुँचना। आना। २ यों ही देखने के लिये आना (कौ०)।

समायत—वि० [सं०] जिसे फैला दिया गया हो। पूरा पूरा लंबा। विस्तृत (कौ०)।

समायत्त—वि० [सं०] जो किसी के सहारे टिका हो। पूर्णत अधीन या वशीभूत (कौ०)।

समायस्त—वि० [सं०] दुःखी। खिन्न। पीडित। विषादग्रस्त (कौ०)।

समायात—वि० [सं०] १. लौटा हुआ। प्रत्यावर्तित। २ साथ साथ या समीप आया हुआ (कौ०)।

समायी—वि० [सं० समायिन्] १ समकाल में घटनेवाला। एक ही समय में होनेवाला। २ एक के बाद दूसरा तत्काल होने या घटनेवाला (कौ०)।

समायुक्त—वि० [सं०] १ साथ जोडा हुआ। संघटित। संयुक्त। २ तैयार किया हुआ। निर्मित। ३ कृतसंकल्प। संलग्न। ४ युक्त। सज्जित। सहित। ५ जिसे कोई कार्यभार सौंपा गया हो। नियुक्त किया हुआ (कौ०)।

समायुत—वि० [सं०] १ संयुक्त। साथ मिलाया हुआ। २ संग्रहीत। एकत्रित किया हुआ। ३ सहित। युक्त। अन्वित (कौ०)।

समायोग—संज्ञा पुं० [सं०] १ संयोग। २ बहुत से लोगों का एक साथ एकत्र होना। ३ तैयारी (कौ०)। ४ (धनुष पर) बाण संधान करना (कौ०)। ५ कारण। प्रयोजन। उद्देश्य (कौ०)। ६ राशि। ढेर (कौ०)।

समारंभ—संज्ञा पुं० [सं० समारम्भ] १ अच्छी तरह आरंभ होना। २ समारोह (क्व०)। ३ दे० 'समालंभ'। अंगलेप। ४ उद्योग। साहसिक कार्य (कौ०)। ५ उद्योग का उत्साह। साहस-पूर्ण कार्य करने का उत्साह या भावना (कौ०)।

समारंभण—संज्ञा पुं० [सं० समारम्भण] १ गले लगाना। आलिंगन। २ अंगलेपन। समालंभन (कौ०)।

समारब्ध—वि० [सं०] १ शुरू किया हुआ। २ जो हो चुका हो। घटित। ३ जिसने आरंभ किया हो। आरंभक (कौ०)।

समारभ्य—वि० [सं०] समारंभ करने योग्य।

समाराधन—संज्ञा पुं० [सं०] १ अच्छी तरह आराधना या उपासना करना। २ सेवा। टहल (कौ०)। ३ संतुष्टि या प्रसादन का साधन (कौ०)।

समारूढ—वि० [सं० समारुढ] १ किसी पर चढने या आरूढ होनेवाला। २. चढा हुआ। आरूढ। सवार। ३ जिसने स्वीकार कर लिया हो। राजी। ४ बढा हुआ। वर्द्धित। ५ (घाव) जो भरा हुआ हो (कौ०)।

समारोप—संज्ञा पुं० [सं०] १ चढाना। रोपण करना। जैसे,—धनुष। २ स्थानांतरण। स्थल परिवृत्ति (कौ०)। ३ दे० 'आरोप'।

समारोपक—वि० [सं०] १ वर्धन करनेवाला। वर्धक। २ समारोप करनेवाला। ३ रोपने या उपजानेवाला (कौ०)।

समारोपण—संज्ञा पुं० [सं०] १ तानना या चढाना। जैसे,—धनुष (कौ०)। २ दे० 'आरोपण'।

समारोपित—वि० [सं०] १ चढाया हुआ। ताना हुआ। जैसे,—धनुप। २ किसी को दिया हुआ। प्रदत्त। ३ दे० 'आरोपित' (कौ०)।

समारोह—संज्ञा पुं० [सं०] १ आडंबर। तडक भडक। धूम धाम। २ कोई ऐसा कार्य या उत्सव जिसमें बहुत धूमधाम हो। ३ स्वीकरण। स्वीकार (कौ०)। ४ चढना। दे० 'आरोह'।

समारोहण—संज्ञा पुं० [सं०] १ केशों का बढना। बाल बढना। २ आरोहण या सवार होने की क्रिया। ३ यज्ञ की अग्नि का स्थानांतरण (कौ०)।

समार्थ¹—संज्ञा पुं० [सं०] समान अर्थवाला शब्द। पर्य्याय।

समार्थ²—वि० जो समान अर्थवाला हो (कौ०)।

समार्थक¹—संज्ञा पुं० [सं०] समान अर्थवाला शब्द। पर्य्याय।

समार्थक²—वि० दे० 'समार्थ²' (कौ०)।

समार्थी—वि० [सं० समार्थिन्] १ समता या बराबरी का इच्छुक। २ शांति का अन्वेषक। शांति की कामनावाला (कौ०)।

समार्ष—वि० [सं०] एक ही प्रवर से संबंधित। जो समान प्रवरवाला हो (कौ०)।

समालंब—संज्ञा पुं० [सं० समालम्ब] रोहिष तृण। रूसा नामक घास।

समालंबन—संज्ञा पुं० [सं० समालम्बन] आलंबन करना। टेक लेना। सहारा लेना [को०]।

समालंबित—वि० [सं० समालम्बित] किसी के सहारे टिका हुआ। आश्रित। टँगा हुआ। लगा हुआ [को०]।

समालंबिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० समालम्बिनी] एक तृण [को०]।

समालंबी¹—संज्ञा पुं० [सं० समालम्बिन्] भू तृण।

समालंबी²—वि० पराश्रयी। परावलंबी [को०]।

समालंभ—संज्ञा पुं० [सं० समालम्भ] १ शरीर पर केशर आदि का लेप करना। २ मार डालना। हत्या करना। ३ ग्रहण करना। पकड़ना (को०)। ४ (यज्ञ में) पशु को बलि के लिये पकड़ना (को०)।

समालंभन—संज्ञा पुं० [सं० समालम्भन] दे० 'समालंभ'।

समालक्ष्य—वि० [सं०] जो दिखाई पड़े। दिखाई पड़नेवाला। व्यक्त। गोचर [को०]।

समालब्ध—वि० [सं०] १ जो पकड़ में आ गया हो। गृहीत। २ संपर्क में आया हुआ [को०]।

समालाप—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छी तरह बातचीत करना।

समालिंगन—संज्ञा पुं० [सं० समालिङ्गन] [वि० समालिंगित] कसकर आलिंगन करना। गाढ़ालिंगन [को०]।

समालिप्त—वि० [सं०] अच्छी तरह लिप्त या पुता हुआ। लेप किया हुआ [को०]।

समाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुष्पगुच्छ। फूलों का गुच्छा। कुसुम का स्तबक। गुलदस्ता [को०]।

समालोक—संज्ञा पुं० [सं०] १ अवलोकना। देखना। २ कल्पना। चिंतन। मनन [को०]।

समालोकन—संज्ञा पुं० [सं०] १ अच्छी तरह देखना। निरीक्षण। २ सोचना। विचारना। मनन। चिंतन (को०)।

समालोकी¹—संज्ञा पुं० [सं० समालोकिन्] १ वह जो किसी चीज को अच्छी तरह देखता हो।

समालोकी²—वि० १ किसी वस्तु का अच्छी तरह निरीक्षण करनेवाला। २ सोचने विचारनेवाला। चिंतन मनन करनेवाला [को०]।

समालोच—संज्ञा पुं० [सं०] बातचीत। संभाषण। संलाप [को०]।

समालोचक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो किसी चीज के गुण और दोष देखकर बतलाता हो। २. वह जो कृति के दोष गुण आदि को विवेचित करता हो। समालोचना करनेवाला। ३ अच्छी तरह देखनेवाला।

समालोचन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समालोचना'।

समालोचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अच्छी तरह देखने की क्रिया। खूब देखना भालना। २ किसी पदार्थ के दोषों और गुणों को अच्छी तरह देखना। यह देखना कि किसी चीज में कौन सी बातें अच्छी और कौन सी खराब है, विशेषतः किसी पुस्तक के गुण और दोष आदि देखना। ३ वह कथन, लेख या निबंध आदि जिसमें इस प्रकार गुणों और दोषों की विवेचना हो। आलोचन।

समालोची—संज्ञा पुं० [सं० समालोचिन्] वह जो किसी चीज के गुण और दोष देखता हो। समालोचना करनेवाला।

समावर्जन—संज्ञा पुं० [सं०] वशीभूत करना। अपनी ओर करना या खींचना। आकृष्ट करना [को०]।

समावर्जित—वि० [सं०] झुकाया हुआ। जिसे झुका दिया गया हो। कृतनम्र [को०]।

समावर्त्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ वापस आना। लौटना। २ दे० 'समावर्तन'। ३ विष्णु (को०)।

समावर्त्तन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० समावर्तनीय] १ वापस आना। लौटना। २ गुरुकुल में विद्याध्ययन करके ब्रह्मचारी का गुरु की अनुमति से अपने घर वापस जाना। ३ प्राचीन वैदिक काल का एक प्रकार का संस्कार। समावर्तन संस्कार।

विशेष—यह संस्कार उस समय होता था जब बालक या ब्रह्मचारी नियत समय तक गुरुकुल में रहकर और वेदों तथा अन्यान्य विद्याओं का अच्छी तरह अध्ययन करने के उपरांत स्नातक बनकर घर लौटता था। इस संस्कार के समय कुछ हवन आदि होते थे।

यौ०—समावर्तन संस्कार = दे० 'समावर्तन'–३।

समावर्तनीय—वि० [सं०] १ लौटने योग्य। वापसी के लायक। २ जो समावर्तन संस्कार करने योग्य हो गया हो।

समावर्तमान—वि० [सं०] दे० 'समावर्त्ती'।

समावर्त्ती—वि० [सं० समावर्त्तिन्] १ अध्ययन समाप्त कर गुरुकुल से लौटनेवाला। २ लौटने या वापस होनेवाला।

समावह—वि० [सं०] १ जो उत्पन्न या प्रस्तुत करे। २ जो किसी (कार्य या व्याधि) का कारणभूत हो [को०]।

समावाय—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समवाय'।

समावास—संज्ञा पुं० [सं०] १ निवास स्थान। घर। २ ठहरने का स्थान। ३ शिविर। पड़ाव [को०]।

समावासित—वि० [सं०] १ ठहराया या टिकाया हुआ। २ बसाया हुआ [को०]।

यौ०—समावासित कटक = वह जिसने सेना को शिविर करने का आदेश दिया हो।

समाविग्न—वि० [सं०] १ भीत या डरा हुआ। २ उद्वेल्लित। क्षुब्ध। विह्वल। कंपित [को०]।

समाविद्ध—वि० [सं०] १ जिसका संयोग या संघटन हुआ हो। २ विह्वल। क्षोभयुक्त। आकुल (को०)। ३ क्षीण (को०)।

समाविष्ट—वि० [सं०] १ जिसका समावेश हुआ हो। समाया हुआ। २ जिसका चित्त किसी एक ओर लगा हुआ हो। एकाग्रचित्त। ३. गृहीत। ग्रहण किया हुआ (को०)। ४ भूतप्रेत

आदि के आवेश मे ग्रस्त। भूताविष्ट (को०)। ५. सयुक्त। युक्त। सपन्न। सहित (को०)। ६. निश्चित। स्थिर किया हुआ (को०)। ७. पूर्णत शिक्षित या सुनिर्दिष्ट (को०। ८ पूर्णत आच्छादित, प्रभावित या आवेष्टित (को०)।

समावी—वि० [ग्र०] आकस्मिक। आसमानी। दैवी।

समावृत्त—वि० [स०] १ अच्छी तरह ढका या छाया हुआ। २ घिरा हुआ। लपेटा हुआ। वलयित (को०)। ३ सुरक्षित। अवरुद्ध या वद किया हुआ (को०)। ४ रोका हुआ (को०)। ५ आकीर्ण। विकीर्ण (को०)।

समावृत्त²—सज्ञा पुं० [सं०] वह जो विद्या अध्ययन करके, समावर्तन सस्कार के उपरात, घर लौट आया हो। जिसका समावर्तन सस्कार हो चुका हो।

समावृत्त³—वि० [स०] १ पूर्ण या किया हुआ। २. लौटा हुआ। वापस (को०)। ३ जुटना। एकत्र होना। ४. जो गुरुकुल से लौटा हो (को०)।

समावृत्तक—सज्ञा पु० [स०] गुरुकुल से शिक्षा समाप्त कर लौटा हुआ स्नातक। दे० 'समावृत्त' (को०)।

समावृत्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दे० 'समावर्तन'। २ पूर्णता। समाप्ति (को०)।

समावेश—सज्ञा पु० [स०] १ एक साथ या एक जगह रहना। २ एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ के अतर्गत होना। जैसे,—इस एक ही आपत्ति मे आपकी सव आपत्तियो का समावेश हो जाता है। ३ चित्त को किसी एक ओर लगाना। मनोनिवेश। ४ मिलना। साहचर्य (को०)। ४ घुसना। प्रवेश करना (को०)। ६ प्रेतावेश (को०)। ७ प्रणयोन्माद। भावावेश (को०)। ८. मतैक्य (को०)। ९ व्याप्त होना (को०)।

समावेशन—सज्ञा पुं० [स०] १ घुसना। वैठना। २ विवाह की ससिद्धि, सपन्नता या पूर्णावस्था (को०)।

समावेशित—वि० [स०] १ जिसका समावेश किया गया हो (को०)। २ खचित। जडा हुआ। जटित (को०)। ३ दे० 'समाविष्ट'।

समाश—सज्ञा पु० [स०] अशन। खाना। भोजन (को०)।

समाश्रय—सज्ञा पु० [स०] १ आश्रय। सहारा। २ सहायता। मदद। ३. आश्रय स्थान। शरण। शरण गृह (को०)। ४. निवास। घर (को०)। ५. शरण या सहारा ढूँढना (को०)।

समाश्रयण—सज्ञा पु० [स०] १ 'समाश्रय'। २ चयन। चुनना (को०)।

समाश्रित¹—वि० [स०] १ जिसने किसी स्थान पर अच्छी तरह आश्रय ग्रहण किया हो। २ जो सहारे पर हो। अवलवित (को०)। ३ निवसित। वसा हुआ। अधिष्ठित (को०)। ४. सज्जित किया हुआ। जैसे,—कक्ष या घर (को०)। ५. एकत्रित (को०)।

समाश्रित²—सज्ञा पुं० सेवक। भृत्य (को०)।

समाश्लिष्ट—वि० [सं०] १ भली भाँति आलिंगित। २ सलग्न। चिपका या लगा हुआ (को०)।

समाश्लेष—सज्ञा पुं० [स०] गाढ आलिंगन (को०)।

समाश्वस्त—वि० [स०] जिसे तसल्ली हो गई हो। सात्वना प्राप्त। आश्वस्त। २ प्रोत्साहित (को०)।

समाश्वास—सज्ञा पु० [स०] १ सतोष होना। जी मे जी आना। ढाढस वँधना। २ आस्था। भरोसा। विश्वास। ३. प्रोत्साहन। वढावा (को०)।

समाश्वासन—सज्ञा पुं० [स०] १ ढाढस वँधाना। सतोष देना। २ उत्साह वढाना (को०)।

समासग—सज्ञा पु० [स० समासङ्ग] १ मिलन। मिलाप। मेल। २ लगाव। साहचर्य (को०)। ३ किसी के जिम्मे करना। काम सौंपना (को०)।

समासंजन—सज्ञा पुं० [स० समासञ्जन] १ मिलाना। सयुक्त करना। २ खचित करना। जडना या रखना। ३ लगाव। मेल। सपर्क। सयोग (को०)।

समास—स० पु० [स०] १ सक्षेप। २ समर्थन। ३ सग्रह। ४ पदार्थों का एक मे मिलना। समिलन। ५ व्याकरण मे दो या अधिक शब्दो का सयोग। शब्दो का कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार आपस मे मिलकर एक होना। जैसे,—'प्रेमसागर' शब्द प्रेम और सागर का, 'पराधीन' शब्द पर और अधीन का, 'लवोदर' शब्द लव और उदर का सामासिक रूप है।

विशेष - शब्दो का यह पारस्परिक सयोग सधि के नियमो के अनुसार होता है। हिंदी मे चार प्रकार के समास होते हे—(१) अव्ययी भाव जिसमे पहला शब्द प्रधान होता है और जिसका प्रयोग क्रियाविशेषण के समान होता है। जैसे, -यथाशक्ति, यावज्जीवन, प्रतिदिन आदि, (२) तत्पुरुष जिसमे पहला शब्द सज्ञा या विशेषण होता है और दूसरे शब्द की प्रधानता रहती है। जैसे,—ग्रथकर्ता, निशाचर, राजपुत्र आदि, (३) समानाधिकरण तत्पुरुष या कर्मधारय जिनमे दोनो शब्द या तो विशेष्य और विशेषण के समान या उपमान और उपमेय के समान रहते है और जिनका विग्रह होने पर परवर्ती एक ही विभक्ति मे काम चलता है। जैसे,—छुटभैया, अधमरा, नवरात्र, चौमासा आदि और (४) द्वद्व जिसमे दोनो शब्द या उनका समाहार प्रधान होता है। जैसे,—हरिहर, गायबैल, दालभात, चिट्ठी-पत्री, अन्नजल, आदि।

६ मतभेद दूर करना। अतर दूर करना। विवाद मिटाना (को०)। ७ सग्रह। सघात (को०)। ८ पूर्णता। समष्टि (को०)। ९ सधि। दो शब्दों का व्याकरण के नियमानुसार एक मे मिलना (को०)। १० सक्षेपण (को०)।

यौ०—समासप्राय। समासवहुल।

समासक्त—वि० [स०] १ लगा हुआ। जुडा हुआ। अनुस्यूत। २ अनुरागयुक्त। आसक्त। ३. पहुचा हुआ। प्राप्त। ४ प्रभावित। ५. रुका हुआ। ठहरा हुआ। (प्रभाव या असर करने मे) जैसे, विष (को०)।

समासक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लगाव। संबंध। २ अनुरक्ति। आसक्ति। ३ दे० 'समासत्ति' (को०)।

समासत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] नजदीक होने का भाव। समीपता (को०)।

समासन— संज्ञा पुं० [सं०] १ पटपर या सम भूमि पर बैठने की क्रिया। २ (कई लोगों का) एक साथ बैठना (को०)।

समासन्न—वि० [सं०] १ प्राप्त। पहुँचा हुआ। जो आ गया हो। २ नजदीकवाला। जो पास हो (को०)।

समासपर—संज्ञा पुं० [सं०] १ भोजराज के एक प्राचीन नगर का नाम। २ दे० 'समासप्राय'।

समासप्राय—वि० [सं०] पद या छंद आदि जिसमें समास की बहुलता हो।

समासबहुल—वि० [सं०] दे० समासप्राय'।

समासम —वि० [सं०] जो सम और असम हो (को०)।

समासर्जन—संज्ञा पुं० [सं०] १ पूर्णत परित्याग या छोडना। २ दे देना। अर्पित करना। न्यस्त या सुपुर्द करना (को०)।

समासवान्'—वि० [सं० समासवत् ] जिसमें समास हो। समास युक्त। समासवाला (को०)।

समासवान् —संज्ञा पुं० [सं०] एक बहुत बडा पेड। तुन नामक वृक्ष। विशेष दे० 'तुन' (को०)।

समासादन—संज्ञा पुं० [सं०] १ निकट होना या पहुँचना। २ प्राप्त करना या होना। मिल जाना। ३ संपन्न करना। पूर्ण करना (को०)।

समासादित—वि० [सं०] १ निकटस्थ। समीपस्थ। २ जो पहुँच गया हो। ३ आसादित। प्राप्त। लब्ध। ४. पूर्ण या सिद्ध किया हुआ (को०)।

समासार्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी छंद का वह अतिमांश जिसके आधार पर छंद पूरा किया जाय। समस्या (को०)।

समासीन—वि० [सं०] १ अच्छी तरह बैठा हुआ। २ एक साथ बैठा हुआ (को०)।

समासोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें समान कार्य, समान लिंग और समान विशेषण आदि के द्वारा किसी प्रस्तुत वर्णन से अप्रस्तुत का ज्ञान होता है। जैसे,—'कुमुदिनिहू प्रफुलित भई, साँझ कलानिधि जोय' यहाँ प्रस्तुत 'कुमुदिनी' से नायिका का और 'कलानिधि' से नायक का ज्ञान होता है।

समास्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कार्य काल। सत्र। २ साक्षात्कार। मुलाकात। ३ एक साथ बैठने की क्रिया (को०)।

समाहत—वि० [सं०] १ मिला हुआ। जुडा हुआ। २ घायल। चोट खाया हुआ। ३ आघातित। मारा हुआ। पीटा हुआ। जैसे,—नगाडा, धौंसा आदि। ४ एक साथ आघातित या प्रहारित (को०)।

समाहनन—संज्ञा पुं० [सं०] हनन या मारने की क्रिया (को०)।

समाहर—वि० [सं०] विध्वंसक। विनाशक (को०)।

समाहरण—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समाहार'।

समाहर्त्ता—संज्ञा पुं० [सं० समाहर्तृ] १ समाहार करनेवाला। २ वह जो किसी चीज का संक्षेप करता हो। ३ मिलानेवाला। ४ कौटिल्य के अनुसार प्राचीन काल का राजकर एकत्र करनेवाला प्रधान कर्मचारी।

विशेष —चंद्रगुप्त के समय में इसका मासिक वेतन २००० पण था। यह जनपद को चार भागों में विभक्त करके और ग्रामों का ज्येष्ठ, मध्यम और कनिष्ठ के नाम से विभाग करके करों के रजिस्टर में निम्नलिखित वर्गीकरण करता था—परिहारक, आयुधिक, धान्यकर, पशुकर, हिरण्यकर, कुप्यकर, विशिष्टकर और प्रतिकर। इनमें से प्रत्येक के लिये वह 'गोप' नियुक्त करता था, जिनके अधिकार में पाँच से दस गाँव तक रहते थे। इन गोपों के ऊपर स्थानिक होते थे।

समाहर्त्ता[2]—वि० १ समाहार करनेवाला। संग्राहक। २ मिलानेवाला।

समाहर्तृपुरुष —संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार समाहर्ता का कारिंदा।

समाहार —संज्ञा पुं० [सं०] १ बहुत सी चीजों को एक जगह इकट्ठा करना। संग्रह। २ समूह। राशि। ढेर। ३ मिलना। मिलाप। ४ शब्दों या वाक्यों का परस्पर संयोग (को०)। ५ द्वंद्व और द्विगु समासों का समष्टिविधायक एक उपभेद (को०)। ६ संक्षेपण। संकोचन (को०)। ७ वर्णमाला के दो अक्षरों का शब्दांश में योग। प्रत्याहार (को०)।

समाहारद्वंद्व—संज्ञा पुं० [सं० समाहारद्वन्द्व ] एक प्रकार का द्वंद्व समास। वह द्वंद्व समास जिससे उसके पादों के अर्थ के सिवा कुछ और अर्थ भी सूचित होता हो। जैसे,—सेठसाहूकार, हाथपाँव, दालरोटी आदि। इनमें से प्रत्येक के उनके पादों के अर्थ के सिवा उसी प्रकार के कुछ और व्यक्तियों या पदार्थों का भी बोध होता है।

समाहित[1]—वि० [सं०] १ रोका हुआ। पकडा हुआ। अधिकृत। २ जोडा हुआ। लगाया हुआ। जैसे,—आग में ईंधन। ३ संयोजित। ४ संकलित। ५ संचित किया हुआ। ६ व्यवस्थित। ७ प्रतिपादित किया हुआ। प्रतिपन्न। ८ स्वीकार किया हुआ। ९ समंजित। जिसमें सामंजस्य स्थापित किया गया हो। १० दबाया हुआ। कम किया हुआ। जैसे,—उठता हुआ स्वर। ११ तै किया हुआ (को०)। १२ शांत (मन) (को०)। १३ प्रवृत्त। लीन (को०)। १४ सुपुर्द किया हुआ (को०)। १५ समान। सदृश। अनुरूप (को०)। १६ समभाव का। एक ही जैसा (को०)। १७ समध्वनित। संवादी। संगत (को०)। १८ भेजा हुआ। प्रेषित (को०)।

यौ०—समाहितधी, समाहितबुद्धि, समाहितमति = स्थिर बुद्धि। समाहितमना (मनस्) = स्थिर चित्त।

समाहित[2]—संज्ञा पुं० १ एकाग्रचित्त होना। एकनिष्ठता। २ वह व्यक्ति जिसकी बुद्धि पुण्यमय हो। पुण्यात्मा (को०)।

समाहूत—वि० [स०] [स्त्री० समाहूता] १ जिसे बुलाया या निमन्त्रित किया गया हो । २ लडने या खेलने के लिये चुनौती दिया या पाया हुआ । जिसे ललकारा गया हो (को०) ।

समाह्व—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो समान नाम का हो । समान नामवाला । २ ललकार । आह्वान । चुनौती । ३ आमत्रण । बुलाना (को०) ।

समाह्वय—सज्ञा पु० [स०] १ पशु पक्षियो (तीतर, बटेर, हाथी, शेर, भैसे आदि) को लडाने और उनकी हार जीत पर बाजी लगाने का खेल ।

विशेष—इसके सबध मे अर्थशास्त्र तथा स्मृतियो मे अनेक नियम हैं ।

२ चुनौती । चैलेज । ललकार (को०) । ३ सग्राम । युद्ध (को०) । ४ द्वद्व युद्ध । मल्ल युद्ध (को०) । ५ नाम । अभिधान (को०) ।

समाह्वा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गोजिया या वनगोभी नाम की घास । गोजिह्वा । २ आख्या । नाम । अभिधान (को०) ।

समाह्वाता—वि०, सज्ञा पु० [स० समाह्वातृ] १ पुकारनेवाला । बुलानेवाला । २ चैलेज करनेवाला । चुनौती देनेवाला (को०) ।

समाह्वान—सज्ञा पु० [स०] १ आह्वान । बुलाना । २ जूआ खेलने के लिये किसी को बुलाना या ललकारना । ३ दे० 'समाह्वय'—१ । ४ चुनौती । ललकार (को०) ।

समिंधन—सज्ञा पु० [स० समिन्धन] (आग, दीया आदि) प्रज्वलित करना । सुलगाना । २ ईंधन । ३ शोथ, सूजन या उभाड आदि का कारण (को०) ।

समिक—सज्ञा पु० [स०] लबा, और धारदार कोई भी हथियार । साँग, कुत, बरछा आदि (को०) ।

समित्—सज्ञा पुं० [स०] १ मेल । साथ । मिलाप (को०) । २ अग्नि (को०) । ३ युद्ध । समर । लडाई ।

समित—वि० [स०] १ साथ आया या मिला हुआ । २ एकत्रित । पुंजीभूत । ३ सबधित । सयुक्त । सलग्न । ४ सन्निहित । समीपवर्ती । समीपस्थ । ५ समानातर । तुल्य । सदृश । ६ प्रतिश्रुत । अगीकृत । ७ खत्म किया हुआ । पूर्ण या समाप्त किया हुआ । ८ मापा हुआ (को०) ।

समिता—सज्ञा स्त्री० [स०] बहुत महीन पीसा हुआ आटा । मैदा ।

समितिंजय—सज्ञा पुं० [स० समितिञ्जय] वह जिसने युद्ध मे विजय प्राप्त की हो । युद्धजयी । २ वह जिसने किसी सभा आदि मे विजय प्राप्त की हो । ३ यम । ४ विष्णु ।

समिति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सभा । समाज । २ प्राचीन वैदिक काल की एक प्रकार की सस्था जिसमे राजनीतिक विषयो पर विचार हुआ करता था । ३ किसी विशिष्ट कार्य के लिये नियुक्त की हुई कुछ आदमियो की सभा । ४ युद्ध । समर । लडाई । ५ समानता । साम्य । ६ सन्निपात नामक रोग । ७. इकट्ठा होना । जुटना । मिलना (को०) । ८. झुड । रेवड (को०) । ९ सतुलित करना । मर्यादित करना (को० । १०. आचारपद्धति । आचारसहिता (जैन) ।

यौ०—समितिमर्दन = युद्ध मे परेशान करनेवाला । समितिशाली = वीर । योद्धा । समितिशोभन = युद्ध मे प्रमुख या श्रेष्ठ ।

समित्कलाप—सज्ञा पु० [स०] लकडियो, ईंधन का गट्ठर (को०) ।

समित्काष्ठ—सज्ञा पु० [स०] ईंधन । चैला । लकडी (को०) ।

समित्पाथ—सज्ञा पु० [स० समित्पान्थ] अनल । आग । पावक (को०) ।

समित्पूल—सज्ञा पु० [स०] दे० 'समित्कलाप' ।

समिथ—सज्ञा पुं० [स०] १ अग्नि । २ आहुति । ३ युद्ध । समर । लडाई । ४ जुटाव । सभा । समिति (को०) ।

समिदाधान—सज्ञा पु० [स०] १ अग्नि मे ईंधन डालना । २ अग्नि मे समिधा डालना जो ब्रम्हचारी का दनिक कृत्य है (को०) ।

समिद्ध—वि० [स०] १ जलता हुआ । प्रज्वलित । प्रदीप्त । २ उत्तेजनायुक्त । उत्तेजित (को०) । ३ अग्नि मे डाला हुआ । अग्नि मे न्यस्त (को०) । ४ आढ्य । पूर्ण (को०) ।

यौ०—समिद्धकाति = जिसकी काति दीप्त हो । समिद्धदर्प = अभिमान के कारण उत्तेजित । गर्व से स्फीत । समिद्धहोम = हवन । आहुति ।

समिद्धन सज्ञा पु० [स०] १ जलाने की लकडी । ईंधन । २ जलाने की क्रिया । सुलगाना । ३ उत्तेजना देना । उद्दीपन ।

समिध्—सज्ञा स्त्री० [स०] १ आग जलाने की लकडी । ईंधन । २. यज्ञकुड मे जलाने की लकडी । समिधा ।

समिध—सज्ञा पुं० [स०] १ अग्नि । २ दे० 'समिध्' (को०) ।

समिधा—सज्ञा स्त्री० [स० समिध्] दे० 'समिध्', 'समिधि' ।

समिधि पु—सज्ञा स्त्री० [स० समिध] लकडी विशेषत यज्ञकुड मे जलाने की लकडी । उ०—(क) प्रेम वारि तरपन भलो घृत सहज सनेह । ससय समिधि अगिनि छमा समता बलि देह ।—तुलसी (शब्द०) । (ख) समिधि सेन चतुरग विहाई । महा महीप भए पसु आई ।—मानस, १।२८३ ।

समिर—सज्ञा पु० [स०] दे० 'समीर' ।

समिश्र—वि० [स०] मिला हुआ । मिश्रित होनेवाला (को०) ।

समिष्—सज्ञा पु० [स०] इद्र ।

समीक—सज्ञा पु० [स०] युद्ध । समर । लडाई ।

समीकरण—सज्ञा पु० [स०] १ समान करने की क्रिया । तुल्य या बराबर करना । २ आत्मसात् करना (को०) । ३ गणित मे एक विशेष प्रकार की क्रिया जिससे किसी व्यक्त या ज्ञात राशि की सहायता से किसी अव्यक्त या अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है । ४ गणित मे (भिन्न या किसी सवाल को) हल करना या सरल करना । ५ भूमि समतल करने का साधन । पाटा या हेंगा जिससे क्षेत्र समतल किया जाता है (को०) ।

समीकार—सज्ञा पु० [स०] वह जो छोटी बडी, ऊँची नीची या अच्छी बुरी चीजो को समान करता हो । बराबर करनेवाला । २. समान करने की क्रिया (को०) । ३. गणित मे समीकरण ।

**समीकृत**—वि० [स०] १ समान किया हुआ। बराबर किया हुआ। २ जोड़ा या योग किया हुआ (को०)।

**समीकृति**—संज्ञा स्त्री० [स०] १ समान या तुल्य करने की क्रिया। समीकरण। २ वजन करना। तौलना।

**समीक्रिया**—संज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'समीकरण'।

**समीक्ष**—संज्ञा पुं० [सं०] १ अच्छी तरह देखने की क्रिया। २ दर्शन। ३ अन्वेषण। जाँच पड़ताल। ४ विवेचन। ५ सांख्य शास्त्र जिसके द्वारा प्रकृति और पुरुष का ठीक ठीक स्वरूप दिखाई देता है। ६ पूर्ण ज्ञान (को०)।

**समीक्षक**—वि० [स०] १ समीक्षा करनेवाला। समालोचक। २ निरीक्षक। अच्छी तरह देखनेवाला।

**समीक्षण**—संज्ञा पुं० [स०] १ दर्शन। देखना। २ अनुसधान। अन्वेषण। जाँच पड़ताल। ३ आलोचना।

**समीक्षा**—संज्ञा स्त्री० [स०] [वि० समीक्षित, समीक्ष्य] १ अच्छी तरह देखने की क्रिया। २ देखने की आकांक्षा। दिदृक्षा (को०)। ३ दृष्टि। चितवन। निगाह। नजर (को०)। ४ आलोचना। समालोचना। ५ प्रज्ञा। बुद्धि। मति। ६ यत्न। कोशिश। ७ विचार। सम्मति। राय (को०)। ८ अनुसधान। अन्वेषण (को०)। ९ आत्मविद्या। आत्मा सबंधी ज्ञान (को०)। १० सत्य का आधारभूत या मौलिक रूप (को०)। ११ मूलभूत सिद्धात (को०)। १२ मीमांसा शास्त्र। १३ सांख्य में बतलाए हुए पुरुष, प्रकृति, बुद्धि, अहकार आदि तत्व।

**समीक्षित**—वि० [स०] १ भली भाँति देखा परखा हुआ। २ जिसकी समीक्षा या समालोचना की गई हो।

**समीक्ष्य**—वि० [स०] समीक्षा करने के योग्य। भली भाँति देखने के योग्य।

**समीक्ष्यकारी**—वि० [स० समीक्ष्यकारिन्] अच्छी तरह सोच समझ कर काम करनेवाला (को०)।

**समीक्ष्यवादी**—संज्ञा पुं० [स० समीक्ष्यवादिन्] वह जो किसी विषय को अच्छी तरह जाँच या समझ कर कोई बात कहता हो।

**समीच**—संज्ञा पुं० [स०] १ जलनिधि। समुद्र। सागर। २ शशि। चंद्रमा (को०)।

**समीचक**—संज्ञा पुं० [स०] प्रसग। मैथुन। सभोग।

**समीची**—संज्ञा स्त्री० [स०] १ स्तव। गुणगान। वदना। २ हरिणी। मृगी (को०)।

**समीचीन**¹—वि० [स०] १ यथार्थ। ठीक। २ उचित। वाजिब। ३ न्यायसगत। ४ सत्य। सही (को०)।

**समीचीन**²—संज्ञा पुं० १ सत्य। २ गरिमा (को०)।

**समीचीनता**—संज्ञा स्त्री० [स०] समीचीन होने का भाव या धर्म।

**समीचीनत्व**—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'समीचीनता'।

**समीति, समीती**—संज्ञा स्त्री० [स० समिति] दे० 'समिति'। उ०—राग रोप इरषा बिमोह बस रुची न साधु समीति।—तुलसी (शब्द०)।

**समीद**—संज्ञा पुं० [सं०] मैदा। गेहूँ का बहुत महीन आटा (को०)।

**समीन**—वि० [सं०] १ वार्षिक। सालाना। २ जो एक वर्ष के लिये भाड़े पर लिया गया हो। ३ एक साल का (को०)।

**समीनिका**—संज्ञा [सं०] वह गौ जो प्रति वर्ष बच्चा देती हो। हर साल ब्यानेवाली गाय।

**समीप**¹—वि० [स०] दूर का उलटा। पास। निकट। नजदीक।

**समीप**²—संज्ञा पुं० सामीप्य। निकटता (को०)।

**समीपता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] समीप का भाव या धर्म।

**समीपवर्ती**—वि० [सं० समीपवर्त्तिन्] समीप का। पास का। नजदीक।

**समीपसप्तमी**—संज्ञा पुं० [स०] समीपता का व्यजक कारक। सप्तमी विभक्ति।

**समीपस्थ**—वि० [स०] जो समीप में हो। पास का।

**समीभाव**—संज्ञा पुं० [सं०] सहज स्थिति। सम भाव में होना (को०)।

**समीय**—वि० [सं०] १ तुल्य। समान। २ समान कारण होने से एक सा समझा जानेवाला। ३ जो एक ही मूल का हो। ४ समान या तुल्य सबंधी। सम सबंधी (को०)।

**समीर**—संज्ञा पुं० [सं०] १ वायु। हवा। २ वायु देवता (को०)। ३ शमी वृक्ष। ४ प्राणवायु जिसे योगी वश में रखते हैं। उ०—कछु न साधन सिधि जानौं न निगम बिधि नहिं जप तप बस न समीर।—तुलसी (शब्द०)।

**समीरण**¹—संज्ञा पुं० [स०] १ वायु। हवा। २ गंध तुलसी। मरुआ। ३ रास्ता चलनेवाला। पथिक। बटोही। ४. प्रेरणा। ५. श्वास। सास (को०)। ६ शरीरस्थ प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान नामक पाँच वायु (को०)। ७ पाँच की सख्या (को०)। ८ वायु देवता (को०)। ९ भेजना। प्रेषण (को०)।

**समीरण**²—वि० गतिशील या प्रेरित करनेवाला। उद्दीप्त करनेवाला (को०)।

**समीरसूनु**—संज्ञा पुं० [स०] वायुपुत्र। हनुमान। उ०—राम की रजाय तें रसायनी समीरसूनु उतरि पयोधि पार सोधि सरवाक सो।—तुलसी ग्र०, पृ० १७१।

**समीरित**—वि० [सं०] १ क्षुब्ध। उत्प्रेरित। २ उच्चारित (शब्द या स्वर)।

**समीसर(ु)**†—संज्ञा पुं० [स० शनैश्चर, हिं० सनीचर] शनैश्चर। शनि। उ०—रा० रू०, पृ० २७२।

**समीहन**¹—संज्ञा पुं० [स०] विष्णु का एक नाम।

**समीहन**²—वि० लालायित। ईर्ष्यालु। उत्सुक (को०)।

**समीहा**—संज्ञा स्त्री० [स०] १ उद्योग। प्रयत्न। चेष्टा। कोशिश। २. इच्छा। ख्वाहिश। ३ अनुसधान। तलाश। जाँच पड़ताल।

**समीहित**¹—वि० [स०] अभिलषित। आकांक्षित। इच्छित। २. प्रारभ किया हुआ। शुरू किया हुआ। ३ जिसके लिये चेष्टा या प्रयत्न किया गया हो (को०)।

**समीहित**²—संज्ञा पुं० अभिलाषा। आकाक्षा। स्पृहा। २. प्रयत्न। कोशिश। चेष्टा (को०)।

समुंद(पु)—संज्ञा पुं० [स० समुद्र] समुद्र ।

समुदन—संज्ञा पुं० [स० समुन्दन] १ गीलापन । सीलन । तरी । २ पूरी तरह आर्द्र या तर होना [को०] ।

समुदर—संज्ञा पुं० [स० समुद्र] दे० 'समुद्र' ।

समुदरफल—संज्ञा पुं० [हिं० समुदर+फल] मझोले आकार का एक प्रकार का वृक्ष । इजर ।

विशेष—यह वृक्ष रुहेलखंड और अवध के जगलो मे झरनो के किनारे और नम जमीन पर होता है । बंगाल मे भी यह अधिकता से होता है और दक्षिण भारत मे लका तक पाया जाता है । कही कही लोग इसे शोभा के लिये बागो मे भी लगाते हैं । इसकी लकडी से प्राय नावे बनती है । औषध मे भी इसकी पत्तियो और छाल आदि का व्यवहार होता है ।

समुदरफूल—संज्ञा पुं० [हिं० समुदर+फूल] एक प्रकार का विधारा । वृद्धदारुक ।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यह मधुर, कसैला, शीतल और कफ, पित्त तथा रुधिरविकार को दूर करनेवाला और गर्भिणी की पीडा हटनेवाला होता है ।

समुदरसोख—संज्ञा पुं० [हिं० समुदर+सोखना] एक प्रकार का क्षुप जो प्राय सारे भारत मे थोडा बहुत पाया जाता है ।

विशेष—समुदरसोख के पत्ते तीन चार अगुल लबे, अडाकार और नुकीले होते है । इसकी डालियो के अत मे छोटे छोटे बीज होते हैं । वैद्यक मे यह वातकारक, मलरोधक, पित्तकारक तथा कफकारक कहा गया है ।

समुक्त—वि० [स०] १ जिसे कहा गया हो । उक्त । कथित । २ जिसकी लानत मलामत की गई हो । तिरस्कृत । भर्त्सित । निंदित [को०] ।

समुक्षण—संज्ञा पुं० [स०] १ सीचने या जल आदि छिडकने की क्रिया । तरबतर करना । २ नाँखना । ढुलकाना । गिराना [को०] ।

समुक्षित—वि० [स०] १ अच्छी तरह छिडका या सीचा हुआ । तर किया हुआ । २ जिसे उत्तेजना या बढावा दिया गया हो । उत्साहित [को०] ।

समुख¹—संज्ञा पुं० [स०] वह जो अच्छी तरह बातें करना जानता हो । वाग्मी । वाक्पटु ।

समुख²—वि० १ भाषणपटु । २ बकवादी । बातूनी । ३ मुखवाला । मुख-युक्त [को०] ।

समुचित—वि० [सं०] १ यथेष्ट । उचित । योग्य । ठीक । वाजिब । २ जैसा चाहिए, वैसा । उपयुक्त । जैसे,—आपने उनकी बातो का समुचित उत्तर दिया । ३ जो रुचि या विचार के अनुकूल हो । जो पसद हो ।

समुच्च—वि० [स०] जो बहुत ऊँचा हो [को०] ।

समुच्चय—संज्ञा पुं० [स०] १ बहुत सी चीजो का एक मे मिलना । समाहार । मिलन । २ समूह । राशि । ढेर । ३ साहित्य मे एक प्रकार का अलकार जिसके दो भेद माने गए है । एक तो वह जहाँ आश्चर्य, हर्ष, विषाद आदि बहुत से भावो के एक साथ उदित होने का वर्णन हो । जैसे,—हे हरि तुम बिनु राधिका सेज परी अकुलाति । तरफराति, तमकति, तचति, सुसकति, सूखी जाति । दूसरा वह जहाँ किसी एक ही कार्य के लिये बहुत से कारणो का वर्णन हो । जैसे,—गगा गीता गायत्री गनपति गरुड गोपाल । प्रात काल जे नर भजै ते न परै भव-जाल । ४ वाक्य या शब्दो का समाहार । शब्दो का परस्पर मिलन या योग (को०) । ५ कौटिल्य के मत से वह आपत्ति जिसमे यह निश्चय हो कि इस उपाय के अतिरिक्त और उपायो से भी काम हो सकता है ।

समुच्चयन—संज्ञा पुं० [स०] बहुत सी चीजो का एक मे समाहार करना । एकत्र करना [को०] ।

समुच्चयालकार—संज्ञा पुं० [स० समुच्चयालङ्कार] समुच्चय नामक अलकार । दे० 'समुच्चय'—३ ।

समुच्चयोपमा—संज्ञा स्त्री० [स०] समुच्चयालकार से बनी उपमा [को०] ।

समुच्चर—संज्ञा पुं० [स०] १ एक साथ आना जाना । २ ऊपर की ओर उठना या चढना । आरोह । ३ लाँघ जाना । पार हो जाना (को०) ।

समुच्चार—संज्ञा पुं० [स०] १ स्पष्ट बोलना । उच्चारण करना । २ विसर्जन । त्याग [को०] ।

समुच्चित—वि० [सं०] १. ढेर लगाया हुआ । राशि के रूप मे रखा हुआ । २ एकत्र किया हुआ । जमा किया हुआ । सगृहीत । ३ क्रम से लगाया हुआ (को०) ।

समुच्छन्न—वि० [स०] १ खुला हुआ । नग्न । अनावृत । २ उद्ध्वस्त । विनष्ट । तितर बितर किया हुआ [को०] ।

समुच्छित्ति—संज्ञा स्त्री० [स०] १. पूर्णत उच्छेद या उत्पाटन । २. ध्वस । नाश । बरबादी ।

समुच्छिन्न—वि० [स०] १ जड से उखाडा हुआ या उत्पाटित । पूर्णत नष्ट या बर्बाद किया हुआ । २ तार तार । फटा हुआ [को०] ।

यौ०—समुच्छिन्न वासन = (१) जिसके वस्त्र फटे हुए या उच्छिन्न हो । (२) जिसकी वासना या भ्रम दूर हो गया हो ।

समुच्छेद—संज्ञा पुं० [स०] १ जड से उखाडना । उन्मूलन । २ ध्वस । नाश । बरबादी ।

समुच्छेदन—संज्ञा पुं० [स०] १ जड से उखाडना । २ नष्ट करना । बरबाद करना ।

समुच्छ्रय—संज्ञा पुं० [स०] १ उत्तुगता । ऊँचाई । २ वैर । विरोध । शत्रुता । ३ सग्रह । सचय । ढेर । ४ युद्ध । लडाई । ५ पहाड । पर्वत । ६. वृद्धि । विकास । ७ जन्म । (बौद्ध) । ८ ऊपर उठना । उत्थान । ९ उच्च पद [को०] ।

समुच्छ्राय—स० पुं० [स०] १ ऊँचाई । उच्चता । २ उन्नति । उत्थान । ३ बढती । वृद्धि [को०] ।

समुच्छ्रित—वि० [स०] १ ऊँचा । उन्नत । उठा हुआ । २ शक्तिशाली । ३ लहरें लेता हुआ । ४ ऊपर किया या उठाया हुआ [को०] ।

समुच्छ्रिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] उन्नति। बढ़ती। वृद्धि [को०]।

समुच्छ्वसित—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसने गंभीर एवम् दीर्घ श्वास छोड़ा हो। २ गहरी साँस [को०]।

समुच्छ्वास—संज्ञा पुं० [सं०] दीर्घ श्वास। लंबी साँस [को०]।

समुज्ज्वल—वि० [सं०] खूब उज्ज्वल। चमकता हुआ।

समुज्जृंभण—संज्ञा पुं० [सं० समुज्जृम्भण] १ जँभाई लेना। २ ऊपर की ओर बढ़ना। निकलना। ३ प्रयत्न करना [को०]।

समुज्झित¹—वि० [सं०] १ छोड़ा हुआ। परित्यक्त। २ गया हुआ। ३ मुक्त [को०]।

समुज्झित²—संज्ञा पुं० परित्याग [को०]।

समुझ(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० समझ] दे० 'समझ'।

विशेष—इसके यौगिक और क्रियाओं आदि के लिये दे० 'समझ' शब्द के यौगिक और क्रियाएँ।

समुझना—क्रि० अ० [सं० सम्यक् ज्ञान] दे० 'समझना'। उ०—जाको बालविनोद समुझि जिय डरत दिवाकर भोर को। —तुलसी ग्रं०।

समुझनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० समझना] समझने की क्रिया या भाव।

समुझाना—क्रि० स० [हिं० समझना] दे० 'समझाना'। उ०—पुनि रघुपति बहु विधि समुझाए। लै पादुका अवधपुर आए। —मानस, ७।६५।

समुत्कंटकित—वि० [सं० समुत्कण्टकित] जिसके रोएँ खड़े हो गए हों। रोमहर्ष से युक्त।

समुत्कंठा—संज्ञा स्त्री० [सं० समुत्कण्ठा] तीव्र इच्छा। गहरी चाह या लालसा [को०]।

समुत्क—वि० [सं०] अत्यंत उत्सुक। लालायित [को०]।

समुत्कट—वि० [सं०] १ उत्तुंग। उन्नत। ऊँचा। २ अत्यंत। अत्यधिक। प्रगाढ़। ३ महान्। गौरवयुक्त। ४ अत्यधिक। अनगिनत [को०]।

समुत्कर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ आत्म उन्नति। अपना उत्कर्ष। अपनी संपन्नता या वृद्धि। २ गौरव। ३ (आभूषण आदि) उतार कर एक ओर रख देना [को०]।

समुत्कीर्ण—वि० [सं०] १ भली भाँति उत्कीर्ण। २ छेदा हुआ। छिद्रित [को०]।

समुत्क्रम—संज्ञा पुं० [सं०] १ ऊपर उठना। २ प्रतिबंध को न मानना। सीमा का अतिक्रमण। हद पार करना [को०]।

समुत्क्रोश—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुरर नाम का पक्षी। २ जोर से चिल्लाना (को०)। ३ भारी कोलाहल (को०)।

समुत्तेजक—वि० [सं०] उत्तेजना करनेवाला। जो उत्तेजित करे [को०]।

समुत्तेजन—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तेजित करने की क्रिया। बढ़ावा या उत्तेजना देना [को०]।

समुत्थ—वि० [सं०] १ उठा हुआ। उन्नत। २ उत्पन्न। जात। घटित। उद्भूत।

समुत्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १ उठने की क्रिया। २ उत्पत्ति। ३ आरंभ। ४ रोग का निदान या निर्णय। ५ पुनर्जीवन प्राप्त करना। जीवित होकर पुनः उठना। रोग का पूरी तरह शांत होना। ६ परिश्रम। उद्यम। उद्योग (को०)। ७ वृद्धि। विकास (को०)। ८ उत्तोलन। फहराना। जैसे,—ध्वजा, पताका (को०)। ९ (नाभि का) उभड़ना। फूलना (को०)।

समुत्थापक वि० [सं०] जगाने या उठानेवाला। उत्थापन करनेवाला [को०]।

समुत्थित—वि० [सं०] १ एक साथ उठा हुआ। जैसे,—समुत्थित धूलि। २ अत्यंत ऊँचा। जैसे,—समुत्थित शैल शिखर। ३ एकत्रित। घनीभूत। जैसे,—बादल। ४ उद्यत। प्रस्तुत। ५ जो फूला या सूज आया हो। ६ जो स्वास्थ्यलाभ कर चुका हो। ७ उत्पन्न। जात। उद्भूत [को०]।

समुत्पतन—संज्ञा पुं० [सं०] १ उड़ना। ऊपर उठना। २ प्रयत्न। कोशिश। चेष्टा [को०]।

समुत्पत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उत्पत्ति। पैदाइश। २. जड़। मूल। ३ होना। घटित होना [को०]।

समुत्पन्न—वि० [सं०] उत्पन्न। उद्भूत। घटित [को०]।

समुत्परिवर्त्रिम—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के अनुसार बेचे हुए पदार्थों में चालाकी से दूसरा पदार्थ मिला देना [को०]।

समुत्पाट—संज्ञा पुं० [सं०] १ उत्पाटन। उन्मूलन। २ अलगाव। पृथक्करण [को०]।

समुत्पात—संज्ञा पुं० [सं०] संकट की सूचना देनेवाला उपद्रव [को०]।

समुत्पादन—संज्ञा पुं० [सं०] उत्पादन करना। उत्पन्न करना। पैदा करना [को०]।

समुत्पिंज¹—वि० [सं० समुत्पिञ्ज] अत्यंत घबराया हुआ [को०]।

समुत्पिंज²—संज्ञा पुं० १ इतस्ततः अस्तव्यस्त या तितर बितर हुई सेना। २ भारी अव्यवस्था [को०]।

समुत्पिंजल, समुत्पिंजलक—वि०, संज्ञा पुं० [सं० समुत्पिञ्जल, समुत्पिञ्जलक] दे० 'समुत्पिंज' [को०]।

समुत्पुंसन—संज्ञा पुं० [सं०] अपनयन। दूरीकरण [को०]।

समुत्सन्न—वि० [सं०] पूरी तौर से उच्छिन्न। विनष्ट। ध्वस्त [को०]।

समुत्सर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १ छोड़ना। त्याग। २ देना। प्रदान करना। ३ मल त्याग। ४ उत्सर्ग करना। निर्गमन। जैसे,—पुवीर्य [को०]।

समुत्सर्पण—संज्ञा पुं० [सं०] आगे बढ़ना। अग्रसरण [को०]।

समुत्सव—संज्ञा पुं० [सं०] बृहत् उत्सव। बड़ा जलसा [को०]।

समुत्सारण—संज्ञा पुं० [सं०] १ भगाना। हाँक देना। २ पीछे लगना। दौड़ाना। ३ हाँके का शिकार करना [को०]।

समुत्साह—संज्ञा पुं० [सं०] उत्साह या इच्छाशक्ति [को०]।

समुत्सुक—वि० [सं०] १ अत्यंत बेचैन। आतुर। अधीर। २ उत्कंठित। उत्सुक। ३ दुःखपूर्ण। शोकपूर्ण। खेदजनक [को०]।

समुत्सेध—संज्ञा पुं० [सं०] १ ऊँचाई। उत्तुंगता। २ मोटापा। स्थूलता। ३ घनता। सांद्रता [को०]।

समुदंत—वि० [सं० समुदन्त] १ कोर। तट या किनारे के ऊपर उठा २ जो उफनकर या उमडकर बहने की स्थिति मे हो।

समुद¹—वि० [सं०] आनंदयुक्त। हृष्ट। खुशी के साथ। प्रसन्नता युक्त। [को०]।

समुद(पु)²—संज्ञा पुं० [सं० समुद्र प्रा० समुद्द] समुद्र।

समुदस्त—वि० [सं०] खीचकर ऊपर लाया या उठाया हुआ। जैसे,—कूप से जल [को०]।

समुदय—संज्ञा पुं० [सं०] १ उठने या उदित होने की क्रिया। उदय। २ दिन। ३ युद्ध। समर। लडाई। ४ ज्योतिष मे लग्न। ५ सूर्य का उगना (को०)। ६ समुच्चय। ढेर (को०)। ७ समिश्रण। मेल (को०)। ८ राजस्व (को०)। ९ प्रयत्न। चेष्टा (को०)। १० सेना का पिछला भाग (को०)। ११ वित्त। धन (को०)। १२ उत्पत्ति का हेतु (को०)। १३ नक्षत्रोदय (को०)।

समुदय²—वि० समस्त। सब। कुल।

समुदाइ, समुदाई(पु)—संज्ञा पुं० [सं० समुदाय] समूह। समुदाय। उ०—(क) राकापति पोडस उअहि तारागन समुदाइ। सकल गिरिन्ह दव लाइअ बिनु रबि राति न जाइ।—मानस, ७।७८। (ख) काटत बढहि सीस समुदाई।—मानस, ६।१०१।

समुदागम—संज्ञा पुं० [सं०] पूर्ण ज्ञान [को०]।

समुदाचार—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिष्टाचार। भलमनसहत का व्यवहार। सदाचार। २ नमस्कार, प्रणाम आदि। अभिवादन। ३ आशय। अभिप्राय। मतलब।

समुदानय—संज्ञा पुं० [सं०] एक साथ लाना। साथ लाना [को०]।

समुदाय—संज्ञा पुं० [सं०] १ समूह। ढेर। २ झुंड। गरोह। जैसे,—विद्वानो का समुदाय। ३ युद्ध। समर। लडाई। ४ पोछे की ओर की सेना। ५ उदय। ६ उन्नति। तरक्की। ७ सयोग (को०)। ८ शरीर के तत्वो का समाहार (को०)। ९ एक नक्षत्र (को०)।

समुदायवाचक—वि० [सं०] वस्तुओ के सग्रह को प्रकट करनेवाला शब्द [को०]।

समुदायशब्द—संज्ञा पुं० [सं०] सग्रह की अभिव्यक्ति करनेवाला शब्द [को०]।

समुदायि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० समुदाय] झुंड। समूह। गिरोह।

समुदाव—संज्ञा पुं० [सं० समुदाय] दे० 'समुदाय'। उ०—रची एक सब गुनिन को, वर विरचि समुदाव।—केशव (शब्द०)।

समुदाहरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ घोषणा करना। २ निदर्शन। उदाहरण देना [को०]।

समुदाहार—संज्ञा पुं० [सं०] बातचीत। वार्तालाप [को०]।

समुदित—वि० [सं०] १ उठा हुआ। २ उन्नत। ३ उत्पन्न। जात। ४ एकत्रित। सचित (को०)। ५ अन्वित। युक्त। सज्जित (को०)। ६ जो राजी या सहमत हो (को०)। ७ प्रचलित (को०)। ८ जिसमे बात की गई हो (को०)।

समुदीरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ बोलना। कहना। उच्चारण करना। २ दुहराना। बार बार करना।

समुदीर्ण—वि० [सं०] १ दीप्तिमान्। अत्यत चमकदार। २ उन्नत [को०]।

समुद्ग¹—वि० [सं०] १ उगनेवाला। ऊपर चढनेवाला। २. पूर्णत व्यापक। ३ आवरण या ढक्कन से युक्त। ४ फलियो से युक्त [को०]।

समुद्ग²—संज्ञा पुं० १ ढका हुआ सदूक। मजूषा। गोल पेटारी। २ कली की नोक। ३ मदिर की गोल आकृति। ४ एक प्रकार की चमक [को०]।

समुद्गक—संज्ञा पुं० [सं०] १ ढक्कनदार पेटारी। २ एक प्रकार का छद [को०]।

समुद्गत—वि० [सं०] १ जो उदय हुआ हो। उदित। २ उत्पन्न। जात।

समुद्गम—संज्ञा पुं० [सं०] १ उठान चढाई। २ उगना। निकलना। ३ जन्म [को०]।

समुद्गार—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहुत अधिक वमन होना। ज्यादा कै होना। २ भाषण। कथन (को०)। ३ ऊपर खीचना। उठाना (को०)।

समुद्गिरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ वमन करना। कै करना। २ उगली हुई वस्तु। ३ उठाना। ऊपर करना [को०]।

समुद्गीत¹—संज्ञा पुं० [सं०] उच्च स्वर से गाया जानेवाला गीत [को०]।

समुद्गीत²—वि० १. उच्च स्वर से या भली भाँति गाया हुआ [को०]।

समुद्गीर्ण—वि० १ वमित। २ उक्त। कथित। ३ उठाया या ऊपर किया हुआ [को०]।

समुद्दंड—वि० [सं० समुद्दण्ड] १ ऊपर उठाया हुआ। जैसे,—हाथ। २ (लाक्ष०) खौफनाक। भयानक [को०]।

समुद्देश—संज्ञा पुं० [सं०] १ भली भाँति निर्देश करना। २. पूर्ण विवरण ३ अभिप्राय। ४ सिद्धात [को०]।

समुद्धत—वि० [सं०] १ ऊपर उठाया हुआ। उन्नीत। २ उत्तेजित। ३ घमडी। अभिमानी। ४ अशिष्ट। असभ्य। ढीठ। धृष्ट। ५. तीव्र। उग्र। प्रखर [को०]

समुद्धरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह अन्न जो वमन करने पर पेट से निकला हो। २ ऊपर की ओर उठाने, खीचने या बाहर निकालने की क्रिया। ३ उद्धार। ४ दूरीकरण। निवारण (को०)। ५ उच्छेद। उन्मूलन (को०)।

समुद्धर्ता—संज्ञा पुं० [सं० समुद्धर्तृ] १. वह जो ऊपर की ओर उठाता या निकालता हो। २ उद्धार करनेवाला। ३ ऋण चुकानेवाला। कर्ज अदा करनेवाला।

समुद्धार—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समुद्धरण'।

समुद्धृत—वि० [सं०] १ ऊपर उठाया हुआ। २ बचाया हुआ। मुक्त किया हुआ। ३. वमित। कै किया हुआ। ४. अपसा-

रित । हटाया हुआ । ५ विभक्त । ६ ग्रसित । ग्रस्त । ७ दुष्ट । उद्दंड (को०) ।

समुद्बोधन—संज्ञा पुं० [सं०] १ भली भाँति जगाना । होश में लाना । २ उत्साह देना । पुन जीवित करना (को०) ।

समुद्भव—संज्ञा पुं० [सं०] १ उत्पत्ति । जन्म । २ होम के लिये जलाई हुई अग्नि । ३ पुनरुद्धार । पुनरुज्जीवन (को०) ।

समुद्भूत—वि० [सं०] जात । उत्पन्न (को०) ।

समुद्भूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्पन्न होने की क्रिया । उत्पत्ति । जन्म ।

समुद्भेद संज्ञा पुं० [सं०] १ उत्पत्ति । २ विकास । ३ फाड़कर निकलना (को०) । ४ व्यक्त होना (को०) ।

समुद्यत—वि० [सं०] १ जो भली भाँति उद्यत हो । अच्छी तरह से तैयार । २ ऊपर को उठा या उठाया हुआ (को०) । ३ जो दिया गया हो । प्रदत्त (को०) । ४ किसी कार्य मे लगा हुआ । प्रवृत्त (को०) ।

समुद्यम—संज्ञा पुं० [सं०] १ उद्यम । चेष्टा । २ आरंभ । शुरू । ३ ऊपर करना । उठाना । (को०) । ४ आक्रमण । ५ तैयारी (को०) ।

समुद्योग—संज्ञा पुं० [सं०] १ सक्रिय चेष्टा । पूरी तैयारी । २ प्रयोग । व्यवहार । ३ ( कई कारणो का ) समवेत होना ।

समुद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जलराशि जो पृथ्वी को चारो ओर से घेरे हुए है और जो इस पृथ्वीतल के प्राय तीन चतुर्थांश मे व्याप्त है । सागर । अबुधि ।

विशेष—यद्यपि समस्त संसार एक ही समुद्र से घिरा हुआ है, तथापि सुभीते के लिये उसके पाँच बडे भाग कर लिए गए है, और इनमे से प्रत्येक भाग सागर या महासागर कहलाता है । पहला भाग जो अमेरिका से यूरोप और अफ्रिका के मध्य तक विस्तृत है, एटलांटिक समुद्र ( सागर या महासागर भी ) कहलाता है । दूसरा भाग जो अमेरिका और एशिया के मध्य मे है, पैसिफिक या प्रशात समुद्र कहलाता है । तीसरा भाग जो अफ्रिका से भारत और आस्ट्रेलिया तक है, इंडियन या भारतीय समुद्र हिंद महासागर कहलाता है । चौथा समुद्र जो एशिया, यूरोप और अमेरिका, उत्तर तथा उत्तरी ध्रुव के चारो ओर है, आर्कटिक या उत्तरी समुद्र कहलाता है और पाँचवा भाग जो दक्षिणी ध्रुव के चारो ओर है, एटार्कटिक या दक्षिणी समुद्र कहलाता है । परतु आजकल लोग प्राय उत्तरी और दक्षिणी ये दो ही समुद्र मानते है, क्योकि शेष तीनो दक्षिणी समुद्र से बिलकुल मिले हुए हैं, दक्षिण की ओर उनकी कोई सीमा नही है । समुद्र के जो छोटे छोटे टुकडे स्थल मे अदर की ओर चले जाते है, वे खाडी कहलाते हैं । जैसे,—बगाल की खाडी । समुद्र की कम से कम गहराई प्राय बारह हजार फुट और अधिक से अधिक गहराई प्राय तीस हजार फुट तक है । समुद्र मे जो लहरे उठा करती है, उनका स्थल की ऋतुओ आदि पर बहुत कुछ प्रभाव पड़ता है । भिन्न भिन्न अक्षाशो मे समुद्र के ऊपरी जल का तापमान भी भिन्न होता है । कही तो वह ठढा रहता है, कही कुछ गरम और कही बहुत गरम । ध्रुवो के आसपास उसका जल बहुत ठढा और प्राय बरफ के रूप मे जमा हुआ रहता है । परतु प्राय सभी स्थानो मे गहराई की ओर जाने पर अधिकाधिक ठढा पानी मिलता है । गुण आदि की दृष्टि से समुद्र के सभी स्थानो का जल बिलकुल एक सा और समान रूप से खारा होता है । समुद्र के जल मे सब मिलाकर उन्तीस तरह के भिन्न भिन्न तत्व हैं, जिनमे क्षार या नमक प्रधान है । समुद्र के जल से बहुत अधिक नमक निकाला जा सकता है, परतु कार्यत अपेक्षाकृत बहुत ही कम निकाला जाता है । चद्रमा के घटने बढने का समुद्र के जल पर विशेष प्रभाव पडता है और उसी के कारण ज्वार भाटा आता है । हमारे यहाँ पुराणो मे समुद्र की उत्पत्ति के सबध मे अनेक प्रकार की कथाएँ दी गई हैं और कहा गया है कि सब प्रकार के रत्न समुद्र से ही निकलते है, इसी लिये उसे 'रत्नाकर' कहते हैं ।

पर्या०—समुद्र । अब्धि । अकूपार । पारावार । सरित्पति । उदन्वान् । उदधि । सिंधु । सरस्वान् । सागर । अर्णव । रत्नाकर । जलनिधि । नदीकात । नदीश । मकरालय । नीरधि । नीरनिधि । अबुधि । पाथोधि । निधि । इदुजनक । तिमिकोष । क्षीराब्धि । मितद्रु । वाहिनीपति । जलधि । गगाधर । तोयनिधि । दारद । तिमि । महाशय । वारिराशि । शैलशिविर । महीप्राचीर । कपति । पयोधि । नित्य । आदि आदि ।

२ किसी विषय या गुण आदि का बहुत बडा आगार । ३ बहुल बडी सख्या का वाचक शब्द (को० । ४ शिव का एक नाम (को०) । ५ चार की सख्या (को०) । ६ नक्षत्रो और ग्रहो की एक विशेष प्रकार स्थिति (को०) । ७ एक प्राचीन जाति का नाम ।

समुद्रकटक—संज्ञा पुं० [सं०] जलपोत । जहाज (को०) ।

समुद्रकफ—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्रफेन ।

समुद्रकाची—संज्ञा स्त्री० [सं० समुद्रकाञ्ची] पृथ्वी, जिसकी मेखला समुद्र है ।

समुद्रकाता—संज्ञा स्त्री० [सं० समुद्रकान्ता] १ नदी, जिसका पति समुद्र माना जाता है और जो समुद्र मे जाकर मिलती है । २ असवरग । पृक्का (को०) ।

समुद्रकुक्षि—संज्ञा स्त्री० [सं०] समुद्र का किनारा (को०) ।

समुद्रग[1]—वि० [सं०] १ समुद्र की ओर जानेवाला । २ समुद्री कार्य करनेवाला (को०) ।

समुद्रग[2]—संज्ञा पुं० १ माँझी । २ समुद्री व्यापारी (को०) ।

समुद्रगमन—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र का किनारा (को०) ।

समुद्रगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नदी जो समुद्र की ओर गमन करती है । २ गगा का एक नाम ।

समुद्रगामी—वि० [सं० समुद्रगामिन्] दे० 'समुद्र' ।

समुद्रगुप्त—संज्ञा पुं० [सं०] गुप्त राजवंश के एक बहुत बड़े, प्रसिद्ध वीर सम्राट् का नाम जिनका समय सन् ३३५ से ३७५ ई० तक माना जाता है।

विशेष—अनेक बड़े बड़े राज्यों को जीतकर गुप्त साम्राज्य हुगली से चंबल तक और हिमालय से नर्मदा तक विस्तृत था। पाटलिपुत्र में इनकी राजधानी थी, परंतु अयोध्या और कौशांबी भी इनकी राजधानियाँ थीं। इन्होंने एक बार अश्वमेध यज्ञ भी किया था।

समुद्रगृह—संज्ञा पुं० [सं०] १ ग्रीष्म ताप से त्राण के लिये जल के बीच में बना हुआ भवन। २ नहाने का कक्ष। स्नानगृह [को०]।

समुद्रचुलुक—संज्ञा पुं० [सं०] अगस्त्य मुनि जिन्होंने चुल्लुओं से समुद्र पी डाला था।

समुद्रज¹—वि० [सं०] समुद्र से उत्पन्न। समुद्रजात।

समुद्रज²—संज्ञा पुं० मोती, हीरा, पन्ना आदि रत्न जिनकी उत्पत्ति समुद्र से मानी जाती है।

समुद्रझाग—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्रफेन।

समुद्रतट, समुद्रतीर—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र का किनारा।

समुद्रदयिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी। दरिया।

समुद्रनवनीत—संज्ञा पुं० [सं०] १ अमृत। २ चंद्रमा।

समुद्रनवनीतक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समुद्रनवनीत'।

समुद्रनेमि, समुद्रनेमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

समुद्रपत्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी। दरिया।

समुद्रपर्यंत—वि० [सं० समुद्रपर्यन्त] जिसकी सीमा समुद्रतक हो। आसमुद्र [को०]।

समुद्रपात—संज्ञा पुं० [सं० समुद्र + हिं० पात (= पत्ता)] एक प्रकार की झाड़दार लता जो प्राय सारे भारत में पाई जाती है। समुदर का पत्ता। समुदरसोख।

विशेष—इसके डंठल बहुत मजबूत और चमकीले होते हैं और पत्ते प्राय पान के आकार के होते हैं। पत्ते ऊपर की ओर हरे और मुलायम होते हैं। इन पत्तों में एक विशेष गुण यह होता है कि यदि घाव आदि पर इनका ऊपरी चिकना तल रखकर बाँधा जाय, तो वह घाव सूख जाता है। और यदि नीचे का रोएँदार भाग रखकर फोड़े आदि पर बाँधा जाय, तो वह पककर बह जाता है। वसंत के अंत में इसमें एक प्रकार के गुलाबी रंग के फूल लगते हैं जो नली के आकार के लंबे होते हैं। ये फूल प्राय रात के समय खिलते हैं और इनमें से बहुत मीठी गंध निकलती है। इसमें एक प्रकार के गोल, चिकने, चमकीले और हलके भूरे रंग के फल भी लगते हैं। वैद्यक के अनुसार इसकी जड़ बलकारक और आमवात तथा स्नायु संबंधी रोगों को दूर करनेवाली मानी गई है, और इसके पत्ते उत्तेजक, चर्मरोग के नाशक और घाव को भरनेवाले कहे गए हैं।

समुद्रफल—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष जो अवध, मध्य भारत आदि में नदियों के किनारे और तर भूमि में तथा कोंकण में समुद्र के किनारे बहुत अधिकता से पाया जाता है।

विशेष—यह प्राय ३० से ५० फुट तक ऊँचा होता है। इसकी लकड़ी सफेद और बहुत मुलायम होती है और कुछ भूरी या काली होती है। इसके पत्ते प्राय तीन इंच तक चौड़े और दस इंच तक लंबे होते हैं। शाखाओं के अंत में दो ढाई इंच के घेरे के गोलाकार सफेद फूल लगते हैं। फल भी प्राय इतने ही बड़े होते हैं जो पकने पर नीचे की ओर से चिपट या चौपहल हो जाते हैं। वैद्यक के अनुसार यह चरपरा, गरम, कड़वा और त्रिदोषनाशक होता है तथा सन्निपात, भ्रांति, सिर के रोग और भूतबाधा आदि को दूर करता है।

समुद्रफेन—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र के पानी का फेन या झाग जो उसके किनारे पर पाया जाता है और जिसका व्यवहार ओषधि के रूप में होता है। समुदरफेन। समुदर झाग।

विशेष—समुद्र में लहरें उठने के कारण उसके खारे पानी में एक प्रकार का झाग उत्पन्न होता है जो किनारे पर आकर जम जाता है। यही झाग समुद्रफेन के नाम से बाजारों में बिकता है। देखने में यह सफेद रंग का, खरखरा, हलका और जालीदार होता है। इसका स्वाद, फीका, तीखा और खारा होता है। कुछ लोग इसे एक प्रकार की मछली की हड्डियों का पंजर भी मानते हैं। वैद्यक के अनुसार यह कसैला, हलका, शीतल, सारक, रुचिकारक, नेत्रों को हितकारी, विष तथा पित्तविकार का नाशक और नेत्र तथा कंठ आदि के रोगों को दूर करनेवाला होता है।

समुद्रभव—वि० [सं०] जो समुद्र में उत्पन्न हो। समुद्रजात [को०]।

समुद्रमंडूकी—संज्ञा स्त्री० [सं० समुद्रमण्डूकी] पुराणानुसार एक दानव का नाम।

समुद्रमथन—संज्ञा पुं० [सं० समुद्रमन्थन] समुद्र को मथना।

समुद्रमथन—संज्ञा पुं० [सं०] १ सिंधु का मथन। समुद्रमथन। २ एक दैत्य का नाम [को०]।

समुद्रमहिषी—संज्ञा स्त्री० [सं०] समुद्र की पत्नी। गंगा नदी [को०]।

समुद्रमालिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी, जो समुद्र को अपने चारों ओर माला की भाँति धारण किए हुए है।

समुद्रमेखला—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी, जो समुद्र की मेखला के समान धारण किए हुए है।

समुद्रयात्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] समुद्र के द्वारा दूसरे देशों की यात्रा।

समुद्रयात्री—वि० [सं० समुयात्रिन्] समुद्रयात्रा करनेवाला।

समुद्रयान—संज्ञा पुं० [सं०] १ समुद्र यात्रा। २ समुद्र पर चलने की सवारी। जैसे,—जहाज, स्टीमर आदि।

समुद्रयायी—वि० [सं० समुद्रयायिन्] दे० 'समुद्रग' [को०]।

समुद्रयोषित्—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरिता। नदी [को०]।

समुद्ररसना—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

**समुद्रलवण**—संज्ञा पुं० [सं०] करकच नाम का लवण जो समुद्र के जल से तैयार किया जाता है। वैद्यक के अनुसार यह लघु, हृद्य, पित्तवर्धक, विदाही, दीपन, रुचिकारक और कफ तथा वात का नाशक माना जाता है।

**समुद्रवल्लभा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] समुद्र की पत्नी, नदी [को०]।

**समुद्रवसना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

**समुद्रवह्नि**—संज्ञा पुं० [सं०] बडवानल।

**समुद्रवास**—संज्ञा पुं० [सं० समुद्रवासस्] अग्नि।

**समुद्रवासी**—संज्ञा पुं० [सं० समुद्रवासिन्] १ वह जो समुद्र में रहता हो। २ वह जो समुद्र के तट पर रहता हो।

**समुद्रवेला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सागर की तरंग। समुद्र की लहर। २ समुद्रतट। सागरतट। ३ ज्वार भाटा [को०]।

**समुद्र-व्यवहारी**—संज्ञा पुं० [सं० समुद्रव्यवहारिन्] वह जो समुद्रयात्रा करके व्यापार करता है। समुद्री व्यापारी [को०]।

**समुद्रशुक्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] समुद्र की सीपी। समुद्रोत्पन्न सीपी।

**समुद्रसार**—संज्ञा पुं० [सं०] मोती।

**समुद्रसुभगा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा।

**समुद्रशोष**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समुद्रपात'।

**समुद्रस्थली**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम जो समुद्र के तट पर था।

**समुद्रांत**[1]—संज्ञा पुं० [सं० समुद्रान्त] १ समुद्र का किनारा। २ जातीफल। जायफल।

**समुद्रांत**[2]—वि० जो समुद्र तक विस्तृत हो।

**समुद्रांता**—संज्ञा स्त्री० [सं० समुद्रान्ता] १ दुरालभा। २ कपास। कर्पासी। ३ पृक्का। ४ जवासा। ५ पृथ्वी, जो समुद्र तक विस्तृत है (को०)।

**समुद्रांबरा**—संज्ञा स्त्री० [सं० समुद्राम्बरा] पृथ्वी।

**समुद्रा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शमी। २ कचूर (को०)।

**समुद्राभिसारिणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह कल्पित देवबाला जो समुद्रदेव की सहचरी मानी जाती है।

**समुद्रायणा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।

**समुद्रारु**—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुंभीर नामक जलजंतु। २ सेतबंध। ३ एक प्रकार की मछली जिसे तिमिंगिल कहते हैं।

**समुद्रार्था**—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।

**समुद्रावरणा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

**समुद्रावरोहण**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की समाधि। समाधि का एक ढंग [को०]।

**समुद्रिय**—वि० [सं०] १ समुद्र संबंधी। समुद्र का। २ समुद्र से उत्पन्न। समुद्रजात। ३ एक प्रकार का वृत्त (को०)।

**समुद्री**—वि० [सं० समुद्रिय] १ दे० 'समुद्रिय'। २ जो समुद्र की ओर से आता हो। जैसे,—वायु। ३ जो समुद्रयान द्वारा की जाय। जैसे,—यात्रा। ३. जलसेना संबंधी।

**समुद्रीय**—वि० [सं०] समुद्र संबंधी। समुद्र का। समुद्रिय।

**समुद्रोन्मादन**—संज्ञा पुं० [सं०] कार्त्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

**समुद्र्य**—वि० [सं०] दे० 'समुद्रीय' [को०]।

**समुद्वह**—वि० [सं०] १ श्रेष्ठ। उत्तम। बढ़िया। २ वहन करनेवाला। ३ नीचे ऊपर जानेवाला (को०)।

**समुद्वाह**—संज्ञा पुं० [सं०] १ विवाह। शादी। पाणिग्रहण। २ धारण करना। ऊपर उठाना (को०)।

**समुद्वाहित**—वि० [सं०] ऊपर उठाया हुआ या धारण किया हुआ।

**समुद्वेग**—संज्ञा पुं० [सं०] १ घबड़ाहट की स्थिति। बेचैनी। २ डर। भय। त्रास [को०]।

**समुन्न**—वि० [सं०] १ आर्द्र। गीला। २ गंदा। मलिन [को०]।

**समुन्नत**[1]—वि० [सं०] १ जिसकी यथेष्ट उन्नति हुई हो। खूब बढ़ा हुआ। २ बहुत ऊँचा। ३ ऊपर उठाया हुआ (को०)। ४ गौरवान्वित (को०)। ५ अभिमानी। घमंडी। गर्वयुक्त (को०)। ६ खरा। सच्चा। ७ जो आगे की ओर बढ़ा या निकला हो।

**समुन्नत**[2]—संज्ञा पुं० वास्तु विद्या के अनुसार एक प्रकार का स्तंभ या खंभा।

**समुन्नति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ यथेष्ट उन्नति। काफी तरक्की। २ महत्व। बड़ाई। ३ उच्चता। ४. श्रेष्ठ पद या ओहदा। उच्च पद (को०)। ५ ऊपर की ओर करना या उठाना (को०)। ६ घमंड। अभिमान (को०)।

**समुन्नद**—संज्ञा पुं० [सं०] रामायण के अनुसार एक राक्षस का नाम।

**समुन्नद्ध**[1]—वि० [सं०] १ जो अपने आपको बड़ा पंडित समझता हो। २ अभिमानी। घमंडी। ३ उत्पन्न। उद्भूत। जात। ४ उन्नत। उच्छ्रित (को०)। ५ सूजा हुआ। फूला हुआ (को०)। ६ पूर्ण। पूरा (को०)। ६ विकृत। बुरे चेहरे मोहरे का (को०)। ८ बंधनमुक्त। ९ सर्वोत्कृष्ट। सर्वश्रेष्ठ। सर्वप्रधान (को०)।

**समुन्नद्ध**[2]—संज्ञा पुं० प्रभु। स्वामी। मालिक।

**समुन्नमन**—संज्ञा पुं० [सं०] उठाना। चढ़ाना। जैसे, भौंह का [को०]।

**समुन्नय**—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राप्ति। लाभ। २ वृत्तांत। घटना। ३ नतीजा। निष्कर्ष। ४ अनुमान [को०]।

**समुन्नयन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ ऊपर की ओर उठाने या ले जाने की क्रिया। २ प्राप्ति। लाभ।

**समुन्नाद**—संज्ञा पुं० [सं०] एक साथ होनेवाली चिल्लाहट [को०]।

**समुन्नीत**—वि० [सं०] उन्नत किया हुआ। ऊपर किया हुआ [को०]।

**समुन्मीलन**—संज्ञा सं० [सं०] १ खोलना या खुलना। जैसे,—फल की पंखुड़ियों या नेत्र की पलकों का। २ फैलाना। ३ दिखाना। प्रदर्शन।

समुन्मीलित—वि॰ [सं॰] १ खोला हुआ। खुला हुआ। २ फैलाया हुआ। ३ दिखाया हुआ। प्रदर्शित [को॰]।

समुन्मूलन—संज्ञा पुं॰ [सं॰] जड़ से उखाड फेंकना। बिल्कुल नष्ट कर देना [को॰]।

समुपकरण—संज्ञा पुं॰ [सं॰] उपकरण। साधन। सामान। सामग्री। उ॰—पार कर जीवन प्रलोभन, समुपकरण।—अपरा, पृ॰ २२।

समुपक्रम—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ प्रारंभ। शुरुग्रात। २ दवा शुरू करना। आरंभिक चिकित्सा [को॰]।

समुपगम—संज्ञा पुं॰ [पुं॰] लगाव। संपर्क। पहुंच [को॰]।

समुपचार—संज्ञा पुं॰ [सं॰] आदर समान करना। ध्यान रखना या देना।

समुपद्रुत—वि॰ [सं॰] जिसे आक्रांत किया गया हो। रौंदा हुआ [को॰]।

समुपनयन—संज्ञा पुं॰ [सं॰] पास ले जाना [को॰]।

समुपभुक्त—वि॰ [सं॰] १ खाया हुआ। भोग किया हुआ। २ कृत मैथुन [को॰]।

समुपभोग—संज्ञा पुं॰ [सं॰] उपभोग करना। व्यवहार मे लाना। २ मैथुन। संभोग। ३ खाना। भक्षण [को॰]।

समुपयुक्त—वि॰ [सं॰] १ ठीक और वाजिब। उचित। उपयुक्त। २ भोगा हुआ। व्यवहृत। भुक्त [को॰]।

समुपवेश—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ विनोद। तोष। आनंद। २ एक साथ बैठना। ३ आदर। सत्कार अभ्यर्थना [को॰]।

समुपवेशन—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ अच्छी तरह बैठने की क्रिया। २ आसन (को॰)। ३ अभ्यर्थना। ४ भवन। आवास। निवास।

समुपष्टंभ—संज्ञा पुं॰ [सं॰ समुपष्टम्भ] सहारा। आश्रय [को॰]।

समुपस्तंभ—संज्ञा पुं॰ [सं॰ समुपस्तम्भ] आश्रय। भरोसा। सहारा।

समुपस्था, समुपस्थान—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ पहुँच। प्रवेश। २ निकटता। सामीप्य। ३ घटित होना। आ पडना। घटना [को॰]।

समुपस्थित—वि॰ [सं॰] १ पहुँचा हुआ। उपस्थित। २ बैठा हुआ। ३ व्यक्त। जाहिर। ४ समय के अनुकूल। ५ हिस्से मे आया हुआ। जो आ पडा हो। प्राप्त। ६ सन्नद्ध। तैयार। ७ जिसका निश्चय कर लिया गया हो [को॰]।

समुपस्थिति—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ उपस्थिति। २ नजदीक होने का भाव। ३ पहुँच। ४ घटित होने की क्रिया [को॰]।

समुपहत—वि॰ [सं॰] खंडित। जिसे काट दिया गया हो। जैसे,—समुपहत सिद्धांत [को॰]।

समुपहव—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ होम आदि के द्वारा देवताओं का आमंत्रण करना। २ बहुत से लोगों को एक साथ आमंत्रित करना।

समुपह्वर—संज्ञा पुं॰ [सं॰] शरण गृह। छिपने का स्थान। गुप्त स्थान [को॰]।

समुपागत—वि॰ [सं॰] पास आया या पहुँचा हुआ। प्राप्त [को॰]।

समुपार्जन—संज्ञा पुं॰ [सं॰] सम्यक् अर्जन करना। एक साथ प्राप्त करना [को॰]।

समुपेत—वि॰ [सं॰] १ समवेत रूप से आगत। एकत्रित। २ पहुँचा हुआ। ३ सज्जित। युक्त। ४ आबाद। बसा हुआ [को॰]।

समुपेक्षक—वि॰ [सं॰] ध्यान न देनेवाला। उपेक्षा करनेवाला [को॰]।

समुपोढ—वि॰ [सं॰ समुपोढ] १ उन्नत। उत्थित। उठा हुआ। २ बढा हुआ। वृद्धि प्राप्त। ३ आकृष्ट। ४ नियंत्रित। रोका हुआ। ५ आरंभ किया हुआ [को॰]।

समुपोषक—वि॰ [सं॰] जो उपवास करता हो। उपवासी [को॰]।

समुल्लसित—वि॰ [सं॰] १ जो चमक रहा हो। उद्भासित। आभायुक्त। सुंदर। कांतिमान्। २ जो खेल रहा हो। क्रीडा करनेवाला। आनंद मनाता हुआ [को॰]।

समुल्लास—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [वि॰ समुल्लसित] १ उल्लास। आनंद। प्रसन्नता। खुशी। २ ग्रंथ आदि का प्रकरण या परिच्छेद।

समुल्लेख—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ उन्मूलन। उच्छेद। उत्पाटन। २ उत्खनन। उल्लेखन। ३ चर्चा। जिक्र।

समुहाँ[1]—वि॰ [सं॰ सम्मुख, प्रा॰ सम्मुह, हिं॰ सामुहें] १ सामने का। आगे का। २ सामना। सीधा।

समुहाँ[2]—क्रि॰ वि॰ सामने। आगे। उ॰—मरिवे को साहसु ककै बढै विरह की पीर दौरति है समुहीं ससी सरसिज सुरभि समीर।—स॰ सप्तक, पृ॰ १०६।

समुहाना—क्रि॰ अ॰ [सं॰ सम्मुख, पुं॰हिं॰ सामुहे] सामने आना। समुख होना। उ॰—सबही त्यों समुहाति छिनु चलति सबनु दै पीठि। वाही त्यौं ठहराति यह कविलं नवी लौ दीठि।—बिहारी (शब्द॰)।

समुहैं—क्रि॰ वि॰ [हिं॰] सामने। आगे।

समूचा—वि॰ [सं॰ समुच्चय] [स्त्री॰ समूची] समग्र। संपूर्ण। सब का सब। कुल।

समूढ़—वि॰ [सं॰ समूढ] १ ढेर लगाया हुआ। २ एकत्र किया हुआ। संचित। संगृहीत। ३ पकडा हुआ। ४ भोगा हुआ। भुक्त। ५ जिसका विवाह हो चुका हो। विवाहित। ६ जो अभी उत्पन्न हुआ हो। सद्य जात। ७ संगत। ठीक। ८ ढँका हुआ। आवृत (को॰)। ९ सहित। युक्त (को॰)। ११ वक्र। झुका हुआ (को॰)। १२ निर्मल। स्वच्छ (को॰)। १३ संचालित किया हुआ। जिसका नेतृत्व किया गया हो (को॰)।

समूर[1]—संज्ञा पुं॰ [सं॰] एक प्रकार का मृग। शबर या साबर नामक हिरन।

समूर[2]—वि॰ [सं॰ समूल] दे॰ 'समूल'।

समूरक—संज्ञा पुं॰ [सं॰] सं॰ 'समूर'[1]।

समूरु, समूरुक—संज्ञा पुं॰ [सं॰] समूर मृग। सबर मृग।

समूल¹—वि० [सं०] १ जिसमें मूल या जड़ हो। २ जिसका कोई हेतु हो। कारण सहित।

समूल²—क्रि० वि० जड़ से। मूल सहित। जैसे,—किसी का कार्य समूल नष्ट कर देना।

समूह—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक ही तरह की बहुत सी चीजों का ढेर। राशि। २ समुदाय। झुंड। गरोह।

[illegible]—संज्ञा पुं० [सं०] दे० '[illegible]' [को०]।

समूहगंध—संज्ञा पुं० [सं० समूहगंध] १ मालिया नामक फूल। [illegible]। २ गंधबिलाव (को०)।

समूहन¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक साथ मिलाना। २ संग्रह। राशि। ३ समूह या राशि बनाना [को०]।

समूहन²—वि० १ बुहारनेवाला। २ एकत्र करनेवाला [को०]।

समूहनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] झाड़। बुहारी।

समूहहितवादी—संज्ञा पुं० [सं०] जनता के हित के साधन में तत्पर रहनेवाला। जनता का प्रतिनिधि।

विशेष—याज्ञवल्क्य ने लिखा है कि किसी स्थान का शासन धर्मज्ञ निर्लोभ और पवित्र समूहहितवादियों के हाथ में देना चाहिए।

समूह्य¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ यज्ञ की अग्नि। २ यज्ञाग्नि रखने के लिये बना हुआ स्थान [को०]।

समूह्य²—वि० १ तर्क करने के योग्य। ऊहा करने के योग्य। २ बुहारने योग्य (को०)।

समृत—संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] दे० 'स्मृति'। उ०—समृत पुराणां [illegible] न्यायादिक मतनेक।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० [illegible]।

यौ०—[illegible] = स्मृतिज्ञ। स्मृतियों का जानकार। उ०—[illegible] जग मांझ जेनाह। काजी मुल्ला [illegible] समृतवेनाह।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० [illegible]।

समृति—संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] दे० 'स्मृति'—उ०—पढ़त सुनत [illegible] निगम, आगम, समृति, पुरान।—मति० ग्रं०, पृ० ३६।

समृद्ध—वि० [सं०] १ जिसके पास बहुत अधिक संपत्ति हो। [illegible]। धनवान। २ उन्नत। [illegible]। ३ प्रसन्न। भाग्यशाली। [illegible]। ४ भरा पूरा। बढ़ा चढ़ा (को०)। ५ फलयुक्त। [illegible]। [illegible] (को०)। ७ पूर्णत विकसित (को०)। ८ [illegible] (को०)। ९ [illegible] (को०)।

समृद्ध²—संज्ञा पुं० महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम।

समृद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बहुत अधिक संपन्नता। ऐश्वर्य। अमीरी। २ [illegible]। ३ प्रभाव। ४ बहुलता। प्रचुरता (को०)। ५ प्रधानता। प्रभुता। सर्वोपरित्व (को०)। ६ अभिवृद्धि। वृद्धि। बढ़ती।

समृद्धी¹—संज्ञा पुं० [सं० समृद्धिन्] १ वह जो बार बार अपनी समृद्धि बढ़ाता रहता हो। २ उन्नतिशील। संपन्न व्यक्ति। भरा पूरा (को०)।

समृद्धी²—संज्ञा स्त्री० [सं० समृद्धि] दे० 'समृद्धि'।

समेटना—क्रि० स० [हिं० सिमटना] १ बिखरी हुई चीजों को इकट्ठा करना। २ अपने ऊपर लेना। जैसे,—किसी का सब समेटना। ३ बिछौना आदि लपेटना या तह करके रखना।

समेडी—संज्ञा स्त्री० [सं० समेडी] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

समेत¹—वि० [सं०] १ संयुक्त। मिला हुआ। २ साथ साथ आया हुआ। सह आगत (को०)। ३ निकट आया हुआ। पहुँचा हुआ (को०)। ४ सज्जित। युक्त (को०)। ५ संघृष्ट। संघर्षित। भिड़ा हुआ (को०)। ६ स्वीकृत। सहमत (को०)।

समेत²—अव्य० सहित। साथ।

समेत³—संज्ञा पुं० पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

समेव—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार मेरु के अंतर्गत एक पर्वत का नाम।

समेधन—संज्ञा पुं० [सं०] विकास। वृद्धि (को०)।

समेधित—वि० [सं०] १ अत्यधिक बढ़ा हुआ। प्रचुर। बहुत। प्रभूत। २ शक्तिशाली। मजबूत। ३ जुटा हुआ। मिला हुआ। संयुक्त (को०)।

समै, समैया, समो(पु)—संज्ञा पुं० [सं० समय] काल। अवसर। मौका। दे० 'समय'। उ०—(क) तुलसी तिन्ह नरिन्ह तेऊ भूरिभाग जेऊ मुनि कै सुचित तेहि समै समैहैं।—तुलसी ग्रं०, पृ० ३८२। (ख) देहि गारि लहकौरि समौ सुख पावहिं।—तुलसी ग्रं०, पृ० ५६।

समोखना(पु)—क्रि० स० [सं० सम्बोधन, सन्तोषण, पु० हिं० समोख] समझा कर कहना। जोर देकर कहना।

समोद—वि० [सं०] समुद। आनंदित। प्रसन्न। उ०—कुछ दिन रह गृह तू फिर समोद, बैठी नानी की स्नेह गोद।—अपरा, पृ०, १८३।

समोदक¹—वि० [सं०] जिसमें जल आधी मात्रा में हो। जिसमें आधा जल मिला हो (को०)।

समोदक²—संज्ञा पुं० मट्ठा। घोल (को०)।

समोध(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सम्बोध] संबोध। ज्ञान। उ०—दधी मु गाय वन व्याघ्र क्रोध। आयौ सु राज राजन समोध। कुरलाय करिय करना सुचैन। छंडाय राज राजन बलेन।—पृ० रा० ३।१६८।

समोधना(पु)—क्रि० स० [सं० सम्बोधन] बोध देना। समझाना बुझाना। प्रबोधन करना। ढाढस बधाना। उ०—नंद समाधत ताको चित्त। सब अदिष्ट बस होतु है मित्त।—नंद० ग्रं०, पृ० २३६।

समोना(पु)¹—क्रि० स० [हिं० समाना] १ समन्वित करना। एक में करना या मिलाना। २ समेटना। उ०—पूरन दया सद्गुरु

की होई। वश आपु मे लेहि समोई।—कवीर सा०, पृ० ९५५।

समोना(पु)[२]—क्रि० अ० [स० समुद] आनदित होना। प्रसन्न होना। अनुरक्त होना। उ०—जोति वरै साहेव के निसु दिन तकि तकि रहत समोई।—कवीर० श०, भा० ३, पृ० ६।

समोसा—सज्ञा पुं० [फा० सवोसह्] एक प्रकार का प्रसिद्ध व्यजन। सिंघाडा। तिकोना।

विशेष—यह मैदे से वनाया जाता है। मैदा गूँथ कर छोटी पतली रोटी की तरह वेल लेते है। इसी वेली हुई रोटी को वीच से काट कर दो अर्द्धवृत्त की शक्ल मे कर लेते हैं। फिर एक हिस्सा लेकर उसके बीच मसालेदार आलू मटर आदि भरकर तिकोने के आकार मे लपेट लेते है और घी या तेल मे छान लेते है। यह नमकीन और मीठा दोनो प्रकार का वनाया जाता है।

समोह—सज्ञा पुं० [स०] समर। युद्ध। लडाई।

समौ पु—सज्ञा पु० [स० समय, पु हिं० समउ] दे० 'समय'।

समौरिया†—वि० [हिं० सम + उमरिया] वरावर उम्रवाला। समवयस्क।

सम्मत्रण—सज्ञा पु० [स० सम्मन्त्रण] राय लेना। मत्रणा करना [को०]।

सम्मत्रणीय—वि० [स० सम्मन्त्रणीय] दे० सम्मत्र्य'।

सम्मत्र्य—वि० [स० सम्मन्त्रव्य] १ मत्रणा करने योग्य। २ भली भाँति मनन करने योग्य।

सम्मत्रित—वि० [स० सम्मन्त्रित] अच्छी तरह विचार किया हुआ। भली भाँति समझा वूझा हुआ [को०]।

सम्म—सज्ञा पुं० [अ०] विष। गरल [को०]।

सम्मग्न—वि० [स०] पूर्णत: निमग्न। डूवा हुआ। तल्लीन। खोया हुआ [को०]।

सम्मत[१]—सज्ञा पु० [स०] १ राय। समति। सलाह। २ अनुमति। ३ धारणा (को०)। ४ सावर्णि मनु का एक पुत्र (को०)।

सम्मत[२]—वि० १ जिसकी राय मिलती हो। सहमत। अनुमत। २ पसद। प्रिय (को०)। ३ सोचा विचारा हुआ (को०)। ४ समान। तुल्य (को०)। ५ समानित। प्रतिष्ठित (को०)। ६ युक्त। सहित (को०)।

सम्मति[१]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सलाह। राय। २ अनुमति। आदेश। अनुज्ञा। ३ मत। अभिप्राय। ४ सम्मान। प्रतिष्ठा। ५ इच्छा। वासना। ६ आत्मबोध। आत्मज्ञान। ७ सहमति। समर्थन (को०)। ८ प्रेम। स्नेह (को०)। ९ एक नदी का नाम (को०)।

सम्मति[२]—वि० [स० सम मति] समान मति या एक राय का।

सम्मत्त— वि० [स०] १ मतवाला। नशे मे धुत। २ जिसके गडस्थल से मद वहता हो (हाथी)। ३ जो आनदातिरेक से मस्त हो। आनदविह्वल (को०)।

सम्मद[१]—सज्ञा पुं० [स०] १ हर्ष। आमोद। आह्लाद। २ एक ऋषि (को०)। ३ एक प्रकार की मछली।

विशेष—विष्णुपुराण मे लिखा है कि यह मछली अधिक जल मे रहती है और वहुत वडी होती है। इसके बहुत बच्चे होते हैं।

सम्मद[२]—वि० सुखी। आनदित। हर्षयुक्त। प्रसन्न।

सम्मदी—वि० [स० सम्मदिन्] आनदयुक्त। प्रसन्न [को०]।

सम्मन—सज्ञा पुं० [अं० समन्स] अदालत का वह सूचनापत्र या आदेश पत्र जिसमे किसी को निर्दिष्ट समय पर अदालत मे उपस्थित या हाजिर होने की सूचना या आदेश लिखा रहता है। तलवीनामा। इत्तिलानामा। आह्वानपत्र।

क्रि० प्र०—आना।—देना।—निकलना।—निकलवाना।—जारी कराना।—जारी होना।—तामील होना।—तामील कराना।

सम्मर पु[१]—सज्ञा पु० [स० स्मर] दे० 'स्मर'। उ०—छुटि समाधि ऋषि नैन उघारे। अति सकोपि सम्मर उर मारे।—ह० रासो, पृ० २७।

सम्मर(पु)—सज्ञा पुं० [स० समर] युद्ध। रण। लडाई।

सम्मर्द—सज्ञा पु० [सं०] १ युद्ध। लडाई। २ समूह। भीड। ३ परस्पर का विवाद। लडाई झगडा। ४ रगड। घिसना। घर्षण (को०)। ५ कुचलना। रौंदना (को०)। ६ (लहरो की) टक्कर या मुठभेड।

सम्मर्दन—सज्ञा पुं० [स०] १ भली भाँति मर्दन करने का व्यापार। रौंदना। २ वसुदेव के पुत्रों मे एक पुत्र। ३ रगडना। घिसना। सघर्षण (को०)। ४ लडाई। युद्ध (को०)। ५ वह जो भली भाँति मर्दन करता हो। अच्छी तरह मर्दन करनेवाला।

सम्मर्दी—सज्ञा पुं० [स० सम्मर्दिन्] १ भली भाँति मर्दन करनेवाला। २ रगडने या घिसनेवाला।

सम्मर्शन—सज्ञा पु० [सं०] थपथपाना। सहलाने की क्रिया [को०]।

सम्मर्शी—वि० [स० सम्मर्शिन्] भले वुरे, सत् असत् का निर्णय कर सकनेवाला [को०]।

सम्मर्ष—सज्ञा पुं० [स०] मर्ष। सहन। धैर्य।

सम्महा—सज्ञा पु० [स० शुष्मा] अग्नि। आग। पावक। (डि०)।

सम्मा—सज्ञा स्त्री० [स०] सख्या, आकार आदि की तुल्यता या समानता। २ एक छद का नाम (को०)।

सम्मातृ -वि० [स०] जिसकी माता पतिव्रता हो। सती मातावाला।

सम्मातुर—वि० [सं०] सती साध्वी मातावाला। सन्मातुर [को०]।

सम्माद—सज्ञा पुं० [स०] १ नशा। मद। २ उन्माद। पागलपन।

सम्मान[१]—सज्ञा पुं० [स०] १ समादर। इज्जत। मान। गौरव। प्रतिष्ठा। २ माप। मान (को०)। ३ तुलना। समानता (को०)।

सम्मान[२]—वि० १ मान सहित। २ जिसका मान पूरा हो। ठीक मानवाला।

**सम्मूर्छनोद्भव**—संज्ञा पुं० [सं० सम्मूर्च्छनोद्भव] मछली, नक्र आदि जलजंतु [को०]।

**सम्मूर्छित**—वि० [सं० सम्मूर्च्छित] १. चेतनाहीन। बेहोश। २ घनीभूत। गाढा। ३ मिलाया हुआ। मिश्रित [को०]।

**सम्मृत**—वि० [सं०] जिसमे बिलकुल जान न हो। बेजान। मृत [को०]।

**सम्मृष्ट**—वि० [सं०] १ जिसका संशोधन भली भाँति हुआ हो। २ अच्छी तरह साफ किया हुआ। ३ भली भाँति झाडा बुहारा हुआ।

**सम्मेघ**—संज्ञा पुं० [सं०] वह मौसम जिसमे बादल घिर आए हो। घिरी घटाओ वाला दिन। मेघाच्छन्न दिन [को०]।

**सम्मेत, सम्मेद**—संज्ञा पु० [सं०] एक पर्वत का नाम।

**सम्मेलन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मनुष्यो का किसी निमित्त एकत्र हुआ समाज। २. जमावडा। जमघट। ३ मेल। मिलाप। संगम। ४ मिश्रण (को०)।

**सम्मोचित**—वि० [सं०] छोडा हुआ। मुक्त [को०]।

**सम्मोद**—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रीति। प्रेम। २ हर्ष। प्रसन्नता। आनंद। ३ सुगंध। महक (को०)।

**सम्मोदिक**—संज्ञा पुं० [सं०] साथी। सहचर [को०]।

**सम्मोह**—संज्ञा पुं० [सं०] १ मोह। प्रेम। २ भ्रम। संदेह। ३ मूर्च्छा। बेहोशी। ४ एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण मे एक तगण और एक गुरु होता है। ५ घबराहट। अव्यवस्था (को०)। ६ अज्ञान। मूर्खता (को०)। ८ आकर्षण। वशीकरण (को०)। ९ संग्राम। कोलाहल (को०)। १० ज्योतिष मे एक विशेष ग्रह योग (को०)।

**सम्मोहक**—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो मोह लेता हो। मोहक। लुभावना। २ एक प्रकार का सन्निपात ज्वर, जिसमे वायु अति प्रबल होती है। इसके कारण शरीर मे वेदना, कंप, निद्रानाश आदि होता है। ३ अचेत करनेवाला। संज्ञाहीन करनेवाला (को०)।

**सम्मोहन**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ मोहित करने की क्रिया। मुग्ध करना। २ वह जिसमे मोह उत्पन्न होता हो। मोहकारक। ३ प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र जिससे शत्रु को मोहित कर लेते थे। ४ कामदेव के पाँच बाणो मे एक बाण का नाम।

**सम्मोहन**[2]—वि० दे० 'सम्मोहक'।

**सम्मोहनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] माया [को०]।

**सम्मोहित**—वि० [सं०] १ वशीभूत। वश मे किया हुआ। २ घबडाया हुआ। ३ पथभ्रष्ट। हतबुद्धि। ४ अचेत किया हुआ। बेहोश (को०)।

**सम्यक्**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] समुदाय। समूह।

**सम्यक्**[2]—वि० १ पूरा। समस्त। सब। २ साथ जाने या रहनेवाला (को०)। ३ सही। युक्त। ठीक। उचित (को०)। ४ शुद्ध। सत्य। यथार्थ (को०)। ५ सुहावना। रुचिकर (को०)। ६ एकरूप (को०)।



**सम्यक्**[3]—क्रि० वि० १ सब प्रकार से। २ अच्छी तरह। भली-भाँति। उचित रूप से। सही ढंग से। ३ स्पष्ट रूप से (को०) ४ सम्मानपूर्वक। ससम्मान (को०)। ५ यथार्थत। वस्तुत। सचमुच (को०)।

**सम्यक्कर्मांत**—संज्ञा पु० [सं० सम्यक्कर्मान्त] सत्कार्य। अच्छा काम। सत्कर्म [को०]।

**सम्यक्चारित्र**—संज्ञा पु० [सं०] जैनियो के अनुसार धर्मत्रय मे से एक धर्म। बहुत ही धर्म तथा शुद्धतापूर्वक आचरण करना।

**सम्यक्ज्ञान**—संज्ञा पु० [सं०] जैनियो के धर्मत्रय मे से एक। न्याय-प्रमाण द्वारा प्रतिष्ठित सात या नौ तत्त्वो का ठीक ठीक और पूरा ज्ञान।

**सम्यक् दर्शन**—संज्ञा पु० [सं०] जैनियो के अनुसार धर्मत्रय मे से एक। रत्नत्रय, सातो तत्वो और आत्मा आदि मे पूरी पूरी श्रद्धा होना।

**सम्यक्दर्शी**—संज्ञा पुं० [सं० सम्यक्दर्शिन्] वह जिसे सम्यक्दर्शन प्राप्त हो।

**सम्यक्दृष्टि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सम्यक्दर्शन' [को०]।

**सम्यक्वृत्त**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कर्तव्य का ठीक ठीक पालन। अनवरत अभ्यास या उद्योग [को०]।

**सम्यक्पाठ**—संज्ञा पु० [सं०] शुद्ध उच्चारण। ठीक ठीक पढना [को०]।

**सम्यक्प्रणिधान**—संज्ञा पुं० [सं०] प्रगाढ समाधि [को०]।

**सम्यक्प्रयोग**—संज्ञा पुं० [सं०] उचित या उपयुक्त उपयोग। ठीक प्रयोग करना [को०]।

**सम्यक्प्रवृत्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्रियो की उचित प्रवृत्ति [को०]।

**सम्यक्प्रहाण**—संज्ञा पु० [सं०] ठीक प्रयत्न। उचित चेष्टा। (बौद्ध)।

**सम्यक्श्रद्धान**—संज्ञा पु० [सं०] ठीक विश्वास। उचित श्रद्धा [को०]।

**सम्यक् संबुद्ध**—संज्ञा पुं० [सं० सम्यक् सम्बुद्ध] [संज्ञा स्त्री० सम्यक् संबुद्धि] १ वह जिसे सब बातो का पूरा और ठीक ज्ञान प्राप्त हो। २ बुद्ध का एक नाम।

**सम्यक्संबोध**—संज्ञा पुं० [सं० सम्यक् सम्बोध] एक बुद्ध का नाम।

**सम्यक्समाधि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्धो के अनुसार एक प्रकार की समाधि।

**सम्यक्स्थिति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] साथ साथ रहने की स्थिति।

**सम्यक्स्मृति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] ठीक ठीक स्मरण। सही स्मृति [को०]।

**सम्यगवबोध**—संज्ञा पु० [सं०] उचित बोध। ठीक ज्ञान। सही समझ [को०]।

**सम्यगाजीव**—संज्ञा पु० [सं०] उचित रहन सहन।

**सम्याना** (पु)—संज्ञा पु० [फा० शामियाना] दे० 'शामियाना'।

**सम्यीची**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रशंसा। स्तुति। २ हरिनी। मृगी [को०]।

सम्रथ(पु)—वि० [स० समर्थ, हिं० समरथ] दे० 'समर्थ'।

सम्राज्ञी—संज्ञा स्त्री० [स०] १ सम्राट् की पत्नी। २ साम्राज्य की अधीश्वरी।

सम्राट्—संज्ञा पुं० [स० सम्राज्] वह बहुत बड़ा राजा जिसके अधीन बहुत से राजा महाराज आदि हो और जिसने राजसूय यज्ञ भी किया हो। महाराजाधिराज। शाहशाह।

सम्हरना, सम्हलना†—क्रि० अ० [हिं० सँभलना] दे० 'सँभलना'।

सम्हार, सम्हाल†—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्भार] दे० 'सँभाल'।

सम्हारना, सम्हालना†—क्रि० स० [स० सम्भार] दे० 'सँभालना'। उ०—(क) हीरा जनम दियौ प्रभु हमकौ दीनी बात सम्हार।—सूर०, १।१९६। (ख) आनँद उर अचल न सम्हारति सीस सुमन बरषावति।—सूर०, १०।२३।

सय(पु)—संज्ञा पु० [स० शत, प्रा० सय] दे० 'शत'। उ०—दिन दिन सय गुन भूपति भाऊ। देखि सराह महा मुनिराऊ।—मानस, १।३६०।

यौ०—सयगुन = सौगुना।

सयन¹—संज्ञा पु० [स०] १ बंधन। २ विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

सयन²—संज्ञा पु० [स० शयन] १ शयन करने का आसन। बिस्तर। उ०—निज कर राजीवनयन पल्लव-दल रचित सयन प्यास परस्पर पियूष प्रेम पान की।—तुलसी (शब्द०)। २ लेटने की क्रिया। सोने की क्रिया। उ०—सयन करहु निज निज गृह जाई।—मानस, ६।१४।

सयन(पु)³—संज्ञा स्त्री० [स० सैन्य] सेना। वाहिनी। सैन्य। उ०—तट कालिंद्री तहँ विमल करि मुकाम नृपराज। सथ्थ सयन सामत भर सूर जु आए साज।—पृ० रा०, ६१।१३५।

सयल(पु)—संज्ञा पु० [स० शैल] पर्वत। शिखर। दे० 'शैल'। उ०—गहि सयल तेहि गढ पर चलावहि जहँ सो तहँ निसिचर हए।—मानस, ६।४८।

सयान(पु)¹—संज्ञा पुं० [हिं०सयानापन] दे० 'सयानापन'। उ०—आई गौने कालि ही, सीखी कहा सयान। अब ही तै रूसन लगी, अब ही तै पछितान।—मतिराम (शब्द०)।

सयान²—वि० [स० सज्ञान] ज्ञानवान्। कुशल। चतुर। जिसे जानकारी हो। चालाक। उ०—सोइ सयान जो परधन हारी। जो कर दभ सो बड आचारी।—मानस, ७।९८।

यौ०—सयानपन = चतुरता या चालाकी।

सयानप(पु)—संज्ञा पु० [हिं० सयान + प (प्रत्य०)] दे० 'सयानापन'। उ०—(क) हरि तुम बलि को छलि कहा लीन्यौ। बाँधन गए बँधाए आपुन कौन सयानप कीन्यौ।—सूर०, ८।१५। (ख) अति सूधो सनेह को मारग है जहँ नेंकु सयानप बाँक नही।—घनानद, पृ० ८६।

सयानपत(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सयान + पत (प्रत्य०)] चालाकी। धूर्तता।

सयानपन—संज्ञा पुं० [हिं० सयान + पन (प्रत्य०)] १ सयाना होने का भाव। २ चतुरता। बुद्धिमानी। होशियारी। ३ चालाकी। धूर्तता।

सयाना¹—वि० [स० सज्ञान] [वि० स्त्री० सयानी] १ अधिक अवस्थावाला। वयस्क। जैसे,—अब तुम लडके नही हो, सयाने हुए। उ०—भली बुद्धि तेरैं जिय उपजी, बडी बैस अब भई सयानी। सूर०, १०।३६५। २ बुद्धिमान्। चतुर। होशियार। उ०—और काहि विधि करौ तुमहिं तैं कौन सयानो।—सूर०, १०।४९२। ३ चालाक। धूर्त।

सयाना²—संज्ञा पु० [स०] १ बडा बूढ़ा। वृद्ध पुरुष। २ वह जो झाड-फूँक करता हो। जतर मतर करनेवाला। ओझा। ३ चिकित्सक। हकीम। ४ गाँव का मुखिया। नबरदार।

सयानाचारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सयाना + चार (प्रत्य०)] वह रसूम जो गाँव के मुखिया को मिलता है।

सयावक—वि० [स०] लाक्षारजित। जावकयुत [को०]।

सयूथ्य—संज्ञा पुं० [स०] वह जो समान समूह, श्रेणी या वर्ग का हो [को०]।

सयोग—संज्ञा पुं० [स०] मेल। मिलाप। सयोग। सगम [को०]।

सयोनि¹—वि० [स०] १ जो एक ही योनि से उत्पन्न हुए हो। २ एक ही जाति या वर्ग आदि के।

सयोनि²—संज्ञा पुं० १ इद्र का एक नाम। २ सहोदर भ्राता। सगा भाई [को०]। ३ सुपारी आदि काटने का सरौता [को०]।

सयोनिता—संज्ञा स्त्री० [स०] सयोनि होने का भाव या धर्म।

सयोनीय पथ—संज्ञा पुं० [स०] खेतो मे जानेवाला मार्ग।

सयोषण—वि० [स०] स्त्रियों से युक्त। स्त्रियो के साथ [को०]।

सरग¹—संज्ञा पु० [स० सरङ्ग] १ चौपाया। चतुष्पद जतु। २ चिड़िया। पक्षी। ३ एक प्रकार का मृग। सारग [को०]।

सरग²—वि० १ अनुनासिक युक्त। सानुनासिक। २ वर्ण या रगयुक्त। रगीन [को०]।

सरजाम—संज्ञा पु० [फा०] दे० 'सरअजाम'।

सरड—संज्ञा पु० [स० सरण्ड] १ पक्षी। चिडिया। २ कामुक या लपट व्यक्ति। ३ कृकलास। ४ धूर्त या खल व्यक्ति। ५ एक प्रकार का आभूषण [को०]।

सरडर—वि० [अ० सरडर्ट] जिसने अपने को दूसरे के हवाले किया हो। जिसने दूसरे के समुख आत्मसमर्पण किया हो। उपस्थित। हाजिर। जैसे,—उनपर गिरफ्तारी का वारट था, सोमवार को अदालत मे सरडर हो गए।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

सर¹—संज्ञा पु० [स० सरस्] १ बडा जलाशय। ताल। तालाब। २ गमन। गति (को०)। ३ तीर। बाण। उ०—सत सत सर मारे दस भाला।—मानस, ६।८२। ४ जमा हुआ दूध। दही का चक्का (को०)। ५ नमक (को०)। ६ लडी। हार। माला (को०)। ७ झरना। जलप्रपात

८ जल। सलिल (को०)। ९ वायु (को०)। १० छंद में लघु मात्रा (को०)।

सर²—वि० १ गतिशील। गमनशील। २ रेचन करनेवाला। रेचक।

सर(पु)†³—संज्ञा पुं० [सं० शर] दे० 'शर'। उ०—कागज गरे मेघ मसि खूटी सर दौ लागि जरे। सेवक सूर लिखें ते आंधौ पलक कपाट अरे।—सूर (शब्द०)।

सर⁴—संज्ञा पुं० [फा०] १ सिर। २ सिरा। चोटी। उच्च स्थान।

यौ०—सरअंजाम। सरपरस्त। सरखत। सरदार। सरहद।

मुहा०—सर करना = बंदूक छोड़ना। फायर करना।

३ प्रेम। स्नेह। प्रीति (को०)। ४ इरादा। इच्छा। विचार (को०)। ५ श्रेष्ठ। उत्तम (को०)।

सर⁵—वि० दमन किया हुआ। जीता हुआ। पराजित। अभिभूत।

मुहा०—सर करना = (१) जीतना। वश में लाना। दबाना। (२) खेल में हराना।

सर⁶—संज्ञा पुं० [अ०] एक बड़ी उपाधि जो अँगरेजी सरकार देती है।

सर(पु)⁷—संज्ञा स्त्री० [सं० शर] चिता। उ०—पाएउँ नहिं होइ जोगी जती। अब सर चढौं जरौं जस सती।—जायसी (शब्द०)।

सरअंजाम—संज्ञा पुं० [फा०] १ सामान। सामग्री। असबाब। २ प्रबंध। बंदोबस्त (को०)। ३ अंत। पूर्ति। समाप्ति। ४ परिणाम। फल। नतीजा (को०)।

सरई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरहरी] दे० 'सरहरी'।

सरकंडा—संज्ञा पुं० [सं० शरकाण्ड] सरपत की जाति का एक पौधा जिसमें गाँठवाली छड़ें होती हैं।

सरक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सरकने की क्रिया। खिसकना। चलना। २ मद्यपात्र। शराब का प्याला। ३ गुड़ की बनी शराब। ४ मद्यपान। शराब पीना। ५ यात्रियों का दल। कारवाँ। ६ शराब का खुमार। उ०—वय अनुहरत विभूषन विचित्र अंग जोहे जिय अति सनेह की सरक सी।—तुलसी (शब्द०)। ७ तालाब। सरोवर। तीर्थ (को०)। ८ आकाश। स्वर्ग (को०)। ९ राजपथ की अटूट पंक्ति। १० मोती। मुक्ता (को०)।

सरकना—क्रि० अ० [सं० सरक, सरण] १ जमीन से लगे हुए किसी ओर धीरे से बढ़ना। किसी तरफ हटना। खिसकना। जैसे,—थोड़ा पीछे सरको। २ नियत काल से और आगे जाना। टलना। जैसे,—विवाह सरकना। ३ काम चलना। निर्वाह होना। जैसे,—काम सरकना।

संयो० क्रि०—जाना।

सरकफूँदा†—संज्ञा पुं० [हिं० सरकना + फंदा] सरकनेवाला फंदा। दे० 'सरकवाँसी'।

सरकर्दा—वि० [फा० सरकर्दह्] अगुआ। मुखिया। नेता (को०)।

सरकवाँसी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरकना + सं० पाश, पाशक] एक प्रकार का सरकनेवाला फंदा जो किसी चीज में डालकर खींचने से सरक कर उसे जकड़ लेता है।

सरकश—वि० [फा०] १ उद्धत। उद्दंड। अक्खड़। २ शासन न माननेवाला। विरोध में सिर उठनेवाला। ३ शरारती।

सरकशी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ उद्दंडता। औद्धत्य। २ नटखटी। शरारत।

सरका¹—संज्ञा पुं० [अ० सरका] चोरी (को०)।

सरका(पु)²—संज्ञा पुं० [सं० सरक (= गगन)] आकाश।

मुहा०—सरका कूदना = (१) गगन मंडल में विहार करना। समाधिस्थ होना। लौ लगाना। (२)† हस्तगत करना (बाजारू)।

सरकार—संज्ञा स्त्री० [फा०] [वि० सरकारी] १ प्रभु। अधिपति। मालिक। शासक। प्रभु। २ राज्य। राज्य संस्था। शासन-सत्ता। गवर्नमेंट। ३ राज्य। रियासत। जैसे,—निजाम सरकार। ४ न्यायालय। न्यायपीठ (को०)। ५ राजदरबार। राजसभा (को०)। ६ बड़े व्यक्तियों के लिये संबोधन का शब्द (को०)।

सरकारी—वि० [फा०] १ सरकार का। मालिक का। २ राज्य का। राजकीय। जैसे,—सरकारी इंतजाम, सरकारी कागज।

यौ०—सरकारी अहलकार = राज्य का कर्मचारी। सरकार का मुलाजिम। सरकारी कागज = (१) राज्य के दफ्तर का कागज। (२) प्रामिसरी नोट। जैसे,—उसके पास डेढ़ लाख रुपया के सरकारी कागज हैं। सरकारी साँड = (१) लंपट। धूर्त। मक्कार। (लाक्ष०)। (२) गाय बैलों को नस्ल सुधारने के लिये रखा हुआ अच्छी जाति का साँड।

सरखत—संज्ञा पुं० [फा० सरखत] १ वह कागज या दस्तावेज जिस-पर मकान आदि किराए पर दिए जाने की शर्तें होती हैं। २ तनखाह आदि के हिसाब का कागज (को०)। ३ दिए और चुकाए हुए ऋण का ब्योरा। उ०—आपसु भो लोकनि सिधार लोकपाल सबै तुलसी निहाल कै कै दियो सरखत(प)तु है।—तुलसी ग्रं०, पृ० १९८।

सरग(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ग] १. दे० 'स्वर्ग'। उ०—(क) मूल पताल सरग ओहि साखा। अमर बलि को पाय का चाखा।—जायसी (शब्द०)। (ख) धरनि धामु धनु पुर परिवारू। सरगु नरकु जहँ लगि व्यवहारू।—मानस, २।९२। २ आकाश। व्योम। उ०—का घूँघट मुख मूँदहु नवला नारि। चाँद सरग पर सोहत एहि अनुहारि।—तुलसी ग्रं०, पृ० २०।

यौ०—सरगतरु = स्वर्गतरु। आकाश वृक्ष। उ०—पात पात का सींचिबो न कर सरग तरु हेत।—तुलसी ग्रं०, पृ० १४०।

सरगना¹—क्रि० अ० [देश०] डींग मारना। शेखी बघारना। बढ़ चढ़ कर बातें करना।

सरगना²—संज्ञा पुं० [फा० सरग़नह्] मुखिया। सरदार। अगुवा। जैसे,—चोरों का सरगना।

विशेप—इस शब्द का प्रयोग प्राय बुरे अर्थ मे ही होता है।

सरगपताली¹—वि० [स० स्वर्ग, हिं० सरग + स० पातालीय] जिसका एक अंग ऊपर और एक नीचे की ओर हो। तिरछा। बाँका।

सरगपताली²—सज्ञा पुं० १ वह बैल जिसका एक सींग ऊपर और दूसरा नीचे की ओर झुका हो। २ ऐंची आँखोवाला।

सरगम—सज्ञा पुं० [हिं० सा, रे, ग, म] सगीत मे सात स्वरो के चढाव उतार का क्रम। स्वर ग्राम।

सरगर्दानी—सज्ञा स्त्री० [फा०] परेशानी। हैरानी। दिक्कत।

सरगर्म—वि० [फा०] १ जोशीला। आवेशपूर्ण। २ उमग से भरा हुआ। उत्साही। कटिबद्ध। ३ तन्मय। तल्लीन (को०)।

सरगर्मी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ जोश। आवेश। २ उमग। उत्साह। ३ तन्मयता। सलग्नता।

सरगही†—सज्ञा स्त्री० [अ० सहर + फा० गह] व्रत के दिनो मे पूर्व-रात्रि के उत्तरार्ध का खाना। दे० 'सहरगही'।

सरगुन(पु)—वि० [स० सगुण] गुणयुक्त। दे० 'सगुण'। 'निरगुन' का विलोम।

सरगुनिया—वि० [हिं० सरगुन + इया (प्रत्य०)] सगुणोपासक। वह जो सगुण की उपासना करता हो। 'निरगुनिया' का विलोम या उल्टा।

सरघा—सज्ञा स्त्री० [स०] मधुमक्खी।

सरज—सज्ञा पुं० [स०] १ शुद्ध नवनीत। ताजा मक्खन। २ वह जो धूलियुक्त हो [को०]।

सरजनहार(पु)—वि० [हिं० सरजना + हार (प्रत्य०)] निर्माता। रचयिता। उ०—आपै आप कर्त्त विचारा। को हमको सरजनहारा।—रामानद०, पृ० ११।

सरजना(पु)—क्रि० स० [स० सृजन] १ सृष्टि करना। २ रचना। बनाना।

सरजमीन—सज्ञा स्त्री० [फा० सरज़मी] १ पृथ्वी। जमीन। २ देश। मुल्क। सल्तनत [को०]।

सरजसा, सरजस्का—सज्ञा स्त्री० [सं०] ऋतुमती स्त्री। रजस्वला स्त्री [को०]।

सरजा¹—सज्ञा स्त्री० [स० सरजस्] ऋतुमती स्त्री [को०]।

सरजा²—सज्ञा पुं० [फा० शरजाह (= उच्च पदवाला), अ० शरजह् (= सिंह)] १ श्रेष्ठ व्यक्ति। सरदार। २ सिंह। उ०—सरजा सिवाजी जग जीतन चलत है।—भूपण (शब्द०)।

सरजीव(पु)—वि० [स० सजीव] जो जीवयुक्त हो। निर्जीव का विलोम या उलटा।

सरजीवन†—वि० [स० सञ्जीवन] १ सजीवन। जिलानेवाला। २ हराभरा। उपजाऊ।

सरजोर—वि० [फा० सरजोर] १. जबरदस्त। २ उद्दड। दुर्दमनीय। सरकश।

सरजोरी—सज्ञा स्त्री० [फा० सरज़ोरी] १ जबरदस्ती। २ उद्दडता।

सरजोश—वि० [फा०] जो पहले जोश मे उतारा जाय। सार। सत [को०]।

सरट्—सज्ञा पुं० [स०] १ वायु। हवा। २ मेघ। बादल। ३ गिरगिट। कृकलास। ४ मधुमक्खी। ५ डोरा। सूत [को०]।

सरट—सज्ञा पु० [स०] १. छिपकली। २ गिरगिट। ३ वायु।

सरटि—सज्ञा पु० [स०] १ मेघ। बादल। २ हवा। वायु [को०]।

सरटु—सज्ञा पु० [स०] कृकलास। गिरगिट [को०]।

सरण¹—सज्ञा पु० [स०] १ धीरे धीरे हटना या चलना। आगे बढना। सरकना। खिसकना। २ तीव्र गति से चलना। शीघ्र गमन (को०)। ३. स्थानातर। गमन (को०)। ४ लोहे का मोर्चा। लौहकिट्ट (को०)।

सरण—वि० १ गतिशील। गतिमय। २ बहनेवाला [को०]।

यौ०—सरणमार्ग = जाने का रास्ता।

सरणा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की लता [को०]।

सरणि, सरणी—सज्ञा स्त्री० [स०] मार्ग। रास्ता। २ पगडडी। ढर्रा। ३ लगातार और सीधी पक्ति, रेखा या लकीर। ४ ढर्रा। विधि। व्यवस्था (को०)। ५ कठ का एक रोग (को०)। ६ एक लता। गध प्रसारणी (को०)।

सरण्यु—सज्ञा पुं० [स०] १ वायु। हवा। २ मेघ। ३ जल। पानी। ४ वसत ऋतु। यमराज। ६ अग्नि [को०]।

सरत्—सज्ञा पुं० [स०] १ सूत। तागा। धागा। २ वह जो गतिशील हो [को०]।

सरतराश—सज्ञा पुं० [फा०] नाई। नापित। क्षौरकार [को०]।

सरतराशी—सज्ञा स्त्री० [फा०] क्षौर कर्म। नाई का काम [को०]।

सरताज—वि० [फा०] १ शिरोमणि। सबसे श्रेष्ठ। २ सरदार। नायक। सिरताज [को०]।

सरतान—सज्ञा पुं० [अ०] १ केकडा। कर्कट। २. कर्क राशि। ३ दूषित व्रण [को०]।

सरता बरता—सज्ञा पु० [स० वर्तन, हिं० बरतना + अनु० सरतना] बाँटा। बँटाई।

मुहा०—सरता बरता करना = आपस मे काम चला लेना।

सरतारा(पु)—वि० [?] निश्चित। सावकाश।

सरत्नि—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की हाथ की माप [को०]।

सरथ¹—वि० [स०] रथपर चढा हुआ। रथयुक्त [को०]।

सरथ²—सज्ञा पु० [स०] रथारोही सैनिक [को०]।

सरद¹—वि० [फा० सर्द] दे० 'सर्द'।

सरद(पु)²—सज्ञा स्त्री० [स० शरत्] शरद ऋतु। उ०—(क) सरद रात मालति सघन फूलि रही बन बास।—पृ० रा०, २।३६०। (ख) कत दुसह दारुन सरद।—पृ० रा०, ६१।४२।

सरदई—वि० [फा० सरदह्] सरदे के रग का। हरापन लिए पीला।

सरदर—क्रि० वि० [फा० सर + दर (= भाव)] १ एक सिरे से। २ सब एक साथ मिला कर। औसत मे।

सरदर्द—सज्ञा पुं० [फा०] १ शिरोवेदना। सिर का दर्द। २. कष्ट। झमेला। झझट। जजाल [को०]।

**सरदल¹**—संज्ञा पुं० [देश०] दरवाजे का बाजू या साह।

**सरदल²**—क्रि० वि० [फा० सरदर] दे० 'सरदर'।

**सरदा**—संज्ञा पुं० [फा० सर्दह्] एक प्रकार का बहुत बढ़िया खरबूजा जो काबुल मे आता है।

**सरदार**—संज्ञा पुं० [फा०] १ किसी मडली का नायक। अगुवा। श्रेष्ठ व्यक्ति। २ किसी प्रदेश का शासक। ३ अमीर। रईस। ४ वेश्याओ की परिभाषा मे वह व्यक्ति जिसका किसी वेश्या से सबध हो। ५ वह जो सिख सप्रदाय को मानता हो। सिखो की उपाधि।

**सरदार तंत्र**—संज्ञा पुं० [फा० सरदार+सं० तन्त्र] एक प्रकार की सरकार जिसमे राजसत्ता या शासनसूत्र सरदारो, बडे बडे ताल्लुकदारो या ऐश्वर्यशाली नागरिको के हाथ मे रहता है। कुलीन तंत्र। अभिजात तंत्र। कुलतंत्र। दे० 'ऐरिस्टोक्रैसी'।

**सरदारनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरदार] प्रतिष्ठित सिख महिला। सरदार की पत्नी।

**सरदारी**—संज्ञा स्त्री० [फा०] सरदार का भाव। अध्यक्षता। स्वामित्व।

**सरदाला**—संज्ञा स्त्री० [देश०] उत्तरी भारत की रेतीली भूमि मे होनेवाली एक प्रकार की बारहमासी घास जो चारे के लिये अच्छी समझी जाती है। बादरी।

**सरद्वत्**—संज्ञा पुं० [सं०] १ गौतम ऋषि। २ गौतम ऋषि के एक पुत्र का नाम [को०]।

**सरधन(पु)**—वि० [सं० सधन] धनी। अमीर। निर्धन का विपरीत वाचक।

**सरधाँकी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पौधा जो प्राय रेतीली भूमि मे होता है। यह वर्षा और शरद् ऋतु मे फूलता है। इसका व्यवहार औषधि के रूप मे होता है।

**सरधा(पु)†**—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रद्धा] दे० 'श्रद्धा'।

**सरधौकी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'सरधाँकी'।

**सरन(पु)‡**—संज्ञा स्त्री० [सं० शरण] दे० 'शरण'। उ०—अब आयौ हौ सरन तिहारी ज्यो जानौ त्यों तारौ।—सूर०, १।१७८।

**सरनगत(पु)**—वि०[सं० शरणागत] शरण मे गया हुआ। जो शरणागत हो।—उ० सूरदास गोपाल सरनगत भएँ न को गति पावत।—सूर०, १।१८१।

**सरनदीप**—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ण द्वीप या सिंहल द्वीप] लका का एक प्राचीन नाम जो अरबवालो मे प्रसिद्ध था। उ०—दिया दीप नहिं तम उँजियारा। सरनदीप सरि होइ न पारा।—जायसी (शब्द०)।

**सरनविश्त**—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. भाग्यलिपि। २ हालचाल। वृत्तात। खबर [को०]।

**सरना¹**—क्रि० अ० [सं० सरण (=चलना, सरकना)] १ सरकना। खिसकना। २ हिलना। डोलना। ३. काम पूरा पड़ना। जैसे,—इतने मे काम नही सरेगा। ४. होना। किया जाना। निबटना। जैसे,—काम निर्वाह होना। गुजारा होना। निभना। ६ दे० 'सड़ना'। ७. खत्म होना। बीत जाना। समाप्त होना। उ०—बीतै जाम बोलि तब आयौ, मुनहु कस तब आइ सरयौ।—सूर०, १०।५६।

**सरनाई(पु)**—संज्ञा स्त्री० [सं० शरण] शरण। आश्रय। रक्षा। उ०—(क) जौ सभीत आवा सरनाई।—मानस, ६।४४। (ख) सूर कुटिल राखौ सरनाई इहि व्याकुल कलिकाल।—सूर०, १।२०१।

**सरनागत**—वि० [सं० शरणागत] दे० 'शरणागत'। उ०—सरनागत कहु जे तजहिं निज अनहित अनुमानि।—मानस, ६।४३।

यौ०—सरनागतवच्छल = दे० 'शरणागतवत्सल'। उ०—सरनागत वच्छल भगवाना।—मानस, ६।४३।

**सरनाम**—वि० [फा०] जिसका नाम हो। प्रसिद्ध। मशहूर। विख्यात। उ०—तुलसी सरनाम गुलाम है राम को जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ।—तुलसी ग्र०, पृ० २२३।

**सरनामा**—संज्ञा पुं० [फा० सरनामह्, तुल सं० शिरोनाम] १ किसी लेख या विषय का निर्देश जो ऊपर लिखा रहता है। शीर्षक। २ पत्र का आरभ या सबोधन। ३. पत्र आदि पर लिखा जानेवाला पता।

**सरनी(पु)**—संज्ञा स्त्री० [सं० सरणी] दे० 'सरणी'। उ०—ब्रज जुवती सब देखि थकित भईं सुदरता की सरनी।—सूर०, १०।१२३।

**सरपच**—संज्ञा पुं० [फा० सर+हिं० पच] पचो मे बडा व्यक्ति। पचायत का सभापति।

**सरपजर(पु)**—संज्ञा पुं० [सं० शरपञ्जर] बाणों का घेरा। सरपिंजर। उ०—अवघट घाट बाट गिरिकदर। मायाबल कीन्हेसि सरपजर।—मानस, ६।७२।

**सरप(पु)**—संज्ञा पुं० [सं० सर्प] साँप।

**सरपट¹**—क्रि० वि० [सं० सपर्ण] तीव्रगति से। सरपट चाल से।

क्रि० प्र०—छोडना।—डालना।—दौडना।—फेंकना।

**सरपट²**—संज्ञा स्त्री० घोडे की बहुत तेज दौड जिसमे वह दोनो अगले पैर साथ साथ आगे फेंकता है।

**सरपट³**—वि० समथर। चौरस। सपाट।

**सरपत**—संज्ञा पुं० [सं० शरपत्र] कुश की तरह की एक घास।

विशेष—इसमे टहनियाँ नही होतीं बहुत पतली (आधे जौ भर) और हाथ दो हाथ लबी पत्तियाँ हो मध्य भाग से निकलकर चारो ओर घनी फैली रहती है। इसके बीच से पतली छड निकलती है जिसमे फूल लगते है। यह घास छप्पर आदि छाने के काम मे आती है।

**सरपरस्त**—संज्ञा पुं० [फा०] १. रक्षा करनेवाला। २. श्रेष्ठ पुरुष। [illegible]भिभावक। सरक्षक।

[illegible] [illegible]ज्ञा स्त्री० [फा०] १ सरक्षा। २. अभिभावकता।

[illegible] संज्ञा पुं० [सं० शरपिञ्जर] बाणों का [illegible] [illegible]। उ०—अर्जुन तब सरपिंजर [illegible] दियौ।—सूर०, १०।४३०६

सरवार†—संज्ञा पुं० [सं० सरयूपार] सरयू नदी के पार का भूखंड। यहाँ के ब्राह्मण सरयूपारी या सरवरिया कहे जाते हैं।

सरवाला—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की लता जिसे घोडाबेल भी कहते हैं। बिलाई कंद इसी की जड होती है। विशेष दे० 'घोडा बेल'।

सरविस—संज्ञा स्त्री० [अ० सर्विस] १ नौकरी। २ खिदमत। सेवा।

सरवे—संज्ञा स्त्री० [अ० सर्वे] १ जमीन की पैमाइश। २ वह सरकारी विभाग जो जमीन की पैमाइश किया करता है।

सरव्य—संज्ञा पुं० [सं०] निशाना। लक्ष्य। शरव्य [को०]।

सरसफ—संज्ञा स्त्री० [फा० सरशफ तुल० सं० सर्षप] सरसों।

सरशार—वि० [फा०] १ परिपूर्ण। ऊपर तक भरा हुआ। लबरेज। २ उन्मत्त। मत्त। ३ छलकता हुआ [को०]।

सरशीर—संज्ञा स्त्री० [फा०] दूध की मलाई। क्षीर सार। बालाई [को०]।

सरसप्रत—संज्ञा पुं० [सं० सरसम्प्रत ?] तिधारा। थूहर। पत्रगुप्त वृक्ष।

सरस्—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० सरसी] १ सरोवर। तालाब। २ जल। पानी (को०)। ३ वाणी (को०)।

सरस[१]—वि० [सं०] १ रसयुक्त। रसीला। २ गीला। भीगा। सजल। ३ जो सूखा या मुरझाया न हो। हरा। ताजा। ४ सुंदर। मनोहर। ५ मधुर। मीठा। ६ जिसमे भाव जगाने की शक्ति हो। भावपूर्ण। जैसे,—सरस काव्य। उ०—(क) सरस काव्य रचना करौ खलजन सुनि न हसत।—पृ० रा०, १।५१। (ख) निज कवित्त केहि लाग न नीका। सरस होहु अथवा अति फीका।—तुलसी (शब्द०)। ७ छप्पय छंद के ३५ वें भेद का नाम जिसमे ३६ गुरु, ८० लघु, कुल ११६ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। ८ रसिक। सहृदय। भावुक। ९ बढकर। उत्तम। उ०—ब्रह्मानंद हृदय दरस सुख लोचननि अनुभए उभय सरस राम जागे है।—तुलसी (शब्द०)। १० पसीने से तर (को०)। ११ प्रेमपूर्ण। प्रणयोन्मत्त (को०)। १२ घना। ठस। सांद्र (को०)।

सरस[२]—संज्ञा पुं० तालाब। सरोवर [को०]।

सरसइ(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सरस्वती, प्रा० सरसई] सरस्वती नदी। उ०—सरसइ ब्रह्म विचार प्रचारा।—तुलसी (शब्द०)।

सरसई(पु)[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० सरस्वती, प्रा० सरसई] सरस्वती नदी या देवी।

सरसई(पु)[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० सरस + हिं० ई (प्रत्य०)] १ सरलता। रसपूर्णता। २ हरापन। ताजापन। उ०—तिय निज हिय जु लगी चलत पिय लख रेख खरोट। सूखन देति न सरसई खोटि खोटि खत खोट।—बिहारी (शब्द०)।

सरसई†[३]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरसो] फल के छोटे अंकुर या दाने जो पहले दिखाई पडते है। जैसे,—आम की सरसई।

सरसठ—वि० [हिं०] दे० 'सडसठ'।

सरसठवाँ—वि० [हिं०] दे० 'सडसठवाँ'।

सरसना—क्रि० अ० [सं० सरस + हिं० ना (प्रत्य०)] १ हरा होना। पनपना। वृद्धि को प्राप्त होना। बढना। उ०—सुफल होत मन कामना मिटत विघन के द्वंद। गुन सरसत बरषत हरष सुमिरत लाल मुकुंद।—(शब्द०)। ३ शोभित होना। सोहाना। उ०—वाको विलोकिए जो मुख इंदु लगै यह इंदु कहूँ लवलेस मैं। बेनी प्रवीन महा सरसै छवि जो परसै कहूँ स्यामल केस मैं।—बेनी (शब्द०)। ४ रसपूर्ण होना। ५ भाव की उमंग से भरना। ६ रसयुक्त अर्थात् जलपूर्ण होना।

सरसब्ज—वि० [फा० सरसब्ज] १ हरा भरा। जो सूखा या मुरझाया न हो। लहलहाता हुआ। २ जहाँ हरियाली हो। जो घास और पेड पौधों से हरा हो। ३ समृद्ध। मालदार (को०)। ४ आबाद (को०)। ५ उपजाऊ (को०)।

सरसमान†—संज्ञा पुं० [फा० सर व सामान] दे० 'सरोसामान'।

सर सर[१]—संज्ञा पुं० [अनु०] १ जमीन पर रेंगने का शब्द। २ तीव्र वायु के चलने से उत्पन्न ध्वनि। जैसे,—हवा सर सर चल रही है।

सर सर[२]—क्रि० वि० सरसर की ध्वनि के साथ।

सर सर[३]—वि० [सं०] इतस्तत घूमनेवाला [को०]।

सर सर[४]—संज्ञा स्त्री० [अ०] आँधी। अधड। तीखी हवा।

सरसराना—क्रि० अ० [अनु० सर सर] १ सर सर की ध्वनि होना। २ वायु का सर सर की ध्वनि करते हुए बहना। वायु का तेजी से चलना। सनसनाना। उ०—सरसराती हुई हवा केले के पत्तो को हिलाती है।—रत्नावली (शब्द०)। ३ साँप या किसी कीडे का रेंगना।

सरसराहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरसर + आहट (प्रत्य०)] १. साँप आदि के रेंगने का सा अनुभव। २ खुजली। सुरसुराहट। ३ वायु के बहने का शब्द।

सरसरी[१]—वि० [फा०] १ जमकर या अच्छी तरह नही। जल्दी मे। जैसे—सरसरी नजर से देखना। २ चलते ढंग पर। काम चलाने भर को। स्थूल रूप से। मोटे तौर पर। जैसे,—अभी सरसरी तौर से कर जाओ।

यौ०—सरसरी नजर। सरसरी निगाह। सरसरी तौर से।

सरसरी[२]—संज्ञा स्त्री० १ औरतो की एक सांकेतिक भाषा। २ एक शिरोभूषण।

सरसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद निसोथ। शुक्ल त्रिवृता।

सरसाई(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरस + आई (प्रत्य०)] १ सरसता। २. शोभा। सुंदरता। ३ अधिकता।

सरसाना[१]—क्रि० स० [हिं० सरसना] १ रसपूर्ण करना। २ हरा भरा करना।

सरसाना(पु)[२]—क्रि० अ० दे० 'सरसना'।

सरसाना(पु)[३]—क्रि० अ० शोभित होना। शोभा देना। साजना। उ०—(क) लै आए निज अंक मे शोभा कही न जाई। जिमि जलनिधि की गोद मे शशिशिशु शुभ सरसाई।—गोपाल

(शब्द०)। (ख) सुंदर सूधी सुगोल रची विधि कोमलता अति ही सरसात है।—हरिश्रौध (शब्द०)।

**सरसाम**—संज्ञा पुं० [फा०] सन्निपात। त्रिदोष। वाई।

**सरसार**—वि० [फा० सरशार] १ डूबा हुआ। मग्न। २ गड़ाप। चूर। मदमस्त (नशे में)।

**सरसिक**—संज्ञा पुं० [सं०] सारस पक्षी (को०)।

**सरसिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हिंगुपत्री। २ छोटा ताल। बावली।

**सरसिज[1]**—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो ताल में होता हो। २ कमल। ३ सारस पक्षी (को०)।

**सरसिज[2]**—वि० सर में जात। ताल में पैदा होनेवाला।

**सरसिजयोनि**—संज्ञा पुं० [सं०] कमल से उत्पन्न, ब्रह्मा।

**सरसिरुह**—संज्ञा पुं० [सं०] (सर में उत्पन्न) कमल।

यौ०—सरसिरुहबंधु = सूर्य।

**सरसी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटा ताल। छोटा सरोवर। तलैया। २ पुष्करिणी। बावली। उ०—कठुला कंठ बघनहा नीके। नयन सरोज नयन सरसी के।—सूर (शब्द०)। ३ एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में न, ज, भ, ज, ज, ज, र होते हैं।

**सरसीक**—संज्ञा पुं० [सं०] सारस पक्षी।

**सरसीरुह**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सरसी में उत्पन्न होनेवाला, कमल। २ सारस पक्षी।

**सरसृलगोरटी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] सफेद कटसरैया। श्वेत झिंटी।

**सरसेट**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ झगड़ा। तकरार। झंझट। बखेड़ा।

**सरसेटना**—क्रि० स० [अनु० सरसेट] १ खरी खोटी सुनाना। फटकारना। भला बुरा कहना। २ रगेदना। रपटना। ३ तेजी से समाप्त करना।

**सरसों**—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्षप, तुल० फा० सर्शफ] एक धान्य या पौधा जिसके गोल गोल छोटे बीजों से तेल निकलता है। एक तेलहन।

विशेष—भारत के प्रायः सभी प्रांतों में इसकी खेती की जाती है। इसका डंठल दो तीन हाथ ऊँचा होता है। पत्ते हरे और कटे किनारेवाले होते हैं। ये चिकने होने और डंठी से सटे रहते है। फलियाँ दो तीन अंगुल लंबी और गोल होती हैं जिनमें महीन बीज के दाने भरे होते हैं। कार्तिक में गेहूँ के साथ तथा अलग भी इसे बोते हैं। माघ तक यह तैयार हो जाता है। सरसों दो प्रकार की होती है—लाल और पीली या सफेद। इसे लोग मसाले के काम में भी लाते हैं। इसका तेल, जो कड़ुआ तेल कहलाता है, नित्य के व्यवहार में आता है। इसके पत्तों का साग बनता है।

**सरसौहाँ**—वि० [हिं० सरस + औहाँ (प्रत्य०)] सरस बनाया हुआ। रसयुक्त किया हुआ। रसीला। उ०—तिय तरसौहैं मुनि किए करि सरसौहैं नेह। घर परसौहैं ह्वै रहे भर बरसौहैं मेह।—बिहारी (शब्द०)।



**सरस्वती**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्राचीन नदी जो पंजाब में बहती थी और जिसकी क्षीण धारा कुरुक्षेत्र के पास अब भी है। २ विद्या या वाणी की देवी। वाग्देवी। भारती। शारदा।

विशेष—वेदों में इस नदी का उल्लेख बहुत है और इसके तट का देश बहुत पवित्र माना गया है। पर वहाँ यह नदी अनिश्चित सी है। बहुत से स्थलों में तो सिंधु नदी के लिये ही इसका प्रयोग जान पड़ता है। कुरुक्षेत्र के पास से होकर बहनेवाली मध्यदेशवाली सरस्वती के लिये इस शब्द का प्रयोग थोड़ी ही जगहों में हुआ है। कुछ विद्वानों का अनुमान है कि पारसियों के अवेस्ता ग्रंथ में अफगानिस्तान की जिस 'हरखैती' नदी का उल्लेख है, वास्तव में वही मूल सरस्वती है। पीछे पंजाब की नदी का यह नाम दिया गया। ऋग्वेद में इस नदी के समुद्र में गिरने का उल्लेख है। पर पीछे की कथाओं में इसकी धारा लुप्त होकर भीतर भीतर प्रयाग में जाकर गंगा से मिलती हुई कही गई है। वेदों में सरस्वती नदियों की माता कही गई है और उसकी सात बहिनें बताई गई हैं। एक स्थान पर वह स्वर्णमार्ग से बहती हुई और वृत्रासुर का नाश करनेवाली कही गई है। वेद मंत्रों में जहाँ देवता रूप में इसका आह्वान है, वहाँ पूषा, इंद्र और मरुत आदि के साथ इसका संबंध है। कुछ मंत्रों में यह इडा और भारती के साथ तीन यज्ञदेवियों में रखी गई है। वाजसनेयी संहिता में कथा है कि सरस्वती ने वाचादेवी के द्वारा इंद्र को शक्ति प्रदान की थी। आगे चलकर ब्राह्मण ग्रंथों में सरस्वती वाग्देवी ही मान ली गई है। पुराणों में सरस्वती देवी ब्रह्मा की पुत्री और स्त्री दोनों कही गई है और उसका वाहन हंस बताया गया है। महाभारत में एक स्थान पर सरस्वती को दक्ष प्रजापति की कन्या लिखा है। लक्ष्मी और सरस्वती देवी का वैर भी प्रसिद्ध है।

३ विद्या। इल्म। ४ एक रागिनी जो शंकराभरण और नट नारायण के योग से उत्पन्न मानी जाती है। ५ ब्राह्मी बूटी। ६. मालकंगनी। ज्योतिष्मती लता। ७ सोमलता। ८ एक छंद का नाम। ९ गाय। १० वचन। वाणी। शब्द। स्वर (को०)। ११ नदी। सरिता (को०)। १२ उत्कृष्ट या श्रेष्ठ स्त्री। भद्र एवं शिष्ट महिला (को०)। १३ दुर्गा देवी का एक रूप। महासरस्वती (को०)। १४ बौद्धों की एक देवी (को०)।

**सरस्वतीकंठाभरण**—संज्ञा पुं० [सं० सरस्वतीकण्ठाभरण] १ नाच के साठ मुद्रा भेदों में से एक। २ भोजकृत अलंकार का एक ग्रंथ। ३ एक पाठशाला जिसे धार के परमारवंशी राजा भोज ने स्थापित किया था।

**सरस्वती पूजन**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सरस्वती पूजा'।

**सरस्वती पूजा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती का उत्सव जो कहीं वसंत पंचमी को और कहीं आश्विन के नवरात्र में होता है।

**सरस्वान्[1]**—वि० [सं० सरस्वत्] १ जलपूर्ण। जलयुक्त। २ रसमय। रसीला। ३ सुस्वादु। स्वादिष्ट। ४ भव्य। शोभन। चुस्त-दुरुस्त। ५ भावनाप्रधान। भावुक।

सरस्वान्[२]—संज्ञा पुं० १ सागर। समुद्र। २ तालाब। सरोवर। ३. नद। महानद। ४ भैंसामहिष। ५ वायु (को०)।

सरहंग—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १ सेना का अफसर। नायक। कप्तान। २ मल्ल। पहलवान। ३ जबरदस्त। बलवान्। ४ वह जो किसी से न दबता हो। उद्दंड। सरकश। ५ पैदल सिपाही। ६ चोबदार। ७ कोतवाल।

सरहंगी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सिपहगिरी। सेना की नौकरी। २. उद्दंडता। ३ वीरता। ४ पहलवानी।

सरह—संज्ञा पुं० [सं० शलभ, प्रा० सरह] १ पतंग। फतिंगा। २ टिड्डी। उ०—कटक सरह अस छूट।—जायसी (शब्द०)।

सरहज—संज्ञा स्त्री० [सं० श्यालजाया] साले की स्त्री। पत्नी के भाई की स्त्री।

सरहटी—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पाक्षी] सर्पाक्षी नाम का पौधा। नकुलकंद।
विशेष—यह पौधा दक्षिण के पहाड़ों, आसाम, बरमा और लंका आदि में बहुत होता है। इसके पत्ते समवर्ती, २ से ५ इंच तक लंबे तथा १ से १॥ इंच तक चौड़े, अंडाकार, अनीदार और नुकीले होते हैं। टहनियों के अंत में छोटे छोटे सफेद रंग के फल आते हैं। इसके बीज बारीक तथा तिकोने होते हैं। सरहटी स्वाद में कुछ खट्टी और कड़वी होती है। कहते हैं कि जब साँप और नेवले में युद्ध होता है, तब नेवला अपना विष उतारने के लिये इसे खाता है। इसी से हिंदुस्तान और सिंहल आदि में इसकी जड़ साँप का विष उतारने की दवा समझी जाती है। इसकी छाल, पत्ती और जड़ का काढ़ा पुष्ट होता है और पेट के दर्द में भी दिया जाता है।

सरहत‡—संज्ञा पुं० [देश०] खलिहान में फैला हुआ अनाज बहारने का झाड़ू।

सरहतना‡—क्रि० स० [देश०] अनाज को साफ करने के लिये फटकना। पछोड़ना।

सरहद—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सर+अ० हद] १ सीमा। २ किसी भूमि की चौहद्दी निर्धारित करनेवाली रेखा या चिह्न। ३ सीमा पर की भूमि। सीमांत। सिवान।

सरहदी—वि० [फ़ा० सरहद+ई (प्रत्य०)] सरहद का। सरहद संबंधी। सीमा संबंधी। जैसे,—सरहदी झगड़े।

सरहद्द—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] दे० 'सरहद'।

सरहना—संज्ञा स्त्री० [देश०] मछली के ऊपर का छिलका। चूई।

सरहर—संज्ञा पुं० [सं० शर] [संज्ञा स्त्री० सरहरी] भद्रमंजु। रामशर। सरपत।

सरहरा[१]—वि० [सं० सरल+हिं० धड़ अथवा हिं० सरहर] १ सीधा ऊपर को गया हुआ। जिसमें इधर उधर शाखाएँ न निकली हों (पेड़)।

सरहरा[२]—वि० [सं० सरण] [वि० स्त्री० सरहरी] जिसपर हाथ पैर रखने से न जमे। फिसलाववाला। चिकना।

सरहरी[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० शर] १. मूँज या सरपत की जाति का एक पौधा जिसकी छड़ पतली, चिकनी और बिना गाँठ की होती है। २ गंडनी। सर्पाक्षी।

सरहरी[२]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरहरा] सर्दी या जुकाम की दशा में गले में होनेवाली खराश। सुरसुरी। सुरहुरी।

सरहस्य—वि० [सं०] १ गूढ़। भेदपूर्ण। २ उपनिषद् के साथ युक्त। ३ दार्शनिक शिक्षा या पराविद्या से युक्त (को०)।

सरहिंद—संज्ञा पुं० [फ़ा० सर+हिंद] पंजाब का एक स्थान।

सराँग‡—संज्ञा स्त्री० [सं० शलाका] लोहे की एक मोटी छड़ जिसपर पीटकर लोहार बरतन बनाते हैं।

सरा(पु)[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० शर] चिता। उ०—चंदन अगर मलयगिर काढ़ा। घर घर कीन्ह सरा रचि ठाढ़ा।—जायसी (शब्द०)।

सरा[२]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गति। संचलन। २ निर्झर। प्रपात। ३ प्रसारिणी लता (को०)।

सरा[३]—संज्ञा पुं० [अ०] पाताल।

सरा[४]—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १ सराय। मुसाफिरखाना। २ घर। मकान। ३ जगह। स्थान।

सरा—वि० [फ़ा० सरह्] बेमेल। खालिस। खरा (को०)।

सरा[५]—संज्ञा स्त्री० [देशी] माला। स्रक्।—देशी०, ८।२।

सराई[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० शलाका] १ शलाका। सलाई। २ सरकंडे की पतली छड़ी।

सराई[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० शराव (=प्याला)] मिट्टी का प्याला या *दीया। सकोरा।*

सराई[३]—[फ़ा० सराचह् (=एक पहनावा)] पायजामा।

सराग[१]—संज्ञा पुं० [सं० शलाक] १ लोहे की सीख। पतला सीखचा। नुकीली छड़। २ वह लकड़ी जो कुलावे के बीच में लगाई जाती है और उसके ऊपर कुलावा घूमता है।

सराग[२]—वि० [सं०] १ रागयुक्त। रंगीन। रंगदार। २ अलक्तक से रँगा हुआ। लाक्षारंजित। ३ प्रेमाविष्ट। मुग्ध। ४ शोभायुक्त। सुंदर (को०)।

सराजाम‡—संज्ञा पुं० [फ़ा० सर अंजाम] सामग्री। असबाब। सामान।

सराध‡—संज्ञा पुं० [सं० श्राद्ध] दे० 'श्राद्ध'। उ०—(क) जज्ञ सराध न कोऊ करै।—सूर, १।२९०। (ख) द्विज भोजन मख होम सराधा। सब कै जाइ करहु तुम बाधा।—मानस, १।१८१।
यौ०—सराधपख=श्राद्ध का पक्ष या पखवारा जो आश्विन कृ० १ से अमावास्या तक माना जाता है। पितृपक्ष। उ०—जौं लगि काग सराध पख तौ लगि तौ सनमानु।—बिहारी र०, दो० ४३४।

सराना—क्रि० स० [हिं० सारना का प्रेर०] पूर्ण कराना। संपादित कराना। (काम) कराना। उ०—तैं ही उनको मूड़ चढ़ायो। भवन विपिन सँग ही सँग डोलै ऐसेहि भेद लखायो। पुरुष भँवर दिन चारि आपुनो अपनो चाउ सरायो।—सूर (शब्द०)।

सराप—संज्ञा पुं० [सं० श्राप] दे० 'शाप'। उ०—तिन्हहि सराप दीन्ह अति गाढ़ा।—मानस, १।१३५।

**सरापना**(पु)—क्रि० स० [सं० शाप, हिं० सराप+ना (प्रत्य०)] १ शाप देना। बददुआ देना। अनिष्ट मनाना। कोसना। २. बुरा भला कहना। गाली देना।

**सरापा'**—अव्य० [फा०] आपाद मस्तक। पूरा का पूरा। सपूर्ण।

यौ०—सरापानाज=नाज नखरे से पूर्ण या भरा हुआ। सरापा-शरारत=शरारत भरा।

**सरापा'**—सज्ञा पुं० १ नखशिख। नख से शिख तक सर्वांग। २ नख-शिख का वर्णन (को०)।

**सराफ**—सज्ञा पुं० [अ० सर्राफ] १ रुपए पैसे या चाँदी सोने का लेन देन करनेवाला महाजन। २ सोने चाँदी का व्यापारी। ३ सोने चाँदी के बरतन, जेवर आदि का लेन देन करनेवाला। ४. बदले के लिये रुपए पैसे रखकर बैठनेवाला दूकानदार।

यौ०—सराफखाना=जहाँ सराफे का काम होता हो। सराफा।

**सराफा**—सज्ञा पुं० [अ० सर्राफ] १ सराफी का काम। रुपए पैसे या सोने चाँदी के लेन देन का काम। २ वह स्थान जहाँ सराफो की दूकानें अधिक हो। सराफो का बाजार। जैसे,—अभी सराफा नहीं खुला होगा। ३ कोठी। बक।

क्रि० प्र०—खोलना।

**सराफी**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सराफ+ई (प्रत्य०)] १ सराफ का काम। चाँदी सोने या रुपए पैसे के लेन देन का रोजगार। २ वह वर्णमाला जिसमे अधिकतर महाजन लोग लिखते है। महाजनी। मुडा। ३ नोट रुपए आदि भुनाने का बट्टा जो भुनानेवाले को देना पडता है।

यौ०—सराफी पारचा=हुडी।

**सराब'**—सज्ञा पुं० [अ०] १ मृगतृष्णा। २ धोखा देनेवाली वस्तु। ३ धोखा। वचन।

**सराब'**—सज्ञा स्त्री० [फा० शराब] दे० 'शराब'।

**सराबोर**—वि० [स० स्राव+हिं० बोर] बिलकुल भीगा हुआ। तरबतर। नहाया हुआ। आप्लावित।

**सराय'**—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ रहने का स्थान। घर। मकान। २. यात्रियो के ठहरने का स्थान। मुसाफिरखाना।

मुहा०—सराय का कुत्ता=अपने मतलब का यार। स्वार्थी। मतलबी। सराय का भठियारी=लडाकी और निर्लज्ज स्त्री।

**सराय'**—सज्ञा पुं० [देश०] गुल्ला नाम का पहाडी पेड।

विशेष—यह वृक्ष बहुत ऊँचा होता है और हिमालय पर अधिक होता है। इसके हीर की लकडी सुगधित और हलकी होती है और मकान आदि बनवाने के काम म आती है।

**सरार**—सज्ञा पुं० [देश०] घोडा बेल नाम की लता जिसकी जड बिलाई कद कहलाती है। दे० 'घोडा बेल'।

**सराव**(पु)'—सज्ञा पुं० [स० शराव] १ मद्यपात्र। प्याला। (शराब पीने का)। २ कसोरा। कटोरा। ३. दीया। उ०—हरि जू की आरती बनी। अति बिचित्र रचना रचि राखी परति न गिरा गनी। कच्छप अघ आसन अनूप अति डाँडी शेष फनी। मही सराव सप्त सागर घृत बाती शैल घनी।—सूर (शब्द०)। ४. एक तौल जो ६४ तोले की होती थी।

यौ०—सराव सपुट।

**सराव'**—वि० [स०] ध्वनियुक्त। गुजित। शब्दायमान (को०)।

**सराव'**—सज्ञा पु० १ आवरण। ढक्कन। २. कसोरा। शराव (को०)।

**सराव'**—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की पहाडी बकरी।

**सरावग**—सज्ञा पु० [स० श्रावक] जैन। सरावगी। उ०—ईस सीस बिलसत बिमल तुलसी तरल तरग। स्वान सरावग के कहे लघुता लहै न गग।—तुलसी ग्र०, पृ० १३५।

**सरावगी**—सज्ञा पु० [स० श्रावक] श्रावक धर्मावलबी। जैन धर्म माननेवाला। जैन।

विशेष—प्राय इस मत के अनुयायी आजकल वैश्य ही अधिक पाए जाते है।

**सरावन**†—सज्ञा पु० [स० सरण, हिं० सरना] जुते हुए खेत की मिट्टी बराबर करने का पाटा। हेगा।

**सरावसपुट**—सज्ञा पु० [स० शराव+सम्पुट] रसौषध फूँकने के लिये मिट्टी के दो कसोरो का मुँह मिलाकर बनाया हुआ एक बरतन।

**सराविका**—सज्ञा स्त्री० [स० शराविका] एक प्रकार की फुसी। दे० 'शराविका'।

**सरास**(पु)—सज्ञा पुं० [?] तुप। भूसी।

**सरासन**—सज्ञा पु० दश० [स० शरासन] दे० 'शरासन'। उ०—(क) कटि निपग कर बान सरासन।—मानस, ६।११। (ख) (ख) लछिमन चले क्रुद्ध होइ बान सरासन हाथ।—मानस, ६।५१।

**सरासर'**—वि० [स०] इधर उधर घूमनेवाला (को०)।

**सरासर'**—अव्य० [फा०] १ एक सिरे से दूसरे सिरे तक। यहा से वहा तक। २ बिलकुल। पूर्णतया। जैसे,—तुम सरासर झूठ कहते हो। ३ साक्षात्। प्रत्यक्ष।

**सरासरी'**—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ आसानी। फुरती। २. शीघ्रता। जल्दी। ३ मोटा अदाज। स्थूल अनुमान। ४ बकाया लगान का दावा।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

**सरासरी'**—क्रि० वि० १ जल्दी मे। हडबडी मे। जमकर नही। इतमीनान से नही। २ मोटे तौर पर। स्थूल रूप से।

**सराह**(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० श्लाघा] बडाई। प्रशसा। तारीफ। श्लाघा।

**सराहत**—सज्ञा स्त्री० [अ०] स्पष्ट कहना। विवृत करना या व्याख्या करना।

**सराहना'**—क्रि० स० [स० श्लाघन] १. तारीफ करना। बडाई करना। प्रशसा करना। उ०—(क) ऊँचे चितै सराहियत गिरह कबूतर लेत। दृग झलकित मुकलित बदन तन पुलकित हित हेत।—बिहारी (शब्द०)। (ख) जे फल देखी सोइ

फीका। ताकर काहु सराहे नीका।—जायसी (शब्द०)। (ग) सबै सराहत सीय लुनाई।—तुलसी (शब्द०)।

सराहना²—संज्ञा स्त्री० प्रशंसा। तारीफ। उ०—श्रीमुख जासु सराहना की ही श्री हरिचंद।—प्रतापनारायण (शब्द०)।

सराहनीय (पु)—वि० [हिं० सराहना + ईय (प्रत्य०)] १ प्रशंसा के योग्य। तारीफ के लायक। श्लाघनीय। २ अच्छा। बढ़िया। उम्दा।

सराहु—वि० [सं०] १ राहु से युक्त। राहु के साथ। २ (चंद्रमा) जो राहु से ग्रस्त हो (को०)।

सरि¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ झरना। निर्झर। झालर (को०)। २. दिशा (को०)। ३ दे० 'सरी'।

सरि(पु)²—संज्ञा स्त्री० [सं० सरित्] नदी।

सरि(पु)³—संज्ञा स्त्री० [सं० सदृश, प्रा० सरिस] बराबरी। समता। उ०—दाड़िम सरि जो न कै सका फाटेउ हिया दरकि।—जायसी (शब्द०)।

सरि⁴—वि० तुल्य। सदृश। समान।

सरि⁵—संज्ञा स्त्री० [देशी] हार। लरी। माला।

सरिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सरिका] गमनशील। जो जा रहा हो (को०)।

सरिका¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हीगपत्री। हीगुपत्री। २ मोतियों की लड़ी। ३ मुक्ता। ४ रत्न। ५ छोटा ताल या सरोवर। ६ एक तीर्थ। ७ गमन। प्रस्थान (को०)। ८ जानेवाली स्त्री (को०)।

सरिका²—संज्ञा पुं० [अ० सरिकह्] चौर्य। चोरी। तस्करता (को०)।

सरिगम—संज्ञा पुं० [हिं० सरगम] दे० 'सरगम'।

सरित्—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नदी। २ दुर्गा का एक नाम (को०)। सूत्र। डोरी (को०)।

सरित(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सरित्] सरिता। नदी। उ०—दुगति दुर्गन ही जु कुटिल गति सरितन ही को।—केशव (शब्द०)।

सरितापति—संज्ञा पुं० [सं० सरिताम्पति] १ नदियों का पति, समुद्र। २ चार की संख्या का वाचक शब्द (को०)।

सरितावरा—संज्ञा स्त्री० [सं० सरिताम्वरा] गंगा, जो नदियों में श्रेष्ठ है (को०)।

सरिता—संज्ञा स्त्री० [सं० सरित (=बहा हुआ)] १ धारा। प्रवाह। २ नदी। दरिया।

सरित्कफ—संज्ञा पुं० [सं०] नदी का फेन।

सरित्त(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सरित्] नदी। सरिता।

सरित्पति—संज्ञा पुं० [सं०] १ समुद्र। २ दे० 'सरितापति'।

सरित्सुत—संज्ञा पुं० [सं०] (गंगा के पुत्र) भीष्म।

सरित्वान्—संज्ञा पुं० [सं० सरित्वत्] सिंधु। समुद्र (को०)।

सरित्सुरंगा—संज्ञा स्त्री० [सं० सरित्सुरङ्गा] नहर। कुल्या (को०)।

सरिद्—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सरित्'।

सरिदधिपति—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सरित्पति' (को०)।

सरिदिही—संज्ञा स्त्री० [फा० सर (=सरदार) + देह (=गाँव)] वह नजर या भेंट जो जमींदार या उसका कारिंदा किसानों से हर फसल पर लेता है।

सरिदुभय—संज्ञा पुं० [सं०] नदी का दोनों किनारा (को०)।

सरिद्भर्ता—संज्ञा पुं० [सं० सरिद्भर्तृ] समुद्र।

सरिद्वत्—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र। सागर (को०)।

सरिद्वरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] (उत्तम नदी) गंगा।

सरिन्नाथ—संज्ञा पुं० [सं०] सागर (को०)।

सरिन्मुख—संज्ञा पुं० [सं०] नदी का उद्गम। मुहाना (को०)।

सरिमा—संज्ञा पुं० [सं० सरिमन्] १ गति। गमन। २ वायु। ३ काल। समय (को०)।

सरियाँ¹—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ ऊँची भूमि। २ पैसा या और कोई छोटा सिक्का। (सोनार)।

सरिया²—संज्ञा पुं० [सं० शर] १ सरकंडे की छड़ जो सुनहले या रुपहले तार बनाने में काम आती है। सरई। २ पतली छड़।

सरियाना—क्रि० स० [सं० स्तर] १ तरतीब से लगाकर इकट्ठा करना। बिखरी हुई चीजें ढंग से समेटना। जैसे,—लकड़ी सरियाना, कागज सरियाना। २ मारना। लगाना। (बाजारू)।

सरिर, सरिल—संज्ञा पुं० [सं०] सलिल। जल।

सरिवन—संज्ञा पुं० [सं० शालपर्ण] शालपर्ण नाम का पौधा। विपर्णी अंशुमती।

*विशेष*—यह क्षुप जाति की वनौषधि है और भारत के प्रायः सभी प्रांतों में होती है। इसकी ऊँचाई तीन चार फुट होती है। यह जंगली झाड़ियों में पाई जाती है। इसका कांड सीधा और पतला होता है। पत्ते बेल के पत्तों की भाँति एक सींके में तीन तीन होते हैं। ग्रीष्म ऋतु को छोड़ प्रायः सभी ऋतुओं में इसके फल फूल देखे जाते हैं। फूल छोटे और आसमानी रंग के होते हैं। फलियाँ चिपटी पतली और प्रायः आध इंच लंबी होती हैं। सरिवन औषध के काम में आती है।

सरिवर, सरिवरि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरि + सं० प्रति, प्रा० पडि, वडि] बराबरी। समता। उ०—तुम्हहि हम्हहि सरिवरि कस नाथा।—तुलसी (शब्द०)।

सरिश्क—संज्ञा पुं० [फा०] १. आँसू। २ बूँद (को०)।

सरिश्त—संज्ञा पुं० [फा०] १ स्वभाव। प्रवृत्ति। २ बनावट। निर्मिति। सृष्टि (को०)।

सरिश्ता—संज्ञा पुं० [फा० सररिश्तह् का विकृत रूप सरिश्तह्] १ अदालत। कचहरी। २ शासन या कार्यालय का विभाग। महकमा। दफ्तर। आफिस।

सरिश्तेदार—संज्ञा पुं० [फा० सरिश्तहदार] १ किसी विभाग का प्रधान कर्मचारी। २ अदालतों में देशी भाषाओं में मुकदमों की मिसलें रखनेवाला कर्मचारी।

सरिश्तेदारी--संज्ञा स्त्री० [फा०] १ सरिश्ते का भाव। २ सरिश्तेदार का काम या पद।

सरिषप--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सर्षप' (को०)।

सरिस(पु)--वि० [सं० सदृश, प्रा० सरिस] सदृश। समान। तुल्य। उ०--(क) जलपय सरिस बिकाइ देखहु प्रीति की रीति यह।--तुलसी (शब्द०)। (ख) उठिकै निज मस्तक भयो चालत असुर महान। बात बेग ते फल सरिस महि महँ गिरे बिमान। --गिरधरदास (शब्द०)।

सरी'--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तलैया। पुष्करिणी। छोटा जलाशय। २ झरना। छोटा प्रपात (को०)।

सरी'--संज्ञा स्त्री० [फा०] अध्यक्षता। सरदारी (को०)।

सरी'--संज्ञा स्त्री० [देशी] माला। हार।

सरीक†--वि० [फा० शरीक] दे० 'शरीक'।

सरीकत†--संज्ञा स्त्री० [फा० शिरकत] दे० 'शिरकत'।

सरीकता(पु)--संज्ञा स्त्री० [फा० शरीक + सं० ता (प्रत्य०)] साझा। हिस्सा। शिरकत। उ०--निपट निदरि बोले बचन कुठारपानि मानी त्रास औनिपन मानो मौनता गही। रोपे मापे लखन अकन अनपौही बातै तुलसी बिनीत बानी बिहँसि ऐसी कही। सुजस तिहारो भरे भुअन भृगुतिलक प्रबल प्रताप आपु कहो सो सबै कही। टूटयौ सो न जुरैगो सरासन महेस जू को, रावरी पिनाक मे सरीकता कहा रही।--तुलसी (शब्द०)।

सरीखा†--वि० [सं० सदृक्ष, प्रा० सरिक्ख, हिं० सरीखा] दे० 'सरीखा'।

सरीखा--वि० [सं० सदृक्ष, प्रा० सरिक्ख] सदृश। समान। तुल्य।

सरीफा--संज्ञा पुं० [सं० श्रीफल] एक छोटा पेड जिसके फल खाए जाते है।

विशेष--इसकी छाल पतली खाकी रग को होती है और पत्ते अमरूद के पत्तो के से होते हैं। फूल तीन दलवाले, चौडे और कुछ अनीदार होते है। फल गोलाई लिए हरे रग का होता है और उसपर उभरे हुए दाने होते है जो देखने मे बडे सुदर लगते है। बीजकोशो का गूदा बहुत मीठा होता है। इस फल मे बीज अधिक होते हैं। सरीफा गरमी के दिनो मे फूलता है और कातिक अगहन तक फल पकते है। विंध्य पर्वत पर बहुत से स्थानो मे यह आप से आप उगता है। वहाँ इसके जगल के जगल खडे है। जगली सरीफे के फल छोटे होते है और उनमे गूदा बहुत कम होता है।

सरीर'--संज्ञा पुं० [सं० शरीर] दे० 'शरीर'। उ०--सरुज सरीर बादि बहु भोगा।--मानस, २।१७८।

सरीर'--संज्ञा पुं० [अ०] सिंहासन। राजगद्दी। तख्त (को०)।

सरीर'--संज्ञा स्त्री० १ पदचाप। पदध्वनि। २ कलम की खरखराहट।

यौ०--सरीरेकलम = लिखते समय कागज पर होनेवाली कलम की खरखराहट।

सरीस(पु)'--वि० [सं० सदृश, प्रा० सरिस] समान। तुल्य। सरीखा। उ०--(क) विक्रम राज सरीस भौ बुधि बन्नन कवि चद।--पृ० रा० १।७०३। (ख) नुनहु नयन भल भरन सरीसा।--मानस, २।२३०।

सरीस(पु)'--संज्ञा पुं० [देशी] सह। साथ। उ०--पन्नापमि सानउ भ्रात सरीस। प्रथीपति आइ नमाइय सीस।--पृ० रा०, ५।३८।

सरीसृप--संज्ञा पुं० [सं०] १ रेंगनेवाला जतु। जैसे,--साँप, कनखजूरा आदि। २. सप। साँप। ३ विष्णु का एक नाम।

सरीसृप'--वि० रेंगनेवाला। पेट के बल सिमटते हुए चलनेवाला (को०)।

सरीह--वि० [अ०] जो प्रत्यक्ष हो खुला हुआ।

सरीहन्--अव्य० [अ०] प्रत्यक्षत। स्पष्टत (को०)।

सरु'--वि० [सं०] पतला। लघु। छोटा (को०)।

सरु--संज्ञा पुं० १ तीर। बाण। २ तलवार या कटार की मूठ। त्सरु (को०)।

सरुख--वि० [सं० सरुष] सक्रोध। क्रोधयुक्त।

सरुक्--वि० [सं०] १. दे० 'सरुच्'। २ दे० 'सरुज्'।

सरुच्--वि० [सं०] शोभायुक्त। कातिमान्।

सरुज्--वि० [सं०] कष्टग्रस्त। व्याधिग्रस्त। रोगयुक्त।

सरुज--वि० [सं०] रोगी। रोगयुक्त। रुग्न। उ०--सरुज सरीर बादि बहु भोगा। बिनु हरिभगति जायँ जप जोगा।--मानस, २।१७८।

सरुट्, सरुष्, सरुख--वि० [सं०] क्रोधयुक्त। कुपित। उ०--बोले भृगुपति सरुष हँसि तहूँ बधु सम बाम।--मानस, १।२८२।

सरुहाना(पु)†'--क्रि० अ० [?] अच्छा होना। ठीक होना।

सरुहाना(पु)'--क्रि० स० चगा करना। अच्छा करना। उ०--समुझि रहनि सुनि कहनि बिरह ब्रत अनप अमिय औषध सरुहाए।--तुलसी (शब्द०)।

सरूप'--वि० [सं०] [संज्ञा स्त्री० सरूपता] १ रूपयुक्त। आकारवाला। २ एक ही रूप का। सदृश। समान। ३ रूपवान। सुदर।

सरूप†'--संज्ञा पुं० [सं० स्वरूप] दे० 'स्वरूप'। उ०--जो सरूप बस सिव मन माही। जेहि कारन मुनि जतन कराही।--मानस १।१४६।

सरूपता--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक रूप या समान होने की स्थिति या भाव। सदृशता। २ ब्रह्मरूप होना, लीन होना जो मुक्ति के चार भेदो मे एक है। दे० 'सारूप्य'।

सरूपत्व--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सरूपता'।

सरूपा--संज्ञा स्त्री० [सं०] भूत की स्त्री जो असख्य रुद्रो की माता कही गई है।

सरूपी--वि० [सं० सरूपिन्] समान रूपवाला। सदृश (को०)।

सरूर--संज्ञा पुं० [फा० सुरूर] १ आनद। खुशी। प्रसन्नता। २ हलका नशा। नशे की तरग। मादकता।

सरेख(पु)--वि० [सं० श्रेष्ठ] [वि० स्त्री० सरेखी] अवस्था मे बडा और समझदार। श्रेष्ठ। चतुर। चालाक। सयाना। उ०--हँसि हँसि पूछै सखी सरेखी। जनहु कुमुदचदन मुख देखी।--जायसी (शब्द०)।

सरेखना—क्रि० स० [हिं०] १ अच्छी तरह समझा देना। १ दे० 'सहेजना'।

सरेखा¹—संज्ञा पुं० [स० श्लेषा] दे० 'श्लेषा' (नक्षत्र)।

सरेखा पु²—वि० [स० श्रेष्ठ] दे० 'सरेख'। उ०—ततखन बोला सुआ सरेखा। अगुवा सोइ पथ जेहि देखा।—जायसी (शब्द०)।

सरेदस्त—क्रि० वि० [फा०] १ इस समय। अभी। २ फिलहाल। अभी के लिये। इस समय के लिये। उ०—हाँ, यों तो मेरा खयाल है, सरेदस्त आप किसी संकट में नहीं हैं।—कंकाल, पृ० ६६।

सरेनौ—क्रि० वि० [फा०] नए ढंग से। पुनः शुरू से।

सरेबाजार—क्रि० वि० [फा० सरे बाजार] बाजार में। जनता के सामने। २ खुलेआम। सबके सामने।

सरबाम—संज्ञा पुं० [फा०] अटारी। कोठा (को०)।

सरेरा, सरेला—संज्ञा पुं० [देश०] १ पाल में लगी हुई रस्सी जिसे ढीला करने से पाल की हवा निकल जाती है। २ मछली की वंसी की डोरी। शिस्त।

सरेश—वि०, संज्ञा पुं० [फा०] दे० 'सरेस'।

सरेशाम—संज्ञा पुं० [फा०] सायकाल। सध्याकाल। सध्यामुख (को०)।

सरेशीर—संज्ञा पुं० [फा०] मलाई। सरशीर।

सरेस¹—संज्ञा पुं० [फा० सरेश] एक लसदार वस्तु जो ऊँट, गाय, भैंस, आदि से चमडे या मछली के पोटे को पकाकर निकालते हैं। सहरेस। सरेश।

विशेष—यह कागज, कपडे, चमडे आदि को आपस में जोडने या चिपकाने के काम आता है। जिल्दबंदी में इसका व्यवहार बहुत होता है।

सरेस²—वि० चिपकनेवाला। लसीला।

सरेसमाही—संज्ञा पुं० [फा० सरेश माही] सफेद या काले रंग का गोंद के समान एक द्रव्य।

विशेष—यह एक प्रकार की मछली के पेट से निकलता है जिसकी नाक लंबी होती है और जिसे नदी का सुअर कहते हैं। यह दुर्गंधयुक्त और स्वाद में कडुआ होता है।

सरौंट पु†—संज्ञा पुं० [स० शाट+वर्त्त, हिं० सिलवट] कपडो में पडी हुई सिलवट। शिकन। वली। उ०—नट न सीस साबित भई लुटी सुखन की मोट। चुप करिए चारी करति सारी परी सरौंट।—बिहारी (शब्द०)।

सरो—संज्ञा पुं० [फा० सर्व] एक सीधा पेड जो बगीचों में शोभा के लिये लगाया जाता है। वनझाऊ।

विशेष—इस पेड का स्थान काश्मीर, अफगानिस्तान और फारस आदि एशिया के पश्चिमी प्रदेश हैं। फारसी की शायरी में इसका उल्लेख बहुत अधिक है। ये शायर नायिका के सीधे डीलडौल की उपमा प्रायः इसी से दिया करते हैं। यह पेड़ बिलकुल सीधा ऊपर को जाता है। इसकी टहनियाँ पतली होती हैं और पत्तियों से लगी होने के कारण दिखाई नहीं देतीं। पत्तियाँ छोटी रेखाओं के जाल के रूप में बहुत घनी और सुंदर होती हैं। यह पेड़ झाऊ की जाति का है, और उसी के से फल भी इसमें लगते हैं।

सरोई—संज्ञा पुं० [हिं० सरो ?] एक प्रकार का बड़ा पेड़।

विशेष—यह वृक्ष बहुत ऊँचा होता है। इसकी लकड़ी ललाई लिए सफेद होती है और चारपाइयाँ आदि बनाने के काम में आती है। इसकी छाल से रंग भी निकाला जाता है।

सरोकार—संज्ञा पुं० [फा०] [वि० सरोकारी] १. परस्पर व्यवहार का संबंध। २ लगाव। वास्ता। प्रयोजन। मतलब।

सरोकारी—वि० [फा०] सरोकार रखनेवाला (को०)।

सरोज पु—संज्ञा पुं० [सं०] १ कमल। २. सारस पक्षी (डिं०)। पु ३ मुख। उ०—फूले सरोज बनाउ कै ऊपर तापर खंजन द्वै थिरकाइहौं।—भिखारी ग्रं०, भा० १, पृ० ३१।

यौ०—सरोजखंड = कमलों का समूह। सरोजवदन। सरोजमुख। सरोजराग = पद्मराग। सरोजल।

सरोजना पु—क्रि० स० [सं० सायुज्य] पाना। उ०—हम सालोक्य स्वरूप सरोज्यो रहत समीप सहाई। सो तजि कहत और की और तुम अलि बडे अदाई।—सूर (शब्द०)।

सरोजमुखी—वि० स्त्री० [सं०] कमल के समान मुखवाली। सुंदरी। उ०—सो तन मनोज की ही मौज है सरोजमुखी हाँस्याइ साजै रहै हैं सरदार कौ।—भिखारी ग्रं०, भा० १, पृ० ६६।

सरोजल—संज्ञा पुं० [सं०] तालाब का पानी (को०)।

सरोजिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कमलों से भरा हुआ ताल। कमलपूर्ण सरसी। २ कमलों का समूह। कमलवन। ३ कमल का पौधा (को०)। ४ कमल का फूल।

सरोजी¹—वि० [सं० सरोजिन्] [स्त्री० सरोजिनी] १ कमलवाला। २ जहाँ कमल हों।

सरोजी²—संज्ञा पुं० १ (कमल से उत्पन्न) ब्रह्मा। २ बुद्ध का एक नाम।

सरोतर†—वि० [सं० सर्वत्र, हिं० सरवत्तर] १ निरंतर। लगातार। अनवरत। उ०—रँग छलता जहाँ सरोतर चक। ऊ गुरुन क बनारसी बैठक।—खुदा की०। २ साफ। सुस्पष्ट।

सरोता†—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सरौता'।

सरोत्सव—संज्ञा पुं० [सं०] १ बकुला। बक पक्षी। २ सारस।

सरोद—संज्ञा पुं० [फा०] १. बीन की तरह का एक प्रकार का बाजा।

विशेष—इसमें ताँत और लोहे के तार लगे रहते हैं और इसके आगे का हिस्सा चमडा से मढा रहता है।

२ नाचने गाने की क्रिया। गान और नृत्य।

सरोधा—संज्ञा पुं० [सं० स्वरोदय] श्वास के दाहिने या बाएँ नथने से निकलना देखकर भविष्य की बातें कहने की विद्या।

सरोपा—संज्ञा पुं० [फा०] १ सिर और पैर। २. सिरोपाव। खिलअत (को०)।

सरोरक्ष, सरोरक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] जलाशय की रक्षा करनेवाला व्यक्ति [को०]।

सरोरुह—संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

सरोला—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की मिठाई।

विशेष—यह पोस्ते, छुहारे, बादाम आदि मेवों के साथ मैदे को घी और चीनी में पकाकर बनाई जाती है।

सरोवर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सरोवरी] १ तालाब। पोखरा। २ झील। ताल।

सरोवरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुष्करिणी। छोटी तलैया। सरसी। उ०—नाभि सरोवरी औ' त्रिवली की तरगनि पैरत ही दिन-राति है।—भिखारी ग्र०, भा० २, पृ० १२६।

सरोविंदु—संज्ञा पुं० [सं० सरोविन्दु] एक प्रकार का वैदिक गीत।

सरोष—वि० [सं०] क्रोधयुक्त। कुपित। उ०—सुनि सरोष भृगुनायक आए। बहुत भाँति तिन आँखि देखाए।—मानस, १।२६३।

सरोस(पु)—वि० [सं० सरोष] दे० 'सरोष'।

सरोसामान—संज्ञा पुं० [फा० सर + व + सामान] सामग्री। उपकरण। असबाव।

सरोही—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिरोही] दे० 'सिरोही'।

सरौं[1]—संज्ञा पुं० [सं० शराव] १ कटोरी। प्याली। २ ढक्कन। ढकना।

सरौं[2]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरो] एक वृक्ष विशेष। दे० 'सरो'।

सरौट(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिलवट] दे० 'सरौंट'।

सरौता—संज्ञा [सं० सार (=लोहा) + पत्र, प्रा० सारवत्त] [स्त्री० अल्पा० सरौती] सुपारी काटने का औजार।

विशेष—यह लोहे के दो खडों का होता है। ऊपर का खड गँडासी की भाँति धारदार होता है और नीचे का मोटा, जिसपर सुपारी रखते हैं, दोनों खडों के सिरे ढीली कील से जुड़े रहते हैं, जिससे वे ऊपर नीचे घूम सकते हैं। इन्हीं दोनों खडों के बीच में रखकर और ऊपर से दबाकर सुपारी काटी जाती है।

सरौती[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरौता] छोटा सरौता।

सरौती[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० शरपत्री] एक प्रकार की ईख जिसकी छड़ पतली होती है।

विशेष—इस ईख की गाँठें काली होती हैं और सब तना फेद होता है।

सर्क—संज्ञा पुं० [सं०] १ मन। चित्त। २ वायु। ३ एक प्रजापति का नाम। ४ ब्रह्मा (को०)।

सर्करा(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शर्करा] दे० 'शर्करा'। उ०—ज्यों सर्करा मिलै सिकता महँ बल ते न कोउ बिलगावै।—तुलसी ग्र०, पृ० ५४२।

सर्कस—संज्ञा पुं० [अ०] १ वह स्थान जहाँ जानवरों का खेल और शारीरिक शक्ति का करतब दिखाया जाता है। क्रीडागन। २ वह मडली जो पशुओं तथा नटों को साथ रखती है और खेल कूद के तमाशे दिखाती है।

सर्का—संज्ञा पुं० [अ० सर्क़ह्] १ चोरी। २ दूसरे के भाव या लेख को चुरा लेने की क्रिया। साहित्यिक चोरी।

सर्कार—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सरकार'।

सर्कारी—वि० [हिं०] दे० 'सरकारी'।

सर्किट—संज्ञा पुं० [अं०] १ मडल। परिधि। परिणाह। घेरा। २ परिभ्रमण। आवर्तन।

यौ०—सर्किट हाउस = दे० 'सर्क्युट हाउस'।

सर्किल—संज्ञा पुं० [अं०] कई महल्लों, गाँवों या कसबों आदि का समूह जो किसी काम के लिये नियत हो। हलका। जैसे,—सर्किल अफसर, सर्किल इन्सपेक्टर। २ घेरा। वृत्त।

सर्क्युट हाउस—संज्ञा पुं० [अं०] जिले के प्रधान नगर में वह सरकारी मकान या कोठी जहाँ, दौरा करते हुए उच्च राज्य कर्मचारी या बड़े अफसर लोग ठहरते हैं। सरकारी कोठी।

सर्क्यूलर—संज्ञा पुं० [अं०] १ गश्ती चिट्ठी। २ सरकारी आज्ञापत्र जो दफ्तरों में घुमाया जाता है। ३ वह पत्र, विज्ञप्ति या सूचना जो बहुत से व्यक्तियों के नाम भेजी जाय। गश्ती चिट्ठी।

सर्क्ष—वि० [सं०] ऋक्षयुक्त। नक्षत्रमंडित। नक्षत्रयुक्त [को०]।

सर्ग[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ गमन। गति। चलना या बढ़ना। २. ससार। सृष्टि। जगत् की उत्पत्ति। ३ बहाव। झोंक। प्रवाह। ४ छोड़ना। चलाना। फेंकना। ५ छोड़ा हुआ अस्त्र। ६ मूल। उद्गम। उत्पत्ति स्थान। ११ प्रयत्न। चेष्टा। १२ सकल्प। १३ किसी ग्रथ (विशेषत काव्य) का अध्याय। प्रकरण। परिच्छेद। उ०—प्रथम सर्ग जो सेप रह, दूजे सप्तक होइ। तीजे दोहा जानिए सगुन विचारब सोइ।—तुलसी ग्र०, पृ० ६७। १४ मोह। मूर्छा। १५. शिव का एक नाम। १६ धावा। हमला (सेना का)। १७ स्वीकृति (को०)। १८ युद्धोपकरण, शस्त्रादि का उत्पादन (को०)। १९ रुद्र का एक पुत्र (को०)। २० जीव। प्राणी (को०)। २१. मलत्याग (को०)।

सर्ग(पु)[2]—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ग] दे० 'स्वर्ग'।

यौ०—सर्गपताली।

सर्गक—वि० [सं०] सर्जन करनेवाला। निर्माता [को०]।

सर्गकर्ता—संज्ञा पुं० [सं० सर्गकर्तृ] सृष्टि निर्माता। स्रष्टा [को०]।

सर्गकालीन—वि० [सं०] जो सृष्टिनिर्माण के काल का या उससे सबद्ध हो [को०]।

सर्गक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] सृष्टि का सिलसिला। सर्ग का क्रम [को०]।

सर्गपताली—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ग + पाताल + हिं० ई (प्रत्य०)] १. जिसकी आँखें ऐंची हों। ऐंचाताना। २ वह बैल जिसका एक सींग ऊपर की ओर उठा हो और दूसरा नीचे की ओर झुका हो।

सर्गपुट—संज्ञा पुं० [सं०] शुद्ध राग का एक भेद।

सर्गबंध—वि० [सं० सर्गबन्ध] जो कई अध्यायों या सर्गों में विभक्त हो। जैसे,—सर्गबंध काव्य।

सर्गुन‡—वि० [स० सगुण] दे० 'सगुण'।

सर्चलाइट—संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार की बहुत तेज बिजली की रोशनी जिसका प्रकाश रिफलेक्टर या प्रकाश-परावर्तक द्वारा लंबाई में बहुत दूर तक जाता है। अन्वेषक प्रकाश। प्रकाश प्रक्षेपक।

विशेष—इसका प्रकाश इतना तेज होता है कि आँखें सामने नहीं ठहरती और दूर तक की चीजें साफ दिखाई देती हैं। दुर्घटना के बचाव के लिये पहले प्रायः जहाजों पर इसका उपयोग होता था, पर आजकल मेल, एक्सप्रेस आदि ट्रेनों के इंजिनों के आगे भी यह लगी रहती है।

सर्ज¹—संज्ञा पुं० [स०] १ बड़ी जाति का शाल वृक्ष। अजकर्ण वृक्ष। २ राल। धूना। करायल। ३ शल्लकी वृक्ष। सलई का पेड़। ४ विजयसाल का पेड़। असन वृक्ष।

यौ०—सर्जनिर्यास, सर्जनिर्यासक = दे० 'सर्जमणि'। सर्जरस।

सर्ज²—संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार का बढ़िया मोटा ऊनी कपड़ा जो प्रायः कोट आदि बनाने के काम में आता है।

सर्जक—संज्ञा पुं० [स०] १ बड़ा शाल वृक्ष। २ विजयसाल। ३ सलई का पेड़। ४ मट्ठा छोड़ने पर गरम दूध का फटाव।

सर्जन¹—संज्ञा पुं० [स०] [वि० सजनीय, सर्जित] १ छोड़ना। त्याग करना। फेंकना। २ निकालना। ३ सृष्टि का उत्पन्न होना। सृष्टि। ४ निर्माण। ५ सेना का पिछला भाग। ६ ढीला करना (को०)। ७ मलत्याग (को०)। ८ माल का गोद।

सर्जन²—संज्ञा पुं० [अ०] अस्त्र चिकित्सा करनेवाला। चीर फाड़ करनेवाला डाक्टर। जर्राह।

सर्जना—संज्ञा स्त्री० [स०] रचना। निर्माण। सृष्टि (को०)।

सर्जनी—संज्ञा स्त्री० [स०] गुदा की वलियों में से बीचवाली वली जो मल, पवनादि निकालती है।

सर्जमणि—संज्ञा पुं० [स०] १ मोचरस। सेमल का गोद। २ राल। धूना। करायल।

सर्जरस—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'सर्जमणि' (को०)।

सर्जरी—संज्ञा स्त्री० [अ०] चीर फाड़ करके चिकित्सा करने की क्रिया या विद्या। शल्य चिकित्सा।

सर्जि—संज्ञा स्त्री० [स०] सज्जी।

सर्जिका—संज्ञा स्त्री० [स०] सज्जी खार।

सर्जिकाक्षार, सर्जिक्षार—संज्ञा पुं० [स०] सज्जी। क्षार।

सर्जी—संज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सर्जि'।

सर्जु¹—संज्ञा पुं० [स०] १ वणिक। व्यापारी। २ दे० 'सर्ज'।

सर्जु²—संज्ञा स्त्री० विद्युत्। बिजली।

सर्जू¹—संज्ञा पुं० [स०] वणिक्। व्यापारी। २ गले का हार। कंठहार। ३ गमन। अनुसरण (को०)।

सर्जू²—संज्ञा स्त्री० दे० 'सर्जु²'।

सर्जू(पु)³—संज्ञा स्त्री० [स० सरयू] दे० 'सरयू'।

सर्जूर—संज्ञा पुं० [सं०] दिन।

सर्जेंट—संज्ञा पुं० [अ०] दे० 'सारजंट'।

सर्ज्य—संज्ञा पुं० [स०] १ राल। धूना (को०)।

सर्टिफिकेट—संज्ञा पुं० [अ० सर्टिफिकेट] १ परीक्षा में उत्तीर्ण होने का प्रमाणपत्र। सनद। २ चाल चलन, स्वास्थ्य, योग्यता आदि का प्रमाणपत्र।

सर्णसि, सर्णीक—संज्ञा पुं० [स०] जल। पानी (को०)।

सर्त—संज्ञा स्त्री० [फा० शर्त] दे० 'शर्त्त'।

सर्ता—संज्ञा पुं० [स० सर्तृ] घोड़ा।

सर्द—वि० [फा०] १ ठंढा। शीतल। २ सुस्त। काहिल। ढीला। ३ मंद। धीमा।

यौ०—सर्द गर्म = (१) ऊँच नीच। (२) काल या दशा का परिवर्तन। सर्दबाई। सर्दबाजारी = बाजार में वस्तुओं की माँग का अभाव। सर्दमिजाज।

मुहा०—सर्द होना = (१) ठंढा पड़ना। शीतल होना। (२) मरकर तमाम हो जाना। (३) मंद हो जाना। धीमा हो जाना। (४) उत्साह रहित होना। चुप हो जाना। दब जाना।

४ नपुंसक। नामर्द। ५ बेस्वाद। बेमजा।

सर्दई—वि० [प० सर्दा + ई (प्रत्य०)] सर्दा के रंग का। हरिताभा युक्त पीले रंगवाला।

सर्दबाई—संज्ञा स्त्री० [फा० सर्द + हिं० बाई] हाथी की एक बीमारी जिसमें उसके पैर जकड़ जाते हैं।

सर्दमिजाज—वि० [फा० सर्द + मिज़ाज] १ मुर्दा दिल। जिसमें शील न हो। बेमुरौवत। रूखा।

सर्दा—संज्ञा पुं० [प०] बढ़िया जाति का लंबोतरा खरबूजा जो काबुल से आता है।

सर्दावा—संज्ञा पुं० [फा० सर्दाबह्] १ तहखाना। तलगृह (को०)। २ कब्र। समाधि।

सर्दार—संज्ञा पुं० [फा० सरदार] दे० सरदार'।

सर्दी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ सर्द होने का भाव। ठंढापन। शीतलता। २ जाड़ा। शीत।

मुहा०—सर्दी पड़ना = जाड़ा होना। सर्दी खाना = ठंढ सहना। शीत सहना। सर्दी लगना = सर्दी खाना।

३ जुकाम।

क्रि० प्र०—होना।

सर्प—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सर्पिणी] २ रेंगना। २ साँप।

यौ०—सर्पककालिका = दे० 'सर्पककाली'। सर्प कोटर = साँप का बिल। सर्पदंश = साँप का काटना। सर्पदष्ट = (१) वह जिसे साँप ने काटा हो। सर्प द्वारा दष्ट। (२) साँप का काटना। सर्पधारक = सँपेरा। सर्पनामा = दे० 'सर्पककाली'। सर्पनिर्मोचन = केंचुल। सर्पफण, सर्पफणा = साँप का फन। सर्पबलि = साँपों को दी जानेवाली बलि या उपहार। सर्पभृता = पृथ्वी।

धरित्री। सर्पमणि = वह मणि या रत्न जो सर्प के सिरपर पाया जाता है। सर्पविद् = सँपेरा। सर्पविवर = साँप का बिल। सर्पवेद = दे० 'सर्प विद्या'। सर्पव्यापादन = (१) साँप द्वारा काटे जाने से मरना। (२) सर्प का व्यापादन। साँपो को मारना।

३ ज्योतिष मे एक प्रकार का बुरा योग। ४ नागकेसर। ५ ग्यारह रुद्रो मे से एक। ६ एक म्लेच्छ जाति। ७ सरण। गमन (क्रो०)। ८ वक्र या कुटिल गति (को०)। ९ आश्लेषा नक्षत्र (को०)। १० एक राक्षस (को०)।

सर्पकंकालिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पकङ्कालिका] सर्प लता।

सर्पकाल—संज्ञा पुं० [सं०] साँपो का काल, गरुड। उ०—सर्पकाल कालीगृह आए। खगपति बलि बलात सो खाए।—गोपाल (शब्द०)।

सर्पगंधा—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पगन्धा] १ गंध नाकुली। २ नकुल कंद। नाकुली। ३ नागदवन नामक जड़ी।

सर्पगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सर्प की गति। २ कुटिल गति। कपट की चाल।

सर्पगृह—संज्ञा पुं० [सं०] साँप का घर। बाँबी।

सर्पघातिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरहँटी। सर्पाक्षी।

सर्पच्छत्र, सर्पच्छत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] छत्राक। खुमी। कुकरमुत्ता।

सर्पछिद्र—संज्ञा पुं० [सं०] सर्प + हिं० छिद्र] साँप का बिल। बाँबी।

सर्पण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सर्पित, सर्पणीय] १ रेंगना। सरकना। २ धीरे धीरे चलना। ३ छोटे हुए तीर का भूमि से लगा हुआ जाना। ४ कुटिल या वक्र गति (को०)।

सर्पतनु—संज्ञा पुं० [सं०] वृहती का एक भेद।

सर्पतृण—संज्ञा पुं० [सं०] नकुल कंद।

सर्पदंडा—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पदण्डा] सिंहली पीपल।

सर्पदंडी—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पदण्डी] १ गोरक्षी। गोरख इमली। २ गँगरेन। नागबला।

सर्पदंता—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पदन्ता] सिंहली पीपल।

सर्पदंती—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पदन्ती] नागदंती। हाथी शुंडी।

सर्पदंष्ट्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ साँप का दंत। २ जमालगोटा।

सर्पदंष्ट्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दांती। उदुंबर पर्णी।

सर्पदंष्ट्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] अजशृंगी। विषाणी (को०)।

सर्पदंष्ट्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वृश्चिकाली। २ दंती। उदुंबर-पर्णी। ३ बिछुआ। वृश्चिका।

सर्पदमनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वंध्या कर्कोटकी (को०)।

सर्पद्विट्, सर्पद्विष—संज्ञा पुं० [सं०] मोर। मयूर।

सर्पनेत्रा—संज्ञा पुं० [सं०] १ सर्पाक्षी। २ गंधनाकुली।

सर्पपति—संज्ञा पुं० [सं०] शेषनाग।

सर्पपुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नागदंती। २ बाँझ खेखसा।

सर्पप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] चंदन।

सर्पफणज—संज्ञा पुं० [सं०] सर्पमणि।

सर्पफेण—संज्ञा पुं० [सं०] अफीम। अहिफेन।

सर्पबंध—संज्ञा पुं० [सं० सर्पबन्ध] कुटिल या पेचीली चाल।

सर्पबेलि—संज्ञा स्त्री० [सं०] नागवल्ली। पान।

सर्पभक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] १ नकुल कंद। नाकुली कंद। २ मोर। मयूर पक्षी।

सर्पभुक्, सर्पभुज—संज्ञा पुं० [सं०] १ नकुल कंद। २ मोर। मयूर। ३ सारस पक्षी। ४ एक प्रकार का बहुत बड़ा साँप (को०)।

सर्पमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरहँटी। सर्पाक्षी।

सर्पयज्ञ, सर्पयाग—संज्ञा पुं० [सं०] एक यज्ञ जो नागो के संहार के लिये जनमेजय ने किया था।

सर्पराज—संज्ञा पुं० [सं०] १ सर्पों के राजा, शेषनाग। २ वासुकि।

सर्पलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] नागवल्ली। पान।

सर्पवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] नागवल्ली। पान।

सर्पविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] साँप को पकड़ने या उन्हें वश मे करने की विद्या।

सर्पव्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] सेना का एक प्रकार का व्यूह जिसकी रचना सर्प के आकार की होती थी।

सर्पशीर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार की ईंट जो यज्ञ की वेदी बनाने के काम मे आती थी। २ तांत्रिक पूजा मे हाथ और पंजे की एक मुद्रा।

सर्पसत्र—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सर्पयज्ञ'।

सर्पसत्री—संज्ञा पुं० [सं० सर्पसत्रिन्] राजा जनमेजय का एक नाम जिन्होने सर्पयज्ञ किया था।

सर्पसुगंधा, सर्पसुगंधिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पसुगन्धा, सर्पसुगन्धिका] सर्पगंधा। गंधनाकुली।

सर्पसहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरहँटी। सर्पाक्षी।

सर्पसारी व्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के अनुसार वह भोगव्यूह जिसमे पक्ष, कक्ष तथा उरस्य विषम हो।

सर्पहा[१]—संज्ञा पुं० [सं० सर्पहन्] १ सर्प का मारनेवाला। नेवला। २ गरुड (को०)।

सर्पहा[२]—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंडेनी। सरहँटी। सर्पाक्षी।

सर्पांगी—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पाङ्गी] १ सरहँटी। २ सिंहली पीपल। ३ नकुल कंद।

सर्पांत—संज्ञा पुं० [सं० सर्पान्त] गरुड का एक पुत्र (को०)।

सर्पा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ साँपिन। सर्पिणी। २ फणिलता।

सर्पाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ रुद्राक्ष। शिवाक्ष। २ सर्पाक्षी। सरहँटी।

सर्पाक्षी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सरहँटी। २ गंधनाकुली। ३ सर्पिणी। ४. श्वेत अपराजिता। ५. शंखिनी।

सर्पाख्य—संज्ञा पुं० [सं०] नाग केसर।

सर्पादिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गंधनाकुली। गंध रास्ना। रास्ना। २ नकुल कंद।

सर्पाभ—वि० [सं०] १ साँप जैसे रंगवाला। २ जो साँप की तरह का हो [को०]।

सर्पाराति—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सर्पारि' [को०]।

सर्पारि—संज्ञा पुं० [सं०] सर्पों का शत्रु। १ गरुड। २ नेवला। ३ मयूर। मोर।

सर्पावास—संज्ञा पुं० [सं०] १ सर्पों के रहने का स्थान। बाँबी। २ चंदन। मलयज। संदल।

सर्पाशन—संज्ञा पुं० [सं०] १ मयूर। मोर। २ गरुड।

सर्पास्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसका मुँह साँप की तरह हो। साँप के समान मुखवाला। २ खर नामक राक्षस का एक सेनापति जिसे राम ने युद्ध में मारा था।

सर्पास्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक योगिनी का नाम [को०]।

सर्पि—संज्ञा पुं० [सं०] १ घृत। घी। २ एक वैदिक ऋषि का नाम।

यौ०—सर्पिमंड = घी का मट्ठा या फेन। सर्पिसमुद्र = घी का समुद्र।

सर्पिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटा साँप। २ एक नदी का नाम।

सर्पिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ साँपिन। मादा साँप। २ भुजगी लता।

विशेष—यह सर्प के आकार की होती है और इसमें विष का नाश करने और स्तनों को बढ़ाने का गुण होता है।

सर्पित—संज्ञा पुं० [सं०] साँप के काटने का क्षत। सर्पदंश।

सर्पिरब्धि—संज्ञा पुं० [सं०] घृत का सागर।

सर्पिर्मंड—संज्ञा पुं० [सं० सर्पिर्मण्ड] पिघले हुए मक्खन का फेन।

सर्पिर्मेही—संज्ञा पुं० [सं० सर्पिर्मेहिन्] एक प्रकार के प्रमेह रोग से ग्रस्त व्यक्ति।

सर्पिल—वि० [सं०] साँप के समान [को०]।

सर्पिष्क—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सर्पिस्'।

सर्पिष्कुंडिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पिष्कुण्डिका] घी रखने का पात्र। घृतकुंभ।

सर्पिष्मान्—वि० [सं० सर्पिष्मत्] घृताक्त। घी से तर [को०]।

सर्पिस्—संज्ञा पुं० [सं० सर्पिष्] घृत। घी।

सर्पी¹—वि० [सं० सर्पिन्] [सं० सर्पिणी] रेंगनेवाला। धीरे धीरे चलनेवाला।

सर्पी²—संज्ञा पुं० [सं० सर्पिन्] दे० 'सर्पि' या 'सर्पिस्'।

सर्पेंट—संज्ञा पुं० [अं०] साँप। सर्प।

सर्पेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] वासुकि का नाम जो साँपों के राजा हैं [को०]।

सर्पेष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] चंदन।

सर्पोन्माद—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का उन्माद जिसमें मनुष्य सर्प की भाँति लोटता, जीभ निकालता और क्रोध करता है। इसमें गुड, दूध आदि खाने की अधिक इच्छा होती है।

सर्फ—संज्ञा पुं० [अ० सर्फ़] १ व्यय। खर्च। जैसे,—इस काम में सौ रुपए सर्फ हो गए। २ उपयोग। इस्तेमाल (को०)। ३ व्याकरण में पदव्याख्या। वाक्यविश्लेषण (को०)।

सर्फा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सर्फ़ह्] १ खर्च। व्यय। २ लाभ। नफा। मुनाफा (को०)। ३ अधिक व्यय। अपव्यय (को०)। ४ कंजूसी। कृपणता (को०)। ५ मत्ताइस नक्षत्रों में १२ वाँ नक्षत्र। उत्तराफाल्गुनी (को०)। ६ इंसाफ। न्याय (को०)।

सर्फी—वि० [अ० सर्फ़ी] सर्फ अर्थात् पदव्याख्या, वाक्यविश्लेषण आदि का ज्ञाता। व्याकरण जाननेवाला [को०]।

सर्बस(पु)—वि० [सं० सर्वस्व] दे० 'सर्वस्व'।

सर्म(पु)¹—संज्ञा पुं० [सं० शर्म] दे० 'शर्म'। कल्याण। देहि अवलंब न बिलंब अंभोजकर चक्रधर तेज बल सर्म रासी।—तुलसी (शब्द०)।

सर्म²—संज्ञा पुं० [सं०] १ गति। गमन। २ आकाश। व्योम। ३ स्वर्ग [को०]।

सर्म³—संज्ञा पुं० [सं० शर्मन्] प्रसन्नता। आनंद। खुशी [को०]।

सर्मक—संज्ञा पुं० [अ० समक] एक साग। वास्तुक। वथुआ [को०]।

सर्मा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] शीत ऋतु। शीत काल [को०]।

सर्माई—वि० [फ़ा०] शीत ऋतु का। जाड़े का। जैसे, कपड़ा, पहनावा [को०]।

सर्रा—संज्ञा पुं० [अनु० सर सर] लोहे या लकड़ी की छड़ जिसपर गराड़ी घूमती है। धुरी। धुरा।

सर्राफ—संज्ञा पुं० [अ० सर्राफ़] १ सोने चाँदी या रुपए पैसे का व्यापार करनेवाला। २ बदले के लिये पैसे, रुपए आदि लेकर बैठनेवाला।

मुहा०—सर्राफ के से टके = वह सौदा जिसमें किसी प्रकार की हानि न हो।

३ धनी। दौलतमंद। ४ पारखी। परखनेवाला।

सर्राफ नानुआ—संज्ञा पुं० [अ० सर्राफ + ?] विवाह आदि शुभ अवसरों पर कोठीवालों या महाजनों का नौकरों को मिठाई, रुपया पैसा आदि बाँटना।

सर्राफा—संज्ञा पुं० [अ० सर्राफ़ह्] दे० 'सराफा'।

सर्राफी—संज्ञा स्त्री० [अ० सर्राफ़ी] दे० 'सराफी'।

सर्व¹—वि० [सं०] सारा। सब। समस्त। तमाम। कुल।

यौ०—सर्वकांचन = पूरा सोने का बना हुआ। सर्वकाम्य = (१) जिसकी प्रत्येक व्यक्ति इच्छा करे। (२) सर्वप्रिय। सर्वकृत् = सर्वोत्पादक। ब्रह्मा। सर्वकृष्ण = अत्यंत काला। सर्वक्षय = संपूर्ण प्रलय या विनाश। सर्वक्षित् = जो सब में हो। सर्वजन = सब लोग। सर्वज्ञाता = सब कुछ जाननेवाला। सर्वत्याग = संपूर्ण का त्याग। सर्वपति, सर्वप्रभु = सबका स्वामी। सर्वप्राप्ति = सब कुछ प्राप्त होना। सर्वभयकर = सबको भय पैदा करनेवाला। सर्वभोगीण, सर्वभोग्य = जिसका उपभोग सभी कर सकें। जो सबके लिये भोग्य हो। सर्वमंगल = सबके लिये मंगलकारक या शुभ। सर्वमहान् = सर्वश्रेष्ठ।

जो सबसे महान् हो। सर्वरक्षण = जो सब का रक्षण करे या सबसे रक्षा करनेवाला। सर्वरक्षी = सबकी सुरक्षा करनेवाला। सर्ववल्लभ = सबका प्यारा। जो सबको प्रिय हो। सर्ववातसह = पोत या यान जो सभी प्रकार की वायु को सहन करने मे सक्षम हो। सर्ववादिसम्मत = जिससे सभी सहमत हों। सर्ववासक = पूर्णत वस्त्राच्छादित। सर्वविज्ञान = सभी विषयो का ज्ञान। सर्वविज्ञानी = सभी विषयो का ज्ञाता। सर्वविनाश = सर्वनाश। सर्वविषय = जो सब विषयो से सबद्ध हो। सर्ववीर्य = समग्र शक्ति से युक्त। सर्वशका = सब के प्रति शक की भावना। सर्वशक = दे० 'सर्वशक्तिमान्'। सर्वशास्त्री = सभी प्रकार के शस्त्रो से युक्त। सर्वशीघ्र = जो सबसे तीव्र या तेज हो। सर्वश्राव्य = जिसे सभी लोग सुन सके। सर्वसपन्न = जो सभी चीजो मे सपन्न या युक्त हो।

सर्व² —सज्ञा पुं० १ शिव का एक नाम। २. विष्णु का एक नाम। ३ पारा। पारद। ४ रसौत। ५. शिलाजतु। सिलाजीत। ६. एक मुनि का नाम (को०)। ७ जल (को०)। ८ एक जनपद (को०)।

सर्व³—सज्ञा पुं० [अ०] एक वृक्ष। दे० 'सरो' [को०]।

सर्वक—वि० [स०] सब समस्त। पूरा। तमाम। कुल। समग्र [को०]।

सर्वकर—सज्ञा पुं० [स०] शिव का एक नाम [को०]।

सर्वकर्ता—सज्ञा पुं० [स० सर्वकर्तृ] १ ब्रह्मा। २ ईश्वर (को०)।

सर्वकर्मा—सज्ञा पुं० [सं० सर्वकर्मन्] शिव [को०]।

सर्वकर्मीण—वि० [स०] सब कार्य करनेवाला [को०]।

सर्वकाम—सज्ञा पुं० [स०] १ सब इच्छाएं रखनेवाला। २ सब इच्छाएँ पूरा करनेवाला। ३ शिव का एक नाम। ४ एक बुद्ध या अर्हत् का नाम।

यौ०—सर्वकामगम = इच्छानुसार सभी जगह गमन करनेवाला। सर्वकामद। सर्वकामदुघ = सभी कामनाएं पूर्ण करनेवाला। सर्वकामवर।

सर्वकामद—वि० [स०] [वि० स्त्री० सर्वकामदा] सब कामनाएं पूरी करनेवाला।

सर्वकामद²—सज्ञा पुं० शिव [को०]।

सर्वकामवर—सज्ञा पुं० [स०] शिव [को०]।

सर्वकामिक—वि० [स०] १. सारी इच्छाएँ पूरी करनेवाला। २ जिसकी सारी इच्छाएँ पूरी हो गई हों [को०]।

सर्वकामी—वि० [स० सर्वकामिन्] सभी इच्छाएँ पूर्ण करनेवाला। २ जिसकी सभी इच्छाएँ पूर्ण हों। ३. स्वच्छा से काम करनेवाला [को०]।

सर्वकारी—वि० [स० सर्वकारिन्] १. जो सब कुछ करने मे समर्थ हो। २. सबका निर्माण करनेवाला [को०]।

सर्वकाल—क्रि० वि० [स०] हर समय। सब दिन। सदा।

सर्वकालप्रसाद—सज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

सर्वकालिक, सर्वकालीन—वि० [स०] सब समय या काल का [को०]।

सर्वकेशी—सज्ञा पुं० [स० सर्वकेशिन्] अभिनेता। एक्टर। नट [को०]।

सर्वकेसर—सज्ञा पुं० [स०] बकुल वृक्ष या पुष्प। मौलसिरी।

सर्वक्षार—सज्ञा पुं० [स०] १ मोखा। मुष्कक वृक्ष। २ एक प्रकार का क्षार। महाक्षार (को०)। ३ सब कुछ नष्ट कर देना या काम लायक न रहने देना।

यौ०—सर्वक्षारनीति = युद्ध मे सेना द्वारा पीछे हटते हुए सब सामान नष्ट कर देना जिसमे शत्रुपक्ष उसका उपयोग न कर सके और उसे आगे बढने मे बाधा हो।

सर्वगध—सज्ञा पुं० [स० सर्वगन्ध] १ दालचीनी। गुडत्वक्। २ एला। इलायची। ३ तेजपात। ४ नागकेसर। नागपुष्प। ५ शीतल चीनी। ६ लौंग। लवग। ७ अगर। अगरु। ८ शिलारस। ९ कर्पूर। १० वह जो सभी प्रकार के गध से युक्त हो। ११ केसर।

सर्वगधिक—सज्ञा पुं० [स० सर्वगन्धिक] दे० 'सर्वगध' [को०]।

सर्वग¹—वि० [स०] [वि० स्त्री० सर्वगा] जिसकी गति सब जगह हो। जो सब जगह जा सके। सर्वव्यापक।

सर्वग²—सज्ञा पुं० १ पानी। जल। २ जीव। आत्मा। ३. ब्रह्म। ४ शिव का एक नाम।

सर्वगण—सज्ञा पुं० [स०] खारी मिट्टी। रेह।

सर्वगत—वि० [स०] जो सब मे हो। सर्वव्यापक।

सर्वगति—वि० [स०] जिसका शरण सब लोग हो। जो सबको गति हो। जिसमे सब आश्रय ले।

सर्वगा—सज्ञा स्त्री० [स०] प्रियगु क्षुप।

सर्वगामी—वि० [स० सर्वगामिन्] दे० 'सर्वग'।

सर्वग्रथि—सज्ञा पुं० [स० सर्वग्रन्थि] पीपला मूल।

सर्वग्रथिक—सज्ञा पुं० [स० सर्वग्रन्थिक] दे० 'सर्वग्रथि'।

सर्वग्रह—वि० [स०] एक बार मे सब कुछ भक्षण करनेवाला [को०]।

सर्वग्रहापहा—सज्ञा स्त्री० [स०] नागदमनी। नागदौन।

सर्वग्रास—सज्ञा पुं० [स०] १ चद्र या सूर्य का वह ग्रहण जिसमे उनका मडल पूर्ण रूप से छिप जाता है। पूर्ण ग्रहण। खग्रास ग्रहण। २. वह जो सब कुछ खा जाय, बचा न रहने दे।

सर्वचक्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] बौद्धो का एक तात्रिक देवी।

सर्वचर्माण—वि० [स०] १. जो पूर्णत चर्मनिर्मित हो। २ जिसमे सभी प्रकार के चमडे लगे हो [को०]।

सर्वचारी¹—वि० [स० सर्वचारिन्] [वि० स्त्री० सर्वचारिणी] सब मे रमनेवाला। व्यापक।

सर्वचारी²—सज्ञा पुं० शिव का एक नाम।

सर्वच्छदक—वि० [स० सर्वच्छन्दक] सबको अनुकूल या वशानुग करनेवाला [को०]।

सर्वज—वि० [स०] जो त्रिदोष के कारण उद्भूत हो [को०]।

सर्वजन—सज्ञा पुं० [स०] सभी जन। सब लोग [को०]।

सर्वजनप्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] १. ऋद्धि नामक अष्टवर्गीय ओषधि। २. वेश्या, जो सभी लोगो को प्रिया है।

सर्वजनीन—वि० [स०] १ सब लोगो मे सबध रखनेवाला। सब का। सार्वजनिक। २ विश्वव्यापी। प्रसिद्ध (को०)। ३ सबका हितकारी। सबका कल्याण करनेवाला (को०)।

सर्वजनीय—वि० [स०] दे० 'सर्वजनीन'।

सर्वजया—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सबजय नाम का पौधा जो बगीचो मे फूलो के लिये लगाया जाता है। देवकली। २ मार्गशीर्ष महीने मे होनेवाला स्त्रियो का एक प्राचीन पर्व।

सर्वजित्[1]—वि० [स०] १ सबको जीतनेवाला। २ सबसे बढा चढा। सबसे श्रेष्ठ या उत्तम।

सर्वजित्[2]—सज्ञा पुं० १ साठ सवत्सरो मे से इक्कीसवाँ सवत्सर। २ मृत्यु। काल। ३ एक प्रकार का एकाह यज्ञ।

सर्वजीव—सज्ञा पु० [स०] सब की आत्मा। सर्वात्मा (को०)।

सर्वजीवी—वि० [स० सर्वजीविन्] जिसके पिता, पितामह और प्रपितामह तीनो जीते हो।

सर्वज्ञ[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० सर्वज्ञा] सब कुछ जाननेवाला। जिसे कुछ अज्ञात न हो।

सर्वज्ञ[2]—सज्ञा पुं० १ ईश्वर। २ देवता। सुर। ३ बुद्ध या अर्हत्। ४ शिव का एक नाम।

सर्वज्ञतर—सज्ञा स्त्री० [स०] सर्वज्ञ होने का भाव।

सर्वज्ञत्व—सज्ञा पुं० [स०] सर्वज्ञ होने का भाव। सर्वज्ञता।

सर्वज्ञा[1]—वि० स्त्री० [स०] सब कुछ जाननेवाली।

सर्वज्ञा[2]—सज्ञा स्त्री० १, दुर्गा देवी। २ एक योगिनी।

सर्वज्ञाता—वि० [स० सर्वज्ञातृ] दे० 'सर्वज्ञ'।

सर्वज्ञानी—सज्ञा पुं० [स० सर्वज्ञानिन्] वह जो सवकुछ जानता हो। सवकुछ जाननेवाला। सर्वज्ञ।

सर्वज्यानि—सज्ञा स्त्री० [स०] सब वस्तुओ की हानि। सर्वनाश।

सर्वतत्र[1]—सज्ञा पु० [स० सर्वतन्त्र] १ सर्व प्रकार के शास्त्र सिद्धात। २ वह जिसने सभी शास्त्रो को पढा हो और उनमे निष्णात हो।

यौ०—सर्वतत्र स्वतत्र = सभी तत्र या शास्त्र जिसके लिये अपना शास्त्र हो। जो सभी तत्रो मे निष्णात हो।

सर्वतत्र[2]—वि० दे० जिसे सब शास्त्र मानते हो। सर्वशास्त्रसमत। जैसे,—सर्वतत्र सिद्धात।

सर्वत[1]—अव्य० [स० सर्वतस्] १ सब ओर। चारो तरफ। २ सब प्रकार से। हर तरह से। ३. पूरी तरह से। पूर्ण रूप से।

यौ०—सर्वत पाणिपाद = जिसके हाथ पाँव सब ओर हो। सर्वत शुभा।

सर्वत शुभा—सज्ञा स्त्री० [स०] कँगनी नाम का अनाज। काकुन। प्रियगु।

सर्वतमोनुद—वि० [स०] (सूर्य) जो समग्र अधकार को हटाने या दूर करनेवाला है।

सर्वतश्चक्षु—वि० [स० सर्वतश्चक्षुष्] जिसकी दृष्टि चारो ओर हो। जा सर्वत्र सब कुछ देखता हो।

सर्वतापन सज्ञा पुं० [स०] १ (सबको तपानेवाला) सूर्य। २ कामदेव।

सर्वतिक्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ भटाकी। बरहटा। २ मकोय। काकमाची।

सर्वतूर्यनिनादी—सज्ञा पु० [स० सर्वतूर्यनिनादिन्] शिव (को०)।

सर्वतोगामी—वि० [स० सर्वतोगामिन] जो सभी दिशाओ मे जा सके। सब जगह गमन करनेवाला। सर्वव्यापी (को०)।

सर्वतोदिश—क्रि० वि० [स०] चारो ओर। चतुर्दिक्।

सर्वतोधार—वि० [सं०] जिसमें सर्वत्र तेज धार हो।

सर्वतोधुर—वि० [स०] जो सब ओर शीर्षस्थानीय हो।

सर्वतोभद्र[1]—वि० [सं०] १ सब ओर से मगल। सर्वाश मे शुभ या उत्तम। २ जिसके सिर, दाढी, मूँछ आदि सब के बाल मुडे हों।

सर्वतोभद्र[2]—सज्ञा पुं० १ वह चौखूँटा मदिर जिसके चारो ओर दरवाजे हो। २ युद्ध मे एक प्रकार का व्यूह। ३ एक प्रकार का चौखूँटा मागलिक चिह्न जो पूजा के वस्त्र पर बनाया जाता है। ४ एक प्रकार का चित्रकाव्य। ५ एक प्रकार की पहेली जिसमे शब्द के खडाक्षरो के भी अलग अलग अर्थ लिए जाते है। ६ विष्णु का रथ। ७ बाँस। ८ एक गद्य-द्रव्य। ९ वह मकान जिसके चारो ओर परिक्रमा का स्थान हो। १०. एक वन का नाम (को०)। ११ एक पर्वत (को०)। १२ इस नाम का एक चक्र (ज्योतिष)। १३ देवताओ का एक वन (को०)। १४ मुडन कराना। क्षौरकर्म कराना। १५ हठ योग मे बैठने का एक आसन या मुद्रा। १६ नीम का पेड।

सर्वतोभद्रकछेद—सज्ञा पु० [स० सर्वतोभद्रकच्छेद] भगदर की चिकित्सा के लिये अस्त्र से लगाया हुआ चौकोर चीरा।

सर्वतोभद्रचक्र—सज्ञा पु० [स०] ज्योतिष मे शुभाशुभ फल जानने का एक चौखूँटा चक्र (को०)।

सर्वतोभद्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ काश्मरी वृक्ष। गभारी। २ अभिनेत्री। अभिनय करनेवाली। नर्तकी। नटी।

सर्वतोभद्रिका—सज्ञा स्त्री० [स०] काश्मरी वृक्ष। गभारी। गम्हार वृक्ष।

सर्वतोभाव, सर्वतोभावेन—अव्य० [स०] सर्व प्रकार से। सपूर्ण रूप से। अच्छी तरह। भली भाँति।

सर्वतोभोगी—सज्ञा पु० [स०] कौटिल्य के अनुसार वह वश्य मित्र जो अमित्रो, आसारो, (सगी साथियो), पडोसियो तथा जागलिको से रक्षा करे।

सर्वतोमुख[1]—वि० [स०] १ जिसका मुँह चारो ओर हो। २ जो सब दिशाओ मे प्रवृत्त हो। ३ पूर्ण व्यापक।

सर्वतोमुख[2]—सज्ञा पुं० १ एक प्रकार की व्यूह रचना। २ जल। पानी। ३ आत्मा। जीव। ४ ब्रह्म। ५ ब्रह्मा (जिनके चार मुँह है)। ६. ब्राह्मण। विप्र (को०)। ७. शिव। ८. अग्नि। ९. स्वर्ग। १०. आकाश।

सर्वतोमुखी—वि० स्त्री० [स० सर्वतोमुख] दे० 'सर्वतोमुख'। जैसे,—आपकी प्रतिभा सर्वतोमुखी है।

सर्वतोवृत्त—वि० [स०] सर्वव्यापक।

सर्वत्र—अव्य० [स०] १ सब कही। सब जगह। हर जगह। २ हर काल मे। हमेशा।

सर्वत्रग¹—वि० [स०] सर्वगामी। सर्वव्यापक।

सर्वत्रग²—सज्ञा पुं० १ वायु। २ मनु के एक पुत्र का नाम। ३. भीमसेन के एक पुत्र का नाम।

सर्वत्रगत—वि० [सं०] जो सब जगह पहुँचा हो [को०]।

सर्वत्रगामी—सज्ञा पुं० [स० सर्वत्रगामिन्] १ वह जो सवत्र गमनशील हो। २ वायु। हवा।

सर्वत्रसत्त्व—सज्ञा पु० [स०] सर्वात्मकता। विश्वात्मकता। विश्वरूपता [को०]।

सर्वत्रापि—वि० [स०] सब स्थानो मे जानेवाला।

सर्वथा—अव्य० [स०] १ सब प्रकार से। सब तरह से। २ बिलकुल। सब। ३ सर्वदा। हमेशा। निरतर (को०)। ४ पूरी तौर से। पूर्णत (को०)। ५ बहुत अधिक। अत्यत (को०)।

सर्वदडधर—वि० [स० सर्वदण्डधर] सब को दड देनेवाला (शिव) [को०]।

सर्वदडनायक—सज्ञा पुं० [स० सर्वदण्डनायक] सेना या पुलिस का एक ऊँचा अधिकारी।

सर्वद¹—वि० [स०] सब कुछ देनेवाला।

सर्वद²—सज्ञा पु० शिव का एक नाम।

सर्वदमन¹—वि० [स०] सबको दमन करनेवाला [को०]।

सर्वदमन²—सज्ञा पुं० दुष्यत के पुत्र भरत का एक नाम।

सर्वदर्शन—वि० [स०] सब कुछ देखनेवाला [को०]।

सर्वदर्शी¹—सज्ञा पुं० [स० सर्वदर्शिन्] [स्त्री० सर्वदर्शिणी] सब कुछ देखनेवाला।

सर्वदर्शी²—सज्ञा पु० १ ईश्वर। परमात्मा। २ एक बुद्ध या अर्हत् [को०]।

सर्वदा—अव्य० [स०] सब काल मे। हमेशा। सदा।

सर्वदाता—वि० सज्ञा पु० [स० सर्वदातृ] सब कुछ दे देनेवाला। सर्वस्व देनेवाला [को०]।

सर्वदान—सज्ञा पुं० [स०] सर्वस्व का दान करना [को०]।

सर्वदिग्विजय—सज्ञा स्त्री० [स०] सभी दिशाओ को जीतना। विश्वविजय [को०]।

सर्वदेवमय¹—वि० [स०] जिसमे सब देवता हो [को०]।

सर्वदेवमय²—सज्ञा पु० १ शिव। २ कृष्ण।

सर्वदेवमुख—सज्ञा पु० [स०] अग्नि [को०]।

सर्वदेशीय—वि० [स०] १ सभी देशो से सबद्ध। २ सभी देशो मे होनेवाला या प्राप्य [को०]।

सर्वदेश्य—वि० [स०] दे० 'सर्वदेशीय' [को०]।

सर्वद्रष्टा—वि० [सं० सर्वद्रष्टृ] सब कुछ देखनेवाला।

सर्वद्वारिक—वि० [स०] जिसकी विजययात्रा के लिये सब दिशाएँ खुली हो। दिग्विजयी।

सर्वधन्वी—सज्ञा पु० [स० सर्वधन्विन्] कामदेव [को०]।

सर्वधातुक—सज्ञा पु० [स०] ताँबा। ताम्र।

सर्वधारी—सज्ञा पु० [स० सर्वधारिन्] १ साठ सवत्सरो मे से बाइसवाँ सवत्सर। २ शिव का एक नाम।

सर्वधुरावह—सज्ञा पुं० [स०] गाडी मे जोता जानेवाला जानवर।

सर्वधुरीण—सज्ञा पु० [स०] वह जो सभी प्रकार का बोझा ढोने के उपयुक्त हो [को०]।

सर्वनाभ—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अस्त्र।

सर्वनाम—सज्ञा पुं० [स० सर्वनामन्] व्याकरण मे वह शब्द जो सज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होता है। जैसे,—मैं, तू, वह।

सर्वनाश—सज्ञा पुं० [स०] सत्यानाश। विध्वस। पूरी बरबादी।

सर्वनाशी—सज्ञा पु० [स० सर्वनाशिन] सर्वनाश करनेवाला। विध्वसकारी। चौपट करनेवाला।

सर्वनिक्षेप—सज्ञा स्त्री० [स०] गणना करने की एक पद्धति विशेष [को०]।

सर्वनिधन—सज्ञा पु० [स०] १. सब का नाश या वध। २. एक प्रकार का एकाह यज्ञ।

सर्वनियोजक—सज्ञा पु० [स०] विष्णु का एक नाम जो सबके नियोजक है [को०]।

सर्वनिलय—वि० [स०] जिसका निलय या निवास सब जगह हो [को०]।

सर्वनियता—सज्ञा पु० [स० सर्वनियन्तृ] सब को अपने नियम के अनुसार ले चलनेवाला। सब को वश मे करनेवाला।

सर्वपति—सज्ञा पु० [स०] वह जो सबका मालिक हो।

सर्वपथीन—वि० [स०] १ जो सर्वत्र गमनशील हो। सभी दिशाओ मे जानेवाला। २. जो चारो ओर फैला हो [को०]।

सर्वपा¹—वि० [स०] १ सब कुछ पीनेवाला। २ सत्र की रक्षा करनेवाला (को०)।

सर्वपा²—सज्ञा स्त्री० दैत्यराज बलि की स्त्री का नाम।

सर्वपाचक—सज्ञा पु० [स०] सुहागा। टकण क्षार।

सर्वपारशव—वि० [स०] पूर्णत लोहे का बना हुआ [को०]।

सर्वपार्श्वमुख—सज्ञा पुं० [स०] शिव [को०]।

सर्वपावन—सज्ञा पुं० [स०] सबको पवित्र करनेवाले, शिव [को०]।

सर्वपूजित—सज्ञा पु० [स०] जो सबके द्वारा पूजित है, शिव [को०]।

सर्वपूत—वि० [स०] पूर्णत पवित्र या शुद्ध [को०]।

सर्वपूर्ण—वि० [सं०] सब कुछ से भरा पूरा।

सर्वपृष्ठ—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का यज्ञ।

सर्वप्रथम—वि० [स०] १ सबसे पहिले। २ सभी लोगो मे पहला या प्रथम श्रेणी का [को०]।

सर्वप्रद—वि० [स०] सर्वस्व देनेवाला [को०]।

सर्वप्रिय—वि० [स०] १ सब को प्यारा। जिसे सब चाहें। जो सब को अच्छा लगे। २ जिसे सब कुछ प्रिय हो।

सर्वबंधविमोचन—संज्ञा पुं० [सं० सर्वबन्धविमोचन] सभी बंधनों से छुड़ानेवाला—शिव [को०]।

सर्ववल—संज्ञा पुं० [सं०] एक बहुत बड़ी संख्या। (बौद्ध)।

सर्ववाहु—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध करने की एक विधि।

सर्ववीज—संज्ञा पुं० [सं०] सबका बीज या मूल [को०]।

सर्वभक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] सब कुछ खा डालनेवाला, अग्नि। आग।

सर्वभक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बकरी। छागी।

सर्वभक्षी¹—संज्ञा पुं० [सं० सर्वभक्षिन्] [वि० स्त्री० सर्वभक्षिणी] सबकुछ खानेवाला।

सर्वभक्षी²—संज्ञा पुं० अग्नि।

सर्वभवोद्भव—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

सर्वभाव—संज्ञा पुं० [सं०] १ संपूर्ण सत्ता। सारा अस्तित्व। २. संपूर्ण आत्मा। ३ पूर्ण तुष्टि। मन का पूरा भरना।

सर्वभावकर—संज्ञा पुं० [सं०] शिव [को०]।

सर्वभावन—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो सब का उत्पादक हो। सब की भावना करनेवाला। २ महादेव। शिव।

सर्वभूत¹—पुं० [सं०] सब प्राणी या सृष्टि। चराचर।

सर्वभूत²—वि० जो सब कुछ हो या सब मे हो। सर्वस्वरूप।

सर्वभूतगुहाशय—वि० [सं०] सबके हृदय मे निवास करनेवाला [को०]।

सर्वभूतपितामह—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा। प्रजापति [को०]।

सर्वभूतहर—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

सर्वभूतहित—संज्ञा पुं० [सं०] सब प्राणियों की भलाई।

सर्वभूमिक—संज्ञा पुं० [सं०] दारचीनी। गुडत्वक्।

सर्वभृत्—वि० [सं०] जो सबका पालन पोषण करे [को०]।

सर्वभोग—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के अनुसार वह वश्यमित्र जो सेना, कोश तथा भूमि से सहायता करे।

सर्वभोगसह—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के अनुसार सब प्रकार से उपयोगी मित्र सब प्रकार के कामों मे समर्थ मित्र।

सर्वभोगी—वि० [सं० सर्वभोगिन्] [वि० स्त्री० सर्वभोगिनी] १ सब का आनंद लेनेवाला। २ सब कुछ खानेवाला।

सर्वमंगला¹—वि० [सं० सर्वमङ्गला] सब प्रकार का या सबका मंगल करनेवाली।

सर्वमंगला²—संज्ञा स्त्री० १ दुर्गा। २ लक्ष्मी।

सर्वमलापगत—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की समाधि [को०]।

सर्वमांसाद—वि० [सं०] सभी प्रकार के मांस का भक्षण करनेवाला [को०]।

सर्वमूल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ कौड़ी। कपर्दक। २ कोई छोटा सिक्का।

सर्वमूषक—संज्ञा पुं० [सं०] (सबको मूसने या ले जानेवाला) काल।

सर्वमेव—संज्ञा पुं० [सं०] १ सार्वजनिक सत्र। २ एक उपनिषद् का नाम (को०)। ३. यज्ञ (को०)। ४ एक प्रकार का सोमयाग जो दस दिनों तक होता था।

सर्वयंत्री—वि० [सं० सर्वयन्त्रिन्] सभी औजारों से युक्त [को०]।

सर्वयोगी—संज्ञा पुं० [सं० सर्वयोगिन्] शिव का एक नाम।

सर्वयोनि—संज्ञा पुं० [सं०] सब का मूल। सब की जड़ [को०]।

सर्वरत्नक—संज्ञा पुं० [सं०] जैन शास्त्रानुसार नौ निधियों में एक।

सर्वरत्ना—संज्ञा स्त्री० [सं०] संगीत मे एक श्रुति [को०]।

सर्वरस—संज्ञा पुं० [सं०] १ राल। धूना। करायल। २. लवण। नमक। ३ एक प्रकार का बाजा। ४ सब विद्याओं मे निपुण व्यक्ति। विद्वान् व्यक्ति। ५ सभी प्रकार के रस, भोज्य पदार्थ आदि। ६ वह जो सब रसों से युक्त हो।

सर्वरसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लाजा का मांड। धान की खीलों का माँड।

सर्वरसोत्तम—संज्ञा पुं० [सं०] नमक। लवण।

सर्वरास—संज्ञा पुं० [सं०] १ राल। करायल। धूना। २ एक प्रकार का वाद्य [को०]।

सर्वरी (पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शर्वरी] दे० 'शर्वरी'।

सर्वरीस (पु)—संज्ञा पुं० [सं० शर्वरीश] दे० 'शर्वरीश'।

सर्वरूप¹—वि० [सं०] जो सब रूपों का हो। सर्वस्वरूप।

सर्वरूप²—संज्ञा पुं० एक प्रकार की समाधि।

सर्वार्थसिद्धि—संज्ञा पुं० [सं०] जैनों के अनुसार सब से ऊपर का अनुमार या स्वर्गों के ऊपर का लोक।

सर्वलक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] सभी शुभ लक्षण या चिह्न [को०]।

सर्वलाक्षत—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

सर्वला—संज्ञा स्त्री० [सं०] लोहे का डंडा।

सर्वलालस—संज्ञा पुं० [सं०] शिव [को०]।

सर्वलिंग—वि० [सं० सर्वलिङ्ग] जो प्रत्येक लिंग मे हो। (विशेषण) जो प्रत्येक लिंग (पुं०, स्त्री० और नपुंसक) मे होता है।

सर्वलिंगी¹—वि० [सं० सर्वलिङ्गिन्] [वि० स्त्री० सर्वलिंगिनी] सब प्रकार के ऊपरी आडंबर रखनेवाला। पाखंडी।

सर्वलिंगी²—संज्ञा पुं० [सं०] नास्तिक।

सर्वली—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटा लौहदंड या तोमर।

सर्वलोक—संज्ञा पुं० [सं०] समग्र लोक। चराचर जगत् [को०]।

यौ०—सर्वलोककृत् = शिव का एक नाम। सर्वलोकगुरु = विष्णु। सर्वलोकपितामह = ब्रह्मा जो सबके पितामह है। सर्वलोक-प्रजापति, सर्वलोकभृत् = दे० 'सर्वलोककृत्'। सर्वलोकमहेश्वर = (१) शिव। शंकर। (२) विष्णु का एक नाम।

सर्वलोकेश, सर्वलोकेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २. ब्रह्मा। ३ विष्णु। ४ कृष्ण।

सर्वलोचन—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

सर्वलोचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक पौधा जो ओषध के काम मे आता है। गंधनाकुली।

सर्वलोह—संज्ञा पुं० [सं०] १. तीर। बाण। २ वह जो पूर्णत. लाल वर्ण का हो [को०]।

सर्वलौह—संज्ञा पुं० [सं०] १. तांबा। ताम्र। २. बाण। तीर।

सर्ववर्णिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] गभारी का पेड़।

सर्ववर्णी—वि० [सं० सर्ववर्णिन्] विभिन्न वर्ण का। विभिन्न जाति या प्रकार का (को०)।

सर्ववल्लभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुलटा स्त्री।

सर्ववागीश्वरेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु (को०)।

सर्ववादी—संज्ञा पुं० [सं० सर्ववादिन्] शिव का एक नाम।

सर्ववास—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

सर्ववासी—संज्ञा पुं० [सं० सर्ववासिन्] शिव (को०)।

सर्वविक्रयी—वि० [सं० सर्वविक्रयिन्] सभी प्रकार की वस्तुओं को बेचनेवाला।

सर्वविख्यात, सर्वविग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

सर्वविद्¹—वि० [सं०] सर्वज्ञ।

सर्वविद्²—संज्ञा पुं० [सं०] १ ईश्वर। २. ओंकार।

सर्वविद्य—वि० [सं०] समग्र विद्याओं का ज्ञाता। सर्वज्ञ (को०)।

सर्वविश्रंभी—वि० [सं० सर्वविश्रम्भिन्] सबका विश्वास करनेवाला। प्रत्येक का विश्वास करनेवाला (को०)।

सर्ववीर—वि० [सं०] जिसके बहुत से पुत्र हों।

यौ०—सर्ववीरजित् = समस्त वीरों को जीतनेवाला।

सर्ववेत्ता—वि० [सं० सर्ववेतृ] सर्वविद्। सर्वज्ञ।

सर्ववेद—वि० [सं०] सब वेदों का जाननेवाला। पूर्णत ज्ञानवान्।

सर्ववेदस्—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो अपनी यज्ञ में दान कर दे।

सर्ववेदस—संज्ञा पुं० [सं०] १ सारी संपत्ति। सारा मालमता। २. वह यज्ञ जिसमें समग्र संपत्ति दान कर दी जाय (को०)। ३ दे० 'सर्ववेदस्' (को०)।

सर्ववेदसी—वि० [सं० सर्ववेदसिन्] जो अपनी समग्र संपत्ति का दान कर दे (को०)।

सर्ववेदी—वि० [सं० सर्ववेदिन्] जो सब कुछ जानता हो। सर्वज्ञ (को०)।

सर्ववेशी—संज्ञा पुं० [सं० सर्ववेशिन्] नट। अभिनेता (को०)।

सर्ववैनाशिक—संज्ञा पुं० [सं०] आत्मा आदि सबको नाशवान् माननेवाला। क्षणिकवादी। बौद्ध।

सर्वव्यापक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सर्वव्यापी'।

सर्वव्यापी¹—वि० [सं० सर्वव्यापिन्] [वि० स्त्री० सर्वव्यापिनी] सबमें रहनेवाला। सब पदार्थों में रमणशील।

सर्वव्यापी²—संज्ञा पुं० १ ईश्वर। २ शिव।

सर्वश—अव्य० [सं० सर्वशस्] १ पूरा पूरा। २ समूचा। पूर्ण रूप से।

सर्वशक्तिमान्¹—वि० [सं० सर्वशक्तिमत्] [स्त्री० सर्वशक्तिमती] सब कुछ करने की सामर्थ्य रखनेवाला।

सर्वशक्तिमान्²—संज्ञा पुं० ईश्वर।

सर्वशांतिकृत्—संज्ञा पुं० [सं० सर्वशान्तिकृत्] दुष्यंत के पुत्र भरत का एक नाम (को०)।

सर्वशून्य—वि० [सं०] १ बिलकुल खाली। पूर्णत रिक्त। २. जिसके लिये सब शून्य या अस्तित्वविहीन हो (को०)।

सर्वशून्यवादी—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्ध।

सर्वशून्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] दरिद्रता (जिसमें सब कुछ सूना सूना प्रतीत होता है)।

सर्वशूर—संज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम।

सर्वश्री—वि० [सं०] जहाँ सभी लोग श्रीयुक्त हों। अनेक व्यक्तियों का नाम एक साथ आने पर सब के लिये एक बार आरंभ में इसका प्रयोग होता है। जैसे, सर्वश्री अमुक, फलाँ आदि। यह प्रयोग आधुनिक है और अंग्रेजी शब्द 'मेसर्स' का अनुवाद है।

सर्वश्रेष्ठ—वि० [सं०] सब में बड़ा। सब से उत्तम।

सर्वश्वेता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक ओषधि का नाम। २ एक प्रकार का विषैला कीड़ा। सर्षपिक। (सुश्रुत)।

सर्वसंगत—संज्ञा पुं० [सं० सर्वसङ्गत] षष्टिक धान्य। साठी धान।

सर्वसंज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक बहुत बड़ी संख्या (को०)।

सर्वसंभव—संज्ञा पुं० [सं० सर्वसम्भव] वह जो सबका उत्पत्तिस्थान या मूल हो। (को०)।

सर्वसंमत—वि० [सं० सर्वसम्मत] जिसके पक्ष में सभी लोग सहमत हों (को०)।

सर्वसंमति—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्वसम्मति] सभी सदस्यों की राय (को०)।

सर्वसंस्थ—वि० [सं०] १ सर्वव्यापक। २ सर्वविनाशक (को०)।

सर्वसंस्थान—वि० [सं०] सब रूपों में रहनेवाला। सर्वरूप।

सर्वसंहार—संज्ञा पुं० [सं०] काल।

सर्वसंहारी—वि० [सं० सर्वसंहारिन्] दे० 'सर्व समाहर'।

सर्वसख—संज्ञा पुं० [सं०] सज्जन। सबका मित्र। साधु पुरुष (को०)।

सर्वसन्नाह—संज्ञा पुं० [सं०] पूरी तौर से सेना को एकत्र और शास्त्र-सज्ज करना।

सर्वसमता—संज्ञा स्त्री० [सं०] निष्पक्षता। समता।

सर्वसमाहर—वि० [सं०] सबका विनाश करनेवाला (को०)।

सर्वस(पु)—वि० [सं० सर्वस्व] दे० 'सर्वस्व'।

सर्वसर—संज्ञा पुं० [सं०] मुँह का एक रोग जिसमें छाले से पड़ जाते हैं तथा खुजली तथा पीड़ा होती है।

विशेष—यह तीन प्रकार का होता है—वातज, पित्तज और कफज। वातज में मुख में सुई चुभने की सी पीड़ा होती है। पित्तज में पीले या लाल रंग के दाहयुक्त छाले पड़ते हैं। कफज में पीडारहित खुजली होती है।

सर्वसह—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो सब कुछ सहन करे। सहनशील व्यक्ति। २ गूगल। गुग्गुल।

सर्वसहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] धरित्री। सर्वंसहा पृथ्वी (को०)।

सर्वसांप्रत—संज्ञा पुं० [सं० सर्वसाम्प्रत] सर्वत्र वर्तमान रहने का भाव। सर्वव्यापकता (को०)।

सर्वसाक्षी—संज्ञा पुं० [सं० सर्वसाक्षिन्] १ वह जो सब कुछ देखता हो। ईश्वर। परमात्मा। २ अग्नि। ३ वायु।

सर्वसाद--वि० [सं०] १ समग्र जगत् जिसमे लीन हो। २ जिसमे सब कुछ लीन हो (को०)।

सर्वसाधन—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोना। स्वर्ण। २ धन। ३ शिव का एक नाम। ४ वह जो सब कुछ का साधन कर सकता हो। सब कुछ सिद्ध करनेवाला (को०)। ५ हर एक प्रकार का साधन या उपकरण।

सर्वसाधारण¹—संज्ञा पुं० [सं०] साधारण लोग। जनता। आम लोग।

सर्वसाधारण²--जो सब मे पाया जाता हो। आम। सामान्य।

सर्वसामान्य--वि० [सं०] जो सब मे एक सा पाया जाय। मामूली।

सर्वसारग—संज्ञा पुं० [सं० सर्वसारङ्ग] एक नाग का नाम।

सर्वसार—संज्ञा पुं० [सं०] सब का सारभूत पदार्थ या सार तत्व।

सर्वसाह—वि० [सं०] जो सब कुछ सह ले। सब कुछ सह लेनेवाला। पूर्णत सहनशील [को०]।

सर्वसिद्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी ये तीन तिथियाँ।

सर्वसिद्धार्थ--वि० [सं०] जिसके सभी अर्थ या प्रयोजन सिद्ध हो चुके हो। जिसकी सभी कामनाएँ पूर्ण हो [को०]।

सर्वसिद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सब कार्यों और कामनाओ का पूरा होना। २ पूर्ण तर्क। ३ विल्व वृक्ष। श्रीफल। बेल।

सर्वसुलभ—वि० [सं०] जो सबको सुलभ हो। जिसे सब लोग सुभीते से प्राप्त कर सकें।

सर्वसौवर्ण—वि० [सं०] जो पूर्णत स्वर्णनिर्मित हो [को०]।

सर्वस्तोम--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का एकाह यज्ञ।

सर्वस्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ जो कुछ अपना हो वह सब। २ किसी की सारी संपत्ति। सब कुछ। कुल मालमता।

यौ०--सर्वस्वदड = सारी संपत्ति जब्त कर लेने का दंड। सर्वस्वदक्षिण = वह यज्ञ जिसमे समग्र संपत्ति का दान कर दिया जाय। सर्वस्वसधि = दे० 'क्रम मे'। सर्वस्वहरण, सर्वस्वहार = (१) सब कुछ हरण करना या मूस लेना। (२) दे० 'सर्वस्वदड'।

सर्वस्वसधि--संज्ञा स्त्री० [सं० सर्वस्वसन्धि] सर्वस्व देकर शत्रु से की हुई संधि।

विशेष--कौटिल्य ने कहा है कि शत्रु के साथ यदि ऐसी संधि करनी पडे तो राजधानी को छोड कर शेष सब उसको सुपुर्द कर देना चाहिए।

सर्वस्वामी--वि० [सं० सर्वस्वामिन्] सब का स्वामी या प्रभु [को०]।

सर्वस्वार—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का एकाह यज्ञ।

सर्वस्वी—संज्ञा पुं० [सं० सर्वस्विन्] [वि० स्त्री० सर्वस्विनी] ब्रह्मवैवर्त्त-पुराण के अनुसार एक जाति। नापित पिता और गोप माता से उत्पन्न एक संकर जाति।

सर्वहर—संज्ञा पुं० [सं०] १ सब कुछ हर लेनेवाला। २ वह जो किसी की सारी संपत्ति का उत्तराधिकारी हो। ३ महादेव। शकर। ४. यमराज। ५. काल।

सर्वहरण, सर्वहार—संज्ञा पुं० [सं०] सर्वस्व का हरण। समग्र संपत्ति का हरण [को०]।

सर्वहारा—संज्ञा पुं० [सं० सर्व+हिं० हारना] वह जिसके पास कुछ भी न हो। समाज का पिछडा हुआ निम्नतम श्रमिक वर्ग। कमकर, श्रमिक, मजदूर वर्ग के लोग (अ० प्रोलेटेरियट)।

सर्वहारी¹—वि० [सं० सर्वहारिन्] [वि० स्त्री० सर्वहारिणी] सब कुछ हरण करनेवाला।

सर्वहारी²—संज्ञा पुं० एक प्रेत [को०]।

सर्वहित¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ शाक्य मुनि। गौतम बुद्ध। २ सबका कल्याण। ३ मरिच। मिर्च।

सर्वहित²--वि० जो सबके लिये हित पथ्य या कल्याणकारी हो [को०]।

सर्वहित कर्म—संज्ञा पुं० [सं०] सामाजिक समारोह, उत्सव या जलसा आदि।

विशेष--कौटिल्य ने लिखा है कि जो नाटक आदि सामाजिक जलसों मे योग न दे, उसे उसमे संमिलित होने या उसे देखने का अधिकार नही है, उसे हटा देना चाहिए। यदि न हटे तो वह दड का भागी हो।

सर्वांग—संज्ञा पुं० [सं० सर्वाङ्ग] १ संपूर्ण शरीर। सारा बदन। जैसे,—सर्वांग मे तैलमर्दन। २ शिव का एक नाम (को०)। ३ सब अवयव या अंश। ४ सब वेदांग।

सर्वांगपूर्ण—वि० [सं० सर्वाङ्गपूर्ण] सब प्रकार से पूर्ण। जिसके सभी अंग या अवयव पूर्ण हो।

सर्वांगरूप—संज्ञा पुं० [सं० सर्वाङ्ग रूप] शिव का एक नाम।

सर्वांगसुदर —वि० [सं० सर्वाङ्गसुन्दर] जो हर तरह से सुंदर हो।

सर्वांगिक—वि० [सं० सर्वाङ्गिक] सभी अंगो का। जो सब अंगो के काम आए। जैसे, गहना [को०]।

सर्वांगीण—वि० [सं० सर्वाङ्गीण] १ जो सभी अंगो मे व्याप्त या उनसे संबंधित हो। जैसे, सर्वांगीण स्पर्श। २ वेदांगो से संबद्ध [को०]।

सर्वांत—संज्ञा पुं० [सं० सर्वान्त] सब का अंत या विनाश।

यौ०—सर्वांतकृत् = दे० 'सर्वांतक'।

सर्वांतक--वि० [सं० सर्वान्तक] सब का अंतक या नाशक। सबका विनाशक या अंत करनेवाला [को०]।

सर्वांतरस्थ--वि० [सं० सर्वान्तरस्थ] सब के अंतर मे स्थित या रहनेवाला। सब के भीतर निवास करनेवाला।

सर्वांतरात्मा--संज्ञा पुं० [सं० सर्वान्तरात्मन्] भगवान्। ईश्वर।

सर्वांतर्यामी--संज्ञा पुं० [सं० सर्वान्तर्यामिन्] ईश्वर। परमात्मा।

सर्वांत्य--संज्ञा पुं० [सं० सर्वान्त्य] वह पद्य जिसके चारो चरणो के अंत्याक्षर एक से हो।

सर्वाकार—क्रि० वि० [सं०] पूर्ण रूप से। पूर्णत।

सर्वाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. रुद्राक्ष। शिवाक्ष। २ वह जो सबको देखता हो।

सर्वाक्षी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुग्धिका। दुधिया घास। दुद्धी।

सर्वाख्य—संज्ञा पुं० [सं०] पारद। पारा।

सर्वाजीव—वि० [सं०] सबको जीविका देनेवाला। सबके योगक्षेम की व्यवस्था करनेवाला।

सर्वाणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा। पार्वती। शर्वाणी।

सर्वातिथि—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सबका आतिथ्य करे। वह जो सब आए गए लोगों का सत्कार करे।

सर्वातिशायी—वि० [सं० सर्वातिशायिन्] सबसे आगे बढ़ जानेवाला। जो सबसे प्रधान या श्रेष्ठतम हो।

सर्वातोद्यपरिग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

सर्वात्मा—संज्ञा पुं० [सं० सर्वात्मन्] १ सबकी आत्मा। सारे विश्व की आत्मा। संपूर्ण विश्व में व्याप्त चेतन सत्ता। ब्रह्म। २ शिव का एक नाम। ३ जिन। अर्हत्।

सर्वादृश—वि० [सं०] सबके समान। अन्यों के समान।

सर्वाधिक—वि० [सं०] सबसे अधिक। सबसे आगे [को०]।

सर्वाधिकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ सब कुछ करने का अधिकार। पूर्ण प्रभुत्व। पूरा इख्तियार। २. सब प्रकार का अधिकार।

सर्वाधिकारी—संज्ञा पुं० [सं० सर्वाधिकारिन्] १ पूरा अधिकार रखनेवाला। वह जिसके अधिकार में पूरा इख्तियार हो। २ हाकिम। ३ निरीक्षणकर्ता। निरीक्षक। ४ सबका प्रधान। अध्यक्ष (को०)।

सर्वाधिपत्य—संज्ञा पुं० [सं०] सबपर प्रभुत्व या आधिपत्य [को०]।

सर्वाध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सबपर शासन करता हो [को०]।

सर्वानुकारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शालपर्णी।

सर्वानुकारी—वि० [सं० सर्वानुकारिन्] [वि० स्त्री० सर्वानुकारिणी] सबका अनुकरण या अनुगमन करनेवाला [को०]।

सर्वानुक्रमणिका, सर्वानुक्रमणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सभी वस्तुओं या विषयों की क्रमबद्ध ब्यौरेवार सूची।

सर्वानुभू—वि० [सं०] सबका अनुभव करनेवाला। जो सबकी अनुभूति करता हो।

सर्वानुभूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ समग्र की, सबकी अनुभूति। वह अनुभूति जो व्यापक हो। २ श्वेत त्रिवृता या निसोथ [को०]।

सर्वान्न—संज्ञा पुं० [सं०] हर तरह का अन्न।

यौ०—सर्वान्नभक्षक, सर्वान्नभोजी = हर तरह का अन्न या खाद्य पदार्थ खानेवाला।

सर्वान्नीन—वि० [सं०] सभी प्रकार के भोज्य पदार्थ खानेवाला। सर्वान्नभोजी [को०]।

सर्वान्य—वि० [सं०] जो पूर्णत भिन्न हो [को०]।

सर्वापरत्व—संज्ञा पुं० [सं०] मोक्ष। मुक्ति [को०]।

सर्वाभिभू—संज्ञा पुं० [सं०] एक बुद्ध का नाम।

सर्वाभिशंकी—वि० [सं० सर्वाभिशङ्किन्] शंकालु। शक्की स्वभाव का। सबपर शंका करनेवाला [को०]।

सर्वाभिसंधक—संज्ञा पुं० [सं० सर्वाभिसन्धक] सबको धोखा देनेवाला (मनु०)।

हिं० श० १०-२३

सर्वाभिसंधी—वि० [सं० सर्वाभिसन्धिन्] १ सबको धोखा देनेवाला। २ ढोंगी। पाखंडी। वंचक [को०]।

सर्वाभिसार—संज्ञा पुं० [सं०] चढ़ाई के लिये संपूर्ण सेना की तैयारी या सजाव।

सर्वामात्य—संज्ञा पुं० [सं०] किसी परिवार या गृहस्थी में रहनेवाले घर के प्राणी, नौकर चाकर आदि सब लोग। (स्मृति)।

सर्वायनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद निसोथ।

सर्वायस—वि० [सं०] जो पूर्णत लौहनिर्मित हो। पूर्णत लोहे का बना हुआ [को०]।

सर्वायुध—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

सर्वारण्यक—वि० [सं०] वन में होनेवाली वस्तुओं को ही खानेवाला [को०]।

सर्वार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] समग्र विषय या पदार्थ [को०]।

यौ०—सर्वार्थकर्ता = जो सब वस्तुओं का निर्माण करता हो। सर्वार्थकुशल = सभी विषयों में चतुर या निष्णात। सर्वार्थचिंतक = सबका चिंतन करनेवाला। प्रधान अधिकारी। सर्वार्थसाधक = सभी कार्यों को सिद्ध या पूर्ण करनेवाला। सर्वार्थसाधिका। सर्वार्थसिद्धि।

सर्वार्थसाधन—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो सभी प्रयोजनों को सिद्ध करता हो। २ सब प्रयोजन सिद्ध होना। सारे मतलब पूरे होना।

सर्वार्थसाधिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा [को०]।

सर्वार्थसिद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] सिद्धार्थ। शाक्य मुनि। गौतम बुद्ध।

सर्वार्थसिद्धि[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] सारे उद्देश्यों का सिद्ध होना। लक्ष्य पूर्ण होना [को०]।

सर्वार्थसिद्धि[2]—संज्ञा पुं० [सं०] जैनों का एक देव वर्ग [को०]।

सर्वार्थानुसाधिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा का एक नाम। सर्वार्थसाधिका [को०]।

सर्वालोककर—संज्ञा पुं० [सं०] समाधि का एक प्रकार [को०]।

सर्वावसर—संज्ञा पुं० [सं०] आधी रात।

सर्वावसु—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य की एक किरण का नाम।

सर्वावास—वि० [सं०] दे० 'सर्ववासी'।

सर्वावासी—वि० [सं० सर्वावासिन्] जिसका निवास सर्वत्र हो [को०]।

सर्वाशय—संज्ञा पुं० [सं०] १ सबका शरण या आधारभूत स्थान। २ शिव का एक नाम।

सर्वाशी—वि० [सं० सर्वाशिन्] [वि० स्त्री० सर्वाशिनी] सब कुछ खानेवाला। सर्वभक्षी। (स्मृति)।

सर्वाश्य—संज्ञा पुं० [सं०] सब कुछ खाना। सर्वभक्षण।

सर्वाश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सबका आश्रय स्थान हो। सबको आश्रय देनेवाला, शिव [को०]।

सर्वास्तिवाद—संज्ञा पुं० [सं०] यह दार्शनिक सिद्धांत कि सब वस्तुओं की वास्तव सत्ता है, वे असत् नहीं हैं।

विशेष—यह बौद्ध मत की वैभाषिक शाखा के चार भिन्न भिन्न मतों में से एक है जिसके प्रवर्त्तक गौतम बुद्ध के पुत्र राहुल माने जाते हैं।

सर्वास्तिवादी —वि०, सज्ञा पु० [स० सर्वास्तिवादिन] सर्वास्तिवाद मत के माननेवाला बौद्ध ।

सर्वास्त्र—वि० [स०] सब प्रकार के शस्त्रास्त्रों से युक्त । शस्त्रास्त्रों से सज्जित [को०] ।

सर्वास्त्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] जैनो की सोलह विद्या देवियो मे से एक ।

सर्विस—सज्ञा स्त्री० [अ ] १ नौकरी । चाकरी । २ सेवा । सुश्रूषा । परिचर्या ।

सर्वीय—वि० [स०] १ सबका । जो सबसे सबद्ध हो । २ जो जनसाधारण के लिये उपयुक्त हो । सर्वोपयुक्त [को०] ।

सर्वे सज्ञा पु० [अ०] १ भूमि की नापजोख । पैमाइश । २ वह सरकारी विभाग जो भूमि को नापकर उसका नक्शा बनाता है ।

सर्वेयर—सज्ञा पु० [अ०] वह जो सर्वे अर्थात् जमीन की नापजोख करता हो । पैमाइश करनेवाला । अमीन ।

सर्वेश, सर्वेश्वर—सज्ञा पुं० [स०] १ सबका स्वामी । सबका मालिक । २ ईश्वर । ३ चक्रवर्त्ती राजा । ४ शिव । ५ एक प्रकार की ओषधि ।

सर्वेसर्वा—वि० [स० सर्व] १ वह व्यक्ति जिसे किसी मामले मे सब कुछ करने का अधिकार हो । २ सर्वप्रधान कर्त्ता धर्ता ।

सर्वोत्तम—वि० [स०] सबसे उत्तम । जिससे अच्छा दूसरा न हो [को०] ।

सर्वोदय—सज्ञा पु० [स०] सभी के उदय या उत्थान की भावना से आचार्य विनोबा भावे द्वारा प्रवर्तित स्वतत्र भारत का एक सघटन ।

सर्वोपकारी— वि० [स० सर्वोपकारिन्] सबका मददगार । जो सबकी सहायता करे ।

सर्वोपरि—वि० [स०] सबसे ऊपर या बढकर । सर्वश्रेष्ठ ।

सर्वोपाधि—सज्ञा स्त्री० [सं०] वे गुण जो सबमे साधारणत पाए जाते हो । सर्वसामान्य गुण [को०] ।

सर्वौघ—सज्ञा पुं० [स०] १ सर्वागपूर्ण सेना । २ दे० 'सर्वाभिसार' । ३ एक प्रकार का मधु या शहद ।

सर्वौषध—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सर्वौषधि' ।

सर्वौषधि—सज्ञा स्त्री० [स०] आयुर्वेद मे ओषधियो का एक वर्ग जिसके अतगर्त दस जडी बूटियाँ हैं ।

विशेष—राजनिघटु के अनुसार कुष्ठ, मासी, हरिद्रा, वचा, शैलेय, चदन, मुरा, रक्त चदन, कर्पूर और मुस्तक तथा शब्दचद्रिका के अनुसार मुरा, मॉसी, वचा, कुष्ठ, शैलेय, रजनी द्वय, शटी चपक और मोथा इस वर्ग मे गिनाई गई ह ।

सर्षफ—सज्ञा पु० [फा० सर्शफ, तुल० स० सर्षप] दे० 'सर्षप' ।

सर्षप—सज्ञा पुं० [सं०] १ सरसो । २ सरसो भर का मान या तौल । ३ एक प्रकार का विष ।

यौ०—सर्षपकद । सर्षपकण = सरसो का दाना । सर्षपतैल । सर्षपनाल । सर्षपशाक = सरसो का साग । सर्षपस्नेह = सरसो का तेल ।

सर्षपकद—सज्ञा पु० [स० सर्षपकद] एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ विष होती है ।

सर्षपक—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का साँप ।

सर्षपकी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक विषैला कीडा । २ एक प्रकार का चर्म रोग (को०) ।

सर्षपतैल—सज्ञा पु० [स०] सरसो का तेल ।

सर्षपनाल—सज्ञा पु० [सं०] सरसों का साग ।

सर्षपा—सज्ञा स्त्री० [स०] सफेद सरसो ।

सर्षपारुण—सज्ञा पु० [स०] पारस्कर गृह्यसूत्र के अनुसार असुरो का एक गण ।

सर्षपिक—सज्ञा पु० [स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का बहुत जहरीला कीडा जिसके काटने से आदमी मर जाता है ।

सर्षपिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक प्रकार का लिग रोग ।

विशेष—इस रोग मे लिग पर सरसों के समान छोटे छोटे दाने निकल आते हैं । यह रोग प्राय दुष्ट मैथुन से होता है ।

२ मसूरिका रोग का एक भेद । ३ सर्षपिक नाम का जहरीला कीडा । दे० 'सर्षपिक' ।

सर्षपी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ स्नाविका । २ सफेद सरसो । ३ ममोला । खजन पक्षी । ४ एक प्रकार के छोटे दाने जो शरीर पर निकल आते हैं ।

सर्सों—सज्ञा स्त्री० [हिं० सरसो] दे० 'सरसो' ।

सर्हद—सज्ञा स्त्री० [हिं० सरहद] दे० 'सरहद' ।

सलबा नोन—सज्ञा पु० [सलवा ? + हिं० नोन] कचिया नोन । काच लवण ।

सल[१]—सज्ञा पु० [स०] १ जल । पानी । २ सरल वृक्ष । ३ एक प्रकार का कीडा जो प्राय घास मे रहता है । इसे बोट भी कहते हे ।

सल[२]—सज्ञा स्त्री० [हिं०] १ सिकुडन । सिलवट । २ तह । पर्त ।

सलई—सज्ञा स्त्री० [स० शल्लकी] १ शल्लकी वृक्ष । चीढ । वि० दे० 'चीढ' । २ चीढ का गोद । कुदुर ।

सलक—सज्ञा पुं० [अ०] चुकदर । कदशाक ।

सलक्षण—वि० [स०] १ समान लक्षणो से युक्त । २ चिह्न या लक्षणयुक्त [को०] ।

सलखपात—सज्ञा पुं० [स० शल्क + पद] कच्छप । कछुआ ।

सलगा—वि० [स० सलग्न] पूरा का पूरा । कुल । समग्र । जो टूटा न हो । उ०—कठिन समैया कलिकाल को कुटिल दैया सलग रुपैया मैया कापै दियो जात है ।—कविता कौ०, भा० १, पृ० ३६० ।

सलगम—सज्ञा पुं० [फा० शलजम] दे० 'शलजम' ।

सलगा सज्ञा स्त्री० [स० शल्लकी] शल्लकी । सलई । चीढ ।

सलग्नक वि० [स०] जो (ऋण) प्रतिभू अर्थात् जामिन देकर लिया गया हो [को०] ।

सलज[१]—वि० [स० सलज्ज] दे० 'सलज्ज' ।

सलज[२]—सज्ञा पुं० [स० सल ( = जल)] पहाडी बरफ का पानी ।

सलजम—संज्ञा पुं० [फा० शलजम] दे० 'शलजम'।

सलज्ज—वि० [सं०] जिसे लज्जा हो। शर्म और हयावाला। लज्जाशील।

सलटुक—संज्ञा पुं० [सं०] चौलाई का साग।

सलतत†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सलतनत] १ सुभीता। आराम। २ व्यवस्था। प्रबंध जुगाड।

सलतनत—संज्ञा स्त्री० [अ० सल्तनत] १ राज्य। बादशाहत। २ साम्राज्य। ३ इंतजाम। प्रबंध।

मुहा०—सलतनत बैठना = प्रबंध ठीक होना। इंतजाम बैठना।

४ सुभीता। आराम। जैसे,—पहले जरा सलतनत से बैठ लो, तब बातें होंगी।

सलना¹—क्रि० अ० [सं० शल्य] १ साला जाना। छिदना। भिदना। २. किसी छेद में किसी चीज का डाला या पहनाया जाना। ३. गडना। चुभना।

सलना²—संज्ञा पुं० लकडी छेदने का बरमा।

सलना³—संज्ञा पुं० [सं०] मोती।

सलपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] दालचीनी। गुडत्वक्।

सलपन—संज्ञा पुं० [देश०] दो तीन हाथ ऊँची एक झाडी जिसकी टहनियों पर सफेद रोएँ होते हैं।

विशेष—यह प्राय सारे भारत, लंका, बरमा, चीन और मलाया में पाई जाती है। यह वर्षा ऋतु में फूलती है। इसका व्यवहार ओषधि के रूप में होता है।

सलफ—संज्ञा पुं० [अ० सलफ] पूर्वपुरुष। पूर्वज। पुराने जमाने के पुरखे लोग [को०]।

सलब¹—वि० [अ० सल्ब] नष्ट। बरबाद। जैसे,—साल ही भर में उन्होंने बाप दादा की सारी कमाई सलब कर दी।

सलब²—संज्ञा पुं० दे० 'सल्ब'।

सलभ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शलभ] दे० 'शलभ'।

सलमह—संज्ञा पुं० [फा०] बथुवा नाम का साग।

सलमा—संज्ञा पुं० [अ० सलम ?] सोने या चाँदी का बना हुआ चमकदार गोल लपेटा हुआ तार जो टोपी, साडी आदि में बेलबूटे बनाने के काम में आता है। बादला।

सलवट—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिलवट] दे० 'सिलवट'।

सलवन—संज्ञा पुं० [सं० शालिपर्ण] सरिवन।

सलवात—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ बरकत। २ रहमत। मेहरबानी। ३ गाली। दुर्वचन। कुवाच्य।

क्रि० प्र०—सुनाना।

सलवार—संज्ञा पुं० [फा० शलवार] एक प्रकार का ढीला पायजामा जिसमें चुन्नटें रहती हैं।

सलसल बोल—संज्ञा पुं० [अ०] बहुमूत्र रोग या मधुप्रमेह नामक रोग।

सलसलाना¹—क्रि० अ० [अनु०] १ धीरे धीरे खुजली होना। सरसराहट होना। २ गुदगुदी होना। ३ कीडों का पेट के बल चलना। सरसराना। रेंगना। ४ आर्द्र या गीला होने से कार्य के अनुपयुक्त होना।

सलसलाना²—क्रि० स० १ खुजलाना। २. गुदगुदाना। ३ शीघ्रता से कोई कार्य करना।

सलसलाहट—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ सलसल शब्द या ध्वनि। २ सलसलाने का भाव या क्रिया। ३ खुजली। खारिश। ४ गुदगुदी। कुलकुली।

सलसी—संज्ञा स्त्री० [देश०] माजूफल की जाति का एक प्रकार का बडा वृक्ष जो बूक भी कहलाता है। विशेष दे० 'बूक'।

सलहज—संज्ञा स्त्री० [सं० श्यालजाया] साले की पत्नी। सरहज।

सला—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ निमंत्रित करना। २ आवाज देना। बुलाना [को०]।

सलाई¹—संज्ञा स्त्री० [सं० शलाका] १ धातु की बनी हुई कोई पतली छोटी छड। जैसे,—सुरमा लगाने की सलाई। घाव में दवा भरने की सलाई। मोजा या गुलूबंद बुनने की सलाई।

मुहा०—सलाई फेरना = (१) आँखों में सुरमा या औषध लगाना। (२) सलाई गरम करके अंधा करने के लिये आँखों में लगाना। आँखें फोडना।

२ दियासलाई। माचिस।

सलाई²—संज्ञा स्त्री० [हिं० सालना] १ सालने की क्रिया या भाव। २. सालने की मजदूरी।

सलाई³—संज्ञा स्त्री० [सं० शल्लकी] १ सलई। शल्लकी। २ चीड की लकडी।

सलाक¹—संज्ञा स्त्री० [फा०] सोने या चाँदी की सलाई [को०]।

सलाक(पु)²—संज्ञा स्त्री० [फा० सलाख] बाण। तीर। उ०—शुद्ध सलाक समान लसी अति रोषमयी दृग दीठि तिहारी।—केशव (शब्द०)।

सलाकना†—क्रि० अ० [सं० शलाका + हिं० ना (प्रत्य०)] सलाई या इसी तरह की और किसी चीज से किसी दूसरी चीज पर लकीर खीचना। सलाई की सहायता से चिह्न करना।

सलाख—संज्ञा स्त्री० [फा० सलाख, मि० सं० शलाका] १ लोहे आदि धातु की बनी हुई छड। २ शलाका। सलाई। ३ लकीर। खत।

सलाजीत—संज्ञा स्त्री० [हिं० शिलाजीत] दे० 'शिलाजीत'।

सलात—संज्ञा स्त्री० [अ०] नमाज [को०]।

सलातीन—संज्ञा पुं० [अ० सुलतान का बहु व०] शासक वर्ग [को०]।

सलाद—संज्ञा पुं० [अ० सैलाड] १ गाजर, मूली, राई, प्याज आदि पत्तों का अँगरेजी ढंग से सिरके आदि में डाला अचार। २ एक विशिष्ट जाति के कंद के पत्ते जो प्राय कच्चे खाए जाते हैं और बहुत पाचक होते हैं। इसके कई भेद होते हैं।

सलाबत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ कठोरता। सख्ती। २ प्रताप। शौर्य। वीरता [को०]।

सलाम—संज्ञा पुं० [अ०] प्रणाम करने की क्रिया। प्रणाम। बंदगी। आदाब।

मुहा० —दूर से सलाम करना = किसी बुरी वस्तु के पास न जाना। किसी बुरे आदमी से दूर रहना। जैसे,—उनको तो हम दूर ही से सलाम करते हैं। सलाम है = हम दूर रहना चाहते हैं। बाज आए। जैसे,—अगर उनका यही रंग ढंग है, तो फिर हमारा तो यहीं से उनको सलाम है। सलाम लेना = सलाम का जवाब देना। सलाम कबूल करना। सलाम देना = (१) सलाम करना। (२) सलाम कहलाना। सलाम करके चलना = किसी से नाराज होकर चलना। अप्रसन्न होकर विदा होना। सलाम फेरना = (१) नमाज खतम करना। (२) किसी से अप्रसन्न होकर उसका प्रणाम न स्वीकार करना।

यौ० —सलाम अलैक या सलाम अलैकम = अभिवादन। सलाम। तुम सलामत रहो, तुमपर सलामती हो इस प्रकार परस्पर अभिवादन। सलामो पयाम = (१) किसी का प्रणाम और सदेशा आना या भेजना। (२) विवाह की बातचीत।

सलामकराई—संज्ञा स्त्री० [अ० सलाम + हिं० कराई] १ सलाम करने की क्रिया या भाव। २ वह धन जो कन्या पक्षवाले मिलनी के समय पर वर पक्ष के लोगों को देते हैं। (मुसल०)।

सलामत[1]—वि० [अ०] १ सब प्रकार की आपत्तियों से बचा हुआ रक्षित। जैसे,—घर तक सलामत पहुँचे, तब समझना।

यौ०—सही सलामत।

२ जीवित और स्वस्थ। तंदुरुस्त और जिंदा। जैसे,—आप सलामत रहें, हमें बहुतेरा मिला करेगा। ३ कायम। बरकरार। जैसे,—सिर सलामत रहे, टोपिआँ बहुत मिलेंगी। ४ अखंड। अक्षत।

सलामत[2]—क्रि० वि० कुशलपूर्वक। खैरियत से।

सलामत[3]—संज्ञा स्त्री० शामिल या पूरा होने का भाव। अखंडित और संपूर्ण होने का भाव।

सलामती—संज्ञा स्त्री० [अ० सलामत + ई (प्रत्य०)] १ तंदुरुस्ती। स्वस्थता। २ कुशल। क्षेम। जैसे,—हम तो हमेशा आपकी सलामती चाहते हैं।

मुहा०—सलामती से = ईश्वर की कृपा से। परमात्मा के अनुग्रह से।

विशेष—इस मुहावरे का प्रयोग प्रायः स्त्रियाँ और विशेषतः मुसलमान स्त्रियाँ, कोई बात कहते समय, शुभ भावना से करती हैं। जैसे,—सलामती से उनके दो दो लड़के हैं।

३ एक प्रकार का मोटा कपड़ा। ४ जीवन। जिंदगी।

सलामी[1]—संज्ञा स्त्री० [अ० सलाम + ई (प्रत्य०)] १ प्रणाम करने की क्रिया। सलाम करना। जैसे,—दूल्हे को सलामी में १०) मिले थे। २ वर वधू को प्राप्त होनेवाली वह रकम जो सलामी की रस्म में दी जाती है। ३ शस्त्रों से प्रणाम करने की क्रिया। सैनिकों की प्रणाम करने की प्रणाली। सिपाहियाना सलाम। जैसे,—सिपाहियों की सलामी, तोपखाने की सलामी। ४ नजराना। अकोर। भेंट। ५ ढाल। ६ तोपों या बंदूकों की बाढ़ जो किसी बड़े अधिकारी या माननीय व्यक्ति के आने पर दागी जाती है।

मुहा०—सलामी उतारना = किसी के स्वागतार्थ बंदूकों या तोपों की बाढ़ दागना।

क्रि० प्र०—दगना।—दागना।—होना।

सलामी[2]—वि० १ सलाम करनेवाला। प्रार्थना या अर्ज करनेवाला। २ ढालवाँ। ढालदार। क्रमशः झुकावदार।

सलार—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया। उ०—चकई चकवा और पिदारे। नकटा लेदी सोन सलारे।—जायसी (शब्द०)।

सलासत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मृदुता। नम्रता। २ सरलता। सुगमता। ३ शिष्टता। सभ्यता। ४ वह भाषा जो सरल और अक्लिष्ट शब्दों में युक्त हो। भाषा का अक्लिष्ट, गतिशील और सरल होना (को०)।

सलाह—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ समति। परामर्श। राय। मशवरा।

क्रि० प्र०—पूछना। देना।—बताना।—लेना।

मुहा०—सलाह ठहराना = राय पक्की होना समति निश्चित होना। जैसे,—सब लोगों की सलाह ठहरी है कि कल बाग चलें।

२ अच्छाई। भलाई। ३ मेल। सुलह।

सलाहकार—संज्ञा पुं० [अ० सलाह + फा० कार (प्रत्य०)] वह जो परामर्श देता हो। राय देनेवाला।

सलाही—संज्ञा पुं० [अ० सलाह] सलाहकार। परामर्शदाता। जैसे,—कानूनी सलाही। (भारतीय शासनपद्धति।) (शब्द०)।

सलाहीयत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ अच्छाई। खूबी। भलाई। २ योग्यता। पात्रता। ३ इंद्रियनिग्रह। पारसाई। सयम। ४ विद्वत्ता। ५ गंभीरता (को०)।

सलिंग वि० [स० सलिङ्ग] समान लिंग से युक्त। समान चिह्नवाला। सदृश। अनुरूप (को०)।

सलिंगी—वि० [स० सलिङ्गिन्] जो केवल चिह्न धारण करता हो। पाखंडी। ढोंगी (को०)।

सलिउ—संज्ञा स्त्री० [स० शर ?] चिता।

सलिता पु—संज्ञा स्त्री० [स० सरिता] नदी। सरिता। उ०—द्रप्पन सम आकास श्रवत जल अमृत हिमकर। उज्जल जल सलिता सु सिद्धि सुदर सरोज सर।—पृ० रा०, ६१।४२।

सलिल—संज्ञा पुं० [स०] १ जल। पानी। २ उत्तराषाढ नक्षत्र (को०) (को०)। ३ अश्रु। आँसू (को०)। ४. सलिल वात। एक प्रकार की हवा (को०)। ५ वर्षा का जल (को०)। ६ बहुत बड़ी सख्या (को०)। ७ एक वृत्त (को०)।

सलिलकर्म—संज्ञा पुं० [स० सलिलकर्मन्] पितरों के लिये दिया जानेवाला जल। तर्पण (को०)।

सलिलकुंतल—संज्ञा पुं० [स० सलिलकुन्तल] शैवाल। सिवार।

सलिलकुक्कुट—संज्ञा पुं० [सं०] एक जल पक्षी । जलकुक्कुट [को०] ।

सलिलक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रेत का तर्पण । जलांजलि । उदकक्रिया । विशेष दे० 'उदकक्रिया' । २ मृतक क्रिया के समय शव को नहलाना [को०] ।

सलिलगर्गरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पानी की गगरी [को०] ।

सलिलगुरु—वि० [सं०] १. जलपूर्ण । पानी से भरा हुआ । २ अश्रु से परिपूर्ण [को०] ।

सलिलचर—वि० [सं०] जल मे विचरण करनेवाला जलचर ।

यौ०—सलिलचरकेतन=कामदेव का एक नाम ।

सलिलज—संज्ञा पुं० [सं०] १ कमल । पद्म । २ वह जो जल से उत्पन्न हो । जलजात । जलजीव या वस्तुएँ ।

सलिलजन्मा—संज्ञा पुं० [सं० सलिलजन्मन्] १ कमल । पद्म । २ वह जो जल से उत्पन्न हो । जलजात ।

सलिलद¹—वि० [सं०] सलिल देनेवाला । जल देनेवाला । जो जल दे ।

सलिलद²—संज्ञा पुं० मेघ । बादल ।

सलिलधर—संज्ञा पुं० [सं०] १ मोथा । मुस्तक । २. बादल । मेघ (को०) । ३. अमृतपायी । देवता (को०) ।

सलिलदायी—वि० [सं० सलिलदायिन्] जल बरसानेवाला । वर्षा करनेवाला [को०] ।

सलिलनिधि—संज्ञा पुं० [सं०] १ जलनिधि । समुद्र । २ सरसी छंद का एक नाम ।

सलिलनिपात—संज्ञा पुं० [सं०] जल गिरना । वर्षा होना [को०] ।

सलिलनिषेक—संज्ञा पुं० [सं०] जलसिंचन । जल द्वारा सींचना [को०] ।

सलिलपति—संज्ञा पुं० [सं०] १ जल के स्वामी—वरुण । २ समुद्र । सागर ।

सलिलप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] सूअर । शूकर ।

सलिलभर—संज्ञा पुं० [सं०] ताल । झील । पोखरा [को०] ।

सलिलमुच्—संज्ञा पुं० [सं०] मेघ । बादल ।

सलिलयोनि—संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्मा । २ वह वस्तु जो जल मे उत्पन्न होती हो ।

सलिलरय—संज्ञा पुं० [सं०] जल की धारा । सलिल का प्रवाह [को०] ।

सलिलराज—संज्ञा पुं० [सं०] १ जल का स्वामी, वरुण । २ समुद्र । सागर ।

सलिलराशि—संज्ञा पुं० [सं०] १ जलाशय । जलाधार । २ समुद्र । सागर [को०] ।

सलिलवात, सलिलवायु—संज्ञा पुं० [सं०] सलिल को संस्पर्श कर के आती हुई वायु ।

सलिलस्तंभी—वि० [सं० सलिलस्तम्भिन्] जल की गति का अवरोध करनेवाला । जलस्तंभन करनेवाला [को०] ।

सलिलस्थलचर—वि० [सं०] जो जल और स्थल दोनो मे विचरण करता हो । जैसे,—हंस, साँप आदि ।

सलिलांजलि—संज्ञा स्त्री० [सं० सलिलाञ्जलि] मृतक के उद्देश्य से दी जानेवाली जलांजलि ।

सलिलाकर—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र । सागर ।

सलिलाधिप—संज्ञा पुं० [सं०] जल के अधिष्ठाता देवता, वरुण ।

सलिलार्णव—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र । सागर ।

सलिलार्थी—वि० [सं० सलिलार्थिन्] जल का इच्छुक । प्यासा [को०] ।

सलिलालय—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र ।

सलिलाशन—वि० [सं०] केवल जल पीकर रहनेवाला ।

सलिलाशय—संज्ञा पुं० [सं०] जलाशय । तालाब ।

सलिलाहार—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो केवल जल पीकर रहता हो । २ केवल जल पीकर रहने की क्रिया ।

सलिलेंद्र—संज्ञा पुं० [सं० सलिलेन्द्र] जल के अधिष्ठाता देवता, वरुण ।

सलिलेंधन—संज्ञा पुं० [सं० सलिलेन्धन] बड़वानल ।

सलिलेचर—संज्ञा पुं० [सं०] जल मे रहनेवाला जीव । जलचर ।

सलिलेश—संज्ञा पुं० [सं०] जल के अधिष्ठाता देवता—वरुण ।

सलिलेशय—वि० [सं०] जल मे सोनेवाला । जलशायी ।

सलिलेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] सलिलेंद्र । वरुण [को०] ।

सलिलोद्भव¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ कमल । २ जल मे उत्पन्न होनेवाली कोई चीज ।

सलिलोद्भव²—वि० जल मे उत्पन्न [को०] ।

सलिलोपजीवी¹—वि० [सं० सलिलोपजीविन्] केवल जल पर निर्भर रहनेवाला । जलोपजीवी ।

सलिलोपजीवी²—संज्ञा पुं० मल्लाह । मछुवा [को०] ।

सलिलोपप्लव—संज्ञा पुं० [सं०] जलप्रलय जलप्लावन [को०] ।

सलिलौका¹—संज्ञा पुं० [सं० सलिलौकस्] जोंक । जलौका ।

सलिलौका²—वि० जल मे रहनेवाला [को०] ।

सलिलौदन—संज्ञा पुं० [सं०] पकाया हुआ अन्न । ओदन ।

सलीका—संज्ञा पुं० [अ० सलीकह्] १ काम करने का ठीक ठीक या अच्छा ढंग । शऊर । तमीज । २ हुनर । लियाकत । ३ चालचलन । बरताव । ४ तहजीब । सभ्यता ।

क्रि० प्र०—आना ।—सिखाना ।—सीखना ।—होना ।

सलीकामंद—वि० [अ० सलीकह् + फा० मंद (प्रत्य०)] १ जिसे सलीका हो । शऊरदार । तमीजदार । २ हुनरमंद । ३ शिष्ट । सभ्य ।

सलीकेदार—वि० [अ० सलीकह् दार] दे० 'सलीकामंद' ।

सलीखा—संज्ञा पुं० [सं० शल्क ( = छिलका) ] तज । त्वक्पत्र ।

सलीता—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बहुत मोटा कपड़ा जो प्रायः मारकीन या गजी की तरह का होता है ।

सलीपर—संज्ञा पुं० [अ० स्लिपर] १ एक प्रकार का हलका जूता जिसके पहनने पर पंजा ढँका रहता है और एँडी खुली रहती है ।

सल्लना(पु)—क्रि० स० [सं० शल्यन, हिं० सालना] १ दुख देना। कष्ट देना। चुभाना। २ दे० 'सालना'।

सल्लम—संज्ञा पुं० स्त्री० [देश०] एक प्रकार का मोटा कपड़ा। गजी। गाढ़ा।

सल्लाह—संज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'सलाह'।

सल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं० शल्लकी] शल्लकी। सलई।

सल्लू¹—वि० [देश०] मूर्ख। बेवकूफ।

सल्लू²—संज्ञा पुं० [हिं० सलना] चमड़े की डोरी।

सल्लोक—संज्ञा पुं० [सं० सत्+लोक] शिष्ट या सज्जन व्यक्ति। भद्र पुरुष। सत्पुरुष [को०]।

सल्व—संज्ञा पुं० [सं० शल्व] दे० 'शल्व'।

सवंशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का वृक्ष।

सव¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ जल। पानी। २ पुष्परस। पुष्पद्रव। मकरंद। ३ यज्ञ। ४ सूर्य। ५. संतान। औलाद। ६ चंद्रमा। ७ सोमलता का रस निकालना (को०)। ८ बलि। तर्पण (को०)। ९ वह जो उत्पादन करता हो (को०)। १० अर्क या मदार का पौधा (को०)। ११ अनुज्ञा। आज्ञा। आदेश (को०)। १२ प्रोत्साहन। उभारना। प्रेरणा करना (को०)।

सव²—वि० अज्ञ। मूर्ख। अनाड़ी।

सव³—संज्ञा पुं० [सं० शव] दे० 'शव'। उ०—फिरत सृगाल सज्यौ सव काटत चलत सो सिर लै भागि।—सूर०, ९।१५८।

सवगात†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौगात] दे० 'सौगात'।

सवजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बर्बरी। अजगंधा।

सवत†—संज्ञा स्त्री० [सं० सपत्नी] दे० 'सौत'।

सवति(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौत] दे० 'सौत'। उ०—(क) जरि तुम्हारि चह सवति उखारी।—मानस, २।१७। (ख) सेवहि सकल सवति मोहि नीके।—मानस, २।१८।

सवत्स—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सवत्सा] बच्चे के सहित। जिसके साथ बच्चा हो। जैसे,—दान में सवत्स गौ दी जाती है।

सवधूक—वि० [सं०] वधू के साथ। पत्नीसहित [को०]।

सवन—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रसव। बच्चा जनना। २ श्योनाक वृक्ष। सोनापाठा। ३ यज्ञस्नान। ४ सोमपान। ५. यज्ञ। ६. चंद्रमा। ७ पुराणानुसार भृगु के एक पुत्र का नाम। ८ वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम। ९ रोहित मन्वंतर के सप्तर्षियों में से एक ऋषि का नाम। १० स्वायंभुव मनु के एक पुत्र का नाम। ११ अग्नि का एक नाम। १२ सोमलता को निचोड़कर रस निकालना (को०)। १३ उपहार। बलि (को०)।

यौ०—सवनकाल=आहुति देने, तर्पण आदि का समय। सवनक्रम=यज्ञादि के विभिन्न कृत्यों का क्रम। सवनसंस्था=यज्ञ कर्म का अंत या समाप्ति।

सवनकर्म—संज्ञा पुं० [सं० सवनकर्मन्] यज्ञकार्य।

सवनमुख—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ का आरंभ।

सवनिक—वि० [सं०] सवन संबंधी। सवन का।

सवनीय—वि० [सं०] सोम तर्पण से संबंधी। सवन संबंधित [को०]।

यौ०—सवनीय पशु=वह पशु जिसकी यज्ञ में बलि चढ़ाई जाय। सवनीय पात्र - सोमरस पीने का पात्र।

सवपुष—वि० [सं० सवपुष्] शरीर के साथ। शरीर सहित। मूर्त [को०]।

सवयस—वि० [सं० सवयस्] दे० 'सवयस्क'।

सवयस्क—वि० [सं०] समान अवस्थावाले। बराबर की उम्रवाले।

सवया¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] सखी। सहचरी। सहेली।

सवया²—वि० [सं० सवयस्] हम उम्र। समान अवस्था का।

सवया³—संज्ञा पुं० सखा। सहचर। मित्र। वयस्य [को०]।

सवर—संज्ञा पुं० [सं०] १ जल। २ शिव का एक नाम।

सवररोध्र—संज्ञा पुं० [सं०] पठानी लोध्र। सफेद लोध्र।

सवर्ण¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सवर्णा] १ समान। सदृश। एक ही प्रकार का। समान वर्ण का। समान जाति का। ३ एक ही रंग का (को०)। ४ व्याकरण में अक्षरों के समान वर्ग में संबद्ध। एक ही स्थान से उच्चरित होनेवाला (को०)। ५ गणित में समान 'हर' वाली संख्या (को०)।

सवर्ण²—संज्ञा पुं० ब्राह्मण पिता और क्षत्रिय माता से उत्पन्न संतान। विशेष दे० 'माहिष्य' [को०]।

सवर्णन—संज्ञा पुं० [सं०] गणित में भिन्नों को समान हर वाली भिन्न के रूप में लाना [को०]।

सवर्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्य की पत्नी छाया का एक नाम।

सवर्य—वि० [सं०] वर्य, श्रेष्ठ एवं अच्छे गुणों से युक्त [को०]।

सवहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] निसोथ। त्रिवृत।

सवाँग†—संज्ञा पुं० [हिं० स्वाँग] दे० 'स्वाँग'। उ०—हिलि मिलि करत सवाँग सभा रसकेलि हो। नाउनि मन हरखाइ सुगंधन मेलि हो।—तुलसी ग्रं०, पृ० ६।

सवाँगना(पु)—क्रि० अ० [हिं० स्वाँगना] दे० 'स्वाँगना'।

सवा—संज्ञा स्त्री० [सं० स+पाद] चौथाई सहित। संपूर्ण और एक का चतुर्थांश। चतुर्थांश सहित। जैसे,—सवा चार, अर्थात् चार और एक का चतुर्थांश = $4\frac{1}{4}$।

सवाई¹—संज्ञा स्त्री० [हिं० सवा+ई (प्रत्य०)] १ ऋण का एक प्रकार जिसमें मूल धन का चतुर्थांश ब्याज में देना पड़ता है। २. जयपुर के महाराजाओं की एक उपाधि। ३ मूत्रयंत्र संबंधी एक प्रकार का रोग।

सवाई²—वि० १ एक और चौथाई। सवा। २ किसी से बीस या और अधिक बढ़ चढ़कर उ०—सीसनि टिपारे, उपबीत, पीत पट कटि, दोना बाम करनि सलोने से सवाई हैं।—तुलसी ग्रं०, पृ० ३०५।

सवाक्—वि० [सं० सवाच्] वाणीयुक्त। वाक्युक्त। बोलता हुआ। अवाक् का उलटा।

सवाक्‌ चित्र--संज्ञा पुं० [सवाक्‌+चित्र] वह चित्र जिसमे पात्रो के बोलने, गाने आदि की ध्वनि भी सुनाई दे। बोलता हुआ सिनेमा (अ० टॉकी)।

सवागी--संज्ञा पुं० [हिं० सुहागा] सुहागा। टकरण क्षार।

सवाती(पु)--संज्ञा स्त्री० [स० स्वाती] स्वाती नक्षत्र [को०]।

सवाद(पु)--संज्ञा पु० [हि० स्वाद] दे० स्वाद।

सवादिक--वि० [हिं० सवाद+इक (प्रत्य०)] खाने मे जिसका स्वाद अच्छा हो। स्वाद देनेवाला। स्वादिष्ट।

सवादिल(पु)--वि० [हिं० सवाद+इल (प्रत्य०)] दे० 'सवादिक'।

सवाब--संज्ञा पु० [अ०] १ शुभ कृत्य का फल जो स्वर्ग मे मिलेगा। पुण्य।

मुहा०--सवाब कमाना=ऐसा काम करना जिसमे पुण्य हो। पुण्य कार्य करना।

२ पलटा। प्रतिफल। बदला। ३ भलाई। नेकी।

सवाया--वि० [हि० सवा+या (प्रत्य०)] १ दे० 'सवाई'। २ अधिक बढ चढ कर। उ०--कहि रामानंद सबद सवाया और सबै घट रीता।--रामानद०, पृ० १३।

सवार¹--संज्ञा पु० [फा०] १ वह जो घोडे पर चढा हो। अश्वारोही। २ अश्वारोही सैनिक। रिसाले का सिपाही। ३ वह जो किसी चीज, हाथी, घोडा, ऊँट यान आदि पर चढा हो। ४ घुडसवार सिपही।

सवार²--वि० १ किसी चीज पर चढा या बैठा हुआ। जैसे,--वे गाडी पर सवार होकर घूमने निकलते हैं। २ नशे मे मस्त या मतवाला।

सवार(पु)³--संज्ञा पुं० [हिं०] १ प्रभात। सुबह। भोर। २ शीघ्र।

सवारना--क्रि० स० [हिं० सँवारना] दे० 'सँवारना'।

सवारी--संज्ञा स्त्री० [फा०] १ किसी चीज पर विशेषत चलने के लिये चढने की क्रिया। २ वह चीज जिसपर यात्रा आदि के लिये चढते हो। सवार होने की वस्तु। चढने की चीज। जैसे,--घोडा, हाथी, मोटर, रेल आदि।

मुहा०--सवारी लेना=सवारी के काम मे लाना। सवार होना।

३ वह व्यक्ति जो सवार हो। जैसे--एक्केवाले चार आने फी सवारी माँगते है। ४ जलूस। जैसे,--राजा साहब की सवारी बडे धूम से निकली थी। ५ कुश्ती मे अपने विपक्षी को जमीन पर गिराकर उसकी पीठ पर बैठना और उसी दशा मे उसे चित करने का प्रयत्न।

क्रि० प्र०--कसना।

६ सभोग या प्रसग के लिये लिये स्त्री पर चढने की क्रिया। (बाजारू)।

क्रि० प्र०--कसना। - गाँठना।

सवाल--संज्ञा पुं० [अ०] १ पूछने की क्रिया। २ वह जो कुछ पूछा जाय। प्रश्न। ३ अर्जी। दरखास्त। माँग। याचना।

मुहा०--(किसी पर) सवाल देना=(किसी पर) नालिश करना। फरियाद करना।

४ विनती। निवेदन। प्रार्थना। ५ भिक्षा की याचना। ६ गणित का प्रश्न जो उत्तर निकालने के लिये दिया जाता है।

क्रि० प्र०--करना।--निकालना।--देना।

सवालजवाब--संज्ञा पु० [अ०] १ बहस। वादविवाद। जैसे,--सब बातो मे सवालजवाब मत किया करो, जो कहा जाय, वह किया करो। २ तकरार। हुज्जत। झगडा।

सवालात--संज्ञा पु० [अ०] सवाल का बहुवचन। अनेक प्रश्न।

सवालिया--वि० [अ०] जिसमे कोई बात पूछी गई हो। जैसे--सवालिया जुमला।

सवासा--वि० [स० सवासस्] वस्त्रयुक्त [को०]।

सविकल्प¹--वि० [स०] १ विकल्प सहित। सदेहयुक्त। सदिग्ध। २ जो किसी विषय के दोनो पक्षो या मतो आदि को, कुछ निर्णय न कर सकने के कारण, मानता हो। ३ ऐच्छिक। इच्छानुकूल (को०)। ४ जो विकल्प या अतर (ज्ञाता और ज्ञेय मे) मानता हो।

सविकल्प²--संज्ञा पुं० १ दो प्रकार की समाधियो मे से एक प्रकार की समाधि। वह समाधि जो किसी आलबन की सहायता से होती है। २ वेदात के अनुसार ज्ञाता और ज्ञेय के भेद का ज्ञान।

सविकल्पक--संज्ञा पुं० [स०] दे० 'सविकल्प'।

सविकार--वि० [स०] १ जिसमे विकार हो। विकार वा विकृतियुक्त। २ जो उन्मिषित या विकसित हो रहा हो। ३ (फल, खाद्य आदि) जो सडा गला हो। गलित। खराब [को०]।

सविकाश, सविकास--वि० [स०] १ विकासयुक्त। विस्तारयुक्त। २ विकसित। खिला हुआ। कातिमान [को०]।

सविग्रह--वि० [स०] १ शरीरी। विग्रहयुक्त। मूर्तिमान्। देहधारी। २ अर्थवाला। सार्थक। ३ सघर्षरत। झगडालू [को०]।

सविचार--संज्ञा पुं० [सं०] चार प्रकार की सविकल्प समाधियो मे से एक प्रकार की समाधि।

सविज्ञान--वि० [स०] १. विज्ञानयुक्त। विशिष्ट ज्ञान सहित। २ विवेकयुक्त। विचारवान्।

सविडालभ--संज्ञा पुं० [स० सविडालम्भ] नाटचशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का परिहास या मजाक।

सवितर्क¹--संज्ञा पु० [स०] चार प्रकार की सविकल्प समाधियो मे से एक प्रकार की समाधि।

सवितर्क²--वि० वितर्कयुक्त। विचारशील [को०]।

सविता¹--संज्ञा पुं० [स० सवितृ] १ सूर्य। दिवाकर। २ बारह की सख्या। ३ आक। अर्क। मदार। ४ शिव का एक नाम (को०)। ५ इद्र (को०)। ६ जगत्स्रष्टा। ससार का रचयिता (को०)। ७ अट्ठाइस व्यासो मे से एक (को०)।

सविता²--वि० [वि० स्त्री० सवित्री] जनक। उत्पादक। स्रष्टा [को०]।

सवितातनय—संज्ञा पुं० [सं० सवितृतनय] सूर्य के पुत्र हिरण्यपाणि, यमराज, शनि आदि।

सवितादैवत—संज्ञा पुं० [सं० सवितृदैवत] हस्त नक्षत्र जिसके अधिष्ठाता देवता सूर्य माने जाते हैं।

सवितापुत्र—संज्ञा पुं० [सं० सवितृपुत्र] सूर्य के पुत्र, हिरण्यपाणि, यम, शनि आदि।

सविताफल—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार मेरु के उत्तर के एक पर्वत का नाम।

सवितासुत—संज्ञा पुं० [सं० सवितृसुत] सूर्य के पुत्र, शनैश्चर।

सवितृल—वि० [सं०] दे० 'सविविय' (कौ०)।

सवित्र—संज्ञा पुं० [सं०] प्रजनन। प्रसव करना। लडका जनना।

सवित्रिय—वि० [सं०] सूर्य संबंधी। सविता या सूर्य का।

सवित्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रसव करानेवाली धाई। धात्री। दाई। २ प्रसव करनेवाली, माता। माँ। ३ गौ।

सविद्य—वि० [सं०] १ विद्वान्। पडित। २ तुल्य या समान विषय का अध्ययन करनेवाला (कौ०)।

सविध¹—वि० [सं०] १ निकट। पास। समीप। २ समान। सजातीय। एक ही वर्ग का (कौ०)।

सविध²—संज्ञा पुं० निकटता। सामीप्य (कौ०)।

सविध³—अ० विधिपूर्वक। विधिवत्।

सविधि—वि० [सं०] दे० 'सविध'।

सविनय—वि० [सं०] १. विनययुक्त। विनम्र। २ विनम्रता या शिष्टतापूर्वक (कौ०)।

सविनय अवज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सविनय कानून भंग'।

सविनय कानून भंग—संज्ञा पुं० [सं० सविनय+फा० कानून+हिं० भंग] नम्रता या भद्रतापूर्वक राज्य की किसी ऐसी व्यवस्था या कानून अथवा आज्ञा को न मानना जो अपमानजनक और अन्यायमूलक प्रतीत हो। और ऐसी अवस्था में राज्य की ओर से होनेवाले पीडन तथा कारादंड आदि को धीरतापूर्वक सहन करना। भद्र अवज्ञा। सविनय अवज्ञा। (सिविल डिसओबीडिएंस)।

सविभक्तिक—वि० [सं०] विभक्तियुक्त (कौ०)।

सविभाल—संज्ञा पुं० [सं०] नखी या हट्टविलासिनी नामक गंध द्रव्य।

सविभास—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य का एक नाम।

सविभ्रम—वि० [सं०] दे० 'सविलास' (कौ०)।

सविमर्श—वि० [सं०] दे० 'सवितर्क' (कौ०)।

सविलास—वि० [सं०] १ भोग विलास करनेवाला। भोगी। विलासी। २ क्रीडा या प्रणययुक्त (कौ०)।

सविशंक—वि० [सं०] शंकित। शंकायुक्त (कौ०)।

सविशेष—वि० [सं०] १ विशिष्ट गुणों से युक्त। २ विशिष्ट। असाधारण। खास। ३ अंतर करनेवाला। विशेषतानुसार (कौ०)। ४ विलक्षण (कौ०)।

सविशेषक¹—वि० [सं०] १ जो विशेष गुणों से युक्त हो। २ सुविचारित (कौ०)।

सविशेषक²—संज्ञा पुं० विशेष गुण (कौ०)।

सविश्रंभ—वि० [सं०] दिली। अंतरंग। अभिन्नहृदय (कौ०)।

सविष—संज्ञा पुं० [सं०] एक नरक (कौ०)।

सविस्तर—अ० [सं०] विवरण के साथ। विस्तार के साथ (कौ०)।

सविस्मय—वि० [सं०] १ चकित। विस्मित। २ संदेहपूर्ण। ३ विस्मयपूर्वक (कौ०)।

सवीर—वि० [सं०] वीरों से युक्त। अनुयायि जनों के साथ।

सवीर्य—वि० [सं०] १ समान शक्तिवाला। २ शक्तिशाली (कौ०)।

सवीर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] सतावर। शतावरी।

सवृत्त—वि० [सं०] चरित्रवान् (कौ०)।

सवृद्धिक—वि० [सं०] ब्याज के साथ (कौ०)।

सवृष्टिक—वि० [सं०] वर्षा से युक्त। वृष्टियुक्त।

सवेग¹—वि० [सं०] १ समान वेगवाला। २ उग्र (कौ०)।

सवेग²—क्रि० वि० वेगपूर्वक। शीघ्र गति से। उ०—चले सवेग राम तेहि काला।—मानस २।२४२।

सवेताल—वि० [सं०] वेताल से ग्रस्त (कौ०)।

सवेध—संज्ञा पुं० [सं०] समीपता (कौ०)।

सवेरा—संज्ञा पुं० [हिं० स+सं० वेला] १. सूर्य निकलने के लगभग का समय। प्रातःकाल। सुबह। २ निश्चित समय के पूर्व का समय। (क्व०)।

सवेरे—अव्य० [हिं०] तडके। भोर में। सुबह।

सवेश—वि० [सं०] १ निकट। समीप पास। २ विभूषित। अलंकृत (कौ०)।

सवेशीय—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का साम।

सवेष—वि० [सं०] अलंकृत। सज्जित (कौ०)।

सवेष्टन—वि० [सं०] पगडीयुक्त। जिसपर पगडी हो (कौ०)।

सवैया—संज्ञा पुं० [हिं० सवा+ऐया (प्रत्य०)] १ तौलने का एक बाट जो सवा सेर का होता है। २ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में सात भगण और एक गुरु होता है। इसे 'मालिनी' और 'दिवा' भी कहते हैं।

विशेष—इस अर्थ में कुछ लोग इसे स्त्री लिंग भी बोलते हैं।

३ वह पहाडा जिसमें एक, दो, तीन आदि संख्याओं का सवाया रहता है। ४ दे० 'सवाई'।

सवैलक्ष्य—वि० [सं०] १ अप्राकृतिक। अस्वाभाविक। २ लज्जित। लज्जायुक्त। लज्जित (कौ०)।

यौ०—सवैलक्ष्य स्मित = अस्वाभाविक मुस्कान। झेंपभरी हँसी।

सव्य¹—वि० [सं०] १ वाम। बायाँ। २ दक्षिण। दाहिना।

विशेष—सव्य शब्द का वाम और दक्षिण दोनों अर्थ में प्रयोग होता है। पर साधारणतः यह वाम के ही अर्थ में प्रयुक्त

होता है। ३ प्रतिकूल। विरुद्ध। खिलाफ। ४ अनुकूल। उपयुक्त। दक्षिण (को०)। ५ जो घृत से सिंचित न हो। शुष्क। रूखा (को०)।

सव्य²—संज्ञा पुं० १ यज्ञोपवीत। २ चंद्र या सूर्यग्रहण के दस प्रकार के ग्रासों में एक प्रकार का ग्रास। ३ अंगिरा के पुत्र का नाम जो ऋग्वेद के कई मंत्रों के द्रष्टा थे।

विशेष—कहते हैं कि अंगिरा के तपस्या करने पर इंद्र ने उनके घर पुत्र रूप में जन्म ग्रहण किया था, जिनका नाम सव्य पड़ा।

४ विष्णु। ५ अग्नि, जो किसी के मृत्युकाल में दीप्त की जाय (को०)।

सव्यचारी—संज्ञा पुं० [सं० सव्यचारिन्] १ अर्जुन का एक नाम। दे० 'सव्यसाची'। २ अर्जुन वृक्ष। कोह वृक्ष।

सव्यजानु—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध का एक ढंग (को०)।

सव्यथ—वि० [सं०] १ पीडा या व्यथा से ग्रस्त। २ शोकाकुल। दुःखान्वित (को०)।

सव्यपेक्ष—वि० [सं०] आसरा या अपेक्षायुक्त। किसी पर निर्भर या अवलंबित (को०)।

सव्यबाहु—संज्ञा पुं० [सं०] बाएँ हाथ से लडने का एक तरीका (को०)।

सव्यभिचार—संज्ञा पुं० [सं०] हेत्वाभास का एक भेद।

सव्यसाची—संज्ञा स्त्री० [सं० सव्यसाचिन्] अर्जुन।

विशेष—कहते हैं कि अर्जुन दाहिने हाथ से भी तीर चला सकते थे और बाएँ हाथ से भी, इसी लिये उनका यह नाम पडा।

सव्यभिचरण—वि० [सं०] व्यभिचारि भाव से युक्त (को०)।

सव्यात—संज्ञा पुं० [सं० सव्यान्त] युद्ध करने का एक प्रकार (को०)।

सव्याज—वि० [सं०] १ व्याज या छद्मयुक्त। २. कपटी। धूर्त। चालबाज (को०)।

सव्यापार—वि० [सं०] काम में लगा हुआ (को०)।

सव्येतर—वि० [सं०] दाहिना (को०)।

सव्येष्टा—स्त्री० पुं० [सं० सव्येष्टृ] दे० 'सव्येष्ठ'।

सव्येष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] सारथी।

सव्येष्ठा, सव्येष्ठाता—संज्ञा पुं० [सं० सव्येष्ठृ, सव्येष्ठातृ] सारथी। दे० 'सव्येष्ठ' (को०)।

सव्रण—वि० [सं०] १ चोटैल। व्रणयुक्त। २ घायल। ३ दोषयुक्त। छिद्रयुक्त। सदोष (को०)।

सव्रणशुक्र—संज्ञा पुं० [सं०] आँख का एक रोग जिसमें आँख की पुतली पर सूई से किए हुए छोटे छेद के समान गहरी फूली पडती है और आँखों से गरम आँसू निकलते है।

सव्रती—वि० [सं० सव्रतिन्] १ व्रतयुक्त। २ समान ढंग से काम करनेवाला। समान रीतिरिवाज वाला (को०)।

सव्रीड—वि० [सं०] व्रीडा या लज्जायुक्त। लज्जित (को०)।

सशंक—वि० [सं० सशङ्क] १ जिसे शंका हो। शंकायुक्त। २ भयभीत। डरा हुआ। ३ भयकारी। भयानक। ४. शंका उत्पन्न करनेवाला। भ्रामक।

सशंकना(पु)—क्रि० अ० [सं० सशङ्क + हिं० ना (प्रत्य०)] १ शंकायुक्त होना। शंकित होना। २ भयभीत होना। डरना।

सशक्तिक—वि० [सं०] शक्तियुक्त। शक्तिशाली।

सशब्द—वि० [सं०] १ ध्वनियुक्त। शब्द करता हुआ। २ चिल्लाकर कहा हुआ। जोरों से घोषित। ३ नादयुक्त। नाद के साथ (को०)।

सशयन—वि० [सं०] समीपवर्ती। पास पड़ोस का।

सशरीर—वि० [सं०] १ शरीरयुक्त। देहधारी। मूर्त। २ अस्थियुक्त। ३ शरीर के साथ।

सशल्क¹—वि० [सं०] जिसमें शल्क हो। शल्कयुक्त।

सशल्क²—संज्ञा पुं० एक प्रकार का मत्स्य (को०)।

सशल्य¹—संज्ञा पुं० [सं०] सेह। साही।

सशल्य²—वि० १ शल्ययुक्त। काँटेदार। २ काँटे या नोकदार अस्त्रों से बिंधा हुआ। ३ कठिन। मुश्किल। कष्टमय (को०)।

सशल्यव्रण—संज्ञा पुं० [सं०] व्रण रोग का एक भेद।

विशेष—काँटे आदि के चुभ जाने से यह व्रण उत्पन्न होता है। इसमें विद्ध स्थान में सूजन होती है और कालांतर में वह पक जाता है।

सशल्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] नागदंती। हाथी सुंडी।

सशवी—संज्ञा पुं० [?] काला जीरा। कृष्ण जीरक।

सशस्त्र—वि० [सं०] १ शस्त्रयुक्त। शस्त्रसज्ज। हथियारों से लैस। २ जिसमें शस्त्रों, हथियारों का उपयोग हुआ हो (को०)।

सशस्य—वि० [सं०] १ अन्न से युक्त। २ जिसमें अनाज पैदा हो। उपजाऊ (को०)।

सशस्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] नागदंती (को०)।

सशाक—संज्ञा पुं० [सं०] अदरक। आदी।

सशाद्वल—वि० [सं०] हरी हरी घासों से पूर्ण (को०)।

सशुक्र—वि० [सं०] दीप्तियुक्त। चमकदार (को०)।

सशूक¹—वि० [सं०] टूँड़वाला (को०)।

सशूक²—संज्ञा पुं० ईश्वरविश्वासी। आस्तिक (को०)।

सशेष—वि० [सं०] जिसमें शेष हो। २ अपूर्ण। अधूरा।

सशोथ—वि० [सं०] सूजा हुआ।

सशोथपाक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का नेत्र रोग।

विशेष—इस रोग में आँखों में से आँसू निकलते हैं और उनमें खुजली तथा शोथ होता है। आँखें लाल भी हो जाती हैं।

सश्मश्रु¹—वि० [सं०] श्मश्रुयुक्त। दाढ़ी मूँछवाला।

सश्मश्रु²—संज्ञा स्त्री० वह स्त्री जिसे दाढ़ी मूँछ उग आई हो (को०)।

सश्रद्ध—वि० [सं०] १ श्रद्धायुक्त। आस्थावान्। २ विश्वास करने योग्य। सच्चा (को०)।

सश्रम—वि० [सं०] १ श्रमयुक्त। २ थका हुआ। ३ श्रमपूर्वक।

सश्रीक—वि० [सं०] १ समृद्धियुक्त। भाग्यशाली। २ शोभायुक्त। सुंदर (को०)।

सश्रीवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का घोड़ा, जिसके वक्षस्थल पर भँवरी हो [को०]।
सश्लेप—वि० [सं०] श्लेपयुक्त। द्व्यर्थक। श्लिष्ट [को०]।
सश्वास—वि० [सं०] जीवित। जो श्वासयुक्त हो [को०]।
ससक(पु)—वि० [सं० सशङ्क] शंकित। शंकायुक्त।
ससकना(पु)—क्रि० अ० [सं० सशङ्क+हिं० ना] दे० 'सशकना'। उ०—शिवहिं विलोकि ससकेउ मारु।—मानस, २।८६।
ससकेत—वि० [सं० ससङ्केत] जिसके साथ कोई संकेत या गुप्त समझौता हुआ हो [को०]।
ससग—वि० [सं० ससङ्ग] संबद्ध। संगयुक्त। संलग्न [को०]।
ससंततिक—वि० [सं० ससन्ततिक] संततियुक्त। बाल बच्चेदार [को०]।
ससंदेह[1]—वि० [सं० ससन्देह] संशय युक्त।
ससंदेह[2]—संज्ञा पुं० संदेह नामक अलंकार।
ससंध्य—वि० [सं० ससन्ध्य] संध्या संबंधी [को०]।
ससंपद्—वि० [सं० ससम्पद्] संपद्युक्त। सुखी। समृद्धिशील [को०]।
ससंभ्रम[1]—वि० [सं० ससम्भ्रम] व्याकुल। घबड़ाया हुआ [को०]।
ससंभ्रम[2]—अव्य० १ हड़बड़ी में। शीघ्रतापूर्वक। घबड़ाहट में। २ अभ्यर्थनापूर्वक। सादर [को०]।
ससरंभ—वि० [सं० ससंरम्भ] संरभ युक्त। क्रुद्ध [को०]।
ससंवाद—वि० [सं०] समान राय। एकमत [को०]।
ससंवित्क—वि० [सं०] समझदार। विवेकशील [को०]।
ससंविद्—वि० [सं०] जिसके साथ कोई समझौता हुआ हो [को०]।
ससंशय[1]—वि० [सं०] अनिश्चित। संदेहयुक्त [को०]।
ससंशय[2]—संज्ञा पुं० एक काव्यदोष। संदिग्धता [को०]।
ससंहार—वि० [सं०] संहार या निरोध शक्ति से युक्त [को०]।
सस[1]—संज्ञा पुं० [सं० शशि] चंद्रमा। शशि।
सस[2]—संज्ञा पुं० [सं० शस्य] खेती बारी। उ०—सपने के सौतुख सुख सस सुर सोचत देत बिराई के।—तुलसी (शब्द०)।
सस[3]—संज्ञा पुं० [सं० शश] खरगोश।
ससक[1]—संज्ञा पुं० [सं० शशक] खरहा। खरगोश।
ससक[2]—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सिसक'।
ससकना—क्रि० अ० [हिं० ससदकना] घबड़ाना। झिझकना।
ससत्व—वि० [सं०] १ शक्तियुक्त। साहसपूर्ण। २ सत्वयुक्त। गर्भयुक्त। ३ पशु, पक्षियों, जंतु, जीवों से पूर्ण [को०]।
ससत्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गर्भवती स्त्री। गर्भिणी।
ससदल(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शशधर] चंद्रमा। उ०—मीसुर ससदल भाल।—ढोला०, दू० ४७६।
ससधर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शशधर] चंद्रमा।
ससन—संज्ञा पुं० [सं०] पशु का वध [को०]।
ससना—क्रि० अ० [हिं०] दे० 'ससकना'।
ससरना—क्रि० अ० [सं० सम्+सरण] सरकना। खिसकना। घसकना।
ससहर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शशधर, प्रा० ससहर] चंद्रमा। उ०—सोइ सूर तुम ससहर आनि मिलावा सोइ। तस दुख महँ सुख उपजै रैनि माँह दिन होइ।—जायसी (शब्द०)।
ससहाय—वि० [सं०] सहायकों, साथियों के साथ [को०]।
ससा—संज्ञा पुं० [सं० शशा] १ खरगोश। शशक। २ खीरा।
ससाध्वस—वि० [सं०] चकित। भयभीत। डरा हुआ [को०]।
ससाना—क्रि० अ० [हिं०] दे० 'ससकना'।
ससार्थ—वि० [सं०] सार्थयुक्त। जिसमें वणिक् अपने वनिज के साथ हो (काफिला)।
ससि[1]—संज्ञा पुं० [सं० शशि] शशि। चंद्रमा। उ०—वीण अलापी देखि ससि, रमणी नाद सलीण।—ढोला०, दू० ५७०।
ससि(पु)[2]—संज्ञा पुं० [सं० सस्य] धान्य।—उ०—ससि सपन्न सोह महि कैसी। उपकारी कै संपति जैसी।—मानस, ४।५५।
ससित—वि० [सं०] सिता या शर्करायुक्त [को०]।
ससिद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] बड़ा शाल। सर्ज वृक्ष।
ससिधर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शशधर] शशि। चंद्रमा।
ससिरिपु(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शशिरिपु] दिन। उ०—ससिरिपु बरष सूररिपु जुग बर हररिपु कीन्हो घात।—सूर०, १०।३६७६।
ससिहर(पु)[1]—संज्ञा पुं० [सं० शशधर] चंद्रमा।—उ०—ससिहर मृगरस्थ मोहियउ तिण हसि मेल्ही वीण, ढोला० दू० ५७०।
ससिहर(पु)[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० शशि+धर] शिशिर ऋतु। उ०—कहि नारि पीय विनु कामिनी रिति ससिहर किम जीजइय।—पृ० रा०, ६१।६४।
ससी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शशि] शशि। चंद्रमा।
ससील(पु)—वि० [सं० सशील] शीलयुक्त। सुशील।
ससुर[1]—संज्ञा पुं० [सं० श्वशुर] जिसकी पुत्री या पुत्र से व्याह हुआ हो। पति या पत्नी का पिता। श्वशुर। दे० 'श्वसुर'।
ससुर[2]—वि० [सं० स+सुर] १ देवगणों के साथ। देवताओं से युक्त। २ मदमत्त। मतवाला नशे में चूर। ३ सुरा या मदिरायुक्त [को०]।
ससुरा—संज्ञा पुं० [सं० श्वसुर] १ श्वशुर। ससुर। २ एक प्रकार की गाली। जैसे,—वह ससुरा हमारा क्या कर सकता है। ३ दे० 'ससुराल'। उ०—कित यह रहसि जो आउब करना। ससुरइ अंत जनम दुख भरना।—जायसी (शब्द०)।
ससुरार, ससुरारि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वसुरालय] दे० 'ससुराल'। उ०—ससुरारि पिआरि लगी जब तें। रिपुरूप कुटुंब भए तब तें।—मानस, ७।१०१।
ससुराल—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वशुरालय] १ श्वसुर का घर। पति या पत्नी के पिता का घर। २ जेलखाना। बंदीगृह। (बदमाश)।
ससेन, ससैन—वि० [सं०] सेना से युक्त। सेना या वाहनों के साथ।
सस्तर[1]—वि० [सं०] आस्तरण या पत्ते आदि के बने हुए बिछौने से युक्त [को०]।
सस्तर(पु)[2]—संज्ञा पुं० [सं० शस्त्र] दे० 'शस्त्र'।
सस्ता—वि० [सं० स्वस्थ] [वि० स्त्री० सस्ती] १ जो महँगा न हो। जिसका मूल्य साधारण से कुछ कम हो। थोड़े मूल्य का। जैसे,—

उन्हें यह मकान बहुत सस्ता मिल गया । २ जिसका भाव बहुत उत्तर गया हो । जैसे,—आजकल सोना सस्ता हो गया है ।

यौ०—सस्ता समय = ऐसा समय जब कि सब चीजे सस्ती हो । सस्ता माल = घटिया दर्जे का माल ।

मुहा०—सस्ता लगना = कम दाम पर बेचना । दाम या भाव कम कर देना । सस्ते छूटना = जिस काम में अधिक व्यय, परिश्रम या कष्ट आदि होने को हो, वह काम थोडे व्यय, परिश्रम या कष्ट मे हो जाना ।

३ जो सहज मे प्राप्त हो सके । जिसका विशेष आदर न हो । ४ घटिया । साधारण । मामूली । (क्व०) ।

सस्ताना¹—क्रि० अ० [हिं० सस्ता + ना (प्रत्य०)] किसी वस्तु का कम दाम पर बिकना । सस्ता हो जाना ।

सस्ताना²—क्रि० स० किसी चीज का भाव सस्ता करना । सस्ते दामो पर बेचना ।

सस्ती—सज्ञा स्त्री० [हिं० सस्ता + ई (प्रत्य०)] १ सस्ता होने का भाव । सस्तापन । अल्पमूल्यता । महँगी का अभाव । २ वह समय जब कि सब चीजे सस्ते दाम पर मिला करती हो । जैसे,—सस्ती मे यही कपडा तीन आने गज मिला करता था ।

सस्त्रीक—वि० [स०] जिसके साथ स्त्री हो । स्त्री या पत्नी के सहित । जैसे,—वे सस्त्रीक यहाँ आनेवाले है ।

सस्नेह—वि० [स०] १ स्नेहयुक्त । प्रेमपूवक । प्रेमपूर्ण । २ स्नेह या तैलयुक्त (को०) ।

सस्पृह—वि० [स०] स्पृहायुक्त । इच्छायुक्त [को०] ।

सस्पेंड—वि० [अ०] जो किसी काम से, किसी अभियोग के सबध मे, जाँच पूरी न होने तक, अलग कर दिया गया हो । जो किसी काम से, किसी अपराध पर, कुछ समय के लिये छुडा दिया गया हो । मुअत्तल । जैसे,—उसपर घूस लेने का अभियोग है, इसलिये वह सस्पेंड कर दिया गया है ।

क्रि० प्र०—करना ।

सस्फुर—वि० [स०] १ स्पदनशील । २ जीवित [को०] ।

सस्मय—वि० [स०] १ आश्चर्ययुक्त । चकित । २ हँसता हुआ । सस्मित । ३ घमडी । अभिमानी [को०] ।

सस्मित—वि० [स०] हँसता हुआ । मुसकान युक्त [को०] ।

सस्य—सज्ञा पु० [स०] १ धान्य । २ शास्त्र । ३ उत्तम गुण । ४ वृक्षो का फल । ५ दे० 'शस्य' । ६ एक कीमती पत्थर (को०) ।

विशेष—सस्य' के यौगिक आदि शब्दो के लिये दे० 'शस्य' के यौगिक शब्द ।

सस्यक¹—सज्ञा पुं० [स०] १ बृहत्सहिता के अनुसार एक प्रकार की मणि । २ तलवार । ३ शालि । ४ साधु । ५ नारियल की गिरी (को०) । ६ शस्त्र (को०) ।

सस्यक²—वि० १ सत्य से युक्त । २ जो योग्यता, सद्विचार, अच्छाई आदि सद्गुणो से युक्त हो [को०] ।

सस्यप्रद—वि [स०] उपजवाला । जो उपजाऊ हो [को०] ।

सस्यमजरी—सज्ञा स्त्री० [स० सस्यमञ्जरी] दे० 'शस्यमजरी' ।

सस्यमारी¹—सज्ञा पु० [स० सस्यमारिन्] मूसा । चूहा ।

सस्यमारी²—वि० शस्य या अनाज का नाश करनेवाला ।

सस्यमाली—सज्ञा स्त्री० [स०] धान्य से पूर्ण धरती [को०] ।

सस्यशीर्षक—सज्ञा पु० [स०] अनाज की बाल । शस्यमजरी ।

शस्यशूक—सज्ञा पुं० [स०] यव, धान आदि की बालो का नुकीला अगला भाग या टूँड [को०] ।

सस्यसवत्सर—सज्ञा पु० [स०] शाल । साखू ।

सस्यसवर—सज्ञा पु० [स० सस्यसम्वर] १ सलई । शल्लकी । २ शाल का वृक्ष ।

सस्यसवरण—सज्ञा पु० [स० सस्यसम्वरण] शाल या अश्वकर्ण वृक्ष । साखू ।

सस्यहता, सस्यहा—वि०, सज्ञा पु० [स० सस्यहन्तृ, सस्यहन्] दे० 'शस्यहता' ।

सस्या—सज्ञा स्त्री० [स०] अरनी । गणिकारिका । गनियल ।

सस्याद—वि० [स०] अनाज या खेत चर जानेवाला । शस्यभक्षक [को०] ।

सस्येष्टि—सज्ञा स्त्री० [स०] फसल के पकने पर किया जानेवाला एक प्रकार का यज्ञ [को०] ।

सस्वेद—वि० [स०] पसीने से युक्त । पसीने से लथपथ [को०] ।

सस्वेदा—सज्ञा स्त्री० [स०] वह कुमारी कन्या जिसका कौमार्य मद्य भग हुआ हो [को०] ।

सहडुक—सज्ञा पु० [स० सहड्डुक] एक प्रकार का मास का रसा या शोरवा ।

विशेष—बकरे आदि पशुओ के मासभरे अगो के टुकडो को धोकर घी मे हीग आदि का तडका देकर धीमी आँच मे भून ले । अनतर उसे छानकर पानी, नमक, मसाला आदि डाले और पक जाने पर उतार ले । भावप्रकाश मे यह शोरवा शुक्रवधक, बलकारक, रुचिकर, अग्निदीपक, त्रिदोष शाति के लिये श्रेष्ठ और धातुपोषक बताया गया है ।

सहँगा—वि० [देश०] जो महँगा न हो । सस्ता । महँगा शब्द के साथ यौगिक रूप मे प्रयुक्त । जैसे—महँगासहँगा । उ०—मनि मनिक मँहगे किए सँहगे तृन, जल, नाज । तुलसी ऐसो जानिए राम गरीबनेवाज ।—तुलसी ग्र०, पृ० १५२ ।

सह¹—अव्य० [स०] १ सहित । समेत । २ एक साथ । युगपत् ।

सह²—वि० [स०] १ विद्यमान । उपस्थित । मौजूद । २ सहिष्णु । सहनशील । ३ समर्थ । योग्य । सशक्त । ४ पराभूत या वशीभूत करनेवाला (को०) ।

सह³—सज्ञा पु० [स०] १ सादृश्य । समानता । बराबरी । २ सामर्थ । बल । शक्ति । ३ अगहन का महीना । ४ महादेव का एक नाम । ५ रेह का नोन । पाशु लवण । ६ अग्नि (को०) । ७ कृष्ण के एक पुत्र का नाम जिसकी माता का नाम माद्री था (को०) । ८ मनु का एक पुत्र । ९ धृतराष्ट्र का एक पुत्र । १० प्राचीन काल की एक प्रकार की वनस्पति या बूटी जिसका व्यवहार यज्ञो आदि मे होता था ।

सह४—संज्ञा स्त्री० समृद्धि ।

सहक—वि० [सं०] सहनशील । सहिष्णु । क्षमाशील [को०] ।

सहकरण—संज्ञा पुं० [सं०] कोई काम साथ साथ करना ।

सहकर्ता—संज्ञा पुं० [सं० सहकर्तृ] जो काम करने मे मददगार या सहायक हो [को०] ।

सहकार१—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुगधियुक्त पदार्थ । २ आम का पेड । ३ कलमी आम । ४ आम की मजरी या बौर (को०) । ५ आम्र का रस (को०) । ६ सहायक । मददगार । ७ साथ मिलकर काम करना । सहयोग ।

सहकार२—वि० हकार की ध्वनि से युक्त [को०] ।

सहकारता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सहायता । मदद ।

सहकारभजिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सहकारभञ्जिका] प्राचीन काल की एक प्रकार की क्रीडा या अभिनय ।

सहकारिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सहकारी होने का भाव । सहायक होने का भाव । २. सहायता । मदद ।

सहकारी—संज्ञा पुं० [सं० सहकारिन्] [वि० स्त्री० सहकारिणी] १ साथ काम करनेवाला । साथी । सहयोगी । २ सहयोगात्मक । सहयोगयुक्त । ३ सहायक । मददगार । सहायता करनेवाला ।

सहकृत्—वि० [सं०] दे० 'सहकारी' ।

सहगमन—संज्ञा पुं० [सं०] १ साथ जाने की क्रिया । २ पति के शव के साथ पत्नी के सती होने का व्यापार । सती होने की क्रिया ।

सहगवन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सहगमन, प्रा० सहगवण] दे० 'सहगमन' ।

सहगामिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह स्त्री जो पति के शव के साथ सती हो जाय । पति की मृत्यु पर उनके साथ जल मरनेवाली स्त्री । उ०—मगल सकल सोहाहिं न कैसे । सहगामिनिहि विभूषन जैसे ।—मानस, २।३७ । २ स्त्री । पत्नी । सहचरी । साथिन ।

सहगामी—वि०, संज्ञा पुं० [सं० सहगामिन्] [स्त्री० सहगामिनी] १ साथ चलनेवाला । साथी । २ अनुकरण करनेवाला । अनुयायी ।

सहगौन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सहगमन, प्रा० सहगवन] दे० 'सहगमन' ।

सहचर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सहचरी] १ वह जो साथ चलता हो । साथ चलनेवाला । साथी । हमराही । २ सेवक । दास । भृत्य । नौकर । ३ दोस्त । सखा । मित्र । ४ कटसरैया । ५ पति (को०) । ६ प्रतिबंधक । जामिन (को०) ।

सहचरण—संज्ञा पुं० [सं०] साथ साथ जाना या लगे रहना ।

सहचरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] नीली कटसरैया ।

सहचराद्य तैल—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक मे एक प्रकार का तेल ।

विशेष—यह तैल बनाने के लिये नीले फूलवाली कटसरैया, धमास, कत्था, जामुन की छाल, आम की छाल, मुलेठी, कमलगट्टा सब एक टके भर लेते हैं और उनका चूर्ण बनाकर १६ सेर जल मे डालकर औटाते है । जब चौथाई रह जाता है, तब उसे तेल या बकरी के दूध मे पकाते हैं । कहते है कि इसके सेवन से दाँत मजबूत हो जाते है ।

सहचरित—वि० [सं०] १ साथ जाने या रहनेवाला । २ सगत । अनुरूप । युक्त [को०] ।

सहचरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सहचर का स्त्री० रूप । २ पत्नी । भार्या । जोरू । ३ सखी । सहेली । ४ पीली कटसरैया । पीत झिंटी (को०) ।

सहचार—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो सदा साथ रहता हो । सहचर । सगी । साथी । २ साथ । सग । सोहबत । ३ समन्वय । सामजस्य । सगति (को०) । ४ न्याय मे हेतु के साथ साध्य का अनिवार्य होना (को०) ।

सहचार उपाधि लक्षणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की लक्षणा जिसमे जड सहचारी के कहने से चेतन सहचारी का बोध होता है । जैसे,—'गद्दी को नमस्कार करो, यहा गद्दी शब्द से गद्दी पर बैठनेवाले का बोध होता है ।

सहचारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ साथ मे रहनेवाली । सहचरी । सखी । २ पत्नी । स्त्री । जोरू ।

सहचारिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सहचारी होने का भाव ।

सहचारित्व—संज्ञा पुं० [सं०] सहचारी होने का भाव ।

सहचारी—संज्ञा पुं० [सं० सहचारिन्] [स्त्री० सहचारिणी] १ सगी । साथी । दे० 'सहचर' । २ सेवक । नौकर ।

सहज१—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सहजा] १ सहोदर भाई । सगा भाई । एक माँ का जाया भाई । २ निसर्ग । स्वभाव । ३ ज्योतिष मे जन्म लग्न से तृतीय स्थान । भाइयो और बहनो आदि का विचार इसी स्थान को देखकर किया जाता है । ४ जीवन्मुक्त (को०) ।

सहज२—वि० स्वाभाविक । स्वभावोत्पन्न । प्राकृतिक । जैसे,—काटना तो साँपो का सहज स्वभाव है । २ साधारण । ३ जन्मजात । ४ सरल । सुगम । आसान । जैसे,—जब तुमसे इतना सहज काम भी नही हो सकता, तब तुम और क्या करोगे । ५ साथ साथ उत्पन्न होनेवाला ।

सहजअरि प्रकृति—संज्ञा पुं० [सं०] वह राजा जो विजेता का पडोसी और स्वभावत शत्रुता रखनेवाला हो ।

सहजकृति - संज्ञा पुं० [सं०] सोना । स्वर्ण ।

सहजक्लैब्य—संज्ञा पुं० [सं०] नपुसकता रोग का एक भेद । वह नपुसकता जो जन्म से ही हो ।

सहजजन्मा—वि० [सं० सहजजन्मन्] १ यमज । यमल । जुडवाँ । २ सगा । सहोदर [को०] ।

सहजता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सहज होने का भाव । २ सरलता । स्वाभाविकता ।

सहजधार्मिक—वि० [सं०] जो स्वभावत धर्मनिष्ठ हो [को०] ।

सहजन—संज्ञा पुं० [हिं० सहिंजन] दे० 'सहिजन' ।

सहजन्मा—वि० [सं० सहजन्मन्] १ एक गर्भ से एक साथ ही होनेवाली संताने। यमज। युगल। जोडा। २ एक ही गर्भ से उत्पन्न। सहोदर। सगा (भाई आदि)। ३ जन्मना या स्वभावत प्राप्त।

सहजन्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक यक्ष का नाम।

सहजन्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम।

सहजपंथ—संज्ञा पुं० [हिं० सहज+पथ] गौडीय वैष्णव संप्रदाय का निम्न वर्ग।

विशेष—इस संप्रदाय के प्रवर्तकों के मतानुसार भजन साधन के लिये पहले एक नवयौवनसंपन्न सुदर परकीया रमणी की आवश्यकता होती है। बाद रसिक भक्त या गुरु से सम्यक् रूप से उपदेश लेकर उस नायिका के प्रति तन मन अर्पणकर साधन भजन करने से अविलंब व्रजनंदन रसिकशिरोमणि श्रीकृष्ण की प्राप्ति होती है। सहजियों का कहना है कि इस प्रकार की लीला महाप्रभु सर्वसाधारण को न दिखाकर गुप्त रूप से राय रामानद और स्वरूप दामोदर आदि कई मार्मिक भक्तों को बता गए हैं।

सहजमलिन—वि० [सं०] प्रकृत्या मलिन। स्वभावत गंदा।

सहजमित्र—संज्ञा पुं० [सं०] स्वभाविक मित्र।

विशेष—शास्त्रों में भानजा, मौसेरा भाई और फुफेरा भाई सहजमित्र और वैमात्रेय तथा चचेरे भाई सहज शत्रु बताए गए हैं। भानजे आदि से संपत्ति का कोई संबंध नहीं होता, इसी से ये सहज मित्र हैं। परंतु चचेरे भाई संपत्ति के लिये झगडा कर सकते हैं, इससे वे सहज शत्रु कहे गए हैं।

सहजमित्र प्रकृति—संज्ञा पुं० [सं०] वह राजा जो विजेता का पडोसी, कुलीन तथा स्वभाव से ही मित्र हो।

सहजवत्सल—वि० [सं०] स्वभावत कोमल हृदयवाला [को०]।

सहजशत्रु—संज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रों के अनुसार वैमात्रेय या चचेरा भाई जो संपत्ति के लिये झगडा कर सकता है। विशेष दे० 'सहजमित्र'।

सहजसुहृद(पु)—वि० [सं० सहजसुहृद्] सहजमित्र। स्वभाव या प्रकृति से जो मित्र हो। उ०—सहज सुहृद गुरु स्वामि सिख जो न करइ सिर मानि। सो पछिताइ अघाइ उर अवसि होइ हित हानि।—मानस, २।६३।

सहजांधदृक्—वि० [सं० सहजान्धदृश्] जो जन्म से ही अंधा हो।

सहजात—वि० [सं०] १. सहोदर। २ यमज। ३ स्वाभाविक। प्राकृतिक (को०)। ४ एक ही काल में उत्पन्न (को०)।

सहजाधिनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष के अनुसार जन्मकुंडली के तीसरे या सहज स्थान का अधिपति ग्रह।

सहजानि¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी। स्त्री। जोरू।

सहजानि²—वि० स्त्री के साथ। जोरू के साथ। सपत्नीक।

सहजारि—संज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रों के अनुसार वैमात्रेय या चचेरा भाई जो समय पड़ने पर संपत्ति आदि के लिये झगडा कर सकता है। सहज शत्रु।

सहजार्श—संज्ञा पुं० [सं०] वह अर्श या बवासीर जिसके मस्से कठोर, पीले रंग के और अंदर की ओर मुँहवाले हों।

सहजिया—संज्ञा पुं० [हिं० सहज (=पथ+इया (प्रत्य०)] वह जो सहजपंथ का अनुयायी हो। सहजपंथ का माननेवाला। विशेष दे० 'सहजपंथ'।

सहजीवी—वि० [सं० सहजीविन्] एक साथ जीवन धारण करनेवाले। साथ रहनेवाले।

सहजेंद्र—संज्ञा पुं० [सं० सहजेन्द्र] फलित ज्योतिष के अनुसार जन्मकुंडली के तीसरे या सहज स्थान के अधिपति ग्रह।

सहजेतर—वि० [सं०] सहज अर्थात् प्राकृतिक या जन्मजात से इतर अथवा भिन्न [को०]।

सहजै(पु)—अव्य० [हिं० सहज+ही] स्वभावत। सरलतापूर्वक। आसानी से।

सहजोदासीन—वि० [सं०] जो प्रकृत्या या स्वभाविक रूप मित्र या शत्रु न हो [को०]।

सहत¹—संज्ञा पुं० [फा० शहद] दे० 'शहद'।

सहत†²—वि० [हिं० सस्ता] दे० 'सस्ता'।

सहतमहत—संज्ञा पुं० [सं० श्रावस्ती] दे० 'श्रावस्ति'।

सहतरा—संज्ञा पुं० [फा० शाहतरह्] पित्त पापडा। पर्पटक।

सहता¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सहत्व' [को०]।

सहता।²—वि० [हिं० सस्ता] कम दाम का। सस्ता।

सहताना(पु)¹—क्रि० अ० [हिं० सुसताना] श्रम मिटाना। थकावट दूर करना। विश्राम करना। आराम करना। सुस्ताना। उ०—सहतात कहाँ नर व जग में जिन मीत के कारज सीस धरे।—लक्ष्मण सिंह (शब्द०)।

सहताना।²—क्रि० अ० [हिं० सस्ता+ना (प्रत्य०)] सस्ता होना। अपेक्षाकृत कम मूल्य का होना।

सहती†- संज्ञा स्त्री० [हिं० सस्ती] सस्तापन। दे० 'सस्ती'।

सहतूत—संज्ञा पुं० [फा० शाहतूत, शहतूत] एक फल। दे० 'शहतूत'।

सहत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ 'सह' का भाव। २ एक होने का भाव। एकता। ३ मेलजोल।

सहदंड—वि० [सं० सहदण्ड] दंड के साथ। सेना से युक्त।

सहदइया—संज्ञा स्त्री० [हिं० सहदेई] दे० 'सहदेई'।

सहदान—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहुत से देवताओं के उद्देश्य से एक साथ ही या एक में किया जानेवाला दान। २ तर्पण। जलदान।

सहदानी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० संज्ञान] निशानी। पहचान। चिह्न। उ०—सारँगपाणि मूँदि मृगनैनी मणि मुख माँह समानो। चरण चापि महि प्रगट करी पिय शेष शशि सहदानी।—सूर (शब्द०)।

सहदार—वि० [सं०] १ सपत्नीक। स्त्री के साथ। २ जिसका विवाह हो चुका हो। विवाहित [को०]।

सहदीक्षित—वि० [सं०] जिन्होंने एक साथ दीक्षा प्राप्त की हो।

सहदीक्षिती—वि० [सं० सहदीक्षिनिन्] एक साथ दीक्षा लेनेवाले (को०)।

सहदूल(पु)—संज्ञा पु० [सं० शार्दूल] सिंह। शार्दूल।

सहदेई—संज्ञा स्त्री० [सं० सहदेवी] क्षुप जाति की एक वनौपधि जो पहाड़ी भूमि में अधिक उपजती है।

विशेष—यह तीन चार फुट ऊँची होती है। इसके पत्ते बथुए के पत्तों के समान होते हैं। वर्षा ऋतु में यह उगती है। बढ़ने के साथ साथ इसके पत्ते छोटे होते जाते हैं। पत्तों की जड़ में फूलों की कलियाँ निकलती हैं। ये फूल बरियारे के फूलों की भाँति पीले रंग के होते हैं। इसके पौधे चार प्रकार के पाए जाते हैं।

सहदेव—संज्ञा पुं० [सं०] १ राजा पांडु के पाँच पुत्रों में से सबसे छोटे पुत्र।

विशेष—कहते हैं कि माद्री के गर्भ और अश्विनी कुमारों के औरस से इनका जन्म हुआ था, और ये पुरुषोचित सौंदर्य के आदर्श माने जाते थे। द्रौपदी के गर्भ से इन्हें श्रुतसेन नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था। ये बड़े विद्वान् थे। विशेष दे० 'पांडु'।

२ जरासंध का पुत्र। महाभारत युद्ध में इसने पांडवों के विपक्षियों का साथ दिया था। यह अभिमन्यु के हाथ से मारा गया था। ३ हरिवंश के अनुसार हर्यश्व के एक पुत्र का नाम।

सहदेवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सहदेई। पीतपुष्पी। विशेष दे० 'सहदेई'। २ बरियारा। बला। ३ दंडोत्पल। ४ अनंतमूल। शारिवा। ५ सरहँटी। सर्पाक्षी। ६ प्रियंगु। ७ नील। ८ मोनवली नामक वनस्पति जो भारतवर्ष में प्रायः सभी प्रांतों में पाई जाती है।

विशेष—यह क्षुप जाति की वनस्पति है। इसकी ऊँचाई दो फुट तक होती है। इसकी डंठी के नीचे के भाग में पत्ते नहीं होते। पत्ते दो से चार इंच तक चौड़े, गोल और सिरे पर कुछ तिकोने होते हैं। इसकी डंडियाँ १–२ इंच लंबी होती हैं। फूल छोटे छोटे होते हैं। यह वनस्पति औषध के काम में आती है।

९ भागवत के अनुसार देवक की कन्या और वसुदेव की पत्नी का नाम।

सहदेवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सहदेई। पीतपुष्पी। विशेष दे० 'सहदेई'। २ सर्पाक्षी। सरहँटी। ३ बरियारा। बला (को०)। ४ अनंतमूल (को०)। ५ महानीली। ६ प्रियंगु। ७ सहदेव की एक पत्नी का नाम (को०)।

सहदेवीगण—संज्ञा पु० [सं०] सहदेई, बला, शतमूली, शतावर, कुमारी, गुडुच, सिंही और व्याघ्री आदि औषधियों का समूह जिनसे देवप्रतिमाओं को स्नान कराया जाता है।

सहधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] समान धर्म, आचार, कर्तव्य आदि।

सहधर्मचर—वि० पुं० [सं०] सहधर्म का पालन करनेवाला (को०)।

सहधर्मचरण—संज्ञा पुं० [सं०] स्वामी या पति के साथ कर्तव्य का पालन करना (को०)।

सहधर्मचरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्री। पत्नी। जोरू।

सहधर्मचरिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्त्री। पत्नी। भार्या। २ सहकर्मिणी।

सहधर्मचारी—संज्ञा पुं० [सं० सहधर्मचारिन्] १ वह जो साथ साथ कर्तव्य, धर्म का पालन करता हो। २ साथिद। पति।

सहधर्मिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी। स्त्री (को०)।

सहधर्मी—वि० [सं० सहधर्मिन्] समान कर्तव्य या धर्मयुक्त (को०)।

सहन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ सहने की क्रिया। बरदाश्त करना। २ क्षमा। शांति। तितिक्षा। ३ दे० 'सहनशील'।

सहन[2]—वि० सहनशील। सहिष्णु। २ शक्तियुक्त। शक्तिशाली। ३ क्षमा करनेवाला। क्षमाशील (को०)।

सहन[3]—संज्ञा पुं० [अ० सह्न] १ मकान के बीच का खुला छोड़ा हुआ भाग। अँगनाई। अजिर। आँगन। चौक। २ मकान के सामने का खुला छोड़ा हुआ समतल भाग। द्वार प्रकोष्ठ। प्रघण। प्रघाण। (अ० पोर्टिको, पोर्च)। उ०—बाहर सहन में दो गाड़ियाँ खड़ी थीं।—कठहार, पृ० ३८२।

यौ०—सहनदार = मकान जिसमें सहन हो।

३ एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा। ४ एक प्रकार का मोटा, गफ, चिकना सूती कपड़ा जो सरहद में अच्छा बनता है। गाढ़ा।

सहनक—संज्ञा पुं० [अ० सह्नक] १ एक प्रकार की छिछली रकाबी जिसका व्यवहार प्रायः मुसलमान लोग करते हैं। छोटा तबक। २ बीबी फातिमा की नियाज या फातिहा (मुसल०)।

सहनची—संज्ञा स्त्री० [अ० सह्नची] सहन की बगल में बनाया हुआ छोटा दालान या कमरा (को०)।

सहनभंडार, सहनभँडार(पु)—संज्ञा पु० [अ० सहन + सं० भाण्डार] १ कोष। खजाना। निधि। २ धनराशि। दौलत। उ०—दानिन दिए बसन मनि भूषण राजा सहनभँडार। मागध सूत भाट नट जाचक जहँ जहँ करहिं कवार।—तुलसी (शब्द०)।

सहनर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] साथ में नाचना। साथ साथ नृत्य करना (को०)।

सहनशील—वि० [सं०] १ जिसका स्वभाव सहन करने का हो। जो सरलता से सह लेता हो। बरदाश्त करनेवाला। सहिष्णु। २ संतोषी। धैर्य धारण करनेवाला। सब्र करनेवाला।

सहनशीलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सहनशील होने का भाव। २ धीरता। संतोष। सब्र।

सहना—क्रि० स० [सं० सहन] १ बरदाश्त करना। झेलना। भोगना। जैसे,—(क) अपने पाप के कारण ही तुम इतना दुःख सहते हो। (ख) अब तो यह कष्ट नहीं सहा जाता। (ग) तुम क्यों उसके लिये बदनामी सहते हो। २ परिणाम भोगना। अपने ऊपर लेना। फल भोगना। जैसे,—इस काम में जो घाटा होगा,

वह सब तुम्हें सहना पड़ेगा। ३ बोझ बरदाश्त करना। भार वहन करना। जैसे,—भला यह लकड़ी इतना बोझ कहाँ से सहेगी।

सयो० क्रि०—जाना।—लेना।

सहनाई—संज्ञा स्त्री० [फा० शहनाई] दे० 'शहनाई'। उ०—सुर नर नारि सुमगल गाई। सरस राग बाजहिं सहनाई।—मानस, १।३०२।

सहनायन(पु)†—संज्ञा स्त्री० [फा० शहनाई + हिं० आयन (प्रत्य०)] शहनाई बजानेवाली स्त्री। उ०—नटनी डोमिन ढारिन, सहनायन परकार। निरतत नाद विनोद सो, विहसत खेलत वार।—जायसी (शब्द०)।

सहनिर्वाप—संज्ञा पुं० [सं०] वह दान तर्पण आदि जो साथ साथ किया जाय (को०)।

सहनिवास—संज्ञा पुं० [सं०] साथ निवास करना। एक साथ रहना।

सहनीय—वि० [सं०] सहन करने के योग्य। जो असह्य न हो। जो सहा जा सके। सह्य।

सहनृत्य—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सहनर्तन'।

सहपथा—संज्ञा पुं० [सं० सहपन्था] वह जो साथ साथ यात्रा करे। सहयात्री (को०)।

सहपति—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा का एक नाम।

सहपत्नीक—वि० [सं०] सपत्नीक। सस्त्रीक।

सहपथी—संज्ञा पुं० [सं० सहपथिन्] यात्रा में साथ देनेवाला व्यक्ति। हमराही। सहयात्री (को०)।

सहपांशुकिल—संज्ञा पुं० [सं०] लँगोटिया मित्र। बचपन का साथी (को०)।

सहपांशुक्रीडी—संज्ञा पुं० [सं० सहपांशुक्रीडिन्] साथ साथ धूलमिट्टी में खेलनेवाला बचपन का साथी (को०)।

सहपाठी—संज्ञा पुं० [सं० सहपाठिन्] वह जो साथ में पढ़ा हो। वह जिसने साथ में विद्या का अध्ययन किया हो। सहाध्यायी।

सहपान, सहपानक—संज्ञा पुं० [सं०] साथ साथ आसव आदि पीने की क्रिया।

सहपिंड—संज्ञा पुं० [सं० सहपिण्ड] सपिंड नाम की क्रिया। विशेष दे० 'सपिंडी'।

सहपिंडक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं० सहपिण्डक्रिया] साथ साथ पिंडदान (को०)।

सहप्रयायी—संज्ञा पुं० [सं० सहप्रयायिन्] साथ साथ यात्रा करनेवाला। सहयात्री (को०)।

सहप्रस्थायी—संज्ञा पुं० [सं० सहप्रस्थायिन्] सहयात्री (को०)।

सहबाला†—संज्ञा पुं० [फा० शहबाला, शाहबाला] दे० 'शहबाला'।

सहभार्य—वि० [सं०] सपत्नीक। सभार्य। सस्त्रीक (को०)।

सहभाव—संज्ञा पुं० [सं०] १ साथीपन। मित्रता। सख्यता। २ सहजीवन या युगपत् स्थिति की भावना। सह अस्तित्व की भावना (को०)।

सहभावी—संज्ञा पुं० [सं० सहभाविन्] १ वह जो सहायता करता हो। सहायक। मददगार। २ सहोदर। ३ वह जो साथ रहता हो। सखा। सहचर।

सहभू—वि० [सं०] एक साथ उत्पन्न। सहज।

सहभूत—वि० [सं०] जो साथ हो। संबद्ध। युक्त (को०)।

सहभोज—संज्ञा पुं० [सं० सहभोजन] विभिन्न वर्ग के लोगों का एक साथ बैठकर भोजन करना। सामूहिक भोज जिसमें विभिन्न जाति और संप्रदाय के लोग एक साथ सम्मिलित हों।

सहभोजन—संज्ञा पुं० [सं०] एक साथ बैठकर भोजन करना। मित्रों के साथ खाना।

सहभोजी—संज्ञा पुं० [सं० सहभोजिन्] वे जो एक साथ बैठकर खाते हों। साथ भोजन करनेवाले।

सहम—संज्ञा पुं० [फा०] १ डर। भय। खौफ।

मुहा०—सहम चढ़ना = डर होना। भय होना।

२ संकोच। लिहाज। मुलाहजा।

यौ०—सहमनाक = खौफनाक। भयानक। डरावना।

सहमत—वि० [सं०] जिसका मत दूसरे के साथ मिलता हो। एक मत का। जैसे,—मैं इस विषय में आपसे सहमत हूँ कि वह बड़ा भारी झूठा है।

सहमना¹—क्रि० अ० [फा० सहम + हिं० ना (प्रत्य०)] भय खाना। भयभीत होना। शंकित होना। डरना। उ०—सहमी सभा सकल जनक भए विकल राम लखि कौशिक असीस आज्ञा दई है।—तुलसी (शब्द०)।

सयो० क्रि०—जाना।—पड़ना।

सहमना²—वि० [सं० सहमनस्] चतुरता या बुद्धिमत्तापूर्ण (को०)।

सहमरण—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्री का पति के साथ मरने का व्यापार। सती होने की क्रिया। दे० 'सहगमन'।

सहमातृक—वि० [सं०] जो माता के साथ हो। माता सहित (को०)।

सहमान—संज्ञा पुं० [सं०] १ ईश्वर का एक नाम। २ वह जो मान या गर्वयुक्त हो। मानी। अभिमानी व्यक्ति।

सहमाना—क्रि० स० [हिं० सहमना का सक०] किसी को सहमने में प्रवृत्त करना या घबड़ाहट में डाल देना। भयभीत करना। डराना।

सयो० क्रि०—देना।

सहमृता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो अपने मृत पति के शव के साथ जल मरे। सहमरण करनेवाली स्त्री। सती।

सहयायी—संज्ञा पुं० [सं० सहयायिन्] दे० 'सहपथा,' सहयात्री (को०)।

सहयोग—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक साथ मिलकर काम करने का भाव। सहयोगी होने का भाव। २ साथ। संग। ३ मदद। सहायता। ४ आधुनिक भारतीय राजनीतिक क्षेत्र में सरकार के साथ मिलकर काम करने, उसकी काउंसिलों आदि में सम्मिलित होने और उसके पद आदि ग्रहण करने का सिद्धांत।

सह्योगवाद—संज्ञा पुं० [सं०] राजनीतिक क्षेत्र में सरकार से सहयोग अर्थात् उसके साथ मिलकर काम करने का सिद्धांत।

सह्योगवादी—संज्ञा पुं० [सं० सहयोग + वादिन्] राजनीतिक क्षेत्र में सरकार से सहयोग करने अर्थात् उसके साथ मिलकर काम करने के सिद्धांत को माननेवाला।

सह्योगी—संज्ञा पुं० [सं०] १ सहायक। मददगार। २ वह जो किसी के साथ मिलकर कोई काम करता हो। सहयोग करनेवाला। साथ काम करनेवाला। ३ हमउमर। समवयस्क। ४ वह जो किसी के साथ एक ही समय में वर्तमान हो। समकालीन। ५. आधुनिक भारतीय राजनीतिक क्षेत्र में सब कामों में सरकार के साथ मिले रहने, उसकी काउंसिलों आदि में सम्मिलित होने और उसके पद तथा उपाधियाँ आदि ग्रहण करनेवाला व्यक्ति।

सहर¹—संज्ञा पुं० [अ०] प्रातःकाल। भोर। सवेरा।

सहर²—संज्ञा पुं० [अ० सेह्र] जादू। टोना।

सहर³—संज्ञा पुं० [फ़ा० शहर, शह्र] दे० 'शहर'।

सहर†—संज्ञा पुं० [हिं० सिहोर] दे० 'सिहोर' (वृक्ष)।

सहर†—क्रि० वि० [हिं० सहारना (= सहना) या सहलाना (= सुसताना)]। धीरे। मंद गति से। रुक रुक कर। जैसे,—तुम तो सब काम सहर सहर कर करते हो।

सहरई†—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शहर, हिं० सहर + ई] नागरिकता। शहरी होने का भाव। शहरीपन।

यौ०—सहरईपन = सहरई। शहरीपन।

सहरक्षा—संज्ञा पुं० [सं० सहरक्षस्] तीन प्रकार की यज्ञाग्नियों में से से एक [को०]।

सहरगही—संज्ञा स्त्री० [अ० सहर + फ़ा० गह] वह भोजन जो किसी दिन निर्जल व्रत करने के पहले बहुत तड़के या कुछ रात रहे ही किया जाता है। सहरी।

विशेष—उक्त प्रकार का भोजन प्रायः मुसलमान लोग रमजान के दिनों में रोजा रखने पर करते हैं। वे प्राय: ३ बजे रात को उठकर कुछ भोजन कर लेते हैं, और तब दिन भर निर्जल और निराहार रहते हैं। हिंदुओं में स्त्रियाँ प्रायः हरतालिका तीज का व्रत रखने से पहले भी इसी प्रकार बहुत तड़के उठकर भोजन कर लिया करती हैं। और उसे 'सरगही' कहती हैं। दे० 'सरगही'।

क्रि० प्र०—खाना।

सहरना—क्रि० अ० [हिं० सिहरना] दे० 'सिहरना'।

सहरगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वन मुग। जंगली मूँग। मुद्गपर्णी।

सहरा—संज्ञा पुं० [अ०] जंगल। वन। अरण्य। २ सियाहगोश नामक जंतु। ३ वटियल मैदान। रेगिस्तान। मरुभूमि।

यौ०—सहरा आजम = अफ्रीका की विशाल मरुभूमि और जंगल। सहरागर्द = वनेचर। काननचारी। सहरागर्दी = वन परिभ्रमण। वनचर होना। वनेचरत्व। सहरानशीं = (१) जंगल का निवासी। जंगली। (२) तपस्वी।

सहराई¹—वि० [अ० सहरा + हिं० आई] जंगली। वन्य। [illegible]।

सहराई²†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सहर (= शहर) + आई] दे० 'सहरई'।

सहराती†—वि० [फ़ा० शहर + हिं० आती (प्रत्य०)] दे० 'शहराती'।

यौ०—सहरातीपन = दे० 'सहरई'।

सहराना¹—क्रि० स० [हिं० सहलाना] धीरे धीरे हाथ फेरना। सहलाना। मलना। उ०—राघ अछानि को गाढ जिआयत वाचिन पै गुरभी गुन चोपै। न्योरनि सो सहरावत साँप अहारनि दै वेइहै प्रतिपोपै।—गुमान (शब्द०)।

सहराना(पु)²—क्रि० अ० [हिं० सिहरना] डर से काँपना। सिहर उठना।

सहरि—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य। २ वृष। साँड।

सहरिया—संज्ञा पुं० [अ० सहरगही] एक प्रकार का गेहूँ।

सहरी¹—संज्ञा स्त्री० [सं० शफरी] शफरी मछली। शफरी। उ०—पात भरी सहरी सकल सुत बारे बारे केवट की जाति कछु वेद न पढ़ाइहौं। सब परिवार मेरो याही लागि राजा जू हौं दीन वित्त हीन कैसे, दूसरी गढ़ाइहौं। तुलसी (शब्द०)।

सहरी²—संज्ञा स्त्री० [अ०] व्रत के दिन बहुत तड़के किया जानेवाला भोजन। सरगही। विशेष दे० 'सहरगही'।

सहरी³—वि० [अ०] प्राभातिक। प्रातःकालीन [को०]।

सहरुण—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा के एक घोड़े का नाम।

सहर्ष—वि० [सं०] हर्षयुक्त। आनंदयुक्त। प्रसन्नतापूर्वक।

सहल—वि० [अ०, मि० सं० सरल] जो कठिन न हो। सरल। सहज। आसान। उ०—टहल सहल जन महल महल जागत चारिउ जुग जाम सों। देखत दोष न खीझत रीझत सुनि सेवक गुनगाम सों।—तुलसी (शब्द०)।

यौ०—सहल उंगार = काहिल। सुस्त। सहल उंगारी = ढिलाई। आलस्य। सुस्ती।

सहलगी‡—संज्ञा पुं० [हिं० साथ + लगना] वह जो साथ हो ले। रास्ते का साथी। हमराही।

सहलाना¹—क्रि० स० [हिं० सहर (= धीरे) या अनु०] १ धीरे धीरे किसी वस्तु पर हाथ फेरना। सहराना। सुहराना। जैसे,—तलवा सहलाना, पैर सहलाना। उ०—लागे पेनी होते ललके सहलाने लगी।—रत्नाकर जी (शब्द०)। २ मलना। ३ गुदगुदाना।

संयो० क्रि०—देना।

सहलाना²—क्रि० अ० सुरसुरी होना। खुजलाना। जैसे—बड़ी देर से पैर का तलुआ सहला रहा है।

सहलोकधातु—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक लोक का नाम। वह लोक जहाँ मनुष्य रहते हैं। पृथिवी।

सहवन—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का तेलहन जिसमे तेल निकाला जाता है।

सहवर्त्ती—वि० [सं० सहवर्त्तिन्] जो साथ हो। साथ लगा हुआ। साथ का।

सहवसति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक साथ रहना [को०]।

सहवसु—संज्ञा पुं० [सं०] एक असुर का नाम जिसका उल्लेख ऋग्वेद मे आता है।

सहवाच्य—वि० [सं०] जो साथ साथ वाच्य हो या कहा गया हो।

सहवाद—संज्ञा पुं० [सं०] आपस मे होनेवाला तर्क वितर्क। वाद-विवाद। बहस।

सहवास—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक साथ रहने का व्यापार। संग। साथ। २ मैथुन। रति। संभोग।

सहवासिक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सहवासी' [को०]।

सहवासी—संज्ञा पुं० [सं० सहवासिन्] १ साथ रहनेवाला। संगी। साथी। मित्र। दोस्त। २ प्रतिवेशी। पडोसी।

सहवीर्य—संज्ञा पुं० [सं०] ताजा नवनीत। सद्य माखन [को०]।

सहव्रत—वि० [सं०] समान व्रत या कर्तव्ययुक्त [को०]।

सहव्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी। भार्या। जोरू।

सहशय—वि० [सं०] साथ मे शयन करनेवाला [को०]।

सहशयान—वि० [सं०] जो साथ मे सोया हुआ हो।

सहशय्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] एकत्र या पास सोने का भाव [को०]।

सहशिष्ट—वि० [सं०] एक साथ सीखा या शिक्षा पाया हुआ [को०]।

सहसजात—वि० [सं० सहसञ्जात] साथ जनमा हुआ [को०]।

सहसभव—वि० [सं० सहसम्भव] जो एक साथ उत्पन्न हुए हों। सहज।

सहसवाद—संज्ञा पुं० [सं०] परस्पर बातचीत। गपशप।

सहसवास—संज्ञा पुं० [सं०] एकत्र रहने का भाव। साथ रहना [को०]।

सहसवेग—वि० [सं०] सवेगो से युक्त। उत्तेजनायुक्त। उत्तेजित।

सहसंसर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] शरीर का संसर्ग। शारीरिक लगाव [को०]।

सहस(पु)—वि० [सं० सहस्र] दे० 'सहस्र'।

सहसकर, सहसकिरन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रकिरण] रवि। सूर्य। मरीचिमाली। उ०—सहसकिरनि रूप मन भूला। जहँ जहँ दृष्टि कमल जनु फूला।—जायसी (शब्द०)।

सहसगो(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रगु] सूर्य। सहस्रांशु।

सहसजीभ—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रजिह्व] शेषनाग।

सहसदल—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रदल] कमल। शतपत्र।

सहसनयन—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रनयन] सहस्र आँखोवाला, इंद्र। उ०—सहसनयन बिनु लोचन जाने।—मानस, २.२१७।

सहसपत्र—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रपत्र] कमल।

सहसफण—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रफण] हजार फणोवाला, शेषनाग।

सहसबदन—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रवदन] हजार मुखोवाला, शेषनाग।

सहसबाहु—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रबाहु] दे० 'सहस्रबाहु'। उ०—सहसबाहु सुरनाथ त्रिसकू। केहि न राजमद दीन्ह कलंकू।—मानस, २।२२८।

सहसमुख—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रमुख] शेषनाग।

सहसवदन—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रवदन] शेषनाग।

सहससीस(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रशीर्ष] शेषनाग। उ०—जो सहससीस अहीस महिधर लखन सचराचर धनी।—मानस, २।१२६।

सहसा—अव्य० [सं०] एक दम से। एकाएक। अचानक। अकस्मात्। जैसे,—सहसा आँधी आई और चारो ओर अंधकार छा गया। २ बलपूर्वक। बलात्। जबरदस्ती (को०)। ३ उतावली के साथ। बिना विचार (को०)। ४ हँसता हुआ। मुस्कराता हुआ (को०)।

सहसाक्षि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सहस्राक्ष] सहस्र आँखोवाला, इंद्र।

सहसाखी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सहस्राक्ष] इंद्र। सहस्राक्ष। उ०—जे पर दोष लखहि सहसाखी। परहित घृत जिनके मन माखी।—मानस, १।४।

सहसादृष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] १ दत्तक पुत्र। गोद लिया हुआ लड़का। २ वह जो एकाएक दिखाई पड़ जाय। अकस्मात् दिखाई पड़नेवाला व्यक्ति।

सहसान¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ मयूर। मोर पक्षी। २ यज्ञ।

सहसान²—वि० सहनशील [को०]।

सहसानन—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रानन] सहस्र मुखोवाला, शेषनाग।

सहसानु¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ मोर पक्षी। २ धर्मानुष्ठान। यज्ञ [को०]।

सहसानु²—वि० जो सहा करे। चुपचाप सहन कर जानेवाला। क्षमावान् [को०]।

सहसिद्ध—वि० [सं०] स्वाभाविक। प्राकृतिक। सहज [को०]।

सहसेवी—वि० [सं० सहसेविन्] किसी के साथ संभोग या मैथुन करनेवाला [को०]।

सहस्त—वि० [सं०] १ हाथवाला। बाहुयुक्त। २. जो अस्त्रशस्त्र चलाने मे कुशल हो [को०]।

सहस्थ, सहस्थित—वि० [सं०] १ साथी। २ साथ रहनेवाला [को०]।

सहस्य—संज्ञा पुं० [सं०] पूस का महीना। पौष मास।

सहस्र¹—संज्ञा पुं० [सं०] दस सौ की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है —१०००।

सहस्र²—वि० जो गिनती मे दस सौ हो। पाँच सौ का दूना।

यौ०—सहस्रगुण = हजार गुना। सहस्रघाती। सहस्रजलधार = एक पर्वत का नाम। सहस्रजिह्व = जिनको हजार जीभ हैं, शेषनाग। सहस्रधामा। सहस्रपरम = हजारो मे एक। सहस्रबुद्धि। सहस्रभानु। सहस्रमरीचि। सहस्ररोम। सहस्रवदन। सहस्रहस्त।

सहस्रक—वि० [सं०] एक हजार तक या एक हजारवाला [को०]।

सहस्रकर—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

सहस्रगाथा—संज्ञा स्त्री० [सं० [illegible]] [illegible]

सहस्रकिरण—संज्ञा पुं० [सं०] [illegible]

सहस्रगु—वि० [सं०] [illegible]

सहस्रगु—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य। [illegible]

सहस्रगु—वि० [सं०] १ [illegible]

सहस्रगुण—वि० [सं०] हजार गुना [illegible]।

सहस्रघाती—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रघातिन्] [illegible]

सहस्रचक्षु—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रचक्षुस्] [illegible]

सहस्रचरण—संज्ञा पुं० [सं०] [illegible] विष्णु।

सहस्रचित्त—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

सहस्रजित्—संज्ञा पुं० [सं०] १ [illegible] पटरानी जाम्बवती के [illegible] पुत्र [illegible] नाम। ६ वह जो हजार [illegible] पुरा हो (को०)।

सहस्रणी—संज्ञा पुं० [सं०] हजार [illegible] सिखाना [illegible]।

सहस्रतय—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सहस्रतयी] हजार गुना।

सहस्रतय—संज्ञा पुं० एक हजार की [illegible]।

सहस्रदंष्ट्र—संज्ञा पुं० [सं०] पाठा। मछली।

सहस्रदंष्ट्री—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रदंष्ट्रिन्] [illegible]

सहस्रदल—संज्ञा पुं० [सं०] १ [illegible] हजार [illegible]

सहस्रदक्षिण—संज्ञा पुं० [सं०] [illegible]

सहस्रदल—संज्ञा पुं० [सं०] पद्म। [illegible]

सहस्रदीधिति—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

सहस्रदृक्—संज्ञा पुं० [सं०] १ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सहस्रधारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [illegible]

सहस्रपदी—वि० [सं०] [illegible]

सहस्रपाद—वि० [सं०] [illegible]

सहस्रनयन—संज्ञा पुं० [सं०] [illegible]

सहस्रनाम—संज्ञा पुं० [सं०] [illegible] विष्णु [illegible]

सहस्रनामा—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रनामन्] [illegible]

सहस्रनेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ [illegible] विष्णु।

सहस्रपति—संज्ञा पुं० [सं०] [illegible]

सहस्रपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ [illegible]

सहस्रपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] [illegible]

सहस्रपाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ [illegible]

सहस्रबाहु—संज्ञा पुं० [सं०] १ [illegible]

विशेष—[illegible]

[illegible]

**सहस्रार**—संज्ञा पुं० [सं०] १ हजार दलोंवाला एक प्रकार का कल्पित कमल। कहते हैं कि यह कमल मनुष्य के मस्तक में उलटा लगा रहता है, और उसी में सृष्टि, स्थिति तथा लयवाला परबिंदु रहता है। २ जैनों के अनुसार बारहवें स्वर्ग का नाम।

**सहस्रारज**—संज्ञा पुं० [सं०] जैनों के एक देवता का नाम।

**सहस्रार्चिस्**—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव का नाम। २ सहस्र किरणवाला, सूर्य।

**सहस्रावर**—संज्ञा पुं० [सं०] १ हजार पण से नीचे का जुरमाना। २ वह अर्थदंड या जुरमाना जो ५०० से एक हजार पण के अंदर हो [को०]।

**सहस्रावर्तक**—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम।

**सहस्रावर्ता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवी की एक मूर्ति का नाम।

**सहस्रास्य**—संज्ञा पुं० [सं०] हजार मुखवाले, विष्णु। २ शेषनाग या अनंत का एक नाम।

**सहस्री**[1]—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रिन्] १ वह वीर या नायक जिसके पास हजार योद्धा, घोड़ा या हाथी आदि हों। २ हजार व्यक्तियों का समूह या दल (को०)।

**सहस्री**[2]—वि० १ हजारवाला। जिसके पास हजार हों। २ जिसने सहस्रावर अर्थदंड अदा किया हो। ३ एक सहस्र तक का। जिसकी सीमा एक सहस्र हो [को०]।

**सहस्रेक्षण**—संज्ञा पुं० [सं०] हजार आँखोंवाला—इंद्र। सहस्राक्ष [को०]।

**सहस्वान्**—वि० [सं० सहस्वत्] शक्तिशील। ताकतवर।

**सहांपति**—संज्ञा पुं० [सं० सहाम्पति] १ ब्रह्मा। पितामह। २ एक नाग का नाम। ३ एक बोधिसत्व (को०)।

**सहा**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ घीकुआर। ग्वारपाठा। २ वनमूँग। ३ दंडोत्पल। ४ सफेद कटसरैया। ५ ककही या कघी नाम का वृक्ष। ६ नर्पिणी। ७ रासना। ८ सत्यानाशी। ९ सेवती। १० हेमंत ऋतु। ११ अगहन मास। १२ मषवन। १३ देवताड वृक्ष। १४ मेहँदी।

**सहा**[2]—संज्ञा [सं० सहस्] १ धरित्री। पृथिवी। २ घृतकुमारी। घीकुआर [को०]।

**सहाइ**Ⓟ[1]—संज्ञा पुं० [सं० सहाय्य] सहायक। मददगार।

**सहाइ**Ⓟ[2]—संज्ञा स्त्री० सहायता। मदद। उ०—(क) दीन्ही है रजाइ राम पाइ सो सहाइ लाल लषन समर्थ बीर हेरि हेरि मारि हैं।—तुलसी ग्रं०, पृ० २३३। (ख) हरि जू ताकी करी सहाइ।—सूर०, ७।२।

**सहाई**Ⓟ[1]—संज्ञा पुं० [सं० सहाय्य] सहायक। मददगार। उ०—अति आरति कहि कथा सुनाई। करहु कृपा करि होहु सहाई।—मानस, १।१३२।

**सहाई**Ⓟ[2]—संज्ञा स्त्री० सहायता। मदद।

**सहाउ**Ⓟ—संज्ञा पुं० [सं० सहाय, प्रा० सहाउ] दे० 'सहाय'

**सहाचर**—संज्ञा पुं० [सं०] १ पीली कटसरैया। पीली किंटी। २ दे० 'सहचर'।

**सहाद्रव**—संज्ञा पुं० [सं०] वनमृग। जंगली मृग।

**सहाध्ययन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ साथ साथ या मिलकर पढ़ना। २ साथ साथ पढ़ने का भाव। सहपाठी होना। ३ समान विषय या अध्ययन [को०]।

**सहाध्यायी**—संज्ञा पुं० [सं० सहाध्यायिन्] १ वह जो साथ पढ़ा हो। सहपाठी। २ वह जो समान या एक ही विषय का अध्ययन करता हो।

**सहाना**[1]—संज्ञा पुं० [सं० शोभन या फा० शाह] एक प्रकार का राग। विशेष दे० 'शहाना'[1]।

**सहाना**Ⓟ[2]—वि० [फा० शहानह्, शहाना] शाही। राजसी।

**सहाना**†[3]—क्रि० स० [सं० सहन, हिं० सहना] बर्दाश्त कराना। सहने के लिये प्रेरित करना।

**सहानी**[1]—वि० [फा० शाहाना] पीलापन लिए हुए लाल रंग का जैसे,—सहानी चूड़ियाँ। दे० 'शहाना' के यौ०।

**सहानी**[2]—संज्ञा पुं० एक प्रकार का रंग जो पीलापन लिए लाल होता है।

**सहानुगमन**†—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्री का अपने पति के शव के साथ जल मरना। सती होना। सहगमन।

**सहानुसरण**—संज्ञा पुं० [सं०] १ साथ साथ अथवा समान रूप से अनुसरण करना। २ सहगमन।

**सहानुभूति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी को दुःखी देखकर स्वयं दुःखी होना। दूसरे के कष्ट से दुःखी होना। हमदर्दी।

क्रि० प्र०—करना।—दिखाना।—रखना।

**सहान्य**—संज्ञा पुं० [सं०] पर्वत [को०]।

**सहापवाद**—वि० [सं०] अपवाद युक्त। असहमति युक्त [को०]।

**सहाब**[1]—संज्ञा पुं० [फा० शहाब] एक प्रकार का गहरा लाल रंग। दे० 'शहाब'।

**सहाब**[2]—संज्ञा पुं० [अ०] मेघ। पर्जन्य [को०]।

**सहाबत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मैत्री। दोस्ती। मित्रता। २ सहायता। मदद [को०]।

**सहाय**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सहायता। मदद। सहारा। २ आश्रय। भरोसा। ३ सहायक। मददगार। ४ मित्रता। मैत्री (को०)। ५ एक प्रकार की वनस्पति या गंधद्रव्य। ६ एक प्रकार का हंस या चक्रवाक पक्षी। ७ शिव का एक नाम (को०)। ८ मित्र। साथी (को०)।

यौ०—सहायकरण = सहायता करना। सहायवान् = संगी। जो मदद करे। सहायकृत्य = सहायता करना।

**सहायक**—वि० [सं०] १ सहायता करनेवाला। मददगार। २ (वह छोटी नदी) जो किसी बड़ी नदी में मिलती हो। जैसे,—यमुना भी गंगा की सहायक नदियों में से एक है। ३ किसी की अधीनता में रहकर काम में उसकी सहायता करनेवाला। जैसे,—सहायक संपादक।

सहायता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी के कार्यसंपादन में शारीरिक या और किसी प्रकार योग देना। ऐसा प्रयत्न करना जिसमें किसी का काम कुछ आगे बढ़े। मदद। सहाय। जैसे,—मकान बनाने में सहायता देना, किताब लिखने में सहायता देना। २ मित्रों का समूह (को०)। ३ वह धन जो किसी कार्य को आगे बढ़ाने के लिये लिये दिया जाय। मदद। जैसे,—उन्हें लड़की के ब्याह में कई जगहों से सौ सौ रुपए की सहायता मिली।

क्रि० प्र०—करना।—पाना।—देना।—मिलना।—होना।

सहायत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ मित्रता। मैत्री। २ मित्र मंडल। मित्रसमूह। ३ सहायता मदद [को०]।

सहायन—संज्ञा पुं० [सं०] १ साथ देना या रहना। २ अनुगमन। साथ जाना [को०]।

सहायवान्—वि० [सं० सहायवत्] १ मित्रवाला। संगी साथी से युक्त। २, सहायताप्राप्त। जिसे मदद मिली हो [को०]।

सहायी[1]—वि० [सं० सहायिन्] [वि० स्त्री० सहायिनी] साथ जाने या अनुगमन करनेवाला।

सहायी[2]—संज्ञा पुं० [सं० सहाय + ई (प्रत्य०)] १ सहायक। मददगार। सहायता करनेवाला। २ सहायता। मदद। सहाय।

सहार[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ आम का पेड़। आम्रवृक्ष। सहकार। २ महाप्रलय।

सहार[2]—संज्ञा पुं० [हिं० सहना] १ बर्दाश्त। सहनशीलता। २ सहन करने की क्रिया।

सहारना†—क्रि० स० [सं० सहन, हिं० सँभाल या सहाय] १ सहन करना। बर्दाश्त करना। सहना। उ०—कठिन बचन सुनि श्रवन जानकी सकी न बचन सहार। तृण अंतर दै दृष्टि तिरीछी दई नैन जलधार।—सूर (शब्द०)। २ अपने ऊपर भार लेना। सँभालना। ३ गवारा करना।

सहारा—संज्ञा पुं० [सं० सहाय] १ मदद। सहायता।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।—लेना।

२ जिसपर बोझ डाला जा सके। आश्रय। आसरा। ३ भरोसा। ४ इतमीनान।

मुहा०—सहारा पाना = मदद पाना। सहारा देना = (१) मदद देना। (२) टेक देना। (३) आसरा देना। (४) रोकना। सहारा ढूंढना = आसरा ताकना। वसीला ढूंढना।

सहारोग्य—वि० [सं०] स्वस्थ। रोगरहित [को०]।

सहार्य[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ सहयोग। २ साधारण या समान विषय। ३ आनुषंगिक विषय [को०]।

सहार्य[2]—वि० १ समान अर्थ युक्त। २ समान उद्देश्य, वस्तु या विषयवाला [को०]।

सहार्द—वि० [सं०] हृदयवाला। स्नेही [को०]।

सहार्घ—वि० [सं०] आधे के साथ। जिसमें आधा और हो [को०]

सहालग—संज्ञा पुं० [सं० साहित्य (=संबंध)] १ वह समय जो हिंदू ज्योतिषियों के कथनानुसार शुभ माना जाता है। २ वे मास या दिन जिनमें विवाह के मुहूर्त हों। ब्याह शादी के दिन।

सहालाप—संज्ञा पुं० [सं०] किसी के साथ बातचीत [को०]।

सहाव—वि० [सं०] १ 'हाव' से युक्त। २ कामासक्त। विलासी [को०]।

सहावल—संज्ञा पुं० [फ़ा० शाकूल] लोहे या पत्थर का वह लटकन जिसे तागे में लटकाकर दीवार की सिधाई नापी जाती है। शाकूल। लटकन। सनसाल। विशेष दे० 'साहुल'।

सहासन—संज्ञा पुं० [सं०] एक ही आसन पर बैठना [को०]।

सहासिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] साथ साथ बैठना। सहगोष्ठी [को०]।

सहिंजन—संज्ञा पुं० [सं० शोभाञ्जन] दे० 'सहिजन'।

सहिजन—संज्ञा पुं० [सं० शोभाञ्जन] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जो भारत के प्रायः सभी प्रांतों में उत्पन्न होता है, पर अवध में अधिक देखा जाता है। शोभांजन। मुनगा।

विशेष—इसकी छाल मोटी होती है पर लकड़ी अधिक कड़ी नहीं होती। पत्ते गुलतुर्रा के पत्तों की तरह होते हैं। शिशिर से वसंत ऋतु के आरंभ तक इसमें फूल रहते हैं। इसके फूल एक इंच के घेरे में गोलाकार सफेद रंग के होते हैं और बहुत से एक साथ गुच्छे में लगते हैं। इसके फल दस इंच से बीस इंच तक की फलियों के आकार के होते हैं जिनकी मोटाई एक अंगुल से अधिक नहीं होती। ये फल तरकारी के काम में आते हैं। इसके बीज सफेद रंग के और तिकोने होते हैं। बीजों से उत्पन्न होने के अतिरिक्त यह डाल लगा देने से भी लग जाता है और शीघ्र फलने लगता है। यह ओषधि के काम में भी लाया जाता है। कहीं कहीं नीले रंग के फूलोंवाला सहिजन भी पाया जाता है।

सहिजानी⑤†—संज्ञा स्त्री० [सं० संज्ञान] निशानी। चिह्न। पहचान।

सहित[1]—अव्य० [सं०] १ साथ। समेत। संग। युक्त। जैसे,—सीता और लक्ष्मण सहित रामजी वन गए थे।

सहित[2]—वि० १ युक्त। साथ। २ बर्दाश्त या सहन किया हुआ। झेला या भोगा हुआ। ३ (ज्योतिष) किसी के साथ लगा हुआ या संयुक्त [को०]।

सहित[3]—संज्ञा पुं० वह धनुष जो ३०० पल का वजन सँभाल सकता हो [को०]।

सहितत्व—संज्ञा पुं० [सं०] सहित का भाव या धर्म।

सहितव्य—वि० [सं०] सहन करने के योग्य। जो सहा जा सके।

सहिता—वि० [सं० सहितृ] सहनेवाला। सहनशील [को०]।

सहित्र—संज्ञा पुं० [सं०] सहन करने की क्षमता। धीरता। धैर्य [को०]।

सहिथा⑤—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति, हिं० सैथी, सेहथी] बरछी। साँग।

सहिदान⑤†—संज्ञा पुं० [सं० संज्ञान] चिह्न। पहचान। निशान।

सहिदानी⑤†—संज्ञा स्त्री० [सं० संज्ञान] चिह्न। पहचान। निशान। उ०—(क) सुनो अनुज इह बन इतनांन मिलो जानकि प्रिया हरी। कुछ इक अंगनि की सहिदानी मेरी दृष्टि परी। कटि

केहरि कोकिल वाणी अरु शशि मुख प्रभा खरी। मृग मूसी नैनन की शोभा जाहि न गुप्त करी।—सूर (शब्द०)। (ख) जारि वारि कै विधूम वारिधि बुताई लूम नाइ माथो पगनि भो ठाढ़ो कर जोरि कै। 'मातु कृपा कीजै सहिदानी दीजै' सुनि सिय दीन्ही है असीस चारु चूडामनि छोरि कै। —तुलसी (शब्द०)।

**सहिवाला**†—संज्ञा पुं० [फा० शहवाला] दे० 'शहवाला'।

**सहिम**—वि० [सं०] बर्फ युक्त। बर्फ के समान ठंढा [को०]।

**सहिर**—संज्ञा पुं० [सं०] पर्वत। पहाड़ [को०]।

**सहिरिया**†—संज्ञा स्त्री० [देश०] बसंत की वह फसल जो बिना सींचे होती है, सींची नहीं जाती।

**सहिष्ठ**—वि० [सं०] बलवान्। ताकतवर।

**सहिष्णु**¹—वि० [सं०] जो कष्ट या पीड़ा आदि सहन कर सके। सहनशील। बरदाश्त करनेवाला।

**सहिष्णु**²—संज्ञा पुं० १ विष्णु। उपेंद्र। २ हरिवंश में उल्लिखित एक ऋषि। ३ पुलह के एक पुत्र का नाम। ४ छठे मन्वंतर के सप्तर्षियों में एक का नाम [को०]।

**सहिष्णुता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सहिष्णु होने का भाव। सहनशीलता। २ क्षमा।

**सहिष्णुत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सहिष्णुता'।

**सही**Ⓤ¹—संज्ञा स्त्री० [सं० सखी, प्रा० सही] सखी। सहेली।

**सही**²—वि० [फा०] सीधा। ऋजु। सरल। जैसे,—सहीकद = सीधा। सीधे आकार का [को०]।

**सही**³—वि० [फा० सहीह] १ सत्य। सच। २ प्रामाणिक। ठीक। यथार्थ। ३ जो गलत न हो। शुद्ध। ठीक। ४ स्वस्थ। तंदुरुस्त। चंगा (को०)। ५ पूर्ण। पूरा। समूचा। साबित (को०)।

मुहा०—सही पड़ना = ठीक उतरना। सच होना। प्रमाणित होना। सही भरना = तसलीम करना। मान लेना। उ०—बानी बिधि गौरि हर सेसहूँ गनेस कही सही भरी लोमस भुसुंडि बहु बारिषो।—तुलसी (शब्द०)।

**सही**⁴—संज्ञा स्त्री० [सं० साक्ष्य या साक्षी, प्रा० सक्खी ?] (स्वीकृति-सूचक) हस्ताक्षर। दस्तखत। उ०—मुदित माथ नावत बनी तुलसी अनाथ की, परी रघुनाथ सही है।—तुलसी ग्रं०, पृ० ५६५।

क्रि० प्र०—करना।—लेना।

**सहीसबूत**—संज्ञा पुं० [फा० सहीसाबित] साक्षी। प्रमाण। सबूत।

**सहीसलामत**—वि० [फा०] १ स्वस्थ। आरोग्य। भला चंगा। तंदुरुस्त। २ जिसमें कोई दोष या न्यूनता न आई हो।

**सहीह**—वि० [फा०] दे० 'सही' [को०]।

**सहीसालिम**—वि० [फा०] १ दे० 'सहीसलामत'। २ जैसे का तैसा। ज्यों का त्यों। जैसा था वैसा ही। उ०—बर्छी टूटी हुई थी लेकिन राइफल सहीसालिम थी।—रजिया०, पृ० ३७८।

**सहुँ**—अव्य० [सं० सम्मुख] १ समुख। सामने। २ ओर। तरफ। उ०—जा सहुँ हेर जाइ सो मारा। गिरिवर टरहिं भौंह जो टारा।—जायसी (शब्द०)।

**सहुरि**¹—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

**सहुरि**²—संज्ञा स्त्री० पृथ्वी। धरित्री।

**सहूर**†—संज्ञा पुं० [अ० शुऊर, शऊर] दे० 'शऊर'।

**सहूलत**—संज्ञा स्त्री० [फा०] दे० 'सहूलियत'।

**सहूलियत**—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ आसानी। सुगमता। जैसे,—अगर आप आ जायँगे, तो मुझे अपने काम में और सहूलियत हो जायगी। २ अदब। कायदा। शऊर। जैसे,—अब तुम बड़े हुए कुछ सहूलियत सीखो।

**सहृदय**¹—वि० [सं०] १ जो दूसरे के दुःख सुख आदि समझने की योग्यता रखता हो। समवेदनायुक्त पुरुष। २ दयालु। दयावान्। ३ रसिक। ४ सज्जन। भला आदमी। ५ सुस्वभाव। अच्छे मिजाजवाला। ६ प्रसन्नचित्त। खुशदिल।

**सहृदय**²—संज्ञा पुं० १ विद्वान् व्यक्ति। २ गुणों की समझ रखने और सराहना करनेवाला व्यक्ति [को०]।

**सहृदयता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सहृदय होने का भाव। २ सौजन्य। ३ रसिकता। ४ दयालुता।

**सहृल्लेख**¹—वि० [सं०] संदेहास्पद। आपत्तिजनक। संदिग्ध [को०]।

**सहृल्लेख**²—संज्ञा पुं० संदिग्ध खाद्य [को०]।

**सहेज**†—संज्ञा पुं० [देश०] वह दही जो दूध को जमाने के लिये उसमें छोड़ा जाता है। जामन।

**सहेजना**—क्रि० स० [अ० सही ?] १ भली भाँति जाँचना। अच्छी तरह से देखना कि ठीक या पूरा है या नहीं। सँभालना। जैसे,—रुपए सहेजना। कपड़े सहेजना।

संयो० क्रि०—देना।—लेना।

२ अच्छी तरह कह सुनकर सिपुर्द करना।

क्रि० प्र०—देना।

**सहेजवाना**†—क्रि० स० [हिं० सहेजना का प्रेर० रूप] सहेजने का काम दूसरे से करवाना।

**सहेट**Ⓤ—संज्ञा पुं० [हिं० सहेत, सहेट] मिलने की जगह। दे० 'सहेत'। उ०—भौन ते निकसि वृषभानु की कुमारी देख्यो ता नर्म सहेट को निकुंज गिरयो तीर को।—मनिराम (शब्द०)।

**सहेटी**Ⓤ—वि० स्त्री० [हिं० सहेट] १ संकेत स्थल की ओर जाती रहने-वाली। घुमक्कड़। घूमनेवाली। उ०—आड न मानति चाह भरी उघरी ही रहै अति लाग लपेटी। ढीठि भई मिलि ईठि सुजान न देहि क्यौं पीठि जु दीठि सहेटी।—घनानंद, पृ० १३। २ संकेतस्थल पर जानेवाली। अभिसार करनेवाली।

**सहेत**Ⓤ†—संज्ञा पुं० [सं० सङ्केत] वह निर्दिष्ट स्थान जहाँ प्रेमी प्रेमिका मिलते हैं। अभिसार का पूर्वनिर्दिष्ट या निश्चित स्थान। मिलने की जगह।

**सहेतु**—वि० [सं०] हेतु युक्त। सहेतुक। कारणयुक्त। हेतु सहित। सकारण [को०]।

**सहेतुक**—वि० [सं०] जिसका कोई हेतु हो। जिसका कुछ उद्देश्य या मतलब हो। जैसे,—यहाँ यह पद सहेतुक आया है, निरर्थक नहीं है।

**सहेरवा**‡—संज्ञा पुं० [देश०] हरसिंगार या पारिजात का वृक्ष।

**सहेल**†—संज्ञा पुं० [देश०] वह सहायता जो असामी या काश्तकार अपने जमींदार को उसके खुदकाश्त खेत को काश्त करने के बदले मे देता है। यह सहायता प्राय बेगारी और बीज आदि के रूप मे होती है।

**सहेल**[2]—वि० [सं०] क्रीडायुक्त। हेलायुक्त। चितारहित। लापरवाह [को०]।

**सहेलरी**(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सहेली] दे० 'सहेली'।

**सहेलवाल**—संज्ञा पुं० [देश०] वैश्यो की एक जाति।

**सहेली**—संज्ञा स्त्री० [सं० सह + हिं० एली (प्रत्य०)] साथ मे रहनेवाली स्त्री। संगिनी। सखी। २ अनुचरी। परिचारिका। दासी।

**सहैया**(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० सहाय] सहायता करनेवाला। सहायक।

**सहैया**[2]—वि० [सं० सहन] सहनेवाला। सहन करनेवाला।

**सहोक्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का काव्यालंकार जिसमे 'सह', 'संग', 'साथ' आदि शब्दो का व्यवहार होता है और अनेक कार्य साथ ही होते हुए दिखाए जाते है। प्राय इन अलंकारो मे क्रिया एक ही होती है। जैसे,—बल प्रताप बीरता बडाई। नाक, पिनाकहि संग सिधाई।—तुलसी (शब्द०)।

**सहोजा**—संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्नि। २ इंद्र।

**सहोटज**—संज्ञा पुं० [सं०] पर्णकुटी। ऋषियो आदि के रहने की पर्णकुटी।

**सहोढ**—संज्ञा पुं० [सं० सहोढ] १ बारह प्रकार के पुत्रो मे से एक प्रकार का पुत्र। गर्भ की अवस्था मे ब्याही हुई कन्या का पुत्र। वह पुत्र जिसकी माता विवाह से पूर्व ही गर्भवती रही हो। २ वह चोर जो चोरी के माल के साथ पकडा गया हो (को०)।

**सहोढज**—संज्ञा पुं० [सं० सहोढज] दे० 'सहोढ'–१।

**सहोणी**(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं०] सखी। सहेली।

**सहोत्थ**—वि० [सं०] जो सहज या स्वाभाविक हो [को०]।

**सहोत्थायी**—वि० [सं० सहोत्थायिन्] साथ साथ उठने या उन्नति करनेवाला [को०]।

**सहोदक**—वि० [सं०] साथ साथ तर्पण करनेवाला। दे० 'समानोदक' [को०]।

**सहोदर**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सहोदरा] एक ही उदर से उत्पन्न संतान। एक माता के पुत्र।

**सहोदर**[2]—वि० १ सगा। अपना। खास (क्व०)। २ जो एक माता उदर से पैदा हो।

**सहोपमा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का अलंकार। उपमा। अलंकार का एक भेद।

**सहोवन**—संज्ञा पुं० [सं०] भयकर क्रूरता या बर्बरता [को०]।

**सहोर**[1]—संज्ञा पुं० [सं० शाखोट] एक प्रकार का वृक्ष। सिहोर। शाखोट।

विशेष—इसका वृक्ष प्राय जंगली प्रदेशो मे होता है और विशेषत शुष्क भूमि मे अधिक उत्पन्न होता है। यह अत्यंत गठीला और झाडदार होता है। प्राय यह सदा हराभरा रहता है पर झड मे भी इसके पत्ते नही गिरते। इसकी छाल मोटी होती है और रग भूरा खाकी होता है। इसकी लकडी सफेद और साधारणत मजबूत होती है। इसके पत्ते हरे छोटे और खुरदुरे होते है। फाल्गुन मास तक इसका वृक्ष फूलता फलता है और वैशाख से आषाढ तक फल पकते हैं। फूल आध इंच लंबे, गोल और सफेद या पीलापन लिए होते है। इसके गोल फल गूदेदार होते है और बीज गोलाकार होते है। इसकी टहनियो को काटकर लोग दातून बनाते है। चिकित्साशास्त्र के अनुसार यह रक्तपित्त, बवासीर, वात, कफ और अतिसार का नाशक है।

पर्या०—शाखोट। भूतावास। पीतफलक। पिशाचद।

**सहोर**[2]—वि० [सं०] अच्छा। उत्कृष्ट। उत्तम [को०]।

**सहोर**[3]—संज्ञा पुं० महात्मा। साधु। संत [को०]।

**सहोवर**‡—संज्ञा पुं० [सं० सहोदर] सगा भाई। एक माता के पुत्र।

**सहोवल**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सहोवल'।

**सह्य**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ दक्षिण देश मे स्थित एक पर्वत। विशेष दे० 'सह्याद्रि'। २ स्वास्थ्य। आरोग्यलाभ (को०)। २ मदद। सहायता (को०)। ३ युक्तता। पर्याप्ति (को०)।

**सह्य**[2]—वि० १ सहने योग्य। सहने लायक। बर्दाश्त करने लायक। जो सहन करने मे समर्थ हो। २ आरोग्य। ३ प्रिय। प्यारा। ४ झेलने, भोगने या वहन करने योग्य (को०)। ५. समर्थ। शक्तिशाली (को०)।

**सह्य**[3]—संज्ञा पुं० साम्य। समानता। बराबरी।

**सह्यकर्म**—संज्ञा पुं० [सं० सह्यकर्मन्] मदद। सहायता। सहारा।

**सह्यवासिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा की एक मूर्ति।

**सह्यात्मजा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सह्य नामक पर्वत से निकलनेवाली नदी। कावेरी [को०]।

**सह्याद्रि**—संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध पर्वत। जो बंबई (महाराष्ट्र) प्रांत मे है।

विशेष—पश्चिमीय घाट का वह भाग जो मलयाचल पर्वत के उत्तर नीलगिरी तक है, सह्याद्रि कहलाता है। पूना से बंबई जानेवाली रेल इसी को पार करती हुई गई है। शिवाजी प्राय अपने शत्रुओ से बचने के लिये इसी पर्वतमाला मे रहा करते थे।

**सह्र**—संज्ञा पुं० [सं०] पहाड। पर्वत [को०]।

सह्व--संज्ञा पुं० [अ०] अनवधानता। प्रमाद।

सह्वन्--अव्य० [अ०] प्रमाद के कारण। गलती से।

साकथिक --वि० [सं० साङ्कथिक] वार्तापटु। वार्तालाप करने में कुशल (को०)।

साकथ्य--संज्ञा पुं० [सं० साङ्कथ्य] बातचीत। वार्तालाप (को०)।

साकरिक--वि० [सं० साङ्करिक] वर्णसंकर (को०)।

साकर्य--संज्ञा पुं० [सं० साङ्कर्य] घालमेल। मिश्रण। घपला। मिलावट।

साकल--वि० [सं० साङ्कल] [वि० स्त्री० साङ्कली] योग या मिश्रण द्वारा उत्पन्न या निष्पादित किया हुआ (को०)।

साकल्पिक--वि० [सं० साङ्कल्पिक] १ संकल्पजन्य। संकल्प द्वारा कृत। २ कल्पनाजन्य। कल्पना से उत्पन्न (को०)।

साकाश्य--संज्ञा पुं० [सं० साङ्काश्य] जनक के भाई कुशध्वज की राजधानी का नाम (को०)।

साकाश्या--संज्ञा स्त्री० [सं० साङ्काश्या] दे० 'साकाश्य'।

साकूजित--संज्ञा पुं० [सं० साङ्कूजित] पक्षियों का जोर से चहचहाना।

साकेतिक--वि० [सं० साङ्केतिक] १ संकेत संबंधी। प्रतीकात्मक। उ०--रहस्यवादियों की सार्वभौम प्रवृत्ति के अनुसार ये सिद्ध लोग अपनी बानियों के सांकेतिकता दूसरे अर्थ भी करते थे। --इतिहास, पृ० १२। २ परंपरित। परंपराप्राप्त। प्रचलित।

यौ०--सांकेतिक हडताल = अपनी माँग के समर्थन में आगे की जानेवाली काररवाई की अग्रिम सूचना के प्रतीक या संकेत में की जानेवाली हडताल। (अ० टोकेन स्ट्राइक)।

साकेतिकता--संज्ञा स्त्री० [सं० साङ्केतिक + ता (प्रत्य०)] सूक्ष्मता। संकेत या प्रतीक रूप में होने का भाव। उ०--यहाँ एकदम विक्षिप्तता और अत्यंत सांकेतिकता नहीं है।--इति०, पृ० ८६।

साकेत्य--संज्ञा पुं० [सं० साङ्केत्य] १ सहमति। राजीनामा। समझौता। २ प्रिय अथवा प्रिया के साथ मिलन के समय का निश्चय किया जाना (को०)।

साक्रमिक--वि० [सं० साङ्क्रमिक] संक्रमणशील। संक्रामक (को०)।

साक्षेपिक--वि० [सं० साङ्क्षेपिक] संक्षिप्त। संक्षेप या कम किया हुआ (को०)।

साख्य¹--संज्ञा पुं० [सं० साङ्ख्य] १ हिंदुओं के छह् दर्शनों में से एक दर्शन जिसके कर्ता महर्षि कपिल हैं।

विशेष--इस दर्शन में सृष्टि की उत्पत्ति का क्रम दिया गया है। इसमें प्रकृति को ही जगत् का मूल माना है और कहा गया है कि सत्व, रज और तम इन तीनों के योग से सृष्टि का और उसके सब पदार्थों आदि का विकास हुआ है। इसमें ईश्वर की सत्ता नहीं मानी गई है, और आत्मा को ही पुरुष कहा गया है। इसके अनुसार आत्मा अकर्ता, साक्षी और प्रकृति से भिन्न है। आत्मा या पुरुष अनुभवात्मक कहा गया है, क्योंकि इसमें प्रकृति भी नहीं है और विकृति भी नहीं है। इसमें सृष्टि के चार मुख्य विधान माने गए हैं--प्रकृति, विकृति, विकृति-प्रकृति और अनुभव। इसमें आकाश आदि पाँचों भूत और ग्यारह इंद्रियाँ प्रकृति हैं। विकृति या विकार सोलह प्रकार के माने गए हैं। इसमें सृष्टि को प्रकृति का परिणाम कहा गया है, इसलिये इसका मत परिणामवाद भी कहलाता है। विशेष दे० 'दर्शन'। २ शिव। ३ वह जो सांख्यमत का अनुयायी हो (को०)।



साख्य²--वि० संख्या संबंधी। २ आकलनकर्ता। गणक। ३ विवेचक। ४ विचारक। तार्किक।

साख्यकारिका--संज्ञा स्त्री० [सं० साङ्ख्यकारिका] सांख्यदर्शन की पद्यबद्ध टीका जिसकी रचना ईश्वरकृष्ण ने ईसा की तीसरी सदी में की थी। उ०--सांख्यदर्शन के प्रवर्तक कपिल ई० पू० ७-६वीं सदी में हुए होंगे पर इसका पहला ग्रंथ ईश्वरकृष्णकृत सांख्यकारिका तीसरी ईस्वी सदी की रचना है।--हिंदु० सभ्यता, पृ० १९४।

साख्यजोग(पु)--संज्ञा पुं० [सं० साङ्ख्य + योग, हिं० जोग] दे० 'सांख्य'। उ०--सांख्य जोग यह धर्म है, कर्म बीज को जार।--केशव० अमी०, पृ० १।

साख्यप्रसाद--संज्ञा पुं० [सं० साङ्ख्यप्रसाद] शिव (को०)।

साख्यमुख्य--संज्ञा पुं० [सं० साङ्ख्यमुख्य] शिव (को०)।

साख्यवादी--संज्ञा पुं० [सं० साङ्ख्यवादिन्] सांख्यदर्शन का अनुयायी। उ०--सांख्यवादियों ने जिसको प्रकृति कहा है करीब करीब उसको वेदांतियों ने माया कहा है।--हिंदी काव्य०, पृ० ८।

साख्यायन--संज्ञा पुं० [सं० साङ्ख्यायन] एक प्राचीन आचार्य।

विशेष--इन्होंने ऋग्वेद के सांख्यायन ब्राह्मण की रचना की थी। इनके कुछ श्रौत सूत्र भी हैं। सांख्यायन कामसूत्र भी इन्हीं का बनाया हुआ है।

साग¹--वि० [सं० साङ्ग] १ सब अंगों सहित। संपूर्ण। २ अवयव या अंगवाला। अंगयुक्त (को०)। ३ छह् अंगों या उपांगों से युक्त (को०)।

यौ०--सांगोपांग।

साग(पु)†²--संज्ञा पुं० [हिं० स्वाँग] दे० 'स्वाँग'। उ०--खिलवत हास खुसामदी, सुरका दुरका सांग।--बाँकी ग्र०, भा० २, पृ० ७७।

सागग्लानि--वि० [सं० साङ्गग्लानि] थकित। क्लांत (को०)।

सागज--वि० [सं० साङ्गज] रोमराजियुक्त। केशयुक्त। बालों से ढका हुआ (को०)।

सागतिक¹--वि० [सं०] संगति, समाज या संघ से संबद्ध (को०)।

सागतिक²--संज्ञा पुं० [सं०] १ अतिथि। अभ्यागत। नवागंतुक। २ वह व्यक्ति जो व्यापार, (आदान प्रदान, भुगतान आदि) के सिलसिले में आया हो (को०)।

सागत्य--संज्ञा पुं० [सं० साङ्गत्य] संगति। समागम। संगम (को०)।

सागम--संज्ञा पुं० [सं० साङ्गम] संगम। मिलन। संपर्क (को०)।

सांग(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्कु, हिं० साँगी] दे० 'साँगी'। उ०—शब्द की सागि समसेर तुम पकरि ले, सुरति नेजा निर्वान कीना।—संत० दरिया पृ० ७०।

सांगीत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० साङ्गीत] दे० 'संगीत'। उ० जोतिक आगम जानि, सामुद्रिक सांगीत सब।—हिं० क० का०, पृ० १८८।

सांगुंठा—संज्ञा स्त्री० [सं० साङ्गुष्ठा] १ गुंजा। २ करजनी।

सांगोपांग—अव्य० [सं० साङ्गोपाङ्ग] अंगों और उपांगों सहित। संपूर्ण। समस्त। पूर्ण। जैसे—(क) विवाह के कृत्य सांगोपांग होने चाहिए। (ख) यज्ञ सांगोपांग पूरा हो गया।

सांगोपांगता—संज्ञा स्त्री० [सं० साङ्गोपाङ्ग + ता (प्रत्य०)] सब अंगों से युक्त होने का भाव। उ०—समस्या संबंधी विवेचना की पूर्णता व्यवस्था अथवा सांगोपांगता में नहीं है।—इति०, पृ० १२७।

सांग्रहिक—वि० [सं० साङ्ग्रहिक] संग्रहकर्ता। जो संग्रह करने में कुशल हो [को०]।

सांग्राम—संज्ञा पुं० [सं० साङ्ग्राम] दे० 'संग्राम'।

सांग्रामिक¹—वि० [सं० साङ्ग्रामिक] जो संग्राम से संबंधित हो। युद्धविषयक [को०]।

सांग्रामिक²—संज्ञा पुं० १ यौद्धिक उपकरण। युद्ध की सामग्री। २. सेनानायक। सेनापति [को०]।

सांग्रामिक गुण—संज्ञा पुं० [सं० साङ्ग्रामिक गुण] राजा के युद्ध संबंधी (शक्ति, षड्गुण और अस्त्रादि अभ्यास आदि) गुण।

सांग्रामिक परिच्छद—संज्ञा पुं० [सं० साङ्ग्रामिक परिच्छद] युद्धोपकरण। लड़ाई के औजार [को०]।

सांग्राहिक—वि० [सं० साङ्ग्राहिक] मलावरोधक। कोष्ठबद्धकारक। (चरक)।

सांघाटिका—संज्ञा स्त्री० [सं० साङ्घाटिका] १ वह स्त्री जो प्रेमी और प्रेमिका का संयोग कराती हो। कुटनी। दूती। ३ स्त्री प्रसंग। मैथुन। ३ एक प्रकार का वृक्ष।

सांघात—संज्ञा पुं० [सं० साङ्घात] समूह। दल।

सांघातिक¹—वि० [सं० साङ्घातिक] [वि० स्त्री० सांघातिकी] १ अत्यंत विनाशात्मक। मारक। २ दल या समूह से संबंधित [को०]।

सांघातिक²—संज्ञा पुं० ज्योतिष में जन्मनक्षत्र से सोलहवाँ नक्षत्र जो सांघातिक कहा गया है।

सांघिक—वि० [सं० साङ्घिक] संघ से संबद्ध। भिक्षुओं के संघ से संबंधित [को०]।

यौ०—सांघिक संपत्ति = भिक्षुसंघ की संपत्ति।

सांचारिक—वि० [सं० साञ्चारिक] [वि० स्त्री० सांचारिकी] संचरणशील। गमनशील। जंगम [को०]।

सांजन¹—संज्ञा पुं० [सं० साञ्जन] गिरगिट। छिपकली [को०]।

सांजन²—वि० अशुद्ध। कलुषित। पवित्रतारहित [को०]।

सांड—वि० [सं० साण्ड] जो बधिया न किया गया हो। जो अंड सहित हो [को०]।

सांत¹—वि० [सं० शान्त, प्रा० सान्त] दे० 'शांत'।

सांत²—वि० [सं० सान्त] १ जिसका अंत हो। अंतयुक्त। जैसे—संसार का प्रत्येक पदार्थ सांत है। २ सुंदर। प्रसन्न।

सांततिक—वि० [सं० सान्ततिक] संतान देनेवाला। संततिदायक [को०]।

सांतपन संज्ञा पुं० [सं० सान्तपन] एक प्रकार का तप। सांतपन कृच्छ्र।

सांतपनकृच्छ्र—संज्ञा पुं० [सं० सान्तपनकृच्छ्र] एक प्रकार का व्रत जिसमें व्रत करनेवाला प्रथम दिवस भोजन त्यागकर गोमूत्र, गोमय, दूध, दही और घी को कुश के जल में मिलाकर पीता है और दूसरे दिन उपवास करता है।

सांतर—वि० [सं० सान्तर] १ अंतराल या अवकाशयुक्त। २ जो दृढ़ न हो। ३ झीना [को०]।

सांतानिक¹—वि० [सं० सान्तानिक] संतान संबंधी। संतान का। औलाद का। २ फैलनेवाला। बढ़नेवाला। जैसे, वृक्ष (को०)। ३ संतान नामक वृक्ष संबंधी (को०)। ४ प्रजाकाम। पुत्रकाम। संतान का अभिलाषी (को०)। ५ विवाह का इच्छुक (को०)।

सांतानिक²—संज्ञा पुं० संतान की कामना से विवाह करनेवाला ब्राह्मण [को०]।

सांतापिक—वि० [सं० सान्तापिक] संताप देनेवाला। कष्ट देनेवाला।

सांति(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शान्ति, प्रा० सांति] दे० 'शांति'। उ०—बस के सांति होइ जो अबै। देव काज तौ बिगरचौ सबै।—नंद० ग्रं०, पृ० २२२।

सांत्व—संज्ञा पुं० [सं० सान्त्व] दे० 'सांत्वन'।

सांत्वन—संज्ञा पुं० [सं० सान्त्वन] १ किसी दुखी को सहानुभूतिपूर्वक शांति देने की क्रिया। आश्वासन। ढारस। सांत्वना। २ स्नेहपूर्वक कुशल मंगल पूछना और बातचीत करना। ३ प्रणय। प्रेम। ४ संधि। मिलन। दे० 'सांत्वना'।

सांत्वना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुःखी व्यक्ति को उसका हृदय हलका करने के लिये समझाने बुझाने और शांति देने की क्रिया। शांति देने का काम। ढारस। आश्वासन। २ चित्त की शांति। सुख। ३ प्रणय। प्रेम। ४ दे० 'सांत्वन'—४। ५ मृदुता (को०)। ६ अभिवादन या कुशलक्षेम (को०)।

सांत्ववाद—संज्ञा पुं० [सं० सान्त्ववाद] वह वचन जो किसी को सांत्वना देने के लिये कहा जाय। सांत्वना का वचन।

सांत्वित—वि० [सं० सान्त्वित] जिसे सांत्वना दी गई हो। जिसे ढाढस बँधाया गया हो। आश्वस्त किया हुआ [को०]।

सांदीपनि—संज्ञा पुं० [सं० सान्दीपनि] सांदीपन के गोत्र के एक प्रसिद्ध मुनि जो बहुत बड़े धनुर्धर थे और जिन्होंने श्रीकृष्ण और बलराम को धनुर्वेद की शिक्षा दी थी। विष्णुपुराण, हरिवंश, भागवत आदि में इनके संबंध में कई कथाएँ मिलती हैं।

सांदृष्टिक—वि० [सं० सान्दृष्टिक] [वि० स्त्री० सान्दृष्टिकी] १ एक ही दृष्टि में होनेवाला। देखते ही होनेवाला। तात्कालिक। २ स्पष्ट। प्रकट। प्रत्यक्ष।

सांदृष्टिक न्याय--संज्ञा पुं० [सं० सान्दृष्टिक न्याय] एक प्रकार का न्याय जिसका प्रयोग उस समय किया जाता है, जब कोई चीज देखकर उसी तरह की पहले देखी हुई कोई चीज याद आ जाती है।

सांद्र¹--संज्ञा पुं० [सं० सान्द्र] १ वन। जगल। २. ढेर। राशि (को०)।

सांद्र²--वि० १ घना। गहरा। घोर। २ मृदु। कोमल। ३ स्निग्ध। चिकना। ४. सुंदर। खूबसूरत। ५ मोटा। कसा हुआ। गफ (को०)। ६ बलवान्। बलिष्ट। शक्तिमान्। प्रचड (को०)। ७ पर्याप्त। अतिशय। अधिक (को०)। ८ माफिक। रुचिकर। अनुकूल (को०)।

सांद्रकुतूहल--वि० [सं० सान्द्रकुतूहल] अत्यत कौतूहल से युक्त। जो अत्यत उत्सुक हो (को०)।

सांद्रता--संज्ञा स्त्री० [सं० सान्द्रता] सांद्र होने का भाव।

सांद्रत्वक--वि० [सं० सान्द्रत्वक] घनी या मोटी छालवाला (को०)।

सांद्रपुष्प--संज्ञा पुं० [सं० सान्द्रपुष्प] बिभीतक। बहेड़ा।

सांद्रप्रमेह--संज्ञा पुं० [सं० सान्द्रप्रमेह] दे० 'सांद्रप्रमाद'।' उ०--सांद्रप्रमेह से रात्रि मे पात्र मे धरने से जैसा होवे ऐसा मूत्र होय।--माधव०, पृ० १८३।

सांद्रप्रसाद--संज्ञा पुं० [सं० सान्द्रप्रसाद] एक प्रकार का कफज प्रमेह।

विशेष--इस प्रमेहरोग मे कुछ मूत्र तो गाढा और कुछ पतला निकलता है। यदि ऐसे रोगी का मूत्र किसी बरतन मे रख दिया जाय, तो उसका गाढा अश नीचे बैठा जाता है और पतला अश ऊपर रह जाता है।

सांद्रमणि--संज्ञा पुं० [सं० सान्द्रमणि] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सांद्रमूत्र--वि० [सं० सान्द्रमूत्र] जिसका मूत्र सांद्रप्रमाद के रोगी की तरह गाढा या लसदार हो (को०)।

सांद्रमेह--संज्ञा पुं० [सं० सान्द्रमेह] दे० 'सांद्रप्रसाद'।

सांद्रस्निग्ध--वि० [सं० सान्द्रस्निग्ध] गाढा और चिपचिपा या लसदार (को०)।

सांद्रस्पर्श--वि० [सं० सान्द्रस्पर्श] जो छूने मे चिकना या कोमल हो (को०)।

सांद्रोह(पु)--वि० [सं० स्वामिद्रोह] स्वामिद्रोही। स्वामी से शत्रुता करनेवाला। उ०--भग्यौ वै बगाली करनाटवाली। भग्यौ भागि सांद्रोह कूरमवाली।--पृ० रा०, २४।२६०।

सांध¹--वि० [सं० सान्ध] १ सधि सबधी। सधि का। २ जो जोड या सधि पर स्थित हो।

सांध²--संज्ञा पुं० एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सांधिक--संज्ञा पुं० [सं० सान्धिक] १ वह जो मद्य बनाता या बेचता हो। कलाल। शौंडिक। २ वह जो सधि करता हो। सधि करनेवाला।

सांधिविग्रहिक--संज्ञा पुं० [सं० सान्धिविग्रहिक] प्राचीन काल का राज्यो का वह अधिकारी जिसे सधि और विग्रह करने का अधिकार हुआ करता था।

सांध्य--वि० [सं० सान्ध्य] १ सध्या सबधी। सायकालीन। सध्या का। उ०--सांध्य मेघ की अमल अर्गला सी भली। फैल रही थी जहाँ कनक रेखावली।--शकु०, पृ० ८५। २ प्रात काल से सबधित। प्रभात का। प्राभातिक (को०)।

सांध्यकुसुमा--संज्ञा स्त्री० [सं० सान्ध्यकुसुमा] वे वृक्ष, पौधे और बेले आदि जो सध्या के समय फूलती हो।

सांध्यभोजन--संज्ञा पुं० [सं० सान्ध्यभोजन] सायकालीन भोजन। बियारी। ब्यालू (को०)।

सांपत्तिक--वि० [सं० साम्पत्तिक] सपत्ति से सबध रखनेवाला। आर्थिक। माली।

सांपद--वि० [सं० साम्पद] सपत्ति सबधी। सपत्ति का। आर्थिक। माली।

सांपन्निक--वि० [सं० साम्पन्निक] सपन्नतापूर्वक रहनेवाला। विलासपूर्वक रहनेवाला (को०)।

सांपरत(पु)--अव्य० [सं० साम्प्रत] दे० 'सांप्रत'। उ०--साजी मोनै वेदमत सुणं सदा सुरगाह। सती गाठमी सांपरत दसमी श्री दुरगाह।--बांकी० ग्र०, भा०, २, पृ० २५।

सांपराय¹--वि० [सं० साम्पराय] १ आवश्यकता या आपत्ति के कारण जिसकी अपेक्षा हुई हो। २ युद्ध से सबद्ध। सामरिक। ३ परलोक या भविष्य से सबधित (को०)।

सांपराय²--संज्ञा पुं० १ इहलोक से परलोक मे जाने का मार्ग। २ विपत्ति। आपत्ति। ३ जरूरत के समय काम आनेवाला सहायक या मित्र। ४ झगडा। सघर्ष। ५ भविष्य। भविष्य का जीवन। ६ अनिश्चय। ७ भविष्य की जिज्ञासा। ८ अन्वेषण। गवेषणा। जिज्ञासा (को०)।

सांपरायण--संज्ञा पुं० [सं० साम्परायण] मृत्यु जो इस लोक से दूसरे लोक मे ले जाती है (को०)।

सांपरायिक¹--वि० [सं० साम्परायिक] १ परलोक सबधी। पारलौकिक। २ युद्ध मे काम आनेवाला। ३ युद्ध सबधी। युद्ध का। ४ जरूरत के समय काम आनेवाला। ५ व्यसना मे पडा हुआ। विपत्तिग्रस्त (को०)। ६ दाहकर्म सबधी। और्ध्वदेहिक (को०)।

सांपरायिक²--संज्ञा पुं० १ युद्ध। समर। २ लडाई का रथ (को०)।

सांपरायिक कल्प--संज्ञा पुं० [सं० साम्परायिक कल्प] एक प्रकार का सैनिक व्यूह (को०)।

सांपातिक--वि० [सं० साम्पातिक] सपात सबधी। सपात का।

सांपादिक--वि० [सं० साम्पादिक] गुणकारी। लाभदायक (को०)।

सांप्रत¹--अव्य० [सं० साम्प्रत] १ इसी समय। सद्य। अभी। तत्काल। २ अब। अधुना (को०)। ३ ठीक ढग से। उचित रीति से (को०)।

सांप्रत²--वि० १ युक्त। मिला हुआ। २ योग्य। उचित। उपयुक्त (को०)। ३ सगत। प्रासगिक। सामयिक (को०)। ४ प्रत्यक्ष। प्रकट। व्यक्त। उ०--दाता जग माता पिता दाता सांप्रत देव।--बांकी० ग्र०, भा० १, पृ० ४७।

साप्रतकाल—सज्ञा पु० [स० साम्प्रतकाल] वर्तमान समय। वर्तमान काल [को०]।

साप्रतिक—वि० [स० साम्प्रतिक] [वि० स्त्री० साप्रतिकी] १ वर्तमान काल से सबध रखनेवाला। वर्तमानकालिक। इस समय का। आधुनिक। उ०—सपादकीय प्रबध वा प्रेरित पत्र आदि साप्रतिक पत्रो मे प्रकाशित होने की चाल चल रही है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २६४। २ वर्तमानजीवी। आधुनिक काल की सीमा मे रहनेवाला (व्यक्ति)। उ०—पर जब उनके जीवनबोध ने अपनी परमिति को छू लिया तो साप्रतिको को उनका स्थान ग्रहण करते देर न लगी।—वदनवार (भू०), पृ० १७। ३ उचित। योग्य। ठीक। उपयुक्त (को०)।

साप्रदायिक—वि० [स० साम्प्रदायिक] [वि० स्त्री० साप्रदायिकी] १ किसी सप्रदाय से सबध रखनेवाला। सप्रदाय का। २ परपरित। परपरासिद्ध (को०)।

साप्रदायिकता—सज्ञा स्त्री० [स० साम्प्रदायिकता] १ किसी सप्रदाय से सबधित होने का भाव। २ सप्रदाय के प्रति कट्टरता का भाव। दूसरे सप्रदाय के अहित पर अपने सप्रदाय की हितरक्षा।

साप्रियक—वि० [स० साम्प्रियक]। जहाँ परस्पर प्रियजन अथवा परस्पर भाईचारा रखनेवाले लोग रहते हो [को०]।

साबधिक[१]—वि० [स० साम्बन्धिक] १ सबधजन्य। सबध का। २ विवाह सबधी।

सावधिक[२]—सज्ञा पु० १ स्त्री का भाई, साला। ३ सवध। रिश्तेदारी (को०)।

साब—सज्ञा पु० [स० साम्ब] १ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम जो जाबवती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

विशेष—बाल्यावस्था मे इन्होने बलदेव से अस्त्रविद्या सीखी थी। बहुत अधिक बलवान् होने के कारण ये दूसरे बलदेव माने जाते थे। भविष्यपुराण मे लिखा गया है कि ये बहुत सुदर थे और अपनी सुदरता के अभिमान मे किसी को कुछ न समझते थे। एक बार इन्होने दुर्वासा मुनि का कृश शरीर देखकर उनका कुछ परिहास किया, जिससे दुर्वासा ने शाप दिया था कि तुम कोढी हो जाओगे। इसके उपरात एक अवसर पर रुक्मिणी, सत्यभामा और जाबवती को छोडकर श्रीकृष्ण की और सब रानियाँ इनके रूपपर इतनी मुग्ध हो गई कि उनका रेत स्खलित हो गया था। इसपर श्रीकृष्ण ने भी इन्हे शाप दिया था कि तुम कोढी हो जाओ। इसी लिये ये कोढी हो गए थे। अत मे इन्होने नारद के परामर्श से सूर्य की मित्र नामक मूर्ति की उपासना आरभ की जिससे अत मे इनका शरीर नीरोग हो गया। कहते है कि जिस स्थान पर इन्होने 'मित्र' की उपासना की थी, उस स्थान का नाम 'मित्रवण' पडा। इन्होने अपने इस नाम से साबपुर नामक एक नगर भी, चद्रभागा के तट पर बसाया था। महाभारत के युद्ध मे ये जरासध और शाल्व आदि से बहुत वीरतापूर्वक लडे थे।

२. शिव का एक नाम, जो अबा, पार्वती के सहित है (को०)।

साबपुर—सज्ञा पु० [स० साम्बपुर] पजाब के मुलतान नगर का एक प्राचीन नाम।

विशेष—यह नगर चद्रभागा नदी के तट पर है। कहते है कि इसे श्रीकृष्ण के पुत्र साब ने बसाया था।

साबपुराण—सज्ञा पु० [स० साम्बपुराण] एक उपपुराण का नाम।

साबपुरी—सज्ञा स्त्री० [स० साम्बपुरी] दे० 'साबपुर'।

साबर[१]—सज्ञा पु० [स० साम्बर] १ साँभर हरिन। विशेष दे० 'साँभर'। २ साँभर नमक।

साबर[२]—सज्ञा पु० [स० सम्बल] पाथेय। सबल। राहखर्च।

साबरी†[१]—वि० [स० साम्बर+ई] साबर मृग के चर्म या साँभर क्षेत्र का बना हुआ। उ०—पाए पाँणही साबरी, चउखड्या माह दीई मिलांण।—बी० रासो, पृ० ७७।

साबरी[२]—सज्ञा स्त्री० [स० साम्बरी] १ माया। जादूगरी। २ जादूगरनी।

विशेष—कहते हैं कि इस विद्या का आविष्कार श्रीकृष्ण के पुत्र साबर ने किया था, इसी से इसका यह नाम पडा।

साबाधिक—सज्ञा पु० [स० साम्बाधिक] रात्रि का द्वितीय याम या प्रहर [को०]।

साभर—सज्ञा पु० [स० साम्भर] साँभर नमक [को०]।

साभवी—सज्ञा स्त्री० [स० साम्भवी] १ लाल लोध। २ आशका। सभावना (को०)।

साभाष्य—सज्ञा स्त्री० [स० साम्भाष्य] सभाषण। बातचीत।

सामुखी—सज्ञा स्त्री० [स० साम्मुखी] वह तिथि जिसका मान सायकाल तक हो।

सामुख्य—सज्ञा पु० [स० साम्मुख्य] १ प्रत्यक्षता। समक्षता। सामने होने की स्थिति। २ अनुकूलता। कृपाभाव। तरफदारी।

सायमन—वि० [स०] सयमन सबधी। सयमन विषयक।

सायात्रिक—सज्ञा पु० [स०] १ समुद्रीय व्यापार करनेवाला व्यापारी। पोतवणिक्। २ यान। सवारी। ३ उषाकाल [को०]।

सायुग—वि० [स०] सयुग सबधी। युद्ध से सबधित [को०]।

सायुगीन[१]—वि० [स०] १ युद्ध से सबधित। सामरिक। २ रणकुशल। युद्धचतुर [को०]।

सायुगीन[२]—सज्ञा पु० १ युद्ध मे कुशल व्यक्ति। २ श्रेष्ठ योद्धा या वीर। बहादुर। लडाकू।

साराविण—सज्ञा पु० [स०] कई व्यक्तियो का एक साथ चीखना-पुकारना। शोर गुल [को०]।

सावत्सर[१]—वि० [स०] वार्षिक। वर्ष मे होनेवाला। जो सवत्सर से सबधित हो [को०]।

सावत्सर[२]—सज्ञा पु० १ ज्योतिषी। ज्योतिर्विद। २ वह जो ग्रहादि की गति के अनुसार पचाग बनाता हो। ३ चाद्रमास। ३ काला चावल। ४ मृतक का एक वर्ष के उपरात होनेवाला कृत्य। बरसी [को०]।

सावत्सरक[१]—वि० [स०] (ऋण) जो एक वर्ष मे चुकाया जाय [को०]।

सावत्सरक[२]—सज्ञा पु० ज्योतिषी [को०]।

सांवत्सररथ--संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य, जिनका रथ संवत्सर है [को०]।

सांवत्सरिक[१]--वि० [सं०] [वि० स्त्री० सांवत्सरिकी] वार्षिक। संवत्सर से संबधित।

सांवत्सरिक[२]--संज्ञा पुं० १ वार्षिक भूमि कर। सालाना मालगुजारी। २ वर्षभर में चुका दिया जानेवाला ऋण। ३ ज्योतिर्विद। ज्योतिषी [को०]।

सांवत्सरिक श्राद्ध--संज्ञा पुं० [सं०] प्रति वर्ष किया जानेवाला श्राद्ध। वार्षिक श्राद्ध।

सांवत्सरी--संज्ञा स्त्री० [सं०] मृतक का एक साल बाद होनेवाला श्राद्ध। बरसी [को०]।

सांवत्सरीय--वि० [सं०] वर्ष संबधी। वार्षिक। सांवत्सर।

सांवर्तक--संज्ञा पुं० [सं०] प्रलयाग्नि। प्रलय काल की अग्नि। प्रलय मे संबधित या प्रलयकाल मे प्रकट होनेवाली आग [को०]।

सांवादिक[१]--वि० [सं०] १ बोलचाल मे प्रयुक्त। संवाद, वार्तालाप आदि मे प्रचलित। २ विवादास्पद। बहस तलब [को०]।

सांवादिक[२]--संज्ञा पुं० १ विवादग्रस्त विषय। २ तार्किक। तर्कशास्त्री। नैयायिक [को०]।

सांवास्यक--संज्ञा पुं० [सं०] एक साथ रहना। एक जगह रहना [को०]।

सांवित्तिक--वि० [सं०] अधिकरणनिष्ठ। विषयगत। विषयी [को०]।

सांविद्य--संज्ञा पुं० [सं०] रजामंदी। सहमति [को०]।

सांवृत्तिक--वि० [सं०] [वि० स्त्री० सांवृत्तिकी] अलीक। भ्रांतिजनक। ऐंद्रजालिक [को०]।

सांव्यावहारिक[१]--संज्ञा पुं० [सं०] कंपनी के हिस्सेदार होकर काम या व्यापार करनेवाला व्यापारी।

सांव्यावहारिक[२]--वि० आमफहम। प्रचलित। व्यावहारिक [को०]।

सांश--वि० [सं०] जो अंश सहित हो। अंशयुक्त। जिसमे भाग या हिस्सा हो [को०]।

सांशयिक[१]--वि० [सं०] १ संदेहास्पद। संदिग्ध। २ जो निश्चित न हो अनिश्चित। ३ संदेही [को०]।

सांशयिक[२]--संज्ञा पुं० अनिश्चित, संदेहास्पद या खतरे से भरा हुआ काम [को०]।

सांशयिकत्व--संज्ञा पुं० [सं०] संदेह। शंका। अनिश्चय [को०]।

सांसर्गिक--वि० [सं०] संस्पर्श या छूत मे उत्पन्न। संपर्कजन्य। संसर्गजन्य [को०]।

सांसारिक--वि० [सं०] संसार संबंधी। इस संसार का। लौकिक। ऐहिक। जैसे,--अब आप सांसारिक झगडों से अलग होकर भगवद्भजन मे लीन रहते हैं।

सांसिद्धिक--वि० [सं०] १ प्रकृति से संबधित। प्राकृतिक। स्वाभाविक। २ देव संबधी। दैविक। दैवी। ३ यादृच्छिक। ऐच्छिक। स्वतः प्रवर्तित [को०]।

यौ०--सांसिद्धिक प्रवाह = जल का स्वाभाविक या स्वतः प्रवर्तित प्रवाहक्रम अथवा गति।

सांसिद्ध्य--संज्ञा पुं० [सं०] जीवन के परम लक्ष्य का प्राप्त कर लेने की स्थिति। संसिद्धि। परिपूर्णता [को०]।

सांसृष्टिक--वि० [सं०] सीधे संबंध रखनेवाला [को०]।

सांस्कारिक--वि० [सं०] संस्कारसंबंधी। जो अंत्येष्टि अथवा अन्य संस्कारों से संबद्ध हो [को०]।

सांस्कृतिक--वि० [सं०] परंपरा, संस्कार और आचार विचारों मे संबद्ध। संस्कृति संबंधी [को०]।

सांस्थानिक--वि० [सं०] समान देश या स्थान से संबंधित।

सांस्राविण--संज्ञा पुं० [सं०] प्रवाह। बहाव। धारा [को०]।

साहत्य--संज्ञा पुं० [सं०] संपर्क। संबंध। साथ [को०]।

साहननिक--वि० [सं०] [वि० स्त्री० साहननिकी] शरीर से संबधित। शारीरिक [को०]।

साँइयाँ(पु)--संज्ञा पुं० [सं० स्वामी] दे० 'साँई, साईं'। उ०--बाँका परदा खोलि के संमुख ले दीदार। बालसनेही साँइया आदि अंत का यार।--कबीर सा० सं०, पृ० १९।

साँई--संज्ञा पुं० [सं० स्वामी, प्रा० सामि, सामी] १ स्वामी। मालिक। उ०--आप को साफ कर तुही साईं।--केशव० अमी०, पृ० ६। २ ईश्वर। परमात्मा। परमेश्वर। उ०--गुर गौरीस साँई सीतापति हित हनुमानहि जाइ कै। मिलिहौं मोहि कहाँ कौ वे अब अभिमत अवधि अघाइ कै।--तुलसी (शब्द०)। ३ पति। शौहर। भर्ता। उ०--(क) चल्यो धाय कमठी चढाय फुरकाय आख बाई जग साई बात कछु न तनक को।--हृदयराम (शब्द०) (ख) पूस मास सुनि सखिन पै साँई चलत सवार। गहि कर वीन प्रवीन तिय राग्यौ राग मलार।--बिहारी (शब्द०)। ४ मुसलमान फकीरों की एक उपाधि।

साँकड़|--संज्ञा पुं० [सं० शृङ्खल] १ शृंखला। जंजीर। सीकड। २. सिकडी जो दरवाजे मे लगाई जाती है। अगला। ३ चाँदी का बना हुआ एक प्रकार का गहना जो पैर मे पहना जाता है। साँकडा।

साँकडभीड़ो(पु)†--वि० [हिं० सँकरा ?] संकुचित। छोटा। संकीर्ण। उ०--गुडिया ढाहै मदँधगज ताता चाल तुरंग। साकडभीडो सुरग हूँ, जिको कहीजै जंग।--बाँकी ग्रं०, भा० १, पृ० ६।

साँकडा[१]--संज्ञा पुं० [सं० शृङ्खला, प्रा० संकला] एक प्रकार का आभूषण जो पैर मे पहना जाता है। यह मोटी चपटी सिकडी की भाँति होता है। प्राय मारवाडी स्त्रियाँ इसे पहनती हैं।

साँकड़ा(पु)[२]--संज्ञा पुं० [सं० संकीर्ण ?] क्षुद्र स्वभाव या वृत्ति का। संकीर्ण। उ०--सतन साँकडो दुष्ट पीडा करै, बाहुरै बाहली वेगि आवै।--दादू०, पृ० ५४९।

साँकड़ाना†[१]--क्रि० स० [हिं० साँकड] बाँधना। साकल मे बाँधना। उ०--दोनूँ फोज घोडा की वाहे साँकडाया।--शिखर०, पृ० ७४।

साँकड़ाना(पु)[२]--क्रि० स० [हिं० संकीर्ण] सँकरा कर देना। संकीर्ण कर देना। रोकना। उ०--किल्ला की सफीलां मोरिचां नैं साँकडाया।--शिखर०, पृ० ५०।

साँकडि(पु)†—वि॰ [स॰ सङ्कीर्ण] सँकरी। सकीर्ण। उ॰—जमुन क तिरे तिरे माकडि बारी।—विद्यापति, पृ॰ ३०।

साँकत(पु)—वि॰ [स॰ शङ्कित] दे॰ 'शकित'। उ॰—डावा कर ऊपर दुसट, कर जीमणो करन। सो लगाय मुख साँकतो मावडियो कुचरत।—बाँकी॰ ग्र॰, भा॰ २, पृ॰ १६।

साँकना(पु)—क्रि॰ अ॰ [स॰ शङ्कन] शका करना। शकित होना। सदेह मे पडना। उ॰—साँकिया राज राणा सकल, अकल पाण छिलियो असुर।—रा॰ रू॰, पृ॰ १६।

साँकर(पु)¹—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ शृङ्खल] शृखला। जजीर। सीकड। उ॰—(क) काढा आसू वूद, कसि साँकर वरुनी सजल। कीने वदन निमूद, दृग मलिंग डारे रहत।—विहारी र॰, दो॰ २३०।

साँकर²—सज्ञा पु॰ [स॰ सङ्कीर्ण] कष्ट सकट। उ॰—(य) साँकरे की साकरन सनमुख हो न तो र —केशव (शब्द॰)। (ख) मुकती साँठि गाँठि जो करै। साँकर परे सोइ उपकरै।—जायसी (शब्द॰)।

साँकर³—वि॰ १ सकीर्ण। तग। सँकरा। २ दुखमय। कष्टमय। उ॰—सिंहल दीप जो नाहिं निबाहू। यही ठाढ साँकर सब काहू।—जायसी (शब्द॰)।

साँकरा†¹—वि॰ [हिं॰ सँकरी] दे॰ 'सँकरा'।

साँकरा²—सज्ञा पु॰ [हिं॰ साँकडा] दे॰ 'साँकडा'।

साँकरा(पु)³—वि॰ [हिं॰ सँकरा (= सकट)] सकट मे पडा हुआ। सकटग्रस्त। उ —साँकरे को साँकरन सनमुख तोरैं। दशमुख मुख जोवै गजमुख मुख को।—रामच॰, पृ॰ १।

साँकरि(पु)—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ शृङ्खला] दे॰ 'साँकल। उ॰—तव श्रीठाकुर जी भीतर की साँकरि खोलते।—दो सौ बावन॰, भा॰ १, पृ॰ १०१।

साँकरी(पु)—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ सङ्कीर्ण] सकट। उ॰—उडवत धूर धरे काँकरी। सवनि के दृगनि परी साँकरी।—नद॰ ग्र॰, पृ॰ २४२।

साँकल—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ शृङ्खला] १ जजीर। सिक्कड। दे॰ 'साँकर'। २ अर्गला। दरवाजे की सिकडी।

साँकाहुली—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ शङ्खपुष्पी] 'शखाहुली'।

साँखा(पु)—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ शङ्का] दे॰ 'शका'। उ॰—पखी नावँ न देखा पाँखा। राजा होइ फिरा कै साँखा।—जायसी ग्र॰, पृ॰ १६४।

साँग—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ शक्ति या शङ्कु] १ एक प्रकार की वरछी जो भाले के आकार की होती है, पर इसकी लबाई कम होती है और यह फेंककर मारी जाती है। शक्ति। उ॰—कोउ माजत वरछीन साँग उर वेधनवाली।—प्रेमघन॰, भा॰ १, पृ॰ २४। २ एक प्रकार का औजार जो कुँआ खोदते समय पानी फोडने के काम मे आता है। ३ भारी बोझ उठाने का डडा।

साँगरी¹—सज्ञा स्त्री॰ [देश॰] १ एक प्रकार का रग जो कपडे रँगने के काम आता है। यह जगार से निकलता है। २ एक प्रकार का शाक। उ॰—फोग केर काचर फली गेंवर गेंवरपात। वडियाँ मेले वाणियाँ, साँगरियाँ सोगात।—बाँकी॰ ग्र॰, भा॰ २, पृ॰ ६७।

साँगामाची†—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ साग + हिं॰ मचिया] एक प्रकार की छोटी माँची या खाट। उ॰—तव श्रीगुसाईं जी एक साँगामाँची धराइ कै वीच मे विराजे।—दो सौ बावन॰, भा॰ १, पृ॰ ३३६।

साँगि(पु)—सज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ स॰ शङ्कु या शक्ति, हिं॰ साँग, साँगी] दे॰ 'साँग'। उ॰—रणधीर सु कोपि कै साँगि लई।—ह॰ रासो॰, पृ॰ ७६।

साँगी¹—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ शङ्कु या शक्ति] १ वरछी। साँग। उ॰—चले निसाचर आयसु माँगी। गहि कर भिंदिपाल वर साँगी।—मानस, ६।३६। २ वैलगाडी मे गाडीवान के वैठने का स्थान। जुआ।

साँगी²—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ साङ्ग (= उपकरण युक्त), हिं॰ सग या सामग्री] जाली जो एक्के या गाडी के नीचे लगी रहती है और जिसमे मामूली चीजें रखी जाती है।

साँघणा(पु)†—वि॰ [स॰ सघन ?] दे॰ 'सघन'। उ॰—माहिली माँडली छीदा होइ। वारली मण्डली साँघणा।—वी॰ रासो, पृ॰ ५।

साँच(पु)¹—सज्ञा पु॰ [स॰ सत्य, प्रा॰ सत्त, सच्च] [स्त्री॰ साँची] सत्य। यथार्थ। जैसे,—साँच को आँच नहीं। (कहा॰)।

साँच(पु)²—वि॰ सत्य। सच। ठीक। यथार्थ।

साँच(पु)³—सज्ञा पु॰ [स॰ स्याता, हिं॰ साँचा] दे॰ 'साँचा'। उ॰—चाक चढाइ साँच जनु कीन्हा। वाग तुरग जानु गहि लीहा।—जायसी ग्र॰ (गुप्त), पृ १६३।

साँचना(पु)—क्रि॰ स॰ [हिं॰ साँचा] साँचे मे ढालना। सचित करना। सुदर आकार प्रदान करना। उ॰—सव सोभा ससि सानि कै साँची ङछिनि एक।—पृ॰ रा॰, १८।५६।

साँचरी(पु)†—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ सहचरी] सखी। सहेली। उ॰—आवी अवाँसइ साँचरी। हीयडइ हरीप मन रग अपार।—वी॰ रासो, पृ॰ ११४।

साँचला†—वि॰ [हिं॰ साँच + ला (प्रत्य॰)] [वि॰ स्त्री॰ साँचली] जो सच वोलता हो। सच्चा। सत्यवादी।

साँचा—सज्ञा पु॰ [स॰ स्याता] १ वह उपकरण जिसमे कोई तरल पदार्थ ढालकर अथवा गीली चीज रखकर किसी विशिष्ट आकार प्रकार की कोई चीज बनाई जाती है। फरमा। जैसे,—ईंटो का साँचा, टाइप का साँचा। उ॰—जैसे धातु कनक की एका। साँचा माही रूप अनेका।—कबीर सा॰, पृ॰ १०११।

**विशेष**—जब कोई चीज किसी विशिष्ट आकार प्रकार की वनानी होती है, तब पहले एक ऐसा उपकरण बना लेते है जिसके अदर वह आकार बना होता है। तब उसी मे वह चीज डाल या भर दी जाती है, जिससे अभीष्ट पदार्थ बनाना होता है। जब वह चीज जम जाती है, तब उसी उपकरण के भीतरी आकार

की हो जाती है। जैसे,—ईंट बनाने के लिये पहले उनका एक साँचा तैयार किया जाता है, और तब उसी साँचे मे सुरखी, चूना आदि भरकर ईंटे बनाते है।

मुहा०—साँचे मे ढला होना = (१) अग प्रत्यग से बहुत ही सुदर होना। रूप और आकार आदि मे बहुत सुदर होना। उ०—वह सरापा के साँचे मे ढली थी —प्रेमघन, भा० २, पृ० ४५४। (२) सवेदनाहीन। एक रस। एक रूप। उ०—अच्छी कुठारहित इकाई साँचे ढले समाज मे।—अरी ओ०, पृ० ४। साँचे मे ढालना = बहुत सुदर बनाना।

२ वह छोटी आकृति जो कोई बडी आकृति बनाने से पहले नमूने के तौर पर तैयार की जाती है और जिसे देखकर वही बडी आकृति बनाई जाती है।

विशेष—प्राय कारीगर जब कोई बडी मूर्ति आदि बनाने लगते है, तब वे उसके आकार की मिट्टी, चूने, 'प्लैस्टर आफ पेरिस' आदि की एक आकृति बना लेते है, और तब उसी के अनुसार धातु या पत्थर की आकृति बनाते है।

३ कपडे पर बेल बूटा छापने का ठप्पा जो लकडी का बनता है। छापा। ४ एक हाथ लबी लकडी जिसपर सटक बनाने के लिये सल्ला बनाते है। ५ जुलाहों की वे दो लकडियाँ जिनके बीच मे कूँच के साल को दबाकर कसते है।

साँचि(पु)—वि० [स० सत्य, प्रा० सच्च] दे० 'साँच'[२]। उ०—हूँ तौ तिहारी अग्याकारिनि साँचि बात मोसौ कहा कहौ महराज।—नद० ग्र०, पृ० ३६८।

साँचिया—सज्ञा पु० [हिं० साँचा + इया (प्रत्य०)] १ किसी चीज का साँचा बनानेवाला। २ धातु गलाकर साँचे मे ढालनेवाला।

साँचिला(पु)—वि० [हिं० साँच] सच्चा। साँवला। उ०—एक सनेही साँचिलो कोशलपाल कृपालु।—तुलसी ग्र०, पृ०

साँची[१]—सज्ञा पु० [साँची नगर ?] एक प्रकार का पान जो खाने मे ठडा होता हे। विशेष—दे० 'पान'।

साँची(पु)[२]—वि० स्त्री० [स० सत्य, प्रा० सच्च] सत्य। दे० 'साँच'[२]। उ० – हरखी सभा बात सुनि साँची।—मानस, १।२६०।

साँची[३]—सज्ञा पु० [?] पुस्तकों की छपाई का वह प्रकार जिसमे पक्तियाँ सीधे बल मे न होकर बेडे बल मे होती है।

विशेष—इसमे पुस्तके चौडाई के बल मे नही बल्कि लबाई के बल मे लिखी या छापी जाती है। प्राचीन काल के जो लिखे हुए ग्रथ मिलते हैं वे अधिकाश ऐसे ही होते है। इनमे पृष्ठ लबा अधिक और चौडा कम रहता है, और पक्तियाँ लबाई के बल मे होती है। प्राय ऐसी पुस्तकें बिना सिली हुई ही होती है, और उनके पन्ने बिलकुल एक दूसरे से अलग अलग होते हैं।

साँचोरा‡—सज्ञा पु० [देश०] गुर्जर ब्राह्मणों की एक उपजाति। उ०—सो गोपालदास भगवद् इच्छा ते गुजरात मे एक साँचोरा ब्राह्मण के प्रगटे।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० १०।

साँझ—सज्ञा स्त्री० [स० सन्ध्या, प्रा० सझ, सझा] सध्या। शाम। सायकाल। उ०—साँझ समय सानद नृपु गएउ कैकई गेह।—मानस, २।२४। (ख) सखी सोभ सब बसि भई मनो कि फूली साँझ।—पृ० रा०, १४।५५।

साँझना†—सज्ञा पुं० [स० सन्ध्या, हिं० साँझ + ला (प्रत्य०)] उतनी भूमि जितनी एक हल से दिन भर मे जोती जा सकती है। दिन भर मे जुत जानेवाली जमीन।

साँझा—सज्ञा पु० [स० सार्द्ध, प्रा० सड्ढ, सद्ध सज्झ] व्यापार, व्यवसाय आदि मे होनेवाला हिस्सा। पत्ती। विशेष दे० 'साझा'। सध्या।

साँझि(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० सन्ध्य, प्रा० सझा] दे० 'साँझ'। सध्या। उ०—साँझि ही सिंगार सजि प्रानप्यारे पास जाति।—नद० ग्र०, पृ० ३१५।

साँझी—सज्ञा स्त्री० [स० सान्ध्य या सज्जा ?] देवमदिरो मे देवताओ के सामने जमीन पर की हुई फूल पत्तो आदि की सजावट जो विशेषत पितृपक्ष मे सायकाल के समय की जाती है। प्राय सावन के महीने मे शृगार आदि के अवसर पर भी ऐसी सजावट होती हे।

मुहा०—साँझी खेलना या साँझी पुजावना(पु)—सायकाल के समय साँझी की सजावट तैयार करना या पूरी करना। उ०—(क) सखि क्वार मास लग्यौ सुहावन सबै साँझी खेलही।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ५०८। (ख) पुजावति साँझी कीरति माय कुँवरि राधा को लाड लडाय।—घनानद, पृ० ५६१।

साँट[१]—सज्ञा स्त्री० [स० सट से अनु०] १ छडी। साँटी। पतली कमची। २ कोडा। ३ शरीर पर का वह लबा गहरा दाग जो कोडे या बेत का आघात पडने से होता है।

क्रि० प्र०—उभडना।—पडना।—लगना। उ०—हे मोरि सखियाँ लागलि गुरु के साँट भइलि मनभावन।—गुलाल०, पृ० ४६।

साँट[२]—सज्ञा स्त्री० [देश० ?] लाल गदहपूरना।

साँट(पु)[३]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सटना] लगाव। मिलान। लपेट। उ०—गगन मडल मे रास रचो लगि दृष्टि रूप कै साँट।—भीखा० श०, पृ० १६।

साँटमारी—सज्ञा स्त्री० [हिं०] हाथियो को साँटे मारकर लडाना। दे० 'साटमारी'। उ०—उसने बतलाया, इमाम अली! काजी हूँ सरकार और साँटमारी भी करता हूँ।—झाँसी०, पृ० ६८।

साँटा—सज्ञा पु० [हिं० साँट (= छडी)] १ करघे के आगे लगा हुआ वह डडा जिसे ऊपर नीचे करने से ताने के तार ऊपर नीचे होते है। २ कोडा। ३ ऐड। ४ ईख। गन्ना। उ०—राजा के दर्शनो को चलने के समय ब्राह्मण ने साँठे के टुकडो को नही देखा।—भारतेंदु ग्र०, भा० ३, पृ० ३०। ५ प्रतिकार। बदला। उ०—यह साँटो लै कृष्णावतार। तब ह्वैहौ तुम ससार पार।—राम च०, पृ० ८६।

साँटि(पु)—सज्ञा स्त्री० [हिं० सटना] मेल मिलाप। उ०—निकस्यो मान गुमान सहित वह मैं यह होत न जानो। नैननि साँटि करी मिली नैननि उनही सो रुचि मानो।—सूर (शब्द०)।

**साँटिया**㉕†—संज्ञा पुं० [हिं० साँटी] डौंडी पीटनेवाला। डुग्गीवाला। उ०—चहुँ दिसि आनि साँटिया फेरी। भै कठकाई राजा केरी। —जायसी (शब्द०)।

**साँटी**[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० यष्टिका] १ पतली छोटी छड़ी। २ बाँस की पतली कमची। शाखा। उ०—बाम्हन को ले साँटी मारे। तोर जनेऊ आगी डारे।—कबीर सा०, पृ० २५५।

क्रि० प्र०—मारना।—सटकारना।

**साँटी**[2]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सटना] १ मेल मिलाप। २ बदला। प्रतिकार। प्रतिहिंसा।

**साँठ**[1]—संज्ञा पुं० [देश०] १ एक प्रकार का कड़ा जिसे प्रायः राजपूताने के किसान पैर में पहनते हैं। २ दे० 'साँकड़ा'।

**साँठ**[2]—संज्ञा पुं० [सं० यष्टि, हिं० साँट] १ ईख। गन्ना। २ सरकंडा। ३ वह लंबा डंडा जिससे अन्न पीटकर दाने निकालते हैं।

**साँठ**[3]—संज्ञा पुं० [सं० सन्धि ? या हिं० सटना] मेलजोल। मेल मिलाप। दे० 'साँटी'। जैसे,—साँठ गाँठ।

**साँठगाँठ**—संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँठ + अनु० साँठ] १ मेल मिलाप। २ छिपा और दूषित संबंध। जैसे,—उस स्त्री से उसकी साँठ-गाँठ थी। उ०—क्या भोली बनी जाती है और बागवाँ से खुद ही साँठगाँठ जो की थी।—फिसाना०, भा० ३, पृ० १२६। ३ षड्यंत्र। दुरभिसंधि। साजिश। जैसे,—उन दोनों ने साँठगाँठकर उसे वहाँ से निकलवा दिया।

**साँठना**㉕—क्रि० स० [सं० सन्धि, हिं० साँठ] पकड़े रहना। उ०—नाथ सुनी भृगुनाथ कथा बलि बालि गए चलि बात के साँठे।—तुलसी (शब्द०)।

**साँठि**㉕—संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँठ] दे० 'साँठी'[1]। उ०—साँठि नाहि जग बात को पूछा।—जायसी ग्र०, पृ० १५७।

**साँठी**㉕[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँठ ? या सं० स + अर्थ (= धन) = सार्थ ?] पूँजी। धन। उ०—सब निबहहिं तहँ आपन साँठी। साँठी बिना रहब मुख माँटी।—जायसी ग्र० (गुप्त), पृ० २०७।

**साँठी**[2]—संज्ञा स्त्री० [देश०] पुनर्नवा। गदहपूर्ना।

**साँठी**[3]—संज्ञा पुं० [सं० षष्टिक, हिं० साठी] दे० 'साठी' (धान)।

**साँड़**[1]—संज्ञा पुं० [सं० षण्ड या साण्ड] १ वह बैल (या घोड़ा) जिसे लोग केवल जोड़ा खिलाने के लिये पालते हैं।

विशेष—ऐसा जानवर बधिया नहीं किया जाता और न उससे कोई काम लिया जाता है।

२ वह बैल जो मृतक की स्मृति में हिंदू लोग दागकर छोड़ देते हैं। वृषोत्सर्ग में छोड़ा हुआ वृषभ।

मुहा०—साँड़ की तरह घूमना = आजाद और बेफिक्र घूमना। साँड़ की तरह डकारना = बहुत जोर से चिल्लाना।

**साँड़**[2]—वि० १ मजबूत। बलिष्ठ। २ आवारा। बदचलन।

**साँड़नी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० साँड़ ?] ऊँटनी या मादा ऊँट जिसकी चाल बहुत तेज होती है। विशेष दे० 'ऊँट'। उ०—द्रव्यलाभ धावमान साँड़नी। सद्गृहस्थ गेह की उजाड़नी।—भारतेंदु ग्र०, भा० ३, पृ० ८४५।

**साँड़ा**—संज्ञा पुं० [हिं० साँड़] छिपकली की जाति का पर आकार में उससे कुछ बड़ा एक प्रकार का जंगली जानवर। इसकी चरबी निकाली जाती है जो दवा के काम में आती है।

**साँड़िया**—संज्ञा पुं० [डिं० सांढियो] १ तेज चलनेवाला ऊँट। २ साँड़नी पर सवारी करनेवाला।

**साँढनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० साँड ?] दे० 'साँड़नी'। उ०—यह सुनत ही तत्काल नामजी एक साँढनी लै आप दाइमै एक ओर, दोउमैं दूसरो ओर चढ़ि कै तहाँ ते श्रीजी द्वार को चले।—दो सौ बावन०, भा०, पृ० १९।

**साँढिया**㉕†—संज्ञा पुं० [डिं०] दे० 'साँढियो'। उ०—नितु नितु नवला साँटियाँ, नितु नितु नवला साजि।—ढोला०, दू० ८१।

**साँढियो**—संज्ञा पुं० [डिं०] ऊँट। क्रमेलक।

**साँत**㉕†—संज्ञा स्त्री० [सं० शान्ति] दे० 'शांति'। उ०—होर शोर भी साँत साँत का था, वहु साँत जो मेरा साँत का था।—दक्खिनी०, पृ० १६६।

**साँतिया**†—संज्ञा पुं० [सं० स्वस्तिक] दे० 'स्वस्तिक—१२'। उ०—धरहु सुहद्रा साँतिये, अपने विरँन दरबार, बधाई राजी नंद के।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ६२२।

**साँती**㉕—संज्ञा स्त्री० [सं० शान्ति] दे० 'शांति'। उ०—राजै सुना हिये भइ साँती।—जायसी ग्र०, पृ० ११७।

**साँथड़ा**—संज्ञा पुं० [?] बादिया का वह हिस्सा जो पेच बनाने के लिये घुमाया जाता है (लुहार)।

**साँथरा**㉕—संज्ञा पुं० [सं० सस्तर] दे० 'साँथरी'। उ०—कामी लज्जा ना करै मन माँहें अहिलाद। नींद न माँगै साँथरा भूख न माँगै स्वाद।—कबीर ग्र०, पृ० ४१।

**साँथरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० सस्तर] १ चटाई। २ बिछौना। डासन। उ०—कुस साँथरी निहारि सुहाई। कीन्ह प्रनाम् प्रदच्छिन जाई।—मानस, २।१९९।

**साँथा**—संज्ञा पुं० [देश०] लोहे का एक औजार जो चमड़ा कूटने के काम में आता है।

**साँथी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ वह लकड़ी जो ताने के तारों को ठीक रखने के लिये करघे के ऊपर लगी रहती है। २ ताने के सूतों के ऊपर नीचे होने की क्रिया।

**साँद**[1]—संज्ञा पुं० [देश०] वह लकड़ी आदि जो पशुओं के गले में इस लिये बाँध दी जाती है, जिसमें वे भागने न पावें। लंगर। टेका।

**साँद**㉕[2]—अव्य० [हिं० साथ ?] दे० 'साथ'। उ०—सीने में दम कूँ अपने साँद लेकर। कमर कूँ अपने दामन बाँद लेकर।—दक्खिनी०, पृ० २८१।

**साँदा**†—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'साँद'।

**साँध**[1]—संज्ञा पुं० [सं० सन्धान] वह वस्तु जिसपर निशाना लगाया जाय। लक्ष्य। निशाना।

**साँध**[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धि] १ संधि। मित्रता। उ०—जाएँ तोड़ जहान सूँ साँध न जाएँ सीह।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० २३। २ छिद्र। संधि। फाँक। दरार। खाली जगह। उ०—कनातों की साँधों से जगमोहन ने वह नाच देखा था।—ज्ञानदान, पृ० ४८।

सांधना¹—क्रि० स० [स० सन्धान] निशाना साधना। लक्ष्य करना। संधान करना। उ०—(क) अगिन बान दुइ जानो सांधे। जग बेधे जो होहि न बांधे।—जायसी (शब्द०)। (ख) जनु घुघची वह तिलकर भूहाँ। विरह बान साँधो सामूहाँ।—जायसी (शब्द०)।

सांधना²—क्रि० स० [स० साधन] सिद्ध करना। साधना। उ०—सीस काटि के पैरी बांधा। पावा दाँव बैर जस सांधा।—जायसी (शब्द०)।

सांधना³—क्रि० स० [स० सन्धि] १ एक मे मिलाना। मिश्रित करना। उ०—बिबिध मृगन कर आमिष रांधा। तेहि महँ विप्रमासु खल सांधा।—तुलसी (शब्द०)। २ रस्सियो आदि मे जोड लगाना। (लश०)। ३ सधान करना। तैयार करना। बनाना। उ०—घोआउरि धाने मदिरा साँध, देउर भाँगि मसीद बाँध।—कीर्ति०, पृ० ४४।

सांधा—सज्ञा पुं० [स० सन्धि] दो रस्सियो आदि मे दी हुई गाँठ। (लश०)।

मुहा०—सांधा मारना=दो रस्सियो आदि मे गाँठ लगाकर उन्हे जोडना। (लश०)।

सांन(पु)—सज्ञा स्त्री० [फा० शान] दे० 'शान'। उ०—गरबी गुमांन होइ वडौ सावधांन होइ, सांन होइ सहिबी प्रताप पुंज धांम कौ।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ४३२।

सांनना(पु)—क्रि० स० [हिं० सानना] गूँधना। मिलाना। दे० 'सानना'। उ०—पाँच तत तीनि गुण जुगति करि साँनियाँ।—कबीर ग्र०, पृ० १५६।

सांप—सज्ञा पुं० [सं० सर्प, प्रा० सप्प] [स्त्री० सांपिन] १ एक प्रसिद्ध रेंगनेवाला लबा कीडा जिसके हाथ पैर नही होते और जो पेट के बल जमीन पर रेंगता है।

विशेष—केवल थोडे से बहुत ठढे देशो को छोडकर शेष प्राय समस्त ससार मे यह पाया जाता है। इसकी सैकडो जातियाँ होती है जो आकार और रग आदि मे एक दूसरी से बहुत अधिक भिन्न होती हैं। सांप आकार मे दो ढाई इच से २५-३० फुट तक लबे होते हैं और मोटे सूत से लेकर प्राय एक फुट तक मोटे होते है। बहुत बडी जातियो के सांप अजगर कहलाते है। कुछ सांपो के सिर पर फन होता है। ऐसे सांप नाग कहलाते है। सांप पीले, हरे, लाल, काले, भूरे आदि अनेक रगो के होते हैं। सांपो की अधिकाश जातियां बहुत डरपोक और सीधी होती है, पर कुछ जातियां जहरीली और बहुत ही घातक होती है। भारत के गेहुअन, धामिन, नाग और काले सांप बहुत अधिक जहरीले होते हैं, और उनके काटने पर आदमी प्राय नही बचता। इनके मुह मे साधारण दाँतो के अतिरिक्त एक बहुत बडा नुकीला खोखला दाँत भी होता है जिसका सबध जहर की एक थैली से होना है। काटने के समय वही दाँत शरीर मे गड़ाकर ये विष का प्रवेश करते है। सब सांप मासाहारी होते हैं और छोटे छोटे जीव-जतुओ को निगल जाते हैं। इनमे यह विशेषता होती है कि ये अपने शरीर की मोटाई से कहीं अधिक मोटे जतुओं को निगल जाते है। प्राय छोटी जाति के सांप पेडो पर और बडी जाति के जगलो, पहाडो आदि मे यो ही जमीन पर रहते है। इनकी उत्पत्ति अडो से होती है, और मादा हर बार मे बहुत अधिक अडे देती है। सांपो के छोटे बच्चे प्राय रक्षित होने के लिये अपनी माता के मुँह मे चले जाते हैं, इसी लिये लोगो मे यह प्रवाद है कि साँपिन अपने बच्चो को आप ही खा जाती है। इस देश मे सांपो के काटने की चिकित्सा प्राय जतर मतर और झाड फूंक आदि से की जाती है। भारतवासियो मे यह भी प्रवाद है कि पुराने सांपो के सिर मे एक प्रकार की मणि होती है जिसे वे रात मे अधकार के समय बाहर निकालकर अपने चारो ओर प्रकाश कर लेते है।

मुहा०—कलेजे पर सांप लहराना या लोटना=बहुत अधिक व्याकुलता या पीडा होना। अत्यत दुःख होना। (ईर्ष्या आदि के कारण)। सांप उतारना=सर्प के काटने पर विष को मत्रादि से दूर करना। सांप का पांव देखना=असभव वस्तु को पाने का प्रयत्न करना। सांप कीलना=मत्र द्वारा सांप को वश मे करना। मत्र द्वारा सांप को काटने से रोकना। सांप को खिलाना=अत्यत खतरनाक कार्य करना। सांप से खेलना=अत्यत खतरनाक व्यक्ति से सबध रखना। सांप सूंघ जाना=सांप का काट खाना। मर जाना। निर्जीव हो जाना। जैसे,—ऐसे सोए है मानो सांप सूंघ गया है। उ०—अरे इस मकान मे कोई है या सबको सांप सूंघ गया।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ३४। सांप खेलाना=मत्र बल से या और किसी प्रकार सांप को पकडना और क्रीडा करना। सांप की तरह केंचुली झाडना=पुराना भद्दा रूप रग छोडकर नया सुदर रूप धारण करना। सांप की लहर=सांप काटने पर रह रह कर आनेवाली विष की लहर। सांप काटने का कष्ट। सांप की लकीर=पृथ्वी पर का चिह्न जो सांप के निकल जाने पर होता है। सांप के मुंह मे=बहुत जोखिम मे। सांप (के) चले जाने पर लकीर को पीटना=(१) अवसर बीत जाने पर भी उस अवसर को जिलाए रखना। किसी विषय को असमय मे उठाना। (२) खतरे के अवसर पर उसका प्रतिरोध न करके बाद मे उसे दूर करने की चेष्टा करना। मौका गुजर जाने पर मुस्तैदी दिखाना। सांप छछूंदर की गति या दशा=भारी असमजस की दशा। दुविधा। उ०—भइ गति सांप छछूंदर केरी।—तुलसी (शब्द०)।

विशेष—सांप छछूंदर की कहावत के सबध मे कहा जाता है कि यदि सांप छछूंदर को पकडने पर खा जाता है, तो वह तुरत मर जाता है, और यदि न खाय और उगल दे, तो अधा हो जाता है।

पर्या०—भुजग। भुजग। अहि। विषधर। व्याल। सरीसृप। कुडली। चक्षुश्रवा। फणी। बिलेशय। उरग। पन्नग। पवना-

नाग। भुजग। व्याल। दन्दी। गोकर्ण। गूढपाद। हरि। चिक्षिर।

२ बहुत ही दुष्ट आदमी। अत्यंत दुष्ट व्यक्ति। (क्व०)।

साँपडना (पु)—क्रि० अ० [सं० स्नापन या देश०] स्नान करना। नहाना। उ०—साँपडि नीर समद दुरंग सँवारिया।—बाँकी० ग्रं० भा० ३, पृ० ३१।

साँपधरन (पु)—संज्ञा पुं० [हिं० साँप + धरन] सर्प धारण करनेवाले, शिव। महादेव।

साँपना (पु)—क्रि० स० [सं० समर्पण, प्रा० समप्पन, सउप्पन, हिं० सौंपना] देना। प्रदान करना। उ० उसी भावज दइ छइ सीप, रतन चौरासी राव साँपजै सीप।—बी० रासो, पृ० ४५।

साँपा—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सियापा'।

साँपिन—संज्ञा स्त्री० [हिं० साँप + इन (प्रत्य०)] १ साँप की मादा। २ घोड़े के शरीर पर की एक प्रकार की भौंरी जो अशुभ समझी जाती है। ३ एक प्रकार की गाय जो जीभ को काफी बाहर निकालकर उसे सर्पिणी की तरह घुमाती रहती है। ऐसी गाय का पालना अशुभ माना जाता है।

सापिनि साँपिनी (पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पिणी] दे० 'साँपिन'। उ०—सिसुघातिनी परम पापिनी। सतनि की डसनी जु साँपिनी।—नंद० ग्रं०, पृ० २३६।

साँपिया—संज्ञा पुं० [हिं० साँप + इया (प्रत्य०)] एक प्रकार का काला रंग जो प्राय साधारण साँप के रंग से मिलता जुलता होता है।

साँभर[1]—संज्ञा पुं० [सं० सम्भल या साम्भल] १ राजपूताने की एक झील जहाँ का पानी बहुत खारा है। इसी झील के पानी से साँभर नमक बनाया जाता है। २ उक्त झील के जल से बनाया हुआ नमक। ३ भारतीय मृगों की एक जाति।

विशेष—इस जाति का मृग बहुत बड़ा होता है। इसके कान लंबे होते हैं और सींग बारहसिंगों की सींगों के समान होते हैं। इसकी गरदन पर बड़े बड़े बाल होते हैं। अक्तूबर के महीने में यह जोड़ा खाता है।

साँभर[2]—संज्ञा पुं० [सं० सम्बल या सम्भार] मार्ग के लिये साथ में लिया हुआ जलपान या भोजन। संबल। पाथेय। उ०—जावत नहीं तोहि पछिताना। साँभर लेहु दूरि है जाना।—जायसी (शब्द०)।

साँभरि (पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्बल] दे० 'साँभर—२'। उ०—एक तोर आसा मनि आई। गाँठी साँभरि बाँधु बनाई।—सत० दरिया, पृ० ३८।

साँभरना (पु)—क्रि० स० [सं० √सम्भाल्, सम्भालयति, गुज०] १ सुनना। उ०—रान आव्या की साँभली वात। नाचइ रूप सोहि पात।—बी० रासो, पृ० ६१। २ स्मरण करना। उ०—साँभरो राम सुनी सब कोई। साँभर्यां राम रगाकर नाहि।—बी० रासो, पृ० ५।

साँम (पु)[1]—संज्ञा पुं० [सं० श्याम, प्रा० साम] कृष्ण का नाम। श्याम। उ०—नंदलाल न साँमरो न गोपालो न साँम को।—प्राण०, पृ० ११६।

साँम[2]—संज्ञा पुं० [सं० साम] साम वेद। दे० 'साम'—१। उ०—भृकुटी विराजत स्वेत मानहुँ मंत्र अदभुत साम के।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ४५७।

साँम[3]—संज्ञा पुं० [सं० स्वामी] स्वामी। मालिक। प्रभु। उ०—रिजक उजालै साँम री पालै साँमधरम्म।—बाँकी० ग्रं०, भा० १, पृ० १।

साँमजि (पु)†—संज्ञा पुं० [सं० समाज] समूह। दल। उ०—साँमजि करि, उभा रजपूत, हरिप नरायण दीधो सूत।—बी० रासो, पृ० १४।

साँमधरम्म (पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्वामिधर्म] स्वामी के प्रति अपना कर्तव्य। उ०—नमसकार सूराँ नराँ, विरद नरेस वरम। रिजक उजालै साँम री, पालै साँमधरम।—बाँकी०, ग्रं०, भा० १, पृ० १।

साँमन (पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्रावण] दे० 'श्रावण' (मास)। उ०—संवत नव पट् वसु ससी, साँमन सुदि बुधवार।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ४८३।

साँमर (पु)—सं० [सं० श्यामल] दे० 'साँवला'।

साँमहा (पु)†—वि० [सं० सम्मुख, प्रा० सम्मुह] [वि० स्त्री० साँमही] समुख। सामने। उ०—साँमही छीक हुएड वपाल।—बी० रासो, पृ० ५१।

साँमुहे†—अव्य० [सं० सम्मुखे] सामने। सम्मुख।

साँमेला (पु)†—संज्ञा पुं० [सं० सम्मिलन] मिलना। मिलाप। उ०—(क) चउघडियउ वाजइ सीह दुवारि, साँमेला की वेला हुई। —बी० रासो, पृ० १५। (ख) परण पधारे राम जीत दुजराजनै, तुरत करोजे त्यार साँमेलो साजनै।—रघु० रू०, पृ० ६०।

साँम्हा (पु)—अव्य० [सं० सम्मुख] समुख। सामने। उ०—भाज गई चिता भड़ाँ, घड़ाँ कठट्ठे जग। साँमा रवखण देख खल, साँम्हा किया तुरग।—रा० रू०, पृ० ३३।

साँय साँय—संज्ञा पुं० [अनु०] सन्नाटे में हवा की गति से पैदा होनेवाली ध्वनि। उ०—करता मारुत साँय साँय है।—साकेत, पृ० ३६१।

साँवक[1]—संज्ञा पुं० [देश०] वह ऋण जो हलवाहों को दिया जाता है और जिसके सूद के बदले में वे काम करते हैं।

साँवक[2]—संज्ञा पुं० [सं० श्यामाक] साँवाँ नामक अन्न।

साँवत†[1]—संज्ञा पुं० [सं० सामन्त] सुभट। योद्धा। सामन्त। दे० 'सामन्त'। उ०—दुरजोधन अवतार नृप सत सावत सवधा। —रा० रासो, पृ० १।

साँवत[2]—संज्ञा पुं० [सं० सामन्त या देश०] एक प्रकार का राग।

साँवती—संज्ञा [देश०] बैलगाड़ी या घोड़ागाड़ी के नीचे लगी हुई वह जाली जिसमें घास आदि रखते हैं।

साँवन—संज्ञा पुं० [देश०] मझोले आकार का एक प्रकार का वृक्ष जिसका तना प्राय झुका हुआ होता है।

विशेष—इसकी छाल पतली और भूरे रंग की होती है। यह देहरादून, अवध, बुंदेलखंड और हिमालय में ४००० फुट की ऊँचाई पर पाया जाता है। फागुन चैत में पुरानी पत्तियों के झड़ने और नई पत्तियों के निकलने पर इसमें फूल लगते हैं। इसमें से एक प्रकार का गोंद निकलता है जो ओषधि के रूप में काम आता और मछलियों के लिये विष होता है। इसके हीर की लकड़ी मजबूत और कड़ी होती है और सजावट के सामान बनाने के काम में आती है। पशु इसकी पत्तियाँ बड़े चाव से खाते हैं।

साँवर²—वि० [सं० श्यामल] [वि० स्त्री० साँवरि या साँवरी] दे० 'साँवला'। उ०—काहे राम जिउ साँवर लछिमन गोर हो। कोदेहु रानि कौसिलहि परिगा भोर हो।—तुलसी ग्र०, पृ० ५। २ सलोना। सुंदर। उ०—सखि रोके साँवर लाल, घन घेरयो मनो दामिनी।—नंद० ग्र०, पृ० ३८५।

साँवर(पु)³—संज्ञा पुं० [सं० सम्बल, साम्भल] दे० 'साँवर', 'साँभर'। उ०—जाँवत अहै सकल ओरगाना। साँवर लेहु दूरि है जाना।—जायसी ग्र० (गुप्त), पृ० २०६।

साँवरा—वि०, संज्ञा पुं० [हिं० साँवला] दे० 'साँवला'।

साँवरो(पु)—वि०, संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'साँवला'। उ०—मखन सहित सजि सुघर साँवरो, सुनतहि सनमुख आए।—नंद० ग्र०, पृ० ३८१।

साँवल(पु)¹—वि०, संज्ञा पुं० [सं० श्यामल] दे० 'साँवला'। उ०—अद्‌भुत साँवल अंग बन्यो अद्‌भुत पीतांबर। मूरति धरि सिंगार प्रेम अंबर ओढ़े हरि।—नंद० ग्र०, पृ० २८।

साँवलताई†—संज्ञा स्त्री० [सं० श्यामल, हिं० साँवल + ताई (प्रत्य०)] साँवला होने का भाव। श्यामता। श्यामलता।

साँवला¹—वि० [सं० श्यामलक] [वि० स्त्री० साँवली] जिसके शरीर का रंग कुछ कालापन लिए हुए हो। श्याम वर्ण का।

साँवला²—संज्ञा पुं० १ श्रीकृष्ण का एक नाम। २ पति या प्रेमी आदि का बोधक एक नाम।

विशेष—इन अर्थों में इस शब्द का प्रयोग गीतों आदि में होता है।

साँवलापन—संज्ञा पुं० [हिं० साँवला + पन] साँवला होने का भाव। वर्ण की श्यामता।

साँवलि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० श्यामला, प्रा० साँवली] श्यामल वर्ण की बदली। उ०—साँवलि काँइ न सिरजियाँ, अंबर लागि रहंत। बाट चलती साल्ह प्रिय, ऊपर छाँह करंत।—ढोला०, दू०, ४१५।

साँवलिया¹—संज्ञा पुं० [हिं० साँवलिया] १ कृष्ण। २ प्रिय का संबोधन। प्रिय। ३ पति। स्वामी।

साँवलिया²—वि० [सं० श्यामल] दे० 'साँवला'। उ०—बैल दो साँवलिया और धौला।—कुकुर०, पृ० ५१।

साँवाँ—संज्ञा पुं० [सं० श्यामाक] कँगनी या चेना की जाति का एक अन्न जो सारे भारत में बोया जाता है।

विशेष—यह प्रायः फागुन चैत में बोया जाता है और जेठ में तैयार होता है। कहीं कहीं इसकी बोआई आषाढ़-सावन में होती है और भादों तक यह काट लिया जाता है। यह बरसाती अन्न है। इसके विषय में यह कहावत पूर्वी जिलों में प्रसिद्ध है कि 'साँवाँ साठी साठ दिना। देव बरीस रात दिना।' यह अन्न बहुत ही सुपाच्य और बलवर्धक माना जाता है और प्रायः चावल की भाँति उबालकर खाया जाता है। कहीं कहीं रोटी के लिये इसका आटा भी तैयार किया जाता है। इसकी हरी पत्तियाँ और डंठल पशुओं के लिये चारे की भाँति काम में आते हैं, और पंजाब में कहीं कहीं केवल चारे के लिये भी इसकी खेती होती है। अनुमान है कि यह मिस्र या अरब से इस देश में आया है।

साँस—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वास] १ नाक या मुँह के द्वारा बाहर से हवा खींचकर अंदर फेफड़ों तक पहुँचाने और उसे फिर बाहर निकालने की क्रिया। श्वास। दम।

विशेष—यद्यपि यह शब्द संस्कृत 'श्वास' (पुल्लिंग) से निकला है और इसलिये पुल्लिंग ही होना चाहिए, परंतु लोग इसे स्त्रीलिंग ही बोलते हैं। परंतु कुछ अवसरों पर कुछ विशिष्ट क्रियाओं आदि के साथ यह केवल पुल्लिंग भी बोला जाता है। जैसे,—इतनी दूर से दौड़े हुए आए हो, साँस फूलने लगा।

क्रि० प्र०—आना।—जाना।—लेना।

मुहा०—साँस अड़ना = दे० 'साँस रुकना'। साँस उखड़ना = (१) मरने के समय रोगी का देर देर पर और बड़े कष्ट से साँस लेना। (२) साँस टूटना। दम टूटना। उ०—पवन पी रहा था शब्दों को निर्जनता की उखड़ी साँस।—कामायनी, पृ० १९। (३) साँस या दमा के रोगी का जोर जोर की खाँसी आने से श्लथ होना। साँस उड़ना = प्राणांत होना। जीवनलीला समाप्त होना। साँस ऊपर नीचे होना = साँस का ठीक तरह से ऊपर नीचे न आना। साँस रुकना। साँस का अंदर की अंदर और बाहर की बाहर रह जाना = भौचक्का रह जाना। चकित रह जाना। साँस का टूट टूट जाना = धीरज का जाते रहना। उ०—आस कैसे न टूट जाती तब, साँस जब टूट टूट जाती है।—चुभते०, पृ० ५१। साँस खींचना = (१) नाक के द्वारा वायु अंदर की ओर खींचना। साँस लेना। (२) वायु अंदर खींचकर उसे रोक रखना। दम साधना। जैसे,—हिरन साँस खींचकर पड़ गया। साँस चढ़ना = अधिक वेग से या परिश्रम का काम करने के कारण साँस का जल्दी जल्दी आना और जाना। साँस चढ़ाना = दे० 'साँस खींचना'। साँस चलना = (१) जीवित होना। जीवित रहना। (२) रोग या अवस्थता की स्थिति में जल्दी जल्दी और जोर से साँस लेना। साँस छोड़ना = नाक द्वारा अंदर खींची हुई वायु को बाहर निकालना। साँस टूटना = दे० 'साँस उखड़ना'। साँस डकार न लेना = किसी चीज को पूर्णतः पचा जाना। किसी चीज को इस प्रकार छिपाकर दबा जाना कि पता तक न चले। साँस तक न लेना = बिलकुल चुपचाप रहना। कुछ

न बोलना। जैसे,—उनके सामने तो यह लड़का साँस नही लेता। साँस फूलना = बार बार साँस आना और जाना। साँस चढना। साँस भरना = दे० 'ठढी साँस लेना'। साँस रहते = जीते जी। जीवन पर्यंत। साँस रुकना = साँस के आने और जाने मे बाधा। श्वास की क्रिया मे बाधा होना। जैसे,—यहाँ हवा की इतनी कमी है कि साँस रुकती है। साँस लेना = (१) नाक के द्वारा वायु खीचकर अदर लेना और फिर उसे बाहर निकालना। (२) सुस्ताना। थोडी देर आराम करना। अतिम साँस लेना = प्राणांत होना। मर जाना। अतिम साँसें गिनना = मरने के निकट होना। आसन्न मृत्यु होना। उलटी साँस लेना = (१) दे० 'गहरी साँस भरना या लेना।' (२) मरने के समय रोगी का बडे कष्ट से अतिम साँस लेना। ऊपर को साँस चढना = मरणासन्न होना। मृत्यु का निकट होना। साँसो मे जी का होना = मरणासन्न होना। मृत्यु का निकट होना। गहरी साँस भरना या लेना = बहुत अधिक दु ख आदि के आवेग के कारण बहुत देर तक अदर की ओर वायु खीचते रहना और उसे कुछ देर तक रोक कर बाहर निकालना। ठढी या लबी साँस लेना = दे० 'गहरी साँस भरना या लेना'।

२ अवकाश। फुरसत। विश्राम।

मुहा०—साँस लेना = थक जाने पर विश्राम लेना। ठहर जाना। जैसे,—(क) घटो से काम कर रहे हो, जरा साँस ले लो। (ख) वह जबतक काम पूरा न कर लेगा तबतक साँस न लेगा। साँस लेने या मारने तक की फुरसत न होना = बिल्कुल अवकाश न रहना। अत्यत व्यस्त होना।

३ गुजाइश। दम। जैसे,—अभी इस मामले मे बहुत कुछ साँस है। ४ वह सधि या दरार जिसमे से होकर हवा जा या आ सकती है।

मुहा०—(किसी पदार्थ का) साँस लेना = किसी पदार्थ मे सधि या दरार पड जाना। (किसी पदार्थ का) बीच मे से फट जाना या नीचे की ओर धँस जाना। जैसे,—(क) इस भूकप मे कई मकानो और दीवारो ने साँस ली है। (ख) इस भाथी मे कही न कही साँस जरूर है, इसी से पूरी हवा नही लगती।

५ किसी अवकाश के अदर भरी हुई हवा।

मुहा०—साँस निकलना = (१) किसी चीज के अदर भरी हुई हवा का बाहर निकल जाना। जैसे,—टायर की साँस निकलना, फुटबाल की साँस निकलना। (२) प्राणांत होना। समाप्त हो जाना। साँस भरना = (१) किसी चीज के अदर हवा भरना। (२) अत्यधिक थकान से जल्दी जल्दी और जोर की साँस आना।

६ वह रोग जिसमे मनुष्य बहुत जोरो से, पर बहुत कठिनता से साँस लेता है। दम फूलने का रोग। श्वास। दमा।

क्रि० प्र०—फूलना।

सांसत—सज्ञा स्त्री० [हिं० साँस + त (प्रत्य०)] १ दम घुटने का सा कष्ट। २ बहुत अधिक कष्ट या पीड़ा। ३ झझट। बखेड़ा।

उ०—रेल राँड पर चढत होत सहजहिं परवस नर। सो सौ साँसत सहत तऊ नहिं सकत कछू कर।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ७।

यौ०—सांसतघर।

साँसतघर—सज्ञा पुं० [हिं० सांसत + घर] कारागार मे एक प्रकार की बहुत तग और बहुत अँधेरी कोठरी जिसमे अपराधियो को विशेष दड देने के लिये रखा जाता है। कालकोठरी। २ बहुत तग या छोटा मकान जिसमे हवा या रोशनी न आती हो।

सांसति(पु)—सज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सांसत'। उ०—नव तात न मात न स्वामी सखा सुत बधु बिसाल बिपत्ति बँटैया। सांसति घोर पुकारत आरत कौन सुनै चहुँ ओर टटैया।—तुलसी (शब्द०)।

साँसना(पु)†—क्रि० स० [सं० शासन] १ शासन करना। दड देना। २ डाँटना। डपटना। ३ कष्ट देना। दु ख देना।

साँसल—सज्ञा पुं० [देश०] १ एक प्रकार का कबल। २ बीज बोने की क्रिया।

साँसा†[१]—सज्ञा पुं० [सं० श्वास, प्रा० सास] १ साँस। श्वास। जैसे,—जबतक साँसा, तबतक आसा। (कहा०)। २ जीवन। जिदगी। ३ प्राण।

साँसा[२]—सज्ञा पुं० [हिं० सांसत] १ घोर कष्ट। भारी पीडा। तकलीफ। २ चिंता। फिक्र। तरद्दुद।

मुहा०—साँसा चढना = फिक्र होना। चिंता होना।

साँसा[३]—सज्ञा पुं० [सं० सशय] १ सशय। सदेह। शक। २ डर। भय। दहशत।

मुहा०—साँसा पडना = सशय होना। सदेह होना। उ०—आवण का साँसा पडई। जाणि हीमालइ राजा गलिया हो जाई।—बी० रासो, पृ० ४८।

साँही(पु)†—सज्ञा पुं० [सं० स्वामी, प्रा० साँई] फकीर। औलिया। दे० 'साँई'। उ०—कही वत्त गोरी तिन सो सवाँही। कहैं जेब जवाब पुच्छत साँही।—पृ० रा०, १६।३३।

सा[१]—अव्य० [सं० सदृश, सह] १ समान। तुल्य। सदृश। बराबर। जैसे,—उनका रग तुम्ही सा है। २ एक प्रकार का माननूचक शब्द। जैसे,—बहुत सा, थोडा सा, जरा सा।

सा[२]—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ गौरी। पार्वती। २ लक्ष्मी [को०]।

सा[३]—सज्ञा पुं० सगीत के सात स्वरो मे प्रथम स्वर। षड्ज का सक्षिप्त रूप।

साअत—सज्ञा स्त्री० [अ० साअत] दे० 'साइत-१'।

साअद—सज्ञा पुं० [अ० साइद] आरोहक।—दक्खिनी०, पृ० ९५।

साइस—सज्ञा स्त्री० [अ० साइन्स] किसी विषय का विशेष ज्ञान-विज्ञान शास्त्र। विशेष दे० 'विज्ञान'। २ रासायनिक और भौतिक विज्ञान।

साइ(पु)—सज्ञा स्त्री० [फा० स्याही] दे० 'स्याही'। उ०—साइ सप्त साइर करी, करी कलम बनराइ।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ४३५।

साइक(५)—सज्ञा पु० [स० शायक, प्रा० साइक] वाण। दे० 'शायक'। उ०—वीर पठन कर साइक तानिय।—प० रासो, पृ० १५३।

साइकिल—सज्ञा स्त्री० [अ०] दो पहियो की पैरगाडी। बाईसिकिल। पाँवगाडी। उ०—उसके पिता की एक बहुत बडी साइकिलो की एजेसी थी।—तारिका, पृ० ७।

साइग—सज्ञा पु० [अ० साइग] स्वर्णकार। सुनार (को०)।

साइक्लोपीडिया—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ वह वडा ग्रथ जिसमे किसी एक विषय के अगो और उपागो आदि का पूरा वर्णन हो। २ वह वडा ग्रथ जिसमे ससार भर के सब मुख्य मुख्य विषयो और विज्ञानो आदि का पूरा पूरा विवेचन हो। विश्वकोष। इनसाइक्लोपीडिया।

साइत[1]—सज्ञा स्त्री० [अ० साअत] १ एक घटे या ढाई घडी का समय। २ पल। लहमा। उ०—अभी एक साइत हुई कि मै राजभवन और अपने अनुचरो की स्वामिनी और अपने मन की रानी थी।—भारतेदु ग्र०, भा० १, पृ० ६०६। ३ मुहूर्त। शुभ लग्न। उ०—अर्थात् काबुल लेना शुभ साइत मे हुआ था कि सब सताने काबुल मे हुई।—हुमायूँ०, पृ० १३।

क्रि० प्र०—देखना।—निकलना।—निकलवाना।

यौ०—साइत सुदेवस = शुभ लग्न और दिन।

साइत†[2]—अ० [फा० शायद] दे० 'शायद'। उ०—साइत तुम्हे अनजान समझ कर रास्ते मे कुछ दिक करे।—गोदान, पृ० ८।

साइनबोर्ड—सज्ञा पु० [अ०] वह तख्ता या टीन आदि का टुकडा जिस- पर किसी व्यक्ति, दूकान या व्यवसाय आदि का नाम और पता आदि अथवा सर्वसाधारण के सूचनार्थ इसी प्रकार की कोई और सूचना वडे वडे अक्षरो मे लिखी हो।

विशेष—ऐसा तख्ता दूकान, मकान या सस्था आदि के आगे किसी ऐसे स्थान पर लगाया जाता है, जहाँ सब लोगो की दृष्टि पडे।

साइबडी†—सज्ञा स्त्री० [?] वह धन जो किसान फसल के समय धार्मिक कार्यों के निमित्त देते है।

साइबान—सज्ञा पु० [फा० सायबान] दे० 'सायबान'।

साइम—वि० [अ०] [वि० स्त्री० साइमा] रोजा या व्रत रखनेवाला। दे० 'सायम'।

साइयाँ—सज्ञा पुं० [स० स्वामी, प्रा० सामी, साईं] दे० 'साईं'। उ०—जाको राखे साइयाँ मारि न सकिहै कोइ। बाल न बाँका करि सकै जो जग वैरी होइ।—कबीर (शब्द०)।

साइर†[1]—सज्ञा पुं० [अ०] आमदनी के वह साधन जिनपर जमीदारो को प्राय लगान नही देना पडता था। जैसे,—स्वतत्रता के पूर्व जगल, नदी, बाग, ताल आदि जो कही कही सरकारी कर से मुक्त रहते थे। दे० 'सायर'।

साइर[2]—वि० [वि० स्त्री० साइरा] १ चक्रमणशील। घूमने फिरनेवाला। २ कुल। पूरा। ३ बचा हुआ। शेष। बाकी (को०)।

साइर(५)[3]—सज्ञा पु० [स० सागर, प्रा० सायर] दे० 'सागर'। उ०—(क) दौ लागी साइर जल्या पखी बैठे आइ।—कबीर ग्र०, पृ० १२। (ख) साइ सप्त साइर करी, करी कलम बनराइ।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ ४३५।

साइल—सज्ञा पु० [अ०] [स्त्री० साइरा] १ प्रार्थी। उम्मीदवार। आसरा लगानेवाला। २ भिक्षुक। भिखमगा। ३ जिज्ञासा करनेवाला। प्रश्नकर्ता। उ०—कहे तब हाजिरो ने अर्ज यूँ कर। हुए साइल के एँ आलम रहबर।—दक्खिनी०, पृ० ३२६।

साईँ—सज्ञा पुं० [स० स्वामी] १ स्वामी। मालिक। प्रभु। २ ईश्वर। परमात्मा। ३ पति। खाविद। ४. एक प्रकार का पेड। दे० 'साँई'।

साई[1]—सज्ञा स्त्री० [स० स्वामिक, प्रा० साइअ या हि० साइत ?] वह धन जो गाने बजानेवाले या इसी प्रकार के और पेशेकारो को किसी अवसर के लिये उनकी नियुक्ति पक्की करके, पेशगी दिया जाता है। पेशगी। बयाना।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।—लेना।

मुहा०—साई बजाना = जिससे साई ली हो, उसके यहाँ नियत समय पर जाकर गाना बजाना।

साई†[2]—सज्ञा स्त्री० [स० सहाय] वह सहायता जो किसान एक दूसरे को दिया करते है।

साई[3] सज्ञा स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार का कीडा जिसके घाव पर बीट कर देने से घाव मे कीडे पैदा हो जाते है। २ वे छडे जो गाडी के अगले हिस्से मे बेडे बल मे एक दूसरे को काटते हुए रखी जाती है और जिनके कारण उनकी मजबूती और भी बढ जाती है।

साई[4] सज्ञा स्त्री० [हि०] दे० 'साईकाँटा'।

साई(५)[5]—सज्ञा पु० [स० स्वामी, प्रा० सामि] स्वामी। मालिक। उ०—है परष परष साई सुकीय। छुट्टत अरस जनु किरन- कीय।—पृ० रा०, ११।२५।

साईकाँटा—सज्ञा पु० [हि० साही (= जतु) + काँटा] एक प्रकार का वृक्ष। साई। मोगली।

विशेष—यह वृक्ष बगाल, दक्षिण भारत, गुजरात और मध्यप्रदेश मे पाया जाता है। इसकी लकडी सफेद होती है और छाल चमडा सिझाने के काम मे आती है। इसमे से एक प्रकार का कत्था भी निकलता है।

साईबान सज्ञा पु० [फा० सायबान, साइबान] दे० 'सायबान'। उ०—बीच मैं एक बडा कमरा हवादार बहुत अच्छा बना हुआ था। उसके चारो तरफ सगमरमर का साईबान और साईबान के गिर्द फव्वारो की कतार।—श्रीनिवास ग्र०, पृ० १७७।

साईस—सज्ञा पु० [हि० रईस का अनु०] [अ० साइस, सईस (= घोडे का रखवाला)] वह आदमी जो घोडे की खबरदारी और सेवा करता है, और उसे दाना घास आदि देता, मलता और टहलाता तथा इसी प्रकार के दूसरे काम करता है।

साईसी—सज्ञा स्त्री० [हि० साईस + ई (प्रत्य०)] साईस का काम, भाव या पद।

साउ†—सज्ञा पु० [स० साधु, प्रा० साहु] दे० 'साहु'।

साउज(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्वापद, प्रा० सावय ?] वे जानवर जिनका शिकार किया जाता है। आखेट। अहेर। उ०—कीन्हेसि साउज आरन रहई। कीन्हेसि पंख उडहिं जहँ चहई।—जायसी ग्रं०, पृ० १।

साउथ—संज्ञा पुं० [अं०] दक्षिण दिशा।

साऊ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० साधु, प्रा० साहु] सज्जन। भला पुरुष। साऊ ये दुसमन होइ लागे सबन लगे कडी। तुम बिन साऊ कोऊ नही है डिगो नाव मेरे समँद अडी।—सतवाणी०, पृ० ७३।

साएर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सागर, प्रा० सायर] दे० 'सागर'। उ०—बिरह अगिनि तन जरि बन जरे। नैन नीर साएर सब भरे।—जायसी ग्रं० (गुप्त), पृ० २७१।

साएरी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [अ० शायरी] दे० 'शायरी'। उ०—एह सब साएरी कवि कथा। दधी मथि जिन साधु लीन्हीं छाछि को गुन गथा।—संत० दरिया, पृ० १५१।

साओन(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० श्रावण, प्रा० सावण] सावन का महीना दे० 'श्रावण'। उ०—साओन सयँ हम करब पिरीत। जत अभिमत अभिसारक रीत।—विद्यापति, पृ० २२६।

साकंभरी¹—संज्ञा स्त्री० [सं० शाकम्भरी] देवी दुर्गा की एक मूर्ति।

साकंभरी²—संज्ञा पुं० शाकंभरी क्षेत्र। साँभर झील या उसके आसपास का प्रांत जो राजपूताने में है।

साक¹—संज्ञा पुं० [सं० शाक] शाक। साग। सब्जी। तरकारी। भाजी।

साक²—संज्ञा पुं० [हिं०] १ दे० 'सागौन'।

साक³—संज्ञा स्त्री० [हिं० साख] १ दे० 'धाक'। उ०—को ही तुम अब का भए, कहाँ गए करि साक।—भारतेंदु ग्रं०, भा० ३, पृ० ३४०। २ दे० 'साख'। उ०—तहाँ कबीरा चढि गया, गहि सतगुरु की साक।—कबीर सा० सं०, पृ० ६०।

साक⁴—संज्ञा स्त्री० [अ० साक] १ वृक्ष का तना या धड। २ पौधे की शाख या डंठल। ३ पिंडली [को०]।

साक⁵—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्क] शंका। दुविधा। उ०—मन फाटा बाइक बुरै मिटी सगाई साक।—कबीर ग्रं०, पृ० ६०।

साकचेरी†—संज्ञा स्त्री० [सं० शाक + चेरी ?] मेहदी। नखरंजन। हिना।

साकट—संज्ञा पुं० [सं० शाक्त] १ शाक्त मत का अनुयायी। उ०—सोवत साधु जगाइए करै नाम का जाप। ये तीनो सोवत भले साकट सिंह रु साप।—संतवाणी०, पृ० २८६। २ वह जो मांसादि भक्षण करता हो। ३ वह जिसने किसी गुरु से दीक्षा न ली हो। गुरुरहित। ४ दुष्ट। पाजी। शरीर।

साकणी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शाकिनी] डाकिनी। पिशाचिनी। उ०—कलकै वीर करालो, हलकै साकण्याँ।—रघु०, पृ० १७०।

साकत¹—संज्ञा पुं० [सं० शाक्त] दे० 'साकट'।

साकत(पु)²—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] दे० 'शक्ति'। उ०—वही अनेक साकते। कहत चंद बाकते।—पृ० रा०, ६।१८७।

साकत्ति(पु)—वि० [हिं०] दे० 'शक्ति'। उ०—चढया मगि मुग्तान साहाब ताजी। जर जीन अमाल साकत्ति गाजी।—पृ० रा०, १६।२६।

साकबंधी—वि० [हिं० साका + बाँधना] संवत् चलानेवाला (राजा)। उ०—राग साकबंधी सदा वाचि कैल।—घ०नी०, पृ० ११।

साकम—संज्ञा पुं० [सं० मद्भम, मि० अ० मांगा] घास आदि का छोटा पुंज। उ०—रकवार, साकम बोझ पासरि नीक नीक निकेतना।—कीर्ति०, पृ० २६।

साकर¹†—वि० [सं० संकीर्ण] संकीर्ण। सकरा। तंग।

साकर²—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खला] दे० 'साँकल'।

साकर‡³—संज्ञा स्त्री० [हिं० शक्कर तुल० सं० शर्करा] दे० 'शक्कर'। उ०—जापर कृपा सोई भल जानै। गूंगो साकर कहा बखानै।—रैदास०, पृ० ८८।

साकर(पु)⁴—संज्ञा स्त्री० [सं० शाका + हिं० र (प्रत्य०)] साका। धाक। खलबली। उ०—अंजन गुनगंजन साकरे। जे करत दिसि दिसि साकरे।—पद्माकर ग्रं०, पृ० ८।

साकल¹—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खल] दे० 'साँकल'।

साकल²—संज्ञा पुं० [सं० शाकल] १ पंजाब (लाहौर) का पुराना नाम। २ मद्र देश का एक नगर। स्यालकोट।

साकल्य¹—संज्ञा पुं० [सं० शाकल्य] दे० 'शाकल्य'।

साकल्य²—संज्ञा स्त्री० [सं०] पूर्णता। समग्रता। किसी वस्तु का पूर्ण होने का भाव।

साकल्यक—वि० [सं०] रोगी। रुग्ण। बीमार।

साकल्लि(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० शाकल्य] दे० 'शाकल्य'। उ०—यव होम उभय प्रकार मुनि जिप रहा तोहि बखानि। इक अग्नि महि साकल्ल होमै सो प्रवृत्ती जानि।—सुंदर० ग्रं०, भा० १, पृ० ४०।

साकवरा—संज्ञा पुं० [?] बैल। वृषभ।

साकांक्ष—वि० [सं० साकाङ्क्ष] १ आकांक्षा से युक्त। इच्छुक। चाहनेवाला। २ महत्वपूर्ण। ३ जिसके लिये कुछ और, पूरक वस्तु अपेक्षित हो [को०]।

साका—संज्ञा पुं० [सं० शाका] १ संवत्। शाका।

क्रि० प्र०—चलना।—चलाना।

२ ख्याति। प्रसिद्धि। शोहरत। उ०—घहरत घंटा धुनि धमकत धौंसा करि साका।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० २८२। ३ यश। कीर्ति। उ०—आनँद के घन प्रीति साको न बिगारिए।—घनानंद, पृ० ४०। ४ कीर्ति का स्मारक। ५ धाक। रोब।

मुहा०—साका करना = महान् कार्य करके कीर्ति स्थापित करना। उ०—साको करि पहुँतौ सरग, अचलो ऐ उजवाल।—बाँकी० ग्रं०, भा० १, पृ० ८२। साका चलना = प्रभाव माना जाना। उ०—हृदय मुकुतामाल निरखत वारि अवलि बलाक। करज कर पर कमल वारत चलति जहँ तहँ साक।—सूर

(शब्द०)। साका चलाना = रोब जमाना। धाक जमाना। साका बाँधना = दे० साका चलाना'। उ०—किते विकरमाजीत साका बाँधि मर गए।—पलटू०, भा० २, पृ० ८४।

६ कोई ऐसा बड़ा काम जो सब लोग न कर सकें और जिसके कारण कर्ता की कीर्ति हो। उ०—गीध मानो गुरु, कपि भालु मानो मीन कै, पुनीत गीत साके सब साहब समत्थ के।—तुलसी (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

७ समय। अवसर। मौका। उ०—जो हम मरन दिवस मन ताका। आजु आइ पूजी वह साका।—जायसी (शब्द०)।

साकार[1]—वि० [सं०] १ जिसका कोई आकार हो। जिसका स्वरूप हो। जो निराकार न हो। आकार या रूप से युक्त। २ मूर्तिमान। साक्षात्। ३ स्थूल। व्यक्त। ४ अच्छे आकार का। सुंदर (को०)।

साकार[2]—संज्ञा पुं० ईश्वर का वह रूप जो आकार युक्त हो। ब्रह्म का मूर्तिमान स्वरूप।

साकारता—संज्ञा स्त्री० [सं०] साकार होने का भाव। साकारपन।

साकारोपासना—संज्ञा स्त्री० [सं०] ईश्वर की वह उपासना जो उसका कोई आकार या मूर्ति बनाकर की जाती है। ईश्वर की मूर्ति बनाकर उसकी उपासना करना।

साकित(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शाक्त] दे० 'शाक्त'। उ०—साकित गिरही बानेधारी है सबही अज्ञान।—चरण० बानी, पृ० ८४।

साकिन—वि० [अ०] निवासी। रहनेवाला। बाशिंदा। जैसे,—रामलाल साकिन मौजा रामनगर। २ निश्चेष्ट। गतिहीन (को०)। ३ स्वर वर्ण से रहित। हलत (को०)।

साकिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० शाकिनी] पिशाचिनी। डाइन। उ०—घूमत कहूँ काली करालवदना मुँह बाए। भुंड डाकिनी और साकिनी संग लगाए।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ३१।

साकिया—संज्ञा पुं० [अ० साकियह्] शराब पिलानेवाली स्त्री। उ०—जो बढ़ कर पलकें सहज दो घूँट हँसकर पी गया। जिससे सुधा मिश्रित गरल वह साकिया का जाम है।—हिल्लोल, पृ० ३६।

साकी[1]—संज्ञा पुं० [देश०] कपूर कचरी। गंध पलाशी।

साकी[2]—संज्ञा पुं० [अ० साकी] १ वह जो लोगों को मद्य पिलाता हो। शराब पिलानेवाला। उ०—सिर्फ खैयामों की आवश्यकता है, साकी हजारों सुराही लिए यहाँ तैयार मिलेंगे।—किन्नर०, पृ० ३७। २ वह जिसके साथ प्रेम किया जाय। माशूक।

साकुच—संज्ञा पुं० [सं०] सकुची मछली। शकुल मत्स्य।

साकुन, साकुन्न(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शाकुन] दे० 'शाकुन–२'। उ०—साकुन्न कला क्रीडन विसार। चिन्नन सुजोग कवि चवत चारु।—पृ० रा०, १।७३३।

साकुर†—संज्ञा पुं० [हिं०] घोड़ा। उ०—एता लिछमण आपिया, साकुर ऊँट समाज।—शिखर०, पृ० १०६।

साकुरुंड—संज्ञा पुं० [सं० साकुरुण्ड] दे० 'सकुरुंड'।

साकुल—वि० [सं०] हतबुद्धि। परीशान। घबड़ाया हुआ (को०)।

साकुश†—संज्ञा पुं० [डिं०] घोड़ा। अश्व। वाजि।

साकूत—वि० [सं०] १ अर्थयुक्त। सार्थक। साभिप्राय। २ क्रीडापूर्वक। ३ शृंगारप्रिय। स्वेच्छाचारी। विषयी (को०)।

साकूतस्मित—संज्ञा पुं० [सं०] १ अर्थपूर्ण मुस्कान। २ कामुक दृष्टि। वासनाभरी निगाह (को०)।

साकूतहसित—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'साकूतस्मित' (को०)।

साक्रत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शाकल्य] शाकल्य। साकला हवन करने की वस्तु। उ०—सिद्धि सिद्धि वेताल पेपि पल साक्रत छंडिय।—पृ० रा०, २५।४५३।

साकेत—संज्ञा पुं० [सं०] अयोध्या नगरी। अवधपुरी।

साकेतक—संज्ञा पुं० [सं०] साकेत का निवासी। अयोध्या का रहनेवाला।

साकेतन—संज्ञा पुं० [सं०] साकेत। अयोध्या।

साकोटक—संज्ञा पुं० [सं० शाखोटक] शाखोट वृक्ष। सिहोर।

साकोह†—संज्ञा पुं० [सं० शाल] साख्। शाल। वृक्ष।

साक्त—संज्ञा पुं० [सं० शाक्त] दे० 'शाक्त'। उ०—सो एक समै एक साक्त गाम की सहनगी लै भूमि भरन आयो।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० ३१७।

साक्तुक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ जौ जिससे सत्तू बनता है। भूना हुआ जौ। २ जौ का सत्तू। ३ एक प्रकार का विष।

साक्तुक[2]—वि० सत्तू संबंधी। सत्तू का।

साक्ष—वि० [सं०] १ नेत्रयुक्त। नेत्रसहित। २ अक्षमाला या जप के मनकों से युक्त (को०)।

साक्षर—वि० [सं०] जिसे अक्षरों का बोध हो। जो पढ़ना लिखना जानता हो। शिक्षित।

साक्षरता—संज्ञा पुं० [सं० साक्षर+ता (प्रत्य०)] शिक्षित होने का भाव। पढ़ा लिखा होना।

साक्षरता आंदोलन—संज्ञा पुं० [हिं० साक्षरता+आंदोलन] अपढ़ लोग पढ़ लिख सकें और उनमें शिक्षा का प्रसार हो इस दृष्टि से किया जानेवाला आंदोलन या आयोजन। शिक्षाप्रसार अभियान।

साक्षात्[1]—अव्य० [सं०] १ सामने। समक्ष। प्रत्यक्ष। २. वस्तुतः। ठीक ठीक। ३ सीधे। बिना किसी माध्यम के।

साक्षात्[2]—वि० मूर्तिमान्। साकार। स्पष्ट। जैसे,- आप तो साक्षात् सत्य हैं।

साक्षात्[3]—संज्ञा पुं० भेंट। मुलाकात। देखा देखी।

साक्षात्कर—वि० [सं०] साक्षात् करनेवाला। साक्षात्कारी।

साक्षात्करण—संज्ञा पुं० [सं०] १ दृष्टिगत कराने का कार्य। आँखों के समक्ष उपस्थित करना। २ इंद्रियबोध कराना। ३ आभ्यंतरिक ज्ञान। आंतरिक ज्ञान (को०)।

साक्षात्कर्ता – वि० [सं० साक्षात्कर्तृ] साक्षात् करनेवाला [को०]।

साक्षात्कार—संज्ञा पुं० [सं०] १ भेंट। मुलाकात। मिलन। २ पदार्थों का इंद्रियों द्वारा होनेवाला ज्ञान।

साक्षात्कारी—संज्ञा पुं० [सं० साक्षात्कारिन्] १ साक्षात् करनेवाला। २ भेंट या मुलाकात करनेवाला।

साक्षात्कृत—वि० [सं०] साक्षात्कार कराया हुआ। प्रत्यक्ष कराया हुआ [को०]।

साक्षात्क्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अंतर्ज्ञानपरक प्रत्यक्ष ज्ञान। २ प्रत्यक्षीकरण [को०]।

साक्षाद्दृष्ट—वि० [सं०] साक्षात् देखा हुआ। आँखों से देखा हुआ।

साक्षिणी—वि० स्त्री० [सं०] साक्ष्य प्रस्तुत करनेवाली। प्रमाणस्वरूप। उ०—कहेगी शतद्रु शतसगरों की साक्षिणी सिक्ख थे सजीव।—लहर, पृ० ६०।

साक्षिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] साक्षी का काम। साक्षित्व। गवाही।

साक्षित्व—संज्ञा पुं० [सं०] साक्षिता [को०]।

साक्षिद्वैध—संज्ञा पुं० [सं०] साक्षी में दुविधा होना [को०]।

साक्षिपरीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गवाह की परीक्षा [को०]।

साक्षिप्त—अव्य० [सं०] अविचारपूर्वक। अविचारित। बिना विचारे।

साक्षिप्रत्यय—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'साक्षीप्रत्यय'।

साक्षिभावित—वि० [सं०] गवाह के बयान से सिद्ध [को०]।

साक्षिभूत—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम।

साक्षिमान्आधि—संज्ञा पुं० [सं०] साक्षियों के सामने गिरवी रखा हुआ धन जिसकी लिखापढ़ी न की गई हो।

साक्षी[1]—संज्ञा पुं० [सं० साक्षिन्] [वि० स्त्री० साक्षिणी] १ वह मनुष्य जिसने किसी घटना को अपनी आँखों देखा हो। चश्मदीद गवाह। २ वह जो किसी बात की प्रामाणिकता बतलाता हो। गवाह। ३ देखनेवाला। दर्शक। ४ परमात्मा (को०)। ५ दर्शन शास्त्र में पुरुष या ब्रह्म् (को०)।

साक्षी[2]—वि० १ द्रष्टा। देखनेवाला। अपनी आँखों से किसी घटना को देखनेवाला [को०]।

साक्षी[3]—संज्ञा स्त्री० किसी बात को कहकर प्रमाणित करने की क्रिया।

साक्षीद्वैध—संज्ञा पुं० [सं०] विरोधी बयान। बयानों में परस्पर अंत-विरोध [को०]।

साक्षीपरीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गवाह की परीक्षा लेना। जिरह [को०]।

साक्षीप्रत्यय—संज्ञा पुं० [सं०] गवाहों का बयान [को०]।

साक्षीप्रश्न—संज्ञा पुं० [सं०] साक्षीपरीक्षा। जिरह [को०]।

साक्षीभावित—वि० [सं०] प्रमाण या सबूत से सिद्ध [को०]।

साक्षीभूत[1]—वि० [सं०] १ साक्षात्कार करनेवाला। स्वयंद्रष्टा। २ प्रमाणस्वरूप। उ०—वर सो जीवन मुक्त है तुरिया साक्षीभूत।—सुंदर० ग्रं०, भा० २, पृ० ७८६।

साक्षीभूत[2]—संज्ञा पुं० विष्णु [को०]।

साक्षीलक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] साक्षी से सिद्ध। प्रमाण से सिद्ध [को०]।

साक्षेप—वि० [सं०] १ पक्षपाती। पक्ष लेनेवाला। आपत्तिजनक। २ व्यंग्यपूर्ण। ताने से युक्त [को०]।

साक्ष्य[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ साक्षी का काम। गवाही। शहादत। प्रमाण। उ०—दरिया साहब के निधन के लगभग ३० वर्ष बाद ही इस पंथ के तीन साधुओं के साक्ष्य के आधार पर अपना वृत्तांत लिखा था।—संत० दरिया, पृ० ८। २ दृश्य।

साक्ष्य[2]—वि० दृश्य। दिखाई देनेवाला। (समासांत में प्रयुक्त)।

साख[1]—संज्ञा पुं० [हिं० साक्षी] १ साक्षी। गवाह। २. गवाही। शहादत। उ०—(क) तुम बसीठ राजा की ओरा। साख होहु यह भीख निहोरा।—जायसी (शब्द०)। (ख) जैसी भुजा, कलाई तेहि बिधि जाय न भाखा। कंकन हाथ होय जेहि तेहि दरपन का साख।—जायसी (शब्द०)।

मुहा०—साख पूरना = साखी भरना। समर्थन करना।

साख[2]—संज्ञा पुं० [सं० शाका, हिं० साका] १ धाक। रोब। २ मर्यादा। उ०—प्रीति बेल उरझइ जब तब सुजान सुख साख।—जायसी (शब्द०)। ३ बाजार में वह मर्यादा या प्रतिष्ठा जिसके कारण आदमी लेन देन कर सकता हो। लेन-देन का खरापन या प्रामाणिकता। जैसे,—जबतक बाजार में साख बनी थी, तबतक लोग लाखों रुपए का माल उन्हें उठा देते थे। ४ विश्वास। भरोसा।

क्रि० प्र०—बनना। —बिगड़ना।

साख[3]—संज्ञा स्त्री० [सं० शाखा] १ दे० 'साखा'। २ उपज। फसल। उ०—ढाढी एक संदेसड़उ कहि ढोलउ समझाइ। जोबण आँबउ फलि रह्यउ साख न खावउ आइ।—ढोला०, दू० ११७।

साख ⓤ[4]—संज्ञा स्त्री० [सं० शिखा] शिखा। ज्वाला। उ०—सपख अगनग साख सी। रन रोप मारग राप सी।—रघु० रू०, पृ० ६७।

साखत ⓤ—संज्ञा पुं० [?] घोड़े के आभूषण विशेष। उ०—साखत पेमवद अरु पूजी। हीरन जटित हैकलें दूजी।—हम्मीर०, पृ० ३।

साखना ⓤ—क्रि० स० [सं० साक्षि, हिं० साख + ना (प्रत्य०)] साक्षी देना। गवाही देना। शहादत देना। उ०—जन की और कौन पत राखै। जात पाँति कुलकानि न मानत वेद पुराननि साखै।—सूर०, १।१५।

साखर ⓤ†—वि० [सं० साक्षर] जिसे अक्षरों का ज्ञान हो। पढ़ा लिखा। साक्षर।

साखा ⓤ†—संज्ञा स्त्री० [सं० शाखा] १ वृक्ष की शाखा। डाली। टहनी। उ०—भरी भार साखा रही भुम्मि लग्गी। लगे सकुल पादप तें उमग्गी।—ह० रासो, पृ० ३५। २ वंश या जाति की शाखा या उपभेद। ३ दे० 'शाखा'। ४ वह कीली जो चक्की के बीच में लगी होती है। चक्की का धुरा। ५ सोचने विचारने का सिलसिला। विचारक्रम। उ०—जो करि तर्क बढ़ावैं साखा।—मानस, १।५२।

**साखामृग**Ⓟ—संज्ञा पु० [सं० शाखामृग] दे० 'शाखामृग'। उ०—सठ साखामृग जोरि सहाई। बाधा सिंधु इहै प्रभुताई। —मानस, ६।२८।

**साखि**Ⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० साक्षि, प्रा० साक्खि] दे० 'साखी'। गवाही। उ०—व्याध, गनिका, गज, अजामिल साखि निगमनि भने। —तुलसी ग्रं०, पृ० ५३६।

**साखिल्य**—संज्ञा पु० [सं०] दोस्ती। मैत्री। मित्रता [को०]।

**साखी¹**—संज्ञा पु० [सं० साक्षि] साक्षी। गवाह। उ०—(क) ऊँच नीच ब्यौरो न रहाइ। ताकी साखी मैं सुनि भाइ।—सूर०, १।२३०। (ख) सूरदास प्रभु अटक न मानत ग्वाल सबै हैं साखी।—सूर०, १०।७७४।

**साखी²**—संज्ञा स्त्री० १ साक्षी। गवाही।

मुहा०—साखी पुकारना = साक्षी का कुछ कहना। साक्षी देना। गवाही देना। उ०—याते योग न आवै मन मे तू नीके करि राखि। सूरदास स्वामी के आगे निगम पुकारत साखि।—सूर (शब्द०)।

२ ज्ञान संबंधी पद या दोहे। वह कविता जिसका विषय ज्ञान हो। जैसे,—कबीर की साखी। उ०—साखी सबदी दोहरा कहि किहनी उपखान। भगति निरूपहि भगत कलि निंदहि वेद पुरान।—तुलसी ग्रं०, पृ० १५१।

**साखी³**—संज्ञा पु० [सं० शाखिन्] १ (शाखाओं वाला) वृक्ष। पेड़। उ०—(क) तुलसीदास रूँध्यो यहै मठ साखि सिहारे।—तुलसी (शब्द०)। (ख) धरती बान बेधि सब राखी। साखी ठाढ देहि सब साखी।—जायसी (शब्द०)। २ †पंच। निर्णायक।

**साखीभूत**Ⓟ—संज्ञा पु० [सं० साक्षीभूत] दे० 'साक्षिभूत'। उ०—करता है सो करेगा, दादू साखीभूत।—दादू०, पृ० ४५७।

**साखू**—संज्ञा पु० [सं० शाख] शाल वृक्ष। सखुआ। अश्वकर्ण वृक्ष।

**साखेय**—वि० [सं०] १ जो सखा या मित्र से संबंधित हो। २. मैत्रीपूर्ण। मिलनसार [को०]।

**साखोचार**Ⓟ—संज्ञा पु० [सं० शाखोच्चार] दे० 'साखोचारन'। उ०—बर कुअँरि करतल जोरि साखोचारु दोउ कुलगुर करैं। —मानस, १।३२४।

**साखोचारन**Ⓟ†—संज्ञा दे० [सं० शाखोच्चारण] विवाह के अवसर पर वर और वधू के वंश गोत्रादि का चिल्ला चिल्लाकर परिचय देने की क्रिया। गोत्रोच्चार।

**साखोच्चार**Ⓟ—संज्ञा पु० [सं० शाखोच्चार] दे० 'साखोचारन'। उ०—बर दुलहिनिहि बिलोकि सकल मन रहसहि। साखोच्चार समय सब सुर मुनि बिहसहि।—तुलसी ग्रं०, पृ० ४१।

**साखोट¹**—संज्ञा पु० [सं० शाखोट] शाखोट वृक्ष। सिहोर वृक्ष। सिहोरा। भूतावास।

**साखोट†²**—वि० छोटा, टेढ़ा और भद्दा (वृक्ष)।

**साख्त¹**—संज्ञा स्त्री० [फा० साख्त] १ बनावट। गढ़न। २ कृत्रिमता। बनावटीपन। ३ काट छाँट। तराश। ४ बहाना। व्याजवार्ता [को०]।

**साख्ता**—वि० [फा० साख्तह्] १ निर्मित। बनाया हुआ। २ बनावटी। कृत्रिम। नकली।

यौ०—साख्ता परदाख्ता = (१) पालापोसा। बनाया सँवारा। (२) कृत। किया कराया। किया हुआ।

**साख्त**Ⓟ†²—संज्ञा पु० [सं० शाक्त, पु० हिं० साकट, साकत] दे० 'शाक्त'। उ०—साख्त मुठे बाट महिं जानि न मिलहिं हजूर। सत सहाई साथ बिनु मरहि बिसूर बिसूर।—प्राण०, पृ० २५३।

**साख्तगी**—संज्ञा स्त्री० [फा० साख्तगी] बनावट। गढ़न [को०]।

**साख्य**—संज्ञा पु० [सं०] सखा भाव। मैत्री। मित्रता [को०]।

**साख्यात**Ⓟ†—अव्य० [सं० साक्षा(क्षा) त्] दे० 'साक्षात्'। उ०—अवर सिरीमुख उक्त रा, उभै भेद अखियात। पहिलो कल्पत पेखजै, समभ बियौ साख्यात।—रघु० रू०, पृ० ८६।

**साग¹**—संज्ञा पु० [सं० शाक] पौधो की खाने योग्य पत्तियाँ। शाक। भाजी। जैसे,—सोए, पालक, बथुए, मरसे आदि का साग। २ पकाई हुई भाजी। तरकारी। जैसे,—आलू का साग, कुम्हड़े का साग। (वैष्णव)।

यौ०—सागपात = कदमूल। रूखासूखा भोजन। जैसे,—जो कुछ सागपात बना है, कृपा करके भोजन कीजिए।

मुहा०—सागपात समझना = बहुत तुच्छ समझना। कुछ न समझना।

**साग**Ⓟ²—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति, हिं० साँग] दे० 'साँग'। उ०—गहि सुभ साग उद्द कर लिनिय। लखत पसर सावतन किनिय। —प० रासो०, पृ० १२०।

**सागड़ी**Ⓟ—संज्ञा पु० [सं० शाकटिक] शकट या रथ चलानेवाला। सारथी। उ०—सोच करै नह सागडी, धवल तणी दिस भाल।—बाँकी० ग्रं०, भा० १, पृ० ३८।

**सागम**—वि० [सं०] यथान्याय। न्याय्य। उचित। ईमानदारी से प्राप्त। वैधानिक [को०]।

**सागरगम**—वि० [सं० सागरङ्गम] दे० 'सागरग'।

**सागर¹**—संज्ञा पु० [सं०] १ समुद्र। उदधि। जलधि। दे० 'समुद्र'।

विशेष—ऐसा माना जाता है कि राजा सगर के नाम पर 'सागर' शब्द पड़ा।

२ बड़ा तालाब। झील। जलाशय। ३ सन्यासियो का एक भेद। ४ एक प्रकार का मृग। ५ चार की संख्या (को०)। ६ दस पद्म की संख्या (को०)। ७ एक नाग। नागदैत्य (को०)। ८ गत उत्सर्पिणी के तीसरे अर्हत। ९ सगर के पुत्र (को०)।

मुहा०—सागर उमडना = आधिक्य होना। मात्रा मे अत्यधिक होना। उ०—सागर उमडा प्रेम का खेवटिया कोइ एक। सब प्रेमी मिलि बूडते जो यह नहिं होता टेक।—कबीर सा० सं०, पृ० ५१।

**सागर²**—वि० सागर संबंधी। समुद्र संबंधी।

**सागर³**—संज्ञा पु० [अ० सागर] १ प्याला। खोरा। २ शराब का प्याला। उ०—वचन का पी सागर सुराही अकल। भया मद फिरा सत अर्जा मे नवल।—दक्खिनी०, पृ० २६७।

सागरक—संज्ञा पुं० [सं०] एक जनपद या नगर [को०]।

सागरकश—वि० [फ़ा० सागरकश] शराब पीनेवाला। मद्यप [को०]।

सागरगंभीर—संज्ञा पुं० [सं० सागरगम्भीर] समुद्र की तरह गंभीर समाधि [को०]।

सागरग, सागरगम—वि० [सं०] समुद्र यात्रा करनेवाला। समुद्र में जानेवाला [को०]।

सागरगमा, सागरगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नदी। दरिया। २ गंगा नदी (को०)।

सागरगामिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी। सरिता [को०]।

सागरगामी—वि० [सं० सागरगामिन्] [स्त्री० सागरगामिनी] दे० 'सागरग' [को०]।

सागरगासुत—संज्ञा पुं० [सं०] गंगा के पुत्र--भीष्म [को०]।

सागरज—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र लवण।

सागरजमल—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्रफेन। अब्धिकफ।

सागरधरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी। भूमि।

सागरधीरचेता—वि० [सं० सागरधीरचेतस्] समुद्र की तरह विशाल, दृढ़ तथा गंभीर मनोवृत्तिवाला [को०]।

सागरनेमि, सागरनेमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] धरित्री। पृथ्वी।

सागरपर्यंत—क्रि० वि० [सं० सागरपर्यन्त] १ सागर से घिरा हुआ (जैसे,—पृथ्वी)। २ सागर तक। आसमुद्र [को०]।

सागरप्लवन—संज्ञा पुं० [सं०] १ समुद्र पार करना। समुद्र संतरण। २ घोड़े की एक विशेष चाल [को०]।

सागरमति—संज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम [को०]।

सागरमुद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ध्यान, आराधना करने की एक प्रकार की मुद्रा।

सागरमेखला—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

सागरलिपि—संज्ञा स्त्री० [सं०] ललित विस्तर के अनुसार एक प्राचीन लिपि।

सागरवरधर—संज्ञा पुं० [सं०] महासागर।

सागरवासी—संज्ञा पुं० [सं० सागरवासिन्] १ वह जो समुद्र में रहता हो। समुद्र में रहनेवाला। २ वह जो समुद्र के तट पर रहता हो। समुद्र के किनारे रहनेवाला।

सागरव्यूहगर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम।

सागरशय—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो समुद्र में सोता हो, विष्णु का एक नाम [को०]।

सागरशुक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] समुद्री सीप [को०]।

सागरसुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी [को०]।

सागरसूनु—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा [को०]।

सागरांत—संज्ञा पुं० [सं० सागरान्त] समुद्र का किनारा।

सागरांता—संज्ञा स्त्री० [सं० सागरान्ता] पृथ्वी। धरती [को०]।

सागरांबरा—संज्ञा स्त्री० [सं० सागराम्बरा] पृथ्वी।

सागरा—संज्ञा पुं० [सं० सागर ?] श्री राग का एक पुत्र। उ०—सावा सारग सागरा औ गंधारी भीर। अस्ट पुत्र श्रीराग के गौल बुड गभीर।—माधवानल०, पृ० १९४।

सागरानुकूल—वि० [सं०] समुद्र के किनारे पर बसा हुआ [को०]।

सागरापांग—वि० [सं० सागरापाङ्ग] समुद्र से घिरा हुआ। जैसे,—पृथ्वी [को०]।

सागरालय—संज्ञा पुं० [सं०] १ सागर में रहनेवाले, वरुण। २ वह जो समुद्र में रहता हो। समुद्रवासी [को०]।

सागरावर्त—वि० [सं०] समुद्र की खाड़ी [को०]।

सागरेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] एक तीर्थ का नाम।

सागरोत्थ—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्री लवण।

सागरोद्गार—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र का उमड़ना। ज्वार [को०]।

सागरोपम—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो समुद्र की तरह उदात्त, अतलस्पर्श और गंभीर हो। २ एक बहुत बड़ी संख्या (जैन)।

सागवन, सागवान—संज्ञा पुं० [हिं० सागौन] एक वृक्ष दे० 'शाल—१'।

सागस—वि० [सं० स+आगस] सापराध। अपराधी। कसूरवार। उ०—प्रीतम को जब सागस लहै। व्यंगि अव्यंगि वचन कछु कहै।—नंद० ग्रं०, पृ० १४७।

सागुन्य(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शाकुनिक (= सगुनियाँ), हिं० सगुन] शकुन विचारनेवाला। उ०—सागुन्य सग्गुन फल कहे जब्ब। प्रमुदित्त मन चहुआन तब्ब।—पृ० रा०, १७।४५।

सागू—संज्ञा पुं० [अ० सैगो] १ ताड़ की जाति का एक प्रकार का पेड़ जो जावा, सुमात्रा, बोर्निओ आदि में अधिकता से पाया जाता है और बंगाल तथा दक्षिण भारत में भी लगाया जाता है।

विशेष—इसके कई उपभेद हैं जिनमें से एक को माड़ भी कहते हैं। इसके पत्ते ताड़ के पत्तों की अपेक्षा कुछ लंबे होते हैं और फल सुडौल गोलाकार होते हैं। इसके रेशों से रस्से, टोकरे और बुरुश आदि बनते हैं। कहीं कहीं इसमें से पाछकर एक प्रकार का मादक रस भी निकाला जाता है और उस रस से गुड़ भी बनता है। जब यह पंद्रह वर्ष का हो जाता है तब इसमें फल लगते हैं और इसके मोटे तने में आटे की तरह का एक प्रकार का सफेद पदार्थ उत्पन्न होकर जम जाता है। यदि यह पदार्थ निकाला न जाय, तो पेड़ सूख जाता है। यही पदार्थ निकालकर पीसते हैं और तब छोटे छोटे दानों के रूप में सुखाते हे। कुछ वृक्ष ऐसे भी होते हैं जिनके तने के टुकड़े टुकड़े करके उनमें से गूदा निकाल लिया जाता है और पानी में कूटकर दानों के रूप में सुखा लिया जाता है। इन्हीं को सागूदाना या साबूदाना कहते हैं। इस वृक्ष का तना पानी में जल्दी नहीं सड़ता, इसलिये उसे खोखला करके उससे नली का काम लेते हैं। यह वृक्ष वर्षा ऋतु में बीजों से लगाया जाता है।

२ दे० 'सागूदाना'।

सागूदाना—संज्ञा पुं० [हिं० सागू+दाना] सागू नामक वृक्ष के तने का गूदा। साबूदाना।

विशेष—यह पहले आटे के रूप में होता है और फिर कूटकर दानों के रूप में सुखा लिया जाता है। यह बहुत जल्दी पच

जाता है, इसलिये यह दुर्बलों और रोगियों को पानी या दूध में उबालकर, पथ्य के रूप में दिया जाता है। इसे साबूदाना भी कहते हैं। विशेष— दे० 'साबू'।

सागे|—क्रि० वि० [?] प्रकट में।—रघु० रू०, पृ० २३६।

सागो—संज्ञा पुं० [अ० सैगो] दे० 'साबू'।

सागौन—संज्ञा पुं० [अ० सैगो] दे० 'शाल'—१।

साग्नि—वि० [सं०] १ अग्नि सहित। अग्नियुक्त। २ यज्ञाग्नि को रखनेवाला। ३ अग्नि संबंधी (को०)।

साग्निक'—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसके पास यज्ञ या हवन की अग्नि रहती हो। वह जो बराबर अग्निहोत्र आदि किया करता हो। अग्निहोत्री। २ अग्नि द्वारा साक्षी किया हुआ।

साग्र—वि० [सं०] १. समस्त। कुल। सब। २ बचा हुआ। शेष। अधिक (को०)।

साघल(पु)†—क्रि० वि० [सं० सकल, प्रा० सगल, सयल] सब। समग्र। उ०—साठ अतेवर राजकुमार साघलाँ ऊपरि जाति पमाँर। —बी० रासो, पृ० ३०।

साच(पु)—वि० [सं० सत्य, प्रा० सच्च, हिं० सच] दे० 'सत्य'। उ०—इस पतिया का यह परिमाण। साच सील चालो सुलतान। —दक्खिनी०, पृ० २१।

साचक—संज्ञा स्त्री० [तु० साचक] मुसलमानों में विवाह की एक रस्म जिसमें विवाह से एक दिन पहले वर पक्षवाले अपने यहाँ से कन्या के लिये मेहँदी, मेवे, फल तथा कुछ सुगंधित द्रव्य आदि भेजते हैं।

साचय(पु)—अव्य० [सं० सत्यम्] वस्तुत। यथार्थत। सचमुच। उ०—सरत्रि राव राखि राखि मैं सरत्रि साचय। —ह० रासो, पृ० ५१।

साचरज(पु)—वि० [सं० स+आश्चर्य] आश्चर्य के साथ। आश्चर्ययुक्त। उ० - जयत (साचरज)—वाह! कार्तिकेय—वृत्रासुर के वचन सुनि चकित होइ सुरराइ।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ४६३।

साचरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रागिनी जो कुछ लोगों के मत से भैरव राग की पत्नी है।

साचार—वि० [सं०] १ सद्‌व्यवहार से युक्त। २ सद् आचार से युक्त। अच्छे आचरणवाला (को०)।

साचि—क्रि० वि० [सं०] बगल से। टेढ़े तिरछे (को०)।

साचिवाटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद पुनर्नवा। गदहपूरना।

साचिविलोकित—संज्ञा पुं० [सं०] तिरछी निगाह। वक्र दृष्टि। टेढ़ी चितवन (को०)।

साचिव्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ सचिव का भाव या धर्म। सचिवता। २ शासन (को०)। ३ सहायता। मदद।

साचिव्याक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] आपत्ति पूर्ण स्वीकृति। आपत्ति गुंफित स्वीकार।

साची कुम्हड़ा—संज्ञा पुं० [देश० साची+कुम्हड़ा] भतुआ कुम्हड़ा। सफेद कुम्हड़ा। पेठा।

साचीकृत—वि० [सं०] १ टेढ़ा बनाया हुआ। २ तिरछा। भुका हुआ। ३ विकृत।

साचीगुण—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक देश का नाम।

साचीन—वि० [सं०] बगल से आनेवाला (को०)।

साच्छात(पु)—अव्य० [सं० साक्षात्, प्रा० सच्छात] दे० 'साक्षात्'। उ० - अरु साच्छात मात को भ्रात। सो वह कस हन्यौ किहि बात।—नंद० ग्रं०, पृ० २१६।

साच्छी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० साक्षी] दे० 'साक्षी'। उ०—महा मुद्र साच्छी चिद्रूप। परमातम प्रभु परम अनूप।—दरिया० बानी, पृ० १६।

साछ(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० साक्ष्य] दे० 'साख', 'साक्ष्य'। उ०—सतगुर के सदकै करूँ, दिल अपणी का साछ।—कबीर ग्रं०, पृ० १।

साछी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० साक्षिन्] दे० 'साक्षी'। उ०—रसिक पपीहा साछी आछी अछरौटी के।—घनानंद, पृ० २०५।

साज'—संज्ञा पुं० [सं०] पूर्व भाद्रपद नक्षत्र।

साज²—संज्ञा पुं० [फा० साज, मि० सं० सज्जा] १. सजावट का काम। तैयारी। ठाटबाट। २ वह उपकरण जिसकी आवश्यकता सजावट आदि के लिये होती हो। वे चीजें जिनकी सहायता से सजावट की जाती है। सजावट का सामान उपकरण। सामग्री। जैसे,—घोडे का साज (जीन लगाम, तंग, दुमची आदि), लहँगे का साज (गोटा, पट्ठा, किनारी आदि) बरामदे का साज (खंभे, घुडिया आदि)।

यौ०—साजसमाज = साज सज्जा। अलकार। उ०—आए साजसमाज सजि भूषन बसन सुदेश।—तुलसी ग्रं० पृ० ८२। साजसामान।

मुहा०—साज सजना = तैयारी करना। व्यवस्था करना। उ०—मो कह तिलक साज सजि सोऊ।—मानस, २। १८२

३ वाद्य। बाजा। जैसे,—तबला, सारंगी, जोड़ी, सितार, हारमोनियम आदि।

मुहा०—साज छेड़ना = बाजा बजना आरंभ करना। साज मिलाना = बाजा बजाने से पहले उसका सुर आदि ठीक करना।

४. लडाई में काम आनेवाले हथियार। जैसे,—तलवार, बंदूक, ढाल, भाला आदि। उ०—करी तयारी काट में, सजा जुद्ध को साज।—हम्मीर० पृ० २६। ५ बढ़इयों का एक प्रकार का रंदा जिससे गोल गलता बनाया जाता है। ६ मेल जोल। घनिष्टता।

यौ०—साजबाज = हेलमेल। घनिष्ठता।

क्रि० प्र०—करना।—रखना।—होना।

साज³—वि० १. बनानेवाला। मरम्मत या तैयार करनेवाला। काम करनेवाला। २ बनाया हुआ। निर्मित। रचित।

विशेष—इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग यौगिक शब्दों के अंत में होता है। जैसे,—घड़ीसाज, रंगसाज, जिल्दसाज आदि।

साज⁴—संज्ञा पुं० [सं०] साखू या साल का वृक्ष जिसकी लकड़ी इमारती कामों में आती है। उ०—इमारती लकडी में सागौन,

साज, सेमल, बीजा, हल्दुग्रा, तिंशा, शीशम, सलई ग्रादि किस्म की लकडी वहुतायत से पाई जाती है।--शुक्ल ग्रभि० ग्र० पृ० १४।

साजक—संज्ञा पुं० [सं०] वाजरा। वजरा।

साजगार— वि० [फा० साजगार] १ शुभद। ग्रनुकूल। माफिक [को०]।

साजगिरी—संज्ञा स्त्री० [देश०] संपूर्ण जाति का एक राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते ह।

साजड--संज्ञा पुं० [देश०] गुलू नामक वृक्ष जिससे कतीरा गोंद निकलता हे। विशेष दे० 'गुलू'।

साजति(पु)†--संज्ञा स्त्री० [हिं० सजावट] सजावट। दे० 'सज्जा'। उ०--जान तणी साजति करउ। जीरह रगावली परिहरज्यो टोप।--बी० रासो, पृ० ११।

साजन--संज्ञा पुं० [सं० सज्जन] १ पति। भर्ता। स्वामी। २ प्रेमी। वल्लभ। ३ ईश्वर। ४ सज्जन। भला ग्रादमी।

साजना(पु)†¹—क्रि० स० [सं० सज्जा] १ दे० 'सजाना'। उ०—(क) चढा ग्रसाढ गगन घन गाजा। साजा विरह दुद दल वाजा —जायसी (शब्द०)। (ख) वेल ताल जुग हेम कलस गिरि कटोरि जिनिग्रा कुच साजा।— विद्यापति, पृ० ७१। २ सजाना। तैयार करना। ३ छोटे वडे पानो को उनके ग्राकार के ग्रनुसार ग्रागे पीछे या ऊपर नीचे रखना। (तमोली)।

साजना(पु)²--संज्ञा पुं० [सं० सज्जन] दे० 'साजन'। उ०—मिलहिं जो विछुरे साजना गहि गहि भेंट गहत। तपनि मिरगिसिरा जे सहहि ग्रद्रा ते पलुहत।--जायसी ग्र० (गुप्त), पृ० ३५४।

साजना(पु)³--संज्ञा पुं० [हिं० सजाना] सजावट। साज। सज्जा। उ०—कीन्हेसि सहस ग्रठारह वरन वरन उपराजि। भुगुति दिहेसि पुनि सबन कहँ सकल साजना साजि।--जायसी ग्र०, पृ० २।

साजवाज— संज्ञा पुं० [फा० साजवाज या सं० साज + वाज (ग्रनु०)] १ तैयारी। २ गठवधन। मेलजोल। घनिष्टता। ३ ग्रभिसधि। गुप्त ग्रभिसधि।

सयो० क्रि०—करना।—वढाना।—रखना।—होना।

साजबार—वि० [हिं० साज + फा० वार (प्रत्य०)] शोभास्पद। शोभनीय। उ०—वोलना सुल्ताँ उसे है साजवार। सल्तनत जिसके दायम बरकरार।—दक्खिनी०, पृ० १८७।

साजर—संज्ञा पुं० [देश०] गुलू नामक वृक्ष जिससे कतीरा गोंद, निकलता हे। विशेष दे० 'गुलू'-१।

साजस(पु)†—संज्ञा स्त्री० [फा० साजिश] दे० 'साजिश'। उ०—केता साजस साह सूँ, राजस राणो राण।—रा० रू०, पृ० ३६२।

साजसामान—संज्ञा पुं० [फा० साजसामान] १ सामग्री। उपकरण। ग्रसवाव। जैसे,—वारात का सब साजसामान पहले से ठीक कर लेना चाहिए। २ ठाट बाट।

साजात्य—संज्ञा पुं० [सं०] सजाति होने का भाव जो वस्तु के दो प्रकार के धर्मों मे से एक है (वस्तुग्रो का दूसरे प्रकार का धर्म वैजात्य कहलाता है)। सजातीयता। समान वर्ग या श्रेणी का होना।

साजिंदा—संज्ञा पुं० [फा० साजिन्दह्] १ वह जो कोई साज बजाता हो। साज या वाजा वजानेवाला। २ वेश्याग्रो की परिभाषा मे तबला, सारगी या जोडी बजानेवाला। सपरदाई। समाजी।

साजिश—संज्ञा स्त्री० [फा० साजिश] १ मेल मिलाप। २ किसी के विरुद्ध कोई काम करने मे सहायक होना। किसी को हानि पहुँचाने मे किसी को सलाह या मदद देना। जैसे,—इतना वडा मामला विना उनकी साजिश के हो ही नहीं सकता। ३ दुरभिसधि। षड्यत्र।

साजिशी—वि० [फा० साजिशी] साजिश करनेवाला। कुचक्री। षडयत्री [को०]।

साजीवन(पु)—वि० [सं० सह + जीवन] जीवनयुक्त। सजीव। उ०—केहि विधि मृतक होय साजीवन।—कवीर सा०, पृ० ८।

साजुज्य, साजोज(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सायुज्य] दे० 'सायुज्य'। उ०—(क) ब्रह्म ग्रगिनि जरि सुद्ध ह्वै सिद्धि समाधि लगाइ। लीन होई साजुज्य मे, जोतै जोति लगाइ।—नंद० ग्र०, पृ० १७६। (ख) सालोक सगति रहै, सामीप समुख सोइ। सारूप सारीखा भया, साजोज एकै होइ।—दादू०, पृ० १८६।

साझना(पु)†—क्रि० स० [हिं० सजाना] दे० सजाना'। उ०—लाखाँ सूँ वधई लडाई सार प्रथम साझिया सिपाई।—रा० रू०, पृ० २३६।

साझा—संज्ञा पुं० [सं० सहार्ध्य] १ किसी वस्तु मे भाग पाने का ग्रधिकार। सराकत। हिस्सेदारी। जैसे,—वासी रोटी मे किसी का क्या साझा? (कहा०)।

क्रि० प्र०—लगाना।

२ हिस्सा। भाग। वाँट। जैसे,—उनके गल्ले के रोजगार मे हमारा ग्राधा साझा है।

क्रि० प्र०—करना।—रखना।—होना।

साझी—संज्ञा पुं० [हिं० साझा + ई (प्रत्य०)] वह जिसका किसी काम या चीज मे साझा हो। साझेदार। भागी। हिस्सेदार।

साझेदार - संज्ञा पुं० [हिं० साझा + दार (प्रत्य०)] शरीक होनेवाला। हिस्सेदार। साझी।

साझेदारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० साझेदार + ई (प्रत्य०)] साझेदार होने का भाव। हिस्सेदारी। शराकत।

साट¹—संज्ञा स्त्री० [हिं० सट से ग्रनु०] दे० 'साँट'।

साट†²—वि० [सं० षष्ठि, प्रा० सट्ठि, हिं० साठ] दे० 'साठ'। उ०—साट घरी मो साईं की बीसर, पर नहीं मोकूँ येक घरी हो।—दक्खिनी०, पृ० १३२।

साट(पु)³—संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँठ का ग्रनु०] साजिश। षडयत्र। उ०—शेख तकी वादशाह के पीर का विरुद्धता करना ग्रौर

ब्राह्मणो तथा मुल्लाओं की साट से कबीर साहब के साथ कुव्यवहार करना।—कबीर म०, पृ० १०१।

साट(पु)⁴—संज्ञा पुं० [देशी सट्ट] सट्टा। विनिमय। बदला। उ०—खजर नेत विसाल, गय चाही लागइ चक्ख। एकण साटइ मारुवी, देह एग्गकी लक्ख।—ढोला०, दू० ४५८।

साटक—संज्ञा पुं० [?] १ भूसी। छिलका। २ बिलकुल तुच्छ और निरर्थक वस्तु। निकम्मी चीज। उ०—गज बाजि घटा, भले भूरि भटा, बनिता सुत भौह तकै सब वै। धरनी धन धाम सरीर भलो, सुर लोकहु चाहि इहै सुख स्वै। सब फोकट साटक है तुलसी, अपनो न कछू सपनो दिन द्वै। जर जाउ सो जीवन जानकीनाथ! जियै जग मे तुम्हरो बिन ह्वै।—तुलसी (शब्द०)। ३ एक प्रकार का छद। उ०—छद प्रबध कवित्त जति साटक गाह दुहत्थ।—पृ० रा०, १।८१।

विशेष—कुछ लोग इसे शार्दूलविक्रीडित का अपभ्रष्ट रूप मानते हैं। 'रूपदीप पिंगल' के अनुसार इसका लक्षण इस प्रकार है—कर्मे द्वादश अक आद सज्ञा मात्रा सिवो सागरे। दूज्जी वी करिके कलाष्ट दस वी अर्को विरामाधिकम्। अते गुर्व निहार धार सबके औरो कछू भेद ना। तीसो मत्त उनीस अक बरनेसेसो भएँ शाटिकम्। यथा—आदीदेव प्रनम्य नम्य गुरय वानीय वदे पय।—पृ० रा० १।१।

साटन—संज्ञा पुं० [अं० सैटिन] एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा जो प्राय एकरुखा और कई रगो का होता है। उ०—पीछे अधिकारियो की कुर्सियाँ लगी थीं जिनपर भी नीली साटन चढ़ी थी। भारतेंदु ग्र०, भा० ३, पृ० १०७।

साटना(पु)†—क्रि० स० [हिं० सटाना] १ दो चीजो का इस प्रकार मिलाना कि उनके तल आपस मे मिल जायँ। सटाना। जोडना। मिलाना। २ दे० 'सटाना'।

साटनी—संज्ञा स्त्री० [देश०] कलदरो की परिभाषा मे भालू का नाच।

साटमार†—संज्ञा पुं० [हिं० साँट+मारना] वह जो हाथियो को साँटे मार मारकर लड़ाता हो। हाथियो को लड़ानेवाला।

साटमारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० साटमार+ई (प्रत्य०)] साँटे मार मारकर हाथियो को लड़ाने का कार्य। इस प्रकार की हाथियो की लड़ाई।

साटा(पु)—संज्ञा पुं० [देशी सट्ट, सट्टक (=विनिमय)] १ सौदा। दे० 'सट्टा'। उ०—सोई सास सुजाण नर माँई सेती लाइ। करि साटा सिरजनहार सूँ मँहगे मोलि बिकाइ।—दादू०, पृ० ३८। २ दे० 'साठी'। उ०—कहूँ न मन माने निमष ज्यो मनि बिना भुयग। सद माखन साटी दही। धरचौ रहै मनमद।—पृ० रा०, २।५५६।

साटिकफिटिक†—संज्ञा पुं० [अं० सर्टिफिकेट] प्रमाणपत्र। उ०—लखि कै साँचे साटिकफिटिक सराहै सब जन।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० २४।

साटी—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ पुनर्नवा। गदहपूर्ना। २ सामान। सामग्री। दे० 'साँटी'। ३ कमची। दे० 'साँटी'। उ०—बाजीगर के हाथ डोरी है जब साटिन ते सटका।—सत० दरिया, पृ० १३४।

साटे‡—अव्य० [देशी] बदले मे। परिवर्तन मे।

साटेबरदार—संज्ञा पुं० [हिं० साट+फा० बर+दार (प्रत्य०)] लाठी धारण करनेवाले। लट्ठधारी। उ०—उधर साटेबरदार, बरछीवाले दौड़े, पर चँदोवे के नीचे भगदड़ मच गई।—तितली, पृ० १६१।

साटोप—वि० [सं०] १ आडंबरयुक्त। अभिमानी। मदोद्धत। २. शानदार। शाही। ३ (जल आदि से) फूला या भरा हुआ। ४ गर्जता हुआ। गर्जन करता हुआ। जैसे, बादल [को०]।

साठ¹—वि० [सं० षष्ठि, प्रा० सट्ठि] पचास और दस। जो पचपन से पाँच ऊपर हो।

साठ²—संज्ञा पुं० पचास और दस के योग की सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६०।

साठ³—संज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'साटी'।

साठन—संज्ञा पुं० [अं० सैटिन] दे० 'साटन'। उ०—बढ़िया साठन की मढ़ी हुई कौंच, कुर्सियें जगह जगह मौके से रक्खी थी।—श्रीनिवास ग्र०, पृ० १७७।

साठनाठ—वि० [हिं० साँठि+नाठ (<नष्ट)] १ जिसकी पूँजी नष्ट हो गई हो। निर्धन। दरिद्र। उ०—साठनाठ लग बात को पूँछा। बिन जिय फिरै मूँज तन छूँछा।—जायसी (शब्द०)। २ नीरस। रूखा। ३ इधर उधर। तितर बितर। उ०—चेटक लाइ हरहिं मन जब लहि होइ गथ फेट। साठनाठ उठि भए बटाऊ, ना पहिचान न भेट।—जायसी (शब्द०)।

साठसाती—संज्ञा स्त्री० [सं० सार्ध, प्रा० सड्ढ हिं० साठ+सं० सप्तक ?] 'साढ़ेसाती'।

साठा¹—संज्ञा पुं० [देश०] १ ईख। गन्ना। ऊख। २ एक प्रकार का धान जिसे साठी कहते है। विशेष दे० 'साठी—१'। ३ वह खेत जो बहुत लंबा चौड़ा हो। ४ एक प्रकार की मधुमक्खी जिसे सठगुरिया कहते है।

साठा²—वि० [हिं० साठ] जिसकी अवस्था साठ वर्ष की हो गई हो। साठ वर्ष की उम्रवाला। जैसे,—साठा सो पाठा। (कहा०)।

साठा(पु)³—संज्ञा पुं० [हिं० सट्टा] बदला। उ०—पच बथेरा माँगै दीजै। उनके साठे बहु हय लीजै।—प० रासो, पृ० ११६।

साठी¹—संज्ञा पुं० [सं० षष्टिक] एक प्रकार का धान।

विशेष—कहते है कि यह धान साठ दिन मे तैयार हो जाता है—साँवा, साठी साठ दिना। देव बरीसै रात दिना। इसी से इसे साठी कहते हैं। इसके दाने दो प्रकार के होते है—काले और सफेद। काले की अपेक्षा सफेद दानेवाला अधिक अच्छा समझा जाता है। इसमे गुण अधिक होता है।

साठी(पु)²—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'साटा—१'। उ०—कालबूत कसणी भई, सेवग साठी जान। रज्जब तावै तोरगर, यूँ सतगुरु की बानि।—रज्जब०, पृ० २०।

साड—वि० [सं०] जिसमे आर हो। नुकीला। नोकदार। डकवाला। चुभनेवाला [को०]।

साडना(पु)†--क्रि० स० [हिं० सालना] दे० 'सालना'। उ०--अल्लह कारणि आपका साडै अदरि माहि।--दादू०, पृ० ६४।

साडा–संज्ञा पुं० [देश०] १ घोडो का एक प्राणघातक रोग। २ बाँस का वह टुकडा, जो नाव मे मल्लाहो के बैठने के स्थान के नीचे लगा रहता है।

साडी'--संज्ञा स्त्री० [सं० शाटिका, प्रा०] स्त्रियो के पहनने की धोती जिसमे चौडा किनारा या बेल आदि बनी होती है। सारी।

साड़ी²--संज्ञा स्त्री० [सं० सार] दे० 'साढी--२'।

साढ†--वि० [सं० साध] दे० साढे'।

साढसाती--संज्ञा स्त्री० [हिं० साढ + साती] दे० 'साढेसाती'। उ०--अवध साढसाती जनु बोली।--तुलसी (शब्द०)।

साढ़ासती(पु)--संज्ञा स्त्री० [सं० सार्धक, प्रा० सड्ढअ, साढअ + हिं० साढा + साती] दे० 'साढेसाती'। उ०-- राम ही केतु अर राहु साढासती। राम ही राम सो सप्तवारा।--राम० धर्म०, पृ० २१६।

साढी¹--संज्ञा स्त्री० [सं० आषाढ, हिं० असाढ] वह फसल जो असाढ मे बोई जाती है। असाढी।

साढ़ी²--संज्ञा स्त्री० [देश० अथवा सं० सज्ज + दधि] दूध के ऊपर जमनेवाली बालाई। मलाई। उ०--सब हेरि धरीहै साढी। लै उपर उपरते काटी।--सूर (शब्द०)।

साढी³--संज्ञा स्त्री० [सं० शाल] शाल वृक्ष का गोद।

साढी⁴--संज्ञा स्त्री० [सं० शाटिका] दे० 'साडी'।

साढू--संज्ञा पुं० [सं० श्यालिवोढ़ृ] साली का पति। पत्नी की बहन का पति।

साढे--वि० [सं० सार्द्ध] और आधे से युक्त। आधा और के साथ। जैसे,--साढे सात।

साढ़ेचौहारा--संज्ञा पुं० [हिं० साढे + चौ (= चार) + हारा (प्रत्य०)] एक प्रकार की बाँट जिसमे फसल का ५।१६ अश जमीदार को मिलता है और शेष ११।१६ अश काश्तकार को।

साढ़ेसाती--संज्ञा स्त्री० [हिं० साढे + सात + ई (प्रत्य०)] शनि ग्रह की साढे सात वर्ष, साढे सात दिन आदि की दशा।

विशेष--फलित ज्योतिष के अनुसार शनि ग्रह की साढेसाती का फल बहुत बुरा होता है।

मुहा०--साढेसाती आना या चढना = दुर्दशा या विपत्ति के दिन आना।

साण(पु)†¹--संज्ञा पुं० [फा० शान या सं० शाण] शान। गुमान। उ०--भोरे भोरे तन करै पडै करि कुरबाँण। मिट्ठा कौडा ना लगै, दादू तौ हू साण।--दादू०, पृ० ५५।

साण(पु)†²--संज्ञा स्त्री० [सं० शाण] दे० 'सान'। उ०--जन रज्जब गुरु साण परि भूँठी मनतर वारि।--रज्जव०, पृ० ११।

सात¹--वि० [सं० सप्त, प्रा० सत्त] पाँच और दो। छह से एक अधिक।

सात²--संज्ञा पुं० पाँच और दो के योग की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है--७।

मुहा०--सात की नाक कटना = परिवार भर की बदनामी होना। सात पाँच = चालाकी। मक्कारी। धूर्तता। जैसे,--वह बेचारा सात पाँच नही जानता, सीधा आदमी है। सात धार होकर निकलना = भोजन का बिना पचे पतली दस्त होकर निकलना। सात पाँच करना = (१) बहाना करना। (२) झगडा करना। उपद्रव करना। (३) चालबाजी करना। धूर्तता करना। सात परदे मे रखना = (१) अच्छी तरह छिपा कर रखना। (२) बहुत सँभालकर रखना। सातवें आसमान पर चढना = बहुत घमडी बनना। अत्यधिक अभिमान दिखाना। उ०--मिसेज रालिसन तो जैसे सातवे आसमान पर चढ गई।--जिप्सी, पृ० १६६। सात समुद्र पार = बहुत दूर। उ०--सात समुद्र पार, सहस्रो कोस की दूरी पर बैठे।--प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३७२। सात सलाम(पु) = अनेकानेक प्रणाम। अत्यत विनीतता। उ०--पथी एक सँदेसडउ कहिज्यउ सात सलाम।--ढोला०, दू० १३६। सातो भूल जाना = होश हवाश चला जाना। इद्रियो का काम न करना (पाँच इद्रियाँ, मन और बुद्धि ये सब मिलकर सात हुए)। सात राजाओ की साक्षी देना = बहुत दृढतापूर्वक कोई बात कहना। किसी बात की सत्यता पर बहुत जोर देना। उ०--मनसि बचन अरु करमना कछु कहति नाहिन राखि। सूर प्रभु यह बोल हिरदय सात राजा साखि।--सूर (शब्द०)। सात सीकें बनाना = शिशु के जन्म के छठें दिन की एक रीति जिसमे सात सीकें रखी जाती है। उ०--साथिये बनाइकै देहि द्वारे सात सीक बनाय। नव किसोरी मुदित ह्वै ह्वै गहति यशुदाजी के पायँ।--सूर (शब्द०)।

सात(पु)³--संज्ञा पुं० [सं० शान्त] साहित्य शास्त्र मे वर्णित रसो मे से ६ वाँ रस। विशेष--दे० 'शात'। उ०--बीभछ अरिन समूह, सात उप्पनौ मरन भय।--पृ० रा०, २५।५०१।

सात⁴--वि० [सं०] १ प्रदत्त। दिया हुआ। २ नष्ट। ध्वस्त [को०]।

सात⁵--संज्ञा पुं० [सं०] आनद। प्रसन्नता [को०]।

सातक(पु)¹--वि० [सं० सात्विक] दे० 'सात्विक'। उ०--राजस तामस सातक माया।--प्राण०, पृ० ५६।

सातक²--वि० [सं० सप्त, हिं० सात + क (प्रत्य०) या एक] लगभग सात। जो सात की संख्या के आस पास हो। उ०--साथ किरात छ सातक दीन्हे। मुनिवर तुरत बिदा चर कीन्हे।--मानस, २।२७१।

यौ०--छ सातक = दे० 'सातक²'।

सातगी(पु)--संज्ञा स्त्री० [हिं० सादगी] सात्विकता। सादगी। उ०--दादू माया का गुण बल करै आपा उपजै आइ। राजस् तामस सातगी, मन चचल ह्वै जाइ।--दादू०, पृ० ४१६।

सातत्य--संज्ञा पुं० [सं०] सततता। नैरतय। स्थायी रूप से चलते रहने की स्थिति [को०]।

सातपूती--संज्ञा स्त्री० [हिं० सात + पूती] दे० 'सतपुतिया'।

सातफेरी--संज्ञा स्त्री० [हिं० सात + फेरी] विवाह की भाँवर नामक रीति जिसमे वर और वधू अग्नि की सात बार परिक्रमा करते हैं। सप्तपदी।

सातभाई--संज्ञा स्त्री० [हिं० सात + भाई] दे० 'सतभइया'।

सातम(पु)--वि० [स० सप्तम] दे० 'सातवाँ'। उ०--छउ सातम दिन आवीयो। निहचइ औलगि चालणहार।--बी० रासो, पृ० ४६।

सातमइ(पु)--वि० [हिं० सातम + इ (प्रत्य०)] दे० 'सातवाँ'। उ०--घाट दुर्घट ते लाँघीया। सातमइ मास पहुनइ हो जाई।--बी० रासो, पृ० ७६।

सातला--संज्ञा पु० [स० सप्तला, सातला] एक प्रकार का थूहर जिसका दूध पीले रग का होता है। सप्तला। भूरिफेना। स्वर्णपुष्पी।

विशेष--शालग्राम निघटु मे लिखा है कि यह एक प्रकार की बेल है जो जगलों मे पाई जाती है। इसके पत्ते खैर के पत्तो की भाँति और फूल पीले होते है। इसमे पतली चिपटी फली लगती है जिसे सीकाकाई कहते है। इसके बीज काले होते हैं जिनमे पीले रग का दूध निकलता है। परतु इडियन मेडिकल प्लाट्स के अनुसार यह क्षुप जाति की वनस्पति है। इसकी डाल एक से तीन फुट तक लबी होती है जिसमे रोएँ होते है इसके पत्ते एक इच लबे और चौथाई इच चौडे अडाकार अनीदार होते है। डाल के अत मे बारीक फलो के घने गुच्छे लगते हैं जो लाल रग के होते है। फल चिकने और छोटे होते हैं। यह वनस्पति सुगधयुक्त होती है। इसका तेल सुगधित और उत्तेजक होता है जो मिरगी रोग मे काम आता है।

सातवाँ--वि० [हिं० सात + वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम से सात पर हो। सात की सख्यावाला। छह के बाद पडनेवाली सख्या मे सबधित। उ०--दूसरे तीसरे पाँचये सातये आठवे तो भला आइबो कीजिए।--ठाकुर श०, पृ० २।

सातवाहन--संज्ञा पु० [स०] शालिवाहन नरेश का नाम।

सातसख(पु)--संज्ञा पु० [हिं० सात + सख] सात शख की एक माप। (सत०)। उ०--सात सख तिनकी ऊँचाई।--कबीर० श०, पृ० ७२।

सातसूत(पु)--संज्ञा पु० [हिं० सात + सूत] सात प्रकार की वायु। (सत०)। उ०--सात सूत दे गड बहतरि, पाट लगी अधिकाई। कबीर ग्र०, पृ० १५३।

साति(पु)[1]--संज्ञा स्त्री० [स० शास्ति] शासन। दड।

साति[2]--संज्ञा स्त्री० [स०] १ देना। दान। भेंट। २ प्राप्ति। उपलब्धि। ३ मदद। सहायता। ४ विनाश। बरबादी। ५ अत। निष्कर्ष। ६ तेज दर्द। तीव्र पीडा। ७ विराम। ठहराव। ८ सपत्ति। धन [को०]।

सातिक, सातिग(पु)--वि० [स० सात्विक] दे० 'सात्विक'। उ०--राजस करि उतपति करै, सातिक करि प्रतिपाल।--दादू०, पृ० ४५७।

सातिना--संज्ञा स्त्री० [स०] कौटिल्य के अनुसार एक प्रकार का काली किस्म का चमडा।

सातिया--संज्ञा पु० [स० स्वस्तिक] दे० 'सथिया'।

सातिशय--वि० [स०] अत्यत। अत्यधिक। बहुत ज्यादा।

साती[1]--संज्ञा स्त्री० [देश०] साँप काटने की एक प्रकार की चिकित्सा जिसमे साँप के काटे हुए स्थान को चीरकर उसपर नमक या बारूद मलते है।

साती(पु)†[2]--क्रि० वि० [हिं० साथ + ही = साथी] साथ ही साथ। उ०--चदन के साती लिब हुआ चदन। क्यों कर रोवे देख ए हिंगन। --दक्खिनी०, पृ० २२।

सातीन, सातीनक, सातीलक--संज्ञा पु० [स०] मटर [को०]।

सातुक, सातुक्क(पु)--संज्ञा पु० [स० सात्विक] दे० सात्विक'। उ०--(क) बमी सुर समरचौ हरचौ गोपी सु चित्त सुर। कछुव करचौ कछु करचौ गए सातुक सुभाव गुर।--पृ० रा०, २।३१७। (ख) सजे तामस राज सातुक्क तज्ज।--पृ० रा०, २५।५५३।

सातुवती(पु)--वि० स्त्री० [स० सत्ववती] सत्व गुण से युक्त। सत्ववती। उ०--तुही राजस तामस सातुवती। तुही आहित हित्त चित्त चरती।--पृ० रा०, ६१।६६५।

सात्त्व--वि० [स०] सतोगुणी। सत्व गुण सबधी [को०]।

सात्त्विक--वि०, संज्ञा पु० [स०] दे० 'सात्विक'।

सात्त्विकी--संज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सात्विकी'।

सात्म--वि० [स० सात्मन्] आत्मयुक्त। अपने से युक्त [को०]।

सात्मक--वि० [स०] आत्मा के सहित। आत्मायुक्त।

सात्मीकृत--वि० [स०] अभ्यस्त। आदी [को०]।

सात्मीभाव--संज्ञा पु० [स०] जनकत्व। कारणत्व [को०]।

सात्म्य[1]--संज्ञा पु० [स०] १ सारूप्य। सरूपता। २ वैद्यक के अनुसार वह रस जिसके सेवन से शरीर का किसी प्रकार का उपकार होता हो और जिसके फलस्वरूप प्रकृतिविरुद्ध कोई कार्य करने पर भी शरीर का अनिष्ट न होता हो। ३ ऋतु, काल, देश आदि के अनुकूल पडनेवाला आहार विहार आदि। ४ अनुकूलता (को०)। ५ आदत। स्वभाव (को०)।

सात्म्य[2]--वि० अनुकूल। रुचिकर [को०]।

सात्यकि--संज्ञा पु० [स०] एक यादव जिसका दूसरा नाम युयुधान था।

विशेष--सात्यकि के पिता का नाम सत्यक था। सात्यकि का कृष्ण के सारथी के रूप मे भी उल्लेख है। महाभारत के युद्ध मे इसने पाडवों का पक्ष लिया था। और इसने कौरवपक्षीय भूरिश्रवा को मारा था। श्रीकृष्ण और अर्जुन से इसने शस्त्रविद्या सीखी थी। यादवों के पारस्परिक मुशल युद्ध मे यह मारा गया था।

सात्यकी--संज्ञा पु० [स० सात्यकि] दे० 'सात्यकि'।

सात्यदूत--संज्ञा पु० [स०] वह होम जो सरस्वती आदि देवियों या देवताओं के उद्देश्य से किया जाय।

सात्ययज्ञ--संज्ञा पुं० [स०] एक वैदिक आचार्य का नाम।

सात्यरथि--संज्ञा पुं० [स०] वह जो सत्यरथ के वश मे उत्पन्न हुआ हो।

सात्यवत--संज्ञा पु० [स०] सत्यवती के पुत्र वेदव्यास।

सात्यवतेय--संज्ञा पुं० [स०] दे० 'सात्यवत'।

सात्यहव्य—संज्ञा पुं० [सं०] वशिष्ठ के वंश के एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सात्रव—संज्ञा पुं० [?] बधक।

सात्राजित संज्ञा पुं० [सं०] राजा शतानीक जो सत्राजित के वंशज थे।

सात्राजिती—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्यभामा का एक नाम।

सात्व—वि० [सं० सात्त्व] सत्व गुण संबंधी। सात्विक।

सात्वत¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ बलराम। २ श्रीकृष्ण। ३ विष्णु। ४ यदुवंशी। यादव। ५ मनुसंहिता के अनुसार एक वर्ण संकर जाति। जातिच्युत वैश्य और त्यक्त क्षत्रिय पत्नी से उत्पन्न संतान। ६ सात्वत के अनुयायी। वैष्णव (को०)। ७ एक प्राचीन देश का नाम।

सात्वत²—वि० १ सात्वत अर्थात् विष्णु से संबंधित। वैष्णव। २ भक्त। ३ पांचरात्र से संबंधित [को०]।

सात्वती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शिशुपाल की माता का नाम। २ दे० 'सात्वती वृत्ति' (को०)। ३ सुभद्रा का एक नाम।

यौ०—सात्वतीपुत्र, सात्वतीसूनु = शिशुपाल।

सात्वतीवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य के अनुसार चार नाटकीय वृत्तियों में से एक प्रकार की वृत्ति।

विशेष—इसका व्यवहार वीर, रौद्र, अद्भुत और शांत रसों में होता है। यह वृत्ति उस समय मानी जाती है जब कि नायक द्वारा ऐसे सुंदर और आनंदवर्धक वाक्यों का प्रयोग होता हैं, जिनसे उसकी शूरता, दानशीलता, दाक्षिण्य आदि गुण प्रकट होते हैं।

सात्विक¹—वि० [सं० सात्त्विक] १, सत्वगुण से संबंध रखनेवाला। सतोगुणी। २ जिसमें सत्वगुण की प्रधानता हो। ३ सत्व गुण से उत्पन्न। ४ वास्तविक। यथार्थ। ५ सत्य। स्वाभाविक (को०)। ६ ईमानदार। सच्चा (को०)। ७ गुणयुक्त (को०)। ८ शक्तिशाली। ओजपूर्ण (को०)। ९ आंतरिक भावना से प्रेरित (को०)।

सात्विक²—संज्ञा पुं० १ सतोगुण से उत्पन्न होनेवाले निसर्गजात अंगविकार। ये आठ प्रकार के होते हैं,—स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, कंप, वैवर्ण्य अश्रु और प्रलय।

विशेष—केशव के अनुसार आठवाँ प्रलय नहीं प्रलाप होता है।

२ साहित्य के अनुसार एक प्रकार की वृत्ति जिसका व्यवहार अद्भुत, वीर, शृंगार और शांत रसों में होता है। सात्वती वृत्ति। ३ ब्रह्मा। ४ विष्णु। ५ चार प्रकार के अभिनयों में से एक। सात्विक भावों को प्रदर्शित करके, हँसने, रोने, स्तंभ और रोमांच आदि के द्वारा अभिनय करना। ६ ब्राह्मण (को०)। ७ शरद् ऋतु की रात्रि (को०)। ८ बिना जल के दी जानेवाली आहुति या बलि (को०)।

सात्विकी¹—संज्ञा स्त्री० [सं० सात्त्विकी] दुर्गा का एक नाम।

सात्विकी²—वि० स्त्री० सत्व गुण संबंधी। सत्व गुण से संबंध रखनेवाली। सत्वगुण की।

साथ¹—संज्ञा पुं० [सं० सह या सहित, प्रा०हिं० सथ्य] १ मिलकर या संग रहने का भाव। संगत। सहचार।

क्रि० प्र०—करना।—रहना।—लगना।—होना।

मुहा०—साथ छूटना = संग छूटना। अलग होना। जुदा होना। साथ देना = किसी काम में संग रहना। सहानुभूति करना या सहायता देना। जैसे,—इस काम में हम तुम्हारा साथ देंगे। साथ निबहना = साथ साथ या मेल जोल के साथ समय बीतना। साथ लगना = किसी कार्य में शरीक होना। किसी का साथ पकड़ना। साथ लगाना = किसी कार्य में सम्मिलित करना। साथ करना। साथ लेकर डूबना = अपना नुकसान करने के साथ साथ दूसरे का भी नुकसान करना। साथ लेना = अपने संग रखना या ले चलना। जैसे,—जब तुम चलने लगना तो हमें भी साथ ले लेना। साथ सोना = समागम करना। संभोग करना। साथ सोकर मुँह छिपाना = बहुत अधिक घनिष्टता होने पर भी संकोच या दुराव करना। साथ का या साथ को = तरकारी, भाजी आदि जो रोटी के साथ खाई जाती है। साथ का खेला = बाल्यावस्था का मित्र। बचपन का साथी। साथ होना = मेलजोल होना। मित्रता होना।

२ वह जो संग रहता हो। बराबर पास रहनेवाला। साथी। संगी। ३ मेल मिलाप। घनिष्टता। जैसे,—आजकल उन दोनों का बहुत साथ है। ४ कबूतरों का झुंड या टुकड़ी। (लखनऊ)।

साथ²—अव्य० १ एक संबंधसूचक अव्यय जिससे प्राय सहचार का बोध होता है। सहित। से। जैसे,—(क) तुम भी साथ चले जाओ। (ख) वह बड़े आराम के साथ काम करता है।

मुहा०—साथ में घसीटना किसी की इच्छा के विरुद्ध उसको किसी कार्य में सम्मिलित करना। साथ ही = सिवा। अतिरिक्त। जैसे,—साथ ही यह भी एक बात है कि आप वहाँ नहीं जा सकेंगे। साथ ही साथ = एक साथ। एक सिलसिले में। जैसे,—साथ ही साथ दोहराते भी चलो। एक साथ = एक सिलसिले में जैसे,—(क) एक साथ दोनों काम हो जायँगे। (ख) जब एक साथ इतने आदमी पहुँचेंगे तो वे घबरा जायँगे।

२ विरुद्ध। से। जैसे,—सबके साथ लड़ना ठीक नहीं। ३ प्रति। से। जैसे,—(क) उनके साथ हँसी मजाक मत किया करो। (ख) बड़ों के साथ शिष्टतापूर्वक व्यवहार किया करो। ४ द्वारा। उ०—लखन साथ तब उदर बिदारचो।—सूर (शब्द०)।

साथरा†—संज्ञा पुं० [सं० स्रस्तरण] [स्त्री० साथरी] १ बिछौना। विस्तर। २ चटाई। ३ कुश की बनी चटाई। उ०—रघुपति चंद्र विचार करचो। नातो मानि सगर सागर सों कुश साथरे परचो।—सूर (शब्द०)।

साथरी—संज्ञा स्त्री० [सं० स्रस्तरण] दे० 'साथरा'।

साथिया(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्वस्तिक] दे० 'सथिया'। उ०—(क) साथिये बनाइ कै देहि द्वारे सात सींक बनाय।—सूर (शब्द०)। (ख) मंगल सदन चारि साथिये इन तरे जुत जदु फल चारि तकि सुख करौं हौं।—घनानंद, पृ० ३५२।

साथी—संज्ञा पुं० [हिं० साथ + ई (प्रत्य०)] [स्त्री० साथिन] १ वह जो साथ रहता हो। साथ रहनेवाला। हमराही। संगी। २ दोस्त। मित्र। ३ सहायक। सहकारी। सहयोगी।

साद¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ डूबना। तल में बैठना। २ थकान। क्लांति। ३ पतलापन। तन्वंगता। तनुता। ४ नष्ट होना। विनाश। ५ पीडा। व्यथा। ६ स्वच्छता। पवित्रता। ७ गति। गमन। गतिशीलता [को०]।

साद(पु)²—संज्ञा पुं० [सं० शब्द, प्रा० सद्द] दे० 'शब्द'। उ०—सिथल पुकारी साद सुणीजै, कीजै हो हरि! बाहर कीजै।—रघु० रू०, पृ० १३५।

सादक(पु)—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'मदका'–३।

सादगी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १ सादा होने का भाव। सादापन। सरलता। २ सीधापन। निष्कपटता।

सादन—संज्ञा पुं० [सं०] १ थकान। क्लांति। २. विनाश। बरबादी। ३ भवन। निवासस्थान। ४ पात्र। स्थाली (को०)। ५. क्लांत करना। थकाना (को०)। ६ पात्र आदि व्यवस्थित करना [को०]।

सादनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ थकान। क्लांति। २ बरबादी। विनाश। ३ कुटकी नामक पौधा [को०]।

सादर(पु)—वि० [सं०] आदरपूर्वक। आदर के साथ। उ०—सदा सुनहिं सादर नर नारी। तेइ सुरबर मानस अधिकारी।—मानस, १।३८।

सादव—वि० [सं० स + द्रव या सत् + रव] सद्रव। जलयुक्त। उ०—जल जगल महियगान सुभ्रत दादुर मोर रोर घन सादव। जदपि मघो मेघ झरि मडि बुझि विरह विरह विकल बिन कादव।—अकबरी०, पृ० ३१७।

सादा—वि० [फ़ा० सादह्] [वि० स्त्री० सादी] १ जिसकी बनावट आदि बहुत संक्षिप्त हो। जिसमें बहुत अंग उपांग, पेच या बखेडे आदि न हो। जैसे,—चरखा सूत कातने का सबसे सादा यंत्र है। २ जिसके ऊपर कोई अतिरिक्त काम न बना हो। जैसे,—सादा दुपट्टा, सादी जिल्द, सादा खिलौना। ३ जिसमें किसी विशेष प्रकार का मिश्रण न हो। बिना मिलावट का। खालिस। जैसे,—सादा पानी या सादी भाँग (जिसमें चीनी आदि न मिली हो), सादी पूरी (जिसमें पीठी आदि न भरी हो), सादा भोजन (जिसमें अधिक मसाले या भेद आदि न हो)। ४ जिसके ऊपर कुछ अंकित न हो। जैसे,—सादा कागज, सादा किनारा (जिसमें बेल बूटे आदि न बने हो)। ५ जिसके ऊपर कोई रंग न हो। सफेद। जैसे,—सादे किनारे की धोती। ६ जो कुछ छल कपट न जानता हो। जिसमें किसी प्रकार का आडंबर या अभिमान आदि न हो। सरलहृदय। सीधा। जैसे,—वे बहुत ही सादे आदमी है।

यौ०—सादा कपडा = (१) बिना बेलबूटे का कपडा। (२) वस्त्र जो रंगीन न हो। सादा कागज = (१) बिना कुछ लिखा हुआ कोरा कागज। (२) कागज जिसपर टिकट या स्टांप न लगा हो। सादाकार। सादादिल = साफ दिल। निष्कपट हृदय। सादापन। सादामिजाज = साफ दिल। सादालोह। सीधासादा = सरल हृदय।

७ बेवकूफ। मूर्ख। (क्व०)। जैसे,—(क) वह सादा क्या जाने कि दर्शन किसे कहते हैं। (ख) यहाँ कौन ऐसा सादा है जो तुम्हारी बात मान ले।

८ सरल। सात्विक। पवित्र। ९ ढोंगरहित। आडंबरहीन। साधारण। जैसे,—सादा जीवन उच्च विचार (लोकोक्ति)।

सादाकार—वि० [फ़ा०] १ जो सोने चाँदी का काम अच्छा जानता हो। २ सादा और हलका काम बनानेवाला।

सादकारी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सादाकार या सुनार का काम। सुनारी का पेशा [को०]।

सादात—संज्ञा पुं० [अ०] १ श्रेष्ठजन। बुजुर्ग या वृद्ध जन। २ सैयद वंश या जाति [को०]।

सादान(पु)—संज्ञा पुं० [फ़ा० शादियानह्] प्रसन्नता या हर्षसूचक वाद्य। जीत का नगाडा। उ०—सादान बज्जि रन रज्जि सह, तह सु सध्धरकत करिय। सोमेस सूर चहुआन सुअ कित्ति चंद छंदह धरिअ।—पृ० रा०, ७।१५९।

सादापन—संज्ञा पुं० [फ़ा० सादा + पन (प्रत्य०)] सादा होने का भाव। सादगी। सरलता।

सादालौह—वि० [फ़ा० सादह्लौह] १ छलविहीन। निश्छल। निष्कपट। २ मूर्ख। बुद्धू [को०]।

सादाशिव—वि० [सं०] सदाशिव से संबंधित [को०]।

सादि¹—वि० [सं०] आदि से युक्त। प्रारंभ सहित [को०]।

सादि²—संज्ञा पुं० १ रथ हाँकनेवाला। सारथी। २ वीर। योद्धा। बहादुर। ३ उत्साहहीन या खिन्न व्यक्ति। ४ वायु। पवन [को०]।

सादिक¹—वि० [अ० सादिक] १ सच्चा। सत्यवादी। उ०—सादिक हूँ अपने कौल का गालिब खुदा गवाह। कहता हूँ सच कि झूट की आदत नहीं मुझे।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० ४५६। २. न्यायपूर्ण। उचित (को०)। ३ वफादार। स्वामिभक्त (को०)।

सादिक(पु)²—संज्ञा पुं० [सं० साधक] दे० 'साधक'। उ०—सतगुर सादिक रमता साधु।—रामानंद०, पृ० ४९।

सादित—वि० [सं०] १ बैठने के लिये प्रेरित किया हुआ। बैठाया हुआ। २ क्लिन्न। दुखी। ३ क्लांत। थका हुआ। ४ विनष्ट। बरबाद [को०]।

सादिर—वि० [अ०] १ निस्तब्ध। २ उद्विग्न। चकित। भ्रांत। ३ चालू होनेवाला। जारी होनेवाला [को०]।

सादी¹—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सादह्] १ लाल की जाति की एक प्रकार की छोटी चिडिया जिसका शरीर भूरे रंग का होता है और जिसके शरीर पर चित्तियाँ नहीं होतीं। बिना चित्ती की मुनियाँ। सदिया। २ वह पूरी जिसमें पीठी आदि नहीं भरी होती।

३ पतग उडाने की सादी डोर। वह डोर जिसपर माँझा न लगा हो।

सादी[३]—वि० [स० सादिन्] १ बैठा हुआ। उपविष्ट। २ नष्ट करनेवाला। विनाशक। ३ सवारी करनेवाला [को०]।

सादी[३]—सज्ञा पुं० १ घुडसवार। उ०—दीख पडते है न सादी आज। —साकेत, पृ० १६८। २ वह जो हाथी पर सवार हो या सवारी मे बैठा हो। ३ रथ हाँकनेवाला। सारथी [को०]।

सादी[४]—सज्ञा पु० [स० सादिन्] १ शिकारी। उ०—सहस्त्र सादी सग सिधारे। शूकर मृगा सवन वहु मारे।—रघुराज (शब्द०)। २ अश्व। घोडा। (डिं०)।

सादी[५]—सज्ञा स्त्री० [फ़ा० शादी] दे० 'शादी'। उ०—कहत कमाली कवीर की वापकी सादी से मैं कुमारी भली सी।—कवीर म०, पृ० १६४।

सादी(पु)[६]—वि० [स० साधिन्, साधी] साधक। सिद्ध करनेवाला। उ०—अविद्या न विद्या न सिद्ध न सादी। तुही ए तुही ए तुही एक आदी।—पृ० रा०, २।६८।

सादीनव—वि० [स०] पीडित। व्यथाग्रस्त [को०]।

सादु(पु)—सज्ञा पु० [स० साधु] दे० 'साधु'। उ०—सतगुरु सादिक रमता सादु।—रामानद० पृ० ४६।

सादुल, सादूल(पु)—सज्ञा पुं० [स० शार्दूल] दे० 'शार्दूल'। सिंह।

सादूर(पु)[१]—सज्ञा पु० [स० शार्दूल] १ शार्दूल। सिंह। उ०—चौथ दीन्ह सावक सादूरू। पाँचौ परस जो कचन मूरू।—जायसी (शब्द०)। २. कोई हिंसक पशु।

सादृश्य—सज्ञा पु० [स०] १ सदृश होने का भाव। समानता। एकरूपता। २ वरावरी। तुलना। समान धर्म। ३ प्रतिमूर्ति। प्रतिविंव। ४ कुरग। मृग।

सादृश्यता—सज्ञा स्त्री० [स० सादृश्य + ता] दे० 'सादृश्य'।

सादृश्यत्व—सज्ञा पुं० [स० सादृश्य + त्व] सदृश होने का भाव। सादृश्य।

सादृस(पु)—सज्ञा पुं० [स० सादृश्य] सम्मान। तुल्य। उ०—कपोल गोल आदृस, कि भौह भौर सादृस।—हम्मीर रा०, पृ० २४।

सादेह(पु)—क्रि० वि० [स० स + देह] देह के साथ। सशरीर। उ०—सादेह दीसैं समुख भाई। नाद विंद विधि देह वनाई।—घट०, पृ० २५८।

साद्यत—वि० [स० साद्यन्त] पूर्ण। पूरा। सपूर्ण [को०]।

साद्य—वि० [स०] नवीन। नया। ताजा [को०]।

साद्यस्क[१]—वि० [स०] १ तुरत होनेवाला। २ तत्काल फल देनेवाला। ३ नया। ताजा [को०]।

साद्यस्क[२]—सज्ञा पुं० एक विशेष यज्ञ जिसका एक नाम 'साद्यस्क्र' भी है [को०]।

साधत—सज्ञा पु० [स० साधन्त] भिखारी। भिक्षुक [को०]।

साध[१]—सज्ञा पु० [स० साधु] १. साधु। महात्मा। उ०—योगेश्वर वह गति नहिं पाई। सिद्ध साध की कौन चलाई।—कवीर सा०, पृ० ८४५। २ योगी। उ०—राजा इदर का राज टोलाऊँ तो मैं सच्चा साध।—भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० ३७६। ३ अच्छा आदमी। सज्जन।

साध[२]—वि० उत्तम। अच्छा। उ०—अशेष शास्त्र विचार कै जिन जानियो मत साध।—केशव (शब्द०)।

साध[३]—सज्ञा स्त्री० [स० उत्साह] १ इच्छा। ख्वाहिश। कामना। उ०—जेहि अस साध होइ जिव खोवा। सो पतग दीपक अस रोवा।—जायसी (शब्द०)। २ गर्भ धारण करने के सातवें मास मे होनेवाला एक प्रकार का उत्सव। इस अवसर पर स्त्री के मायके से मिठाई आदि आती है।

साध[४]—सज्ञा पु० फर्रुखावाद और कन्नौज के आस पास पाई जानेवाली एक जाति।

विशेष—इस जाति के लोग मूर्तिपूजा आदि नही करते, किसी के सामने सिर नही झुकाते और केवल एक परमात्मा की ही आराधना करते हैं।

साधक[१]—सज्ञा पु० [स०] १ साधना करनेवाला। साधनेवाला। सिद्ध करनेवाला। २ योगी। तप करनेवाला। तपस्वी। ३ जिमसे कोई कार्य सिद्ध हो। करण। वसीला। जरिया। ४ भूत प्रेत को साधने या अपने वश मे करनेवाला। ओझा। ५ वह जो किसी दूसरे के स्वार्थसाधन मे सहायक हो। जैसे,—दोनो सिद्ध साधक वनकर आए थे। ६ पुत्रजीव वृक्ष। ७ दौना। ८ पित्त। उ०—आलोचक, रजक, साधक, पाचक, भ्राजक इन भेदो से पित्त पाँच प्रकार का है।—माधव०, पृ० ५८।

साधक[२]—वि० [स्त्री० साधका, साधिका] १ पूरा करनेवाला। २ कुशल। ३ प्रभावशील। ४ चमत्कारिक। ऐंद्रजालिक। ५ सहयोगी। सहायक। ६ निष्कर्षात्मक [को०]।

साधकता—सज्ञा स्त्री० [स० साधक + ता (प्रत्य०)] १ साधक होने का भाव। २ उपयुक्तता। औचित्य। ३ उपयोगिता [को०]।

साधकत्व—सज्ञा पु० [स०] साधक होने का भाव या स्थिति। साधकता। उ०—साथ ही उनके अलौकिक सुख साधकत्व को लेकर हम इसे चाहे तो अलौकिक विज्ञान भी कह सकते हैं। —शैली, पृ० २७।

साधकवर्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] साधक की वत्ती। ऐंद्रजालिक वत्ती या पलीता [को०]।

साधका—सज्ञा [स०] दुर्गा का एक नाम जिसे स्मरण करने से सब कार्यो की सिद्धि होती है।

साधन[१]—सज्ञा पु० [स०] १ किसी काम को सिद्ध करने की क्रिया। सिद्धि। विधान। २ वह जिसके द्वारा कोई उपाय सिद्ध हो। सामग्री। सामान। उपकरण। जैसे,—साधन के अभाव मे मैं यह काम न कर सका। ३ उपाय। युक्ति। हिकमत। ४ उपासना। साधना। ५ सहायता। मदद। ६ धातुओ के शोधने की क्रिया। शोधन। ७ कारण। हेतु। सवव। ८ अचार। सधान। ९ मृतक का अग्निसस्कार। दाह कर्म। १०.

जाना। गमन। ११ धन। दौलत। द्रव्य। १२ पदार्थ। चीज। १३ घोडे, हाथी और सैनिक आदि जिनकी सहायता से युद्ध होता है। १४ उपाय। तरकीब। १५. सिद्धि। १६ प्रमाण। १७ तपस्या आदि के द्वारा मत्र सिद्ध करना। साधना। १८ यत्र। (को०)। १९ दमन करना। जीत लेना (को०)। २० वशीकरण (को०)। २१ वसूली का आदेश प्राप्त कर द्रव्य, वस्तु, ऋण आदि को वसूल करना (को०)। २२ मारण। वध। विनाश (को०)। २३ व्याकरण मे करण कारक (को०। २४ मोक्ष या मुक्ति पाना (को०)। २५ निंगेंद्रिय। शिश्न (को०)। २६ शरीर की इद्रियाँ या अग (को०)। २७ कुच। स्तन (को०)। २८ प्राप्ति। लाभ (को०)। २९ गणना। सगणना (को०)। ३० बाद मे जाना। अनुगमन (को०)। ३१ मैत्री। मित्रता (को०)। ३२ अधिकार मे करना या लेना (को०)। ३३ तैयार करना। तैयारी (को०)। ३४ नीरोग या स्वस्थ करना (को०)। ३५ तुष्ट करना (को०)।

साधन² वि० १ पूरा करनेवाला। २ प्राप्त करनेवाला। ३ प्रेतादि आत्माओ को बुलाने या वशीभूत करनेवाला। ४ अभि-व्यजक [को०]।

साधनक—सज्ञा पु० [स०] साधन। उपकरण [को०]।

साधनक्रिया सज्ञा स्त्री० [स०] १ समापिका क्रिया। २ कारक से सबधित क्रिया (को०)।

साधनक्षम—वि० [स०] जिसके लिये प्रमाण दिया जा सके [को०]।

साधनचतुष्टय—सज्ञा पुं० [स०] चार तरह के प्रमाण [को०]।

साधनता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ साधन का भाव या धर्म। २ साधन करने की क्रिया। साधना। उ०—कहि आचार भक्त विध भाषी हस धर्म प्रकटायो। कही विभूति सिद्ध साधनता आश्रम चार कहायो।—सूर (शब्द०)। ३ सिद्धि प्राप्ति की अवस्था (को०)।

साधनत्व—सज्ञा पु० [सं०] दे० 'साधनता'।

साधननिर्देश—सज्ञा पु० [स०] प्रमाण उपस्थित करना। हेतु का प्रस्तुतीकरण [को०]।

साधनपत्र—सज्ञा पु० [म०] प्रमाणरूप मे प्रस्तुत या उपस्थित किया हुआ लेख, पत्र आदि [को०]।

साधनहार(पु)—सज्ञा पु० [स० साधन + हिं० हार (प्रत्य०)] १ साधनेवाला। जो सिद्ध करता हो। २ जो साधा जा सके। सिद्ध होने के योग्य।

साधना¹—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कोई कार्य सिद्ध या सपन्न करने की क्रिया। सिद्धि। २ किसी देवता या यत्र आदि को सिद्ध करने के लिये उसकी आराधना या उपासना करना। ३ दे० 'साधन'।

साधना²—क्रि० स० [स० साधन] १ (कोई कार्य) सिद्ध करना। पूरा करना। उ०—आसन साधि पवन पुनि पीवै। कोटि वरस लगि काहि न जीवै।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० ३३७। २. निशाना लगाना। सधान करना। जैसे,—लक्ष्य साधना। ३. नापना। पैमाइश करना। जैसे,—लकडी साधना, टोपी साधना। ४ अभ्यास करना। आदत डालना। स्वभाव डालना। जैसे,—योग साधना, तप साधना। उ०—जब लगि पीउ मिले तुहि साधि प्रेम की पीर। जैसे सीप स्वाति कहँ तपै समुंद मँझ नीर।—जायसी (शब्द०)। ५ शोधना। शुद्ध करना। ६ सच्चा प्रमाणित करना। ७ पक्का करना। ठहराना। ८ एकत्र करना। इकट्ठा करना। उ०—वैदिक विधान अनेक लौकिक आचरन सुनि जान कै। बलिदान पूजा मूल कामनि साधि राखी आनि कै।—तुलसी (शब्द०)। ९ अपनी ओर मिलाना या काबू मे करना। वश मे करना। उ०—गाधिराज को पुत्र साधि सब मित्र शत्रु वल।—केशव (शब्द०)।

साधनी—सज्ञा स्त्री० [सं० साधन] लोहे या लकडी का एक प्रकार का लवा औजार जिससे जमीन चौरस करते है।

साधनीय—वि० [स०] १ साधना करने के योग्य। साधने या सिद्ध करने लायक। २ जो हो सके। जो साधा जा सके। ३ उपयोगी। ४ प्राप्य। अर्जन या प्राप्त करने योग्य। जैसे,—ज्ञान। ५ निर्माण या रचना करने योग्य। जैसे,—शब्द (को०)।

साधयत—सज्ञा पु० [स० साधयत्] भिक्षुक। भिखारी [को०]।

साधयती—सज्ञा स्त्री० [स० साधयतीन्ती] साधना करनेवाली उपासिका। आराधिका [को०]।

साधयितव्य—वि० [स०] साधन करने के योग्य। साधने या सिद्ध करने लायक।

साधयिता—सज्ञा पु० [स० साधयितृ] वह जो साधन करता हो। साधन करनेवाला। साधक।

साधर्मिक—वि० [स०] साधर्म्य या समान धर्म का अनुकरण करने-वाला [को०]।

साधर्म्य—सज्ञा पुं० [स०] समान धर्म होने का भाव। एकधर्मता। समानधर्मता। तुल्यधर्मता। इन दोनो मे कुछ भी साधर्म्य नही है। उ०—मनुष्यो के रूप, व्यापार या मनोवृत्तियो के सादृश्य, साधर्म्य की दृष्टि से जो प्राकृतिक वस्तु व्यापार आदि लाए जाते हैं, उनका स्थान गौण ही समझना चाहिए। —रस०, पृ० ९।

साधवा(पु)—सज्ञा पु० [स० साधु का बहुवचन साधव] १ साधना करनेवाला। साधक। २ सत् जन। साधु जन।—दादू० पृ० १।

साधवी(पु)—वि० स्त्री० [सं० साध्वी] दे० 'साध्वी'—१। उ०—साधवी सीय भगनी प्रिथा प्रथा वरन चित्रग पर। इन सम न कोइ भुवनह भयौ न न ह्वैहै रवि चक्क तर।—पृ० रा०, २१।२१४।

साधस(पु)—सज्ञा पु० [स० साध्वस] दे० 'साध्वस'।

साधा(पु)—सज्ञा स्त्री० [हिं० साध] अभिलाषा। साध। उत्कठा।

साधार—वि० [स०] १ आधार सहित। जिसका कुछ आधार हो। २ जो किसी के सहारे टिका हो [को०]।

**साधारण¹**—वि० [सं०] १ जिसमे कोई विशेषता न हो। मामूली। सामान्य। जैसे—साधारण बात, साधारण काम, साधारण उपाय। २ आसान। सरल। सहज। ३ सार्वजनिक। आम। ४ समान। सदृश। तुल्य। ५ मिश्रित। घुलामिला (को०)। ६ तर्कशास्त्र मे एकाधिक से संबद्ध। पक्षाभास (को०)। ७ मध्यवर्ती स्थान ग्रहण करनेवाला (को०)।

**साधारण²**—सज्ञा पुं० [सं०] भाव प्रकाश के अनुसार वह प्रदेश जहाँ जंगल अधिक हो, पानी अधिक हो, रोग अधिक हो और जाडा तथा गरमी भी अधिक पडती हो। २ ऐसे देश का जल। ३ सामान्य या सार्वजनिक नियम (को०)। ४ जातिगत या वर्गीय गुण (को०)। ५ एक संवत्सर (को०)।

**साधारणगांधार**—सज्ञा पु० [सं० साधारण गान्धार] एक प्रकार का विकृत स्वर जो वज्रिका नामक श्रुति से आरंभ होता है। इसमे तीन प्रकार की श्रुतियाँ होती है।

**साधारणत**—अव्य० [सं०] १ मामूली तौर पर। आम तौर पर। सामान्यत। २ बहुधा। प्राय।

**साधारणतया**—अव्य० [सं०] दे० 'साधारणत'।

**साधारणता**—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ साधारण होने का भाव या धर्म। मामूलीपन। २ सर्वसामान्य या साधारण हित (को०)।

**साधारणत्व**—सज्ञा पु० [सं०] दे० 'साधारणता'।

**साधारण देश**—सज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का देश। दे० 'साधारण'।

**साधारणधन**—सज्ञा पु० [सं०] सयुक्त सपत्ति (को०)।

**साधारण धर्म**—सज्ञा पु० [सं०] १ वह धर्म जो सबके लिये हो। सार्वजनिक धर्म।

विशेष—मनु के अनुसार अहिंसा, सत्य अस्तेय, शौच, इंद्रियनिग्रह, दम, क्षमा, आर्जव, दान ये दस साधारण धर्म है।

२ वह धर्म जो साधारणत एक ही प्रकार के सब पदार्थो मे पाया जाय। ३ चारो वर्णो के कर्तव्य कर्म। प्रजनन। सतानोत्पादन। जनन (को०)।

**साधारणपक्ष**—सज्ञा पु० [सं०] १ ऐसा दल जिसमे सभी प्रकार के लोग हो। २ वह जो मध्यवर्ती हो (को०)।

**साधारणस्त्री**—सज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या। रडी।

**साधारणी**—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक अप्सरा का नाम। उ०—ग्रहण कियो नहिं तिन्हैं सुरासुर साधारण जिय जानी। ताते साधारणी नाम तिन लह्यो जगत छविखानी।—रघुराज (शब्द०)। २ सामान्या। साधारण स्त्री। वेश्या। ३ कुंजी। चाभी। ताली। ४ बाँस की कइन (को०)।

**साधारणीकरण**—सज्ञा पु० [सं०] साहित्य के रसविधान मे विभावन नामक व्यापार। दे० 'विभावन'।—२।

**साधारण्य**—सज्ञा पु० [सं०] साधारण होने का भाव या धर्म। साधारणता। मामूलीपन।

**साधारित**—वि० [सं०] जो आधारप्राप्त हो या जिसे आधार प्रदान किया गया हो (को०)।

**साधिक**(पु)—सज्ञा पुं० [सं० साधक] दे० 'साधक'। उ०—सिद्ध बिना न साधिक निपजै ज्यौं घट होइ उज्याला।—रामानंद०, पृ० १३।

**साधिका¹**—वि० स्त्री० [सं०] सिद्ध करनेवाली। जो सिद्ध करे।

**साधिका²**—सज्ञा स्त्री० गहरी नीद। सुषुप्ति।

**साधित**—वि० [सं०] १ सिद्ध किया हुआ। जो सिद्ध किया गया हो। जो साधा गया हो। २ जिसे किसी प्रकार का दंड दिया गया हो। ३ शुद्ध किया हुआ। शोधित। ४ जिसका नाश किया गया हो। ५ ऋण आदि जो चुकाया गया हो। ६ छोडा हुआ। प्रक्षिप्त। ७ विजित। पराभूत। ८ प्रयोग द्वारा प्रमाणित या प्रदर्शित। ९ प्राप्त (को०)।

**साधिमा**—सज्ञा पु० [सं० साधिमन्] अच्छापन। उत्तमता (को०)।

**साधिवास**—वि० [सं०] सुगंधित। सुगंधयुक्त (को०)।

**साधिष्ठ**—वि० [सं०] १ अत्यंत समीचीन या उत्तम। उत्कृष्टतम। २ बहुत मजबूत। अडिग। कठोर (को०)।

**साधी**—वि० [सं० साधिन्] साधने या सिद्ध करनेवाला (को०)।

**साधीय**—वि० [सं० साधीयस्] १ उत्कृष्टतर। २, बलवत्तर। अधिक बली। ३ औचित्यतर। सुदरतर (को०)।

**साधु¹**—सज्ञा पु० [सं०] १ वह जिसका जन्म उत्तम कुल मे हुआ हो। कुलीन। आर्य। २ वह धार्मिक, परोपकारी और सद्गुणी पुरुष जो सत्योपदेश द्वारा दूसरो का उपकार करे। धार्मिक पुरुष। परमार्थी। महात्मा। संत। ३ वह जो शात, सुशील, सदाचारी, वीतराग और परोपकारी हो। भला आदमी। सज्जन।

मुहा०—साधु साधु कहना = किसी के कोई अच्छा काम करने पर उसकी बहुत प्रशसा करना।

४ वह जिसकी साधना पूरी हो गई हो। ५ साधु धर्म का पालन करनेवाला। जैन साधु। ६ दौना नामक पौधा। दमनक। ७ वरुण वृक्ष। ८ जिन। ९ मुनि। १० वह जो सूद या व्याज से अपनी जीविका चलाता हो। ११ साध। इच्छा। १० गर्भ के सातवें महीने मे होनेवाला एक सस्कार। उ०—ए मैं अपुबिस अपुबिम साध पुजाऊँ। लज्जा राखूँ नँनद को।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ९१९।

**साधु²**—वि० १ अच्छा। उत्तम। भला। २ सच्चा। ३ प्रशसनीय। ४ निपुण। होशियार। ५ योग्य। उपयुक्त। ६ उचित। मुनासिब। ७ शुद्ध। सही। शास्त्रीय। ८ दयालु। कृपालु। ९ रुचिकर। अनुकूल। २० योग्य। खानदानी।

**साधुक**—सज्ञा पु० [सं०] १ कदम। कदब वृक्ष। २ वरुण वृक्ष।

**साधुकारी**—सज्ञा पु० [सं० साधुकारिन्] वह जो उत्तम कार्य करता हो। अच्छा काम करनेवाला। दक्ष या कुशल व्यक्ति।

**साधुकृत**—वि० [सं०] अच्छी तरह किया हुआ (को०)।

**साधुकृत्य**—सज्ञा पु० [सं०] १ हानि की पूर्ति होना। क्षतिपूर्ति। २ लाभ। प्राप्ति। प्रतिफल (को०)।

साधुज—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसका जन्म उत्तम कुल मे हुआ हो। कुलीन।

साधुजात—वि० [सं०] १ सुंदर। खूबसूरत। २ उज्ज्वल। साफ। स्वच्छ।

साधुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ साधु होने का भाव या धर्म। २ साधुओ का धर्म। साधुओ का आचरण। ३ सज्जनता। भलमनसाहत। उ०—तदपि तुम्हारि साधुता देखी।—मानस, ७।१०६। ४ भलाई। नेकी। ५ सीधापन। सिधाई।

साधुति(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० साधु] सग। साथ। उ०—फुर फुर कहत मारु सब कोई। झूठहि झूठा साधुति होई।—कबीर बी० (शिशु०), पृ० १६४।

साधुत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'साधुता'।

साधुदर्शन—वि० [सं०] १ सुंदर। सुरूप। प्रियदर्शन। २ विचारयुक्त। विचारपूर्ण (को०)।

साधुदर्शी—वि० [सं० साधुदर्शिन्] विवेकी (को०)।

साधुदेवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सास (को०)।

साधुधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] जैनो के अनुसार साधुओ का धर्म। यतियो का धर्म।

विशेष—यह दस प्रकार का कहा गया है—क्षाति, मार्दव, आर्जव भुक्ति, तप, सयम, सत्य, शौच, अकिंचन और ब्रह्म।

साधुधी¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पत्नी या पति की माता। सास। २ अच्छी बुद्धि (को०)।

साधुधी²—वि० [सं०] मृदु या उत्तम स्वभाव का। दयालु (को०)।

साधुध्वनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] साधुवाद। वाहवाही। प्रशसात्मक करतल ध्वनि (को०)।

साधुपद—संज्ञा पुं० [सं०] सत्पथ। सत् का मार्ग (को०)।

साधुपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] स्थल कमल। स्थल पद्म।

साधुफल—वि० [सं०] उत्तम फल देनेवाला (को०)।

साधुभवन—संज्ञा पुं० [सं०] १ साधुओ के रहने की जगह। कुटीर। कुटी। २ मठ।

साधुभाव—संज्ञा पुं० [सं०] विनम्रता। दयालुता (को०)।

साधुमत्र—संज्ञा पुं० [सं० साधुमन्त्र] प्रभावशाली मत्र। फलदायक या कारगर मत्र (को०)।

साधुमत्—वि० [सं०] १ अच्छा। उत्तम। २ प्रसन्नता या आनद देनेवाला (को०)।

साधुमत¹—वि० [सं०] जिसके विषय मे ऊँचे स्तर मे विचार किया गया हो। जिसका उच्च स्तर से मूल्याकन किया गया हो।

साधुमत(पु)²—संज्ञा पुं० साधुजनो, सत्पुरुषो का विचार या मत। भले आदमियो की राय। उ०—भरतविनय सादर सुनिअ, करिअ, विचारु बहोरि। करब साधुमत, लोकमत, नृपनय निगम निचोरि। —मानस, २।२५७।

साधुमती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तात्रिको की एक देवी का नाम। २ बौद्धो के अनुसार दसवी पृथ्वी का नाम।

साधुमात्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] उचित या ठीक ठीक परिमाण (को०)।

साधुम्मन्य—वि० [सं०] अपने को साधु या सज्जन माननेवाला (को०)।

साधुवाद—संज्ञा पुं० [सं०] किसी के कोई उत्तम काय करने पर 'साधु साधु' कहकर उसकी प्रशसा करने का काम।

साधुवादी—वि० [सं० साधुवादिन्] १ न्यायसगत बात कहनेवाला। २ प्रशसक। प्रशसा करनेवाला।

साधुवाह—संज्ञा पुं० [सं०] घोडा जो अच्छी तरह मे सिखाया गया हो। निकाला हुआ घोडा। (को०)।

साधुवाही¹—वि० [सं० साधुवाहिन्] १ अच्छी तरह वहन करने या (सवारी) आदि खीचनेवाला। २ जिसके पास अच्छी किस्म के शिक्षित अश्व हो (को०)।

साधुवाही²—संज्ञा पुं० दे० 'साधुवाह'।

साधुवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ कदम का पेड। कदव। २ वरुण का वक्ष।

साधुवृत्त¹—वि० [सं०] १ उत्तम स्वभाव और चरित्रवाला। साधु आचरण करनेवाला। २ ठीक वृत्तवाला। खूब गोला।

साधुवृत्त²—संज्ञा पुं० १ साधु एव सच्चरित्र व्यक्ति। २ सदाचार। दे० 'साधुवृत्ति' (को०)।

साधुवृत्ति¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम और श्रेष्ठ वृत्ति। सद्वृत्ति।

साधुवृत्ति²—वि० साधुवृत्त। सदाचारी (को०)।

साधुशब्द—संज्ञा पुं० [सं०] प्रशसा। साधुवाद।

साधुशील—वि० [सं०] सत् स्वभाव का। धर्मात्मा। सत्पुरुष (को०)।

साधुशुक्ल—वि० [सं०] विल्कुल सफेद (को०)।

साधुसमत—वि० [सं० साधुसम्मत] सत्पुरुषो द्वारा मान्य। उ०—सुद्ध सो भएउ साधुसमत अस। मानस, २ २४७।

साधुससग—संज्ञा पुं० [सं०] सत्सगति (को०)।

साधुसाधु—अव्य० [सं०] एक पद जिसका व्यवहार किसी के बहुत उत्तम कार्य करने पर किया जाता है। धन्य धन्य। वाह वाह। बहुत खूब। उ०—(अ) अस्तुति सुनि मन हर्ष बढायो। साधु साधु कहि सुरनि सुनायो।—सूर (शब्द०)।

साधू—संज्ञा पुं० [सं० साधु] १ धार्मिक पुरुष। साधु। सत महात्मा। २, सज्जन। भला आदमी। ३ सीधा आदमी। भोला भाला। ४ दे० 'साधु'। उ०—साधू सनमुख नाम से, रन मे फिरै न पूठ।—दरिया० बानी, पृ० १२।

साधूक्त—वि० [सं०] सज्जनो द्वारा कथित (को०)।

साधृत—संज्ञा पुं० [सं०] १ दुकान। २ आतपत्र। छाता। ३ मोरो का झुड (को०)।

साधो—संज्ञा पुं० [सं० साधु] धार्मिक पुरुष। सत। साधु।

साध्य¹—वि० [सं०] १ सिद्ध करने योग्य। साधनीय। २ जो सिद्ध हो सके। पूरा हो सकने के योग्य। जैसे,—यह कार्य साध्य नही जान पडता। ३ सहज। सरल। आसान। ४ जो प्रमाणित करना हो। जिसे साबित करना हो। ५ प्रतिकार करने के योग्य। शोधनीय। ६ जानने के योग्य। ७ (चिकित्सा आदि

द्वारा) ठीक करने योग्य। चिकित्स्य। उ०—साध्य बीमारी भी दो प्रकार की है।—शार्ङ्गधर०, पृ० ५६। ८ प्राप्त करने योग्य। विजेतव्य (को०)। १० प्रयोक्तव्य। जो प्रयुक्त करने योग्य हो। ११ विध्वस्त, समाप्त या नष्ट करने योग्य (को०)।

**साध्य²**—संज्ञा पुं० १ एक प्रकार के गणदेवता जिनकी संख्या बारह है और जिनके नाम इस प्रकार है—मन, मन्ता, प्राण, नर, अपान, वीर्यवान्, विनिर्भय, नय, दस, नारायण, वृष और प्रभुच। शारदीय नवरात्र मे इन गणो के पूजन का विधान है। २. देवता। ३ ज्योतिष मे विष्कभ आदि सत्ताइस योगो मे से इक्कीसवाँ योग जो बहुत शुभ माना जाता है।

विशेष—कहते हैं कि इस योग मे जो काम किया जाता है, वह भलीभाति सिद्ध होता है। जो बालक इस योग मे जन्म लेता है वह असाध्य कार्य भी सहज मे कर लेता है और बहुत वीर, धीर, बुद्धिमान् तथा विनयशील होता है।

४ तत्र के अनुसार गुरु से लिए जानेवाले चार प्रकार के मत्रो मे से एक प्रकार का मत्र। ५ न्याय वैशपिक दर्शन में वह पदार्थ जिसका अनुमान किया जाय। जैसे,—पर्वत से धूआँ निकलता है, अत वहाँ अग्नि है। इसमे 'अग्नि' साध्य है। ६ कार्य करने की शक्ति। सामर्थ्य। जैसे,—यह काम हमारे साध्य के बाहर है। ७ परिपूर्णता। पूर्ति (को०)। ८ चाँदी (को०)।

**साध्यता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ साध्य का भाव या धर्म। साध्यत्व। शक्यता। २ रोग आदि जो चिकित्सा द्वारा साध्य हो (को०)। ३ न्याय वैशेपिक दर्शन मे वह पदार्थधर्म (साध्य का धर्म) जो अनुमान मे सद्हेतु द्वारा अनुमेय हो (को०)।

**साध्यपक्ष**—संज्ञा पुं० [सं०] मुकदमे मे पूर्वपक्ष (को०)।

**साध्यर्षि**—संज्ञा पुं० [सं०] शिव (को०)।

**साध्यवसानरूपक**—संज्ञा पुं० [सं०] रूपक के ढग का एक अलकार जिसमे अध्यवसान केवल मूर्त प्रत्यक्षीकरण के लिये होता है, आतिशय्य की व्यजना के लिये नही। किसी मत या वाद को स्पष्ट करने के लिये की हुई रूप योजना। जैसे,—जल मे कुभ, कुभ मे जल है, बाहर भीतर पानी। फूटा कुभ, जल जलहि समाना, यह तत कथौ गियानी।—चितामणि, भा० २, पृ० ६८।

**साध्यवसाना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'साध्यवसानिका' (को०)।

**साध्यवसानिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्यदर्पण के अनुसार एक प्रकार की लक्षणा।

**साध्यवपाय**—वि० [सं०] जिसका अर्थ ऊपर से ग्रहण किया जाय (को०)।

**साध्यवान्**—संज्ञा पुं० [सं० साध्यवत] १. व्यवहार मे वह पक्ष जिस पर वाद प्रमाणित करने का भार हो। २ वह जिसमे साध्य या अनुमेय निहित हो (को०)।

**साध्यसम**—संज्ञा पुं० [सं०] न्याय मे वह हेतु जिसका साधन साध्य की भाँति करना पडे। जैसे,—पर्वत से धूआँ निकलता है, अत वहाँ अग्नि है। इसमे 'पर्वत' पक्ष है, 'धूआँ' हेतु है और 'अग्नि' साध्य है। धूएँ की सहायता से अग्नि का होना प्रमाणित किया जाता है। परतु यदि पहले यही प्रमाणित करना पडे कि धूआँ निकलता है, तो इसे साध्यसम कहेंगे।

**साध्यसाधन**—संज्ञा पुं० १ साध्य का साधन। हेतु। २ साध्य और साधन।

**साध्यसिद्धि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ साध्य अर्थात् करणीय की सिद्धि। लक्ष्य की उपलब्धि। २ निष्पत्ति (को०)।

**साध्र**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का साम।

**साध्वस**—संज्ञा पुं० [सं०] १ भय। डर। २ व्याकुलता। घबराहट। ३ प्रतिभा। ४ निष्क्रियता। जडता। जाड्य (को०)।

**साध्वसविप्लुत**—वि० [सं०] भयभीत। भय मे परिपूर्ण (को०)।

**साध्वाचार**—संज्ञा पुं० [सं०] १ साधुओ का सा आचार। २ शिष्टाचार।

**साध्वी¹**—वि० स्त्री० [सं०] १ पतिव्रता। पतिपरायणा (स्त्री)। २ शुद्ध चरित्रवाली (स्त्री)। सच्चरित्रा।

**साध्वी²**—संज्ञा स्त्री० १ दुग्ध पाषाण। २ मेदा नामक अष्टवर्गीय औषधि।

**सानद¹**—संज्ञा पुं० [सं० सानन्द] १ गुच्छकरज। स्निग्ध दल। २ एक प्रकार की सप्रज्ञात समाधि। ३ सगीत मे १६ प्रकार के ध्रुवको मे से एक प्रकार का ध्रुवक जिसका व्यवहार प्राय वीर रस के वर्णन के लिये होता है।

**सानद²**—क्रि० वि० आनद के साथ। आनदपूर्वक।

**सानद³**—वि० आनदयुक्त। हर्षित। प्रसन्न।

**सानदनी**—संज्ञा स्त्री० [सं० सानन्दनी] पुराणानुसार एक नदी का नाम।

**सानदा**—संज्ञा स्त्री० [सं० सानन्दा] लक्ष्मी का एक रूप (को०)।

**सानदाश्रु**—संज्ञा पुं० [सं० सानन्दाश्रु] आनद के आँसू। आनदानुभूति से उत्पन्न आँसू (को०)।

**सानदुरी**—संज्ञा पुं० [सं० सानन्दुरी] पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम।

**सानदूर**—संज्ञा पुं० [सं० सानन्दूर] वाराहपुराण मे उल्लिखित एक तीर्थ विशेष (को०)।

**सान¹**—संज्ञा पुं० [सं० शाण, प्रा० सान, तुल० फा० सान] वह पत्थर की चक्की जिसपर अस्त्रादि तेज किए जाते हैं। शाण। कुरड। उ०—तेज के प्रताप गात कच्छहू लखात नीको दीपत चढायो सान हीरा जिमी छीनो है।—शकुतला०, पृ० ११०।

मुहा०—सान चढाना, सान देना = धार तीक्ष्ण करना। धार तेज करना। सान धरना = अस्त्र तेज करना। चोखा करना।

**सान²**—संज्ञा स्त्री० [अ० शान] दे० 'शान'।—उ० कै सुलतान की सान रहै कै हमीर हठी की रहै हठ गाढी।—हम्मीर०, पृ० १९।

**सानक**—वि० [अ०] समान। तुल्य। उ०—जिनके अगे चान सूरज भीक के सानक हैं दो। ऐसे ऐसे आफतावों को उठा लाती हैं मैं।—दक्खिनी०, पृ० २६५।

**साननां[1]**—क्रि० स० [हिं० सनना का सक० रूप] १ दो वस्तुओं को आपस में मिलाना, विशेषतः चूर्ण आदि को तरल पदार्थ में मिलाकर गीला करना। गूँधना। जैसे,—आटा सानना। २ समिलित करना। शामिल करना। उत्तरदायी बनाना। जैसे,—आप मुझे तो व्यर्थ ही इस मामले में सानते हैं। ३. मिलाना। लपेटना। मिश्रित करना। सयुक्त करना। जैसे,—तुमने अपने दोनों हाथ मिट्टी में सान लिए। उ०—यह सुनि धावत धरनि चरन की प्रतिमा खगी पथ मे पाई। नैन नीर रघुनाथ सानिकै शिव सों गात चढाई।—सूर (शब्द०)।

सयो० क्रि०—डालना।—देना। लेना।

**साननां[2]**—क्रि० स० [हिं० सान + ना (प्रत्य०)] सानपर चढाकर धार तेज करना। (क्व०)।

**सानमान**(पु)—वि० [स० सानुमत्] चोटियो वाला। ऊँचा (पर्वत)। उ०—बलिहारी भूधर तुमैं धीर करैं गुन गान। मानमान कहि अचल कहि सब जग करैं बखान।—दीन ग्र०, पृ० २१०।

**सानल[1]**—सज्ञा पुं० [स०] शाल वृक्ष से निकलनेवाला निर्यास [कौ०]।

**सानल[2]**—वि० अनलयुक्त। अग्नियुक्त। २ कृत्तिका नामक नक्षत्र से युक्त [कौ०]।

**सानसि**—सज्ञा पुं० [स०] सोना। सुवर्ण [कौ०]।

**सानाथ्य**—सज्ञा पु० [स०] मदद। सहयोग। सहायता।

**सानिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] वशी। मुरली।

**सानिधि**(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० सान्निध्य] दे० 'सान्निध्य'। उ०—भगवदीन सगकरि, बात उनकी लै सदाँ, सानिधि इहि देति भैई। —नद० ग्र०, पृ० ३२८।

**सानिध्य**—सज्ञा पु० [स० सान्निध्य] दे० 'सान्निध्य'। उ०—और श्री आचार्यजी के पलगडी सानिध्य आत्मनिवेदन की आज्ञा किए। —दो सौ बावन०, भा० २, पृ० १६।

**सानिया**—सज्ञा पु० [अ० सानियह्] १ घटे का ६०वाँ भाग। मिनिट। २ पल। क्षण। लमहा [कौ०]।

**सानियिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सानिका' [कौ०]।

**सानी[1]**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सानना] १ वह भोजन जो पानी में सानकर पशुओं को खिलाया जाता है।

विशेष—नाद मे भूसा भिगो देते है और उसमे खली, दाना, नमक आदि छोडकर उसे पशुओं को खिलाते है। इसी को सानी कहते है।

२. अनुचित रीति से एक मे मिलाए हुए कई प्रकार के खाद्यपदार्थ। (व्यग्य)। ३. गाड़ी के पहिए मे लगाने की गिट्टक।

**सानी[2]**—सज्ञा स्त्री० [स० शाण या शाणा, शाणी (= सन का वस्त्र) प्रा० साणी] दे० 'सनई'।

**सानी[3]**—वि० [अ०] १. दूसरा। द्वितीय। जैसे,—औरंगजेब सानी। २. बराबरी का। समानता रखनेवाला। मुकाबले का। जैसे,—इन बातों मे तो तुम्हारा सानी और कोई नही है। उ०—बले अब तूँ ओ शैं के सानी नही। जो देऊँ अतिया अब सो तेरे तईं।—दक्खिनी०, पृ० २३६।

यौ०—ला सानी = जिसके समान और कोई न हो। अद्वितीय।

**सानु**—सज्ञा पुं० [स०] १ पर्वत की चोटी। शिखर। उ०—अचल हिमालय का शोभनतम लता कलित शुचि सानु शरीर। —कामायनी, पृ० २९। २ अत। सिरा। ३ समतल भूमि। (पर्वत के ऊपर की) चौरस जमीन। ४ वन। जगल। विशेषत पहाडी जगल। ५ मार्ग। रास्ता। ६ पल्लव। पत्ता। ७ सूर्य। ८ विद्वान्। पडित। ९ अँखुआ। अकुर (कौ०)। १० अतट। करारा। प्रपात (कौ०)। ११ चट्टान (कौ०)। १२ हवा का झोका। प्रभजन (कौ०)।

**सानुकप**—वि० [स० सानुकम्प] अनुकपा या दया से युक्त। सहानुभूतिशील [कौ०]।

**सानुक**—वि० [स०] उठा हुआ। उद्धत। उच्छ्रित। दृप्त। घमडी [कौ०]।

**सानुकूल**—वि० [स०] दे० 'अनुकूल'। उ०—सदा सो सानुकूल रह मो पर। कृपासिंधु सौमित्रि गुनाकर।—मानस, १।१७।

**सानुकूल्य**—सज्ञा पु० [स०] अनुकूल होने का भाव। अनुकूलता। पक्षग्रहण। सहयोगिता [कौ०]।

**सानुक्रोश**—वि० [स०] अनुक्रोश अर्थात् कृपायुक्त। दयालु। कृपालु [कौ०]।

**सानुग**—वि० [सं०] अनुगमन करनेवालों या अनुचरों से युक्त [कौ०]।

**सानुज[1]**—सज्ञा पुं० [स०] १ प्रपौड्रिक वृक्ष। पुडेरी। २ तुबुरु नामक वृक्ष।

**सानुज[2]**—वि० छोटे भाई के साथ। उ०—सानुज पठइअ मोहिं बन कीजिअ सबहि सनाथ।—मानस, २।२६७।

**सानुतर्प**—वि० [स०] तृषा या प्यासयुक्त। प्यासा [कौ०]।

**सानुनय[1]**—वि० [स०] विनयशील। शिष्ट।

**सानुनय[2]** - क्रि० वि० विनम्रता के साथ [कौ०]।

**सानुनासिक**—वि० [स०] १ जो अनुनासिक वर्ण से युक्त हो। २ नाक के बल गानेवाला [कौ०]।

**सानुपातिक**—वि० [स०] समुचित अनुपातयुक्त। उचित अगयुक्त। उ०—सानुपातिक सगीतात्मकता, रचना शैली की प्रधानता तथा ऐसी पूर्णता जो विश्लेषण से परे होने पर भी प्रतिदिन एक नए अर्थ का जन्म देगी।—हिं० का० आ० प्र०, पृ० १४४।

**सानुप्रास**—वि० [स०] जिसमे अनुप्रास हो। अनुप्रास से युक्त [कौ०]।

**सानुप्लव**—वि० [स०] अनुयायी वर्ग से युक्त। अनुगताओं, सहचरों आदि के साथ [कौ०]।

**सानुबध**—वि० [सं० सानुबन्ध] १. अनुबधयुक्त। व्यतिक्रमरहित। क्रमबद्ध। २ जिसके परिणाम हो। परिणाम या फल से युक्त। ३ अपनी वस्तुओं के साथ [कौ०]।

सानुभाव—वि० [स० स+अनुभाव] अनुभावयुक्त। कृपालु। सदय। अनुकूल। उ०—तब यह ब्राह्मन ने कह्यो जो मो पै महादेव सानुभाव है।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ४५।

सानुभावता—संज्ञा स्त्री० [स० सानुभावता] अनुभाव युक्त होने की स्थिति या भाव। उ०—सो कछूक दिन मे इनको सानुभावता जनाए।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० १०।

सानुमान्—संज्ञा पु० [स० सानुमत] पर्वत [को०]।

सानुमानक—संज्ञा पुं० [स०] पुडेरी। प्रपौंड्रीक।

सानुराग—वि० [स०] अनुरागयुक्त। प्रेमयुक्त। आसक्त [को०]।

सानुरुह—वि० [स०] पहाड पर या पहाड की चोटी पर पैदा होनेवाला [को०]।

सानुष्टि—संज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

सानूकर्ष—वि० [स०] धुरीवाला (रथ) [को०]।

सानेयी संज्ञा स्त्री० [स०] वंशी [को०]।

सानेरमा—वि० [सं०] निर्माता। वनानेवाला। स्रष्टा [को०]।

सानोका†—संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार की घास।

सान्नत—संज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का साम।

सान्नत्य—वि० [स०] स्वाभाविक या प्राकृतिक। प्रवृत्ति सबधी [को०]।

सान्नहनिक—वि०, संज्ञा पु० [स०] दे० 'सान्नाहिक'।

सान्नाय—संज्ञा पुं० [स०] मत्रो से पवित्र किया हुआ वह घी जिससे हवन किया जाता है।

सान्नाहिक¹—संज्ञा पु० [स०] वह जो सन्नाह पहने हो। कवचधारी।

सान्नाहिक²—वि० १. युद्धार्थ प्रोत्साहित करनेवाला। २ कवचधारी। सन्नाह से युक्त [को०]।

सान्नाहुक—वि० [स०] जो कवच, शस्त्र आदि धारण करने योग्य हो [को०]।

सान्निध्य—संज्ञा पुं० [स०] १ समीपता। सामीप्य। सन्निकटता। २ एक प्रकार की मुक्ति जिसमे आत्मा का ईश्वर के समीप पहुँच जाना माना जाता है। मोक्ष।

सान्निध्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सान्निध्य का धर्म या भाव।

सान्निपातकी—संज्ञा संज्ञा [स०] एक प्रकार का योनि रोग जो त्रिदोष से उत्पन्न होता है।

सान्निपातिक—वि० [स०] १ सन्निपात सबधी। सन्निपात का। २ त्रिदोष सबधी। त्रिदोष से उत्पन्न होनेवाला (रोग)। उ०—तीनो दोषों के लक्षण मिलते हो उसको सान्निपातिक रक्त पित्त जानना।—माधव०, पृ० १७। ३ उलझा हुआ। पेचीदा। जटिल (को०)।

सान्न्यासिक—संज्ञा पुं० [स०] वह ब्राह्मण जो अपने धार्मिक जीवन के चतुर्थ आश्रम मे प्रविष्ट हो। वह जिसने सन्यास ग्रहण किया हो। सन्यासी।

सान्मातुर—संज्ञा पु० [स०] सती साध्वी स्त्री की सतान [को०]।

सान्यपुत्र—संज्ञा पु० [स०] प्राचीन काल के एक वैदिक आचार्य।

सान्वय—वि० [स०] १ वशपरपरागत। २ कुल या वशजो के साथ। ३ कुलविशेष से सबधित। ४. महत्वपूर्ण। ५ समान कार्य या व्यापारवाला। ६ पद्य के शब्दो की वाक्यरचना के नियमानुसार परस्पर क्रमबद्धता से युक्त [को०]।

साप ⓤ¹ संज्ञा पुं० [स० शाप] दे० 'शाप'। उ०—छूटो छूटचो पूरचो वचन, द्विजहु न दीनो साप।—भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० २६३।

साप†²—वि० [अ० साफ] दे० 'साफ'। उ०—मना मनशा साप करो।—दक्खिनी०, पृ० ५६।

सापणी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पिणी] दे० 'साँपिन'। उ०—पयी एक सँदेसडउ, लग ढोलइ पैहुच्याइ। निरमी वेणी सापणी, स्वात न वरसउ आइ।—ढोला०, दू० १२५।

सापत्न¹—वि० [स०] [वि० स्त्री० सापत्नी] १ सपत्न या शत्रु सबधी। २ सौत सबधी या सौत से उत्पन्न [को०]।

सापत्न²—संज्ञा पुं० एक ही पति की अनेक पत्नियो से उत्पन्न सतति। सौतेली सतान [को०]।

सापत्नक—संज्ञा पु० [स०] १ द्वेष। शत्रुता। २ दे० 'सापत्न्य' [को०]।

सापत्नेय—वि० [स०] सपत्नी का। सौतेला [को०]।

सापत्न्य¹—संज्ञा पु० [स०] १ सपत्नी का भाव या धर्म। सौतपन। २ सपत्नी का पुत्र। सौत का लडका। ३ शत्रु। दुश्मन। ४ द्वेष। शत्रुता (को०)। ५ सौतेला भाई (को०)।

सापत्न्य²—वि० [स०] सपत्नी सबधी। सपत्नी या सौत का [को०]।

सापत्न्यक—संज्ञा पु० [स०] दे० 'सापत्नक' [को०]।

सापत्य¹—वि० [स०] १ अपत्ययुक्त। सततियुक्त। सतान युक्त। २ जिसे गर्भ हो। गर्भ से युक्त [को०]।

सापत्य²—संज्ञा पुं० १ सपत्नी का पुत्र। सौत का बेटा। २ सौतेला भाई [को०]।

सापत्रप—वि० [स०] अपत्रप या सकोच मे पडा हुआ। लज्जित [को०]।

सापद(पु)—संज्ञा पु० [सं० श्वापद] श्वापद। पशु।

सापन¹—संज्ञा पुं० [देश० ?] एक प्रकार का रोग। जिसमे सिर के बाल गिर जाते है।

सापन(पु)²—संज्ञा स्त्री० [स० सर्पिणी] दे० 'साँपिन'। उ०—हन्यौ संग दुअ अग निकसि दुअ अगुल सापन।—पृ० रा०, ७।१२०।

सापना(पु)†—क्रि० स० [स० शाप, हिं० साप+ना (प्रत्य०)] १ शाप देना। बददुआ देना। उ०—चहत महामुनि जाग गयो। नीच निसाचर देत दुसह दुख कृस तनु ताप तयो। सापे पाप नए निदरत खल, तब यह मत्र ठयो। विप्र साधु सुर धेनु धरनि हित हरि अवतार लयो।—तुलसी ग्र०, पृ० २६३। २ दुर्वचन कहना। गाली देना। कोसना।

सापराध—वि० [स०] दोषी। अपराधी [को०]।

सापवाद—वि० [स०] लोकापवाद से युक्त। कलकपूर्ण [को०]।

सापवादक—वि० [स०] जिसका अपवाद हो सके [को०]।

सापाय—वि० [स०] १ शत्रु से लडनेवाला। २ अपाययुक्त। खतरे से पूर्ण [को०]।

सापाश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] वह मकान जिसके पिछले भाग में खुली दालान हो [को०]।

सापिंड्य—संज्ञा पुं० [सं० सापिण्ड्य] सापिंड होने का भाव या धर्म।

सापुरस(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सत्पुरुष] दे० 'सत्पुरुष'। उ०—(क) मोड सूर सापुरसो।—रा० रू०, पृ० १३८। (ख) अग न छूटै आखडी, सीहाँ सापुरसाँह।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० १६।

सापेक्ष—वि० [सं०] एक दूसरे के सबध पर स्थित। अपेक्षा सहित। उ०—मानस, मानुषी, विकासशास्त्र है तुलनात्मक, सापेक्ष ज्ञान।—युगात, पृ० ६०।

सापेक्षिक—वि० [सं०] दे० 'सापेक्ष'। उ०—सर्वमान्य तथ्य तो एक सापेक्षिक बात है।—आचार्य०, पृ० १२६।

सापेक्ष्य—वि० [सं०] अपेक्षित। आवश्यक। उ०—इसी से इस प्रश्न के सबध मे सावधानी सापेक्ष्य है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २३८।

सात्ततंतव—संज्ञा पुं० [सं० सात्ततन्तव] प्राचीन काल का एक धार्मिक सप्रदाय।

साप्तपद¹—वि० [सं०] [स्त्री० साप्तपदी] १ सप्तपदी। सात पद साथ साथ चलने या सात शब्द, वाक्य परस्पर वार्ता करने से सवधित। २ सप्तपदी सबधी।

साप्तपद²—संज्ञा पुं० १ घनिष्ठता। मित्रता। २ विवाह के समय वर तथा वधू द्वारा यज्ञाग्नि की सात प्रदक्षिणा करना [को०]।

साप्तपदीन—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'साप्तपद'।

साप्तपुरुष—वि० [सं०] दे० 'साप्तपौरुष'।

साप्तपौरुष—वि० [सं०] [वि० स्त्री० साप्तपौरुषी] सात पीढियो तक जानेवाला। सात पीढियो को समिलित करनेवाला [को०]।

साप्तमिक—वि० [सं०] १ सप्तमी सबधी। सप्तमी का। २ सप्तमी विभक्ति से सबधित (को०)।

साप्तरथवाहनि—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक प्राचीन ऋषि का नाम।

साप्ताहिक¹—वि० [सं०] १ सप्ताह से सबधित। २ सप्ताह भर का या सप्ताह भर के लिये। जैसे,—साप्ताहिक राशन। ३ प्रति सप्ताह या सप्ताह सप्ताह प्रकाशित होनेवाला। जैसे,—साप्ताहिक पत्र।

साप्ताहिक²—संज्ञा पुं० साप्ताहिक समाचार पत्र।

साफ¹—वि० [अ० साफ] १ जिसमे किसी प्रकार का मैल या कूडा करकट आदि न हो। मैला या गँदला का उलटा। स्वच्छ। निर्मल। जैसे,—साफ कपडा, साफ कमरा, साफ रग। २. जिसमे किसी और चीज की मिलावट न हो। शुद्ध। खालिस। जैसे,—साफ पानी। ३ जिसकी रचना या सयोजक अगो मे किसी प्रकार की त्रुटि या दोष न हो। जैसे,—साफ लकडी। ४ जो स्पष्टतापूर्वक अकित या चित्रित हो। जो देखने मे स्पष्ट हो। जैसे,—साफ लिखाई, साफ छपाई, साफ तसवीर। ५ जिसका तल चमकीला और सफेदी लिए हो। उज्ज्वल। जैसे,—साफ कपडा। ६ जिसमे किसी प्रकार का भद्दापन या गडवडी आदि न हो। जिसे देखने मे कोई दोष न दिखाई दे। जैसे,—साफ खेल। (इद्रजाल या व्यायाम आदि के), साफ कुदान। ७ जिसमे किसी प्रकार का झगडा, पेच या फेरफार न हो जिसमे कोई वखेडा या झझट न हो। जैसे,—साफ मामला, साफ बरताव। ८ जिसमे धुँधलापन न हो। स्वच्छ। चमकीला। जैसे,—साफ शीशा, साफ आसमान। ९ जिसमे किसी प्रकार का छल कपट न हो। निष्कपट। जैसे,—साफ दिल। साफ आदमी।

मुहा०—साफ साफ सुनाना = बिल्कुल स्पष्ट और ठीक बात कहना। खरी बात कहना।

१० जो स्पष्ट सुनाई पडे या समझ मे आवे। जिसके समझने या सुनने मे कोई कठिनता न हो। जैसे, साफ आवाज, साफ लिखावट, साफ खबर। ११ जिसका तल ऊबड खाबड न हो। समतल। हमवार। जैसे,—साफ जमीन, साफ मैदान। १२. जिसमे किसी प्रकार की विघ्न बाधा आदि न हो। निर्विघ्न। निर्बाध। १३ जिसके ऊपर कुछ अकित न हो। सादा। कोरा। १४ जिसमे किसी प्रकार का दोष न हो। वेऐब। १५ जिसमे से अनावश्यक या रद्दी अश निकाल दिया गया हो। १६ जिसमे से सब चीजे निकाल ली गई हो। जिसमे कुछ तत्व न रह गया हो।

यौ० साफ साफ = स्पष्ट रूप से। खुलकर।

मुहा०—साफ करना = (१) मार डालना। वध करना। हत्या करना। (२) नष्ट करना। चौपट करना। बरबाद करना। न रहने देना। (३) खा जाना। मैदान साफ होना = किसी प्रकार की विघ्न बाधा न होना निर्द्वंद्व होना। साफ बोलना = (१) किसी शब्द का ठीक ठीक उच्चारण करना। स्पष्ट बोलना। (२) साफ होना। समाप्त होना। खतम होना। ११ लेनदेन आदि का निपटना। चुकता होना। जैसे,—हिसाब साफ होना।

साफ²—क्रि० वि० १ विना किसी प्रकार के दोष, कलक या अपवाद आदि के। बिना दाग लगे। जैसे,—साफ छूटना। २ बिना किसी प्रकार की हानि या कष्ट उठाए हुए। बिना किसी प्रकार की आँच सहे हुए। जैसे,—साफ बचना। साफ निकलना। ३ इस प्रकार जिसमे किसी को पता न लगे या कोई बाधक न हो। जैसे,—(माल या स्त्री आदि) साफ उडा ले जाना। ४ बिलकुल। नितात। जैसे,—साफ इनकार करना। साफ बेवकूफ बनाना। ५ बिना अन्न जल के। निराहार।

साफगो—वि० [illegible] गो] स्पष्ट कहनेवाला। स्पष्टवक्ता [को०]।

साफगोई [illegible] [०साफगोई] स्पष्टवादिता। दो टूक या साफ [illegible] [को०]।

साफदि[illegible] [साफदिल] निष्कपट हृदयवाला। सच्चे

**साफदिली**—संज्ञा स्त्री० [फा० साफदिली] १ अंतःशुद्धि। मन का निष्कपट होना। २ किसी के प्रति द्वेषभाव न होना।

**साफदीदा**—वि० [फा० साफदीदह्] निर्लज्ज। बेशरम। धृष्ट।

**साफल**(पु)—संज्ञा पु० [सं० साफल्य] दे० 'साफल्य'। उ०—हरि भज साफल जीवना, पर उपचार समाइ। दादू मरणा तहँ भला, जहाँ पसु पखी खाइ।—सतवाणी०, पृ० ७८।

**साफल्य**—संज्ञा पु० [सं०] १ सफल होने का भाव। सफलता। कृतकार्यता। २ सिद्धि। लाभ। ३ उत्पादकता। उपयोगिता।

**साफा**—संज्ञा पुं० [अ० साफ] [स्त्री० साफी] १ सिर पर बाँधने की पगडी। मुरेठा। मुडासा।

यौ०—साफेबाज = साफा पहननेवाला। उ०—चाहे साफेबाज, फेटेबाज या अम्मामेबाज।—प्रेमघन०, भा० ३, पृ० २७७।

२ शिकारी जानवरो को शिकार के लिये या कबूतरो को दूर तक उडने के लिये तैयार करने के उद्देश्य से उपवास कराना।

मुहा०—साफा देना = उपवास करना। भूखा रखना।

३ नित्य के पहनने या ओढने के वस्त्रो आदि को साबुन लगाकर साफ करना। कपडे धोना। (बोल०)।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

यौ०—साफा पानी = अवकाश के समय इतमीनान के साथ कपडो का धोना और नहाना।

**साफिर**[1]—संज्ञा पुं० [अ० साफिर] १ दुर्बल घोडा। २ सफर करनेवाला यात्री (को०)।

**साफी**—संज्ञा स्त्री० [अ० साफी] १ हाथ मे रखने का रूमाल। दस्ती। २ वह कपडा जो गाँजा पीनेवाले चिलम के नीचे लपेटते है। ३ भाँग छानने का कपडा। छनना। उ०—साफी छानै सुरति अमल हरि नाम का।—पलटू०, भा० २, पृ० ६४। ४ एक प्रकार का रदा जो लकडी को बिलकुल साफ कर देता है। ५ वह कपडा जिससे चूल्हे पर से कडाही आदि उतारी जाय।

**सावका**(पु)—संज्ञा पु० [अ० साबिकह्] दे० 'साबिका'। उ०—बाप सावका करै लराई मयामद मतवारी।—कबीर ग्र०, पृ० ३२७।

**सावत**(पु)[1]—संज्ञा पु० [सं० सामन्त] सामत। सरदार। (डिं०)।

**सावत**(पु)[2]—वि० [फा० अ० सबूत] दे० 'साबूत'। उ०—मुसकनि मल्हिम लगाय घाव सावत करि दीन्हौं।—ब्रज० ग्र०, पृ० १४।

**साबन**—संज्ञा पुं० [अ० साबून, उर्दू साबुन] दे० 'साबुन'।

**सावर**—संज्ञा पुं० [सं० शम्बर] १ दे० 'साँभर'। २ साँभर मृग का चमडा जो मुलायम होता है। ३ शबर जाति के लोग। ४ थूहर वृक्ष। ५ मिट्टी खोदने का एक औजार। सबरी। ६ एक प्रकार का सिद्ध मंत्र जो शिवकृत माना जाता है। उ०—स्वारथ के साथी मेरे हाथ सो न लेवा देई काहू तो न पीर रघुबर दीन जन की। साप सभा सावर लबार भए दैव दिव्य दुसह साँसति कीजै आगे दै या तन की।—तुलसी (शब्द०)।

**सावरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सावर + ई (प्रत्य०)] साँभर मृग का मुलायम चमडा। उ०—दूजे पै सावरी परतला परि मन मोहुत।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० १३।

**सावल**†—संज्ञा पुं० [सं० शवर] बरछी। भाला। उ०—सूरजमाल दुकाल नेज गज ढाल निहारे। फल मावर फोरियो, विडग औरियो वधारे।—रा० रू०, पृ० ८६। २ सगरी। साबर।

**सावस**‡[1]—संज्ञा पुं० [फा० शाबाश] वाहवाही देने की क्रिया। दाद। दे० 'शाबाश'।

**सावस**[2]—अव्य० वाह वाह। धन्य। साधु साधु। उ०—बोल्यौ वहुरि हमीर, सावस जग तेरौ जनम।—हम्मीर०, पृ० ४८।

**साबाध**—वि० [सं०] अस्तव्यस्त। बाधायुक्त। अव्यवस्थित (को०)।

**साबिक**—वि० [अ० साबिक] पूर्व का। पहले का। पुराने समय का। उ०—प्रभू जू मैं ऐसो अमल कमायो। साबिक जमा हुती जो जोगी मीजांकुल तल लायो।—सूर (शब्द०)।

यौ०—साबिक दस्तूर = जैसा पहले था, वैसा ही। पहले की ही तरह। जिसमे कुछ परिवर्तन न हुआ हो। जैसे,—उसका हाल वही साबिक दस्तूर है।

**साबिका**—संज्ञा पु० [अ० साबिक़ह्] १ जान पहचान। मुलाकात। भेंट। २ उपसर्ग (को०)। ३ सबध। सरोकार। व्यवहार।

मुहा०—साबिका पडना = (१) काम पडना। वास्ता पडना। (२) लेन देन होना। (३) मेल मिलाप होना।

**साबिग**—वि० [अ० साबिग] रँगनेवाला (को०)।

**साबित**[1]—वि० [अ०, फा०] जिसका सबूत दिया गया हो। प्रमाणित। सिद्ध। २ मजबूत। दृढ (को०)। ३ ठहरा हुआ। स्थिर (को०)। ४, सबूत। समग्र। सब। साबूत। पूरा। ५ दुरुस्त। ठीक। उ०—द्वै लोचन साबित नहि तेऊ।—सूर (शब्द०)।

**साबित**[2]—संज्ञा पुं० वह नक्षत्र या तारा जो चलता न हो, एक ही स्थान पर सदा ठहरा रहता हो।

**साबितकदम**—वि० [अ० साबितकदम] दृढनिश्चयी। दृढप्रतिज्ञ (को०)।

**साबितकदमी**—संज्ञा स्त्री० [अ० साबितकदमी] इरादे की दृढता। दृढप्रतिज्ञता (को०)।

**साबिर**—वि० [अ०] [स्त्री० साबिरा] १ सहनशील। धैर्यवान। २ जो प्रत्येक स्थिति मे ईश्वरकृपा पर निर्भर हो (को०)।

**साबुत**—वि० [फा० सबूत] १ जिसका कोई अंग कम न हो। साबूत। सपूर्ण। २ दुरुस्त। ३ स्थिर। निश्चल।

**साबुन**—संज्ञा पुं० [अ०] रासायनिक क्रिया से प्रस्तुत एक प्रसिद्ध पदार्थ जिससे शरीर और वस्त्रादि साफ किए जाते है।

विशेष—यह सज्जी, चूने, सोडा तेल और चर्बी आदि के सयोग से बनाया जाता है। देशी साबुन मे चर्बी नही डाली जाती, पर विलायती साबुन मे प्राय चर्बी का मेल रहता है। शरीर में लगाने के विलायती साबुनो मे अनेक प्रकार की सुगंधियाँ भी रहती है।

यौ०—साबुनफरोश = साबुन बेचनेवाला। साबुनसाज = साबुन बनानेवाला। साबुनसाजी = साबुन बनाने का काम।

**साबूत**—वि० [फा० सबूत] दे० 'साबुत'। उ०—सत सिलाह सतोष साबूत तुम पहिरु सहिदान मरदान यारा।—सत० दरिया, पृ० ८१।

साबूदाना—संज्ञा पुं० [अं० सैगो, हिं० सागू + दाना] दे० 'सागूदाना'।

साबूनी—संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार की मिठाई [को०]।

साब्दी१—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की दाख। द्राक्षा।

साब्दी(पु)२—वि० [सं० शाब्दी] शब्द संबंधिनी। दे० 'शाब्दी'।

साभार—क्रि० वि० [सं०] आभार के साथ। एहसान प्रकट करते हुए।

साभाव्य—संज्ञा पुं० [सं०] प्रकृति या स्वभाव की परख। प्रकृति की पहिचान [को०]।

साभिनय—क्रि० वि० [सं०] नाटकीयता के साथ। अभिनय मुद्रा के साथ [को०]।

साभिनिवेश—वि० [सं०] १ किसी वस्तु के लिये उत्कट अनुराग, रुचि, पक्षपात आदि से युक्त। अभिनिवेशयुक्त। २ अभिनिवेशपूर्वक [को०]।

साभिप्राय—वि० [सं०] १ अभिप्राय के साथ। विशेष अर्थ से युक्त। २ विशेष प्रयोजन से युक्त। सोद्देश्य। उ०—सकल साभिप्राय, समझ पाया था नही मैं, थी तभी यह हाय।—अपरा, पृ० १६४।

साभिमान१—वि० [सं०] अभिमानयुक्त। घमंडी।

साभिमान२—अव्य० अभिमान के साथ। अभिमानपूर्वक [को०]।

साभिवादन—वि० [सं० स + अभिवादन] अभिवादनयुक्त। अभिवादन के साथ उ०—नवीन नरेश महाराज बंधुवर्मा ने साभिवादन श्री चरणों में संदेश भेजा है।—स्कंद०, पृ० ७।

साभ्यसूय—वि० [सं०] डाह करनेवाला। ईर्ष्यालु। द्वेषी [को०]।

सामंजस्य—संज्ञा पुं० [सं० सामञ्जस्य] १ औचित्य। २ यथार्थता। शुद्धता (को०)। ३ उपयुक्तता। ४ अनुकूलता। ५ वैषम्य या विरोध आदि का अभाव। मेल।

सामंत१—संज्ञा पुं० [सं० सामन्त] १ वीर। योद्धा। उ०—अजबेस सामंत भगवान बोले त्याहीं। सेस ज्वाला की सी पर सोनागिर ज्याहीं।—रा० रू०, पृ० ११४। २, किसी राज्य का करद कोई बड़ा जमींदार या सरदार। शुक्रनीति के अनुसार वह नरेश जिसकी भूमि का राजस्व ३ लाख कर्ष हो। ३ पड़ोसी। ४ श्रेष्ठ प्रजा। ५ समीपता। सामीप्य। नजदीकी। ६ पड़ोसी राजा। पड़ोस के राज्य का नरेश (को०)।

सामंत२—वि० १ समीपवर्ती। सीमावर्ती। सरहदी। २ अनुगत। सेवक। ३ सर्वव्यापक। विश्वव्यापक [को०]।

सामंतचक्र—संज्ञा पुं० [सं० सामन्तचक्र] पड़ोसी अथवा करद राजाओं का मंडल [को०]।

सामंतज—वि० [सं० सामन्तज] जो पड़ोसी या करद राजाओं द्वारा उत्पन्न हो [को०]।

सामंतभारती—संज्ञा पुं० [सं० सामन्त भारती] राग मल्लार और सारंग के मेल से बना हुआ एक संकर राग।

सामंतवासी—वि० [सं० सामन्तवासिन्] पड़ोस में रहनेवाला। पड़ोसी [को०]।

सामंत सारंग—संज्ञा पुं० [सं० सामन्तसारङ्ग] एक प्रकार का सारंग राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

सामंती१—संज्ञा स्त्री० [सं० सामन्ती] एक प्रकार की रागिनी जो मेघ राग की प्रिया मानी जाती है।

सामंती२—संज्ञा स्त्री० [सं० सामन्त + ई (प्रत्य०)] १ सामंत का भाव या धर्म। २ सामंत का पद।

सामंती३—वि० सामंत की। सामंत संबंधी। उ०—मध्यकाल के कवियों ने इस सामंती चाकरी के विरोध में लोक साहित्य की नींव डाली थी।—आचार्य०, पृ० १२।

सामंती†४—संज्ञा स्त्री० [देशी] समतल भूमि। सम भूमि [को०]।

सामंतेय—संज्ञा पुं० [सं० सामन्तेय] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सामंतेश्वर—संज्ञा पुं० [सं० सामन्तेश्वर] चक्रवर्ती सम्राट्। शाहंशाह।

सामंद(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० समुद्र, प्रा० समुद्द] दे० 'समुद्र'। उ०—दुझल जिण भुजाँवल्लहूत आठूँ दिसाँ, लंघ सामंद कीधी लडाई।—रघु० रू०, पृ० ३१।

सामंदर—संज्ञा पुं० [फा०] अग्नि कीट। आग में रहनेवाला कीड़ा। समंदर [को०]।

साम१—संज्ञा पुं० [सं० सामन्] १ वे वेद मंत्र जो प्राचीन काल में यज्ञ आदि के समय गाए जाते थे। छंदोबद्ध स्तुतिपरक मंत्र या सूक्त। २ चारों वेदों में तीसरा वेद। विशेष—दे० 'सामवेद'। ३ मीठी बातें करना। मधुर भाषण। ४ राजनीति के चार अंगों या उपायों में से एक। अपने वैरी या विरोधी को मीठी बातें करके प्रसन्न करना और अपनी ओर मिला लेना। (शेष तीन अंग या उपाय दाम, दंड और भेद हैं।) ५ संतुष्ट करना। शांत करना (को०)। ६ मृदुता। कोमलता (को०)। ७ ध्वनि। स्वर। आवाज (को०)।

साम२—वि०, संज्ञा पुं० [सं० श्याम] दे० 'स्याम'। उ०—धूम साम धौरे घन छाए।—जायसी ग्रं०, पृ० १५२।

साम३—संज्ञा पुं० [अ० शाम] दे० 'शाम' (देश)।

साम४—संज्ञा स्त्री० [फा० शाम] सायंकाल। दे० 'शाम'। उ०—घुरविनिया छोडत नहिं कबहीं होइ भोर भा साम।—गुलाल०, पृ० १६।

साम(पु)५—संज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'सामी' (लोहे का बंद)। हथियार। उ०—सूरा के सिर साम है, साधो के सिर राम।—दरिया० बानी, पृ० १४।

साम(पु)६—संज्ञा पुं० [फा० सामान, सामाँ] दे० 'सामान'। उ०—बालमीकि अजामिल के कछु हुतो न साधन सामो।—तुलसी (शब्द०)।

साम७—वि० [सं०] जो पचा न हो। जिसका अच्छी तरह पाक न हुआ हो [को०]।

सामक१—संज्ञा पुं० [सं० श्यामक, प्रा० सामय] साँवाँ नामक अन्न। विशेष दे० 'साँवाँ'।

सामक२—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह मूल धन जो ऋण स्वरूप लिया या दिया गया हो। कर्ज का असल रुपया। २ सान धरने का पत्थर। ३. वह जो सामवेद का अच्छा ज्ञाता हो। ४. समान धन।

सामक२—वि० सामवेद सबधी । सामवेदीय [को०] ।

सामकपुख—सज्ञा पु० [म० सामकपुङ्ख] सरफोका घास ।

सामकल—सज्ञा पु० [म०] मृदु स्वर या मैत्रीपूर्ण वार्ता [को०] ।

सामकारी—सज्ञा पु० [म० सामकारिन्] १ वह जो मीठे वचन कह कर किसी को ढाढस देता हो । सात्वना देनेवाला । २ एक प्रकार का सामगान ।

सामग१—सज्ञा पु० [म०] [स्त्री० सामगी] १ वह जो सामवेद का अच्छा ज्ञाता हो । २ विष्णु का एक नाम ।

सामग२—वि० सामगायक । उ०—गर्जना के साथ वेदो को गानेवाले सामग ऋषि समाज ने राजसूय यज्ञ करवाया तो भी यज्ञपूर्ति का शख नही वजा ।—राम० धर्म०, पृ० २८० ।

सामगर्भ—सज्ञा पुं० [स०] विष्णु ।

सामगान—सज्ञा पु० [म०[ १ एक प्रकार का साम । २ वह जो सामवेद का अच्छा ज्ञाता हो ।

सामगानप्रिय—सज्ञा पु० [म०] १ शिव । २ मगल ग्रह [को०] ।

सामगाय—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो सामगान का अच्छा ज्ञाता हो । २ सामगान ।

सामगायक—सज्ञा पु० [म०] सामवेदी ब्राह्मण [को०] ।

सामगायन—सज्ञा पु० [स०] १ विष्णु २. साम का गान [को०] ।

सामगायी—वि० [स० सामगायिन्] साम गानेवाला । सामगायक [को०] ।

सामग्री—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वे पदार्थ जिनका किसी विशेष कार्य मे उपयोग होता है । जैसे,—यज्ञ की सामग्री । २ असवाव । सामान । ३ आवश्यक द्रव्य । जरूरी चीज । ४ किसी कार्य की पूर्ति के लिये आवश्यक वस्तु । साधन ।

सामग्य—सज्ञा पु० [स०] १ अस्त्र शस्त्र । हथियार । २ क्षेम । कुशल (को०) । ३ समग्रता । सपूर्णता (को०) । ४ समुदायत्व । समूहवद्धता (को०) । ५ भाडार । खजाना ।

सामज१—वि० [स०] १ जो सामवेद से उत्पन्न हुआ हो । २ साम नीति के कारण उत्पन्न ।

सामज२—सज्ञा पु० हाथी, जिसकी उत्पत्ति ब्रह्मा के सामगान से मानी जाती है ।

सामजात—वि० [म०] दे० 'सामज' [को०] ।

सामत१—सज्ञा पु० [स० सामन्त] दे० 'सामत' ।

सामत२—सज्ञा स्त्री० [अ० शामत] दे० 'शामत' ।

सामता(पु)१—सज्ञा स्त्री० [स० समता] समत्व । साम्य । समता । उ०—दरिया साध और स्वाग का, क्रोड कोस या वीच । नाम रचा सो सामता स्वाग काल की कीच ।—दरिया० बानी, पृ० ३३ ।

सामता२—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सामत्व' ।

सामति(पु)—सज्ञा स्त्री० [म० सामर्थ्य, प्रा० सामच्छ, सामत्थ] दे० 'सामर्थ्य' । उ०—जा घट जैसी सामति देपो ता घट तैसा मेलो ।—रामानद०, पृ० १६ ।

सामत्रय—सज्ञा पु० [म०] हर्रे, सोठ और गिलोय इन तीनो का समूह ।

सामत्व—सज्ञा पुं० [स०] साम का भाव या धर्म । सामता ।

सामध—(पु)—सज्ञा पुं० [सं० सम्बन्धी, हिं० समधी] विवाह के अवसर पर समधियो के परस्पर मिलने की एक रस्म । उ०—(क) सामध देखि देव अनुरागे ।—(ख) पहिलहि पवरि मु सामध भा सुखदायक । इत विधि उत हिमवान सरिस सब लायक ।—तुलसी ग्र०, पृ० ४० ।

सामध्वनि—सज्ञा पुं० [म०] सामवेद की ध्वनि । साम का गान [को०] ।

सामन१—वि० [सं०] शातिप्रिय । अनुद्विग्न । स्वस्थ । साम द्वारा उपचार करने योग्य [को०] ।

सामन(पु)†२—सज्ञा पु० [स० श्रावण, हिं० सावन] दे० 'सावन' । उ०—सखी री सामन दूल्हे आयो ।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० १४८ ।

सामना—सज्ञा पुं० [हिं० सामने, पु० हिं० सम्मुह, सामुहे] १ किसी के समक्ष होने की क्रिया या भाव । जैसे,—जव हमारा उनका सामना होगा, तव हम उनसे बातें करेंगे ।

मुहा०—सामने आना = आगे आना । समुख आना । जैसे,—अव तो वह कभी हमारे सामने ही नहीं आता । सामने का = (१) जो समक्ष हो । (२) जो अपने देखने मे हुआ हो । जो अपनी उपस्थिति मे हुआ हो । जैसे,—(क) यह तो हमारे सामने का लडका है । (ख) यह तो हमारे सामने की वात है । सामने करना = किसी के समक्ष उपस्थित करना । आगे लाना । सामने की चोट = सीधी चोट । सामने से होनेवाली घातक मार । सामने की वात = आंखो देखी वात । वह वात जो अपनी उपस्थिति में हुई हो । सामने पडना = (१) दृष्टि के आगे आना । (२) वाधा खडी करना । मार्ग रोकना । सामने से उठ जाना = देखते देखते अस्तित्व समाप्त हो जाना । सामने होना = (१) (स्त्रियो का) परदा न करके समक्ष आना । जैसे,—उनके घर की स्त्रियाँ किसी के सामने नही होती ।

२ भेट । मुलाकात । ३ किसी पदार्थ का अगला भाग । आगे की ओर का हिस्सा । आगा । जैसे,—उस मकान का सामना तालाव की ओर पडता है । ४ किसी के विरुद्ध या विपक्ष में खडे होने की क्रिया या भाव । मुकावला । जैसे,—वह किसी वात मे आपका सामना नही कर सकता । ५ भिडत । मुठभेड । लडाई । जैसे,—युद्धक्षेत्र मे दोनो दलो का सामना हुआ । ६ उद्दडता । गुस्ताखी । ढिठाई ।

मुहा०—सामना करना = धृष्टता करना । सामने होकर जवाव देना । गुस्ताखी करना । जैसे,—जरा सा लडाका, अभी से सवका सामना करता है ।

सामनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] पशुओ को वाँधने की रज्जु । पगहा [को०] ।

सामने—क्रि० वि० [म० सम्मुख, प्रा० सम्मुहे, पु० हिं० सामुहें] १ समुख । समक्ष । आगे । २ उपस्थिति मे । मौजूदगी मे । जैसे—तुम्हारे सामने उन्हे कौन पूछेगा । ३ सीधे । आगे । जैसे,—सामने जाने पर एक मोड मिलेगा । ४, मुकावले मे । विरुद्ध ।

सामन्य१—सज्ञा पु० [सं०] १ सामवेद का ज्ञाता ब्राह्मण । २ वह जो सामवेद का कुशलतापूर्वक गायन करे [को०] ।

सामन्य२—वि० १ अनुकूल । जो विरुद्ध न हो । २ जो सामगायन मे प्रवीण हो [को०] ।

सामपुष्पि—संज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

सामप्रधान—वि० [सं०] जिसमें साम नीति मुख्य हो। मैत्रीपूर्ण। दोस्ताना [को०]।

सामप्रयोग—संज्ञा पुं० [सं०] सान्त्वना प्रदायक वचन या कथन [को०]।

सामय(पु)—संज्ञा पुं० [सं० समय] दे० 'समय'। उ०—सामय समय पनीह बटा।—नंद० ग्रं०, पृ० ८४।

सामयाचारिक[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सामयाचारिकी] समयाचार संबंधी प्रचलित व्यवस्थाओं, निर्धारित मान्यताओं एवं स्वीकृत परंपराओं, या विधान संबंधी [को०]।

यौ०—सामयाचारिक सूत्र = समयाचार संबंधी एक ग्रंथ।

सामयिक[1]—वि० [सं०] १ समय संबंधी। समय का। २ वर्तमान समय से संबंध रखनेवाला।

यौ०—समसामयिक। सामयिकपत्र = समाचार पत्र।

३ समय की दृष्टि मे उपयुक्त। समय के अनुसार। समयोचित। ४ किसी एक निश्चित कालावधि का। नियतकालिक (को०)। ५ जो तय हुआ हो उसके अनुसार। समय के अनुकूल (को०)। ६ ठीक समय पर होनेवाला (को०)। ७ अल्पकालिक। अस्थायी (को०)।

सामयिक[2]—संज्ञा पुं० समय या अवधि। नियत काल [को०]।

सामयिकपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ शुक्रनीति के अनुसार वह इकरारनामा या दस्तावेज जिसमे बहुत से लोग अपना अपना धन लगाकर किसी मुकदमे की पैरवी करने के लिये लिखापढी करते है। २ समाचारपत्र। अखबार।

सामयीन(पु)—संज्ञा पुं० [अ० सामिईन] श्रोतागण। श्रोतृवृंद। सुननेवाले लोग। उ०—खबर सुन सामयीन ने मिल के सारे कल्हा भेजे हैं उसकूं के। दक्खिनी०, पृ० १९०।

सामयोनि—संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्मा। २ हाथी।

सामर[1]—संज्ञा पुं० [सं० समर] दे० 'समर'।

सामर[2]—वि० [सं०] १ समर संबंधी। समर का। युद्ध का। १ अमर अर्थात् देवताओं से युक्त।

सामर(पु)[3]—संज्ञा पुं० [सं० शम्बर, सम्बर] एक मृग। दे० 'साँभर'। उ०—सिंह कोल गज रीछ बहुत सामर बलवते। —पृ० रा०, ६। ९४।

सामर†[4]—वि० [सं० श्यामल] दे० 'साँवरा', 'साँवला'।

सामरथ†—संज्ञा स्त्री० [सं० सामर्थ्य] दे० 'सामर्थ्य'।

सामरस्य—संज्ञा पुं० [सं०] हर स्थिति मे एक ही प्रकार की अनुभूति करने का भाव। समरसता। जैसे,—उनका जीवन सामरस्य से भरा होता है।

सामरा(पु)—वि० [सं० श्यामल] दे० 'साँवला'। उ०—सामर बदन पर भाँवरे भरत है।—मति० ग्रं०, पृ० ३५०।

सामराधिप—संज्ञा पुं० [सं०] सेना का प्रधान अधिकारी। सेनापति।

सामरिक—वि० [सं०] समर संबंधी। युद्ध का। जैसे,—सामरिक समाचार।

सामरिकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ समर या समर संबंधी कार्यो मे लिप्त रहना। २ युद्ध। लड़ाई।

सामरिकवाद—संज्ञा पुं० [सं० सामरिक + वाद] वह सिद्धांत जिसके अनुसार राष्ट्र सामरिक कार्यो—सेना बढाने, नित्य नए नए भयकर और घातक युद्धोपकरण बनवाने आदि की ओर, अधिकाधिक ध्यान दे। शस्त्रसज्ज और विराट् सेना रखने का सिद्धांत।

सामरेय—वि० [सं०] समर संबंधी। युद्ध का।

सामर्घ्य—संज्ञा पुं० [सं०] सस्तापन। सस्ती [को०]।

सामर्थ(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० सामर्थ्य] समर्थता। दे० 'सामर्थ्य'। उ०—धर हरि अस हुवे धरपत्ती। सस्त्रबध सामर्थ सकत्ती। —रा० रू०, पृ० ६।

सामर्थी—संज्ञा पुं० [हिं० सामर्थ + ई (प्रत्य०)] १ सामर्थ्य रखनेवाला। जिसे सामर्थ्य हो। २ जो किसी कार्य के करने की शक्ति रखता हो। ३ पराक्रमी। बलवान।

सामर्थ्य—संज्ञा पुं०, स्त्री० [सं०] १ समर्थ होने का भाव। किसी कार्य के संपादन करने की शक्ति। बल। २ शक्ति। ताकत। ३ औचित्य। उपयुक्तता। योग्यता। ४ शब्द की व्यंजना शक्ति। शब्द की वह शक्ति जिससे वह भाव प्रकट करता है। ५ व्याकरण मे शब्दो का परस्पर संबंध। ६ एक लक्ष्य या समान उद्देश्य होने का भाव (को०)। ७ अभिरुचि। लगाव (को०)। १० धन (को०)।

सामर्थ्यवान†—वि० [सं० सामर्थ्यवत्] शक्तिशाली। समर्थ। उ०—जो श्री गुसाँई जो सर्व सामर्थ्यवान है।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० २५८।

सामर्थ्यहीन—वि० [सं०] जो सामर्थ्य से रहित हो। शक्ति, बल, योग्यता आदि से हीन।

सामर्ष—वि० [सं०] अमर्षयुक्त। कोपाकुल [को०]।

सामल(पु)—वि० [फ़ा० शामिल] एक साथ। साथ साथ। मिल जुलकर। उ०—सिंघ अजा सामल सलल पीवैं इक थाला। तसकर दवे उलूक ज्यूं ऊँगा किरणालाँ।—रघु० रू०, पृ० १७०।

सामवाद—संज्ञा पुं० [सं०] सात्वनापूर्ण बात। मैत्रीपूर्ण बातचीत। सामनीति से युक्त कथन [को०]।

सामवायिक[1]—वि० [सं०] १ समवाय संबंधी। २ जो अटूट या अविच्छेद्य संबंध से युक्त हो। ३ समूह या झुंड संबंधी।

सामवायिक[2]—संज्ञा पुं० १ अमात्य। मंत्री। वजीर। २ किसी श्रेणी, वर्ग, समाज या दल का प्रधान (को०)।

सामवायिकराज्य—संज्ञा पुं० [सं०] वे राज्य जो जो किसी युद्ध के निमित्त मिल गए हो।

विशेष—कौटिल्य ने लिखा है कि सामवायिक शत्रु राज्यो से कभी अकेला न लडे।

सामविद्—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सामवेद का अच्छा ज्ञाता हो।

सामविप्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह ब्राह्मण जो अपने सब कर्म सामवेद के विधानो के अनुसार करता हो।

सामवेद—संज्ञा पुं० [सं० साम (न्) वेद] भारतीय आर्यो के चार वेदो मे से प्रसिद्ध तीसरा वेद।

विशेष—पुराणों में कहा है कि इस वेद की एक हजार संहिताएँ थीं, परंतु आजकल इनमें से केवल एक ही संहिता मिलती है। यह संहिता दो भागों में विभक्त है, जिनमें से एक 'आर्चिक' और दूसरा 'उत्तरार्चिक' कहलाता है। इन दोनों भागों में जो १८१० ऋचाएँ हैं, उनमें से अधिकांश ऋग्वेद में आई हुई हैं। ये सब ऋचाएँ प्रायः गायत्री छंद में ही हैं। यज्ञों के समय जो स्तोत्र आदि गाए जाते थे, उन्हीं स्तोत्रों का इस वेद में संग्रह है। भारतीय संगीतशास्त्र का आरंभ इन्हीं स्तोत्रों से होता है। इस वेद का उपवेद गांधर्ववेद है।

सामवेदिक[1]—वि० [सं०] सामवेद संबंधी।

सामवेदिक[2]—संज्ञा पुं० सामवेद का ज्ञाता या अनुयायी ब्राह्मण।

सामवेदी—संज्ञा पुं० [सं० सामवेदिन्] सामवेद का अध्येता एवम् जानकार ब्राह्मण [को०]।

सामवेदीय—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सामवेदिक'।

सामश्रवा—संज्ञा पुं० [सं० सामश्रवस्] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।

सामसर—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का गन्ना जो डुमराँव (बिहार) में होता है।

सामसाध्य—वि० [सं०] जो साम नीति के द्वारा साध्य हो।

सामसाली(पु)—संज्ञा पुं० [सं० साम + शाली] राजनीति के साम, दाम, दंड और भेद नामक अंगों को जाननेवाला। राजनीतिज्ञ। उ०—जयति राज राजेंद्र राजीवलोचन राम नाम कलि काम तरु सामसाली। अनय अंभोधि कुंभज निसाचर निकर तिमिर घनघोर वर किरिनिमाली।—तुलसी (शब्द०)।

सामसावित्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का सावित्री मंत्र।

सामसुर—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का सामगान।

सामस्तंबि—संज्ञा पुं० [सं० सामस्तम्बि] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।

सामस्त(पु)[1]—वि० [सं० समस्त] दे० 'समस्त'।

सामस्त[2]—संज्ञा पुं० [सं०] शब्दों के विन्यास, मिश्रण, रचना या संधि-संबंधी विद्या। शब्द विज्ञान [को०]।

सामस्त्य—संज्ञा पुं० [सं०] समस्तता। संपूर्णता [को०]।

सामहलि(पु)—क्रि० वि० [सं० सम्भाल्य ?] देखकर। समझ या जानकर। उ०—साँझी वेला सामहलि कटलि थई अगासि। ढोलइ करह कँवाड़यउ आयउ पूगल पासि।—ढोला०, दू० ५२२।

सामहिं(पु)—अव्य० [सं० सन्मुख] सामने। समुख। समक्ष। उ०—तिन सामहिं गोरा रन कोपा। अंगद सरिस पाउँ भुइँ रोपा।—जायसी (शब्द०)। (ख) कोप सिंह सामहिं रन मेला। लाखन सों ना मरै अकेला।—जायसी (शब्द०)।

सामाँ[1]—संज्ञा पुं० [सं० श्यामाक] एक अन्न। दे० 'साँवाँ'।

सामाँ[2]—संज्ञा पुं० [फा० सामान] दे० 'सामान' उ०—चंद तस्वीरे बुताँ चंद हसीनों के खुतूत बाद मरने के मेरे घर से ये सामाँ निकला।—चंद०, पृ० १।

सामा[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० श्यामा] दे० 'श्यामा'।

सामा(पु)—संज्ञा पुं० [फा० सामान का संक्षिप्त रूप] सामग्री। सामान। सरंजाम। उ०—(क) भोजन की सामा सत्यभामा की भुलाई भले।—पद्माकर ग्रं०, पृ० २४७। (ख) आखर लगाय लेत लाखन की सामा हौं।—पद्माकर ग्रं०, पृ० ३०६।

यौ०—सामा सामाज = सामग्री, उपकरण और समाज या समूह। उ०—सामासमाज सबहीं वृथा सब सों अदभुत दैवगति।—ब्रज० ग्रं०, पृ० ७६

सामाजिक[1]—वि० [सं०] १ समाज से संबंध रखनेवाला। समाज का। जैसे,—सामाजिक कुरीतियाँ, सामाजिक झगड़े, सामाजिक व्यवहार।' २ सभा से संबंध रखनेवाला। ३ सहृदय। रसज्ञ।

सामाजिक[2]—संज्ञा पुं० १ सभासद। सदस्य। सभ्य। २ (नाटक) देखनेवाला। (नाटक का) सहृदय पाठक या दर्शक। उ०—उन्होंने बतलाया कि सामाजिकों के हृदय में वासनारूप में स्थित स्थायी रति आदि भाव को ही रसत्व प्राप्त होता।—रसक०, पृ० २२।

सामाजिकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सामाजिक का भाव। लौकिकता।

समाधान—संज्ञा पुं० [सं०] १ शमन करने की क्रिया। शांति। २ शंका का निवारण। ३ किसी कार्य को पूर्ण करने का व्यापार। संपादन।

सामान—संज्ञा पुं० [फा०] १ किसी कार्य के लिये साधन स्वरूप आवश्यक वस्तुएँ। उपकरण। सामग्री। २. माल। असबाब।

मुहा०—सामान बनना = (१) वस्तुओं का तैयार होना। (२) किसी प्रकार की तैयारी होना। सामान बाँधना = माल असबाब बाँधकर चलने की तैयारी करना।

३ औजार। ४ बंदोबस्त। इंतजाम। उ०—इनके नाम व निशान को भी मिटा देने का सामान कर रहे हैं।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३६२।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

सामानग्रामिक—वि० [सं०] एक ही ग्राम में रहनेवाले। एक ही गाँव के निवासी।

सामानदेशिक—वि० [सं०] एक ही देश या गाँव से संबंधित। सामानग्रामिक।

सामानाधिकरण्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ समान अवस्था या परिस्थिति में होना। २ समान पद या समान कार्य। ३ एक ही कर्म से संबंधित होना (व्या०, नव्य न्याय)। एक ही कारक या समानाधिकरण में होना [को०]।

सामानि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सामान्या] दे० 'सामान्या—१'। उ०—प्रथम स्वकीया पुनि परकीया। इक सामानि बखानी तिया।—नंद० ग्रं०, पृ० १४५।

सामानिक—वि० [सं०] समानपदीय। समान स्थिति या पद का [को०]।

सामान्य[1]—वि० [सं०] १ जिसमें कोई विशेषता न हो। साधारण। मामूली। २ दे० 'समान'। ३ महत्वहीन। अदना। तुच्छ (को०)। ४. पूरा। संपूर्ण (को०)। ५ औसत दरजे का (को०)।

**सामान्य[२]**—संज्ञा पुं० [सं०] १ समान होने का भाव। सादृश्य। समानता। बराबरी। २ वह एक बात या गुण जो किसी जाति या वर्ग की सब चीजों में समान रूप से पाया जाय। जातिसाधर्म्य। जैसे,—मनुष्यों में मनुष्यत्व या गौओं में गोत्व।

विशेष—वैशेषिक में जो छह् पदार्थ माने गए हैं, सामान्य उनमें से एक है। इसी को जाति भी कहते हैं।

३ साहित्य में एक प्रकार का अलंकार। यह उस समय माना है, जब एक ही आकार की दो या अधिक ऐसी वस्तुओं का वर्णन होता है जिनमें देखने में कुछ भी अंतर नहीं जान पड़ता। जैसे,—(क) एक रूप तुम भ्राता दोऊ। (ख) नाहिं फरक श्रुतिकमल अरु हरिलोचन अभिसेप। (ग) जानी न जात मसाल औ बाल गोपाल गुलाल चलावत चूकै। ४ संपूर्णता। पूर्ण होने का भाव (को०)। ५ किस्म। प्रकार (को०)। ६ सार्वजनिक कार्य। ७ अनुरूपता। तुल्यता (को०)। ८ वह धर्म जो मनुष्य, पशु पक्षी आदि सभी में सामान्य रूप में पाया जाय (को०)। ९ पहचान। लक्षण। चिह्न (को०)। १० वह अवस्था जिसमें किसी एक ओर झुकाव न हो। मध्य स्थिति। तटस्थता (को०)।

**सामान्य छल**—संज्ञा पुं० [सं०] न्यायशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का छल जिसमें संभावित अर्थ के स्थान में अति सामान्य के योग से असंभूत अर्थ की कल्पना की जाती है। जब वादी किसी संभूत अर्थ के विषय में कोई वचन कहे, तब सामान्य के संबंध से किसी असंभूत अर्थ के विषय में उस वचन की कल्पना करने की क्रिया। विशेष दे० 'छल'।

**सामान्यज्ञान**—संज्ञा पुं० [सं०] १ वस्तुओं के सामान्य गुणों की जानकारी या ज्ञान। २ सब विषयों का साधारण या कामचलाऊ ज्ञान [को०]।

**सामान्य ज्वर**—संज्ञा पुं० [सं०] साधारण ज्वर। मामूली बुखार।

**सामान्यत**—अव्य० [सं०] सामान्य रूप से। साधारण रीति से। साधारणत। जैसे,—राजनीति में सामान्यत अपना ही स्वार्थ देखा जाता है।

**सामान्यतया**—अव्य० [सं०] सामान्य रूप से। साधारण रीति से। मामूली तौर से। सामान्यत। साधारणतया।

**सामान्यतोदृष्ट**—संज्ञा पुं० [सं०] १ तर्क और न्यायशास्त्र के अनुसार अनुमान संबंधी एक प्रकार की भूल जो उस समय मानी जाती है जब किसी ऐसे पदार्थ के द्वारा अनुमान करते हैं जो न कार्य हो, न कारण। जैसे,—कोई आम को बौरते देखकर यह अनुमान करे कि अन्य वृक्ष भी बौरते होंगे। २. दो वस्तुओं या बातों में ऐसा साधर्म्य जो कार्यकारण संबंध से भिन्न हो। जैसे,—बिना चले कोई दूसरे स्थान पर नहीं पहुँच सकता। इसी प्रकार दूसरे को भी किसी स्थान पर भेजना बिना उसके गमन के नहीं हो सकता।

**सामान्यत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] सामान्य या साधारण होने का भाव। सामान्यता। साधारणता। उ०—इस सामान्यत्व की स्थापना के कई हेतु होते हैं। —रा० रा० शुक्ल, पृ० ८९।

**सामान्यनायिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सामान्य वनिता। वेश्या [को०]।

**सामान्यपक्ष**—संज्ञा पुं० [सं०] दो अतिसीमाओं के मध्य की स्थिति।

**सामान्यभविष्यत्**—संज्ञा पुं० [सं०] भविष्य क्रिया का वह काल जो साधारण रूप बतलाता है। जैसे,—आएगा, जाएगा, खाएगा।

**सामान्यभूत**—संज्ञा पुं० [सं०] भूत क्रिया का वह रूप जिसमें क्रिया की पूर्णता होती है और भूतकाल की विशेषता नहीं पाई जाती है। जैसे,—खाया, गया, उठा।

**सामान्यलक्षण**—संज्ञा पुं० [सं०] वह गुण या लक्षण जो किसी जाति या वर्ग में समान रूप से पाया जाय [को०]।

**सामान्यलक्षणा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह गुण जिसके अनुसार किसी एक सामान्य को देखकर उसी के अनुसार उस जाति के और सब पदार्थों का बोध होता है। किसी पदार्थ को देखकर उस जाति के और सब पदार्थों का बोध करानेवाली शक्ति। जैसे,—किसी एक गौ या घड़े को देखकर समस्त गौओं या घड़ों का जो ज्ञान होता है, वह इसी सामान्य लक्षणा के अनुसार होता है।

**सामान्यवचन[१]**—वि० [सं०] सामान्य लक्षण बतानेवाला।

**सामान्यवचन[२]**—संज्ञा पुं० वस्तु या पदार्थबोधक शब्द [को०]।

**सामान्यवनिता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या। रंडी [को०]।

**सामान्यवर्तमान**—संज्ञा पुं० [सं०] वर्तमान क्रिया का वह रूप जिसमें कर्ता का उसी समय कोई कार्य करते रहना सूचित होता है। जैसे,—खाता है, जाता है।

**सामान्यविधि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] साधारण विधि या आज्ञा। जैसे,—हिंसा मत करो, झूठ मत बोलो, चोरी मत करो, किसी का अपकार मत करो, आदि सामान्य विधि के अंतर्गत हैं। परंतु यदि यह कहा जाय कि यज्ञ में हिंसा की जा सकती है, अथवा ब्राह्मण की रक्षा के लिये झूठ बोला जा सकता है तो इस प्रकार की विधि विशेष होगी और वह सामान्य विधि की अपेक्षा अधिक मान्य होगी।

**सामान्य शासन**—संज्ञा पुं० [सं०] ऐसी राजाज्ञा जो सबपर समान रूप से लागू हो [को०]।

**सामान्य शास्त्र**—संज्ञा पुं० [सं०] सबपर समान रूप से लागू होनेवाला विधि या शास्त्र।

**सामान्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ साहित्य के अनुसार वह नायिका जो धन लेकर किसी से प्रेम करती है।

विशेष—इस नायिका के भी उतने ही भेद होते हैं जितने अन्य नायिकाओं के होते हैं।

२ गणिका। वेश्या।

**सामायिक[१]**—संज्ञा पुं० [सं०] जैनों के अनुसार एक प्रकार का व्रत या आचरण जिसमें सब जीवों पर सम भाव रखकर एकांत में बैठकर आत्मचिंतन किया जाता है।

**सामायिक[२]**—वि० मायायुक्त। माया सहित।

**सामाश्रय**—संज्ञा पुं० [सं०] वह भवन या प्रासाद आदि जिसके पश्चिम ओर वीथिका या सड़क हो।

सामासिक¹—वि० [सं०] १ समास से संबंध रखनेवाला। समास का। २ सामूहिक। समुच्चयात्मक (को०)। ३ संहत। संक्षिप्त (को०)। ४ मिश्रित (को०)।

सामासिक²—संज्ञा पुं० समास।

सामि¹ संज्ञा स्त्री० [सं०] निंदा। शिकायत।

सामि²—वि० १ जो पूरा न हुआ हो। जो अपूर्ण या आंशिक रूप में हो। अधूरा। २ दोषावह। निंदनीय। ३ शीघ्रतापूर्वक (को०)।

सामि(पु)³—संज्ञा पुं० [सं० स्वामि] स्वामी। पति। उ०—आवहु सामि सुलच्छना जीउ बसै तुम्ह नाउँ। - जायसी ग्रं०, पृ० १०१।

सामिक—संज्ञा पुं० [सं०] वृक्ष। पेड़ (को०)।

सामिकृत—वि० [सं०] आंशिक या अधूरा किया हुआ। (कार्य आदि) जो अंशतः कृत हो (को०)।

सामिग्री—संज्ञा स्त्री० [सं० सामग्री] दे० 'सामग्री'।

सामित्र(पु)‡—संज्ञा पुं० [सं० स्वामिन्] दे० 'स्वामी'। उ०—पुण्ण कहानी पिअ कहहु सामिअ सुनओ सुहेए।—कीर्ति०, पृ० १६।

सामित—वि० [सं०] गेहूँ के आटे के साथ मिश्रित (को०)।

सामित्त(पु)¹—संज्ञा पुं० [सं० स्वामित्व] दे० 'स्वामित्व'।

सामित्त(पु)²—संज्ञा पुं० [सं० साम्यत्व] दे० 'समता'। उ०—घटि वढि पंच दिसा फिरि आयौ। कवि सुप तौ सामित्त करायौ। —पृ० रा०, २१४०७।

सामित्य¹—संज्ञा पुं० [सं०] समिति का भाव या धर्म।

सामित्य²—वि० समिति का। समिति संबंधी।

सामिधेन—वि० [सं०] यज्ञाग्नि प्रज्वलित करने से संबंधित (को०)।

सामिधेनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का ऋक् मंत्र जिसका पाठ होम की अग्नि प्रज्वलित करने के समय (अथवा सामिधा डालते समय) किया जाता है। २ समिधा (को०)।

सामिधेन्य—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सामिधेनी'।

सामिपीत—वि० [सं०] आधा पिया हुआ। अर्धपीत (को०)।

सामिभुक्त—वि० [सं०] आधा खाया हुआ (को०)।

सामियाना—संज्ञा पुं० [फा० शामियाना] दे० 'शामियाना'।

सामिल—वि० [फा० शामिल] दे० 'शामिल'।

सामिष—वि० [सं०] आमिष सहित। मांस मद्य आदि के सहित। निरामिष का उलटा। जैसे,—सामिष भोजन, सामिष श्राद्ध।

सामिष श्राद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] पितरों आदि के उद्देश्य से किया जानेवाला वह श्राद्ध जिसमें मांस, मद्य आदि का व्यवहार होता है। जैसे,—मासाष्टका आदि सामिष श्राद्ध हैं।

सामिसरियत—वि० [सं०] आधा किया हुआ। अर्धकृत (को०)।

सामी(पु)†¹—संज्ञा पुं० [सं० स्वामिन्] दे० 'स्वामी'।

सामी²—संज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'शामी'।

सामीची—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वंदना। प्रार्थना। स्तुति। २ नम्रता। सौजन्य। शिष्टता (को०)।

सामीचीकरणीय—वि० [सं०] शिष्टतापूर्वक नमन करने योग्य। जो नम्रतापूर्वक प्रणाम करने योग्य हो (को०)।

सामीचीन्य संज्ञा पुं० [सं०] उपयुक्तता। समीचीनता (को०)।

सामीप(पु)—वि० [सं० समीप या सामीप्य] दे० 'समीप'। उ०—कहा धरम उपदेश है, मूढ़न के सामीप।—दीन० ग्रं०, पृ० ८४।

सामीप्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ समीप होने का भाव। निकटता। २ एक प्रकार की मुक्ति जिसमें मुक्त जीव का भगवान् के समीप पहुँच जाना माना जाता है। उ०—निर्वान मारग को जो कोई ध्यावै, सो सामीप्य मुक्ति वैकुंठ को पावै।—कबीर सा०, पृ० ६०५। ३ पड़ोस। ४ पड़ोसी। प्रतिवेशी।

सामीर(पु)¹—संज्ञा पुं० [सं० समीर] समीर। पवन। (डिं०)। उ०—चरस करत लिपमण चमर, अरस अगर, सामीर। इम सिय जुत जन मछ उर, वसो सदा रघुवीर।—रघु० रू०, पृ० १।

सामीर²—वि० दे० 'सामीर्य'।

सामीरण—वि० [सं०] दे० 'सामीर्य'।

सामीर्य—वि० [सं०] समीर संबंधी। समीर का। हवा का।

सामुझि(पु)‡—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्बुद्धि] दे० 'समझ'। उ०—प्रभु पद प्रीति न सामुझि नीकी। तिन्हहिं कथा सुनि लागिहि फीकी। —मानस, १।६।

सामुदायिक¹ वि० [सं०] समुदाय संबंधी। समुदाय का। सामूहिक।

सामुदायिक²—संज्ञा पुं० बालक के जन्म समय के नक्षत्र से आगे के अठारह नक्षत्र जो फलित ज्योतिष के अनुसार अशुभ माने जाते हैं और जिनमें किसी प्रकार का शुभ कार्य करने का निषेध है।

सामुद्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह संधि या जोड़ जिसमें कुछ गहरापन हो। खात या गर्तयुक्त संधि। जैसे,—काँख या कूल्हे की संधि। २ भोजन के पहले और बाद में ली जानेवाली औषधि (को०)।

सामुद्र¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ समुद्र से निकला हुआ नमक। वह नमक जो समुद्र के खारे पानी से निकाला जाता है। २ समुद्रफेन। ३ वह व्यापारी जो समुद्र के द्वारा दूसरे देशों में जाकर व्यापार करता हो। ४ नारियल। ५ जहाजी। नाविक। माँझी (को०)। ६ एक प्रकार का मच्छड़। सुश्रुत के अनुसार सामुद्र, परिमंडल, हस्तिनाशक, कृष्ण और पर्वतीय इन पाँच मच्छड़ों में से एक (को०)। ७ करण और वेश्या से उत्पन्न संतति। एक जातिविशेष (को०)। ८ समुद्र की एक कन्या जो प्राचीनवर्हिष् की पत्नी थी (को०)। ९ आश्विन मास की वर्षाविशेष का जल (को०)। १० शरीर में होनेवाले चिह्न या लक्षण आदि जिन्हें देखकर शुभाशुभ का विचार किया जाता है। विशेष दे० 'सामुद्रिक'।

सामुद्र²—वि० १ समुद्र से उत्पन्न। समुद्र से निकला हुआ। २ समुद्र संबंधी। समुद्र का।

सामुद्रक—संज्ञा पुं० [सं०] १ समुद्री नमक। २ सामुद्रिक विद्या। दे० 'सामुद्र'।

सामुद्रनिष्कुट—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्रतट वासी (को०)।

सामुद्रनिष्कूट—संज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम। २ इस जनपद का निवासी।

सामुद्रबंधु—संज्ञा पुं० [सं० सामुद्र बन्धु] चंद्रमा [को०]।

सामुद्रमत्स्य—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र में होनेवाली बड़ी बड़ी मछलियाँ जिनका मांस सुश्रुत के अनुसार भारी, चिकना, मधुर, वातनाशक, कफवर्धक, उष्ण और वृष्य होता है।

सामुद्रविद्—संज्ञा पुं० [सं०] सामुद्रिक शास्त्र का ज्ञाता [को०]।

सामुद्रस्थलक—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र तट का प्रदेश। समुद्र के आसपास का देश।

सामुद्राद्य चूर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार का चूर्ण जो, साँभर, साँचर और सेंधा नमक, अजवायन, जवाखार, वायविडंग, हींग, पीपल, चीतामूल और सोंठ को बराबर मिलाने से बनता है।

विशेष—कहते हैं कि इस चूर्ण का घी के साथ सेवन करने से उदर के सब प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं। यदि भोजन के आरंभ में इसका सेवन किया जाय तो यह बहुत पाचक होता है और इससे कोष्ठबद्धता दूर होती है।

सामुद्रिक¹—वि० [सं०] १ समुद्र से संबंध रखनेवाला। समुदरी। सागर संबंधी। २ शरीरचिह्न संबंधी (को०)।

सामुद्रिक²—संज्ञा पुं० १ फलित ज्योतिष का एक अंग जिसके अनुसार हथेली की रेखाओं, शरीर के तिलों तथा अन्यान्य लक्षणों आदि को देखकर मनुष्य के जीवन की घटनाएँ तथा शुभाशुभ फल बतलाए जाते हैं, यहाँतक कि कुछ लोग केवल हाथ की रेखाओं को देखकर जन्मकुंडली तक बनाते हैं। २ वह जो इस शास्त्र का ज्ञाता हो। हाथ की रेखाओं तथा शरीर के तिलों और लक्षणों आदि को देखकर जीवन की घटनाएँ और शुभाशुभ फल बतलानेवाला पंडित। ३ नाविक (को०)। ४ एक जलपक्षी। उ०—डुबकियाँ लगाते सामुद्रिक, धोती पीली चोंचें धोबिन।—ग्राम्या, पृ० ३७।

सामुहाँ(पु)¹—अव्य० [सं० सम्मुख] सामने। समुख।

सामुहाँ²—संज्ञा पुं० आगे का भाग या अंश। सामना। (क्व०)।

सामुहें(पु)†—अव्य० [सं० सन्मुख] सामने। सन्मुख।

सामूना—संज्ञा स्त्री० [सं०] काले रंग का एक हिरन [को०]।

सामूर—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार बल्लव देश का चमड़ा [को०]।

सामूली—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य वर्णित बल्लव देशीय चमड़े का एक प्रकार [को०]।

सामूहाँ(पु)—अव्य० [सं० सम्मुख] सामने। समुख। उ०—जनु घुंघची वह तिलकर मूहाँ। विरहबान साँधो सामूहाँ।—जायसी (शब्द०)।

सामूहिक—वि० [सं०] १ समूह संबंधी। समूह का। २ जो समूहबद्ध हो (को०)।

सामृद्ध्य—संज्ञा पुं० [सं०] समृद्धि का भाव या समृद्धिता।

सामेधिक—वि० [सं०] कौटिल्य के अनुसार जो अद्भुत प्राकृतिक शक्ति से संपन्न हो [को०]।

सामोद—वि० [सं०] १ आनंदयुक्त। प्रसन्नतापूर्ण। २. आमोद या सुगंधियुक्त [को०]।



सामोद्भव—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी।

सामोपनिषद्—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपनिषद् का नाम।

साम्न—वि० [सं०] सामवेद के मंत्रों से संबंधित [को०]।

साम्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का छंद। २ जानवरों को बाँधने की रस्सी [को०]।

साम्नी अनुष्टुप्—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का वैदिक छंद जिसमें १४ वर्ण होते हैं।

साम्नी उष्णिक्—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का वैदिक छंद जिसमें १४ वर्ण होते हैं।

साम्नी गायत्री—एक प्रकार का वैदिक छंद जिसमें १२ वर्ण होते हैं।

साम्नी जगती—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का वैदिक छंद जिसमें २२ संपूर्ण वर्ण होते हैं।

साम्नी त्रिष्टुप्—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का वैदिक छंद जिसमें २२ संपूर्ण वर्ण होते हैं।

साम्नी पंक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० साम्नी पङ्क्ति] एक प्रकार का वैदिक छंद जिसमें २० संपूर्ण वर्ण होते हैं।

साम्नी बृहती—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का वैदिक छंद जिसमें १८ संपूर्ण वर्ण होते हैं।

साम्मत्य—संज्ञा पुं० [सं०] संमति का भाव।

साम्मुखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह तिथि जो सायंकल तक रहती हो।

साम्मुख्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ संमुख का भाव। सामना। २ उपस्थिति (को०)। ३ कृपा। अनुग्रह (को०)।

साम्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ समान होने का भाव। तुल्यता। समानता। जैसे,—इन दोनों पुस्तकों में बहुत कुछ साम्य है। २ दृष्टिकोण की समानता या एकता (को०)। ३ संगति। सामंजस्य (को०)। ४ अवधि। माप। काल। सम (को०)। ४ समता की स्थिति। उदासीनता। तटस्थता। निष्पक्षता (को०)

यौ०—साम्यग्राह = (१) घड़ियाल बजानेवाला। (२) संगीत में 'सम' को ग्रहण करने और ताल देनेवाला। साम्यतालविशारद = लय और ताल का ज्ञाता। जो लय और ताल का जानकार हो।

साम्यतंत्र—संज्ञा पुं० [सं० साम्य + तन्त्र] वह शासनप्रणाली जो साम्यवाद के सिद्धांत पर हो। साम्यवादी सिद्धांत के अनुरूप चलनेवाला शासन। उ०—ये राज्य प्रजाजन, साम्यतंत्र, शासन चालन के कृतक मान।—युगांत, पृ० ६०।

साम्यता—संज्ञा स्त्री० [सं० साम्य + ता] दे० 'साम्य'।

साम्यवाद—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पाश्चात्य सामाजिक (समाजवादी) सिद्धांत। समष्टिवाद। उ०—ये राष्ट्र, अर्थ, जन, साम्यवाद, छल सभ्य जगत के शिष्ट मान।—युगांत, पृ० ५८।

विशेष—इस सिद्धांत का प्रवर्तन ईसा की उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ माना जाता है। इस सिद्धांत का प्रतिपादन कार्लमार्क्स ने किया है जो जर्मनी का निवासी था। इस सिद्धांत के प्रचारक समाज में साम्य स्थापित करना चाहते हैं और उसका वर्तमान

वैषम्य दूर करना चाहते है। वे लाग चाहते हैं कि समाज मे व्यक्तिगत प्रतियोगिता उठ जाय और भूमि तथा उत्पादन के समस्त साधनो पर किसी एक व्यक्ति का अधिकार न रह जाय, बल्कि सारे समाज का अधिकार हो जाय। इस प्रकार सब लोगो मे धन आदि का बराबर बराबर वितरण हो, न तो कोई बहुत गरीब रह जाय और न कोई बहुत अमीर रह जाय।

**साम्यवादी**--वि० [स० साम्य + वादिन्] १ साम्यवाद से सबधित। साम्यवाद का। २ जो साम्यवाद को मानता हो। साम्यवाद का अनुयायी।

**साम्यावस्था**—सज्ञा स्त्री० [स०] वह अवस्था जिसमे सत्व, रज और तम तीनो गुण बराबर हो, उनमे किसी प्रकार का विकार, या वैषम्य न हो। प्रकृति।

**साम्यावस्थान**—सज्ञा पु० [स०] प्रकृति। दे० 'साम्यावस्था' (को०)।

**साम्राज्य**—सज्ञा पु० [स०] १ वह राज्य जिसके अधीन बहुत से देश हो और जिसमे किसी एक सम्राट् का शासन हो। सार्वभौम राज्य। सलतनत। २ आधिपत्य। पूर्ण अधिकार। ३ आधिक्य। बाहुल्य (को०)। ४ प्रधानता (को०)।

**साम्राज्यकृत्**—वि० [स०] साम्राज्य करनेवाला। साम्राज्य का शासक (को०)।

**साम्राज्यलक्ष्मी**—सज्ञा स्त्री० [स०] तत्र के अनुसार एक देवी जो साम्राज्य की अधिष्ठात्री मानी जाती है।

**साम्राज्यवाद**—सज्ञा पु० [स० साम्राज्य + वाद] साम्राज्य के देशो की रक्षा और वृद्धि या विस्तार का सिद्धात। उ०—साम्राज्यवाद था कस, वदिनी मानवता पशु बलाक्रात।—युगात, पृ० ६०।

**साम्राज्यवादी**--सज्ञा पुं० [स० साम्राज्यवादिन् अथवा हिं० साम्राज्यवाद + ई (प्रत्य०)] वह जो साम्राज्यशासन प्रणाली का पक्षपाती और अनुरागी हो। वह जो साम्राज्य की स्थापना और उसकी विस्तारवृद्धि का पक्षपाती हो।

**साम्राणिकर्दम**—सज्ञा पु० [स०] गधमार्जार या गधविलाव का वीर्य जो गधद्रव्यो मे माना जाता है। जवादि नामक कस्तूरी।

**साम्राणिज**—सज्ञा पुं० [स०] वडा पारेवत।

**साम्हना†**—सज्ञा पुं० [हिं० सामना] दे० 'सामना'।

**साम्हने†**—अव्य० [हिं० सामने] दे० 'सामने'।

**साम्हर†**—सज्ञा पु० [सं० शाकम्भर या सम्भल, साम्भल] १ दे० 'शाकबर'। २ दे० 'साँभर'। ३ साँभर भील का बना नमक। उ०—कोट यतन सो विजन करई। साम्हर विन फीका सब रहई।—कवीर सा०, पृ० २०६।

**साम्हे**(पु)--अव्य० [स० सम्मुख] दे० 'सामुहें'। उ०—कहिए अब लौ ठहर्यौ कौन। सोई भाग्यो तुव साम्हें सो गयो परिछ्यौ जौन। भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० २६८।

**साय¹**—वि० [स०] सध्या सवधी। सायकालीन। सध्याकालीन।

**साय²**—अव्य० शाम के समय।

**साय³**—सज्ञा पुं० १ दिन का अतिम भाग। सध्या। शाम। २ वाण। तीर।

**सायंकाल**—सज्ञा पु० [स० सायङ्काल] [वि० सायकालीन] दिन का अतिम भाग दिन और रात की सधि। सध्याकाल। सध्या। शाम।

**सायकालिक**—वि० [स० सायङ्कालिक] सध्या के समय का। शाम का।

**सायकालीन** - वि० [स० सायङ्कालीन] सध्या के समय का। शाम का।

**सायगृह**--सज्ञा पु० [स० सायङ्गृह] वह जो सध्यासमय जहाँ पहुँचता हो, वही अपना घर बना लेता हो।

**सायतन**—वि० [स० सायन्तन] सायकालीन। सध्या सबधी। सध्या का।

यौ०—सायतनमल्लिका = शाम को खिलनेवाली चमेली। सायतनसमय = शाम। सायकाल (को०)।

**सायतनी**—वि० [स० सायन्तनी] दे० 'सायतन'।

**सायधृति**—सज्ञा स्त्री० [स० सायन्धृति] सायकालीन हवन (को०)।

**सायनिवास**—सज्ञा पु० [स० सायन्निवास] वह स्थान जहाँ शाम को रहा जाय (को०)।

**सायपोष**—सज्ञा पु० [स० सायम्पोष] सायकाल किया जानेवाला भोजन। व्यालू (को०)।

**सायप्रात**—अव्य० [स० सायम्प्रातर्] सुवह शाम।

**सायभव**—वि० [स० सायम्भव] सध्या का। शाम का।

**सायभोजन**—सज्ञा पु० [स०] शाम का भोजन। व्यालू (को०)।

**सायमडन**--सज्ञा पु० [स० सायम्मण्डन] १ सूर्यास्त। २ सूर्य (को०)।

**सायमध्या**—सज्ञा स्त्री० [स० सायम्सन्ध्या] १ वह सध्या (उपासना) जो सायकाल मे की जाती है। २ सरस्वती देवी जिसकी उपासना सध्या के समय की जाती है। ३ सूर्यास्त का काल। गोधूलि वेला (को०)।

**सायसध्यादेवता**—सज्ञा स्त्री० [स० सायम्सन्ध्या देवता] देवी सरस्वती का एक नाम।

**सायस**—सज्ञा स्त्री० [अ० साइंस] १ विज्ञान। शास्त्र। २ वह शास्त्र जिसमे भौतिक तथा रासायनिक पदार्थों के विषय मे विवेचन हो। विशेष दे० 'विज्ञान'।

**साय**--सज्ञा पु० [स०] १ सध्या का समय। शाम। २ वाण। तीर। ३ समाप्ति। अत (को०)।

**सायक**--सज्ञा पुं० [स०] १ वाण। तीर। शर। उ०—लखि कर सायर अरु तुम्हे कर सायक सर चाप।—शकुतला, पृ० ७। २ खड्ग। उ०—धीर सिरोमनि वीर बडे विजई विनई रघुनाथ सोहाए। लायकही भृगुनायक से धनु सायक सौंपि सुभाय सिधाए।—तुलसी (शब्द०)। ३ एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक पाद मे सगण, भगण, तगण, एक लघु और एक गुरु होता है (IIS, SII, SSI, I,S)। ४ भद्र मुज। राम सर। ५ पाच की सख्या। (कामदेव के पाँच वाणो के कारण। ६ आकाश का विस्तार। अक्षाश (को०)।

सायकपुंख—संज्ञा पुं० [सं० सायकपुङ्ख] बाण का वह भाग जिसमे पंख लगा रहता है [को०]।

सायकपुंखा—संज्ञा स्त्री० [सं० सायकपुङ्खा] शरपुंखा। सरफोंका।

सायका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुजदह। लाई।

सायण—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध आचार्य जिन्होने चारो वेदो के बहुत उत्तम और प्रसिद्ध भाष्य लिखे है।

विशेष—इनके पिता का नाम मायण था। पहले ये राज्यमंत्री थे पर पीछे से, संन्यासी होकर शृंगेरी मठ के अधिष्ठाता हुए थे। उस समय इनका नाम विद्यारण्य स्वामी हुआ था। इनका समय ईसवी चौदहवी (१३७०) शताब्दी है। इनके नाम से और भी बहुत से संस्कृत ग्रंथ प्रसिद्ध है।

सायणवाद—संज्ञा पुं० [सं०] आचार्य सायण का मत या सिद्धांत।

सायणीय—वि० [सं०] १ सायण संबंधी। सायण का। २ सायण कृत (ग्रंथ)।

सायत[1]—संज्ञा स्त्री० [अ० साअत] १ एक घंटे या ढाई घडी का समय। २. दंड। पल। लमहा। ३ शुभ मुहूर्त। अच्छा समय। उ०—जलद ज्योतिषी बैन, सायत धरत पयान की।—श्यामा०, पृ० १२५।

सायत†[2]—अव्य० [फा० शायद] दे० 'शायद'।

सायन[1]—संज्ञा पुं० [सं० सायण] दे० 'सायण'।

सायन[2]—वि० [सं०] अयनयुक्त। जिसमे अयन हो (ग्रह आदि)। उ०—गोविंद ने मुहूर्त चिंतामणि के संक्रांति प्रकरण मे सायन संक्रांति के ऊपर लिखा है।—सुधाकर (शब्द०)। (ख) भारतवर्ष के ज्योतिषाचार्यो ने जब देखा कि सायन दूसरे नक्षत्र मे गया।—ठाकुर प्र० (शब्द०)।

सायन[3]—संज्ञा पुं० सूर्य की एक प्रकार की गति।

सायब—संज्ञा पुं० [फा० साहब] पति। स्वामी। (डिं०)।

सायबान—संज्ञा पुं० [फा० सायहबान] १ मकान के सामने धूप से बचने के लिये लगाया हुआ ओसार। बरामदा। २ मकान के आगे की ओर बढी या निकली हुई वह छाजन या छप्पर आदि जो छाया के लिये बनाई गई हो।

सायम्—अव्य० [सं०] शाम को। शाम के समय।

सायमशन—संज्ञा पुं० [सं०] शाम का भोजन। ब्यालू [को०]।

सायमाहुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह आहुति जो संध्या के समय दी जाय।

सायर†[1]—संज्ञा पुं० [सं० सागर, प्रा० सायर] १ सागर। समुद्र। उ०—(क) सायर मद्धि सुठाम करन त्रिभुवन तन अंजुल।—पृ० रा०, २।६२। (ख) जहँ लग चंदन मलय गिरि औ सायर सब नीर। सब मिलि आय बुझावहिं बुझै न आग सरीर।—जायसी (शब्द०)। २ ऊपरी भाग। शीर्ष।

सायर[2]—संज्ञा पुं० [अ०] १ वह भूमि जिसकी आय पर कर नही लगता। २ मुतफर्रकात। फुटकर।

सायर[3]—वि० १ घुमक्कड। सैर करनेवाला। घूमनेवाला। २ जो नियत या स्थिर न हो। अस्थायी। अनियत [को०]।

सायर†[4]—संज्ञा पुं० [देश०] १ वह पटरा जिससे खेत की मिट्टी बराबर करते है। हेंगा। २ एक देवता जो चौपायो का रक्षक माना जाता है।

सायर†[5]—संज्ञा पुं० [अ० शाइर, शायर] कवि। कविता करनेवाला। दे० 'शायर'।

सायल[1]—संज्ञा पुं० [अ०] १ सवाल करनेवाला। प्रश्नकर्ता। २ माँगनेवाला। याचना करनेवाला। ३ भिखारी। फकीर। ४ दर्खास्त करनेवाला। प्रार्थना करनेवाला। ५ उम्मीदवार। आकांक्षी। ६ न्यायालय मे फरियाद करने या किसी प्रकार की अरजी देनेवाला। प्रार्थी।

सायल[2]—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का धान जो सिलहट मे होता है।

सायवस—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।

साया[1]—संज्ञा पुं० [फा० सायह्] १ छाया। छाँह। उ०—छाँव सूँ मेरे हुए हैं बादशाह। साया परवरदा है मेरे सब मलूक।—दक्खिनी०, पृ० १८६।

यौ०—सायेदार।

२ आश्रय। संरक्षण। सहारा।

मुहा०—साये मे रहना = शरण मे रहना। संरक्षण मे रहना। साया उठना = संरक्षक का न रहना। देखभाल और परवरिश करनेवाले का मर जाना।

३. परछाईं। अक्स। प्रतिबिंब।

मुहा०—साये से भागना = बहुत दूर रहना। बहुत बचना।

४ जिन, भूत, प्रेत, परी आदि।

मुहा०—साया उतरना = भूत, प्रेत का प्रभाव समाप्त होना। साया होना = प्रेताविष्ट होना। भूत, प्रेत का प्रभाव होना। साये मे आना = भूत, प्रेतादि से प्रभावान्वित होना।

५ असर। प्रभाव।

मुहा०—साया पडना = किसी को संगत का असर होना। साया डालना = (१) कृपा करना। (२) प्रभाव डालना।

साया[2]—संज्ञा पुं० [अ० शेमीज] १ घाघर को तरह का एक पहनावा जो प्राय पाश्चात्य देशों की स्त्रियाँ पहनती हैं। २ एक प्रकार का छोटा लहँगा जिसे स्त्रियाँ प्राय महीन साड़ियों के नीचे पहनती है।

सायाबंदी—संज्ञा स्त्री० [फा० सायह्बंदी] मुसलमानों मे विवाह के अवसर पर मंडप बनाने की क्रिया।

सायास—वि० [सं० स + आयास] आयासपूर्वक। प्रयत्नपूर्वक। श्रमपूर्वक। उ०—सहज चुन चुन लघु तृण खर, पात। नीड रच रच निसि दिन सायास।—गुंजन, पृ० ७४।

सयाह्न—संज्ञा पुं० [सं०] दिन का अंतिम भाग। संध्या का समय। शाम।

सायिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उचित क्रम मे होना। क्रम के अनुसार स्थिति होना। २ छुरिका। कटार [को०]।

**सायी**—संज्ञा पुं० [सं० सादिन्] घोड़े का सवार। अश्वारोही।

**सायुज**—संज्ञा पुं० [सं० सायुज्य] दे० 'सायुज्य'। उ०—गुरुनानक का भेदाभेद ईश्वर और जीव मे सायुज संबंध मानता है।—हिंदी काव्य०, पृ० ४६।

**सायुज्य**—संज्ञा पु० [सं०] १ एक मे मिल जाना। ऐसा मिलना कि कोई भेद न रह जाय। २ पाँच प्रकार की मुक्तियो मे से एक प्रकार की मुक्ति जिसमे जीवात्मा परमात्मा मे लीन हो जाता है। उ०—हरि से कहत गरीयसि मेरी। भक्ति होई सायुज्य बडेरी।—गर्गसंहिता (शब्द०)। ३ समानता। एकरूपता।

**सायुज्यता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सायुज्य का भाव या धर्म। सायुज्यत्व।

**सायुज्यत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] सायुज्य का भाव या धर्म। सायुज्यता।

**सायुध**—वि० [सं०] आयुधयुक्त। शस्त्रसज्ज [को०]।

**यौ०**—सायुध प्रग्रह = जो हाथ मे शस्त्र ताने हुए हो।

**सारग, सारँग¹**—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का मृग। २ कोकिल। कोयल। उ०—वयन वर सारग सम।—सूर (शब्द०)। ३ श्येन। बाज। ४ सूर्य। उ०—जलसुत दुखी दुखी है मधुकर है पछी दुख पावत। सूरदास सारँग केहि कारण मारग कुलहि लजावत।—सूर (शब्द०)। ५ सिंह। उ०—सारग सम कटि हाथ माथ बिच सारँग राजत। सारँग लाए अग देखि छवि सारँग लाजत। सारग भूपण पीत पट सारँग पद सारगधर। रघुनाथ दास वेदन करत सीतापति रघुवशधर।—विश्राम (शब्द०)। ६ हस पक्षी। ७ मयूर। मोर। ८ चातक। ९ हाथी। १० घोडा। अश्व। ११ छाता। छत्र। १२ शख। उ०—सारँग अधर सधर कर सारग सारँग जानि सारँग मति भोरी। सारँग दसन वसन पुनि सारँग वसन पीतपट डोरी।—सूर (शब्द०)। १३ कमल। कज। उ०—(क) सारग वदन विलास विलोचन हरि सारग जानि रति कीन्ही।—सूर (शब्द०)। (ख) सारँग दृग मुख पाणि पद सारँग कटि वपुधार। सारँगधर रघुनाथ छवि सारँग मोहनहार।—विश्राम (शब्द०)। १४ स्वर्ण। सोना। उ०—सारँग से दृग लाल माल सारँग की सोहत। सारँग ज्यो तनु श्यामवदन लखि सारँग मोहत।—विश्राम (शब्द०)। १५ आभूषण। गहना। १६ सर। तालाब। उ०—मानहु उमँगि चल्यो चाहत है सारँग सुधा भरे।—सूर० (शब्द०)। १७ भ्रमर। भौंरा। उ०—नचत है सारग सुदर करत शब्द अनेक।—सूर (शब्द०)। १८ एक प्रकार की मधुमक्खी। १९ विष्णु का धनुप। उ०—(क) एकहु बाण न आयो हरि के निकट तब गह्यो धनुप सारगधारी।—सूर (शब्द०) (ख) नवै परयमा जीवन सोहै। नयनवान औ सारँग मोहै।—जायसी (शब्द०)। २० कर्पूर। कपूर। उ०—सारग लाए अग देखि छवि सारँग लाजत।—विश्राम (शब्द०)। २१ लवा पक्षी। २२ श्रीकृष्ण का एक नाम। उ०—गिरिधर ब्रजधर मुरलीधर धरनीधर पीतांबरधर मुकुटधर गोपधर उरगधर शखधर सारगधर चक्रधर गदाधर रस धरें अधरसुधाधर।—सूर (शब्द०)। २३ चद्रमा। शशि। उ०—तामहि सारँग सुत शोभित है ठाढी सारग सँभारि।—सूर (शब्द०)। २४ समुद्र। सागर। २५ जल। पानी। २६ वाण। शर। तीर। २७ दीपक। दीया। २८ पपीहा। २९ शभु। शिव। उ०—जनु पिनाक की आश लागि शशि सारँग शरन बचे।—सूर (शब्द०)। ३० सुगधित द्रव्य। ३१ सर्प। साँप। उ०—सारँग चरन पीठ पर सारँग कनक खभ अहि मनहुँ चढो री।—सूर (शब्द०)। ३२ चदन। ३३ भूमि। जमीन। ३४ केश। बाल। अलक। उ०—शीश गग सारँग भस्म सर्वांग लगावत।—विश्राम (शब्द०)। ३५ दीप्ति। ज्योति। चमक। ३६ शोभा। सुदरता। ३७ स्त्री। नारी। उ०—सूरदास सारँग केहि कारण सारँग कुलहि लजावत सूर (शब्द०)। ३८ रात्रि। रात। विभावरी। ३९ दिन। उ०—सारँग सुदर को कहत रात दिवस वड भाग।—नददास (शब्द०)। ४०. तलवार। खड्ग। (डिं०)। ४१ कपोत। कबूतर। ४२ एक प्रकार का छद जिसमे चार तगण होते हैं। इसे मैनावली भी कहते हैं। ४३ छप्पय छद के २६वें भेद का नाम।

**विशेष**—इसमे ४५ गुरु, ६२ लघु कुल १०७ वर्ण या १५२ मात्राएँ अथवा ४५ गुरु, ५८ लघु कुल १०३ वर्ण या १४८ मात्राएँ होती हैं।

४४ मृग। हिरन। उ०—(क) श्रवण सुयश सारग नाद विधि चातक विधि मुख नाम।—सूर (शब्द०)। (ख) सरि थार आरति सजहिं सब सारग शावक लोचना।—तुलसी (शब्द०)। ४५ मेघ। बादल। घन। उ०—(क) कारी घटा देखि अँधियारी सारँग शब्द न भावै।—सूर (शब्द०)। (ख) सारँग ज्यो तनु श्याम वदन लखि सारग मोहत।—विश्राम (शब्द०)। ४६ मोती। (डिं०)। ४७ कुच। स्तन। ४८ हाथ। कर। ४९ वायस। कौआ। ५० ग्रह। नक्षत्र। ५१ खजन पक्षी। सोनचिडी। ५२ हल। ५३ मेढक। ५४ गगन। आकाश। ५५ पक्षी। चिडिया। ५६ वस्त्र। कपडा। ५७ सारगी नामक वाद्ययत्र। ५८ ईश्वर। भगवान्। ५९ काजल। नयनाजन। ६० कामदेव। मन्मथ। ६१ विद्युत्। बिजली। ६२ पुष्प। फूल। ६३ सपूर्ण जाति का एक राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

**विशेष**—शास्त्रो मे यह मेघ राग का सहचर कहा गया है, पर कुछ लोग इसे सकर राग मानते और नट, मल्लार तथा देवगिरि के सयोग से बना हुआ बतलाते हैं। इसकी स्वरलिपि इस प्रकार कही गई है—स रे ग म प ध नि स। स नि ध प म ग रे स। स रे ग म प प ध प प म ग म प म ग म ग रे स। स रे ग रे स।

**सारग, सारँग²**—वि० १ रँगा हुआ। रजित। रगीन। उ०—सारँग दशन वसन पुनि सारँग वसन पीत पट डोरी।—सूर (शब्द०)। २ सुदर। सुहावना। उ०—सारँग वचन कहत सारँग सो सारँग रिपु है राखति भीनी।—सूर (शब्द०)। ३ सरस। उ०—सारँग नैन बैन वर सारँग सारँग वदन कहै

छवि को री ।—सूर (शब्द०) । ४ अनेक रगो से युक्त । चितकबरा (को०) ।

सारगचर—सज्ञा पु० [स० सारङ्गचर] काँच । शीशा ।

सारगज—सज्ञा पुं० [स० सारङ्गज] मृग । हिरन [को०] ।

सारंगनट—सज्ञा पु० [सं० सारङ्गनट] सगीत मे सारग और नट के सयोग से बना हुआ एक प्रकार का सकर राग ।

सारगनाथ—सज्ञा पु० [स० सारङ्गनाथ] काशी के समीप स्थित एक स्थान जो सारनाथ कहलाता है ।

विशेष—यही प्राचीन मृगदाव है यह बौद्धो, जैनियो और हिंदुओ का प्रसिद्ध तीर्थ है ।

सारगनैनी—वि० [स० सारङ्ग + हिं० नैन] सारग के से नयनवाली । मृगनैनी । उ०—सारगनैनी री काहे कियो एतो मान ।—नद० ग्र०, पृ० ३६६ ।

सारगपाणि—सज्ञा पु० [सं० सारङ्गपाणि] सारग नामक धनुष धारण करनेवाले विष्णु ।

सारगपानि(पु)—सज्ञा पु० [स० सारङ्गपाणि] दे० 'सारगपाणि'। उ०—सुमिरत श्री सारगपानि छन मै सब सोचु गयो । चले मुदित कौसिक कोसलपुर सगुननि साथु दयो ।—तुलसी (शब्द०) ।

सारगलोचना—वि० स्त्री० [स० सारङ्ग लोचना] जिसकी आँखे हिरन की सी हो । मृगनयनी ।

सारगशबल—वि० [स० सारङ्गशबल] घोडा जो रग बिरगा और चितकबरा हो [को०] ।

सारगहर(पु)—सज्ञा पु० [स० शार्ङ्गधर, प्रा० सारगहर] विष्णु ।

सारगा—सज्ञा स्त्री० [स० सारङ्गा] १ एक प्रकार की छोटी नाव जो एक ही लकडी की बनती है । २ एक प्रकार की बडी नाव जिसमे ६००० मन माल लादा जा सकता है । ३ एक रागिनी का नाम जो कुछ लोगो के मत से मेघ राग की पत्नी है ।

सारगाक्षा—वि० स्त्री० [स० सारङ्गाक्षा] जिसके नेत्र मृग की तरह हो । मृगनैनी [को०] ।

सारगिक—सज्ञा पु० [स० सारङ्गिक] १ वह जो पक्षियो को पकडकर अपना निर्वाह करता हो । चिडीमार । बहेलिया । २. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे नगण, यगण औ सगण (न, य, स) होते है ।

विशेष—कवि भिखारीदास ने इसे मात्रिक छद माना है ।

सारगिका—सज्ञा स्त्री० [स० सारङ्गिका] १ दे० 'सारगिका'। २ दे० 'सारगी'। ३ बहेलिया की स्त्री ।

सारगिया—सज्ञा पु० [हिं० सारगी + इया (प्रत्य०)] सारगी बजाने वाला । साजिदा ।

सारगी—सज्ञा स्त्री० [सं० सारङ्ग] एक प्रकार का बहुत प्रसिद्ध बाजा जिसका प्रचार इस देश मे बहुत प्राचीन काल से है । उ०— विविध पखावज आवज सचित बिचबिच मधुर उपग । सुर सहनाई सरस सारगी उपजत तान तरग ।—सूर (शब्द०) ।

विशेष—यह काठ का बना हुआ होता है और इसकी लबाई प्राय डेढ हाथ होती है । इसके सामने का भाग, जो परदा कहलाता है, पाँच छह अगुल चौडा होता है, और नीचे का भाग अपेक्षाकृत कुछ अधिक चौडा और मोटा होता है । इसमे ऊपर की ओर प्राय ४ या ५ खूँटियाँ होती है जिन्हे कान कहते है । उन्ही खूँटियो से लगे हुए लोहे और पीतल के कई तार होते है जो बाजे की पूरी लबाई मे होते हुए नीचे की ओर बँधे रहते है । इसे बजाने के लिये लकडी का एक लबा और दोनो ओर कुछ झुका हुआ एक टुकडा होता है जिसमे एक सिरे से दूसरे सिरे तक घोडे की दुम के बाल बँधे होते हैं । इसे कमानी कहते है । बजाने के समय यह कमानी दाहिने हाथ मे ले ली जाती है और उसमे लगे हुए घोडे के बाल से बाजे के तार रेते जाते हैं । उधर बायें हाथ की उँगलियाँ तारो पर रहती है जो बजाने के लिये स्वरो के अनुसार ऊपर नीचे और एक तार से दूसरे तार पर आती जाती रहती है । इस बाजे का स्वर बहुत ही मधुर और प्रिय होता है, इसलिये नाचने गाने का पेशा करनेवाले लोग अपने गाने के साथ प्राय इसी का व्यवहार करते है ।

सारड—सज्ञा पु० [स० सारण्ड] साँप का अडा ।

सारभ—सज्ञा पु० [स० सारम्भ] क्रोधपूर्ण वार्तालाप [को०] ।

सार¹—सज्ञा पु० [स०] १ किसी पदार्थ मे का मूल, मुख्य, काम का, या असली भाग । तत्व । सत्त । २ कथन आदि से निकलनेवाला मुख्य अभिप्राय । निष्कर्ष । उ०—तत्त सार इहै आहे अवर नाही जान ।—जग० बानी, पृ० १८ । ३. किसी पदार्थ मे से निकला हुआ निर्यास या अर्क आदि । रस । ४ चरक के अनुसार शरीर के अतर्गत आठ स्थिर पदार्थ जिनके नाम इस प्रकार हैं—त्वक्, रक्त, मास, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र और सत्व (मन) । ५ जल । पानी । ६ गूदा । मग्ज । ७ वह भूमि जिसमे दो फसलें होती हो । ८ गोशाला । बाडा । ९ खाद । १० दूहने के उपरात तुरत औटाया हुआ दूध । ११ औटाए हुए दूध पर की साढी । मलाई । १२ लकडी का हीर । १३ परिणाम । फल । नतीजा । १४ धन । दौलत । १५ नवनीत । मक्खन । १६ अमृत । १७ लोहा । १८ वन । जगल । १९ बल । शक्ति । ताकत । २० मज्जा । २१ वज्रक्षार । २२ वायु । हवा । २३ रोग । बीमारी । २४ जूआ खेलने का पासा । २५ अनार का पेड । २६ पियाल वृक्ष । चिरौजी का पेड । २७ वग । २८ मुद्ग । मूँग । २९ क्वाथ । काढा । ३० नीली वृक्ष । नील का पौधा । ३१ साल । सार । ३२ पना । पतला शरबत । ३३ कपूर । ३४ तलवार । (डिं०) । ३५ द्रव्य । (डिं०) । ३६ हाड । अस्थि । (डिं०) । ३७. एक प्रकार का मात्रिक छद जिसमे २८ मात्राएँ होती है और सोलहवी मात्रा पर विराम होता है । इसके अत मे दो गुरु होते है । प्रभाती नामक गीत इसी छद मे होता है । ३८ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसमे एक गुरु और एक लघु होता है । इसे 'ग्वाल' और 'शानु' भी कहते है । विशेष दे० 'ग्वाल' । ३९ एक प्रकार का अर्थालकार जिसमे उत्तरोत्तर

वस्तुओं का उत्कर्ष या अपकर्ष वर्णित होता है। इसे 'उदार' भी कहते हैं। उ०—(क)—सब मम प्रिय सब मम उपजाए। सब ते अधिक मनुज मोहिं भाए। तिन महँ द्विज, द्विज महँ श्रुतिधारी। तिन महँ निगम नीति अनुसारी। तिन महँ पुनि विरक्त पुनि ज्ञानी। ज्ञानिहु ते अति प्रिय विज्ञानी। तिनते मोहि अति प्रिय निज दासा। जेहि गति मोरि न दूसरी आसा। (ख) हे करतार विनै सुनो 'दास' की लोकनि को अवतार करचो जनि। लोकनि को अवतार करचो तो मनुष्यन को तो सवार करचो जनि। मानुष हू को सँवार करचो तो तिन्हें विच प्रेम पसार करचो जनि। प्रेम पसार करचो तो दयानिधि कँहूँ वियोग विचार करचो जनि। ४० वस्त्र। कपडा। उ०—वगरे वार भीने सार मैं झलकति अधर नई अरनई सरसानि।—घनानद, पृ० ५०६। ४१ गमन। क्रमण। गति (को०)। ४२ मवाद। पस (को०)। ४३ गोवर। गोमय (को०)। ४४ प्रसार। फैलाव। विस्तृति (को०)। ४५ दृढता। मजबूती। धैर्य। वीरता।

**सार[2]**—वि० १ उत्तम। श्रेष्ठ। २ ठोस। दृढ। मजवूत। ३ न्याय्य। ४ आवश्यक। अनिवार्य (को०)। ५ सही। वास्तविक (को०)। ६ अनेक प्रकार का। रग विरगा। चितकवरा (को०)। ७ भगानेवाला। दूर करनेवाला।

**सार(पु)[3]**—सज्ञा पु० [स० सारिका] सारिका। मैना। उ०—गहवर हिय शुक सो कहँ सारो।—तुलसी (शब्द०)।

**सार[4]**—सज्ञा पु० [हिं० सारना] १ पालन। पोषण। रक्षा। उ०—जड पच मिल जिहिं देह करी करनी लपु धौ धरनीधर की। जनु को कहु क्यों करिहैं न सँभार जो सार करै सचराचर की।—तुलसी (शब्द०)। २ शय्या। पलग। उ०—रची सार दोनो इक पासा। होय जुग जुग आवहिं कैलासा।—जायसी (शब्द०)। ३ खवरदारी। सभाल। हिफाजत। उ०—भरत सौगुनी सारकरत है अति प्रिय जानि तिहारे।—तुलसी (शब्द०)। ४ सुधबुध। अवसान। होश हवास। ५ खोजखवर।

**सार[5]**—सज्ञा पु० [स० श्याल, हिं० साला] पत्नी का भाई। साला।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग प्राय गाली के रूप मे भी किया जाता है।

**सार[6]**—सज्ञा पु० [फा०] १ उष्ट्र। ऊँट। २ एक चिडिया (को०)।

**सार[7]**—प्रत्य० पदात मे प्रयुक्त होकर यह फारसी प्रत्यय निम्नाकित अर्थ देता है—१ वाला। जैसे,—शर्मसार। २ वहुतायत। जैसे,—कोहसार। ३. मानिंद। तुल्य। समान। जैसे,—देव सार (को०)।

**सार†[8]**—सज्ञा स्त्री० [स० शाला] पशुओ को वाँधने का स्थान। पशुशाला। जैसे, गो सार।

**सारक[1]**—वि० [स०] रेचक। दस्तावर (को०)।

**सारक[2]**—सज्ञा पुं० जमालगोटा (को०)।

**सारखदिर**—सज्ञा पु० [स०] दुर्गंध खदिर। ववुरी।

**सारखा†**—वि० [स० सदृश, हिं० सरीखा] सदृश। समान। तुल्य। उ०—ता घर मरहट सारखे भूत वसहिं तिन माहिं।—कवीर ग्र०, पृ० २५५।

**सारगध**—सज्ञा पु० [स० सारगन्ध] चदन। सदल।

**सारगधि**—सज्ञा पु० [स० सारगन्धि] चदन।

**सारग**—वि० [स०] १ शक्तिशाली। सवल। २ सारगर्भित (को०)।

**सारगराही(पु)**—वि० [स० सारग्राही] दे० 'सारग्राही'। उ०—औगुन छाँडै गुन गहै, सारगराही लच्छ।—कवीर सा०, पृ० ६०।

**सारगर्भ**—वि० [स०] दे० 'सारगर्भित'।

**सारगर्भित**—वि० [स०] जिसमे तत्व भरा हो। सारयुक्त। तत्वपूर्ण। जैसे,—सारगर्भित पुस्तक, सारगर्भित व्याख्यान।

**सारगात्र**—वि० [स०] सारयुक्त या शक्तिशाली अगो वाला। पुष्टाग। वलवान (को०)।

**सारगुण**—सज्ञा पु० [स०] प्रधान या प्रमुख गुण। प्रधान धर्म (को०)।

**सारगुरु**—वि० [स०] जो वजन मे भारी हो। तौल मे भारी।

**सारग्राहिणी**—वि० स्त्री० [स०] दे० 'सारग्राही'। उ०—रिपुदमन—और वो वुद्धि कैसी अच्छी होती है। रणधीर—सारग्राहिणी।—श्रीनिवास ग्र०, पृ० ६२।

**सारग्राही**—वि० [स० सारग्राहिन्] [वि० स्त्री० सारग्राहिणी] सार तत्व को ग्रहण करनेवाला। किसी वस्तु का मुख्य अश ले लेनेवाला (को०)।

**सारग्रीव**—सज्ञा पु० [स०] शिव (को०)।

**सारघ**—सज्ञा पु० [स०] वह मधु जो मधुमक्खी तरह तरह के फूलो से सग्रह करती है।

विशेष—वैद्यक मे यह लघु, रुक्ष, शीतल, कमल और अर्श रोग का नाशक, दीपन, वलकारक, अतिसार, नेत्र रोग तथा घाव मे हितकर कहा गया है।

**सारजट**—सज्ञा पु० [अ० सारजेंट] पुलिस के सिपाही का जमादार, विशेषत गोरा या युरेशियन जमादार।

**सारज**—सज्ञा पु० [स०] नवनीत। मक्खन।

**सारजासव**—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का आसव जो धान, फल, फूल, मूल, सार, टहनी, पत्ते, छाल और चीनी इन नौ चीजो से वनता है।

विशेष—वैद्यक मे यह आसव मन, शरीर और अग्नि को बल देनेवाला, अनिद्रा, शोक और अरुचि का नाश करनेवाला तथा आनंदवर्धक वतलाया गया है।

**सारटिफिकट**—सज्ञा पु० [अ० सर्टिफिकेट] १ प्रशसापत्र। २ सनद। प्रमाणपत्र।

**सारण[1]**—सज्ञा पुं० [स०] १ एक प्रकार का गध द्रव्य। २ आम्रातक वृक्ष। अमडा। ३. अतिसार। दस्त की वीमारी। ४ भद्रवला। ५ पारा आदि रसो का सस्कार। दोषशुद्धि। ६ रावण के एक मत्री का नाम जो रामचद्र की सेना मे उनका भेद लेने गया था। ७. आँवला। ८ गधप्रसारिणी। ९ नवनीत। मक्खन। १० गध। महक। ११ घर की ओर ले चलना (को०)। १२ शरद् ऋतु की वायु (को०)। १३ तक्र। मट्ठा (को०)।

**सारण[2]**—वि० १ रेचक। प्रवाहित करने या वहानेवाला। २ चिटका हुआ। फटा हुआ। ३ जिसके सिर पर वालो के पाँच गुच्छे हो (को०)।

**सारणा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पारद आदि रसो का एक प्रकार का संस्कार। सारण। २ विस्तार करना। फैलाना (को०)। ३ ध्वनि या स्वर उत्पन्न करना (को०)।

**सारणि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गंधप्रसारिणी। २ पुनर्नवा। गदहपूरना। ३ छोटी नदी। ४ नाली। प्रणालिका। मोरी (को०)।

**सारणिक**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सारणिकी] १ पथिक। राहगीर। वटोही। २ घूम घूमकर बेचनेवाला व्यापारी। फेरीवाला। विसाती (को०)।

**सारणिक**[2]—वि० यात्रा करनेवाला (को०)।

**सारणिकघ्न**—संज्ञा पुं० [सं०] पथिको का विनाश करनेवाला, डाकू।

**सारणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गंधप्रसारिणी। २. छोटी नदी। ३. दे० 'सारिणी'।

**सारणेश**—संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम।

**सारतंडुल**—संज्ञा पुं० [सं० सारतण्डुल] चावल। हलका उबाला हुआ चावल जिसके सब दाने साबूत हो।

**सारतः**—अव्य० [सं० सारतस्] १ प्रकृति के अनुसार। प्रकृत्या। २ वलपूर्वक। ३ धन के अनुसार। वित्त के अनुसार (को०)।

**सारतरु**—संज्ञा पुं० [सं०] १ केले का पेड। २. खैर का पेड।

**सारता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सार का भाव या धर्म। सारत्व।

**सारति**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सारना] तैयारी। व्यवस्था। उ०—तव वकील कर जोरि अरज करी कछु अरज की। तब सुजानि दृग मोरि मसलति की सारति करी।—सुजान०, पृ० ६।

**सारतैल**—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार अशोक, अगर, सरल, देवदारु आदि का तेल जिसका व्यवहार क्षुद्र रोगो मे होता है।

**सारथि**—संज्ञा पुं० [सं०] १. रथादि का चलानेवाला। सूत। रथ-नागर। २ समुद्र। सागर। ३ साथी। सहयोगी (को०)। ४ अगुआ। नेता। पथप्रदर्शक (को०)।

**सारथित्व**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सारथि का कार्य। २ सारथि का भाव या धर्म। ३ सारथि का पद।

**सारथी**—संज्ञा पुं० [सं० सारथि] दे० 'सारथि-१'। उ०—आपने वाण सो काटि ध्वज रुक्म के असुर औ सारथी तुरत मारयो। —सूर (शब्द०)।

**सारथ्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १ रथ आदि का चलाना। गाडी आदि हाँकना। २ सवारी। ३ सहायता। मदद।

**सारद**(पु)[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शारदा] सरस्वती। शारदा। उ०—सुक से मुनी सारद सेवकता चिरजीवन लोमस ते अधिकाने। ऐसे भए तो कहा तुलसी जो पै राजिवलोचन राम न जाने। —तुलसी (शब्द०)।

**सारद**[2]—वि० [सं० शरद > शारद] शारदीय। शरद संबंधी। उ०—सोहति धोती सेत मे, कनक बरन तन वाल। सारद वारद वीजुरी, भा रद कीजत लाल।—विहारी (शब्द०)।

**सारद**[3]—संज्ञा पुं० [सं० शरद] शरद ऋतु।

**सारदर्शी**—वि० [सं० सारदर्शिन्] सार तत्व को जाननेवाला। महत्वपूर्ण अंश को पहचाननेवाला (को०)।

**सारदा**[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दे० 'शारदा'। २ दुर्गा (को०)।

**सारदा**[2]—संज्ञा पुं० [सं० शरद् ?] स्थल कमल।

**सारदा**[3]—वि० स्त्री० [सं०] सार देनेवाली। जो सार दे।

**सारदातीर्थ**—संज्ञा पुं० [सं० शारदातीर्थ] एक प्राचीन तीर्थ।

**सारदारु**—संज्ञा पुं० [सं०] वह लकडी जिसमे सार भाग अधिक हो।

**सारदासुंदरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० शारदासुन्दरी] दुर्गा का एक नाम।

**सारदी**[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] जलपीपल।

**सारदी**[2]—वि० [सं० शारदी] दे० 'शारदीय'। उ०—कहुँ कहुँ वृष्टि सारदी थोरी। कोउ एक पाव भगति जिमि मोरी।—मानस, ४। १६।

**सारदूल**—संज्ञा पुं० [हिं० शार्दूल] दे० 'शार्दूल'। उ०—क्रीडा मृग जाको सारदूल। तन वरन काति मनु हेम फूल। —भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० ३७३।

**सारद्रुम**—संज्ञा पुं० [सं०] १ खैर का पेड। २ वह वृक्ष जिसकी लकडी मे सारभाग अधिक हो।

**सारधाता**—संज्ञा पुं० [सं० सारधातृ] १ वह जो ज्ञान उत्पन्न करता हो। बोध करानेवाला। २ शिव।

**सारधान्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १ उत्तम धान। बढिया चावल। २ बढिया अन्न।

**सारधू**—संज्ञा स्त्री० [हिं०] पुत्री। बेटी। कन्या।

**सारना**—क्रि० स० [हिं० सरना का सक० रूप] १ पूर्ण करना। समाप्त करना। संपूर्ण रूप से करना। उ०—धनि हनुमत सुग्रीव कहत है, रावण को दल मारयो। सूर सुनत रघुनाथ भयो सुख काज आपनो सारयो।—सूर (शब्द०)। २. साधना। बनाना। दुरुस्त करना। ३ सुशोभित करना। सुंदर बनाना। ४ देख रेख करना। रक्षा करना। सँभालना। ५ आँखो मे अंजन आदि लगाना। ६ (अस्त्र आदि) चलाना। संचालित करना। उ०—ससि पर करवत सारा राहू। नखतन्ह भरा दीन्ह बड दाहू।—जायसी (शब्द०)। ७ गलाना। सडाना। उ०—सन असत हे एक काट के जल मे सारै। —पलटू०, भा० १, पृ० १७। ८ काढना। लगाना। उ०—(क) जातहि राम तिलक तेहि सारा।—मानस, ५। ४६। (ख) मारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा —मानस, ६। १०५।

**सारनाथ**—संज्ञा पुं० [सं० सारङ्गनाथ] बनारस से उत्तरपश्चिम चार मील पर एक प्रसिद्ध स्थान।

विशेष [illegible] ...हिंदुओ, जैनियो और बौद्धो का एक प्रसिद्ध ... मृगदाव है जहाँसे भगवान् बुद्ध ने अपना ...र्मचक्र प्रवर्तन) किया था। यहाँ खुदाई ...प, बौद्ध मंदिरो का ध्वसावशेष तथा ... जैन मूर्तियाँ पाई गई है। इसके ... भी यहाँ पाया गया है।

सारपत्र—वि० [सं०] (वृक्ष) जिसकी पत्तियाँ मजबूत और कडी हो [को०]।

सारपद—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का पक्षी जो चरक के अनुसार विष्किर जाति का है। २ वह पत्ता जिसमे सार अर्थात् खाद हो।

सारपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शालपर्णी' [को०]।

सारपाक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का विषैला फल जिसका उल्लेख सुश्रुत ने किया है।

सारपाढ—संज्ञा पुं० [सं०] धन्वग वृक्ष। धामिन।

सारपादप—संज्ञा पुं० [सं०] धन्वग वृक्ष। धामिन।

सारफल—संज्ञा पुं० [सं०] जँबीरी नीबू।

सारबधका—संज्ञा स्त्री० [सं० सारबन्धका] मेथी।

सारबान—संज्ञा पुं० [फा०] ऊँट पालनेवाला। ऊँटवाला [को०]।

सारभग—संज्ञा पुं० [सं० सारभङ्ग] सार या शक्ति का अभाव [को०]।

सारभाड—संज्ञा पुं० [सं० सारभाण्ड] १ व्यापार की बहुमूल्य वस्तु। २ खजाना। ३ प्राकृतिक पात्र। प्रकृतिनिर्मित पात्र। जैसे, मृगनाभि। कस्तूरी। ४ चोखा माल। असली माल।

सारभाटा—संज्ञा पुं० [हिं० ज्वार का अनु० + भाटा] ज्वारभाटा का उलटा। समुद्र की वह बाढ जिसमे पानी पहले बढकर समुद्र तट से आगे निकल जाता है और फिर कुछ देर बाद पीछे लौटता है।

सारभुक्—संज्ञा पुं० [सं० सारभुज्] लोहे को खानेवाली, अग्नि। आग।

सारभूत¹—वि० [सं०] १ सारस्वरूप। उ०—तामहिं सारभूत हैं साधैं। सिद्धासन पद्मासन बाँधैं।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० १०६।

सारभूत²—संज्ञा पुं० प्रमुख तत्त्व या सर्वोत्तम वस्तु।

सारभृत्—वि० [सं०] सारग्रहण करनेवाला। सारग्राही।

सारमडूक—संज्ञा पुं० [सं० सारमण्डूक] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का कीडा जो मेढक की तरह का होता है।

सारमहत्—वि० [सं०] अत्यत मूल्यवान्। बहुत कीमती।

सारमार्गण—संज्ञा पुं० [सं०] १ मज्जा या मेद ढूँढना। २ सार तत्त्व या अश खोजना [को०]।

सारमिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्रुति। वेद।

सारमूषिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवदाली। घघरबेल। बदाल।

सारमेय—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सारमेयी] १ सरमा की सतान। २ कुत्ता। ३ सुफलक के पुत्र और अक्रूर के एक भाई का नाम।

यौ०—सारमेयगणाधिप = कुबेर का एक नाम। सारमेयचिकित्सा = कुत्ते की चिकित्सा करने की कला।

सारमेयादन—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुत्ते का भोजन। २ भागवत के अनुसार एक नरक का नाम।

सारमेयी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुतिया।

सारयोध—वि० [सं०] चुने हुए योद्धाओं से युक्त। अच्छे वीरों से युक्त [को०]।

साररूप—वि० [सं०] १ निचोड। निष्कर्ष स्वरूप। २ सर्वोत्तम। प्रमुख। ३ अत्यत सुदर [को०]।

सारलोह—संज्ञा पुं० [सं०] लोहसार। इस्पात। लोहा।

विशेष—वैद्यक मे यह ग्रहणी, अतिसार, अर्द्धांग, वात, परिणामशूल, सर्दी, पीनस, पित्त और श्वास का नाशक बताया गया है।

सारल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ सरल होने का भाव। सरलता। उ०—किंतु हा! यह कैसा सारल्य? मानता है जो बनकर शल्य।—साकेत, पृ० ३५। २ सत्यता। ईमानदारी। सचाई (को०)।

सारव—वि० [सं०] सरयू नदी से सबधित [को०]।

सारवती¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ योग मे एक प्रकार की समाधि। २ एक प्रकार का छद जिसमे तीन भगण और एक गुरु होता है।

सारवती²—वि० स्त्री० [सं० सारवत्] दे० 'सारवान्'।

सारवत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सार ग्रहण करने का भाव। सारग्राहिता।

सारवना(पु)—क्रि० स० [सं० स्राव करण] स्रवित करना। चुआना। ढालना। उ०—ब्रह्म अगनि जीवन जरै चेतन चितहि उजासो रे। सुमति कलाली सारवै कोइ पीवै बिरला दासो रे।—दादू०, पृ० ४६३।

सारवर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] वे वृक्ष या वनस्पतियाँ आदि जिनमे से किसी प्रकार का दूध या सफेद तरल पदार्थ निकलता हो। क्षीरवृक्ष।

सारवर्जित—वि० [सं०] जिसमे कुछ भी सार न हो। साररहित। नि सार। रसहीन।

सारवस्तु—संज्ञा स्त्री० [सं०] सारवान् वस्तु। महत्वपूर्ण चीज [को०]।

सारवान्—दे० [सं० सारवत्] १ महत्वपूर्ण। मूल्यवान। २ मजबूत। दृढ। ठोस। ३ पोषक। ४ सार अर्थात् द्रव, रस या निर्यासयुक्त। ५ सारयुक्त। घन। ससार। ६, उर्वर। उपजाऊ [को०]।

सारवाला—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की जगली घास जो तर जगहो मे होती है।

विशेष—यह घास प्राय बारह वर्ष तक सुरक्षित रहती है। मुलायम होने पर यह पशुओं को खिलाई जाती है।

सारविद्—वि० [सं०] किसी वस्तु के सार का ज्ञाता। किसी के तत्व, मूल्य, अथवा महत्व को जाननेवाला [को०]।

सारवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] धामिन। धन्वग वृक्ष।

सारशन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सारसन'।

सारशल्य—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद खैर का पेड। श्वेत खदिर।

सारशून्य—वि० [सं०] तत्वरहित। महत्वहीन। निरर्थक [को०]।

सारस¹--संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सारसी] १ एक प्रकार का प्रसिद्ध सुदर पक्षी जो एशिया, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया और युरोप के उत्तरी भागो मे पाया जाता है। उ०--मोर हस सारस पारावत। भवननि पर सोभा अति पावत।--मानस, ७।२८।

विशेष--इसकी लबाई पूँछ के आखिरी सिरे तक ४ फुट होती है। पर भूरे होते है। सिर का ऊपरी भाग लाल और पैर काले होते हैं। यह एक स्थान पर नही रहता वरावर घूमा करता है। किसानो के नए वीज वोने पर यह वहाँ पहुँच जाता है और वीजो को चट कर जाता हे। यह मेढक, घोघा आदि भी खाता है। यह प्राय घास फूस के ढेर मे घोसला वनाकर या खँडहरो मे रहता है। यह अपने वच्चो का लालन पालन वडे यत्न से करता है। कही कही लोग इसे पालते है। वाग बगीचो मे छोड देने पर यह कीडे मकोडो को खाकर उनसे पेड पौधो की रक्षा करता है। कुछ लोग भ्रमवश हस को ही सारस मानते हैं। वैद्यक मे इसके मास का गुण मधुर, अम्ल, कषाय तथा महातिसार, पित्त, ग्रहणी और अर्श रोग का नाशक वताया गया है।

पर्या०--पुष्कराह्व। लक्ष्मण। सरसीक। सरोद्भव। रसिक। कामी।

२ हस। ३ गरुड का पुत्र। ४. चद्रमा। ५ स्त्रियो का एक प्रकार का कटिभूषण। ६ झील का जल।

विशेष--नदी का जल पहाड आदि के कारण रुक कर जहाँ जमा होता है, उसे 'सरस' और उसके जल को सारस जल कहते हैं। ऐसा जल बलकारी, प्यास बुझानेवाला, लघु, रुचिकारक और मलमूत्र को रोकनेवाला माना गया है।

७ कमल। जलज। उ०--(क) सारस रस अचवन को मानो तृषित मधुप जुग जोर। पान करत कहूँ तृप्ति न मानत पलक न देत अकोर।--सूर (शब्द०)। (ख) मजु अजन सहित जलकन चुवत लोचन चारु। स्याम सारस मग मनो ससि श्रवत सुधा सिंगारु।--तुलसी (शब्द०)। ८ खग। पक्षी। विहग (को०)। ९ सगीत मे एक ताल (को०)। १० छप्पय का ३७ वाँ भेद। इसमे ३४ गुरु, ८४ लघु, कुल ११८ वर्ण या १५१ मात्राएँ अथवा ३४ गुरु, ८० लघु कुल ११४ वर्ण या १४८ मात्राएँ होती है।

सारस²--वि० १ तालाव सवधी। २ सारस पक्षी सवधी। ३ चिल्लानेवाला। वुलानेवाला [को०]।

सारसक--संज्ञा पुं० [सं०] सारस।

सारसन--संज्ञा पुं० [सं०] १ स्त्रियो का कमर मे पहनने का मेखला नामक आभूषण। करधनी। चद्रहार। २ तलवार की पेटी। कमरवद। ३ कवच। उरस्त्राण (को०)।

सारसप्रिया--संज्ञा स्त्री० [सं०] सारसी [को०]।

सारसा--संज्ञा पुं० [अ० सालसा] दे० 'सालसा'।

सारसाक्ष--वि० [सं०] एक प्रकार का रत्न। लाल [को०]।

सारसाक्षी--संज्ञा स्त्री० [सं०] पद्मलोचना। कमलनैनी स्त्री [को०]।

सारसिका--संज्ञा स्त्री० [सं०] सारस पक्षी की मादा। सारसी [को०]।

सारसी--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आर्या छद का २३ वाँ भेद जिसमे ५ गुरु और ४८ लघु मात्राएँ होती है। २ सारस पक्षी की मादा।

सारसुता(पु)--संज्ञा स्त्री० [सं० सूरसुता] यमुना। उ०--निरखति वैठि नितविनि पिय सँग सारसुता की ओर।--सूर (शब्द०)।

सारसुती(पु)†--संज्ञा स्त्री० [सं० सरस्वती] दे० 'सरस्वती'।

सारसैधव--संज्ञा पुं० [सं० सारसैन्धव] सेंधा नमक।

सारस्य¹--वि० [सं०] जिसमे वहुत अधिक रस हो। वहुत रसवाला।

सारस्य²--संज्ञा पुं० १ रसदार होने का भाव। रसीलापन। सरसता। २ जल का प्राचुर्य। जल की अधिकता (को०)। ३ उत्क्रोश। कलकल। निनाद (को०)।

सारस्वत¹--संज्ञा पुं० [सं०] १ दिल्ली के उत्तरपश्चिम का वह भाग जो सरस्वती नदी के तट पर हे और जिसमे पजाव का कुछ भाग समिलित हे। (प्राचीन आर्य पहले यही आकर वसे थे और इसे वहुत पवित्र समझते थे।) सारस्वत प्रदेश। २ इस देश के निवासी ब्राह्मण। ३ सरस्वती नदी के पुत्र एक मुनि का नाम। ४ एक प्रसिद्ध व्याकरण। ५ विल्वदड। ६ वैद्यक मे एक प्रकार का चूर्ण जिसके सेवन से उन्माद, वायुजनित विकार तथा प्रमेह आदि रोगो का दूर होना माना जाता है। ७. वैद्यक मे एक प्रकार का औषधयुक्त घृत जो पुष्टिकारक माना जाता हे। ८ एक कल्प का नाम (को०)। ९ वक्तृत्व। वाग्मिता (को०)। १० दे० 'सारस्वत कल्प (को०)।

सारस्वत²--वि० १ सरस्वती (वाग्देवी) सवधी। सरस्वती का। २ वाक्पटु। वाग्मी। विद्वान् (को०)। ३ सरस्वती नदी सवधी (को०)। ४ सारस्वत देश का।

सारस्वतकल्प--संज्ञा पुं० [सं०] सरस्वतीपूजन सवधी एक उत्सव का नाम। सारस्वतोत्सव [को०]।

सारस्वतव्रत--संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्रकार का व्रत जो सरस्वती देवता के उद्देश्य से किया जाता है।

विशेष--कहते है कि इस व्रत का अनुष्ठान करने से मनुष्य वहुत वडा पडित, भाग्यवान् और कुशल हो जाता है और उसे पत्नी तथा मित्रो आदि का प्रेम प्राप्त हो जाता है। यह व्रत वरावर प्रति रविवार या पचमी को किया जाता है और इसमे किसी अच्छे ब्राह्मण की पूजा करके उसे भोजन कराया जाता है।

सारस्वतीय--वि० [सं०] सरस्वती सवधी। सरस्वती का।

सारस्वतोत्सव--संज्ञा पुं० [सं०] वह उत्सव जिसमे सरस्वती देवी का पूजन किया जाता है।

सारस्वत्य--वि० [सं०] सरस्वती सवधी। सरस्वती का।

साराभस--संज्ञा पुं० [सं०] नीबू का रस।

साराश--संज्ञा पुं० [सं०] १ खुलासा। सक्षेप। सार। निचोड। २ तात्पर्य। मतलव। अभिप्राय। ३ नतीजा। परिणाम। ४ उपसहार। परिशिष्ट।

सारा¹—सज्ञा स्त्री० [स०] १ काली निसोथ। कृष्णत्रिवृत्ता। २ दूब। दूर्वा। ३ शातला। ४ थूहर। ५ केला। ६ कुश। कुशा (को०)। ७ तालिसपत्र।

सारा²—सज्ञा पु० १ एक प्रकार का अलकार जिसमे एक वस्तु दूसरी से बढकर कही जाती है। जैसे, ऊखहु ते मधुर पियूषहु ते मधुर प्यारी तेरे ओठ मधुरता को सागर है।

सारा†³—सज्ञा पु० [स० श्यालक] दे० 'साला'।

सारा⁴—वि० [स० सर्व] [वि० स्त्री० सारी] समस्त। सपूर्ण। समूचा। पूरा। उ०—के है पाकदामन तू नरियाँ मे आज। बडाई बडी तुज है सारियाँ मे आज।—दक्खिनी०, पृ० ८४।

सारा†⁵—सज्ञा पु० [हिं० ओसारा] दे० 'ओसारा'। उ०—जब सारे मे धूप फैल जाए तब कही आँख खुले।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ३६८।

सारादान - सज्ञा पुं० [स०] सार वस्तु को ग्रहण करना। उत्कृष्ट या सर्वोत्तम को चयन करना [को०]।

सारापहार—सज्ञा पुं० [स०] सार अश या सपत्ति को लूटना [को०]।

सारामुख—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का धान या चावल [को०]।

साराम्ल—सज्ञा पु० [स०] १ जँबीरी नीबू। २ धामिन।

सारार्थी—वि० [स० सारार्थिन्] सार भाग का इच्छुक। लाभ लेने का इच्छुक [को०]।

साराल—सज्ञा पुं० [सं०] तिल।

साराव—वि० [स०] नादयुक्त। रवयुक्त [को०]।

सारावती—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का छद जिसे सारावली भी कहते है।

सारि—सज्ञा पु० [स०] १ पासा या चौपड खेलनेवाला। २ जुआ खेलने का पासा। उ०—ढारि पासा साधु सगति केरि रसना सारि। दाँव अब के परचो पूरी कुमति पिछली हारि।—सूर (शब्द०)। ३ गोटी। ४ एक पक्षी। मैना (को०)।

यौ०—सारिक्रीडा = पाँसे का खेल। गोटियो का खेल। सारिफलक = बिसात जिसपर गोटी खेलते है।

सारिक¹—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सारिका'।

सारिक²—सज्ञा पु० [अ० सारिक] [स्त्री० सारिका] चोर। तस्कर [को०]।

सारिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मैना नामक पक्षी। दे० 'मैना'। उ०—वन उपवन फल फूल, सुभग सर शुक सारिका हस पारावत।—सूर (शब्द०)। २ सारगी, सितार, बीण आदि तत्र वाद्यो का ऊँचा उठा हुआ वह भाग जिसके ऊपर से होकर तार जाता है। घुडिया। घोरिया (को०)। ३ चाडाल वीणा (को०)। ४ विश्वस्त व्यक्ति। चर (को०)।

सारिकामुख—सज्ञा पु० [स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का कीडा।

सारिखा⑪†—वि० [सं० सदृश या सदृक्ष] दे० 'सरीखा'। उ०—(क) तुम्ह सारिखे सत प्रिय मोरे।—मानस, ५। (ख) सतगुरु सग न सचरा, सत्त नाम उर नाहि। ते घट मरघट सारिखा, भूत बसै ता माँहि।—दरिया० बानी, पृ० ६। (ख) सुन्दर सदगुरु सारिखा उपकारी नहि कोइ।—सुदर० ग्र०, भा० २, पृ० ६६७।

सारिणी¹—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सहदेई। सहदेवी। महाबला। पीतपुष्पा। २ कपास। ३ धमासा। दुरालभा। कपिल शिशपा। काला सीसो। ४ गध प्रसारिणी। ५ रक्त पुनर्नवा। ६ जलप्रणाली। स्रोत की धारा (को०)।

सारिणी²—सज्ञा स्त्री० १ दे० 'सारणी'। २ वह तालिका या ग्रथ जिससे ग्रहो आदि की गति का क्रमबद्ध ज्ञान प्राप्त होता हो। जैसे,—चद्र सारिणी, सूर्यसारिणी। ३ सूची। तालिका। फेहरिस्त।

सारिव—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का धान।

सारिवा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ अनतमूल।

पर्या०—शारदा। गोपी। गोपकन्या। गोपवल्ली। प्रतानिका। लता। आस्फोता। काष्ठ शारिवा। गोपा। उत्पल सारिवा। अनता। शारिवा। श्यामा।

२ काला अनतमूल।

पर्या०—कृष्ण मूली। कृष्णा। चदन सारिवा। भद्रा। चदन गोपा। चदना। कृष्ण वल्ली।

सारिवाद्वय—सज्ञा पुं० [सं०] अनतमूल और श्यामा लता इन दोनो का समूह।

सारिष्ट—वि० [स०] अरिष्ट अर्थात् अमगल एवम् अशुभ लक्षणो से युक्त। मृत्यु के लक्षणो से युक्त [को०]।

सारिष्ठ—वि० [स०] १ सबसे सुदर। २ सबमे श्रेष्ठ।

सारिसूक्त—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि जो ऋग्वेद के कुछ मत्रो के द्रष्टा थे।

सारी¹—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सारिका पक्षी। मैना। उ०—शुभ सिद्धात वाक्य पढते हैं शुक सारी भी आश्रम के।—पचवटी, —पृ० ६। २ पासा। गोटी। ३ सातला। सप्तला। थूहर। ४ भौहो की भगिमा या वक्रता (को०)।

सारी²—सज्ञा स्त्री० [स० शाटिका, शाटी, हिं० साडी] १ दे० 'साडी'। उ०—तन सुरग सारी, नयन अजन, बेंदी भाल। सजे रही जग जालिमा भामिनि देखहु लाल।—स० सप्तक, पृ० २५२।

सारी†³—सज्ञा स्त्री० [हिं० साला] स्त्री की बहन। पत्नी की बहन।

सारी⑪⁴—सज्ञा स्त्री० [स० सार] मलाई। बालाई। साढी।

सारी⁵—सज्ञा पु० [स० सारिन्] वह जो अनुकरण करनेवाला हो। वह जो अनुसरण करे।

सारी⁶ —वि० [स० सारिन्] १ गमनशील। जानेवाला। गता। २ किसी वस्तु का सार भाग लेनेवाला (को०)।

सारीख, सारीखा⑪—वि० [स० सदृक्ष, प्रा० सारिक्ख] [वि० स्त्री० सारीखी] समान। तुल्य। सदृश। उ०—(क) जोध सूर असुर वो सरोवर जूटिया, बरोबर करै सारीख वाहाँ।—रघु०

रु०, पृ० २१। (ख) सारीखी जोडी जुडी ग्रा नारी ग्रउ नाह।
—ढोला०, दू० ६।

सारु (पु)†—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सार'। उ०—सगर मे सरजा शिवाजी ग्ररि सैनन को, सारु हरि लेत हिंदुवान सिर सारु दै।—भूषण ग्र०, पृ० ५४।

सारूप—संज्ञा पुं० [सं०] समान रूप होने का भाव। सरूपता।

सारूप्य[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ पाँच प्रकार की मुक्तियो मे से एक प्रकार की मुक्ति जिसमे उपासक ग्रपने उपास्य देव के रूप मे रहता है ग्रौर ग्रत मे उसी उपास्य देवता का रूप प्राप्त कर लेता है। २ समान रूप होने का भाव। एकरूपता सरूपता। ३ ग्रनुकूल वस्तु की सरूपता ग्रथवा रूपसादृश्य के कारण जन्य चित्तक्षोभ की वृद्धि ग्रथवा क्रोधादि व्यवहार (को०)। ४ किसी पदार्थ को या उससे मिलती जुलती सूरत को देखकर होनेवाला ग्राश्चर्य (को०)।

सारूप्य[२]—वि० समुपयुक्त। उचित। ठीक [को०]।

सारूप्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सारूप्य का भाव या धर्म।

सारो (पु)†[१]-संज्ञा पुं० [सं० शालि] एक प्रकार का धान जो ग्रगहन मास मे तैयार हो जाता है।

सारो (पु)†[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० सारिका] दे० 'सारिका'।

सारोदक—संज्ञा पुं० [सं०] ग्रनतमूल का रस।

सारोपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य मे एक प्रकार की लक्षणा जो उस स्थान पर होती है जहाँ एक पदार्थ मे दूसरे का ग्रारोप होने पर कुछ विशिष्ट ग्रर्थ निकलता है। जैसे,—गरमी के दिनो मे पानी ही जान है। यहाँ 'पानी' मे 'जान' का ग्रारोप किया गया है। पर ग्रभिप्राय यह निकलता है कि यदि थोडी देर भी पानी न मिले तो जान निकलने लगती है।

सारोप्टिक, सारोप्ट्रिक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का विष।

सारोह—वि० [सं०] १ ग्रारोहयुक्त। ऊपर उठा हुग्रा। २ घोडेवाले या घुडसवार के साथ [को०]।

सारौं (पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सारो] सारिका। मैना।

सार्क—वि० [सं०] ग्रर्क या सूर्य से युक्त। धूप या ग्रातपयुक्त [को०]।

सार्गड, सार्गल—वि० [सं०] ग्रगलायुक्त। प्रतिबधित। रोक या प्रतिबध से युक्त। प्रतिरोधित [को०]।

सार्गाल—वि० [सं० शार्गाल ?] शृगाल सबधी। स्यार का।

सार्गिक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सृष्टि करने मे समर्थ हो। स्रष्टा। सृष्टिकर्ता।

सार्जंट—संज्ञा पुं० [ग्रं० सार्जेंट] दे० 'सर्जंट'।

सार्ज—संज्ञा पुं० [सं०] राल। धूना।

सार्जनाक्षि—संज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

सार्टिफिकेट—संज्ञा पुं० [ग्रं० सार्टिफिकेट] दे० 'सर्टिफिकेट'।

सार्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] घर। निवास [को०]।

सार्थ[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ जतुग्रो का समूह। पशुग्रो का झुड। २ वणिको का समूह। कारवाँ। ३. समूह। गरोह। झुड। ४. व्यापारी माल (कौटि०)। ५ कारबार करनेवाला। व्यापारी। रोजगारी। ६, धनी व्यक्ति (को०)। ७ तीर्थयात्री (को०)। ८ समाज। समूह। भीड। दल (को०)।

सार्थ[२]—वि० १ ग्रर्थ सहित। जिसका ग्रर्थ हो। २ उद्देश्ययुक्त। जिसका कुछ उद्देश्य हो (को०)। ३ समान ग्रर्थ या महत्व का (को०)। ५ सपन्न। धनी (को०)। ६ जो उपयोगी या काम के लायक हो (को०)।

सार्थक—वि० [सं०] १ ग्रर्थ सहित। २ सफल। सिद्ध। पूर्ण मनोरथ। ३ उपकारी। गुणकारी। मुफीद। ४ लाभकर। लाभदायक।

सार्थकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सार्थक होने का भाव। २ सफलता। सिद्धि। उ०—ग्रधिक प्राणो के पास, ग्रधिक ग्रानदमय, ग्रधिक कहने के लिये प्रगति की सार्थकता।—ग्राराधना, पृ० ८६।

सार्थघ्न—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सार्थ या कारवाँ को नष्ट करता ग्रथवा लूट लेता हो। डाकू [को०]।

सार्थज—वि० [सं०] सार्थ मे उत्पन्न। कारवाँ मे पला हुग्रा [को०]।

सार्थपति—संज्ञा पुं० [सं०] व्यापार करनेवाला। वणिक्। रोजगारी। सार्थ का स्वामी। कारवाँ का प्रधान।

सार्थपाल—वि० [सं०] सार्थ की देखभाल करनेवाला। व्यापारियो के काफिले का रक्षक [को०]।

सार्थभृत्—संज्ञा पुं० [सं०] सार्थ का सचालक या प्रधान [को०]।

सार्थवत्—वि० [सं०] १ जिसका कुछ ग्रर्थ हो। ग्रर्थयुक्त। २ यथार्थ। ठीक। ३ सार्थ या समूहवाला। विशाल समूह के साथ (को०)।

सार्थवाह—संज्ञा पुं० [सं०] १ सार्थ का प्रधान या नेता। २ व्यापारी। रोजगारी [को०]।

सार्थवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सार्थवाह'।

सार्थसचय—वि० [सं० सार्थसञ्चय] धनी। मालदार [को०]।

सार्थहा[१]—वि० [सं० सार्थहन्] सार्थ का नाश करनेवाला [को०]।

सार्थहा[२]—संज्ञा पुं० डाकू [को०]।

सार्थहीन—वि० [सं०] ग्रपने सार्थ से बिछुडा हुग्रा। जो ग्रपने दल से बिछुड गया हो [को०]।

सार्थवान्—वि० [सं० सार्थवत्] १. ग्रर्थयुक्त। २ ग्रभिप्राय से युक्त। महत्वपूर्ण। ३ जिसके साथ बहुत बडा समूह हो [को०]।

सार्थातिवाह्य—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य ग्रर्थशास्त्र के ग्रनुसार माल की चलान। व्यापारिक माल को रवाना करना।

सार्थिक[१]—वि० [सं०] १ दे० 'सार्थक'। २ सहयात्री। साथ मे यात्रा करनेवाला (को०)।

सार्थिक[२]—संज्ञा पुं० १ वणिक्। व्यापारी। २ सहयात्री [को०]।

सार्थी (पु)—संज्ञा पुं० [सं० सारथिन्] रथ हाँकनेवाला। कोचवान।

सार्दूल—संज्ञा पुं० [सं० शार्दूल] सिंह। केसरी। विशेष दे० 'शार्दूल'।

सार्द्ध—वि० [सं०] १. जिसमे पूरे के ग्रतिरिक्त ग्राधा भी मिला या लगा हो। ग्रर्धयुक्त। २. सहित।

सार्वज्ञ, सार्वज्ञ्य—संज्ञा पुं० [सं०] होने का भाव। सर्वज्ञता।

सार्वत्रिक—वि० [सं०] सब स्थानों से संबद्ध। सब स्थानों में होनेवाला। प्रत्येक स्थितियों, स्थानों एवं अवस्थाओं में होनेवाला। सर्वव्यापी। जैसे, सार्वत्रिक नियम।

सार्वदेशिक—वि० [सं०] संपूर्ण देशों का। सर्वदेश या राष्ट्र संबंधी।

सार्वधातुक¹—वि० [सं०] [स्त्री० सार्वधातुकी] संस्कृत व्याकरण के अनुसार सभी धातुओं में व्यवहृत होनेवाला। गण विकरण लगाने के पश्चात् धातु के समग्र रूपों में व्यवहृत होनेवाला।

सार्वधातुक²—संज्ञा पुं० संस्कृत व्याकरण में चार लकारों (लट्, लोट्, लङ् और लिङ्) के तिङादि प्रत्यय या लिट् तथा आशीर्लिङ् को छोड़कर और सभी लकारों के विभक्तिचिह्न और 'श्' ध्वनि से प्रकट होनेवाले विकरण।

सार्वनामिक— वि० [सं०] सर्वनाम से संबंधित।

सार्वभौतिक —वि० [सं०] [स्त्री० सार्वभौतिकी] सर्वभूत संबंधी। सब प्राणियों या भूतों में संबंध रखनेवाला।

सार्वभौम¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ सप्तद्वीपा वसुंधरा का नरेश। समस्त भूमि का राजा। चक्रवर्ती राजा। २ पुरुवंशी अहयाति का पुत्र। ३ भागवत के अनुसार विदूरथ के पुत्र का नाम। ४ कुबेर की दिशा अर्थात् उत्तर दिशा का दिग्गज। हाथी। ५ शुक्रनीति के अनुसार वह राज्य जिसका कर या राजस्व प्रतिवर्ष ५० करोड़ कर्ष हो (को०)। ६ समग्र विश्व की भूमि। दुनियाँ का राज्य (को०)।

सार्वभौम²—वि० १ समस्त भूमि संबंधी। संपूर्ण भूमि का। जैसे,—सार्वभौम राजा। २ समग्र पृथ्वी का शासन करनेवाला (को०)। ३ जो संपूर्ण विश्व में विख्यात हो (को०)। ४ योग के अनुसार मन की सभी स्थितियों, अवस्थाओं से संबंध रखनेवाला (को०)।

यौ०—सार्वभौमगृह, सार्वभौमभवन = चक्रवर्ती नरेश का प्रासाद।

सार्वभौमवाद—संज्ञा पुं० [सं० सार्वभौम + वाद] वह सिद्धांत जिसमें पृथ्वी के समस्त प्राणियों के प्रति समता का भाव रखा जाता है। सभी के साथ समान भाववाला सिद्धांत। उ०—उपनिषदीय सार्वभौमवाद और उस काल का प्रचलित वर्णाश्रम इनका बेमेल सहवास क्योंकर निभ सकता था।—संत० दरिया (भू०), पृ० ६२।

सार्वभौमसत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] समग्र भूमि पर शासन करने की सर्वोच्च शक्ति। व्यापक शक्ति या अबाध अधिकार (अं० पैरामाउंट पावर)। उ०—निस्संदेह उन्हें महसूस करना चाहिए कि सार्वभौम सत्ता न शिमला में है न ह्वाइट हाल (लंदन) में।—आज, १९५४।

सार्वभौमिक—वि० [सं०] संपूर्ण धरती संबंधी। विश्व में व्याप्त या फैला हुआ (वि०)।

सार्वभौमिकता—संज्ञा पुं० [सं०] सार्वभौमिक होने का भाव। सर्वव्यापकता।

सार्वयज्ञिक, सार्वयज्ञीय—वि० [सं०] जो सभी प्रकार के यज्ञो से सबद्ध हो [को०]।

सार्वयौगिक —वि० [स०] प्रत्येक रोग मे उपयोगी या उपकारक [को०]।

सार्वरात्रिक —वि० [स०] पूरी रात चलने या टिकनेवाला। जैसे,—दीपक [को०]।

सार्वराष्ट्रिय—वि० [स०] दे० 'सार्वराष्ट्रीय'।

सार्वराष्ट्रीय—वि० [सं०] जिसका दो या अधिक राष्ट्रो से सबध हो। भिन्न भिन्न राष्ट्र सबधी। जैसे,—सार्वराष्ट्रीय प्रश्न। सार्वराष्ट्रीय राजनीति।

सार्वरुह—सज्ञा पु० [स०] शोरा। मृत्तिकासार। सूर्यक्षार।

सार्वरोगिक, सार्वरौगिक—वि० [सं०] दे० 'सार्वयौगिक'।

सार्वलौकिक—वि० [स०] सब लोगो को ज्ञात। सारी दुनिया मे फैला हुआ। सार्वदेशिक [को०]।

सार्ववर्णिक—वि० [स०] १ हर किस्म का। हर प्रकार का। २ हर जाति या वर्ग से सबधित [को०]।

सार्वविद्य—सज्ञा पुं० [स०] सर्वज्ञता [को०]।

सार्ववेदस्—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो यज्ञ मे अपनी सपूर्ण सपत्ति दान कर दे। २ किसी की समग्र सपत्ति। पूरी सपत्ति [को०]।

सार्वत्रैद्य—सज्ञा पुं० [दे०] १ वह ब्राह्मण जिसे चारो वेदो का ज्ञान हो। सपूर्ण वेदो का ज्ञाता ब्राह्मण। २ समग्र वेद। चारो वेद [को०]।

सार्वसेन—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का पचरात्र यज्ञ [को०]।

सार्षप¹—सज्ञा पुं० [स०] १ सरसो। २ सरसो का तेल। ३ सरसो का साग।

सार्षप²—वि० सरसो सबधी सरसो का।

सार्ष्ट—वि०, सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सार्ष्टि'।

सार्ष्टि¹—सज्ञा स्त्री० [स०] पाँच प्रकार की मुक्तियो मे से एक प्रकार की मुक्ति।

सार्ष्टि²—वि० जो तुल्य या समान स्थान, पद, अधिकार, शक्ति, श्रेणी आदि से युक्त हो [को०]।

सार्ष्टिता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पद या शक्ति की समानता। २ एक प्रकार की मुक्ति [को०]।

सार्ष्ट्य—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सार्ष्टिता' [को०]।

सालकार—वि० [सं० सालङ्कार] अलकारयुक्त। भूषित। आभूषणयुक्त। अलकृत [को०]।

सालग—सज्ञा पुं० [सं० सालङ्ग] सगीत मे तीन प्रकार के रागो मे से एक प्रकार का राग। वह राग जो बिलकुल शुद्ध हो, जिसमे किसी और राग का मेल न हो, पर फिर भी किसी राग का आभास जान पडता हो।

सालव—वि० [सं० सालम्ब] जो सहारा लिए हो। आलबयुक्त [को०]।

साल¹—सज्ञा पुं०, स्त्री० [हि० सलना या सालना] १ सालने या सलने की क्रिया या भाव। २. छेद। सूराख। ३. चारपाई के पावो मे किया हुआ वह चौकोर छेद जिसमे पाटी आदि बैठाई जाती है। ४ घाव। जख्म। ५. दुख। पीडा। वेदना। कसक। चुभन। उ०—को जानि मात त्रिभनी पीर। सौति को साल साले सरीर।—पृ० रा०, १।३७५।

साल²—सज्ञा पुं० [स०] १ जड। मूल। २ कूचवदो की परिभाषा मे खस की जड जिससे कूच बनती है। ३ राल। धूना। ४ वृक्ष। पेड। ५. प्राकार। परकोटा। ६ दीवार। ७ एक प्रकार की मछली जो भारत, लका और चीन मे पाई जाती है। ८. सियार। ९ कोट। किला। (डिं०)। १० साल का वृक्ष। दे० 'साल'।

साल³—सज्ञा पुं० [फा०] वर्ष। बरस। बारह महीने।

साल⁴—सज्ञा पुं० [सं० शालि] दे० 'शालि'।

साल⁵—सज्ञा स्त्री० [स० शाल] दे० 'शाला'।

साल†⁶—सज्ञा पुं० [स० श्याल] दे० 'साला'।

साल†⁷—सज्ञा पु० [फा० शाल] दे० 'शाल'।

साल अमोनिया—सज्ञा पु० [अ०] नौसादर।

सालइलाही—सज्ञा पु० [फा०] मुगल सम्राट् अकबर द्वारा प्रचारित एक सवत् या वर्ष जिसका प्रारभ उसके सिहासन पर बैठने की तिथि से हुआ था [को०]।

सालई†—सज्ञा [हिं०] दे० 'सलई'।

सालक¹—वि० [हिं० सालना + क (प्रत्य०)] सालनेवाला। दुख देनेवाला। उ०—जद्यपि मनुज दनुज कुल घालक। मुनि पालक खल सालक बालक।—मानस, १।१३।

सालक²—वि० [सं०] अलको से युक्त। बालो से सुशोभित [को०]।

सालकि—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सालक्षण्य—सज्ञा पुं० [स०] लक्षणो, गुणो या चिह्नो की तुल्यता [को०]।

सालग¹—सज्ञा पु० [सं०] एक राग।

यौ०—सालसूडक = सगीत मे एक ताल।

सालग†²—सज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सलई'।

सालगिरह—सज्ञा स्त्री० [फा०] बरस गाँठ। जन्मदिन।

सालग्राम—सज्ञा पुं० [स० शालग्राम] दे० 'शालग्राम'।

सालग्रामी—सज्ञा स्त्री० [स० शालग्राम] गडक नदी।

विशेष—इसका यह नाम इसलिये पडा कि उसमे शालग्राम की शिलाएँ पाई जाती हैं।

सालज—सज्ञा पुं० [सं०] सर्जरस। राल। धूना।

सालजक—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सालज'।

सालद्रुम—सज्ञा पुं० [स०] सागौन।

सालन¹—सज्ञा पुं० [स० सलवण] मास, मछली या साग सब्जी की मसालेदार तरकारी।

सालन²—सज्ञा पुं० [स०] सर्जरस। धूना। राल। २ गोंद (क्व०)।

सालना¹—क्रि० अ० [सं० शूल] १ दुख देना। खटकना। कसकना। २ चुभना। गडना।

सयो० क्रि०—जाना।

सालना[२]—क्रि० स० १ दुःख पहुँचाना। व्यथित करना। उ०—सौति कौ साल सालै सरीर।—पृ० रा०, ११३७५। २ चुभाना। गडाना। ३ चारपाई की पाटी के दोनों छोर पर बने हुए पतले हिस्से को उसके गोडो के छेद मे ठोक कर ठीक करना।

सालनिर्यास—संज्ञा पुं० [सं०] राल। धूना। सर्जरस। करायल।

सालपान—संज्ञा पुं० [सं० शालिपर्णी] एक प्रकार का क्षुप। कसरवा। चाँचर।

विशेष—यह क्षुप देहरादून, अवध और गोरखपुर की नम भूमि मे पाया जाता है। यह वर्षा ऋतु के अंत मे फूलता है। इसकी जड़ का ओषधि के रूप मे व्यवहार होता है।

सालपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरिवन। शालपर्णी।

सालपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्थल कमल। २ पुंडेरी।

सालभंजिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सालभञ्जिका] पुतली। मूर्त्ति।

सालम मिश्री—संज्ञा स्त्री० [अ० सालब + मिस्री (मिस्र देश का)] सुधामूली। अमृतोत्था। वीरकंदा।

विशेष—यह एक प्रकार का क्षुप है जिसकी ऊँचाई प्रायः डेढ फुट तक होती है। इसके पत्ते प्याज के पत्ते के समान और फैले हुए होते हैं। डंडी के अंत मे फूलो का गुच्छा होता है। फल पीले रंग के होते हैं। इसका कंद कसेरू के समान पर चिपटा, सफेद और पीले रंग का तथा कडा होता है। इसमे वीर्य के समान गंध आती है और यह खाने मे लसीला और फीका होता है। इसके पौधे भारत के कितने ही प्रांतो मे होते हैं, पर काबुल, बलख, बुखारा आदि देशों की सालम मिश्री अच्छी होती है। इसका कंद अत्यंत पौष्टिक होता है और पुष्टिकर ओषधियों मे इसका विशेष प्रयोग होता है। वैद्यक के अनुसार यह स्निग्ध, उष्ण, वाजीकरण, शुक्रजनक, पुष्टिकर और अग्निप्रदीपक माना जाता है।

सालर†—संज्ञा पुं० [सं० शल्लकी] दे० 'सलई'।

सालरस—संज्ञा पुं० [सं०] राल। धूना।

सालवाहन—संज्ञा पुं० [सं० शालवाहन] शक जाति का एक प्रसिद्ध राजा। विशेष दे० 'शालिवाहन'।

सालवेष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] करायल। धूना। राल [को०]।

सालशृंग—संज्ञा पुं० [सं० सालशृङ्ग] दीवार या प्राचीर के आगे का हिस्सा।

सालस[१]—संज्ञा पुं० [अ०] वह जो दो पक्षो के झगडो का निपटारा करे। पंच।

सालस[२]—वि० [सं०] १ आलसयुक्त। आलस के साथ। अलस। मंद। सुस्त। अलसित। उ०—दो एक टोलियाँ, मंद मंद औ सालस लालस प्रेम सनी, अरमान भरी, दो एक बोलियाँ।—चाँदनी पृ०, ३४। २ थका हुआ। श्लथ। क्लांत (को०)।

सालसा—संज्ञा पुं० [अ०] खून साफ करने का एक प्रकार का अँग्रेजी ढंग का काढा जो अनंतमूल आदि से बनता है।

सालसी—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ सालस होने की क्रिया या भाव। दूसरो का झगड़ा निपटाना। २ पंचायत।

सालहज—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सलहज'।

सालहामाल—क्रि० वि० [फा०] वर्षों मे। मुद्दतो मे। वर्षानुवर्ष। काफी समय से। उ०—हिंदुओं मे सालहामाल से वर्ताव एगानियत का चला आ रहा है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ६।

साला[१]—संज्ञा पुं० [सं० श्यालक] [स्त्री० साली] १ पत्नी का भाई। २ एक प्रकार की गाली।

साला(पु)[२]—संज्ञा पुं० [सं० सारिका] सारिका। मैना। उ०—देखत ही गे सोइ कृपाला लखि प्रभात बोला तब साला।—विश्राम (शब्द०)।

साला[३]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दीवार। भित्ति। २. गृह। मकान। दे० 'शाला'।

साला[४]—वि० [फा० सालह् (प्रत्य०)] साल का। वर्ष का। वर्षीय। साल पर होनेवाला। (समस्त पदो मे प्रयुक्त)। जैसे,—एकसाला, पचसाला।

सालाकरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गृह परिचारिका। २ युद्ध मे प्राप्त पराजित पक्ष की स्त्री [को०]।

सालातुरीय—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शालातुरीय'।

सालाना—वि० [फा० सालानह्] साल का। वर्ष का। वार्षिक। जैसे,—सालाना मेला, सालाना चंदा।

सालार[१]—संज्ञा पुं० [सं०] दीवाल मे गाडी हुई खूँटी। नागदंतिका [को०]।

सालार[२]—संज्ञा पुं० [फा०] १ सेनापति। सिपहसालार। २ नायक। नेता। प्रधान [को०]।

सालारजंग—संज्ञा पुं० [फा०] १ सेनापति। सेना का नायक। २. सैनिकों की एक उपाधि [को०]।

सालावृक—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुत्ता। श्वान। २ गीदड। सियार। ३ वृक। भेडिया।

सालावृकेय—संज्ञा पुं० [सं०] कुत्ता, गीदड, स्यार, भेडिया आदि का बच्चा [को०]।

सालि[१]—संज्ञा पुं० [सं० शालि] दे० 'शालि'। उ०—भरत नाम सुमिरत मिटहिं, कपट, कलेस कुचालि। नीति प्रीति परतीति हित सगुन सुमंगलि सालि।—तुलसी ग्रं०, पृ० ७८।

सालि(पु)[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० शल्य] साल। पीडा। चुभन।

सालिक—वि० [अ०] १ पथिक। बटोही। मुसाफिर। राही। २ जो गृहस्थाश्रम मे रहते हुए बहुत बडा साधक हो [को०]।

सालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाँसुरी [को०]।

सालिगराम(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शालग्राम] दे० 'शालग्राम'। उ०—(क) उठे थन थोर बिराजत वाम। धरे जनु हाटक सालिगराम।—पृ० रा०,। (ख) रुपे के अरघा मनो पौढे सालिगराम।—पोद्दार अभि०, ग्रं० पृ० ३८६।

सालिग्राम—संज्ञा पुं० [सं० शालग्राम] दे० 'शालग्राम'।

सालिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० शालिनी] दे० 'शालिनी'।

सालिब मिश्री—संज्ञा स्त्री० [अ० सालम मिस्री] दे० 'सालम मिश्री'।

सालिम—वि० [अ०] १ स्वस्थ। तदुरुस्त (को०)। २ महफूज। सुरक्षित (को०)। ३ जो कहीं खंडित न हो। पूर्ण। संपूर्ण। पूरा। उ०—बिन माँगे बिन जाँचे देय। सो सालिम बाजी जीत लेय।—कबीर० श०, भा० २, पृ० १११।

सालियाना—वि० [फा० सालियानह्] वार्षिक। दे० 'सालाना'। २ जो प्रतिवर्ष देय हो। जैसे, वेतन, भृति आदि (को०)।

सालिस—वि० [अ०] १ तीसरा। तृतीय। २ दो पक्षों में समझौता करानेवाला। पंच। मध्यस्थ। बिचौलिया। उ०—से सालिस होय समुझि ले, जीम जहान कबीर।—घरनी०, पृ० ४५।

सालिसिटर—संज्ञा पु० [अ०] एक प्रकार का वकील जो कलकत्ते, बंबई और मद्रास के हाइकोर्टों में होनेवाले मुकदमे लेता और उनके कागज पत्र तैयार करके बैरिस्टर को देता है। एटर्नी। एडवोकेट।

विशेष—ये सालिसिटर हाईकोर्टों में बहस नहीं कर सकते, पर अन्य अदालतों में इन्हें बहस करने का पूरा अधिकार है। इनका दर्जा एडवोकेट के समान ही है।

सालिसी—संज्ञा [अ०] पंचायत (को०)।

सालिह वि० [अ०] [स्त्री० सालिहा] सच्चरित्र। पुण्यात्मा (को०)।

सालिहोत्री—संज्ञा पु० [सं० शालिहोत्रिन्] दे० 'शालिहोत्री'।

साली[1]—संज्ञा स्त्री० [फा० साल+ई प्रत्य०)] १ वह जमीन जो सालाना देने के हिसाब से ली जाती है। २ खेती बारी के औजारों की मरम्मत के लिये बढ़ई को सालाना दी जानेवाली मजूरी।

साली[2]—संज्ञा पुं० [सं० शालि] दे० 'शालि'।

साली(पु)[3]—संज्ञा स्त्री० [हिं० साला] पत्नी की बहन।

सालु(पु)[1]—संज्ञा पु० [हिं० सालना] १. ईर्ष्या। २ कष्ट।

सालु(पु)[2]—संज्ञा पु० [सं० सार] दे० 'सार'। उ०—चढ़िआ नजर सराफ की मोती मनु है सालु।—प्राण०, पृ० १०५।

सालुल(पु)†—वि० [सं० सलावण्य ?] कोमल। मृदु। सलोना। उ०—कोतिक लखे हुए बिकराल दीरघ रद किया। सालुल वर्ण चड सरीर, खावण कज सिया।—रघु० रू०, पृ० १२६।

सालू—संज्ञा पु० [प०, मि० फा० शाल] एक प्रकार का लाल कपड़ा जो मांगलिक कार्यों में उपयोग में आता है। (पश्चिमी)। उ०—कल, देखते नहीं यह रेशम से कढ़ा हुआ सालू।—मधुकरी, भा० २, पृ० २३। २ साड़ी। सारी। (डिं०)। ३ ओढ़नी।

सालूर—संज्ञा पु० [सं०] मेढक। शालूर (को०)।

सालेय—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'शालेय' (को०)।

सालेया—संज्ञा स्त्री० [सं०] सौंफ।

सालैगुग्गुल संज्ञा पु० [फा० सालै+सं० गुग्गुल] गुग्गुल का गोंद या राल। विशेष दे० 'गुग्गुल'।

सालोक्य—संज्ञा पु० [सं०] १ पाँच प्रकार की मुक्ति में से एक जिसमें मुक्त जीव भगवान् के साथ एक लोक में वास करता है। सलोकता। २ किसी के साथ समान लोक में निवास करना (को०)।

सालोत्र(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शालिहोत्र] दे० 'शालिहोत्र'। उ०—है लपै सवक करि भेद छेद, दिप्पत नयन सालोत्र वेद। गज चिगछ इच्छ जानत सव्व, नाटिक निवास मम सेस ग्रब्ब।—पृ० रा०, ६।६।

सालोहित—संज्ञा पु० [सं०] सगोत्री। गोती (को०)।

साल्मली—संज्ञा पुं० [सं० शाल्मलि] दे० 'शाल्मली'।

साल्व—संज्ञा पुं० [सं०] एक नगर और उसके निवासी लोग। दे० 'शाल्व'। २ एक दैत्य जिसे विष्णु ने मारा था (को०)।

साल्वहा—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु (को०)।

साल्विक—संज्ञा पु० [सं०] सारिका पक्षी (को०)।

साल्वेय[1]—वि० [सं०] साल्व या शाल्व संबंधी।

साल्वेय[2]—संज्ञा पु० १ एक प्राचीन देश का नाम। २ साल्व या शाल्व देश का रहनेवाला।

सावंत—संज्ञा पुं० [सं० सामन्त] १ वह भूस्वामी या राजा जो किसी बड़े राजा के अधीन हो और उसे कर देता हो। करद राजा। २ योद्धा वीर। ३ अधिनायक। उ०—छत्र भंग मेरो भयो, मरे सूर सावंत।—हम्मीर०, पृ० ३६। ४ उत्तम या श्रेष्ठ प्रजा।

सावँकरन—संज्ञा पु० [सं० श्यामकर्ण] श्यामकर्ण घोड़ा जिसके सब अंग श्वेत, पर कान काले होते हैं। (माईस)। उ०—सोरह सहस घोर घोरसारा। सावँकरन बालका तुखारा।—जायसी ग्र० (गुप्त), पृ० १३७।

साव[1]—संज्ञा पु० [सं० शाव, प्रा० साव (=शावक, शिशु)] शिशु। बालक। पुत्र। (डिं०)।

साव[2]—संज्ञा पुं० [सं० साधु, प्रा० साहु] दे० 'साहु'।

साव(पु)[3]—संज्ञा पु० [सं० स्वादु, प्रा० साउ ?] दे० 'स्वाद'। उ०—चंगो साव चखावसी, इभरमणी आखेट।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० ३४।

साव[4]—संज्ञा पु० [सं०] तर्पण। पितरों को जल देना।

सावक[1]—वि० [सं०] [स्त्री० साविका] जन्म देनेवाला। उत्पन्न करनेवाला (को०)।

सावक[2]—संज्ञा पुं० १ दे० 'शावक'। २ पशु का बच्चा। छौना। बछवा। बछेरु। उ०—(क) चौथ दीन्ह सावक सादूर।—जायसी ग्र०, पृ० १८५। (ख) सावक मोर बिछुड़ गयो, ढूँढ़त फिरो बेहाल।—हिंदी० प्रेमा०, पृ० २४५।

सावक[3]—संज्ञा पु० [सं० श्रावक] दे० 'श्रावक'।

सावकार†—संज्ञा पुं० [हिं० साहूकार] दे० 'साहूकार'। उ०—सईस ने बतलाया कुल्लू के सावकार ने कारखाना बनाया है।—किन्नर०, पृ० १२।

सावकाश[1]—संज्ञा पु० [सं०] १ अवकाश। फुर्सत। छुट्टी। २ मौका। अवसर।

**सावकाश**¹—वि॰ १ जिसे मौका या फुरसत हो। अवकाशयुक्त। २ अनुकूल। उचित। योग्य [को॰]।

**सावकाश**²—क्रि॰ वि॰ फुर्सत से। सुभीते से।

**सावकास**(पु)—क्रि॰ वि॰ [सं॰ सावकाश] दे॰ 'सावकाश²'। उ॰—सावकास ह्वै घनी घुटनि तें विमद पुलिन मँडराइ रुकौं।—घनानंद, पृ॰ ८२३।

**सावग**(पु)—संज्ञा पुं॰ [सं॰ श्रावक] दे॰ 'श्रावक'।

**सावगी**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ श्रावक, प्रा॰ सावग] दे॰ 'सरावगी'।

**सावग्रह**—वि॰ [सं॰] १ 'अवग्रह' चिह्न से युक्त। २ नियंत्रित। संयमित। ३ जिसका विश्लेषण किया गया हो [को॰]।

**सावचेत**(पु)†—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सा+हिं॰ चेत अथवा सं॰ साव हित+हिं॰ चेत] सावधान। सतर्क। होशियार। चौकन्ना। उ॰—अब इसमें सावचेत रहना चाहिए।—श्रीनिवास ग्रं॰, पृ॰ ६७।

**सावचेती**—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ सावचेत+ई (प्रत्य॰)] सावधानी। सतर्कता। खबरदारी। चौकन्नापन।

**सावज**(पु)†—संज्ञा पुं॰ [सं॰ श्वापद, प्रा॰ सावय] जंगली जानवर जिसका शिकार किया जाता है।

**सावज्ञ**—वि॰ [सं॰] १ अवज्ञा या तिरस्कार युक्त। २ अरुचि का अनुभव करनेवाला। घृणा करनेवाला [को॰]।

**सावणिक**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ श्रावणिक] श्रावण मास। सावन का महीना। (डिं॰)।

**सावत**(पु)¹—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सापत्न्य, देशी सावक्क, सावत्त, सावत या हिं॰ सौत] १ सौतों में होनेवाला पारस्परिक द्वेष। सौतियाडाह। २ ईर्ष्या। डाह। उ॰—तहँ गए मद मोह लोभ अति सरगहुँ मिटति न सावत।—तुलसी (शब्द॰)।

**सावत**(पु)²—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सामन्त, हिं॰ सावंत] दे॰ 'सावंत'। उ॰—बडे सावत उद्द कनक्केश मारे।—प॰ रासो, पृ॰ ४५।

**सावद्य**¹—वि॰ [सं॰] निंदनीय। दूषणीय। आपत्तिजनक।

**सावद्य**²—संज्ञा पुं॰ तीन प्रकार की योग शक्तियों में से एक शक्ति जो योगियों को प्राप्त होती है।

**विशेष**—अन्य दो शक्तियों के नाम निरवद्य और सूक्ष्म हैं।

**सावधान**—वि॰ [सं॰] १ सचेत। सतर्क। होशियार। खबरदार। सजग। चौकस। २ उद्यमी। परिश्रमी (को॰)। ३ अवधानयुक्त। ध्यानपूर्वक। उ॰—सावधान सुनु सुमुखि सुलोचनि। भरत कथा भवबंध विमोचनि।—मानस, २।२८७।

**सावधानता**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] सावधान होने का भाव। सतर्कता। होशियारी। खबरदारी। सावधानी।

**सावधानी**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ सावधान+ई (प्रत्य॰)] सावधान होने का भाव। दे॰ 'सावधानता'।

**सावधारण**—वि॰ [सं॰] निश्चययुक्त। निश्चित। प्रतिबंधित [को॰]।

**सावधि**—वि॰ [सं॰] अवधि अर्थात् नियत काल या सीमा से युक्त। जिसके समय की सीमा निश्चित हो [को॰]।

**सावधि आधि**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] वह गिरवी जो इस शर्त पर रखी जाय कि इतने दिनों के अंदर अवश्य छुडा ली जायगी।

**सावन**¹—संज्ञा पुं॰ [सं॰ श्रावण] १. श्रावण का महीना। आषाढ के बाद का और भाद्रपद के पहले का महीना। श्रावण।

**मुहा॰**—सावन के अंधे को हरियाली सूझना=हरा ही हरा दिखाई देना या सूझना। अच्छी परिस्थितियों में रहने या उन्हें देखनेवाले व्यक्ति का प्रतिकूल स्थितियों को भी किसी कारणवश पूर्ववत् समझना या जानना। सावन का फोडा=जल्दी ठीक न होनेवाला घाव। असाध्य रोग। उ॰—पकपक कर ऐसा फूटा है, जैसा सावन का फोडा है।—आराधना, पृ॰ ७३। सावन हरा न भादों सूखा=समान या तुल्य जानना। समान परिस्थिति का समझना। प्राकृतिक या लौकिक परिवर्तन के प्रभाव से रहित जीवन जीना। उ॰—मगर यहाँ सावन हरे न भादों सूखे दोनों बराबर हैं।—फिसाना॰, भा॰ ३ पृ॰ ३७७।

२ एक प्रकार का गीत जो श्रावण के महीने में गाया जाता है। (पूरब)। ३ कजली नामक गीत। ४ आधिक्य। प्रचुरता। राशि।

**सावन**²—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ यज्ञ कर्म का अंत। यज्ञ की समाप्ति। २ यज्ञ कर्म का यजमान। ३ वरुण। ४ पूरे एक दिन और एक रात का समय। एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय। ६० दंड का समय।

**विशेष**—इस प्रकार के ३० दिनों का एक सावन मास होता है और ऐसे बारह सावन मासों अर्थात् ३६० दिनों का एक सावन वर्ष होता है, मलमासतत्व के अनुसार—'सौर संवत्सरे दिन षट्काधिक सावनो भवति'। अर्थात् सौर और सावन वर्ष में लगभग ६ दिनों का अंतर होता है। विशेष—दे॰ 'वर्ष'।

५ तीस दिवस का मास (को॰)। ६ एक विशेष वर्ष (को॰)।

**यौ**—सावन मास=तीस दिन का महीना। सावनवर्ष=वह साल जो सावन मास या ३६० दिनों का होता है।

**सावन**³—वि॰ सवन यज्ञ संबंधी [को॰]।

**सावनी**¹—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ सावन+ई (प्रत्य॰)] १ एक प्रकार का धान जो भादों में काटा जाता है। २ तंबाकू जो सावन भादों में बोया जाता है, कार्तिक में रोपा जाता है और फागुन में काटा जाता है। ३ एक प्रकार का फूल।

**सावनी**²—संज्ञा स्त्री॰ वह बायन जो सावन महीने में वर पक्ष से वधू के यहाँ भेजा जाता है।

**सावनी**³—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ श्रावणी] दे॰ 'श्रावणी'।

**सावनी**⁴—वि॰ सावन संबंधी। सावन का। जैसे,—सावनी समाँ=सावन मास की शोभा।

**सावनी**—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ सावन] १ श्रावण मास का गीत। २ कजली गीत।

**सावमर्द**—वि॰ [सं॰] परस्परविरुद्ध। अरुचिकर। अप्रिय [को॰]।

**सावयव**—वि॰ [सं॰] अवयव युक्त। अंगोंसहित। सांग [को॰]।

सावर¹—संज्ञा पुं० [सं० शावर] शिवकृत एक तंत्र का नाम।

विशेष—इसके संबंध में इस प्रकार की कथा है—एक बार जब शिवपार्वती किरात देश में वन में विचरण कर रहे थे, तब पार्वतीजी ने प्रश्न किया कि प्रभो! आपने संपूर्ण मंत्र कील दिए हैं, पर अब कलिकाल है, इस समय के जीवों का उपकार कैसे होगा। तब शिवजी ने उसी वेश में नए मंत्रों की रचना की जो शावर या सावर कहाते हैं। इन मंत्रों को जपने या सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं, ये स्वयंसिद्ध है। न इनके कुछ अर्थ ही हैं।

२ एक प्रकार का लोहे का लंबा औजार जिसका एक सिरा नुकीला और गुलमेख की तरह होता है। इसपर खुरपा रखकर हथौड़े से पीटा जाता है जिससे खुरपा पतला और तेज हो जाता है।

सावर²—संज्ञा पुं० [सं० शबर या साम्बर] एक प्रकार का हिरन। उ०—चीते सु रोझ सावर दवंग। गैंडा गलीनु डोलत अभंग।—सूदन (शब्द०)।

सावर³—संज्ञा पुं० [सं०] १ लोध। लोध्र। २ पाप। अपराध। गुनाह। ३ एक प्रकार का मृग।

सावरक—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद लोध।

सावरण—वि० [सं०] १ छिपा हुआ। गोपनीय। २ ढका हुआ। बंद। ३ जो घेरे के अंदर हो [को०]।

सावरणी—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्मार्जनी] वह बुहारी जो जैन यति अपने साथ लिए रहते हैं।

सावरिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बिना जहरवाली जोंक।

सावर्ण¹—वि० [सं०] सवर्ण संबंधी। समान वर्ण या जाति संबंधी।

सावर्ण²—संज्ञा पुं० दे० 'सावर्णि'।

सावर्णक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सावर्णि'।

सावर्णलक्ष्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ चमडा। चर्म। २ एक ही वर्ण और जाति की तुल्यता का बोधक समान चिह्न (को०)।

सावर्णि—संज्ञा पुं० [सं०] १ आठवें मनु जो सूर्य के पुत्र थे।

विशेष—कहते हैं कि सूर्य की पत्नी छाया सूर्य का तेज सहन न कर सकने के कारण अपने वर्ण की (सवर्ण) एक छाया बनाकर और उसे पति के घर छोड़कर अपने पिता के घर चली गई थी। उसी के गर्भ से सावर्णि मनु की उत्पत्ति हुई थी।

२ एक मन्वंतर का नाम। ३ एक गोत्र का नाम।

सावर्णिक—वि० [सं०] समान जाति या कुल से संबद्ध [को०]।

सावर्ण्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ रंग की समानता। २ वर्ग या जाति की समानता। ३ आठवें मनु का युग अथवा मन्वंतर [को०]।

सावलेप—वि० [सं०] अवलेपयुक्त। गर्व से भरा हुआ। धृष्ट [को०]।

सावशेष—वि० [सं०] १ जिसका कुछ अंश शेष हो। २ जो पूरा न हो। अपूर्ण। अधूरा [को०]।

यौ०—सावशेषजीवित = जिसकी आयु अभी बाकी हो। जिसका जीवनकाल अभी शेष हो। सावशेषबंधन = जिस पर कुछ प्रतिबंध शेष हो। जो अभी भी बंधन में हो।

सावष्टंभ¹—संज्ञा पुं० [सं० सावष्टम्भ] वह मकान जिसके उत्तरदक्षिण दिशा में सड़क हो। ऐसा मकान बहुत शुभ माना गया है।

सावष्टंभ²—वि० १ दृढ़। मजबूत। २ आत्मनिर्भर। स्वावलंबी। ३ गर्वोद्धत। घमंडी। शानदार। गुमानी (को०)। ४ हिम्मती। साहसी (को०)।

यौ०—सावष्टंभवास्तु = एक प्रकार का मकान। दे० 'सावष्टंभ'।

सावहित—वि० [सं०] अवधान युक्त। सावधान [को०]।

सावहेल—वि० [सं०] अवहेला से युक्त। घृणा या तिरस्कार करनेवाला [को०]।

सावाँ†—संज्ञा पुं० [सं० श्यामाक] दे० 'साँवाँ'।

साविका¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] धात्री। दाई [को०]।

साविका(पु)²—संज्ञा पुं० [अ० साबिकह्] आवश्यकता। व्यवहार। संबंध। सरोकार। प्रयोजन। उ०—सुनौ सपूतौ साविकौ सबकौ परै न रोज। लियौ जात याही समय, हित अनहित कौ खोज।—हम्मीर०, पृ० ४४।

सावित्र¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य। २ शिव। ३ वसु। ४ ब्राह्मण। ५ सूर्य के पुत्र। ६ कर्ण। ७ गर्भ। ८ यज्ञोपवीत। ९ उपनयन संस्कार। यज्ञोपवीत। १० हस्त नक्षत्र (को०)। ११ अग्नि का एक रूप (को०)। ११ कलछा या चम्मचभर परिमाण (को०)। १२ दसवें कल्प का नाम (को०)। १३ मेरु पर्वत का एक शिखर (को०)। १४ एक प्रकार की आहुति या होम (को०)। १५ एक वन का नाम (को०)। १३ एक प्रकार का अस्त्र।

सावित्र²—वि० १ सविता संबंधी। सविता का। जैसे,—सावित्र होम। २ सूर्य से उत्पन्न। सूर्यवंशीय। ३ गायत्री से युक्त। गायत्री मंत्र से दीक्षित।

सावित्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक शक्ति [को०]।

सावित्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वेदमाता गायत्री। २ सरस्वती। ३ ब्रह्मा की पत्नी जो सूर्य की पृश्नि नाम की पत्नी से उत्पन्न हुई थी। ४ वह संस्कार जो उपनयन के समय होता है और जिसके न होने से ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य व्रात्य या पतित हो जाते हैं। ५ धर्म की पत्नी और दक्ष की कन्या। ६ कश्यप की पत्नी। ७ अष्टावक्र की कन्या। ८ मद्र देश के राजा अश्वपति की कन्या और सत्यवान की सती पत्नी का नाम।

विशेष—पुराणों में इसकी कथा यों है। मद्र देश के धर्मनिष्ठ प्रजाप्रिय राजा अश्वपति ने कोई संतान न होने के कारण ब्रह्मचर्यपूर्वक कठिन व्रत धारण किया। वह सावित्री मंत्र से प्रतिदिन एक लाख आहुति देकर दिन के छठे भाग में भोजन करता था। इस प्रकार अठारह वर्ष बीतने पर सावित्री देवी ने प्रसन्न होकर राजा को दर्शन दिए और इच्छानुसार वर

माँगने को कहा। राजा ने बहुत से पुत्रों की कामना की। देवी ने कहा कि ब्रह्मा की कृपा से तुम्हारे एक कन्या होगी जो बडी तेजस्विनी होगी। कुछ दिनो बाद बडी रानी के गर्भ से एक कन्या हुई। सावित्री की कृपा से वह कन्या हुई थी, इसलिये राजा ने इसका नाम भी सावित्री ही रखा। सावित्री अद्वितीय सुदरी थी, पर किसी को इसका वरप्रार्थी होते न देखकर अश्वपति ने सावित्री से स्वय अपनी इच्छानुसार वर ढूँढकर वरण करने को कहा। तदनुसार सावित्री वृद्ध मत्रियो के साथ तपोवन मे भ्रमण करने लगी। कुछ दिनो बाद वह तीर्थो और तपोवनो का भ्रमण कर लौट आई और उसने अपने पिता से कहा शाल्व देश मे द्युमत्सेन नामक एक प्रसिद्ध धर्मात्मा क्षत्रिय राजा थे। वे अधे हो गए है। उनका एक पुत्र है जिसका नाम सत्यवान है। एक शत्रु ने उनका राज्य हस्तगत कर लिया है। राजा अपनी पत्नी और पुत्रसहित वन मे निवास कर रहे है। मैंने उन्ही सत्यवान् को अपने उपयुक्त वर समझकर उन्ही को पति वरण किया है। नारदजी ने कहा—सत्यवान मे और सब गुण तो हैं, पर वह अल्पायु है। आज से एक वर्ष पूरा होने ही वह मर जायगा। इसपर भी सावित्री ने सत्यवान् से ही विवाह करना निश्चित किया। विवाह हो गया, एक वर्ष बीतने पर सत्यवान् की मृत्यु हो गई। यमराज जब उसका सूक्ष्म शरीर ले चला, तब सावित्री ने उसका पीछा किया। यमराज ने उसे बहुत समझा बुझाकर लौटाना चाहा, पर उसने उसका पीछा न छोडा। अत मे यमराज ने प्रसन्न होकर उसकी मनस्कामना पूर्ण की। मृत सत्यवान् जीवित होकर उठ बैठा। सावित्री ने मन ही मन जो कामनाएँ की थी, वे पूरी हुई। राजा द्युमत्सेन को पुन दृष्टि प्राप्त हो गई। उसके शत्रुओं का विनाश हुआ। सावित्री के सौ पुत्र हुए। साथ ही उसके वृद्ध ससुर के भी सौ पुत्र हुए। उसने यह भी वर प्राप्त कर लिया था कि पति के साथ मैं वैकुठ जाऊँ।

९ यमुना नदी। १० सरस्वती नदी। ११ प्लक्ष द्वीप की एक नदी। १२ धार के राजा भोज की स्त्री। १३ सधवा स्त्री। १४ आँवला। १५ प्रकाश की किरण (को०)। १६ पार्वती का एक नाम (को०)। १७ सूर्य की रश्मि (को०)। १८ अनामिका उँगली (को०)।

**सावित्री तीर्थ**—सज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

**सावित्रीपतित, सावित्रीपरिभ्रष्ट**—सज्ञा पु० [स०] ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य जाति का वह व्यक्ति जिसका उचित समय पर उपनयन सस्कार न हुआ हो [को०]।

**सावित्रीपुत्र**—सज्ञा पु० [स०] क्षत्रियो की एक उपजाति या वर्ग।

**सावित्री व्रत**—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का व्रत जो स्त्रियाँ पति की दीर्घायु की कामना से ज्येष्ठ कृष्ण १४ को करती हैं।

विशेष—कहते है कि यह व्रत करने से स्त्रियाँ विधवा नही होती।

**सावित्रीव्रतक**—सज्ञा पु० [स०] सावित्री व्रत।

**सावित्रीसूत्र**—सज्ञा पु० [स०] यज्ञोपवीत जो सावित्री दीक्षा के समय धारण किया जाता है।

**सावित्रेय**—सज्ञा पुं० [सं०] सविता के पुत्र, यम [को०]।

**साविनी**—सज्ञा स्त्री० [स०] सरिता। नदी [को०]।

**साविष्कार**—वि० [स०] १ शक्ति आदि का प्रदर्शन करनेवाला। उद्धत। घमडी। २ प्रकट। व्यक्त [को०]।

**सावेग**—क्रि० वि० [स०] वेगपूर्वक। शीघ्रता से। झटके से [को०]।

**सावेरी**—सज्ञा स्त्री० [स०] एक रागिनी (सगीत)।

**साशक**—वि० [सं० साशङ्क] आशकायुक्त। भयभीत। शकित [को०]।

**साशकता**—सज्ञा स्त्री० [स० साशङ्कता] आशका। डर। भय [को०]।

**साशस**—वि० [स०] आकाक्षापूरित। इच्छुक। आशान्वित [को०]।

**साशयदक**—सज्ञा पु० [स० साशयन्दक] छोटी छिपकली [को०]।

**साशिव**—सज्ञा पु० [सं०] १ एक प्राचीन देश का नाम।

विशेष—अर्जुन के दिग्विजय के प्रकरण मे यह उत्तर दिशा मे बतलाया गया है। इसे जीतकर अर्जुन यहाँ से आठ घोडे लाया था।

२ ऋषीक। ऋषिपुत्र।

**साशूक**—सज्ञा पु० [स०] ऊनी कबल [को०]।

**साश्चर्य**—वि० [सं०] १ आश्चर्यान्वित। चकित। भौचक। २ आश्चर्य या कौतूहलजनक [को०]।

यौ०—साश्चर्याचर्य = आश्चर्यजनक व्यवहारवाला।

**साश्र, सास्र**—वि० [स०] १ अस्र या कोण युक्त। जिसमे कोण या कोने हो। कोणात्मक। २ अश्रुयुक्त। रोता हुआ। साश्रु [को०]।

**साश्रु**—वि० [स०] अश्रुपूर्ण। आँसू बहाता हुआ। रोता हुआ [को०]।

**साश्रुधी**—सज्ञा स्त्री० [स०] पत्नी या पति की माता। सास।

**साश्वत**—वि० [सं० शाश्वत] दे० 'शाश्वत'।

**साषा**(पु)—सज्ञा स्त्री० [सं० शाखा] दे० 'शाखा'। उ०—मुनि पुनि कर्म फलनि तजि जैसे। अप अपनी श्रुति साषा वैसें।—नद० ग्र०, पृ० २६५।

**साषि**(पु)—सज्ञा पुं० [स० साक्षी] गवाह।

**साषित**(पु)—सज्ञा पुं० [सं० शाक्त] वह जो शक्ति का उपासक हो। शक्ति को माननेवाला। वि० दे० 'शाक्त'। उ०—साषित कै तूँ हरता करता, हरि भगतन कै चेरी।—कबीर ग०, पृ० १५१।

**साष्टाग**—वि० [स० साष्टाङ्ग] आठो अग सहित।

यौ०—साष्टाग प्रणाम = मस्तक, हाथ, पैर, हृदय, आँख, जाँघ, वचन, और मन से भूमि पर लेटकर प्रणाम करना।

मुहा०—साष्टाग प्रणाम करना = बहुत बचना। दूर रहना। (व्यग्य)। जैसे—हम यही से उन्हें साष्टाग प्रणाम करते है।

**साष्टाग योग**—सज्ञा पु० [स० साष्टाङ्ग योग] वह योग जिसमे यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये आठो अग हो। विशेष दे० 'योग'।

**साष्टी**—सज्ञा पुं० [देश०] एक टापू जो बबई प्रदेश के थाना जिले मे है।

विशेष—इस टापू को वहाँवाले 'फालता' और 'शास्तर' तथा अँगरेज 'सालसीट' कहते हैं। यह बबई से बीस मील ईशानकोण

मे उत्तर को झुकता हुआ समुद्र के तट पर बसा है। यहाँ एक किला भी बना है।

साव्यात(पु)—वि० [सं० साक्षात् = साक्पात] दे० 'साक्षात्'। उ०—करि स्नान दान सुचि रुचि कुँग्रार। हुइ देव रूप साव्यात चार। —पृ०, रा०, ६।१३२।

सास¹—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वश्रु] पति या पत्नी की माँ।

सास(पु)²—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वास] दे० 'सांस'। उ०—भावकि पइठी भालि, सुदार दीठी सास विण।—ढोला०, दू० ६०४।

सास³—वि० [सं०] धनुपयुक्त। धनुप रखनेवाला (को०)।

सासण†—संज्ञा पु० [सं० शासन, डिं०] दे० 'शासन'। उ०—सिघासण चढणै नर ग्रासण सासण सह मानै ससार।—रघु० रू०, पृ० २२।

सासत¹—संज्ञा स्त्री० [सं० शास्ति] दे० 'साँसत'। उ० – चौरासी लख जिव तोहि दीन्हा। ले जीवन बड सासत कीन्हा।—कबीर, सा०, पृ० १३।

सासत(पु)²—वि० [सं० शाश्वत] निरतर। दे० 'शाश्वत'। उ०—वणियो रहै वाडियाँ वागाँ वरसाणैं सासतो वसत।—बाँकी० ग्र०, भा० ३, पृ० १२२।

सासतर‡—संज्ञा पु० [सं० शास्त्र] दे० 'शास्त्र'। उ०—सासतरो मे कहा है।—गोदान, पृ० १०४।

सासन(पु)—संज्ञा पु० [सं० शासन] दे० 'शासन'। उ०—पुत्र श्री दशरत्थ के बनराज सासन ग्राइयो।—केशव (शब्द०)।

सासनलेट—संज्ञा पु० [?] एक प्रकार का सफेद जालीदार कपडा।

सासना(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शासन] १ दे० 'शासन'। उ०—सासना न मानई जो काटि जन्म नर्क जाय।—केशव (शब्द०)। २ कष्ट। त्रास। दुख। पीडा। उ०—बहु सासना दई पैहलादै, तऊ निसक लियो।—पोद्दार ग्रभि० ग्र०, पृ० २४०।

सासर बाड़ो—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वश्रू, व०, हिं० सासर + वाडी] ससुराल। उ०—करहा देस सुहामणँउ जे मूँ सासर वाडि। ग्राँब सरीखउ ग्राक गिणि जाति करीराँ झाडि।—ढोला०, दू० ४३२।

सासरा†—संज्ञा पुं० [सं० श्वश्रू + ग्रालय] दे० 'ससुराल'।

सासहि—वि० [सं०] १ सहन करने योग्य। सह्य। २ जीतने या विध्वस करनेवाला (को०)।

सासा(पु)¹—संज्ञा स्त्री० [सं० सशय, पु० हिं० समा (कबीर)] सदेह। शक। उ०—ग्राई बतावन हो तुम्है राधिके लीजिए जानि न कीजिए सासा।—रसकुसुमाकर (शब्द०)।

सासा²—संज्ञा पुं० [सं० श्वास] दे० 'श्वास' या 'साँस'।

सासार—वि० [सं०] १ ग्रासार युक्त। मूसलाधार वृष्टि से युक्त। २ बरसाती (को०)।

सासि—वि० [सं०] ग्रसि या कृपाणयुक्त (को०)।

सासु¹—वि० [सं०] ग्रसु या प्राणयुक्त। जीवित।

सासु(पु)²—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वश्रू] दे० 'सास'। उ०—ग्राधा मन मे भर ग्राकपण, उन नयनो का, सासु ने कहा।—ग्रनामिका, पृ० १२४।

सासुर†—संज्ञा पु० [हिं० ससुर] १ पति या पत्नी का पिता। ससुर। २ ससुराल। उ०—केलि करै मधुमत्त जहँ घन मधुपन के पुज। सोच न कर तुव सासुरे, सखी! सघन वनकुज। —मति० ग्र०, पृ० २६०।

सासुसू—वि० [सं०] जिसमे बाण हो। बाणयुक्त (को०)।

सासूय—वि० [सं०] ग्रसूया युक्त। द्वेषी। ईर्ष्यालु (को०)।

सास्थि—वि० [सं०] ग्रस्थियुक्त। हड्डीवाला (को०)।

सास्थितात्रार्य—संज्ञा पु० [सं०] काँसा (को०)।

सास्ना—संज्ञा स्त्री० [सं०] गौग्रों ग्रादि का गलकबल।

सास्वत—वि० [सं० शाश्वत] शाश्वत। ग्रमर। नित्य (को०)।

सास्मित—संज्ञा पु० [सं०] शुद्ध सत्व को विषय बनाकर की जानेवाली भावना।

सास्वादन—संज्ञा पु० [सं०] जैन मतानुसार निर्वाण प्राप्ति की चौदह ग्रवस्थाग्रो मे से दूसरी ग्रवस्था (को०)।

साहु¹—संज्ञा पु० [सं० साधु] १ साधु। सज्जन। भला ग्रादमी। जैसे,—वह चोर है ग्रौर तुम बडे साहु हो। उ०—चुरी वस्तु दै कै जिमि कोई। चोरहि साहु बनावत होई।—शकुतला, पृ० ६२। २ व्यापारी। साहूकार। ३ धनी। महाजन। सेठ। ४ लकडी या पत्थर का वह लबा टुकडा जो दरवाजे के चौखटे मे देहलीज के ऊपर दोनो पार्श्वो मे लगा रहता है।

मुहा०—साहुखर्ची = फिजूलखर्ची। ग्रनावश्यक खर्च। शान शौकत के लिये धन का ग्रपव्यय। उ०—पुराने ढर्रे की साहुखर्ची ग्रौर पास पडोस के लोगो से यश पाने की भूख—इन दोनो लतो न खाखा पडित का तबाह कर रखा था। —नई०, पृ० ४।

साहु²—संज्ञा पु० [फा० शाह] स्वामी। दे० 'शाह'। उ०—ग्रनि ही ग्रयाने उपखानो नहि बूझै लोग, साहु ही को गोत गोत होत है गुलाम को।—तुलसी ग्र०, पृ० २२०।

साहु³—वि० [सं०] १ जो साहस ग्रौर सफलतापूवक प्रतिरोध करे। २ निरोध या दमन करनेवाला (को०)।

साहचर्य—संज्ञा पु० [सं०] १. सहचर होने का भाव। साथ रहने का भाव। सहचरता। २ सग। साथ।

साहजिक—वि० [सं०] सहज। नैसर्गिक। स्वाभाविक (को०)।

साहजिकधर्म—संज्ञा पु० [सं०] शुक्रनीति के ग्रनुसार पारितोषिक। वेतन, विजय ग्रादि मे मिला हुग्रा धन।

साहणहार(पु)—वि० [हिं० सहना + हार (प्रत्य०)] झेलनेवाला। सहनेवाला। सहन करनेवाला। उ०—ज्यू ज्यूँ हरि गुण साँभलौं त्यूँ त्यूँ लागै तीर। लागै थै भागा नहीं साहणहार कबीर।—कबीर ग्र०, पृ० ६४।

साहन—संज्ञा पु० [सं०] सहन शक्ति। सहनशीलता (को०)।

साहना†—क्रि० स० [स० साहित्य (=मिलन)] भैंसो का जोडा खिलाना। बुहाना।

साहनी—संज्ञा स्त्री० [स० सेनानी या फा० शह्नह्, ?] १ सेना। फौज। उ०—(क) आयकै आपने आश्रम मे कियो यज्ञ अरंभ प्रमोद प्रफुल्ला। आय निशाचर साहनी साजै मरीच सुबाहु सुने मख गुल्ला।—रघुराज (शब्द०)। (ख) करत विहार द्विरद मतवारे। गिरि सम वपुष झूलते कारे। कोटिन वाजि साहनी आवैं। नीर पियाइ नदी अन्हवावैं।—सवल (शब्द०)। २ साथी। सगी। उ०—हम खेलव तव साथ, होइ नीच सव भाँति जो। कह्यो वचन कुरुनाथ शकुनी तो सिरमौर मम। धरहु भार निज शीश, वैठारहु किन साहनी। हमहिं न ओछि महीश मैं खेलव नृप सदसि महँ।—सवल (शब्द०)। ३ पारिषद। उ०—भगत सकल साहनी वोलाए।—तुलसी (शब्द०)। ४ कोतवाल। ५ सेनापति।

साहब[1]—संज्ञा पु० [अ० साहिव] [स्त्री० साहिवा] १ मित्र। दोस्त। साथी। २ मालिक। स्वामी। ३ परमेश्वर। ईश्वर। ४ एक सम्मानसूचक शब्द जिसका व्यवहार नाम के साथ होता है। महाशय। जैसे,—मु० कालिका प्रसाद साहव।

यौ०—साहबजादा। साहव सलामत।

५ गोरी जाति का कोई व्यक्ति। फिरगी। ६ अफसर। हाकिम। सरदार। ७ अग्रेजोकी तरह ठाट बाट से रहनेवाला व्यक्ति।

साहब[2]—वि० वाला।

विशेष—इस अर्थ मे इस शब्द का व्यवहार यौगिक शब्दों मे होता है। जैसे,—साहवइकवाल। साहवतदवीर। साहवदिमाग।

साहबइसाफ—वि० [अ० साहिव ए इसाफ] न्यायी। न्यायशील [को०]।

साहबखाना—संज्ञा पु० [अ० साहिव + फा० खानह्] घर का स्वामी। गृहपति [को०]।

साहबगरज—वि० [अ० साहिवगरज] गर्जू। स्वार्थी। खुदगरज [को०]।

साहबजादा—संज्ञा पु० [अ० साहिव + फा० जादह्] [स्त्री० साहवजादी] १ भले या वडे आदमी का लडका। २ पुत्र। वेटा। जैसे,—आज आपके साहवजादा कहाँ है ?

साहबदिल—वि० [अ० साहिव + फा० दिल] सहृदय। साधु। सज्जन। मनस्वी [को०]।

साहबपन—संज्ञा पु० [अ० साहिव + हिं० पन (प्रत्य०)] साहव होने का भाव। साहवी [को०]।

साहब बहादुर—संज्ञा पु० [अ० साहिव + फा० वहादुर] १ सम्मानित व्यक्ति या राजा का सबोधन। २ योरोपीय ढग से रहनेवाला व्यक्ति।

साहबान—संज्ञा पु० [अ० साहिव का वहु व०] सज्जन वृ द। सत्पुरुष।

साहबाना—वि० [अ० साहिवानह्] साहवी ढग का। साहवी।

साहब सलामत—संज्ञा स्त्री० [अ०] परस्पर मिलने के समय होनेवाला अभिवादन। वदगी। सलाम। जैसे,—जव कभी वे रास्ते मे मिल जाते हैं, तव साहवसलामत हो जाती है।

साहबी[1]—वि० [अ० साहिव + ई (प्रत्य०)] साहव का। साहव सवधी। जैसे,—साहवी चाल। साहवी रग ढग।

साहबी[2]—संज्ञा स्त्री० १ साहव होने का भाव। २ प्रभुता। मालिकपन। ३ सर्वोच्चता। सर्वोपरि होने का भाव। ईश्वरत्व। ४ वडाई। वडप्पन। महत्व।

मुहा०—साहवी करना = (१) अफसरी दिखाना। अफसरो की तरह रहना। (२) रोव गाँठना। (३) सीमा से वाहर अधिक व्यय करके ठाटवाट मे रहना।

साहबीयत—संज्ञा स्त्री० [अ० साहिब + इयत (प्रत्य०)] साहवपन। साहवी। अफसरी ढग।

साह बुलबुल—संज्ञा पु० [अ० शाह + फा० वुलवुल] एक प्रकार का वुलवुल जिसका सिर काला, सारा शरीर सफेद और दुम एक हाथ लवी होती है।

साहय—वि० [स०] महन करने मे प्रवृत्त करनेवाला [को०]।

साहस—संज्ञा पुं० [स०] १ वह मानसिक गुण या शक्ति जिसके द्वारा मनुष्य यथेष्ट वल के अभाव मे भी कोई भारी काम कर वैठता है या दृढतापूर्वक विपत्तियो या कठिनाइयों आदि का सामना करता है। हिम्मत। हियाव। जैसे,—वह साहस करके डाकुओ पर टूट पडा।

क्रि० प्र०—करना।—दिखलाना।—होना।

२ जवरदस्ती दूसरे का धन लेना। लूटना। ३ कोई वुरा काम। दुष्ट कर्म। ४ द्वेप। ५ अत्याचार। ६ क्रूरता। वेरहमी। ७ परस्त्री गमन। ८ वलात्कार। ९ दड। सजा। १० जुर्माना। ११ अविमृश्यकारिता। अविवेकिता। औद्धत्य। उतावलापन। १२ वह अग्नि जिसपर यज्ञ के लिये चरु पकाया जाता है।

साहसकरण—संज्ञा पु० [सं०] १ साहस करना। वल प्रयोग। २ उग्रता। क्रूरता।

साहसकारी—वि० [स० साहसकारिन्] १ साहस करनेवाला। साहसी। वहादुर। हिम्मती। २. उद्धत। अविवेकी [को०]।

साहसदंड—संज्ञा पुं० [स० साहसदण्ड] १ सवसे वडा दड। कठोरतम दड। प्राणदड [को०]।

साहसलांछन—वि० [सं० साहसलाञ्छन] जिसकी पहचान साहस हो। जो अपने साहस से जाना पहचाना जाय [को०]।

साहसांक—संज्ञा पुं० [सं० साहसाङ्क] १ राजा विक्रमादित्य का एक नाम। २ एक कोशकार का नाम (को०)। ३ एक कवि का नाम (को०)।

साहसाधिपति—संज्ञा पुं० [स०] पुलिस अफसर [को०]।

साहसाध्यवसायी—वि० [स० साहसाध्यवसायिन्] किसी कार्य मे उतावली या जल्दीवाजी करनेवाला [को०]।

साहसिक—वि०, संज्ञा पु० [स०] १ वह जिसमे साहस हो। साहस करनेवाला। हिम्मतवर। पराक्रमी। २ डाकू। ३ चोर।

तस्कर। ४, मिथ्यावादी। ५ कर्कश वचन बोलनेवाला। ६ परस्त्रीगामी।

विशेष—शास्त्रो मे डाका, चोरी, झूठ बोलना, कठोर वचन कहना और परस्त्रीगमन ये पाँचो कर्म करनेवाले साहसिक कहे गए हैं और अत्यंत पापी बतलाए गए है। धर्मशास्त्रो मे इन्हे यथोचित दड देने का विधान है। स्मृतियो मे लिखा है कि 'साहसिक व्यक्ति' की साक्षी नही माननी चाहिए क्योकि ये स्वय ही पाप करनेवाले होते है।

६ वह जो हठ करता हो। हठी। हठीला। ७ निर्भीक। निभय। निडर। ८ अविचारशील। अविवेकी (को०)। ९ क्रूर। अत्याचारी (को०)।

साहसिकता—सज्ञा स्त्री० [स० साहसिक+ता (प्रत्य०)] साहसिक होने का भाव दिलेरपन। हिम्मत। उ०—कितनी सरल, स्वतत्र और साहसिकता से भरी हुई यह रमणी है।—आँधी, पृ० १६।

साहसिनय—सज्ञा पु० [स०] १ साहस दिखाने का भाव। साहसिकता। प्रचडता। २ असमीक्ष्यकारिता। अविवेकिता। औद्धत्य (को०)।

साहसी¹—वि० [स० साहसिन्] १ वह जो साहस करता हो। हिम्मती। दिलेर। २ अविवेकी। उद्धत। ३ क्रूर। निष्ठुर (को०)। ४ असह्य। उग्र। प्रचड (को०)।

साहसी²—सज्ञा पुं० बलि का पुत्र जो शाप के कारण गधा हो गया था। इसे बलराम ने मारा था।

साहसैकरसिक—वि० [स०] साहसिकता मे ही आनद या रस माननेवाला। अत्यत अत्याचारी। उद्धत। उद्दड। क्रूर (को०)।

साहस्र—वि० [स०] १ सहस्र सबधी। हजार का। २ (व्याज आदि) जो हजार पीछे दिया जाय (को०)। ३ जो हजार मे क्रीत किया गया हो (को०)। ४ सहस्रगुणित। हजार गुना (को०)। ५ असख्य। अत्यधिक सख्यायुक्त। असख्येय (को०)। ६ हजार से युक्त (को०)।

साहस्र²—सज्ञा पु० १ सहस्र का समूह। २ एक हजार सैनिको की टुकडी (को०)।

साहस्रक¹—वि० [स०] जो एक हजार से युक्त हो। एक हजार की सख्यावाला (को०)।

साहस्रक²—सज्ञा पु० १ एक हजार का समूह। एक सहस्र। २. एक तीर्थ का नाम (को०)।

साहस्रवेधी—सज्ञा पु० [स० साहस्रवेधिन्] कस्तूरी।

साहस्रात—सज्ञा पु० [स० साहस्रान्त] एक प्रकार का एकाह यज्ञ (को०)।

साहस्राद्य—सज्ञा पु० [स०] दे० 'साहस्रात'।

साहस्रिक¹—वि० [स०] सहस्र सबधी। हजार का।

साहस्रिक²—सज्ञा पु० किसी पदार्थ के एक सहस्र भागो मे से एक भाग—१/१०००।

साहा—सज्ञा पु० [स० साहित्य] १ वर्ष जो हिंदू ज्योतिष के अनुसार विवाह के लिये शुभ माना जाता है। २ विवाह आदि शुभ कार्यो के लिये निश्चित लग्न या मुहूर्त।

साहानसाह(पु)—सज्ञा पु० [फा० शाहशाह] दे० 'शाहशाह'। उ०—साहानसाह आलम निवाज। रनथभ कोट चहुँआन राज।—हम्मीर०, पृ० १६।

साहायक—सज्ञा पु० [स०] १ सहयोग। मदद। सहायता। २ मित्रता। मैत्री। ३ सहयोगियो या मित्रो का मडल। ४ उपकारक या सहायक सेना (को०)।

साहाय्य—सज्ञा पु० [स०] १ सहायता। मदद। २ दोस्ती। मैत्री। सग (को०)। ३ (नाटक मे) एक दूसरे को सकट मे मदद पहुँचाना (को०)।

साहाय्यकर—वि० [स०] मदद करनेवाला। सहायक (को०)।

साहाय्यदान—सज्ञा पु० [स०] सहायता देना। मदद देना (को०)।

साहि(पु)¹—सज्ञा पु० [फा० शाह] १ राजा। उ०—भूपन भनि ताके भयो, भुव भूपन नृप साहि। रातौ दिन सकित रहै, साहि सबै जग माहि।—भूषण ग्र०, पृ० ८। २ दे० 'साहु'।

साहित(पु)—सज्ञा पु० [स० साहित्य] दे० 'साहित्य'। उ०—सुरभूम पाठ पिंगल मता, साहित बोदग सार नै।—रघु० रू०, पृ० १४।

साहिती—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'साहित्य'।

साहित्य—सज्ञा पु० [स०] १ एकत्र होना। मिलना। मिलन। २ वाक्य मे पदो का एक प्रकार का सबध जिसमे वे परस्पर अपेक्षित होते हैं और उनका एक ही क्रिया से अन्वय होता है। ३ किसी एक स्थान पर एकत्र किए हुए लिखित उपदेश, परामर्श या विचार आदि। लिपिबद्ध विचार या ज्ञान। ४ अलकार शास्त्र। रीतिशास्त्र। काव्यकला। काव्यशास्त्र आदि। ५ गद्य और पद्य सब प्रकार के उन ग्रथो का समूह जिनमे सार्वजनिक हित सबधी स्थायी विचार रक्षित रहते है। वे समस्त पुस्तकें जिनमे नैतिक सत्य और मानव भाव बुद्धिमत्ता तथा व्यापकता से प्रकट किए गए हो। वाङ्मय।

विशेष—इस अर्थ मे यह शब्द बहुत अधिक व्यापक रूप मे भी बोला जाता है (जैसे,—समस्त ससार का साहित्य), और देश काल, भाषा या विषय आदि के विचार से परिमित रूप मे भी (जैसे,—हिंदी साहित्य, वैज्ञानिक साहित्य, बिहारी का साहित्य आदि)।

६. सगति। सामजस्य। तालमेल (को०)। ७ किसी वस्तु के उत्पादन या किसी कार्य की सपन्नता के लिय सामग्री का सग्रह (को०)।

साहित्यदर्पण—सज्ञा पु० [स०] साहित्य शास्त्र का एक सुप्रसिद्ध ग्रथ जिसके रचयिता विश्वनाथ कविराज है।

साहित्यशास्त्र—सज्ञा पु० [स०] वह शास्त्र जिसमे साहित्यिक विधाओ (अलकार, रस, रूपक, छद आदि) का शास्त्रीय ढग से मूल्याकन हो।

**साहित्यिक[1]**—वि० [सं० साहित्य + हिं० इक (प्रत्य०)] साहित्य संबंधी। जैसे—साहित्यिक चर्चा।

**साहित्यिक[2]**—संज्ञा पुं० वह जो साहित्य सेवा में संलग्न हो। साहित्य शास्त्र का विद्वान्। साहित्यसेवी। जैसे,—वहाँ कितने ही प्रसिद्ध साहित्यिक उपस्थित थे।

**साहिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं० सेनानी ?] दे० 'साहनी'।

**साहिब**—संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० साहिबा] स्वामी। प्रभु। दे० 'साहब'। उ०—साहिब सीतानाथ से सेवक तुलसी दास।—मानस, १।२८।

**साहिबिनी**ⓟ—संज्ञा स्त्री० [अ० साहिब + इनी (प्रत्य०)] स्वामिनी। मलकिन। उ०—मेरी साहिबिनि सदा सीस पर बिलसति, देवि क्यों न दास को देखाइयत पाय जू।—तुलसी ग्रं०, पृ० २३१।

**साहिबी**—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'साहबी'। उ०—(क) सुलभ सिद्धि सब साहिबी सुमिरत सीता राम।—तुलसी ग्रं०, पृ० १५२। (ख) लै त्रिलोक की साहिबी दै धतूर कौ फूल।—स० सप्तक, पृ० १४६।

**साहिब्ब**ⓟ—संज्ञा पुं० [अ० साहिब] दे० 'साहब'। उ०—साहिब्ब बचन इम उच्चरै अली औलिया पीर गनि।—ह० रासो, पृ० ५७।

**साहियाँ**ⓟ—संज्ञा पुं० [सं० स्वामी, या फा० शाह, हिं० साह, साहि] दे० 'साँई'।

**साहिर**—संज्ञा पुं० [अ०] [बहु व० सहरा] जादूगर। उ०—अफसोस मार झटपट दिल को रखै है अटका। किस साहिरों से सीखा जुल्फों ने तेरी लटका।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० १६।

**साहिरी**—संज्ञा स्त्री० [अ० साहिर] जादूगरी।

**साहिल[1]**—संज्ञा पुं० [अ०] १ किनारा। कूल। तट। २ समुद्र अथवा नदी का तट [को०]।

**साहिल[2]**—संज्ञा स्त्री० [सं० शल्यकी] दे० 'साही'।

**साहिलो**—संज्ञा स्त्री० [अ० साहिल (= समुद्र तट)] १ एक प्रकार का पक्षी जिसका रंग काला और लंबाई एक बालिश्त से अधिक होती है।

विशेष—यह प्राय उत्तरी भारत और मध्य प्रदेश में पाया जाता है। यह पेड़ की टहनियों पर प्याले के आकार का घोसला बनाता है। इसके अंडों का रंग भूरा होता है।

२ बुलबुल चश्म।

**साही[1]**—संज्ञा स्त्री० [सं० शल्यकी] एक प्रसिद्ध जंतु जो प्राय दो फुट लंबा होता है।

विशेष—इसका सिर छोटा, नथुने लंबे, कान और आँखें छोटी और जीभ बिल्ली की तरह काँटेदार होती है। ऊपर नीचे के जबड़े में चार दाँतों के अतिरिक्त कुतरनेवाले दो दाँत ऐसे तीक्ष्ण होते हैं कि लकड़ी के मोटे तख्ते तक को काट डालते हैं। इसका रंग भूरा, सिर और पाँव पर काले काले सफेदी लिए छोटे छोटे बाल और गर्दन पर के बाल लंबे और भूरे रंग के होते हैं। पीठ पर लंबे नुकीले काँटे होते हैं। काँटे बहुधा सीधे और नोक पूँछ की भाँति फिरी रहती है। जब यह क्रुद्ध होता है, तब काँटे सीधे खड़े हो जाते हैं। यह अपने शत्रुओं पर अपने काँटों से आक्रमण करता है। इसका किया हुआ घाव कठिनता से आराम होता है। इन काँटों से लिखने की कलम बनाई जाती है और चूडाकर्म में भी कहीं कहीं इनका व्यवहार होता है। ये जंतु आपस में बहुत लड़ते हैं, इसलिये लोगों का विश्वास है कि यदि इसके दो काँटे दो आदमियों के दरवाजों पर गाड़ दिए जाएँ, तो दोनों में बहुत लड़ाई होती है। यह दिन में सोता और रात में जागता है। यह नरम पत्ती, साग, तरकारी और फल खाता है। शीतकाल में यह बेसुध पड़ा रहता है। यह प्राय उष्ण देशों में पाया जाता है। स्पेन, सिसिली आदि प्रायद्वीपों और अफ्रीका के उत्तरी भाग, एशिया के उत्तर, तातार, ईरान तथा हिंदुस्तान में यह बहुत मिलता है। इसे कहीं कहीं 'सेई' और 'स्याऊ' भी कहते हैं।

**साही[2]**—वि० [फा० शाही] दे० 'शाही'। उ०—साही हुकुम्म किज्जिय सुबेग।—प० रासो, पृ० ६५।

**साहु**—संज्ञा पुं० [सं० साधु] १ सज्जन। भला मानस। उ०—ताहि न खोजहु साहु के पूता। का पाहन पूजहु अजगूता।—कबीर सा०, पृ० ३६६। २ महाजन। धनी। साहूकार। चोर का उलटा।

विशेष—प्राय वणिकों के नाम के आगे यह शब्द आता है। इसको कुछ लोग भ्रम से फारसी 'शाह' का अपभ्रंश समझते हैं। पर यथार्थ में यह संस्कृत 'साधु' का प्राकृत रूप है।

**साहुन**‡—संज्ञा पुं० [सं० श्रावण, हिं० सावन] दे० 'सावन' (मास)। उ०—सदा तुरैया फूले नहीं, सदा न साहुन होय। सदा नै कसा रन चढ़ै सदा न जीवै कोय।—शुक्ल अभि० ग्रं०, पृ० १५३।

**साहुनि**ⓟ—संज्ञा स्त्री० [हिं० साहु] साहु की स्त्री। साहुआइन। उ०—साहु के माल चोर धरि साँधा। साहुनि कूदि साहु कहँ बाधा।—संत० दरिया, पृ० ३६६।

**साहुरड़ा**ⓟ‡—संज्ञा पुं० [सं० श्वसुरालय या हिं० सासुर + डा (प्रत्य०)] पति का घर। ससुराल। सासुर। उ०—पवक द ादन चार हे साहुरडे जणा। अधा लोक न जाणई मूरखु एयाणा।—कबीर ग्रं०, पृ० ३०६।

**साहुल**—संज्ञा पुं० [फा० शाकूल] दीवार की सीध नापने का एक प्रकार का यंत्र जिसका व्यवहार राज और मिस्त्री लोग मकान बनाने के समय करते हैं।

विशेष—यह पत्थर की गोली के आकार का होता है और इसमें एक लंबी डोरी लगी रहती है। इसी डोरी के सहारे से इसे लटकाकर दीवार की टेढ़ाई या सिधाई नापते हैं।

**साहू**—संज्ञा पुं० [सं० साधु, प्रा० साहु] दे० 'साहु'।

**साहूकार**—संज्ञा पुं० [हिं० साहु + कार (प्रत्य०)] बड़ा महाजन या व्यापारी। कोठीवाल। धनाढ्य।

**साहूकारा[1]**—संज्ञा पुं० [हिं० साहूकार + आ (प्रत्य०)] १ रुपयों का लेनदेन। महाजनी। २ वह बाजार जहाँ बहुत से साहूकार या महाजन कारबार करते हों। ३ साहूकारों का मुहल्ला।

साहूकारा²--वि० साहूकारो का। जैसे,--साहूकारा व्यवहार या व्याज।

साहूकारी--संज्ञा स्त्री० [हिं० साहूकार + ई (प्रत्य०)] १ साहूकार होने का भाव। साहूकारपन। २ साहूकार का काम। साहूकारा। महाजनी (को०)।

साहेब--संज्ञा पु० [अ० साहिब] दे० 'साहब'।

साहैं(पु)†¹--संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँह] भुजदड। बाजू। उ०--सकल भुअन मगल मदिर के द्वार बिसाल सुहाई साहैं।--तुलसी (शब्द०)।

साहैं²--अव्य० [हिं० सामुहे] सामने। सम्मुख।

साह्य--संज्ञा पु० [स०] १ सयोजन। मेल। साथ। २ सहायता। मदद [को०]।

साह्यकृत्--संज्ञा पुं० [स०] साथी [को०]।

साह्न--वि० [स०] १ दिन से सबद्ध। दिन सहित। दिनयुक्त। २. दिन पूरा करनेवाला। दिवस समाप्त करनेवाला [को०]।

साह्व--वि० [स०] नामवाला [को०]।

साह्वय--संज्ञा पु० [स०] १ जानवरो की लडाई कराकर जुआ खेलना। २ पशुओ के लडाने के लिये योजित करना।

सिउँ, सिउँ(पु)‡--प्रत्य० [अप० सिउँ (= सम)] दे० 'त्यो'। उ०--रतन जनम अपनो तै हार्यो गोविंद गत नहि जानी। निमिष न लीन भयो चरनन सिउँ बिरथा अउध सिरानी।--तेगबहादुर (शब्द०)।

सिकना, सिँकना--क्रि० अ० [स० श्रृत (= पका हुआ) + करण, हिं० सेंकना] आँच पर गरम होना या पकना। सेंका जाना। जैसे,--रोटी सिँकना।

सिकली--संज्ञा स्त्री० [स० शृङखला, हिं० साँकल] करधनी। मेखला। कमर मे पहनने की जजीर। उ०--खुटी सिकली सूता एकावटी चुलि वलया मेपला त्रिका।--वर्ण०, पृ० ४।

सिकोना--संज्ञा पुं० [अ०] कुनैन का पेड।

सिखला--संज्ञा स्त्री० [स० शृङखला, हिं० साँकल] १ दरवाजा बद करने की सिकडी। साँकल। २ बधन। घेरा। रोक। प्रतिबध। अर्गला। उ०--तोरि सिखला गेह की हो लोक लाज भय खोय। 'हरीचद' हरि सो मिलौ होनी होय सो होय।--भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ३७४।

सिंग¹--संज्ञा पु० [स० शृङ्ग] दे० 'सींग'।

सिंग†²--वि० [देशी] कृश। दुर्बल।--देशी० ८ २८।

सिंगडा†--संज्ञा पु० [स० शृङग + हिं० डा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० सिंगडी] सीग का बना हुआ बारूद रखने का एक प्रकार का बरतन। उ०--तन बदूक सुमन का सिंगडा ज्ञान का गज ठहकाई।--कबीर० श०, भा० १, पृ० २७।

सिंगरा†--संज्ञा पुं० [हिं० सीग + रा (प्रत्य०)] दे० 'सिंगडा' उ०--(क) तन बदूक सुमति कै सिंगरा ज्ञान के गज ठहकाई।--पलटू०, भा० ३, पृ० ४०। (ख) रजक दानी, सिंगरा तूलि पलीता दानी।--प्रेमघन०, भा० १, पृ० १३।

सिंगरफ--संज्ञा पु० [फा० शिगरफ] ईंगुर।

सिंगरफी--वि० [फा० शिगरफी] ईंगुर का। ईंगुर से बना हुआ।

सिंगरी--संज्ञा स्त्री० [हिं० सीग] एक प्रकार की मछली जिसके सिर पर सीग से निकले होते हैं।

सिंगरौर--संज्ञा पुं० [स० शृङगवेर] प्रयाग के पश्चिमोत्तर नौ दस कोस पर एक स्थान जो प्राचीन शृगवेरपुर माना जाता है। यहाँ निषादराज गुह की राजधानी थी। उ०--सो जामिनि सिंगरौर गँवाई।--मानस, २।१५१।

सिंगल¹--संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बडी मछली जो भारत और बरमा की नदियो मे पाई जाती है। यह छह् फुट तक लबी होती हे।

सिंगल²--संज्ञा पु० [अ० सिगनल] दे० 'सिगनल'।

सिंगल³--वि० [अ० सिंगिल] एक। दे० 'सिंगिल'। जैसे,--सिंगल कप (डबल = दो अर्थात् भरा हुआ पूर्ण और सिंगल = एक अर्थात् आधा)।

सिंगा¹--संज्ञा पु० [हिं० सीग] फूँककर बजाया जानेवाला सीग या लोहे का बना एक बाजा। तुरही। रणसिंगा।

सिंगा†²--संज्ञा स्त्री० [देशी] फली। छीमी। फलियाँ।

सिंगार, सिँगार(पु)--संज्ञा पु० [स० शृङगार, प्रा० सिंगार] १. सजावट। सज्जा। बनाव। २ शोभा। ३ शृगार रस। उ०--ताही ते सिंगार रस बरनि कह्यो कवि देव। जाको है हरि देवता सकल देव अधिदेव।--देव (शब्द०)।

सिंगारदान--संज्ञा पु० [हिं० सिंगार + स० आधान या फा० दान (प्रत्य०)] वह पात्र या छोटा सदूक जिसमे शीशा, कघी आदि शृगार की सामग्री रखी जाती है। प्रसाधन की सामग्री रखने का सदूक।

सिंगारना, सिँगारना(पु)--क्रि० स० [हिं० सिंगार + ना (प्रत्य०)] वस्त्र, आभूषण, अगराग आदि से शरीर सुसज्जित करना। सजाना। सँवारना। उ०--(क) सुरभी वृषभ सिगारि बहुविधि हरदी तेल लगाई।--सूर (शब्द०)। (ख) कटे कुड कुडल सिँगारे गड पुडन पै कटि मै भुसुड सुड दडन की मडनी।--गि० दास (शब्द०)।

सिंगारपटार†--संज्ञा पु० [स० शृङगार + प्रस्तार] अच्छी तरह किया हुआ शृगार। शृगार। सिंगार। उ०--साबुन मल मल कर हाथ मुँह धोया फिर इत्र पाउडर लगाकर सिंगारपटार किया।--कठहार, पृ० ६८।

सिंगारभोग--संज्ञा पु० [स० शृङगार + भोग] शृगारकालीन भोग। वह भोग या नैवेद्य जो देवविग्रह के स्नान एव धूप आरती के उपरात तथा शृगार आरती के पूर्व अर्पण किया जाता है। बालभोग। कलेवा। उ०--फेरि रसोइ मे जाइ, समै भए भोग सराइ श्रीठाकुरजी की मगला आर्ति करि, सिंगार करि सिंगार-भोग धरते।--दो सो बावन०, भा० १, पृ १०१।

सिंगारमेज--संज्ञा स्त्री० [स० शृङगार + फा० मेज] एक प्रकार की मेज जिसपर दर्पण लगा रहता हे और शृगार की सामग्री सजी

रहती है। इसके सामने बैठकर लोग बाल सँवारते और वस्त्र आभूषण आदि पहनते हैं।

सिंगारहाट— संज्ञा स्त्री० [हिं० सिंगार + हाट (= बाजार)] १ सौंदर्य का बाजार। वेश्याओं के रहने का स्थान। चकला। २ वह बाजार जहाँ शृंगार या प्रसाधन की वस्तुएँ बिकती हों।

सिंगारहार— संज्ञा पुं० [सं० हारशृङ्गार] हरसिंगार नामक फूल। परजाता। उ०—नागेसर सदबरग नेवारी। औ सिंगारहार फुलवारी। —जायसी (शब्द०)।

सिंगारिया— वि० [सं० शृङ्गार + हिं० सिंगार + इया (प्रत्य०)] किसी देवमूर्ति का शृंगार करनेवाला, पुजारी।

सिंगारी, सिँगारी(पु)—वि० पुं० [सं० शृङ्गारिन्, प्रा० सिंगारि, हिं० सिंगार + ई (प्रत्य०)] १ शृंगार करनेवाला। शोभित करनेवाला। सजानेवाला। उ०—समर विहारी सुर सम बलधारी धरि मल्लजुद्धकारी औ सिंगारी भट भेरु के।—गोपाल (शब्द०)। २ सिंगारिया। शृंगार का विशेषज्ञ। रामलीला, नाटक आदि मे पात्रो को सजानेवाला। उ० आवत दूर दूर सो सिच्छक गुनी सिंगारी।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ३०।

सिंगाल†—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पहाडी बकरा जो कुमायूँ से नैपाल तक पाया जाता है।

सिंगाला - वि० [हिं० सीग + आला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सिंगाली] सीगवाला। जैसे,—गाय, बैल।

सिंगासन†—संज्ञा पुं० [सं० सिंहासन, प्रा० सिंघासन] दे० 'सिंहासन'।

सिंगिया—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गिक] एक प्रसिद्ध स्थावर विष।

विशेष- इसका पौधा अदरक या हल्दी का सा होता है और सिक्किम की ओर नदियो के किनारे की कीचडवाली जमीन मे उगता है। इसकी जड ही विष होती है, जो सूखने पर सीग के आकार की दिखाई पडती है। लोगो का विश्वास है कि यह विष यदि गाय की सीग मे बाँध दिया जाय, तो उसका दूध रक्त के समान लाल हो जाय। यह कुछ आयुर्वेदिक दवाओ मे प्रयुक्त होता है।

सिंगिया†—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्गिका, प्रा० सिंगिया] पिचकारी। फुहारा [को०]।

सिंगिल— वि० [अं०] १ अविवाहित। एकाकी २ एक मात्र। इकहरा। जैसे,—सिंगिल लाइन सिंगिल रीड बाजा।

सिंगी[1]—संज्ञा पुं० [हिं० सीग] १ सीग का बना हुआ फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा। तुरही।

विशेष—इसे शिकारी लोग कुत्तो को शिकार का पता देने के लिये बजाते हैं।

२ सीग का बाजा जिसे योगी लोग फूँककर बजाते हैं। उ०—सिंगी नाद न बाजही कित गए सो जोगी।—दादू (शब्द०)।

क्रि० प्र०—फूँकना —बजाना।

३ घोडो का एक बुरा लक्षण।

सिंगी[2]—संज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार की मछली।

विशेष—यह मछली बरसाती पानी मे अधिकता से होती है। इसके काटने या सीग गडाने से एक प्रकार का विष चढता है यह एक फुट के लगभग लबी होती है और खाने के योग्य नही होती।

२ सीग की बनी नली जिससे घूमनेवाले देहाती जर्राह शरीर का रक्त चूसकर निकालते है।

क्रि० प्र०—लगाना।

सिंगीमोहरा—संज्ञा पुं० [हिं० सिंगी + मुहरा] सिंगिया नामक विष।

सिंगुल(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सीग + उल (प्रत्य०)] सीग। उ०—पीत वरण आरक्त खुर सिर सिंगुल सुकुमार। कमलासन के अग्र अरि गो गोरूप पुकार।—पृ० रासो, पृ० ७।

सिंगौटी, सिँगौटी[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीग + औटी (प्रत्य०)] १ सीग का आकार। २ बैल के सीग पर पहनाने का एक आभूषण। ३ सीग का बना हुआ घोटना ४ तेल आदि रखने के लिये सीग का पात्र। ५ जगल मे मरे हुए जानवरो के सीग।

सिंगौटी, सिँगौटी[2]— संज्ञा स्त्री० [हिं० सिंगार + औटी] सिंदूर, कघी आदि रखने की स्त्रियो की पिटारी।

सिंघ(पु)‡—संज्ञा पुं० [सं० सिंह, प्रा० सिंघ] १ दे० 'सिंह'। २ शख। ३ राजा। राव। ४ शूर। वीर। उ०—सिंघ सूर को कहत कवि बहुरि सख को सिंघ। सिंघ राव औ सिंघ वपु धरो भेष नरसिंघ।—अनेकार्थ०, पृ० १६३।

सिंघण—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सिंहाण' [को०]।

सिंघपौरि†—संज्ञा स्त्री० [सं० सिंह + हिं० पौर] राजा के प्रासाद या मंदिर का मुख्य द्वार। सिंहपौर। उ० सो सुनिकै श्री रुक्मिनी जी आदि सब पटरानी निज सखी सहचारिन को सग ले कै सोरहहू सिंगार किए अपने अपने मदिर ते निकसी। सो सिंघपौरि आई —दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ७।

सिंघल—संज्ञा पुं० [सं० सिंहल] दे० 'सिंहल'।

सिंघली— वि० [सं० सिंहल + ई] दे० 'सिंहली'।

सिंघा†—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गक, हिं० सिंगा] दे० 'सिंगा'।

सिंघाडा, सिँघाडा†— संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गाटक] १ पानी मे फैलनेवाली एक लता जिसके तिकोने फल खाए जाते हे। पानी फल।

विशेष—यह भारतवर्ष के प्रत्येक प्रात मे तालो और जलाशयो मे रोपकर लगाया जाता है। इसकी जडे पानी के भीतर दूर तक फैलती है। इसके लिये पानी के भीतर कीचड का होना आवश्यक है, कँकरीली या बलुई जमीन मे यह नही फैल सकता। इसके पत्ते तीन अगुल चौडे कटावदार होते है। जिनके नीचे का भाग ललाई लिए होता है। फूल सफेद रग के होते है। फल तिकोने होते हे जिनकी दो नोके काँटे या सीग की तरह निकली होती हैं। बीच का भाग खुरदरा होता है। छिलका मोटा पर मुलायम होता है जिसके भीतर सफेद गूदा या गिरी होती है। ये फल हरे खाए जाते हैं। सूखे फलो की गिरी का आटा भी बनता है जो व्रत के दिन फलाहार के रूप मे लोग खाते हैं।

अबीर बनाने मे भी यह आटा काम मे आता है। वैद्यक मे सिंघाडा शीतल, भारी कसैला वीर्यवर्द्धक, मलरोधक, वातकारक तथा रुधिरविकार और त्रिदोष को दूर करनेवाला कहा गया है।

पर्या०—जलफल। वारिकटक। त्रिकोणफल।

२ सिंघाडे के आकार की तिकोनी सिलाई या बेल बूटा। ३ सोनारो का एक औजार जिससे वे सोने की माला बनाते हैं। ४ एक प्रकार की मुनिया चिडिया। ५ समोसा नाम का नमकीन पकवान जो सिंघाडे के आकार का तिकोना होता है। ६ सिंघाडे के आकार की मिठाई। मीठा समोसा। ७ एक प्रकार की आतिशबाजी। ७ रहट की लाट मे ठोकी हुई लकडी जो लाट को पीछे की ओर घूमने से रोकती है।

**सिंघाडी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिंघाडा] वह तालाब जिसमे सिंघाडा रोपा जाता है।

**सिंघाण**—संज्ञा पुं० [सं० सिङ्घाण] दे० 'सिंहाण'।

**सिंघाणक**—संज्ञा पुं० [सं० सिङ्घाणक] दे० 'सिंहाणक'।

**सिंघारना**Ⓟ†—क्रि० स० [सं० संहारण] सहार करना। उ०—धनुधारे! रे धनुधारे। सर एका बाल सिंघारे।—रघु० रू०, पृ० १५५।

**सिंघासन** संज्ञा पुं० [सं० सिंहासन, प्रा० सिंघासण, सिंघासन] दे० 'सिंहासन'। उ०—(क) दशरथ राउ सिंघासन बैठि बिराजहिं हो।—तुलसी (शब्द०)। (ख) तहाँ सिंघासन सुभग निहारा। दिव्य कनकमय मनि दुति कारा।—मधुसूदन (शब्द०)।

**सिंघिणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] नासिका [को०]।

**सिंघिनी**[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] नासिका। नाक।

**सिंघिनी**[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० सिंह, प्रा० सिंघ + हिं० इनी (प्रत्य०)] दे० 'सिंहिनी'।

**सिंघिया**—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गिक] दे० 'सिंहिनी' (विष)।

**सिंघी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सींग] १ एक प्रकार की छोटी मछली जिसका रंग सुर्खी लिए हुए होता है। इसके गलफडे के पास दोनो तरफ दो काँटे होते हैं। २ सोंठ। शुंडी।

**सिंघू**—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का जीरा जो कुल्लू और बूशहर (फारस) से आता है और काले जीरे के स्थान पर बिकता है।

**सिंघेला, सिँघेला**†—संज्ञा पुं० [सं० सिंह, प्रा० सिंघ + हिं० एला (प्रत्य०)] शेर का बच्चा। उ०—तौ लगि गाज न गाज सिंघेला। सौह साह सौ जुरौ अकेला।—जायसी (शब्द०)।

**सिंचता**—संज्ञा स्त्री० [सं० सिञ्चता] दे० सिंचिता' [को०]।

**सिंचन**—संज्ञा पुं० [सं० सेचन] १ जल छिडकना। पानी के छीटे डालकर तर करना। २ पेडो मे पानी देना। सीचना।

**सिंचना, सिँचना**† —क्रि० अ० [हिं० सीचना] सीचा जाना।

**सिंचाई, सिँचाई** — संज्ञा स्त्री० [हिं० √सीच + आई (प्रत्य०)] १ पानी छिडकने का काम। जल के छीटो से तर करने की क्रिया। उ०—निजकर पुनि पत्रिका बनाई। कुंकुम मलयज बिंदु सिंचाई।—रघुराज (शब्द०)। २ सीचने का काम। वृक्षो मे जल देने का काम। ३ सीचने का कर या मजदूरी।

**सिंचाना, सिँचाना**—क्रि० स० [हिं० सीचना का प्रे० रूप] १ पानी से छिडकाना। २ सीचने का काम कराना।

**सिंचित**—वि० [सं० सिञ्चित] [स्त्री० सिंचिता] १ जल छिडका हुआ छीटो से तर किया हुआ। सीचा हुआ।

**सिंचिता**—संज्ञा स्त्री० [सं० सिञ्चिता] पिप्पली। पीपर।

**सिंचौनी, सिँचौनी**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीचना + औनी (प्रत्य०)] दे० 'सिंचाई'।

**सिंजा**—संज्ञा स्त्री० [सं० सिञ्जा] १ अलकारो की ध्वनि। भूषणो की रुनझुन। २ दे० 'शिंजा'।

**सिंजालपारी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक औजार। विशेष दे० 'गावलीन'।

**सिंजित**—संज्ञा स्त्री० [सं० सिञ्जित] शब्द। ध्वनि। झनक। झकार। उ०—घुटुरुन चलत घुघुरू बाजै। सिंजित सुनत हस हिय लाजै।—लाल कवि (शब्द०)।

**सिंडिकेट**—संज्ञा पुं० [अं०] १ सिनेट या विश्वविद्यालय की प्रबध सभा के सदस्यो या प्रतिनिधियो की समिति। २ धनी व्यापारियो या जानकार लोगो की ऐसी मडली जो किसी कार्य को, विशेषकर अर्थसबधी उद्योग या योजना को अग्रसर करने के लिये बनी हो।

**सिंदन**Ⓟ‡—संज्ञा पुं० [सं० स्यन्दन] दे० 'स्यदन'। उ०—गज बाजि सु सिंदन जान चढे।—ह० रासो, पृ० ७८।

**सिंदरवानी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की हलदी।

विशेष—इस हलदी की जड से एक प्रकार का तीखर निकलता है। यह असली तीखुर मे मिला भी दिया जाता है।

**सिंदुक**—संज्ञा पुं० [सं० सिन्दुक] सिंदुवार वृक्ष। सभालु।

**सिंदुर**Ⓟ—संज्ञा पुं० [सं० सिन्दूर] दे० 'सिंदूर'।

**सिंदुररसना**—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्दुर रसना ?] मदिरा। शराब। (अनेकार्थ०)।

**सिंदुरिया**—वि० [हिं० सिंदूर + इया (प्रत्य०)] सिंदूर जैसे रंग वाला। सिंदूरिया [को०]।

**सिंदुरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्दूर] बलूत की जाति का एक छोटा पेड जो हिमालय के नीचे के प्रदेश मे चार साढे चार हजार फुट तक पाया जाता है।

**सिंदुवार**—संज्ञा पुं० [सं० सिन्दुवार] सँभालू वृक्ष। निर्गुंडी।

**सिंदुवारक**—संज्ञा पुं० [सं० सिन्दुवारक] दे० 'सिंदुवार' [को०]।

**सिंदूर**—संज्ञा पुं० [सं० सिन्दूर] १ इंगुर को पीसकर बनाया हुआ एक प्रकार का लाल रंग का चूर्ण जिसे सौभाग्यवती हिंदू स्त्रियाँ अपनी माँग मे भरती है।

विशेष—सिंदूर स्त्रियो का सौभाग्य का चिह्न माना जाता है। गणेश और हनुमान की मूर्तियो पर भी यह घी मे मिलाकर

पोता और चढाया जाता है। आयुर्वेद मे यह भारी, गरम, टूटी हड्डी को जोडनेवाला, घाव को शोधने और भरनेवाला तथा कोढ, खुजली और विष को दूर करनेवाला माना गया है। यह घातक और अभक्ष्य है।

पर्या०—नागरेणु। वीरज। गणेशभूषण। सध्याराग। शृगारक। सौभाग्य। अरुण। मगल्य।

२ वलूत की जाति का एक पहाडी पेड जो हिमालय के निचले भागो मे अधिक पाया जाता है।

सिंदूरकारण—सज्ञा पु० [स० सिन्दूरकारण] सीसा नामक धातु।

सिंदूरतिलक—सज्ञा पु० [स० सिन्दूरतिलक] १ सिंदूर का तिलक। २ हाथी।

सिंदूरतिलका—सज्ञा स्त्री० [स० सिन्दुर तिलका] सधवा स्त्री।

सिंदूरदान—सज्ञा पुं० [सं० सिन्दूरदान] विवाह के अवसर की एक प्रधान रीति। वर का कन्या की माँग मे सिंदूर डालना।

सिंदूरपुष्पी—सज्ञा स्त्री० [स० सिन्दूरपुष्पी] एक पौधा जिसमे लाल रग के फूल लगते हैं। वीरपुष्पी। सदा सुहागिन।

पर्या०—सिंदूरी। तृणपुष्पी। करच्छदा। शोणपुष्पी।

सिंदूरवदन—सज्ञा पु० [स० सिन्दूर + वन्धन ?] विवाह सस्कार मे एक प्रधान रीति जिसमे वर कन्या की माँग मे सिंदूर डालता है। उ०—सिंदूरवदन, होम लावा होन लागी भाँवरी। सिलपोहनी करि मोहनी मन हरयो मूरति साँवरी।—तुलसी ग्र०, पृ० ५९।

सिंदूररस—सज्ञा पुं० [स० सिन्दूररस] रस सिंदूर।

विशेष—यह पारे और गधक को आँच पर उडाकर बनाया जाता है और चद्रोदय या मकरध्वज के स्थान पर दिया जाता है।

सिंदूरवदन—सज्ञा पु० [स० सिन्दूरवन्दन] दे० 'सिंदूरदान'।

सिंदूरिका—सज्ञा स्त्री० [स० सिन्दूरिका] सिंदूर [को०]।

सिंदूरित—वि० [स० सिन्दूरित] सिंदूरयुक्त। लाल किया हुआ। सिंदूर पोता हुआ [को०]।

सिंदूरिया[1]—वि० [स० सिन्दूर + इया (प्रत्य०)] सिंदूर के रग का। खूब लाल। जैसे,—सिंदूरिया आम।

सिंदूरिया[2]—सज्ञा स्त्री० [स० सिन्दूर (पुष्पी)] सदा सुहागिन नाम का पौधा। सिंदूरपुष्पी।

सिंदूरी[1]—वि० [स० सिन्दूर + ई (प्रत्य०)] सिंदूर के रग का। उ०—भली सँभोखी सेल सिंदूरी छाए बादर।—अविकादत्त (शब्द०)।

सिंदूरी[2]—सज्ञा स्त्री० [स० सिन्दूरी] १ धातकी। धव। २ रोचनी। हल्दी। लाल हल्दी। ३ सिंदूरपुष्पी। ४ कबीला। ५ लाल वस्त्र।

सिंदोरा—सज्ञा पु० [हिं० सिंधोरा] लकडी की एक डिबिया जिसमे स्त्रियाँ सिंदूर रखती हैं।

विशेष—यह सौभाग्य की सामग्री मानी जाती है।

सिंध[1]—सज्ञा पु० [स० सिन्धु] भारत के पश्चिम प्रात का एक प्रदेश जो बवई प्रात के अतर्गत था। अब यह पाकिस्तान का एक प्रात है।

सिंध[2]—सज्ञा स्त्री० १ पजाब की एक प्रधान नदी। २ भैरव राग की एक रागिनी।

सिंधव—सज्ञा पु० [स० सैन्धव] दे० 'सैंधव'। उ०—(क) सिंधव फटिक पषान का, ऊपर एकइ रग। पानी माहैं देखिए, न्यारा न्यारा अग।—दादूदयाल (शब्द०)। (ख) सिंधव झप आराम मधि ते आज हेरायो श्याम। सूर (शब्द०)।

सिंधवी—सज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धु] एक रागिनी।

विशेष—यह रागिनी आभीरी और आशावरी के मेल से बनी मानी जाती है। इसका स्वरूप कान पर कमल का फूल रखे, लाल वस्त्र पहने, क्रुद्ध और हाथ मे त्रिशूल लिए कहा गया है। हनुमत के मत से इस रागिनी का स्वरग्राम यह है—सा रे ग म प ध नि सा अथवा सा ग म प ध नि सा।

सिंधसागर—सज्ञा पु० [स० सिन्धसागर] पजाब मे एक दोआब। झेलम और सिंधु नदी के बीच का प्रदेश।

सिंधारा†—सज्ञा पु० [देश०] श्रावण मास के दोनो पक्षो की तृतीया को लडकी की सुसराल मे भेजा हुआ पकवान आदि।

सिंधी[1]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिंध + ई (प्रत्य०)] सिंध देश की बोली या भाषा।

विशेष—यह समस्त सिंध प्रात और उसके आसपास लास बेला, कच्छ और बहावलपुर आदि रियासतो के कुछ भागो मे बोली जाती है। इसमे फारसी और अरबी भाषा के बहुत अधिक शब्द मिल गए हैं। यह लिखी भी एक प्रकार की अरबी फारसी लिपि मे ही जाती है। इसमे 'सिरैकी', 'लारी' और 'थरेली' तीन मुख्य बोलियाँ हैं। पश्चिमी पजाब की भाषा के समान इसमे भी दो स्वरो के बीच मे कहीं कहीं 'त' पाया जाता है।

सिंधी[2]—वि० सिंध देश का। सिंध देश सबधी।

सिंधी[3]—सज्ञा पु० १ सिंध देश का निवासी। २ सिंध देश का घोडा जो बहुत तेज और मजबूत होता है। अत्यत प्राचीन काल से सिंध घोडे की नस्ल के लिये प्रसिद्ध है।

सिंधु[1]—सज्ञा पु० [स० सिन्धु] १ नद। नदी। २ एक प्रसिद्ध नद जो पजाब के पश्चिम भाग मे है। ३ समुद्र। सागर। ४ चार की सख्या। ५ सात की सख्या। ६ वरुण देवता। ७ सिंध प्रदेश। ८ सिंध प्रदेश का निवासी। ९ ओठो का गीलापन। ओष्ठ की आर्द्रता। १० हाथी के सूँड से निकला हुआ पानी। ११ हाथी का मद। गजमद। १२ श्वेत टकण। खूब साफ सोहागा। १३ सिंदुवार का पौधा। निर्गुंडी। १४ सपूर्ण जाति का एक राग।

विशेष—यह राग मालकोश का पुत्र माना जाता है। इसमे गाधार और निषाद दोनों स्वर कोमल लगते हैं। इसके गाने का समय दिन को १० दड से १६ दड तक है।

१५ गंधर्वों के एक राजा का नाम। १६ वरुण का एक नाम (को०)। १७ विष्णु का एक नाम (को०)। १८ एक नागराज (को०)। १९ बाढ। प्लावन (को०)।

सिंधु³—संज्ञा स्त्री० १ नदी। सरिता। २ दक्षिण की एक छोटी नदी जो यमुना में मिलती है।

सिंधुक—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुक] निर्गुंडी। सँभालु वृक्ष।

सिंधुक²—वि० १ समुद्र में उत्पन्न। समुद्र का। समुद्र संबंधी। २ सिंध प्रदेश का (को०)।

सिंधुकन्या—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धुकन्या] लक्ष्मी।

सिंधुकफ—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुकफ] समुद्रफेन।

सिंधुकर—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुकर] श्वेत टंकण। सोहागा।

सिंधुकालक—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुकालक] नैऋत्य कोण के एक प्रदेश का प्राचीन नाम।

सिंधुखेल—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धु खेल] सिंध प्रदेश।

सिंधुज¹—वि० [सं० सिन्धुज] १ समुद्र में उत्पन्न। २ सिंध देश में होनेवाला। ३ नदी से उत्पन्न (को०)। ४ जलोत्पन्न। जल में या जल से उत्पन्न (को०)।

सिंधुज²—संज्ञा पुं० १ सेंधा नमक। २ शंख। उ०—जाके क्रोध भूमि जल पटके कहा कहेगो सिंधुज पानी।—सूर (शब्द०)। ३ पारद। पारा। ४ सोहागा। ५ समुद्र का पुत्र, चंद्रमा (को०)।

सिंधुजन्मा—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुजन्मन्] १ चंद्रमा। २ सेंधा नमक।

सिंधुजन्मा—वि० दे० 'सिंधुज १'।

सिंधुजा—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धुजा] १ समुद्र से उत्पन्न, लक्ष्मी। उ०—चौर ढारत सिंधुजा जय शब्द बोलत सिद्ध। नारदादिक विप्र मान अशेष भाव प्रसिद्ध।—केशव (शब्द०)। २ सीप जिससे मोती निकलता है।

सिंधुजात—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुजात] १ सिंधी घोड़ा। २ मोती।

सिंधुड़ा—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धु] एक रागिनी जो मालव राग की भार्या मानी जाती है।

सिंधुतीरसंभव—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुतीरसम्भव] सुहागा।

सिंधुदेश—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुदेश] सिंध नाम का देश।

सिंधुनंदन—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुनन्दन] (समुद्र का पुत्र) चंद्रमा।

सिंधुनाथ—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुनाथ] नदियों का पति या स्वामी। समुद्र (को०)।

सिंधुपति—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुपति] दे० 'सिंधुराज'।

सिंधुपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धुपर्णी] गंभारी वृक्ष।

सिंधुपिब—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुपिब] अगस्त्य ऋषि का एक नाम, जो समुद्र पी गए थे।

सिंधुपुत्र—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुपुत्र] १ चंद्रमा। २ तिंदुक की जाति का एक पेड़।

सिंधुपुलिंद—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुपुलिन्द] एक जनपद का नाम (को०)।

सिंधुपुष्प—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुपुष्प] १ शंख। २ कदंब। कदम। ३ मौलसिरी। बकुल।

सिंधुप्रसूत—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुप्रसूत] सेंधा नमक।

सिंधुमंथ—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुमन्थ] १ पर्वत। २ समुद्रमंथन।

सिंधुमंथज—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुमन्थज] सेंधा नमक।

सिंधुमाता—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धुमातृ] नदियों की माता, सरस्वती।

सिंधुमुख—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुमुख] नदी का मुहाना। नदी का संगम स्थल (को०)।

सिंधुर—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुर] [स्त्री० सिंधुरा] १ हस्ती। हाथी। उ०—चली संग वनराज के, रमे एक वन ग्राहि। सिंधुर यूथप बहुत तहँ, निकसे तेहि वन माहि।—सबलसिंह (शब्द०)। २ आठ की संख्या।

सिंधुरद्वेषी—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुरद्वेषिन्] हाथी का शत्रु, सिंह।

सिंधुरमणि, सिंधुरमनि (पु)—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुरमणि] गजमुक्ता। उ०—पीत वसन कटि कलित कंठ सुंदर सिंधुरमनि माल। तुलसी (शब्द०)।

सिंधुरवदन—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुरवदन] गजवदन। गणेश। उ०—गुरु सुरसइ सिंधुरवदन, ससि सुरसरि सुरगाइ। सुमिरि चलहु मग मुदित मन होइहि सुकृत सहाइ।—तुलसी (शब्द०)।

सिंधुरागामिनि(पु)—वि० स्त्री० [सं० सिंधुरागामिनी] 'सिंधुरागामिनी'। हाथी की सी चालवाली। उ०—गावत चली सिंधुरागामिनि।—तुलसी (शब्द०)।

सिंधुरागामिनी—वि० स्त्री० [सं० सिन्धुरागामिनी] गजगामिनी।

सिंधुराज—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुराज] १ जयद्रथ का नाम। २ सेंधा नमक। ३ समुद्र (को०)।

सिंधुराव—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुराव] निर्गुंडी। सँभालू।

सिंधुल—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुल] राजा भोज के पिता का नाम।

सिंधुलताग्र—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुलताग्र] मूँगा। प्रवाल।

सिंधुलवण—संज्ञा पुं० [सं०] सेंधा नमक।

सिंधुवार—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुवार] १ सिंदुवार। निर्गुंडी। २ फारस या सिंध से खरीदा घोड़ा। ३ सिंध देश का अश्व (को०)।

सिंधुवारित—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुवारित] दे० 'सिंधुवार (को०)।

सिंधुवासी—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुवासिन्] सिंध देश का निवासी।

सिंधुविष—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुविष] हलाहल विष जो समुद्र मथने पर निकलता था। उ०—आसीविष, सिंधुविष पावक सों तो कछू हुतो प्रहलाद सो पिता को प्रेम छूट्यो है।—केशव (शब्द०)।

सिंधुवृष—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुवृष] विष्णु का एक नाम।

सिंधुवेषण—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुवेषण] गंभारी वृक्ष।

सिंधुशयन—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुशयन] विष्णु।

सिंधुसंगम—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धु सङ्गम] नदियों का संगम या समुद्र मिलन (को०)।

सिंधुसंभवा—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धुसम्भवा] फिटकिरी।

सिंधुसर्ज—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुसर्ज] शाल वृक्ष। साखू।

सिंधुसहा—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धुसहा] निर्गुंडी। सिंदुवार।

सिंधुसागर --संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुसागर] सिंधु नद तथा सागर के बीच का देश [को०]।

सिंधुसुत --संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुसुत] जलधर नामक राक्षस जिसे शिवजी ने मारा था। उ०--सिंधुसुत गर्व गिरि वज्र गौरीस भव दक्ष मख अखिल विध्वंसकर्ता।--तुलसी (शब्द०)।

सिंधुसुता--संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धुसुता] १ लक्ष्मी। २ सीप।

सिंधुसुतासुत--संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धुसुतासुत] सिंधुसुता, सीप का पुत्र अर्थात् मोती। उ०--सिंधुसुतासुत ता रिपु गमनी सुन मेरी तू बात।--सूर (शब्द०)।

सिंधुसौवीर--संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुसौवीर] सिंधुनद के आस पास बसनेवाली जाति [को०]।

सिंधूत्थ--संज्ञा पुं० [सं० सिन्धूत्थ] १ चंद्रमा। २ सेंधा नमक [को०]।

सिंधूद्भव--संज्ञा पुं० [सं० सिन्धूद्भव] सेंधा नमक [को०]।

सिंधूपल--संज्ञा पुं० [सं० सिन्धूपल] सेंधा नमक [को०]।

सिंधूरा--संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुर] संपूर्ण जाति का एक राग जो हिंडोल राग का पुत्र माना जाता है।

विशेष--यह वीर रस का राग है। इसमे ऋषभ और निषाद स्वर कोमल लगते है। इसके गाने का समय दिन मे ११ दंड से १५ दंड तक है।

सिंधूरी--संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धुर + हिं० ई] एक रागिनी जो हिंडोल राग की पुत्रवधू मानी जाती है।

सिंधोरा, सिँधोरा--संज्ञा पुं० [हिं० सिंदूर + ओरा (प्रत्य०)] सिंदूर रखने का लकडी का पात्र जो कई आकार का बनता है। उ०--गृहि ते निकरी सती होन को देखन को जग दौरा। अब तो जरे मरे बनि आई लीन्हा हाथ सिंधोरा।--कबीर (शब्द०)।

सिँधोरिया†--संज्ञा स्त्री० [हिं० सिंदूर + इया (प्रत्य०)] १ सिंदूर रखने की छोटी डिबिया। दे० 'सिंदूरिया'।

सिंधोरी, सिँधोरी(पु)--संज्ञा स्त्री० [हिं० सिंदूर] सिंदूर रखने की काठ की डिबिया। दे० 'सिंधोरा'। उ०--काहू हाथ चंदन के खोरी। कोइ सेंधूर कोइ गहे सिंधोरी।--जायसी (शब्द०)।

सिंपा†--संज्ञा स्त्री० [सं० शम्पा] विद्युत्। बिजली। उ०--खुरतालु के भभके मत सिंपा के मिलाव।--रघु० रू०, पृ० २५०।

सिंपी(पु)†--संज्ञा पुं० [सं० सीविन् (= सीनेवाला, दर्जी)] सीवक। छीपी। दर्जी। उ०--मन मेरी सुई तन मेरो धागा। खेचर जी के चरन पर नामा सिंपी लागा।--दक्खिनी०, पृ० १८।

सिंब--संज्ञा पुं० [सं० शिम्ब] दे० 'शिंब'।

सिंबा--संज्ञा स्त्री० [सं० सिम्बा] १ शिंबी धान। शमी धान्य। २ नखी नामक गंध द्रव्य। हट्टविलासिनी। ३ सोंठ। ४ फली। छीमी (को०)। ५ सेम (को०)।

सिंबिजा--संज्ञा स्त्री० [सं० सिम्बिजा] द्विदल जातीय अन्न [को०]।

सिंबी--संज्ञा स्त्री० [सं० सिम्बी] १ छीमी। फली। २ सेम। निष्पावी। ३ वन मूँग।

सिंभ(पु)--संज्ञा पुं० [सं० शम्भु] दे० 'सिंभु'।

सिंभालू--संज्ञा पुं० [सं० सम्भालू] सिंदुवार। निर्गुंडी।

सिंभु(पु)--संज्ञा पुं० [सं० शम्भु] शिव। शंकर। उ०--धरचो तन वस्त्र सुकोर कुआर। मँडी जनु सिंभु मनम्मथ रार।--पृ० रा०, १४।६१।

सिंमृति†--संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] स्मृति ग्रंथ। उ०--गुर मति वेद सिंमृति अभ्यास।--प्राण०, पृ० २२८।

सिंसप--संज्ञा पुं० [सं० शिंशपा] दे० 'शिंशपा'।

सिंसपा--संज्ञा स्त्री० [सं० शिंशपा] दे० 'शिंशपा'।

सिंसिपा--संज्ञा स्त्री० [सं० शिंशपा] दे० 'शिंशपा'। उ०--मरो सिंसिपा सीकम की शोभा शुभ झलकी।--श्यामा०, पृ० ३९।

सिंसुपा--संज्ञा स्त्री० [सं० शिंशपा] १ एक वृक्ष। शिंशपा। सीसम। उ०--जहँ सिंसुपा पुनीत तरु रघुबर किय विस्राम।--मानस, ५।१९८। २ अशोक (को०)।

सिंह--संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सिंहनी] १ बिल्ली की जाति का सबसे बलवान् पराक्रमी और भव्य जंगली जंतु जिसके नर वर्ग की गरदन पर बडे बडे बाल या केसर होते है। शेर बबर।

विशेष--यह जंतु अब संसार मे बहुत कम स्थानो मे रह गया है। भारतवर्ष के जंगलो मे किसी समय सर्वत्र सिंह पाए जाते थे, पर अब कही नही रह गए है। केवल गुजरात या काठियावाड की ओर कभी कभी दिखाई पड जाते है। उत्तरी भारत मे अंतिम सिंह सन् १८३९ मे दिखाई पडा था। आजकल सिंह केवल अफ्रिका के जंगलो मे मिलते है। इस जंतु का पिछला भाग पतला होता है, पर सामने का भाग अत्यंत भव्य और विशाल होता है। इसकी आकृति से विलक्षण तेज टपकता है और इसकी गरज बादल की तरह गूँजती है, इसी से सिंह का गर्जन प्रसिद्ध है। देखने मे यह बाघ की अपेक्षा शांत और गंभीर दिखाई पडता है और जल्दी क्रोध नहीं करता। रंग इसका ऊँट के रंग का सा और सादा होता है। इसके शरीर पर चित्तियाँ आदि नही होती। मुँह व्याघ्र की अपेक्षा कुछ लंबोतरा होता है, बिलकुल गोल नही होता। पूँछ का आकार भी कुछ भिन्न होता है। यह पतली होती है और उसके छोर पर बालो का गुच्छा सा होता है। सारे धड की अपेक्षा इसका सिर और चेहरा बहुत बडा होता है जो केसर या बालो के कारण और भी भव्य दिखाई पडता है। कवि लोग सदा से वीर या पराक्रमी पुरुष की उपमा सिंह से देते आए हैं। यह जंगल का राजा माना जाता है।

पर्या०--मृगराज। मृगेंद्र। केसरी। पंचानन। हरि। पंचास्य।

२. ज्योतिष मे मेष आदि बारह राशियो मे से पाँचवी राशि।

विशेष--इस राशि के अंतर्गत मघा, पूर्वा फाल्गुनी और उत्तरा फाल्गुनी के प्रथम पाद पडते है। इसका देवता सिंह और वर्ण पीतधूम्र माना गया है। फलित ज्योतिष मे यह राशि पित्त प्रकृति की, पूर्व दिशा की स्वामिनी, क्रूर और शब्दवाली कही गई है। इस राशि मे उत्पन्न होनेवाला मनुष्य क्रोधी, तेज चलनेवाला, बहुत बोलनेवाला, हँसमुख, चंचल और मत्स्यप्रिय बतलाया गया है।

३ वीरता या श्रेष्ठतावाचक शब्द। जैसे,--पुरुष सिंह। ४ छप्पय छंद का सोलहवाँ भेद जिसमे ५५ गुरु, ४२ लघु कुल ९७ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। ५ वास्तुविद्या मे प्रासाद का एक भेद जिसमे सिंह की प्रतिमा से भूषित बारह कोने होते

है। ६ रक्त शिग्रु। लाल सहिजन। ७ एक राग का नाम। ८ वर्त्तमान अवसर्पिणी के २४ वे अर्हत् का चिह्न जो जैन लोग रथयात्रा आदि के समय झडो पर बनाते है। ९ एक आभूषण जो रथ के बैलो के माथे पर पहनाते है। १० एक कल्पित पक्षी। ११ वेकट गिरि का एक नाम। १२ कृष्ण के एक पुत्र का नाम (को०)। १३ विद्याधरो का एक राजा (को०)।

**सिंहकर्ण**—सज्ञा पु० [स०] वास्तु की एक विशेष सज्जा। भवन के तोरण आदि पर बना वह ताखा या मुख जो सिंह की आकृति का हो (को०)।

**सिंहकर्णी**—सज्ञा स्त्री० [स०] बाण चलाने मे दाहिने हाथ की एक मुद्रा।

**सिंहकर्मा**—सज्ञा पु० [स० सिंहकर्मन्] सिंह के समान वीरता से काम करनेवाला। वीर पुरुष।

**सिंहकेतु**—सज्ञा पु० [स०] एक बोधिसत्व का नाम।

**सिंहकेलि**—सज्ञा पु० [स०] प्रसिद्ध बोधिसत्व मजुश्री का एक नाम।

**सिंहकेशर, सिंहकेसर**—सज्ञा पु० [स०] १ सिंह की गरदन के बाल। २ मौलसिरी। वकुल वृक्ष। ३ एक प्रकार की मिठाई। सूतफेनी। काता।

**सिंहग**—सज्ञा पु० [स०] शिव का एक नाम।

**सिंहगर्जन**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सिंहनाद'।

**सिंहग्रीव**—वि० [स०] सिंह के समान गर्दनवाला (को०)।

**सिंहघोष**—सज्ञा पु० [स०] एक बुद्ध का नाम।

**सिंहचित्रा**—सज्ञा स्त्री० [स०] मषवन। माषपर्णी।

**सिंहच्छदा**—सज्ञा स्त्री० [स०] सफेद दूब।

**सिंहतल**—सज्ञा पु० [स०] अजलि। अँजुरी (को०)।

**सिंहताल, सिंहतालाख्य**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सिंहतल' (को०)।

**सिंहतुड**—सज्ञा पु० [स० सिंहतुण्ड] १ सेहुँड। स्नुही। थूहर। २ एक प्रकार की मछली।

**सिंहतुडक**—सज्ञा पु० [स० सिंहतुण्डक] एक मत्स्य। सिंहतुड (को०)।

**सिंहदष्ट्र**—सज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार का बाण। २ शिव का एक नाम। ३ एक असुर (को०)।

**सिंहदर्प**—वि० [स०] सिंह के समान गर्ववाला (को०)।

**सिंहद्वार**—सज्ञा पु० [स०] प्रासाद का मुख्य द्वार या सदर फाटक जहाँ सिंह की मूर्ति बनी हो। उ०—सिंहद्वार आरती उतारत यशुमति आनँदकद।—सूर (शब्द०)।

**सिंहद्वीप**—सज्ञा पुं० [स०] एक द्वीप का नाम (को०)।

**सिंहध्वज**—सज्ञा पु० [स०] एक बुद्ध का नाम।

**सिंहध्वनि**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सिंह की गर्जना। २ युद्धघोष। रणनाद (को०)।

**सिंहनदन**—सज्ञा पु० [स० सिंहनन्दन] सगीत मे ताल के साठ मुख्य भेदो मे से एक।

**सिंहनर्दी**—वि० [स० सिंहनर्दिन्] सिंह के समान नाद करनेवाला (को०)।

**सिंहनाद**—सज्ञा पु० [स०] १ सिंह की गरज। २ युद्ध मे वीरो की ललकार। युद्धघोष। रणनाद। ३. सत्यता के निश्चय के कारण किसी बात का निःशक कथन। जोर देकर कहना। ललकार के कहना। ४ एक प्रकार का पक्षी। ५ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे सगण, जगण, सगण, सगण और एक गुरु होता है। कलहस। नदिनी। उ०—सजि सी सिंगार कलहस गती सी। चलि आइ राम छवि मडप दीसी। ६ सगीत मे एक ताल। ७ शिव का एक नाम। ८ बौद्ध-सिद्धातपरक ग्रथो का पाठ (को०)। ९ एक असुर (को०)। १० रावण के एक पुत्र का नाम।

**सिंहनादक**—सज्ञा पु० [स०] १ सिंघा नामक बाजा। २ सिंह की गरज। सिंहनाद (को०)। ३ युद्धघोष (को०)।

**सिंहनाद गुग्गुल**—सज्ञा स्त्री० [स०] एक यौगिक औषध जिसमे प्रधान योग गुग्गुल का रहता है।

**सिंहनादिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] जवासा। धमासा। दुरालभा। हिंगुआ।

**सिंहनादी**[1]—वि० [स० सिंहनादिन्] [स्त्री० सिंहनादिनी] सिंह के समान गरजनेवाला।

**सिंहनादी**[2]—सज्ञा पुं० एक बोधिसत्व का नाम।

**सिंहनी**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सिंह की मादा। शेरनी। २ एक छद का नाम।

विशेष—इसके चारो पदो मे क्रम से १२, १८, २० और २२ मात्राएँ होती हैं। अत मे एक गुरु और २०, २० मात्राओ पर १ जगण होता है। इसके उलटे को गाहिनी कहते है।

**सिंहपत्रा**—सज्ञा स्त्री० [स०] माषपर्णी।

**सिंहपर्णी**—सज्ञा स्त्री० [स०] अडूसा। वासक।

**सिंहपिप्पली**—सज्ञा स्त्री० [स०] सैहली।

**सिंहपुच्छ**—सज्ञा पु० [स० पिठवन] पृश्निपर्णी।

**सिंहपुच्छिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सिंहपुष्पी'।

**सिंहपुच्छी**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ चित्रपर्णी। २ जगली उरद। माषपर्णी। ३ पृश्निपर्णी। पिठवन (को०)।

**सिंहपुरुष**—सज्ञा पु० [स०] जैनियो के नौ वासुदेवो मे से एक वासुदेव।

**सिंहपुष्पी**—सज्ञा स्त्री० [स०] पिठवन। पृश्निपर्णी।

**सिंहपौर**—सज्ञा पु० [स० सिंह + हिं० पौर] सिंहद्वार। प्रासाद का सदर फाटक (जिसपर सिंह की मूर्त्ति बनी हो)। उ०—भीर जानि सिंहपौर तियन की यशुमति भवन दुराई।—सूर (शब्द०)।

**सिंहप्रगर्जन**—वि० [स०] सिंह की तरह गरजनेवाला (को०)।

**सिंहप्रगर्जित**—सज्ञा पु० [स०] सिंह की गरज। सिंहनाद (को०)।

**सिंहप्रणाद**—सज्ञा पु० [स०] युद्धघोष। रणनाद। ललकार (को०)।

**सिंहमल**—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार की धातु या पीतल। पचलौह।

**सिंहमाया**—सज्ञा स्त्री० [स०] सिंह की माया। सिंह की आकृति का भ्रम या वहम।

सिंहमुख—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव के एक गण का नाम। २ वह जिसका मुख सिंह के समान हो (को०)।

सिंहमुखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बाँस। २ अडूसा। वासक। ३ वन उरद। जंगली उडद। ४ खारी मिट्टी। ५ कृष्ण निर्गुंडी। काला सँभालू।

सिंहयाना, सिंहरथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] (सिंह जिसका वाहन हो) दुर्गा।

सिंहरव—संज्ञा पुं० [सं०] सिंहनाद। सिंह का गर्जन।

सिंहल—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक द्वीप जो भारतवर्ष के दक्षिण में है और जिसे लोग रामायणवाली लंका अनुमान करते हैं।

विशेष—जान पडता है कि प्राचीन काल में इस द्वीप में सिंह बहुत पाए जाते थे, इसी से यह नाम पडा। रामेश्वर के ठीक दक्षिण पडने के कारण लोग सिंहल को ही प्राचीन लंका अनुमान करते हैं। पर सिंहलवासियों के बीच न तो यह नाम ही प्रसिद्ध है और न रावण की कथा ही। सिंहल के दो इतिहास पाली भाषा में लिखे मिलते हैं—महावंसो और दीपवंसो, जिनसे वहाँ किसी समय यक्षों की बस्ती होने का पता लगता है। रावण के संबंध में यह प्रसिद्ध है कि उसने लंका से अपने भाई यक्षों को निकालकर राक्षसों का राज्य स्थापित किया था। बंग देश के विजय नामक एक राजकुमार का सिंहल विजय करना भी इतिहासों में मिलता है। ऐतिहासिक काल में यह द्वीप स्वर्णभूमि या स्वर्णद्वीप के नाम से प्रसिद्ध था, जहाँ दूर देशों के व्यापारी मोती और मसाले आदि के लिये आते थे। प्राचीन अरब स्वर्ण द्वीप को 'सरनदीब' कहते थे। रत्नपरीक्षा के ग्रंथों में सिंहल द्वीप मोती, मानिक और नीलम के लिये प्रसिद्ध पाया जाता है। भारतवर्ष के कलिंग, ताम्रलिप्ति आदि प्राचीन बंदरगाहों से भारतवासियों के जहाज बराबर सिंहल, सुमात्रा, जावा आदि द्वीपों की ओर जाते थे। गुप्तवंशीय चंद्रगुप्त (सन् ४०० ईसवी) के समय फाहियान नामक जो चीनी यात्री भारतवर्ष में आया था, वह हिंदुओं के ही जहाज पर सिंहल होता हुआ चीन को लौटा था। उस समय भी यह द्वीप स्वर्णद्वीप या सिंहल ही कहलाता था, लंका नहीं। इधर की कहानियों में सिंहलद्वीप पद्मिनी स्त्रियों के लिये प्रसिद्ध है। यह प्रवाद विशेषत गोरखपंथी साधुओं में प्रसिद्ध है जो सिंहल को एक प्रसिद्ध पीठ मानते हैं। उनमें कथा चली आती है कि गोरखनाथ के गुरु मत्स्येंद्र नाथ (मछंदरनाथ) सिद्ध होने के लिये सिंहल गए, पर पद्मिनियों के जाल में फँस गए। जब गोरखनाथ गए तब उनका उद्धार हुआ। वास्तव में सिंहल के निवासी बिलकुल काले और भद्दे होते हैं। वहाँ इस समय दो जातियाँ बसती हैं—उत्तर की ओर तो तामिल जाति के लोग और दक्षिण की ओर आदिम सिंहली निवास करते हैं।

२ सिंहल द्वीप का निवासी। ३ टीन। रंग। राँगा (को०)। ४ एक धातु पीतल (को०)। ५. छाल। वल्कल (को०)। ६ पीपर। पिप्पली (को०)।

सिंहलक¹—वि० [सं०] सिंहल संबंधी।

सिंहलक²—संज्ञा पुं० १. पीतल। २ दारचीनी। ३ सिंहल द्वीप (को०)।

सिंहलद्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] सिंहल नाम का टापू जो भारत के दक्षिण में है। विशेष दे० 'सिंहल'।

सिंहलद्वीपी—वि० [सं० सिंहलद्वीपिन्] १ सिंहल द्वीप में होनेवाला। २ सिंहलद्वीप का निवासी। उ०—कनक हाट सब कुहकुह लीपी। बैठ महाजन सिंहलद्वीपी।—जायसी (शब्द०)।

सिंहलस्थ—वि० [सं०] [स्त्री० सिंहलस्था] सिंहल निवासी।

सिंहलस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] सैंहली। सिंहली पीपल।

सिंहलांगुली—संज्ञा स्त्री० [सं० सिंहलाङ्गुली] पिठवन। पृश्निपर्णी।

सिंहला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सिंहल द्वीप। लंका। २ राँगा। ३ पीतल। ४ छाल। वल्कल। ५ दारचीनी।

सिंहलास्थान—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का ताड जो दक्षिण में होता है।

सिंहली¹—वि० [हिं० सिंहल + ई (प्रत्य०)] १ सिंहल द्वीप का। २ सिंहल द्वीप का निवासी।

विशेष—सिंहली काले और भद्दे होते हैं। वे अधिकांश हीनयान शाखा के बौद्ध हैं। पर बहुत से सिंहली मुसलमान भी हो गए हैं।

सिंहली²—संज्ञा स्त्री० १ सिंहली पीपल। २ सिंहल की बोली या भाषा (को०)।

सिंहली पीपल—संज्ञा स्त्री० [सं० सिंहपिप्पली] एक लता जिसके बीज दवा के काम में आते हैं।

विशेष—यह सिंहल द्वीप के पहाडों पर उत्पन्न होती है। इसका रंग और रूप साँप के समान होता है और बीज लंबे होते हैं। यह चरपरी गरम तथा कृमि रोग, कफ, श्वास और वात की पीडा को दूर करनेवाली कही गई है।

सिंहलील—संज्ञा पुं० [सं०] १ संगीत में एक ताल। २ कामशास्त्र में एक रतिबंध।

सिंहवक्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] सिंह का मुख। २ एक राक्षस का नाम। ३ एक नगर (को०)।

सिंहवत्स—संज्ञा पुं० [सं०] एक नाग का नाम (को०)।

सिंहवदना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अडूसा। २ माषपर्णी। वनउडदी। ३ खारी मिट्टी।

सिंहवल्लभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अडूसा।

सिंहवाह—वि० [सं०] जो सिंह पर सवार हो।

सिंहवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] १ सिंह पर चढने या सवारी करनेवाला। २ शिव का एक नाम (को०)।

सिंहवाहना—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा देवी।

सिंहवाहिनी¹—वि० स्त्री० [सं०] सिंह पर चढनेवाली। उ०—सकल सिंगार करि सोहै आजु सिंहोदरी सिंहासन बैठी सिंहवाहिनी भवानी सी।—देव (शब्द०)।

सिंहवाहिनी[1]—संज्ञा स्त्री० दुर्गादेवी जिनका वाहन सिंह है। उ०—रूप रस एवी महादेवी देवदेवन की सिहासन बैठी सौ है सोहै सिंहवाहिनी।—देव (शब्द०)।

सिहवाही—वि० पुं० [सं० सिंहवाहिन्] दे० 'सिंहवाह'।

सिंहविक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] १ घोडा। २ सगीत मे एक ताल। ३ चद्रगुप्त नरेश का एक नाम (को०)। ४ एक विद्याधर राज (को०)।

सिंहविक्रांत[1]—संज्ञा पुं० [सं० सिंहविक्रान्त] १ सिंह की चाल। २ अश्व। घोडा। ३ दो नगण और सात या सात से अधिक यगणो के दडक का एक नाम।

सिंहविक्रांत[2]—वि० सिंह के समान पराक्रमवाला (को०)।

यौ०—सिंहविक्रात गति = सिंह के समान गमन करनेवाला। सिंहविक्रातगामिता सिंहविक्रातगामी = दे० 'सिंहविक्रातगति'।

सिंहविक्रांतगामिता—संज्ञा स्त्री० [सं० सिंहविक्रान्तगामिता] बुद्ध के अस्सी अनुव्यजनो (छोटे लक्षणो) मे से एक।

सिंहविक्रीड़—संज्ञा पुं० [सं० सिंहविक्रीड] दडक का एक भेद जिसमे ६ से अधिक यगण होते हैं।

सिंहविक्रीडित—संज्ञा पुं० [सं० सिंहविक्रीडित] १ सगीत मे एक ताल। २ एक प्रकार की समाधि। ३ एक बोधिसत्व का नाम। ४ एक छद का नाम।

सिंहविजृंभित—संज्ञा पुं० [सं० सिंहविजृम्भित] एक प्रकार की समाधि (बौद्ध)।

सिंहविन्ना—संज्ञा स्त्री० [सं०] मापपर्णी।

सिंहविष्कंभित—संज्ञा पुं० [सं० सिंहविष्कम्भित] एक प्रकार की समाधि (को०)।

सिंहविष्टर—संज्ञा पुं० [सं०] सिंहासन (को०)।

सिंहवृंता—संज्ञा स्त्री० [सं० सिंहवृन्ता] वन उडदी। मापपर्णी।

सिंहशाव, सिंहशावक, सिंहशिशु—संज्ञा पुं० [सं०] सिंह का शिशु या छौना (को०)।

सिंहसहनन[1]—वि० [सं०] १ सिंह के समान शक्ति या बलयुक्त। २ सुदर। सुरूप। रूपवान (को०)।

सिंहसनहन[2]—संज्ञा पुं० सिंह का हनन (को०)।

सिंहसावक(पु)—संज्ञा पुं० [सं०] सिंह का बच्चा। उ०—सिंहसावक ज्यों तजै गृह, इद्र आदि डेरात।—सूर०, १।१०६।

सिंहस्कंध—वि० [सं० सिंहस्कन्ध] सिंह के समान कधोवाला (को०)।

सिंहस्थ—वि० [सं०] १ सिंह राशि मे स्थित (बृहस्पति)। २ एक पर्व जो बृहस्पति के सिंह राशि मे होने पर होता है।

विशेष—सिंहस्थ बृहस्पति मे विवाह आदि शुभ कार्य वर्जित है।

सिंहस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

सिंहहनु[1]—संज्ञा पुं० [सं०] सिंह के समान दाढ या दाढ की हड्डी जो कि बुद्ध के बत्तीस प्रधान लक्षणो मे से एक है।

सिंहहनु[2]—वि० जिसकी दाढ सिंह के समान हो।

सिंहहनु[3]—संज्ञा पुं० गौतम बुद्ध के पितामह का नाम।

सिंहा[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नाडी शाक। करेमू। २ भटकटैया। कटाई। कटकारी। ३. बृहती। वनभटा। ४ नाडी (को०)।

सिंहा[2]—संज्ञा पुं० १. नाग देवता। २ सिंह लग्न। ३ वह समय जब तक सूर्य इस लग्न मे रहता है।

सिंहाचल—संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत (को०)।

सिंहाटक—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गाटक] चतुष्पथ। चौराहा। उ०—और बनारस के बाहर सिंहाटक (चौराहे) पर मृगमास बिकने का उल्लेख है।—हिंदु० सभ्यता, पृ०, २९९।

सिंहाढ्य—वि० [सं०] सिंहो मे सकुल या भरा हुआ (को०)।

सिंहाण—संज्ञा पुं० [सं०] १. नाक का मल। नकटी। रेंट। २. लोहे का मुरचा। जग।

सिंहाणक—संज्ञा पुं० [सं०] १. नाक का मल। नकटी। रेंट। २ लोहे का मुरचा। जग (को०)।

सिंहान—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सिंहाण'।

सिंहानक—संज्ञा पुं० [सं० सिंहाणक] दे० 'सिंहाणक'।

सिंहानन—संज्ञा पुं० [सं०] १ कृष्ण निर्गुडी। काला सँभालू। २. वासक। अडूसा।

सिंहारहार(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हार+शृङ्गार] दे० हरसिंगार (को०)।

सिंहाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] सिंहली पीपल।

सिंहावलोक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का वृत्त। दे० 'सिंहावलोकन'—३।

सिंहावलोकन—संज्ञा पुं० [सं०] १ सिंह के समान पीछे देखते हुए आगे बढना। २ आगे बढने के पहले पिछली बातो का सक्षेप मे कथन। ३ पद्यरचना की एक युक्ति जिसमे पिछले चरण के अत के कुछ शब्द या वाक्य लेकर अगला चरण चलता है। उ०—गाय गोरी सोहनी सुराग बाँसुरी के बीच कानन सुहाय मार मत्र को सुनायगो। नायगो री नेह डोरी मेरे गर मे फँसाय हिरदै थल बीच चाय वेलि को बँधायगो।—दीनदयाल (शब्द०)।

सिंहावलोकित—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सिंहावलोकन'।

सिंहासन—संज्ञा पुं० [सं०] १ राजा या देवता के बैठने का आसन या चौकी।

विशेष—यह प्राय काठ, सोने, चाँदी, पीतल आदि का बना होता है। इसके हत्थो पर सिंह का आकार बना होता है।

२ कमल के पत्ते के आकार का बना हुआ देवताओ का आसन। ३. सोलह रतिबधो के अतर्गत चौदहवाँ बध। ४ मडूर। लौहकिट्ट। ५ दोनो भौंहो के बीच मे बैठकी के आकार का चदन या रोली का तिलक।

सिंहासनचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्योतिप मे मनुष्य के आकार का सत्ताइस कोठो का एक चक्र जिसमे नक्षत्रो के नाम भरे रहते हैं।

**सिहासनत्रय**—सज्ञा पु० [सं०] ज्योतिष का एक चक्र (को०)।

**सिहासनच्युत, सिहासनभ्रष्ट**—वि० [सं०] सिहासन से हटाया हुआ। राज्यच्युत (को०)।

**सिहासनयुद्ध, सिहासनरण**—सज्ञा पुं० [सं०] राज्यसिहासन की प्राप्ति के लिये होनेवाला सग्राम।

**सिंहासनस्थ**—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सिहासनस्था] सिंहासन पर स्थित। सिंहासन पर आसीन (को०)।

**सिहास्त्र**—सज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन अस्त्र (को०)।

**सिहास्य**—सज्ञा पुं० [सं०] १ वासक। अडूसा। २ कोविदार। कचनार। ३ एक प्रकार की बडी मछली। ४ हाथो की एक विशिष्ट मुद्रा (को०)।

**सिहास्या**—सज्ञा स्त्री० [स०] अडूसा (को०)।

**सिहिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक राक्षसी जो राहु की माता थी। उ०—जलधि लघन सिह सिंहिका मद मथन, रजनिचर नगर उत्पात केतू।—तुलसी (शब्द०)। (ख) ललित श्रीगोपाल लोचन स्याम शोभा दून। मनु मयकहि अक दीन्ही सिंहिका के सून।—सूर (शब्द०)।

**विशेष**—यह राक्षसी दक्षिण समुद्र मे रहकर उडते हुए जीवो की परछाई देखकर ही उनको खीचकर खाती थी। इसको लका जाते समय हनुमान ने मारा था।

**यौ०**—सिहिकाचित्तनन्दन, सिहिकातनय, सिहिकापुत्र, सिहिकासुत = सिंहिका का पुत्र, राहु।

२ शोभन छद का एक नाम। इसके प्रत्येक पद मे १४, १० के विराम से २४ मात्राएँ और अत मे जगण होता है। ३ दाक्षायणी देवी का एक रूप। ४ टेढे घुटनो की कन्या जो विवाह के अयोग्य कही गई है। ५ अडूसा। ६ वनभटा। ७ कटकारी।

**सिंहिकासूनु**—सज्ञा पु० [सं०] सिंहिका का पुत्र, राहु।

**सिहिकेय**—सज्ञा पुं० [सं०] (सिंहिका का पुत्र) राहु।

**सिहिनी**—सज्ञा स्त्री० [स० सिंहनी] मादा सिंह। शेरनी। उ०—श्वान सग सिंहिनी रति अजगुत वेद विरुद्ध असुर करै आइ। सूरदास प्रभु वेगि न आवहु प्राण गए कहा लैहौ आइ।—सूर (शब्द०)। २ बौद्धो के अनुसार एक देवी (को०)।

**सिही**—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ सिंह की मादा। शेरनी। उ०—सिंही की गोद से छीनता है शिशु कौन?—अपरा, पृ० १०। २ अडसा। ३. स्नुही। थूहर। ४ मुद्गपर्णी। ५ चद्रशेखर के मत से आर्या का पचीसवाँ भेद। इसमे ३ गुरु और ५१ लघु होते है। ६ बृहती लता। ७ सिंघा नाम का बाजा। ८ पीली कौडी। ९ धमनी। नस। नाडी (को०)। १० नाडी-शाक। करेमू। ११ राहु की माता सिंहिका।

**सिंहीलता**—सज्ञा स्त्री० [सं०] बैगन। भटा।

**सिहेश्वरी**—सज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

**सिहोड़**—सज्ञा पु० [सं० सेहुण्ड] दे० 'सेहुड' या 'थूहर'।

**सिहोदरी**—वि० स्त्री० [सं०] सिंह के समान पतली कमरवाली। उ०—सकल सिंगार करि सोहै आजु सिहोदरी सिहासन बैठी सिंह-वाहिनी भवानी सी।—देव० (शब्द०)।

**सिहोद्धता**—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सिहोन्नता' (को०)।

**सिहोन्नता**—सज्ञा स्त्री० [स०] वसततिलका वृत्त का दूसरा नाम। उ०—इसकी अन्य सज्ञाएँ उद्धर्षिणी, सिंहोन्नता, वसततिलक प्रभृति हैं। छद०, पृ० १९५।

**सिअनि**(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० सीवन, प्रा० सीवण, हिं० सीवन, सीअन] सिलाई। उ०—तुम्हरी कृपा सुलभ सोउ मोरे। सिअनि सोहावनि टाट पटोरें।—मानस, १।१४।

**सिअर**(पु)†—वि० [स० शीतल] दे० 'सिअरा'। उ०—मेलेसि चदन मकु खिनु जागा। अधिकौ सूत सिअर तन लागा।—जायसी ग्र० (गुप्त), पृ० २५२।

**सिअरा**(पु)[१]—वि० [स० शीतल, प्रा० सीअड] ठढा। शीतल। उ०—सिअरे बदन सूखि गए कैसे। परसत तुहिन ताम रस जैसे।—तुलसी (शब्द०)।

**सिअरा**—सज्ञा पुं० [सं० छाया, फा० सायह्] छाहँ। उ०—सिरसि टेपारो लाल नीरज नयन विसाल सुदर बदन ठाढे सुर तरु सिअरे।—तुलसी (शब्द०)।

**सिअरा**†[२]—सज्ञा पुं० [स० शृगाल, प्रा० सिआड] दे० 'सियार'।

**सिआना**—क्रि० स० [सं० सीव] दे० 'सिलाना'।

**सिआमग**—सज्ञा पु० [सं० श्यामाङ्ग (=काले शरीरवाला)] सुमात्रा द्वीप मे पाया जानेवाला एक प्रकार का बदर।

**सिआर**—सज्ञा पुं० [स० शृगाल, प्रा० सिआल] [स्त्री० सिआरी] शृगाल। गीदड। उ०—भयो चलत असगुन अति भारी। रवि के आछत फेकर सिआरी।—सबल सिंह (शब्द०)।

**सिउरना**‡—क्रि० स० [देश०] छाजन के लिये मुट्ठो को काडियो पर बिछाकर रस्सी से बाँधना।

**सिकजबीन**—सज्ञा स्त्री० [फा० सिकजुबीन] सिरके या नीबू के रस मे पका हुआ शरबत।

**विशेष**—यह शर्बत ठढा होता है और दवा के काम आता है। गर्मी के दिनो मे ठढक के लिये लोग इसे पीते है। यह सफरा और बलगम के लिये हितकर कहा गया है।

**सिकजा**—सज्ञा पुं० [फा० शिकजह्] दे० 'शिकजा'।

**सिकदर**—सज्ञा पु० [फा०] यूनान का एक प्रसिद्ध और प्रतापी नरेश जो मकदूनियाँ के राजा फिलिप्स (फैलकूस या फैलक्स) का पुत्र और अरस्तू का शागिद था। मिस्र, ईरान, अफगानिस्तान जय करता हुआ यह हिंदुस्तान तक आया था और इसने तक्षशिला और सिंध का कुछ अश भी जीत लिया था।

**सिकदरा**—सज्ञा पु० [फा० सिकदरा] रेल की लाइन के किनारे ऊँचे खभे पर लगा हुआ हाथ या डडा जो आती हुई गाडी की सूचना देता है। सिगनल।

**विशेष**—कथा प्रसिद्ध है कि सिकदर बादशाह जब सारी दुनिया जीतकर समुद्र पर भ्रमण करने गया, तब बडवानल के पास

पहुँचा। वही उसने जहाजियो को सावधान करने के लिये खभे के ऊपर एक हिलता हुआ हाथ लगवा दिया जो उधर जानेवाले यात्रियो को वरावर मना करता रहता है और 'सिकदरी भुजा' कहलाता है। इसी कहानी के अनुसार लोग सिगनल को भी 'सिकदरा' कहने लगे।

सिकदरी[2]—वि० [फा०] सिकदर का। सिकदर सबधी।

सिकदरी[3]—सज्ञा स्त्री० घोडे की ठोकर [को०]।

सिकटा†—सज्ञा पु० [देश०] [स्त्री० अल्पा० सिकटी] खपडे या मिट्टी के टूटे वरतनो का छोटा टुकडा।

सिकटी†—सज्ञा स्त्री० [देश०] छोटी ककडी या टुकडी।

सिकडी—सज्ञा स्त्री० [स० शृङखला] १ किवाड की कुडी। साँकल। जजीर। २ जजीर के आकार का सोने का गले मे पहनने का गहना। ३ करधनी। तागडी। ४ चारपाई मे लगी हुई वह दाँवनी जो एक दूसरी मे गूँथ कर लगाई जाती है।

सिकड़ी पनवाँ†—सज्ञा पु० [हिं० सिकडी + पान] गले मे पहनने की वह सिकडी जिसके बीच मे पान सी चौकी होती है।

सिकत पु—सज्ञा स्त्री० [स० सिकता] सिकता। रेत।

सिकता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वालू। रेत। उ०—वारि मथे घृत होइ वरु सिकता ते वरु तेल। विनु हरि भजन न भव तरिअ यह सिद्धात अपेल। तुलसी (शब्द०)। २ वलुई जमीन। ३ प्रमेह का एक भेद। अश्मरी। पथरी। ४ चीनी। शर्करा। ५ लोणिका या लोनी नामक शाक।

यौ०—सिकताप्राय = रेतीला तट। सिकतामय = (१) रेतीला तट। (२) रेतीला टापू। (३) रेतीला। सिकतामेह। सिकतावर्त्म। सिकता सेतु = वालू का वना बाँध।

सिकतामेह—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का प्रमेह जिसमे पेशाव के साथ वालू के से कण निकलते है।

सिकतावर्त्म—सज्ञा पु० [स० सिकतावर्त्मन्] आँख की पलको का एक रोग।

सिकतावान्—वि० [स० सिकतावत्] रेतीला। सिकतामय [को०]।

सिकतिल—सज्ञा स्त्री० [स०] रेतीला।

सिकतोत्तर—वि० [स०] रेतीभरा। वालुकामय। सिकतिल [को०]।

सिकत्तर†—सज्ञा पु० [अ० सेक्रेटरी] किसी सस्था या सभा का मत्री। सेक्रेटरी।

सिकर पु[1]—सज्ञा पु० [स० शृगाल] गीदड। सियार।

सिकर पु[2]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सीकड] जजीर। सिकडी।

सिकरवार—सज्ञा पु० [देश०] क्षत्रियो की एक शाखा। उ०—वीर वडगूजर जसाउत सिकरवार, होत असवार जे करत निरवार हैं।—सूदन (शब्द०)।

सिकरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिकडी] दे० 'सिकडी'।

सिकली—सज्ञा स्त्री० [अ० सैकल] धारदार हथियारो को माँजने और उनपर सान चढाने की क्रिया। उ०—सकल कवीरा वोलै वीरा अजहूँ हो हुसियारा। कह कवीर गुर सिकली दरपन हरदम करी पुकारा।—कवीर (शब्द०)।

सिकलीगढ—सज्ञा पु० [हिं० सिकली + फा० गर] दे० 'सिकलीगर'। उ०—वढई सगतराम विसाती। सिकलीगढ कहार की पाती।—गिरधरदास (शब्द०)।

सिकलीगर—सज्ञा पु० [अ० सैकल + फा० गर] तलवार और छुरी आदि पर वाढ रखनेवाला। सान धरनेवाला। चमक देनेवाला। उ०—यो छवि पावत है लखौ अजन आँजे नैन। सरस वाढ सैफन धरी जनु सिकलीगर मैन।—रसनिधि (शब्द०)।

सिकसोनी—सज्ञा स्त्री० [देश०] काक जघा।

सिकहर, सिकहरा—सज्ञा पुं० [स० शिक्य + धर] छीका। भीका। सीका।

सिकहुती, सिकहुली—सज्ञा स्त्री० [हिं० सीक + औती या औली (प्रत्य०)] मूँज, कास आदि की वनी छोटी डलिया।

सिकाकोल—सज्ञा स्त्री० [देश०] दक्षिण की एक नदी।

सिकार‡—सज्ञा पु० [फा० शिकार] दे० 'शिकार'। उ०—(क) कपहिं सिकार गज तुड डर सब विघन गनपति हरय।—पृ० रा०, ६।९८। (ख) खिल्लत सिकार पिय कुँअर डर पशु पीपर दल थरहरै।—पृ० रा०, ६।१००।

सिकारी—वि०, सज्ञा पु० [फा० शिकारी] दे० 'शिकारी'। उ०—मारत खोज सिकार सिकारी जे अति चातुर।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० २६।

सिकिलि पु—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिकली] दे० 'सिकली'। उ०—गुरु के भेद को पाइ कै सिकिलि करु।—पलटू०, पृ० १६।

सिकुडन—सज्ञा स्त्री० [स० सङ्कुचन, अथवा प्रा० सकुड, सकुडिअ] १ दूर तक फैली हुई वस्तु का सिमटकर थोडे स्थान मे होना। सकोच। आकुचन। २ वस्तु के सिमटने से पडा हुआ चिह्न। वल। शिकन। सिलवट।

सिकुडना—क्रि० अ० [स० सङ्कुचन] १ दूर तक फैली वस्तु का सिमटकर थोडे स्थान मे होना। सुकडना। आकुचित होना। वटुरना। २ सकीर्ण होना। तग होना। ३ वल पडना। शिकन पडना।

सयो० क्रि०—जाना।

सिकुरना पु†—क्रि० अ० [हिं० सिकुडना] दे० 'सिकुडना'।

सिकोड—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिकुडना] दे० 'सिकुडना'। उ०—वृद्ध अनुभव की सिकोड। वृथा मुझे सात्वना मत दो।—ग्रथि, पृ० ८४।

सिकोडना—क्रि० स० [हिं० सिकुडना] १ दूर तक फैली हुई वस्तु को समेट कर थोडे स्थान मे करना। सकुचित करना। २ समेटना। वटोरना। ३ सकीर्ण करना। तग करना।

सयो० क्रि०—देना।

सिकोरना पु†—क्रि० स० [हिं० सिकोडना] दे० 'सिकोडना'। उ०—सुनि अघ नरकहु नाक सिकोरी।—तुलसी (शब्द०)।

सिकोरा—सज्ञा पु० [हिं० कसोरा] दे० 'सकोरा या 'कसोरा'।

सिकोली—सज्ञा स्त्री० [देश०] वाँस के फट्टो, काम, मूँज, वेत आदि की वनी डलिया। उ०—प्रसादी जल की मथनी मे भारी ठलाय,

सिकोली मे वीडा ठलाय, कसेंडी मे चरणामृत ठलाय, पाछे पात्र सब धोय साजि के ठिकाने धरिए।—वल्लभ पु० (शब्द०)।

सिकोही—वि० [फा० शिकोह (तडक भडक)] १ ग्रानवानवाला। गर्वीला। दर्पवाला। २ वीर। बहादुर। उ०—तरवार सिरोही सोहती। लाख सिकोही कोहती।—गोपाल (शब्द०)।

सिक्कक—सज्ञा पु० [सं०] बाँसुरी मे लगाने की जीभी या उसके स्वर को मधुर बनाने के लिये लगाया हुआ तार।

सिक्कड—सज्ञा पु० [स० शृङखल] दे० 'सीकड'।

सिक्कर—सज्ञा पु० [हिं० सीकड] दे० 'सीकड'। उ०—ग्रकरि ग्रकरि करि डकरि डकरि वर पकरि पकरि कर सिक्कर फिरावते। —गोपाल (शब्द०)।

सिक्का—सज्ञा पुं० [ग्र० सिक्कह्] १ मुहर। मुद्रा। छाप। ठप्पा। २ रुपए, पैसे आदि पर की राजकीय छाप। मुद्रित चिह्न। ३ राज्य के चिह्न आदि से अकित धातु खड जिसका व्यवहार देश के लेन देन मे हो। टकसाल मे ढला हुग्रा धातु का टुकडा जो निर्दिष्ट मूल्य का धन माना जाता है। रुपया, पैसा, अशरफी आदि। मुद्रा।

मुहा०—सिक्का वैठना या जमना = (१) अधिकार स्थापित होना। प्रभुत्व होना। (२) आतक जमना। प्रधानता प्राप्त होना। रोब जमना। धाक जमना। सिक्का वैठाना या जमाना = (१) अधिकार स्थापित करना। प्रभुत्व जमाना। (२) आतक जमाना। प्रधानता प्राप्त करना। रोब जमाना। सिक्का पडना = सिक्का ढलना।

४ पदक। तमगा। ५ माल का वह दाम जिसमे दलाली न शामिल हो। (दलाल)। ६ मुहर पर ग्रक वनाने का ठप्पा। ७ नाव के मुँह पर लगी एक हाथ लबी लकडी। ८ लोहे की गावदुम पतली नली जिससे जलती हुई मशाल पर तेल टपकाते है। ९ वह धन जो लडकी का पिता लडके के पिता के पास सगाई पक्की होने के लिये भेजता है।

सिक्की—सज्ञा स्त्री० [ग्र० सिक्कह्] १ छोटा सिक्का। २ चार ग्राने (२५ पैसे) का सिक्का। चवन्नी। सूकी। ३ आठ ग्राने (पचास पैसे) का सिक्का। अठन्नी।

सिक्ख¹—सज्ञा पु० [स० शिष्य] दे० 'सिख³'।

सिक्ख²—सज्ञा स्त्री० [स० शिक्षा, प्रा० सिक्खा, हिं० सीख] दे० 'सिख¹'। उ०—दिल्ली जु सिक्ख तव सेख कौ, ग्रप्प ग्रप्प सिवरन गवय। —ह० रासो, पृ० ४३।

सिक्त—वि० [सं०] १ सिंचित। सीचा हुग्रा। २ भीगा हुग्रा। तर। गीला। ३ जिसे गर्भयुक्त किया गया हो। गर्भित (को०)।

सिक्तता—सज्ञा स्त्री० [स०] सिंचित होने या सीचे जाने की क्रिया या भाव [को०]।

सिक्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सीचने की क्रिया। २. उद्गारण। स्राव। निषेक। निषेचन (को०)।

सिक्थ—सज्ञा पुं० [सं०] १ उवाले हुए चावल का दाना। भात का एक दाना। सीथ। २ भात का ग्रास या पिड। ३ मोम। ४ मोतियो का गुच्छा (जो तौल मे एक धरण हो)। ३२ रत्ती तौल का मोतियों का समूह। ५ नील।

सिक्थक—सज्ञा पु० [सं०] दे० 'सिक्थ'।

सिक्य—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शिक्य' [को०]।

सिक्ष्य—सज्ञा पु० [सं०] स्फटिक। काँच। बिल्लौर [को०]।

सिखड—सज्ञा पु० [सं० शिखण्ड] मोर की पूँछ। मयूरपक्ष। उ०—सिरनि सिखड सुमन दल मडन वाल सुभाय वनाए।—तुलसी (शब्द०)।

सिखडी—सज्ञा पुं० [सं० शिखण्डी] दे० 'शिखडी'।

सिख¹—सज्ञा स्त्री० [स० शिक्षा, प्रा० सिक्खा, हिं० सीख] सीख। शिक्षा। उपदेश। उ०—(क) गुरु सिख देइ राय पहिं गएउ। —मानस, २।१०। (ख) राजा जु सो कहा कह्यो ऐसिन की सुनै सिख, साँपिनि सहित विष रहित फनिन की।—केशव (शब्द०)। (ग) कितीं न गोकुल कुल वधू, काहि न किहि सिख दीन। कौने तजी न कुल गली ह्वै मुरली सुर लीन।—बिहारी (शब्द०)।

सिख(पु)²—सज्ञा स्त्री० [स० शिखा] चोटी। जैसे,—नखसिख।

सिख³—सज्ञा पु० [स० शिष्य, प्रा० सिक्ख] १ शिष्य। चेला। २ गुरु नानक तथा गुरु गोविदसिंह आदि दस गुरुग्रो का अनुयायी सप्रदाय। नानकपथी। ३ वह जो सिख सप्रदाय का अनुयायी हो।

विशेष—इस सप्रदाय के लोग अधिकतर पजाब मे हैं।

यौ०—सिखपाल = शिष्य का पालन। उ०—गुरु है दीनदयाल करै सिखपाल सदाई। अखै भक्ति परसग सदा सेवक सुखदाई। —राम० धर्म०, पृ० १७५।

सिख इमलो—सज्ञा पुं० [हिं० सिख + ग्र० इल्म या इमला] भालू को नचाना सिखाने की रीति।

विशेष—कलदर लोग पहले हाथ मे एक लोहे की चूडी पहनते हैं और उसे एक लकडी से वजाते है। इसी के इशारे पर वे भालू को नचाना सिखाते है।

सिखना†—क्रि० स० [स० शिक्षण] दे० 'सीखना'।

सिखर¹—सज्ञा पु० [स० शिखर] १ शृग। दे० 'शिखर'। उ०—अरुन अधर दसननि दुति निरखत, विद्रुम सिखर लजाने। सूर स्याम ग्राछौ वपु काछे, पटतर मेटि विराने।—सूर०, १०।१७५६। २ मुकुट का किरीट।

सिखर²—सज्ञा पुं० [स० शिक्य + धर] दे० 'सिकहर'।

सिखरन—सज्ञा स्त्री० [स० श्रीखण्ड] दही मिला हुग्रा चीनी का शरवत जिसमे केसर, गरी आदि मसाले पडे हो। उ०—(क) वासौधी सिखरन ग्रति सोभी। मिलै मिरच मेटत चकचौधी।—सूर (शब्द०)। (ख) सिखरन सौंध छनाई काढी। जामा दही दूधि सो साढी।—जायसी (शब्द०)।

सिखरवद—वि० [स० शिखर + फा० वद (प्रत्य०)] शिखरयुक्त। कलशयुक्त। उ०—तव थोरी सी दूरि एक सिखरवद्य एक देहरा दीस्यो।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ०, १७८।

सिखरी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शिखरिन्] १ पहाड़।—अनेकार्थ०, पृ० ५३। २, मयूर। मोर।

सिखराना—क्रि० स० [हिं० सिखाना] दे० 'सिखाना'।

सिखवन—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षण, प्रा० सिक्खवण, सिक्खावण] शिक्षा। सीख। उ०—जो सिखवन समरथ का लेहो। ता काल हमार आगे करि देहो।—कबीर सा०, पृ० ६२८।

सिखवना(पु)†—क्रि० स० [प्रा० सिक्खवण] दे० 'सिखाना'।

सिखा—संज्ञा स्त्री० [सं० शिखा] दे० 'शिखा'।

सिखाना—क्रि० स० [सं० शिक्षण] १ शिक्षा देना। उपदेश देना। बतलाना। २ अध्ययन करना। पढाना। ३ धमकाना। दंड देना। ताडन करना।

यौ०—सिखाना पढाना = चालें बताना। चालाकी सिखाना। जैसे,—उसने गवाहों को सिखा पढा कर खूब पक्का कर दिया है।

सिखापन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षा + हिं० पन या सं० शिक्षापयन] १ शिक्षा। उपदेश। उ०—(क) साजि कै सिंगार ससिमुखी काज सजनी वैं ल्याई केलि मंदिर सिखापन निधानै सी।—प्रतापनारायण (शब्द०)। (ख) सचिव सिखापन मधुर सुनायौ। जुहित सदहूँ परनाम सुहायौ।—पद्माकर (शब्द०)। २ सिखाने का काम।

सिखावन—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षण या सं० शिक्षापयन] सीख। शिक्षा। उपदेश। उ०—(क) का मैं मरन सिखावन सिखी। आयो मरैं मीच हति लिखी।—जायसी (शब्द०)। (ख) उनको मैं यह दीन्ह सिखावन। थाहहु मध्यम कांड सुहावन।—विश्राम (शब्द०)।

सिखावना(पु)†—क्रि० स० [सं० शिक्षापयन] दे० 'सिखाना'।

सिखिर(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० शिखर] १ दे० 'शिखर'। २ पारस-नाथ पहाड जो जैनो का तीर्थ है।

सिखी—संज्ञा पुं० [सं० शिखिन्] दे० 'शिखी'। उ०—(क) धुनि सुनि उतै लिखी नाचै, सिखी नाचै इते, पी करै पपीहा उतै इते प्यारी सी करै।—प्रतापनारायण (शब्द०)। (ख) सिखी सिखर तनु धातु बिराजति सुमन सुगंध प्रवाल।—सूर (शब्द०)।

सिगता†—संज्ञा स्त्री० [सं०] सिकता। बालू। रेत।

सिगनल—संज्ञा पुं० [अं०] १ दे० 'सिकंदरा'। २ इशारा। संकेत।

सिगर—संज्ञा पुं० [अ० सिगर] बाल्यावस्था। बचपन।

यौ०—सिगरसिन = छोटी उम्र का। सिगरसिनी = शिशुता। बचपन। छोटाई।

सिगरा(पु)†[1]—वि० [सं० समग्र] [वि० स्त्री० सिगरी] सब। संपूर्ण। सारा। उ०—(क) त्यो पदमाकर साँझहीं ते सिगरी निशि केलि कला परगासी।—पद्माकर (शब्द०)। (ख) सिगरे जग माँझ हँसावत हैं। रघुबंसिन्ह पाप नसावत हैं।—केशव (शब्द०)।

सिगरा(पु)†[2]—संज्ञा पुं० [सं० सगुरु] सगुरा। दीक्षित। उ०—अरे हाँ रे पलटू निगरा सिगरा आहि कहो कोइ रोगी भोगी।—पलटू०, पृ० ७६।

सिगरेट—संज्ञा पुं० [अं०] तबाकू भरी हुई कागज की बत्ती जिसका धुआँ लोग पीते हैं। छोटा सिगार।

सिगरो, सिगरौ(पु)† वि० [सं० समग्र] दे० 'सिगरा'। उ०—(क) सिगरोई दूध पियो मेरे मोहन बलहिं न देपहु बाटी। सूरदास नँद लेहु दोहनी दुहहु लाल की नाटी।—सूर (शब्द०)। (ख) कुल मंडन छत्रसाल बुँदेला। आपु गुरु सिगरो जग चेला।—लाल कवि (शब्द०)।

सिगा—संज्ञा स्त्री० [फा० सेहगाह] संगीत मे चौबीस शोभाओं मे से एक।

सिगार—संज्ञा पुं० [अं०] चुरुट।

सिगिनल†—संज्ञा [अं० सिगनल] दे० 'सिकंदरा', 'सिगनल'। उ०—एक छोटा सा टुकडा बादल का भी सिगिनल सा झुका दिखाई देता है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १०।

सिगोती—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

सिगोन—संज्ञा स्त्री० [सं० सिगता, सिकता] नालो के पास पाई जाने-वाली लाल रेत मिली मिट्टी।

सिचय—संज्ञा पुं० [सं०] १ कपडा। परिधान। पोशाक। वस्त्र। २ फटा पुराना कपडा। चीथडा [को०]।

सिचान(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चान] बाज पक्षी।—उ० निति ससौ हँसौ बचतु, मानौ इहिं अनुमान। विरह अगनि लपटनि सकै, झपट न मीच सिचान।—बिहारी (शब्द०)।

सिचाना(पु)—क्रि० स० [सं० सिञ्चन] सिंचाना। सिंचित कराना। उ०—नारि सहित मुनिपद सिर नावा। चरन सलिल सब भवन सिचावा।—मानस, २।६६।

सिच्छक(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षक] शिक्षा देनेवाला। गुरु। उ०—आवत दूर दूर सो सिच्छक गुनी सिंगारी।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ३०। २ शास्ति करनेवाला। दंड देनेवाला (को०)।

सिच्छन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षण] पढाना। अध्यापन। उ०—बहुदर्शी बहुतै जानत नीको सिच्छन विधि।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० २०।

सिच्छा—संज्ञा स्त्री० [सं० शिक्षा] दे० 'शिक्षा'। उ०—सैन बैन सब साथ है मन मे सिच्छा भाव। तिल आपन शृंगार रस सकल रमन को राव।—मुबारक (शब्द०)।

सिच्छित(पु)—वि० पुं० [सं० शिक्षित] दे० 'शिक्षित'। उ०—भारत के भुज बल जग रक्षित। भारत विद्या लहि जग सिच्छित।—भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० ४६१।

सिजदा—संज्ञा पुं० [अ० सिज्दह्] प्रणाम। दंडवत। माथा टेकना। सिर झुकाना। (मुसल०)। उ०—सिजदा सिरजनहार कौ मुरशिद कौ ताजीम।—सुंदर० ग्र०, भा० १, पृ० २८६।

सिजदागाह—संज्ञा पुं० [अ० सिज्दा + फा० गाह] पूजा का स्थल। प्रार्थनागृह।

सिजरा†—संज्ञा पुं० [अ० शज्रह्] वंशवृक्ष। वंशावली। कुर्सीनामा। उ०—कहि अंतर सिजरा लिखि दीन्हा। कहि जादू कहि मँगे कीन्हा।—संत० दरिया, पृ० ५५।

सिजल—वि० [हिं० सजीला] जो देखने में अच्छा लगे। सुंदर।

सिजली—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पौधा जो दवा के काम में आता है।

सिजादर—संज्ञा पुं० [लश०] पाल के चौखूटे किनारे से बँधा हुआ रस्सा, जिसके सहारे पाल चढ़ाया जाता है।

सिज्या†—संज्ञा स्त्री० [सं० शय्या, प्रा० सिज्जा] दे० 'शय्या', 'सेज'। उ०—कोऊ सिज्या सम्हारत है।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० ३३।

यौ०—सिज्या भोग = वह भोग जो भगवान् को शयन कराने के उपरांत सिरहाने रखा जाता है। उ०—वाको श्रीनाथजी एक दिन सिज्या भोग को लडुवा उहाँई दियो।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० २११।

सिझना—क्रि० अ० [सं० सिद्ध, प्रा० सिज्झ] आँच पर पकाना। सिझाया जाना।

सिझाना—क्रि० अ० [सं० सिद्ध, प्रा० सिज्झ + हिं० आना (प्रत्य०)] १ आँच पर गलाना। पकाकर गलाना। २ पकाना। राँधना। उबालना। ३ मिट्टी को पानी देकर पैर से कुचल और साफ करके बरतन बनाने योग्य बनाना। ४ शरीर को तपाना या कष्ट देना। तपस्या करना। उ०—लेत घूँट भरि पानि सु रस सुरदानि रिझाई। पपीहरचो तप साधि जपी तन तपन सिझाई।—सुधाकर (शब्द०)। ५ रासायनिक प्रक्रिया द्वारा पकाना। विशेष दे० 'चमडा सिझाना'।

सिटकिनी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] किवाड़ो के बंद करने या अड़ाने के लिये लगी हुई लोहे या पीतल की छड़। अगरी। चटकनी। चटखनी।

सिटनल†—संज्ञा पुं० [अं० सिगनल] दे० 'सिगनल'।

सिटपिटाना—क्रि० अ० [अनु०] १ दब जाना। मंद पड़ जाना। २ किंकर्त्तव्य विमूढ होना। स्तब्ध हो जाना। ३. सकुचाना। उ०—पहले तो पंचजी बहुत सिटपिटाए, किंतु सबों का बहुत कुछ आग्रह देख सभापति की कुर्सी पर जा डटे।—बालमुकुंद (शब्द०)।

सिटी१—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीटना] दे० 'सिट्टी'।

मुहा०—सिटी बिटी भूलना = दे० 'सिट्टीपिट्टी भूलना'। उ०—हुश्न का रोब ऐसा छाया कि सब सिटी बिटी भूल गई।—फिसाना०, भा० ३, पृ० २६२।

सिटी२—संज्ञा स्त्री० [अं०] नगर। शहर।

यौ०—सिटी बस = नगर में चलनेवाली राजकीय बस। सिटी बस सर्विस = राजकीय नगर परिवहन सेवा।

सिट्टी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीटना] बहुत बढबढ कर बोलना। वाक्-पटुता।

मुहा०—मिट्टी गुम हो जाना = दे० 'सिट्टी भूलना'। उ०—अधिकारी वर्ग की सिट्टी गुम हुई।—किन्नर०, पृ० २६। सिट्टी पिट्टी भूल जाना = सिटपिटा जाना। सिट्टी भूलना = घबरा जाना। सिटपिटा जाना।

सिट्टू—वि० [हिं० सीटना] बहुत बढकर गप्प करनेवाला। बढकर बोलनेवाला। डींग मारनेवाला उ०—सिपारसी डरपुकने सिट्टू बोलै बात अकासी।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० ३३३।

सिट्ठी—संज्ञा स्त्री० [उ० शिष्ट] बचा हुआ। दे० 'सीठी'।

सिठनी†—संज्ञा स्त्री० [सं० अशिष्ट] विवाह के अवसर पर गाई जानेवाली गाली। सीठना।

सिठाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीठी] १ फीकापन। नीरसता। २ मंदता।

सिड—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिडी] १ पागलपन। उन्माद। बावलापन। २ सनक। धुन।

क्रि० प्र०—चढ़ना।

मुहा०—सिड सवार होना = सनक होना। धुन होना।

सिडपन, सिडपना—संज्ञा पुं० [हिं० सिड + पन (प्रत्य०)] १ पागलपन। बावलापन। २ सनक। धुन।

सिड़बिल्ला, सिडबिल्ला—संज्ञा पुं० [हिं० सिडी + बिलल्ला] [स्त्री० सिडबिल्ली, सिडबिल्ली] १ पागल। बावला। २ बेवकूफ। भोंदू। बुद्धू।

सिडिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० साँटी] डेढ हाथ लंबी लकडी जिसमें बुनते समय बादला बँधा रहता है।

सिडी—वि० [सं० शृणीक] [स्त्री० सिडिन] १ पागल। दीवाना। बावला। उन्मत्त। उ०—यह तो सिडी हो गया है इसके साथ रहने से मैं भी ऐसी बातें कहने लगा।—शकुंतला, पृ० १२१। २ सनकी। धुनवाला। ३ मनमौजी। मनमाना काम करनेवाला।

सिढी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रेणी] दे० 'सीढी'। उ०—गहि शशिवृत्त नरिंद सिढी लघंत ढहि थोरी। काम लता कल्हरी पेम मारत झकझोरी।—पृ० रा०, २५।३८१।

सितंबर—संज्ञा पुं० [अं० सेप्टेंबर] अंग्रेजी नवाँ महीना अक्तूबर से पहले और अगस्त के पीछे का महीना।

सित१—वि० [सं०] १ श्वेत। सफेद। उजला। शुक्ल। उ०—अरुण असित सित वपु उनहार। करत जगत में तुम अवतार।—सूर (शब्द०)। २ उज्ज्वल। शुभ्र। दीप्त। चमकीला। ३ स्वच्छ। साफ। निर्मल। ४ आबद्ध। बद्ध। बँधा हुआ (को०)। ५ घिरा हुआ। परिवेष्टित (को०)। ६, जाना हुआ। निश्चित। ज्ञात (को०)। ७ पूर्ण। समाप्त (को०)। ८ किसी से संयुक्त। युक्त (को०)।

सित२—संज्ञा पुं० १ शुक्र ग्रह। २ शुक्राचार्य। ३ शुक्ल पक्ष। उजाला पाख। ४ चीनी। शक्कर। ५ सफेद कचनार। ६ स्कंद के एक अनुचर का नाम। ७ मूली। मूलक। ८ चंदन। ९ भोजपत्र। १० सफेद तिल। ११ चाँदी। १२. श्वेत वर्ण। सुफेद रंग (को०)। १३ तीर। बाण (को०)।

सितकंगु—संज्ञा स्त्री० [सं० सितकङ्गु] राल। सर्जनिर्यास।

सितकंटकारिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सितकण्टकारिका] सफेद कटकारी [को०]।

सितकंटा—संज्ञा स्त्री० [सं० सितकण्टा] श्वेत कटकारी [को०]।

सितकंठ¹—वि० [वि० सितकण्ठ] जिसकी गर्दन सफेद हो। सफेद गर्दनवाला।

सितकंठ²—संज्ञा पुं० मुर्गावी। दात्यूह पक्षी।

सितकंठ³—संज्ञा पुं० [सं० सितिकण्ठ] शितिकंठ। महादेव। शिव। उ०—नीलकंठ सितकंठ शंभु हर। महाकाल कंकाल कृपाकर। सबलसिंह (शब्द०)।

सितकंटभी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का पेड़।

सितकमल—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद कमल [को०]।

सितकर—संज्ञा पुं० [सं०] १ भीमसेनी कपूर। २ चंद्रमा।

सितकरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] नीली दूब।

सितकर्णिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सितकर्णी' [को०]।

सितकर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अड़ूसा। वासक।

सितकर्मा—वि० [सं० सितकर्मन्] शुद्ध एवं पूत कर्मोवाला [को०]।

सितकाच—संज्ञा पुं० [सं०] १ हलब्बी शीशा। २ बिल्लौर।

सितकारिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वला या वरियारा नामक पौधा।

सितकार(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सीत्कार] दे० 'सीत्कार'। उ०—(क) लै सितकार सखिहि घुरि गई।—नंद० ग्रं०, पृ० १२६। (ख) ज्यो तिय सुरत समय सितकारा। निकल जाहि जौ बधिर भतारा।—नंद० ग्रं०, पृ० ११८।

सितकुंजर—संज्ञा पुं० [सं० सितकुञ्जर] १ ऐरावती हाथी। श्वेत हस्ती। २ इंद्र का गज जो श्वेत है। ३ (ऐरावत हाथीवाले) इंद्र।

सितकुंभी—संज्ञा स्त्री० [सं० सितकुम्भी] श्वेत पाटल का वृक्ष। सफेद पाँडर का पेड़।

सितक्षार—संज्ञा पुं० [सं०] सुहागा।

सितक्षुद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद फूल की भटकटैया। श्वेत कटकारी।

सितखंड—संज्ञा पुं० [सं० सितखण्ड] दे० 'सिताखंड'।

सितगुंजा—संज्ञा स्त्री० [सं० सितगुञ्जा] श्वेत गुंजा। सफेद घुँघची [को०]।

सितचिह्न—संज्ञा पुं० [सं०] खैरा मछली। छिपुआ मछली।

सितच्छत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ श्वेत राजछत्र। २ सूतजाल। मकड़ी आदि का जाला (को०)।

सितच्छत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सौंफ। २ सोवा।

सितच्छत्रित—वि० [सं०] श्वेत राजछत्र युक्त। सित छत्रयुक्त [को०]।

सितच्छत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सौंफ। शतपुष्पा। २ सोवा।

सितच्छद¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ हंस। मराल। २ लाल सहिंजन। रक्त शोभांजन।

सितच्छद²—वि० १. श्वेत पत्तो या श्वेत पंखो वाला।

सितच्छदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद दूब।

सितजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मधुखंड। मधुशर्करा।

सितजाफल—संज्ञा पुं० [सं०] मधु नारियल।

सितजाम्रक—संज्ञा पुं० [सं०] कलमी आम।

सितता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेदी। श्वेतता।

सिततुरग—संज्ञा पुं० [सं०] अर्जुन (जिनके रथ के घोड़े श्वेत वर्ण के है)।

सितदर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत कुश।

सितदीधिति—संज्ञा पुं० [सं०] (सफेद किरनवाला) चंद्रमा।

सितदीप्य—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद जीरा।

सितदूर्वा संज्ञा स्त्री० [सं०] श्वेत दूर्वा। सफेद दूब [को०]।

सितद्रु—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की लता।

सितद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] १ शुक्लवर्ण का वृक्ष। अर्जुन। २ मोरट। क्षीर मोरट।

सितद्विज—संज्ञा पुं० [सं०] हंस।

सितधातु—संज्ञा पुं० [सं०] १ शुक्लवर्ण की धातु। २, खरी। खरिया मिट्टी। दुद्धी।

सितपक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ हंस—जिसके पक्ष श्वेत हो। २ शुक्ल पक्ष। उजेला पाख (को०)। ३ श्वेत पंख।

सितपच्छ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सितपक्ष, प्रा० सितपक्ख] दे० 'सितपक्ष'।

सितपत्र(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शतपत्र] शतपत्र। कमल। उ०—सत सितपत्र प्रमान उधारिय वीर वृंदाय।—पृ० रा०, ७।१२८।

सितपद्म—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद कमल [को०]।

सितपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अर्कपुष्पी। अधाहुली।

सितपाटलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद पाँडर। श्वेत पाटला [को०]।

सितपुंखा—संज्ञा स्त्री० [सं० सितपुङ्खा] एक प्रकार का पौधा।

सितपुंडरीक—संज्ञा पुं० [सं० सितपुण्डरीक] श्वेत कमल। सितपद्म [को०]।

सितपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ तगर का पेड़ या फूल। गुलचाँदनी। २ एक प्रकार का गन्ना। ३ सिरिस का पेड़। श्वेत रोहित। ४ पिंड खजूर। ५ कैवर्त मुस्तक। केवटा मोथा (को०)। ६ काँस तृण। कास (को०)।

सितपुष्पा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वला। वरियारा। २ कधी का पौधा। ३ एक प्रकार की चमेली। मल्लिका।

सितपुष्पिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद दागवाला। कोढ। श्वेत कुष्ट। फूल। चरक।

सितपुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ श्वेत अपराजिता। कैवर्त मुस्तक। केवटी मोथा नाम को घास। कास नामक तृण। ४ नागदती। ५ नागवल्ली। पान।

सितप्रभ¹—संज्ञा पुं० [सं०] चाँदी।

सितप्रभ²—वि० [सं०] श्वेत प्रभावाला। उज्ज्वल [को०]।

**सितभान**Ⓟ—संज्ञा पुं० [सं० सितभानु] चंद्रमा। उ०—सुखहि अलक को छूटिवो अवमि करै दुतिमान। विन विभावरी के नहीं जगमगात मितभान।—रामसहाय (शब्द०)।

**सितभानु**—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

**सितम**—संज्ञा पुं० [फा०] १ गजब। अनर्थ। आफत। २ अनीति। जुल्म। अत्याचार।

मुहा०—सितम ढाना = अनर्थ करना। जुल्म करना।

**सितमगर**—संज्ञा पुं० [फा०] जालिम। अन्यायी। दुखदायी। उ०—यार का मुझको इस सवव डर है। शोख जालिम है औ सितमगर है।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० २९।

**सितमणि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्फटिक। बिल्लौर।

**सितमना**—वि० [सं० सितमनस्] निर्मल मन का व्यक्ति। शुद्ध हृदयवाला (को०)।

**सितमरिच**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सफेद मिर्च। २ शिग्रुवीज। सहिंजन के बीज।

**सितमाष**—संज्ञा पुं० [सं०] राजमाष। लोबिया। बोडा।

**सितमेघ**—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत बादल। शरत्कालीन मेघ (को०)।

**सितयामिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] चाँदनी रात। चंद्रिका (को०)।

**सितरंज**—संज्ञा पुं० [सं० सितरञ्ज] कपूर। कर्पूर।

**सितरंजन**—संज्ञा पुं० [सं० सितरञ्जन] पीत वर्ण। पीला रंग।

**सितरश्मि**—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद किरणोंवाला। चंद्रमा।

**सितराग**—संज्ञा पुं० [सं०] चाँदी। रजत। रौप्य।

**सितरुचि**—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत किरणवाला। चंद्रमा।

**सितरुती**—संज्ञा स्त्री० [देश०] गंध पलाशी। कपूर कचरी।

विशेष—पहाडी लोग इसकी पत्तियों की चटाइयाँ बनाते हैं।

**सितलता**[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] अमृतवल्ली नामक लता।

**सितलता**Ⓟ[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतलता] शीतल होने का भाव। शीतलता। उ०—अगिनि के पुंज है सितलता तन नहीं। विष और अमृत दोनु एक सानी।—कबीर० रे०, पृ० २७।

**सितलशुन**—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद लहसुन (को०)।

**सितलाई**Ⓟ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीतल + आई (प्रत्य०)] शीतलता। शैत्य। उ०—गोपद सिंधु अनल सितलाई।—मानस, ५।६।

**सितलाय**Ⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतलता] शांति। शीतलता। ठंडापन। नम्रता। उ०—त्यागि दे बकवाद बकना गहे रहु सितलाय।—जग० बानी०, पृ० ६६।

**सितली**—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल] वह पसीना जो बेहोशी या अधिक पीडा के समय शरीर से निकलता है।

क्रि० प्र०—छूटना।

**सितवराह**—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत वाराह।

**सितवराहतिय**Ⓟ—संज्ञा पुं० [सं० सितवराह + हिं० तिय] पृथ्वी। धरा। उ०—सितवराहतिय ख्यात सुजस नरसिंह कोप धर। संग भट बावन सहस सवै भृगुपति सम धनुधर।—गोपाल (शब्द०)।

**सितवराहपत्नी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी। धरती।

**सितवर्णा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] खिरनी। क्षीरिणी।

**सितवर्षाभू**—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद पुनर्नवा।

**सितवल्लरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] जंगली जामुन। कठ जामुन।

**सितवल्लीज**—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद मिर्च।

**सितवाजी**—संज्ञा पुं० [सं० सितवाजिन्] अर्जुन का नाम।

**सितवार, सितवारक**—संज्ञा पुं० [सं०] शालिंच शाक। शांति शाक।

**सितवारण**—संज्ञा पुं० [सं०] ऐरावत। श्वेत हाथी (को०)।

**सितवारिक**—संज्ञा पुं० [सं०] सैंहली। सिंहली पीपल।

**सितशायका**—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद शरपुंखा। सरफोंका (को०)।

**सितशिंबिक**—संज्ञा पुं० [सं० सितशिम्बिक] एक प्रकार का गेहूँ।

**सितशिंशपा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्वेत शिंशपा वृक्ष (को०)।

**सितशिव**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सेंधा नमक। २ शमी का पेड।

**सितशूक**—संज्ञा पुं० [सं०] जौ। यव।

**सितशूरण**—संज्ञा पुं० [सं०] वन सूरण। सफेद जमीकंद।

**सितशृंगी**—संज्ञा स्त्री० [सं० शितशृङ्गी] अतीस। अतिविषा।

**सितसप्ति**—संज्ञा पुं० [सं०] (सफेद घोडेवाले) अर्जुन।

**सितसर्षप**—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत सर्षप। पीली सरसों (को०)।

**सितसागर**—संज्ञा पुं० [सं०] क्षीर सागर। उ०—सितसागर ते छवि उज्ज्वल जाकी। जनु वैठक सोहत है कमला की।—गुमान (शब्द०)।

**सितसायका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्वेत सरफोंका। सितशायक (को०)।

**सितसार, सितसारक**—संज्ञा पुं० [सं०] शालिंच शाक। शांति शाक। सोहमारक।

**सितसिंधु**[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सितसिन्धु] क्षीर समुद्र।

**सितसिंधु**[2]—संज्ञा स्त्री० गंगा नदी जिनका जल श्वेत है।

**सितसिंही**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद भटकटैया। श्वेत कटकारी।

**सितसिद्धार्थ**—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद या पीली सरसों जो मंत्र या झाड फूँक में काम आती है।

**सितसिद्धार्थक**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सितसिद्धार्थ'।

**सितसूर्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] हुरहुर। आदित्यभक्ता।

**सितह**—संज्ञा स्त्री० [अ० सतह] दे० 'सतह'।

**सितहूण**—संज्ञा पुं० [सं०] हूणों की एक शाखा।

**सितांक**—संज्ञा पुं० [सं० सिताङ्क] एक प्रकार की मछली। बालुकागड मत्स्य।

**सितांग**[1]—संज्ञा पुं० [सं० सिताङ्ग] १ शिव का नाम (को०)। २ श्वेत रोहितक वृक्ष। रोहिडा सफेद। ३ बेला। वार्षिकी पुष्प वृक्ष। ४ दे० 'सितांक (को०)।

**सितांग**[2]—वि० श्वेत अंगवाला।

**सितांबर**[1]—वि० [सं० सिताम्बर] श्वेत वस्त्र धारण करनेवाले।

**सितांबर**[2]—संज्ञा पुं० जैनों का श्वेतांबर संप्रदाय।

**सितांबुज**—संज्ञा पुं० [सं० सिताम्बुज] श्वेत कमल।

सिताभोज—संज्ञा पुं० [सं० सिताम्भोज] दे० 'सितांबुज'। उ०—उत्पल, राजिव, कोकनद, सिताभोज जलजात।—नंद० ग्रं०, पृ० ११०।

सितांशु—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा। २ कपूर।

सितांशुक—वि० [सं०] श्वेत वस्त्रधारी। सफेद वर्ण का वस्त्र धारण करनेवाला [को०]।

सिताँ[१]—संज्ञा पुं० [फा०] १ राष्ट्र। देश। २ निवासभूमि। ३ स्थान। जगह। ४ वह स्थान जहाँ किसी वस्तु का आधिक्य हो।

सिताँ[२]—वि० ग्रहण करनेवाला। ले लेनेवाला [को०]।

सिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चीनी। शक्कर। शर्करा। उ०—दूध औटि तेहि सिता मिलाऊँ मैं नारायण भोग लगाऊँ। रघुराज (शब्द०)। २ शुक्ल पक्ष। उ०—चैत चारु नौमी सिता मध्य गगन गत भानु। नखत जोग ग्रह लगन भल दिन मंगल मोद निधानु।—तुलसी (शब्द०)। ३ मल्लिका। मोतिया। ४ श्वेत कटकारी। सफेद भटकटैया। ५ वकुची। सोमराजी। ६ विदारी कंद। ७ श्वेत दूर्वा। ८ चाँदनी। चंद्रिका। ९ कुटविनी का पौधा। १० मद्य। शराब। ११ पिंगा। १२ त्रायमाणा लता। १३ अर्कपुष्पी। अधाहुली। १४ वच। १५ सिंहली पीपल। १६ आमड़ा। आम्रातक। १७ गोरोचन। १८ वृद्धि नामक अष्टवर्गीय ओषधि। १९ चाँदी। रजत। रूपा। २० श्वेत निसोथ। २१ त्रिसंधि नामक पुष्प वृक्ष। २२ पुनर्नवा। सफेद गदहपूरना। २३ पहाड़ी अपराजिता। २४ सफेद पाडर। पाटला वृक्ष। २५ सफेद सेम। २६ मूर्वा। गोकर्णी लता। मुरा। २७ आकर्षक महिला। सुंदरी स्त्री (को०)। २८ गंगा नदी (को०)। २९ मिस्री (को०)।

सिताइश—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ तारीफ। प्रशंसा। २ धन्यवाद। शुक्रिया। ३ वाहवाही। शाबाशी।

सिताखंड—संज्ञा पुं० [सं० सिताखण्ड] १ मधुशर्करा। शहद से बनाई हुई शक्कर। २ मिस्री।

सिताख्य—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद मिर्च।

सिताख्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद दूब।

सिताग्र—संज्ञा पुं० [सं०] काँटा। कंटक।

सिताजाजी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद जीरा।

सितातपत्र, सितातपत्रवारण संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत आतपत्र। श्वेत चँदोवा या छत्र [को०]।

सितादि—संज्ञा पुं० [सं०] शक्कर आदि का कारण या पूर्व रूप, गुड़।

सितानन[१]—वि० [सं०] सफेद मुँहवाला।

सितानन[२]—संज्ञा पुं० १ गरुड़। २ बेल। बिल्व वृक्ष। ३ शिव का एक गण (को०)।

सितापांग—संज्ञा पुं० [सं० सितापाङ्ग] मयूर। मोर।

सितापाक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सिताखंड'।

सिताब(॥)[१]—क्रि० वि० [फा० शिताब] जल्दी। तुरंत। फौरन। उ०—प्रीतम आवत जानिकै भिस्ती नैन सिताब। हित कर देत है अँसुवन को छिरकाव।—रसनिधि (शब्द०)

सिताब[२]—संज्ञा स्त्री० जल्दी। शीघ्रता। उ०—दिना दोइ मे कूँच होइ आगैं नवाब की। तातैं ढील न होइ काम यह है सिताब की।—सुजान०, पृ० ६२।

सिताबी[१]—क्रि० वि० [फा० शिताब] दे० 'सिताब[१]'।

सिताबी[२]—संज्ञा स्त्री० १ चाँदनी। २ दे० 'सिताब[२]'।

सिताब्ज—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सितांबुज' [को०]।

सिताभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ कर्पूर। कपूर। २ शर्करा। ३ वह जिसकी प्रभा श्वेत हो।

सिताभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] तक्रा। तक्राह्वा क्षुप।

सिताभ्र, सिताभ्रक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सफेद बादल। २ कपूर। कर्पूर।

सितामोघा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद पाडर। श्वेत पाटला।

सितायुध—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की मछली।

सितार—संज्ञा पुं० [फा०, या सं० सप्त + तार, फा० सेहतार] एक प्रकार का प्रसिद्ध बाजा जिसमें सात तार होते हैं और जो लगे हुए तारों को उँगली से झनकारने से बजता है। एक प्रकार की वीणा।

विशेष—यह काठ की दो ढाई हाथ लंबी और चार पाँच अंगुल चौड़ी पोली पटरी के एक छोर पर गोल कद्दू की तुंबी जड़कर बनाया जाता है। इसका ऊपर का भाग समतल और चिपटा होता है और नीचे का गोल। समतल भाग पर पर्दे बँधे रहते हैं जो सप्तक के स्वरों को व्यक्त करते हैं। इनके ऊपर तीन से लेकर सात तार लंबाई के बल में बँधे रहते हैं। इन तारों को कोण द्वारा झनकारने से यह बजता है।

सितारबाज—संज्ञा पुं० [हिं० सितार + फा० बाज] सितार बजानेवाला। सितारिया।

सितारजन—संज्ञा पुं० [फा० सितारजन] सितारवादक।

सितारबाजी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सितार + फा० बाजी] सितार बजाना।

सितारवादक—संज्ञा पुं० [हिं० सितार + सं० वादक] सितार बजानेवाला। सितारिया।

सितारा[१]—संज्ञा पुं० [फा० सितारह्] १. तारा। नक्षत्र। उ०—मनौ सितारे भूमि नभ फिरि आवत फिरि जात।—स० सप्तक, पृ० ३६३। २ भाग्य। प्रारब्ध। नसीब।

मुहा०—सितारा चमकना = भाग्योदय होना। अच्छी किस्मत होना। सितारा बलंद या बुलंद होना = दे० 'सितारा चमकना'। सितारा मिलना = (१) फलित ज्योतिष में ग्रहमैत्री मिलना। गणना बैठना। (२) मन मिलना। परस्पर प्रेम होना।

३ चाँदी या सोने के पत्तर की बनी हुई छोटी गोल बिंदी के आकार की टिकिया जो कामदार टोपी, जूते आदि में टाँकी जाती है या शोभा के लिये चेहरे पर चिपकाई जाती है। उ०—नील सलमे सितारे या बादले।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ८७। ४ दे० 'सितारा पेशानी'।

सितारा²—संज्ञा पुं० [हिं० सितार] दे० 'सितार'। उ०—जलतरग कानून अमृत कुडली सुबीना। सारगी र रबाब सितारा सहूवर कीना।—सूदन (शब्द०)।

सिताराचश्म—वि० [फा०] सितारे जैसे नेत्रोंवाला [को०]।

सिताराजबीं—वि० [फा०] दे० 'सितारापेशानी'।

सितारादाँ—संज्ञा पुं० [फा०] नक्षत्रों का जानकार। ज्योतिषी।

सितारापरस्त—वि० [फा०] तारों का उपासक [को०]।

सितारापेशानी—वि० [फा०] (घोडा) जिसके माथे पर अँगूठे के छिप जाने योग्य सफेद टीका या बिंदी हो (ऐसा घोडा बहुत ऐबी समझा जाता है)।

सिताराबी—वि० [फा०] ज्योतिषी। नजूमी [को०]।

सिताराबीनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] ग्रहों के द्वारा फलाफल का ज्ञान। ज्योतिष विद्या [को०]।

सिताराशनास—वि० [फा०] ज्योतिषी [को०]।

सिताराशनासी—संज्ञा स्त्री० [फा०] ज्योतिष विद्या [को०]।

सितारिया—संज्ञा पुं० [फा० सितार+हिं० इया (प्रत्य०)] सितार बजानेवाला।

सितारी¹—संज्ञा स्त्री० [फा० सितार] छोटा सितार। छोटा तबूरा।

सितारी²—वि० [हिं० सितार] सितार बजानेवाला। सितारिया। उ०—कहाँ है रबाबी मृदगी सितारी। कहाँ हैं गवैये कहाँ नृत्यकारी।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ७०५।

सितारेहिंद—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार की उपाधि जो सरकार की ओर से सम्मानार्थ दी जाती है। उ०—राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद थे।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ४१२।

विशेष—यह शब्द वास्तव में अँग्रेजी वाक्य 'स्टार आफ इंडिया' का अनुवाद है।

सितार्कक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० सितालर्क [को०]।

सितार्जक—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत तुलसी।

सितालक, सितालर्क—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत अर्क। सफेद मदार।

सितालता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अमृतवल्ली। अमृतस्रवा। २ सफेद दूब।

सितालि—वि० [सं०] श्वेत रेखाओं या पंक्तियोंवाला।

सितालिकटभी—संज्ञा स्त्री० [सं०] किहिणी वृक्ष। सफेद कटभी।

सितालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] ताल की सीपी। जलसीप। शुक्ति। सितुही।

सिताव—संज्ञा स्त्री० [देश०] बरसात में उगनेवाला एक पौधा जो दवा के काम आता है। सपदंष्ट्रा। पीतपुष्पा। विषापहा। दूर्वपत्रा। त्रिकोणबीजा।

विशेष—यह पौधा हाथ डेढ हाथ ऊँचा और झाडदार होता है। इसकी पत्तियाँ दूब से मिलती जुलती होती हैं। इसके डठल भी हरे रग के होते हैं। इसका मूसला कत्थई रग का और बहुत बारीक रेशों से युक्त होता है। इसमें अगुल डेढ़ अगुल घेरे के गोल पीले फूल लगते हैं। इसके फलों की नोक पर बैंगनी रग का लबा सूत सा निकला होता है। फलों के भीतर तिकोने कत्थई रग के बीज होते हैं। यही बीज 'विशेषण' औषध के काम में आते हैं और 'सिताब' के नाम से बिकते हैं। ये बहुत कड़वे और गधयुक्त होते हैं। इस पौधे की जड़ और पत्तियाँ भी दवा के काम में आती हैं। वैद्यक में सिताब गरम, कड़वी, दस्तावर तथा वात, कफ को नाश करनेवाली, रुधिर को शुद्ध करनेवाली, बल, वीर्य और दूध को बढ़ानेवाली तथा पित्त के रोगों में लाभकारी कही गई है।

सिताबभेद—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक पौधा जिसके सब अंग औषध के काम में आते हैं।

विशेष—इसकी पत्तियाँ लबी, गँठीली और कटावदार होती हैं और उनमें से तेल की सी कड़ु गध आती है। फूल पीलापन लिए होते हैं। फलों में चार बीजकोश होते हैं जिनमें से प्रत्येक में ७ या ८ बीज होते हैं।

सितावर—संज्ञा पुं० [सं०] सिरियारी। सुनिषण्णक शाक। सुसना का साग।

सितावरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बकुची। सोमराजी।

सिताश्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ अर्जुन का एक नाम। २ चद्रमा।

सितासित—संज्ञा पुं० [सं०] १ श्वेत और श्याम। सफेद और काला। उ०—कुच तें श्रम जलधार चलि मिलि रोमावलि रग। मनो मेरु की तरहटी भयो सितासित सग।—मतिराम (शब्द०)। २ बलदेव। ३ शुक्र के सहित शनि। ४ जमुना के सहित गगा।

सितासितनीर(पु)—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत और नीला या श्याम वर्ण का जल। गगा यमुना का सगम। त्रिवेणी। उ०—मज्जहि सितासित नीर नहाने।—मानस, २।२०३।

सितासितरोग—संज्ञा पुं० [सं०] आँख का एक रोग।

सितासिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बकुची। सोमराजी। २ गगा और यमुना। यमुना और गगा।

सिताह्वय—संज्ञा पुं० [सं०] १ शुक्र ग्रह। २ श्वेत रोहित वृक्ष। ३ सफेद फूलों का सहिजन। ४ सफेद या हरे डठल की तुलसी।

सिति¹—वि० [सं०] दे० 'शिति'।

सिति²—संज्ञा स्त्री० १ श्वेत या श्याम वर्ण। २ बधन। बाँधना [को०]।

सितिकठ—संज्ञा पुं० [सं०] नीलकठ। शिव। महादेव।

सितिमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्वेतता। सफेदी।

सितिवार, सितिवारक—संज्ञा पुं० [सं० शितिवार] १ सिरियारी शाक। सुसना का साग। २ कुडा। कुटज वृक्ष। कोरैया।

सितिवास—संज्ञा पुं० [सं० सितिवासस्] (नीले वस्त्रवाले) बलराम।

सितिसारक—संज्ञा पुं० [सं०] शालि शाक। शालिच शाक।

सितुई†—संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ति] ताल की सीपी। सुतही। सितुही।

सितुही—संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्तिका] ताल की सीपी। सुतुही।

सितूदा—वि॰ [फा॰ सितूदह्] प्रशसित । तारीफ के योग्य [को॰] ।
यौ॰—सितूदाकार = उत्तम या प्रशसनीय कार्य करनेवाला ।

सितून—संज्ञा पुं॰ [फा॰] १ स्तभ । खभा । थूनी । २ लाट । मीनार ।

सितेक्षु—संज्ञा पु॰ [स॰] एक प्रकार का गन्ना [को॰] ।

सितेतर[१]—वि॰ [स॰] (श्वेत से भिन्न) काला या नीला ।

सितेतर[२]—संज्ञा पु॰ १ कृष्ण धान्य । काला धान । २ कुलथी । कुरथी ।

सितेतरगति—संज्ञा स्त्री॰ [स॰] अग्नि । आग ।

सितोत्पल—संज्ञा पु॰ [स॰] सफेद कमल ।

सितोदर संज्ञा पु॰ [सं॰] (श्वेत उदरवाला) कुबेर ।

सितोदरा—संज्ञा स्त्री॰ [स॰] (श्वेत उदरवाली) एक प्रकार की कौडी ।

सितोद्भव[१]—संज्ञा पुं॰ [स॰] चदन । सदल ।

सितोद्भव[२]—वि॰ चीनी से उत्पन्न या बना हुआ ।

सितोपल—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ कठिनी । खडी । खरिया मिट्टी । दुद्धी । २ बिल्लौर । स्फटिक मणि ।

सितोपला—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ मिस्री । २ चीनी । शक्कर ।

सितोष्णवारण—संज्ञा पु॰ [स॰] सफेद आतपत्र या छाता [को॰] ।

सिथिल(पु)—वि॰ [स॰ शिथिल] दे॰ 'शिथिल' । उ॰—पुलक सिथिल तनु बारि बिमोचन । महि नख लिखन लगी सब सोचन । —मानस, २।२८० ।

सिद—संज्ञा पुं॰ [देश॰] बाकली ।

सिदक†—संज्ञा स्त्री॰ [अ॰ सिद्क] निश्छलता । यथार्थता । सत्यता । उ॰—व अव्वल जबाँ सू च इकरार कर । सो भई सिदक कर मानना दिल बेहतर ।—दक्खिनी॰, पृ॰ १६२ ।

सिदका—संज्ञा पु॰ [अ॰ सदकह्] दे॰ 'सदका' ।

सिदना(पु)—क्रि॰ स॰ [स॰ सीदति] कष्ट पहुँचाना । पीडित करना । उ॰—समै के दिलीप दिलीपति को सिदति है ।—भूषण ग्र॰, पृ॰ ८२ ।

सिदरी—संज्ञा स्त्री॰ [फा॰ सेहदरी] तीन दरवाजोवाला कमरा या बरामदा । तिदुवारी दालान । उ॰—वहु बेलिन बूटन सयुत सोहैं । परदा सिदरीन लगे मन मोहैं ।—गुमान (शब्द॰) ।

सिदाकत—संज्ञा स्त्री॰ [अ॰ सदाकत] सत्यता । सच्चाई । यथार्थता । उ॰—मेरी हिमाकत का बयान आपकी लियाकत की सिदाकत करता है ।—प्रेमघन॰, भा॰ २, पृ॰ २४ ।

सिदामा—संज्ञा पुं॰ [स॰ श्रीदामा] दे॰ 'श्रीदामा' ।

सिदिक[१]—वि॰ [अ॰ सिदक] सच्चा । सत्य । उ॰—अबाबकर सिद्दीक सयाने । पहिले सिदिक दीन वै आने ।—जायसी (शब्द॰) ।

सिदिक[२]—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ 'सिदक' ।

सिदौसी—संज्ञा स्त्री॰ [स॰ सद्यस्] १ तडके । मुँह अँधेरे । धुँधलका । उ॰—खूब सिदौसी, मुँह अँधियारे वाकी चकिया जबै पुकारे, तब तू वाकी सुनियो ना, गुइयाँ, प्रीति को मरम काहूते बतैयो ना । —कुकुम, पृ॰ ८३ । २ जल्दी । शीघ्र । बिना बिलब लगाए । उ॰—अमर नगर पहिचान सिदौसी तब नहिं आवन जाना रे ।—चरण॰ बानी, पृ॰ १०६ ।

सिद्गुड—संज्ञा पु॰ [स॰ सिगुद्ण्ड] वह वर्णसकर पुरुष जिसका पिता ब्राह्मण और माता पराजकी हो ।

सिद्दीक—वि॰ [अ॰ सिद्दीक] बहुत सच्चा । ईमानदार [को॰] ।

सिद्धत(पु)—संज्ञा पु॰ [स॰ सिद्धान्त] दे॰ 'सिद्धात । उ॰—सोइ सुनिय सिद्धत सत सब भाषत बोई ।—सुदर ग्र॰, भा॰ १, पृ॰ ३६ ।

सिद्ध[१]—वि॰ [स॰] १ जिसका साधन हो चुका हो । जो पूरा हो गया हो । जो किया जा चुका हो । सपन्न । सपादित । निबटा हुआ । अजाम दिया हुआ । जैसे,—कार्य सिद्ध होना । २ प्राप्त । सफल । हासिल । उपलब्ध । जैसे,—मनोरथ सिद्ध होना । प्रयत्न सिद्ध होना । उद्देश्य सिद्ध होना । ३ प्रयत्न मे सफल । कृतकार्य । जिसका मतलब पूरा हो चुका हो । कामयाब । ४ जिसका तप या योगसाधन पूरा हो चुका हो । जिसने योग या तप द्वारा अलौकिक लाभ या सिद्धि प्राप्त की हो । पहुँचा हुआ । जैसे,—बाबाजी बडे सिद्ध महात्मा है । ५ करामाती योग की विभूतियाँ दिखानेवाला । ६ मोक्ष का अधिकारी । ७ लक्ष्य पर पहुँचा हुआ । निशाने पर बैठा हुआ । ८ जो ठीक घटा हो । जिस (कथन) के अनुसार कोई बात हुई हो । जैसे,—वचन सिद्ध होना, आशीर्वाद सिद्ध होना । ९ जो तर्क या प्रमाण द्वारा निश्चित हो । प्रमाणित । साबित । निरूपित । जैसे,—अपराध सिद्ध करना । कथन को सत्य सिद्ध करना । व्याकरण का प्रयोग सिद्ध करना । १० जिसका फैसला या निबटारा हो गया हो । फैसल । निर्णीत । ११ शोधित । अदा किया हुआ । चुकता (ऋण आदि) । १२ सघटित । अतर्भूत । जैसे,—स्वभावसिद्ध बात । १३ जो अनुकूल किया गया हो । कार्यसाधन के उपयुक्त बनाया हुआ । गौ पर चढाया हुआ । जैसे,—उसको हम कुछ रुपये देकर सिद्ध कर लेगे । १४ आँच पर मुलायम किया हुआ । सीझा हुआ । पका हुआ । उबला हुआ । जैसे,—सिद्ध अन्न । उ॰—वही के सिद्ध रग से उसे रगते ।—प्रेमघन॰, भा॰ २, पृ॰ २३६ । १५ प्रसिद्ध । विख्यात । १६ बना हुआ । तैयार । प्रस्तुत । उ॰—पाछे दरजी वे बागा सब सिद्ध करि लायो ।—दो सौ बावन॰, पृ॰ १७२ । १७ बसा हुआ । स्थापित (को॰) । १८ वैध । न्याय्य (को॰) । १९ सच माना हुआ (को॰) । २० वश मे किया गया । जीता गया (को॰) । २२ पूर्णत विज्ञ दक्ष (को॰) । २३ पावन । पवित्र । पुण्यात्मा (को॰) । २४ दिव्य । अविनश्वर । नित्य (को॰) । २५ सतुष्ट (को॰) । २६ स्वकीय । निजी । व्यक्तिगत (को॰) ।

सिद्ध[२]—संज्ञा पुं॰ १ वह जिसने योग या तप मे सिद्धि प्राप्त की हो । योग या तप द्वारा अलौकिक शक्ति प्राप्त पुरुष । जैसे,—यहाँ

एक सिद्ध आए हैं। २ कोई ज्ञानी या भक्त महात्मा। मोक्ष का अधिकारी पुरुष। ३ एक प्रकार के देवता। एक देवयोनि।

विशेष —सिद्धो का निवास स्थान भुवर्लोक कहा गया है। वायुपुराण के अनुसार उनकी सख्या अठासी हजार है और वे सूर्य के उत्तर और सप्तर्पि के दक्षिण अतरिक्ष मे वास करते है। वे अमर कहे गए हैं पर केवल एक कल्प भर तक के लिये। कही कही सिद्धो का निवास गधर्व, किन्नर आदि के समान हिमालय पर्वत भी कहा गया है।

४ अर्हंत। जिन। ५ ज्योतिष का एक योग। ६ व्यवहार। मुकदमा। मामला। ७ काला धतूरा। ८ गुड। ९ ज्योतिष मे विष्कभ आदि २७ योगो मे से इक्कसीवाँ योग। १० कृष्ण सिंदुवार। काली निर्गुंडी। ११ सफेद सरसो। १२, सेधा नमक (को०)। १३ जादूगर। ऐंद्रजालिक (को०)। १४ चौवीस की सख्या (को०)। १५ बाजीगरी। १६ अलौकिक शक्ति (को०)।

सिद्धक —सज्ञा पु० [स०] १ सँभालू। सिंदुवार वृक्ष। २ एक वृत्त या छद (को०)। ३ शाल वृक्ष। साखू।

सिद्धकज्जल—सज्ञा पुं० [स०] एक विशिष्ट प्रकार का अजन। जादू का काजल। सिद्धाजन [को०]।

सिद्धकाम—वि० [स०] १ जिसकी कामना पूरी हुई हो जिसका प्रयोजन सिद्ध हो चुका हो। २ सफल। कृतार्थ।

सिद्धकामेश्वरी—सज्ञा स्त्री० [स०] कामाख्या अर्थात् दुर्गा की पचमूर्ति के अतर्गत प्रथम मूर्ति।

सिद्धकारी—सज्ञा पुं० [सं० सिद्धकारिन्] [स्त्री० सिद्धकारिणी] धर्मशास्त्र के अनुसार आचरण करनेवाला।

सिद्धकार्य—वि० [स०] जिसकी कामना पूर्ण हो गई हो। सिद्धकाम। सफल। कृतकार्य [को०]।

सिद्धक्षेत्र—सज्ञा पु० [स०] १ वह स्थान जहाँ योग या तत्र प्रयोग जल्दी सिद्ध हो। २ वह स्थान जहाँ सिद्ध रहते हो। सिद्धो का क्षेत्र (को०)। ३ दडक वन के एक विशेष भाग का नाम।

सिद्धखड—सज्ञा पु० [स० सिद्धखण्ड] खाँड का एक भेद [को०]।

सिद्धगगा—सज्ञा स्त्री० [स०] मदाकिनी। आकाश गगा। स्वर्ग गगा।

सिद्धगति —सज्ञा स्त्री० [स०] जैन मतानुसार वे कर्म जिनसे मनुष्य सिद्ध हो।

सिद्धगुटिका—सज्ञा स्त्री० [स०] वह मत्रसिद्ध गोली जिसे मुँह मे रख लेने से अदृश्य होने आदि की अद्भुत शक्ति आ जाती है। दे० 'सिद्धि गुटिका'।

सिद्धग्रह—सज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार का प्रेत जो उन्माद रोग उत्पन्न करता हे। २ एक प्रकार का प्रेतजन्य उन्माद (को०)।

सिद्धजल—सज्ञा पु० [स०] १ काजी। २ औटा हुआ जल।

सिद्धता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सिद्ध होने की अवस्था। २ प्रामाणिकता। सिद्धि। ३ पूर्णता।

सिद्धतापस—सज्ञा पुं० [स०] सिद्धिप्राप्त तपस्वी [को०]।

सिद्धत्व—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सिद्धता'।

सिद्धदर्शन—सज्ञा पुं० [स०] अलौकिक शक्तियुक्त सत का दर्शन।

सिद्धदात्री—सज्ञा स्त्री० [स०] नव दुर्गा मे से एक दुर्गा।

सिद्धदेव—सज्ञा पु० [स०] शिव। महादेव।

सिद्धद्रव्य—सज्ञा पु० [स०] वह द्रव्य या वस्तु जो सिद्ध की गई हो। ऐंद्रजालिक या जादू की वस्तु [को०]।

सिद्धधातु—सज्ञा पु० [स०] पारा। पारद।

सिद्धनर—सज्ञा पु० [स०] दैवज्ञ। ज्योतिषी। भविष्य या भाग्यकथन करनेवाला [को०]।

सिद्धनाथ—सज्ञा पु० [स०] १ सिद्धेश्वर। महादेव। २ गुलतुर्रा।

सिद्धनामक—सज्ञा पुं० [स०] अश्मतक वृक्ष। आबुटा।

सिद्धपक्ष—सज्ञा पु० [स०] १ किसी प्रतिज्ञा या बात का वह अश जो प्रमाणित हो चुका हो। २ प्रमाणित बात। साबित बात।

सिद्धपथ—सज्ञा पुं० [स०] आकाश। अतरिक्ष।

सिद्धपात्र—सज्ञा पु० [स०] स्कद के एक अनुचर का नाम।

सिद्धपीठ—सज्ञा पु० [स०] वह स्थान जहाँ, योग, तप या तात्रिक प्रयोग करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त हो। उ०—साहसी समीरसुनु नीरनिधि लघि लखि लक सिद्धपीठ निसि जागो है मसान सो। तुलसी (शब्द०)।

सिद्धपुर—सज्ञा पुं० [स०] १ एक कल्पित नगर जो किसी के मत से पृथ्वी के उत्तरी छोर पर और किसी के मत से दक्षिण या पाताल मे है। (ज्योतिष)। २ गुजरात मे एक तीर्थ जहाँ माता का श्राद्ध किया जाता है। मातृगया।

सिद्धपुरी—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सिद्धपुर'।

सिद्धपुरुष—सज्ञा पु० [स०] वह पुरुष जिसे सिद्धिलाभ हो गया हो। वह व्यक्ति जिसे अलौकिक सिद्धि प्राप्त हो [को०]।

सिद्धपुष्प—सज्ञा पु० [स०] करवीर। कनेर का पेड।

विशेष—यह सिद्ध लोगो को प्रिय और यत्रसिद्धि मे प्रयुक्त किया जाता है।

सिद्धप्रयोजन—सज्ञा पु० [स०] सफेद सरसो। श्वेत सर्पप।

सिद्धभूमि—सज्ञा स्त्री० [स०] सिद्धपीठ। सिद्धक्षेत्र।

सिद्धमत्र—सज्ञा पुं० [सं० सिद्धमन्त्र] सिद्ध किया हुआ मत्र।

सिद्धमत—सज्ञा पु० [स०] १ वह सिद्धात या वाद जो पूर्णत प्रमाणित हो। २ सिद्ध व्यक्तियो या सतो का मत।

सिद्धमनोरम—सज्ञा पु० [स०] कर्म मास [को०]।

सिद्धमातृका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक देवी का नाम। २ एक प्रकार की लिपि।

सिद्धमानस—वि० [स०] पूर्ण सतुष्ट मन या मस्तिष्कवाला [को०]।

सिद्धमोदक—सज्ञा पु० [स०] तुरजवीन की खाँड। तवराजखड।

सिद्धयात्रिक—सज्ञा पु० [सं०] सिद्धिके निमित्त यात्रा करनेवाला व्यक्ति। दे० 'सिद्धियात्रिक' [को०]।

सिद्धयामल--संज्ञा पुं० [सं०] एक तंत्र का नाम।

सिद्धयोग--संज्ञा पुं० [सं०] १ ज्योतिष का एक योग। २ एक यौगिक रसौषध।

सिद्धयोगिनी--संज्ञा स्त्री० [सं०] एक योगिनी का नाम।

सिद्धयोगी--संज्ञा पुं० [सं० सिद्धयोगिन्] शिव। महादेव।

सिद्धर--संज्ञा पुं० [?] एक ब्राह्मण जो कंस की आज्ञा से कृष्ण को मारने आया था। उ०--सिद्धर बाभन करम कसाई। कह्यौ कंस सो वचन सुनाई।--सूर (शब्द०)।

सिद्धरत्न--वि० [सं०] जिसके पास सिद्ध या अलौकिक शक्तिवाला रत्न हो [को०]।

सिद्धरस--संज्ञा पुं० [सं०] १ पारा। पारद। २ रसेंद्र दर्शन के अनुसार वह योगी जिससे पारा सिद्ध हो गया हो। सिद्ध रसायनी।

सिद्धरसायन--संज्ञा पुं० [सं०] वह रसौषध जिससे दीर्घ जीवन और प्रभूत शक्ति प्राप्त हो।

सिद्धलक्ष--वि० [सं०] जिसका निशाना खूब सधा हो। जो कभी न चूके।

सिद्धलक्ष्मी--संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी की एक विशेष मूर्ति [को०]।

सिद्धलोक--संज्ञा पुं० [सं०] सिद्धो का आवास या लोक [को०]।

सिद्धवटी--संज्ञा स्त्री० [सं०] एक देवी का नाम।

सिद्धवर्ति--संज्ञा स्त्री० [सं०] ऐंद्रजालिक या जादू की एक प्रकार की वत्ती [को०]।

सिद्धवस्ति--संज्ञा पुं० [सं०] तैल आदि की वस्ति या पिचकारी। (आयुर्वेद)।

सिद्धविद्या--संज्ञा स्त्री० [सं०] एक महाविद्या का नाम।

सिद्धविनायक--संज्ञा पुं० [सं०] गणेश की एक मूर्ति।

सिद्धव्यंजन--संज्ञा पुं० [सं० सिद्धव्यञ्जन] तपस्वी के वेश मे गुप्तचर [को०]।

सिद्धशावरतंत्र--संज्ञा पुं० [सं० सिद्धशावर तन्त्र] सावर तंत्र।

सिद्धशिला--संज्ञा स्त्री० [सं०] जैन मत के अनुसार ऊर्ध्वलोक का एक स्थान।

विशेष--कहते है कि यह शिला स्वर्गपुरी के ऊपर ४५ लाख योजन लंबी, इतनी ही चौडी तथा ८ योजन मोटी है। मोती के श्वेतहार या गोदुग्ध से भी उज्ज्वल है, सोने के समान दमकती हुई और स्फटिक से भी निर्मल हैं। यह चौदहवें लोक की शिखा पर है और इसके ऊपर शिवपुर धाम हैं। यहाँ मुक्त पुरुष रहते हैं। यहाँ किसी प्रकार का बंधन या दु ख नही है।

सिद्धसंकल्प--वि० [सं० सिद्धसङ्कल्प] जिसकी सब कामनाएँ पूरी हो।

सिद्धसरित्--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आकाश गंगा। २ गंगा।

सिद्धसलिल--संज्ञा पुं० [सं०] कांजी। सिद्धजल।

सिद्धसाधक--संज्ञा पुं० [सं०] सब मनोरथ पूर्ण करनेवाला कल्प वृक्ष।

सिद्धसाधन--संज्ञा पुं० [सं०] १ सिद्धि के लिये योग या तंत्र की क्रिया या अनुष्ठान। २ तांत्रिक क्रियाओं की सिद्धि मे काम आनेवाली वस्तु या पदार्थ (को०)। ३ सफेद सरसों। ४ प्रमाणित बात को फिर प्रमाणित करना।

सिद्धसाधित--वि० [सं०] जिसने व्यवहार द्वारा ही चिकित्सा आदि का अनुभव प्राप्त किया हो, शास्त्र के अध्ययन द्वारा नही।

सिद्धसाध्य[1]--संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का मंत्र। २ सबूत। प्रमाण (को०)।

सिद्धसाध्य[2]--वि० १ जो किया जानेवाला काम पूरा कर चुका हो। २ प्रमाणित। साबित।

सिद्धसारस्वत--वि० [सं०] जो सरस्वती को सिद्ध कर चुका हो [को०]।

सिद्धसिंधु--संज्ञा पुं० [सं० सिद्धसिन्धु] आकाश गंगा। मदाकिनी।

सिद्धसिद्ध--वि० [सं०] तंत्रसार के अनुसार विशेष प्रभाव कारक एक मंत्र [को०]।

सिद्धसुसिद्ध--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का मंत्र।

सिद्धसेन--संज्ञा पुं० [सं०] कार्तिकेय।

सिद्धसेवित--संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव या भैरव का एक रूप। वटुक भैरव। २ वह जो सिद्धो द्वारा सेवित हो।

सिद्धस्थल--संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सिद्धस्थली] वह स्थान जो सिद्ध या प्रभावकर हो।

सिद्धस्थाली--संज्ञा स्त्री० [सं०] सिद्ध योगियो की बटलोई जिसमे से आवश्यकतानुसार जो भी ईप्सित हो और जितना चाहे उतना भोजन निकाला जा सकता है।

विशेष--कहते है कि इस प्रकार की एक बटलोई व्यासजी ने पांडवो के वनवास के समय द्रौपदी को दी थी।

सिद्धहस्त--वि० [सं०] १. जिसका हाथ किसी काम मे मँजा हो। २ कार्यकुशल। प्रवीण। निपुण।

सिद्धहस्तता--संज्ञा स्त्री० [सं०] निपुणता। प्रवीणता। कौशल। उ० - उसकी सिद्धहस्तता पर मैं मुग्ध हूँ।--कठहार (भू०), पृ० १।

सिद्धांगना--संज्ञा स्त्री० [सं० सिद्धाङ्गना] सिद्ध नामक देवताओं की स्त्रियाँ। वह नारी जिसे सिद्धि प्राप्त हो।

सिद्धांजन--संज्ञा पुं० [सं० सिद्धाञ्जन] वह अंजन जिसे आँख मे लगा लेने से भूमि के नीचे की वस्तुएँ (गडे खजाने आदि) भी दिखाई देने लगती है।

सिद्धांत--संज्ञा पुं० [सं० सिद्धान्त] १ भलीभाँति सोच विचार कर स्थिर किया हुआ मत। वह बात जिसके सदा सत्य होने का नि[illegible]ो। उसूल। २ प्रधान लक्ष्य। मुख्य उद्देश्य [illegible]क मतलब। ३ वह बात जो विद्वानों या उनके [illegible]प्रदाय द्वारा सत्य मानी जाती हो। मत। [illegible]स्त्र मे सिद्धांत चार प्रकार के [illegible], प्रतितंत्र सिद्धांत, अधिक[illegible] [illegible]ात। सर्वतंत्र वह सिद्धांत [illegible]

सिद्धि¹--संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

सिद्धि²--संज्ञा स्त्री० १ काम का पूरा होना। पूर्णता। प्रयोजन निकलना। जैसे,--कार्य सिद्ध होना। २ सफलता। कृतकार्यता। कामयाबी। ३ लक्ष्यवेध। निशाना मारना। ४ परिशोध। बेबाकी। चुकता होना (ऋण का)। ५ प्रमाणित होना। साबित होना। ६ किसी बात का ठहराया जाना। निश्चय। पक्का होना। ७ निर्णय। फैसला। निबटारा। ८ हल होना। ९ परिपक्वता। पकना। सीझना। १० वृद्धि। भाग्योदय। सुखसमृद्धि। ११ तप या योग के पूरे होने की अलौकिक शक्ति या संपन्नता। विभूति।

विशेष--योग की अष्टसिद्धियाँ प्रसिद्ध हैं--अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, और वशित्व। पुराणों में ये आठ सिद्धियाँ और बतलाई गई हैं - अंजन, गुटका, पादुका, धातुभेद, वेताल, वज्र, रसायन और योगिनी। सांख्य में सिद्धियाँ इस प्रकार कही गई हैं तार, सुतार, तारतार, रम्यक, आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक।

१२ मुक्ति। मोक्ष। १३ अद्भुत प्रवीणता। कौशल। निपुणता। कमाल। दक्षता। १४ प्रभाव। असर। १५ नाटक के छत्तीस लक्षणों में से एक जिससे अभिमत वस्तु की सिद्धि के लिये अनेक वस्तुओं का कथन होता है। जैसे,--कृष्ण में जो नीति थी, अर्जुन में जो विक्रम था, सब आपकी विजय के लिये आप में आ जाय। १५ ऋद्धि या वृद्धि नाम की ओषधि। १७ वृद्धि। १८ संगीत में एक श्रुति। १९ दुर्गा का एक नाम। २० दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो धर्म की पत्नी थी। २१ गणेश की दो स्त्रियों में से एक। २२ मेढासिंगी। २३ भाँग। विजया। २४ छप्पय छंद के ४१ वें भेद का नाम जिसमें ३० गुरु और ९२ लघु कुल १२२ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। २५ राजा जनक की पुत्रवधू। लक्ष्मीनिधि की पत्नी। २६ किसी नियम या विधि की वैधता (को०)। २७ समस्या का समाधान (को०)। २८ तत्परता (को०)। २९ सिद्धपादुका जिसे पहनकर जहाँ कहीं भी आवागमन किया जा सके (को०)। ३० अंतर्धान। लोप (को०)। ३१ उत्तम प्रभाव। अच्छा असर (को०)।

सिद्धिक--संज्ञा पुं० [सं०] सिद्धि से प्राप्त अलौकिक शक्ति [को०]।

सिद्धिकर--वि० [सं०] १ सिद्धि करनेवाला। सफलता दिलानेवाला। २ समृद्धिकारक [को०]।

सिद्धिकारक--वि० [सं०] १ प्रभावी। असर करनेवाला। २ दे० 'सिद्धिकर' [को०]।

सिद्धिकारण--संज्ञा पुं० [सं०] सिद्धि या मुक्ति का कारण [को०]।

सिद्धिकारी--वि० [सं० सिद्धिकारिन्] सिद्धि करने या करानेवाला [को०]।

सिद्धि गुटिका(पु)--संज्ञा स्त्री० [सं०] वह गुटिका जिसकी सहायता से रसायन बनाया या इसी प्रकार की और कोई सिद्धि की जाती हो। उ०--सिद्धि गुटिका अब मो सँग कहा। भएउँ राँग सन हिय न रहा।--जायसी (शब्द०)।

सिद्धिद¹--वि० [सं०] १ सिद्धि देनेवाला। २ ईश्वर सायुज्य या मोक्ष देनेवाला (को०)।

सिद्धिद²--संज्ञा पुं० १ बटुक भैरव। २ शिव (को०)। ३ पुत्रजीव नाम का वृक्ष। ४ बड़ा शाल वृक्ष।

सिद्धिदर्शी--वि० [सं० सिद्धिदर्शिन्] १ भविष्य की सफलता या स्थिति का ज्ञान रखनेवाला [को०]।

सिद्धिदाता--संज्ञा पुं० [सं० सिद्धिदातृ] [स्त्री० सिद्धिदात्री] (सिद्धि देनेवाले) गणेश।

सिद्धिदात्री--संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा का एक रूप। नव दुर्गा में अंतिम देवी [को०]।

सिद्धिप्रद--वि० [सं०] [वि० स्त्री० सिद्धिप्रदा] सिद्धि देनेवाला।

सिद्धिभूमि--संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ योग या तप शीघ्र सिद्ध होता हो।

सिद्धिमार्ग--संज्ञा पुं० [सं०] सिद्धि प्राप्त करने का उपाय। २ सिद्ध लोक की प्राप्ति का मार्ग [को०]।

सिद्धियात्रिक--संज्ञा पुं० [सं०] वह यात्री जो योग की सिद्धि प्राप्त करने के लिये यात्रा करता हो।

सिद्धियोग--संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष में एक प्रकार का शुभ योग।

सिद्धियोगिनी--संज्ञा स्त्री० [सं०] एक योगिनी का नाम।

सिद्धियोग्य--वि० [सं०] जो सिद्धि के लिये जरूरी हो [को०]।

सिद्धिरस--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सिद्धरस'।

सिद्धिराज--संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम।

सिद्धिलाभ--संज्ञा पुं० [सं०] सिद्धि का प्राप्त होना [को०]।

सिद्धिली--संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटी पिपीलिका। छोटी चीटी।

सिद्धिवर्ति--संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सिद्धवर्ति' [को०]।

सिद्धिविनायक--संज्ञा पुं० [सं०] गणेश की एक मूर्ति। सिद्धविनायक गणेश [को०]।

सिद्धिसाधक--संज्ञा पुं० [सं०] १ सफेद सरसो। २ दमनक। दौने का पौधा।

सिद्धिस्थान--संज्ञा पुं० [सं०] १ पुण्य स्थान। मोक्ष प्राप्ति का स्थान। तीर्थ। २. आयुर्वेद के ग्रंथ में चिकित्सा का प्रकरण।

सिद्धीश्वर--संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। महादेव। २, एक पुण्य क्षेत्र का नाम।

सिद्धेश्वर--संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सिद्धेश्वरी] १. बड़ा सिद्ध। महायोगी। उ०--सत्यनाथ आदिक सिद्धेश्वर। श्रीशैलादि बसैं श्री शंकर।--शंकरदिग्विजय (शब्द०)। २ शिव। महादेव। ३ गुलतुर्रा। शंखोदरी। ४ एक पर्वत का नाम। श्रीशैल नामक पर्वत (को०)।

सिद्धेश्वरी--संज्ञा स्त्री० [सं०] नव देवियों में एक का नाम [को०]।

सिद्धोदक--संज्ञा पुं० [सं०] १. काँजी। काजिक। २ एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

सिद्धौघ--संज्ञा पुं० [सं०] तांत्रिकों के गुरुओं का एक वर्ग। मंत्र शास्त्र के आचार्य।

संयो० क्रि० -देना।

**सिनट**—संज्ञा पुं० [अं० सेनेट] १ शासन का समस्त अधिकार रखनेवाली सभा। २ विश्वविद्यालय का प्रबंध करनेवाली सभा।

**सिना**—संज्ञा स्त्री० [फा०] दे० 'सिनान' [को०]।

यौ०—सिनाकश = तीरदाज। धनुर्धर।

**सिनान**—संज्ञा स्त्री० [फा० सिनाँ] १ बाण की नोक। अनी। २, बरछा। भाला। ३ बरछी की नोक [को०]।

**सिनिवाली**Ⓟ - संज्ञा स्त्री० [सं० सिनीवाली] एक नदी। दे० 'सिनीवाली'—५। उ०—सिनिवाली, रजनी, कुहू, मदा, राका, जानु। सरस्वती अरु जनुमती सातो नदी बखानु।—केशव (शब्द०)।

**सिनी**—संज्ञा पुं० [सं० शिनि] १ एक यादव का नाम जो सात्यकि का पिता था। उ०—सिनि स्यदन चढि चलेउ लाइ चंदन जदुनदन। —गोपाल (शब्द०)। २ क्षत्रियो की एक प्राचीन शाखा।

**सिनी**[1]—संज्ञा पुं० [सं० शिनि] एक यादव वीर। विशेष दे० 'शिनि'—३। उ०—चलेउ सिनीपति विदित धीर धरनीपति अति मति।—गोपाल (शब्द०)।

यौ०—सिनीपति = क्षत्रियो की एक प्राचीन शाखा का प्रधान। विशेष दे० 'शिनि'—३।

**सिनी**[2]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ 'सिनीवाली'। २. गौर वर्ण की स्त्री (को०)।

**सिनीत**—संज्ञा स्त्री० [देश०] सात रस्सियो को बटकर बनाई गई चिपटी रस्सी। (लश्करी)।

**सिनीवाली**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक वैदिक देवी, मत्रो मे जिसका आह्वान सरस्वती आदि के साथ मिलता है।

विशेष—ऋग्वेद मे यह चौडी कटिवाली, सुदर भुजाओ और उँगलियोवाली कही गई है और गर्भप्रसव की अधिष्ठात्री देवी मानी गई है। अथर्ववेद मे सिनीवाली को विष्णु की पत्नी कहा है। पीछे की श्रुतियो मे जिस प्रकार राका शुक्ल पक्ष की द्वितीया की अधिष्ठात्री देवी कही गई है, उसी प्रकार सिनीवाली शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा की, जब कि नया चद्रमा प्रत्यक्ष निकला नही दिखाई देता, देवी बताई गई है।

२ शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा। ३ अंगिरा की एक पुत्री का नाम। ४ दुर्गा। ५ मार्कंडेय पुराण मे वर्णित एक नदी का नाम।

**सिनेट**—संज्ञा स्त्री० [अं० सेनेट] दे० 'सिनट'।

**सिनेमा**—संज्ञा पुं० [अं०] १, वह मकान जहाँ बायस्कोप दिखाया जाता है। २ छाया चित्र। चल चित्र।

यौ०—सिनेमाघर, सिनेमा हाउस = वह स्थान जहाँ सिनेमा दिखाया जाय।

**सिनेरियो**—संज्ञा स्त्री० [अं०] पटकथा। किसी कहानी का नाट्य रूप। उ०—कौन सिनेरियो लिखता और किसे डायलॉग का ठेका मिलता।—तारिका, पृ० २४।

**सिनेह**Ⓟ†—संज्ञा पुं० [सं० स्नेह] दे० 'स्नेह'। उ०—(क) खत कुमेटा मन बुझल सिनेह।—विद्यापति, पृ० ५६३। (ख) सिनेह और ममता का भूखा।—नई०, पृ० ८१।

**सिनो**—संज्ञा पुं० [देश०] खेत की पहली जोताई।

**सिन्न**—संज्ञा पुं० [अ०] दे० 'सिन'[1]।

**सिन्नी**†—संज्ञा स्त्री० [फा० शीरीनी] १ मिठाई। २ बताशे या मिठाई जो किसी खुशी मे बाँटी जाय। ३ बताशे या मिठाई जो किसी पीर या देवता को चढाकर प्रसाद की तरह बाँटी जाय।

क्रि० प्र०—चढाना।—बाँटना।—मानना।

**सिपर**—संज्ञा स्त्री० [फा०] वार रोकने का हथियार। ढाल। उ०—तूल भूल, लाल तूल लाल तल तूल नील टील, तूल नीज सैल माथ पै सिपर है।—गिरधर (शब्द०)।

मुहा०—सिपर डालना, सिपर फेंकना = लडाई मे हथियार डाल देना। पराजय स्वीकार कर लेना। सिपर मुँह पर लेना, सिपर लेना = आघात से बचाव के लिये ढाल को आगे करना।

यौ०—सिपर अदाजी = हार मान लेना।

**सिपरा**—संज्ञा स्त्री० [सं० सिप्रा] दे० 'सिप्रा'।

**सिपह**—संज्ञा पुं० [फा०] 'सिपाह' का लघु रूप। सेना। फौज [को०]।

यौ०—सिपहगरी, सिपहदार = सेनानायक। सेनापति। सिपहबद, सिपहबुद = सिपहसालार।

**सिपहगरी**—संज्ञा स्त्री० [फा०] सिपाही का काम। युद्ध व्यवसाय।

**सिपहसालार**—संज्ञा पुं० [फा०] फौज का सबसे बडा अफसर। सेनापति। सेनानायक।

**सिपहसालारी**—संज्ञा स्त्री० [फा०] सेनापतित्व। सिपहसालार का कार्य [को०]।

**सिपाई**‡—संज्ञा पुं० [फा० सिपाही] दे० 'सिपाही'। उ०—कह्यो सिपाई अत्रहिं चोराई। इतै भागि अत्र कहु सिर नाई।—रघुराज (शब्द०)।

**सिपारस**‡—संज्ञा स्त्री० [फा० सिफारिश] दे० 'सिफारिश'। उ०—इतिय सिपारस आसु किय, देव करण लघु भाय। सुनत भूप परिमाल कहि, बिम्बा लेहु बुलाय।—प० रासो, पृ० ३०।

**सिपारसी**‡—वि० [फा० सिफारिशी] दे० 'सिफारशी'। उ०—सिपारसी डरपुकने सिट्टू बोलैं बात अकासी।—भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० ३३३।

**सिपारह**—संज्ञा पुं० [फा० सिपारह्] दे० 'सिपारा'। उ०—नमै निज साइय पच बखत्त। सिपारह तीस पढै दिन रत्त।—पृ० रा०, ६।६७।

**सिपारा**—संज्ञा पुं० [फा० सिपारह्] मुसलमानो के धर्मग्रथ कुरान के तीस भागो मे से कोई एक।

विशेष—कुरान तीस भागो मे विभक्त किया गया है जिनमे से प्रत्येक सिपारा कहलाता है।

**सिपारी**—संज्ञा स्त्री० [फा०] सुपारी। डली। छालिया [को०]।

**सिपाव**—संज्ञा पुं० [फा० सेहपाव] लकडी की एक प्रकार की टिकठी या तीन पायो का ढाँचा जो छकडे आदि मे आगे की ओर अडान के लिये दिया जाता है।

**सिपावा भाथी**—संज्ञा स्त्री० [फा० सेहपाव + हि० भाथी] लोहारों की हाथ से चलाई जानेवाली धौंकनी।

**सिपास**—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ धन्यवाद। शुक्रिया। कृतज्ञताप्रकाशन। २ प्रशंसा। बड़ाई। स्तुति।

यौ०—सिपासगुजार, सिपासगो = स्तुतिपाठक। प्रशंसक। सिपासनामा।

**सिपासनामा**—संज्ञा पुं० [फा० सिपासनामह्] १ विदाई के समय का अभिनंदनपत्र। २ प्रतिष्ठापत्र। मानपत्र।

**सिपाह**—संज्ञा स्त्री० [फा०] फौज। सेना। कटक। लश्कर। उ०—अरि जय चाह चले सगर उछाह रेल विविध सिपाह हमराह जदुनाह के।—गोपाल (शब्द०)।

**सिपाहगरी, सिपाहगिरी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १ सिपाही का काम या पेशा। अस्त्र व्यवसाय। २ शूरता। बहादुरी (को०)।

**सिपाहियाना**—वि० [फा० सिपाहियानह्] १ सिपाहियों का सा। सैनिकों का सा। जैसे,—सिपाहियाना ढंग, सिपाहियाना ठाट। २ वीरतापूर्ण। शौर्ययुक्त। बहादुराना (को०)।

**सिपाही**—संज्ञा पु० [फा०] १ सैनिक। लड़नेवाला। शूर। योद्धा। फौजी आदमी। २ कांस्टेबिल। पुलिस। तिलंगा। ३ चपरासी। अरदली।

**सिपुर्द**‡—वि० [फा० सिपुर्द] सौंपा हुआ। हवाले किया हुआ। दे० 'सुपुर्द'।

**सिपुर्दगी**—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ सिपुर्द करना। सौंपना। २ हवालात। हिरासत [को०]।

**सिपुर्दा**—वि० [फा० सिपुर्दह्] सौंपा हुआ। हस्तांतरित [को०]।

**सिपेद**—वि० [फा०] श्वेत। सफेद [को०]।

**सिपेद**—संज्ञा पु० [फा० सिपेदह्] सफेदी। धवलिमा [को०]।

**सिप्पर**Ⓟ—संज्ञा स्त्री० [फा० सिपर] दे० 'सिपर'। उ०—झम झमत सिप्पर सेल साँगरु जिरह जग्गो दीसिय। मनु सहित उडगन नव ग्रहनु मिल जुद्ध रक्कि वरीसिय।—सुजान (शब्द०)।

**सिप्पा**—संज्ञा पु० [देश०] १ निशाने पर किया हुआ वार। लक्ष्यवेध। २ कार्य साधन का उपाय। डौल। युक्ति। तदबीर। टिप्पस।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाता।

मुहा०—सिप्पा लड़ना या भिड़ना = (१) युक्ति या तदबीर होना। अभिसंधि होना। (२) युक्ति सफल होना। इधर उधर की कोशिश कामयाब होना। सिप्पा भिड़ाना या लड़ाना = युक्ति या तदबीर करना। लोगों से मिलकर उन्हें कार्यसाधन में सहायक बनाना। इधर उधरकर कहसुनकर कोशिश करना। जैसे—जगह के लिये उसने बहुत सिप्पा लड़ाया पर न मिली।

३ डौल। सूत्रपात। प्रारंभिक कार्रवाई।

मुहा०—सिप्पा जमाना = डौल खड़ा करना। किसी काम की नींव देना। किसी कार्य के अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न करना। भूमिका बाँधना।

४ रंग। प्रभाव। धाक।

क्रि० प्र०—जमना। जमाना।

**सिप्पी**†—संज्ञा स्त्री० [हि० सीपी] दे० 'सीपी'।

**सिप्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुधांशु। चंद्र। २ एक सरोवर का नाम। ३ पसीना। प्रस्वेद [को०]।

**सिप्रा**—संज्ञा पु० [सं०] १ महिषी। भैंस। २ एक झील। ३ स्त्रियों का कटिबंध। ४ मालवा की एक नदी जिसके किनारे उज्जैन (प्राचीन उज्जयिनी) बसा है। शिप्रा।

**सिफत**—संज्ञा स्त्री० [अ० सिफत] १ विशेषता। गुण। उ०—जबान बिना क्या सिफत आवै।—पलटू०, पृ० ६३। २ लक्षण। उ०—भला मखलूक खालिक की सिफत समझे कहाँ कुदरत। इसी से नेति नेति से पार वेदों ने पुकारा है।—भारतेंदु ग्रं०, भा० २, पृ० ८५१। ३ स्वभाव। ४ प्रशंसा। स्तुति (को०)। ५ सूरत। शक्ल।

**सिफति**Ⓟ†—संज्ञा स्त्री० [अ० सिफत] गुणगान। स्तुति। प्रशस्ति। उ०—सिफति करौं दिन राति टारे ना टरौंगा।—पलटू०, पृ० ८६।

**सिफर**—संज्ञा पु० [अ० सिफर, अ० साइफर, सिफर] १ शून्य। सुन्ना। बिंदी। २ रिक्त, साधारण या तुच्छ व्यक्ति (को०)।

**सिफलगी**—संज्ञा स्त्री० [अ०सिफलह् + फा० गी] ओछापन। कमीनापन।

**सिफला**—वि० [अ० सिफलह्, सिफ्लह्] १ नीच। कमीना। २ छिछोरा। ओछा।

यौ०—सिफलाकार = निम्न कोटि के काम करनेवाला। सिफलाखू = 'दे० सिफलामिजाज'। सिफलानवाज = नीचों, छिछोरों को उत्साहित करनेवाला। सिफलापन। सिफलापरवर = सिफलानवाज। सिफलामिजाज = क्षुद्र प्रकृतिवाला। निम्न स्वभाव का।

**सिफलापन**—संज्ञा पु० [अ० सिफलह् + हिं० पन (प्रत्य०)] १. छिछोरापन। ओछापन। २ पाजीपन।

**सिफा**—संज्ञा स्त्री० [अ० शिफ़] दे० 'शिफा'।

**सिफात**¹—संज्ञा स्त्री० [अ० सिफात] सिफ्त का बहुवचन। उ०—अलख सर्ब सापै कहौ लखौ कौन विधि जाइ। पाक जात की रसिकनिधि जगत सिफात दिखाइ।—स० सप्तक, पृ० १७६।

**सिफ़ाती**—वि० [अ० सिफाती] १ जो सहज या स्वाभाविक न हो। जो अभ्यास आदि से प्राप्त हो। २ सिफत से संबद्ध। गुण आदि से संबद्ध। उ०—सिफाती सिजदा करै जाती बेपरवाह। दादू०, पृ० ३५०।

**सिफारत**—संज्ञा स्त्री० [फा० सिफारत] १ दौत्य। दूत कार्य। २ किसी राज्य का प्रतिनिधिमंडल [को०]।

**सिफारतखाना**—संज्ञा पुं० [फा० सिफारतखानह्] दूतावास। दूत के रहने तथा कार्य करने का स्थान [को०]।

**सिफारश**—संज्ञा पुं० [फा० सिफारिश] दे० 'सिफारिश'। उ०—इस्का लेन देन डेढ़ पौने दो बरस से एक दोस्त की सिफारश

पर लाला मदन मोहन के यहाँ हुआ है।—श्रीनिवास ग्र०, पृ० १६४।

सिफारिश—संज्ञा स्त्री० [फा० सिफारिश] १ किसी के दोष क्षमा करने के लिये किसी से कहना सुनना। २ किसी के पक्ष मे कुछ कहना सुनना। किसी का कार्य सिद्ध करने के लिये किसी से अनुरोध। ३ माध्यम। जरिया। वसीला। ४ नौकरी देनेवाले से किसी नौकरी चाहनेवाले की तारीफ। नौकरी दिलाने के लिये किसी की प्रशसा। जैसे,—नौकरी तो सिफारिश से मिलती है। ५ सस्तुति।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

सिफारिशनामा—संज्ञा पु० [फा० सिफारिशनामह्] सिफारिशी पत्र या चीठी।

सिफारिशी वि० [फा० सिफारिशी] १ सिफारिशवाला। जिसमे सिफारिश हो। जैसे,—सिफारिशी चिट्ठी। २ जिसकी सिफारिश की गई हो। जैसे,—सिफारिशी टट्टू। ३ अनुशसा या सिफारिश करनेवाला।

सिफारिशी टट्टू—संज्ञा पु० [फा० सिफारिशी + हिं० टट्टू] वह जो केवल सिफारिश या खुशामद से किसी पद पर पहुँचा हो।

सिफाल—संज्ञा स्त्री० [फा० सिफाल] १ मिट्टी का बरतन। मृत्पात्र। २ मिट्टी का ठीकरा [को०]।

सिफालगर वि० [फा० सिफालगर] मिट्टी के बरतन बनानेवाला। कुम्हार [को०]।

सिफाली—वि० [फा० सिफाली] मिट्टी का। मृत्तिकानिर्मित। मिट्टी का बना हुआ [को०]।

सिफ्त, सिफ्ति(पु)—संज्ञा स्त्री० [फा० सिफत] दे० 'सिफत'। उ०—(क) खुदा तुज को शाही मजावार है। सिफत को तेरी कुछ न आकार है।—दक्खिनी०, पृ० २६६। (ख) भी सुदर कहि न सकै कोइ तिसनो जिसदी सिफ्ति अलेपै।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० २७५।

सिबिका(पु)—संज्ञा स्त्री० [स० शिविका] दे० 'शिविका'। उ०—सिबिका सुभग ओहार उघारी।—मानस, १।३४८।

सिमंत(पु)—संज्ञा पु० [स० सीमन्त] दे० 'सीमत'। उ०—स्याम के सीस सिमत सराहि सनाल सरोज फिराइ कै मारो।—मन्नालाल (शब्द०)।

सिम—वि० [स०] प्रत्येक। सपूर्ण। समग्र। समस्त [को०]।

सिमई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिँवई] दे० 'सिवँई,' 'सिवँयाँ'।

सिमट—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिमटना] सिमटने की क्रिया या भाव।

सिमटना—क्रि० अ० [स० समित (=एकत्र) + हिं० ना (प्रत्य०) या देश०] १ दूर तक फैली हुई वस्तु का थोडे स्थान मे आ जाना। सुकडना। सकुचित होना। २ शिकन पडना। सलवट पडना। ३. इधर उधर बिखरी हुई वस्तु का एक स्थान पर एकत्र होना। बटोरा जाना। बटुरना। इकट्ठा होना। ४ व्यवस्थित होना। तरतीब से लगना। ५ पूरा होना। निबटना। जैसे,—सारा काम सिमट गया। ६ सकुचित होना। लज्जित होना। ७ सहमना। सिटपिटा जाना।

संयो० क्रि०—जाना।

सिमटी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का कपड़ा जिसकी बुनावट खेस के समान होती है।

सिमर(पु)†—संज्ञा पु० [स० शाल्मलि ?] सेमर। विशेष दे० 'सेमल'। उ०—चदन भरम सिमर आलिंगल सालि रहल हिय काटे।—विद्यापति, पृ० ६१।

सिमरख‡—संज्ञा पुं० [फा० सगर्फ] दे० 'शिंगरफ'।

सिमरगोला—संज्ञा पुं० [सिमर ? + गोला] एक प्रकार की मेहराब।

सिमरन(पु)—संज्ञा पु० [स० स्मरण] याद करना। स्मरण। स्मृति।

सिमरना†—क्रि० स० [स० स्मरण] दे० 'सुमिरना'। उ०—(क) राम नाम का सिमरनु छोडिया माजा हाथ बिकाना।—तेग बहादुर (शब्द०)। (ख) सिमरे जो एक बार ताको राम बार बार बिसरे बिसारे नाही सो क्यो बिसराइये।—हृदयराम (शब्द०)।

सिमरिख—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की चिडिया।

सिमल—संज्ञा पु० [स० सीर (=हल) + माला] १ हल का जूआ। २ जूए मे पडी हुई खूँटी।

सिमला आलू—संज्ञा पु० [हिं० शिमला + आलू] एक प्रकार का पहाडी बडा आलू। मरबुली।

सिमसिम—वि० [?] जो कुछ कुछ आर्द्र या शीतल हो।

सिमसिमाना—क्रि० अ० [?] साधारण आर्द्रता या शीतलता प्रतीत होना।

सिमाना†[1]—संज्ञा पुं० [स० सीमान्त] सिवाना। हद।

सिमाना(पु)[2]—क्रि० स० [हिं० सिलाना] दे० 'सिलाना'। उ०—लाओ बेगि याही छन मन की प्रवीन जानि लायो दुख मानि ब्योत लई सो सिमाइ कै।—नाभा (शब्द०)।

सिमिटना(पु)†—क्रि० अ० [स० समित + हिं० ना (प्रत्य०) या देश०] दे० 'सिमटना'। उ०—(क) यह सुनि जहाँ तहाँ ते सिमिटैं आइ होइ इक ठौर।—सूर (शब्द०)। (ख) जलचर बृद जाल अतरगत सिमिटि होत एक पास। एकहि एक खात लालच बस नहिं देखत निज नास।—तुलसी (शब्द०)।

सिमृति(पु)‡—संज्ञा स्त्री० [स० स्मृति] दे० 'स्मृति'। उ०—द्रुपद सुता को लज्जा राखी। वेद पुरान सिमृति सब साखी।—लाल कवि (शब्द०)।

सिमेट—संज्ञा पु० [अ० सीमेंट] १. एक विशेष प्रकार के पत्थर का विशिष्ट प्रक्रिया से तैयार किया हुआ चूर्ण जो पलस्तर आदि करने के काम मे आता है। २ एक प्रकार का लसदार गारा जो सूखने पर बहुत कडा और मजबूत हो जाता है।

सिमेटना(पु)†—क्रि० स० [स० समित + हिं० ना] दे० 'समेटना'।

सिम्त—संज्ञा स्त्री० [अ०] ओर। तरफ। दिशा। उ०—इस हिंद से सब दूर हुई कुफ्र की जुल्मत, की तने व रहमत, नक्कारए ईमाँ को हरेक सिम्त बजाया।—भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० ५३०।

**सिय**(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सीता] सीता। जानकी। उ०—उपदेश यह जेहि तात तुम ते राम सिय सुख पावहीं।—तुलसी (शब्द०)।

**सियना**(पु)[1]—क्रि० स० [सं० सजन] उत्पन्न करना। रचना। उ०—जेहि बिरचि रचि सीय सँवरि औ रामहिं ऐसो रूप दियो री। तुलसिदास तेहि चतुर विधाता निज कर यह सजोग सियो री।—तुलसी (शब्द०)।

**सियना**†[2]—क्रि० स० [सं० सीवन] दे० 'सीना'।

**सियर**(पु)—वि० [सं० शीतल, प्रा० सीअल] दे० 'सियरा'। उ०—पदुमावति तन सियर सुबासा। नैहर राज कत पर पासा।—जायसी ग्रं० (गुप्त), पृ० ३४६।

**सियरा**(पु)[1]—वि० [सं० शीतल, प्रा० सीअड] [स्त्री० सियरी] १ ठढा। शीतल। उ०—(क) श्याम सुपेत कि राता पियरा अवरण वरण कि ताता सियरा।—कबीर (शब्द०)। (ख) सियरे वदन सूखि गए कैसे। परसत तुहिन तामरस जैसे।—तुलसी (शब्द०)। २ कच्चा। ३ छाया। छाँह।

**सियरा**[2]†—संज्ञा पु० [सं० शृगाल, प्रा० सिआल] सियार। शृगाल।

**सियराई**(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल, प्रा० सीअल, हिं० सियरा+ई (प्रत्य०)] शीतलता। ठढक। उ०—मुकुलित कुसुम नयन निद्रा तजि रूप सुधा सियराई।—सूर (शब्द०)।

**सियराना**(पु)—क्रि० अ० [हिं० सियरा+ना] ठढा होना। जुड़ाना। शीतल होना। उ०—(क) हारन सो हहरात हियो मुकुता सियरात सुवेसर ही को।—पद्माकर (शब्द०)। (ख) पादप पुहुमि नव पल्लव ते पूरि आए हरि आए सियराए भाए ते शुमार ना।—रघुराज (शब्द०)।

**सियरी**[1]—वि० [सं० शीतल] दे० 'सियरा'। उ०—(क) लोचे परी सियरी पर्यंक पै बीती घरीन खरी खरी सोचै।—पद्माकर (शब्द०)। (ख) खरे उपचार खरी सियरी सियरे तैं खरोई खरो तन छीजै।—केशव (शब्द०)।

**सियरी**[2]—संज्ञा स्त्री० [फा० सैरी] तृप्ति। अघाव। शांति। मनस्तोष। तुष्टि। उ०—मैं तुम्हारा दिल लेने के लिये कहती थी। मर्दों की तो कैफियत यह है कि एक दर्जन भर भी औरतें हों तो भी उनकी सियरी नहीं होती।—सैर०, पृ० २५।

**सियह**—वि० [फा०] दे० 'सियाह'। उ०—मुझे तेरी जुल्फों का ध्यान आ गया। जो देखी सियह सिर पै छाई घटा।—भारतेंदु ग्रं०, भा० २, पृ० ८६०।

**सिया**—संज्ञा स्त्री० [सं० सीता] सीता। जानकी। उ०—तब अगद इक वचन कह्यो। तो करि सिंधु सिया सुधि लावै किहिं बल इतो लह्यो।—सूर (शब्द०)।

**सियाक**—संज्ञा पुं० [अ० सियाक] १ गणित। हिसाब। २ चलाना। ३. बाज के पैर की डोर (को०)।

**सियादत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ सैयद होने का भाव। २ प्रतिष्ठा। बुजुर्गी। ३ सरदारी। अध्यक्षता (को०)।

**सियाना**†[1]—वि० [सं० सज्ञान, प्रा० सयाण] दे० 'सयाना'। उ०—सो सतगुरु जो होय सियाना।—कबीर सा०, पृ० १६००।

**सियाना**[2]—क्रि० स० [सं० सीवन] दे० 'सिलाना'।

**सियानी**† वि० [सं० सज्ञाना] १ चतुर। बुद्धिमती। अनुभवी। उ०—पाँच सखी मिलि देखन आईं एक ते एक सियानी।—कबीर० सा० सं०, पृष्ठ ७१। २ वयस्का। वयप्राप्त। युवती। उ०—देखते देखते सियानी होने लगी।—कूर्मा०, पृ० २१६।

**सियानोव**—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

**सियापा**—संज्ञा पुं० [फा० सियाहपोश] मरे हुए मनुष्य के शोक में कुछ काल तक बहुत सी स्त्रियों के प्रतिदिन इकट्ठा होकर रोने की रीति। मातम।

विशेष—यह रिवाज पजाब आदि पश्चिमी प्रांतों में पाया जाता है।

**सियार**†—संज्ञा पुं० [सं० शृगाल, प्रा० सिआल] [स्त्री० सियारी, सियारिन] गीदड। जबुक।

**सियार लाठी**—संज्ञा पुं० [देश०] अमलतास।

**सियारा**[1]—संज्ञा पुं० [सं० सीता (=हलरेखा), प्रा० सीआ+रा (प्रत्य०)] जुती हुई जमीन बराबर करने का लकडी का फावडा।

**सियारा**[2]—संज्ञा पुं० [सं० शीतकाल] दे० 'सियाला'।

**सियारी**—संज्ञा स्त्री० [सं० शृगाली] दे० 'सियार'।

**सियाल**(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शृगाल] शृगाल। गीदड। उ०—चहुँ दिसि सूर सोर करि धावैं ज्यों केहरिहिं सियार।—सूर (शब्द०)।

**सियाला**[1]—संज्ञा पुं० [सं० शीतकाल] शीतकाल। जाड़े का मौसिम।

**सियाला**[2]—संज्ञा पुं० [सं० सीता, प्रा० सीआ+ला (प्रत्य०)] दे० 'सियारा'।

**सियाला पोका**—संज्ञा पुं० [हिं० सियारा (=शीतयुक्त, आर्द्र) (?) + पोका (=कीडा)] एक बहुत छोटा कीडा जो सफेद चिपटे कोश के भीतर रहता है और पुरानी लोनी मिट्टीवाली दीवारों पर मिलता है। लोना पोका।

**सियाली**[1]—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का विदारी कद।

**सियाली**[2]—वि० [सं० शीतकालीन] १ जाड़े के मौसिम की। २ खरीफ को फसल।

**सियावड**—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सियावड़ी'।

**सियावडी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ अनाज का वह हिस्सा जो खेत कटने पर खलियान में से साधुओं के निमित्त निकाला जाता है। २ वह काली हाँडी जो खेतों में चिड़ियों को डराने और फसल को नजर से बचाने के लिये रखी जाती है।

**सियासत**[1]—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ देश का शासन प्रबंध तथा व्यवस्था। २ नीति। कूटनीति। राजनीति (को०)। ३ छल। फरेब। धूर्तता। मक्कारी (को०)। ४ डाँट डपट। चेतावनी (को०)। ५ दड। सजा (को०)।

सियासत[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० शास्ति] १ शासन। दंड। पीडन। २. कष्ट। यत्रणा।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

यौ०—सियासतगर = दड देनेवाला। सियासतगाह = (१) दड देने का स्थान। (२) मक्कारी का अड्डा। सियासतदाँ = नीतिज्ञ। राजनीति मे पटु।

सियासी—वि० [फा०] १ राजनीति सबधी। राजनीति का। २ राजनीतिज्ञ [को०]।

सियाह[1]—वि० [फा०] १ दे० 'स्याह'। २ अशुभ। मातमी।

यौ०—सियाहकार = दुश्चरित्र। गुनाहगार। सियाहकारी = गुनाह। बुरा काम। सियाहगोश। सियाहचश्म = (१) जिसकी आँखे काली हो। (२) बेवफा। (३) शिकारी चिडिया। सियाहजवाँ = जिसका शाप तुरत सिद्ध हो। सियाहदस्त = कजूस। कृपण। सियाहदाना = (१) स्याहदाना। काला जीरा। (२) धनियाँ। (३) सौफ का फूल। सियाहदिल = (१) निष्ठुर। क्रूर। (२) गुनाहगार। अपराधो। सियाहपोश = (१) काले कपडे पहननेवाला। (२) मातम या शोक मनानेवाला। सियाहवक्त = अभागा। बदकिस्मत। सियाहबख्ती = दुर्भाग्य। अभाग्य। सियाहमस्त = मदमत्त। नशे मे चूर। सियाहमस्ती = अत्यधिक मस्ती। सियाहरू = (१) पापी। बदकार। (२) काले मुँह का। कृष्णमुख। सियाहसफेद = हित अहित। बुराई भलाई।

सियाह[2]—संज्ञा पु० [अ०] १ चीख पुकार। वावेला। चिल्लाहट। २ जोर की आवाज। निनाद। ३ रोना पीटना [को०]।

सियाहगोश—संज्ञा पु० [फा०] १ काले कानवाला। २ बिल्ली की जाति का एक जगली जानवर। वनबिलाव।

विशेष—इसके अग लबे होते है, पूँछ पर बालो का गुच्छा होता है और रग भूरा होता है। खोपडी छोटी और दाँत लबे होते है। कान बाहर की ओर काले और भीतर की ओर सफेद होते है। इसकी लबाई प्राय ४० इच होती है। यह घास की झाडियो मे रहता और चिडियो को मारकर खाता है। इसकी कुदान पाँच से छह फुट तक की होती है। यह सारस और तीतर का शत्रु है। यह बडी सुगमता से पाला और चिडियो का शिकार करने के लिये सिखाया जा सकता है। इसे अमीर लोग शिकार के लिये रखते हैं।

सियाहत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ देश देश घूमना। पर्यटन। २ यात्रा। सफर [को०]।

सियाहपोश—वि० [फा० सियाह + पोश] १ काला या नीला कपडा पहननेवाला। २ अशुभ या भद्दा पोशाक पहने हुए। उ०—हरवक्त सियाहपोश मूँ मे लूको लगाए।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १५५।

सियाहा—संज्ञा पु० [फा० सियाहह्] १ आय व्यय की वही। रोजनामचा। वही खाता। २ सरकारी खजाने का वह रजिस्टर जिसमे जमीदारी से प्राप्त मालगुजारी लिखी जाती है। ३. वह सूची जिसमे काश्तकारो से प्राप्त लगान दर्ज करते है।

मुहा०—सियाहा करना = हिसाब की किताब मे लिखना। टाँकना। चढाना। सियाहा होना = सियाहा मे दर्ज होना। लिखा जाना।

सियाहानवीस—संज्ञा पु० [फा०] सियाहा का लिखनेवाला। सरकारी खजाने मे सियाहा लिखने के लिये नियुक्त कर्मचारी।

सियाही—संज्ञा स्त्री० [फा०] दे० 'स्याही'।

यौ०—सियाहीचट, सियाहीसोख = सोखता। ब्लाटिंग पेपर।

सिरग(पु)—संज्ञा पु० [हिं० सिर] शीर्ष अग। दे० 'सिर'। उ०—सेतीस सहस सज्जे फिरग। तिन लव भूल टोपी सिरग।—पृ० रा०, १३।१८।

सिर[1]—संज्ञा पुं० [सं० शिरस्] १. शरीर के सबसे अगले या ऊपरी भाग का गोल तल जिसके भीतर मस्तिष्क रहता है। कपाल। खोपडी। २ शरीर का सबसे अगला या ऊपर का गोल या लबोतरा अग जिसमे आँख, कान, नाक और मुँह ये प्रधान अवयव होते है और जो गरदन के द्वारा धड से जुडा रहता है। उ०—उत्थि सिर नवइ सब्ब कइ।—कीर्ति०, पृ० ५०।

मुहा०—सिर अलग करना = सिर काटना। प्राण ले लेना। सिर आँखो पर होना = सहर्ष स्वीकार होना। माननीय होना। जैसे,—आपकी आज्ञा सिर आँखो पर है। सिर आँखो पर बिठाना, बैठाना या रखना = बहुत आदर सत्कार करना। (भूत प्रेत या देवी देवता का) सिर आना = आवेश होना। प्रभाव होना। खेलना। सिर उठाना = (१) ज्वर आदि से कुछ फुरसत पाना। जैसे,—जब से बच्चा पडा है, तब से सिर नही उठाया है। (२) विरोध मे खड़ा होना। शत्रुता के लिये सनद्ध होना। मुकाबिल के लिये तैयार होना। जैसे,—बागियो ने फिर सिर उठाया। (३) ऊधम मचाना। दगा फसाद करना। शरारत करना। उपद्रव करना। (४) इतराना। अकड दिखाना। घमड करना। (५) सामने मुँह करना। बराबर ताकना। लज्जित न होना। जैसे,—ऊँची नीची सुनता रहा, पर सिर न उठाया। (६) प्रतिष्ठा के साथ खडा होना। इज्जत के साथ लोगो से मिलना। जैसे,—जब तक भारतवासियो की यह दशा है, तब तक सभ्य जातियो के बीच वे कैसे सिर उठा सकते है ? उ०—मान के ऊँचे महल मे या जिसे, सिर उठाये जाति के बच्चे घुसे।—चुभते०, पृ० ५। सिर उठाने की फुरसत न होना = जरा सा काम छोडने को छुट्टी न मिलना। कार्य की अधिकता होना। सिर उठाकर चलना = इतराकर चलना। घमड दिखाया। अकडकर चलना। सिर उतरवाना = सिर कटाना। मरवा डालना। सिर उतारना = सिर काटना। मार डालना। (किसी का) सिर ऊँचा करना = समान का पात्र बनाना। इज्जत देना। (अपना) सिर ऊँचा करना = प्रतिष्ठा के साथ लोगों के बीच खड़ा होना। दस आदमियो मे इज्जत बनाए रखना। सिर औधाकर पड़ना = चिंता और शोक के कारण सिर नीचा किए पड़ा या बैठा

रहना। सिर काढना = प्रसिद्ध होना। प्रसिद्धि प्राप्त करना। सिर करना = (स्त्रियों के) बाल सँवारना। चोटी गूँथना। (कोई वस्तु) सिर करना = जबरदस्ती देना। इच्छा के विरुद्ध सपुर्द करना। गले मढना। सिर कलम करना या काटना = सिर उतारना। मार डालना। सिर का बोझ टलना = निश्चितता होना। झंझट टलना। सिर का बोझ टालना = बेगार टालना। अच्छी तरह न करना। जी लगाकर न करना। सिर के बल चलना = बहुत अधिक आदरपूर्वक किसी के पास जाना। उ०—जो मिले जी खोलकर उनके यहाँ, चाह होती है कि सिर के बल चले।—चोखे०, पृ० १४। सिर खपाना = (१) सोचने विचारने में हैरान होना। (२) कार्य में व्यग्र होना। सिर खाली करना = (१) बकवाद करना। (२) माथा पच्ची करना। सोच विचार में हैरान होना। सिर खाना = बकवाद करके जी उबाना। व्यर्थ की बातें करके तंग करना। सिर खुजलाना = मार खाने को जी चाहना। शामत आना। नटखटी सूझना। सिर चकराना = दे० 'सिर घूमना'। सिर चढ जाना = (१) मुँह लग जाना। (२) गुस्ताख होना। निहायत बेअदब होना। उ० नवाब साहब ने जो हँसी हँसी में उस दिन जरी मुँह लगाया तो सिर चढ गई।—सैर०, पृ० २६। सिर चढा = मुँह लगा। लाडला। धृष्ट। सिर चढाना = (१) माथे लगाना। पूज्य भाव दिखाना। आदरपूर्वक स्वीकार करना। सिर माथे लेना। उ० नृप दर्तांहि बीरा दीनों। उनि सिर चढाइ करि लीनों।—सुंदर० ग्रं०, भा० १, पृ० १२०। (२) बहुत बढा देना। मुँह लगाना। गुस्ताख बनाना। (३) किसी देवी देवता के सामने सिर काटकर बलि चढाना। सिर घूमना = (१) सिर में दर्द होना। (२) घबराहट या मोह होना। बेहोशी होना। सिर चढकर बोलना = (१) भूत प्रेत का सिर पर आकर बोलना। (२) स्वयं प्रकट हो जाना। छिपाए न छिपना। सिर चढकर मरना = किसी को अपने खून का उत्तरदायी ठहराना। किसी के ऊपर जान देना। सिर चला जाना = मृत्यु हो जाना। सिर जोडकर बैठना = मिलकर बैठना। सिर जोडना = (१) एकत्र होना। पंचायत करना। (२) एका करना। षड्यंत्र रचना। सिर झाडना = बालों में कंघी करना। सिर झुकाना = (१) सिर नवाना। नमस्कार करना। (२) लज्जा से गरदन नीची करना (३) सादर स्वीकार करना। चुपचाप मान लेना। सिर टकराना = सिर फोडना। अत्यंत परिश्रम करना। (किसी के) सिर डालना = सिर मढना। दूसरे के ऊपर कार्य का भार देना। सिर टूटना = (१) सिर फटना। (२) लडाई झगडा होना। सिर तोडना = (१) सिर फोडना। (२) खूब मारना पीटना। (३) वश में करना। सिर दर्द के लिये मूँड कटाना = छोटी बात के लिये बडा नुकसान करना। उ०—रोजमर्रा की जलन से बचने के लिये अलबत्ता ऐसी स्त्री को अलग कर दिया जा सकता है, परंतु वह सिर दर्द के लिये मूँड कटाने का इलाज है।—पिंजरे०, पृ० ११४। सिर देना = प्राण निछावर करना। जान देना। सिर धरना = सादर स्वीकार करना। मान लेना। अंगीकार करना।

(किसी के) सिर धरना = आरोप करना। लगाना। मढाना। उत्तरदायी बनाना। सिर धुनना = शोक या पछतावे से सिर पीटना। पछताना। हाथ मलना। शोक करना। उ०—कीन्हे प्राकृत जन गुनगाना। सिर धुनि गिरा लगति पछिताना। —मानस, पृ० १०। सिर नंगा करना = (१) सिर खोलना। (२) इज्जत उतारना। सिर नवाना = (१) सिर झुकाना। नमस्कार करना। (२) विनीत बनना। दीन बनना। आजिजी करना। सिर फिराना = सिर चकराना। (अपना सिर) नीचे करना = अप्रतिष्ठा होना। इज्जत बिगडना। मान भंग होना। (२) पराजय होना। हार होना। (३) लज्जा होना। सिर पचाना = (१) परिश्रम करना। उद्योग करना। (२) सोचने विचारने में हैरान होना। सिर पटकना = (१) सिर फोडना। सिर धुनना। (२) बहुत परिश्रम करना। (३) अफसोस करना। हाथ मलना। सिर पर कफन बाँधकर चलना = प्रति पल मृत्यु के लिये तैयार रहना। सिर पर किसी का न होना = निरंकुश रहना। कोई रोकने टोकनेवाला न होना। उ०—कोई उनके सिर पर तो है नहीं, अपनी आप मुख्तार हैं।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ३७। सिर पर आ पडना = अपने ऊपर घटित होना। ऊपर आ बनना। सिर पर आ जाना = (१) बहुत समीप आ जाना। (२) थोडे ही दिन और रह जाना। सिर पर उठा लेना = ऊधम जोतना। धूम मचाना। सिर पर चढ जाना = गुस्ताखी करना। बेअदबी करना। मुँह लगना। उ०—एक दफा तरह दी तो अब सिर पर चढ गया।—फिसाना०, भा० ३, पृ० १२५। (अपने) सिर पर पाँव रखना = बहुत जल्द भाग जाना। हवा होना। (किसी के) सिर पर पाँव रखना = किसी के साथ बहुत उद्दंडता का व्यवहार करना। सिर पर धरती या पृथ्वी उठाना = बहुत उत्पात करना। सिर पर पडना = (१) जिम्मे पडना। (२) अपने ऊपर घटित होना। गुजरना। सिर पर खेलना = जान को जोखों में डालना। सिर पर खून चढना या सवार होना = (१) जान लेने पर उतारू होना। (२) हत्या के कारण आपे में न रहना। सिर पर रखना = प्रतिष्ठा करना। मान करना। सिर पर छप्पर रखना = बोझ से दबाना। दबाव डालना। सिर पर मिट्टी डालना = शोक करना। सिर पर लेना = ऊपर लेना। जिम्मे लेना। सिर पर शैतान चढना = गुस्सा चढना। सिर पर जूँ न रेंगना = ध्यान न होना। चेत न होना। होश न आना। सिर रहना = मान रहना। प्रतिष्ठा बनी रहना। (किसी के) सिर डालना = माथे मढना। आरोपण करना। सिर पर बीतना = सिर पर पडना। सिर पर होना = थोडे ही दिन रह जाना। बहुत निकट होना। (किसी का किसी के) सिर पर होना = सरक्षक होना। रक्षा करनेवाला होना। सिर पर हाथ धरना या रखना = (१) सरक्षक होना। सहायक होना। (२) शपथ खाना। सिर पडना = (१) जिम्मे पडना। भार ऊपर दिया जाना। (२) हिस्से में आना। सिर पडी सहना = अपने जिम्मे आई विपत्ति या झंझट को झेलना। उ०—पक गया जी नाक में दम हो गया, तुम न सुधरे, सिर पड़ी हमने सही।—चोखे०, पृ०

४७। सिर पर हाथ फेरना = प्यार करना। आश्वासन देना। ढारस बँधाना। उ०—बेतरह फेर मे पडे हम है, फेरते हाथ क्यो नही सिर पर।—चुभते०, पृ० ४। सिर फिरना = (१) सिर घूमना। सिर चकराना। (२) पागल हो जाना। उन्माद होना। (३) बुद्धि नष्ट होना। सिर फोडना = (१) लडाई झगडा करना। (२) कपालक्रिया करना। सिर फेरना = कहा न मानना। अवज्ञा करना। अस्वीकार करना। सिर बाँधना = (१) सिर पर आक्रमण करना। (पटेबाजी)। (२) चोटी करना। सिर गूँथना। (३) घोडे की लगाम इस प्रकार पकडना कि चलते समय घोडे की गर्दन सीधी रहे। सिर बेचना = सिर देना। फौज की नौकरी करना। सिर भारी होना = सिर मे पीडा होना। सिर घूमना। सिर मारना = (१) समझाते समझाते हैरान होना। (२) सोचने विचारने मे हैरान होना। सिर खपाना। (३) चिल्लाना। पुकारना। (४) बहुत प्रयत्न करना। अत्यत श्रम करना। सिर मुँडाना = (१) बाल बनवाना। (२) जोगी बनना। फकीरी लेना। सन्यासी होना। सिर मुँडाते ही ओले पडना = आरभ मे ही कार्य बिगडना। कार्यारभ होते ही विघ्न पडना। सिर मढना = जिम्मे करना। इच्छा के विरुद्ध सपुर्द करना। सिर रँगना = सिर फोडना। सिर लोहू लोहान करना। सिर रहना = (१) किसी के पीछे पडना। (२) रात दिन परिश्रम करना। सिर सफेद होना = वृद्धावस्था आ जाना। सिर पर सेहरा होना = किसी कार्य का श्रेय प्राप्त होना। वाहवाही मिलना। सिर सहलाना = खुशामद करना। प्यार करना। सिर से बला टालना = बेगार टालना। जी लगाकर काम न करना। सिर से बोझ उतरना = (१) झझट दूर होना। (२) निश्चितता होना। सिर से पानी गुजरना = सहने की पराकाष्ठा होना। असह्य हो जाना। सिर घुटाना या घोटाना = सिर मुडाना। सिर से पैर तक = आरभ से अत तक। चोटी से एडी तक। सर्वाग मे। पूर्णतया। सिर से पैर तक आग लगना = अत्यत क्रोध होना। आग बबूला होना। सिर से चलना = बहुत समान करना। सिर के बल चलना। सिर से सिरवाहा है = सिर के साथ पगडी है। अर्थात् सरदार के साथ फौज अवश्य रहेगी। मालिक के साथ उसके आश्रित अवश्य रहेगे। सिर से कफन बाँधना = मरने के लिये उद्यत होना। सिर से खेलना = सिर पर भूत आना। सिर से खेल जाना = प्राण दे देना। सिर पर सीग होना = कोई विशेषता होना। खसूसियत होना। सुर्खाब का पर होना। सिर का पसीना पैर तक आना = बहुत परिश्रम होना। सिर हथेली पर लेना = मृत्यु के लिये हरदम तैयार रहना (किसी का किसी के) सिर होना। (१) पीछे पडना। पीछा न छोडना। साथ साथ लगा रहना। (२) बार बार किसी बात का आग्रह करके तग करना। (३) उलझ पडना। झगडा करना। (किसी बात के) सिर होना = ताड लेना। समझ लेना। (दोष आदि किसी के) सिर होना = जिम्मे होना। ऊपर पडना। जैसे,—यह अपराध तुम्हारे सिर है।

२ ऊपर की ओर। सिरा। चोटी। ३ किनारा। ४ किसी वस्तु का ऊपरी भाग ४. सरदार। प्रधान। जैसे, सिर से सिरवाहा। ५ दिमाग। अक्ल। ६ शुरूआत। प्रारभ।

सिर²—सज्ञा पुं० [स० शिर] पिपरामूल। पिप्पलीमूल।

सिर³—सज्ञा पु० [अ० सिर्र] रहस्य। मर्म। भेद। राज [को०]।

सिरई—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिर + ई (प्रत्य०)] चारपाई मे सिरहाने की पट्टी।

सिरकटा—वि० [हिं० सिर + कटना] [वि० स्त्री० सिरकटी] १ जिसका सिर कट गया हो। जैसे,—सिरकटी लाश। २ दूसरो के सिर काटनेवाला। अनिष्ट करनेवाला। बुराई करनेवाला। अपकारी।

सिरका—सज्ञा पुं० [फा० सिरकह्] धूप मे पकाकर खट्टा किया हुआ ईख, अगूर, जामुन, आदि का रस। उ०—(क) भई मिथौरी सिरका बरा। सोठ लाय के खरसा धरा।—जायसी (शब्द०)। (ख) हे रे कलाली तै क्या किया। सिरका सातै प्याला दिया। —सतवाणी०, पृ० ३३।

विशेष—ईख, अगूर, खजूर, जामुन आदि के रस को धूप मे पकाकर सिरका बनाया जाता है। यह स्वाद मे अत्यत खट्टा होता है। वैद्यक मे यह तीक्ष्ण, गरम, रुचिकारी, पाचक, हलका, रूखा, दस्तावर, रक्तपित्तकारक तथा कफ, कृमि और पाडु रोग का नाश करनेवाला कहा गया है। यूनानी मतानुसार यह कुछ गरमी लिए ठढा और रुक्ष, स्निग्धताशोधक, नसो और छिद्रो मे शीघ्र ही प्रवेश करनेवाला, गाढे दोषो को छाँटनेवाला, पाचक, अत्यत क्षुधाकारक तथा रोध का उद्घाटक है। यह बहुत से रोगो के लिये परम उपयोगी है।

सिरकाकश—सज्ञा पु० [फा०] अरक खीचने का एक प्रकार का यत्र।

सिरकाफरोश—वि० [फा० सिरकह् फरोश] १ सिरका बेचनेवाला। जो सिरका बेचता हो। २. रूखी बाते करनेवाला। बेमुरव्वत [को०]।

सिरकी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सरकडा] १ सरकडा। सरई। सरहरी। २ सरकडे या सरई की पतली तीलियो की बनी हुई टट्टी जो प्राय दीवार या गाडियो पर धूप और वर्षा से बचाव के लिये डालते है। उ०—बिदित न सनमुख ह्वै सकै अँखिया बडी लजोर। बरुनी सिरकिन ओट ह्वै हेरत गोहन ओर।—रसनिधि (शब्द०)। ३ बाँस की पतली नली जिसमे बल बूटे काढने का कलाबत्तू भरा रहता है।

सिरखप¹—वि० [हिं० सिर + खपना] १ सिर खपानेवाला। २ परिश्रमी। ३ निश्चय का पक्का।

सिरखप²—सज्ञा स्त्री० दे० 'सिरखपी'। उ०—जो तुमको यही समझ होती, तो मुझको इतनी सिरखप क्यो करनी पडती।—ठेठ०, पृ० ८।

सिरखपी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिर + खपना] १ परिश्रम। हैरानी। २ जोखिम। साहसपूर्ण काय।

सिरखिली—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की चिडिया जिसका सपूर्ण शरीर मटमैला, पर चोच और पैर काले होते हैं।

सिरखिस्त—संज्ञा पु० [फा० शीरखिस्त] एक प्रसिद्ध पदार्थ जो कुछ पेडों की पत्तियों पर ओस की तरह जम जाता है और दवा के काम मे आता है। यव शर्करा। यवास शर्करा।

सिरखी—वि० [स० सदृश, प्रा० सरिक्ष, राज० सिरखी] [पुं० सिरखा (=सरीखा)] सदृश। समान। सरीखी। उ०—सूली सिरखी सेभडी, तो विण जाणे नाह।—ढोला०, दू० १६६।

सिरगनेस†—संज्ञा पु० [हिं० श्रीगणेश] आरभ। शुरुआत। उ०—पहले भगडा का सिरगनेस दो ही औरतों मे होता है।—मैला०, पृ० ७१।

सिरगा—संज्ञा स्त्री० [देश०] घोडे की एक जाति। उ०—सिरगा समँदा स्वाइ सेलिया सूर सुरगा। मुसकी पँचकल्यान कुमैता केहरिरगा।—सूदन (शब्द०)।

सिरगिरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिर+गिरि (=चोटी)] १ कलगी। शिखा। २ चिडियों के सिर की कलगी।

सिरगोला—संज्ञा पु० [देश०] दुग्धपाषाण।

सिरघुरई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिर+घूरना (=घूमना), तुल० वँ० घुर] ज्वराकुश तृण।

सिरचद—संज्ञा पु० [हिं० सिर+चद] एक प्रकार का अर्धचद्राकार गहना जो हाथी के मस्तक पर पहनाया जाता है। उ०—सिरचद चद दुचद दुति आनद कर मनिमय वसै।—गोपाल (शब्द०)।

सिरचढा—वि० [हिं० सिर+चढना] मुँहलगा। वेअदव। ढीठ।

सिरजक(पु)—संज्ञा पु० [स० सर्जक, हिं० सिरिजन (<स०√सृज्> सिरिज+अन (प्रत्य०)] बनानेवाला। रचनेवाला। सृष्टिकर्ता। उ०—अब बदौ कर जोरि कै, जग सिरजक करतार। रामकृष्ण पद कमल युग, जाको सदा अधार।—रघुराज (शब्द०)।

सिरजन—संज्ञा पु० [स० सजन, (हिं० सृजन)] निर्माण। रचना। सृष्टि करना। जैसे, सिरजनहार।

सिरजनहार(पु)—संज्ञा पु० [हिं० सिरजन+हार (=वाला)] १ रचनेवाला। बनानेवाला। सृष्टिकर्ता। कर्तार। उ०—हे गुसाई तू सिरजनहारू। तुइ सिरजा एहि समुँद अपारू।—जायसी (शब्द०)। २ परमेश्वर। उ०—माया सगी न मन सगा, सगा न यह ससार। परशुराम यह जीव को, सगा तो सिरजनहार।—रघुराज (शब्द०)।

सिरजना(पु)¹—क्रि० स० [स० सर्जन] रचना। उत्पन्न करना। सृष्टि करना। उ०—जग सिरजत पालत सहरत पुनि क्यो बहुरि करयो।—सूर (शब्द०)।

सिरजना(पु)²—क्रि० स० [स० सञ्चयन] सचय करना। हिफाजत से रखना।

सिरजित(पु)—वि० [स० सर्जित] सिरजा हुआ। रचा हुआ। उ०—तुम जदुनाथ अनन्य उपासी। नहिं मम सिरजित लोक विलासी।—रघुराज (शब्द०)।

सिरताज—संज्ञा पु० [स० सिर+फा० ताज] १ मुकुट। शिरोभूषण। २ शिरोमणि। सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति या वस्तु। सबसे उत्कृष्ट व्यक्ति या वस्तु। उ०—राम को बिसारिवो निषेध सिरताज रे। राम नाम महामनि फनि जगजाल रे।—तुलसी (शब्द०)। ३ पति। शौहर (को०)। ४ स्वामी। प्रभु। मालिक। उ०—कुजन मे क्रीडा करै मनु वाही को राज। कम सकुच नहिं मानई रहत भयो सिरताज।—सूर (शब्द०)। ५ सरदार। अग्रगण्य। अगुआ। मुखिया। उ०—सूर सिरताज महाराजनि के महाराज जाको नाम लेत है सुखेत होत ऊसरो।—तुलसी (शब्द०)। ६ एक प्रकार का आवरण, पर्दा या नकाब (को०)।

सिरतान—संज्ञा पु० [हिं० सिर+तान ?] १. आसामी। काश्तकार। २ मालगुजार।

सिरतापा—क्रि० वि० [फा० सर+ता+पा] १ सिर से पाँव तक। नख से लेकर शिख तक। उ०—केस मेघावरि सिर ता पाहिं।—जायसी (शब्द०)। २ आदि से अत तक। सपूर्ण। बिलकुल। सरासर

सिरती†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीर] जमा जो आसामी जमींदार को देता है। लगान।

सिरत्राण(पु)—संज्ञा पुं० [स० शिरस्त्राण] दे० 'शिरस्त्राण'।

सिरदा(पु)—संज्ञा पुं० [अ० सिजदा] दे० 'सिजदा'। उ०—(क) एकादशी न रोजा करई। डडवत करै न सिरदा परई।—पलटू०, भा० ३, पृ० ६०। (ख) कई लाख तुम रडी छाँडी केते बेटी बेटा। कितने बैठे सिरदा करते माया जाल लपेटा।—मलूक०, पृ० १।

सिरदार(पु)‡—संज्ञा पु० [फा० सरदार] दे० 'सरदार'। उ०—ब्रज परगन सिरदार महरि तू ताकी करत नन्हाई।—सूर (शब्द०)। (ख) सिरदार जूझत खेत मैं। भजि गए बहुत अचेत मैं।—सूदन (शब्द०)।

सिरदारी(पु)‡—संज्ञा स्त्री० [फा० सरदार+ई (प्रत्य०)] दे० 'सरदारी'। उ०—साहिजहाँ यह चित्त विचारी। दारा को दीन्ही सिरदारी।—लाल कवि (शब्द०)।

सिरदुआली—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिर+फा० दुवाल] लगाम के कडो मे लगा हुआ कानो के पीछे तक का घोडो का एक साज जो चमडे या सूत का बना होता है।

सिरनाम(पु)—वि० [फा० सरनाम] ख्यात। मशहूर। प्रसिद्ध। उ०—रोम रोम जो अघ भरयौ पतितन मैं सिरनाम। रसनिधि वाहि निवाहिबो प्रभु तेरोई काम।—स० सप्तक, पृ० २२५।

सिरनामा—संज्ञा पु० [फा० सर+नामह् (=पत्र)] १ लिफाफे पर लिखा जानेवाला पता। २ पत्र के आरभ मे पत्र पानेवाले का नाम, उपाधि, अभिवादन आदि। ३ किसी लेख के विषय मे निर्देश करनेवाला शब्द या वाक्य जो ऊपर लिख दिया जाता है। शीर्षक। (अ०) हेडिंग। सुर्खी।

सिरनेत—संज्ञा पुं० [हिं० सिर+स० नेत्री (=धज्जी या डोरी)] १ पगडी। पटा। चीरा। उ०—(क) रे नेही मत डगमगै बाँध प्रीति सिरनेत।—रसनिधि (शब्द०)। (ख) अधम उधारन बिरद कौ तुम बाँधौ सिरनेत।—स० सप्तक, पृ० २२६। २ क्षत्रियो की एक शाखा जो अपना मूल स्थान श्रीनगर

(गढवाल) बताती है। उ०—पुनि सिरनेतन्ह देस सिधारा। कीन्हो ब्याह, उछाह अपारा।—रघुराज (शब्द०)।

सिरपांव†—संज्ञा पुं० [हिं० सिर + पांव] दे० 'सिरोपाव'।

सिरपाउ(पु)—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सिरोपाव'। उ०—सिरपाउ भाउ नप्पे सरस्स। को गनै द्रव्य भंडार अस्स।—पृ० रा०, ४१९२।

सिरपाव—संज्ञा पुं० [हिं० सिर + पाँव] दे० 'सिरोपाव'। उ०—कीरतसिंह भी घोड़े और सिरपाव पाकर अपने बाप के साथ रुखसत हुआ।—देवीप्रसाद (शब्द०)।

सिरपैंच, सिरपेच—संज्ञा पुं० [फा० सर + पेच] १ पगडी। २ पगडी के ऊपर का छोटा कपडा। ३ पगडी पर बाँधने का एक आभूषण। उ०—कलगी, तुर्रा और जग सिरपेच सुकुंडल।—सूदन (शब्द०)।

सिरपैंच(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० सिरपेच] दे० 'सिरपेच'। उ०—दीठि गई सिरपैंच पै फिर हारी मैं ऐंच। जो उरझी सुरझी न फिर परी पैंचि कै पैंच।—स० सप्तक, पृ० ३७६।

सिरपोश—संज्ञा पुं० [फा० सरपोश] १ सिर पर का आवरण। टोप। कुलाह। २. बंदूक के ऊपर का कपडा। (लश्करी)।

सिरफूल—संज्ञा पुं० [हिं० सिर + फूल] सिर पर पहना जानेवाला स्त्रियों का फूल की आकृति का एक आभूषण। उ०—(क) छतियाँ पर लोल लुरैं अलकैं सिरफूल अरुभि सो यों दुति दै।—मन्नालाल (शब्द०)। (ख) बेनी चुनी चमकै किरनैं सिरफूल लख्यो रवि तूल अनूपमैं।—मन्नालाल (शब्द०)।

सिरफेंटा—संज्ञा पुं० [हिं० सिर + फेंटा] साफा। पगडी। मुरेठा। उ०—पीरो भगा पटुका बिन छोर छरी कर लाल जरी सिरफेंटा।—मन्नालाल (शब्द०)।

सिरबंद—संज्ञा पुं० [हिं० सिर + फा० बंद] साफा।

सिरबंदी[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिर + फा० बंदी] माथे पर पहनने का स्त्रियों का एक आभूषण।

सिरबंदी[2]—संज्ञा पुं० [हिं० सिर + बंद] रेशम के कीड़े का एक भेद।

सिरबोझी—संज्ञा पुं० [हिं० सिर + बोझ] एक प्रकार के पतले बाँस जो पाटन के काम में आते हैं।

सिरपच्चन†—संज्ञा पुं० [हिं० सिर + पचाना] सिर खपाना। सिर मगजन।

सिरमगजन†—संज्ञा पुं० [हिं० सिर + अ० मग्ज] माथा खोटी। माथा पच्ची। २ सिर खपाना। उ०—बेचारे वृद्ध आदमी को सुबह से शाम तक सिरमगजन करते गुजरता था।—रंगभूमि, भा० २, पृ० ६१६।

सिरमनि(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सिर + मणि] दे० 'शिरोमणि'।

सिरमुंडा—वि० [हिं०] १ जिसका सिर मुँडा हो। २ निगुरा। निगोड़ा। स्त्रियों की एक गाली।

सिरमौर—संज्ञा पुं० [हिं० सिर + मौर] १ सिर का मुकुट। उ०—ताके तीर सदा सुलि खेलत राधारमण रसिक सिरमौर।—घनानंद, पृ० ४४३। २ सिरताज। शिरोमणि। प्रधान या श्रेष्ठ व्यक्ति। उ०—सहज सलोने राम लखन ललित नाम जैसे सुने तैसेई कुँअर सिरमौर हैं।—तुलसी (शब्द०)।

सिररुह(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शिरोरुह] दे० 'शिरोरुह'। उ०—कुंचित सिररुह बरुथ कुचित बिच सुमन जूथ, मनिजुत सिसु फनि अनीक ससि समीप आई।—तुलसी (शब्द०)।

सिरवा†—संज्ञा पुं० [हिं० सिर] वह कपड़ा जिससे खलिहान में अनाज बरसाने के समय हवा करते हैं। ओसाने में हवा करने का कपडा।

मुहा०—सिरवा मारना = भूसा उड़ाने के लिये कपड़े आदि से हवा करना।

सिरवार(पु)[1]—संज्ञा पुं० [सं० शैवाल] दे० 'सिवार'।

सिरवार†[2]—संज्ञा पुं० [हिं० सीर + कार] जमींदार का वह कारिंदा जो उसकी खेती का प्रबंध करता है।

सिरस—संज्ञा पुं० [सं० शिरीष] शीशम की तरह का लबा एक प्रकार का ऊँचा पेड।

विशेष—इसका वृक्ष बड़ा किंतु अचिरस्थायी होता है। इसकी छाल भूरापन लिए हुए खाकी रंग की होती है। लकड़ी सफेद या पीले रंग की होती है, जो टिकाऊ नहीं होती। हीर की लकडी कालापन लिए भूरी होती है। पत्तियाँ इमली के पत्तियों के समान परंतु उनसे लंबी चौड़ी होती हैं। चैत बैसाख में यह वृक्ष फूलता फलता है। इसके फूल सफेद, सुगंधित, अत्यंत कोमल तथा मनोहर होते हैं। कवियों ने इसके फूल की कोमलता का वर्णन किया है। इसके वृक्ष से बबूल के समान गोंद निकलता है। इसकी छाल, पत्ते, फूल और बीज औषध के काम में आते हैं। इसके तीन भेद होते हैं। काला, पीला और लाल। आयुर्वेद के अनुसार यह चरपरा, शीतल, मधुर, कड़वा, कसैला, हलका तथा वात, पित्त, कफ सूजन, विसर्प, खाँसी, घाव, विषविकार, रुधिरविकार, कोढ़ खुजली, बवासीर, पसीने और त्वचा के रोगों को हरण करनेवाला है। यूनानी मतानुसार यह ठंढा और रूखा है। उ०—(क) काम विधि मेरो सुत्र सिरस सुमन तारो छन छुरी सोह कुलिस लै टेढ़े है।—तुलसी (शब्द०)। (ख) फूलों ही के काम स्वाद है, यह सब कहते आते हैं। सिरस फूल से भी मृदुतर, हम उनके बाहु बताते हैं।—महावीरप्रसाद (शब्द०)।

सिरसा—संज्ञा पुं० [सं० शिरीष] दे० 'सिरस'।

सिरसी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का तीतर।

सिरहाना—संज्ञा पुं० [सं० शिरस् + आधान] चारपाई में सिर की ओर का भाग। खाट का सिरा। मुंडवारी। उ०—छूटी लटैं लटकैं सिरहाने लौं फैलि रह्यो सुखबेद को पानी (शब्द०)।

सिराखु—संज्ञा पुं० [सं० शिराखु] चूहा। मूस (को०)।

सिराचा—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पतला बाँस जिसमें कुलियाँ थोड़ी और मोटे दाने होते हैं।

सिराह(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल प्रा० सीयल, सीअड, हिं० सियरा] शीतलता। छाँह या छाया जो शीतल है। उ०—हूयाँ न

काम कछू काहू सो पालत प्रान रावरी आँह। आनँदघन दुखताप मेटियै कीजै कृपा सिराँह।—घनानद, पृ० ५०६।

**सिरा**[1]—सज्ञा पुं० [हिं० सिर] १ लबाई का अंत। लबाई के दो छोरो मे से कोई एक। छोर। टोक। जैसे,—एक सिरे से दूसरे सिरे तक। २ ऊपर का भाग। शीर्ष भाग। ३ अतिम भाग। आखिरी हिस्सा। ४ आरंभ का भाग। शुरू का हिस्सा। जैसे,—(क) सिरे से कहो, मैने सुना नही। (ख) अब वह काम नए सिरे से करना पडेगा। (ग) सिरे से आखीर तक। ५ नोक। अनी। ६ अगभाग। अगला हिस्सा।

मुहा०—सिरे का = अव्वल दरजे का। पल्ले सिरे का। सिरे का रग = सबसे प्रधान रग। जेठा रग। (रँगरेज)।

**सिरा**[2]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ रक्तनाडी। २ सिंचाई की नाली। ३ खेत की सिंचाई। ४ पानी की पतली धारा। ५ गगरा। कलसा। डोल।

**सिराज**—सज्ञा पुं० [अ०] १ सूर्य। २ दीपक। दिया [को०]।

**सिराजाल**—सज्ञा पुं० [स०] १ नेत्र का एक रोग। शिराजाल। २ छोटी रक्तनाडियो का समूह। नाडीजाल [को०]।

**सिराजी**—सज्ञा पुं० [फा० शीराज (नगर)] शीराज का घोडा। उ०—अवलक अरबी लखी सिराजी। चौधर चाल समँद भल ताजी।—जायसी (शब्द०)।

**सिरात**—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ रास्ता। सीधा मार्ग। २ नर्क के आरपार बाल से भी पतला और तलवार की धार से भी तेज पुल।

विशेष—हदीस के अनुसार इस पुल पर से सभी को कयामत के दिन गुजरना होगा। धर्मात्मा इसपर से पार हो जायँगे और पापी कट मर जायँगे।

**सिराना**†(पु)[1]—क्रि० अ० [हिं० सीरा + ना] १ ठढा होना। शीतल होना। २ मद पडना। हतोत्साह होना। उमग न रह जाना। हार जाना। उ०—वज्रायुध जल बरषि सिराने। परची चरन नव प्रभु करि जाने।—सूर (शब्द०)। ३ समाप्त होना। खतम होना। अत को पहुँचना। जैसे,—काम सिराना। ४ शात होना। मिटना। दूर होना। उ०—अब रघुनाथ मिलाऊँ तुमको सुदरि सोग सिराइ।—सूर (शब्द)। ५ व्यतीत होना। बीत जाना। गुजर जाना। उ०—वैई चिरजीवी अमर निधरक फिरौ कहाइ। छिन बिछुरे जिनके न इहि पावस आयु सिराइ।—बिहारी (शब्द०)। ६ काम से छुट्टी मिलना। फुरसत वा अवकाश मिलना।

**सिराना**[2]—क्रि० स० १ ठढा करना। शीतल करना। २ जल मे डुबाकर शीतल करना। जैसे, मौर सिराना। ३ समाप्त करना। खतम करना। ४ व्यतीत करना। बिताना।

**सिरापत्र**—सज्ञा पुं० [स०] १ अश्वत्थ वृक्ष। पीपल का वृक्ष। २ एक प्रकार की खजूर।

**सिराप्रहर्ष**—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सिराहर्ष'।

**सिरामूल**—सज्ञा पुं० [स०] नाभि।

**सिरामोक्ष**—सज्ञा पुं० [स०] फसद खुलवाना। शरीर का दूषित रक्त निकलवाना।

**सिरायत**—सज्ञा स्त्री० [अ०] जज्ब होना। प्रवेश करना। घुसना [को०]।

**सिरायना**—क्रि० स० [हिं० सिराना] दे० 'सिराना'।

**सिरार**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिरा] वह लकडी जो पाई के सिरे पर लगाई जाती है। (जुलाहे)।

**सिराल**[1]—वि० [स०] जिसमे बहुत नसे या रेशे हो।

**सिराल**[2]—सज्ञा पुं० कमरख। दे० 'सिराला' [को०]।

**सिरालक**—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का अगूर।

**सिराला**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक प्रकार का पौधा। कमरख का फल। कर्मरग फल।

**सिराली**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिर] मयूरशिखा। मोर की कलगी।

**सिरालु**—वि० [स०] बहुत शिराओवाला। सिराल [को०]।

**सिरावन**[1]—सज्ञा पुं० [स० सीर (= हल)] जुता हुआ खेत बराबर करने का पाटा। हेंगा।

**सिरावन**[2]—वि० [हिं० सिराना] १ शीतल करनेवाला। सिरानेवाला। २ सताप या कष्ट दूर करनेवाला।

**सिरावना**(पु)†—क्रि० स० [हिं० सिराना] दे० 'सिराना'। उ०—जोइ जोइ भावे मेरे प्यारे। सोई सोइ देहा जु रेंदुला। कहयौ है सिरावन सीरा। कछु हट न करौ बलबीरा।—सूर (शब्द०)।

**सिरावृत्त**—सज्ञा पुं० [स०] सीसा नामक धातु।

**सिरावेध, सिरावेधन**—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सिरामोक्ष' [को०]।

**सिराव्यध, सिराव्यधन**—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सिरामोक्ष' [को०]।

**सिराहर्ष**—सज्ञा पुं० [स०] १ पुलक। रोमाच। २ आँख के डोरो की लाली।

**सिरिख**(पु)—सज्ञा पुं० [स० शिरीष] दे० 'सिरस'।

**सिरिन**—सज्ञा पुं० [देश०] रक्तशिरीष वृक्ष। लाल सिरस।

**सिरियारी**—सज्ञा स्त्री० [स० शिरियारी] सुनिषण्णक शाक। सुसना का साग। हाथीशुडी।

**सिरिश्ता**—सज्ञा पुं० [फा० सरिश्तह] विभाग। मुहकमा।

**सिरिश्तेदार**—सज्ञा पुं० [फा०] अदालत का वह कर्मचारी जो मुकदमो के कागजपत्र रखता है।

**सिरिश्तेदारी**—सज्ञा स्त्री० [फा०] सरिश्तेदार का काम या पद।

**सिरिस**—सज्ञा पुं० [स० शिरीष, प्रा० सिरिस] दे० 'सिरस'। उ०—विधि केहि भाँति धरौं उर धीरा। सिरिस सुमन कन बेधिय हीरा।—मानस, १।२५८।

**सिरी**[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ करघा। २ कलिहारी। लागली।

**सिरी**(पु)[2]—सज्ञा स्त्री० [स० श्री] १ लक्ष्मी। २ शोभा। काति। ३ रोली। रोचना। उ०—(क) धधकी है गुलाल की धूँधुर मे धरि गोरी लला मुख मीडि सिरी।—शभु (शब्द०)। (ख) सोन रूप भल भएउ पसारा। धवल सिरी पोतहि घर बारा।—जायसी (शब्द०)।

विशेष—'श्री' का लाल चिह्न तिलक मे रोली से बनाते हैं, इसी-लिये रोली को भी श्री या 'सिरी' कहते हैं।

४ ऐश्वर्य। विभव। सपत्ति। समृद्धि। ५ माथे पर का एक गहना। उ०—सुटा दड लसै जैसो वैसो रद दरमावै सोहे सभी सीस भारी सिरी कुभ पर है।—गोपाल (शब्द०)।

सिरीज—सज्ञा पु० [अ०] मगल और वृहस्पति के बीच का एक ग्रह जिसका पता आधुनिक पाश्चात्य ज्योतिषियो ने लगाया है।

विशेष—यह सूर्य से प्राय साढे अट्ठाइस कोटि मील की दूरी पर है। इसका व्यास १७६० मील का है। इस निजकक्षा की परिक्रमा मे १६८० दिन लगते है। १६वी शताब्दी मे सिसली नामक उपद्वीप मे यह ग्रह पहले देखा गया था। इसका वर्ण लाल है और यह आठवें परिमाण के तारे के समान दिखाई पडता है।

सिरीपचमी(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० श्रीपञ्चमी] दे० 'श्रीपचमी'। उ०—दई दई कर सुरनि गँवाई। सिरीपचमी पूजै आई।—जायसी (शब्द०)।

सिरीराग(पु)—सज्ञा पु० [स० श्रीराग] सपूर्ण जाति का एक राग। छह प्रमुख रागो मे तीसरा राग। विशेष दे० 'श्रीराग'। उ०—पचएँ सिरी राग भल किय्यो। छठएँ दीपक उठा वर दियो।—जायसी (शब्द०)।

सिरीस सज्ञा पु० [स० शिरीष, प्रा० सिरीस] दे० 'सिरस'।

सिरोत्पात—सज्ञा पुं० [स०] एक नेत्ररोग जिसमे आँखो के डोरे अधिक सुख हो जाते है (को०)।

सिरोना—सज्ञा पु० [हिं० सिर+ओना] रस्सी का बना हुआ मेडरा जिसपर घडा रखते हे। इँडुरी। विडवा।

सिरोपाव—सज्ञा पु० [हिं० सिर+पाँव] सिर से पैर तक का पहनावा (अगा, पगडी, पाजामा, पटका और दुपट्टा) जो राज दरबार से समान के रूप मे दिया जाता हे। खिलअत।

सिरोमनि—सज्ञा पु० [स० शिरोमणि] दे० 'शिरोमणि'।

सिरोरुह—सज्ञा पु० [स० शिरोरुह] दे० 'शिरोरुह'।

सिरोही¹—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की चिडिया जिसकी चोच और पैर लाल और शेष शरीर काला होता है।

सिरोही²—सज्ञा पु० १ राजपुताने मे एक स्थान जहाँ की बनी हुई तलवार बहुत ही लचीली और बढिया होती है। उ०—तरवार सिरोही सोहती लाख सिकोही बोहती। जिमि सेना द्रोही जोहती लाज अरोही मोहती।—गोपाल (शब्द०)। २. तलवार। असि।

सिर्का—सज्ञा पु० [फा० सिरकह्] दे० 'सिरका'।

सिर्फ¹—क्रि० वि० [अ० सिर्फ] केवल। मात्र।

सिर्फ²—वि० १ एक मात्र। अकेला। २, शुद्ध। खालिस।

सिर्री†—वि० [स० शृगीक] दे० 'सिडी'।

सिल¹—सज्ञा स्त्री० [स० शिला] १ पत्थर। चट्टान। शिला। उ०—धोवै नीर उडप पग धरजै, रज मिल उठी, किसू वनदार।—रघु० रू०, पृ० ११०। २ पत्थर की बनी हुई एक प्रकार की चौकोर या लबोतरी पटिया जिसपर बट्टे से मसाला आदि पीसते हैं।

यौ०—सिल बट्टा।

३ पत्थर का गढा हुआ चौकोर टुकडा जो इमारतो मे लगता है। चौकोर पटिया। ४ काठ की पटरी जिसपर दबाकर रूई की पूनी बनाई जाती है।

सिल²—सज्ञा पु० [स० शिल] कटे हुए खेत मे गिरे अनाज चुनकर निर्वाह करने की वृत्ति। दे० 'शिल', 'शिलोछ'।

सिल³—सज्ञा पु० [देश०] बलूत की जाति का एक पहाडी पेड जो हिमालय पर होता है। बज। मारू।

सिल⁴—सज्ञा पु० [अ०] तपेदिक। राजयक्ष्मा। क्षय रोग।

सिलक¹—सज्ञा स्त्री० [हिं० सलग (=लगातार)] १ लडी। हार। २ पक्ति। पाँत।

सिलक² सज्ञा पु० तागा। धागा।

सिलकी—सज्ञा पु० [देश०] बेल। उ०—सुरभी सिलकी सदाफल बेल ताल मालूर।—अनेकार्थ० (शब्द०)।

सिलखड़ी सज्ञा स्त्री० [हिं० सिल+खडिया] १ एक प्रकार का चिकना मुलायम पत्थर जो बरतन बनाने के काम आता है।

विशेष—इसकी बुकनी चीजो को चमकाने के लिये पालिश और रोगन बनाने के भी काम मे आती है।

२ सेतखडी खरिया मिट्टी। दुद्धी।

सिलखरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिल+खडिया] दे० 'सिलखडी'।

सिलगना क्रि० अ० [हिं० सुलगना] दे० 'सुलगना'। उ० (क) विरहिन पै आयौ मनो मैन दैन तरवाह। जुगनू न ही जामुगी मितगत व्याहमि व्याह।—रसनिधि (शब्द०)। (ख) आग भी आतिशदान मे सिलग रही है। हवा उस समय सर्द चल रही थी।—शिवप्रसाद (शब्द०)।

सिलप(पु)† सज्ञा पु० [स० शिल्प] दे० 'शिल्प'। उ०—विश्वकर्मा सुतिहार श्रुति धरि सुलभ सिलप दिखावनो। तेहि देखे त्रय ताप नाशै ब्रजवधू मन भावनो। सूर (शब्द०)।

सिलपची—सज्ञा स्त्री० [फा० चिलमची] दे० 'चिलमची'।

सिलपट¹—वि० [स० शिलापट्ट] १ साफ। २ बराबर। चौरस।

क्रि० प्र०—करना। होना।

३ घिसा हुआ। मिटा हुआ। ४ चौपट। सत्तानाश।

सिलपट²—सज्ञा पु० [अ० स्लिपर] एडी की ओर खुली हुई जूती। चट्टी। चप्पल।

सिलपोहनी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिल+पोहना] विवाह की एक रीति। उ०—सिंदूर वदन होम लावा होन लागी भाँवरी। सिल-पोहनी करि मोहनी मन हरयौ मूरति साँवरी।—तुलसी (शब्द०)।

विशेष—विवाह मे मातृकापूजन के समय वर और कन्या के माता पिता सिल पर थोडी सी भिगोई हुई उरद की दाल रखकर पीसते हैं। इसी को 'सिलपोहनी' कहते हैं।

सिलफची - संज्ञा स्त्री० [फा० चिलमची] दे० 'चिलमची'।

सिलफोडा—संज्ञा पुं० [हिं० सिल + फोडना] पाषाणभेद। पत्थरचूर नाम का पौधा।

सिलबट्टा—संज्ञा पुं० [हिं० सिल + बट्टा] सिल और बट्टा अर्थात् लोढिया।

सिलबरुआ—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बाँस जो पूरबी बंगाल की ओर होता है।

सिलमाकूर—संज्ञा पुं० [अँ० सेलमेकर] पाल बनानेवाला। (लश्करी)।

सिलवट[1]—संज्ञा स्त्री० [देश०] सुकडने से पडी हुई लकीर। चुनट। बल। शिकन। सिकुडन। वली।

क्रि० प्र०—डालना।—पडना।

सिलवट[2]—संज्ञा पुं० [हिं० सिल + बट्टा] १ दे० 'सिलबट्टा'। २ सिल जिसपर मसाला आदि पीसते हैं।

सिलवाना—क्रि० स० [हिं० सीना का प्रे० रूप] किसी को सीने में प्रवृत्त करना। सिलाना।

सिलसिला[1]—संज्ञा पुं० [अ०] १ बँधा हुआ तार। क्रम। परंपरा २ श्रेणी। पंक्ति। जैसे,—पहाडों का सिलसिला। ३ जंजीर। लडी। ४ व्यवस्था। तरतीब। जैसे,—कुरसियों को सिलसिले से रख दो। ५ कुलपरंपरा। वंशानुक्रम। ६ संबंध। लगाव। वेश। ८ बेडी। शृंखला। निगड।

सिलसिला[2]—वि० [सं० सिक्त] १ भीगा हुआ। आर्द्र। गीला। २ जिसपर पैर फिसले। रपटनवाला। रपटीला। ३ चिकना। मृदु। उ०—बेंदी भाल तमोल मुख, सीस सिलसिले बार। दृग आँजे राजे खरी, येही सहज सिंगार।—बिहारी (शब्द०)।

सिलसिलाबंदी—संज्ञा स्त्री० [अ० सिलसिला + फा० बंदी] १ क्रम का बंधान। तरतीब। २ कतारबंदी। पंक्ति बँधाई।

सिलसिलेवार—वि० [अ० सिलसिला + फा० वार] तरतीबवार। क्रमानुसार।

सिलह संज्ञा पुं० [अ० सिलाह] हथियार। शस्त्र। उ०—आपु गुसल करि सिलह करि हुवै नगारे दोइ। देत नगारे तीसरे ह्वै सवार सब कोइ।—सूदन (शब्द०)।

यौ०—सिलहखाना। सिलहदस्त = शस्त्रपाणि। सशस्त्र। सिलहदार = (१) दे० 'सिलहपोश'। (२) योद्धा। सिपाही। शस्त्रजीवी। सिलहदारी = सिपाही का काम या पेशा। सिलहपोश = शस्त्रधारी। हथियारबंद।

सिलहखाना—संज्ञा पुं० [अ० सिलाह + फा० खानह्] अस्त्रागार। हथियार रखने का स्थान।

सिलहट—संज्ञा पुं० [देश०] १ आसाम का एक नगर। २ एक प्रकार का अगहनी धान। ३ एक प्रकार की नारंगी जो सिलहट (आसाम) में होती है।

सिलहटिया[1]—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की नाव जिसके आगे पीछे दोनों तरफ के सिक्के लंबे होते हैं।

सिलहटिया[2]—वि० [सिलहट + हिं० इया (प्रत्य०)] सिलहट संबंधी। सिलहट का।

सिलहार, सिलहारा—संज्ञा पुं० [सं० शिलकार] खेत में गिरा हुआ अनाज बीननेवाला।

सिलहिला—वि० [हिं० सील, सीड + हीला (= कीचड)] [वि० स्त्री० सिलहिली] जिसपर पैर फिसले। रपटनवाला। रपटीला। कीचड से चिकना। उ०—घर कबीर का शिखर पर, जहाँ सिलहली गैल। पाँव न टिकै पिपीलिका, खलक न लादे बैल।—कबीर (शब्द०)।

सिलही—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

सिला[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शिला] दे० 'शिला'। उ०—हैहै सिला सब चंद्रमुखी परसे पद मंजुल कंज तिहारे। कीन्ही भली रघुनंदन जू करुना करि कानन को पग धारे।—तुलसी (शब्द०)।

सिला[2]—संज्ञा पुं० [सं० शिल] १ खेत में कटी फसल उठा ले जाने के पश्चात् गिरा हुआ अनाज। कटे खेत में से चुना हुआ दाना। उ०—करौं जो कछु धरौं सचि पचि सुकृत सिला बटोरि। पैठि उर बरबस दयानिधि दंभ लेत अँजोरि।—तुलसी (शब्द०)।

क्रि० प्र०—चुनना।—बीनना।

२ पछोडने या फटकने के लिये रखा हुआ अनाज का ढेर। ३ कटे हुए खेत में गिरे अनाज के दानों को बीन या चुन कर उसी से जीवन निर्वाह करने की वृत्ति अथवा क्रिया। शिलवृत्ति।

सिला[3]—संज्ञा पुं० [अ० सिलह्] १ बदला। एवज। पलटा। प्रतीकार।

मुहा०—सिले में = बदले में। उपलक्ष में।

२ इनाम। पुरस्कार (को०)। ३ उपहार। तोहफा (को०)।

सिलाई[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीना + आई (प्रत्य०)] १ सीने का काम। सूई का काम। २ सीने का ढंग। जैसे,—इस कोट की सिलाई अच्छी नहीं है। ३ सीने की मजदूरी। ४ टाँका। सीवन।

सिलाई†[2]—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक कीडा जो प्राय ऊख या ज्वार के खेतों में लग जाता है। इसका शरीर भूरापन लिए हुए गहरा लाल होता है।

सिलाजीत—संज्ञा पुं० [सं० शिलाजतु] १ पत्थर की चट्टानों का लसदार पसेव जो बडी भारी पुष्टई माना जाता है। विशेष दे० 'शिलाजीत'। २ गेरू। गैरिक।

सिलाना[1]—क्रि० स० [हिं० सीना का प्रे० रूप] सीने का काम दूसरे से कराना। सिलवाना।

सिलाना(पु)[2]—क्रि० स० [हिं० सिराना] दे० 'सिराना'।

सिलापाक—संज्ञा पुं० [हिं० शिला + पाक] पथरफूल। छरीला। शैलज।

सिलाबी—वि० [हिं० सीड, सील + फा० आब (= पानी), अथवा फा० सैलाबी ?] सीडवाला। तर।

सिलामा—संज्ञा पुं० [अ० सिलामह] १ मसाला आदि पीसने की सिल। २ बट्टा। दे० 'सिलौट' (को०)।

सिलारस—संज्ञा पुं० [सं० शिलारस] १ सिल्हक वृक्ष। २ सिल्हक वृक्ष का निर्यास या गोद जो बहुत सुगधित होता है।

विशेष—यह पेड एशियाई कोचक के दक्खिन के जगलो मे बहुत होता है। इसका निर्यास 'सिलारस' के नाम से बिकता है और औषध के काम मे आता है।

सिलावट—संज्ञा पुं० [सं० शिला + पट्ट] पत्थर काटने और गढनेवाले। सगतराश। उ०—अली मरदान खाँ को लिखा कि खाती वेलदार और सिलावट भेजकर रस्ता चौडा करे।—देवी-प्रसाद (शब्द०)।

सिलासार—संज्ञा पुं० [सं० शिलासार] लोहा।

सिलाह—संज्ञा पुं० [अ०] १ जिरह बकतर। कवच। उ०—जाली की आँगी कसो यो उरोजनि मानो सिपाहो सिलाह किए द्वै।—मन्नालाल (शब्द०)। २ अस्त्र शस्त्र। हथियार।

सिलाहखाना—संज्ञा पुं० [अ० सिलाह + फा० खानह्] हथियार रखने का स्थान। शस्त्रालय। अस्त्रागार।

सिलाहपोश, सिलाहबंद—वि० [अ० सिलाह + फा० बद] सशस्त्र। हथियारबंद। शस्त्रो से सुसज्जित।

सिलाहर—संज्ञा पुं० [सं० शिल + हर] १ खेत मे से एक एक दाना अन्न बीनकर निर्वाह करनेवाला मनुष्य। सिला बीननेवाला। सिलहार। २ अकिंचन। दरिद्र।

सिलाहसाज—संज्ञा पुं० [अ० सिलाह + फा० साज] हथियार बनानेवाला।

सिलाही—संज्ञा पुं० [अ० सिलाह + ई (प्रत्य०)] शस्त्र धारण करनेवाला। सैनिक। सिपाही।

सिलिगिया†—संज्ञा स्त्री० [हिं० शिलाग + इया (प्रत्य०)] पूरबी हिमालय के शिलाग प्रदेश मे पाई जानेवाली एक प्रकार की भेड।

सिलि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिल या सिल्ली] शिला। पत्थर की पटिया। उ०—सुख के माथे सिलि परै, (जो) नाम हृदय स जाय। वलिहारी वा दुख की पल पल नाम रटाय।—कबीर सा० स०, पृ० ५।

सिलिप(पु)[१]—संज्ञा पुं० [सं० शिल्प] दे० 'शिल्प'। उ०—खेती, वनि विद्या, बनिज, सेवा, सिलिप सुकाज। तुलसी सुरतरु, धेनु, महि, अभिमत भोग विलास।—तुलसी (शब्द०)।

सिलिप[२]—संज्ञा स्त्री० [अं० स्लिप] कागज का छोटा टुकडा जिसपर कोई सक्षिप्त बात टाकी जाय या लिखकर कही भेजी जाय।

सिलिपर—स्त्री० पुं० [अं० स्लीपर] दे० 'सिलीपर'।

सिलिया—संज्ञा स्त्री० [सं० शिला] एक प्रकार का पत्थर जो मकान बनाने के काम मे आता है।

सिलियार, सिलियारा—संज्ञा पुं० [सं० शिल + हार या हारक] दे० 'सिलाहर'।

सिलिसिलिक—संज्ञा पुं० [सं०] गोद। लासा।

सिलीध्र—संज्ञा पुं० [सं० शिलीन्ध्र] दे० 'शिलीध्र'।

सिलीपर—संज्ञा पुं० [अं० स्लीपर] १ लकड़ी की वह धरन जिनके ऊपर रेल की पटरी बिछाई जाती है। २ दे० 'स्लीपर'।

सिलीमुख(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शिलीमुख] दे० 'शिलीमुख'। उ०—रावन सिर सरोज बन चारी। चलि रघुबीर सिलीमुख धारी।—मानस, ६।९१।

सिलेक्ट कमिटी—संज्ञा स्त्री० [अं०] वह कमिटी जिसमे कुछ चुने हुए मेंबर या सदस्य होते है और जो किसी महत्व के विषय पर विचार कर अपना निर्णय साधारण सभा मे उपस्थित करती है।

सिलेट†—संज्ञा स्त्री० [अं० स्लेट] दे० 'स्लेट'।

सिलोध†—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बडी मछली जो भारत और बर्मा की नदियो मे पाई जाती है। यह छह फुट तक लबी होती है।

सिलोच्च—संज्ञा पुं० [सं० शिलोच्च] एक पर्वत जो गगा तट पर विश्वामित्र के सिद्धाश्रम से मिथिला जाते समय राम को मार्ग मे मिला था। उ०—यह हिमवत सिलोच्चं नामा। शृग गग तट अति अभिरामा।—रघुराज (शब्द०)।

सिलौआ—संज्ञा पुं० [देश०] सन के मोटे रेशे जिनसे टोकरी बनाई जाती है।

सिलौट, सिलौटा—संज्ञा पुं० [हिं० सिल + वट्टा] १. सिल। २ सिल तथा वट्टा।

सिलौटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिल + औटा (प्रत्य०)] भाँग, मसाला आदि पीसने की छोटी सिल।

सिल्क—संज्ञा पुं० [अं०] १ रेशम। २ रेशमी कपडा।

सिल्प(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शिल्प] दे० 'शिल्प'।

सिल्ल—संज्ञा पुं० [अं०] दे० 'सिल'।

सिल्लकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शल्लकी वृक्ष। सलई का पेड।

सिल्ला—संज्ञा पुं० [सं० शिल] १. अनाज की बालियाँ या दाने जो फसल कट जाने पर खेत मे पडे रह जाते हैं और जिन्हे चुनकर कुछ लोग निर्वाह करते है।

मुहा०—सिल्ला बीनना या चुनना = खेत मे गिरे अनाज के दाने चुनना। उ०—कबिरा खेती उन लई, सिल्ला बिनत मजूर (शब्द०)। २ खलियान मे गिरा हुआ अनाज का दाना। ३ खलियान मे बरसाने के स्थान पर लगा हुआ भूसे का ढेर जिसमे कुछ दाने भी चले जाते है।

सिल्ली[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० शिला] १ पत्थर का सात आठ अगुल लबा छोटा टुकडा जिसपर घिसकर नाई उस्तरे की धार तेज करते हैं। हथियार की धार चोखी करने का पत्थर। सान। २ आरे से चारकर पेडो से निकाला हुआ तख्ता। फलक। पटरी। ३. पत्थर की छोटी पतली पटिया। ४ नदी मे वह स्थान जहाँ पानी कम और धारा बहुत तेज होती है। (माझी)।

सिल्ली[२]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिल्ला] फटकने के लिये लगाया हुआ अनाज का ढेर।

सिल्ली[३]—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का जलपक्षी जिसका शिकार किया जाता है।

किसी गाँव के छोर पर की भूमि। गाँव की हद। सीमा। ३ गाँव के अंतर्गत भूमि। ४ फसल तैयार हो जाने पर जमींदार और किसान में अनाज का बँटवारा।

सिवाय'—क्रि० वि० [अ० सिवा] अतिरिक्त। अलावा। छोड़कर। बाद देकर। उ०—समुद्र तो चंद्रमा के सिवाय और कौन बढ़ा सकता है।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० ३८६।

सिवाय'—वि० १ आवश्यकता से अधिक। जरूरत से ज्यादा। वेशी। २ अधिक। ज्यादा। ३ ऊपरी। बालाई। मामूली से अतिरिक्त और।

सिवाय'—संज्ञा पुं० वह आमदनी जो मुकर्रर वसूली के ऊपर हो।

सिवार—संज्ञा स्त्री० पुं० [सं० शैवाल] पानी में बालों के लच्छों की तरह फैलनेवाला एक तृण। उ०—(क) पग न इत उत धरत पावन उरझि मोह सिवार।—सूर (शब्द०)। (ख) चलती लता सिवार की, जल तरंग के संग। बड़वानल को जनु धर्यो, धूम धूमरो रंग।—तुलसी (शब्द०)।

विशेष—यह नदियों में प्रायः होता है। इसका रंग हलका हरा होता है। यह चीनी साफ करने तथा दवा के काम में आता है। वैद्यक में यह कसैला, कड़ुआ, मधुर, शीतल, हलका, स्निग्ध, नमकीन, दस्तावर, घाव को भरनेवाला तथा त्रिदोष को नाश करनेवाला कहा गया है।

सिवाल—संज्ञा स्त्री०, पुं० [सं० शैवाल] दे० 'सिवार'। उ०—नीलांबर नील जाल बीच ही उरझि सिवाल लट जाल में लपटि परयो।—देव (शब्द०)।

सिवाला—संज्ञा पुं० [सं० शिवालय] शिव का मंदिर।

सिवाली—संज्ञा पुं० [सं० शैवाल] एक प्रकार का मरकत या पन्ना जिसका रंग कुछ हलका होता है और जिसमें कभी कभी ललाई की भी कुछ आभा रहती है।

सिवि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शिवि] एक नरेश। विशेष दे० 'शिवि'। उ०—सिवि दधीचि हरिचंद कहानी।—मानस, २।४८।

सिविका(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शिविका] दे० 'शिविका'। उ०—राजा की रजाइ पाइ सचिव सहेली धाइ सतानंद ल्याए सिय सिविका चढ़ाइ कै।—तुलसी (शब्द०)।

सिविर—संज्ञा पुं० [सं० शिविर] दे० 'शिविर'। उ०—बसन सिविर मधि मगध अध मुन। जिमि उडगन मधि रवि ससि छवि जुत।—गि० दास (शब्द०)।

सिविल—वि० [अं०] १ नगर संबंधी। नागरिक। २ नगर की शांति के समय देखरेख या चाकरी करनेवाला। जैसे—सिविल पुलिस। ३ मुल्की। माली। ४ शालीन। सभ्य। मिलनसार।

सिविल डिसओबीडिएंस—संज्ञा पुं० [अं०] दे० 'सविनय कानून का भंग'।

सिविल नाफरमानी—संज्ञा पुं० [अं० सिविल + फा० नाफर्मानी] सविनय अवज्ञा। सविनय कानून भंग।

सिविल प्रोसीजर कोड—संज्ञा पुं० [अं०] न्यायविधान। जाब्ता दीवानी।

सिविल वार—संज्ञा पुं० [अं०] दे० 'गृहयुद्ध'।

सिविल सर्जन—संज्ञा पुं० [अं०] सरकारी बड़ा डाक्टर जिसे जिले भर के अस्पतालों, जेलखानों तथा पागलखानों को देखने का अधिकार होता है।

सिविल सर्विस—संज्ञा स्त्री० [अं०] ब्रिटिश शासनकाल में अंगरेजी सरकार की एक विशेष परीक्षा जिसमें उत्तीर्ण व्यक्ति देश के प्रबंध और शासन में ऊँचे पद पर नियुक्त होते थे।

सिवीलियन—संज्ञा पुं० [अं०] १ सिविल सर्विस परीक्षा पास किया हुआ मनुष्य। २ मुल्की अफसर। देश के शासन और प्रबंध विभाग का कर्मचारी।

सिवैयाँ—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सिवई'।

मुहा०—सिवैयाँ तोड़ना, सिवैयाँ पूरना या बटना = दे० 'सिवई बटना'।

सिष(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शिष्य] शिष्य। चेला। उ०—ना गुर मिला न सिष भया लालच खेल्या डाव।—कबीर ग्रं०, पृ० २।

सिष्ट[1]—संज्ञा स्त्री० [फा० शिस्त] बंसी की डोरी। उ०—हस्ती लाय सिष्ट सब ढोला। दौड़ आय इक चाल्हहिं लीला।—जायसी (शब्द०)।

सिष्ट(पु)†[2]—वि० [सं० सृष्ट] रचित। उ०—सिष्ट धारण धारय वसुमती।—पृ० रा०, १।१।

सिष्ट(पु)[3]—वि० [सं० शिष्ट] दे० 'शिष्ट'। उ०—वर्णाश्रम में निष्ट इष्ट रत सिष्ट अदूषित।—श्यामा० (भू०), पृ० ४।

सिष्णासु—वि० [सं०] स्नान का इच्छुक [को०]।

सिष्य(पु)‡—संज्ञा पुं० [सं० शिष्य] दे० 'शिष्य'। उ०—पाय रजायसु राय को ऋषिराज बोलाए। सिष्य सचिव सेवक सखा सादर सिर नाए।—तुलसी (शब्द०)।

सिस(पु)‡—संज्ञा पुं० [सं० शिशु] दे० 'सिसु'।

सिसकना—क्रि० अ० [अनु० या सं० सीत्+करण] १ भीतर ही भीतर रोने में रुक रुककर निकलती हुई साँस छोड़ना। जैसे,—लड़का सिसक सिसककर रोता है। २ रोक रोककर लंबी साँस छोड़ते हुए भीतर ही भीतर रोना। शब्द निकालकर न रोना। खुलकर न रोना। उ०—पिय बिन जिय तरसत रहै, पल भर बिरह सताय। रैन दिवस मोहि कल नहीं, सिसक सिसक जिय जाय।—कबीर सा० सं०, पृ० ४४।

मुहा०—सिसकता भिनकती = मैली कुचैली और रोनी सूरत की (स्त्री)।

३ जी धड़कना। धकधकी होना। बहुत भय लगना। जैसे,—वहाँ जाते हुए जी सिसकता है। ४ उलटी साँस लेना। हिचकियाँ भरना। मरने के निकट होना। ५ (प्राप्ति के लिये) तरसना, रोना। (पाने के लिये) व्याकुल होना। उ०—प्रभुहिं बिलोकि मुनिगन पुलक कहत भूरि भाग भए सब नीच नारि नर हैं। तुलसी सो सुख लाहु लूटत किरात कोल जाको सिसकत सुर विधि हरि हर हैं।—तुलसी (शब्द०)।

सिसकारना[1]—क्रि० अ० [अनु० सी सी + करना] १ जीभ दबाते हुए वायु मुँह से छोड़ना। सीटी का सा शब्द मुँह से निकालना। सुसकारना।

संयो० क्रि०—देना।

२ जीभ दबाते हुए मुँह से साँस खींचकर 'सी सी' शब्द निकालना। अत्यंत पीड़ा या आनंद के कारण मुँह से साँस खींचना। शीत्कार करना।

सिसकारना[2]—क्रि० स० सुसकार कर या सीटी के शब्द से कुत्ते को किसी ओर लपकाना। लहकारना।

संयो० क्रि०—देना।

सिसकारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिसकारना] १ सिसकारने का शब्द जीभ दबाते हुए मुँह से वायु छोड़ने का शब्द। सीटी का सा शब्द। २ कुत्ते को किसी ओर लपकाने के लिये सीटी का शब्द। ३ जीभ दबाते हुए मुँह से साँस खींचने का शब्द। अत्यंत पीड़ा या आनंद के कारण मुँह से निकला हुआ 'सी सी' शब्द। शीत्कार।

क्रि० प्र०—देना।—भरना।

सिसकी—संज्ञा स्त्री० [अनु० सी सी या सं० शीत्] १ भीतर ही भीतर रोने में रुक रुककर निकलती हुई साँस का शब्द। खुलकर न रोने का शब्द। रुकती हुई लंबी साँस भरने का शब्द।

क्रि० प्र०—भरना।—लेना।

२ सिसकारी। शीत्कार। उ०—भ्रुव मटकावति नैन नचावति। सिंजित सिसकिन सोर मचावति।—पद्माकर ग्रं०, पृ० २२७।

सिसिक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सींचने की इच्छा। छिड़कने या तर करने की इच्छा [को०]।

सिसिक्षु—वि० [सं०] तर करने, सींचने का इच्छुक [को०]।

सिसियाद—संज्ञा स्त्री० [सं०] मछली की सी गंध। बिसायँध।

सिसिर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शिशिर] एक ऋतु। दे० 'शिशिर'। उ०—(क) चलत चलत लौं ले चले, सब सुख संग लगाय। ग्रीसम बासर सिसिर निसि, पिय मो पास बसाय।—बिहारी (शब्द०)। (ख) पावस परसि रहे उधरारै। सिसिर सम वसि नीर मझारै।—पद्माकर (शब्द०)।

सिसु(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शिशु] दे० 'शिशु'। उ०—(क) लोचनाभिराम घनस्याम राम रूप सिसु, सखी कहै सखी सों तू प्रेम पय पालि री।—तुलसी (शब्द०)। (ख) दवर फूल हन जु सिसु उठी हरखि अँग फूल। हँसी करत औखध सखिनि देह ददारनि भूल।—बिहारी (शब्द०)।

सिसुघातिनी(पु)—वि० [सं० शिशुघातिनी] शिशु को हत्या करनेवाली (पूतना)। उ०—सिसुघातिनी परम पावनी। सतनि को डसनी जु साँपिनी।—नंद० ग्रं०, पृ० २३६।

सिसुता(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शिशुता] दे० 'शिशुता'। उ०—(क) श्याम के संग सदा बिलसी सिसुता में सुता में कछू नहीं जान्यो।—देवी (शब्द०)। (ख) छुटी न सिसुता की झलक, झलक्यो

जोवन अग। दीपति देहि दुहुन मिलि दिपति ताफता रग। विहारी (शब्द०)।

सिसुपाल(पु)†—सज्ञा पु० [स० शिशुपाल] चेदि देश का राजा। विशेष दे० 'शिशुपाल'।

सिसुमार—सज्ञा पु० [स० शिशुमार] दे० 'शिशुमार'।

सिसुमार चक्र—सज्ञा पु० [स० शिशुमारचक्र] सौर जगत्। दे० 'शिशुमारचक्र'। उ०—एक एक नग देखि अनकन उडगन वारिय। बसत मनहुँ सिसुमार चक्र तन इमि निरधारिय।—गि० दास (शब्द०)।

सिसृक्षा—सज्ञा स्त्री० [स०] सृष्टि करने की इच्छा। रचने या बनाने की इच्छा।

सिसृक्षु—सज्ञा पु० [स०] सृष्ट करने की इच्छा रखनेवाला। रचना का इच्छुक। उ०—जाको मुमुक्षु जे प्रेम बुभुक्षु गुणी यह विश्व सिसृक्षु सदा ही। काल जिघृक्षु सरुक्षु कृपा की स्वपानन स्वक्ष स्वपक्ष प्रिया ही।—रघुराज (शब्द०)।

सिसोदिया—सज्ञा पु० [सिसोद (स्थान)] गुहलौत राजपूतो की एक शाखा जिसकी प्रतिष्ठा क्षत्रिय कुलो मे सबसे अधिक है और जिसकी प्राचीन राजधानी चित्तौड थी और आधुनिक राजधानी उदयपुर है।

विशेष—क्षत्रियो मे चित्तौड या उदयपुर का घराना सूर्यवशीय महाराज रामचद्र की वशपरपरा मे माना जाता है। इन क्षत्रियो का पहले गुजरात के वल्लभीपुर नामक स्थान मे जाना कहा जाता है। वहाँ से बाप्पारावल ने आकर चित्तौड को तत्कालीन मोरी शासक से लेकर अपनी राजधानी बनाया। मुसलमानो के आने पर भी चित्तौड स्वतत्र रहा और हिंदू शक्ति का प्रधान स्थान माना जाता था। चित्तौड मे बडे बड पराक्रमी राणा हो गए है। राणा समर सिह, राणा कुभा, राणा साँगा आदि मुसलमाना से बडो वीरता से लड़े थे। प्रसिद्ध वीर महाराणा प्रताप किस प्रकार अकबर से अपनी स्वाधीनता के लिये लडे, यह प्रसिद्ध हो है। सिसोद नामक स्थान मे कुछ दिन बसने के कारण गुहिलौतो को यह शाखा सिसोदिया कहलाई।

सिस्क(पु)‡—वि० [स० शुष्क] दे० 'शुष्क'। उ०—करत देह को सिस्क।—व्रज० ग्र०, पृ० ४७।

सिस्टि(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० सृष्टि] दे० 'सृष्टि'।

सिस्न—सज्ञा पु० [स० शिश्न] दे० 'शिश्न'।

सिस्य(पु)—सज्ञा पु० [स० शिष्य] दे० 'शिष्य'।

सिह—वि० [फा०] तीन। त्रय [को०]।

सिहद्दा—सज्ञा पु० [फा० सिह या सेह + अ० हद] वह स्थान जहाँ तीन हदे मिलती हो।

सिहपर्णी—सज्ञा पु० [स०] अडूसा। वासक वृक्ष।

सिहर—सज्ञा स्त्री० [स० शीतल] उ०—सिहरने को क्रिया या भाव। सिहरन। उ०—सिकता को रेखाएँ उभारभर जाती अपनी तरल सिहर।—लहर, पृ० २।

सिहरन—सज्ञा स्त्री० [स० शीतल] कँपकँपी। रोमाच। सिहरने को क्रिया।

सिहरना†—क्रि० अ० [स० शीत + हिं० ना] १ ठढ मे काँपना। २ काँपना। कपित होना। ३ भयभीत होना। दहलना। उ०—छनक वियोग कु याद परै अतिसै हिय सिहरत।—व्यास (शब्द०)। ४ रोगटे खड होना।

सिहरा—सज्ञा पु० [हिं० सिर + हरा या हार] दे० 'सेहरा'।

सिहराना¹—क्रि० स० [हिं० सिहरना] १ सरदी से कँपाना। शीत से कपित करना। २ कँपाना। कपित करना। ३ भयभीत करना। दहलाना।

सिहराना²—क्रि० स०, क्रि० अ० दे० 'सहलाना'। २ दे० 'सिहलाना'—१।

सिहरावन†—सज्ञा पु० [हिं० सिहलाना] दे० 'सिहलावन'।

सिहरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सिहरना] १ शीतजन्य कप। ठढ के कारण कँपकँपी। २ कप। कँपकँपी। ३ भय। दहलना। ४ जूडी का बुखार। ५ रोगटे खडे होना। रोमहर्ष। लोमहर्ष।

सिहरू—सज्ञा पु० [देश०] सभालू। सिंदुवार।

सिहलाना†—क्रि० अ० [स० शीतल] १ सिराना। ठढा होना। २ शीत खा जाना। सीड खाना। नम होना। ३ ठढ पडना। सरदी पडना।

सिहलावन†—सज्ञा पु० [हिं० सिहलाना] सरदी। ठढ। जाडा।

सिहली—सज्ञा स्त्री० [स० शीतली] शीतली जटा। शीतली लता।

सिहान—सज्ञा पु० [स० सिहाण] मडूर। लोहकिट्ट।

सिहाना†¹—क्रि० अ० [स० ईर्ष्या, पु० हिं० हिसिषा] १ ईर्ष्या करना। डाह करना। २ किसी अच्छी वस्तु को देखकर इस बात से दु खी होना कि वैसी वस्तु हमारे पास नहीं है। स्पर्धा करना। उ०—द्वारिका की देख छवि सुर असुर सकल सिहात।—सूर (शब्द०) ३. पाने के लिये ललचना। लुभाना। उ०—सूर प्रभु को निरखि गोपी मनहि मनहि सिहाति।—सूर (शब्द०)। ४ मुग्ध हाना। मोहित होना। उ०—सूर श्याम मुख निरखि जसोदा मनहो मनहि सिहानो।—सूर (शब्द०)। (ख) लाल अलौकिक लरिकई लखि लखि सखी सिहाति—विहारी (शब्द०)।

सिहाना²—क्रि० स० १ ईर्ष्या की दृष्टि से देखना। २ अभिलाष की दृष्टि से देखना। ललचना। उ०—समउ समाज राज दशरथ को लोकप सकल सिहाही।—तुलसी (शब्द०)। ३ अभिलापुक अथवा मुग्ध होकर प्रशसा करना। उ०—देव सकल सुरपतिहि सिहाही। आज पुरदर सम कोउ नाही।—मानस १।३१७।

सिहारना(पु)†—क्रि० स० [देश०] तलाश करना। ढूढना। २ जुटाना। उ०—हम कन्यन को व्याह विचारौ। इनहि जोग वर तुमहु सिहारौ।—पद्माकर (शब्द०)।

सिहिकना—क्रि० अ० [स० शुष्क] सूखना। (फसल का)।

सिहिटि†(पु)—[स० सृष्टि] दे० 'सृष्टि'।

रहते हैं। लोमडी। उ०—सीगी भाकुर बिनि सब धरी।—जायसी (शब्द०)।

**सीँधन**—संज्ञा पुं० [देश०] घोडो के माथे पर दो या अधिक भौंरीवाला टीका।

**सीँच**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीचना] १ सीचने की क्रिया या भाव। सिंचाई। छिडगाव।

**सीँचना**—क्रि० स० [स० सिञ्चन] १ पानी देना। पानी से भरना। आबपाशी करना। पटाना। जैसे,—खेत सीचना, बगीचा सीचना। उ०—अति अनुराग सुधाकर सीचत दाडिम बीज समान।—सूर (शब्द०)। २ पानी छिडककर तर करना। भिगोना। ३ छिडकना। (पानी आदि) डालना या छितराना। उ०—(क) मार सुमार करी खरी अरी भरी हित मारि। सीच गुलाब घरी घरी अरी बरोहि न बारि।—बिहारी (शब्द०)। (ख) आँच पय उफनात सीचत सलिल ज्यो सकुचाइ।—तुलसी (शब्द०)।

**सीँची**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीचना] सीचने का समय।

**सीँव, सीँव**(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सीमा] सीमा। हद। मर्यादा। उ०—(क) सुख की सीवँ अवधि आनँद की अवध विलोकिहौ जाइहौ।—तुलसी (शब्द०)। (ख) मुखनि की सीव सोहै सुजस समूह फैलो मानो अमरावती को देखि कै हँसतु है।—गुमान (शब्द०)।

मुहा०—सीव चरना या कोडना = अधिकार दिखाना। दबाना। जबरदस्ती करना। उ०—है काके द्वै सीस ईस के जो हठि जन की सीव चरै।—तुलसी (शब्द०)।

**सीँवनि**(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीना] जोड या सधि का स्थान। जोड की रेखा या चिह्न। उ०—येडी वाम पाँव की लगावै सीवनि कै बीचि, वाही जोनि ठोर ताहि नीकै करि जानिए।—सुदर ग्र०, भा० १, पृ० ४२।

**सीँवा** संज्ञा स्त्री० [स० सीमा] दे० 'सीमा'। उ०—निरखि सखि सुदरता की सीवा। अधर अनूप मुरलिका राजति, लटकि रहति अध ग्रीवा।—सूर०, १०।१८०८।

**सी**—वि० स्त्री० [सं० सम, हिं० सा] सम। समान। तुल्य सदृश। जैसे,—वह स्त्री बावली सी है। उ०—(क) मूरति की सूरति कही न परै तुलसी पै जानै सोई जाके उर कसकै करक सी।—तुलसी (शब्द०)। (ख) दुरै न निघरघटौ दिए ए रावरी कुचाल। विष सी लागति है बुरी हँसी खिसी की लाल।—बिहारी (शब्द०)। (ग) सरद चद की चादनी मद परति सी जाति।—पद्माकर (शब्द०)।

मुहा०—अपनी सी = अपने भरसक। जहाँ तक अपने से हो सके, वहाँ तक। उ०—मैं अपनी सी बहुत करी री।—सूर (शब्द०)।

**सी**[२]—संज्ञा स्त्री० [अनु०] वह शब्द जो अत्यत पीडा या आनद रसास्वाद के समय मुँह से निकलता है। शीत्कार। सिसकारी। उ०—'सी' करनवारी सेद सीकरन वारी रति सी करन वारी सो वसीकरनवारी है।—पद्माकर (शब्द०)।

**सी**[३]—संज्ञा स्त्री० [स० सीत] बीज की बोआई।

**सी**†[४]—संज्ञा पुं० [स० शीत] शीत। दे० 'सीउ'। उ०—माह मास सी पडयो अतिमार।—बी० रासो, पृ० ६७।

**सी**(पु)[५]—संज्ञा स्त्री० [स० सीता] उ०—अपने अपने को सब चाहत नीको मूल दुहूँ को दयालु दूलह सी को।—तुलसी ग्र०, पृ० ५४६।

**सी० आई० डी०**—संज्ञा पुं० [अँ० क्रिमिनल इनवेस्टिगेशन डिपार्टमेंट का सक्षिप्त रूप] दे० 'क्रिमिनल इनवेस्टिगेशन डिपार्टमेंट'। खुफिया विभाग। जैसे,—सी० आई० डी० ने सदेह पर एक आदमी को गिरफ्तार किया। २ भेदिया। गुप्तचर।

**सीअ**(पु)†—संज्ञा स्त्री० [स० सीता] दे० 'सीता'। उ० भयउ मोह सिव कहा न कीन्हा। भ्रम बस वेषु सीअ कर लीन्हा।—मानस, पृ० ५५

**सीउ**(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शीत] शीत। ठढ। उ०—(क) कीन्हेसि धूप सीउ औ छाहाँ।—जायसी (शब्द०)। (ख) जहाँ भानु तहँ रहा न सीउ।—जायसी (शब्द०)।

**सीकचा**—संज्ञा पुं० [फा० सीखचह्] लोहे की छड। सीखचा।

**सीकर**[१]—संज्ञा पुं० [स०] १ जलकण। पानी की बूँद। छीटा। उ०—(क) श्रम स्वेद सीकर गुड मडित रूप अबुज कोर।—सूर (शब्द०)। (ख) राम नाम रति स्वाति सुधा सुभ सीकर प्रेम पियासा।—तुलसी (शब्द०)। २ पसीना। स्वेदकण। उ०—आनन सीकर सी कहिए धक सोवत ते अकुलाय उठी क्यो।—केशव (शब्द०)।

**सीकर**(पु)[२]—संज्ञा पुं० [स० शृगाल] स्यार। गीदड।

**सीकर**(पु)[३]—संज्ञा स्त्री० [स० शृङ्खला] जजीर। सिकडी। उ०—भट भट धरे असी कर मे चटे सीकर सुडन मैं लसत।—गि० दास (शब्द०)।

**सीकरा**(पु)—संज्ञा पुं० [फा० शिकरह्] बाज। श्येन। एक शिकारी पक्षी। उ०—सीकरा सो काल है कलसरी सी लपेट लैहै, चगुल के तले दबे दबे चिचयायगे।—मलूक० बानी, पृ० ३१।

**सीकल**†[१]—संज्ञा पुं० [देश०] डाल का पका हुआ आम।

**सीकल**[२]—संज्ञा स्त्री० [अ० सैकल] हथियारो का मोरचा छुडाने की क्रिया। हथियार की सफाई।

**सीकस**—संज्ञा पुं० [देश०] ऊसर। उ०—सिंह शार्दुल यक हर जोतिनि सीकस बोइनि धाना।—कबीर (शब्द०)।

**सीका**[१]—संज्ञा पुं० [सं० शीर्षक] १ सोने का एक आभूषण जो सिर पर पहना जाता है। २ सिक्का।

**सीका**[२]—संज्ञा पुं० [स० शिक्या] ऊपर टाँगने की सुतरी आदि की जाली जिसपर दूध, दही आदि का बरतन रखते हैं। छीका। सिकहर।

**सीकाकाई**—संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार का वृक्ष जिसकी फलियाँ रीठे की भाँति सिर के बाल आदि मलने के काम मे आती है। कुछ लोग इसे सातला भी मानते है।

सीकार(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सीत्कार] दे० 'सीत्कार'। उ०—चुंबन करत कपोल मुखहि सीकार करावत। हृदय माँझ धँसि जात कुचन पर रोम बढावत।—ब्रज० ग्र०, पृ० १०३।

सीकारी(पु)—संज्ञा पुं० [फ़ा० शिकार] शिकारी। उ०—बडे बडे सीकारी जोधा, आगे पग है डारा।—धरम० श०, पृ० २७।

सीकी[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीका] छोटा सीका या छीका। छोटा सिकहर।

सीकी[2]—संज्ञा पुं० [देश०] १ छेद। सूराख। २ मुँह। मुहँडा।

सीकुर—संज्ञा पुं० [सं० शूक] गेहूँ, जौ आदि की बाल के ऊपर निकले हुए बाल के से कडे सूत। शूक। उ०—गडत पाँइ जव आइ, वडी बिथा सीकुर करत। क्यों न पीर सरसाइ याके हिय भूपति चुभ्यो।—गुमान (शब्द०)।

सीको†—संज्ञा पुं० [सं० शिक्य] दे० 'सीका'।

सीक्रेट[1]—वि० [अं०] छिपा हुआ। गुप्त। पोशीदा। जैसे, सीक्रेट पुलिस। सीक्रेट कमिटी।

सीक्रेट[2]—संज्ञा पुं० गुप्त बात। जैसे,—गवर्नमेंट सीक्रेट बिल।

सीख[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शिक्षा, प्रा० सिक्खा] १ सिखाने की क्रिया या भाव। शिक्षा। तालीम। २ वह बात जो सिखाई जाय। उ०—(क) मोही मैं रहत रहै मोही सौं उदास सदा सीखत न सीख तन सीख निरधारौ है।—ठाकुर० पृ० १२। ३ परामर्श। सलाह। मंत्रणा। उपदेश। उ०—(क) याकी चीख सुनै ब्रज को रे।—सूर (शब्द०)। (ख) मोल्हन कहत सीख मेरी सीस धरे रे।—हम्मीर०, पृ० २०।

सीख[2]—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सीख] १ लोहे की लंबी पतली छड। शलाका। तीली। २ वह पतली छड जिसमे गोदकर मांस भूनते हैं। ३ बडी सूई। सूआ। शकु। ४ लोहे की छड जिससे जहाज के पेंदे मे आया हुआ पानी नापते हैं। (लश०)।

सीखचा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सीखचह्] १ लोहे की सीख जिसपर मांस लपेटकर भूनते हैं। २ लोहे की छड। ३ लोहेकी नुकीली छड।

यौ०—सीखचा कबाब = सीखचे पर गोद कर भूना हुआ कबाब।

सीखना(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शिक्षण, प्रा० सिक्खण, हिं० सीखना] शिक्षा। सीख।

सीखना—क्रि० स० [सं० शिक्षण, प्रा० सिक्खण] १ ज्ञान प्राप्त करना। जानकारी प्राप्त करना। किसी से कोई बात जानना। जैसे,—विद्या सीखना, कोई बात सीखना। २ किसी कार्य के करने की प्रणाली आदि समझना। काम करने का ढग आदि जानना। जैसे,—सितार सीखना, शतरंज सीखना। ३ अनुभव प्राप्त करना।

संयो० क्रि०—जाना।—लेना।

सीगा[1]—संज्ञा पुं० [अ० सीगह्] १ साँचा। ढाँचा। २ व्यापार। पेशा। ३ पुरुष, काल आदि की दृष्टि से क्रिया का रूप (को०)। ४ विभाग। महकमा।

यौ०—सीगेवार = व्योरेवार।

५ एक प्रकार के वाक्य जो मुसलमानों के विवाह के समय कहे जाते हैं।

सीगा[2]—संज्ञा पुं० [अ० सिगार] दे० 'सिगार'।

सीगा(पु)†[3]—वि० [हिं० सगा] अपना। निकटस्थ। जो पराया न हो। संबंधी। उ०—नेडा वेसाँ जाय नित, सीगो मित्र समान।—बाँकी० ग्र०, भा० २, पृ० ४५।

सीगारा[1]—संज्ञा पुं० [देश०] मोटा कपडा।

सीगारा[2]—संज्ञा पुं० [अ० सिगार] दे० 'सिगार'।

सीच(पु)—संज्ञा स्त्री० [?] हाल।

सीचन—संज्ञा पुं० [देश०] खारी पानी से मिट्टी निकालने का एक ढग।

सीचापू—संज्ञा स्त्री० [सं०] यक्षिणी।

सीछन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षण] दे० 'शिक्षण'। उ०—सीछन काज वजीरन को कहै बोल यों एदिलसाहि सभा मा।—भूषण ग्र०, पृ० १३५।

सीज[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सिद्धि, प्रा० सिज्झि, हिं० सीझ] दे० 'सीझ'।

सीज[2]—संज्ञा पुं० [देश०] थूहर। सेहुँड।

सीजना—क्रि० अ० [सं० सिद्ध, प्रा० सिज्झ, हिं० सीज + ना] दे० 'सीझना'।

सीझ—संज्ञा स्त्री० [सं० सिद्धि, प्रा० सिज्झि] सीझने की क्रिया या भाव। गरमी से गलाव।

सीझना—क्रि० अ० [सं० सिद्ध, प्रा० सिज्झ, हिं० सीज, सीझ + ना (प्रत्य०)] १ आँच या गरमी पाकर गलना पकना। चुरना। जैसे,—दाल सीझना, रसोई सीझना। २ आँच या गरमी से मुलायम पडना। ताव खाकर नरम पडना। ३ सिद्ध होना। उ०—सबद बिंदौ अवधू सबद बिंदौ सबदे सीझत काया।—गोरख०, पृ० ४५। ४ सूखे हुए चमडे का मसाले आदि मे भीगकर मुलायम होना। ५ ताप या कष्ट सहना। क्लेश झेलना। ६ कायक्लेश सहना। तप करना। तपस्या करना। उ०—(क) एइ वहि लागि जनम भरि सीझा। चहै न औंगहि, ओही रीझा।—जायसी (शब्द०)। (ख) गनिका गीध अजामिल आदिक लै कामी प्रयाग कब सीझे।—तुलसी (शब्द०)। ७ सरदी से गलना। बहुत ठढ खाना। ८ ऋण का निबटारा होना। ९ मिलने के योग्य होना। प्राप्तव्य होना। जैसे,—(क) बयाना हुआ और तुम्हारी दलाली सीझी। (ख) वह मकान रेहन रख लोगे तो १) सैकडे का व्याज सीझेगा।

सीट[1]—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ बैठने का स्थान। आसन। २ एक आदमी के बैठने की जगह (को०)। ३ किसी सभा, समिति मडल आदि के सदस्य की सदस्यता (को०)।

सीट[2]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीटना] सीटने की क्रिया या भाव। डींग।

सीटना—क्रि० स० [अनु०] डींग मारना। शेखी मारना। बढ बढ कर बातें करना।

**सीट पटाँग**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीटना + (ऊट) पटाँग] बढ बढकर की जानेवाली बातें। घमड भरी बात।

**सीटी**—संज्ञा स्त्री० [सं० शीत्] १ वह पतला महीन शब्द जो ओठो को गोल सिकोडकर नीचे की ओर आघात के साथ वायु निकालने से होता है।

क्रि० प्र०—बजाना।

मुहा०—सीटी देना = सीटी के शब्द से बुलाना या और कोई सकेत करना।

२ इसी प्रकार का शब्द जो किसी बाजे या यत्र आदि के भीतर की हवा निकालने से होता है। जैसे,—रेल की सीटी।

मुहा०—सीटी देना = (१) सीटी का शब्द निकालना। जैसे,—रेल सीटी दे रही है। (२) सीटी से सावधान करना।

३ वह बाजा या खिलौना जिसे फूंकने से उक्त प्रकार का शब्द निकले।

यौ०—सीटीबाज = मुँह से बार बार सीटी की आवाज निकालनेवाला।

**सीठ**—संज्ञा स्त्री० [सं० शिष्ट, प्रा० सिट्ठ (= शेष)] दे० 'सीठी'।

**सीठना**—संज्ञा पु० [सं० अशिष्ट, प्रा० असिट्ठ + हिं० ना (प्रत्य०)] अश्लील गीत जो स्त्रियाँ विवाहादि मागलिक् अवसरो पर गाती हैं। सीठनी। विवाह की गाली।

**सीठनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीठना] विवाह की गाली।

**सीठा**—वि० [सं० शिष्ट, प्रा० सिट्टी (= बचा हुआ)] नीरस। फीका। बिना स्वाद का। बेजायका।

**सीठापन**—संज्ञा पुं० [हिं० सीठा + पन] नीरसता। फीकापन।

**सीठी**[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शिष्ट, प्रा० सिट्ठी (= बचा हुआ)] १ फल, फूल पत्ते आदि का रस निकल जाने पर बचा हुआ निकम्मा अश। वह वस्तु जिसका रस या सार निचुड गया हो। खूद। जैसे,—अनार की सीठी, भाँग की सीठी, पान की सीठी। २ निस्सार वस्तु। सारहीन पदार्थ। ३ नीरस वस्तु। फीकी चीज।

**सीठी**[2]—वि० स्त्री० दे० 'सीठा'।

**सीड़**—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल या शीत + प्रा० ड (प्रत्य०)] सील। तरी। नमी।

**सीढी**—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रेणी या देशी सिड्ढी (= सीढी)] १ किसी ऊँचे स्थान पर क्रम क्रम से चढने के लिये एक के ऊपर एक बना हुआ पैर रखने का स्थान। निसेनी। जीना। पैंडी। २ बाँस के दो बल्लो का बना लबा ढाँचा, जिसमे थोडी थोडी दूर पर पैर रखने के लिये डडे लगे रहते हैं और जिसे भिडाकर किसी ऊँचे स्थान तक चढते हैं। बाँस की बनी पैंडी।

क्रि० प्र०—लगाना।

यौ०—सीढी का डडा = पैर रखने के लिये बाँस की सीढी मे जडा हुआ डडा।

मुहा०—सीढी सीढी चढना = क्रम क्रम से ऊपर की ओर बढना। धीरे धीरे उन्नति करना।

३ उत्तरोत्तर उन्नति का क्रम। धीरे धीरे आगे बढने की परपरा। ४ हैंड प्रेस का एक पुर्जा जिसपर टाइप रखकर छापने का प्लैटेन लगा रहता है। ५ घुटिया के आकार का लकडी का पाया जो खडसाल मे चीनी साफ करने के काम मे आता है। ६ एक गराटीदार लकडी जो गिरदानक की आड के लिये लपेटन के पास गडी रहती है। (जुलाहे)।

**सीत**(पु)†[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सीता] दे० 'सीता'। उ०—वड कँवरि सीत विदेह री रघुनाथ वर राजेस।—रघु० रू०, पृ० ८४।

**सीत**†[2]—संज्ञा पु० [सं० शीत] दे० 'शीत'।

**सीत**†[3]—संज्ञा पुं० [सं० सिक्थ] दे० 'सीथ'। उ०—घटा महापरमाद सीत सतन कर छाडन।—पलटू०, भा० १, पृ० १५।

**सीतकर**—संज्ञा पुं० [सं० शीतकर] चद्रमा। उ०—हौं ही बौरी विरह बस कै बौरी सबु गाउँ। कहा जानि ए कहत है ससिहि सीतकर नाउँ।—बिहारी र०, दो० ६५।

**सीतपकड**—संज्ञा पुं० [हिं० शीत + पकडना] एक रोग जो हाथी को शीत से होता है।

**सीतपन**(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० सीतापति] दे० 'सीतापति'। उ०—प्रारभै दौलत पुन पाणा पुरौ सुवाणा सीतपत।—रघु० रू०, पृ० २४।

**सीतमयूख**(पु)—संज्ञा पु० [सं० शीतमयूख] चद्रमा। सीतकर। सुधाकर। उ०—घोर अनल को भखत है सीतमयूख सहाय।—दीन० ग्र०, पृ० १७६।

**सीतल**‡(पु)—वि० [सं० शीतल] दे० 'शीतल'।

**सीतल चीनी**—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल + हिं० चीनी] दे० 'शीतलचीनी'।

**सीतलपाटी**—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल + हिं० पाटी] १ एक प्रकार की बढिया चिकनी चटाई। २ पूर्व बगाल और आसाम के जगलो मे होनेवाली एक प्रकार की झाडी जिससे चटाई या सीतलपाटी बनती है। ३ एक प्रकार का धारीदार कपडा।

**सीतल बुकनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० शीतल + बुकनी] १ सत्तू। सतुआ। २ सतो की बानी। (साधु)।

**सीतला**—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतला] दे० 'शीतला'।

यौ०—सीतला माई = शीतला माता।

**सीता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह रेखा जो जमीन जोतते समय हल की फाल के धँसने से पडती जाती है। कूँड।

विशेष—वेदो मे सीता कृषि की अधिष्ठात्री देवी और कई मन्त्रो की देवता है। तैत्तिरीय ब्राह्मण मे सीता ही सावित्री और पाराशर गृह्यसूत्र मे इद्रपत्नी कही गई हैं।

२ मिथिला के राजा सीरध्वज जनक की कन्या जो श्रीरामचद्र जी की पत्नी थी।

विशेष—इनकी उत्पत्ति की कथा यों है कि राजा जनक ने सतति के लिये एक यज्ञ की विधि के अनुसार अपने हाथ से भूमि

जोती। जुती हुई भूमि की कूँड (सीता) से सीता उत्पन्न हुई। सयानी होने पर सीता के विवाह के लिये जनक ने धनुर्यज्ञ किया, जिसमे यह प्रतिज्ञा थी कि जो कोई एक विशेष धनुष को चढावे, उससे सीता का विवाह हो। अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र कुमार रामचद्र ही उस धनुप को चढा और तोड सके इससे उन्ही के साथ सीता का विवाह हुआ। जब विमाता की कुटिलता के कारण रामचद्र जी ठीक अभिषेक के समय पिता द्वारा १४ वर्षों के लिये वन मे भेज दिए गए, तब पतिपरायणा सती सीता भी उनके साथ वन मे गई और वहाँ उनकी सेवा करती रही। वन मे ही लका का राजा रावण उन्हे हर ले गया, जिसपर राम ने बदरो का भारी सेना लेकर लका पर चढाई की और राक्षसराज रावण को मारकर वे सीता को लेकर १४ वर्ष पूरे होने पर फिर अयोध्या आए और राजसिंहासन पर बैठे।

जिस प्रकार महाराज रामचद्र विष्णु के अवतार माने जाते हैं, उसी प्रकार सीता देवी भी लक्ष्मी का अवतार मानी जाती है और भक्तजन राम के साथ बराबर इनका नाम भी जपते हैं। भारतवर्ष मे सीता देवी सतियो मे शिरोमणि मानी जाती हैं। जब राम ने लोकमर्यादा के अनुसार सीता को अग्निपरीक्षा की थी, तब स्वय अग्निदेव ने सीता को लेकर राम को सौपा था।

पर्या०—वैदेही। जानकी। मैथिली। भूमिसभवा। अयोनिजा।

यौ०—सीता की मचिया = एक प्रकार का गोदना जो स्त्रियाँ हाथ मे गुदाती है। सीता की रसोई = (१) एक प्रकार का गोदना। (२) बच्चो के खेलने के लिये रसोई के छोटे छोटे बरतन। सीता की पजीरी = कर्पूरवल्ली नाम की लता।

३ वह भूमि जिसपर राजा की खेती होती हो। राजा की निज की भूमि। सीर। ४ दाक्षायणी देवी का एक रूप या नाम। ५ आकाशगगा की उन चार धाराओ मे से एक जो मेरु पर्वत पर गिरने के उपरात हो जाती है।

विशेष—पुराणो के अनुसार यह नदी या धारा भद्राश्व वर्ष या द्वीप मे मानी गई है।

६ मदिरा। ७ ककही का पौधा। ८ पातालगारुडी लता। ९ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे रगण, तगण, मगण, यगण और रगण होते है। उ०—जन्म बीता जात सीता अत रीता बावरे। राम सीता राम सीता राम सीता गाव रे। छद०, पृ० २०७। १० सीताध्यक्ष के द्वारा एकत्र किया हुआ अनाज। ११ जैनो के अनुसार विदेह की एक नदी का नाम। १३, हल से जुती हुई भूमि (को०)। १४ कृषि। खेती (को०)। १५ इद्र की पत्नी (को०)। १६ उमा का नाम (को०)। १७ लक्ष्मी का नाम (को०)।

**सीताकुंड**—सज्ञा पु० [स० सीताकुण्ड] वह कुड जो सीता देवी के सबध से पवित्र तीर्थ माना जाता हो।

विशेष—इस नाम के अनेक कुड और झरने भारतवर्ष मे प्रसिद्ध हैं। जैसे,—(१) मुगेर से ढाई कोस पर गरम पानी का एक कुड है। इसके विषय मे प्रसिद्ध है कि जब देवताओ ने सीता जी की पूजा नही स्वीकार की, तब वे फिर अग्निपरीक्षा के लिये अग्निकुड मे कूद पडी। आग चट बुझ गई और उसी स्थान पर पानी का एक सोता निकल आया। (२) भागलपुर जिले मे मदार पर्वत पर एक कुड। (३) चपारन जिले मे मोतिहारी से छह कोस पूर्व एक कुड। (४) चटगाँव जिले मे एक पर्वत की चोटी पर एक कुड। (५) मिरजापुर जिले मे विंध्याचल के पास एक झरना और कुड।

**सीतागोप्ता**—सज्ञा पु० [स० सीतागोप्तृ] सीता का रक्षक। जुते हुए खेत का रक्षक [को०]।

**सीताजानि**—सज्ञा पुं० [सं०] वह जिसकी पत्नी सीता हैं—श्रीरामचद्र।

**सीतातीर्थ**—सज्ञा पुं० [सं०] वायुपुराण मे वर्णित एक तीर्थ।

**सीतात्यय**—सज्ञा पु० [स०] अर्थशास्त्र के अनुसार किसानो पर होनेवाला जुरमाना। खेती के सबध का जुरमाना (कौटि०)।

**सीताद्रव्य**—सज्ञा पु० [स०] खेती के उपादान। काश्तकारी का सामान।

**सीताधर**—सज्ञा पु० [सं०] हलधर। बलराम जी।

**सीताध्यक्ष**—सज्ञा पु० [स०] वह राजकर्मचारी जो राजा की निज की भूमि मे खेतीबारी आदि का प्रबध करता हो।

**सीतानवमी व्रत**—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का व्रत।

**सीतानाथ**—सज्ञा पु० [स०] श्रीरामचद्र।

**सीतापति**—सज्ञा पु० [स०] (सीता के स्वामी) श्रीरामचद्र।

**सीतापहाड़**—सज्ञा पु० [स० सीता + हिं० पहाड] एक पर्वत जो बगाल के चटगाँव जिले मे है।

**सीताफल**—सज्ञा पु० [स०] १ शरीफा। २ कुम्हडा।

**सीताबट**(पु)—सज्ञा पु० [स० सीतावट] दे० 'सीतावट'। उ०—विटप महीप सुरसरित समीप सोहै, सीताबट पेखत पुनीत होत पातकी। बारिपुर दिगपुर बीच बिलसति भूमि, अकित जो जानकी चरन जलजात की।—तुलसी ग्र०, पृ० २६२।

**सीतायज्ञ**—सज्ञा पु० [स०] हल जोतने के समय होनेवाला एक यज्ञ।

**सीतारमण**—सज्ञा पु० [स०] (सीता के पति) रामचद्र जी।

**सीतारमन**(पु)—सज्ञा पु० [स० सीतारमण] श्रीरामचद्र।

**सीतारवन, सीतारौन**‡—सज्ञा पु० [स० सीता + रमण, प्रा० रवण, हिं० रवन, रौन] दे० 'सीतारमण'।

**सीतालोष्ट**—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सीतालोष्ठ'।

**सीतालोष्ठ**—सज्ञा पु० [स०] जुते हुए खेत की मिट्टी का ढेला (गोभिल श्राद्धकल्प)।

**सीतावट**—सज्ञा पुं० [सं०] प्रयाग और चित्रकूट के बीच एक स्थान जहाँ वट वृक्ष के नीचे राम और सीता दोनो ठहरे थे।

**सीतावन**—सज्ञा पुं० [स०] एक तीर्थ का नाम [को०]।

**सीतावर**—सज्ञा पु० [स०] श्रीरामचद्र।

सीतावल्लभ—संज्ञा पुं० [सं०] सीतापति। रामचंद्र।

सीतास्वयंवर—संज्ञा पुं० [सं० सीतास्वयम्वर] सीता जी का स्वयंवर। धनुर्यज्ञ।

सीताहरण—संज्ञा पुं० [सं०] रावण के द्वारा सीता जी का अपहरण।

सीताहरन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सीताहरण] दे० 'सीताहरण'।

सीताहार—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पौधा।

सीतिनक—संज्ञा पुं० [सं०] १ मटर। २ दाल।

सीतोल्क—संज्ञा पुं० [सं०] मटर।

सीतोदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जैनों के अनुसार विदेह की एक नदी का नाम।

सीत्कार—संज्ञा पुं० [सं०] वह शब्द जो अत्यंत पीडा या आनंद के समय मुँह से साँस खींचने से निकलता है। सी सी शब्द। सिसकारी।

सीत्कारबाहुल्य—संज्ञा पुं० [सं०] वंशी के छह दोषों में से एक दोष।
विशेष—वंशी के छह दोष ये हैं—सीत्कारबाहुल्य, स्तब्ध, विस्वर खंडित, लघु और अमधुर।

सीत्कृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सीत्कार'।

सीत्य¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ धान्य। धान। २ खेत। कृषिक्षेत्र।

सीत्य²—वि० हल की फाल की रेखाओं से युक्त। कृष्ट। जोता हुआ।

सीथ—संज्ञा पुं० [सं० सिक्थ, प्रा० सित्थ] पके हुए अन्न का दाना। भात का दाना। उ०—लहि संतन की सीथ प्रसादी। आयो भुक्ति मुक्ति मरयादी।—रघुराज (शब्द०)।

सीथि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सिक्थ] दे० 'सीथ'।

सीदंतीय—संज्ञा पुं० [सं० सीदन्तीय] एक साम गान।

सीद—संज्ञा पुं० [सं०] व्याज पर रुपया देना। सूदखोरी। कुसीद।

सीदना—क्रि० अ० [सं० सीदति] दुःख पाना। कष्ट झेलना। उ०—(क) जद्यपि नाथ उचित न होत अस प्रभु सों करौ ढिठाई। तुलसिदास सीदत निसि दिन देखत तुम्हारि निठुराई।—तुलसी (शब्द०)। (ख) सीदत साधु साधुता सोचति, बिलसत खल, हुलसति खलई है।—तुलसी (शब्द०)।

सीदी—संज्ञा पुं० [देश०] शक जाति का मनुष्य।

सीद्य—संज्ञा पुं० [सं०] आलस्य। काहिली। सुस्ती।

सीद्यमान—वि० [सं०] दुःखी। पीडित। उ०—साधु सीद्यमान जानि रीति पाय दीन की।—तुलसी ग्रं०, पृ० २४३।

सीध—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीधा] १ ठीक सामने की स्थिति। सम्मुख विस्तार या लंबाई। वह लंबाई जो बिना कुछ भी इधर उधर मुडे एक तार चली गई हो, जैसे—नाक की सीध में चले जाओ। २ ऋजुता। सरलता। ३. लक्ष्य। निशाना।
मुहा०—सीध बाँधना = (१) सडक, क्यारी आदि बनाने में पहले रेखा डालना। (२) निशाना साधना। लक्ष्य ठीक करना।

सीधा¹—वि० [सं० शुद्ध, ब्रज० सूधा, सूधो] [वि० स्त्री० सीधी] १ जो बिना कुछ इधर उधर मुडे लगातार किसी ओर चला गया हो। जो टेढा न हो। जिसमें फेर या घुमाव न हो। अवक्र। सरल। ऋजु जैसे—सीधी लकडी, सीधा रास्ता। २ जो किसी ओर ठीक प्रवृत्त हो। जो ठीक लक्ष्य की ओर हो।
मुहा०—सीधा करना = लक्ष्य की ओर लगाना। निशाना साधना, (बंदूक आदि का)। सीधी राह = सुमार्ग। अच्छा आचरण। सीधी सुनाना = (१) साफ साफ कहना। खरा खरा कहना। लगी लिपटी न रखना। (२) भला बुरा कहना। दुर्वचन कहना। गालियाँ देना। सीधा आना = सामना करना। भिड जाना।
३ जो कुटिल या कपटी न हो। जो चालबाज न हो। सरल प्रकृति का। निष्कपट। भोला भाला। ४ शांत और सुशील। शिष्ट। भला। जैसे—सीधा आदमी।
मुहा०—सीधी आँखों न देखना = (किसी का) सह न सकना। (किसी का) अच्छा न लगना। (किसी की) उपस्थिति खटकना। उ०—पढकर पुस्तक न फाड डालनेवालों को भी कदापि सीधी आँखों नहीं देख सकते।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २८६। सीधी तरह = शिष्ट व्यवहार से। नरमी से। जैसे—(क) सीधी तरह बोलो। (ख) वह सीधी तरह न मानेगा। सीधी अँगुली घी न निकलना = बिना कडाई के कार्य का न होना।
५ जो नटखट या उग्र न हो। जो बदमाश न हो। अनुकूल। शांत प्रकृति का। जैसे—सीधा जानवर, सीधा लडका।
यौ०—सीधा सादा = (१) भोला भाला। निष्कपट। (२) जिसमें बनावट या तडक भडक न हो।
मुहा०—(किसी को) सीधा करना = दंड देकर ठीक करना। शासन करना। रास्ते पर लाना। शिक्षा देना। सीधा दिन = अच्छा दिन। शुभ दिन या मुहूर्त। जैसे—सीधा दिन देखकर यात्रा करना।
६ जिसका करना कठिन न हो। सुकर। आसान। सहल। जैसे,—सीधा काम, सीधा सवाल, सीधा ढंग। ७ जो दुर्बोध न हो। जो जल्दी समझ में आवे। जैसे—सीधी सी बात नहीं समझ में आती। ८ दहिना। बायाँ का उलटा। जैसे,—सीधा हाथ।

सीधा²—क्रि० वि० ठीक सामने की ओर। सम्मुख।
मुहा०—सीधा तीर सा = एकदम सीध में।

सीधा³—संज्ञा पुं० [सं० असिद्ध, सिद्ध] १ बिना पका हुआ अन्न। जैसे,—दाल, चावल, आटा। २ वह बिना पका हुआ अनाज जो ब्राह्मण या पुरोहित आदि को भोजनार्थ दिया जाता है। जैसे—एक सीधा इस ब्राह्मण को भी दे दो।
क्रि० प्र०—छूना।—देना।—निकालना।—मनसना।

सीधापन—संज्ञा पुं० [हिं० सीधा + पन (प्रत्य०)] सीधा होने का भाव। सिधाई। सरलता। भोलापन।

सीधा सादा—वि० [हिं०] भोला भाला। जैसे—वह बहुत सीधा सादा व्यक्ति है।

सीधु—संज्ञा पुं० [सं०] १ गुड़ या ईख के रस से बना मद्य। गुड़ की बनी हुई शराब। २ मद्य। आसव। मदिरा (को०)। ३ अमृत। सुधा। (लाक्ष०)।

सीधुगंध—संज्ञा पुं० [सं० सीधुगन्ध] मौलसिरी। बकुल।

सीधुप—वि० [सं०] मदिरा पीनेवाला। मद्यप। शराबी।

सीधुपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंभारी। काश्मरी वृक्ष।

सीधुपान—संज्ञा पुं० [सं०] मदिरापान।

सीधुपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ कदंब। कदम। २. मौलसिरी। बकुल।

सीधुपुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं०] धातकी। धव। धौ।

सीधुरस—संज्ञा पुं० [सं०] आम का पेड़।

सीधुराक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] बिजौरा नीबू। मातुलुंग वृक्ष।

सीधुराक्षिक—संज्ञा पुं० [सं०] कसीस।

सीधुवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] थूहर। स्नुही वृक्ष।

सीधुसंज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] बकुल का पेड़। मौलसिरी।

सीधे—क्रि० वि० [हिं० सीधा] १ सीध में। बराबर सामने की ओर। सम्मुख। (२) बिना कहीं मुड़े या रुके। जैसे—सीधे वहीं जाओ। ३ बिना और कहीं होते हुए। जैसे—सीधे राजा साहब के पास जाकर कहा। ४ मुलायमियत से। नरमी से। शिष्ट व्यवहार से। जैसे—वह सीधे रुपया न देगा। ५ शिष्टता के साथ। शांति के साथ। जैसे—सीधे बैठो।

सीध्र—संज्ञा पुं० [सं०] गुदा। मलद्वार।

सीन¹—संज्ञा पुं० [अं०] १ दृश्य। दृश्यपट। २ थियेटर के रंगमंच का कोई परदा जिसपर नाटक का कोई दृश्य चित्रित हो। ३. घटनाओं के घटित होने की जगह। घटनास्थल।—पद्माकर ग्रं०, पृ० १८।

यौ०—सीन सीनरी = रंगमंच का दृश्यानुरूप सजावट।

सीन²—संज्ञा पुं० [फ़ा० सीनह्] दे० 'सीना'। उ०—दोऊ तरफ के सुभट हाँकत जुटि गए रिपु सीन सों।—हिम्मत०, पृ० २२।

यौ०—सीन साफ = दे० 'सीनासाफ'। उ०—सीन साफ मुख नूर बिराजै। सोभा सुंदर बहु विधि छाजै।—सत० दरिया, पृ० १३।

सीनरी—संज्ञा स्त्री० [अं०] प्राकृतिक दृश्य।

सीना¹—क्रि० स० [सं० सीवन] १ कपड़, चमड़े आदि के दो टुकड़ों को सूई के द्वारा तागा पिरोकर जोड़ना। टाँके से मिलाना या जोड़ना। टाँका मारना। जैसे—कपड़ा सीना, जूता सीना। उ०—टुकड़ टुकड़ जोड़ जुगत सों सी के अंग लिपटाना। कर डारा भला पावन सो लोभ मोह में साना। साँच समझ अभिमाना।—कबीर० श०, भा० १, पृ० ४।

संयो० क्रि०—डालना।—देना।—लेना।

यौ०—सीना पिरोना = सिलाई तथा बेलबूटे आदि का काम करना।

सीना²—संज्ञा पुं० [फ़ा० सीनह्] छाती। वक्षस्थल।

यौ०—सीनाजोर। सीनातोड़। सीनाबंद।

मुहा०—सीने से लगाना = छाती से लगाना। आलिंगन कर

२ स्तन। चूचुक (को०)।

सीना³—संज्ञा पुं० [सं० सीमिक] १ एक प्रकार का कीड़ा
कपड़ों को काट डालता है। सीवाँ।

क्रि० प्र०—लगना।

२ एक प्रकार का रेशम का कीड़ा। छोटा पाट।

सीनाचाक—वि० [फ़ा० सीनह् चाक] विदीर्णहृदय। शोकाकुल

सीनाजन—वि० [फ़ा० सीनह् जन] छाती पीटनेवाला। शोक या
मनानेवाला [को०]।

सीनाजनी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सीनह् ज़नी] छातीपीटना।
करना।

सीनाजोर—वि० [फ़ा० सीनह् ज़ोर] १ अत्याचारी। जालिम
विद्रोही। बागी। ३ उद्दंड [को०]।

सीनाजोरी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सीनह् ज़ोरी] १, अत्याचार। २
३ उद्दंडता। उ०—न कालिदास की चोरी है बल्कि
सीनाजोरी है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ४३३।

सीनातोड़—संज्ञा पुं० [फ़ा० सीनह् + हिं० तोड़ना] कुश्ती का
पेच।

विशेष—जब पहलवान अपने जोड़ की पीठ पर रहता है
एक हाथ से वह उसकी कमर पकड़ता है और दूसरे
उसके सामने का हाथ पकड़ और खींचकर झटके से गिराता

सीनापनाह—संज्ञा पुं० [फ़ा०] जहाज के निचले खंड में लंबाई
दाना और का किनारा। (लश०)।

सीनाबंद—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १ अँगिया। चोली। २ गरेबान का
३ वह घोड़ा जो अगले पैरों से लँगड़ाता हो।

सीनाबसीना¹—क्रि० वि० [फ़ा० सीनह् बसीनह्] १ छाती से
मिलाते हुए। २ मुकाबिल में।

सीनाबसीना²—वि० (मंत्र आदि) जो गुरु या वंशपरंपरा से
हो [को०]।

सीनाबाँह—संज्ञा पुं० [फ़ा० सीनह् + हिं० बाँह] एक प्रकार की
जिसमें छाती पर थाप देते हैं।

सीनाबाज—वि० [फ़ा० सीनह् बाज़] १ खुली छाती का। २
छातीवाला [को०]।

सीनासाफ—वि० [फ़ा० सीनह् साफ] निश्छल। निष्कपट [को०]।

सीनासिपर—वि० [फ़ा० सीनह् सिपर] डटकर मुकाबला करनेवाला
छाती तानकर लड़नेवाला [को०]।

सीनियर—वि० [अं०] १ बड़ा। वयस्क। २ श्रेष्ठ। पद में उ
जैसे—सीनियर मेंबर, सीनियर परीक्षा।

सीनी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] तश्तरी। थाली।

सीप—संज्ञा पुं० [सं० शुक्ति, प्रा० सुत्ति] १ कड़े आवरण के
बंद रहनेवाला शंख, घोंघे आदि की जाति का एक ज
जो छोटे तालाबों और झीलों से लेकर बड़े बड़े समुद्रों त

पाया जाता है। शुक्ति। मुक्तामाता। मुक्तागृह। सीपी। सितुही।

विशेष—तालों के सीप लबोतरे होते है और समुद्र के चौपूँटे विषम आकार के और बडे बडे होते है। इनके ऊपर दोहरे सपुट के आकार का बहुत बडा आवरण होता है जो खुलता और बद होता है। इसी सपुट के भीतर सीप का कीडा, जो बिना अस्थि और रीढ का होता है, जमा रहता है। ताल के सीपो का आवरण ऊपर से कुछ काला या मैला तथा समतल होता है, यद्यपि ध्यान से देखने से उसपर महीन महीन धारियाँ दिखाई पडती हैं। इस आवरण का भीतर की ओर रहनेवाला पार्श्व बहुत ही उज्वल और चमकीला होता है, जिसपर प्रकाश पडने से कई रगो की आभा भी दिखाई पडती है। समुद्र के सीपो के आवरण के ऊपर पानी की लहरो के समान टेढी धारियाँ या लहरियाँ होती है। समुद्र के सीपो मे ही मोती उत्पन्न होते है। जब इन सीपो की भीतरी खोली और कडे आवरण के बीच कोई रोगोत्पादक बाहरी पदार्थ का कण पहुँच जाता है, तब जतु रक्षा के लिये उस कण के चारो ओर आवरण ही की शख धातु का एक चमकीला उज्वल पदार्थ जमने लगता है जो धीरे धीरे कडा पड जाता है। यही मोती होता है। समुद्री सीप प्राय छिछले पानी मे चट्टानो मे चिपके हुए पाए जाते है। ताल के सीपो के सपुट भी कीडो को साफ करके काम मे लाए जाते है। बहुत से स्थानो मे लोग छोटे बच्चो को इसी से दूध पिलाते है।

२ सीप नामक समुद्री जलजतु का सफेद कडा, चमकीला आवरण या सपुट जो बटन, चाकू के बेंट आदि बनाने के काम मे आता है। ३ ताल के सीप का सपुट जो चम्मच आदि के समान काम मे लाया जाता है। ४ वह लबोतरा पात्र जिसमें देवपूजा या तर्पण आदि के लिये जल रखा जाता है। अरघा।

**सीपज**Ⓟ—संज्ञा पुं० [हिं० सीप + स० ज] सीप से उत्पन्न, मोती। सीपिज। उ०—सीपज माल स्याम उर सोहै बिच बघनह छवि पावै री।—सूर०, १०।१३६।

**सीपति**Ⓟ—संज्ञा पुं० [स० श्रीपति] विष्णु।

**सीपर**‡—संज्ञा पुं० [फा० सिपर] ढाल। उ०—मेरे मन की लाज इहाँ लौं हठि प्रिय प्रान दए हैं। लागत साँगि बिभीषण ही पर, सीपर आपु भए है।—तुलसी (शब्द०)।

**सीपसुत**Ⓟ—संज्ञा पुं० [हिं० सीप + सुत] मोती। उ०—देखि माई हरि जू की लोटनि।. परसत आनन मनु रवि कुडल अबुज स्रवत सीपसुत जोटनि।—सूर०, १०।१८७।

**सीपारा**—संज्ञा पुं० [फा० सीपारह्] कुरान का एक भाग।

विशेष—कुरान मे कुल तीस भाग है जिनमे प्रत्येक को सीपारा (सिपारह भी) कहते है [को०]।

**सीपिज**Ⓟ—संज्ञा पुं० [हिं० सीपी + स० ज] मोती। उ०—लाला हौं वारी तेरे मुख पर। कुटिल अलक मोहन मन विहँसत भृकुटि विकट नैननि पर। दमकति है द्वै दँतुलिया विहँसति मनो सीपिज घर कियो वारिज पर।—सूर (शब्द०)।

**सीपी**—संज्ञा स्त्री० [स० शुक्ति ?, हिं० सीप] दे० 'सीप'।

**सीबी**—संज्ञा स्त्री० [अनु० सी सी] वह शब्द जो पीडा या अत्यत आनद के समय मुँह से साँस खीचने से उत्पन्न होता है। सी सी शब्द। सिसकारी। शीत्कार उ०—नाक चढै सीबी करै जितै छबीली छैल। फिरि फिरि भूलि वहै गहै पिय कँकरीली गैल।—बिहारी (शब्द०)।

**सीभा**†—संज्ञा पुं० [देश०] दहेज।

**सीमत**—संज्ञा पुं० [सं० सीमन्त] १ स्त्रियो की माँग। २ अस्थि-सघात। हड्डियो का सधिस्थान। हड्डियो का जोड।

विशेष—सुश्रुत के अनुसार इनकी सख्या १८ है। यथा—जाँघ मे १, वक्षण अर्थात् मूत्राशय तथा जघा के सधिस्थान मे १, पैर मे ६, दोनो बाहो मे ३–३, त्रिक या रीढ के नीचे के भाग मे १ और मस्तक मे १। भावप्रकाश के अनुसार हड्डियो का सधिस्थान सीया रहता है, इसलिये इन्हे 'सीमत' कहते है।

३ हिंदुओ मे एक सस्कार जो प्रथम गर्भस्थिति के चौथे, छठे या आठवें महीने मे किया जाता है। दे० 'सीमतोन्नयन'।

**सीमतक**—संज्ञा पुं० [सं० सीमन्तक] माँग निकालने की क्रिया। २ ईंगुर। सिंदूर जिसे स्त्रियाँ माँग के बीच मे लगाती है। ३ जैनो के सात नरको म से एक नरक का अधिपति। ४ नरकावास। ५ एक प्रकार का मानिक या रत्न।

**सीमतकरण**—संज्ञा पुं० [सं० सीमन्तकरण] माँग निकालना या काढना [को०]।

**सीमतमणि**—संज्ञा पुं० [सं० सीमन्तमणि] चूडामणि [को०]।

**सीमतनी**Ⓟ—संज्ञा स्त्री० [स० सीमन्तिनी] स्त्री। नारी। सीमतिनी।

**सीमतवान्**—वि० [सं० सीमन्तवत्] [स्त्री० सीमतवती] जिसे माँग हो। जिसकी माँग निकली हो।

**सीमतित**—वि० [सं० सीमन्तित] माँग निकाला हुआ। जैसे—सीमतित केश।

**सीमतिनी**—संज्ञा स्त्री० [स० सीमन्तिनी] स्त्री। नारी।

विशेष—स्त्रियाँ माँग निकालती है, इससे उन्हें सीमतिनी कहते हैं।

**सीमतोन्नयन**—संज्ञा पुं० [स० सीमन्तोन्नयन] द्विजो के दस सस्कारो म से तीसरा सस्कार।

विशेष—गर्भस्थिति के तीसरे महीने मे पुसवन सस्कार करने के पश्चात् चौथे, छठे या आठवें महीने में यह सस्कार करने का विधान है। इसमे वधू की माँग निकाली जाती है। कहते है, इस सस्कार के द्वारा गर्भस्थ सतान के गर्भ मे रहने के दोषो का निवारण होता है।

**सीम**Ⓟ¹—संज्ञा पुं० [सं० सीमा] सीमा। हद। पराकाष्ठा। सरहद। मर्यादा।

मुहा०—सीम चरना या काँडना = अधिकार दबाना। दबाना। जबरदस्ती करना। उ०—है काके द्वै सीस ईस के जो हठि जन की सीम चरै।—तुलसी (शब्द०)। सीम चाँपना = हद

दबाना। उ०—सीम कि चापि सकै कोइ तासू। बड रखवार रमापति जासू।—मानस, १।१२६।

सीम²—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ धन दौलत। २ रजत। चाँदी [को०]।

यौ०—सीमकश। फजूलखर्च। अपव्ययी। सीमतन=सुदर। गौर।

सीमक—संज्ञा पुं० [स०] सीमा। हद [को०]।

सीमल—संज्ञा पुं० [स० शाल्मलि] दे० 'सेमल'।

सीमलिंग—संज्ञा पु० [स० सीमलिङ्ग] सीमा का चिह्न। हद का निशान।

सीमात—संज्ञा पु० [स० सीमान्त] १ सीमा का अत। वह स्थान जहाँ सीमा का अत होता हो। जहाँ तक हद पहुँचती हो। सरहद। २ गाँव की सीमा। ३ गाँव के अतर्गत दूर की जमीन। सिवाना।

सीमातपूजन—संज्ञा पु० [स० सीमान्तपूजन] १ वर का पूजन या अगवानी जब वह बारात के साथ गाँव की सीमा के भीतर पहुँचता है। २ ग्राम की सीमा का पूजन (को०)।

सीमातप्रदेश—संज्ञा पु० [स० सीमान्तप्रदेश] १ सीमात या सरहद पर स्थित भूभाग। २ दो देशो के बीच का प्रदेश [को०]।

सीमातबंध—संज्ञा पुं० [स० सीमान्तबन्ध] आचरण का नियम या मर्यादा।

सीमातर—संज्ञा पुं० [स० सीमान्तर] गाँवो की सीमा [को०]।

सीमातलेखा—संज्ञा स्त्री० [स० सीमान्तलेखा] आखिरी किनारा। अतिम छोर [को०]।

सीमा¹—संज्ञा स्त्री० [स० सीमन्] दे० 'सीमा' २।

सीमा²—संज्ञा स्त्री० [स०] १ माँग। २ किसी प्रदेश या वस्तु के विस्तार का अतिम स्थान। हद। सरहद। मर्यादा। ३ आचरण व्यवहार आदि की शिष्टता। मर्यादा।

मुहा०—सीमा के बाहर जाना=उचित से अधिक बढ जाना। मर्यादा का उल्लघन करना। हद से ज्यादा बढना।

४ खेत, गाँव आदि की सीमा पर का बाँध या मेड (को०)। ५ चिह्न। निशान (को०)। ६. किनारा। तीर। समुद्रतट (को०)। ७ क्षितिज (को०)। ८ उच्चतम या अधिकतम सीमा (को०)। ९ खेत (को०)। १० ग्रीवा के पृष्ठ भाग मे खोपडी आदि का जोड (को०)। ११ अडकोप (को०)। १२ एक आभूषण।

सीमाकर्षक—संज्ञा पु० [स०] पाराशर स्मृति के अनुसार ग्राम की सीमा पर हल जोतने या खेती करनेवाला।

सीमाकृपाण—वि० [स०] सिवान की खेती करनेवाला। दे० 'सीमाकर्षक'।

सीमागिरि—संज्ञा पुं० [स०] सीमा पर स्थित पर्वत (को०)।

सीमाज्ञान—संज्ञा पुं० [स० सीमा+अज्ञान] सीमा के बारे मे ज्ञान का अभाव।

सीमातिक्रमणोत्सव—संज्ञा पु० [स०] युद्धयात्रा मे सीमा पार करने का उत्सव। विजययात्रा। विजयोत्सव।

विशेष—प्राचीन काल मे विजयादशमी को क्षत्रिय राजा अपने राज्य की सीमा लाँघते थे।

सीमाधिप - संज्ञा पुं० [स०] १ पडोसी राजा। सीमा प्रदेश का रक्षक या अधिकारी [को०]।

सीमानिश्चय—संज्ञा पुं० [स०] सीमारेखा या हदबदी के सबध मे विधिसमत निर्णय [को०]।

सीमापहारी—वि० [स० सीमापहारिन्] सीमा के प्रदेश पर अधिकार करनेवाला। सीमा के चिह्न मिटानेवाला।

सीमापाल—संज्ञा पु० [स०] सीमा की रखवाली करनेवाला। सीमा-रक्षक।

सीमाबंध—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सीमातबंध' [को०]।

सीमाब—संज्ञा पु० [फा०] पारा।

सीमाबद्ध—संज्ञा पु० [स०] रेखा से घिरा हुआ। हद के भीतर किया हुआ।

सीमाबियत—संज्ञा स्त्री० [फा०] पारद की तरह चचल होना। अस्थिरता। चचलता [को०]।

सीमाबी—वि० [फा०] पारे का। पारे से सबधित [को०]।

सीमावरोध—संज्ञा पु० [स०] कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार सीमा स्थिर होना। हदबदी।

सीमालिंग—संज्ञा पु० [स० सीमालिङ्ग] दे० 'सीमलिंग' [को०]।

सीमावाद—संज्ञा पु० [स०] दे० 'सीमाविवाद' [को०]।

सीमाविनिर्णय—संज्ञा पु० [स०] सीमा सबधी झगडो का निपटारा [को०]।

सीमाविवाद—संज्ञा पुं० [स०] सीमा सबधी विवाद। सरहद का झगडा। अठारह प्रकार के व्यवहारो मे या मुकदमो मे से एक।

विशेष—स्मृतियो मे लिखा है कि यदि दो गाँवो मे सीमा सबधी झगडा हो, तो राजा को सीमा निर्देश करके झगडा मिटा डालना चाहिए। इस काम के लिये जेठ का महीना श्रेष्ठ बताया गया है। सीमास्थल पर बड, पीपल, साल, पलास आदि बहुत दिन टिकनेवाले पेड लगाने चाहिए। साथ ही तालाब, कूआँ बनवा देना चाहिए, क्योकि ये सब चिह्न शीघ्र मिटनेवाले नही है।

यौ०—सीमाविवाद धर्म=सीमाविवाद सबधी नियम या कानून।

सीमावृक्ष—संज्ञा पु० [स०] वह वृक्ष जो सीमा पर हो। हद बतानेवाला पेड।

विशेष—मनुसहिता मे सीमा स्थान पर बहुत दिन टिकनेवाले पेड लगाने का विधान है। बहुधा सीमाविवाद सीमा पर का वृक्ष देखकर मिटाया जाता था।

सीमासंधि—संज्ञा स्त्री० [स० सीमासन्धि] दो सीमाओ का एक जगह मिलान। वह स्थान जहाँ सीमाएँ मिलती हैं।

सीमासेतु—संज्ञा पुं० [स०] वह पुश्ता, बाँध या मेड जो सीमा का निर्देश करता है। हदबदी।

सीमिक—संज्ञा पुं० [स०] १ एक प्रकार का वृक्ष। २. दीमक। एक प्रकार का छोटा कीडा। ३ दीमको का लगाया हुआ मिट्टी का ढेर।

सीमिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दीमक या चीटी। २ वल्मीक। विमौट। ३ जीभ के नीचे की फुसी [को०]।

सीमिया—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ परकायप्रवेश विद्या। २ जादू। इद्रजाल। नजरबदी [को०]।

सीमी—वि० [फा०] १ चाँदी जैसा। २ चाँदी का। चाँदी का बना हुआ [को०]।

सीमीक—संज्ञा पु० [स०] दे० 'सीमिक' [को०]।

सीमुर्ग—संज्ञा पुं० [फा० सीमुर्ग] एक विशाल पक्षी जिसका निवास काफ पहाडी पर माना गया है [को०]।

सीमेट—संज्ञा पु० [अँ०] एक प्रकार के पत्थर का चूर्ण। दे० 'सिमेट'।

सीमोल्लघन—संज्ञा पुं० [स० सीमोल्लङ्घन] १ सीमा का उल्लघन करना। सीमा को लाँघना। हद पार करना। २ विजययात्रा। विशेष दे० 'सीमातिक्रमणोत्सव'। ३ मर्यादा के विरुद्ध कार्य करना।

सीय(पु)—संज्ञा स्त्री० [स० सीता] सीता। जानकी। उ०—राम सीय सिर सेंदुरु देही।—मानस, १।३२५।

सीयक—संज्ञा पुं० [स०] मालवा के परमार राजवश के दो प्राचीन राजाओ के नाम जिनमे पहला दसवी शताब्दी के आरभ मे और दूसरा ग्यारहवी शताब्दी के आरभ मे था। इसी दूसरे सीयक का पुत्र मुज था जो प्रसिद्ध राजा भोज का चाचा था।

सीयन†—संज्ञा स्त्री० [स० सीवन] दे० 'सीवन'।

सीयरा†—वि० [स० शीतल] दे० 'सियरा'।

सीर[1]—संज्ञा पु० [स०] १ हल। २ हल जोतनेवाले बैल। ३ सूर्य। ४ अर्क। आक का पौधा।

सीर[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० सीर (=हल)] १. वह जमीन जिसे भू-स्वामी या जमीदार स्वय जोतता आ रहा हो, अर्थात् जिसपर उसकी निज की खेती होती आ रही हो। २ वह जमीन जिसकी उपज या आमदनी कई हिस्सेदारो मे बँटती हो। ३ साझा। मेल।

मुहा०—सीर मे = एक साथ मिलकर। इकट्ठा। एक मे। जैसे—भाइयो का सीर मे रहना।

सीर[3]—संज्ञा पु० [स० शिरा (=रक्तनाडी)] रक्त की नाडी। रक्त की नली।

मुहा०—सीर खुलवाना = नश्तर से शरीर से दूषित रक्त निकलवाना। फसद खुलवाना।

सीर†(पु)[4]—वि० [स० शीतल, प्रा० सीअड, हिं० सीड, सील, सीरा] ठढा। शीतल। उ०—सीर समीर धीर अति सुरभित वहत सदा मन भायो।—रघुराज (शब्द०)।

सीर[5]—संज्ञा पुं० १ चौपायो का एक सक्रामक रोग। २ पानी की काट। (लश०)।

सीर[6]—संज्ञा पुं० [फा०] लशुन। लहसुन [को०]।

सीरक[1]—संज्ञा पु० [सं०] १ हल। २ शिशुमार। सूस। ३ सूर्य।

सीरक(पु)[2]—वि० [हिं० सीरा] ठढा करनेवाला।

सीरक(पु)[3]—संज्ञा पु०, स्त्री० शीतलता। ठढक। शैत्य। उ०—देखियत है करुणा की मूरति सुनियत है परपीरक। सोइ करौ जो मिटै हृदय को, दाहु परै उर सीरक।—सूर (शब्द०)।

सीरख(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शीर्ष] 'शीर्ष'।

सीरत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ स्वभाव। प्रकृति। आदत। २ जीवन-चरित। ३. सौजन्य।

यौ०—सूरत सीरत = रूप और गुण।

सीरतन—वि० [अ०] स्वभावत। स्वभाव से। आदत से [को०]।

सीरधर—संज्ञा पुं० [सं०] १ हल धारण करनेवाला। २ बलराम।

सीरध्वज—संज्ञा पु० [स०] १ राजा जनक का नाम।

विशेष—जब ये पुत्र की कामना से यज्ञभूमि जोत रहे थे तब हल की कूट या रेखा से सीता की उत्पत्ति हुई। इसी से लोग इन्हें 'सीरध्वज' कहने लगे।

२ बलराम का नाम।

सीरन—संज्ञा पुं० [देश०] बच्चो का पहनावा।

सीरनी—संज्ञा स्त्री० [फा० शीरीनी] मिठाई।

सीरपाणि—संज्ञा पुं० [स०] हलधर। बलदेव।

सीरभृत्—संज्ञा पुं० [स०] १ हलधर। बलदेव। २ हल धारण करनेवाला।

सीरयोग—संज्ञा पुं० [स०] हल मे जुते हुए बैलो की जोडी। २ बैलो को हल मे जोतना [को०]।

सीरवाह—संज्ञा पु० [सं०] १ हल धारण करनेवाला। हलवाहा। २ जमीदार की ओर से उसकी खेती का प्रबध करनेवाला कारिंदा।

सीरवाहक—संज्ञा पुं० [स०] हलवाहा। किसान।

सीरष(पु)—संज्ञा पुं० [स० शीर्ष] दे० 'शीर्ष'।

सीरा[1]—संज्ञा स्त्री० [स०] एक प्राचीन नदी का नाम।

सीरा[2]—संज्ञा पुं० [फा० शीर] १ पकाकर मधु के समान गाढा किया हुआ चीनी का रस। चाशनी। २ मोहनभोग। हलवा।

सीरा[3]—संज्ञा पुं० [हिं० सिर] चारपाई का वह भाग जिधर लेटने मे सिर रहता है। सिरहाना।

सीरा†(पु)[4]—वि० [सं० शीतल, प्रा० सीअड] [वि० स्त्री० सीरी] १ ठढा। शीतल। उ०—सीरी पौन अगिनि सी दाहति, कोकिल अति सुखदाई।—सूर (शब्द०)। २ शात। मौन। चुपचाप। उ०—दुर्जन हँसे न कोय आपु सीरे ह्वै रहिए।—गिरिधर (शब्द०)।

सीरियल—संज्ञा पु० [अँ०] १ वह लबी कहानी या दूसरा लेख जो कई बार और कई हिस्सो मे निकले। २ वह कहानी या किस्सा जो बायस्कोप मे कई बार कई हिस्सो मे दिखाया जाय।

सीरी[1]—संज्ञा पु० [स० सीरिन्] (हल धारण करनेवाले) बलराम।

सीरी[2]—वि० स्त्री० [सं० शीतल, प्रा० सीअड, सीयड़, हिं० सीरा] दे० 'सीरा'।

सीरीज—संज्ञा स्त्री० [अं० सीरीज] एक ही वस्तु का लगातार क्रम। सिलसिला। श्रेणी। लडी। माला। जैसे,—बालसाहित्य सीरीज की पुस्तकें अच्छी होती है।

सीरोसा—संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार की मिठाई।

सीलध—संज्ञा स्त्री० [सं० सीलन्ध] एक प्रकार की मछली।

विशेष—वैद्यक मे यह श्लेष्मावर्धक, वृष्य, पाक मे मधुर और गुरु, वातपित्तहर, हृद्य और आमवातकारक कही गई है।

सील¹—संज्ञा स्त्री० [स० शीतल, प्रा० सीअड] भूमि मे जल की आर्द्रता सीढ। नमी। तरी।

सील²—संज्ञा पुं० [स० शलाका] लकडी का एक हाथ लबा औजार जिसपर चूडियाँ गोल और सुडौल की जाती है।

सील†(पु)³—संज्ञा पु० [स० शील] दे० 'शील'।

यौ०—सीलवत, सीलवान = शीलयुक्त। सुशील।

सील⁴—संज्ञा पु० [अं०] १ मुहर। मुद्रा। ठप्पा। छाप। २ एक प्रकार की समुद्री मछली जिसका चमडा और तेल बहुत काम आता है।

सील⁵—संज्ञा पु० [स०] हल [को०]।

सीला¹—संज्ञा पुं० [स० शिल] १ अनाज के वे दाने जो फसल कटने पर खेत मे पडे रह जाते है जिन्हें तपस्वी या गरीब लोग चुनते है। सिल्ला। उ०—(क) कविता खेती उन लई सीला विनत मजूर।—(शब्द०)। (ख) विष समान सब विषय विहाई। बसैं तहाँ सीला बिनि खाई।—रघुराज (शब्द०)। २ खेत मे गिरे दानो को चुनकर निर्वाह करने की मुनियो की वृत्ति।

सीला²—वि० [सं० शीतल] [वि० स्त्री० सीली] गीला। आर्द्र। तर। नम।

सीवक—संज्ञा पु० [स०] सीनेवाला। सिलाई करनेवाला।

सीवडो—संज्ञा पु० [स० सीमान्त] ग्राम का सीमात। सिवाना (डिं०)।

सीवन—संज्ञा पुं० [स०] १ सीने का काम। सिलाई। २ सीने से पडी हुई लकीर। कपडे के दो टुकडो के बीच की सिलाई का जोड। ३ दरार। दराज। सधि। ४ वह रेखा जो अडकोश के बीचोबीच से लेकर मलद्वार तक जाती है।

सीवना¹—संज्ञा पु० [स० सीमान्त] दे० 'सिवान'।

सीवना²—क्रि० स० [स० सीवन] दे० 'सीना'।

सीवनी—संज्ञा स्त्री० [स०] १ सुई। सूचिका। सूची। २. वह रेखा जो लिंग के नीचे से गुदा तक जाती है।

विशेष—सुश्रुत मे यह चार प्रकार की कही है—गोफणिश, तुल्लसीवनी, वेल्लित और ऋजुग्रथि।

३ घोडे का गुदा के नीचे का भाग (को०)।

सीवी—संज्ञा स्त्री० [अनु० सी० सी०] दे० 'सीवी'।

सीव्य—वि० [सं०] सीने लायक। सीने के योग्य [को०]।

सीस¹—संज्ञा पु० [स० शीर्ष] १ सिर। माथा। मस्तक। २. कधा। (डिं०)। ३ अतरीप (लश०)।

सीस²—संज्ञा पु० [स०] दे० 'सीसा'।

सीसक—संज्ञा पु० [स०] सीसा नामक धातु।

सीसज—संज्ञा पुं० [स०] सिंदूर।

सीसताज—संज्ञा पु० [हिं० सीस + फा० ताज] वह टोपी या ढक्कन जो शिकार पकडने के लिये पाले हुए जानवरो के सिर चढा रहता है और शिकार के समय खोला जाता है। कुलहा। उ०—तुलसी निहारि कपि भालु किलकत ललकत लखि ज्यो कँगाल पातरी सुनाज की। राम रुख निरखि हरष्यो हिय हनुमान मानो खेलवार खोली सीसताज बाज की।—तुलसी (शब्द०)।

सीसताण—संज्ञा पुं० [सं०] अफगानिस्तान और फारस के बीच का प्रदेश। सीस्तान।

सीसत्रान(पु)—संज्ञा पु० [स० शिरस्त्राण] टोप। कूँड। शिरस्त्राण। उ०—सीसत्रान अवतसजुत मनिहाटक मय नाह। लेहु हरषि उर सजहु सिर बहु सोभा जिहि माह।—रामाश्वमेघ (शब्द०)।

सीसपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] सीसा धातु।

सीसपत्रक—संज्ञा पु० [स०] सीसा धातु।

सीसफूल—संज्ञा पु० [हिं० सीस + फूल] सिर पर पहनने का फूल के आकार का एक गहना।

सीसम—संज्ञा पुं० [फा० शीशम] एक वृक्ष। दे० 'शीशम'।

सीसमहल—संज्ञा पु० [फा० शीशा + अ० महल] वह मकान जिसकी दीवारो मे चारो ओर शीशे जडे हो। शीशे का महल।

सीसर—संज्ञा पु० [स०] १ पराशर गृह्यसूत्र के अनुसार सरमा नाम की देवताओ की कुतिया का पति। २. एक बालग्रह जिसका रूप कुत्ते का माना गया है।

सीसल—संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का पेड जो केवडे या केतकी की तरह का होता है और जिसका रेशा बहुत काम आता है। रामबाँस।

सीसा¹—संज्ञा पु० [सं० सीसक] एक मूल धातु जो बहुत भारी और नीलापन लिए काले रग की होती है।

विशेष—आधुनिक रसायन मे यह मूल द्रव्यो मे माना गया है। यह पीटने से फैल सकता है, और तार रूप मे भी हो सकता है, पर कुछ कठिनता से। इसका रग भी जल्दी बदला जा सकता है। इसकी चद्दरें, नलियाँ और बदूक की गोलियाँ आदि बनती है। इसका घनत्व ११ ३७ और परमाणुमान २०६४ है। सीसा दूसरी धातुओ के साथ बहुत जल्दी मिल जाता और कई प्रकार की मिश्र धातुएँ बनाने मे काम आता है। छापे के टाइप की धातु इसी के योग से बनती है।

आयुर्वेद मे सीसा सप्त धातुओ मे है और अन्य धातुओ के समान यह भी रसौषध के रूप मे व्यवहृत होता है। इसका भस्म कई रोगो मे दिया जाता है। वैद्यक मे सीसा आयु, वीर्य और काति को बढानेवाला, मेहनाशक, उष्ण तथा कफ को दूर करनेवाला माना जाता है। इसकी उत्पत्ति की कथा भावप्रकाश मे इस

प्रकार है,—वासुकि एक नाग कन्या को देखकर मोहित हुए थे। उन्ही के स्खलित वीर्य से इस धातु की उत्पत्ति हुई।

पर्या०—सीस। सीसक। गडपदभव। सिंदूरकारण। वर्ध। स्वर्णादि। यवनेष्ट। सुवर्णक। वध्रक। चिच्चट। जड। भुजगम। अग। कुरग। पिरपिष्टक। वहुमल। चीनपिष्ट। त्रपु। महावल। मृदुकृष्णायस। पद्म। तारशुद्धिकर। शिरावृत्त। वयोवग।

सीसा‡(पु)²—सज्ञा पुं० [फा० शीशह्] दे० 'शीशा'।

सीसी¹—सज्ञा स्त्री० [अनु०] १ पीडा या अत्यत आनद के समय मुँह से साँस खीचने से निकला हुआ शब्द। शीत्कार। सिसकारी। उ०—सीसी किए ते सुधा सीसी सी ढरकि जाति—(शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना।

२ शीत के कष्ट के कारण निकला हुआ शब्द।

सीसी†(पु)²—सज्ञा स्त्री० [हिं० शीशा] दे० 'शीशी'।

सीसो, सीसों†—सज्ञा पुं० [फा० शीशम] दे० 'शीशम'।

सीसोदिया—सज्ञा पु० [सिसोद (=स्थान)] दे० 'सिसोदिया'।

सीसोपधातु—सज्ञा पुं० [स०] सिंदूर। ईगुर।

सीसौदिया—सज्ञा पु० [सिसोद स्थान] दे० 'सिसोदिया।

सीस्तान—सज्ञा पुं० [फा०] अफगानिस्तान और फारस का मध्यवर्ती प्रदेश। सीसताए।

सीस्मोग्राफ—सज्ञा पु० [अ०] एक प्रकार का यत्र जिससे भूकप होने का पता लगता है।

विशेष—इस यत्र से यह मालूम हो जाता है कि भूकप किस दिशा मे, कितनी दूर पर हुआ है, और उसका वेग हल्का था या जोर का।

सीहु¹—सज्ञा स्त्री० [स० सीघु (=मद्य)] महक। गध।

सीहु²—सज्ञा पुं० [देश०] साही नामक जतु। सेही।

सीहु(पु)³—सज्ञा पु० [स० सिंह] दे० 'सिंह'।

सीहगोस—सज्ञा पुं० [फा० सियहगोश] एक प्रकार का जतु जिसके कान काले होते हैं। उ०—केसव सरभ सिंह सीहगोस रोस गति कूकरनि पास ससा सूकर गहाए हैं।—केशव (शब्द०)।

सीहुड—सज्ञा पुं० [स० सीहुण्ड] सेहुँड का पेड। स्नुही। थूहर।

सु(पु)† प्रत्य० [प्रा० सुन्तो] दे० 'सो'।

सुखड - सज्ञा पु० [देश०] साधुओ का एक सप्रदाय।

सुगवश—सज्ञा पु० [स० शुङ्गवश] मौर्य वश के अतिम सम्राट् वृहद्रथ के प्रधान सेनापति पुष्यमित्र द्वारा प्रतिष्ठित एक प्राचीन राजवश।

विशेष—ईसा से १८४ वर्ष पूर्व पुष्यमित्र सुग ने वृहद्रथ को मारकर मौर्य साम्राज्य पर अपना अधिकार जमाया। यह राजा वैदिक या ब्राह्मण धर्म का पक्का अनुयायी था। जिस समय पुष्यमित्र मगध के सिंहासन पर वैठा, उस समय साम्राज्य नर्मदा के किनारे तक था और उसके अंतर्गत आधुनिक विहार, सयुक्त प्रदेश, मध्य प्रदेश आदि थे। कलिंग के राजा खारवेल्ल तथा पजाव और कावुल के यवन (यूनानी) राजा मिनाडर (वौद्ध मिलिंद) ने सुग राज्य पर कई वार चढाइयाँ की, पर वे हटा दिए गए। यवनो का जो प्रसिद्ध आक्रमण साकेत (अयोध्या) पर हुआ था, वह पुष्यमित्र के ही राजत्व काल मे। पुष्यमित्र के समय का उसी के किसी सामत या कर्मचारी का एक शिलालेख अभी हाल मे अयोध्या मे मिला है जो अशोक लिपि मे होने पर भी सस्कृत मे है। यह लेख नागरीप्रचारिणी पत्रिका मे प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार के एक और पुराने लेख का पता मिला है, पर वह अभी प्राप्त नही हुआ है। इससे जान पडता है कि पुष्यमित्र कभी कभी साकेत (अयोध्या) मे भी रहता था और वह उस समय एक समृद्धिशाली नगर था।

पुष्यमित्र के पुत्र अग्निमित्र ने विदर्भ के राजा को परास्त करके दक्षिण मे वरदा नदी तक अपने पिता के राज्य का विस्तार वढाया। जैसा कालिदास के मालविकाग्निमित्र नाटक से प्रकट है, अग्निमित्र ने विदिशा को अपनी राजधानी वनाया था जो वेत्रवती और विदिशा नदी के सगम पर एक अत्यत सुदर पुरी थी। इस पुरी के खँडहर भिलसा (ग्वालियर राज्य मे) से थोडी दूर पर दूर तक फले हुए है। चक्रवर्ती सम्राट् वनने की कामना से पुष्यमित्र ने इसी समय वडी धूमधाम से अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान किया। इस यज्ञ के समय महाभाष्यकार पतजलि जी विद्यमान थे। अश्वरक्षा का भार पुष्यमित्र के पौत्र (अग्निमित्र के पुत्र) वसुमित्र को सौंपा गया जिसने सिंधु नदी के किनारे यवनो को परास्त किया। पुष्यमित्र के समय मे वैदिक या ब्राह्मण धर्म का फिर से उत्थान हुआ और वौद्ध धर्म दवने लगा। वौद्ध ग्रथो के अनुसार पुष्यमित्र ने वौद्धो पर वडा अत्याचार किया और वे राज्य छोडकर भागने लगे। ईसा से १४८ वर्ष पहले पुष्यमित्र की मृत्यु हुई और उसका पुत्र अग्निमित्र सिंहासन पर वैठा। उसके पीछे पुष्यमित्र का भाई सुज्येष्ठ और फिर अग्निमित्र का पुत्र वसुमित्र गद्दी पर वैठा। फिर धीरे धीरे इस वश का प्रताप घटता गया और वसुदेव ने विश्वासघात करके कण्व नामक ब्राह्मण राजवश की प्रतिष्ठा की।

सुँघनी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सूघना] तवाकू के पत्ते की खूव वारीक वुकनी जो सूँघी जाती है। हुलास। नस्य। मग्जरोशन।

क्रि० प्र०—सूँघना।

सुँघाना—क्रि० स० [हिं० सूँघना का प्रेर० रूप] आघ्राण कराना। सूँघने की क्रिया कराना।

सुंठि—सज्ञा स्त्री० [स० शुण्ठि] दे० 'शुंठि', 'सोठ'।

सुंड—सज्ञा पुं० [स० शुण्ड] 'शुड', 'सूँड'।

सुंडदड—सज्ञा पुं० [सं० शुण्डदण्ड] दे० 'शुडादड'।

सुडभुसुड—सज्ञा पुं० [स० शुण्डभुशुण्डि] हाथी जिसका अस्त्र सूँड है। उ०—चढि चित्रित सुडभुसुड पै, सोभित कचन कुड पैं। नृप सजेउ चलत जदु शुड पै, जिमि गज मृग सिर पुड पैं।—गोपाल (शब्द०)।

सुंडस—सज्ञा पु० [देश०] लदुए गधे की पीठ पर रखने की गद्दी।

सुंडा¹—सज्ञा स्त्री० [हिं० सूँड] सूँड। शुड।

सुंडा²—संज्ञा पुं० [देश०] लद्दुए गधे की पीठ पर रखने की गद्दी या गद्दा।

सुंडाल—संज्ञा पुं० [सं० शुण्डाल] हाथी। हस्ती। वह जो सूँडवाला हो। उ०—सुंडाल चलत सुंडनि उठाइ। जिनकै जँजीर झननझनत पाइ।—सूदन (शब्द०)।

सुंडाली—संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्डाल (=सूँडवाला)] एक प्रकार की मछली।

सुंडीबेंत—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बेंत जो बंगाल, आसाम और खसिया की पहाड़ी पर पाया जाता है।

सुंद—संज्ञा पुं० [सं० सुन्द] १ एक वानर का नाम। २ एक राक्षस का नाम। ३ विष्णु। ४ सह्लाद का पुत्र। ५ एक असुर जो निसुंद (निकुंभ) का पुत्र और उपसुंद का भाई था।

विशेष—सुंद और उपसुंद दोनों बड़े बलवान असुर थे। इन्होंने ब्रह्मा से यह वर प्राप्त किया था कि वे तब तक मर नहीं सकते जब तक दोनों भाई परस्पर एक दूसरे को न मारें। इस तरह इन्हें कोई हरा नहीं सकता था। इंद्र द्वारा भेजी गई तिलोत्तमा नाम की अप्सरा के लिये अंतत दोनों आपस में ही लड़कर मर गए थे।

सुंदरंमन्य—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दरम्मन्य] जो अपने को सुंदर मानता या समझता हो।

सुंदर¹—वि० [सं० सुन्दर] [वि० स्त्री० सुंदरी] १ जो देखने में अच्छा लगे। प्रियदर्शन। रूपवान। शोभन। रुचिर। खूबसूरत। मनोहर। मनोज्ञ। २ अच्छा। भला। बढ़िया। श्रेष्ठ। शुभ। जैसे,—सुंदर मुहूर्त।

सुंदर²—संज्ञा पुं० १ एक प्रकार का पेड़। २ कामदेव। ३ एक नाग का नाम। ४ लंका का एक पर्वत। ५ एक छंद।

सुंदरई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुंदर + ई (प्रत्य०)] सौंदर्य। सुंदरता। उ०—रीझे स्याम देखि वा मुख पर छवि मुख सुंदरई।—सूर० (राधा०), १६७६।

सुंदरक—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दरक] १ एक तीर्थ का नाम। २ एक ह्रद का नाम।

सुंदरकांड—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दरकाण्ड] १ रामायण के पाँचवें कांड का नाम जो लंका के सुंदर पर्वत के नाम पर रखा गया है। २ सुंदर सुडौल कांड या पर्व (को०)।

सुंदरता—संज्ञा स्त्री० [सं० सुन्दरता] सुंदर होने का भाव। सौंदर्य। खूबसूरती। रूपलावण्य।—उ०—सुंदरता कहुँ सुंदर करई। छविगृह दीपसिखा जनु बरई।—मानस, १।२३०।

सुंदरताई—संज्ञा स्त्री० [सं० सुन्दरता] दे० 'सुंदरता'। उ०—(क) हम भरि जन्म सुनहु सब भाई। देखी नहिं असि सुंदरताई।—राम०, पृ० ३६३। (ख) अंग बिलाकि बिलोक में ऐसी को नारि निहारिन नार नवाई। मूरतिवंत शृंगार समीप शृंगार किए जानो सुंदरताई।—केशव (शब्द०)।

सुंदरत्व—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दरत्व] सुंदरता। सौंदर्य।

सुंदरवती—संज्ञा स्त्री० [सं० सुन्दरवती] एक नदी का नाम।

सुंदरवन—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दरवन] गंगा के डेल्टा में स्थित वन जहाँ की भूमि दलदली है।

सुंदराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुंदर + आई (प्रत्य०)] दे० 'सुंदरता'।

सुंदरापा—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दर, हिं० सुंदर + आपा (प्रत्य०)] सुंदरता।

सुंदरी¹—वि० स्त्री० [सं० सुन्दरी] रूपवती। खूबसूरत।

सुंदरी²—संज्ञा स्त्री० १ सुंदर स्त्री। २ हलदी। हरिद्रा। ३ एक प्रकार का बड़ा जंगली पेड़।

विशेष—यह पेड़ सुंदर वन में बहुत होता है। इसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है और नाव, संदूक, मेज, कुरसी आदि सामान बनाने के काम में आती और इमारतों में भी लगती है। यह पेड़ खारे पानी के पास ही उग सकता है, मीठा पानी पाने से सूख जाता है।

४ त्रिपुरसुंदरी देवी। ५ एक योगिनी का नाम। ६ सवैया नामक छंद का एक भेद जिसमें आठ सगण और एक गुरु होता है। उ०—सब सों गाहि पानि मिले रघुनंदन भेटि कियो सबको सुखभागी। यहि औसर की हरि सुंदरि मूरति राखि जपै हिय में अनुरागी।—छंद०, पृ० २४७। ७ बारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसमें एक नगण, दो भगण और एक रगण होता है। द्रुतविलंबित। ८. तेईस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति जिसमें क्रमश दो सगण, एक भगण, एक सगण, एक नगण, दो जगण और एक लघु तथा एक एक गुरु होता है। छंदप्रभाकर में इसे 'सुंदरि' कहा है। उ०—सस भा स तजो जो लगि सखि! ढूंढ़ो कुंजगली बिछुरी हरि सों।—छंद०, पृ० २३७। ९ एक प्रकार की मछली। १०. माल्यवान राक्षस की पत्नी जो नर्मदा नामक गंधर्वी की कन्या थी। ११ श्वफल्क की कन्या का नाम (को०)। १२ वैश्वानर की एक दुहिता (को०)।

सुंदरी³—संज्ञा स्त्री० [?] सितार, इसराज आदि में लगे वे लोहे या पीतल के परदे जो विभिन्न स्वरों के स्थान होते हैं।

सुंदरीमंदिर—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दरीमन्दिर] अंत पुर। जनानखाना (को०)।

सुंदरेश्वर—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दरेश्वर] शिव जी की एक मूर्ति।

सुंदोपसुंद—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दोपसुन्द] निसुंद (निकुंभ) नामक दैत्य के दोनों पुत्र सुंद और उपसुंद। विशेष दे० 'सुंद'।

यौ०—सुंदोपसुंद न्याय = एक न्याय। दे० 'न्याय' शब्द के अंतर्गत १०५ वाँ न्याय।

सुंदरौदन—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दर + ओदन] अच्छा भात। अच्छी तरह पका हुआ चावल।

सुंधाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोंधा + आई (प्रत्य०)] दे० 'सुंधावट'।

सुंधावट—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्ध, हिं० सोंधा + आवट (प्रत्य०)] सोंधे होने का भाव। सोंधापन। सोंधी महक।

सुंधिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोंधा + इया (प्रत्य०)] १ एक प्रकार की

ज्वार। २ गुजरात में होनेवाली एक प्रकार की वनस्पति जो पशुओं के चारे के काम में आती है।

सुपलुठ—संज्ञा पुं० [सं० सुम्पलुण्ठ] कर्पूरक। कपूर कचरी।

सुबा—संज्ञा पुं० [देश०] १ इस्पंज। २ दागी हुई तोप या बंदूक की गरम नली को ठंढा करने के लिये उसपर डाला हुआ गीला कपड़ा। पुचारा। (लश०)। ३ तोप की नली साफ करने का गज। (लश०) ४ लोहे का एक औजार जिससे लोहार लोहे में सूराख करते हैं।

सुबी—संज्ञा स्त्री० [देश०] छेनी जिससे लोहे में छेद किया जाता है।

सुबुल—संज्ञा पुं० [फा० संबुल] १ एक सुगंधित घास। बालछड़। २. गेहूँ या जौ की बाल। ३ अलक। जुल्फ।

सुबुला—संज्ञा पुं० [अ० सुंबुलह्] १ गेहूँ की बाल। २ कन्या-राशि [को०]।

सुभ[१]Ⓟ—संज्ञा पुं० [सं० शुम्भ] दे० 'शुंभ'।

सुभ[२]—संज्ञा पुं० [सं० सुम्भ] दे० 'सुंभ'।

सुभा—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सुंबा'।

सुभी—संज्ञा स्त्री० [देश०] लोहा छेदने का एक औजार जिसमें नोक नहीं होती।

सुसारी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का लंबा काला कीड़ा जो अनाज के लिये हानिकारक होता है।

सु[१]—उप० [सं०] एक उपसर्ग जो संज्ञा के साथ लगकर विशेषण का काम देता है। जिस शब्द के साथ यह उपसर्ग लगता है, उसमें (१) अच्छा, बढ़िया, भला, श्रेष्ठ, जैसे, सुगंधित (२) सुंदर मनोहर, जैसे, सुकेशी, सुमध्यमा, (३) खूब, सर्वथा, पूरी तरह, ठीक प्रकार से, जैसे, सुजीर्ण, (४) आसानी से, सुभीते से, तुरत, जैसे,—सुकर, सुलभ, (५) अत्यधिक, बहुत अधिक, जैसे, सुदारुण सुदीर्घ आदि का भाव आ जाता है। जैसे—सुनाम, सुपथ, सुशील, सुवास आदि।

सु[२]—वि० १ सुंदर। अच्छा। २ उत्तम। श्रेष्ठ। समानयोग्य। ३ शुभ। भला।

सु[३]—संज्ञा पुं० १ उत्कर्ष। उन्नति। २ सुंदरता। खूबसूरती। हर्ष। आनंद। प्रसन्नता। ४ पूजा। ५ समृद्धि। ६ अनुमति। आज्ञा। ७ कष्ट। तकलीफ।

सुⓅ[४]—अव्य० [सं० सह] तृतीया, पंचमी और षष्ठी विभक्ति का चिह्न।

सु[५]—सर्व० [सं० स] सो। वह।

सुअंग—वि० [सं० सुअङ्ग] सुडौल शरीरवाला। सुगठित बदनवाला। सुंदर [को०]।

सुअⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सुत, प्रा० सुअ] दे० 'सुअन'।

सुअक्ष—वि० [सं०] १ अच्छे सुंदर नेत्रोंवाला। २ दृढांग। पुष्ट अंगोंवाला [को०]।

सुअटा†—संज्ञा पुं० [सं० शुक, प्रा० सुअ, हिं० सूआ + टा प्रत्य०] सुग्गा। शुक। तोता। उ०—सुअटा रहे खुरुक जिउ अबहिं काल सो भाव। सतु अहै जो करिया कबहूँ सो बोरै नाव।—(शब्द०)।

सुअनⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सुत, प्रा० सुअ] आत्मज। पुत्र। बेटा। लड़का। उ०—वह दिन धौं कब आइहै ह्वैहै सुअन बिवाह। निज नयनन हम देखिहैं हे विधि यह उत्साह।—स्वामी रामकृष्ण (शब्द०)।

सुअनजर्दⓅ—संज्ञा पुं० दे० [सुवर्ण, हिं० सोना + फा० जर्द] दे० 'सोनजर्द'। उ०—कोई सुअनजर्द ज्यों केसर। कोइ सिंगारहार नागेसर।—जायसी (शब्द०)।

सुअनाⓅ[१]—क्रि० अ० [सं० सवन (= प्रसव) अथवा हिं० उगना (= उत्पन्न होना) या हिं० सुअन] उत्पन्न होना। उगना। उदय होना। उ०—जैसो साँचो ग्यान प्रकाशत पाप दोष सब सुअत। धर्म बिराग आदि सतगुन से तनमन के सुख सुअत।—देवस्वामी (शब्द०)।

सुअना[२]—संज्ञा पुं० [सं० शुक] दे० 'सुअटा'।

सुअर—संज्ञा पुं० [सं० शूकर]। दे० 'सूअर'।

सुअरदंता†[१]—वि० [हिं० सुअर + दंता (= दाँतवाला)] सूअर के से दाँतोंवाला।

सुअरदंता[२]—संज्ञा पुं० एक प्रकार का हाथी जिसके दाँत पृथ्वी की ओर झुके रहते हैं। ऐसा हाथी ऐबी समझा जाता है।

सुअरगपताली†—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ग + पातालिका] वह बैल जिसका एक सींग स्वर्ग की ओर दूसरा पाताल की ओर अर्थात् एक आकाश की ओर और दूसरा जमीन की ओर रहता है।

सुअवसर—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छा अवसर। अच्छा मौका।

सुआ—संज्ञा पुं० [सं० शुक] दे० 'सूआ'।

सुआउⓅ—वि० [सं० सु + आयु] जिसकी आयु बड़ी हो। दीर्घायु। उ०—सुघन न सुमन सुआउ सो।—तुलसी (शब्द०)।

सुआद[१]—संज्ञा पुं० [हिं० अथवा सं० स्मरण या हिं० सु + फा० याद] स्मरण। याद।

सुआद[२]—संज्ञा पुं० [सं० स्वाद] दे० 'स्वाद'।

सुआनⓅ—संज्ञा पुं० [सं० श्वन्] दे० 'श्वान'। उ०—सुआन पूछ जिउ भयो न सूधउ बहुत जतन मैं कीनेउ।—तेगबहादुर (शब्द०)।

सुआना†—क्रि० स० [हिं० सूना का प्रेर० रूप] उत्पन्न कराना। पैदा कराना। सूने में प्रवृत्त करना।

सुआमीⓅ—संज्ञा पुं० [सं० स्वामी] दे० 'स्वामी'। उ०—भुगत मुकति का कारन सुआमी मूढ़ ताहि बिसरावै। जन नानक कोटन मैं कोऊ भजन राम को पावै।—तेगबहादुर (शब्द०)।

सुआरⓅ‡—संज्ञा पुं० [सं० सूपकार] रसोइया। भोजन बनानेवाला। पाककार। उ०—(क) परुसन लगे सुआर सुजाना।—मानस १,३२९। (ख) परुसन लगे सुआर बिबुध जन जेवहिं। देहिं गारि बरनारि मोद मन भेवहिं।—तुलसी (शब्द०)।

सुआरव(पु)—वि० [सं० सु+आरव (=शब्द, आवाज)] उत्तम शब्द करनेवाला। मीठे स्वर से बोलने या बजनेवाला। उ०—नाना सुआरव जतरी नट चेटकी ज्वारी जिते। तेली तमोली रजक सूची चित्रकारक पुर तिते।]रामाश्वमेध (शब्द०)।

सुआसन—संज्ञा पु० [सं०] बैठने का सुंदर आसन या पीढा।

सुआसिन†—संज्ञा स्त्री० [सं० सुवासिनी] दे० 'सुआसिनी'।

सुआसिनी†(पु)[1] -संज्ञा स्त्री० [सं० सुवासिनी ?] स्त्री, विशेषत आस पास मे रहनेवाली औरत। उ०—(क) विप्र वधू सनमानि सुआसिनि जव पुरजन वहिराइ। सनमाने अवनीस असीसत ईसुर मे समनाइ।—तुलसी (शब्द०)। (ख) देव पितर गुर विप्र पूजि नृप दिए दान रचि जानी। मुनि बनिता पुरनारि सुआसिनि सहस भाँति सनपाइ अघाइ असीसत निकसत जाचक जग भए दानी।—तुलसी (शब्द०)।

सुआसिनी(पु)[2]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुहागिन] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। सौभाग्यवती स्त्री।

सुआहित—संज्ञा पुं० [सं० सु+आहत ?] तलवार के ३२ हाथों मे से एक हाथ। उ०—तिमि सव्य जानु विजानु सकोचित सुआहित चित्र को। धृत लवन कुद्रव छिप्र सव्येतर तथा उत्तरत को। —रघुराज (शब्द०)।

सुइया†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूआ] एक प्रकार की चिडिया।

सुई—संज्ञा स्त्री० [सं० सूची] दे० 'सूई'।

सुककवत्—संज्ञा पु० [सं० सुकङ्कवत्] एक पर्वत का नाम जो मार्कंडेय पुराण के अनुसार मेरु के दक्षिण मे है।

सुकटका—संज्ञा स्त्री० [सं० सुकण्टका] १ घृतकुमारी। घीकुआर। गुआरपाठा। २ पिंडखजूर।

सुकठ[1]—वि० [सं० सुकण्ठ] १. जिसका कठ सुदर हो। २. जिसका स्वर मीठा हो। सुरीला। उ०—द्वारे ठाढे है द्विज बावन। चारौ वेद पढत मुख आगर अति सुकठ सुर गावन। सूर०, ८।१३।

सुकठ[2]—संज्ञा पु० रामचद्र के सखा, सुग्रीव। उ०—वालि से बीर विदारि सुकठ थप्यौ हरखे सुर बाजन बाजे। पल मे दल्यौ दासरथी दसकधर लक विभीषण राज विराजे।—तुलसी (शब्द०)।

सुकठी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुकण्ठी] मादा कोयल [को०]।

सुकडु—संज्ञा पुं० [सं० सुकण्डु] कडु रोग। खाज। खुजली [को०]।

सुकद—संज्ञा पु० [सं० सुकन्द] १. कसेरू। २. पलाडु। प्याज (को०)। ३ आलू, कचालू, शकरकद आदि कद (को०)।

सुकदक—संज्ञा पु० [सं० सुकन्दक] १ वाराहीकद। भिर्वोली कद। गेंठी। २ प्याज। ३. महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश का नाम। ४ इस देश का निवासी।

सुकदकरण—संज्ञा पुं० [सं० सुकन्दकरण] प्याज। श्वेत पलाडु।

सुकदन—संज्ञा पुं० [सं० सुकन्दन] १ वैजयती तुलसी। २ वर्वरक। बबई तुलसी।

सुकदा—संज्ञा स्त्री० [सं० सुकन्दा] १ लक्ष्मणाकंद। पुत्रदा। २ वध्या कर्कोटकी। बाँझककोडा।

सुकदी—संज्ञा पुं० [सं० सुकन्दिन्] सूरन। जमीकद।

सुक[1]—संज्ञा पु० [सं० शुक] १ तोता। शुक। करी। सुग्गा। २ व्यासपुत्र। शुकदेव मुनि। ३ एक राक्षस जो रावण का दूत था।

सुक[2]—संज्ञा पु० [सं० सुकटु] शिरीष वृक्ष। सिरस का पेड।

सुकक्ष—संज्ञा पु० [सं०] अगिरा वश मे उत्पन्न एक ऋषि जो ऋग्वेद के कई मत्रो के द्रष्टा थे।

सुकचण†—संज्ञा पु० [सं० सङ्कुचन] लज्जा। सकोच (डिं०)।

सुकचाना(पु)—क्रि० अ० [हिं० सकुच] दे० 'सकुचाना'।

सुकटि—वि० [सं०] अच्छी कमरवाली। जिसकी कमर सुदर हो।

सुकटु[1]—संज्ञा पुं० [सं०] शिरीष वृक्ष। सिरस का पेड।

सुकटु[2]—वि० अत्यत कटु। वहुत कडुआ।

सुकडना—क्रि० अ० [सं० सङ्कुचन] दे० 'सिकुडना'।

सुकदेव—संज्ञा पुं० [सं० शुकदेव] व्यास जी के पुत्र। दे० 'शुकदेव'।

सुकना†[1]—संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का धान जो भादो महीने के अत और आश्विन के आरभ मे होता है।

सुकना(पु)[2]—क्रि० अ० [सं० शुष्क, प्रा० सुक्क+हिं० ना (प्रत्य०)] शुष्क होना। सूखना। उ०—चलत पवन पावक समान परसत सुताप मन। सुकत सरोवर मचत कीच तलफत मीन तन।—पृ० रा०, ६१।१७।

सुकनासा(पु)—वि० [सं० शुक+नासिका] जिसकी नाक शुक पक्षी के ठोर के समान हो। सुदर नाकवाला।

सुकन्यक—वि० [सं०] जिसकी कन्या सुदर हो [को०]।

सुकन्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शर्याति राजा की कन्या और च्यवन ऋषि की पत्नी। २ शोभन कन्या। सुदरी कन्या (को०)।

सुकन्याक—वि० [सं०] दे० 'सुकन्यक' [को०]।

सुकपर्दा—वि० [सं०] (वह स्त्री) जिसने उत्तमता से केश बाँधे हो। जिसने उत्तमता से चोटी की हो।

सुकपिच्छक—संज्ञा पुं० [डिं०] गधक।

सुकबि(पु)—संज्ञा पु० [सं० सुकवि] उत्तम काव्यकर्ता कवि। श्रेष्ठ कवि। उ०—या छवि की पटतर दीवे को सुकवि कहा टकटोहै।—सूर०, १०।१५८।

सुकमार†—वि० [सं० सुकुमार] दे० 'सुकुमार'।

सुकमारता†—संज्ञा स्त्री० [सं० सुकुमारता] दे० 'सुकुमारता'।

सुकर[1]—वि० [सं०] १ जो अनायास किया जा सके। सहज मे होनेवाला। सुसाध्य। २ जिसका प्रवध या व्यवस्था आसानी से की जा सके (को०)।

सुकर[2]—संज्ञा पुं० १ सरलता से वश मे होनेवाला घोडा। सीधा घोडा। २ दान। उदारता। परोपकारिता [को०]।

सुकरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुकर का भाव। सहज मे होने का

भाव। सुकरत्व। सौकर्य। २ सुंदरता। उ०—जहाँ क्रिया की सुकरता बरणत काज विरोध। तहाँ कहत व्याघात है औरो बुद्धि विबोध।—मतिराम (शब्द०)।

सुकरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुशील गाय। अच्छी और सीधी गौ।

सुकरात—संज्ञा पुं० [ग्र०] यूनान का एक प्रसिद्ध दार्शनिक जिसका शिष्य प्लेटो (अफलातून) था।

सुकराना—संज्ञा पुं० [फा० शुक्रानह्] दे० 'शुकराना'। उ०—अगन अन्यारे जे भरे अति ही मदन मजेज। दरो तुव दृग बाग्धें रव सुकराना भेज।—रतनहजारा (शब्द०)।

सुकरित—वि० [सं० सुकृत] शुभ। सत। अच्छा। भला। उ०—सुकरित मारग चालना बुरा न कबहूँ होइ। अम्रित खात परानिया मुआ न सुनिआ कोइ।—दादू (शब्द०)।

सुकरीहार—संज्ञा पुं० [सुकरी ? + हिं० हार] गले में पहनने का एक प्रकार का हार।

सुकर्णक¹—संज्ञा पुं० [सं०] हस्तीकंद। हाथीकंद।

सुकर्णक²—वि० जिसके कान सुंदर हों। अच्छे कानोंवाला।

सुकर्णिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] मूषाकर्णी। मूसाकानी नाम की लता। २ महाबला।

सुकर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्रवारुणी। इंद्रायन।

सुकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ अच्छा काम। सत्कर्म। २. देवताओं की एक श्रेणी या कोटि।

सुकर्मा¹—संज्ञा पुं० [सं० सुकर्मन्] १ विष्कंभ आदि सत्ताईस योगों में से सातवाँ योग।

विशेष—ज्योतिष में यह योग सब प्रकार के कार्यों के लिये शुभ माना गया है और कहा गया है कि जो बालक इस योग में जन्म लेता है, वह परोपकारी, कलाकुशल, यशस्वी, सत्कर्म करनेवाला और सदा प्रसन्न रहनेवाला होता है।

२ उत्तम कर्म करनेवाला मनुष्य। ३ विश्वकर्मा। ४ विश्वामित्र।

सुकर्मा²—वि० १ सत्कार्य करनेवाला। सुकर्मी। पुण्यात्मा। २ सक्रिय। कार्यकुशल (को०)।

सुकर्मी—वि० [सं० सुकर्मिन्] १ अच्छा काम करनेवाला। २ धार्मिक। पुण्यवान्। ३ सदाचारी।

सुकल¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो अपनी संपत्ति का उपयोग दान और भोग में करता है। दाता और भोक्ता। २ मधुर, पर अस्फुट शब्द करनेवाला।

सुकल²—संज्ञा पुं० [सं० शुक्ल] दे० 'शुक्ल'। उ०—दिन दिन बढ़ै बढ़ाइ अनंदा। जैसे सुकल पच्छ को चंदा।—लाल कवि (शब्द०)।

यौ०—सुकलपच्छ = दे० 'शुक्ल पक्ष'। उ०—नौमी तिथि मधुमास पुनीता। सुकलपच्छ अभिजित हरि प्रीता।—मानस, १।१९१।

सुकल³—संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का आम जो सावन के अंत में होता है।

सुकलिल—वि० [सं०] भली भाँति भरा हुआ (को०)।

सुकल्प—वि० [सं०] अत्यंत गुणी या योग्य। अत्यंत कुशल या निपुण (को०)।

सुकल्पित—वि० [सं०] सज्जित या सुसज्जित। शस्त्रसज्ज (को०)।

सुकल्य—वि० [सं०] पूर्ण स्वस्थ। उत्तम (को०)।

सुकसाना—क्रि० अ० [?] डराने में आना। आश्चर्यान्वित होना। उ०—पग्गे चाका सर नसै, थिर भाव नहिं पाय। निरखानहु अति तीर नकि सीन्हें सुकसाय।—रामसहाय (शब्द०)।

सुकवि—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छा कवि। सत्कवि। उत्तम काव्यकर्ता।

सुकष्ट—वि० [सं०] १ अति कष्टकर। २ (रोग आदि) जो कष्टसाध्य हो (को०)।

सुकांड¹—संज्ञा पुं० [सं० सुकाण्ड] करेले की लता।

सुकांड²—वि० सुंदर नाल, तने या डालवाला।

सुकांडिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सुकाण्डिका] करेले की लता।

सुकांडी¹—संज्ञा पुं० [सं० सुकाण्डिन्] भ्रमर। भौंरा।

सुकांडी²—वि० १ सुंदर कांड या डालवाला। २ सुंदर ढंग से सज्जित या जुड़ा हुआ (को०)।

सुकांत—वि० [सं० सुकान्त] अत्यंत सुंदर। अति सुंदर (को०)।

सुकाज—संज्ञा पुं० [सं० सु + हिं० काज] उत्तम कार्य। अच्छा काम। सुकाम।

सुकातिज—संज्ञा पुं० [सं० शुक्तिज] मोती। (डिं०)।

सुकाना—क्रि० स० [सं० शुष्क प्रा० सुक्क, पुं०हिं० सुकना] दे० 'सुखाना'।

सुकानी—संज्ञा पुं० [अ० सुक्कानी] माँझी। दे० 'सुक्कानी'। (डिं०)।

सुकाम—वि० [सं०] उत्तम कामनावाला (को०)।

सुकामद—वि० [सं०] कामना पूर्ण करनेवाला (को०)।

सुकामव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] वह व्रत जो किसी उत्तम कामना से किया जाता है। काम्यव्रत।

सुकामा—संज्ञा स्त्री० [सं०] त्रायमाणा लता। त्रायमान।

सुकार¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुकारा] १ सहज साध्य। सहज में होनेवाला। २ सहज में वश में आनेवाला (घोड़ा या गाय आदि)। ३ सहज में प्राप्त होनेवाला।

सुकार²—संज्ञा पुं० १ अच्छे स्वभाव का घोड़ा। २ कुंकुम शालि।

सुकाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुसमय। उत्तम समय। २ वह समय जो अन्न आदि की उपज के विचार से अच्छा हो। अकाल का उलटा।

सुकालिन—संज्ञा पुं० [सं०] पितरों का एक गण। मनु के अनुसार ये शूद्रों के पितर माने जाते हैं।

सुकाली—संज्ञा पुं० [सं० सुकालिन्] दे० 'सुकालिन'।

सुकालुका—संज्ञा स्त्री० [सं०] भटकटैया।

सुकावना—क्रि० स० [सं० शुष्क, हिं० सुखाना] दे० 'सुखाना'।

उ०—भूमि भार दीवे को कि सुर ढाँप लीवे को, समुद्र कीच कीवे को कि पान कँ सुकावनो ।—हनुमन्नाटक (शब्द०) ।

**सुकाशन**—वि० [सं०] अत्यंत दीप्तिमान् । बहुत प्रकाशमान् । बहुत चमकीला ।

**सुकाष्ठ**—संज्ञा पुं० [सं०] १ जलावन की लकडी । २ अच्छी लकडी ।

**सुकाष्ठक**—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवदारु । २ वृक्ष आदि जिसमे काष्ठ अच्छा हो ।

**सुकाष्ठा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कुटकी । २ काष्ठ कदली । वन-कदली । कठकेला ।

**सुकिज**(पु)—संज्ञा पुं० [सं०] शुभ कर्म । उत्तम कार्य । उ०—सोचत हानि मानि मन गुनि गुनि गए निघटि फल सकल सुकिज को । —तुलसी (शब्द०) ।

**सुकिया**(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वकीया] वह स्त्री जो अपने ही पति मे अनुराग रखती हो । स्वकीया नायिका । उ०—ता नायक की नायिका ग्रथनि तीनि बखान । सुकिया परकीया अवर सामान्या सुप्रमान ।—केशव (शब्द०) ।

**सुकी**—संज्ञा स्त्री० [सं० शुक] तोते की मादा । सुग्गी । सारिका । तोती । उ०—कूजत हैं कलहस कपोत सुकी सुक सोर करैं सुनि ताहू । नेकहू क्यो न लला सकुचौ जिय जागत हे गुरु लोग लजाहू ।—देव (शब्द०) ।

**सुकीउ**(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वकीया] अपने ही पति मे अनुराग रखनेवाली स्त्री । स्वकीया नायिका । उ०—याही के निहोरे भूँठे साँचे राम मारे बाली लोग कहत तीय लै दई सुकीउ है । सुन्यो जाको नाँव मेरो देश देश गाँव सव शाखामृग राउर विमूरति सुग्रीउ है ।—हनुमन्नाटक (शब्द०) ।

**सुकीरति**(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सुकीर्ति] सुकीर्ति । सुयश । उ०—राम सुकीरति भनिति भदेसा । असमंजस अस मोहि अँदेसा ।—मानस, १।१४ ।

**सुकीर्ति**[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम कीर्ति । सुयश ।

**सुकीर्ति**[2]—वि० उत्तम कीर्तियुक्त । यशस्वी ।

**सुकुंडल, सुकुंतल**—संज्ञा पुं० [सं० सुकुण्डल सुकुन्तल] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।

**सुकुंद**—संज्ञा पुं० [सं० सुकुन्द] राल । धूना ।

**सुकुंदक**—संज्ञा पुं० [सं० सुकुन्दक] प्याज ।

**सुकुंदन**—संज्ञा पुं० [सं० सुकुन्दन] वर्बरी । ववई तुलसी ।

**सुकुआर**—वि० [सं० सुकुमार, वि० सुकुआरी] सुकुमार । उ०—इह न होइ जैसे माखन चोरी । तव वह मुख पहचानि मानि सुख देती जान हानि हुति छोरी । उन दिननि सुकुआर हते हरि हौं जानत अपनो मन मोरी ।—सूर (शब्द०) ।

**सुकुट्ट, सुकुट्य**—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम ।

**सुकुडना**—क्रि० अ० [सं० सङ्कुचन] दे० 'सिकुडना' ।

**सुकुति**†(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ति] सीप । शुक्ति । उ०—पूरन परमानद वही अहिवदन हलाहल । कदलीगत घनसार सुकुति महँ मुक्ता कोलाहल ।—सुधाकर (शब्द०) ।

**सुकुमार**[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुकुमारी] १ जिसके अंग बहुत कोमल हो । अति कोमल । नाजुक । २ सौंदर्ययुक्त । तरुण (को०) ।

**सुकुमार**[2]—संज्ञा पुं० १ कोमलांग बालक । नाजुक लडका । २ ऊख । ईख । ३ वनचंपा । ४ अपामार्ग । लटजीरा । ५ साँवाँ धान । ६ कँगनी । ७ एक दैत्य का नाम । ८ एक नाग का नाम । ९ काव्य का एक गुण ।

विशेष—जो काव्य कोमल अक्षरो या शब्दो से युक्त होता है, वह सुकुमार-गुण-विशिष्ट कहलाता है ।

१० तवाकू का पत्ता । ११ वैद्यक मे एक प्रकार का मोदक ।

विशेष—यह मोदक निसोथ, चीनी, शहद, इलायची और काली मिर्च के योग से वनता है और विरेचक तथा रक्तपित्त और वायु रोगो का नाशक माना जाता है ।

**सुकुमारक**—संज्ञा पुं० [सं०] १ तवाकू का पत्ता । २ तेजपत्र । तेजपत्ता । ३ साँवा धान । ४ सुंदर बालक । ५ कान का एक विशेष अंश (को०) । ६ दे० 'सुकुवार'—२ । ७ जाववान् के एक पुत्र का नाम ।

**सुकुमारता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुकुमार होने का भाव या धर्म । कोमलता । सौकुमार्य । नजाकत ।

**सुकुमारत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुकुमारता' ।

**सुकुमारवन**—संज्ञा पुं० [सं०] एक कल्पित वन जो भागवत के अनुसार मेरु के नीचे है । कहते हैं इसमे भगवान् शंकर भगवती पार्वती के साथ क्रीडा किया करते हैं ।

**सुकुमारा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जूही । २ नवमल्लिका । ३ कदली । केला । ४ स्पृक्का । ५ एक नदी का नाम (को०) । ६ मालती ।

**सुकुमारिक**—वि० [सं०] जिसकी कन्या सुंदर हो (को०) ।

**सुकुमारिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] केले का पेड ।

**सुकुमारी**[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नवमल्लिका । चमेली । २ शखिनी नाम की ओषधि । ३ वनमल्लिका । ४ एक प्रकार की फली । जैसे—मूँग आदि की । ५ वडा करेला । ६ ऊख । ७ कदली वृक्ष । केले का पेड । ८ त्रिसंधि नामक फूलदार पेड । ९ स्पृक्का नामक गंधद्रव्य । १० सुकुमार कन्या । ११ लडकी । वेटी ।

**सुकुमारी**[2]—वि० कोमल अंगोवाली । कोमलांगी ।

**सुकुरना**(पु)†—क्रि० अ० [सं० सङ्कुचन] दे० 'सिकुडना' । उ०—मुकुर विलोक्यो लाल रहे क्यो धुकुरपुकुर है । नरमाने ट्टो कहा रहे क्यो अग सुकुर कै ।—अविकादत्त व्यास (शब्द०) ।

**सुकुर्कुर**—संज्ञा पुं० [सं०] वालको का एक प्रकार का रोग जिसकी गणना वालग्रहो मे होती है ।

सुकेशी[1]--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उत्तम केशोवाली स्त्री। वह स्त्री जिसके बाल बहुत सुंदर हो। २ महाभारत के अनुसार एक अप्सरा का नाम।

सुकेशी[2]--संज्ञा पुं० [सं० सुकेशिन्] [वि० स्त्री० सुकेशिनी] वह जिसके बाल बहुत सुंदर हों।

सुकेसर--संज्ञा पुं० [सं०] १ सिंह। शेर। २ दे० 'सुकेशर'।

सुकोली--संज्ञा स्त्री० [सं०] क्षीर काकोली नामक कंद। पयस्का। पयस्विनी।

सुकोशक--संज्ञा पुं० [सं०] एक वृक्ष। दे० कोशम।

सुकोशला--संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नगरी का नाम।

सुकोशा--संज्ञा स्त्री० [सं०] कोशातकी। तुरई। तरोई।

सुक्कडि--संज्ञा पुं० [सं० श्रीखण्ड, प्रा० सिरिखंड, गुज० सुखड] एक प्रकार का सूखा चंदन।

विशेष--वैद्यक मे यह चंदन मूत्रकृच्छ्र, पित्तरक्त और दाह को दूर करनेवाला तथा शीतल और सुगंधिदायक बताया गया है।

सुक्कान[1]--संज्ञा पुं० [अ० ?] पतवार (जहाज की)। (लश०)।

मुहा०--सुक्कान पकडना या मारना = जहाज चलाना। (लश०)।

सुक्कान[2]--संज्ञा पुं० [अ० साकिन का बहु व०] निवासी लोग। रहनेवाले लोग।

सुक्कानी--संज्ञा पुं० [अ० मल्लाह] माझी। (लश०)।

सुक्ख(पु)--संज्ञा पुं० [सं० सुख] दे० 'सुख'। उ०--जे जन भीजैं रामरस विकसित कबहुँ न रुक्ख। अनुभव भाव न दरसैं ते नर सुक्ख न दुक्ख।--कबीर (शब्द०)।

सुक्त--संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल की एक प्रकार की काँजी जो पानी मे घी या तेल, नमक और कंद या फल आदि गलाकर बनाई जाती थी।

विशेष--वैद्यक मे इसे रक्तपित्त और कफनाशक, बहुत उष्ण, तीक्ष्ण, रुचिकर, दीपन, और कृमिनाशक माना है।

सुक्ता--संज्ञा स्त्री० [सं०] इमली।

सुक्ति[1]--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन पर्वत का नाम।

सुक्ति[2]--संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ति] दे० 'शुक्ति'।

सुक्र[1]--संज्ञा पुं० [सं० शुक्र] दे० 'शुक्र'।

सुक्र[2]--संज्ञा पुं० अग्नि। (डिं०)।

सुक्रतु[1]--वि० [सं०] उत्तम कर्म करनेवाला। सत्कर्म करनेवाला।

सुक्रतु[2]--संज्ञा पुं० १ अग्नि। २ शिव। ३ इंद्र। ४ मित्रावरुण। ५ सूर्य। ६ चंद्र। सोम [को०]।

सुक्रतूया--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शुभ कर्म करने की इच्छा। २ प्रज्ञा। बुद्धि (को०)। ३ दक्षता। पाटव (को०)।

सुक्रय--संज्ञा पुं० [सं०] अच्छी खरीद। अच्छा या लाभकर सौदा [को०]।

सुक्रित(पु)--संज्ञा पुं० [सं० सुकृत] दे० 'सुकृत'। उ०--कहहि सुमति सब कोय सुक्रित मत जनम क जागै। तौ तुरतहिं सिलि जायँ सात रिखि सो मत भागैं।--सुधाकर (शब्द०)।



सुक्रीडा--संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम।

सुक्ल(पु)--वि० [सं० शुक्ल] दे० 'शुक्ल'। उ०--उनइस तेतालीस को संवत माघ सुमास। सुक्ल पंचमी को भयो सुकवि लेख परकास।--अंबिकादत्त व्यास (शब्द०)।

सुक्षत्र[1]--वि० [सं०] १ अत्यंत धनशाली। २ सुराज्यशाली। ३ शक्तिशाली। बलवान्। दृढ।

सुक्षत्र[2]--संज्ञा पुं० निरमित्र के पुत्र का नाम।

सुक्षद--संज्ञा पुं० [सं०] सुंदर यज्ञशाला। बढिया यज्ञमंडप।

सुक्षम(पु)†--वि० [सं० सूक्ष्म] दे० 'सूक्ष्म'। उ०--कारण सुक्षम तीन देह धरि भक्ति हेत तृण तोरी। धर्मनि निरखि परखि गुरु मूरति जाहि के काज बनो री।--कबीर (शब्द०)।

सुक्षिति--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुंदर निवास स्थान। २ वह जो सुंदर स्थान मे रहता हो। ३ वह जिसे यथेष्ट पुत्र पौत्रादि हों। धन धान्य और संतान आदि से सुखी।

सुक्षेत्र[1]--संज्ञा पुं० [सं०] १ मार्कंडेय पुराण के अनुसार दसवें मनु के पुत्र का नाम। २ वह घर जिसके दक्षिण, पश्चिम और उत्तर की ओर दीवारें या मकान आदि हों। पूर्व ओर से खुला हुआ मकान जो बहुत शुभ माना जाता है।

सुक्षेत्र[2]--वि० [सं०] उत्तम क्षेत्र या कुक्षि से उत्पन्न [को०]।

सुक्षेम[1] संज्ञा पुं० [सं०] अतिशय समृद्धि। अत्यंत सुख शांति [को०]।

सुक्षेम[2]--संज्ञा पुं० [सं० सुक्षेमन्] जल [को०]।

सुखंकर--वि० [सं० सुखङ्कर] सुखकर। सुकर। सहज।

सुखंकरी--संज्ञा स्त्री० [सं० सुखङ्करी] जीवती। डोडी। विशेष दे० 'जीवती'।

सुखंघुण--संज्ञा पुं० [सं० सुखङ्घुण] शिव का अस्त्र। शिवपट्वांग।

सुखंडरा--संज्ञा पुं० [देश०] वैश्यों की एक जाति।

सुखंडी[1]--संज्ञा स्त्री० [हिं० सूखना + डी (प्रत्य०)] एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर सूखकर काँटा हो जाता है। यह रोग बच्चों को बहुत होता है।

सुखंडी[2]--वि० बहुत दुबला पतला।

सुखंद(पु)--वि० [सं० सुखद] सुखदायी। आनंददायक। उ०--धनगन बेली बनवदन सुमन सुरति मकरंद। सुंदर नायक श्रीरवन दच्छिन पवन सुखंद।--रामसहाय (शब्द०)।

सुख[1]--संज्ञा पुं० [सं०] १ मन की वह उत्तम तथा प्रिय अनुभूति जिसके द्वारा अनुभव करनेवाले का विशेष समाधान और संतोष होता है और जिसके बराबर बने रहने की वह कामना करता है। वह अनुकूल और प्रिय वेदना जिसकी सबको अभिलाषा रहती है। दुःख का उलटा। आराम। जैसे,--(क) वे अपने बाल बच्चों मे बड़े सुख से रहते हैं। (ख) जहाँ तक हो सके सबको सुख पहुँचाने का प्रयत्न करना चाहिए।

विशेष--कुछ लोग सुख को हर्ष का पर्यायवाची समझते हैं, पर दोनो मे अंतर है। कोई उत्तम समाचार सुनने अथवा कोई उत्तम पदार्थ प्राप्त करने पर मन मे सहसा जो वृत्ति उत्पन्न होती है, वह हर्ष है। परंतु सुख इस प्रकार आकस्मिक नहीं

होता, और हर्ष की अपेक्षा अधिक स्थायी होता है। अनेक प्रकार की चिंताओं, कष्टों आदि से निरतर बचे रहने पर और अनेक प्रकार की वासनाओं आदि की तृप्ति होने पर मन मे जो प्रिय अनुभूति होती है, वह सुख है। हमारे यहाँ कुछ लोगो ने सुख को मन का और कुछ लोगो ने आत्मा का धर्म माना है। न्याय और वैशेपिक के अनुसार सुख आत्मा का एक गुण है। यह सुख दो प्रकार का कहा गया है—(१) नित्य सुख जो परमात्मा के विशेष सुख के अतर्गत है और (२) जन्य सुख जो जीवात्मा के विशेष सुख के अतर्गत है। यह धन या मित्र की प्राप्ति, आरोग्य और भोग आदि से उत्पन्न होता है। सास्य और पातजल के मत से सुख प्रकृति का धर्म है और इसकी उत्पत्ति सत्य से होती है। गीता मे सुख तीन प्रकार का कहा गया है—(१) सात्विक जो ज्ञान, वैराग्य और ध्यान आदि के द्वारा प्राप्त होता है। (२) राजसिक जो विषय तथा इद्रियो के सयोग से उत्पन्न होता है। (जैसे सगीत सुनने, सुदर रूप देखने, स्वादिष्ट भोजन करने और सभोग आदि से होता है।) और (३) तामस जो आलस्य और उन्माद आदि के कारण उत्पन्न होता है।

पर्या०—प्रीति। मोद। आमोद। प्रमोद। आनद। हर्ष। सौख्य।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—भोगना।—मिलना।

मुहा०—सुख मानना = परिस्थिति आदि की अनुकूलता के कारण ठीक अवस्था मे रहना। जैसे,—यह पेड सभी प्रकार की जमीनो मे सुख मानता है। सुख लूटना = यथेष्ट सुख का भोग करना। मौज करना। आनद करना। सुख की नीद सोना = निश्चित होकर आनद से सोना या रहना। खूब मजे मे समय बिताना।

२ एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे ८ सगण और २ लघु होते हैं। ३ आरोग्य। तदुरुस्ती। ४ स्वर्ग। ५ जल। पानी। ६ वृद्धि नाम की अष्टवर्गीय ओषधि। ७ समृद्धि (को०)। ८ आसानी। सुभीता। सहूलियत (को०)। ९. कल्याण। शुभ। १० अभ्युन्नति। वृद्धि। बढती।

**सुख²**—वि० [सं०] १ स्वाभाविक। सहज। उ०—जाके सुख मुखबास ते वासित होत दिगत।—केशव (शब्द०)। २ सुख देनेवाला। सुखद। ३ प्रसन्न। खुश (को०)। ४ रुचिकर। मधुर (को०)। ५ सद्गुणी। पुण्यात्मा (को०)। ६ योग्य। उपयुक्त (को०)।

**सुख³**—क्रि० वि० १ स्वाभाविक रीति से। साधारण रीति से। उ०—कहुँ द्विज गण मिलि सुख श्रुति पटही।—केशव (शब्द०)। २ शातिपूर्वक। यथेच्छया। सुखपूर्वक। आराम से। ३ प्रसन्नता या हर्ष के साथ (को०)। ४ सरलता से। आसानी से (को०)।

**सुखआसन**Ⓟ—सज्ञा पु० [सं० सुख + आसन] सुखपाल। पालकी। डोली। उ०—चढि सुखआसन नृपति सिधायो। तहाँ कहार एक दुख पायो।—सूर (शब्द०)।

**सुखकद**—वि० [स० सुख + कन्द] सुखमूल। सुख देनेवाला। आनद देनेवाला। उ०—अहो पवित्र प्रभाव यह रूप नयन सुखकद। रामायन रचि मुनि दियो बानिहिं परम अनद।—सीताराम (शब्द०)।

**सुखकंदन**Ⓟ—वि० [स० सुख + कन्दन] दे० 'सुखकद'। उ०—श्री वृषभानु सुता दुलही दिन जोरी बनी विधना सुखकदन। रसखानि न आवत मो पै कह्यो कछु दोउ फंदे छबि प्रेम के फदन।—रसखान (शब्द०)।

**सुखकदर**Ⓟ—वि० [स० सुख + कन्दर] सुख का घर। सुख का आकर। उ०—सुदर नद महर के मदिर प्रगट्यो पूत सकल सुखकदर।—सूर (शब्द०)।

**सुखक**Ⓟ†—वि० [स० शुष्क, हिं० सूखा] सूखा। शुष्क। उ०—सुखक वृक्ष एक जक्त उपाया। समुझि न परी विषय कछु माया।—कबीर (शब्द०)।

**सुखकर**—वि० [स०] १ सुख देनेवाला। सुखद। २ जो सहज में सुख से किया जाय। सुकर। ३ सुखद या हलके हाथवाला। उ०—परम निपुण सुखकर वर नापित लीन्ह्यो तुरत बुलाई। क्रम सो चारि कुमारन को नृप दिय मुडन करवाई।—रघुराज (शब्द०)।

**सुखकरण**—वि० [स० सुख + करण] सुख उत्पन्न करनेवाला। आनद देनेवाला। उ०—सब सुखकरण हरण दुख भारी। जपैं जाहि शिव शैलकुमारी।—विश्राम (शब्द०)।

**सुखकरन**Ⓟ—वि० [सं० सुख + करण] दे० 'सुखकरण'। उ०—सुखकरन सब ते परम करवर वेनु बरकर धरत हैं। सुर मधुर तान बँधान तें प्रभु मनहुँ को मन हरत है।—गिरधरदास (शब्द०)।

**सुखकार, सुखकारक**—वि० [सं०] सुखदायक। सुख देनेवाला। आनददायक।

**सुखकारी**—वि० [सं० सुखकारिन्] सुख देनेवाला। आनददायक।

**सुखकृत्**—वि० [स०] १ जो सुख या आराम से किया जाय। सुकर। सहज। २ सुख करनेवाला। सुखद (को०)।

**सुखक्रिया**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सुख से किया जानेवाला काम। सहज काम। २. वह काम जिसे करने से सुख हो। आराम देनेवाला काम। ३ आराम या सुख देना।

**सुखगध**—वि० [स० सुखगन्ध] जिसकी गध आनद देनेवाली हो। सुगधित।

**सुखग**—वि० [स०] सुख से जानेवाला। आराम से चलने या गमन करनेवाला।

**सुखगम**—वि० [स०] १ सरल। सुगम। सहज। २ दे० 'सुखगम्य'।

**सुखगम्य**—वि० [सं०] सुख से जाने योग्य। आराम से जाने योग्य। २ जिसमे सुखपूर्वक गमन किया जा सके।

**सुखग्राह्य**—वि० [स०] १. सुख से ग्रहण करने योग्य। जो सहज मे लिया जा सके। २ सुखबोध्य। सुबोध।

**सुखघात्य**—वि० [स०] जिसका घात या हनन सरलता से किया जा सके।

**सुखचर**—वि० [स०] सुख से चलनेवाला। आराम से चलनेवाला।

**सुखचार**—सज्ञा पुं० [स०] उत्तम घोडा। बढ़िया घोडा।

सुखच्छाय—वि० [स०] शीतल छाया देनेवाला। सुखद छायावाला।

सुखच्छेद्य—वि० [स०] सरलता से छेदने या काटने योग्य।

सुखजनक—वि० [स०] सुखदायक। आनददायक। सुखद।

सुखजननि(पु), सुखजननी—वि० [स०] सुख उपजानेवाली। सुख देनेवाली। उ०—मदन जीविका सुखजननि मनमोहनी विलास। निपट कृपाणी कपट की रति शोभा मुखवास। —केशव (शब्द०)।

सुखजात—वि० [स०] १ सुखी। प्रसन्न २. जो सुख से जात या उत्पन्न हो।

सुखज्ञ—वि० [स० सुख + ज्ञ] सुख का जाननेवाला। सुख का ज्ञाता। उ०—जागरत भाखि सुप्त सुखमाभिलाख जे सुखज्ञ सुखभापी ह्वै तुरीयमय माने हैं। गुणत्रय भेद के अवस्था त्रय खेदहू के लच्छन के लच्छ ते विलच्छन वखाने है।—चरणचद्रिका (शब्द०)।

सुखड़ैना—सज्ञा पु० [हिं० सूखना + डैना (प्रत्य०)] वैलो का एक प्रकार का रोग जो उनका तालू खुल या फूट जाने से होता है। इसमे वैल खाना पीना छोड देता है जिससे वह वहुत दुवला हो जाता है।

सुखढरन(पु)—वि० [स० सुख + हिं० ढलना] सुख देनेवाला। सुखदायक। उ०—सज्जन सुखढरन भक्तजन कठाभरन।—सरस्वती (शब्द०)।

सुखतला, सुखतल्ला—सज्ञा पु० [हिं० सुखतला] चमडे का वह टुकडा जो जूते के भीतर चिपकाया जाता है जिससे तलवे को आराम मिले।

सुखता—सज्ञा स्त्री० [स०] सुख का भाव या धर्म। सुखत्व।

सुखत्व—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सुखता'।

सुखथर(पु)†—सज्ञा पु० [स० सुख + स्थल] सुख का स्थल। सुख देनेवाला स्थान। उ०—निपट मित्र वा सव सो जो पहले हो सुखथर। विविध त्रास सो पूरित हैं वे भूमि भयकर।—श्रीधर पाठक (शब्द०)।

सुखद[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० सुखदा] सुख देनेवाला। आनद देनेवाला। सुखदायी। आरामदेह।

सुखद[2]—सज्ञा पु० १ विष्णु का स्थान। विष्णु का आसन। २ विष्णु। ३ सगीत मे एक प्रकार का ताल।

सुखदगीत—वि० [स० सुखद + गीत] [वि० स्त्री० सुखदगीता] जिसकी वहुत अधिक प्रशसा हो। प्रशसनीय। उ०—जनक सुखदगीता पुत्रिका पाय सीता।—केशव (शब्द०)।

सुखदनियाँ(पु)—वि० [स० सुखदानी] दे० 'सुखदायी'। उ०—सुदर स्याम सरोजवरन तन सव अँग सुभग सकल सुखदनियाँ।—तुलसी (शब्द०)।

सुखदा[1]—वि० स्त्री० [स०] सुख देनेवाली। आनद प्रदान करनेवाली। सुखदायिनी।

सुखदा[2]—सज्ञा स्त्री० १ गगा का एक नाम। २ अप्सरा। ३ शमी वृक्ष। ४ एक प्रकार का छद।

सुखदाइन(पु)—वि० [स० सुखदायिनी] दे० 'सुखदायिनी'। उ०—आइ हुती अन्हवावन नाइनि, सोधो लिए कर सूधे सुभाइनि। कचुकि छोरि उतै उपटैवै को ईंगुर से अँग की सुखदाइनि।—दे० (शब्द०)।

सुखदाई(पु)—वि० [स० सुखदायिन्] दे० 'सुखदायी'।

सुखदात(पु)—वि० [स० सुखदातृ] दे० 'सुखदाता'। उ०—जो सव देव को देव अहै, द्विजभक्ति मे जाकी घनी निपुणाई। दासन को सिगरो सुखदात प्रशात स्वरूप मनोहरताई।—रघुराज (शब्द०)।

सुखदाता—वि० [स० सुखदातृ] सुख देनेवाला। आनद देनेवाला। आराम देनेवाला। सुखद। उ०—सुखदाता मातापिता सेवक सरन सधार। उपवन वैठे चद जहँ द्वै पचास पधार।—पृ० रा०, ६।३२।

सुखदान(पु)—वि० [स० सुख + देना] [स्त्री० सुखदानी] सुख देनेवाला। आनद देनेवाला। उ०—(क) खेलति है गुडियान को खेल लए सँग मै सजनी सुखदान री।—सुदरीसर्वस्व (शब्द०)। (ख) जव तुम फूलन के दिवस आवत है सुखदान। फूली अग समाति नहिं उत्सव करति महान।—लक्ष्मणसिह (शब्द०)।

सुखदानी[1]—वि० स्त्री० [हिं० सुखदान] सुख देनेवाली। आनद देनेवाली।

सुखदानी[2]—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे ८ सगण और १ गुरु होता है। इसे सुदरी, मल्ली और चद्रकला भी कहते है।

सुखदाय—वि० [स० सुखदायक] दे० 'सुखदायक'।

सुखदायक[1]—वि० [स०] सुख देनेवाला। आराम देनेवाला। सुखद।

सुखदायक[2]—सज्ञा पु० एक प्रकार का छद।

सुखदायिनी[1]—वि० स्त्री० [स०] सुख देनेवाली। सुखदा।

सुखदायिनी—सज्ञा स्त्री० मासरोहिणी नाम की लता। रोहिणी।

सुखदायी—वि० [स० सुखदायिन्] [वि० स्त्री० सुखदायिनी] सुख देनेवाला। आनद देनेवाला। सुखद।

सुखदायो(पु)—वि० [स० सुखदायक] दे० 'सुखदायी'। उ०—देखि श्याम मन हरष वढायो। तैसिय शरद चादिनी निर्मल तैसोइ रास रग उपजायो। तैसिय कनकवरन सव सुदरि यह सोभा पर मन ललचायो। तैसो हससुता पवित्र तट तैसोइ कल्पवृक्ष सुखदायो।—सूर (शब्द०)।

सुखदाव(पु)—दे० [स० सुखदायक] दे० 'सुखदायी'। उ०—जल दल चदन चक्रदर घट शिला हरि ताव। अष्ट वस्तु मिलि होत है चरणामृत सुखदाव।—विश्राम (शब्द०)।

सुखदास—सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का धान जो अगहन महीने मे तैयार होता है और जिसका चावल वरसो तक रह सकता है।

सुखदु ख—सज्ञा पु० [स०] आराम और कष्ट। सुख और दु ख का जोडा। द्वद्व। २ भले और वुरे समय का क्रम। भाग्य और अभाग्य।

मुहा०—सुखदु ख का साथी = भले और वुरे मे वरावर साथ देनेवाला।

**सुखदृश्य**—वि० [सं०] जिसे देखने को जी चाहे। सुंदर [को०]।

**सुखदेनी**Ⓟ—वि० [सं० सुखदायिनी] दे० 'सुखदायिनी'। उ०—राजत रोमन की तन राजिव है रसबीज नदी सुखदेनी। आगे भई प्रतिबिंबित पाछे बिलंबित जो मृगनैनी कि बेनी।—सुंदरीसर्वस्व (शब्द०)।

**सुखदैन**Ⓟ—वि० [हिं० सुख + देना] दे० 'सुखदायी,' 'सुखदान'। उ०—जियके मन्न मजु मनोरथ आनि कहै हनुमान जगे पै जगे। सुखदैन सरोज कली से भले उभरैं ये उरोज लगे पै लगैं।—सुंदरीसर्वस्व (शब्द०)।

**सुखदैनी**Ⓟ—वि० [सं० सुखदायिनी] सुख देनेवाली। आनंद देनेवाली। सुखद। उ०—भाल गुही गुन लाल लटैं लपटी लर मोतिन की सुखदैनी।—केशव

**सुखदोहा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह गाय जो सुखपूर्वक दुही जाय [को०]।

**सुखदोह्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह गाय जिसको दुहने में किसी प्रकार का कष्ट न हो। बहुत सहज में दुही जा सकनेवाली गौ।

**सुखधाम**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुख का घर। आनंदसदन। उ०—सो सुखधाम राम अस नामा।—मानस, १। २ वह जो स्वयं सुखमय हो, या जो बहुत अधिक सुख देनेवाला हो। ३ वैकुंठ। स्वर्ग।

**सुखन**—संज्ञा पुं० [अ० सुखन] दे० 'सखुन'। (सुखन शब्द के मुहा० और यौ० के लिये दे० 'सखुन' शब्द के मुहा० और यौ०)।

**सुखना**Ⓟ—क्रि० अ० [हिं० सूखना] दे० 'सूखना'।

**सुखनीय**—वि० [सं०] सुखद। आनंदप्रद [को०]।

**सुखपर**—वि० [सं०] १ सुखी। खुश। प्रसन्न। २ सुख चाहनेवाला। आरामतलब।

**सुखपाल**—संज्ञा पुं० [सं० सुख + पाल (की)] एक प्रकार की पालकी जिसका ऊपरी भाग शिवाले के शिखर का सा होता है। उ०—(क) सुखपाल और चंडोलों पर और रथों पर जितनी रानियाँ और महारानी लक्ष्मीवास पीछे चली आती थीं।—शिवप्रसाद (शब्द०)। (ख) घोडन के रथ दोइ दिए जरबाफ मढ़ी सुखपाल सुहाई।—रघुनाथ (शब्द०)। (ग) हम सुखपाल लिए खडे हाजिर लगन कहार। पहुँचायों मन मंजिल तक तुहिं लै प्रान अधार।—रतनहजारा (शब्द०)।

**सुखपूर्वक**—क्रि० वि० [सं०] सुख से। आनंद से। आराम के साथ। मजे में। जैसे,—आप यदि उनके यहाँ पहुँच जायँगे तो बहुत सुखपूर्वक रहेंगे।

**सुखपेय**—वि० [सं०] जिसके पीने में सुख हो। जिसके पान करने से आनंद मिले। सुपेय।

**सुखप्रणाद**—वि० [सं०] सुखद ध्वनि या नादवाला [को०]।

**सुखप्रतीक्ष**—वि० [सं०] सुख की प्रतीक्षा करने, राह देखने या आशा करनेवाला [को०]।

**सुखप्रद**—वि० [सं०] सुख देनेवाला। सुखदायक। सुखद।

**सुखप्रबोधक**—वि० [सं०] सुबोध। सरलता से बोध होनेवाला।

**सुखप्रविचार**—वि० [सं०] सरलता से ग्रहण करने योग्य [को०]।

**सुखप्रवेय**—वि० [सं०] जिसे आसानी से कंपित किया जा सके। (वृक्ष आदि) जो आसानी से हिल सके।

**सुखप्रश्न**—संज्ञा पुं० [सं०] कुशलक्षेम की जिज्ञासा। कुशल समाचार पूछना [को०]।

**सुखप्रसव, सुखप्रसवन**—संज्ञा पुं० [सं०] बिना कष्ट के होनेवाला प्रसव [को०]।

**सुखप्रसवा**[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुख से प्रसव करनेवाली गौ, स्त्री आदि। आराम से जननेवाली स्त्री।

**सुखप्रसवा**[2]—वि० स्त्री० सुखपूर्वक जनन करनेवाली (गाय, स्त्री)।

**सुखप्राप्त**—वि० [सं०] १ जिसे सुख प्राप्त हो। २ जो सुख से लभ्य हो।

**सुखप्राप्य**—वि० [सं०] सुख से प्राप्त करने योग्य। सरलता से मिल जानेवाला [को०]।

**सुखबंधन**—वि० [सं० सुखबन्धन] सुखों से आबद्ध। विलासी [को०]।

**सुखबद्ध**—वि० [सं०] सुंदर [को०]।

**सुखबोध**—संज्ञा पुं० [सं०] १ आनंद की अनुभूति। २ सहज ज्ञान। सुगम ज्ञान [को०]।

**सुखभंज**—संज्ञा पुं० [सं० सुखभञ्ज] सफेद मिर्च।

**सुखभक्ष**—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद सहिजन। श्वेत शिग्रु।

**सुखभक्षिकाकार**—संज्ञा पुं० [सं०] कांदविक। हलवाई [को०]।

**सुखभाक्, सुखभाग्**—वि० [सं० सुखभागिन्] प्रसन्न [को०]।

**सुखभागी**—वि० [सं० सुखभागिन्] दे० 'सुखभाग्'।

**सुखभुक्**—वि० [सं० सुखभुज्] १ प्रसन्न। सुखी। हर्षित। २ भाग्यशाली [को०]।

**सुखभेद्य**—वि० [सं०] जो सरलता से तोडा या भेदा जा सके। कोमल। भंगुर [को०]।

**सुखभोग**—संज्ञा पुं० [सं०] सुख का उपभोग। आनंदभोग [को०]।

**सुखभोगी**—वि० [सं० सुखभोगिन्] सुख भोगनेवाला [को०]।

**सुखभोग्य**—संज्ञा पुं० [सं०] जिसका भोग सुखपूर्वक हो सके [को०]।

**सुखमद**—वि० [सं०] जिसका मद सुखद हो [को०]।

**सुखमन**Ⓟ†—संज्ञा स्त्री० [सं० सुषुम्ना] सुषुम्ना नाम की नाडी। मध्यनाडी। विशेष दे० 'सुषुम्ना'। उ०—कहाँ पिंगला सुखमन नारी। सूनि समाधि लागि गइ तारी।—जायसी (शब्द०)।

**सुखमा**—संज्ञा स्त्री० [सं० सुषमा] १ शोभा। छवि। उ०—तिय मुख सुखमा सो दृगनि बाँध्यो प्रेम अधार। रही अलक ह्वै लगी मनु बटुरी पुतरी तार।—मुबारक (शब्द०)। २ एक प्रकार का वृत्त जिसमें एक तगण, एक यगण, एक मगण और एक गुरु होता है। इसे वामा भी कहते हैं।

**सुखमानी**—वि० [सं० सुखमानिन्] सुख माननेवाला। हर अवस्था में सुखी रहनेवाला।

सुखमुख —संज्ञा पुं० [सं०] यक्ष।

सुखमूल (पु)—वि० [सं०] सुखराशि। उ०—सुखमूल दूलह देखि दंपति पुलक तन हुलस्यो हियो।—मानस, १।३२४।

सुखमोद—संज्ञा पुं० [सं०] लाल सहिजन। शोभांजन वृक्ष।

सुखमोदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शल्लकी का वृक्ष। सलई।

सुखयिता—वि० [सं० सुखयितृ] सुख देनेवाला। हर्षप्रद [को०]।

सुखरात्रि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दिवाली की रात। कार्तिक महीने की अमावस्या की रात। २ सुहागरात (को०)। ३ लक्ष्मी [को०]।

सुखरात्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी [को०]।

सुखराशि—वि० [सं०] जो सुख की पुंजीकृत राशि हो। जो सर्वथा सुखमय हो।

सुखरास (पु)—वि० [सं० सुख + राशि] जो सर्वथा सुखमय हो। जो सुख की राशि हो। उ०—मंदिर के द्वार रूप सुंदर निहारो करें लग्यो शीत गात सकलात दई दास है। सोचें संग जाइवे की रीति को प्रमान वहै वैसे सब जानो माधवदास सुखरास है।—भक्तमाल (शब्द०)।

सुखरासी—वि० [सं० सुख + राशि] दे० 'सुखरास'। उ०—पूरन काम राम सुखरासी।—मानस, ३।२४।

सुखरूप—वि० [सं०] मनोहर रूप, आकृतिवाला [को०]।

सुखलक्ष्य—वि० [सं०] आसानी से लक्षित होनेवाला। सुख से पहचान में आनेवाला [को०]।

सुखलभ्य—वि० [सं०] जो सुखपूर्वक लभ्य हो। सुलभ।

सुखलिप्सा - संज्ञा स्त्री० [सं०] सुख की लालसा। सुखाकांक्षा।

सुखलाना– क्रि० स० [हिं० सूखना का प्रे० रूप] दे० 'सुखाना'।

सुखवंत – वि० [सं० सुखवत्] १ सुखी। प्रसन्न। खुश। २ सुखदायक। आनंद देनेवाला। उ०—इसके कुंद कली से दंत। वचन तोतले हैं सुखवंत।—संगीत शा० (शब्द०)।

सुखवत् —वि० [सं०] सुखयुक्त। सुखी। प्रसन्न।

सुखवती – वि० स्त्री० [सं०] सुख से युक्त। सुखी (स्त्री)।

सुखवत्ता – संज्ञा स्त्री० [सं०] सुख का भाव या धर्म। सुख। आनंद।

सुखवन†[1]—संज्ञा पुं० [हिं० सूखना] वह फसल जो सूखने के लिये धूप में डाली जाती है। २ वह कमी जो किसी चीज में उसके सूखने के कारण होती है।

सुखवन[2]—संज्ञा पुं० [हिं० सूखना] वह बालू जिसे लिखे हुए अक्षरों आदि पर डालकर उनकी स्याही सुखाते हैं। उ०—किलक ऊख ह्वै जाइ मसी हू होत सुधा सी। खाजा के परतन की सी छवि पत्र प्रकासी। सुखवन की बारूहू तहाँ चीनी सी ढरकी। सुकवि करैं किमि कविता मधुरै वधू अपर की।—अंबिकादत्त (शब्द०)।

सुखवर्चक—संज्ञा पुं० [सं०] सज्जी मिट्टी। सर्जिका क्षार।

सुखवर्चस—संज्ञा पुं० [सं०] सज्जी मिट्टी।

सुखवह—वि० [सं०] जो सुखपूर्वक या आसानी से वहन किया जाय।

सुखवा† —संज्ञा [सं० सुख] सुख। आनंद। मोद। उ० सुखवा सकल वलविरवा के घर, दुख नैहर गवन नाहिं देत।—रा० कृ० वर्मा (शब्द०)।

सुखवाद संज्ञा पुं० [सं०] भौतिक सुख को ही सर्वोपरि माननेवाला मत।

सुखवादी—वि०, संज्ञा पुं० [सं० सुख + वादिन्] (वह) जो इंद्रियसुख को ही सब कुछ समझता या मानता हो। (वह) जो भोग विलास आदि को ही जीवन का मुख्य उद्देश्य समझता हो। विलासी।

सुखवान्—वि० [सं० सुखवत्] सुखी।

सुखवार—वि० [सं० सुख + हिं० वार (प्रत्य )] [वि० स्त्री० सुखवारी] सुखी। प्रसन्न। खुश। उ०—जहाँ दीन, घरहीन परी ठिठुरत वह नारी। रहीं कदाचित कबहुँ गाम में सो सुखवारी। रोय चुकी पै निरदोषिन की सुनि सुनि ख्वारी।—श्रीधर पाठक (शब्द०)।

सुखवास—संज्ञा पुं० [सं०] १ तरबूज। शीर्णवृंत। २ वह स्थान जहाँ का निवास सुखकर हो। आनंद का स्थान। सुख की जगह।

सुखविहार—वि० [सं०] सुखपूर्वक विहार करनेवाला। आनंद की जिंदगी बसर करनेवाला।

सुखवेदन—संज्ञा पुं० [सं०] सुखानुभव। आनंदानुभूति [को०]।

सुखशयन—संज्ञा सं० [पुं०] सुखपूर्वक सोना।

सुखशयित—वि० [सं०] जो सुख या आराम से सोया हो।

सुखशय्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुख की नींद। २ सुखदायक शय्या।

सुखशांति—संज्ञा स्त्री० [सं० सुखशान्ति] अमन चैन।

सुखशायी—वि० [सं० सुखशायिन्] सुखपूर्वक सोया हुआ। जो आराम से सोया हो।

सुखश्रव, सुखश्राव्य—वि० [सं०] कानों को मधुर लगनेवाला। श्रुतिमधुर। सुरीला [को०]।

सुखश्रुति—वि० [सं०] दे० 'सुखश्रव'।

सुखसंग संज्ञा पुं० [सं० सुखसङ्ग] सुख के प्रति आसक्ति।

सुखसंगी—वि० [सं० सुखसङ्गिन्] सुख का साथी। सुख के समय साथ देने या रहनेवाला [को०]।

सुखसंदूह्या —संज्ञा स्त्री० [सं० सुखसन्दूह्या] वह गाय जो सुख से दूही जाय। जिस गाय को दूहने में किसी प्रकार की कठिनाई न हो।

सुखसंदोह—संज्ञा पुं० [सं०] सुख की राशि। सुख का मूल। उ०—सुखसंदोह मोहपर ग्यान गिरा गोतीत।—राम०, पृ० ११६।

सुखसंदोह्या—संज्ञा स्त्री० [सं० सुखसन्दोह्या] दे० 'सुखसंदूह्या'।

सुखसंपद, सुखसंपत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० सुखसम्पद, सुखसम्पत्ति] सुख और धन दौलत।

सुखसंयोग —संज्ञा पुं० [सं०] लोकोत्तर आनंद की प्राप्ति [को०]।

सुखसलिल —संज्ञा पुं० [सं०] उष्ण जल। गरम पानी।

विशेष—पानी गरम करने से उसमें कोई दोष नहीं रह जाता। वैद्यक में ऐसा जल बहुत उपकारी बताया गया है, और इसी लिये इसे 'सुखसिलल' कहा गया है।

सुखसागर—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुख के सागर। आनंद के समुद्र। २ हिंदी का एक ग्रंथ जो भागवत के दशम स्कंध का अनुवाद है। इसके अनुवादक मुंशी सदासुखलाल थे।

सुखसाध्य—वि० [सं०] जिसका साधन सुकर हो। जिसके साधन में कोई कठिनाई न हो। सुख या सहज में होनेवाला। सुकर। सहज। २ (रोग आदि) जो सरलता से अच्छा हो सके।

सुखसार—संज्ञा पुं० [सं० सुख + सार] मुक्ति। मोक्ष। उ०—केशव तिन सौं यो कह्यौ क्यो पाऊँ सुखसारु।—केशव (शब्द०)।

सुखसुप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुख की नींद।

सुखसेव्य – वि० [सं०] १ सुख से सेवन या भोग करने योग्य। २ सुलभ [को०]।

सुखस्पर्श—वि० [सं०] १ छूने में सुखकर। २ तृप्तिकर [को०]।

सुखस्वप्न—संज्ञा पुं० [सं०] सुखमय जीवन की कल्पना [को०]।

सुखहस्त—वि० [सं०] जिसके हाथ कोमल एवं मृदु हों। मुलायम हाथोंवाला [को०]।

सुखांत—संज्ञा पुं० [सं० सुखान्त] १ वह जिसका अंत सुखमय हो। सुखद परिणामवाला। जिसका परिणाम सुखकर हो। २ मित्रता-पूर्ण। मैत्रीयुक्त [को०]। ३ सुख का नाश या विघात करने-वाला (को०)। ४ पाश्चात्य नाटकों के दो भेदों में से एक। वह नाटक जिसके अंत में कोई सुखपूर्ण घटना (जैसे संयोग, अभीष्टसिद्धि, राज्यप्राप्ति आदि) हो। दु खांत (ट्रैजेडी) का उलटा। कॉमेडी।

सुखांबु—संज्ञा पुं० [सं० सुखाम्बु] गरम जल। उष्ण जल।

सुखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वरुण की पुरी का नाम। २ दयालुता। पुण्य (को०)। ३ संगीत की एक मूर्छना। ४ शिव की नौ शक्तियों में से एक शक्ति (को०)। ५ मुक्ति प्राप्त करने की साधना। मोक्षप्राप्ति की चेष्टा या उपाय (दर्शन)।

सुखाकर—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुख का आकर या निधि। २ बौद्धों के एक लोक का नाम [को०]।

सुखागत—संज्ञा पुं० [सं०] स्वागत [को०]।

सुखाजात—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

सुखात्मा—संज्ञा पुं० [सं० सुखात्मन्] ईश्वर। ब्रह्म।

सुखाधार[1]—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।

सुखाधार[2]—वि० जो सुख का आधार हो। जिसपर सुख अवलंबित हो। जैसे—हमारे तो आप ही सुखाधार हैं।

सुखाधिष्ठान—संज्ञा पुं० [सं०] सुख का स्थान।

सुखाना[1]—क्रि० स० [हिं० सूखना का प्रे० रूप] १ किसी गीली या नम चीज को धूप या हवा में अथवा आँच पर इस प्रकार रखना या ऐसी ही और कोई क्रिया करना जिससे उसकी आर्द्रता या नमी दूर हो या पानी सूख जाय। जैसे,—धोती सुखाना, दाल सुखाना, मिर्च सुखाना, जल सुखाना। २ कोई ऐसी क्रिया करना जिससे आर्द्रता दूर हो। जैसे,—इस चिंता ने तो मेरा सारा खून सुखा दिया।

सुखाना[2]†—क्रि० अ० दे० 'सूखना'।

सुखानी—संज्ञा पुं० [अ० सुक्कानी] माँझी। मल्लाह। (लश०)।

सुखानुभव—संज्ञा पुं० [सं०] सुख का अनुभव या अनुभूति [को०]।

सुखाप्य—वि० [सं०] जो सुखपूर्वक प्राप्त या लभ्य हो [को०]।

सुखाप्लव—वि० [सं०] जहाँ सुखपूर्वक स्नान किया जाय। निःशंक, आराम में नहाने योग्य [को०]।

सुखायत, सुखायन—संज्ञा पुं० [सं०] सहज में वश में आनेवाला घोड़ा। सीखा और सधा हुआ घोड़ा।

सुखापन्न—वि० [सं०] सुखयुक्त। सुखी।

सुखारा† ५—वि० [सं० सुख + हिं० आरा (प्रत्य०)] १ जिसे यथेष्ट सुख हो। सुखी। आनंदित। प्रसन्न। उ०—(क) इहि विधान निसि रहहिं सुखारे। करहिं कूँच उठि बड़े सकारे।—गिरधर-दास (शब्द०)। (ख) नित ये मंगल मोद अवध सब विधि सब लोग सुखारे।—तुलसी (शब्द०)। २ सुख देनेवाला। सुखद। उ०—जे भगवान प्रधान अजान समान दरिद्रन ते जन सारा। हेतु विचार हिये जग के भग त्यागि लखूँ निज रूप सुखारा।—(शब्द०)।

सुखारि—वि० [सं०] उत्तम हवि भक्षण करनेवाले (देवता आदि)।

सुखारी – वि० [सं० सुख + हिं० आरी] दे० 'सुखारा'। उ०—(क) राम संग सिय रहति सुखारी।—मानस, २।१४०। (ख) मुयो असुर सुर भए सुखारी।—सूर (शब्द०)। (ग) चौरासी लख के अधिकारी। भक्त भए सुनि नाद सुखारी।—गिरधरदास (शब्द०)।

सुखारो ५ —वि० [सुख + हिं० आरो] दे० 'सुखारा'।

सुखारोह—वि० [सं०] सुखपूर्वक आरोहण करने या चढ़ने योग्य।

सुखार्थी —वि० [सं० सुखार्थिन्] [वि० स्त्री० सुखार्थिनी] सुख चाहने-वाला। सुख की इच्छा करनेवाला। सुखकामी।

सुखाला—वि० [सं० सुख + हिं० आला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सुखाली] सुखदायक। आनंददायक। उ०—लगै सुखाली साँझ दिवस की तरुनाई से ताप नसै।—सरस्वती (शब्द०)।

सुखालुका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की जीवंती। डोडी। विशेष दे० 'जीवंती'।

सुखालोक—वि० [सं०] मनोहर। सुंदर [को०]।

सुखावत् —वि० [सं० सुखवत्] दे० 'सुखवत्'।

सुखावती—संज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक स्वर्ग का नाम।

सुखावतीदेव—संज्ञा पुं० [सं०] बुद्धदेव जो सुखावती नामक स्वर्ग के अधिष्ठाता माने जाते हैं। बौद्ध।

सुखावतीश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १ बुद्धदेव। २ बौद्धों के एक देवता।

सुखावल —संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार नृचक्षु राजा के एक पुत्र का नाम।

सुखावह—वि० [सं०] सुख देनेवाला। आराम देनेवाला। सुखद।

सुखाश[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुखपूर्वक खाना। २ वह जो खाने में बहुत अच्छा जान पड़े। ३ तरबूज। ४ वरुण देवता का एक नाम।

सुखाश²—वि० जिसे सुख की आशा हो ।

सुखाशक—संज्ञा पुं० [सं०] तरबूज ।

सुखाशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुख की आशा । आराम की उम्मीद ।

सुखाश्रय—वि० [सं०] जिसपर सुख अवलंबित हो । सुखाधार ।

सुखासक्त¹—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम ।

सुखासक्त²—वि० सुख के प्रति आसक्तियुक्त । सुख मे डूबा हुआ ।

सुखासन—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह आसन जिसपर बैठने से सुख हो । सुखद आसन । २ पद्मासन (को०) । ३ नाव पर बैठने का उत्तम आसन । ४ एक प्रकार की पालकी या डोली । सुखपाल । उ०—कहेउ बनावन पालकी सजन सुखासन जान ।—मानस, २।१८६ ।

सुखासिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्वास्थ्य । तंदुरुस्ती । २ आराम । सुख । चैन ।

सुखास्वाद¹—वि० [सं०] १ मधुर स्वाद का । मीठा । २ आनंददायक । रुचिकर (को०) ।

सुखास्वाद²—संज्ञा पुं० १ मधुर गंध । प्रिय गंध । २ आनंदानुभूति । सुखानुभूति (को०) ।

सुखासीन—वि० [सं०] आराम से बैठा हुआ (को०) ।

सुखिआ⁽ᵖ⁾—वि० [सं० सुख + हिं० इया (प्रत्य०)] दे० 'सुखिया' । उ०—कहु नानक सोई नर सुखिआ राम नाम गुन गावै । अऊर सकल जगु माया मोहिआ निरभै पद नहि पावै ।—तेगबहादुर (शब्द०) ।

सुखित¹⁽ᵖ⁾—वि० [हिं० सूखना] सूखा हुआ । शुष्क । उ०—पथ थकित मद मुकित सुखित सरसिंदुर जोवत । काकोदर करकोश उदर तर केहरि सोवत ।—केशव (शब्द०) ।

सुखित²—वि० [सं०] सुखी । आनंदित । प्रसन्न । खुश । उ०—(क) औरनि के औगुननि तजि कविजन राव होत है सुखित तेरो किर्तिवर न्हाय कै ।—मतिराम (शब्द०) । (ख) दृग थिर, कौहे अधखुले देह थकौहैं ढार । सुरत सुखित सी देखियत, दुखित गरभ के भार ।—बिहारी (शब्द०) ।

सुखित³—संज्ञा पुं० आनंद । प्रसन्नता । सुख । हर्ष (को०) ।

सुखिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुखी होने का भाव । सुख । आनंद ।

सुखित्व—संज्ञा पुं० [सं०] सुखी होने का भाव । सुख । सुखिता । आनंद । प्रसन्नता ।

सुखिया—वि० [हिं० सुख + इया (प्रत्य०)] जिसे सब प्रकार का सुख हो । सुखी । प्रसन्न । उ०—लखि के सुंदर वस्तु अरु मधुर गीत सुनि कोइ । सुखिया जनहू के हिये उत्कंठा एहि होइ ।—लक्ष्मण सिंह (शब्द०) ।

सुखिर—संज्ञा पुं० [देश०] साँप के रहने का बिल । बाँबी । उ०—याकी असि साँपिनि कढत म्यान सुखिर सो लहलही श्याम महा चपल निहारी है ।—गुमान (शब्द०) ।

सुखी¹—वि० [सं० सुखिन्] सुख से युक्त । जिसे किसी प्रकार का कष्ट न हो, सब प्रकार का सुख हो । आनंदित । खुश । जैसे,—जो लोग सुखी है, वे दीन दुखियो का हाल क्या जाने ।

सुखी²—संज्ञा पुं० यति । संत (को०) ।

सुखीन—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी जिसकी पीठ लाल, छाती और गर्दन सफेद तथा चोच चिपटी होती है ।

सुखीनल—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार राजा नृचक्षु के एक पुत्र का नाम ।

सुखेतर¹—संज्ञा पुं० [सं०] सुख से भिन्न अर्थात् दु ख । क्लेश । कष्ट ।

सुखेतर²—वि० सुखरहित । सुखहीन । अभागा (को०) ।

सुखेन¹—संज्ञा पुं० [सं० सुषेण] दे० 'सुषेण' । उ०—सुग्रीव विभीषण जामवंत । अंगद केदार सुखेन संत । सूर (शब्द०) । (ख) वरुन सुखेन सरत परजन्यहु । मारुत हनुमानहि उतपन्यहु ।—पद्माकर (शब्द०) ।

सुखेन²—क्रि० वि० [सं०] सुखपूर्वक । सहर्ष । उ०—जाहु सुखेन बनहि बलि जाऊँ । करि अनाथ जन परिजन गाऊँ ।—मानस, २।५७ ।

सुखेलक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे न, ज भ, ज, र, आता है । इसे 'प्रभद्रिका' और 'प्रभद्रक' भी कहते है ।

सुखेष्ट सुखेष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] शिव । महादेव ।

सुखैधित—वि० [सं०] सुख मे पला हुआ (को०) ।

सुखैना⁽ᵖ⁾†—वि० [सं० सुख + अयन] सुख देनेवाला । सुखदायक । उ०—तो शंभु भावै मुनिजन ध्यावै कागभुशुंडि सुखैना । - विश्राम । (शब्द०) ।

सुखैषी—वि० [सं० सुखैषिन्] [वि० स्त्री० सुखैषिणी] सुख का अभिलाषी । सुख चाहनेवाला (को०) ।

सुखोचित—वि० [सं०] १ सुख के उपयुक्त या योग्य । २ जो सुख आराम आदि का आदी हो । सुख का अभ्यस्त ।

सुखोत्सव—संज्ञा पुं० [सं०] १ पति । स्वामी । २ प्रसन्नता । आनंद (को०) ।

सुखोदक—संज्ञा पुं० [सं०] गरम जल । सुखसलिल ।

सुखोदय—संज्ञा पुं० [सं०] सुख का उदय या आगम । सुख की प्राप्ति । २ एक प्रकार का मादक पेय । ३ पुराणानुसार एक वर्ष या भूखंड (को०) ।

सुखोदर्क—वि० [सं०] सुखद परिणामवाला (को०) ।

सुखोद्भवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हरीतकी । २ छोटा आँवला (को०) ।

सुखोद्य—वि० [सं०] सुख से उच्चारण योग्य । जिसके उच्चारण मे कोई कठिनाई न हो (शब्द, नाम, आदि) ।

सुखोपविष्ट—वि० [सं०] सुख से बैठा हुआ । चैन से बैठनेवाला (को०) ।

सुखोपाय¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुख की प्राप्ति का उपाय । २ सुगम साधन या उपाय (को०) ।

सुखोपाय²—वि० [सं०] सुलभ । सहज । प्राप्य (को०) ।

सुखोर्जिक—संज्ञा पुं० [सं०] सज्जी मिट्टी । सर्जिकाक्षार ।

सुखोष्ण¹—संज्ञा पुं० [सं०] थोडा गरम जल । कुनकुना जल ।

सुखोष्ण²—वि० थोडा गरम । कुनकुना (को०) ।

सुख्ख(पु)--संज्ञा पुं० [सं० सुख] दे० 'सुख'।

सुख्य--वि० [सं०] १ सुखकर। सुखद। सुखदायक। २ सुख संबंधी। सुख का (को०)।

सुख्यात--वि० [सं०] प्रसिद्ध। मशहूर। यशस्वी।

सुख्याति--संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रसिद्धि। शोहरत। कीर्ति। यश। बड़ाई।

सुगंध¹--संज्ञा पुं० [सं० सुगन्ध] १ अच्छी और प्रिय महक। सुवास। सौरभ। खुशबू। विशेष दे० 'गंध'।

क्रि० प्र०--आना।--उड़ना।--निकलना।--फैलना।

विशेष--यह शब्द संस्कृत मे पुंलिंग है पर हिंदी मे इस अर्थ मे स्त्रीलिंग ही बोलते हैं।

२ वह पदार्थ जिससे अच्छी महक निकलती हो।

क्रि०प्र०--मलना।--लगाना।

३ गंधतृण। गंधेज घास। रसघास। अगिया घास। ४ श्रीखंड। चंदन। ६ गंधराज। ७ नीला कमल। ८ राल। धूना। ६ काला जीरा। १० गठैला। ग्रंथिपर्ण। गठिवन। ११ एलुआ। एलवालुक। १२ वृहद् गंधतृण। १३ भतृण। १४ चना। १५ भूपलाश। १६ लाल सहिजन। रक्तशिग्रु। १७ शालिधान्य। बासमती चावल। १८ मरुआ। मरुवक। १९ माधवीलता। २० कसेरू। २१ सफेद ज्वार। २२ शिलारस। २३ तुंबुरू। २४ केवड़ा। श्वेतकेतकी। २५ रूसा घास जिससे तेल निकलता है। २६ एक प्रकार का कीड़ा। २७ गंधक (को०)। २८ व्यापारी (को०)। २९ एक पर्वत का नाम (को०)। ३० एक तीर्थ (को०)।

सुगंध²--वि० सुगंधित। सुवासित। महकदार। खुशबूदार। उ०--(क) शीतल मंद सुगंध समीर से मन की कली मानो फूल सी खिल जाती थी।--शिवप्रसाद (शब्द०)। (ख) अंजलिगत शुभ सुमन, जिमि सम सुगंध कर दोउ।--मानस, १।३।

सुगंधक--संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धक] १ द्रोणपुष्पी। गूमा। गोमा। २ २ रक्तशालिधान्य। साठी धान्य। ३ धरणी कंद। कदालु। ४ गंधतुलसी। रक्त तुलसी। ५ गंधक। ६ वृहद्गंधतृण। ७ नारंगी। ८ अलाबु। कटुतुंबी (को०)। ९ कर्कोटक। ककोड़ा।

सुगंधकेसर--संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धकेसर] लाल सहिजन। रक्तशिग्रु।

सुगंधकोकिला--संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धकोकिला] एक प्रकार का गंधद्रव्य। गंधकोकिला।

विशेष--भावप्रकाश मे इसका गुण गंधमालती के समान अर्थात् तीक्ष्ण, उष्ण और कफनाशक बताया गया है।

सुगंधगंधक--संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धगन्धक] गंधक।

सुगंधगंधा--संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धगन्धा] दारु हलदी। दारुहरिद्रा।

सुगंधगण--संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धगण] सुगंधित द्रव्यो का एक गण या वर्ग।

विशेष--सुगंधगण वर्ग मे कपूर, कस्तूरी, लता कस्तूरी, गंधमार्जारवीर्य, चोरक, श्रीखंडचंदन, पीलाचंदन, शिलाजतु, लाल चंदन, अगर, काला अगर, देवदारु, पतंग, सरल, तगर, पद्माक, गूगल, सरल का गोंद, राल, कुंदुरु, शिलारस, लोबान, लौंग, जावित्री, जायफल, छोटी इलायची, बड़ी इलायची, दालचीनी, तेजपत्र, नागकेसर, सुगंधवाला, खस, बालछड़, केसर, गोरोचन, नख, सुगंध, बीरन, नेत्रवाला, जटामांसी, नागरमोथा, मुलेठी, आंबा हलदी, कचूर, कपूरकचरी आदि सुगंधित पदार्थ कहे गए है।

सुगंधचंद्री--संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धचन्द्री] गंधेज घास। गँधारण। गंधपलाशी। कपूर कचरी।

सुगंधतृण--संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धतृण] गंधतृण। रूसा घास।

सुगंधतैलनिर्यास--संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धतैल निर्यास] एक गंधद्रव्य। जवादि (को०)।

सुगंधत्रय--संज्ञा पु० [सं० सुगन्धत्रय] चंदन, बला और नागकेसर इन तीनो का समूह।

सुगंधत्रिफला--संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धत्रिफला] जायफल, लौंग और इलायची अथवा जायफल, सुपारी तथा लौंग इन तीनो का समूह।

सुगंधन--संज्ञा पु० [सं० सुगन्धन] जीरा।

सुगंधनाकुली--संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धनाकुली] एक प्रकार की रासना।

सुगंधपत्रा--संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धपत्रा] १ सतावर। शतावरी। शतमूली। २ कठजामुन। क्षुद्रजंबू। ३ वनभंटा। कटाई। बृहती। ४ छोटी धमासा। क्षुद्र दुरालभा। ५ अपराजिता। ६ लाल अपराजिता। रक्तापराजिता। ७ जीरा। बरियारा। बला। ९ विधारा। वृद्धदारु। १० रुद्रजटा। रुद्रलता। ईश्वरी।

सुगंधपत्री--संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धपत्री] १ जावित्री। २ रुद्रजटा।

सुगंधप्रियंगु--संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धप्रियङ्गु] फूलफेन। फूलप्रियंगु। गंधप्रियंगु।

विशेष--वैद्यक मे इसे कसैला, कटु, शीतल और वीर्यजनक तथा वमन, दाह, रक्तविकार, ज्वर, प्रमेह, मेद, रोग आदि को नाश करनेवाला बताया है।

सुगंधफल--संज्ञा पुं० [सं०सुगन्धफल] ककोल। कक्कोल।

सुगंधवाला--संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्ध + हिं० वाला] क्षुप जाति की एक प्रकार की वनौषधि।

विशेष--यह पश्चिमोत्तर प्रदेश, सिंध, पश्चिमी प्रायद्वीप, लंका आदि मे अधिकता से होती है। सुगंधि के लिये लोग इसे बगीचो मे भी लगाते है। इसका पौधा सीधा, गाँठ और रोएँदार होता है तथा पत्ते ककही के पत्तो के समान २॥-३ इंच के घेरे मे गोलाकार, कटे किनारेवाले तथा ३ से ५ नोकवाले होते हैं। पत्रदंड लंबा होता हैं और शाखाओ के अंत मे लंबे सीको पर गुलाबी रंग के फूल होते हैं। बीजकोष कुछ लंबाई लिए गोलाकार होता है। वैद्यक मे इसका गुण शीतल, रूखा, हलका, दीपक तथा केशो को सुंदर करनेवाला और कफ पित्त, हृल्लास, ज्वर, अतिसार, रक्तस्राव, रक्तपित्त, रक्तविकार, खुजली और दाह को नाश करनेवाला बताया गया है।

पर्या०--बालक। वारिद। ह्रीवेर। कुंतल। केश्य। वारितोय।

सुगधभूतृण—सज्ञा पुं० [स० सुगन्धभूतृण] रूसा घास । अगिया घास । दे० 'भूतृण' ।

सुगधमय—वि० [स० सुगन्धमय] जो सुगध से भरा हो। सुगधित । सुवासित । खुशबूदार ।

सुगंधमुख—सज्ञा पुं० [स० सुगन्धमुख] एक बोधिसत्व का नाम [को०] ।

सुगंधमुख्या—सज्ञा स्त्री० [स० सुगन्धमुख्या] कस्तूरी । कस्तूरिका मृगनाभि ।

सुगधमूत्रपतन—सज्ञा पु० [स० सुगन्धमूत्रपतन] एक प्रकार का विलाव जिसका मूत्र गधयुक्त होता है । मुश्कबिलाव । सुगध मार्जार ।

सुगंधमूल—सज्ञा पु० [स० सुगन्धमूल] हरफारेवडी । लवलीफल ।

विशेष—वैद्यक मे इसे रुधिरविकार, ववासीर, कफपित्तनाशक तथा हृदय को हितकारी बताया गया है ।

पर्या०—पाडु । कोमलवल्कला । घना । स्निग्धा ।

सुगधमूला—सज्ञा स्त्री० [स० सुगन्धमूला] १ स्थलकमल । स्थलपद्म । २ रासना । रासन । ३ आंवला । ४ गधपलाशी । कपूर-कचरी । ५ हरफारेवडी । लवलीवृक्ष ।

सुगधमूली—सज्ञा स्त्री० [स० सुगन्धमूली] गधपलाशी । गधशरी । कपूरकचरी ।

सुगधमूषिका—सज्ञा स्त्री० [स० सुगन्धमूषिका] छछूंदर ।

सुगधरा—सज्ञा पु० [स० सुगन्ध + हिं० रा] एक प्रकार का फूल ।

सुगधरौहिष—सज्ञा पुं० [स० सुगन्धरौहिष] रोहिष घास । गधेज घास । मिरचिया गध । अगियाघास ।

सुगधवल्कल—सज्ञा पुं० [स० सुगन्धवल्कल] दालचीनी । गुडत्वक् ।

सुगधवैरजात्य—सज्ञा पु० [स० सुगन्धवैरजात्य] गधेजघास । रोहिष घास । हरद्वारी कुशा ।

सुगंधशालि—सज्ञा पु० [स० सुगन्धशालि] एक प्रकार का बढिया शालिधान । बासमती चावल ।

विशेष—वैद्यक मे यह चावल बलकारक तथा कफ, पित्त और ज्वरनाशक बताया गया है ।

सुगधषट्क—सज्ञा पुं० [स० सुगन्धषट्क] छह सुगधि द्रव्य, यथा जायफल, कक्कोल(शीतलचीनी), लौंग, इलायची, कपूर और सुपारी ।

सुगधसार—सज्ञा पु० [स० सुगन्धसार] सागोन । शालवृक्ष ।

सुगधा—सज्ञा स्त्री० [स० सुगन्धा] १ रासन । रासना । २ काला जीरा । कृष्ण जीरक । ३ गधपलाशी । गंधशटी । कपूरकचरी । ४ रुद्रजटा । शकरजटा । ५ शेखपुष्पी । सौफ ६ बाँझ ककोडा । वनककोडा । वध्याकर्कोटकी । ७ नेवारी । नवमल्लिका । ८ पीली जूही । स्वर्णमूषिका । ९ नकुलकद । नाकुली । १० असवरग । स्पृक्का । ११ गगापत्री । १२ सलई । शल्लकी वृक्ष । १३ माधवीलता । अतिमुक्तक । १४ काली अनतमूल । १६ विजौरा नीबू । मातुलुगा । १७ तुलसी । १८ गधकोकिला । १९ निर्गुडी । नील सिंधुवार । २० एलुआ । एलवालुक । २१ वनमल्लिका । सेवती । २२ वकुची । सोमराजी । २३ २२ पीठस्थानो मे से एक पीठस्थान मे स्थित देवी का नाम । देवीभागवत के अनुसार इस देवी का स्थान माधववन मे है ।

सुगधाढ्य—वि० [स० सुगन्धाढ्य] सुगधित । सुवासित । सुगधयुक्त । खुशबूदार ।

सुगधाढ्या—सज्ञा स्त्री० [स० सुगन्धाढ्या] १ त्रिपुरमाली । त्रिपुर-मल्लिका । वृत्तमल्लिका । २ बासमती चावल । सुगधित शालिधान्य ।

सुगधार—सज्ञा पु० [स० सुगन्धार] शिव [को०] ।

सुगधि¹—स० पु० [स० सुगन्धि] १ अच्छी महक । सौरभ । सुगध । सुवास । खुशबू ।

विशेष—यद्यपि यह शब्द सस्कृत मे पुल्लिग है, तथापि हिंदी मे इस अर्थ मे स्त्रीलिग ही बोला जाता है ।

२ परमात्मा । ३ आम । ४ कसेरू । ५ गधतृण । अगिया घास । ६ पीपलामूल । पिप्पलीमूल । ७ धनिया । ८ मोथा । मुस्तक । ९ एलुवा । एलवालुक । १० फूट । कचरिया । गोरखककडी । भकुर । गुरुभीहूँ । चिर्मिटा । ११ बबई । बर्बरिका । वन-तुलसी । १२. बरबर चदन । बर्बर चदन । १३. तुबरू । तुबुरू । १४ अनतमूल । १५ सिंह (को०) ।

सुगधि²—वि० सुगधियुक्त । सुवासित । सुगधित । २ पुण्यात्मा । पवित्र-हृदय । धर्मपरायण (को०) ।

सुगंधिक¹—सज्ञा पुं० [स० सुगन्धिक] १ गाँडर की जड । खस । वीरन । उशीर । २ कुँई । कुमुदिनी । लाल कमल । ३ पुष्कर-मूल । पुहकरमूल । ४ गौरसुवर्ण शाक । दे० 'गौरसुवर्ण' । ५ कालाजीरा । कृष्णजीरक । ६ मोथा । मुस्तक । ७ एलुआ । एलवालुक । ८ माचोपत्र । सुरपर्ण । ९ शिलारस । सिल्हक । १० बासमती चावल । महाशालि । ११ कैथ । कपित्थ । १२ गधक । गधपाषाण । १३ सुलतान चपक । पुन्नाग । १४ श्वेत कमल । श्वेत पद्म (को०) । १५ सिंह । केसरी (को०) ।

सुगधिक²—वि० सुगधयुक्त । खुशबूदार [को०] ।

सुगधिका—सज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धिका] १ कस्तूरी । मृगनाभि । २ केवडा । पीली केतकी । ३ सफेद अनतमूल । श्वेत सारिवा । ४ कृष्ण निर्गुडी । ५ सिंहिनी । केसरी ।

सुगधिकुसुम—सज्ञा पु० [स० सुगन्धिकुसुम] १ पीला कनेर । पीत करवीर २ असबरग । स्पृक्का । ३ वह फूल जिसमे किसी प्रकार की सुगध हो । सुगधित फूल ।

सुगधिकुसुमा—सज्ञा स्त्री० [स० सुगन्धिकुसुमा] असबर्ग । पृक्का [को०]

सुगधिकृत—सज्ञा पु० [स० सुगन्धिकृत] शिलारस । सिल्हक ।

सुगधित वि० [स० सुगन्धित] जिसमे अच्छी गध हो । सुगधयुक्त । खुशबूदार । सुवासित ।

सुगधिता—सज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धिता] सुगधि । अच्छी महक । खुशबू ।

सुगधितेजन—सज्ञा पुं० [स०] रूसा या गधेज नाम की घास । अगिया घास । रोहिष तृण ।

सुगंधित्रिफला†—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धित्रिफला] जायफल, सुपारी और लौंग इन तीनों का समूह।

सुगंधिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धिनी] १ आरामशीतला नाम का शाक जिसे सुनंदिनी भी कहते हैं। २ पीली केतकी।

सुगंधिपुष्प—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धिपुष्प] १ धाराकदंब। केलिकदंब। २ वह फूल जिसमे सुगंधि हो। खुशबूदार फूल।

सुगंधिफल—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धिफल] शीतलचीनी। कबाबचीनी। ककोल।

सुगंधिमाता—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धिमातृ] पृथिवी।

सुगंधिमुस्तक—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धिमुस्तक] मोथा नामक घास की एक जाति [को०]।

सुगंधिमूत्रपतन—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धिमूत्रपतन] दे० 'सुगधमूत्रपतन'। गंधमार्जार।

सुगंधिमूल—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धिमूल] १ खश। उशीर। २. मूलिका। मूली (को०)।

सुगंधिमूषिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धिमूषिका] छछूँदर।

सुगंधी[1]—वि० [सं० सुगन्धिन्] जिसमे अच्छी गंध हो। सुवासित। सुगंधयुक्त। खुशबूदार।

सुगंधी[2]—संज्ञा पुं० एलुआ। एलवालुक।

सुगंधी[3]—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धि] अच्छी महक। खुशबू। सुगंधि।

सुग[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुख। २ गंधर्व। ३ सन्मार्ग। उत्तम मार्ग। ४ पुरीष। विष्ठा। मल [को०]।

सुग[2]—वि० १ सुंदर। ललित। चारु। २ अच्छी चाल या सुंदर गतिवाला। ३ सुबोध। सरल। ४ सुलभ। सुगम [को०]।

सुगठन—संज्ञा स्त्री० [हिं० सु + गठन] १ सुंदर गढ़न। उत्तम बनावट। सुघड़ता। २ शरीर की सुंदर बनावट। अंगसौष्ठव।

सुगठित—वि० [हिं०] १ सुंदर गढ़न या बनावटवाला। २ गठा या कसा हुआ। ३ जिसके अंग सौष्ठवयुक्त हो।

सुगण—वि० [सं०] १ गणनाकुशल। गणित मे दक्ष। २ सरलता से गिनने योग्य [को०]।

सुगणक—वि० [सं०] अच्छा गणक या ज्योतिषी [को०]।

सुगणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्कंद की एक मातृका [को०]।

सुगत[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ बुद्धदेव का एक नाम। २ बुद्ध भगवान् के धर्म को माननेवाला। बौद्ध।

सुगत[2]—वि० १ सद्गतिप्राप्त। २ सुंदर गति या चाल से युक्त। ३ सरल। आसान [को०]।

सुगतदेव—संज्ञा पुं० [सं०] बुद्ध भगवान्।

सुगतशासन—संज्ञा पुं० [सं०] बुद्धमत। बौद्धसिद्धांत [को०]।

सुगतायन, सुगतालय—संज्ञा पुं० [सं०] विहार। बौद्धमंदिर।

सुगति[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मरने के उपरांत होनेवाली उत्तम गति। मोक्ष। उ०—सबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्ह रघुनाथ। नाम उधारे अमित खल वेद विदित गुन गाथ।—तुलसी (शब्द०)। २ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे सात मात्राएँ और अंत मे एक गुरु होता है। इसे शुभगति भी कहते है। ३ कल्याण। सुख (को०)। ४ सुरक्षित आश्रय या शरण (को०)।

सुगति[2]—वि० १ सुंदर गतिवाला [को०]। २ जिसकी स्थिति सुंदर हो।

सुगति[3]—संज्ञा पुं० एक अर्हत् का नाम।

सुगन—संज्ञा पुं० [देश०] छकड़े मे गाड़ीवान के बैठने की जगह के सामने आड़ी लगी हुई दो लकड़ियाँ, जिनकी सहायता से बैल खोल लेने पर भी गाड़ी खड़ी रहती है।

सुगना[1]—संज्ञा पुं० [सं० शुक, हिं० सुग्गा] तोता। सूआ।

सुगना[2]—संज्ञा पुं० दे० 'सहिजन'।

सुगभस्ति—वि० [सं०] १ दीप्तिमान्। प्रकाशमान। चमकीला। २ सुंदर गभस्तिवाला। कुशल हाथोंवाला।

सुगम[1]—वि० [सं०] १ जो सहज मे जाने योग्य हो। जिसमे गमन करने मे कठिनता न हो। २ जो सहज मे जाना, किया या पाया जा सके। आसानी से होने या मिलनेवाला। सरल। सहज। आसान।

सुगम[2]—संज्ञा पुं० एक दानव का नाम [को०]।

सुगमता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुगम होने का भाव। सरलता। आसानी। जैसे,—यदि आप उनकी संमति मानेंगे, तो आपके कार्य मे बहुत सुगमता हो जायगी।

सुगम्य—वि० [सं०] १ जिसमे सहज मे प्रवेश हो सके। सरलता से जाने योग्य। जैसे,—जंगली और पहाड़ी प्रदेश, उतने सुगम्य नहीं होते, जितने खुले मैदान होते है। २ दे० 'सुगम'।

सुगर[1]—संज्ञा पुं० [सं०] शिंगरफ। हिंगुल।

सुगर(पु)[2]—वि० १ चतुर। कुशल। २ सुंदर कंठ या गलेवाला। ३ सुडौल। सुघर।

सुगरूप—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की सवारी जो प्रायः रेतीले देशों मे काम आती है।

सुगर्भक—संज्ञा पुं० [सं०] खीरा। त्रपुप।

सुगल(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सु + हिं० गल (= गला)] बालि का भाई सुग्रीव। उ०—पुनि पावस महँ बसे प्रवर्षण वर्षावर्णन कीन्ह्यो। सरद सराहि सकोप सुगल पहँ लषन पठै जिमि दीन्ह्यो।—रघुराज (शब्द०)।

सुगवि—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णुपुराण के अनुसार प्रसुश्रुत के एक पुत्र का नाम।

सुगहन—वि० [सं०] अत्यंत गहन। घोर। निबिड़ या घना [को०]।

सुगहना—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुगहनावृत्ति'।

सुगहनावृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह घेरा या बाड़ जो यज्ञस्थल मे अस्पृश्यों आदि को रोकने के लिये लगाई जाती है। कुवा।

सुगात्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदर देहयष्टिवाली स्त्री [को०]।

सुगाध—वि० [सं०] १ (नदी) जिसमे सुख से स्नान किया जा सके, अथवा जिसे सहज से पार किया जा सके। २ जो कम

गहरा हो। जिसकी थाह सहज में लग जाय। अगाध का उलटा (को०)।

**सुगाना**(पु)[१]—क्रि० अ० [स० शोक] १ दुखित होना। २. बिगड़ना। नाराज होना। उ०—आजुहि ते कहूँ जान न देहों मा तेरी कछु अकथ कहानी। सूर श्याम के सँग ना जैहौ जा कारण तू मोहिं सुगानी।—सूर (शब्द०)।

**सुगाना**[२]—क्रि० अ० [अ० शक] सदेह करना। शक करना। उ०—जो पावँह अपनो जडताई। तुम्हहिं सुगाइ मातु कुटिलाई।—तुलसी (शब्द०)।

**सुगीत**[१]—सज्ञा पु० [स०] १ एक छद। दे० 'सुगीतिका'। २ सुदर गीत या गाना।

**सुगीत**[२]—वि० जो अच्छी तरह गाया गया हो।

**सुगीति**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सुदर गायन। अच्छा गाना। २ आर्या छद का एक भेद (को०)।

**सुगीतिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे १५ + १० के विराम से २५ मात्राएँ और आदि मे लघु और अत मे गुरु लघु होते है।

**सुगीथ**—सज्ञा पु० [स०] एक ऋषि का नाम (को०)।

**सुगुडा**—सज्ञा स्त्री० [स० सुगुण्डा] गुडासिनो तृण। गुडाला। तृणपत्नी।

**सुगुप्त**—वि० [स०] अच्छी तरह गुप्त या छिपाया हुआ। सुरक्षित (को०)।

**सुगुप्तभाड**—वि० [स० सुगुप्तभाण्ड] [वि० स्त्री० सुगुप्तभाडा] घर गृहस्थी के बरतनो को भली भाति देखभाल करनेवाला (को०)।

**सुगुप्तभाडता**—सज्ञा स्त्री० [स० सुगुप्तभाण्डता] घर गृहस्थी के बरतनो को अच्छी देखभाल (को०)।

**सुगुप्तलेख**—सज्ञा पु० [स०] १ गोपनीय पत्र। २ साकेतिक भाषा या चिह्न मे लिखा गया पत्र जिसे हर कोई न पढ सके (को०)।

**सुगुप्ता**—सज्ञा स्त्री० [स०] किवाँच। कौंछ। कपिकच्छु। विशेष दे० 'काच'।

**सुगुरा**—सज्ञा पु० [स० सुगुरु] वह जिसने अच्छे गुरु से मत्र लिया हो।

**सुगृद्ध**—वि० [स०] लालसायुक्त। सतृष्ण (को०)।

**सुगृह**—सज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार का बत्तख या हस। २ सुदर मकान। बढिया घर (को०)।

**सुगृही**[१]—वि० [सं० सुगृहिन्] सुदर घरवाला। जिसका घर बढिया हो। २ सुदर स्त्रीवाला। जिसका पत्नी सुदर हो।

**सुगृही**[२]—सज्ञा पुं० [स०] सुश्रुत के अनुसार प्रतुद जाति का एक पक्षी। सुगृह।

**सुगृहीत**—वि० [स०] १ अच्छो तरह गृहीत। भलो भाति समझा हुआ। २ समुचित ढग से व्यवहृत। शुभ रीति से प्रयुक्त (को०)।

**सुगृहीतनामा**—वि० [स० सुगृहीतनामन्] कल्याण की भावना से जिसका नाम लिया जाय। प्रातःस्मरणीय। २ अत्यत आदरणीय (को०)।

**सुगृहीतग्रास**—सज्ञा पुं० [स०] स्वादिष्ट भोजन का कौर।

**सुगेष्णा**—सज्ञा स्त्री० [स०] किन्नरी (को०)।

**सुगैया**†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुग्गा + एया (प्रत्य०)] अँगिया। चोः उ०—मोहिं लखि सोवत बिथोरिगो सुबेनी-बनी, तोरिगो हिं हरा, छोरिगो सुगैया को।—रसकुसुमाकर (शब्द०)।

**सुगौतम**—सज्ञा पु० [स०] शाक्य मुनि। गौतम।

**सुग्गा**†—सज्ञा पु० [स० शुक] [स्त्री० सुग्गी] तोता। सुआ। शुक।

**सुग्गापखो**—सज्ञा पु० [हिं० सुग्गा + पख] एक प्रकार का धान अगहन के महीने म होता हे और जिसका चावल बरसा रह सकता ह।

**सुग्गासाँप**—सज्ञा पु० [हिं० सुग्गा + साँप] एक प्रकार का साँप।

**सुग्रथि**[१]—सज्ञा पु० [स० सुग्रन्थि] १ चोरक नाम गधद्रव्य। २ पीः मूल। पिप्पलीमूल।

**सुग्रथि**—वि० सुदर गाँठ या पोरवाला (को०)।

**सुग्रह**[१]—सज्ञा पु० [स०] फलित ज्योतिष के अनुसार शुभ या अ ग्रह। जैसे,—बृहस्पति, शुक्र आदि।

**सुग्रह**[२]—वि० [स०] १ जो सुखपूर्वक लभ्य हो। सुलभ। २ जिः मूँठ या हत्था उत्तम हो। ३ जो सोखने या समझने मे स हो। सुगम। सुबोध (को०)।

**सुग्रीव**[१]—सज्ञा पु० [स०] १ बालि का भाई, वानरो का राजा अ श्रीरामचद्र का सखा।

विशेष—जिस समय श्रीरामचद्र सीता को ढूँढते हुए किष्किधा पः थे, उस समय मतग आश्रम मे सुग्रीव स उनकी भेंट हुई। हनुमान जी ने श्रीरामचद्र जी से सुग्रीव की मित्रता करा दी। ब ने सुग्रीव को राज्य से भगा दिया था। उसके कहने से श्रीराम ने बालि का वध किया, सुग्रीव को किष्किधा का राज्य दिल और बालि के पुत्र अगद का युवराज बनाया। रावण को जी मे सुग्रीव ने श्रीरामचद्र की बहुत सहायता को थी। सुग्रीव ः के पुत्र माने जाते हैं। विशेष द० 'बालि'।

२ विष्णु या कृष्ण के चार घोडो मे से एक। ३ शुभ और निः का दूत जो भगवती चडी के पास उन दोनो का विवाह सब सदसा लेकर गया था। ४ वर्तमान अवसर्पिणी के नव अर्हत पिता का नाम। ५. इद्र। ६ शिव। ७ पाताल का एक नाग ८ एक प्रकार का अस्त्र। ९ शख। १० राजहस। ११ ः पवत का नाम। १२ एक प्रकार का मडप। १३ नायक १४ जलखड। जलाशय (को०)।

**सुग्रीव**[२]—वि० जिसकी ग्रीवा सुदर हो। सुदर गरदनवाला।

**सुग्रीवा**[१]—सज्ञा स्त्री० [स०] एक अप्सरा का नाम।

**सुग्रीवी**[१]—सज्ञा स्त्री० [स०] दक्ष की एक पुत्री और कश्यप की पत्ः जो घोडा, ऊँट तथा गधो को जननी कही जाती है।

**सुग्रीवेश**—सज्ञा पु० [स०] श्रीरामचद्र।

**सुग्ल**—वि० [स०] अत्यत थका हुआ। श्रात (को०)।

**सुघट**—वि० [सं०] १ अच्छा बना हुआ। सुंदर। सुडौल। उ०—भृकुटि भ्रमर चचल कपोल मृदु बोल अमृतसम सुघट। ग्रीव रस सींव कठ मुकता विघटत तम।—हनुमन्नाटक (शब्द०)। २ जो सहज मे हो या बन सकता हो।

**सुघटित**—वि० [स० सुघट+इत] जिसका निर्माण सुदर हो। अच्छी तरह से बना हुआ। उ०—धवल धाम मनि पुरट पट सुघटित नाना भाँति। सियनिवास सुदर सदन सोभा किमि कहि जाति।—तुलसी (शब्द०)।

**सुघट्टित**—वि० [स०] दुरुस्त किया हुआ। समतल या हमवार किया हुआ।

**सुघड**—वि० [सं० सुघट] १ सुदर। सुडौल। उ० नील परेव कठ के रगा। वृष से कध सुघड सब अगा।—उत्तररामचरित (शब्द०)। २ निपुण। कुशल। दक्ष। प्रवीण। जैसे,—सुघडवाहु।

**सुघड़ई**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुघड+ई (प्रत्य०)] १ सुदरता। सुडौलपन। अच्छी बनावट। उ०—विषय के भोगो मे तृप्त हुए विना ही उस (राजा) को, अधिक सुघडई के कारण विलासिनियों के भोगने योग्य को, वृथा ईर्ष्या करनेवाली जरा ने स्त्रीव्यवहार मे असमर्थ होकर भी हरा दिया।—लक्ष्मण सिंह (शब्द०)। २ चतुरता। निपुणता। कुशलता। उ०—इसमे बडी बुद्धि और सुघडई का काम है।—ठाकुरप्रसाद (शब्द०)।

**सुघड़ता**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुघड+ता (प्रत्य०)] १ सुघड होने का भाव। सुदरता। मनोहरता। २ निपुणता। कुशलता। दक्षता। सुघडपन।

**सुघडपन**—सज्ञा पुं० [हिं० सुघड+पन (प्रत्य०)] १ सुघड होने का भाव। सुघडाई। सुदरता। २ निपुणता। दक्षता। कुशलता।

**सुघडाई**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुघड] दे० 'सुघडई'।

**सुघड़ापा**—सज्ञा पुं० [हिं० सुघड+आपा (प्रत्य०)। सुघडाई। सुदरता। सुडौलपन। २ दक्षता। निपुणता। कुशलता।

**सुघड़ी**—सज्ञा स्त्री० [स० सुघटी] अच्छी घडी। शुभ समय।

**सुघर**—वि० [स० सुघट] दे० 'सुघड'। उ०—(क) सयुत सुमन सुवेलि सी सेली सी गुणग्राम। लसत हवेली सी सुघर निरखि नवेली बाम।—पद्माकर (शब्द०)। (ख) सुघर सौति वस पिय सुनत दुलहिनि दुगुन हुलास। लखी सखी तन दीठि करि सगरव सलज सहास।—अंबिकादत्त (शब्द०)।

**सुघरई**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुघड+ई (प्रत्य०)] दे० 'सुघडई'।

**सुघरता**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुघड+ता प्रत्य०)] दे० 'सुघड़ता'।

**सुघरपन**—सज्ञा पुं० [हिं० सुघड+पन (प्रत्य०)] दे० 'सुघडपन'। उ०—(क) छन मे जैहै सुघरपनो पीरो परिहै तन। परकर परि कै सुकवि फर फिरि आवत नहिं मन।—अंबिकादत्त (शब्द०)।

**सुघराई**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुघड+आई (प्रत्य०)] १ दे० 'सुघडई'। उ०—(क) काम नाश करने के कारण जिन्हें न मोहै सुघराई। ऐसे शिव को किया चाहती हे अपना पति सुखदाई।—महावीरप्रसाद (शब्द०)। (ख) सुघराई सुकाम विरचि की है, तिय तेरे नितवनि की छवि मे।—सुदरीसर्वस्व (शब्द०)। २ सपूर्ण जाति की एक रागिनी जिसके गाने का समय दिन मे १० से १६ दड तक है।

**सुघराई कान्हडा**—सज्ञा पुं० [हिं० सुघराई+कान्हडा] सपूर्ण जाति का एक राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

**सुघराई टोडी**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुघराई+टोडी] सपूर्ण जाति की एक रागिनी।

**सुघरी[1]**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सु+घडी] अच्छी घडी। शुभ समय। उ०—आनँद की सुघरी उघरी सिगरे मनवाछित काज भए हैं।—व्यगार्थ० (शब्द०)।

**सुघरी[2]**—वि० स्त्री० [हिं० सुघड] सुदर। सुडौल। उ०—(क) भाग सोहाग भरी सुघरी पति प्रेम प्रनाली कथा अपढैना।—सुंदरीसर्वस्व (शब्द०)। (ख) सुंदरि हौ सुघरी हौ सलौनी हौ सील-भरी रस रूप सनाई।—देव (शब्द०)।

**सुघोष[1]**—सज्ञा पुं० [सं०] १ चौथे पाडव नकुल के शख का नाम। २ एक बुद्ध का नाम। ३ एक प्रकार का यत्र। ४ सुंदर घोष। मधुर ध्वनि।

**सुघोष[2]**—वि० १ जिसका स्वर सुदर हो। अच्छे गले या आवाजवाला। २ तीव्र निनाद करनेवाला। ऊँची आवाजवाला।

**सुघोषक**—सज्ञा पु० [स०] एक बाजे का नाम (को०)।

**सुचंग**—सज्ञा पुं० [हिं०] घोडा।

**सुचचुका**—सज्ञा स्त्री० [स० सुचञ्चुका] बडा चचुक शाक। महाचचु। दीर्घपत्री।

**सुचदन**—सज्ञा पुं० [स० सुचन्दन] पतग या बक्कम नाम की लकडी जिसका व्यवहार औषध और रग आदि मे होता है। रक्तसार। सुरग।

**सुचद्र**—सज्ञा पुं० [सं० सुचन्द्र] १ एक देवगधर्व का नाम। २ एक बोधिसत्व (को०)। ३ सिंहिका के पुत्र का नाम। ४ इक्ष्वाकुवशी राजा हेमचद्र का पुत्र और धूम्राश्व का पिता।

**सुचद्रा**—सज्ञा स्त्री० [स० सुचन्द्रा] बौद्धो के अनुसार एक प्रकार की समाधि।

**सुच(पु)**—वि० [स० शुचि] दे० 'शुचि'।

**सुचक्षु[1]**—सज्ञा पु० [स० सुचक्षुस्] १ गूलर। उदुंबर। २ शिव का एक नाम। ३. विद्वान् व्यक्ति। पडित।

**सुचक्षु[2]**—वि० जिसके नेत्र सुदर हों। सुंदर आँखोवाला।

**सुचक्षु[3]**—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी का नाम।

**सुचना**—क्रि० स० [सं० सञ्चय] सचय करना। एकत्र करना। इकट्ठा करना। उ०—तरुवर फल नहिं खात है सरवर पियहिं न पानि। कहि रहीम परकाज हित सपति सुचहि सुजान।—रहीम (शब्द०)।

**सुचरित[1]**—सज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसका चरित्र शुद्ध हो। उत्तम आचरणवाला। नेकचलन। २ सच्चरित्रता। ३ गुण (को०)।

सुचरित²—वि० १ शुद्ध चरित्रवाला। २ अच्छी तरह किया हुआ।

सुचरिता—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सुचरित्रा'।

सुचरित्र—वि०, सज्ञा पु० [स०] दे० 'सुचरित'।

सुचरित्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पतिपरायणा स्त्री। साध्वी। सती। २ धानी। धनियाँ (को०)।

सुचर्म¹—सज्ञा पु० [स० सुचर्मन्] भोजपत्र।

सुचर्म²—वि० सुदर चर्म, ढाल या छाल से युक्त (को०)।

सुचा¹—वि० [स० शुचि] दे० 'शुचि'। उ०—सील सुचा ध्यान धोवती काया कलस प्रेम जल।—दादू (शब्द०)।

सुचा²—सज्ञा स्त्री० [स० सूचना] ज्ञान। चेतना। सुध। उ०—रही जो मुइ नागिनि जस तुचा। जिउ पाएँ तन कै भइ सुचा।—जायसी (शब्द०)।

सुचाना—क्रि० स० [हिं० सोचना का प्रेर० रूप] १ किसी को सोचने या समझने मे प्रवृत्त करना। सोचने का काम दूसरे से कराना। २ दिखलाना। ३ किसी का ध्यान किसी बात की ओर आकृष्ट कराना।

सुचार(पु)¹—सज्ञा स्त्री० [स० सु + हिं० चाल] सुचाल। अच्छी चाल। उ०—थाई भाव थिरु है विभाव अनुभावनि सो सातुकनि सतत ह्वै सचरि सुचार है।—सूर (शब्द०)।

सुचार²—वि० [स० सुचारु] सुचारु। सुदर। मनोहर। उ०—अजहूँ लौ राजत नीरधि तट करत साख्य विस्तार। साख्यायन से बहुत महामुनि सेवत चरण सुचार।—सूर (शब्द०)।

सुचारा—सज्ञा स्त्री० [स०] यदुवशी श्वफल्क की पुत्री जो अक्रूर की सास थी।

सुचारु¹—सज्ञा पु० [स०] १ रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र। २ विश्वक्सेन का पुत्र। ३ प्रतीर्थ। ४ बाहु का पुत्र।

सुचारु²—वि० अत्यत सुदर या सुरूपवान्। अतिशय मनोहर। बहुत खूबसूरत। जैसे,—वहाँ के सब कार्य बहुत ही सुचारु रूप से सपन्न हो गए।

यौ०—सुचारुदशना = सुदर दाँतोवाली नारी। सुचारुरूप = स्वरूपवान। खूबसूरत। सुचारुस्वन = सुरीले कठवाला। सुरीला।

सुचारुता—सज्ञा स्त्री० [स०] सुचारु होने का भाव। सुचारुत्व अत्यत सुदरता (को०)।

सुचारुत्व—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सुचारुता'।

सुचाल—सज्ञा स्त्री० [सं० सु + हिं० चाल] उत्तम आचरण। अच्छी चाल। सदाचार। उ०—कह गिरिधर कविराय बडन की याही बानी। चलिए चाल सुचाल राखिए अपनो पानी।—गिरिधर (शब्द०)।

सुचाली¹—वि० [स० सु + हिं० चाल + ई (प्रत्य०)] जिसके आचरण उत्तम हो। अच्छे चाल चलनवाला। सदाचारी। उ०—मातु मदि मै साधु सुचाली। उर अस आनतें कोटि कुचाली।—मानस, २।६०।

सुचाली²—सज्ञा स्त्री० [हिं०] पृथ्वी।

सुचाव†—सज्ञा पु० [हिं० सुचा] सुचाने की क्रिया या भाव। सोचाना। सुझाव।

सुचितन—सज्ञा पु० [स० सुचिन्तन] गभीर चितन या सोच-विचार (को०)।

सुचिंतित—वि० [स० सुचिन्तित] खूब सोचा विचारा हुआ। भली भाँति सोचा हुआ। उ०—सास्त्र सुचिंतित पुनि पुनि देखिअ।—मानस, ३।३१।

सुचिंतितार्थ—सज्ञा पु० [स० सुचिन्तितार्थ] बौद्धो के अनुसार मार के पुत्र का नाम।

सुचि¹—वि० [स० शुचि] दे० 'शुचि'। उ०—(क) सहज सचिक्कन स्याम रुचि सुचि सुगध सुकुमार। गनत न मन पथ अपथ लखि बिथुरे सुथरे बार।—बिहारी (शब्द०)। (ख) तुलसी कहत विचारि गुरु राम सरिस नहिं आन। जासु क्रिया सुचि होत रुचि विसद विवेक अमान।—तुलसी (शब्द०)।

सुचि²—सज्ञा स्त्री० [स० सूची] सूई। उ०—सुचि वेध ते नाको सकीर्न तहाँ परतीत को टाँडो लदावनो है।—हरिश्चद्र (शब्द०)।

सुचिकरमा(पु)—वि० [स० शुचिकर्मन्] दे० 'शुचिकर्मा'। उ०—चलेउ सुभेस नरेस छत्रधरमा सुचिकरमा। बिसुकरमा कृत सुरथ बैठि रव कचन वरमा।—गोपाल (शब्द०)।

सुचित¹—वि० [स० सुचित्त] १ जो (किसी काम से) निवृत्त हो गया हो। उ०—(क) ऐसी आज्ञा कर यमराज जब सुचित भए, तब नारद मुनि ने फिर उनसे पूछा कि किस कारण से तुम इहाँ से भाग गए सो मुझसे कहो।—सदल मिश्र (शब्द०)। (ख) अतिथि साधु यति सबनि खवाई। मैं हूँ सुचित भई पुनि खाई।—रघुराज (शब्द०)। २ निश्चित। चितारहित। बेफिक्र। ३ धान्य धन से युक्त। सपन्न। सुखी। ४ एकाग्र। स्थिर। सावधान। उ०—(क) सुचित सुनहु हरि सुजस कह बहुरि भई जो बात।—गिरिधरदास (शब्द०)। (ख) इहि विधान एकादशी करै सुचित चित होई।—गिरिधरदास (शब्द०)।

सुचित²—वि० [स० शुचि] पवित्र। शुद्ध (क्व०)।

सुचितई†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुचित + ई (प्रत्य०)] १ सुचित होने का भाव। निश्चितता। बेफिक्री। उ०—(क) इमि देव दुदुभी हरपि बरसत फूल सुफल मनोरथ भो सुख सुचितई है।—तुलसी (शब्द०)। (ख) सुकवि सुचितई पैहै सब ह्वै हैं कवै मरन।—अबिकादत्त (शब्द०)। २ एकाग्रता। स्थिरता। शाति। ३ छुट्टी। फुर्सत। उ०—ब्रजवासिनु को उचित धनु, जो धनु रुचित न कोई। सुचित न आयौ, सुचितई कहौ कहाँ तै होइ।—बिहारी र०, दो० ५६१।

सुचिता(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० शुचिता] शुद्धता। पवित्रता। शुचिता। उ०—मकरदु जिनको सभु सिर सुचिता अवधि सुर वरनई।—मानस १।३२४।

**सुचितो**† वि० [हिं० सुचित + ई (प्रत्य०)] १ जिसका चित्त किसी बात पर स्थिर हो। जो दुविधा मे न हो। स्थिरचित्त। शात। उ०—(क) सुचिती ह्वै औरै सबै ससिहि बिलोकै आय। (ख) ससिहि बिलोकै आय सबै करि करि मन सुचिती।—अबिकादत्त (शब्द०)। २ निश्चित। चितारहित। बेफिक्र। उ०—धाय सो जाय कै धाय कह्यो कहूँ धाय कै पूछिए करते ठई है। बैठि रही सुचिती सी कहा मुनि मेरी सबै सुधि भूलि गई है।—सुदरीसर्वस्व (शब्द०)।

**सुचित्त**—वि० [स०] १ जिसका चित्त स्थिर हो। स्थिरचित्त। शात। २ जो (किसी काम से) निवृत्त हो गया हो। जो छुट्टी पा गया हो। निश्चित। उ०—(क) ब्राह्मणो को नाना प्रकार के दान दे नित्य कर्म से सुचित हो।—लल्लू० (शब्द०)। (ख) कन्या तो पराया धन है ही, उसको पति के घर भेज दिया, सुचित हो गए।—सगीत शाकुतल (शब्द०)।

क्रि० प्र०—होना।

**सुचित्तता**—सज्ञा स्त्री० [स०] निश्चितता।। इत्मीनान।

**सुचित्ती**†—सज्ञा स्त्री० [स० सुचित्त] दे० 'सुचित्तता'।

**सुचित्र¹**—सज्ञा पु० [स०] एक सर्प।

**सुचित्र²**—वि० [स०] १ रग बिरगा। विभिन्न रगो का। २ विभिन्न प्रकार का।

**सुचित्रकर्म¹**—सज्ञा पु० [स०] मुर्गाबी। मत्स्यरग पक्षी। २ चित्रसर्प। चितला साँप। ३ अजगर।

**सुचित्रक²**—वि० रगबिरगा। विभिन्न प्रकार का [को०]।

**सुचित्रबीजा**—सज्ञा स्त्री० [स०] बायविडग। विडग।

**सुचित्रा**—सज्ञा स्त्री० [स०] चिर्भिटा या फूट नामक फल।

**सुचिमत**—वि० [स० शुचि + मत्] शुद्ध आचरणवाला। सदाचारी। शुद्धाचारी। पवित्र। उ०—सो सुकृती सुचिमत सुसत सुशील सयान सिरोमनि स्वै। सुरतीरथता सुमनावन आवत पावन होत है तात न क्वै।—तुलसी (शब्द०)।

**सुचिर¹**—सज्ञा पुं० [सं०] बहुत अधिक समय। दीर्घकाल।

**सुचिर²**—वि० १ बहुत दिनो तक रहनेवाला। २ पुराना। प्राचीन।

**सुचिरायु**—सज्ञा पुं० [स० सुचिरायुस्] देवता।

**सुची**—सज्ञा स्त्री० [स० शची] दे० 'शची'। उ०—सोइ सुरपति जाके नारि सुची सी। निस दिन ही रँगराती, काम हेतु गौतम गहि गयऊ निगम देतु है साखी।—कबीर (शब्द०)।

**सुचीरा**—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सुचारा'।

**सुचीणध्वज**—सज्ञा पु० [स०] कुभाडो के एक राजा का नाम (बौद्ध)।

**सुचुक्रिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] इमली।

**सुचुटी**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ चिमटा। २ कैंची। ३ सँडसी।

**सुचेत**—वि० [स० सुचेतस्] चौकन्ना। सतर्क। होशियार। उ०—(क) कोई नशे मे मस्त हो कोई सुचेत हो। दिलबर गले से लिपटा हो सरसो का खेत हो।—नजीर (शब्द०)। (ख) भाई तुम सुचेत रहो, कैटो की दृष्टि बडी पैनी है।—तोताराम (शब्द०)। २ प्रज्ञावान्। बुद्धिमान (को०)।

क्रि० प्र०—करना।—होना।—रहना।

**सुचेतन¹**—सज्ञा पुं० [सं०] विष्णु। (डिं०)।

**सुचेतन²**—वि० दे० 'सुचत'।

**सुचेता¹**—वि० [स० सुचेतस्] दे० 'सुचेत'। उ०—सु दरता सौभाग्य निकेता। पकज लोचन अहहि सुचेता।—श० दि० (शब्द०)।

**सुचेता²**—सज्ञा पु० प्रचेता के एक पुत्र का नाम।

**सुचेतोकृत**—वि० [सं०] भली भाँति सावधान किया हुआ।

**सुचेल**—वि० [स०] उत्तम वस्त्रयुक्त। दे० 'सुचेलक' [को०]।

**सुचेलक¹**—सज्ञा पुं० [स०] सुदर और महीन कपडा। पट।

**सुचेलक²**—वि० जिसका वस्त्र उत्तम हो।

**सुचेष्टरूप**—सज्ञा पुं० [सं०] बुद्धदेव।

**सुच्छद**(पु)†—वि० [स० स्वच्छन्द] दे० 'स्वच्छद'। उ०—बैठि इकत होय सुच्छदा। लहिए सर्छू परमानदा।—निश्चल (शब्द०)।

**सुच्छ**(पु)†—वि० [स० स्वच्छ, प्रा० सुअच्छ] उ०—(क) मुच्छ पर हत्थ तन सुच्छ अबर धरे तुच्छ नहि वीर रस रग रत्ते।—सूदन (शब्द०)। (ख) कही मै तो नून तुच्छ बोले हमहू ते सुच्छ जाने कोऊ नाहि तुम्हैं मेरी मति भीजिए।—नाभादास (शब्द०)।

**सुच्छत्र**—सज्ञा पुं० [स०] शिव [को०]।

**सुच्छत्रा**—सज्ञा स्त्री० [स०] सतलज नदी।

**सुच्छत्री**—सज्ञा स्त्री० [स०] शतद्रु या सतलज नदी का एक नाम।

**सुच्छद**—वि० [सं०] सु दर पत्ती या आवरण से युक्त [को०]।

**सुच्छम¹**—वि० [स० सूक्ष्म] दे० 'सूक्ष्म'।

**सुच्छम²**—सज्ञा पुं० [?] घोडा। (डिं०)।

**सुच्छाय**—वि० [स०] १ जिसकी छाया अच्छी हो। २ (रत्न आदि) जिसकी प्रभा सु दर हो [को०]।

**सुछद**(पु)—वि० [स० स्वच्छन्द, प्रा० सुछद] दे० 'स्वच्छद'। उ०—निपट लागत अनम ज्यो जल चरहि गमन सुछद। न जरै जे नजरै रहै प्रीतम तुव मुखचद।—रतनहजारा (शब्द०)।

**सुजगो**†—सज्ञा पुं० [गढवाली] भाँग के वे पौधे जिनमे बीज होते हैं।

विशेष—गढवाल मे भाँग के बीजदार पौधो को सुजगो या कलगो कहते हैं।

**सुजघ**—वि० [सं० सुजङ्घ] सु दर उरु या जाँघोवाला [को०]।

**सुजघन**—वि० [सं०] १ जिसकी श्रोणी, नितब या कटि सु दर हो। २ जिसका अत या परिणाम भला हो [को०]।

**सुजड**—सज्ञा पुं० [डिं०] तलवार।

**सुजडी**—सज्ञा स्त्री० [डिं०] कटारी।

**सुजन¹**—सज्ञा पुं० [सं०] १ सज्जन। सत्पुरुष। भलामानस। भला आदमी। शरीफ। २ इद्र के सारथी का नाम (को०)।

सुजन¹—वि० १ भला। अच्छा। २ दयालु। परोपकारी [को०]।

सुजन²—संज्ञा पुं० [सं० स्वजन, प्रा० सुजन] परिवार के लोग। आत्मीय जन। उ०—(क) माँगत भीख फिरत घर घर ही सुजन कुटुंब वियोगी।—सूर (शब्द०)। (ख) हरपित सुजन सखा प्रिय बालक कृष्ण मिलन जिय भाए।—सूर (शब्द०)। (ग) रामराज नहिं कोऊ रोगी। नहिं दुरभिक्ष न सुजन वियोगी। पद्माकर (शब्द०)।

सुजनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुजन का भाव। सौजन्य। भद्रता। भलमनसाहत। नेकी (को०)। २ भले लोगों का समूह। ३ धैर्य। पराक्रम। साहस (को०)।

सुजनी—संज्ञा स्त्री० [फा० सोजनी] एक प्रकार की बड़ी चादर जो कई परत की होती और बिछाने के काम आती है। ऊपर साफ कपड़े देकर इसकी महीन सिलाई की जाती है। यह बीच बीच में बहुत जगहों में सी (सिली) हुई रहती है। २ पलग पर बिछाने की चादर [को०]।

सुजन्मा—वि० [सं० सुजन्मन] १ जिसका उत्तम रूप से जन्म हुआ हो। उत्तम रूप से जन्मा हुआ। सुजातक। २ विवाहित स्त्री पुरुष का औरस पुत्र। ३ अच्छे कुल में उत्पन्न। उ०—सूतक घर के आस पास फैले हुए उस सुजन्मा के स्वाभाविक तेज से आधी रात के दीपक सहज ही मंदज्योति हो गए।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)।

सुजय—संज्ञा पुं० [सं०] १ भारी जीत। महान् विजय। २ वह देश, स्थान आदि जो सरलता से जीतने योग्य हो [को०]।

सुजल¹—वि० सुंदर जल से युक्त।

सुजल²—संज्ञा पुं० [सं०] १ कमल। पद्म। २ सुंदर और अच्छा जल। उ०—कीन्ह सुजल हित कूप बिसेखा।—मानस, २।

सुजला—वि० स्त्री० [सं०] सुंदर जल से युक्त। जलप्राय। अनूप। सुजलाम् सुफलाम् सस्य श्यामलाम् मातरम्। वंदे मातरम्। —राष्ट्रगीत।

सुजल्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ उज्वलनीलमणि के अनुसार वह भाषण या कथन जो सहृदयता उत्साह, उत्कंठा, ऋजुता, गांभीर्य, नम्रता, चापल्य तथा भावपूर्ण हो। २ उत्तम कथन। श्रेष्ठ भाषण।

सुजस—संज्ञा पुं० [सं० सुयश] दे० 'सुयश'। उ०—सुजस बखानत बाट चलहि बहु भाट गुनी गन। अमर राट सम सुरथ राजभट ठाट प्रबल तन —गिरधर (शब्द०)।

सुजाक—संज्ञा पुं० [फा० सूजाक] दे० 'सूजाक'।

सुजागर—वि० [सं० सु (=भली भाँति)+जागर (=जागर=प्रकाशित होना)] जो देखने में बहुत सुंदर जान पड़े। प्रकाशमान। सुशोभित। उ०—मुरली मृदंगन अगाउनी भरत स्वर गाउती सुजागरै भरी है गुन आगरे।—देव (शब्द०)।

सुजात¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुजाता] १ उत्तम रूप से जन्मा हुआ। जिसका जन्म उत्तम रूप से हुआ हो। २ विवाहित स्त्री पुरुष से उत्पन्न। ३ अच्छे कुल में उत्पन्न। ४ सुंदर। ५ अत्यंत मधुर (को०)। ६ अच्छी तरह वर्धित या बढ़ा हुआ। लंबा (को०)। ७ अच्छे ढंग से निर्मित किया हुआ (को०)।

सुजात²—संज्ञा पुं० [सं०] १ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। २ भरत के पुत्र का नाम। ३ साँड (बौद्ध)।

सुजातक—संज्ञा पुं० [सं०] सौंदर्य। सुंदरता।

सुजातका—संज्ञा स्त्री० [सं०] शालि धान्य। कुंकुमशालि

सुजातरिपु—संज्ञा पुं० [सं०] युधिष्ठिर।

सुजाता¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गोपीचंदन तुवरी सोरठ की मिट्टी। सौराष्ट्रमृत्तिका। २ उद्दालक ऋषि की पुत्री का नाम। ३ बुद्ध भगवान के समय की एक ग्रामीण कन्या जिसने उन्हें बुद्धत्व प्राप्त करने के उपरांत भोजन कराया था।

सुजाता²—वि० स्त्री० १ सुंदर। सौंदर्यशीला। २ सत्कुलीना (स्त्री)।

सुजाति¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम जाति। उत्तम कुल।

सुजाति²—संज्ञा पुं० वीतिहोत्र का एक पुत्र।

सुजाति³- वि० उत्तम जाति का। अच्छे कुल का।

सुजातिया¹—वि० [सं० सु+जाति+हिं० इया (प्रत्य०)] अच्छे कुल का। उत्तम जाति का।

सुजातिया²—संज्ञा पुं० [सं० स्व+जाति+इया (प्रत्य०)] अपनी जाति या वर्ग का। स्वजाति का। उ०—लखि बउबार सुजातिया अनख धरै मन नाहि। बड़े नैन लखि अपुन पै नैना सही सिहाहिं।—रतनहजारा (शब्द०)।

सुजातीय—वि० [सं०] उत्तम जाति का।

सुजान¹—वि० [सं० सज्ञान] १ समझदार। चतुर। सयाना। उ०—(क) करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।—रहीम (शब्द०)। (ख) दोबल कहा देति मोहिं सजनी तू तो बड़ी सुजान। अपनी सी मैं बहुतै कीन्हीं रहति न तेरी आन।—सूर (शब्द०)। (ग) ब्याही सो सुजान सील रूप वसुदेव जू को, विदित जहान जाकी अतिहि बड़ाई है।—गिरधर (शब्द०)। २ निपुण। कुशल। प्रवीण। ३ विज्ञ। पंडित। ४ सज्जन।

सुजान²—संज्ञा पुं० १ पति या प्रेमी। उ०—अरी नींद आवै चहै जिहि दृग बसत सुजान। देखी सुनी धरी कहूँ दो असि एक मयान।—रतनहजारा (शब्द०)। २. परमात्मा। ईश्वर। उ०—बार बार सेवक सराहना करत राम, तुलसी सराहैं रीति साहिब सुजान की। तुलसी (शब्द०)।

सुजानता—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुजान+ता (प्रत्य०)] सुजान होने का भाव या धर्म। सुजानपन। उ०—(क) केशोदास सरस सुजान की सी सेज किधौं सकल सुजानता की सखी सुखदानी है। किधौं मृगराज में नखिन को तो सेवै द्विज सविता की छवि ताकी कविता निधानी है।—केशव (शब्द०)। (ख) किधौं केशोदास कलगानता सुजानता निधान सो बचन निचिन्नता किशोरी की।—केशव (शब्द०)।

सुजानी—वि० [सं० सु + ज्ञान हिं० सुजान] विज्ञ। पंडित। ज्ञानी। उ०—(क) लखि विप्र सुजानी कहि मृदुवानी, अरे पुत्र ! यह काह सिख्यो।—विश्राम (शब्द०)। (ख) मैं ह्याँ ल्याई सुवन सुजानी। मुनि लखि हँसि गावत नंदरानी।—गिरधर (शब्द०)।

सुजामि—वि० [सं०] अनेक भाई बहनों तथा संबंधियों से समृद्ध [को०]।

सुजाव†—संज्ञा पुं० [सं० सुजात] पुत्र (डिं०)।

सुजावा†—संज्ञा पुं० [देश०] बैलगाड़ी में की वह लकड़ी जो पैंजनी और फड़ में जड़ी रहती है (गाड़ीवान)।

सुजिह्व¹—वि० [सं०] १ जिसकी जिह्वा या जीभ सुंदर हो। २ मधुरभाषी। मीठा बोलनेवाला।

सुजिह्व²—संज्ञा पुं० अग्नि। पावक। कृशानु।

सुजीर्ण—वि० [सं०] १ अच्छी तरह पका या पचा हुआ अन्न। २ (खाना) जो खूब पच गया हो। ३ जीर्णशीर्ण। जर्जर।

सुजीवती—संज्ञा स्त्री० [सं० सुजीवन्ती] पीली जीवंती। सुनहरी जीवंती।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यह बल-वीर्य-वर्धक, नेत्रों को हितकारी तथा वात, रक्त, पित्त, और दाह को दूर करनेवाली है।

पर्या०—स्वर्णलता। स्वर्णजीवती। हेमवल्ली। हेमपुष्पी। हेमा। सौम्या।

सुजीवित¹—संज्ञा पुं० [सं०] सुखमय जीवन [को०]।

सुजीवित²—वि० १ जिसका जीना सफल हो। २ सुखी जीवन व्यतीत करनेवाला [को०]।

सुजेय—वि० [सं०] जो सरलता से जीता जा सके।

सुजोग(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० सु + योग] १ अच्छा अवसर। उपयुक्त अवसर। सुयोग। २ अच्छा संयोग। अच्छा मेल।

सुजोधन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुयोधन] दे० 'सुयोधन'। उ०—चलत सुजोधन कटक हलत किलि विकल सकल महि। कच्छप भारन छपत नाग चिक्करत अहि।—गिरधर (शब्द०)।

सुजोर—वि० [सं० सु या फ़ा० शह + जोर] १ दृढ़। मजबूत। उ०—सरल बिसाल बिराजहि विद्रुम खंभ सुजोर। चारु पाटि पटि पुरट की भरकत मरकत भोर।—तुलसी (शब्द०)। २ शक्तिशाली। शहजोर। बलवान् (को०)।

सुज्ञ—वि० [सं०] १ जो अच्छी तरह जानता हो। भली भाँति जाननेवाला। सुविज्ञ। २ पंडित। विद्वान्।

सुज्ञान¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ उत्तम ज्ञान। अच्छी जानकारी। २. एक प्रकार का साम।

सुज्ञान²—वि० [सं०] ज्ञानी। पंडित। जानकार। सुविज्ञ।

सुज्येष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] भागवत के अनुसार शुंगवंशी राजा अग्निमित्र के पुत्र का नाम।

सुझाना¹—क्रि० स० [हिं० सूझना का प्रेर० रूप] ऐसा उपाय करना जिसमें दूसरे को सूझे। दूसरे के ध्यान या दृष्टि में लाना। दिखाना। बताना। जैसे,—आपको यह तरकीब उसी ने सुझाई है।

सुझाना²—क्रि० अ० दिखाई पड़ना। सूझना। समझ में आना। उ०—तब तें अब गाढ़ी परी मोको कछु न सुझाइ।—सूर० (राधा०), ५८९।

सुझाव—संज्ञा पुं० [हिं० सूझ + आव (प्रत्य०)] १ किसी को कुछ सुझाने की क्रिया। सुझाने या बताने का भाव। २ किसी नई बात, किसी विशेष पक्ष या अंग की ओर ध्यान दिलाना। ३ सुझाने या ध्यान दिलाने के लिये कही हुई बात। सलाह। मशविरा। राय।

सुटंक—वि० [सं० सुटङ्क] तीव्र। कर्कश। [illegible] [को०]।

सुटकुन, सुटुकुन—संज्ञा स्त्री० [अनु०] बाँस की कैन।

सुटुकना¹—क्रि० अ० [अनु०] १ दे० 'सुड़कना'। २ दे० 'सिकुड़ना'।

सुटुकना²—क्रि० स० [अनु०] सुटका मारना। चाबुक लगाना। उ०—नील महीधर सिखर सम देखि बिसाल बराहु। चपरि चलेउ हय सुटुकि नृप हाँकि न होइ निबाहु।—तुलसी (शब्द०)।

सुटुकना³†—क्रि० अ० [अनु०] चुपके या धीरे से भाग जाना। सरकना।

सुठ(पु)—वि० [सं० सुष्ठु] दे० 'सुठि'। उ०—राम घनश्याम अभिराम सुठ कामहु ते ताते हो परशुराम क्रोध मत कीजिए।—हनुमन्नाटक (शब्द०)।

सुठहर†—संज्ञा पुं० [सं० सु + स्थान, हिं० ठहर (=जगह)] अच्छा स्थान। बढ़िया जगह। उ०—आनि मुदित नृप बालिनि तिन से देखि पूत को साज सुठहर बन लाल्यो।—देवस्वामी (शब्द०)।

सुठहरे†—क्रि० वि० [हिं० सुठहर] अच्छी जगह पर। अच्छे स्थान पर।

सुठान(पु)—क्रि० वि० [हिं० सु + ठान (=स्थान)] अच्छे ढंग से। भली प्रकार से। उ०—भौंह कमान सँधान सुठान जे नारि बिलोकनि बान ते बाँचे।—तुलसी ग्रं०, पृ० २२६।

सुठार(पु)†—वि० [सं० सुष्ठु, प्रा० सुट्ठु] [वि० स्त्री० सुठारी] सुडौल। सुंदर। उ०—(क) सुठि सुठार ठोढ़ी अति सुंदर सुंदर ताको सार। चितवन चुअत सुधारस मानो रहि गई बूँद मझार।—सूर (शब्द०)। (ख) चपल नैन नासा बिच शोभा अधर सुरंग सुठार। मनो मध्य खंजन सुक बैठ्यो लुब्ध्यो बिंब बिचार।—सूर (शब्द०)। (ग) जावक रचित अँगुरियन्ह मृदुल सुठारी हो। प्रभु कर चरन पखालत अति सुकुमारी हो।—तुलसी ग्रं०, पृ० ५।

सुठि¹†—वि० [सं० सुष्ठु] १ सुंदर। बढ़िया। अच्छा। उ०—(क) तून सरासन बान धरे तुलसी बन मारग में सुठि सोहैं।—तुलसी (शब्द०)। (ख) संग नारि सुकुमारि सुभग सुठि राजति बिन भूषन बसति।—तुलसी (शब्द०)। (ग) बहुत प्रकार किए सब व्यंजन अमित बरन मिष्ठान। अति उज्वल कोमल सुठि सुंदर देखि महरि मन मान।—सूर०,

१०।८६। २ अतिशय। अत्यत। बहुत। उ०—सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारू। पाके छत जनु लाग अँगारू।—मानस, २।१६१।

सुठि(पु)२—अव्य० [स० सुष्ठु] पूरा पूरा। बिलकुल। उ०—हिए जो आखर तुम लिखे से सुठि लीन्ह परान।—जायसी (शब्द०)।

सुठोना(पु)†—वि० [हिं०] दे० 'सुठि'। उ०—रसखानि निहारि सकै जु सम्हारि कै को तिय है वह रूप सुठोनो।—रसखान (शब्द०)।

सुडकना—क्रि० स० [अनु०] १ किसी वस्तु जैसे, नस्य, जल आदि को नाक से भीतर खीचना। २ नाक की रेंट को बाहर छिनकने के बजाय ऊपर खीच लेना। जैसे—नाक सुडक जाना। ३ किसी तरल पदार्थ को पी जाना।

सुडसुड—सज्ञा स्त्री० [अनुध्व०] नली आदि द्वारा जल मे वायु के घुमने से होनेवाली आवाज। गुडगुड।

सुडसुडाना—क्रि० स० [अनु०] सुडसुड शब्द उत्पन्न करना। जैसे, नाक सुडसुडाना। हुक्का सुडसुडाना।

सुडीन, सुडीनक—सज्ञा पु० [स०] पक्षियो के उडने का एक ढग या प्रकार।

सुड़कना—क्रि० स० [अनु०] दे० 'सुडकना'।

सुडौल—वि० [स० सु + हिं० डौल] सुदर डौल या आकार का। जिसकी बनावट बहुत अच्छी हो। जिसके सब अग ठीक और बराबर हो। सुदर।

सुड्ढा†—सज्ञा पुं० [देश०] धोती की वह लपेट जिसमे रुपया पैसा रखते हैं। अटी। आँट।

सुड्ढी—सज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'सुड्ढा'।

सुढग१—सज्ञा पु० [स० सु + हिं० ढग] १ अच्छा ढग। अच्छी रीति। २ सुघडता। सुदरता।

सुढग२—वि० १ अच्छे रग का। अच्छी चाल या स्वभाव का। २. उत्तम रीति या ढग से युक्त। उ०—मिरदग औ मुहचग चग सुढग सग बजावही।—गिरधर (शब्द०)। ३ सुदर। सुघड। उ०—अग उतग सुढग अति रग देखि के दग। सह उमग अरि भग कर जग मग मातग।—गिरधर (शब्द०)।

सुढर१—वि० [स० सु + हिं० ढलना] प्रसन्न और दयालु। जिसकी अनुकपा हो। अनुकूल। उ०—(क) तुलसी सराहै भाग कौसिक जनक जू के विधि के सुढर होत सुढर सुहाय के।—तुलसी (शब्द०)। (ख) तुलसी सबै सराहत भूपहिं, भले पैंत पासे सुदर ढरे री।—तुलसी (शब्द०)।

सुढर२—वि० [हिं० सुघढ] सुदर। सुडौल। उ०—मोहन चढाइ कोई कहूँ चित्त चढयो चढी सुढर सिढोनि मूढ चढी ये सुहाती जे।—देव (शब्द०)।

सुढार(पु)†—वि० [स० सु + हिं०, ढलना] [वि० स्त्री० सुढारी] १ सुदर ढला या बना हुआ। उ०—गृह गृह रचे हिंडोलना महि गच काच सुढार। चित्र विचित्र चहूँ दिसि परदा फटिक पगार।—तुलसी (शब्द०)। २ सुदर। सुडौल। उ०—हिय मनिहार सुढार चार हय सहित सुरथ चढि। निसित धार तरवार धरि जिय जय विचार मढि।—गिरधर (शब्द०)। (ख) दीरघ मोल कह्यो व्यापारी रहे ठगे से कौतुकहार। कर ऊपर लै राखि रहे हरि देत न मुक्ता परम सुढार।—सूर (शब्द०)। (ग) लखि बिँदुरी पिय भाल भाल तुअ खौरि निहारी। लखि तुअ जूरा उनकी बेनी गुही सुढारी।—अविकादत्त (शब्द०)।

सुढारु(पु)—वि० [हिं० सु + ढलना] दे० 'सुढार'। उ०—घर बारन असवार चारु बखतर सुढारु तन। सग लसत चतुरग करन रनरग समुद मन।—गिरधर (शब्द०)।

सुणघड़िया—सज्ञा पुं० [हिं० सोना + घडना (= गढना)] सुनार। (डिं०)।

सुणना(पु)†—क्रि० स० [हिं० सुनना] श्रवण करना। दे० 'सुनना'। उ०—महिमा नाँव प्रताप की सुणौ सरवण चित्त लाइ। रामचरण रसना रटी भ्रम सकल झड जाइ।

सुतगम—सज्ञा पुं० [स० सुतङ्गम] पुत्रवान् पिता (को०)।

सुतत(पु)—वि० [स० स्वतन्त्र, प्रा० सु + तत] स्वतत्र। स्वाधीन। बधनहीन। स्वच्छद। उ०—बँधुआ को जैसे लखत कोई मनुप सुतत।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)।

सुततर(पु)†—वि० [स० स्वतन्त्र] दे० 'स्वतत्र'।

सुततु -सज्ञा पु० [स० सुतन्तु] १ शिव। विष्णु। ३ एक दानव का नाम।

सुतत्र(पु)१—वि० [स० स्वतन्त्र] दे० 'स्वतत्र'। उ०—(क) महावष्टि चलि फटि कियारी। जिमि सुतत्र भए बिगरहिं नारी।—तुलसी (शब्द०)। (ख) या ब्रज मैं हौं बसत ही हेली आइ सुतत्र। हेरन मैं कछु पढि दियौ मोहन मोहन मत्र।—रतनहजारा (शब्द०)।

सुतत्र२—क्रि० वि० स्वतत्रतापूर्वक। स्वच्छदतापूर्वक। उ०—विधि लिख्यो शोधि सुतत्र। जनु जपाजप के मत्र।—केशव (शब्द०)।

सुतंत्र३—वि० [सं० सुतन्त्र] १ जिसका तत्र, सेना आदि ठीक हो। जिसके पास अच्छा सैन्य बल हो। २ तत्र का ज्ञाता। सिद्धातो का जानकार।

सुतंत्रि—सज्ञा पु० [स० सुतन्त्रि, सुतन्त्री] १ वह जो तार के बाजे (वीणा आदि) बजाने मे प्रवीण हो। वह जो तत्र वाद्य अच्छी तरह बजाता हो। २ वह जो कोई बाजा अच्छी तरह बजाता हो। ३ वह जिसका स्वर मधुर और लय ताल से युक्त हो।

सुतभर -सज्ञा पु० [स० सुतम्भर] एक प्राचीन वैदिक ऋषि का नाम।

सुत१—सज्ञा पु० [स०] १ पुत्र। आत्मज। बेटा। लडका। २ दसवे मनु का पुत्र। ३ जन्मकुडली मे लग्न से पाँचवाँ घर। ४ नरेश। भूपति। राजा (को०)। ५ निचोडा हुआ सोमरस (को०)। ६ सोम याग (को०)। ७ सोमवलि (को०)।

सुत[2]—वि० १ पार्थिव। २ उत्पन्न। जात। ३ उडेला हुआ (को०)। ४ निचोडकर निकाला हुआ (को०)।

सुत†[3]—संज्ञा पुं० [?] बीस की संख्या। कोडी।

सुतकारी†—संज्ञा स्त्री० [देश०] स्त्रियो के पहनने की जूती।

सुतजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पौत्री। पोती [को०]।

सुतजीवक—संज्ञा पुं० [सं०] पुत्रजीव नाम का वृक्ष। पितिजिया। विशेष दे० 'पुत्रजीव'।

सुतडा—संज्ञा पुं० [हिं० सूत + डा (प्रत्य०)] दे० 'सुतरा'।

सुतत्व—संज्ञा पुं० [सं०] सुत का भाव या धर्म।

सुतदा[1]—वि० स्त्री० [सं०] सुत या पुत्र देनेवाली।

सुतदा[2]—संज्ञा स्त्री० दे० 'पुत्रदा' (लता)।

सुतनय—वि० [सं०] उत्तम संतानवाला।

सुतना[1]—संज्ञा पुं० [?] दे० 'सूथन'।

सुतना[2]—क्रि० अ० [सं० शयन] दे० 'सूतना'।

सुतनिर्विशेष—वि० [सं०] पुत्रवत्। पुत्रकल्प। २. जिसका पुत्र के समान पालन पोषण किया गया हो [को०]।

सुतनु[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक गधर्व का नाम। २ उग्रसेन के एक पुत्र का नाम। ३ एक वदर का नाम।

सुतनु[2]—वि० १ सुंदर शरीरवाला। २ अत्यंत सुकुमार। बहुत ही क्षीण। पतला (को०)। ३ कृशकाय। दुर्वलशरीर (को०)।

सुतनु[3]—संज्ञा स्त्री० १ सुंदर शरीरवाली स्त्री। कृशांगी। २ आहुक की पुत्री और अक्रूर की पत्नी का नाम। ३ उग्रसेन की एक कन्या का नाम। ४ वसुदेव की एक उपपत्नी का नाम।

सुतनुज—वि० [सं०] दे० 'सुतनय'।

सुतनुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुतनु होने का भाव। २. शरीर की सुंदरता।

सुतनू—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुतनु'[3] [को०]।

सुतप[1]—वि० [सं०] सोम पान करनेवाला।

सुतप[2]—संज्ञा पुं० [सं० सुतपस्] तप। तपश्चर्या [को०]।

सुतपस्वी—वि० [सं० सुतपस्विन्] अत्यंत तपस्या करनेवाला। बहुत अच्छा और बडा तपस्वी।

सुतपा[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुतपस्] १ सूर्य। २ एक मुनि का नाम। ३ रौच्य मनु के एक पुत्र का नाम। ४ विष्णु। ५ कठोर तपस्या। दीर्घ साधना (को०)।

सुतपा—वि० १ कठोर तपस्या की साधना करनेवाला वानप्रस्थाश्रमी। २ जो अतिशय तापयुक्त हो [को०]।

सुतपादिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटी जाति की एक प्रकार की हंसपदी नाम की लता।

सुतपेय—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ मे सोम पीने की क्रिया। सोमपान।

सुतयाग—संज्ञा पुं० [सं०] वह यज्ञ जो पुत्र की इच्छा से किया जाता है। पुत्रकाम यज्ञ। पुत्रेष्टि यज्ञ।

सुतर†[1]—संज्ञा पुं० [फा० शुतुर] दे० 'शुतुर'। उ०—सबके आगे सुतर सवार अपार शृंगार बनाए। धरे जमूरक तिन पीठिन पर सहित निसान सुहाये।—रघुराज (शब्द०)। (ख) सरि चले सुतर रथ एक राह। वीसल तड़ाग दिय दारिगाह।—पृ० रा०, १।४२०।

सुतर[2]—वि० [सं०] सुख से तैरने या पार करने योग्य। जो सुख या आराम से पार किया जा सके। (नदी आदि)।

सुतरण—वि० [सं०] सरलता से पार करने योग्य।

सुतरनाल—संज्ञा स्त्री० [फा० शुतुरनाल] दे० 'शुतरनाल'। उ०— तिमि घरनाल और करनालैं सुतरनाल जजालैं। गुरगुराव रहँकलै भले तहँ लागे विपुल वयालैं।—रघुराज (शब्द०)।

सुतरसवार—संज्ञा पुं० [फा० शुतुरसवार] ऊँट सवार। साँडनी सवार।

सुतरा—अव्य० [सं० सुतराम्] १ अत। इसलिये। निदान। २ अपितु। और भी। किं बहुना। ३ अगत्या। लाचार। ४ अत्यंत। ५ अवश्य।

सुतरा—संज्ञा पुं० [हिं० सूत + रा (प्रत्य०)] नाखून के ऊपर या बगल के चमडे का सूत की तरह महीन छोटा अंश।

सुतरी(पु)[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० तुरही] तुरही। तूर। उ०—नौबत भरत द्वार द्वारन मे शख सुतरि सहनाई। औरहु विविध मनोहर बाजे बजत मधुर सुर छाई।—रघुराज (शब्द०)।

सुतरी[2]—संज्ञा पुं० [देश० या फा० शुतुर, हिं० सुतर (= ऊँट)] वह बैल जिसका ऊँट का सा रंग हो। (यह मध्यम श्रेणी का मजबूत और तेज माना जाता है)।

सुतरी[3]—संज्ञा स्त्री० [देश०] वह लकडी जो पाई मे साँथी अलग करने के लिये साँथी के दोनो तरफ लगी रहती है। इसे जुलाहो की परिभाषा मे 'सुतरी' कहते हैं।

सुतरी[4]—संज्ञा स्त्री० [सं० सूत्रकार] दे० 'सुनारी'[2]।

सुतरी[5]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूत + री (प्रत्य०)]। दे० 'सुतली'।

सुतरेशाही—संज्ञा पुं० [सुथरा शाह (= एक संत का नाम)] दे० 'सुथरे शाही'।

सुतर्कारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक लता। सौनैया। घघर बेल। वेदाल। विशेष दे० 'देवदाली'।

सुतर्दन—संज्ञा पुं० [सं० सुतर्द्दन] कोकिल पक्षी। कोयल।

सुतर्मा—वि० [सं० सुतर्मन्] तरण करने या पार करने योग्य [को०]।

सुतल—संज्ञा पुं० [सं०] १ सात पाताल लोको मे से एक (किसी पुराण के मत से दूसरा और किसी के मत से छठा) लोक।

विशेष—भागवत के अनुसार इस पाताल लोक के स्वामी विरोचन के पुत्र बलि हैं। देवीभागवत मे लिखा है कि विष्णु भगवान् ने बलि को पाताल भेजकर ससार की सारी संपदा दी थी और स्वयं उसके द्वार पर पहरा देते थे। एक बार रावण ने इसमे प्रवेश करना चाहा था, पर विष्णु भगवान् ने उसे अपने पैर के अँगूठे से हजारो योजन दूर फेंक दिया। विशेष दे० 'लोक'[1]।

२ किसी बडे भवन की नीव (को०)।

**सुतली**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूत + ली (प्रत्य०)] रूई, सन या इसी प्रकार के और रेशों के सूतों या डोरों को एक में बटकर बनाया हुआ लंबा और कुछ मोटा खंड जिसका उपयोग चीजें बाँधने, कुएँ से पानी खींचने, पलंग बुनने तथा इसी प्रकार के और कामों में होता है। रस्सी। डोरी। सुनरी।

**सुतवत्[1]**—वि० [सं०] १ पुत्रवाला। जिसके पुत्र हों। २ पुत्र के समान। पुत्रतुल्य।

**सुतवत्[2]**—संज्ञा पुं० पुत्र का पिता।

**सुतवत्सल**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सुतवत्सला] वह पिता जो पुत्र के प्रति वात्सल्य से युक्त हो [को०]।

**सुतवस्करा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सात पुत्र प्रसव करनेवाली स्त्री। वह स्त्री जिसके सात पुत्र हैं।

**सुतवान्**—वि०, संज्ञा पुं० [सं० सुतवत्] दे० 'सुतवत्'।

**सुतवाना**—क्रि० स० [हिं० सुताना] दे० 'सुलवाना'। उ०—फिर सेजचतुर को अच्छा बिछौना करवा पलंग पर सुतवाया।—लल्लू (शब्द०)।

**सुतश्रेणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मूसाकानी। मूषिकपर्णी। विशेष दे० 'मूसाकानी'।

**सुतसुत**—संज्ञा पुं० [सं०] पुत्र का लड़का। पौत्र [को०]।

**सुतसोम**—संज्ञा पुं० [सं०] १ भीमसेन के एक पुत्र का नाम। २ वह जो सोम का सेवन करता हो। सोम तर्पण करनेवाला।

**सुतसोमा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्रीकृष्ण की एक पत्नी [को०]।

**सुतस्थान**—संज्ञा पुं० [सं०] जन्मकुंडली में लग्न से पंचम स्थान।

विशेष—फलित ज्योतिष के अनुसार सुतस्थान पर जितने ग्रहों की दृष्टि रहती है, उतनी ही संतानें होती हैं। पुल्लिंग ग्रहों की दृष्टि से पुत्र और स्त्री ग्रहों की दृष्टि से कन्याएँ होती हैं।

**सुतर**—संज्ञा पुं० [सं० सूत्रधर, प्रा० सूत + हर] दे० 'सुतर'। उ०—सुधरि मुबारक तिय बदन परी अलक अभिराम। मनो सौम पर सूत ह्वै राखी सुतहर काम।—मुबारक (शब्द०)।

**सुतहा[1]**—संज्ञा पुं० [हिं० सूत + हा (प्रत्य०)] सूत का व्यापारी। सूत बेचनवाला।

**सुतहा**—वि० सूत का। सूत संबंधी।

**सुतहा[3]**—संज्ञा पुं० [सं० शुक्ति] दे० 'सुतही'।

**सुतहार**—संज्ञा [सं० सूत्रधार, प्रा० सुत्तधार, सुत्तहार] दे० 'सुतार[1]'। उ०—कनक रतनमय पालनो रच्यो मनहुँ मार सुतहार। विविध खेलौना किंकिनी लागे मंजुल मुकुताहार।—तुलसी (शब्द०)।

**सुतहिबुक योग** संज्ञा पुं० [सं०] विवाह का एक योग।

विशेष—विवाह के समय लग्न में यदि कोई दोष हो और सुतहिबुक योग हो, तो सारे दोष दूर हो जाते हैं।

**सुतही**—संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ति] दे० 'सुतुही'।

**सुतहौनिया**—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सुथौनिया'।

**सुता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लड़की। कन्या। पुत्री। बेटी। २ सखी। सहेली। (डिं०)।

**सुतात्मज**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सुतात्मजा] १ लड़के का लड़का। पोता। २ लड़की का लड़का। नाती।

**सुतादान**—संज्ञा पुं० [सं०] कन्यादान [को०]।

**सुतान**—वि० [सं०] मधुर स्वरवाला। सुस्वर। सुकंठ [को०]।

**सुताना†**—क्रि० स० [हिं० सुलाना] दे० 'सुलाना'।

**सुतापति**—संज्ञा पुं० [सं०] कन्या का पति। दामाद। जामाता।

**सुतार[1]**—संज्ञा पुं० [सं० सूत्रकार, प्रा० सुत्तआर>सुत्तार] १ बढ़ई। २ शिल्पकार। कारीगर।

**सुतार[2]**—वि० [सं० सु + तार] अच्छा। उत्तम। उ०—कनक रतन मणि पालनौ अति गढ़नौ काम सुतार। विविध खिलौना भाँति भाँति के गजमुक्ता बहुधार।—सूर (शब्द०)।

**सुतार†[3]**—संज्ञा पुं० सुभीता। उपयुक्त समय। सुविधा।

क्रि० प्र०—बैठना।

**सुतार[4]**—वि० [सं०] १ अत्यंत उज्वल। २ जिसकी आँख की पुतलियाँ सुंदर हों। ३ अत्यंत उच्च।

**सुतार[5]**—संज्ञा पुं० १ एक प्रकार का सुगंधिद्रव्य। २ एक आचार्य का नाम। ३ सांख्य दर्शन के अनुसार एक प्रकार की सिद्धि। गुरु से पढ़े हुए अध्यात्मशास्त्र का ठीक ठीक अर्थ समझना।

**सुतार[6]**—संज्ञा पुं० [देश०] हुदहुद नामक पक्षी।

**सुतारका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्धों की चौबीस शासन देवियों में से एक देवी का नाम।

**सुतारा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सांख्य के अनुसार नौ प्रकार की तुष्टियों में से एक। २ सांख्य के अनुसार आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक। दे० 'सुतार[5]'। ३ एक आभूषण।

**सुतारी[1]**—संज्ञा स्त्री० [सं० सूत्रकार] १ मोचियों का सूआ जिससे वे जूता सीते हैं। २ सुतार या बढ़ई का काम।

**सुतारी[2]**—संज्ञा पुं० [हिं० सुतार] शिल्पकार। कारीगर। उ०—हरिजन मारग को काठरा आप सुतारी आहि। मुएहू न त्यागत टेक निज ताहू ते छोड्यो नाहि।—विश्राम (शब्द०)।

**सुतार्थी**—वि० [सं० सुतार्थिन्] पुत्र की कामना करनेवाला। जिसे पुत्र की अभिलाषा हो। पुत्रार्थी।

**सुताल**—संज्ञा पुं० [सं०] संगीत में ताल का भेद [को०]।

**सुताली**—संज्ञा स्त्री० [सं० सूत्रकार] दे० 'सुतारी[1]'।

**सुतासिधु**—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धुसुता] लक्ष्मी। सिंधुसुता। उ०—प्राकृत होई नीर में बहुरि बुडका दई सहित सुतासिंधु तहँ दरस पाए।—सूर० (राधा०), प० २५७७।

**सुतासुत**—संज्ञा पुं० [सं०] पुत्री का पुत्र। दौहित्र। नाती।

**सुतितिडा, सुतितिडी**—संज्ञा स्त्री० [सुतिन्तिडा, सुतिन्तिडी] इमली [को०]।

**सुति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोमरस का निष्कषण [को०]।

**सुतिअ**—संज्ञा स्त्री० [सं० सु + हिं० तिय] सुंदर स्त्री। उ०—भगति सुतिअ कल करन बिभूषन।—मानस, १।२०।

**सुतिक्त[1]**—संज्ञा पुं० [सं०] पित्तपापड़ा। पर्पटक।

**सुतिक्त**[2]—वि० जो बहुत तिक्त हो। अधिक तीता।

**सुतिक्तक**—संज्ञा पुं० [सं०] १ चिरायता। २ फरहद। पारिभद्र। ३ पित्तपापड़ा।

**सुतिक्ता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तोरई। कोशातकी। २ सलई। शल्लकी।

**सुतिन**Ⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० सुतनु] सुंदर बाला। रूपवती स्त्री। (क्व०)। उ०—जो नहि देतो अतन कहुँ दृगन हरवली आय। मन मानस जे सुतिन के को सर करतो जाय।—रतनहजारा। (शब्द०)।

**सुतिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसके पुत्र हो। पुत्रवती।

**सुतिय**Ⓟ संज्ञा स्त्री० [सं० सु + हिं० तिया] सुंदर स्त्री।

**सुतिया**—संज्ञा स्त्री० [देश०] सोने या चाँदी का एक गहना जो स्त्रियाँ गले में पहनती हैं। हँसली।

**सुतिया**—संज्ञा पुं० [हिं० सु + तिया] सुंदर स्त्री।

**सुतिहार**Ⓟ†—संज्ञा पुं० [सं० सूत्रकार, सूत्रधार, प्रा० सुत्तहार] दे० 'सुतार[1]'। उ०—(क) मोतिन भालरि नाना भाँति खिलौना रचे विश्वकर्मा सुतिहार। देखि देखि किलकत दँतिला दो राजत क्रीडत विविध विहार।—सूर (शब्द०)। (ख) विश्वकर्मा सुतिहार श्रुतिधरि सुलभ सिलय दिखावनो। तेहि देखे त्रय ताप नासै व्रजवधू मनभावनो।—सूर (शब्द०)।

**सुती**—संज्ञा पुं० [सं० सुतिन] १ वह जो पुत्र की इच्छा करता हो। २ वह जिसे पुत्र हो। पुत्रवाला।

**सुतीक्षण**Ⓟ—संज्ञा पुं० [सं० सुतीक्ष्ण] दे० 'सुतीक्ष्ण[1]'। उ०—दरसन दियो सुतीक्षण गौतम पचवटी पग धारे। तहाँ दुष्ट सूर्पनखा नारी करि बिन नाक उधारे।—सूर (शब्द०)।

**सुतीक्षण**Ⓟ—वि० अत्यंत तीक्ष्ण। अत्यंत नुकीला।

**सुतीक्ष्ण**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ अगस्त्य मुनि के भाई जो वनवास के समय श्रीरामचंद्र से मिले थे। २ सहिंजन वृक्ष। शोभांजन।

**सुतीक्ष्ण**[2]—वि० १, अत्यंत तीक्ष्ण। बहुत तेज। २ अत्यंत तीखा (को०)। ३ अत्यंत पीडाकारक।

**सुतीक्ष्णक**—संज्ञा पुं० [सं०] मुष्कक या मोखा नामक वृक्ष।

**सुतीक्ष्णका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरसों। सर्षप।

**सुतीक्ष्ण दशन**—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

**सुतीखन**Ⓟ—संज्ञा पुं० [सं० सुतीक्ष्ण, प्रा० सु + तिक्खन] दे० 'सुतीक्ष्ण'। उ०—तीखन तन को कियो सुतीखन को द्विज तुलसी।—सुधाकर (शब्द०)।

**सुतोच्छन**Ⓟ—संज्ञा पुं० [सं० सुतीक्ष्ण] दे० 'सुतीक्ष्ण'।

**सुतीर्थ**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुपथ। २ स्नान का उत्तम स्थान। ३ शिव। ४ पूज्य पात्र। ५ योग्य आचार्य।

**सुतीर्थ**[2]—वि० [सं०] सहज में पार करने योग्य।

**सुतीर्थराज**—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

**सुतुंग**[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुतुङ्ग] १ नारियल का पेड़। २ ग्रहों का उच्चांश।

विशेष—ज्योतिष के अनुसार ग्रहों के सुतुंग स्थान पर रहने से शुभ फल होता है।

**सुतुंग**[2]—वि० अत्यंत उच्च। बहुत ऊँचा।

**सुतुआ**—संज्ञा पुं० [हिं० सुतुही] [स्त्री० सुतुई] दे० 'सुतही'।

**सुतुमुल**—वि० [सं०] बहुत जोर का। अत्यंत घोर [को०]।

**सुतुस**—वि० [सं०] ठीक उच्चारण करने या बोलनेवाला [को०]।

**सुतुही**†—संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ति] १ सीपी, जिससे प्राय छोटे बच्चों को दूध पिलाते हैं। वह सीप जिसके द्वारा पोस्ते मे अफीम खुरची जाती है। सुतुआ। सुतहा। सूती। ३ वह सीप जिससे अचार के लिए कच्चा आम छीला जाता है। सीपी।

विशेष—इसे बीच में घिसकर इसके तल में छेद कर लेते हैं, और उसी छेद के चारों ओर के तेज किनारों मे आम, आलू आदि छीलते हैं।

**सुतून**—संज्ञा पुं० [फा०] खंभा। स्तंभ।

**सुतूर**—संज्ञा स्त्री० [अ०] सतर का बहुवचन। लकीरें [को०]।

**सुतेकर**—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो यज्ञ करता हो। यज्ञकर्ता। यज्ञकारी। ऋत्विक्।

**सुतेजन**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ धामिन। धन्वन वृक्ष। २ बहुत नुकीला बाण या तीर।

**सुतेजन**—वि० १ नुकीला। २ तेज। धारदार।

**सुतेजा**[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुतेजस्] १ जैनों के अनुसार गत उत्सर्पिणी के दसवें अर्हत् का नाम। २ गृत्समद का पुत्र। ३ हुरहुर। आदित्यभक्ता।

**सुतेजा**[2]—वि० १ बहुत तेज या धारदार। २ अत्यंत दीप्त या ज्योतित (को०)। ३ अत्यंत शक्तिशाली (को०)।

**सुतेजित**—वि० [सं०] दे० 'सुतेजन'।

**सुतेमन**—संज्ञा पुं० [सं० सुतेमनस्] एक वैदिक आचार्य का नाम।

**सुतैला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] महाज्योतिष्मती नामक एक लता। विशेष दे० 'मालकँगनी' [को०]।

**सुतोत्पत्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुत्रजन्म [को०]।

**सुतोर**—संज्ञा पुं० [फा०] १ वृष। बैल। २. उष्ट्र। ऊँट। ३ अश्व। घोड़ा [को०]।

**सुतोष**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] संतोष। सब्र।

**सुतोष**[2]—वि० जिसका संतोष हो गया हो। संतुष्ट। प्रसन्न।

**सुतोषण**—संज्ञा पुं० [सं०] सम्यक् तोष या तुष्टि [को०]।

**सुत्ता**†—वि० [हिं० सोना] सोया हुआ। सुषुप्त। (पश्चिम)।

**सुत्तुर**†—संज्ञा पुं० [हिं० सूत या फा० शुतुर] जुलाहों के करघे का एक बाँस जिसमें कंघी बँधी रहती है। कुलवाँसा।

**सुत्थन सुत्थना**—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सूथन'।

**सुत्य**—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ के लिये सोमरस निकालने का दिन।

सुत्या—संज्ञा स्त्री० [स०] १ जनन । उत्पत्ति । प्रसव । २ दे० 'सूत्या' ।
यौ०—सुत्याकाल = दे० 'सुत्य' ।

सुत्रामा—संज्ञा पु० [स० सुत्रामन्] १ इंद्र । २ पुराणानुसार एक मनु का नाम । ३ वह जो उत्तम रूप से रक्षा करता हो ।

सुत्रामा—संज्ञा स्त्री० पृथ्वी [को०] ।

सुथना—संज्ञा पु० [देश०] दे० 'सूथन' ।

सुथनिया†—संज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'सुथनी' ।

सुथनी—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ स्त्रियों के पहनने का एक प्रकार का ढीला पायजामा । सूथन । २ एक कद । पिंडालु । रतालू ।

सुथरा—वि० [स० स्वच्छ, सुस्थल या स्वस्थ] [वि० स्त्री० सुथरी] स्वच्छ । निर्मल । साफ । उ०—(क) लरिकाई कहुँ नेक न छाँडत सोई रह्यो सुथरी सेजरियाँ । आए हरि यह बात सुनत ही धाइ लिये यशुमति महतरियाँ ।—सूर (शब्द०) । (ख) मोतिन माँग भरी सुथरी लसै कठ सिरीगर सी अवगाही ।—सुदरीसर्वस्व (शब्द०) ।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग प्राय 'साफ' शब्द के साथ होता है । जैसे,—साफ सुथरा मकान । साफ सुथरी भाषा = परिष्कृत भाषा ।

सुथराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुथरा + ई (प्रत्य०)] सुथरापन । स्वच्छता निर्मलता । सफाई ।

सुथरापन—संज्ञा पु० [हिं० + पन (प्रत्य०)] दे० 'सुथराई' ।

सुथराशाह—संज्ञा पु० [हिं०] एक सत जो गुरुनानक के शिष्य थे ।

सुथरेशाही—संज्ञा पु० [सुथराशाह (महात्मा)] १ गुरु नानक के शिष्य सुथराशाह का चलाया सप्रदाय । २ उस सप्रदाय के अनुयायी या माननेवाले जो प्राय सुथराशाह और गुरुनानक आदि के बनाए हुए भजन गाकर भिक्षा माँगते हैं ।

सुथौनिया†—संज्ञा पु० [देश०] मस्तूल के उपरी भाग मे वह छेद या घर जिसमे पाल लगाने के समय उसकी रस्सी पहनाई जाती है । (लश०) ।

सुदड—संज्ञा पु० [स० सुदण्ड] बेत । बेंत्र ।

सुदडिका—संज्ञा स्त्री० [स० सुदण्डिका] १ गोरख इमली । गोरक्षी । ब्रह्मदंडी । अजदडी ।

सुदत¹—संज्ञा पु० [स० सुदन्त] १ वह जो अभिनय करता हो । नट । २ नर्तक । नाचनेवाला । ३ सुदर दाँत (को०) ।

सुदत²—वि० सुदर दाँतोवाला ।

सुदता¹—संज्ञा स्त्री० [स० सुदन्ता] पुराणानुसार एक अप्सरा का नाम ।

सुदता—वि० स्त्री० सुदर दाँतोवाली ।

सुदती—संज्ञा स्त्री० [स० सुदन्ती] १ हथिनी । हस्तिनी । २ वायव्य कोण के एक दिग्गज (पुष्पदत) की हथिनी का नाम ।

सुदभ—वि० [स० सुदम्भ] दे० 'सुदम' ।

सुदशित—वि० [स०] १ अच्छी तरह डँसा हुआ । २ शस्त्र आदि से युक्त । ३ बहुत सघन, घन [को०] ।

सुदष्ट्र¹—संज्ञा पु० [स०] १ कृष्ण का एक पुत्र । २ सबर का एक पुत्र । ३ एक राक्षस का नाम

सुदष्ट्र²—वि० सुदर दाँतोवाला ।

सुदष्ट्रा—संज्ञा स्त्री० [स०] एक किन्नरी का नाम ।

सुदक्षिण¹—संज्ञा पु० [स०] १ पौड्रक राजा का पुत्र । २ विदर्भ का एक राजा ।

सुदक्षिण²—वि० १ निष्कपट । खरा । २ उदार । यज्ञ मे बहुत दक्षिणा-देनेवाला । ३ अत्यत चतुर । ४ अत्यत मृदुल स्वभाव-वाला [को०] ।

सुदक्षिणा—संज्ञा स्त्री० [स०] १ राजा दिलीप की पत्नी का नाम । २ पुराणानुसार श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम ।

सुदग्धिका—संज्ञा स्त्री० [स०] कुरुह नामक वृक्ष । दग्धा ।

सुदच्छिन—संज्ञा पु० [स० सुदक्षिण] दे० 'सुदक्षिण' । उ०—चलेउ सुदच्छिन दच्छ समर जुध दच्छिन दच्छिन ।— गिरधर (शब्द०) ।

सुदत्—वि० [स०] [वि० स्त्री० सुदती] सुदर दाँतोवाला ।

सुदती—वि० [स०] सुदर दाँतोवाली स्त्री । सुदता । सुदरी । उ०—(क) धीर धरो सोच न करो मोद भरो यदुराय । सुदति सँदेसे सनि रही अधरनि मैं मुसुकाय ।—शृं० सत (शब्द०) । (ख) भौन भरी सब सपति दपति श्रीपति ज्यो सुख सिधु मे सोवै । देव सो देवर प्राण सो पूत सुकौन दशा सुदती जिहि रोवै ।—केशव (शब्द०) ।

सुदम—वि० [स०] जो सुकरता से पराजित या वशीभूत हो सके [को०] ।

सुदमन—संज्ञा पु० [स०] आम । आम्रवृक्ष ।

सुदरसन(पु)¹—संज्ञा [स० सुदर्शन] दे० 'सुदर्शन' । उ०—नकुल सुदरसन दरसनी क्षेमकरी चुपचाप । दस दिसि देखत सगुन सुभ पूजहिं मन अभिलाप ।—तुलसी (शब्द०) ।

सुदरसन²—संज्ञा पु० दे० 'सुदर्शन' ।

सुदरसनपानि(पु)—संज्ञा पु० [स० सुदर्शनपाणि] दे० 'सुदर्शन पाणि' । उ०—ज्यो धाए गजराज उधारन सपदि सुदरसनपानि ।—तुलसी (शब्द०) ।

सुदर्भा—संज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का तृण जिसे इक्षुदर्भा कहते हैं ।

सुदर्श—वि० [स०] १ दे० 'सुदर्शन' । २. जिसे सरलता से देख जा सके [को०] ।

सुदर्शन¹—संज्ञा पु० [स०] १ विष्णु भगवान् के चक्र का नाम २ शिव । ३ अग्नि का एक पुत्र । ४ एक विद्याधर । ५ मत्स्य । मछली । ६ जबू वृक्ष । जामुन । ७ नौ बलदेवो से एक । (जैन) । ८ वर्तमान अवसर्पिणी के अट्ठारहवे अर्ह के पिता का नाम । (जैन) । ९ शखन का पुत्र । १० ध्रुवसधि का एक पुत्र । ११ अर्थसिद्धि का पुत्र । १२ दधीचि का एक पुत्र । १३ अजमीढ का एक पुत्र । १४ भरत का एक पुत्र । १५ एक नाग असुर । १६ प्रतीक का जामाता । १७ सुमेरु । १८ एक द्वीप का नाम । १९ गिद्ध । २० एक का।

की सगीतरचना। २१ सन्यासियो का एक दड जिसमे छह गाँठें होती हैं। इसे वे भूत प्रेतो से अपना बचाव करने के लिये अपने पास रखते हैं। २२ मदनमस्त। २३ सोमवल्ली। विशेष दे० 'सुदर्शना'। २४ इद्रनगरी। अमरावती (को०)।

**सुदर्शन²**—वि० जो १ जो देखने मे सुदर हो। प्रियदर्शन। सुखदर्शन। सुदर। मनारम। २ जो आसानी से देखा जा सके।

**सुदर्शन चक्र**—सज्ञा पुं० [स०] विष्णु का आयुध।

विशेष—मत्स्य पुराण के अनुसार सूर्य के असह्य तेज को कम करने के लिये यंत्र के द्वारा उनका तेज विभक्त किया गया और उस विभक्त तेज से सुदर्शन चक्र, शिव का त्रिशूल और इद्र के वज्र का निर्माण किया गया। पद्म पुराण के अनुसार सभी देवों के तेज मे अपने तेज को मिलाकर शिव ने इस द्वादशारयुक्त सुदर्शन चक्र को बनाया और विष्णु को प्रदान किया।

**सुदर्शन चूर्ण**—सज्ञा पुं० [स०] वैद्यक के अनुसार ज्वर की एक प्रसिद्ध औषध।

विशेष—इस चूर्ण के बनाने की विधि यह है—त्रिफला, दारुहल्दी, दोनो करियाली, कनेर, काली मिर्च, पीपल, पीपलामूल, मूर्वा, गुडुच, धनियाँ, अडूसा, कुटकी, त्रायमान, पित्तपापडा, नागरमोथा, कमलततु, नीम की छाल, पोहकर मूल, मुँगने (सहिजन) के बीज, मुलहठी, अजवायन, इद्रयव, भारगी, फिटकरी, वच, तज, कमलगट्टा, पद्मकाष्ठ, चदन, अतीस, खरैटी, वायबिडग, चित्रक, देवदारु, चव्य, लवग, वशलोचन, पत्रज, ये सब चीजें बराबर बराबर और इन सबकी तौल से आधा चिरायता लेकर सबको कूट पीसकर चूर्ण बनाते हैं। मात्रा एक टक प्रति दिन सवेरे ठढे जल के साथ है। कहते हैं, इसके सेवन से सब प्रकार के ज्वर, यहाँ तक कि विषमज्वर भी दूर हो जाता है। इसके सिवा खाँसी, साँस, पाडु, हृद्रोग, बवासीर, गुल्म आदि रोग भी नष्ट होते हैं।

**सुदर्शन दड**—सज्ञा पुं० [स० सुदर्शनदण्ड] वैद्यक के अनुसार ज्वर की एक औषध।

**सुदर्शन द्वीप**—सज्ञा पुं० [स०] जंबू द्वीप का एक नाम।

**सुदर्शनपाणि**—सज्ञा पुं० [स०] (हाथ मे सुदर्शनचक्र धारण करनेवाले) श्री विष्णु।

**सुदर्शना¹**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सोमवल्ली। चक्रागी। मधुपर्णिका।

विशेष—यह क्षुप जाति की वनस्पति है। यह रोएँदार होती है। पत्ते तीन से छह इच के घेरे मे गोलाकार तथा त्रिकोणाकार से होते हैं। इसमे गोल फूलों के गुच्छे लगते हैं जिनका रग नारगी का सा होता है। वैद्यक के अनुसार इसका गुण मधुर, गरम और कफ, सूजन तथा वातरक्त दूर करनेवाला है।

२ एक प्रकार की मदिरा। ३ एक गधर्वी का नाम। ४ पद्मसरोवर। ५ जबू वृक्ष। ६ इद्रपुरी। अमरावती। ७ शुक्ल पक्ष की रात्रि। ८ आज्ञा। आदेश। हुक्म। ९ सुदर स्त्री। प्रियदर्शना स्त्री (को०)। १० स्त्री। औरत। नारी (को०)। ११ एक प्रकार की औषध।

**सुदर्शना²**—वि० स्त्री जो देखने में सुंदर हो। सुंदरी।

**सुदर्शनी**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ इद्रपुरी। अमरावती। सुदरी स्त्री।

**सुदल¹**—सज्ञा पुं० [स०] १ मोरट या क्षीरमोरट नाम की लता। २ मुचकुद। ३ सेना। दल।

**सुदल²**—वि० अच्छे दलो या पत्तोवाला।

**सुदला**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सरिवन। शालपर्णी। २ सेवती।

**सुदशन**—वि० [स०] [वि० स्त्री० सुदशना] सुदर दाँतोवाला। जिसके सुदर दाँत हों। सुदत।

**सुदात¹**—सज्ञा पुं० [स० सुदान्त] १ शाक्यमुनि के एक शिष्य का नाम। २ एक प्रकार की समाधि। ३ शतधन्वा का पुत्र।

**सुदात²**—वि० अति शात। बहुत सीधा। सधा हुआ। (घोडा)।

**सुदाम**—सज्ञा पुं० [स०] १ श्रीकृष्ण के सखा एक गोप का नाम। २ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद। ३ दे० 'सुदामा'।

**सुदामन**—सज्ञा पुं० [स०] १ जनक के एक मत्री का नाम। २ एक प्रकार का दैवास्त्र।

**सुदामा¹**—सज्ञा पुं० [स० सुदामन्] १ एक दरिद्र ब्राह्मण जो श्रीकृष्ण का सहपाठी और परम सखा था और जिसे पीछे श्रीकृष्ण ने ऐश्वयवान् बना दिया था। २ श्रीकृष्ण का एक गोपसखा। ३ कस का एक माली जो श्रीकृष्ण से उस समय मथुरा मे मिला था, जब वे कस के बुलाने से वहाँ गए थे। ४ एक पर्वत। ५ इद्र का हाथी। ऐरावत। ६ समुद्र। सागर। ७ मेघ। बादल। ८ एक गधर्व का नाम।

**सुदामा²**—सज्ञा स्त्री० १ स्कद की एक मातृका। २ रामायण के अनुसार उत्तर भारत की एक नदी का नाम।

**सुदामा³**—वि० उत्तम रूप से दान करनेवाला। खूब देनेवाला।

**सुदामिना**—सज्ञा स्त्री० [सं०] भागवत के अनुसार शमीक की पत्नी का नाम।

**सुदाय**—सज्ञा पुं० [सं०] १ उत्तम दान। २ यज्ञोपवीत सस्कार के समय ब्रह्मचारी को दी जानेवाली भिक्षा। ३ विवाह के अवसर पर कन्या या जामाता को दिया जानेवाला दान। दहेज। ४ वह जो उक्त प्रकार के दान करे। (अर्थात् पिता, माता आदि)।

**सुदारु**—सज्ञा पुं० [स०] १ देवदारु। देवदार। २. धूप। सरल। सरल वृक्ष। ३ सुदर काष्ठ। अच्छी लकड़ी। ४ विध्य पर्वत का एक अश। पारियात्र पर्वत।

**सुदारुण¹**—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का दैवास्त्र।

**सुदारुण²**—वि० अत्यत क्रूर या भयानक।

**सुदावन** (पु)—सज्ञा पुं० [सं० सुदामन] जनक का एक मत्री। दे० 'सुदामन'। उ०—जाय सुदावन कह्यो जनक सा आवत रघुकुल नाहा। देखन को धाए पुरवासी भरि उमाह मन माँहा।—रघुराज (शब्द०)।

**सुदास¹**—सज्ञा पुं० [सं०] १ दिवोदास का पुत्र तथा त्रित्सु का राजा। २ ऋतुपर्ण का पुत्र। ३. सर्वकाम का पुत्र। ४ च्यवन का

पुत्र । ५ बृहद्रथ का एक पुत्र । ६ एक प्राचीन जनपद । ७ अच्छा दास या सेवक ।

**सुदास²**—वि० ईश्वर की सम्यक् रूप से पूजा या आराधना करनेवाला ।

**सुदि¹**—क्रि० वि० [सं०] शुक्ल पक्ष में ।

**सुदि²**—संज्ञा स्त्री० दे० 'सुदी' ।

**सुदिन**—संज्ञा पुं० [सं० सु + दिन] शुभ दिन । अच्छा दिन । मुबारक दिन । उ०—(क) मुनि तथास्तु कहि सुदिन विचारी । कारवाई मख राख तयारी ।—रघुराज (शब्द०) । (ख) तहाँ तुरत सुमन गणक गण ल्यायो तलकि निवाई । गुरु वशिष्ठ आज्ञानुसार ते दीन्ह्यो सुदिन बनाई रघुराज (शब्द०) । (ग) अस कहि कौशिक सुदिन बनायो । तहँ तुरत प्रस्थान पठायो ।—रघुराज (शब्द०) ।

मुहा०—सुदिन बनाना, सुदिन विचारना, सुदिन सोधना = किसी शुभ काम के लिये ज्योतिष शास्त्रानुसार अच्छा मुहूर्त निकालना ।

**सुदिनता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुदिन का भाव ।

**सुदिनाह**—संज्ञा पुं० [सं०] पुण्य दिन । पुण्याह । शुभ दिन । प्रशस्त दिन ।

**सुदिव्**—वि० [सं०] बहुत दीप्तिमान् । चमकीला ।

**सुदिवस**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुदिन' ।

**सुदिवातति**—संज्ञा पुं० [सं० सुदिवातन्ति] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

**सुदिह्**—वि० [सं०] १ सुतीक्ष्ण । (जैसे, दाँत) । २ बहुत चिकना या उज्वल ।

**सुदी**—संज्ञा स्त्री० [सं० सुदिव (= शुक्ल या शुद्ध) या सुदि] किसी मास का उजाला पक्ष । शुक्ल पक्ष । जैसे—चैत सुदी १, सावन सुदी ६ ।

**सुदीक्षा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी ।

**सुदीति¹**—संज्ञा पुं० [सं०] आंगिरस गोत्र के एक ऋषि का नाम ।

**सुदीति²**—संज्ञा स्त्री० सुदीप्ति । उज्वल दीप्ति ।

**सुदीति³**—वि० बहुत दीप्तिमान् । चमकीला ।

**सुदीपति**(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सुदीप्ति] दे० 'सुदीप्ति' । उ०—बाजत हैं मृदु हास मृदंग सुदीपति दीपनि को उजियारो ।—केशव (शब्द०) ।

**सुदीप्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत अधिक प्रकाश । खूब उजाला ।

**सुदीर्घ¹**—संज्ञा पुं० [सं०] चिचडा । चिचिंडक ।

**सुदीर्घ²**—वि० बहुत अधिक लंबा । अति विस्तृत ।

**सुदीर्घधर्मा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपराजिता । कोयल लता । असनपर्णी ।

**सुदीर्घजीवफला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुदीर्घराजीवफला' [को०] ।

**सुदीर्घफलका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुदीर्घफलिका' [को०] ।

**सुदीर्घफला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] ककडी । कर्कटी ।

**सुदीर्घफलिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का बैंगन ।

**सुदीर्घराजीवफला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की ककडी ।

**सुदीर्घा¹**—संज्ञा स्त्री० [सं०] चीना ककडी ।

**सुदीर्घा²**—वि० स्त्री० अति दीर्घ । बहुत लंबी ।

**सुदुःख¹**—संज्ञा पुं० [सं०] अत्यंत कष्ट, पीडा या शोक ।

**सुदुःख²**—वि० अति दारुण । कष्टकर ।

**सुदुःखित**—वि० [सं०] अति पीडित । शोकातुर । व्यथित ।

**सुदुःश्रव**—वि० [सं०] जो सुनने में बुरा हो । कानों को अप्रिय । जैसे,—अपशब्द निंदा, गाली, कर्कश शब्द आदि ।

**सुदुःसह**—वि० [सं०] असह्य । जो सहने में कठिन हो ।

**सुदुकूल**—वि० [सं०] उत्तम वस्त्र से निर्मित ।

**सुदुघा**—वि० [सं०] अच्छा दूध देनेवाली । खूब दूध देनेवाली (गौ) ।

**सुदुराचार**—वि० [सं०] अत्यंत बुरे आचरणवाला । निहायत बद-चलन [को०] ।

**सुदुराधर्ष**—वि० [सं०] १ जिसकी प्राप्ति अत्यंत कठिन हो । २ २ अत्यंत असह्य [को०] ।

**सुदुरावर्त**—वि० [सं०] जिसे समझाना अत्यंत कठिन हो [को०] ।

**सुदुरासद**—वि० [सं०] जिस तक पहुँच बहुत कठिन हो । पहुँच के बाहर [को०] ।

**सुदुर्जय¹**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का व्यूह [को०] ।

**सुदुर्जय²**—वि० जिसे जीतना बडा कठिन हो [को०] ।

**सुदुर्जया**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्धों के अनुसार सिद्धि की दस अवस्थाओं में से एक [को०] ।

**सुदुर्जर**—वि० [सं०] जिसका पाक कठिन हो । गुरुपाक [को०] ।

**सुदुर्दृश**—वि० [सं०] जिसे देखना कष्टदायक हो । अत्यंत विरूप । जो प्रियदर्शन न हो [को०] ।

**सुदुर्भग**—वि० [सं०] अत्यंत भाग्यहीन । अभागा [को०] ।

**सुदुर्भिद**—वि० [सं०] जिसका भेदन कठिन हो । अभेद्य [को०] ।

**सुदुर्मनस्**—वि० [सं०] १ अत्यंत दुष्ट हृदयवाला या खोटे स्वभाव का । २ विक्षुब्ध मनवाला । परेशानियों में पडा हुआ [को०] ।

**सुदुर्मर्ष**—वि० [सं०] जो सहनशक्ति से बाहर हो । एकदम असह्य [को०]

**सुदुर्लभ**—वि० [सं०] १ जो अत्यंत दुर्लभ हो । अद्वितीय । नायाब २ जिसका पाना प्राय असंभव हो । अप्राप्य [को०] ।

**सुदुर्वच**—वि० [सं०] जिसकी बात का जवाब न हो [को०] ।

**सुदुर्विद, सुदुर्वेद**—वि० [सं०] अत्यंत दुर्बोध । जो समझने में बहुत ह कठिन हो [को०] ।

**सुदुश्चर**—वि० [सं०] १ जिसका करना अत्यंत कठिन हो । २ ज अत्यंत दुर्गम हो [को०] ।

**सुदुष्कर**—वि० [सं०] अत्यंत कठिन । अत्यंत कष्टसाध्य [को०] ।

**सुदुश्चिकित्स**—वि० [सं०] जिसका इलाज बहुत कठिन हो ।

**सुदुष्प्रभ**—संज्ञा पुं० [सं०] नकुल । नेवला [को०] ।

**सुदुष्प्राप**—वि० [सं०] जिसकी प्राप्ति कठिन हो । जो दुर्लभ हो [को०] ।

सुदुस्तर, सुदुस्तार—वि० [स०] जिसे पार करना बडा कठिन हो [को०]।

सुदुस्त्यज—वि० [स०] जिसे त्यागना बहुत कठिन हो [को०]।

सुदूर¹—वि० [स०] बहुत दूर का। अति दूरवर्ती। जैसे—सुदूर पूर्व मे।

सुदूर²—अव्य० बहुत दूर। अतिदूर।

सुदूर पराहत—वि० [स०] १ जो बहुत पहले नष्ट हो चुका हो। पूर्ण ध्वस्त। २ जो पूर्वनिर्णीत हो। पूर्वनिराकृत।

सुदूरपूर्व—सज्ञा पु० [स०] अति दूरस्थ पूर्वीय देश।

सुदृढमूल—सज्ञा पुं० [स० सुदृढमूल] धमासा। हिंगुआ।

सुदृढ—वि० [स० सुदृढ] बहुत दृढ। खूब मजबूत। जैसे,—सुदृढ बधन।

सुदृढत्वचा—सज्ञा स्त्री० [स० सुदृढत्वचा] गभारी। गम्हार।

सुदृश¹—वि० [स०] १ सुदर नेत्रोवाला। २ पैनी या तीक्ष्ण दृष्टि वाला। ३ जो सुदर हो [को०]।

सुदृश²—सज्ञा पुं० [स०] बौद्धो का एक देववर्ग [को०]।

सुदृश³—सज्ञा स्त्री० [स०] रूपवती स्त्री [को०]।

सुदृष्टि¹—सज्ञा पु० [स०] गिद्ध।

सुदृष्टि²—सज्ञा स्त्री० उत्तम दृष्टि।

सुदृष्टि³—वि० १ दूरदर्शी। २ तीक्ष्णदृष्टि। तीखी चितवनवाला।

सुदेल्ल—सज्ञा पु० [स०] सुदेष्ण पर्वत का एक नाम। (महाभारत)।

सुदेव—सज्ञा पु० [स०] १ उत्तम देवता। २ उत्तम क्रीडा करनेवाला। ३ एक काश्यप। ४ अक्रूर का एक पुत्र। ५ पौंड्र वासुदेव का एक पुत्र। ६ देवल का पुत्र। ७ विष्णु का एक पुत्र। ८ अबरीष का एक सेनापति। ९ एक ब्राह्मण जिसने दमयती के कहने से राजा नल का पता लगाया था। १० परावसु गधर्व के नौ पुत्रो मे से एक जो ब्रह्मा के शाप से हिरण्याक्ष दैत्य के घर उत्पन्न हुआ था। ११ हर्यश्व का पुत्र और काशी का राजा।

सुदेवा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ अरिह की पत्नी। २ विकुठन की पत्नी।

सुदेवी—सज्ञा स्त्री० [स०] भागवत के अनुसार नाभि की पत्नी और ऋषभ की माता।

सुदेव्य—सज्ञा पु० [स०] श्रेष्ठ देवताओ का समूह।

सुदेश¹—सज्ञा पु० [स०] १ सुदर देश। उत्तम देश। अच्छा मुल्क। २ उपयुक्त स्थान। उचित स्थान। उ०—छूटि जात लाज तहाँ भूषण सुदेश केश टूट जात हार सब मिटत शृगार है।—भूषण (शब्द०)।

सुदेश²—वि० सुदर। उ०—(क) श्याम सुदर सुदेश पीत पट शीश मुकुट उर माला। जनु घन दामिनि रवि तारागण उदित एक ही काला।—सूर (शब्द०)। (ख) लटकन चारु भृकुटिया टेढी मेढी सुभग सुदेश सुभाए।—तुलसी (शब्द०)। (ग) सीय स्वयवर जनकपुर मुनि सुनि सकल नरेश। आए साज समाज सजि भूषन बसन सुदेश।—तुलसी (शब्द०)।

सुदेशिक—सज्ञा पुं० [स०] उत्तम पथप्रदर्शक [को०]।

सुदेष्ण—सज्ञा पुं० [स०] १ रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र। २ एक प्राचीन जनपद का नाम। ३ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। सुदेल्ल पर्वत। ४ राजा सगर के ज्येष्ठ पुत्र असमजस का दत्तक पुत्र।

सुदेष्णा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ बलि की पत्नी। २ विराट की पत्नी और कीचक की बहन।

सुदेष्णु—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सुदेष्णा'।

सुदेस(पु)¹—सज्ञा पुं० [सं० सुदेश] दे० 'सुदेश'।

सुदेश¹—सज्ञा पु० [स० स्वदेश] अपना देश। स्वदेश।

सुदेस²—वि० सुदर। उ०—अति सुदेस मृदु हरत चिकुर मन मोहन मुख बगराइ। मानो प्रगट कज पर मजुल अलि अवली फिर आइ। सूर०, १०।१०८।

सुदेसी†—वि० [सं० स्व + देश, हिं० सुदेस + ई (प्रत्य०)] स्वदेशी। अपने देश का।

सुदेह¹—सज्ञा पुं० [स०] सुदर देह। सुदर शरीर।

सुदेह²—वि० सुदर। कमनीय। उ०—चले विदेह सुदेह हृदय हरि नेह बसाए। जरासध बल अध सैन सन बध मिलाए।—गिरधर (शब्द०)।

सुदैव—सज्ञा पुं० [सं०] १ सौभाग्य। अच्छा भाग्य। अच्छी किसमत। २ अच्छा सयोग।

सुदोग्ध्री—वि० [स०] अधिक दूध देनेवाली (गौ आदि)।

सुदोघ¹—वि० स्त्री० [स०] बहुत दूध देनेवाली (गौ)।

सुदोघ²—वि० दानशील। उदार।

सुदोह, सुदोहना—वि० [स०] सुख या आराम से दूहने योग्य। जिसे दूहने मे कोई कष्ट न हो।

सुदौसी(पु)—वि० [?] शीघ्रतापूर्वक। त्वरित।

सुद्दा—सज्ञा पुं० [अ० सुद्दह] दे० 'सुद्दी'।

सुद्दी—सज्ञा स्त्री० [अ० सुद्दह्] पेट का जमा हुआ वह सूखा मल जो फुलाकर निकाला जाय।

सुद्ध(पु)—वि० [सं० शुद्ध, प्रा० सुद्ध] दे० 'शुद्ध'।

सुद्धाँ†—अव्य० [स० सह] सहित। समेत। मिलाकर। जैसे,—उसके सुद्धाँ सात आदमी थे।

सुद्धांत—सज्ञा स्त्री० [स० शुद्धान्त] जनाना। (डि०)।

सुद्धा†—अव्य० [स० सह] दे० 'सुद्धाँ'।

सुद्धि¹—सज्ञा स्त्री० [सं० शुद्ध (बुद्धि)] दे० 'सुध'। उ०—(क) हिम्मति गई वजीर की ऐसी कीनी बुद्धि। होनहार जैसी कछू तैसीयै मन सुद्धि।—सूदन (शब्द०)। (ख) जैसी हो भवितव्यता तैसी उपजै बुद्धि। होनहार हिरदे बसै बिसर जाय सब सुद्धि।—लल्लू (शब्द०)।

सुद्धि²—सज्ञा स्त्री० [सं० शुद्धि] दे० 'शुद्धि'।

सुद्यु—सज्ञा पुं० [सं०] पुरुवशी राजा चारुपद के पुत्र का नाम।

सुद्युत्—वि० [सं०] खूब प्रकाशमान। सुदीप्त।

सुद्युम्न—सज्ञा पुं० [स०] वैवस्वत मनु का पुत्र जो इल नाम से प्रसिद्ध है।

**विशेष**—अग्निपुराण मे इसकी कथा इस प्रकार दी है—एक बार हिमालय मे महादेव जी पार्वती जी के साथ क्रीड़ा कर रहे थे।

उस समय वैवस्वत मनु का पुत्र इड शिकार के लिये वहाँ जा पहुँचा। महादेव जी ने उसे शाप दिया, जिससे वह स्त्री हो गया। एक बार सोम का पुत्र बुध उसे देख कामासक्त हो गया और उसके सहवास से उसके गर्भ से पुरुरवा का जन्म हुआ। अत को बुध को आराधना करने पर महादेव जी ने उसे शापमुक्त कर दिया और वह फिर पुरुष हो गया।

सुद्रष्ट—वि॰ [सं॰ सदृष्ट] सौम्य दृष्टिवाला। जो दयावान हो। कृपा युक्त कृपालु। (डिं॰)।

सुद्रष्टा—वि॰ [सं॰ सुद्रष्टृ] जिसकी दृष्टि तीक्ष्ण या पैनी हो।

सुद्विज—वि॰ [सं॰] सु दर दाँतोवाला।

सुद्विजानन—वि॰ [सं॰] जिसका मुख सु दर दतपक्तियो से युक्त हो।

सुधंग—सज्ञा पुं॰ [हिं॰ सीधा + अग या सु + ढग?] अच्छा ढग। उ॰—(क) नृत्य करहिं नट नदी नारि नर अपने अपने रग। मनहुँ मदनरति विविध वेष धरि नटत सुदेहु सुधग।—तुलसी (शब्द॰)। (ख) कवहुँ चलत सुधग गति सो कवहुँ उघटत वैन। लोल कुडल गडमडल चपल नैननि सैन।—सूर (शब्द॰)।

सुध¹—सज्ञा स्त्री॰ [सं॰ शुद्ध (बुद्धि) या सु + धी] १ स्मृति। स्मरण। याद। चेत।

क्रि॰ प्र॰—करना। रखना। होना।

मुहा॰—सुध दिलाना = याद दिलाना। स्मरण करना। सुध न रहना = विस्मृत हो जाना। भूल जाना। याद न रहना। जैसे,—तुम्हारी तो किसी को सुध ही नही रह गई थी। सुध बिसरना = विस्मृत होना भूल जाना। सुध विसराना या बिसारना = किसी को भूल जाना। किसी को स्मरण न रखना। उ॰—तुम्हे कौन अनरीत सिखाई, सजन सुध बिसराई।—गीत (शब्द॰)। सुध भूलना = दे॰ 'सुध बिसरना'। सुध भुलाना = दे॰ 'सुध बिसराना'।

२ चेतना। होश।

यौ॰—सुध बुध = होश हवास।

मुहा॰—सुध बिसरना = अचेत होना। होश मे न रहना। सुध बिसराना = अचेत करना। होश मे न रहने देना। सुध न रहना = होश न रहना। अचेत हो जाना। उ॰—सुध न रही देखतु रहै कल न लखैं बिनु तोहिं। देखैं अनदेखैं तुहे कठिन दुहूँ बिधि मोहिं।—रतनहजारा (शब्द॰)। सुध सँभालना = होश सँभालना। होश मे आना।

३ खबर। पता।

मुहा॰—सुध लेना = पता लेना। हालचाल जानना। सुध रखना = चौकसी रखना। उ॰—(क) जब प्रसमन कौं विलँव भयो तव सत्राजित सुध लीन्हो।—सूर (शब्द॰)। (ख) दरदहि दै जानत लला सुध लै जानत नाहिं। कहो विचारे नेहिया तब घाले किन जाहिं।—रतनहजारा (शब्द॰)।

सुध²—वि॰ [सं॰ शुद्ध] दे॰ 'शुद्ध'। उ॰—सुकृत नीर मे नहाय ले श्रम भार टरे सुध होय देह।—कबीर (शब्द॰)।

सुध³—सज्ञा स्त्री॰ [सं॰ सुधा] दे॰ 'सुधा'। उ॰—जाके रस को इंद्रहु तरसत सुधहु न पावत दाँज।—देव स्वामी (शब्द॰)।



सुधन¹—सज्ञा पुं॰ [सं॰] परावसु गधर्व के नौ पुत्रो मे से एक जो ब्रह्मा के शाप से (कोलकल्प मे) हिरण्याक्ष दैत्य के नौ पुत्रो मे से एक हुआ था।

सुधन²—वि॰ [सं॰] बहुत धनी। बडा अमीर।

सुधना(पु)—क्रि॰ अ॰ [हिं॰ शोधना] शुद्ध होना। ठीक होना। सुधा होना।

सुधनु—सज्ञा पुं॰ [सं॰ सुधनुस्] १ राजा कुरु का एक पुत्र जो सूर्य की पुत्री तपती के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। २ गौतम बुद्ध के एक पूर्वज।

सुधन्वा¹—वि॰ [सं॰ सुधन्वन्] १ उत्तम धनुष धारण करनेवाला। २ अच्छा धनुर्धर।

सुधन्वा²—सज्ञा पुं॰ १ विष्णु। २ विश्वकर्मा। ३ आगिरस। ४ वैराज का एक पुत्र। ५ सभूत का एक पुत्र। ६ कुरु का एक पुत्र। ७ शाश्वत का एक पुत्र। ८ विदुर। ९ एक राजा जिसे माधाता ने परास्त किया था। १० व्रात्य वैश्य और सवर्णा स्त्री से उत्पन्न एक जाति। ११ अनत। शेषनाग (को॰)।

सुधन्वाचार्य—सज्ञा पुं॰ [सं॰] व्रात्य वैश्य और सवर्णा स्त्री से उत्पन्न एक सकर जाति।

सुध बुध—सज्ञा स्त्री॰ [सं॰ सु + धी + बुद्धि] होश हवास। चेत। ज्ञान। दे॰ 'सुध'।

मुहा॰—सुध बुध जाती रहना = होश हवास जाता रहना। सुध बुध ठिकाने न होना = बुद्धि ठिकाने न होना। होश हवास दुरुस्त न होना। सुध बुध न रहना, सुध बुध मारी जाना = बुद्धि का लोप हो जाना। होश हवास न रहना। सुध बुध बिसराना = अचेत करना। होश मे न रहने देना। उ॰—कान्हा ने कैसी बाँसुरी बजाई, मेरी सुध बुध बिसराई।—गीत। (शब्द॰)।

सुधमना(पु)†—वि॰ [हिं॰ सुध (= होश) + मन] [वि॰ स्त्री॰ सुधमनी] जिसे होश हो। सचेत। उ॰—जब कबहूँ कै सुधमनी होति तब सुनौ एहो रघुनाथ गात तकि पाए परिकै। भावते की मूरति को ध्यान आए ल्यावति है आँखैं मूँदि गावति है आँसुन सो भरिकै।—रघुनाथ (शब्द॰)।

सुधर¹—सज्ञा पुं॰ [सं॰] एक अर्हत् का नाम। (जैन)।

सुधर²—सज्ञा पुं॰ [डिं॰] बया नामक पक्षी।

सुधरना—क्रि॰ अ॰ [सं॰ शोधन, हिं॰ सुधना] विगडे हुए का बनना। दोष या त्रुटियो का दूर होना। सशोधन होना। सस्कार होना। जैसे,—काम सुधरना, भाषा सुधरना, चाल सुधरना, घर सुधरना।

सयो॰ क्रि॰—जाना।

सुधरवाना—क्रि॰ स॰ [हिं॰ सुधरना] सुधार कराना। सुधार करने के लिये किसी को प्रेरित करना।

सुधराई—सज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ सुधरना + आई (प्रत्य॰)] १ सुधारने की क्रिया। सुधारने का काम। सुधार। २ सुधारने की मजदूरी।

सुधराव—संज्ञा पुं० [हिं० सुधरना + आव (प्रत्य०)] सुधराई। बनाव। संशोधन।

सुधर्म¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ उत्तम धर्म। पुण्य कर्तव्य। २ जैन तीर्थंकर महावीर के दस शिष्यों में से एक। ३ किन्नरों के एक राजा का नाम। ४ देवताओं का एक वर्ग (को०)।

सुधर्म²—वि० धर्मपरायण। धर्मनिष्ठ।

सुधर्मनिष्ठ—वि० [सं०] अपने धर्म पर दृढ रहनेवाला। सुधर्मी।

सुधर्मा¹—वि० [सं० सुधर्म्मन्] अपने धर्म पर दृढ रहनेवाला। धर्मपरायण।

सुधर्मा²—संज्ञा पुं० १ गृहस्थ। कुटुंबपालक। कुटुंबी। २ क्षत्रिय। ३ दशार्णों का एक राजा। ४ दृढनेमि का पुत्र। ५ जैनों के एक गणाधिप। ६ एक विश्वेदेव (को०)।

सुधर्मा³—संज्ञा स्त्री० १ इंद्र का सभाकक्ष। देवसभा। २ द्वारकापुरी का एक नाम (को०)।

सुधर्मी¹—वि० [सं० सुधर्मिन्] धर्मपरायण। धर्मनिष्ठ।

सुधर्मी²—संज्ञा स्त्री० १ देवसभा। २ द्वारकापुरी (को०)।

सुधवाना—क्रि० स० [हिं० सुधरना या सं० शोधन, हिं० सोधना का प्रेर० रूप] दोष या त्रुटि दूर कराना। शोधन कराना। ठीक कराना। दुरुस्त कराना।

सुधाँ—अव्य० [सं० सार्ध] दे० 'सुद्धाँ'। उ०—हाथी सुधाँ सब्ब हाथी परयो खेत। संग्राम मे स्वामि के काम के हेत।—सूदन (शब्द०)।

सुधांग—संज्ञा पुं० [सं० सुधाङ्ग] चद्रमा।

सुधांशु—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा। २ कपूर।

सुधांशुतैल—संज्ञा पुं० [सं०] कपूर का तेल।

सुधांशुरत्न—संज्ञा पुं० [सं०] मोती। मुक्ता।

सुधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अमृत। पीयूष। अमी। २ मकरंद। ३ गंगा। ४ जल। ५ दूध। ६ रस। अर्क। ७ मूर्विका। मरोडफली। ८ आँवला। आमलकी। ९ हर्रे। हरीतकी। १० सेहुँड। थूहर। ११ सरिवन। शालपर्णी। १२ बिजली। विद्युत्। १३ पृथ्वी। धरती। जमीन। १४ विष। जहर। हलाहल। १५ चूना। १६. ईंट। इष्टका। १७ गिलोय। गुडूची। १८ रुद्र की स्त्री। १९ एक प्रकार का वृत्त। २० पुत्री। २१ वधू। २२ धाम। घर। २३ मधु। शहद। २४ श्वेतता। सफेदी (को०)।

सुधाई⑤—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूधा (=सीधा)] सीधापन। सिधाई। सरलता। उ०—(क) सूधी सुहाँसी सुधाकर सो मुख शोध लई वसुधा की सुधाई। सूधे स्वभाव वसै सजनी वश कैसे किए अति टेढे कन्हाई।—केशव (शब्द०)। (ख) सीख सुधाई तीर तैं तन गति कुटिल कमान। भावे छिल्ला बैठ तूँ भावै बिच मैदान।—रतनहजारा (शब्द०)।

सुधाकंठ—संज्ञा पुं० [सं० सुधाकण्ठ] कोकिल। कोयल।

सुधाकर—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रमा।

सुधाकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ चूना पोतनेवाला। सफेदी करनेवाला। २ मिस्तरी। राज। मजूर। ३ सुधाकर। चद्रमा (को०)।

सुधाक्षार—संज्ञा पुं० [सं०] चूने का खार।

सुधाक्षालित—वि० [सं०] सफेदी किया हुआ। जिसपर चूना पुता हुआ हो।

सुधागेह⑤—संज्ञा पुं० [सं० सुधा + गेह (=घर)] चद्रमा। उ०—देह सुधागेह ताहि मृगहु मलीन कियो ताहु पर बाहु बिनु राहु गहियतु है।—तुलसी (शब्द०)।

सुधाघट—संज्ञा पुं० [सं० सुधा + घट] चद्रमा। उ०—मुकता माल नंदनंदन उर अर्ध सुधाघट कांति। तनु श्रीकंठ मेघ उज्वल अति देखि महाबल भाँति।— सूर (शब्द०)।

सुधाजीवी—संज्ञा पुं० [सं० सुधाजीविन्] वह जो चूना पोतकर जीविका निर्वाह करता हो। सफेदी करनेवाला। मजदूर।

सुधांत—वि० [सं०] अत्यंत स्वच्छ [को०]।

सुधाता—वि० [सं० सुधातृन्] सजानेवाला। संयोजित और सुव्यवस्थित करनेवाला।

सुधातु¹—संज्ञा पुं० [सं०] सोना। स्वर्ण।

सुधातु²—वि० जिसके पास स्वर्ण हो। धनी।

सुधातुदक्षिण—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो यज्ञादि मे सुवर्ण दक्षिणा देता हो। २ वह जिसे यज्ञयागादि मे बहुत अधिक दक्षिणा मिली हो।

सुधादीधिति—संज्ञा पुं० [सं०] सुधांशु। चद्रमा।

सुधाद्रव—संज्ञा पुं० [सं०] १ अमृत तुल्य एक प्रकार का द्रव पदार्थ। २ एक प्रकार की चटनी। ३ सफेदी (को०)।

सुधाधर¹—संज्ञा पुं० [सं० सुधा + धर (=धारण करनेवाला)] चद्रमा। उ०—(क) श्री रघुवीर कह्यो सुन वीर वृभ शशी किधौ राहु डरायो। नाउँ सुधाधर है विष को घर ल्याई विरंचि कलंक लगायो।—हनुमन्नाटक (शब्द०)। (ख) धार सुधार सुधाधर तें सुमनो वसुधा मे सुधा ढरकी परै।—सुंदरीसर्वस्व (शब्द०)।

सुधाधर²—वि० [सं० सुधा + अधर] जिसके अधरों मे अमृत हो। उ०—वासो मृग अंक कहै तोसो मृगनैनी सबै वासो सुधाधर तोहूँ सुधाधर मानिए।—केशव (शब्द०)।

सुधाधरण—संज्ञा पुं० [सं० सुधा + धरण (=धारणकर्ता)] चद्रमा। (डिं०)।

सुधाधवल—वि० [सं०] १ सुधा या चूने के समान सफेद। २ चूना पुता हुआ। सफेदी किया हुआ।

सुधाधवलित—वि० [सं०] दे० 'सुधाधवल'।

सुधाधाम⑤—संज्ञा पुं० [सं० सुधा + धाम] चद्रमा। उ०—धूमपुर के निकेत मानो धूमकेतु की शिखा की धूमयोनि मध्य रेखा सुधाधाम की।—केशव (शब्द०)।

सुधाधामा—संज्ञा पुं० [सं० सुधाधामन्] चद्रमा। चाँद।

सुधाधार—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २ सुधा का आधार। अमृतपात्र।

सुधाधी(पु)—वि० [सं० सुधा + धी] सुधा के समान। सुधायुक्त। अमृत के तुल्य। उ०—या कहि कौशिलनहि वह आधी। देत भए नृप खीर सुधाधी।—पद्माकर (शब्द०)।

सुधाधौत—वि० [सं०] चूना किया हुआ। सफेदी किया हुआ।

सुधानजर—वि० [सं० सुधा या हिं० सूधा (=सीधी) + अ० नजर] दयावान्। कृपालु। (डिं०)।

सुधाना(पु)[1]—क्रि० स० [हिं० सुध (=स्मृति)] सुध कराना। चेत कराना। स्मरण कराना। याद दिलाना।

सुधाना[2]—क्रि० स० १ शोधने का काम दूसरे से कराना। दुरुस्त कराना। ठीक कराना। २ (लग्न या कुंडली आदि) ठीक कराना। उ०—(क) पालनौ आन्यौ बनाइ, अति मन मान्यौ सुहाइ। नीकौ सुभ दिन सुधाइ झूलौ हो झुलैया। सूर०, १०।४१। (ख) लिय तुरत ज्योतिषी बुलाई। लग्न घरी सब भाँति सुधाई।—रघुराज (शब्द०)।

सुधानिधि—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा। उ०—मनहुँ सुधानिधि वर्षत घनपर अमृत धार चहुँ ओर।—सूर (शब्द०)। २ समुद्र। उ०—श्रीरामानुज उदार सुधानिधि अवनि कल्पतरु।—नाभादास (शब्द०)। ३ कपूर (को०)। ४ दंडक वृत्त का एक भेद, जिसमें ३२ वर्ण होते हैं और १६ बार क्रम से गुरु लघु आते हैं।

सुधानिधि रस—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार का रस जो पारे, गंधक, सोनामक्खी और लोहे आदि के योग से बनता है। इसका व्यवहार रक्तपित्त में किया जाता है।

सुधापय—संज्ञा पुं० [सं० सुधापयस्] थूहर का दूध। स्नुहीक्षीर।

सुधापाणि—संज्ञा पुं० [सं०] धन्वंतरी। पीयूषपाणि।

विशेष—पुराणों के अनुसार समुद्रमंथन के समय धन्वंतरी जी हाथ में सुधा या अमृत लिए हुए निकले थे, इसी से उनका नाम सुधापाणि या पीयूषपाणि पड़ा।

सुधापाषाण—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद खली। सेतखरी।

सुधापूर—संज्ञा पुं० [सं०] अमृत का प्रवाह या धारा।

सुधाभवन—संज्ञा पुं० [सं०] अस्तरकारी किया हुआ मकान।

सुधाभित्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सफेदी की हुई दीवार। २ इष्टकानिर्मित भित्ति। ईंटे की दीवाल (को०)। ३ पाँचवें मुहूर्त की आख्या या नाम (को०)।

सुधाभुज—संज्ञा पुं० [सं० सुधाभुक्] अमृत भोजन करनेवाले, देवता।

सुधाभृत—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा। २ कपूर (को०)। ३ यज्ञ।

सुधाभोजी—संज्ञा पुं० [सं० सुधाभोजिन्] अमृत भोजन करनेवाले, देवता।

सुधाम—संज्ञा पुं० [सं० सुधामन्] १ चंद्रमा। २ एक प्राचीन ऋषि का नाम। ३ रैवतक मन्वंतर के देवताओं का एक गण। ४. पुराणानुसार क्रौंच द्वीप के अंतर्गत एक वर्ष के राजा का नाम।

सुधामय[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुधामयी] १ सुधा से भरा हुआ। अमृतस्वरूप। २ चूने का बना हुआ।

सुधामय[2]—संज्ञा पुं० १ राजभवन। राजप्रासाद। २ ईंट या प्रस्तर से बना हुआ मकान (को०)।

सुधामयूख—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

सुधामुखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम।

सुधामूली—संज्ञा स्त्री० [सं०] सालम मिस्री। सालब मिस्री।

सुधामोदक—संज्ञा पुं० [सं०] १ यवास शर्करा। शीर खिश्त। २ कपूर। कर्पूर (को०)। ३ वंसलोचन। वंशकर्पूर। विशेष दे० 'वंसलोचन'।

सुधामोदकज—संज्ञा पुं० [सं०] तुरंजबिन की खाँड। तबराज खंड।

सुधाय—संज्ञा पुं० [सं०] सुख शांति। आराम चैन (को०)।

सुधायोनि—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

सुधार[1]—संज्ञा पुं० [हिं० सुधरना] सुधरने की क्रिया या भाव। दोष या त्रुटियों का दूर किया जाना। संशोधन। संस्कार। इसलाह।

क्रि० प्र०—करना। होना।

सुधार[2]—वि० तीक्ष्ण धारवाला जिसकी धार या नोक अत्यंत तीक्ष्ण हो, जैसे, वाण (को०)।

सुधारक—संज्ञा पुं० [हिं० सुधार + क (प्रत्य०)] १ वह जो दोषों या त्रुटियों का संशोधन या सुधार करता हो। संस्कारक। संशोधक। २ वह जो धार्मिक, सामाजिक या राजनीतिक सुधार या उन्नति के लिये प्रयत्न या आंदोलन करता हो।

सुधारना[1]—क्रि० स० [हिं० सुधरना] १ दोष या बुराई दूर करना। बिगड़े हुए को बनाना। दुरुस्त करना। संशोधन करना। २ संस्कार करना। सँवारना। उ०—दुहु कर कमल सुधारत बाना।—मानस, ६।११।

सुधारना[2]—वि० [वि० स्त्री० सुधारनी] सुधारनेवाला। ठीक करनेवाला। (क) उ०—भगति गोपाल को सुधारनो है नर देह, जगत अधारनो है जगत उधारनो।—गिरधर (शब्द०)।

सुधारश्मि—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

सुधारस—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुधा। अमृत। २ दुग्ध। दूध (को०)।

सुधारा(पु)—वि० [हिं० सूधा + आरा (प्रत्य०)] सीधा। सरल। निष्कपट। उ०—आयो घोप बड़ो व्यापारी। लादि [illegible] गुणगान योग की ब्रज में आनि उतारी। फाटक दै कै हाटक माँगत भोगे निपट सुधारी। इनके कहे कौन डहकावै ऐसा कौन अनारी।—सूर (शब्द०)।

सु[illegible] ० [हिं० सुधार + ऊ (प्रत्य०)] सुधारनेवाला। [illegible]नेवाला। संशोधक।

[illegible]० [सं०] एक प्रकार की गिलोय।

[illegible] [सं० सुधा + अवदात] दे० 'सुध[illegible]

[illegible] पुं० [सं०] एक पर्वत का [illegible]।

सुधावर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] अमृत की वर्षा [को०]।

सुधावर्षी¹—वि० [सं० सुधावर्षिन्] अमृत बरसानेवाला।

सुधावर्षी²—संज्ञा पुं० १ ब्रह्मा। २ कपूर (को०)। ३ चंद्रमा (को०)। ४ एक बुद्ध का नाम।

सुधावास—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा। २ कर्पूर। कपूर (को०)। ३ खीरा। त्रपुषी।

सुधावासा—संज्ञा स्त्री० [सं०] खीरा। त्रपुषी।

सुधावृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] अमृत की वर्षा। सुधा की वर्षा। उ०—सुधावृष्टि भै दुहु दल ऊपर।—मानस, ६।११३।

सुधाशर्करा—संज्ञा स्त्री० [सं०] खली। खरी। सेतखरी।

सुधाशुभ्र—वि० [सं०] १ सुधा सदृश श्वेत। सुधासित। २ जो सुधा द्वारा शुभ्र हो। सफेदी किया हुआ [को०]।

सुधाश्रवा(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुधा + श्रवा (= प्रवाह), स्रव, स्रवण (= गिराना, बहाना)] अमृत बरसानेवाला। उ०—चल्यो तवा सो तप्त दवा दुति भूरिश्रवा भट। सुधाश्रवा सिर छत्र हवा जव सुरथ नवा पट।—गोपालचद (शब्द०)।

सुधासदन—संज्ञा पुं० [सं० सुधा + सदन] चंद्रमा। उ०—सरद सुधासदन छविहि निंदै बदन अरुन आयत नव नलिन लोचन चारु।—तुलसी (शब्द०)।

सुधासमुद्र—संज्ञा पुं० [सं०] अमृत का समुद्र।

सुधासागर—संज्ञा पुं० [सं०] अमृत का समुद्र।

सुधासिंधु—संज्ञा पुं० [सं० सुधासिन्धु] दे० 'सुधासागर' [को०]।

सुधासिक्त—वि० [सं०] अमृत से सिंचित।

सुधासित—वि० [सं०] १ सफेदी किया हुआ। चूना पुता हुआ। २ चूना या अमृत की तरह दीप्त और श्वेत (को०)।

सुधासू—संज्ञा पुं० [सं०] अमृत उत्पन्न करनेवाला, चंद्रमा।

सुधासूति—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा। २ यज्ञ। ३ कमल।

सुधास्पर्धी—वि० [सं० सुधास्पर्धिन] अमृत की बराबरी करनेवाला। अमृत के समान मधुर। (भाषण आदि)।

सुधास्रवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गले के अंदर की घंटी। छोटी जीभ। कौवा। २ रुद्रवंती। रुदंती।

सुधाहर—संज्ञा पुं० [सं०] गरुड।।

सुधाहर्ता—संज्ञा पुं० [सं० सुधाहर्तृ] गरुड का नाम [को०]।

सुधाहृत्—संज्ञा पुं० [सं०] गरुड।

सुधाह्रद—संज्ञा पुं० [सं०] अमृत का सरोवर।

सुधि—संज्ञा स्त्री० [सं० शुद्ध (बुद्धि) या सु + धी (= बुद्धि)] दे० 'सुध'। उ०—(क) वह सुधि आवत तोहि सुदामा। जब हम तुम बन गए लकरियन पठए गुरु की भामा।—सूर (शब्द०)। (ख) रामचंद्र विख्यात नाम यह सुर मुनि की सुधि लीनी।—सूर (शब्द०)।

सुधित—वि० [सं०] १ सुव्यवस्थित। सुरक्षित। २ अच्छी तरह सिद्ध। जैसे, अन्न आदि (को०)। ३ सुधा या अमृत के समान। ४ सदय। कृपालु। साधु। भद्र (को०)। ५ लक्ष्य पर ठीक ठीक साधा हुआ। जैसे, वाण, कुंत आदि (को०)।

सुधिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कुठार। कुल्हाडी। परशु। २ वज्र।

सुधी¹—संज्ञा पुं० [सं०] विद्वान् व्यक्ति। पंडित। शिक्षक।

सुधी²—संज्ञा स्त्री० १ सद्बुद्धि। सुबुद्धि [को०]।

सुधी³—वि० १ उत्तम बुद्धिवाला। बुद्धिमान्। चतुर। २ धार्मिक।

सुधीर—वि० [सं०] जिसमें यथेष्ट धैर्य हो। धैर्यवान्।

सुधुम्नानी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार पुष्कर द्वीप के सात खंडो मे से एक। उ०—एक सुधुम्नानी कह्यो और मनोजल जान। चित्ररेफ है तीसरो चौथो गणि पवमान। पंचम जानि पुरोजवहि छठो विमल बहु रूप। विश्वधातु है सात जो यह खंडनि को रूप।—केशव (शब्द०)।

विशेष—यह शब्द संस्कृत के कोशों में नहीं मिलता।

सुधूपक—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीवेष्ट नामक गंधद्रव्य।

सुधूम्य—संज्ञा पुं० [सं०] स्वादु नामक एक गंधद्रव्य।

सुधूम्रवर्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक जिह्वा का नाम।

सुधृति—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक राजा का नाम जो मिथिला के महावीर का पुत्र था। २ राज्यवर्धन का पुत्र।

सुधोद्भव—संज्ञा पुं० [सं०] धन्वंतरि।

विशेष—समुद्रमथन के समय धन्वंतरि सुधा लिए हुए निकले थे, इसी से इन्हें 'सुधोद्भव' कहते हैं।

सुधोद्भवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हरीतकी। हर्रे। हड।

सुधौत—वि० [सं०] १ अच्छी तरह साफ किया हुआ। धुला हुआ। स्वच्छ [को०]।

सुध्युपास्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ परमेश्वर, जो सुधी जनों के उपास्य हैं। २ एक प्रकार का राजप्रासाद। ३ कृष्ण का एक सखा। ४ बलदेव का मूसल [को०]।

सुध्युपास्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ औरत। नारी। स्त्री। २ पार्वती। उमा। ३ पार्वती की एक सखी। ४ एक प्रकार का रंग।

सुनंद¹—संज्ञा पुं० [सं० सुनन्द] १ एक देवपुत्र। २ श्रीकृष्ण का एक पार्षद्। ३ बलराम का मूसल। ४ कुंभ दैत्य का मूसल जो विश्वकर्मा का बनाया हुआ माना जाता है। ५ बारह प्रकार के राजभवनों में से एक।

विशेष—यह सुनंद नामक राजप्रासाद राजाओं के लिये विशेष शुभकर माना गया है। कहते हैं, इसमें रहनेवाले राजा को कोई परास्त नहीं कर सकता। 'युक्तिकल्पतरु' के अनुसार इस भवन की लंबाई राजा के हाथ के परिमाण से २१ हाथ और चौडाई ४० हाथ होनी चाहिए।

६ एक बौद्ध श्रावक।

सुनंद²—वि० आनंददायक।

सुनंदक—संज्ञा पुं० [सं० सुनन्दन] शिव का एक गण।

सुनंदन—संज्ञा पुं० [सं० सुनन्दक] १ पुराणानुसार कृष्ण के एक पुत्र का नाम। २ पुरीषभीरु का एक पुत्र। ३ भूनंदन का भाई।

**सुनंदा**—संज्ञा स्त्री० [सं० सुनन्दा] १ उमा। गौरी। २ उमा की एक सखी। ३ कृष्ण की एक पत्नी। ४ बाहु और बालि की माता। ५ चेदि के राजा सुबाहु की बहन। ६ सार्वभौम दिग्गज की पत्नी। ७ दुष्यत के पुत्र भरत की पत्नी। ८ प्रतीप की पत्नी। ९. एक नदी का नाम। १० सर्वार्थसिद्धि नद की वडी स्त्री। ११ सफेद गौ। १२ गोरोचना। गोरोचन। १३ अर्क-पत्री। इसरौल। १४ एक तिथि। १५ नारी। स्त्री। औरत।

**सुनंदिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं० सुनन्दिनी] १ आरामशीतला नामक पत्रशाक। २ एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे 'स ज स ज ग' रहते हैं। इसे प्रबोधिता और मजुभाषिणी भी कहते हैं।

**सुन**†—वि०, संज्ञा पु० [सं० शून्य] दे० 'सुन्न'।

**सुनका**†—संज्ञा पु० [देश०] चौपायो का एक रोग जो उनके कठ मे होता है। गरारा। घुरकवा।

**सुनकातर**—संज्ञा पुं० [सं० स्वन, हिं० सोन + कातर] १ एक प्रकार का साँप।

**सुनकिरवा**—संज्ञा पु० [हिं० सोना + किरवा (= कीडा)] एक प्रकार का कीडा जिसके पर पन्ने के रग के होते है। उ० - गोरी गद-कारी परे हँसत कपोलनि गाड। कैसी लसति गँवारि यह सुन-किरवा की आड।—विहारी (शब्द०)। २ † एक प्रकार का क्षुप।

**सुनक्षत्र**[1]—संज्ञा पु० [सं०] १ उत्तम नक्षत्र। २ एक राजा का नाम जो मरुदेव का पुत्र था। ३ निरमित्र का पुत्र।

**सुनक्षत्र**[2]—उत्तम नक्षत्रवाला।

**सुनक्षत्रा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कर्म मास का दूसरा नक्षत्र। २ कार्तिकेय की एक मातृका।

**सुनखर्चा**†—संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का धान जो आश्विन के अत और कार्तिक के प्रारभ मे होता है।

**सुनगुन**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुनना + अनु + गुन] १ किसी बात का भेद। टोह। सुराग।

क्रि० प्र०—मिलना।—लगना।

२ कानाफूसी। अस्पष्ट चर्चा।

**सुनजर**—वि० [सं० सु + फा० नजर] दयावान्। कृपालु। (डिं०)।

**सुनत**[1]—संज्ञा स्त्री० [अ० सुन्नत] दे० 'सुन्नत'।

**सुनत**[2]—वि० [सं०] अत्यत नम्र या झुका हुआ।

**सुनति**†—संज्ञा स्त्री० [अ० सुन्नत] दे० 'सुन्नत'। उ०—(क) जो तुरुक तुरुकिनी जाया। पेटै काहे न सुनति कराया।—कबीर (शब्द०)। (ख) कासिहु ते कला जाती मथुरा मसीद होती सिवाजी न होते तो सुनति होत सब की।—भूषण (शब्द०)।

**सुनना**—क्रि० स० [सं० श्रवण तुल० प्रा० सुनोति] १. श्रवणेंद्रिय के द्वारा शब्द का ज्ञान प्राप्त करना। कानो के द्वारा उनका विषय ग्रहण करना। श्रवण करना। जैसे,—फिर आवाज दो, उन्होंने सुना नहीं होगा।

संयो० क्रि०—पडना।—रखना।

मुहा० सुनी अनसुनी कर देना = कोई बात सुनकर भी उसपर ध्यान न देना। किसी बात को टाल जाना। सुनी सुनाई = जिसे केवल सुनकर जाना गया हो, प्रत्यक्ष देखा न गया हो। जैसे, सुनी सुनाई बात।

२ किसी के कथन पर ध्यान देना। किसी की उक्ति पर ध्यान-पूर्वक विचार करना। कान देना। जैसे,—कथा सुनना, पाठ सुनना, मुकदमा सुनना। ३ भली बुरी या उलटी सीधी बातें श्रवण करना। जैसे,—(क) मालम होता है, तुम भी कुछ सुनना चाहते हो। (ख) जो एक कहेगा, वह चार सुनेगा।

**सुनफा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्योतिष का एक योग।

विशेष—सूर्य के अतिरिक्त जब कोई ग्रह चद्रमा के बाद द्वितीय स्थिति मे आ बैठता है तब 'सुनफा योग' होता है।

**सुनबहरा**†—वि० [हिं० सुनना + बहरा] पूरी तरह सुनकर या श्रवण करके भी बधिर का सा आचरण करना। सुनकर भी न सुनने का भाव व्यक्त करना।

**सुनबहरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुन्न + बहरी ?] १ एक प्रकार का रोग जिसमे पैर फूल जाता है। श्लीपद। फीलपा। २ एक प्रकार का कुष्ठ रोग जिसमे रोग से आक्रांत अग या शरीर का भाग सुन्न हो जाता है और वहाँ स्पर्श या आघात की अनुभूति नही होती।

**सुनय**—संज्ञा पु० [सं०] १ सुनीति। उत्तम नीति। २. सदाचार। सद्व्यवहार (को०)। ३ परिप्लव राजा का पुत्र। ४ ऋत का एक पुत्र। ५. खनित्र का पुत्र।

**सुनयन**[1]—संज्ञा पु० [सं०] मृग। हरिन।

**सुनयन**[2] - वि० [स्त्री० सुनयना] सुदर आँखोवाला। सुलोचन।

**सुनयना** संज्ञा स्त्री० [सं०] १ राजा जनक की पत्नी। २ नारी। स्त्री। औरत। ३ सुदर नेत्रोवाली स्त्री (को०)।

**सुनर**—संज्ञा पुं० [सं० सु + नर] १ अर्जुन। (डिं०)। २ सुदर पुरुष।

**सुनरिया**‡—संज्ञा स्त्री० [सं० सुन्दरी, सु + नरी + इया (प्रत्य०)] सुदर नारी। सुदर स्त्री। उ०—प्यारे की पियरिया जगत से नियरिया सुनरिया अनूठी तोरी चाल।—बलबीर (शब्द०)।

**सुनरी**†—संज्ञा स्त्री० [सं० सुन्दरी] दे० 'सुनरिया'।

**सुनर्द**—वि० [सं०] गभीर गर्जन या नाद करनेवाला [को०]।

**सुनवाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुनना + वाई (प्रत्य०)] १ सुनने की क्रिया या भाव। २ मुकदमे आदि का पेश होकर सुना जाना। ३ किसी शिकायत, फरियाद आदि का सुना जाना। जैसे, तुम लाख चिल्लाया करो, वहाँ कुछ सुनवाई ही नही होगी।

**सुनवैया**(पु)—वि० [हिं० सुनना + वैया (प्रत्य०)] १ सुननेवाला। २ सुनानेवाला। उ०—मगल सदा ही करै राम ह्व प्रसन्न, सदा राम रसिकावली सुनैया सुनवैया को।—रघुराज (शब्द०)।

**सुनस**—वि० [सं०] सुदर नाकवाला।

**सुनसर**—संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का गहना।

**सुनसान**[1]—वि० [सं० शून्य + स्थान] १ जहाँ कोई न हो। खाली। निर्जन। जनहीन। उ०—(क) ये तेरे वनपथ परे सुनसान

उजारु।—श्रीधर पाठक (शब्द०)। (ख) स्वामी हुएँ बिना सेवक के नगर मनुष्यो बिन सुनसान।—श्रीधर पाठक (शब्द०)। (ग) सुनसान कहुँ गभोर बन कहुँ सोर वन पशु करत है।—उत्तररामचरित्र (शब्द०)। २ उजाड। वीरान।

सुनसान[2]—सञ्ञा पुं० सन्नाटा। उ०— निशा काल अतिशय अँधियारा छाय रहा सुनसान। —श्रीधर पाठक (शब्द०)।

सुनह्—सञ्ञा पुं० [सं०] जन्हु का एक पुत्र।

सुनहरा—वि० [हिं० सोना] [वि० स्त्री० सुनहरी] दे० 'सुनहला'।

सुनहला—वि० [हिं० सोना + हला(प्रत्य०)] [स्त्री० सुनहली] सोने के रग का। सोने का सा। जैसे,—सुनहला काम। सुनहला रग।

सुनाई—सञ्ञा स्त्री० [हिं० सुनना + आई (प्रत्य०)] दे० 'सुनवाई'।

सुनाकृत, सुनाकृत—सञ्ञा पुं० [सं०] काली हलदी। कचूर। कर्पूरक।

सुनाद[1]—सञ्ञा पुं० [सं०] १ शख। २ सुदर नाद या ध्वनि।

सुनाद[2] —वि० सुदर नाद या शब्दवाला।

सुनादक—सञ्ञा पुं० वि० [सं०] दे० 'सुनाद'।

सुनाना—क्रि० स० [हिं० सुनना का प्रेर० रूप] १ दूसरे को सुनने मे प्रवृत्त करना। कर्णगोचर कराना। श्रवण कराना। २ खरी-खोटी कहना। जैसे,—तुमने भी उसे खूब सुनाया।

सयो० क्रि०—डालना —देना।

सुनानी—सञ्ञा स्त्री० [हिं० सुनना + आनी (प्रत्य०)] दे० 'सुनावनी'।

सुनाभ[1]—सञ्ञा पुं० [सं०] १ सुदर्शन चक्र। २ मैनाक पर्वत। ३ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ४ वरुण का एक मत्री। ५ गरुड का एक पुत्र। ६ पर्वत। महीधर (को०)। ७ एक प्रकार का मत्र जिसका प्रयोग अस्त्रो पर किया जाता था।

सुनाभ[2]—वि० १ सुदर नाभि या मध्य भागवाला।

सुनाभक—सञ्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुनाभ'।

सुनाभा—सञ्ञा स्त्री० [सं०] कटभी। करही। हरिमल।

सुनाभि—वि० [सं०] सुदर नाभिवाला।

सुनाम—सञ्ञा पुं० [सं०] यश। कीर्ति। ख्याति।

सुनाम द्वादशी—सञ्ञा स्त्री० [सं०] एक व्रत जो वर्ष की बारहो शुक्ला द्वादशियो को किया जाता है।

विशेष —अगहन महीने की शुक्ला द्वादशी को इस व्रत का आरभ होता है। अग्निपुराण मे इसका बडा माहात्म्य लिखा है।

सुनामा[1]—सञ्ञा पुं० [सं० सुनामन्] १ कस के आठ भाइयो मे से एक। २ सुकेतु के एक पुत्र का नाम। ३ स्कद का एक पार्षद। ४ वैनतेय का एक पुत्र।

सुनामा[2]—वि० १ यशस्वी। कीर्तिशाली। २ सुदर नामवाला (को०)।

सुनामिका—सञ्ञा स्त्री० [सं०] त्रायमाणा लता। त्रायमान।

सुनामी—सञ्ञा स्त्री० [सं०] देवक की पुत्री और वसुदेव की पत्नी।

सुनायक—सञ्ञा पुं० [सं०] १ कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम। २ एक दैत्य का नाम। ३ वैनतेय के एक पुत्र का नाम। ४ वह व्यक्ति जो अच्छा या योग्य नायक हो।

सुनार[1]—सञ्ञा पुं० [सं० स्वर्णकार] [स्त्री० सुनारिन, सुनारी] सोने, चाँदी के गहने आदि बनानेवाली जाति। स्वर्णकार।

सुनार[2] - सञ्ञा पुं० [सं०] १ कुतिया का दूध। २ साँप का अडा। ३ चटक पक्षी। गोरा। गौरैया।

सुनार[3]—सञ्ञा स्त्री० [हिं० सु + नार (=नारी)] सुदर स्त्री।

सुनारी[1]—सञ्ञा स्त्री० [हिं० सुनार + ई (प्रत्य०)] १ सुनार का काम। २ सुनार की स्त्री। उ०—ग्वाड जनी नायन नटी प्रकट परोसिन नारि। मालिन बरइन शिल्पिनी चुरहेरनी सुनारि।—केशव (शब्द०)।

सुनारी[2]—सञ्ञा स्त्री० [सं० सु + नारी] सुदर स्त्री।

सुनाल[1]—सञ्ञा पुं० [सं०] रक्त कमल। लाल कमल। लामज्जक।

सुनाल[2]—वि० जिसकी नाल सुदर हो (को०)।

सुनालक—सञ्ञा पुं० [सं०] अगस्त्य। बकपुष्प का वृक्ष।

सुनावनी—सञ्ञा स्त्री० [हिं० सुनना + आवनी (प्रत्य०)] १. कहीं विदेश से किसी सबधी आदि की मृत्यु का समाचार आना।

क्रि० प्र० —आना।

२ वह स्नान आदि कृत्य जो परदेश से किसी सबधी की मृत्यु का समाचार आने पर होता है।

क्रि० प्र०—मे जाना।

सुनाशीर सञ्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुनासीर'।

सुनास[1]—वि० [सं०] वि० 'सुनस'।

सुनासा[2]—सञ्ञा स्त्री० [सं०] १ सुदर एव सुडौल नासिका। २ कौआ-ठोठी। काकनासा।

सुनासिक—वि० [सं०] जिसकी नाक सुदर हो। सुदर नाकवाला। सुनास।

सुनासिका—सञ्ञा स्त्री० [सं०] १ कौआठोठी। काकनासा। २ सुदर नासिका।

सुनासीर—सञ्ञा पुं० [सं०] १ इद्र। उ०—सुनासीर सत सरिस सो सतत करै विलास।— मानस, ६।१०। २ देवता। अमर।

सुनाहक(पु)—क्रि० वि० [हिं० सु + फा० ना + अ० हक] दे० 'नाहक'।

सुनिगूढ—वि० [सं०] जो अत्यत निगूढ हो। सुनिभृत (को०)।

सुनिग्रह—वि० [सं०] जो भली प्रकार नियत्रित हो। २ जो सरलता से नियत्रण के योग्य हो। दुर्निग्रह का उलटा।

सुनिद्र—वि० [सं०] जिसे अच्छी नीद आई हो। अच्छी तरह सोया हुआ। सुनिद्रित।

सुनिद्रित—वि० [सं०] दे० 'सुनिद्र'।

सुनिनद, सुनिनाद—वि० [सं०] १ सुदर नाद या शब्द करनेवाला। २ जिसका स्वर सुदर हो।

सुनिभृत—वि० [सं०] अत्यत निभृत या एकात। अत्यत गूढ।

सुनिमय—वि० [सं०] जो सरलता से विनिमय के योग्य हो।

सुनियत—वि० [सं०] १ सुव्यवस्थित। सुनिर्धारित। सुनिश्चित। २ जिसके रखने मे सावधानी बरती गई हो।

सुनियम—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छी व्यवस्था। उत्तम नियम या मर्यादा।

सुनियाना† क्रि० अ० [हिं० सुन्न + इयाना (प्रत्य०)] (फसल का) रोग से सूख जाना या मारा जाना (रुहेलखंड)।

सुनिरुहन संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का वस्तिकर्म।

सुनिरूढ वि० [सं०] जिसे ओषधि से अच्छी तरह रेचन कराया गया हो [को०]।

सुनिरूहण—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम जुलाब या रेचन। दे० 'सुनिरुहन'।

सुनिर्णिक्त—वि० [सं०] सम्यक् परिष्कार किया हुआ। अच्छी तरह प्रमृष्ट [को०]।

सुनिर्यास—संज्ञा पुं० [सं०] जिगिनी नामक वृक्ष।

सुनिर्यासा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जिगिनी वृक्ष। विशेष दे० 'जिगिन' [को०]।

सुनिश्चय संज्ञा पुं० [सं०] १ अच्छा निश्चय। २ दृढ निश्चय

सुनिश्चल१—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

सुनिश्चल२ वि० अचल। अटल [को०]।

सुनिश्चित१—संज्ञा पुं० [सं०] एक बुद्ध का नाम।

सुनिश्चित२—वि० दृढता से निश्चय किया हुआ। भली भाँति निश्चित किया हुआ।

सुनिश्चितपुर—संज्ञा पुं० [सं०] काश्मीर का एक प्राचीन नगर।

सुनिषण्ण—संज्ञा पुं० [सं०] चौपतिया या सुसना नाम का साग। शिरियारी। उटंगन।

विशेष—कहते है, यह साग खाने से अच्छी नीद आती है, इसी से इसका नाम सुनिषण्ण (जिससे अच्छी नीद आवे) पडा है।

सुनिषण्णक —संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुनिषण्ण'।

सुनिष्टप्त—वि० [सं०] १ जो खूब निष्टप्त किया गया हो। अच्छी तरह तपाया या गलाया हुआ। २ खूब पकाया हुआ [को०]।

सुनिस्त्रिंस—संज्ञा पुं० [सं०] तेज धारवाली तलवार।

सुनीच —संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष के अनुसार किसी ग्रह का किसी राशि के किसी विशेष अंश मे अवस्थान। जैसे,—रवि यदि मेष और तुला राशि मे हो तो नीचस्थ कहलाता है, और इसी तुला राशि के किसी विशेष अंश मे पहुँच जाने पर 'सुनीच'।

सुनीत१—संज्ञा पुं० [सं०] १ बुद्धिमत्ता। समझदारी। २ नीतिमत्ता। ३ शिष्टता। विनम्रता (को०)। ४ एक राजा का नाम जो सुबल का पुत्र था।

सुनीत२—वि० भद्र। शिष्ट। विनम्र [को०]।

सुनीति१—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उत्तम नीति। २ राजा उत्तानपाद की पत्नी और ध्रुव की माता।

विशेष—विष्णुपुराण मे लिखा है कि राजा उत्तानपाद की दो पत्नियाँ थी सुनीति और सुरुचि। सुरुचि को राजा बहुत चाहता था और सुनीति से बहुत घृणा करता था। सुनीति को 'ध्रुव' नामक एक पुत्र हुआ जिसने तप द्वारा भगवान् को प्रसन्न कर राजसिंहासन प्राप्त किया। विशेष दे० 'ध्रुव'।

सुनीति२—संज्ञा पुं० १ शिव। २ विदूरथ का एक पुत्र।

सुनीति३—वि० अच्छा नीतिज्ञ या नीतियुक्त [को०]।

सुनीथ१ संज्ञा पुं० [सं० १ कृष्ण का एक पुत्र। २ संतति का पुत्र। ३ सुषेण का एक पुत्र। ४ सुबल का एक पुत्र। ५ शिशुपाल का एक नाम। ६ एक दानव का नाम। ७ एक प्रकार का वृत्त। ८ ब्राह्मण (को०)।

सुनीथ२ वि० न्यायपरायण। नीतिमान्।

सुनीथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मृत्यु की पुत्री और अंग की पत्नी।

सुनील१—संज्ञा पुं० [सं०] १ अनार का पेड। दाडिम वृक्ष। २ लामज्जक। लाल कमल।

सुनील२ --वि० अत्यंत नील वर्ण बहुत नील रंग।

सुनीलक—संज्ञा पुं० [सं०] १ नील भृंगराज। काला भँगरा। २ नीलकांत मणि। नीलम। ३ पियासाल का वृक्ष। नीलासन (को०)।

सुनीला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चणिका तृण। चनिका घास। २ नीलापराजिता। नीली अपराजिता। नीली कोयल। ३ अतसी। अलसी। तीसी।

सुनु—संज्ञा पुं० [सं०] जल।

सुनेत्र१—संज्ञा पुं० [सं०] १ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। २ तेरहवें मनु का एक पुत्र। ३ बौद्धो के अनुसार मार का एक पुत्र। ४ चक्रवाक। चकवा।

सुनेत्र२—वि० [वि० स्त्री० सुनेत्रा] सुंदर नेत्रोवाला। सुलोचन।

सुनेत्रा१—संज्ञा स्त्री० [सं०] सांख्य के अनुसार नौ तुष्टियो मे से एक।

सुनेत्रा२—वि० स्त्री० सुंदर नेत्रोवाली। सुलोचना।

सुनैया(पु)—वि० [हिं० सुनना + ऐया (प्रत्य०)] १ सुननेवाला। जो सुने। उ०—द्रौपदी विचारै रघुराज आज जाति लाज सब हैं धरैया पै न टेर को सुनैया है।—रघुराज (शब्द०)। २ सुनानेवाला।

सुनोची—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का घोडा। उ०—जरदा औ जाग जिरही से जग जाहर, जवाहर हुकुम सौ जवाहर झलक के। मगसी मुजनस सुनोची स्यामकर्न स्याह, सिरगा सजाए जे न मंदिर अलक के।—सूदन (शब्द०)।

सुनौ१—संज्ञा स्त्री० [सं०] अच्छी नौका या नाव।

सुनौ२—संज्ञा पुं० १ जल। २ वह जिसके पास अच्छी नौका हो [को०]।

सुन्न१—वि० [सं० शून्य, प्रा० सुन्न] निर्जीव। स्पंदनहीन। निस्तब्ध। जडवत्। निश्चेष्ट। निश्चल। जैसे,—ठढ के मारे उसके हाथ पैर सुन्न हो गए। उ०—(क) यह बात सुनकर भाग्यवती सुन्न सी हो गई।—श्रद्धाराम (शब्द०)। (ख) तहाँ लगी विरहागि

नाहिं क्यों चनि कै पेखत । सुकवि सुन्न ह्वै जाय न प्यारी देखत देखत ।—अंबिकादत्त (शब्द०) । (ग) निरखि कंस की छाती धड़की । सुन्न समान भई गति धड़की ।—गिरधर (शब्द०) ।

सुन्न²—संज्ञा पुं० शून्य । सिफर । उ०—(क) यथा सुन्न दस गुन्न बिन अंक गने नहिं जात ।—श्रद्धाराम (शब्द०) । (ख) अगनित बढ़त उदोत लखउ इक बेंदी दीने । कह्यो सुन्न को ऐसो गुन को गनित नवीने ।—अंबिकादत्त (शब्द०) ।

सुन्न³—वि० दे० 'सुन्नसान', 'सुनसान' ।

सुन्नत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मुसलमानों की एक रस्म जिसमें लड़के की लिंगेंद्रिय के अगले भाग का बढ़ा हुआ चमड़ा काट दिया जाता है । खतना । मुसलमानी । २ तरीका । पद्धति । कायदा (को०) । ३ प्रकृति । स्वभाव (को०) । ४ मार्ग । राह । सरणि (को०) । ५ वह पद्धति या मार्ग जिसपर मुहम्मद चले (को०) ।

सुन्नति(पु)—संज्ञा स्त्री० [अ० सुन्नत] खतना । मुसलमानी । दे० 'सुन्नत' । उ०—(क) सकति सनेह करि सुन्नति करिए मैं न बदौगा भाई ।—कबीर ग्रं०, पृ० ३३१ । (ख) सुन्नति किए तुरक जे होइगा औरत का क्या करिए ।—कबीर ग्रं०, पृ० ३३१ ।

सुन्नसान—वि० [सं० शून्य + स्थान] दे० 'सुनसान' ।

सुन्ना¹—क्रि० स० [हिं० सुनना] दे० 'सुनना' ।

सुन्ना²—संज्ञा पुं० [सं० शून्य] बिंदी । सिफर, जैसे,—(१) पर सुन्ना (०) लगाने से (१०) होता है ।

सुन्नी—संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानों का एक भेद जो चारों खलीफाओं को प्रधान मानता है । चारयारी ।

सुपख—वि० [सं० सुपक्ष] १ सुंदर तीरों से युक्त । २ सुंदर परों से युक्त ।

सुपथ—संज्ञा पुं० [सं० सुपन्था] १ उत्तम मार्ग । सुमार्ग । सत्पथ । सन्मार्ग । २ सीधा रास्ता । सही रास्ता । उ०—सबहि सनेह बिबस मग भूला । कहि सुपथ सुर बरसहि फूला ।—मानस, २।२३७ ।

सुपक(पु)—वि० [सं० सुपक्व] अच्छी तरह पका हुआ । सुपक्व । उ०—गोपाल राइ दधि माँगत अरु रोटी । माखन सहित देहि मेरि जननी सुपक सुमंगल मोटी ।—सूर (शब्द०) ।

सुपक्व¹—वि० [सं०] १ अच्छी तरह पका हुआ (फल आदि) । २ जिसे अच्छी तरह पकाया गया हो । जैसे, अन्न (को०) ।

सुपक्व²—संज्ञा पुं० [सं०] सुगंधित आम ।

सुपक्ष—वि० [सं०] जिसके सुंदर पंख हों । सुंदर पंखोंवाला ।

सुपक्ष्मा—वि० [सं० सुपक्ष्मन्] जिसकी पलकें सुंदर हों । सुंदर पलकोंवाला ।

सुपच(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्वपच] १ चांडाल । डोम । उ०—तुलसी भगत सुपच भलो भजै रइनि दिन राम । ऊँचो कुल केहि काम को जहाँ न हरि को नाम ।—तुलसी (शब्द०) । २ भंगी । (डिं०) ।

सुपट¹—वि० [सं०] सुंदर वस्त्रों से युक्त । अच्छे वस्त्रोंवाला ।

सुपट²—संज्ञा पुं० सुंदर वस्त्र ।

सुपठ—वि० [सं०] सुपाठ्य । जो सरलता से पढ़ा जा सके ।

सुपड़ा†—संज्ञा पुं० [देश०] लंगर का अँकुड़ा जो जमीन में धँसता जाता है ।

सुपत(पु)—वि० [सं० सु + हिं० पत (=प्रतिष्ठा)] प्रतिष्ठायुक्त । मानयुक्त । उ०—बह झूठो शशि जानि बदन बिधु ज्यों बिरचि उहै री । सौंप्यो सुपत बिचारि श्याम हित सुत नहीं बटि लैरी ।—सूर (शब्द०) ।

सुपतिक—संज्ञा पुं० [देश०] रात को पढ़नेवाला तोता (डिं०) ।

सुपत्थ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुपथ] दे० 'सुपथ' । उ०—इन अवध में श्रीराम लछमन वृद्ध पितु दशरथ को । सेवा करन निज रटन में गहि रीति निगम सुपत्थ की ।—पद्माकर (शब्द०) ।

सुपत्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह महिला जिसका पति सुपुरुष हो । २ सुंदर पत्नी । सुगृहिणी (को०) ।

सुपत्र¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ तेजपत्र । तेजपत्ता । २ आदित्यपत्र । हुर-हुर का एक भेद । ३ पल्लिवाह नाम की घास । ४ इंगुदी । गोंदी । हिंगोट । ५ एक पौराणिक पक्षी ।

सुपत्र²—वि० १ सुंदर पत्तों से युक्त । २ जिसके पंख या डैने सुंदर हों । सुंदर पंखोंवाला । ३ सुंदर पंख या पत्र से युक्त । जैसे, बाण (को०) ।

सुपत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] सहिजन । शिग्रु ।

सुपत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रुद्रजटा । २ शतावरी । सतावर । ३ शालपर्णी । सरिवन । ४ शमी । छोंकर । सफेद कीकर । ५ पालक का साग ।

सुपत्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] जतुका । पपटी ।

सुपत्रित—वि० [सं०] पंखों या तीरों से युक्त । जिसमें पंख या तीर हों ।

सुपत्री¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का पौधा । गंगापत्री ।

सुपत्री²—वि० [सं० सुपत्रिन्] पंखों या तीरों से भली भाँति युक्त ।

सुपथ¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ उत्तम पथ । अच्छा रास्ता । २ सन्मार्ग । सदाचरण । ३. एक वृत्त का नाम जो एक रगण, एक नगण, एक भगण और दो गुरु का होता है ।

सुपथ(पु)²—वि० [सं० सु + पथ] १ समतल । हमवार । (जमीन) । उ०—किधौं हरि मनोरथ रथ की सुपथ भूमि मीनरथ मनहूँ की गति न सकति छ्वै ।—केशव (शब्द०) । २ सुंदर पथ या मार्गवाला ।

सुपथी¹—संज्ञा पुं० [सं० सुपथिन्] अच्छी राह । सन्मार्ग ।

सुपथी²—वि० सन्मार्गगामी । सुपथयुक्त (को०) ।

सुपथ्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह आहार या भोजन जो रोगी के लिये हितकर हो । अच्छा पथ्य । २ आम । ३ अच्छा पथ या मार्ग ।

सुपथ्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सफेद बथुवा । बड़ा बथुवा । श्वेत चिल्ली । २ लाल बथुवा । लघु वास्तूक ।

सुपद्—वि० [सं०] सुंदर पैरोंवाला ।

सुपद—वि० [स०] १ सुदर पैरोवाला। २ तेज चलनेवाला। ३ सुदर पद, शब्द या वाक्ययुक्त। †४ पद के अनुकूल। वाजिब। उचित।

सुपद्मा—सज्ञा स्त्री० [स०] वच। बचा।

सुपनतर(पु)—सज्ञा पुं० [स० स्वप्नान्तर] निद्रा या स्वप्न की अवस्था। उ०—सुपनतर की प्यास ज्यौं भजै मही किहि भति। जब ऐहौ तव पूजिहै मो मन मभझहु खति।—पृ० रा०, १७।२७।

सुपन†—सज्ञा पु० [स० स्वप्न] दे० 'स्वप्न'। उ०—(क) सुपन सुफल दिल्ली कथा कही चद वरदाय।—पृ० रा०, ३।५८। (ख) नित के जागत मिटि गयो वा सँग सुपन मिलाप। चित्र दरशहू को लग्यो आँखिन आँसू पाप।—लक्ष्मणसिह (शब्द०)। (ग) आज मैं निहारे कारे कान्ह को सुपन बीच उठि कै सकारे जमुना पै जल को गई। तवही ते दीनद्याल ह्वै रही मनीखा लटू एरी भटू मेरी भटभेटी मग मैं भई।—दीनदयाल (शब्द०)।

सुपनक—वि० [स० स्वप्न] स्वप्न देखनेवाला। जिसे स्वप्न दिखाई देता हो।

सुपना—सज्ञा पु० [स० स्वप्न] दे० 'स्वप्न'। उ०—तहाँ भूप देख्यो अस सुपना। पकरचौ पैर गादरी अपना।—निश्चल (शब्द०)।

सुपनाना(पु)¹—क्रि० स० [हिं० सुपना या स० स्वप्नायते] स्वप्न देना। स्वप्न दिखाना। (क्व०)। उ०—विह्वल तन मन चकित भई सुनि सा प्रतच्छ सुपनाए। गदगद कठ सूर कोशलपुर सोर सुनत दुख पाए।—सूर (शब्द०)।

सुपनाना²—क्रि० अ० स्वप्न देखना। सपना देखना।

सुपरकास†—सज्ञा पु० [स० सुप्रकाश] ताप। गरमी। (डि०)।

सुपरडट—सज्ञा पु० [अ० सुपरिंटेंडेंट] दे० 'सुपरिंटेंडेंट'।

सुपरण—सज्ञा पुं० [स० सुपर्ण] दे० 'सुपर्ण'।

सुपरन(पु)—सज्ञा पु० [स० सुपर्ण, हिं० सुपरण] दे० 'सुपर्ण'।

सुपरमतुरिता—सज्ञा स्त्री० [स०] बौद्धो की एक देवी का नाम।

सुपररायल—सज्ञा पु० [अ०] छापेखाने मे कागज आदि की एक नाप जो २२ इच चौडी और २९ इच लबी होती है।

सुपरवाइजर—सज्ञा पु० [अ०] वह जो किसी काम की देखभाल या निगरानी करता हो। निरीक्षण करनेवाला। निगरानी करनेवाला।

सुपरस(पु)—सज्ञा पु० [स० सुस्पर्श] दे० 'स्पर्श'। उ०— राम सुपरस मय कौतुक निरखि सखी सुख लटै।—सूर (शब्द०)।

सुपरिंटेंडेंट—सज्ञा पुं० [अ०] निरीक्षण करनेवाला। निगरानी करनेवाला। प्रधान निरीक्षक। जैसे,—पुलिस विभाग का सुपरिंटेंडेंट, तार विभाग का सुपरिंटेंडेंट।

यौ०—सुपरिंटेंडेंट पुलिस = जिले का प्रधान पुलिस अधिकारी।

सुपरीक्षित—वि० [स०] जो अच्छी तरह जाँचा गया हो [को०]।

सुपर्ण—सज्ञा पु० [स०] १ गरुड। २ मुरगा। ३ पक्षी। चिडिया। ४ किरण। ५ विष्णु। ६ एक असुर का नाम। ७ देवगधर्व। ८ एक पर्वत का नाम। ९ घोडा। अश्व। १० सोम। ११ वैदिक मत्रो की एक शाखा का नाम। १२ अतरिक्ष का एक पुत्र। १३ सेना की एक प्रकार की व्यूहरचना। १४ नागकेसर। नागपुष्प। १५ अमलतास। स्वर्णपुष्प। १६ ज्ञानस्वरूप (को०)। १७ कोई दिव्य पक्षी (को०)। १८ सुदर पत्र या पत्ता।

विशेष—सुदर किरणो से युक्त होने के कारण इस शब्द का प्रयोग चद्रमा और सूर्य के लिये भी होता है।

सुपर्ण²—वि० [वि० स्त्री० सुपर्णा, सुपर्णी] १ सुदर दलो या पत्तोवाला। २ सुदर परोवाला।

सुपर्णक¹—सज्ञा पु० [स०] १ गरुड या कोई दिव्य पक्षी। २ अमलतास। स्वर्णपुष्प। आरग्वध। ३ सतवन। सतोना। सप्तपर्ण।

सुपर्णक²—वि० १ सुदर पत्तोवाला। २ सुदर पखोवाला।

सुपर्णकुमार—सज्ञा पु० [स०] जैनियो के एक देवता।

सुपर्णकेतु सज्ञा पु० [स०] १ विष्णु।

विशेष—विष्णु भगवान् की ध्वजा या केतु मे गरुड जी विराजते है, इसी से विष्णु का नाम सुपर्णकेतु पडा।

२ श्रीकृष्ण।

सुपर्णपातु - सज्ञा पु० [स०] एक दैत्य का नाम।

सुपर्णराज—सज्ञा पु० [स०] पक्षिराज। गरुड।

सुपर्णसद¹—वि० [स०] पक्षी पर चढनेवाला।

सुपर्णसद²—सज्ञा पुं० विष्णु।

सुपर्णाड—सज्ञा पु० [स० सुपर्णाण्ड] शूद्रा माता और सूत पिता से उत्पन्न पुत्र।

सुपर्णा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पद्मिनी। कमलिनी। २. गरुड की माता का नाम। ३ एक नदी का नाम।

सुपर्णाख्य - सज्ञा पु० [स०] नागकेसर। नागपुष्प।

सुपर्णिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ स्वर्ण जीवती। पीली जीवती। २ रेणुका बीज। ३ पलाशी। ४. शालपर्णी। सरिवन। ५. वकुची। बाकुची।

सुपर्णी¹—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गरुड की माता। सुपर्णा। २ मादा चिडिया। ३ कमलिनी। पद्मिनी। ४ एक देवी जिसका उल्लेख कद्रु के साथ मिलता है। (इसे कुछ लोग छदो की माता या वाग्देवी भी मानते है)। ५ अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक। ६ रात्रि। रात। ७ पलाशी। ८ रेणुका। रेणुक बीज।

सुपर्णी²—सज्ञा पु० [स० सुपर्णिन्] गरुड।

सुपर्णीतनय—सज्ञा पु० [स०] सुपर्णी के पुत्र, गरुड।

सुपर्णेय—सज्ञा पु० [स०] सुपर्णी के पुत्र, गरुड।

सुपर्यवदात—वि० [सं०] अत्यत स्वच्छ, साफ [को०]।

सुपर्याप्त—वि० [स०] १ सम्यक् प्रशस्त। सुविस्तृत। सावकाश। २. अच्छी तरह युक्त। पूर्णत उपयुक्त या ठीक [को०]।

दक्षिण भारत के अन्य स्थानो मे होते हैं। सुपारी (फल) टुकडे करके पान के साथ खाई जाती है। यो भी लोग खाते है। यह औषध के काम मे भी आती है। वैद्यक के अनुसार यह भारी, शीतल, रूखी, कसैली, कफ-पित्त-नाशक, मोहकारक, रुचिकारक दुर्गंध तथा मुँह की निरसता दूर करनेवाली है।

पर्या०—घोटा। पूग। क्रमुक। गुवाक। खपुर। सुरजन। पूग वृक्ष। दीर्घपादप। वल्कतरु। दृढवल्क। चिक्कण। पूगी। गोपदल। राजताल। छटाफल। क्रमु। कुमुकी। अकोट। ततुसार।

यौ०—चिकनी सुपारी=एक प्रकार की बनाई हुई सुपारी। विशेष दे० 'चिकनी सुपारी'।

मुहा०—सुपारी लगना=सुपारी का कलेजे मे अटकना। सुपारी खाते समय, कभी कभी पेट मे उतरते समय अटक जाती है। इसी को सुपारी लगना कहते हैं। उ०—राधिका झाँकि झरोखन ह्वै कवि केशव रीझि गिरे सुविहारी। सोर भयो सकुचे समुझे हरवाहि कह्यो हरि लागि सुपारी।—केशव (शब्द०)।

२ लिंग का अग्र भाग जो प्राय सुपारी (फल) के आकार का होता है। (बाजारू)।

सुपारी का फूल—सज्ञा पुं० [हिं० सुपारी+फूल] मोचरस या सेमर का गोंद।

सुपारी पाक—सज्ञा पुं० [हिं० सुपारी+सं० पाक] एक पौष्टिक औषध।

विशेष—इसके बनाने की विधि इस प्रकार है—पहले आठ टके भर चिकनी सुपारी का चूर्ण आठ टके भर गौ के घी मे मिलाकर तीन बार गाय के दूध मे डालकर धीमी आँच मे खोवा बनाते हैं। फिर बग, नागकेसर नागरमोथा, चदन, सोंठ, पीपल, काली मिर्च, आँवला, कोयल के बीज, जायफल, धनिया, चिरौजी, तज, पत्रज, इलायची, सिंघाडा, वशलोचन, दोनो जीरे (प्रत्येक पाँच पाँच टक) इन सब का महीन कपडछान चूर्ण उक्त खोवे मे मिलाकर ५० टक भर मिस्री की चाशनी मे डालकर एक टके भर की गोलियाँ बना ली जाती है। एक गोली सवेरे और एक गोली सध्या को खाई जाती है। इसके सेवन से शुक्रदोष, प्रमेह, प्रदर, जीर्ण ज्वर, अम्लपित्त, मदाग्नि और अर्श का निवारण होकर शरीर पुष्ट होता है।

सुपार्श्व¹—सज्ञा पुं० [सं०] १ पराम पीपल। गजदड। गदभाड। २ पाकर। प्लक्ष वृक्ष। ३ रुक्मरथ का एक पुत्र। ४ श्रुतायु का पुत्र। ५ दृढनेमि का पुत्र। ६ एक पर्वत का नाम। ७ एक राक्षस का नाम। ८ सपाति (गिद्ध) का बेटा। ९ देवी भागवत के अनुसार एक पीठस्थान। यहाँ की देवी का नाम नारायणी है। १० जैनियो के २४ जिनो या तीर्थंकरो मे से सातवें तीर्थंकर। ११ सुदर पार्श्व (को०)।

सुपार्श्व²—वि० सुदर पार्श्ववाला।

सुपार्श्वक—सज्ञा पुं० [सं०] १ चित्रक के एक पुत्र का नाम। २ भावी उत्सर्पिणी के तीसरे अर्हत् का नाम। ३ श्रुतायु का एक पुत्र। ४ गर्दभाड वृक्ष। परास पीपल (को०)।

सुपालि—वि० [सं०] ज्ञात । प्रतिबोधित [को०] ।

सुपास—संज्ञा पुं० [देश०] सुख । आराम । सुभीता । उ०—(क) चलौ बसी वृंदावन माही । सकल सुपास सहित सो आही ।—विश्राम (शब्द०) । (ख) जाया ताकी सवन निहारी । बैठा सिमिटि सुपास विचारी ।—विश्राम (शब्द०) । (ग) यात्रियों के लिये सब तरह का सुपास और आराम है ।—गदाधर सिंह (शब्द०) ।

सुपासी—वि० [हिं० सुपास + ई (प्रत्य०)] १ सुख देनेवाला । आनंददायक । उ०—(क) बालक सुभग देखि पुरवासी । होत भए सब तासु सुपासी ।—रघुराज (शब्द०) । (ख) षोडश भक्त अनन्य उपासी । पयहारी के शिष्य सुपासी । रघुराज (शब्द०) । २ सुखी । सुपास युक्त । सुखयुक्त । उ०—कहत पुरान रची केशव निज कर करतूति कलासी । तुलसी बसि हरपुरी राम जपु जो भयो चहै सुपासी ।—तुलसी ग्र०, पृ० ४६५ ।

सुपिंगला—संज्ञा स्त्री० [सं० सुपिङ्गला] १ जीवंती । डोडी शाक । २ ज्योतिष्मती । मालकगनी ।

सुपीडन—संज्ञा पुं० [सं० सुपीडन] १ अंगमर्दन । शरीर दबाना । मालिश । चपी । २ जोर से दबाना (को०) ।

सुपीत¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ गाजर । गर्जर । २ पीली कटसरैया । पीत झिंटी । ३ पीतसार या चंदन । ४ ज्योतिष में पाँचवें मुहूर्त्त का नाम ।

सुपीत²—वि० १ उत्तम रूप से पीया या पान किया हुआ । २ बिलकुल पीला । गहरा पीला ।

सुपीन—वि० [सं०] बहुत मोटा या बड़ा ।

सुपीवा—वि० [सं० सुपीवन्] अच्छी तरह पीनेवाला [को०] ।

सुपुंख—वि० [सं० सुपुङ्ख] जिसमें भली प्रकार पंख लगे हों [को०] ।

सुपुंसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पति सुपुरुष हो ।

सुपुट¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. कोलकंद । चमार आलू । २. विष्णुकंद ।

सुपुट²—वि० सुंदर पुट या नथुनोंवाला [को०] ।

सुपुटा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेवती । वनमल्लिका ।

सुपुत्र¹—संज्ञा पुं० [सं० सुपुत्र] १ जीवक वृक्ष । २ उत्तम पुत्र ।

सुपुत्र² वि० जिसका पुत्र सुंदर और उत्तम हो । अच्छे पुत्रवाला ।

सुपुत्रिका¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] जतुका लता । पपड़ी ।

सुपुत्रिका²—वि० सुंदर या उत्तम पुत्रवाली ।

सुपुर—संज्ञा पुं० [सं०] सुदृढ दुर्ग ।

सुपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुंदर पुरुष । २ सत्पुरुष । सज्जन । भलामानस ।

सुपुर्द—संज्ञा पुं० [फा०] दिया हुआ । सौंपा हुआ । हवाले किया हुआ ।

सुपुर्दगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] सुपुर्द करने का भाव । सुपुर्द करना ।

सुपुष्करा†—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्थल कमलिनी । स्थल पद्मिनी ।

सुपुष्प¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ लौंग । लवंग । २. आहुल्य । तरवट । तरवड़ । ३ प्रपौंडरीक । पुंडेरिया । पुंडेरी । ४ परिपाश्वत्थ । परास पीपल । ५ मुचकुंद वृक्ष । ६ शहतूत । तूत । ७ ब्रह्मदारु । ८ पारिभद्र । फरहद । ९. शिरीष । सिरिस । १० हरिद्रु । हलदुआ । ११ बड़ी सेवती । राजतरुणी । १२ श्वेतार्क । सफेद आक । १३ देवदारु । देवदार । १४ स्त्री का रज (को०) ।

सुपुष्प²—वि० सुंदर पुष्पों या फूलोंवाला । जिसमें सुंदर फूल हों ।

सुपुष्पक—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिरीष वृक्ष । सिरिस । २ मुचकुंद । ३ श्वेतार्क । सफेद आक । ४ हरिद्रु । हलदुआ । ५ गर्दभांड । परास पीपल । ६ राजतरुणी । बड़ी सेवती ।

सुपुष्पा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कोशातकी । तरोई । तुरई । २ द्रोणपुष्पी । गूमा । ३ शतपुष्पा । सौंफ । ३ शतपत्री । सेवती ।

सुपुष्पिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का विधारा । जीर्णदारु । २ शतपुष्पी । सौंफ । ३ मिश्रेया । सोआ । ४ पाटला । पाढर । ५ माहिषवल्ली । पाताल गारुडी । ६ शतपुष्पी । वनसनई ।

सुपुष्पित—वि० [सं०] जो अच्छी तरह पुष्पयुक्त हो । जिसमें खूब फूल खिले हों [को०] ।

सुपुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ श्वेत अपराजिता । सफेद कोयल लता । २ शतपुष्पी । सौंफ । ३ मिश्रेया । सोआ । ४ कदली । केला । ५ द्रोणपुष्पी । गूमा । ६ वृद्धदारु । विधारा ।

सुपूत¹—वि० [सं०] अत्यंत पूत या पवित्र ।

सुपूत²—वि० [सं० सु + पुत्र, प्रा० पुत्त, हिं० पूत] अच्छा पुत्र । सुपुत्र । सपूत ।

सुपूती—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुपूत + ई (प्रत्य०)] १ सुपूत होने का भाव । सपूतपन । उ०—करे सुपूती सोइ सुत ठीको ।—कबीर (शब्द०) । २ अच्छे पुत्रवाली स्त्री ।

सुपूर¹—संज्ञा पुं० [सं०] बीजपूर । बिजौरा नीबू ।

सुपूर²—वि० सहज में पूर्ण होने या भरा जाने योग्य ।

सुपूरक—संज्ञा पुं० [सं०] १ अगस्त । बकवृक्ष । २ बिजौरा नीबू ।

सुपेत†—वि० [फा० सुफ़ेद] दे० 'सफेद' ।

सुपेती—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सुफ़ेदी] १ दे० 'सफेदी' । २ बिछाने की चादर या तोशक । उ०—सुभग सुरभि पय फेनु समाना । कोमल कलित सुपेती नाना ।—मानस, १।३५६ ।

सुपेद - वि [फा० सुफ़ैद] दे० 'सफेद' ।

सुपेदी†—संज्ञा स्त्री० [फा० सुफ़ैदी] १ सफेदी । उज्वलता । २ ओढने की रजाई । ३ बिछाने की तोशक । ४ बिछौना । बिस्तर ।

सुपेली—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूप + एली (प्रत्य०)] १ छोटा सूप । २ दे० 'सुपलिया' ।

सुपेश—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम बुना हुआ वस्त्र । बारीक बुना हुआ कपड़ा [को०] ।

सुपेशल—वि० [सं०] अत्यंत सलोना या श्लक्ष्ण [को०] ।

सुपेशस्—वि० [सं०] सलोना। अत्यत सुदर [को०]।

सुपेदा—संज्ञा पुं० [फा० सुफैदह्] दे० 'सफेदा'।

सुपोष—वि० [सं०] जो सुगमता से पालने पोसने योग्य हो [को०]।

सुप्त¹—वि० [सं०] १ सोया हुआ। निद्रित। शयित। २ सोने के लिये लेटा हुआ। ३ ठिठुरा हुआ। ४ बद। मुँदा हुआ। मुद्रित। जैसे—फूल। ५ अकमण्य। बेकार। ६ सुस्त। ७ सुन्न। सज्ञा रहित (को०)। ८ अविकसित। जिसका विकास न हुआ हो। जैसे, शक्ति (को०)।

सुप्त²—संज्ञा पुं० गहरी नीद। गाढी निद्रा।

सुप्तक—संज्ञा पुं० [सं०] निद्रा। नीद।

सुप्तघातक—वि० [सं०] १ निद्रित अवस्था मे हनन या वध करनेवाला। २ हिंस्र। खूँखार।

सुप्तघ्न¹—संज्ञा पुं० [सं०] एक राक्षस का नाम।

सुप्तघ्न²—वि० दे० 'सुप्तघातक'।

सुप्तच्युत—वि० [सं०] जो नीद के कारण नीचे गिर पडा हो [को०]।

सुप्तजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ अर्धरात्रि (इस समय प्राय लोग सोए रहते हैं)। २ सुप्त आदमी। सोया हुआ आदमी (को०)।

सुप्तज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] स्वप्न।

विशेष—निद्रितावस्था मे जो स्वप्न दिखाई देता है वह जाग्रत अवस्था के समान ही जान पडता है, इसी से उसे सुप्तज्ञान कहते है।

सुप्तता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुप्त होने का भाव। २ निद्रा। नीद।

सुप्तत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुप्तता'।

सुप्तत्वक्—वि० [सं० सुप्तत्वच्] जिसके अग सुन्न हो। जिसे लकवा मार गया हो [को०]।

सुप्तप्रबुद्ध—वि० [सं०] जो अभी सोकर उठा हो।

सुप्तप्रलपित—संज्ञा पुं० [सं०] निद्रितावस्था मे होनेवाला प्रलाप। सोए सोए बकना या बर्राना।

सुप्तमास—वि० [सं०] संज्ञाशून्य। चेतनाशून्य। सुन्न। निश्चेष्ट।

सुप्तमाली—संज्ञा पुं० [सं० सुप्तमालिन्] पुराणानुसार तेईसवें कल्प का नाम।

सुप्तमीन—वि० [सं०] तालाब जिसमे मछलियाँ सोई हो [को०]।

सुप्तवाक्य—संज्ञा पुं० [सं०] निद्रित अवस्था मे कहे हुए शब्द या वाक्य।

सुप्तविग्रह—वि० [सं०] १ निद्रित। सोया हुआ। २ जिसका विग्रह या शरीर निद्रा की तरह हो। कृष्ण के लिये प्रयुक्त विशेषण [को०]।

सुप्तविज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] स्वप्न। सुपना। ख्वाब।

सुप्तविनिद्रक—वि० [सं०] निद्रा त्याग करनेवाला। जाग्रत होनेवाला। जागनेवाला [को०]।

सुप्तस्थ—वि० [सं०] निद्रित। सोया हुआ।

सुप्तस्थित—वि० [सं०] दे० 'सुप्तस्थ'।

सुप्तांग—संज्ञा पुं० [सं० सुप्ताङ्ग] वह अग जिसमे चेष्टा न हो। निश्चेष्ट अग।

सुप्तांगता—संज्ञा स्त्री० [सं० सुप्ताङ्गता] सुप्तांग का भाव। अगो की निश्चेष्टता।

सुप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ निद्रा। नीद। २ निदास। उँघाई। ३ अग की निश्चेष्टता। सुप्तांगता। ४ प्रत्यय। विश्वास। एतबार। ५ सपना। स्वप्न (को०)।

सुप्तोत्थित—वि० [सं०] निद्रा से जागरित। जो अभी अभी सोकर उठा हो।

सुप्रकाश—वि० [सं०] १ अत्यत प्रकाशित। २ अत्यत गोचर। प्रत्यक्ष। ३ विख्यात। प्रसिद्ध [को०]।

सुप्रकेत—वि० [सं०] १ ज्ञानवान्। बुद्धिमान। २ जो अत्यत सावधान हो (को०)।

सुप्रचार—वि० [सं०] १ उचित मार्ग पर चलनेवाला। २ भला दिखाई पडनेवाला [को०]।

सुप्रचेता—वि० [सं० सुप्रचेतस्] बहुत बुद्धिमान्। बहुत समझदार।

सुप्रज—वि० [सं०] दे० 'सुप्रजा'।

सुप्रजा¹—वि० [सं० सुप्रजस्] उत्तम और बहुत सतान से युक्त। उत्तम और अधिक सतानवाला।

सुप्रजा²—संज्ञा स्त्री० १ उत्तम सतान। अच्छी औलाद। २ उत्तम प्रजा। अच्छी रिआया।

सुप्रजात—वि० [सं०] बहुत सी सतानोवाला। जिसके बहुत से बालबच्चे हों।

सुप्रज्ञ—वि० [सं०] बहुत बुद्धिमान्।

सुप्रज्ञान—वि० [सं०] जिसका प्रज्ञान या बोध सरलता से हो सके [को०]।

सुप्रतर—वि० [सं०] सहज मे पार होने योग्य (नदी आदि)।

सुप्रतर्क—संज्ञा पुं० [सं०] युक्तियुक्त एव प्रौढ विचार [को०]।

सुप्रतर्दन—संज्ञा [सं०] एक राजा।

सुप्रतार—वि० [सं०] दे० 'सुप्रतर'।

सुप्रतिकार—वि० [सं०] जिसका सरलता से प्रतिकार हो सके [को०]।

सुप्रतिज्ञ—वि० [सं०] जो अपनी प्रतिज्ञा से न हटे। दृढप्रतिज्ञ।

सुप्रतिपन्न—वि० [सं०] सदाचारी। धार्मिक [को०]।

सुप्रतिभ—वि० [सं०] प्रतिभासपन्न। प्रखर प्रतिभावाला।

सुप्रतिभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मदिरा। मद्य। शराब। २ अच्छी या सुंदर प्रतिभा (को०)।

सुप्रतिम—संज्ञा पुं० [सं०] एक राजा का नाम।

सुप्रतिष्ठ¹—वि० [सं०] १ उत्तम प्रतिष्ठावाला। जिसकी लोग खूब प्रतिष्ठा या आदर समान करते हो। २ बहुत प्रसिद्ध। सुविख्यात। मशहूर। ३ सुदर टाँगो या पैरोवाला। ४ दृढता से स्थित रहनेवाला (को०)।

सुप्रतिष्ठ²—संज्ञा पुं० १ सेना की एक प्रकार की व्यूहरचना। २. एक प्रकार की समाधि। (बौद्ध)।

सुप्रतिष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पाँच वर्ण होते हैं। इनमें से तीसरा और पाँचवाँ गुरु तथा पहला, दूसरा और चौथा वर्ण लघु होता है। २ मंदिर या प्रतिमा आदि की स्थापना। ३ स्कंद की एक मातृका का नाम। ४ अभिषेक। ५ उत्तम स्थिति। ६ सुनाम। प्रसिद्धि। शोहरत। ७ उत्तम प्रतिष्ठा। स्थापना।

सुप्रतिष्ठित¹—वि० [सं०] १ उत्तम रूप से प्रतिष्ठित। २ दृढ़तापूर्वक स्थित या स्थापित (को०)। सुंदर टाँगोंवाला। ३ अभिषिक्त (को०)। ४ विख्यात। प्रसिद्ध (को०)।

सुप्रतिष्ठित²—संज्ञा पुं० १ गूलर। उदुंबर। २ एक प्रकार की समाधि। ३ एक देवपुत्र (को०)।

सुप्रतिष्ठितचरण—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की समाधि। सुप्रतिष्ठित समाधि।

सुप्रतिष्ठितचरित्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम।

सुप्रतिष्ठिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम।

सुप्रतिष्ठितासन—संज्ञा पुं० [सं०] समाधि का एक भेद।

सुप्रतिष्णात—वि० [सं०] १ किसी विषय का अच्छा जानकार या पंडित। निष्णात। २ जिसकी खूब ऊहापोह की गई हो। आलोचित। सुनिश्चित। ३ सुस्नात। भली प्रकार शुद्ध किया हुआ।

सुप्रतीक¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २ कामदेव। ३ ईशान कोण का दिग्गज। ४ विश्वसनीय व्यक्ति (को०)। ५ एक यक्ष (को०)।

सुप्रतीक²—वि० १ सुरूप। सुंदर। खूबसूरत। २ साधु। सज्जन। ३ सुंदर स्कंधवाला (को०)।

सुप्रतीकिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुप्रतीक नामक दिग्गज की स्त्री।

सुप्रददि—वि० [सं०] बहुत उदार। बड़ा दानी। दाता।

सुप्रदर्श—वि० [सं०] जो देखने में सुंदर हो। प्रियदर्शन। खूबसूरत।

सुप्रदोहा—वि० [सं०] सहज में दुही जानेवाली (गाय)। जिस (गाय) को दूहने में कठिनाई न हो।

सुप्रधृष्य—वि० [सं०] जो सहज में अभिभूत या पराजित किया जा सके। आसानी से जीता जानेवाला।

सुप्रबुद्ध¹—संज्ञा पुं० [सं०] शाक्य बुद्ध।

सुप्रबुद्ध²—वि० जिसे यथेष्ट बोध या ज्ञान हो। अत्यंत बोधयुक्त।

सुप्रभ¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक दानव का नाम। २ जैनियों के नौ बलों (जिनों) में से एक। ३ पुराणानुसार शाल्मली द्वीप के अंतर्गत एक वर्ष।

सुप्रभ²—वि० १ सुंदर प्रभा या प्रकाशयुक्त। २ सुंदर। सुरूप। खूबसूरत।

सुप्रभदेव—संज्ञा पुं० [सं०] शिशुपालवध महाकाव्य के प्रणेता महाकवि माघ के पितामह का नाम।

सुप्रभा¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बकुची। सोमराजी। २ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक। ३ स्कंद की एक मातृका का नाम। ४ सात सरस्वतियों में से एक। ५ सुंदर प्रकाश।

सुप्रभा²—संज्ञा पुं० एक वर्ष का नाम जिसके देवता सुप्रभ माने जाते हैं।

सुप्रभात—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुंदर प्रभात या प्रातःकाल। २ मंगलसूचक प्रभात। ३ प्रातःकाल पढ़ा जानेवाला स्तोत्र।

सुप्रभाता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पुराणानुसार एक नदी का नाम। २ वह रात जिसका प्रभात सुंदर हो।

सुप्रभाव—संज्ञा पुं० [सं०] १ जिसमें सब प्रकार की शक्तियाँ हों। सर्वशक्तिमान्। २ सर्वसामर्थ्य। अनंतशक्तियुक्त होना। सर्वशक्तिता (को०)।

सुप्रमय—वि० [सं०] जो सरलता से मापा जा सके। जो सरलतापूर्वक मापने योग्य हो।

सुप्रमाण—वि० [सं०] बड़े आकार का। विशाल (को०)।

सुप्रयुक्त—वि० [सं०] १ सुपठित। २ सुंदर ढंग से चलाया हुआ। सुचालित। ३ सुविचारित योजनावाला (षड्यंत्र आदि)। ४ जो सुव्यवस्थित हो। ५ भली प्रकार संबद्ध (को०)।

सुप्रयुक्तशर—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो बाण चलाने में सिद्धहस्त हो। अच्छा धनुर्धर।

सुप्रयोग¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुंदर प्रबंध। उत्तम व्यवस्था। २ उत्तम उपयोग करना। अच्छे ढंग से काम में लाना। ३ निकट संपर्क। ४ दक्षता। निपुणता। पाटव (को०)।

सुप्रयोग²—वि० १ जिसका प्रयोग या अभिनय अच्छे ढंग से हो। २ जो ठीक ढंग से प्रयुक्त किया गया हो।

सुप्रयोगविशिख—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुप्रयुक्तशर'।

सुप्रयोगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वायु पुराण के अनुसार दाक्षिणात्य की एक नदी का नाम।

सुप्रलभ—वि० [सं० सुप्रलम्भ] १ जो अनायास प्राप्त किया जा सके। सहज में मिल सकनेवाला। सुलभ। २ जो सरलता से धोखे में आ जाय। जिसे सरलतापूर्वक वंचित किया जा सके (को०)।

सुप्रलाप—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुवचन। २ वाग्मिता। सुंदर भाषण।

सुप्रवेदित—वि० [सं०] भली भाँति उद्घोषित। पूर्णतः प्रकटित (को०)।

सुप्रशस्त—वि० [सं०] १ खूब प्रशंसित। २ सुप्रसिद्ध (को०)।

सुप्रश्न—संज्ञा पुं० [सं०] कुशलप्रश्न। कुशलक्षेम संबंधी जिज्ञासा (को०)।

सुप्रसन्न¹—संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर का एक नाम।

सुप्रसन्न²—वि० १ अत्यंत प्रफुल्ल। २ अत्यंत निर्मल। ३ हर्षित। बहुत प्रसन्न। ४ जो प्रतिकूल न हो। अनुकूल (को०)।

सुप्रसन्नक—संज्ञा पुं० [सं०] जंगली बबरी। वन बर्बरिका। कृष्णार्जक।

सुप्रसरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रसारिणी लता। गंधप्रसारिणी। पसरन।

सुप्रसव—संज्ञा पुं० [सं०] सहज प्रसव। वह प्रसव जो बिना कष्ट का हो।

सुप्रसाद[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २ विष्णु। ३ स्कंद का एक पार्षद। ४ एक असुर का नाम। ५ अत्यंत प्रसन्नता।

सुप्रसाद[2]—वि० १ अत्यंत प्रसन्न या कृपालु। २ सरलता से अनुकूल या प्रसन्न करने योग्य (को०)।

सुप्रसादक—वि० [सं०] दे० सुप्रसाद'।

सुप्रसादा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

सुप्रसारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुप्रसरा'।

सुप्रसिद्ध—वि० [सं०] बहुत प्रसिद्ध। सुविख्यात। बहुत मशहूर।

सुप्रसू—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरलता से प्रसव करनेवाली स्त्री [को०]।

सुप्राकृत—वि० [सं०] ग्राम्य। असभ्य। अशिष्ट [को०]।

सुप्राप—वि० [सं०] जो सरलता से प्राप्त हो। सुलभ [को०]।

सुप्रिय[1]—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धो के अनुसार एक गधर्व का नाम।

सुप्रिय[2]—वि० [वि० स्त्री० सुप्रिया] अत्यंत प्रिय। बहुत प्यारा।

सुप्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक अप्सरा का नाम। २ सोलह मात्राओं का एक वृत्त जिसमे अंतिम वर्ण के अतिरिक्त शेष सब वर्ण लघु होते हैं। यह एक प्रकार की चौपाई है। यथा—तबहुँ न लखन उतर कछु दयऊ। ३ मनोहारिणी स्त्री। सुंदर स्त्री (को०)। ४ प्रियतमा। प्रेमिका। प्रेयसी (को०)।

सुप्रीम—वि० [अं०] सर्वोच्च। सबसे ऊँचा [को०]।

सुप्रीम कोर्ट—संज्ञा पुं० [अं०] १ प्रधान या उच्च न्यायालय। २ सबसे बडी कचहरी। सर्वोच्च न्यायालय।

विशेष—ईस्ट इंडिया कपनी के राजत्वकाल मे कलकत्ते मे सुप्रीम कोर्ट था, जिसमे तीन जज बैठते थे। अनतर महारानी विक्टोरिया के राजत्वकाल मे यह सुप्रीम कोर्ट तोड दिया गया और इसके स्थान पर हाई कोर्ट की स्थापना की गई। इगलैंड मे प्रिवी कौंसिल था जो सर्वोच्च माना जाता था। भारत के स्वतंत्र होने पर दिल्ली मे सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना हुई जिसे सुप्रीम कोर्ट भी कहते है।

सुप्रौढा—संज्ञा स्त्री० [सं०] विवाह के योग्य कन्या [को०]।

सुफरा—संज्ञा पुं० [देश०] टेबुल पर बिछाने का कपडा।

सुफल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ छोटा अमलतास। कर्णिकार। २ बादाम। ३ अनार। दाडिम। ४ बैर। बदर। ५ मूंग। मुद्ग। ६ कैथ। कपित्थ। ७ बिजौरा नीबू। मातुलुंग। ८ सुंदर फल। ९ अच्छा परिणाम।

सुफल[2]—वि० १ सुंदर फलवाला (अस्त्र)। २ सुंदर फलो से युक्त। ३ सफल। कृतकार्य। कृतार्थ। कामयाब।

सुफलक—संज्ञा पुं० [सं०] एक यादव जो अक्रूर का पिता था।

सुफलकसुत—संज्ञा पुं० [सं०] अक्रूर।

सुफला[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ इंद्रायण। इंद्रवारुणी। २ पेठा। कुम्हडा। कुष्मांड। ३ गंभारी। काश्मरी। ४ केला। कदली। ५ मुनक्का। कपिला द्राक्षा।

सुफला[2]—वि० १ सुंदर या बहुत फल देनेवाली। अधिक फलोवाली। २ सुंदर फलवाली। जैसे,—तलवार।

सुफुल्ल—वि० [सं०] फूलो से संपन्न। सुंदर फूलो से युक्त।

सुफेद—वि० [अ० सुफ़ेद] दे० 'सफेद'।

सुफेदी—स्त्री० [अ० सुफ़ेदी] दे० 'सफेदी'।

सुफेन—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्रफेन।

सुबत—वि० [सं० सुबन्त] जिसके अंत मे सुप् विभक्ति हो। संस्कृत व्याकरण मे विभक्तियुक्त (शब्द, संज्ञा)।

सुबंतपद—संज्ञा पुं० [सं० सुबन्तपद] विभक्तियुक्त संज्ञा या शब्द।

सुबध[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुबन्ध] तिल।

सुबध[2]—वि० अच्छी तरह बँधा हुआ।

सुबधविमोचन—संज्ञा पुं० [सं० सुबन्धविमोचन] शिव का एक नाम [को०]।

सुबधु[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुबन्धु] १ एक प्राचीन ऋषि का नाम। २ अच्छा भाई। उ०—होहि कुठायँ सुबंधु सहाए।—मानस, २।३०५। ३ बाणभट्ट का समकालीन संस्कृत गद्यकाव्य 'वासवदत्ता' का प्रख्यात रचयिता।

सुबधु[2]—वि० उत्तम बधुओंवाला। जिसके अच्छे बधु या मित्र हो।

सुबडा—संज्ञा पुं० [देश०] टलही चाँदी। ताँबा मिली हुई चाँदी।

सुबभ्रु—वि० [सं०] १ धूसर। २. चिकनी भौहवाला।

सुबर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुबल] वीर। योद्धा। सुभट।

सुबरन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्ण] १ सोना। २ सुंदर अक्षर। ३ सुंदर रंग। उ०—सुबरन को खोजत फिरैं कवि व्यभिचारी चोर।—

सुबरनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुवर्ण ?] छडी।

सुबल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] शिव जी का एक नाम। २ एक पक्षी (वैनतेय की संतान)। ३ सुमति के एक पुत्र का नाम। ४ गांधार का एक राजा जो शकुनि का पिता और धृतराष्ट्र का ससुर था। ५ पुराणानुसार भौत्य मनु के पुत्र का नाम। ६ श्रीकृष्ण का एक सखा।

सुबल[2]—वि० अत्यंत बलवान। बहुत मजबूत।

सुबलपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] राजा सुबल का पुत्र, शकुनि [को०]।

सुबलपुर—संज्ञा पुं० [सं०] कीकट राज्य का एक प्राचीन नगर।

सुबह—संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रातःकाल। सवेरा।

सुबहान(पु)—संज्ञा पुं० [अ० सुबहान] दे० 'सुभान'। उ०—आब आतश अर्श कुरसी सूरते सुबहान। सिर्र सिफत करदा बूदद मारफत मुकाम।—दादू (शब्द०)।

सुबहान अल्ला—अव्य० [अ०] अरबी का एक पद जिसका प्रयोग किसी बात पर हर्ष या आश्चर्य प्रकट करते हुए किया जाता है। वाह वाह! क्यो न हो! धन्य है!

सुबाधव—संज्ञा पुं० [सं० सुबान्धव] १ शिव। २ उत्तम मित्र।

सुबाल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक देवता। २ एक उपनिषद् का नाम। ३ उत्तम बालक।

सुबाल[2]—वि० बालक के समान निर्बोध। अज्ञान।

सुबालिश—वि० [सं०] बच्चों जैसा अज्ञ या अबोध ।

सुबास[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० सु + वास] अच्छी महक । सुगंध ।

सुबास[२]—संज्ञा पुं० १ एक प्रकार का धान जो अगहन महीने मे होता है और जिसका चावल वर्षों तक रहता है । २ सुंदर निवास-स्थान ।

सुबासना(पु)[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० सु + वास] सुगंध । खुशबू । अच्छी महक । उ०—कहि लहि कौन सकै दुरी सोनजुही मैं जाइ । तन की सहज सुवासना देती जो न बहाइ ।—बिहारी (शब्द०) ।

सुबासना[२]—क्रि० स० सुवासित करना । सुगंधित करना । महकाना ।

सुबासिक—वि० [सं० सु + वास] सुवासित । सुगंधित । खुशबूदार । उ०—रहा जो कनक सुबासिक ठाऊँ । कस न होए हीरा मनि नाऊँ ।—जायसी (शब्द०) ।

सुबासित(पु)—वि० [सं० सुवासित] दे० 'सुवासित' ।

सुबाहु[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ नागासुर । २ स्कंद का एक पार्षद । ३ एक दानव का नाम । ४ एक राक्षस का नाम । ५ एक यक्ष का नाम । ६ धृतराष्ट्र का पुत्र और चेदि का राजा । ७ पुराणानुसार श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम । ८ शत्रुघ्न का एक पुत्र । ९ प्रतिबाहु का एक पुत्र । १० कुवलयाश्व का एक पुत्र । ११ एक बोधिसत्व का नाम । १२ एक वानर का नाम ।

सुबाहु[२]—वि० दृढ या सुंदर बाहोंवाला । जिसकी बाहें अच्छी और मजबूत हों ।

सुबाहु[३]—संज्ञा स्त्री० [सं० सुबाहुस्] एक अप्सरा का नाम ।

सुबाहु(पु)[४]—संज्ञा स्त्री० [सं० सु + बाहु] सेना । फौज । उ०—रैयत राज समाज कर तन धन धरम सुबाहु । शांत सुसचिवन सौंपि सुख बिलसहि नित नरनाहु ।—तुलसी (शब्द०) ।

सुबाहुक—संज्ञा पुं० [सं०] एक यक्ष का नाम ।

सुबाहुशत्रु—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र का एक नाम ।

सुबिस्ता†—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सुभीता' ।

सुबिहान(पु)—संज्ञा पुं० [अ० सुबहान] दे० 'सुभान' ।

सुबीज[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव । महादेव । २ पोस्तदाना । खसखस । ३ उत्तम बीज ।

सुबीज[२]—वि० उत्तम बीजवाला । जिसके बीज उत्तम हों ।

सुबीता—संज्ञा पुं० [देश०, तुल० 'सुविधा'] दे० 'सुभीता' ।

सुबुक—वि० [फा०] १ हलका । कम बोझ का । भारी का उलटा । २ सुंदर । खूबसूरत । उ०—बसन फटे उपटे सुबुक निबुक ददोरे हाय ।—रामसहाय (शब्द०) ।

यौ०—सुबुक रंग = सोना रँगने का एक प्रकार ।

३ कोमल । नाजुक । मृदु (को०) । ४ तेज । फुर्तीला । चुस्त । जैसे, सुबुक रफ्तार ।

सुबुक[२]—संज्ञा पुं० घोडे की एक जाति ।

विशेष—इस जाति के घोडे मेहनती और हिम्मती होते हैं । इनका कद मझोला होता है । दौडने मे ये बडे तेज होते हैं । इन्हें दौडाक भी कहते हैं ।

सुबुकदस्त—वि० [फा०] फुर्तीले हाथोंवाला [को०] ।

सुबुकदस्ती—संज्ञा स्त्री० [फा०] हाथों का फुर्तीलापन । हस्तलाघव [को०] ।

सुबुक रदा—संज्ञा पुं० [फा० सुबुक + हिं० रदा] लोहे का एक औजार जो बढइयों के पेचकश की तरह का होता है । इसकी धार तेज होती है । इससे बर्तनों की कोर आदि छीलते हैं ।

सुबुक रफ्तार—वि० [फा० सुबुक रफ्तार] द्रुतगामी । तेज चलनेवाला ।

सुबुकी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ हलकापन । २ सुंदरता । ३ तेजी । ४ अप्रतिष्ठा ।

सुबुद्धि[१]—वि० [सं० उत्तम बुद्धिवाला । बुद्धिमान् ।

सुबुद्धि—संज्ञा स्त्री० उत्तम बुद्धि । अच्छी अक्ल ।

सुबुध[१]—संज्ञा पुं० [सं० बुद्धि, बुद्धि । अक्ल । (डिं०) ।

सुबुध[२]—वि० [सं०] १ बुद्धिमान् । अक्लमंद । २ सावधान । सतर्क ।

सुबू[१]—संज्ञा पुं० [फा० सुब्ह] दे० 'सुबह' । उ०—जो निसि दिवस न हरि भजि पैए । तदपि न साँझ सुबू बिसरैए ।—विश्राम (शब्द०) ।

सुबू[२]—संज्ञा पुं० [फा०] कुंभ । घट । मटका [को०] ।

सुबूचा—संज्ञा पुं० [फा० सुबूचह्] ठिलिया । गगरी [को०] ।

सुबूत—संज्ञा पुं० [अ०] १ वह जिससे कोई बात साबित हो । प्रमाण । साक्ष्य सबूत । २ तर्क । दलील । ३ उदाहरण । मिसाल [को०] ।

सुबोध[१]—वि० [सं०] १ अच्छी बुद्धिवाला । २ जो कोई बात सहज मे समझ सके । जिसे अनायास समझाया जा सके ।

सुबोध[२]—संज्ञा पुं० अच्छी बुद्धि । अच्छी समझ ।

सुब्रह्मण्य[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव । २ विष्णु । ३ कार्तिकेय । ४ उद्गाता पुरोहित या उसके तीन सहकारियों मे से एक । ५ दक्षिण भारत का एक प्राचीन प्रांत ।

सुब्रह्मण्य[२]—वि० ब्रह्मण्ययुक्त । जिसमे ब्रह्मण्य हो ।

सुब्रह्मण्य क्षेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ जो मद्रास प्रदेश के दक्षिण कनारा जिले मे है ।

सुब्रह्मण्य तीर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुब्रह्मण्य क्षेत्र' ।

सुब्रह्मवासुदेव—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण ।

सुभग[१]—संज्ञा पुं० [सं० सुभङ्ग] नारियल का पेड । नारिकेल वृक्ष ।

सुभग[२]—वि० सरलता से टूट जानेवाला [को०] ।

सुभत(पु)—वि० [प्रा० सोभन्त सं० शोभमान] शोभित । जो शोभायुक्त हो ।

सुभ(पु)[१]—वि० [सं० शुभ, प्रा० सुभ] दे० 'शुभ' ।

सुभ[२]—वि० [सं०] शुभ नक्षत्र या ग्रह [को०] ।

सुभगमन्य—वि० [सं० सुभगम्मन्य] दे० 'सुभगमानी' [को०] ।

सुभग[१]—वि० [सं०] १ सुंदर । मनोहर । मनोरम । २ ऐश्वर्यशाली । ३. भाग्यवान् । खुशकिस्मत । ४ प्रिय । प्रियतम । ५ सुखद । आनंददायक ।

**सुभग**[1]—संज्ञा पुं० १ शिव। २ सोहागा। टकरण। ३ चपा। चपक। ४ अशोक वृक्ष। ५ पीली कटसरैया। पीतझिंटी। ६ लाल कटसरया। रक्तझिटी। ७ भूरि छरीला। पत्थर का फूल। शैलेय। शैलाख्य। शिलापुष्प। ८ गधक। गधपाषाण। ९ सुबल के एक पुत्र का नाम। १० जैनो अनुसार वह कर्म जिसमे जीव सौभाग्यवान होता है। ११ अच्छा भाग्य। सौभाग्य (को०)।

**सुभगता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुभग होने का भाव। २ सुदरता। सौदर्य। खूबसूरती। उ०—जागै मनोभव मुएँहु मन वन सुभगता न परै कही।—मानस, १।८६। ३ प्रेम। ४ स्त्री के द्वारा होनेवाला सुख।

**सुभगदत्त**—संज्ञा पु० [स०] भौमासुर का पुत्र।

**सुभगमानी**—वि० [स० सुभगमानिन्] अपने को सौभाग्यशाली समझनेवाला (को०)।

**सुभगसेन**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन राजा जो सिकंदर के आक्रमण के समय पश्चिम भारत के एक प्रात मे शासन करता था।

**सुभगा**[1]—वि० स्त्री० [स०] १ सुदरी। खूबसूरत (स्त्री)। २ (स्त्री) जिसका पति जीवित हो। सौभाग्यवती। सुहागिन।

**सुभगा**[2]—संज्ञा स्त्री० १ वह स्त्री जो अपने पति को प्रिय हो। प्रियतमा पत्नी। २ स्कद की एक मातृका का नाम। ३ पाँच वर्ष की कुमारी। ४ एक प्रकार की रागिनी। ५ केवटी मोथा। कैवर्ती मुस्तक। ६ नीली दूब। नील दूर्वा। ७ हलदी। हरिद्रा। ८ तुलसी। सुरसा। ९ दहिंगना। प्रियगु। वनिता। १० कस्तूरी। मगनाभि। ११ सोना केला। सुवर्ण कदली। १२ वेला मोतिया। वनमल्लिका। १३ चमेली। जाति पुष्प। १४ आदरणीया माता। समानित माँ (को०)। १५ सौभाग्यवती नारी। सधवा स्त्री (को०)।

**सुभगातनय**—संज्ञा पु० [स०] दे० 'सुभगासुत'।

**सुभगानदनाथ**—संज्ञा पु० [स० सुभगानन्दनाथ] तात्रिको के अनुसार एक भैरव का नाम। कालीपूजा के समय इनकी भी पूजा का विधान है।

**सुभगासुत**—संज्ञा पु० [स०] प्रियतमा पत्नी से उत्पन्न पुत्र (को०)।

**सुभगाह्वय**—संज्ञा स्त्री० [स०] १ कैवर्तिका लता। २ हलदी। ३ सरिवन। ४ तुलसी। ५ नीली दूब। ६ सोना केला।

**सुभग्ग**(पु)—वि० [स० सुभग] दे० 'सुभग'। उ०—मालव भूप उदग्ग चलेउ कर खग्ग जग्ग जित। तन सुभग्ग आभरन मग्ग जगमग्ग नग्ग सित।—गि० दास (शब्द०)।

**सुभट**—संज्ञा पु० [स०] महान् योद्धा। अच्छा सैनिक। उ०—रुक्म और कलिग को राउ मारचो प्रथम, बहुरि तिनके बहुत सुभट मारे।—सूर (शब्द०)।

**सुभटवत**(पु)—वि० [स० सुभट + वत्] अच्छा योद्धा। उ०—लख्यो वलराम यह सुभटवत है कोऊ हल मुशल शस्त्र अपनो सँभारचो।—सूर (शब्द०)।

**सुभट वर्मा**—संज्ञा पुं० [स० सुभटवर्मन्] एक हिंदू राजा जो ईस्वी १२वी शताब्दी के अत और १३वी के प्रारभ मे विद्यमान था।

**सुभट्ट**[1]—संज्ञा पु० [सं०] अत्यत विद्वान् व्यक्ति। बहुत बडा पडित।

**सुभट्ट**(पु)[2]—संज्ञा पु० [स० सुभट] वीर। सुभट।

**सुभड**(पु)†—संज्ञा पुं० [स० सुभट] सुभट। शूरवीर (डिं०)।

**सुभद्र**[1]—संज्ञा पुं० [स०] १ विष्णु। २ सनत्कुमार का नाम। ३ वसुदेव का एक पुत्र जो पौरवी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। ४ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। ५ इध्मजिह्व के एक पुत्र का नाम। ६ प्लक्ष द्वीप के अतर्गत एक वर्ष का नाम। ७ सौभाग्य। ८ कल्याण। मगल। ९ एक पर्वत का नाम (को०)।

**सुभद्र**[2]—वि० १ भाग्यवान्। २ भला। सज्जन। ३ अत्यत शुभ। मागलिक (को०)।

**सुभद्रक**—संज्ञा पु० [स०] १ देवरथ। २ बेल। बिल्वक वृक्ष।

**सुभद्रा**—संज्ञा स्त्री० [स०] १ श्रीकृष्ण की बहन और अर्जुन की पत्नी जो अभिमन्यु की माता थी।

विशेष—एक बार अर्जुन रैवतक पर्वत पर सुभद्रा को देखकर मोहित हो गया। यह देख श्रीकृष्ण ने अर्जुन को सुभद्रा का बलपूर्वक हरण कर उससे विवाह करने का आदेश दिया। तदनुसार अर्जुन सुभद्रा को द्वारका से हरण कर ले गया।

२ दुर्गा का एक रूप। ३ पुराणानुसार एक गौ का नाम। ४ सगीत मे एक श्रुति का नाम। ५ दुर्गम की पत्नी। ६ अनिरुद्ध की पत्नी। ७ एक चत्वर का नाम। ८ बलि की पुत्री और अवीक्षित की पत्नी। ९ एक नदी। १० सरिवन। अनतमूल। श्यामलता। ११ गभारी। काश्मरी। १२ मकडा घास। घृतमडा।

**सुभद्राणी**—संज्ञा स्त्री० [स०] त्रायती। त्रायमान। त्रायमाण लता।

**सुभद्रिका**—संज्ञा स्त्री० [स०] १ श्रीकृष्ण की छोटी बहन। २ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे न न र ल ग (।।।, ।।।, ऽ।ऽ, ।, ऽ) होता है। ३ त्रायती लता (को०)। ४ वेश्या (को०)।

**सुभद्रेश**—संज्ञा पु० [स०] अर्जुन।

**सुभर**—(पु)[1] वि० [हिं० सु + भरा] अच्छी तरह भरा हुआ। सुपुष्ट।

**सुभर**(पु)[2]—वि० [स० शुभ्र] दे० 'शुभ्र'। उ०—सुभर समुँद अस नयन दुइ, मानिक भरे तरग। आवहि तीर फिरावही काल भवँर तेहि सग।—जायसी (शब्द०)।

**सुभर**[3]—वि० [स०] १ ठोस। घना। २ अधिक। प्रचुर। ३ सरलतापूर्वक वहन करने या प्रयोग करने योग्य। ४ पूर्णत मश्क या अभ्यस्त। ५ सुपोष (को०)।

**सुभव**[1]—वि० [स०] उत्तम रूप से उत्पन्न।

**सुभव**[2]—संज्ञा पुं० १ एक इक्ष्वाकुवशी राजा का नाम। २ साठ सवत्सरो मे से अतिम सवत्सर का नाम।

**सुभसत्तरा**—संज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जो पति को अत्यत प्रिय हो। सुभगा स्त्री।

सुभाजन—संज्ञा पुं० [सं० सुभाञ्जन] शुभाजन वृक्ष। सहिजन।

सुभा—संज्ञा स्त्री० [सं० शुभा] १ अमृत। पीयूष। सुधा। २ शोभा। कांति। छवि। ३ परनारी। परस्त्री। ४ हरीतकी। हड। उ०—सुधा सुभा सोभा सुभा सुभा सिद्ध पर नारि। बहुरी सुभा हरीतकी हरिपद की रजधारि।—अनेकार्थ० (शब्द०)।

सुभाइ(पु)†[1]—संज्ञा पुं० [सं० स्वभाव] दे० 'स्वभाव'। उ०—कमल नाल सज्जन हियौ दोनौ एक सुभाइ।—रसनिधि (शब्द०)।

सुभाइ[2]—क्रि० वि० सहज भाव से। स्वभावत। उ०—(क) कटक सो कटक कटचो अपने हाथ सुभाइ।—सूर (शब्द०)। (ख) अग सुभाइ सुवास प्रकाशित लोपिहौ केशव क्यो करिकै।—केशव (शब्द०)।

सुभाउ(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० स्वभाव] दे० 'स्वभाव'। उ०—मुख प्रसन्न शीतल सुभाउ, नित देखत नैन सिराइ।—सूर (शब्द०)।

सुभाग[1]—वि० [सं०] भाग्यवान्। खुशकिस्मत।

सुभाग(पु)‡[2]—संज्ञा पुं० [सं० सौभाग्य] दे० 'सौभाग्य'।

सुभागा—संज्ञा स्त्री० [सं०] रौद्राश्व की एक पुत्री का नाम।

सुभागी—वि० [सं० सुभाग] भाग्यवान्। भाग्यशाली। खुशकिस्मत। उ०—कौन होगा जो न लेगा उस सुधा का स्वाद। छोड प्रांतिक गर्व अपना और व्यर्थ विवाद। जो सुभागी चख सकेंगे वह रसाल प्रसाद। वे कदापि नहीं करेंगे नागरी प्रतिवाद।—सरस्वती (शब्द०)।

सुभागीन—संज्ञा पुं० [सं० सौभाग्य, हिं० सुभाग + ईन (प्रत्य०)] [स्त्री० सुभागिन] अच्छे भाग्यवाला। भाग्यवान्। सुभग। उ०—कोक कलान कै वेनी प्रवीन वहौ अबलानि मैं एक पढी है। आजु लखै (लखै ?) विपरीत मैं आँगी, सुभागीन यो मुख ऐसी कढी है।—सुदरीसर्वस्व (शब्द०)।

सुभाग्य[1]—वि० [सं० सु + भाग्य] अत्यत भाग्यशाली। बहुत बडा भाग्यवान्।

सुभाग्य[2]—संज्ञा पुं० दे० 'सौभाग्य'।

सुभान—अव्य० [अ० सुबहान] धन्य। वाह वाह। जैसे,—सुभान तेरी कुदरत।

यौ०—सुभान अल्ला = ईश्वर धन्य है। (प्राय इस पद का व्यवहार कोई अद्भुत पदार्थ या अनोखी घटना देखकर किया जाता है।)

सुभाना(पु)†—क्रि० अ० [हिं० शोभना] शोभित होना। देखने मे भला जान पडना। (क्व०)। उ०—भो निकुज सुख पुज सुभाना। मडप मडन मडित नाना।—गोपाल (शब्द०)।

सुभानु[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ चतुर्थ हतास नामक युग के दूसरे वर्ष का नाम। २ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

सुभानु[2]—वि० सुदर या उत्तम प्रकाश से युक्त। सुप्रकाशमान्।

सुभाय(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० स्वभाव] दे० 'स्वभाव'। उ०—फल आए तरुवर झुके झुकत मेघ जल लाय। विभौ पाय सज्जन झुके यह परकाजि सुभाय।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)।

सुभायक(पु)—वि० [सं० स्वाभाविक] स्वाभाविक। स्वभावत। उ०—अभिराम सचिक्कण श्याम सुगध के धामहु ते जे सुभायक के। प्रतिकूल भए दुख शूल सबै किधौ शाल शृगार के घायक के।—केशव (शब्द०)।

सुभाव(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० स्वभाव] दे० 'स्वभाव'। उ०—(क) कहा सुभाव परचो सखि तेरो यह विनवत हौ तोहिं।—सूर (शब्द०)। (ख) और कै हास विलास न भावत साधुन को यह सिद्ध सुभाव।—केशव (शब्द०)।

सुभावित वि० [सं०] उत्तम रूप से भावना की हुई (औषध)।

सुभाषचंद्र (वसु)—संज्ञा पुं० 'नेता जी' नाम से विख्यात भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अद्वितीय देशभक्त योद्धा।

विशेष—इनका जन्म २३ जनवरी, १८९७ को बगाल प्रात मे हुआ था। कहते हं, १९४५ की एक विमान दुर्घटना मे इनका निधन हुआ।

सुभाषण—संज्ञा पुं० [सं०] १. युयुधान के एक पुत्र का नाम। २. सुदर भाषण।

सुभाषित[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक बुद्ध का नाम। २. उचित कथन। उपयुक्त कथन। ३ आनदप्रदायक कथन या कवित्वमय उक्ति (को०)।

सुभाषित[2]—वि० १ सुदर रूप से कहा हुआ। अच्छी तरह कहा हुआ। २ वाक्पटु। वाग्मी (को०)।

सुभाषी—वि० [सं० सुभाषिन्] उत्तम रूप से बोलनेवाला। मिष्ठभाषी।

सुभास[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुधन्वा के एक पुत्र का नाम। २ एक दानव (को०)।

सुभास[2]—वि० सुप्रकाशमान्। खूब चमकीला।

सुभास्वर[1]—वि० [सं०] देदीप्यमान्। चमकदार। चमकीला।

सुभास्वर[2]—संज्ञा पुं० [सं०] पितरो का एक गण।

सुभिक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ ऐसा काल या समय जिसमे भिक्षा या भोजन खूब मिले और अन्न खूब हो। सुकाल। उ०—पुनि पद परत जलद बहु वर्षे। भयो सुभिक्ष प्रजा सब हर्षे।—रघुराज (शब्द०)। २ दुर्भिक्ष की अवस्था न रहना। अन्न आदि की सुलभता (को०)।

सुभिक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] धौ के फूल। धातुपुष्पिका।

सुभिषज्—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम चिकित्सक। वह जो अच्छी चिकित्सा करनेवाला हो।

सुभी(पु)—वि० स्त्री० [सं० शुभ] शुभकारक। मगलकारक। उ०—है जलधार हार मुकुता मनो वक पगति कुमुदमाल सुभी। गिरा गभीर गरज मनु सुनि सखी खानि के श्रवन देखु भी।—सूर (शब्द०)।

सुभीता—संज्ञा पुं० [हिं०] १ सुगमता। आसानी। सहूलियत। २. सुअवसर। सुयोग। ३ आराम। चैन (क्व०)।

सुभीम[1]—संज्ञा पुं० [सं०] एक दैत्य का नाम।

सुभीम[१]—वि॰ [वि॰ स्त्री॰ सुभीमा] अत्यत भीषण। वहुत भयावना।

सुभीमा—सज्ञा स्त्री॰ [स॰] श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम।

सुभीरक, सुभीरव—सज्ञा पु॰ [स॰] ढाक का पेड। पलाश वृक्ष।

सुभीरुक—सज्ञा पु॰ [स॰] चाँदी। रजत।

सुभुज[१]—वि॰ [स॰] सु दर भुजाओवाला। सुवाहु।

सुभुज(पु)[२]—सज्ञा पुं॰ [स॰] सुवाहु नामक राक्षस। उ॰—जो मारीच सुभुज मदमोचन।—मानस, १।२२१।

सुभुजा—सज्ञा स्त्री॰ [स॰] एक अप्सरा का नाम।

सुभूता—सज्ञा स्त्री॰ [स॰] उत्तर दिशा का नाम जिसमे प्राणी भले प्रकार स्थित होते हैं। (छादोग्य॰)।

सुभूति—सज्ञा स्त्री॰ [स॰] १ कुशल। क्षेम। मगल। २ उन्नति। तरक्की। ३ तित्तिर नाम का पक्षी (को॰)।

सुभूतिक—सज्ञा पुं॰ [स॰] वेल का पेड। विल्ववृक्ष।

सुभूम—सज्ञा पुं॰ [स॰] कार्तवीर्य जो जैनियो के आठवे चक्रवर्ती थे।

सुभूमि[१]—सज्ञा पुं॰ [स॰] उग्रसेन के एक पुत्र का नाम।

सुभूमि[२]—वि॰ सु दर भूमि। अच्छी जगह [को॰]।

सुभूमिक—सज्ञा पुं॰ [स॰] एक प्राचीन जनपद का नाम जो महाभारत के अनुसार सरस्वती नदी के किनारे था।

सुभूमिका—सज्ञा स्त्री॰ [स॰] दे॰ 'सुभूमिक'।

सुभूमिय—सज्ञा पुं॰ [स॰] उग्रसेन के एक पुत्र का नाम।

सुभूषण[१]—सज्ञा पुं॰ [स॰] उग्रसेन के एक पुत्र का नाम।

सुभूषण[२]—वि॰ सु दर भूषणो से अलकृत। जो अच्छे अलकार पहने हो।

सुभूषित—वि॰ [स॰] उत्तम रूप से भूषित। भली भाँति अलकृत।

सुभृत—वि॰ [स॰] १ सम्यक्‌प्रदत्त। भली भाँति प्रदत्त। २ सुरक्षित। रक्षित। ३ अच्छी तरह लदा हुआ। जिसपर खूब वोझ लदा हो [को॰]।

सुभृश, सुभृष—वि॰ [स॰] अत्यत अधिक। वहुत अधिक।

सुभैक्ष—सज्ञा पु॰ [स॰] उत्तम भिक्षा। श्रेष्ठ भिक्षा [को॰]।

सुभोग्य—वि॰ [स॰] सुख से भोगने योग्य। अच्छी तरह भोगने के लायक।

सुभोज—सज्ञा पु॰ [स॰] १ सु दर भोजन। इच्छा भर भोजन करना। भोजन से तृप्त होना [को॰]।

सुभौटी(पु)†—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ शोभा + वती या हिं॰ औटी (प्रत्य॰)] शोभा। उ॰—मौन ते कौन सुभौटी रहे, विन वोले खुले घर को न किवारो।—हनुमान (शब्द॰)।

सुभौम—सज्ञा पु॰ [स॰] जैनियो के एक चक्रवर्ती राजा का नाम जो कार्तवीर्य का पुत्र था।

विशेष—जैन हरिवश मे लिखा है कि जव परशुराम ने कार्तवीर्यार्जुन का वध किया, तव कार्तवीर्य की पत्नी अपने वच्चे सुभौम को लेकर कुशिकाश्रम मे चली गई और वही उसका लालन पालन तथा शिक्षा दीक्षा हुई। वडे होने पर सुभौम ने अपने पिता के वध का वदला लेने के लिये २० वार पृथ्वी को ब्राह्मणशून्य किया और इस प्रकार क्षत्रियो का प्राधान्य स्थापित किया।

सुभ्र(पु)[१]—वि॰ [स॰ शुभ्र] दे॰ 'शुभ्र'।

सुभ्र[२]—सज्ञा पु॰ [स॰ श्वभ्र, डिं॰] जमीन मे का विल या गड्ढा।

सुभ्राज—सज्ञा पुं॰ [स॰] देवभ्राज के एक पुत्र का नाम।

सुभ्रु[१]—सज्ञा स्त्री॰ [स॰] १. नारी। स्त्री। औरत। २ सुदर नेत्रोवाली नारी। ३. स्कद की एक मातृका का नाम।

सुभ्रु[२]—वि॰ सु दर भौहोवाला। जिसकी भवें सु दर हो।

सुभ्रू[१]—वि॰ [स॰] दे॰ 'सुभ्रु'[२]।

सुभ्रू[२]—सज्ञा स्त्री॰ तिरछी भौहोवाली सु दरी। आकर्षक नारी [को॰]।

सुमगल[१]—वि॰ [स॰ सुमङ्गल] १. अत्यत शुभ। कल्याणकारी। २ सदाचारी। ३ यज्ञो से पूर्ण (को॰)।

सुमगल[२]—सज्ञा पुं॰ १ एक प्रकार का विष। २ शुभ या मगलप्रद वस्तु (को॰)।

सुमगला—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ सुमङ्गला] १ मकडा नामक घास। २ स्कद की एक मातृका का नाम। ३ एक अप्सरा का नाम। ४ एक नदी जो कालिकापुराण के अनुसार हिमालय से निकलकर मणिकूट (कामाक्षा) प्रदेश मे वहती है।

सुमगली—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ सुमङ्गल + ई (प्रत्य॰)] विवाह मे सप्तपदी पूजा के वाद पुरोहित को दी जानेवाली दक्षिणा।

विशेष—सप्तपदी पूजा के वाद कन्या पक्ष का पुरोहित वर के हाथ मे सिंदूर देता है और वर उसे वधू के मस्तक मे लगा देता है। इसके उपलक्ष मे पुरोहित को जो नेग दिया जाता है, उसे सुमगली कहते हैं।

सुमगा—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ सुमङ्गा] पुराणानुसार एक नदी का नाम।

सुमत—सज्ञा पुं॰ [स॰ सुमन्त्र] राजा दशरथ का मत्री और सारथि।

विशेष—जव रामचद्र वन को जाने लगे थे, तव यही सुमत (सुमत्र) उन्हें रथ पर वैठाकर कुछ दूर छोड आया था।

सुमतु[१]—सज्ञा पुं॰ [स॰ सुमन्तु] १ एक मुनि का नाम जो वेदव्यास के शिष्य, अथर्ववेद के शाखाप्रचारक तथा एक स्मृति या धर्मशास्त्र के प्रणेता थे। २ जह्नु के एक पुत्र का नाम। ३ अच्छा सलाहकार। उत्कृष्ट मत्री (को॰)।

सुमतु[२]—वि॰ १ अच्छी मत्रणा या सलाह देनेवाला। २ जो अत्यत निद्य हो। दोषावह। सापराध [को॰]।

सुमत्र—सज्ञा पु॰ [स॰ सुमन्त्र] १ राजा दशरथ का मत्री और सारथि। १ अतरिक्ष के एक पुत्र का नाम। ३ कल्कि का वडा भाई। ४ आयव्यय का प्रवध करनेवाला मत्री। अर्थसचिव।

विशेष—सुमत्र का कर्तव्य यह वतलाया गया है कि वह राजा को सूचित करे कि इस वर्ष इतना द्रव्य सचित हुआ है, इतना व्यय हुआ, इतना शेष है, इतनी स्थावर सपत्ति है और इतनी जगम सपत्ति है।

५ अच्छी सलाह। उत्तम मत्रणा। अच्छा मत्र (को॰)। ६ वाभ्रव गौतम नाम के एक आचार्य (को॰)।

**सुमत्रक**—सज्ञा पुं० [स० सुमन्त्रक] कल्कि का बडा भाई।

विशेष—कल्किपुराण मे लिखा है कि कल्कि ने अपने तीन बडे भाइयो (प्राज्ञ, कवि और सुमत्रक) के सहयोग से अधर्म का नाश और धर्म का स्थापन किया था।

**सुमत्रज्ञ**—वि० [स० सुमन्त्रज्ञ] धर्मशास्त्र का ज्ञाता।

**सुमत्रित¹**—सज्ञा पुं० [स० सुमन्त्रित] अच्छी मत्रणा। उत्कृष्ट सलाह [को०]।

**सुमत्रित²**—वि० १ जिसकी सलाह या मत्रणा सुविचारित हो। २ जिसे उत्तम मत्रणा या सलाह दी गई हो [को०]।

**सुमत्री**—वि० [सं० सुमन्त्रिन] जिसका मत्री या अमात्य योग्य हो। सुयोग्य मत्रीवाला।

**सुमथन**Ⓟ—सज्ञा पुं० [स० सु+मन्थ (=पर्वत)] मदर पर्वत। उ०—श्रुति कदव पय सागर सुदर। गिरा सुमथन शैल धुरधर। —श० दि० (शब्द०)।

**सुमद**—वि० [स० सुमन्द] अत्यत सुस्त। काहिल।

**सुमदबुद्धि**—वि० [सं० सुमन्दबुद्धि] मदबुद्धि। कुदजेहन। कूढमग्ज।

**सुमदभाज्**—वि० [स० सुमन्दभाज्] अत्यत अभागा। बदकिस्मत [को०]।

**सुमदमति**—वि० [सं० सुमन्दमति] दे० 'सुमदबुद्धि'।

**सुमदर**—सज्ञा पुं० [सं० सुमन्द्र] दे० 'सुमद्र'।

**सुमदा**—सज्ञा स्त्री० [सं० स० सुमन्दा] एक प्रकार की शक्ति।

**सुमद्र**—सज्ञा पुं० [स० सुमन्द्र] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे १६+११ के विराम से २७ मात्राएँ तथा अत मे गुरु लघु होते है। यह सरसी नाम से प्रसिद्ध है। (होली मे जो 'कबीर' गाए जाते है, वे प्राय इसी छद मे होते है।)

**सुम¹**—सज्ञा पु० [स०] १ पुष्प। कुसुम। २ चद्रमा ३. आकाश। व्योम। ४ कर्पूर (को०)।

**सुम²**—सज्ञा पु० [फा०] घोडे या दूसरे चौपायो के खुर। टाप।

**सुम³**—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पेड जो आसाम मे होता है और जिसपर 'मूँगा' (रेशम) के कीडे पाले जाते है।

**सुमख¹**—वि० [स०] जिसने उत्तम यज्ञ किए हो। उत्तम यज्ञो से सपन्न।

**सुमख²**—सज्ञा पुं० उत्तम यज्ञ। आनद समारोह।

**सुमखारा**—सज्ञा पुं० [फा० सुम+खार] वह घोडा जिसकी एक (आँख की) पुतली बेकार हो गई हो।

**सुमगधा**—सज्ञा स्त्री० [सं०] अनाथपिडिका की पुत्री का नाम।

**सुमणि**—सज्ञा पुं० [सं०] १ स्कद के एक पार्षद का नाम। २. श्रेष्ठ रत्न। उत्तम रत्न। ३. वह जो उत्तम रत्नो से भूषित हो (को०)।

**सुमत¹**—वि० [स०] उत्तम ज्ञान से युक्त। ज्ञानवान्। बुद्धिमान्।

**सुमत**Ⓟ**²**—सज्ञा स्त्री० [सं० सुमति] दे० 'सुमति'।

**सुमतराश**—सज्ञा पुं० [फा० सुम+तराश] घोडे के नाखून या खुर काटने का औजार।

**सुमतिंजय**—सज्ञा पुं० [सं० सुमतिञ्जय] विष्णु।

**सुमति¹**—सज्ञा पुं० [स०] १ एक दैत्य का नाम। २ सावर्ण मन्वतर के एक ऋषि का नाम। ३ सूत के एक पुत्र या शिष्य का नाम। ४. भरत के एक पुत्र का नाम। ५ सोमदत्त के एक पुत्र का नाम। ६ सुपार्श्व के एक पुत्र का नाम। ७ जनमेजय के एक पुत्र का नाम। ८ दृढसेन के एक पुत्र का नाम। ९. विदूरथ का एक पुत्र। १० वर्तमान अवसर्पिणी के पाँचवें अर्हत् या गत उत्सर्पिणी के तेरहवें अर्हत् का नाम। ११ इक्ष्वाकुवशी राजा कुकुत्थ के पुत्र का नाम। १२ नृग के एक पुत्र का नाम (को०)।

**सुमति²**—सज्ञा स्त्री० १ सगर की पत्नी का नाम। (पुराणो के अनुसार यह ६०,००० पुत्रो की माता थी।) २ क्रतु की पुत्री का नाम। ३ विष्णुयश की पत्नी और कल्कि की माता। ४ सुदर मति। सुबुद्धि। अच्छी बुद्धि। ५ मेल। ६ भक्ति। प्रार्थना। ७ सारिका पक्षी। मैना। ८ भाग्य की अनुकूलता। देव की कृपा (को०)। ९ शुभकामना। मगलकामना। दुआ (को०)। १० आकाक्षा। कामना। इच्छा (को०)।

**सुमति³**—वि० अच्छी बुद्धिवाला। अत्यत बुद्धिमान्।

**सुमति बाई**—सज्ञा स्त्री० [स० सुमति+हिं० बाई] एक भक्तिन का नाम जो ओडछा के राजा मधुकर शाह की रानी गणेशबाई की सहचरी थी।

**सुमतिमेरु**—सज्ञा पु० [स०] हल का एक भाग।

**सुमतिरेणु**—सज्ञा पु० [स०] १ एक यक्ष का नाम। २ एक नागासुर का नाम।

**सुमद¹**—वि० [सं०] मदोन्मत्त। मतवाला।

**सुमद²**—सज्ञा पुं० एक वानर जो रामचद्र की सेना का सेनापति था।

**सुमदन**—सज्ञा पुं० [सं०] आम का पेड। आम्रवृक्ष।

**सुमदना**—सज्ञा स्त्री० [सं०] कालिकापुराण के अनुसार एक नदी का नाम।

**सुमदनात्मजा, सुमदात्मजा**—सज्ञा स्त्री० [स०] एक अप्सरा का नाम।

**सुमद्दुम**—वि० [अनु० या देश०] मोटा। तोदल। स्थूल।

**सुमधुर¹**—सज्ञा पुं० [स०] १ एक प्रकार का शाक। जीव शाक। २. मधुर वचन। स्वीकरणीय कथन। मीठी बात (को०)।

**सुमधुर²**—वि० अत्यत मधुर। बहुत मीठा।

**सुमध्यमा**—वि० [सं०] सुदर कमरवाली।

**सुमध्या**—वि० स्त्री० [स०] दे० 'सुमध्यमा'।

**सुमन पत्र**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सुमन पत्रिका'।

**सुमन पत्रिका**—सज्ञा स्त्री० [स०] जावित्री। जातीपत्री।

**सुमन फल**—सज्ञा पुं० [सं०] १. कैथ। कपित्थ। २. जायफल। जातीफल।

**सुमन¹**—सज्ञा पुं० [सं० सुमनस्] १ देवता। पडित। विद्वान्। ३ पुष्प। फूल। ४. गेहूँ। ५ धतूरा। ६ नीम। ७ धीकरज। घृतकरज। ८ एक दानव का नाम। ९. उरु और आग्नेयी के पुत्र का नाम। १० उल्मुक के एक पुत्र का नाम। ११ हर्यश्व के पुत्र का नाम। १२ प्लक्ष द्वीप के अतर्गत एक पर्वत का नाम (बौद्ध)। १४. मित्र। (डि०)।

**सुमन**[२]—वि० १ उत्तम मनवाला। सहृदय। दयालु। २ मनोहर। सुंदर।

**सुमनचाप**—संज्ञा पुं० [सं० सुमन + चाप] कामदेव जिसका धनुष फूलों का माना गया है।

**सुमनमाल**—संज्ञा पुं० [सं० सुमन + हिं० माल] पुष्प की माला। फूलों का हार। उ०—सुरतरु सुमनमाल बहु बरषहिं। मनहुँ बलाक अवलि मनु करषहिं।—मानस, १।३४७।

**सुमनराज**ⓤ—संज्ञा पुं० [सं० सुमन + राज] सुमन अर्थात् देवताओं का राजा देवराज—इंद्र।

**सुमनस**[१]—संज्ञा पुं० [सं० सुमनस्] १ देवता। २ पुष्प। फूल।

**सुमनस**[२]—वि० प्रसन्नचित्त। उ०—अंधकार तव मिट्यो निशानन। भए प्रसन्न देव मुनि आनन। बरषहिं सुमनस सुमनस सुमनस। जय जय करहिं भरे आनंद रस।—रघुराज (शब्द०)।

**सुमनसध्वज**—संज्ञा पुं० [सं० सुमनस् + ध्वज] कामदेव। (डिं०)।

**सुमनस्क**—वि० [सं०] प्रसन्न। सुखी।

**सुमना**[१]—संज्ञा पुं०, वि० [सं० सुमनस्] दे० 'सुमन'।

**सुमना**[२]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चमेली। जातीपुष्प। २ सेवती। शतपत्री। ३ कबरी गाय। ४ कैकेयी का वास्तविक नाम। ५ दम की पत्नी का नाम। ६ मधु की पत्नी और वीरव्रत की माता का नाम।

**सुमनामुख**—वि० [सं०] सुंदर मुखवाला।

**सुमनायन**—संज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

**सुमनास्य**—संज्ञा पुं० [सं०] एक यक्ष का नाम।

**सुमनित**—वि० [सं० सुमणि + त (प्रत्य०)] सुंदर मणि से युक्त। उत्तम मणियों से जड़ा हुआ। उ०—केशव कमल मूल अलिकुल कुनितकि कैधौं प्रतिधुनित सुमनित निचयके।—केशव (शब्द०)।

**सुमनोज्ञघोष**—संज्ञा पुं० [सं०] बुद्धदेव।

**सुमनोत्तरा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] राजाओं के अंतःपुर में रहनेवाली स्त्री।

**सुमनोदाम**—संज्ञा पुं० [सं० सुमनोदामन्] पुष्पहार। पुष्पमाला [को०]।

**सुमनोभर**—वि० [सं०] फूलों से सजा हुआ।

**सुमनोमुख**—संज्ञा पुं० [सं०] एक यक्ष का नाम।

**सुमनोरज**—संज्ञा स्त्री० [सं० सुमनोरजस्] फूल का रज। पराग। पुष्पधूलि। पुष्परेणु [को०]।

**सुमनौकस**—संज्ञा पुं० [सं०] देवलोक। स्वर्ग।

**सुमन्यु**[१]—संज्ञा पुं० [सं०] एक देवगंधर्व का नाम।

**सुमन्यु**[२]—वि० अत्यंत क्रोधी। गुस्सेवर।

**सुमफटा**—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुम + हिं० फटना] एक प्रकार का रोग जो घोड़ों के खुर के ऊपरी भाग से तलवे तक होता है। यह अधिकतर अगले पाँवों के अंदर तथा पिछले पाँवों के खुरों में होता है। इससे घोड़ों के लँगड़े हो जाने की संभावना रहती है।

**सुमर**—संज्ञा पुं० [सं०] १ वायु। हवा। २ सहज मृत्यु।

**सुमरन**ⓤ—संज्ञा पुं० [सं० स्मरण] दे० 'स्मरण'।

**सुमरन**[२]—संज्ञा स्त्री० दे० 'सुमरनी'।

**सुमरना**ⓤ—क्रि० स० [सं० स्मरण] १ स्मरण करना। चिंतन करना। ध्यान करना। २ बारबार नाम लेना। जपना।

**सुमरनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुमरना + ई (प्रत्य०)] नाम जपने की छोटी माला जो सत्ताइस दानों की होती है।

**सुमरा**—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

विशेष—यह मछली भारत की नदियों और विशेषकर गरम झरनों में पाई जाती है। यह पाँच इंच तक लंबी होती है। इसे महुवा भी कहते हैं।

**सुमरीचिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सांख्य के अनुसार पाँच प्रकार की बाह्यतुष्टियों में से एक।

**सुमर्मग**—वि० [सं०] मर्मस्थल तक बेधनेवाला (बाण)।

**सुमल्लिक**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जनपद का नाम।

**सुमसायक**—संज्ञा पुं० [सं० सुमन + सायक] कामदेव। (डिं०)।

**सुमसुखड़ा**[१]—वि० [फ़ा० सुम + हिं० सूखना] (घोड़ा) जिसके खुर सूखकर सिकुड़ गए हों।

**सुमसुखड़ा**[२]—संज्ञा पुं० एक प्रकार का रोग जिसमें घोड़े के खुर सूखकर सिकुड़ जाते हैं।

**सुमह**—संज्ञा पुं० [सं०] जह्नु के एक पुत्र का नाम।

**सुमहाकपि**—संज्ञा पुं० [सं०] एक दानव का नाम।

**सुमहात्यय**—वि० [सं०] अत्यधिक विनाश करनेवाला [को०]।

**सुमात्रा**—संज्ञा पुं० मलय द्वीपपुंज का एक बड़ा द्वीप जो बोर्नियो के पश्चिम और जावा के उत्तरपश्चिम में है।

**सुमाद्रेय**—संज्ञा पुं० [सं० माद्रेय] सहदेव (डिं०)।

**सुमानस**—वि० [सं०] अच्छे मन का। सहृदय।

**सुमानिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में सात अक्षर होते हैं जिनमें से पहला, तीसरा, पाँचवाँ और सातवाँ अक्षर लघु तथा अन्य अक्षर गुरु होते हैं।

**सुमानी**—वि० [सं० सुमानिन्] बड़ा अभिमानी। स्वाभिमानी।

**सुमाय**—वि० [सं०] १ अत्यंत बुद्धिमान्। २ मायायुक्त।

**सुमार**ⓤ—संज्ञा पुं० [फ़ा० शुमार] गिनती। गणना। दे० 'शुमार'।

**सुमार्ग**—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम मार्ग। अच्छा रास्ता। सुपथ। सन्मार्ग।

**सुमात्स्न**—वि० [सं०] १ अत्यंत सुंदर। २ बहुत छोटा। सूक्ष्म [को०]।

**सुमाल**—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम।

**सुमालिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में छह वर्ण होते हैं। इनमें से दूसरा और पाँचवाँ लघु तथा अन्य वर्ण गुरु होते हैं। २ एक गंधर्वी का नाम।

**सुमाली**[१]—संज्ञा पुं० [सं० सुमालिन्] १ एक वानर का नाम। २ एक राक्षस का नाम जो सुकेश राक्षस का पुत्र था।

विशेष—इसी सुमाली की कन्या कैकसी के गर्भ से विश्रवा से रावण, कुंभकर्ण, शूर्पनखा और विभीषण उत्पन्न हुए थे।

सुमाली[2]—संज्ञा पुं० [फ़ा० शुमाल] एक अरब जाति ।

विशेष—अफ्रिका के पश्चिमी किनारे पर तथा अदन मे इस जाति का निवास है । गुलामो का व्यवसाय करनेवाले अफ्रिका से इन्हे ले आए थे ।

सुमाली लैंड—संज्ञा पुं० [अं०] अफ्रीका का पूर्वी तटवर्ती एक देश ।

सुमाल्य—संज्ञा पुं० [सं०] महापद्म के एक पुत्र का नाम ।

सुमाल्यक—संज्ञा पुं० [सं०] पुराण के अनुसार एक पर्वत का नाम ।

सुमावलि—संज्ञा [सं०] पुष्पहार ।

सुमित्र[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम । २ अभिमन्यु के सारथि का नाम । ३. मगध का एक राजा जो अर्हत् सुव्रत का पिता था । ४ गद के एक पुत्र का नाम । ५ श्याम का एक पुत्र । ६ शमीक का एक पुत्र । ७ वृष्णि का एक पुत्र । ८ इक्ष्वाकु वंश के अंतिम राजा सुरथ के पुत्र का नाम । ९ एक दानव का नाम । १० सौराष्ट्र के अंतिम राजा का नाम ।

विशेष—कर्नल टाड के अनुसार ये विक्रमादित्य के समसामयिक थे । इन्होने राजपूताने मे जाकर मेवाड के राणा वंश की स्थापना की थी । भागवत मे इनका उल्लेख है ।

११ अच्छा मित्र । सन्मित्र । वफादार दोस्त (को०) ।

सुमित्र[2]—वि० उत्तम मित्रोवाला ।

सुमित्रभू—संज्ञा पुं० [सं०] १ जैनियो के चक्रवर्ती राजा सगर का नाम । २ वर्तमान अवसर्पिणी के बीसवें अर्हत् का नाम ।

सुमित्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दशरथ की एक पत्नी जो लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता थी । २ मार्कंडेय की माता का नाम । ३ एक यक्षिणी का नाम (को०) ।

सुमित्रातनय—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुमित्रानंदन' ।

सुमित्रानंदन—संज्ञा पुं० [सं० सुमित्रानन्दन] १. लक्ष्मण । २ शत्रुघ्न ।

सुमित्राभू—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुमित्रानंदन' ।

सुमित्र्य—वि० [सं०] उत्तम मित्रोवाला । जिसके अच्छे मित्र हो ।

सुमिरण(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्मरण] दे० 'स्मरण' ।

सुमिरन—संज्ञा पुं० [सं० स्मरण] दे० 'सुमिरण' ।

सुमिरना(पु)—क्रि० स० [सं० स्मरण] दे० 'सुमरना' । उ०—जेहि सुमिरत सिधि होइ गणनायक करिवर वदन ।—तुलसी (शब्द०) ।

सुमिरनी(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुमिरन + ई (प्रत्य०)] दे० 'सुमरनी' । उ०—अथवा सुमिरनी डारि दीन्ह्यो तुरत ही धारा बढी ।—रघुराज (शब्द०) ।

सुमिरिनिया(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुमिरनी + इया (प्रत्य०)] दे० 'सुमिरनी' । उ०—पीतम हक सुमिरिनिया मुहि देइ जाहु ।—रहीम (शब्द०) ।

सुमुख[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव । २ गणेश । ३ गरुड के एक पुत्र का नाम । ४ द्रोण के एक पुत्र का नाम । ५ एक नागासुर । ६ एक असुर । ७ किन्नरों का राजा । ८ एक ऋषि । ९ एक वानर । १० पंडित । आचार्य । ११ एक प्रकार का जलपक्षी । १२ एक प्रकार का शाक । १३ एक राजा का नाम । १४ राई । राजिका । राजसर्षप । १५ वनवर्वरी । जंगली वर्वरी । १६ श्वेत तुलसी । १७ सुंदर मुख । १८ एक प्रकार का भवन (को०) । १९ नख की खरोंच । नखक्षत (को०) ।

सुमुख[2]—वि० १ सुंदर मुखवाला । २ सुंदर । मनोरम । मनोहर । ३ प्रसन्न । ४ अनुकूल । कृपालु । ५ जिसकी नोक अच्छी हो । धारदार । अनीवाला जैसे, वाण (को०) । ६ जिसके दरवाजे सुंदर हो । सुंदर द्वारवाला (को०) ।

सुमुखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदर मुखवाली स्त्री । सुंदरी स्त्री ।

सुमुखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह स्त्री जिसका मुख सुंदर हो । सुंदर मुखवाली स्त्री । २ दर्पण । आईना । ३ संगीत मे एक प्रकार की मूर्छना । ४ एक अप्सरा का नाम । ५ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे ११ अक्षर होते है । इनमे से पहला, आठवाँ तथा ग्यारहवाँ लघु और अन्य अक्षर गुरु होते हैं । ६ नील अपराजिता । नीली कोयल । ७ शंखपुष्पी । शंखाहुली । कौडियाली ।

सुमुष्टि—संज्ञा पुं० [सं०] बकायन । विषमुष्टि । महानिंव ।

सुमूर्ति—संज्ञा पुं० [सं०] शिव के एक गण का नाम ।

सुमूल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ सफेद सहिजन । श्वेत शिग्रु । २ उत्तम मूल ।

सुमूल[2]—वि० उत्तम मूलवाला । जिसकी जड अच्छी हो ।

सुमूलक—संज्ञा पुं० [सं०] गाजर ।

सुमूला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सरिवन । शालपर्णी । २. पिठवन । पृश्निपर्णी ।

सुमृग—संज्ञा पुं० [सं०] वह भूमि जहाँ बहुत से जंगली जानवर हो । शिकार खेलने के लिये अच्छा मैदान ।

सुमृत[1]—वि० [सं०] मृत । मरा हुआ (को०) ।

सुमृत(पु)[2]—संज्ञा पुं० [सं० स्मृति] दे० 'स्मृति' । उ०—श्रुति गुरु साधु सुमृत समत यह दृश्य सदा दुखकारी ।—तुलसी (शब्द०) ।

सुमृति(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] दे० 'स्मृति' । उ०—देव कवितान पुण्य कीरति वितान, तेरे सुमृति पुराण गुणवान श्रुति भरिए । —देव (शब्द०) ।

सुमेखल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] मूंज । मुंजतृण ।

सुमेखल[2]—वि० जिसकी मेखला सुंदर हो । सुंदर मेखलावाला ।

सुमेध—संज्ञा पुं० [सं०] रामायण के अनुसार एक पर्वत का नाम ।

सुमेडी†—संज्ञा स्त्री० [देश०] खाट बुनने का बाध ।

सुमेध—वि० [सं० सुमेधस्] दे० 'सुमेधा' । उ०—ताहि कहत आछेय हैं भूषन सुकवि सुमेध ।—भूषण (शब्द०) ।

सुमेधा[1]—वि० [सं० सुमेधस्] उत्तम बुद्धिवाला । सुबुद्धि । बुद्धिमान् ।

सुमेधा[2]—संज्ञा पुं० १ चाक्षुष मन्वतर के एक ऋषि का नाम । २. वेदमित्र के एक पुत्र का नाम । ३ पाँचवें मन्वतर के विशिष्ट देवता । ४ पितरो का एक गण या भेद ।

सुमेधा[3]—संज्ञा स्त्री० मालकगनी । ज्योतिष्मती लता ।

सुमेध्य—वि० [सं०] अत्यंत पवित्र । बहुत पवित्र ।

सुमेर(पु) संज्ञा पुं० [सं० सुमेरु] १ सुमेरु पर्वत । उ० —(क) शोभित सुंदर केशव कामिनि । जिमि सुमेर पर घन सहगामिनि ।—गिरिधर (शब्द०) । (ख) संपति सुमेर की कुबेर की जु पावै ताहि तुरत लुटावत विलंब उर धारै ना । पद्माकर (शब्द०) । २ गंगाजल रखने का बडा पात्र ।

सुमेरु¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक पुराणोक्त पर्वत जो सोने का कहा गया है ।

विशेष भागवत के अनुसार सुमेरु पर्वतों का राजा है। यह सोने का है। इस भूमंडल के सात द्वीपों में प्रथम द्वीप जंबू द्वीप के—जिसकी लंबाई ४० लाख कोस और चौडाई चार लाख कोस है—नौ वर्षों में से इलावृत्त नामक अभ्यंतर वर्ष में यह स्थित है। यह ऊँचाई में उक्त द्वीप के विस्तार के समान है। इस पर्वत का शिरोभाग १२८ हजार कोस, मूल देश ६४ हजार कोस और मध्यभाग चार हजार कोस का है। उसके चारो ओर मंदर, मेरुमंदर, सुपार्श्व और कुमुद नामक चार आश्रित पर्वत हैं। इनमें से प्रत्येक की ऊँचाई और फैलाव ४० हजार कोस है। इन चारों पर्वतों पर आम, जामुन, कदंब और बड के पेड हैं जिनमें से प्रत्येक की ऊँचाई चार सौ कोस है। इनके पास ही चार ह्रद भी हैं जिनमें पहला दूध का, दूसरा मधु का, तीसरा ऊख के रस का और चौथा शुद्ध जल का है। चार उद्यान भी हैं जिनके नाम नंदन, चैत्ररथ, वैभ्राजक और सर्वतोभद्र हैं। देवता इन उद्यानों में सुरांगनाओं के साथ विहार करते हैं। मंदार पर्वत के देवच्युत वृक्ष और मेरुपर्वत के जंबू वृक्ष के फूल, बहुत स्थूल और विराट्काय होते हैं। इनसे दो नदियाँ—अरुणोदा और जंबू नदी—बन गई है। जंबू नदी के किनारे की जमीन की मिट्टी तो रस से सिक्त होने के कारण सोना ही हो गई है। सुपार्श्व पर्वत के महाकदंब वृक्ष से जो मधुधारा प्रवाहित होती है, उसको पान करनेवाले के मुँह से निकली हुई सुगंध चार सौ कोस तक जाती है। कुमुद पर्वत का वट वृक्ष तो कल्पतरु ही है। यहाँ के लोग आजीवन सुख भोगते हैं। सुमेरु के पूर्व जठर और देवकूट, पश्चिम में पवन और पारियात्र, दक्षिण में कैलास और करवीर गिरि तथा उत्तर में त्रिशृंग और मकर पर्वत स्थित है। इन सबकी ऊँचाई कई हजार कोस है। सुमेरु पर्वत के ऊपर मध्यभाग में ब्रह्मा की पुरी है, जिसका विस्तार हजारों कोस है। यह पुरी भी सोने की है। नृसिंहपुराण के अनुसार सुमेरु के तीन प्रधान शृंग है, जो स्फटिक, वैदूर्य और रत्नमय है। इन शृंगों पर २१ स्वर्ग हैं जिनमें देवता लोग निवास करते हैं।

२ शिव जी का एक नाम । ३ जपमाला के बीच का बडा दाना जो और सब दानों के ऊपर होता है। इसी से जप का आरंभ और इसी पर इसकी समाप्ति होती है। ४ उत्तर ध्रुव । विशेष दे० 'ध्रुव'। ५ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में १२+५ के विश्राम से १७ मात्राएँ होती हैं, अंत में लघु गुरु नहीं होते, पर यगण अत्यंत श्रुतिमधुर होता है। इसकी १, ८ और १५ वीं मात्राएँ लघु होती हैं। किसी किसी ने इसके एक चरण में १६ और किसी ने २० मात्राएँ मानी है। पर यह सर्वसम्मत नहीं है। ६ एक विद्याधर (को०) ।

सुमेरु²—वि० १ बहुत ऊँचा । २ बहुत सुंदर ।

सुमेरुजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुमेरु पर्वत से निकली हुई नदी ।

सुमेरुवृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] वह रेखा जो उत्तर ध्रुव से २३॥ अक्षांश पर स्थित है ।

सुमेरुसमुद्र—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तर महासागर ।

सुम्न—संज्ञा पुं० [सं०] १ ऋचा । मंत्र । २ आनंद । प्रसन्नता । ३. कृपा । अनुग्रह । रक्षण । ४ यज्ञ (को०) ।

सुम्नी—वि० [सं० सुम्निन्] १ दयालु । कृपालु । मेहरबान । २ अनुकूल ।

सुम्मा—संज्ञा पुं० [देश०] १ बाजरा (बाजरा) । २ दे० 'सुंबा' ।

सुम्मी—संज्ञा स्त्री० [देश ] १ सुनारों का एक औजार जिससे वे घुंडी और कंगनी की नक्काशी उभाडते हैं । २ दे० 'सुंबी' ।

सुम्मीदार सवरा—संज्ञा पुं० [हिं० सुम्मी+फा० दार (प्रत्य०)+सवरा ( =औजार)] वह सवरा जिससे कसेरे बरतन में बुँदकी निकालते हैं ।

सुम्ह¹—संज्ञा पुं० [सं० सुम्भ] एक जाति का नाम ।

सुम्ह²—संज्ञा पुं० [फा० सुम] दे० 'सुम' ।

सुम्हार—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का धान जो उत्तर प्रदेश में होता है ।

सुय(पु)—अव्य० [सं० स्वयम्] दे० 'स्वयम्' ।

सुयंत्रित—वि० [सं० सुयन्त्रित] १ भली प्रकार कीलित । आरक्षित । २ भली प्रकार बँधा हुआ । सुबद्ध । ३ संयत । जितेंद्रिय आत्मनिग्रही ।

सुयंवर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्वयम्वर] दे० 'स्वयंवर' ।

सुयजु—संज्ञा पुं० [सं० सुयजुस्] महाभारत के अनुसार भूमन्यु के एक पुत्र का नाम ।

सुयज्ञ¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ रुचि प्रजापति के एक पुत्र का नाम जो आकूति के गर्भ से उत्पन्न हुआ था । २ वसिष्ठ के एक पुत्र का नाम । ३ ध्रुव के एक पुत्र का नाम । ४ उशीनर के एक राजा का नाम । ५ उत्तम यज्ञ ।

सुयज्ञ²—वि० उत्तमता या सफलता से यज्ञ करनेवाला । जिसने उत्तमता से यज्ञ किया हो ।

सुयज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] महाभौम की पत्नी का नाम ।

सुयत—वि० [सं०] १ उत्तम रूप से संयत । सुसंयत । २ जितेंद्रिय ।

सुयम—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार देवताओं का एक गण जिनका जन्म सुयज्ञ की पत्नी दक्षिणा के गर्भ से हुआ था ।

सुयमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रियंगु ।

सुयवस—संज्ञा पुं० [सं०] १ उत्तम गोचर भूमि । २ हरी हरी उत्तम घास (को०) ।

सुयश¹—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छा यश । अच्छी कीर्ति । सुख्याति । सुकीर्ति । सुनाम । जैसे,—आजकल चारो ओर उनका सुयश फैल रहा है ।

सुयश¹—वि० [सं० सुयशस्] उत्तम यशवाला । यशस्वी कीर्तिमान् ।

सुयश²—संज्ञा पुं० भागवत के अनुसार अशोकवर्धन के पुत्र का नाम ।

सुयशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दिवोदास की पत्नी का नाम । २ एक अर्हत् की माता का नाम । ३ परीक्षित की एक स्त्री का नाम । ४ एक अप्सरा का नाम । ५ अवसर्पिणी ।

सुयष्टव्य—संज्ञा पुं० [सं०] रैवत मनु के एक पुत्र का नाम ।

सुयाति—संज्ञा पुं० [सं०] हरिवंश के अनुसार नहुष के एक पुत्र का नाम ।

सुयाम—संज्ञा पुं० [सं०] ललितविस्तर के अनुसार एक देवपुत्र का नाम ।

सुयामुन—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु । २ राजभवन । राजप्रासाद । ३ एक प्रकार का मेघ । ४ एक पर्वत का नाम । ५ वत्सराज (उदयन) का एक नाम (को०) ।

सुयुक्त - संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम (को०) ।

सुयुक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अच्छी युक्ति । उत्तम तर्क । २ उत्तम उपाय ।

सुयुद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] १ धर्मयुद्ध । न्यायसमत युद्ध । २ अच्छी तरह लडना । जमकर लडना (को०) ।

सुयोग—संज्ञा पुं० [सं०] सुदर योग। संयोग । सुअवसर । अच्छा मौका । जैसे,—बडे भाग्य से यह सुयोग हाथ आया है ।

सुयोग्य—वि० [सं०] बहुत योग्य । लायक । काबिल । जैसे,—उनके दोनों पुत्र सुयोग्य है ।

सुयोधन—संज्ञा पुं० [सं०] धृतराष्ट्र के बडे पुत्र दुर्योधन का एक नाम ।

सुरंग¹—वि० [सं० सुरङ्ग] १ जिसका रंग सुदर हो । सुदर रंग का । २ सुदर । सुडौल । उ०—(क) सब पुर देखि धनुषपुर देख्यो देखे महल सुरंग ।—सूर (शब्द०) । (ख) अलकावलि मुक्तावलि गूँथी डोर सुरंग बिराजै । सूर (शब्द०) । (ग) गति हेरि कुरंग कुरंग फिरै चतुरंग तुरंग सुरंग बने ।—गि० दास (शब्द०) । ३ रसपूर्ण । उ०—रसनिधि सुदर मीत के रंग चुचौंहे नैन । मन पट कौं कर देत है तुरत सुरंग ये नैन ।—रसनिधि (शब्द०) । ४ लाल रंग का । रक्तवर्ण । उ०—पहिरे वसन सुरंग पावकयुत स्वाहा मनो ।—केशव (शब्द०) । ५ निर्मल । स्वच्छ । साफ । उ०—अति बदन शोभ सरसी सुरंग । तहँ कमल नयन नासा तरंग ।—केशव (शब्द०) ।

सुरंग²—संज्ञा पुं० १ शिंगरफ । हिंगुल । २ पतंग । बक्कम । ३ नारंगी । नागरंग । ४ रंग के अनुसार घोडो का एक भेद ।

सुरंग³—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरङ्ग] १ जमीन या पहाड के नीचे खोदकर या बारूद से उडाकर बनाया हुआ रास्ता जो लोगों के आने जाने के काम मे आता है । जैसे,—इस पहाड मे रेल कई सुरंगें पार करके जाती हैं । २ किले या दीवार आदि के नीचे जमीन के अदर खोदकर बनाया हुआ वह तंग रास्ता जिसमे बारूद आदि भरकर उसमे आग लगाकर किला या दीवार उडाते है । उ०—भरि बारूद सुरंग लगावै । पुरी सहित जदु भटन उड़ावै ।—गोपाल (शब्द०) ।

क्रि० प्र०—उडाना । लगाना ।

३ एक प्रकार का यंत्र जिसमे बारूद से भरा हुआ एक पीपा होता है और जिसके ऊपर एक तार निकला हुआ होता है ।

विशेष—यह यंत्र समुद्र मे डुबा दिया जाता है और इसका तार ऊपर की ओर उठा रहता है । जब किसी जहाज का पेंदा इस तार से छू जाता है, तो अपनी भीतरी विद्युत् शक्ति की सहायता मे बारूद मे आग लग जाती है जिसके फूटने से ऊपर का जहाज फटकर डूब जाता है । इसका व्यवहार प्राय शत्रुओं के जहाजों को नष्ट करने मे होता है ।

४ वह सूराख जो चोर लोग दीवार मे बनाते हैं । सेंध ।

क्रि० प्र०—लगाना ।

मुहा०—सुरंग मारना = सेंध लगाकर चोरी करना ।

सुरंगद—संज्ञा पुं० [सं० सुरङ्गद] पतंग । बक्कम । आल ।

सुरंगधातु—संज्ञा पुं० [सं० सुरङ्गधातु] गेरू मिट्टी ।

सुरंगधूलि—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरङ्गधूलि] नारंगी का पराग (को०) ।

सुरंगभुक—संज्ञा पुं० [सं० सुरङ्गभुज्] सेंध लगानेवाला । चोर ।

सुरंगा—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरङ्गा] १ कैवर्तिका लता । २ सेंध ।

सुरंगिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरङ्गिका] १ मूर्वा । मुर्हरी । चुरनहार । २ उपोदिका । पोई का साग ३ श्वेत काकमाची । सफेद मकोय ।

सुरंगी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरङ्गी] १ काकनासा । कौआठोंठी । २ पुन्नाग । सुलतान चपा । ३ रक्त शोभाजन । लाल सहिंजन । ४ आल का पेड जिससे आल का रंग बनता है ।

सुरंजन—संज्ञा पुं० [सं० सुरञ्जन] सुपारी का पेड ।

सुरंधक, सुरंध्र—संज्ञा [सं० सुरन्धक, सुरन्ध्र] १, एक प्राचीन जनपद का नाम । २ उस जनपद का निवासी ।

सुर¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवता । २ सूर्य । ३ पडित । विद्वान । ४ मुनि । ऋषि । ५ पुराणानुसार एक प्राचीन नगर का नाम जो चद्रप्रभा नदी के तट पर था । ६ अग्नि का एक विशिष्ट रूप । ७ देवविग्रह । देवप्रतिमा (को०) । ८ ३३ की संख्या (को०) ।

सुर²—संज्ञा पुं० [सं० स्वर] स्वर । ध्वनि । आवाज । विशेष दे० 'स्वर' ।

यौ०—सुरतान । सुरदीप ।

क्रि० प्र०—छेडना ।—देना ।—भरना ।—मिलाना ।

मुहा०—सुर मे सुर मिलाना = हाँ मे हाँ मिलाना । चापलूसी करना । सुर भरना = किसी गाने या बजानेवाले को सहारा देने के लिये उसके साथ कोई एक सुर अलापना या बाजे आदि से निकालना ।

सुरकंत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुर + कान्त] इंद्र । उ०—मतिमन महा छितिकत मनि चढि द्विदंत सुरकंत सम ।—गि० दास (शब्द०) ।

सुरक¹--संज्ञा पुं० [सं० सुर] नाक पर का वह तिलक जो भाले की आकृति का होता है। उ०-- खौरि पनिच भृकुटी धनुष वधिकु समरु, तजि कानि। हनतु तरुन मृग तिलकसर सुरक भाल, भरि तानि।--बिहारी (शब्द०)।

सुरक²--संज्ञा स्त्री० [हिं० सुरकना] सुरकने की क्रिया या भाव।

सुरकना--क्रि० [अनु०] १ किसी तरल पदार्थ को धीरे धीरे हवा के साथ खींचते हुए पीना। हवा के साथ ऊपर की ओर धीरे धीरे खींचना।

सुरकरींद्र--संज्ञा पुं० [सं० सुरकरीन्द्र] देवहस्ती। ऐरावत [को०]।

यौ०--सुरकरींद्रदर्पापहा = गंगा का एक नाम।

सुरकरी--संज्ञा पुं० [सं० सुरकरिन्] देवताओं का हाथी। सुरराज का हाथी। ऐरावत दिग्गज। उ०--जु तू इच्छा वाके करि विमल पानी पियन की। झुके आधो लवे तन गगन में ज्यों सुरकरी।--राजा लक्ष्मण सिंह (शब्द०)।

सुरकली--संज्ञा स्त्री० [हिं० सुर + कली] एक रागिनी का नाम।

सुरकाज(पु)--संज्ञा पुं० [सं० सुरकार्य] देवताओं का काम या हित। वह काम जो देवताओं को इष्ट हो। उ०--(क) सुरकाज धरि कर राज तनु चले दलन खल निसिचर अनी।--मानस, २।१२६। (ख) उठे हरषि सुरकाजु सँवारन।--मानस ३।२१।

सुरकानन--संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के विहार करने का वन। नंदन कानन।

सुरकामिनी--संज्ञा स्त्री० [सं०] देवांगना। सुरांगना। अप्सरा [को०]।

सुरकारु--संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के शिल्पकार, विश्वकर्मा।

सुरकार्मुक--संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रधनुष।

सुरकार्य--संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं की तुष्टि के लिये किया हुआ कर्म। देवकार्य। जैसे--पूजन हवन आदि।

सुरकाष्ठ--संज्ञा पुं० [सं०] देवदारु। देवकाष्ठ।

सुरकुदाव(पु)--संज्ञा पुं० [सं० सुर (= स्वर), सं० कु + हिं० दाँव (= धोखा)] स्वर के द्वारा धोखा देना। स्वर बदलकर बोलना, जिससे लोग धोखे में आ जायँ। उ०--चौक चारु करि कूप ढारु घरियार बाँधि घर। मुक्ति मोल करि खड्ग खोलि सिंघिहि निचोल वर। हय कुदाव दे सुरकुदाव गुन गान रंग को। जानु भाव शिवधाम धाव धन ल्याउ लंक को।--केशव (शब्द०)।

सुरकुनठ--संज्ञा पुं० [सं०] बृहत्संहिता के अनुसार ईशानकोण में स्थित एक देश का नाम।

सुरकुल--संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं का निवासस्थान।

सुरकृत¹--संज्ञा पुं० [सं०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

सुरकृत²--वि० देवताओं द्वारा किया हुआ।

सुरकृता--संज्ञा स्त्री० [सं०] गिलोय। गुडुची।

सुरकेतु--संज्ञा पुं० [सं०] १ देवताओं या इंद्र की ध्वजा। २ इंद्र। उ०--द्वारपाल के वचन सुनत नृप उठे समाज समेतू। लेन चले मुनि की अगुवाई जिमि विधि कहँ सुरकेतू।--रघुराज (शब्द०)।

सुरक्त--वि० [सं०] १ सुंदर रँगा हुआ। अच्छी तरह रँगा हुआ। २ गाढ़ रक्त वर्ण का। ३ प्रभावित। वशीभूत। ४ अनुरक्त। ५ मधुर ध्वनियुक्त। ६ अत्यंत सुंदर। बहुत खूबसूरत [को०]।

सुरक्तक--संज्ञा पुं० [सं०] १ कोशम। कोशाम्र। विशेष दे० 'कोशम'। २ एक प्रकार का आम्रफल (को०)। ३ सोन गेरू। स्वर्ण गैरिक।

सुरक्ष¹--संज्ञा पुं० [सं०] १ एक मुनि का नाम। २ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

सुरक्ष²--वि० उत्तम रूप से रक्षित। जिसकी भली भाँति रक्षा की गई हो।

सुरक्षण--संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम रूप से रक्षा करने की क्रिया। रखवाली। हिफाजत।

सुरक्षा--संज्ञा स्त्री० [सं०] सुरक्षण। सम्यक् रक्षा [को०]।

सुरक्षित--वि० [सं०] जिसकी भली भाँति रक्षा की गई हो। उत्तम रूप से रक्षित। अच्छी तरह रक्षा किया हुआ।

सुरक्षी--संज्ञा पुं० [सं० सुरक्षिन्] उत्तम या विश्वस्त रक्षक। अच्छा अभिभावक या रक्षक।

सुरक्ष्य--वि० [सं०] १ जो सम्यक् रक्षणीय हो। २ सरलतापूर्वक जिसकी रक्षा की जा सके [को०]।

सुरखंडनिका--संज्ञा स्त्री० [सं० सुरखण्डनिका] एक प्रकार की वीणा जो 'सुरमंडलिका' भी कहलाती है।

सुरख(पु)--वि० [फ़ा० सुर्ख] दे० 'सुर्ख'। उ०--हरपि हिये पर तिय धरचो सुरख सीप को हार।--पद्माकर (शब्द०)।

सुरखा¹--वि० [फ़ा० सुर्ख] दे० 'सुर्ख'। उ०--सुरखा अरु संजाव सुरमई अवलख भारी।--सूदन (शब्द०)।

सुरखा²--संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का लंबा पौधा जिसमें पत्ते बहुत कम होते हैं।

सुरखाब¹--संज्ञा पुं० [फ़ा० सुरखाब] चकवा।

मुहा०--सुरखाब का पर लगना = विलक्षणता या विशेषता होना। अनोखापन होना। जैसे--तुम में क्या कोई सुरखाब का पर है, जो पहले तुम्हें दे।

सुरखाब²--संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सुरखाब] एक नदी का नाम जो बलख में बहती है।

सुरखिया--संज्ञा पुं० [फ़ा० सुर्ख + इया (प्रत्य०)] एक प्रकार का पक्षी।

विशेष--यह सर से गरदन तक लाल होता है। इसकी पीठ भी लाल होती है, पर चोंच पीली और पैर काले होते हैं।

सुरखिया बगला--संज्ञा पुं० [हिं० सुर्ख + बगला] १ एक प्रकार का बगला जिसे गाय बगला भी कहते हैं।

सुरखी--संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सुर्ख] १ ईंटों का बनाया हुआ महीन चूरा जो इमारत बनाने के काम में आता है। २ दे० 'सुर्खी'।

यौ०--सुरखी चूना।

सुरखुरू--वि० [फ़ा० सुर्खरू] दे० 'सुर्खरू'। उ०--अलहदाद भल तेहि करगुरू। दीन दुनी रोसन सुरखुरू।--जायसी (शब्द०)।

सुरगंड—संज्ञा पुं० [सं० सुरगण्ड] एक प्रकार का फोड़ा।

सुरग⁽ᵖ⁾¹—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ग] दे० 'स्वर्ग'। उ०—जीत्यौ सुरग जीति दिसि चार्यौ।—लाल कवि (शब्द०)।

सुरगज—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं या इंद्र का हाथी।

सुरगण—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २ देवगण। देवताओं का वर्ग या समूह।

सुरगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दैवी गति। भावी। २ देवताओं की स्थिति या अवस्था (को०)।

सुरगन⁽ᵖ⁾—संज्ञा [सं० सुरगण] देवताओं का समूह। देवगण। सुरगण। उ०—सुरगन सहित सभय सुरराजू।—मानस, २।२६४।

सुरगवेसा—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्गवेश्या] अप्सरा। (डिं०)।

सुरगर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] देवसंतान।

सुरगाय—संज्ञा स्त्री० [पुं० सुर + गो] कामधेनु।

सुरगायक—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के गायक। गंधर्व।

सुरगायन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुरगायक'।

सुरगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के रहने का पर्वत, सुमेरु।

सुरगी⁽ᵖ⁾—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्गीय] देवता। (डिं०)।

सुरगी नदी⁽ᵖ⁾—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्गीय + नदी] स्वर्नदी। देवनदी। गंगा। (डिं०)।

सुरगुरु—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के गुरु, बृहस्पति। उ०—वचन सुनत सुरगुरु मुसकाने।—मानस, २।२१७।

सुरगुरुदिवस—संज्ञा पुं० [सं०] बृहस्पतिवार।

सुरगृह—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं का मंदिर। सुरकुल।

सुरगैया⁽ᵖ⁾—संज्ञा स्त्री० [सं० सुर + हिं० गैया] कामधेनु।

सुरग्रामणी—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं का नेता, इंद्र।

सुरचाप—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रधनुष।

सुरच्छन⁽ᵖ⁾—संज्ञा पुं० [सं० सुरक्षण] दे० 'सुरक्षण'। उ०—रन परम विचच्छन गरम तर धरम सुरच्छन करम कर।—गि० दास (शब्द०)।

सुरज फल—संज्ञा पुं० [सं०] कटहल। पनस।

सुरज¹—वि० [सं० सुरजस्] (फूल) जिसमें उत्तम या प्रचुर पराग हो।

सुरज⁽ᵖ⁾²—संज्ञा पुं० [सं० सूर्य] दे० 'सूर्य'।

सुरजन¹—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं का वर्ग। देवसमूह।

सुरजन⁽ᵖ⁾²—वि० [सं० सज्जन] १ सज्जन। सुजन। २ चतुर। चालाक। उ०—कहो नेक समुझाइ मुँहि सुरजन प्रीतम आप। बस मन मैं मन को हरौ क्यों न विरह संताप।—रसनिधि (शब्द०)।

सुरजनपन—संज्ञा पुं० [हिं० सुरजन + पन (प्रत्य०)] १ सज्जनता। भलमनसत। २ चालाकी। होशियारी। चतुराई।

सुरजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक अप्सरा का नाम। २ पुराणानुसार एक नदी का नाम।



सुरजेठो⁽ᵖ⁾—संज्ञा पुं० [सं० सुरज्येष्ठ] ब्रह्मा। (डिं०)।

सुरज्येष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं में बड़े, ब्रह्मा।

सुरझन⁽ᵖ⁾—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुलझना] दे० 'सुलझन'। उ०—गरजन मैं पुनि आप ही बरसन मैं पुनि आप। सुरझन मैं पुनि आप त्यों उरझन मैं पुनि आप।—रसनिधि (शब्द०)।

सुरझना—क्रि० अ० [हिं०] दे० 'सुलझना'। उ०—अरी करेजै नैन तुव सरसि करेजे वार। अजहूँ सुरझत नाहिं ते सूर हित करत पुकार।—रसनिधि (शब्द०)।

सुरझाना—क्रि० स० [हिं० सुलझाना] दे० 'सुलझाना'। उ०—क्यों सुरझाऊँ री नँदलाल सो अरुझि रह्यो मन मेरो।—सूर (शब्द०)।

सुरझावना⁽ᵖ⁾—क्रि० स० [हिं० सुलझाना] दे० 'सुलझाना'। उ०—उरझ्यो काहू रूख मे कहूँ न बलकल चीर। सुरझावन के मिस तऊ ठिठकी मोरि शरीर।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)।

सुरटीप—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुर + टीप] स्वर का आलाप। सुर की तान।

सुरत¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. रतिक्रीड़ा। कामकेलि। संभोग। मैथुन। उ०—सुरत ही सब रैन बीती कोक पूरण रंग। जलद दामिनि संग सोहत भरे आलस संग।—सूर (शब्द०)।

यौ०—सुरतकेलि, सुरतक्रीडा = रतिक्रीडा। सुरतगुप्ता। सुरतगुरु = पति। शौहर। सुरतगोपना। सुरतग्लानि। सुरतताडव = तीव्रतम कामवेग। प्रचंड संभोग। सुरतताली। सुरतप्रसंग = कामक्रीडा में आसक्ति। सुरतभेद = एक प्रकार का रतिबंध। सुरतमृदित = रतिक्रीडा में मसल दिया हुआ। सुरतरंगी = संभोग में आसक्त। सुरतवाररात्रि = सुरतक्रीडा की रात। सुरतविशेष = एक रतिबंध। सुरतस्थ।

२ उत्कृष्ट आनंद की अनुभूति (को०)। ३ एक बौद्ध भिक्षु का नाम।

सुरत²—संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] ध्यान। याद। सुध। उ०—(क) धीर मढत मन छन नहीं कढत बदन तें बैन। तुरत सुरत की सुरत कै जुरत मुरत हँसि नैन।—शृंगार सतसई (शब्द०)। (ख) करत महातम विपिन बधि चलो गयो करतार। तहँ अखंड लागी सुरत यथा तैल की धार।—रघुराज (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना।—दिलाना।—होना।—लगना।

मुहा०—सुरत बिसारना = भूल जाना। विस्मृत होना। सुरत सँभालना = होश सँभालना।

सुरतगुप्ता, सुरतगोपना—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुरतिगोपा' (को०)।

सुरतग्लानि—संज्ञा स्त्री० [सं०] रति या संभोगजनित थकान, ग्लानि या शिथिलता।

सुरतताली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दूती। २ शिरोमाल्य। सेहरा।

सुरतबंध—संज्ञा पुं० [सं०] संभोग का एक प्रकार।

सुरतरंगिणी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरतरङ्गिणी] गंगा।

सुरतरु—संज्ञा पुं० [सं०] देवतरु। कल्पवृक्ष।

**सुरतरुवर**—संज्ञा पुं० [सं०] कल्पवृक्ष ।

**सुरतस्थ**—वि० [सं०] स्त्रीप्रसंग में रत । संभोगरत [को०]।

**सुरतांत**—संज्ञा पुं० [सं० सुरतान्त] रति या संभोग का अंत ।

**सुरता**[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुर या देवता का भाव या कार्य । २ देवत्व । २. सुरसमूह । देवसमूह । देव जाति । ३ संभोग का आनंद । ४ पत्नी । स्त्री । ५ एक अप्सरा का नाम ।

**सुरता**[2]—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की बाँस की नली जिसमें से दाना छोड़कर बोया जाता है ।

**सुरता**[3]—संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति, हिं० सुरत] १ चिंता । ध्यान । २ चेत । सुध । उ०—छांडि शासना बौद्ध की अरहत की ना मानि । सुरता छांडि पिशाचता काहे को करि बानि ।—(शब्द०) ।

**सुरता**(पु)[4]—वि० ध्यान लगानेवाला । ध्यानी ।

**सुरता**†[5]—वि०, संज्ञा पुं० [सं० श्रोता] दे० 'श्रोता' ।

**सुरता**[6]—वि० [हिं० सुरत] समझदार । होशियार । बुद्धिमान् । सयाना । चालाक ।

**सुरतात**—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवताओं के पिता, कश्यप । २ देवताओं के अधिपति, इंद्र ।

**सुरतान**[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुर+तान] स्वर का आलाप । सुर टीप ।

**सुरतान**[2]—संज्ञा पुं० [फा० सुलतान] दे० 'सुलतान' ।

**सुरताल**—संज्ञा पुं० [सं० स्वर+ताल] स्वर और ताल (संगीत) ।

**सुरति**[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सु+रति] विहार । भोगविलास । कामकेलि । संभोग । उ०—विरची सुरति रघुनाथ कुंजधाम बीच, काम बस नाम करे ऐसे भाव थपनो । जघनि सो मसकै सिकोरै नाक, ससकै मरोरै भौंह हंस कै सरीर डारै कंपनो ।—काव्यकलाधर (शब्द०) ।

**सुरति**[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] स्मरण । सुधि । चेत । उ०—छिनछिन सुरति करत यदुपति की परत न मन समुझायो । गोकुलनाथ हमारे हित लगि लिखिहू क्यों न पठायो ।—सूर (शब्द०) ।
क्रि० प्र०—करना ।—दिलाना ।—लगना ।–होना ।

**सुरति**[3]—संज्ञा स्त्री० [फा० सूरत] दे० 'सूरत' । उ०—सोवत जागत सपनवस रस रिस चैन कुचैन । सुरति स्यामघन की सुरति बिसरेहू बिसरै न ।—बिहारी (शब्द०) ।

**सुरतिगोपना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो रतिक्रीड़ा करके आई हो और अपने सखियों आदि से यह बात छिपाती हो ।

**सुरतिरव**—संज्ञा पुं० [सं०] रतिक्रीड़ा के समय होनेवाली भूषणों की ध्वनि ।

**सुरतिवंत**(पु)—वि० [सं० सुरत+वान्] कामातुर । उ०—हरि हँसि भामिनी उर लाइ । सुरतिवंत गुपाल रीझे जानी अति सुखदाई ।—सूर (शब्द०) ।

**सुरतिविचित्रा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मध्या के चार भेदों में से एक । वह मध्या जिसकी रतिक्रिया विचित्र हो । उ०—मध्या आरूढयौवना प्रगलभवचना जान । प्रादुर्भूत मनोभवा सुरतिविचित्रा मान ।—केशव (शब्द०) ।

**सुरती**—संज्ञा स्त्री० [सूरत (नगर)+ई] खाने के तमाकू के पत्तों का चूरा जो पान के साथ या यों ही चूना मिलाकर खाया जाता है । खैनी ।
विशेष—अनुमान किया जाता है कि पुर्तगालवालों ने पहले पहल इसका प्रचार सूरत नगर में किया था, इसी से इसका यह नाम पड़ा ।

**सुरतुंग**—संज्ञा पुं० [सं० सुरतुङ्ग] सुरपुन्नाग नामक वृक्ष ।

**सुरतोपक**—संज्ञा पुं० [सं०] १ कौस्तुभ मणि । २ वह जो देवताओं को तुष्ट करता है (को०) ।

**सुरत्न**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोना । स्वर्ण । २ माणिक्य । लाल ।

**सुरत्न**[2]—वि० १ सर्वश्रेष्ठ । २ उत्तम रत्नों से युक्त ।

**सुरत्राण**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुरत्राता' । उ०—राजन घोर निसान सान सुरत्रान बजावत ।—गि० दास (शब्द) ।

**सुरत्राण**(पु)[2]—संज्ञा पुं० [फा० सुलतान] दे० 'सुलतान' ।

**सुरत्राता**—संज्ञा पुं० [सं० सुर+त्रातृ] १ विष्णु । श्रीकृष्ण । २ इंद्र ।

**सुरथ**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक चंद्रवंशी राजा ।
विशेष—पुराणों के अनुसार ये स्वारोचिष मन्वंतर में हुए थे और इन्होंने पहले पहल दुर्गा की आराधना की थी । दुर्गा के वर से ये सावर्णि मनु के नाम से प्रसिद्ध हुए । दुर्गा सप्तशती में इनका विस्तृत वृत्तांत है ।
२ द्रुपद के एक पुत्र का नाम । ३ जयद्रथ के एक पुत्र का नाम । ४ सुदेव के एक पुत्र का नाम । ५ जनमेजय के एक पुत्र का नाम । ६ अधिरथ के एक पुत्र का नाम । ७ कुंडक के एक पुत्र का नाम । ८ रणक के एक पुत्र का नाम । ९ नारपुरी के राजा हंसध्वज का पुत्र । १० सुंदर रथ । अनूप रथ (को०) । ११ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम ।

**सुरथ**[2]—सुंदर रथ से युक्त [को०] ।

**सुरथ**[3]—संज्ञा पुं० [सं० सुरथम्] कुश द्वीप के अंतर्गत एक वर्ष ।

**सुरथा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक अप्सरा का नाम । २ पुराणानुसार एक नदी का नाम ।

**सुरथाकार**—संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्ष का नाम ।

**सुरथान**—संज्ञा पुं० [सं० सुर+स्थान] स्वर्ग । (डिं०) ।

**सुरदार**–वि० [हिं० सुर+फा० दार] जिसके गले के स्वर सुंदर हों । सुस्वर । सुरीला ।

**सुरदारु**—संज्ञा पुं० [सं०] देवदार । देवदारु वृक्ष ।

**सुरदीर्घिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] आकाशगंगा ।

**सुरदुंदुभी**—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरदुन्दुभि] १ देवताओं का नगाड़ा । २ तुलसी ।

**सुरदेवी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] योगमाया जिसने यशोदा के गर्भ से अवतार लिया था और जिसे कंस पटकने चला था ।

**सुरदेश**—संज्ञा पुं० [सं० सुर+देश] स्वर्ग । देवलोक ।

**सुरदोपी**(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुरद्विप] देवद्रोही, असुर ।

सुरद्रु—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवदारु। २ सुरद्रुम।

सुरद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] १ कल्पवृक्ष। २ देवदारु (को०)। ३ देवनल। बड़ा नरकट। बड़ा नरसल।

सुरद्विप—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवताओं का हाथी। देवहस्ती। २ इंद्र का हाथी। ऐरावत।

सुरद्विष्—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवताओं का शत्रु। असुर। दानव। राक्षस। २ राहु।

सुरधनु, सुरधनुष—संज्ञा पुं० [सं० सुरधनुस्] १ इंद्रधनुष। २ नखक्षत का चिह्न (को०)।

सुरधाम—संज्ञा पुं० [सं० सुरधामन्] देवलोक। स्वर्ग। उ०—तनु परिहरि रघुवर बिरह राउ गएउ सुरधाम।—मानस, २।१५५।

मुहा०—सुरधाम सिधारना = मर जाना।

सुरधुनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा।

सुरधूप—संज्ञा पुं० [सं०] धूना। राल। सर्जरस।

सुरधेनु—संज्ञा स्त्री० [सं० सुर+धेनु] देवताओं की गाय, कामधेनु।

सुरध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] सुरकेतु। इंद्रध्वज।

सुरनदा—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरनन्दा] एक नदी का नाम।

सुरनगर—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।

सुरनदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गंगा। २ आकाशगंगा।

सुरनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

सुरनायक—संज्ञा पुं० [सं०] सुरपति। इंद्र।

सुरनारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवांगना। देवबाला। देववधू।

सुरनाल—संज्ञा पुं० [सं०] बड़ा नरसल। देवनल।

सुरनाह(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुरनाथ] देवराज इंद्र। उ०—परिघा कहँ जादव हेरि हयो। सुरनाह तबै गत चेत भयो।—गिरिधर (शब्द०)।

सुरनिम्नगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा।

सुरनिर्गंध—देश० पुं० [सं० सुरनिर्गन्ध] तेजपत्ता। तेजपत्र। पत्रज।

सुरनिर्झरिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] आकाशगंगा।

सुरनिलय—संज्ञा पुं० [सं०] सुमेरु पर्वत, जहाँ देवता रहते है।

सुरप(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुरपति] इंद्र। उ०—या कहि सुरप गयहु सुरधाम।—पद्माकर (शब्द०)।

सुरपति—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवराज, इंद्र। उ०—सुरपति निज रथु तुरत पठावा।—मानस, २।८८। २ विष्णु का एक नाम। उ०—सुरपति गति मानी, सासन मानी, भृगुपति को सुख भारी।—केशव (शब्द०)।

सुरपतिगुरु—संज्ञा पुं० [सं०] बृहस्पति।

सुरपतिचाप—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रधनुष।

सुरपतितनय—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र का पुत्र, जयंत। २ अर्जुन।

सुरपतित्व—संज्ञा पुं० [सं०] सुरपति का भाव या पद।

सुरपतिपुर—संज्ञा पुं० [सं०] देवलोक। स्वर्ग। उ०—भूपति सुरपतिपुर पगु धारेउ।—मानस, २।१६०।

सुरपतिसुत—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र का पुत्र, जयंत। उ०—सुरपतिसुत धरि बाइस बेखा।—मानस, ३।१।

सुरपथ—संज्ञा पुं० [सं०] आकाश।

सुरपन—संज्ञा पुं० [सं० सुरपुन्नाग] पुन्नाग। सुरंगी। सुलताना चंपा।

सुरपर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का सुगंधित शाक।

पर्या०—देवपर्ण। सुगंधिक। माचीपत्र। गंधपत्रक।

विशेष—यह क्षुप जाति की सुगंधित वनस्पति है। वैद्यक के अनुसार यह कटु, उष्ण तथा कृमि, श्वास और कास की नाशक तथा दीपन है।

सुरपर्णिक—संज्ञा पुं० [सं०] पुन्नाग वृक्ष।

सुरपर्णिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुन्नाग। सुलताना चंपा।

सुरपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पलासी। पलाशी। २ पुन्नाग। पुलाक।

सुरपर्वत—संज्ञा पुं० [सं०] सुमेरु।

सुरपांसुला—संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्सरा।

सुरपादप—संज्ञा पुं० [सं०] देवद्रुम। कल्पतरु।

सुरपाल—संज्ञा पुं० [सं० सुर+पालक] इंद्र। उ०—सुरन सहित तहँ आइ कै वज्र हन्यो सुरपाल।—गिरिधर (शब्द०)।

सुरपालक—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र। उ०—आनंद के कंद, सुरपालक के बालक ये।—केशव (शब्द०)।

सुरपुन्नाग—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पुन्नाग जिसके गुण पुन्नाग के समान ही होते हैं।

सुरपुर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सुरपुरी] १ देवताओं की पुरी, अमरावती। २ देवलोक। स्वर्ग। उ०—नृप कर सुरपुर गवनु सुनावा।—मानस, २।२४६।

मुहा०—सुरपुर सिधारना = मर जाना, गत हो जाना।

सुरपुरकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र। उ०—नृप केतु बल के केतु सुरपुरकेतु छत्र महँ मोहही।—गि० दास (शब्द०)।

सुरपुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुरपुर'।

सुरपुरोधा—संज्ञा पुं० [सं० सुरपुरोधस्] देवताओं के पुरोहित, बृहस्पति।

सुरपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] देवकुसुम। स्वर्गीय पुष्प।

सुरप्रतिष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवमूर्ति की स्थापना।

सुरप्रवीर—संज्ञा पुं० [सं०] एक अग्नि।

सुरप्रिय[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। २ बृहस्पति। ३ एक प्रकार का पक्षी। ४ अगस्त्य। अगस्तिया। ५ एक पर्वत का नाम।

सुरप्रिय[2]—वि० जो देवताओं को प्रिय हो।

सुरप्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक अप्सरा का नाम। २ चमेली। जाती पुष्प। ३ सोना केला। स्वर्णरंभा।

सुरफाँक ताल—संज्ञा पुं० [हिं० सुर+फाँक (=खाली)+ताल] मृदंग का एक ताल। इसमें तीन आघात और एक खाली होता है। जैसे,—धा घेडे, नागध, घेडे नाग, गद्दी, घेडे नाग धा।

सुरबहार—संज्ञा पु० [हिं० सुर+फ़ा० बहार] सितार की तरह का एक प्रकार का बाजा।

सुरबाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवता की स्त्री। देवांगना।

सुरबुली—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरवल्ली ?] एक पौधा जिसकी जड़ से लाल रंग निकालते हैं। चिरवल।

विशेष—यह पौधा बंगाल और उड़ीसा से लेकर मद्रास और सिंहल तक होता है। इसकी जड़ की छाल से एक प्रकार का सुंदर लाल रंग निकलता है जिससे मछलीपट्टन्, नेलोर आदि स्थानों में कपड़े रँगे जाते हैं।

सुरबृच्छ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुरवृक्ष] कल्पवृक्ष। दे० 'सुरवृक्ष'। उ०—मुख ससि मग्गर अधिक वचन श्री अमृत ऐसी। सुर सुरभी सुरवृच्छ देनि करतल मँह वैसी।—गि० दास (शब्द०)।

सुरबेल—संज्ञा स्त्री० [सं० सुर+वल्ली] कल्पलता।

सुरभंग—संज्ञा पु० [सं० स्वरभङ्ग] प्रेम, आनंद, भय आदि में होनेवाला स्वर का विपर्यास जो सात्विक भावों के अंतर्गत है। उ०—(क) स्तंभ स्वर रोमांच सुरभंग कंप वैवर्ण। अश्रु प्रलाप बखानिए आठो नाम सुवर्ण।—केशव (शब्द०)। (ख) निसि जागें पागें अमल हित को दरसन पाइ। बोल पातरो होत जो सो सुरभंग बताइ।—काव्यकलाधर (शब्द०)। (ग) क्रोध हरख मद भीत तें वचन और विधि होय। ताहि कहत सुरभंग है कवि कोविद सब कोय।—मतिराम (शब्द०)।

सुरभवन—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवताओं का निवासस्थान। मंदिर। २ सुरपुरी। अमरावती।

सुरभानु(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुर+भानु] १ इंद्र। उ०—राधे सो रस बरनि न जाइ। जा रस को सुरभानु, शीश दियो, सो तैं पियो अकुलाइ।—सूर (शब्द०)। २ सूर्य। उ०—सुनि सजनी सुरभानु है अति मलान मतिमंद। पूनो रजनी मैं जु गिलि देत उगिलि यह चंद।—शृंगार सतसई (शब्द०)।

सुरभि[1]—संज्ञा पु० [सं०] १ सुगंध। २ वसंत काल। चैत्र मास। ३ सोना। स्वर्ण। ४ गंधक। ५ चंपक। चंपा। ६ जायफल। ७ कदंब। ८ बकुल। मौलसिरी। ९ शमी। सफेद कीकर। १० कणगुग्गुल। ११ गंधतृण। रोहिस घास। १२ राल। धूना। १३ कपित्थ। गंधफल। १४ बर्बर चंदन। १५ वह अग्नि जो यज्ञयूप की स्थापना में प्रज्वलित की जाती है। १६ जातीफल। जायफल (को०)। १७ सुगंधित वस्तु (को०)।

सुरभि[2]—संज्ञा स्त्री० १ पृथ्वी। २ गौ। ३ गायों की अधिष्ठात्री देवी तथा गो जाति की आदि जननी। ४ कार्तिकेय की एक मातृका का नाम। ५ सुरा। शराब। ६ गंगापत्री। ७ वनमल्लिका। सेवती। ८ तुलसी। ९ शल्लकी। सलई। १० रुद्रजटा। ११ एलवालुक। एलुवा। १२ सुगंधि। खुशबू। १३ पूर्व दिशा (को०)।

सुरभि[3]—वि० १ सुगंधित। सुवासित। २ मनोरम। सुंदर। प्रिय। ३ ख्यात। प्रसिद्ध। मशहूर (को०)। ४ बुद्धिमान। ज्ञानवान्। विद्वान् (को०)। ५ उत्तम। श्रेष्ठ। बढ़िया। ६ सदाचारी। सद्भावयुक्त। गुणवान्।

सुरभिकंदर—संज्ञा पु० [सं० सुरभिकन्दर] एक पर्वत का नाम।

सुरभिकांता—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरभिकान्ता] वासंती पुष्प वृक्ष। नेवारी।

सुरभिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्ण कदली। सोना केला।

सुरभिगंध[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुरभिगन्ध] तेजपत्ता।

सुरभिगंध[2]—वि० सुगंधित। सुवासित। खुशबूदार।

सुरभिगंधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] चमेली।

सुरभिगंधि—वि० [सं० सुरभिगन्धि] सुगंधियुक्त (को०)।

सुरभिगंधी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरभिगन्धी] सुगंधित वस्तु।

सुरभिगोत्र—संज्ञा पु० [सं०] गाय बैलों का झुंड। पशुसमूह (को०)।

सुरभिघृत—संज्ञा पु० [सं०] अच्छी तरह तपाया हुआ सुगंधित घी। गोघृत (को०)।

सुरभिचूर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] सुवासित बुकनी या चूरा।

सुरभिच्छद—संज्ञा पु० [सं०] १ कैथ। कपित्थ। २ सुगंधित जबूफल।

सुरभित—वि० [सं०] १ सुगंधित। सुवासित। २ विख्यात। प्रसिद्ध। मशहूर (को०)।

सुरभितनय—संज्ञा पु० [सं०] बैल। साँड़।

सुरभितनया—संज्ञा स्त्री० [सं०] गाय।

सुरभिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुरभि का भाव। २ सुगंधि। खुशबू।

सुरभित्रिफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] जायफल, सुपारी और लौंग इन तीनों का समूह।

सुरभित्वक्—संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ी इलायची।

सुरभिदारु—संज्ञा पु० [सं०] धूप सरल।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यह सरल, कटु, तिक्त, उष्ण तथा कफ, वात, त्वचा रोग, सूजन और व्रण का नाशक है। यह कोठे को भी साफ करता है।

सुरभिदारुक—संज्ञा पु० [सं०] सरलवृक्ष। विशेष दे० 'सुरभिदारु'।

सुरभिपत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] राजजंबू वृक्ष। गुलाब जामुन। विशेष दे० 'गुलाब जामुन'।

सुरभिपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ साँड़। २ बैल।

सुरभिबाण—संज्ञा पु० [सं०] कामदेव (को०)।

सुरभिमंजरी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरभिमञ्जरी] श्वेत तुलसी।

सुरभिमान्[1]—वि० [सं० सुरभिमत्] सुगंधित। सुवासित।

सुरभिमान्[2]—संज्ञा पुं० अग्नि।

सुरभिमास—संज्ञा पुं० [सं०] चैत्र मास। चैत का महीना।

सुरभिमुख—संज्ञा पु० [सं०] वसंत ऋतु का आरंभ।

सुरभिवल्कल—संज्ञा पुं० [सं०] दालचीनी। गुडत्वक्।

सुरभिवाण—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव का एक नाम।

सुरभिशाक—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का सुगंधित शाक।

सुरभिषक्—संज्ञा पु० [सं०] देवताओं के वैद्य, अश्विनीकुमार।

सुरभिसमय—संज्ञा पुं० [सं०] वसतकाल।

सुरभिस्रग्धर—वि० [सं०] सुगधित माला धारण करनेवाला।

सुरभिस्रवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शल्लकी। सलई।

सुरभी¹—संज्ञा स्त्री० [सं० सुर + भी (= भय)] देवताओं का डर या भय। आधिदैविक भीति [को०]।

सुरभी²—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुगंधि। खुशबू। २ गाय। ३ सलई। शल्लकी। ४ किवाँछ। कौंच। कपिकच्छु। ५ बबई तुलसी। ६ रुद्रजटा। शकर जटा। ७ एलुवा। एलवालुक। ८ मात्रिका शाक। पोइया। ९ सुगधित शालिधान्य। १० मुरामासी। एकागी। ११ रासन। रास्ना। १२ चदन।

सुरभीगंध—संज्ञा पुं० [सं० सुरभीगन्ध] तेजपत्ता [को०]।

सुरभीगोत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ बैल। २ साँड।

सुरभीपट्टन—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन नगर।

सुरभीपत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] राजजंबू। दे० 'सुरभिपत्रा' [को०]।

सुरभीपुर—संज्ञा पुं० [सं०] गोलोक। उ०—अज विष्णु अनादि मुकुंद प्रभो। सुरभीपुर नायक विश्व विभो।—गिरिधर (शब्द०)।

सुरभीमूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] गोमूत्र। गोमूत।

सुरभीरसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सलई। शल्लकी।

सुरभीरुह—संज्ञा पुं० [सं०] देवदारु का वृक्ष [को०]।

सुरभूप¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। २ विष्णु। उ०—सुनि वचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।—तुलसी (शब्द०)।

सुरभूय—संज्ञा पुं० [सं०] किसी देवता के साथ एकाकार होना। देवत्व या देवलीनता की प्राप्ति होना [को०]।

सुरभूरुह—संज्ञा पुं० [सं०] देवतरु। कल्पतरु। २ देवदारु का वृक्ष। देवदार।

सुरभूषण—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के पहनने का मोतियों का हार जो चार हाथ लंबा होता है और जिसमें १,००८ दाने होते हैं।

सुरभोग—संज्ञा पुं० [सं०] अमृत। उ०—सोम सुधा पीयूष मधु अगदकार सुरभोग। अमी अमृत जहँ हरि कथा मते रहत सब लोग।—नंददास (शब्द०)।

सुरभौन—संज्ञा पुं० [सं० सुरभवन] दे० 'सुरभवन'।

सुरमंडल—संज्ञा पुं० [सं० सुरमण्डल] १ देवताओं का मंडल। २ एक प्रकार का बाजा। इसमें एक तख्ते में तार जड़े होते हैं। इसे जमीन पर रखकर मिजराब से बजाते हैं।

सुरमंडलिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरमण्डलिका] दे० 'सुरखंडनिका'।

सुरमंत्री—संज्ञा पुं० [सं० सुरमन्त्रिन्] देवगुरु बृहस्पति।

सुरमंदिर—संज्ञा पुं० [सं० सुरमन्दिर] देवताओं का स्थान। मंदिर। देवालय।

सुरमई¹—वि० [फा०] सुरमे के रंग का। हलका नीला। सफेदी लिए नीला या काला।

सुरमई²—संज्ञा पुं० १ एक प्रकार का रंग जो सुरमे के रंग से मिलता जुलता या हलका नीला होता है। २ इस रंग में रँगा हुआ एक प्रकार का कपड़ा जो प्राय अस्तर आदि के काम में आता है। ३ इस रंग का कबूतर।

सुरमई³—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की चिड़िया जो बहुत काली होती है तथा जिसकी गरदन हरे रंग की और चमकदार होती है।

सुरमईकलम—संज्ञा स्त्री० [फा०] सुरमा लगाने की सलाई। सुरमचू।

सुरमचू—संज्ञा पुं० [फा० सुरमह् + चू (प्रत्य०)] सुरमा लगाने की सलाई।

सुरमणि—संज्ञा पुं० [सं०] चिंतामणि। उ०—लोयन नील सरोज से भूपर मसि बिंदु बिराज। जनु बिधु मुखछवि अमिय को रच्छक राख्यो रसराज।—तुलसी (शब्द०)।

सुरमण्य—वि० [सं०] बहुत अधिक रमणीय। बहुत सुंदर।

सुरमनि—संज्ञा पुं० [सं० सुरमणि] चिंतामणि। कौस्तुभमणि। उ०—परिहरि सुरमुनि सुनाम गुंजा लखि लटत।—तुलसी ग्रं०, पृ० १२६।

सुरमा¹—संज्ञा पुं० [फा० सुरमह्] एक प्रकार का प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जो प्राय नीले रंग का होता है और जिसका महीन चूर्ण स्त्रियाँ आँखों में लगाती हैं।

विशेष—यह फारस में लहौल, पंजाब में झेलम तथा बरमा में टेनासारिम नामक स्थान पर पाया जाता है। यह बहुत भारी, चमकीला और भुरभुरा होता है। इसका व्यवहार कुछ ओषधों और कुछ धातुओं को दृढ़ करने में होता है। प्राय छापे के सीसे के अक्षरों में उन्हें मजबूत करने के लिये इसका मेल दिया जाता है। आजकल बाजारों में जो सुरमा मिलता है, वह प्राय काबुल और बुखारे के गलोना नामक धातु का चूर्ण होता है।

यौ०—सुरमा सुलेमानी = सुलेमान का सुरमा। वह सुरमा जिसे लगाने पर निधियाँ दिखाई पड़े। सुरमे का डोरा = आँखों में लगी हुई सुरमे की रेखा। सुरमे की कलम = पेंसिल।

२ आँखों में लगाने की सूखी और पीसी हुई दवा। रसांजन (को०)।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

यौ०—सफेद सुरमा = दे० 'सुरमा सफेद'।

सुरमा²—वि० अत्यंत बारीक पीसा हुआ।

सुरमा³—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी। वि० दे० 'सूरमा'।

सुरमा⁴—संज्ञा स्त्री० एक नदी जो आसाम के सिलहट जिले में बहती है।

सुरमाकश—संज्ञा पुं० [फा०] १ वह जो सुरमा लगाता हो। सुरमा लगानेवाला। २ सुरमा लगाने की सलाई।

सुरमादान—संज्ञा पुं० [फा०] दे० 'सुरमादानी'।

**सुरमादानी**—संज्ञा स्त्री॰ [फा॰ सुरमह् + दान (प्रत्य॰)] लकडी या धातु का शीशीनुमा पात्र जिसमे सुरमा रखा जाता है।

**सुरमानी**—वि॰ [स॰ सुरमानिन्] अपने को देवता समझनेवाला।

**सुरमा सुफेद**—संज्ञा पु॰ [फा॰] १ एक प्रकार का खनिज पदार्थ जो 'जिपसम' नाम से प्रसिद्ध है।

विशेष—इसका रग पीलापन लिए सफेद होता है। इससे 'पेरिस प्लास्टर' बनाया जा सकता है जिससे एलक्ट्रो टाइप और रबड की मोहर के साँचे बनाए जाते हैं। यह मुख्यत शीशे और धातु की चीजें जोडने के काम मे आता है।

२ एक खनिज पदार्थ जो फिटकरी के समान होता है और काबुल के पहाडो पर पाया जाता है। आँखो की जलन, प्रमेह, आदि रोगो मे इसका प्रयोग होता है।

**सुरमृत्तिका**—संज्ञा स्त्री॰ [स॰] गोपीचदन। सौराष्ट्रमृत्तिका।

**सुरमेदा**—संज्ञा स्त्री॰ [स॰] महामेदा।

**सुरमै**(पु)—वि॰ [फा॰ सुरमई] दे॰ 'सुरमई'।

**सुरमौर**(पु)—संज्ञा पु॰ [स॰ सुर + हिं॰ मौर] विष्णु। उ॰—जाके विलोकत लोकप होत विसोक लहैं सुरलोक सुठौरहि। सो कमला तजि चचलता अरु कोटि कला रिझवै सुरमौरहि।—तुलसी (शब्द॰)।

**सुरम्य**—वि॰ [स॰] अत्यत मनोरम। अत्यत रमणीय। बहुत सुदर।

**सुरया**—संज्ञा स्त्री॰ [देश॰] एक प्रकार की दाँती जो झाडी काटने के काम मे आती है।

**सुरयान**—संज्ञा पुं॰ [स॰] देवताओ की सवारी का रथ।

**सुरयुवती**—संज्ञा स्त्री॰ [स॰ सुरयुवति] अप्सरा।

**सुरयोषा, सुरयोषित्**—संज्ञा स्त्री॰ [स॰] अप्सरा।

**सुरराई**(पु)—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सुरराज] १ इद्र। २ विष्णु। उ॰—रानी ते बूझेउ सुरराई। माँगी जो कुछ वाको भाई। रमानाथ नारी ते भाषा। माँगहू वर जो मन अभिलाषा।—विश्राम (शब्द॰)।

**सुरराज्, सुरराज, सुरराट्**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] इद्र।

यौ॰—सुरराज शरासन = इद्रधनुष।

**सुरराजगुरु**—संज्ञा पुं॰ [स॰] बृहस्पति।

**सुरराजता**—संज्ञा स्त्री॰ [स॰] सुरराज होने का भाव या पद। इद्रत्व। इद्रपद।

**सुरराजमत्री**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सुरराजमन्त्रिन] दे॰ 'सुरराजगुरु'।

**सुरराजवस्ति**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] पिडली। इद्रवस्ति।

**सुरराजवृक्ष**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] पारिजात तरु। परजाता।

**सुरराजा**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सुरराजन्] इद्र।

**सुररास**(पु)—संज्ञा पु॰ [सं॰ सुरराज, प्रा॰ सुरराय] दे॰ 'सुरराज'।

**सुरराव**(पु)—संज्ञा पु॰ [स॰ सुरराज, प्रा॰ सुरराय] दे॰ 'सुरराज'। उ॰—नल कृत पुल लखि सिंधु मे भए चकित सुरराव।—पद्माकर (शब्द॰)।

**सुररिपु**—संज्ञा पुं॰ [स॰] देवताओ के शत्रु, असुर। राक्षस।

**सुररूख, सुररूप**(पु)—संज्ञा पुं॰ [स॰ सुर + हिं॰ रूख (=वृक्ष)] कल्पवृक्ष। उ॰—(क) नव पल्लव फल सुमन सुहाए। निज सपति सुररुख लजाए।—मानस, १।२२७। (ख) राम नाम सज्जन सुररूपा। राम नाम कलि मृतक पियूषा।—रघुराज (शब्द॰)।

**सुरर्षभ**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. देवताओं मे श्रेष्ठ, इद्र। २ शिव। महादेव।

**सुरर्षि**—संज्ञा पु॰ [सं॰ सुर + ऋषि] देवऋषि। देवर्षि।

**सुरलता**—संज्ञा स्त्री॰ [स॰] बडी मालकगनी। महाज्योतिष्मती लता।

**सुरललना**—संज्ञा स्त्री॰ [स॰] देवबाला। देवागना।

**सुरला**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ गगा। २ एक नदी का नाम।

**सुरलासिका**—संज्ञा स्त्री॰ [स॰] १ वशी। २ वशी की ध्वनि।

**सुरली**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ सु + हिं॰ रली] सुदर क्रीडा। उ॰—अखि सु उदर रोमावली अली चली यह बात। नाग लली सुरली करै मन त्रिवली के पात।—शृगार सतसई (शब्द॰)।

**सुरलोक**—संज्ञा पु॰ [सं॰] स्वर्ग। देवलोक।

यौ॰—सुरलोकराज्य = देवलोक का राज्य।

**सुरलोक सुदरी**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ सुरलोक सुन्दरी] १ अप्सरा। देवागना। २ दुर्गा का एक नाम [को॰]।

**सुरवधू**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] देवताओ की पत्नी। देवागना।

**सुरवर**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] देवताओ मे श्रेष्ठ, इद्र।

**सुरवर्त्म**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सुरवर्त्मन्] देवताओ का मार्ग। आकाश।

**सुरवल्लभा**—संज्ञा स्त्री॰ [स॰] श्वेत दूर्वा। सफेद दूब।

**सुरवल्ली**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] तुलसी।

**सुरवस**—संज्ञा पुं॰ [देश॰] जुलाहो की वह पतली हलकी छडी, पतला बाँस या सरकडा जिसका व्यवहार ताना तैयार करने मे होता है।

विशेष—ताना तैयार करने के लिये जो लकडियाँ जमीन मे गाडी जाती है, उनमे से दोनो सिरो पर रहनेवाली लकडियाँ तो मोटी और मजबूत होती हैं जिन्हे 'पारिया' कहते हैं, और इनके बीच मे थोडी थोडी दूर पर जो चार चार पतली लकडियाँ एक साथ गाडी जाती है, वे 'सुरवस' या 'सुरस' कहलाती है।

**सुरवा¹**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ श्रुवस्] छोटी करछी के आकार का लकडी का बना हुआ एक प्रकार का पात्र जिससे हवन आदि मे घी की आहुति देते है। श्रुवा।

**सुरवा²**—संज्ञा पुं॰ [फा॰ शोरबा] दे॰ 'शोरवा'।

**सुरवाडी**—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ सूअर + वाडी (प्रत्य॰)] सूअरो के रहने का स्थान। सूअरबाडा।

**सुरवाणी**—संज्ञा स्त्री॰ [स॰] देववाणी। सस्कृत भाषा।

**सुरवाल¹**—संज्ञा पु॰ [फा॰ शलवार] पायजामा। पैजामा।

**सुरवाल²**—संज्ञा पु॰ [देश॰] सेहरा।

सुरवास—संज्ञा पुं० [सं०] देवस्थान । स्वर्ग ।

सुरवाहिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा ।

सुरविटप—संज्ञा पुं० [सं०] कल्पवृक्ष ।

सुरविद्विष्—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुरवैरी' ।

सुरविलासिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्सरा [को०] ।

सुरवीथी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नक्षत्रों का मार्ग ।

सुरवीर—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र । उ०—गने पदाती वीर सब अरिघाती रनधीर । दोउ आँखैं राती किए लखि मोहे सुरवीर ।—गि० दास (शब्द०) ।

सुरवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] कल्पतरु ।

सुरवेला—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदी का नाम ।

सुरवेश्म—संज्ञा पुं० [सं० सुरवेश्मन्] स्वर्ग । देवलोक ।

सुरवैद्य—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के वैद्य, अश्विनीकुमार ।

सुरवैरी—संज्ञा पुं० [सं० सुरवैरिन्] देवताओं के शत्रु, असुर ।

सुरशत्रु—संज्ञा पुं० [सं०] असुर ।

सुरशत्रुहन्—संज्ञा पुं० [सं०] असुरों का नाश करनेवाले, शिव ।

सुरशयनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] आषाढ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी । विष्णुशयनी एकादशी ।

सुरशाखी—संज्ञा पुं० [सं० सुरशाखिन] कल्पवृक्ष ।

सुरशिल्पी—संज्ञा पुं० [सं० सुरशिल्पिन्] विश्वकर्मा ।

सुरश्रेष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो देवताओं मे श्रेष्ठ हो । २ विष्णु । ३ शिव । ४ गणेश । ५ धर्म । ६ इंद्र ।

सुरश्रेष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्राह्मी ।

सुरश्वेता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक जाति की श्वेत छिपकली । वम्हनी ।

सुरसंघ—संज्ञा पुं० [सं० सुरसङ्घ] देववर्ग । देवसमूह ।

सुरसत(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सरस्वती] दे० 'सरस्वती' ।

सुरसंभवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हुरहुर । आदित्यभक्ता ।

सुरस¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. वोल । हीरा बोल । वर्वर रस । २ दालचीनी । गुडत्वक् । ३ तेजपत्ता । तेजपत्र । ४ रूसा घास । गंधतृण । ५ तुलसी । ६ सँभालू । सिंधुवार । ७ शाल्मली वृक्ष का निर्यास । मोचरस । ८ पीतशाल । ९ एक असुर नाग (को०) । १० धूना । राल (को०) ।

सुरस²—वि० १ सरस । रसीला । २ स्वादिष्ट । मधुर । ३ सुंदर । उ०—हरि श्याम घन तन परम सुंदर तडित वसन विराजई । अँग अंग भूषण सुरस शशि पूरणकला जनु भ्राजई ।—सूर (शब्द०) ।

सुरस³—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सुरवस' ।

सुरसख—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवताओं के सखा इंद्र । २ गंधर्व ।

सुरसत(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सरस्वती] सरस्वती । (डिं०) ।

सुरसतजनक—संज्ञा पुं० [सं० सरस्वती + जनक] ब्रह्मा । (डिं०) ।

सुरसती(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सरस्वती] १ सरस्वती । उ०—उर उरवी सुरसरि सुरसती जमुना मिलहिं प्रयाग जिमि ।—गि० दास (शब्द०) । २ एक प्रकार की नाव ।

विशेष—यह नाव तीस हाथ लंबी होती है और इसका आगा तथा पीछा आठ आठ हाथ चौडा होता है । इस नाव के पेंदे मे एक कुंड बना रहता है जिसमे उतरकर लोग स्नान कर सकते है ।

सुरसत्तम—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं मे श्रेष्ठ, विष्णु ।

सुरसदन—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के रहने का स्थान, स्वर्ग ।

सुरसद्म—संज्ञा पुं० [सं० सुरसद्मन्] स्वर्ग ।

सुरसमिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवमंडली । देवसभा [को०] ।

सुरसंघ—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवदारु ।

सुरसर¹—संज्ञा पुं० [सं० सुर + सर] मानसरोवर । उ०—सुरसर सुभग वनज वन चारी । डावर जोग कि हंसकुमारी ।—तुलसी (शब्द०) ।

सुरसर²—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरसरित्] दे० 'सुरसरि' ।

सुरसरसुता(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरयू नदी । उ०—तुलसी उर सुरसरसुता लसत सुथल अनुमानि ।—तुलसी (शब्द०) ।

सुरसरि¹—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरसरित्] १. गंगा । उ०—सुरसरि जब भुव ऊपर आवै । उनको अपनो जल परसावै ।—सूर (शब्द०) । २ गोदावरी नदी । उ०—सुरसरि ते आगे चले मिलिहैं कपि सुग्रीव । देहैं सीता की खबरि बाढै सुख अति जीव ।—केशव (शब्द०) ।

सुरसरि²—संज्ञा स्त्री० १ कावेरी नदी । (डिं०) । २ दे० 'सुरसुरी' ।

सुरसरित्—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा ।

यौ०—सुरसरित्सुत = भीष्म ।

सुरसरिता—संज्ञा स्त्री० [सं० सुर + सरिता] दे० 'सुरसरित्' । उ०—मानहुँ सुरसरिता विमल, जल उछलत जुग मीन ।—विहारी (शब्द०) ।

सुरसरी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरसरित] दे० 'सुरसरि' ।

सुरसर्षपक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की सरसो । देवसर्षपक ।

सुरसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रसिद्ध नागमाता जो समुद्र मे रहती थी और जिसने हनुमान् जी को समुद्र पार करने के समय रोका था ।

विशेष—जिस समय हनुमान् जी सीता जी की खोज मे लंका जा रहे थे, उस समय देवताओं ने सुरसा से, जो समुद्र मे रहती थी, कहा कि तुम विकराल राक्षस का रूप धारण कर उनको रोको । इससे उनकी बुद्धि और बल का पता लग जायगा । तदनुसार सुरसा ने विकराल रूप धारण कर हनुमान् जी को रोककर कहा कि मैं तुम्हे खाऊँगी । यह कहकर उसने मुँह फैलाया । हनुमान् जी ने उससे कहा कि जानकी जी की खबर राम जी को देकर मैं तुम्हारे पास आऊँगा । सुरसा ने कहा ऐसा नहीं हो सकता । पहले तुम्हें मेरे मुँह मे प्रवेश करना होगा, क्योंकि मुझे ऐसा वर मिला है कि सबको मेरे मुँह मे प्रवेश करना पडेगा । यह कह वह मुँह फैलाकर हनुमान् जी के सामने आई । हनुमान् जी ने अपना शरीर उससे भी अधिक बढाया । ज्यो ज्यो

सुरसा अपना मुँह बढ़ाती गई, त्यों त्यों हनुमान् जी भी अपना शरीर बढ़ाते गए। अंत में हनुमान् जी ने बहुत छोटा रूप धारण करके उसके मुँह में प्रवेश किया और बाहर निकल कर कहा देवि, अब तो तुम्हारा वर सफल हो गया। इसपर सुरसा ने हनुमान् जी को आशीर्वाद दिया और उनकी सफलता की कामना की। (रामायण)।

२ एक अप्सरा का नाम। ३ एक राक्षसी का नाम। ४ तुलसी। ५ रासन। रास्ना। ६ सौंफ। मिश्रेया। ७ ब्राह्मी। ८ बड़ी सतावर। सतावर। ९ जूही। श्वेत यूथिका। १० सफेद निसोथ। श्वेत त्रिवृत्ता। ११ सलई। शल्लकी। १२ नील सिंधुवार। निर्गुंडी। १३ कटाई। वनभंटा। बृहती। वार्ताकी। १४ भटकटैया। कटेरी। कटकारी। १५ एक प्रकार की रागिनी। १६ दुर्गा का एक नाम। १७ रुद्राश्व की एक पुत्री का नाम। १८ पुराणानुसार एक नदी का नाम। १९ अंकुश के नीचे का नुकीला भाग। २० बोल नामक एक गंधद्रव्य (को०)। २१ एक वृत्त का नाम।

सुरसाईं(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुर + हिं० साईं ( = स्वामी)] १ इंद्र। उ०—आपु लसै जैसे सुरसाईं। सब नरेश जनु सुर समुदाई। —सबलसिंह (शब्द०)। २ शिव। उ०—सब विद्या के ईश गुसाईं। चरण वंदि विनवों सुरसाईं।—शंकरदिग्विजय (शब्द०)। ३ विष्णु। उ०—बोले मधुर वचन सुरसाईं। मुनि कहँ चले विकल की नाईं। तुलसी (शब्द०)।

सुरसाग्र—संज्ञा पुं० [सं०] सम्हालू की मंजरी। सिंधुवार मंजरी।

सुरसाग्रज—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत तुलसी।

सुरसाग्रणी—संज्ञा पुं० दे० 'सुरसाग्रज'।

सुरसाच्छद—संज्ञा पुं० [सं०] सुरसा का पत्ता। श्वेत तुलसी का पत्र (को०)।

सुरसादिवर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में कुछ विशिष्ट ओषधियों का एक वर्ग।

विशेष—इस वर्ग में तुलसी (सुरसा), श्वेत तुलसी, गंधतृण, गंधेज घास (भुस्तृण), काली तुलसी, कसौंधी (कासमर्द), लटजीरा (अपामार्ग), वायविडंग (विडंग), कायफल (कट-फल), सम्हालू (निर्गुंडी), ब्रम्हनेटी (भारंगी), मकोय (काकमाची), बकायन (विषमुष्टिक), मूसाकानी (मूषाकर्णी), नीला सम्हालू (नील सिंधुवार), भुईं कदंब (भूमि कदंब), नाम की ओषधियाँ आती हैं। वैद्यक के अनुसार यह प्रयोग कफ, कृमि, सर्दी, अरुचि, श्वास, खाँसी आदि का नाश करने-वाला और व्रणशोधक है।

इसी नाम से सुश्रुत में एक दूसरा वर्ग भी है जो इस प्रकार है—सफेद तुलसी, काली तुलसी, छोटे पत्तोंवाली तुलसी, बबई (बबरी), मूसाकानी, कायफल, कसौंधी, नकछिकनी(छिकनी), सम्हालू, भारंगी, भुईंकदंब, गंधतृण, नीला सम्हालू, मीठी नीम(कैडर्य), और अतिमुक्तलता (माल्ती लता)।

सुरसारी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरसरित्] दे० 'सुरसरी'।

सुरसाल, सुरसालु(पु)—वि० [सं० सुर + हिं० सालना] देवताओं को सतानेवाला। उ०—राम नाम नर केसरी कनककसिपु कलि कालु। जापक जन प्रहलाद जिमि पालिहि दलि सुरसालु। —तुलसी (शब्द०)।

सुरसाष्ट—संज्ञा पुं० [सं० सुरस + अष्ट] सम्हालू, तुलसी, ब्राह्मी, वन-भंटा, कटकारी और पुनर्नवा इन सबका समूह।

सुरसाहिब(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुर + फा० साहब] देवताओं के स्वामी। दे० 'सुरसाईं'। उ०—ब्रह्म जो व्यापक वेद कहैं गम नाहीं गिरा गुन ज्ञान गुनी को। जो करता, भरता, हरता सुरसाहिब साहिब दीन दुनी को।—तुलसी (शब्द०)।

सुरसिंधु—संज्ञा पुं० [सं० सुरसिन्धु] गंगा।

सुरसुंदर[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुरसुन्दर] १ सुंदर देवता। २ कामदेव।

सुरसुंदर[2]—वि० देवता के समान सुंदर। अत्यंत सुंदर।

सुरसुंदरी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरसुन्दरी] १ अप्सरा, उ०—सुरसुंदरी करहिं कल गाना। सुनत श्रवन छूटहिं मुनि ध्याना। —मानस, १।६१। २ दुर्गा। ३ देवकन्या। ४ एक योगिनी का नाम।

सुरसुंदरी गुटिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरसुन्दरी गुटिका] वैद्यक के अनु-सार वाजीकरण या बलवीर्य बढ़ाने की एक ओषधि।

विशेष—यह ओषधि अभ्रक, स्वर्णमाक्षिक, हीरा, स्वर्ण और पारे को सम भाग में लेकर हिज्जल (समुद्रफल) के रस में घोटकर पुटपाक के द्वारा प्रस्तुत की जाती है।

सुरसुत—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सुरसुता] देवपुत्र।

सुरसुरभी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुर + सुरभी] देवताओं की गाय। काम-धेनु। उ०—मुख ससि सरगर अधिक वचन श्री अमृत जैसी। सुरसुरभी सुरवृच्छ देनि करतल मँह वैसी।—गि० दास (शब्द०)।

सुरसुराना—क्रि० अ० [अनु०] १ कीड़ों आदि का रेंगना। २ खुजली होना।

सुरसुराहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुरसुराना + आहट (प्रत्य०)] १ सुर-सुर होने का भाव। २ खुजलाहट। ३ गुदगुदी।

सुरसुरी(पु)[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरसरित्] गंगा। सुरसरी।

सुरसुरी[2]—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ दे० 'सुरसुराहट'। २ एक प्रकार का कीड़ा जो चावल, गेहूँ आदि में होता है। ३ एक प्रकार की आतिशबाजी जिसे छछूँदर भी कहते हैं। ४ एक प्रकार का कीड़ा जिसके शरीर पर रेंगने से खुजली और जलन पैदा होती है।

सुरसेनप—संज्ञा पुं० [सं० सुर + सेनापति] देवताओं के सेनापति कार्तिकेय। उ०—सुरसेनप उर बहुत उछाहू। विधि ते डेवढ़ लोचन लाहू।—मानस, १।३१७।

सुरसेना—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवताओं की सेना।

सुरसैंया(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुर + हिं० सैंयाँ(स्वामी)] इंद्र। दे० 'सुरसाईं'। उ०—तुलसी बात केलि मुख निरखत बरषत सुमन सहित सुरसैंयाँ।—तुलसी (शब्द०)।

सुरसैनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरशयनी] विष्णुशयनी। दे० 'सुरशयनी'।

सुरस्कंध—संज्ञा पुं० [सं० सुरस्कन्ध] एक असुर का नाम।

सुरस्त्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्सरा। दे० 'सुरसुंदरी'।

सुरस्त्रीश—संज्ञा पुं० [सं०] अप्सराओं के स्वामी इंद्र।

सुरस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के रहने का स्थान। स्वर्ग। सुरलोक।

सुरस्रवंती—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरस्रवन्ती] आकाशगंगा।

सुरस्रोतस्विनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा।

सुरस्वामी—संज्ञा पुं० [सं० सुरस्वामिन्] देवताओं के स्वामी, इंद्र। दे० 'सुरसाईं'।

सुरहना(पु)—क्रि० अ० [?] घाव का सूखना। जख्म भरना।

सुरहरा—वि० [अनु०] जिसमें सुरसुर शब्द हो। सुरसुर शब्द से युक्त। उ०—फेरि दृग फीके मुख लेति फुरहरी देव साँसैं सुरहरी भुज चुरी भहरैबे की।—देव (शब्द०)।

सुरहित¹—संज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'सुरही'।

सुरहित²—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं का कल्याण।

सुरही¹—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोलह + ई (= सोरही)] १ एक प्रकार की सोलह चित्तीकौड़ियाँ जिनसे जूआ खेलते हैं। २ सोलह चित्ती कौड़ियों से होनेवाला जूआ।

विशेष—इस जूए में कौड़ियाँ मुट्ठी में उठाकर जमीन पर फेंकी जाती है और उनकी चित्त पट की गिनती से हार जीत होती है। प्राय बड़े जुआरी लोग इसी से जुआ खेलते हैं।

सुरही²—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरभी] १ चमरी गाय। २ गौ। गाय। एक प्रकार की घास जो पड़ती जमीन में होती है।

सुरहुरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुरसुरी ?] १ श्वासनलिका में अन्न के टुकड़े, जल आदि का चढ़ जाना। २. उससे होनेवाली एक प्रकार की पीड़ा या वेदना।

सुरहोनी—संज्ञा पुं० [कर्ना० सुरुहोनेय] पुन्नाग जाति का एक पेड़ जो पश्चिमी घाट में होता है। यह प्राय डेढ़ सौ फुट तक ऊँचा होता है।

सुरांगना—संज्ञा स्त्री० [सं० सुराङ्गना] १ देवपत्नी। देवांगना। २ अप्सरा।

सुरांत—संज्ञा पुं० [सं० सुरान्त] एक राक्षस का नाम।

सुरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मद्य। मदिरा। वारुणी। शराब। दारू। विशेष दे० 'मदिरा'। २ जल। पानी। ३ पीने का पात्र। ४ सर्प। ५. सोम (को०)।

सुराई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शूर+आई (प्रत्य०)] शूरता। वीरता। बहादुरी। उ०—सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरे कुल इन्ह पर न सुराई।—तुलसी (शब्द०)।

सुराकर—संज्ञा पुं० [सं०] १. भट्ठी जहाँ शराब चुआई जाती है। २ नारियल का पेड़। नारिकेल वृक्ष।

सुराकर्म—संज्ञा पुं० [सं० सुराकर्मन्] वह यज्ञकर्म या संस्कार जो सुरा द्वारा किया जाता है।



सुराकार—संज्ञा पुं० [सं०] शराब चुआनेवाला। शराब बनानेवाला। शौंडिक। कलवार।

सुराकुंभ—संज्ञा पुं० [सं० सुराकुम्भ] वह पात्र या घड़ा जिसमें मद्य रखा जाता है। शराब रखने का घड़ा।

सुराख¹—संज्ञा पुं० [फा० सूराख] छेद। छिद्र।

सुराख²—संज्ञा पुं० [अ० सुराग] दे० 'सुराग'।

सुराग¹—संज्ञा पुं० [सं० सु + राग] १ गाढ़ प्रेम। अत्यंत प्रेम। अत्यंत अनुराग। उ०—मुनि बाजति बीन प्रवीन नवीन सुराग हिये उपजावति सी।—केशव (शब्द०)। २ सुंदर रंग या वर्ण। ३ सुंदर राग। उ०—गाय गोरी मोहनी सुराग बाँसुरी के बीच कानन सुहाय मारयन को सुनायगो।—दीनदयाल (शब्द०)।

सुराग²—संज्ञा पुं० [अ० सुराग] १ सूत्र। टोह। पता। २ खोज। तलाश (को०)। ३. पाँव का निशान। पदचिह्न (को०)। ४ लकीर। लीक (को०)। ५ वृक्ष। पेड़ (को०)।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।—लगना।—लगाना।

यौ०—सुरागरसाँ = (१) टोह या पता लेनेवाला। (२) भेदिया। गुप्तचर। सुरागरसी = अन्वेषण। तलाश। खोज। टोह।

सुरागाय—संज्ञा स्त्री० [सं० सुर + गाय] एक प्रकार की दोनस्ली गाय जिसकी पूँछ गुप्फेदार होती है और जिससे चँवर बनता है। चमरी गाय।

विशेष—यह एक प्रकार के जंगली साँड—जो तिब्बत और हिमालय में होते हैं और जिनके बाल लंबे और मुलायम होते हैं, और भारतीय गाय के संयोग से उत्पन्न है। यह प्राय पहाड़ों पर ही रहती है। मैदान की जलवायु इसके अनुकूल नहीं होती।

सुरागार संज्ञा पुं० [सं०] १ वह स्थान जहाँ मद्य बिकता हो। कलवरिया। शराबखाना। २ देवगृह।

सुरागी—संज्ञा पुं० [अ० सुराग] १ टोह लेनेवाला। २ मुखबिर। ३ इकबाली गवाह (को०)।

सुरागृह—संज्ञा पुं० [सं०] शराबखाना। सुरागार।

सुराग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] मद्य पीने का एक प्रकार का पात्र।

सुराग्र्य—संज्ञा पुं० [सं०] अमृत।

सुराघट—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुराकुंभ'।

सुराचार्य—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के आचार्य बृहस्पति।

सुराज(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुराज्य] १ दे० 'सुराज्य'। २ दे० 'स्वराज्य'।

सुराजक—संज्ञा पुं० [सं०] भृंगराज। भँगरा।

सुराजा¹(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुराजन्] उत्तम राजा। अच्छा राजा।

सुराजा²(पु)—संज्ञा पुं० दे० 'सुराज्य'।

सुराजिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] गृह गोधा। छिपकली।

सुराजी†—संज्ञा पुं० [सं० स्वराज्य, हिं० सुराज + ई] स्वराज्य की कामना करने एवं उसके लिये आंदोलन करनेवाला। भारतीय स्वतंत्रता के संघर्ष में भाग लेनेवाला।

सुराजीव—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

सुराजीवी—संज्ञा पुं० [सं० सुराजीविन्] शराब चुआने या बेचनेवाला। शौंडिक। कलवार।

सुराज्य[1]—संज्ञा पुं० [सं०] वह राज्य जिसमे प्रधानत शासितो के हित पर दृष्टि रखकर शासन कार्य किया जाता हो। वह राज्य या शासन जिसमे सुख और शाति विराजती हो। अच्छा और उत्तम राज्य।

सुराज्य[2]—संज्ञा पुं० [सं० स्वराज्य] दे० 'स्वराज्य'।

सुराहत—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ मद्य बिकता हो। शराबखाना। कलवरिया।

सुराहति—संज्ञा स्त्री० [सं०] चमडे का वह पात्र या कुप्पा जिसमे मदिरा रखी जाती है।

सुराथी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सु + रेतना] लकडी का वह डडा या लवेदा जिससे अनाज के दाने निकालने के लिये बाल आदि पीटते हैं।

सुराद्रि—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओ का पर्वत, सुमेरु।

सुराधम[1]—वि० [सं०] देवताओ मे निकृष्ट।

सुराधम[2]—संज्ञा पुं० निकृष्ट देवता।

सुराधर—संज्ञा पुं० [सं०] एक राक्षस।

सुराधा[1]—वि० [सं० सुराधस्] १ उत्तम दान देनेवाला। बहुत बडा दाता। उदार। २ धनी। अमीर।

सुराधा[2]—संज्ञा पुं० एक ऋषि का नाम।

सुराधानी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह कुभी या छोटा घडा जिसमे मदिरा रखी जाती है। शराब रखने की गगरी।

सुराधिप—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओ के स्वामी, इद्र।

सुराधीश—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुराधिप'।

सुराध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्मा। २ श्रीकृष्ण। ३ शिव।

सुराध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] मद्यपात्र का वह चिह्न जो प्राचीनकाल मे मद्यपान करनेवालो के मस्तक पर लोहे से दागकर किया जाता था।

विशेष—मनु ने मद्यपान की गणना चार महापातको मे की है, और कहा है कि राजा को उचित है कि मद्यपान करनेवाले के मस्तक पर मद्यपात्र का चिह्न लोहे से दागकर अंकित करा दे। यही चिह्न सुराध्वज कहलाता था।

सुरानक—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओ का नगाडा।

सुरानीक—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओ की सेना।

सुराप—वि० [सं०] १ सुरा या मद्यपान करनेवाला। मद्यप। शराबी। २ बुद्धिमान्। मनीषी। ३ आनदप्रद। सुखपूर्वक ग्राह्य (को०)।

सुरापगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवताओ की नदी। गगा।

सुरापाण, सुरापान—संज्ञा पुं० [सं०] १ मद्यपान करने की क्रिया। शराब पीना। २ मद्यपान करने के समय खाए जानेवाले चटपटे पदार्थ। चाट। अवदश।

सुरापात्र—संज्ञा पुं० [सं०] मदिरा रखने या पीने का पात्र।

सुरापाना—संज्ञा पुं० [सं० सुरापाना] पूर्व देश के लोग।

विशेष—सुरापान करने के कारण इस देश के लोगों का यह नाम पडा है।

सुरापी—वि० [सं०] १ दे० 'सुराप'। २ जिसके यहाँ शराबी लोग रहते हो (को०)।

सुरापीत—वि० [सं०] जिसने मदिरापान किया हो [को०]।

सुरापीथ—संज्ञा पुं० [सं०] सुरापान। मद्यपान। शराब पीना।

सुराप्रिय—वि० [सं०] जिसे मदिरा प्रिय हो [को०]।

सुराबलि—वि० [सं०] जिसे मदिरा अर्पण की जाय [को०]।

सुराबीज—संज्ञा पुं० [सं०] मद्य बनाने मे प्रयुक्त एक पदार्थ या तत्व। दे० 'सुरासार' [को०]।

सुराब्धि—संज्ञा पुं० [सं०] सुरा का समुद्र।

विशेष—पुराणो के अनुसार यह सात समुद्रो मे से तीसरा है। मार्कंडेयपुराण मे लिखा है कि लवणसमुद्र से दूना इक्षुसमुद्र और इक्षुसमुद्र से दूना सुरासमुद्र है।

सुराभाड—संज्ञा पुं० [सं० सुराभाण्ड] दे० 'सुरापात्र' [को०]।

सुराभाग—संज्ञा पुं० [सं०] शराब की माँड।

सुराभाजन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुरापात्र'।

सुरामड—संज्ञा पुं० [सं० सुरामण्ड] शराब की माँड।

सुरामत्त—वि० [सं०] शराब के नशे मे चूर। मदोन्मत्त। मतवाला।

सुरामद—संज्ञा पुं० [सं०] शराब का नशा [को०]।

सुरामुख—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसके मुँह मे शराब हो। २ एक नागासुर का नाम।

सुरामूल्य—संज्ञा पुं० [सं०] मदिरा का मूल्य। शराब का दाम [को०]।

सुरामेह—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार प्रमेह रोग का एक भेद।

विशेष—कहते हैं, इस रोग मे रोगी को शराब के रग का पेशाब होता है। पेशाब शीशी मे रखने मे नीचे गाढा और ऊपर पतला दिखलाई पडता है। पेशाब का रग मटमैला या लाली लिए होता है।

सुरामेही—वि० [सं० सुरामेहिन्] सुरामेह रोग से पीडित। जिसे सुरामेह रोग हुआ हो।

सुराय(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सु + हिं० राय (= राजा)] श्रेष्ठ नृपति। अच्छा राजा। उ०—बहु भाँति पूजि सुराय। कर जोरि कै परिपाय।—केशव (शब्द०)।

सुरायुध—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओ का अस्त्र।

सुरारणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवताओ की माता, अदिति।

सुरारि—संज्ञा पुं० [सं०] १ असुर। राक्षस। २ एक दैत्य का नाम। ३ झिल्ली की झनकार। टिड्डा या झींगुर का आह्लादक स्वर। को०।

सुरारिघ्न—संज्ञा पुं० [सं०] असुरो का नाश करनेवाले, विष्णु।

सुरारिहंता—संज्ञा पुं० [सं० सुरारिहन्तृ] असुरो का नाश करनेवाले, विष्णु।

सुरारिहन्—संज्ञा पुं० [सं०] असुरों का नाश करनेवाले, शिव।

सुरारी—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की बरसाती घास जो राजपूताने और बुंदेलखंड में होती है। यह चारे के लिये बहुत अच्छी समझी जाती है। इसे लव भी कहते हैं।

सुरार्चन—संज्ञा पुं० [सं०] देवार्चन। देवाराधन [को०]।

सुरार्चाविश्म—संज्ञा पुं० [सं० सुरार्चाविश्मन्] वह स्थान या मंदिर जहाँ अनेक देवताओं की प्रतिमा हो। देवकुल [को०]।

सुरार्दन—संज्ञा पुं० [सं०] सुरों या देवताओं को पीड़ा देनेवाले, राक्षस या असुर।

सुरार्ह—संज्ञा पुं० [सं०] १ हरिचंदन। २ स्वर्ण। सोना। ३ कुंकुमागरु चंदन।

सुरार्हक—संज्ञा पुं० [सं०] १ बर्बरक। बबई। २ वैजयंती। तुलसी।

सुराल¹—संज्ञा पुं० [सं०] धूना। राल।

सुराल²—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की लता जिसकी जड़ बिलाई-कंद कहलाती है। विशेष दे० 'घोड़ा बेल'।

सुरालय—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवताओं के रहने का स्थान। स्वर्ग। २. सुमेरु। ३ देवमंदिर। ४ वह स्थान जहाँ सुरा मिलती हो। शराबखाना। कलवरिया।

सुरालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सातला या सप्तला नाम की बेल जो जंगलों में होती है।

विशेष—इसके पत्ते खैर के पत्तों के समान छोटे छोटे होते हैं। इसका फल पीला होता है और इसमें एक प्रकार की पतली चिपटी फली लगती है। फली में काले बीज होते हैं जिसमें से पीले रंग का दूध निकलता है। वैद्यक के अनुसार यह लघु, तिक्त, कटु तथा कफ, पित्त, विस्फोट, व्रण और शोथ को नाश करनेवाली है।

सुराव—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का घोड़ा। २ उत्तम ध्वनि।

सुरावट—संज्ञा पुं० [सं० स्वरावर्त] १ स्वर का माधुर्य। २ स्वरों का उतार चढ़ाव या आरोह अवरोह।

सुरावती—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरावनि] कश्यप की पत्नी और देवताओं की माता, अदिति। उ०—विनतासुत खगनाथ चंद्र सोमावति केरे। सुरावती के सूर्य रहत जग जासु उजेरे।—विश्राम (शब्द०)।

सुरावनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवताओं की माता, अदिति। २ पृथिवी। भूमि। धरती।

सुरावारि—संज्ञा पुं० [सं०] सुरा का समुद्र। विशेष दे० 'सुराब्धि'।

सुरावास—संज्ञा पुं० [सं०] सुमेरु।

सुरावृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

सुराश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] सुमेरु।

सुराष्ट्र¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन देश का नाम जो भारत के पश्चिम में था। (किसी के मत से यह सूरत और किसी के मत से काठियावाड़ है)। २ राजा दशरथ के एक मंत्री का नाम।

सुराष्ट्र²—वि० जिसका राज्य अच्छा हो।

सुराष्ट्रज¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ गोपीचंदन। सौराष्ट्रमृत्तिका। २ काली मूँग। कृष्ण मुद्ग। ३ लाल कुलथी। रक्त कुलत्थ। ४. एक प्रकार का विष।

सुराष्ट्रज²—वि० सुराष्ट्र देश में उत्पन्न।

सुराष्ट्रजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गोपीचंदन।

सुराष्ट्रोद्भव—संज्ञा स्त्री० [सं०] फिटकरी।

सुरासंधान—संज्ञा पुं० [सं० सुरासन्धान] शराब चुआने की क्रिया।

सुरासमुद्र—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुराब्धि'।

सुरासव—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का आसव जो तीक्ष्ण, बलकारक, मूत्रवर्धक, कफ और वायुनाशक तथा मुख-प्रिय कहा गया है।

सुरासार—संज्ञा पुं० [सं०] मद्य का सार जो अंगूर या माड़ी के खमीर से बनता है। इसके बिना शराब नहीं बनती। इसी में नशा होता है।

सुरासुर—संज्ञा पुं० [सं०] सुर और असुर। देवता और दानव।

यौ०—सुरासुरगुरु। सुरासुरविमर्द = देवासुर संग्राम।

सुरासुरगुरु—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २ कश्यप।

सुरास्पद—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं का घर। देवगृह। मंदिर।

सुराही—संज्ञा स्त्री० [अ०] जल रखने का एक प्रकार का प्रसिद्ध पात्र जो प्रायः मिट्टी का और कभी कभी पीतल या जस्ते आदि धातुओं का भी बनता है।

विशेष—यह पात्र बिलकुल गोल हंडी के आकार का होता है, पर इसका मुँह ऊपर की ओर कुछ दूर तक निकला हुआ गोल नली के आकार का होता है। प्राय गरमी के दिनों में पानी ठंढा करने के लिये इसका उपयोग होता है। इसे कहीं कहीं कूज्जा भी कहते हैं।

यौ०—सुराहीदार। सुराहीनुमा = सुराही जैसा। सुराही के समान। कुज्जे के आकार का।

२ बाजू, जोशन या बरेखी के लटकते हुए सूत में घुंडी के ऊपर लगनेवाला सोने या चाँदी का सुराही के आकार का बना हुआ छोटा लंबोतरा टुकड़ा। ३ कपड़े की एक प्रकार की काट जो पान के आकार की होती है। इसमें मछली की दुम की तरह कुछ कपड़ा तिकोना लगा रहता है। (दर्जी)। ४ नैचे में सबसे ऊपर की ओर वह भाग जो सुराही के आकार का होता है और जिसपर चिलम रखी जाती है।

सुराहीदार—वि० [अ० सुराही + फा० दार] सुराही के आकार का। सुराही की तरह का गोल और लंबोतरा। जैसे,—सुराहीदार गरदन। सुराहीदार घुँघरू। सुराहीदार मोती।

सुराह्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. देवदारु। २ मरुआ। मरुवक। ३. हल-दुआ। हरिद्र।

सुराह्वय—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का पौधा। २ देवदारु।

सुरि—वि० [सं०] बहुत धनी। बड़ा अमीर।

सुरियँ—संज्ञा पुं० [सं० सुर] इंद्र। (डिं०)।

**सुरिय.खार**—संज्ञा पुं० [फा० शोरा + हिं० खार] शोरा ।

**सुरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवपत्नी । देवागना ।

**सुरीला**—वि० [हिं० सुर + ईला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सुरीली] मीठे सुरवाला । मधुर स्वरवाला । जिसका सुर मीठा हो । सुस्वर । सुकठ । जैसे—सुरीला गला, सुरीला बाजा, सुरीला गवैया, सुरीली तान ।

**सुरुग**—संज्ञा पुं० [सं० सुरुङ्ग] १ सहिंजन । शोभाजन वृक्ष । २ दे० 'सुरंग' ।

**सुरुगयुक्**—संज्ञा पुं० [सं० सुरुङ्गयुक्] दे० 'सुरंगयुक्' ।

**सुरुगा**—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरुङ्गा] दे० 'सुरग' ।

**सुरुगाहि**—संज्ञा पुं० [सं० सुरुङ्गाहि] सेंध लगानेवाला चोर । सेंधिया चोर ।

**सुरुदला**—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरुन्दला] एक प्राचीन नदी का नाम ।

**सुरुत्तम**—वि० [सं०] अच्छी तरह प्रकाशित । प्रदीप्त ।

**सुरुख¹**—वि० [सं० सु + फा० रुख (= प्रवृत्ति)] अनुकूल । सदय । प्रसन्न । उ०—सुरुख जानकी जानि कपि कहे सकल सकेत । —तुलसी (शब्द०) ।

**सुरुख²**—वि० [फा० सुर्ख] दे० 'सुर्ख ।' उ०—रच न देरि करहु सुरुख अब हरि हेरि परै न । विनय वचन मा सुनि भए सुरुख तरुनि के नैन ।—शृंगार सतसई (शब्द०) ।

**सुरुखुरू**—वि० [फा० सुर्खरू] जिसे किसी काम मे यश मिला हो । यशस्वी । उ०—अलहदाद भल तेहिकर गुरू । दीन दुनी रोसन सुरुखुरू ।—जायसी (शब्द०) ।

**सुरुच¹**—संज्ञा पुं० [सं०] उज्वल प्रकाश । अच्छी रोशनी ।

**सुरुच²**—वि० सुदर प्रकाशवाला ।

**सुरुचि¹**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ राजा उत्तानपाद की दो पत्नियो मे से एक जो उत्तम की माता थी । ध्रुव की विमाता । २ उत्तम रुचि । ३ सुदर दीप्ति । ४ अत्यत प्रसन्नता ।

**सुरुचि²**—वि० १ उत्तम रुचिवाला । जिसकी रुचि उत्तम हो । २ स्वाधीन । (डिं०) ।

**सुरुचि³**—संज्ञा पुं० १ एक गधर्व राजा का नाम । २. एक यक्ष का नाम ।

**सुरुचिर**—वि० [सं०] १ सुदर । दिव्य । मनोहर । २ उज्वल । प्रकाशमान् । दीप्तिशाली ।

**सुरुज¹**—वि० [सं०] बहुत बीमार । अस्वस्थ । रुग्ण ।

**सुरुज(पु)‡**—संज्ञा पुं० [सं० सूर्य] दे० 'सूर्य' । उ०—तहँ ही से सब ऊपजे चद सुरुज आकाश ।—दादू (शब्द०) ।

**सुरुजमुखी(पु)**—संज्ञा पु० [सं० सूर्यमुखी] दे० 'सूर्यमुखी' । उ०—विचरि चहूँ दिसि लखत हैं वर पूजैं वृजराज । चद्रमुखी को लखि सखी सुरुजमुखी सी आज ।—शृंगार सतसई (शब्द०) ।

**सुरुद्रि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] शतद्रु या वर्तमान सतलज नदी का एक नाम ।

**सुरुल**—संज्ञा पुं० [देश०] मूगफली पौधे का एक रोग ।

विशेष—मूँगफली के इस रोग में कुछ कीडो के खाने के कारण उसके पत्ते और डठल टेढ़े हो जाते हैं । इस पौधे मे यह रोग प्राय सभी जगहो मे होता है और इससे बडी हानि होती है ।

**सुरुवा¹**—संज्ञा पुं० [फा० शोरबा] दे० 'शोरवा' ।

**सुरुवा²**—संज्ञा पुं० [सं० स्रुवा] दे० 'सुरवा' ।

**सुरूप¹**—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुरूपा] १ सुदर रूपवाला । रूपवान् । खूबसूरत २ विद्वान् । बुद्धिमान् ।

**सुरूप²**—संज्ञा पुं० १ शिव का एक नाम । २ एक असुर का नाम । ३ कपास । तूल । ४ पलास पीपल । परिपाश्वत्य । ५ कुछ विशिष्ट देवता और व्यक्ति ।

विशेष—कामदेव, दोनो अश्विनीकुमार, नकुल, पुरुरवा, नलकूबर और शाब ये सुरूप कहलाते हैं ।

**सुरूप³**—संज्ञा पुं० [सं० स्वरूप] दे० 'स्वरूप'¹ । उ०—रूप सवाई दिन दिन चढा । विधि सुरूप जग ऊपर गढा ।—जायसी (शब्द०) ।

**सुरूपक**—वि० [सं०] दे० 'स्वरूप'² ।

**सुरूपता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुरूप होने का भाव । सुदरता । खूबसूरती ।

**सुरूपा¹**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सरिवन । शालपर्णी । २ वमनेठी । भारगी । ३ सेवती । वनमल्लिका । ४ बेला । वार्षिकी मल्लिका । ५ पुराणानुसार एक गौ का नाम । ६ एक नागकन्या और एक अप्सरा का नाम (को०) ।

**सुरूपा²**—वि० स्त्री० सुदर रूपवाली । सुदरी ।

**सुरूर**—संज्ञा पुं० [फा०] दे० 'सरूर' ।

मुहा०—दे० 'सरूर' के मुहा० ।

यौ०—सुरूर अगेज = हलका नशा लानेवाला । मादक ।

**सुरूहक**—संज्ञा पुं० [सं०] खच्चर । गर्दभाश्व ।

**सुरेंद्र**—संज्ञा पु० [सं० सुरेन्द्र] १ सुरराज । इद्र । २ लोकपाल । राजा । ३ विष्णु । उपेंद्र (को०) ।

**सुरेंद्रकद**—संज्ञा पुं० [सं० सुरेन्द्रकन्द] दे० 'सुरेंद्रक' ।

**सुरेंद्रक**—संज्ञा पुं० [सं० सुरेन्द्रक] कटु शूरण । काटनेवाला जमीकद । जगली ओल ।

**सुरेंद्रगोप**—संज्ञा पुं० [सं० सुरेन्द्रगोप] बीरबहूटी । इद्रगोप नामक कीडा ।

**सुरेंद्रचाप**—संज्ञा पुं० [सं० सुरेन्द्रचाप] इद्रधनुष ।

**सुरेंद्रजित्**—संज्ञा पुं० [सं० सुरेन्द्रजित्] इद्र को जीतनेवाला, गरुड ।

**सुरेंद्रता**—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरेन्द्रता] सुरेंद्र होने का भाव या धर्म । इद्रत्व ।

**सुरेंद्रपूज्य**—संज्ञा पुं० [सं० सुरेन्द्रपूज्य] वृहस्पति ।

**सुरेंद्रमाला**—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरेन्द्रमाला] एक किन्नरी का नाम ।

**सुरेंद्रलुप्त**—संज्ञा पुं० [सं० सुरेन्द्रलुप्त] इद्रलुप्त । बाल झडने का रोग । गजापन [को०] ।

**सुरेंद्रलोक**—संज्ञा पुं० [सं० सुरेन्द्रलोक] इद्रलोक ।

**सुरेंद्रवज्रा**—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरेन्द्रवज्रा] एक वर्णवृत्त का नाम जिसमे दो तगण, एक जगण और दो गुरु होते हैं । इद्राणी ।

सुरेंद्रवती—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरेन्द्रवती] शची। इंद्राणी।
सुरेंद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरेन्द्रा] एक किन्नरी का नाम।
सुरेख—वि० [सं०] सुंदर रेखाकन करनेवाला [को०]।
सुरेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुंदर रेखा। २ हाथ पाँव मे होनेवाली वे रेखाएँ जिनका रहना शुभ समझा जाता है।
सुरेज्य—संज्ञा पुं० [सं०] बृहस्पति।
सुरेज्ययुग—संज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार बृहस्पति का युग जिसमे पाँच वर्ष है। इन पाँचो वर्षों के नाम ये हैं—अंगिरा, श्रीमुख, भाव, युवा और धाता।
सुरेज्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तुलसी। २ ब्राह्मी।
सुरेणु[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ त्रसरेणु। २ एक प्राचीन राजा का नाम।
सुरेणु[2]—संज्ञा स्त्री० १ त्वाष्ट्री की पुत्री और विवस्वान् की पत्नी। २ एक नदी का नाम जो सप्त सरस्वतियो मे समझी जाती है।
सुरेणुपुष्पध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धो अनुसार किन्नरो के एक राजा का नाम।
सुरेतना†—क्रि० स० [देश०] खराब अनाज से अच्छे अनाज को अलग करना।
सुरेतर—संज्ञा पुं० [सं०] असुर।
सुरेता—वि० [सं० सुरेतस्] बहुत वीर्यवान्। अधिक सामर्थ्यवान्।
सुरेतोधा—वि० [सं० सुरेतोधस्] वीर्यवान्। पौरुषसपन्न।
सुरेथ—संज्ञा पुं० [देश०] सूँस। शिशुमार। उ०—रथ सुरेथ भुज मीन समाना। शिरकच्छप गजग्राह प्रमाना।—विश्राम (शब्द०)।
सुरेनुका(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरेणु] दे० 'सुरेणु'। उ०—सोमनाथ विरत ह्वै आलनाथ एकग। हरिक्षेत्र नैमिष सदा अशतीशु चित्रग। प्रगट प्रभासु सुरेनुका हर्म्य जापु उज्जैनि। शकर पूरनि पुष्कर अरु प्रयाग मृगनैनि।—केशव (शब्द०)।
सुरेभ[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुरहस्ती। देवहस्ती। २ दिन (को०)।
सुरेभ[2]—वि० सुस्वर। सुरीला।
सुरेवट—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का सुपारी का पेड। रामपूग।
सुरेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवताओ के स्वामी इंद्र। २ शिव। ३ विष्णु। ४ कृष्ण। ५ लोकपाल। ६ अग्नि का एक नाम (को०)।
सुरेशलोक—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रलोक।
सुरेशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।
सुरेश्वर[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवताओ के स्वामी, इंद्र। २ ब्रह्मा। ३ शिव। ४ रुद्र। ५ विष्णु (को०)।
सुरेश्वर[2]—वि० देवताओ मे श्रेष्ठ।
सुरेश्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवताओ की स्वामिनी, दुर्गा। २ लक्ष्मी। ३ राधा। ४ स्वर्गगगा।
सुरेश्वराचार्य—संज्ञा पुं० [सं०] मडन... ...श्रा। नाम।
सुरेष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] १ सफेद अगस्त का वृक्ष। २ लाल अगस्त। ३ सुरपुन्नाग। ४ शिवमल्ली। बडी मौलसिरी। ५ साल वृक्ष। साखू।
सुरेष्टक—संज्ञा सं० [सं०] शाल। साखू। अश्वकर्ण।
सुरेष्टा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्राह्मी।
सुरेस(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुरेश] दे० 'सुरेश'।
सुरै[1]—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की अनिष्टकारी घास जो गर्मी के मौसम मे पैदा होती है।
सुरै[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरभी] गाय। (डिं०)।
सुरै[3]—वि० बहुत धनी। प्रचुर सपत्तियुक्त [को०]।
सुरैत—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरति] वह स्त्री जिससे विवाह सबंध न हुआ हो बल्कि जो यो ही घर मे रख ली गई हो। सुरैतिन। उपपत्नी रखनी। रखेली।
सुरैतवाल—संज्ञा पुं० [हिं० सुरैत + वाल] सुरैत का लडका।
सुरैतवाला—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सुरैतवाल'।
सुरैतिन—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरति] दे० 'सुरैत'।
सुरैया—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ तीसरा नक्षत्र। कृत्तिका। २ कान मे पहनने का झुमका। ३ रोशनी का झाड [को०]।
सुरोचन—संज्ञा पुं० [सं०] १ यज्ञबाहु के एक पुत्र का नाम। २ एक वर्ष का नाम।
सुरोचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
सुरोचि—वि० [सं० सुरुचि] सुंदर। उ०—गिरि जात न जानत पान न खात बिरी कर पकज के दल की। बिहँसी सब गोपसुता हरि लोचन मूँदि सुरोचि दृगचल की।—केशव (शब्द०)।
सुरोची—संज्ञा पुं० [सं० सुरोचिस्] वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम।
सुरोत्तम—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवताओ मे श्रेष्ठ, विष्णु। २ सूर्य। ३ इंद्र (को०)। ४ सुरा का फेन (को०)।
सुरोत्तमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम।
सुरोत्तर—संज्ञा पुं० [सं०] चदन।
सुरोद[1]—संज्ञा पुं० [सं०] सुरासमुद्र। मदिरा का समुद्र।
सुरोद[2]—संज्ञा पुं० [सं० स्वरोद] दे० 'सरोद'।
सुरोद[3]—संज्ञा पुं० [फा०] गायन। गाना [को०]।
सुरोदक—संज्ञा पुं० [हिं० सुरोदक] दे० 'सुरोद'।
सुरोदय—संज्ञा पुं० [सं० स्वरोदय] दे० 'स्वरोदय'।
सुरोध—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार तसु के एक पुत्र का नाम।
सुरोधा—संज्ञा पुं० [सं० सुरोधस्] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।
सुरोपम—वि० [सं०] सुरतुल्य। देवता के समान।
सुरोपयाम—संज्ञा पुं० [सं०] मदिरापात्र [को०]।
सुरोमा[1]—वि० [सं० सुरोमन्] सुंदर रोमवाला। जिसके रोम सुंदर हो।
सुरोमा[2]—संज्ञा पुं० १. एक यज्ञ का नाम। २ एक असुरनाग (को०)।
सुरोषण—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओ के एक सेन... ...नाम।

सुरौका—संज्ञा पुं० [सं० सुरौकस्] १ स्वर्ग। २ देवमंदिर।

सुर्ख¹—वि० [फा० सुर्ख] रक्त वर्ण का। लाल।

सुर्ख²—संज्ञा पुं० गहरा लाल रग।

सुर्ख³—संज्ञा स्त्री० १ घुँघुची। गुंजा। एक रत्ती २ गंजीफा की एक क्रीडा [को०]।

यौ०—सुर्खचश्म = जिसकी आँखें लाल हो। सुर्खपोश = रक्तांबर। लाल कपडे पहननेवाला। सुर्खपोशी = लाल वस्त्र पहनना। सुर्खरंग = लाल रग का। रक्तवर्णवाला।

सुर्खरू—वि० [फा०] १ जिसके मुख पर तेज हो। तेजस्वी। कांतिमान्। २ प्रतिष्ठित। समान्य। ३ किसी कार्य मे सफलता प्राप्त करने के कारण जिसके मुँह की लाली रह गई हो।

सुर्खरूई—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ सुर्खरू होने का भाव। २ यश। कीर्ति। ३ मान। प्रतिष्ठा।

सुर्खा—संज्ञा पुं० [फा० सुर्ख] १ एक प्रकार का कबूतर जो लाल रग का होता है। २ सुर्ख रग का अश्व। ३ सुर्ख रग का आम।

सुर्खाब—संज्ञा पुं० [फा० सुर्खाब] दे० 'सुरखाब'।

सुर्खी—संज्ञा स्त्री० [फा० सुर्खी] १ लाली। ललाई। अरुणता। २ लेख आदि का शीर्षक, जो प्राचीन हस्तलिखित पुस्तको मे प्राय लाल स्याही से लिखा जाता था। लेख, समाचार आदि का शीर्षक। ३ रक्त। लहू। खून। ४ दे० 'सुरखी'।

सुर्खीदार सुरमई—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का सुरमई या बैंजनी रग जो कुछ लाली लिए होता है।

सुर्खी मायल—वि० [फा०] लालिमायुक्त। ललौहाँ। उ०—ओठ पतले तथा गुलाबी रग मे रँगे मालूम होते थे और गाल भरे तथा सुर्खी मायल थे।—कठ०, पृ० ५०।

सुर्जना—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सहिजन'।

सुर्ता(पु)—वि० [हिं० सुरति (=स्मृति)] समझदार। होशियार। बुद्धिमान्। उ०—हीरा लाल की कोठरी मोतिया भरे भडार। सुर्ता सुर्ता चुनिया मूरख रहे झख मार।—कबीर (शब्द०)।

सुर्ती—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सुरती'।

सुर्मा—संज्ञा पुं० [फा० सुर्मह्] दे० 'सुरमा'।

सुर्रा¹—संज्ञा पुं० [देश०] १ प्रकार एक की मछली। २ थैली। बटुआ।

सुर्रा²—संज्ञा पुं० [सुर्र से अनु०] तेज हवा।

क्रि० प्र०—चलना।

सुलक(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सोलकी] दे० 'सोलकी'। उ०—तब सुलक नृप आनँद पायो। द्वै सुत निज तिय महँ जनमायो।—रघुराज (शब्द०)।

सुलकी—संज्ञा पुं० [हिं० सोलकी] दे० 'सोलकी'। उ०—पौरच पुडीर परिहार औ पँवार बैंस, सेंगर सिसौदिया सुलकी दितवार है।—सूदन (शब्द०)।

सुलघित—वि० [सं० सुलङ्घित] १ जिसे लघन या फाका कराया गया हो। जिसे उपवास कराया गया हो। २ जो लाँघा गया हो।

सुलच्छ—वि० [सं० सुलक्षण] दे० 'सुलक्षण'।

सुलच्छण¹—वि० [सं०] १ शुभ लक्षणो से युक्त। अच्छे लक्षणोवाला। २ भाग्यवान्। किस्मतवर।

सुलच्छण²—संज्ञा पुं० १ शुभ लक्षण। शुभ चिह्न। २ एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे १४ मात्राएँ होती हैं और सात मात्राओ के बाद एक गुरु, एक लघु और तब विराम होता है।

सुलच्छणत्व—संज्ञा पुं० [सं०] सुलक्षण का भाव। सुलक्षणता।

सुलच्छणा¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पार्वती की एक सखी का नाम। २ श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम।

सुलच्छणा²—वि० स्त्री० शुभ लक्षणो से युक्त। अच्छे लक्षणोवाली।

सुलच्छणी—वि० स्त्री० [सं० सुलक्षणा] दे० 'सुलक्षणा'।

सुलक्षित—वि० [सं०] १ जो सम्यक्रूपेण निश्चित हो। २ जो अच्छी तरह लक्षित अथवा परीक्षित हो [को०]।

सुलक्ष्य—वि० [सं०] जो ठीक ठीक लक्षित किया जा सके।

सुलग(पु)—अव्य० [हिं० सु + लगना] पास। समीप। निकट। उ०—मुनि वेष धरे धनु सायक सुलग हैं। तुलसी हिये लसत लोने लोने डग हैं।—तुलसी (शब्द०)।

सुलगन¹—संज्ञा स्त्री० [सं० सु + हिं० लगना अथवा देश०] सुलगने की क्रिया या भाव।

सुलगन(पु)²—संज्ञा पुं० [सं० सुलग्न] दे० 'सुलग्न'।

सुलगना—क्रि० अ० [सं० सु + हिं० लगना] १ (लकडी, कोयले आदि का) जलना। प्रज्वलित होना। दहकना। २ बहुत अधिक सताप होना। ३ गाँजा, तबाकू आदि का पीने लायक होना।

सुलगाना—क्रि० स० [हिं० सुलगना का स० रूप] १ जलाना। दहकाना। प्रज्वलित करना। जैसे—लकडी सुलगाना, आग सुलगाना, कोयला सुलगना।

सयो० क्रि०—डालना।—देना।—रखना।

२ सतप्त करना। दुखी करना। ३ चिलम पर रखे गाँजे तबाकू आदि को फूँककर पीने लायक करना।

सुलग्न¹—संज्ञा पुं० [सं०] शुभ मुहूर्त। शुभ लग्न। अच्छी सायत।

सुलग्न²—वि० दृढता से लगा हुआ।

सुलच्छन(पु)—वि० [सं० सुलक्षण] दे० 'सुलक्षण'। उ०—(क) ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुजोग सुजोग। होइ कुवस्तु सुवस्तु जग लखहिं सुलच्छन लोग।—तुलसी (शब्द०)। (ख) नृप लख्यो ततच्छन भरम हर। परम सुलच्छन वरम धर।—गि० दास (शब्द०)।

सुलच्छनी(पु)—वि० [हिं० सुलच्छन] दे० 'सुलक्षणा'। उ०—जाय सुहागिनि बसति जो अपने पीहर धाम। लोग बुरी शका करैं यदपि सती हू बाम। यातें चाहत बधूजन रहे सदा पतिगेह। प्रमुदा नारि सुलच्छनी बिनहु पिया के नेह।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)।

सुलछ(पु)—वि० [सं० सुलक्ष] सुदर। उ०—सुलच्छ लोचन चारु नासा परम रुचिर बनाइ। युगल खजन लरत अवनित बीच कियो बनाइ।—सूर (शब्द०)।

**सुलझन**--संज्ञा स्त्री० [हिं० सुलझना] सुलझने की क्रिया या भाव। सुलभाव।

**सुलझना**--क्रि० अ० [हिं० उलझना] १ किसी उलझी हुई वस्तु की उलझन दूर होना या खुलना। उलझन का खुलना। २ गुत्थी या पेचीदगी का खुलना। जटिलताओं का निवारण होना।

**सुलझाना**--क्रि० स० [हिं० सुलझना का सक० रूप] १ किसी उलझी हुई वस्तु की उलझन दूर करना। २ उलझन या गुत्थी खोलना। जटिलताओं को दूर करना।

**सुलझाव**--संज्ञा पुं० [हिं० सुलझना + आव (प्रत्य०)] सुलझने की क्रिया या भाव। सुलझन।

**सुलटा**--वि० [हिं० उलटा] [वि० स्त्री० सुलटी] सीधा। उलटा का विपरीत।

**सुलतान**--संज्ञा पुं० [फा०] बादशाह। सम्राट्।

**सुलताना**--संज्ञा स्त्री० [फा०] १ रानी। मलिका। २ सुलतान की स्त्री। ३ सम्राट् की माता।

**सुलताना चंपा**--संज्ञा पुं० [फा० सुलतान + हिं० चंपा] एक प्रकार का पेड़। पुन्नाग।

**विशेष**--यह वृक्ष मद्रास प्रांत में अधिकता से होता है और कहीं कहीं उत्तरप्रदेश और पंजाब में भी पाया जाता है। इसके हीर की लकड़ी लाली लिए भूरे रंग की और बहुत मजबूत होती है। यह इमारत, मस्तूल आदि बनाने के काम में आती है। रेल की लाइन के नीचे पटरी की जगह रखने के भी काम आती है। संस्कृत में इसे पुन्नाग कहते हैं।

**सुलतानी**[1]--संज्ञा स्त्री० [फा० सुलतान] १ बादशाही। बादशाहत। राज्य। उ०--चढ़ि धौराहर देखहिं रानी। धनि तुइँ अस जाकर सुलतानी।--जायसी (शब्द०)। २ एक प्रकार का बढ़िया महीन रेशमी कपड़ा।

**यौ०**--सुलतानी बनात = एक प्रकार की लाल रंग की बनात। सुलतानी बुलबुल = बड़ी जाति की बुलबुल।

**सुलतानी**[2]--वि० १ लाल रंग का। उ०--सोई हुती पलँगा पर बाल खुले अँचरा नहिं जानत कोऊ। ऊँचे उरोजन कंचुकी ऊपर लालन के चरचे दृग दोऊ। सो छबि पीतम देखि छके कवि तोष कहैं उपमा यह होऊ। मानो मढ़े सुलतानी बनात में साह मनोज के गुंबज दोऊ।--तोष (शब्द०)। २ शासन। राज्य। बादशाही (को०)।

**सुलप**(पु)[1]--वि० [सं० स्वल्प] १ दे० 'स्वल्प'। उ०--नृत्यति उघटति गति संगीत पद सुनत कोकिला लाजति। सूर श्याम नागर अरु नागरि ललना सुलप मंडली राजति।--सूर (शब्द०)। २ मद। उ०--चलि सुलप गज हंस मोहित कोक कला प्रवीन।--सूर (शब्द०)।

**सुलप**[2]--संज्ञा पुं० [सं० सु + आलाप] सुंदर आलाप। (क्व०)।

**सुलफ**--वि० [सं० सु + हिं० लपना] १ लचीला। लचनेवाला। २. नाजुक। कोमल। मुलायम। उ०--(क) दीरघ उसास लै लै ससिमुखी सिसकति सुलफ सलौनो लंक लहकै लहकि लहकि।--देव (शब्द०)। (ख) मोती सियरात हित जानि कै प्रभात ढिग ढीले करि पीतम के गात सुलफनि के।--देव (शब्द०)।

**सुलफा**--संज्ञा पुं० [फा० सुल्फह्] १ वह तमाकू जो चिलम में बिना तवा रखे भरकर पिया जाता है। २ सूखा तमाकू जिसे गाँजे की तरह पतली चिलम में भरकर पीते हैं। कंकड़। ३ चरस।

**यौ०**--सुलफेबाज।

**क्रि० प्र०**--भरना।--पीना।

**सुलफेबाज**--वि० [हिं० सुल्फा + फा० बाज] गाँजा या चरस पीनेवाला। गँजेड़ी या चरसी।

**सुलब**--संज्ञा पुं० [ डि० ] गंधक।

**सुलभ**[1]--वि० [सं०] १ सुगमता से मिलने योग्य। सहज में मिलनेवाला। जिसके मिलने में कठिनाई न हो। २ सहज। सरल। सुगम। आसान। ३ साधारण। मामूली। ४ उपयोगी। लाभकारी।

**यौ०**--सुलभकोप = जिसकी नाक पर गुस्सा हो।

**सुलभ**[2]--संज्ञा पुं० [सं०] अग्निहोत्र की अग्नि।

**सुलभता**--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुलभ का भाव। सुलभत्व। २ सुगमता। आसानी।

**सुलभत्व**--संज्ञा पुं० [सं०] १ सुलभ का भाव। सुलभता। २ सुगमता। सरलता। आसानी।

**सुलभा**--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वैदिक काल की एक ब्रह्मवादिनी स्त्री का नाम (गृह्यसूत्र)। २ तुलसी। ३ मषवन। जंगली उड़द। मासपर्णी। ४ तमाकू। धूम्रपत्रा। ५ वेला। वार्षिकी मल्लिका।

**सुलभेतर**--वि० [सं०] १ जो सहज में प्राप्त न हो सके। दुर्लभ। कठिन। २ महार्घ। महँगा।

**सुलभ्य**--वि० [सं०] सुगमता से मिलने योग्य। सहज में मिलनेवाला। जिसके मिलने में कठिनाई न हो।

**सुललिक**--संज्ञा पुं० [सं०] एक मिश्र जाति (को०)।

**सुललित**--वि० [सं०] १ अति ललित। २ अत्यंत सुंदर। ३ प्रसन्न। हर्षित। ४. क्रीडारत। क्रीडाशील (को०)।

**सुलवण**--संज्ञा पुं० [सं०] जिसमें नमक ठीक पड़ा हो (को०)।

**सुलस**--संज्ञा पुं० [देश०] स्वीडेन देश का एक प्रकार का लोहा।

**सुलह**(पु)[1]--वि० [सं० सुलभ, प्रा० सुलह] दे० 'सुलभ'।

**सुलह**[2]--संज्ञा स्त्री० [फा०] १ मेल। मिलाप। २ वह मेल जो किसी प्रकार की लड़ाई या झगड़ा समाप्त होने पर हो। ३ दो राजाओं या राज्यों में होनेवाली संधि।

**यौ०**--सुलहनामा।

**सुलहनामा**--संज्ञा पुं० [अ० सुलह + फा० नामह्] १ वह कागज जिसपर दो या अधिक परस्पर लड़नेवाले राजाओं या राष्ट्रों की ओर से मेल की शर्तें लिखी रहती हैं। संधिपत्र। २. वह कागज

जिसपर परस्पर लडनेवाले दो व्यक्तियो या दलो की ओर से समझौते की शर्तें लिखी रहती है, अथवा यह लिखा रहता है कि अब हम लोगो मे किसी प्रकार का झगड़ा नही है।

**सुलाक¹**—सज्ञा पुं० [फा० सूराख] सूराख। छेद। (लश०)।

**सुलाक²**—सज्ञा स्त्री० [फा० सलाख] दे० 'सलाख'।

**सुलाखना‡¹**—क्रि० स० [स० सु + हिं० लखना (= देखना)] सोने या चाँदी को तपाकर परखना।

**सुलाखना‡²**—क्रि० स० [फा० सूराख] सूराख या छेद करना।

**सुलागना**Ⓟ† क्रि० अ० [हिं० सुलगना] दे० 'सुलगना'। उ०—अगिनि सुलागत मोस्यो न अँग मन विकट बनावत बेहु। बकती कहा बाँसुरी कहि कहि करि करि तामस तेहु।—सूर (शब्द०)।

**सुलाना**—क्रि० स० [हिं० सोना का प्रेर० रूप] १ सोने मे प्रवृत्त करना। शयन कराना। निद्रित कराना। २ लिटाना। डाल देना।

**सुलाभ**—वि० [स०] दे० 'सुलभ'।

**सुलाभी**—सज्ञा पुं० [स० सुलाभिन] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

**सुलाह**Ⓟ—सज्ञा स्त्री० [अ० सुलह] १ मेल। अनुकूलता। २ समझौता।

**सुलिखित**—वि० [स०] १ सुदर एव सुस्पष्ट लिखा हुआ। २ दर्ज किया हुआ [को०]।

**सुलिप**Ⓟ—वि० [सं० स्वल्प, हिं० सुलप] थोडा। स्वल्प।

**सुलिपि**—सज्ञा स्त्री० [स०] सुदर एव सुस्पष्ट लिपि। साफ लिखावट।

**सुलुलित**—वि० [स०] १ आनद से इतस्तत हिलता हुआ। क्रीडापूर्वक इधर उधर घूमता हुआ। २ अत्यत क्षतिग्रस्त। नष्टभ्रष्ट किया हुआ [को०]।

**सुलुस**—सज्ञा पुं० [अ०] तीसरा भाग। तृतीयाश [को०]।

**सुलू**—वि० [सं०] अच्छी तरह छेदने या काटनेवाला [को०]।

**सुलूक**—सज्ञा पु० [अ०] दे० 'सलूक'।

**सुलेक**—सज्ञा पुं० [सं०] एक आदित्य का नाम।

**सुलेख¹**—वि० [सं०] १ सुदर लिखनेवाला। सुदर रेखाएँ बनानेवाला। २ जो शुभ रेखाओ से युक्त हो।

**सुलेख²**—सज्ञा पु० सुदर लेख। अच्छी और साफ लिखावट। खुशखती।

**सुलेखक**—सज्ञा पुं० [स०] १ अच्छा लेख या निबध लिखनेवाला। जिसकी रचना उत्तम हो। उत्तम ग्रथकार या लेखक। २ सुदर और साफ अक्षर लिखनेवाला। खुशखत।

**सुलेमाँ**—सज्ञा पु० [फा०] दे० 'सुलेमान'। उ०—हाथ सुलेमाँ केरि अँगूठी। जग कहँ दान दीन्ह भरि मूठी।—जायसी (शब्द०)।

**सुलेमान**—सज्ञा पुं० [फा०] १ यहूदियो का एक प्रसिद्ध बादशाह जो पैगबर माना जाता है।

विशेष—कहते हैं, इसने देवो और परियो को वश मे कर लिया था और यह पशुपक्षियों तक से काम लिया करता था। इसका जन्म ई० पू० १०३३ और मृत्यु ई० पू० ६७५ मानी जाती है।

२ एक पहाड जो बलोचिस्तान और पजाब के बीच मे है।

**सुलेमानी¹**—सज्ञा पुं० [फा०] १ वह घोडा जिसकी आँखें सफेद हों। २ एक प्रकार का दोरगा पत्थर जिसका कुछ अश काला और कुछ सफेद होता है।

**सुलेमानी²**—वि० सुलेमान का। सुलेमान सबधी। जैसे,—सुलेमानी नमक।

यौ०—सुलेमानी नमक = एक प्रकार का बनाया हुआ नमक जो अत्यत पाचक होता है। सुलेमानी सुरमा = दे० 'सुरमा सुलेमानी'।

**सुलोक**—सज्ञा पुं० [स० सु + लोक] स्वर्ग।

**सुलोचन¹**—वि० [स०] [वि० स्त्री० सुलोचना] सुदर आँखोवाला। जिसके नेत्र सुदर हो। सुनेत्र। सुनयन।

**सुलोचन²**—सज्ञा पुं० १ हरिन। २ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

विशेष—महाभारत के आदि पर्व के ६७ वें अध्याय मे इसका उल्लेख मिलता है अत किसी किसी के मत से दुर्योधन का ही यह एक नाम था क्योकि जलस्तभन (जलसध) विद्या इसी को आती थी।

३ एक दैत्य का नाम। ४ रुक्मिणी के पिता का नाम। ५ चकोर। ६ एक बुद्ध (को०)।

**सुलोचना**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक अप्सरा का नाम। २ राजा माधव की पत्नी का नाम जो आदर्श पत्नी मानी जाती है। ३ वासुकी की पुत्री और मेघनाद की पत्नी का नाम। ४ सुदर महिला। मोहक नेत्रोवाली औरत (को०)।

**सुलोचनि, सुलोचनी**Ⓟ—वि० स्त्री० [सं० सुलोचना] सुदर नेत्रोवाली। जिसके नेत्र सुदर हों। उ०—सुदरि सुलोचनि सुवचनि सुदति, तैसे तेरे मुख आखर परुप रुख मानिए।—केशव (शब्द०)।

**सुलोम**—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुलोमा] सुदर लोमों या रोमा से युक्त। जिसके रोएँ सुदर हों।

**सुलोमनी**—सज्ञा स्त्री० [स०] जटामासी। बालछड।

**सुलोमश**—वि० [स०] दे० 'सुलोम'।

**सुलोमशा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ काकजघा। २ जटामासी।

**सुलोमा¹**—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ ताम्रवल्ली। २ मासरोहिणी। मासच्छदा।

**सुलोमा²**—वि० दे० 'सुलोम'।

**सुलोल**—वि० [स०] १ अत्यत लोल या लालायित। २ अतीव चचल [को०]।

**सुलोह**—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का बढिया लोहा।

**सुलोहक**—सज्ञा पुं० [स०] पीतल।

**सुलोहित¹**—सज्ञा पुं० [सं०] सुदर रक्त वर्ण। अच्छा लाल रग।

**सुलोहित²**—वि० सुदर रक्त वर्ण से युक्त। सुदर लाल रगवाला।

**सुलोहिता**—सज्ञा स्त्री० [स०] अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक जिह्वा का नाम।

**सुलोही**—सज्ञा पुं० [स० सुलोहिन्] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

**सुल्त**—सज्ञा पु० [अ०] जौ। यव [को०]।

सुल्तान—संज्ञा पुं० [अ०] दे० 'सुलतान'।

सुल्तानी—वि०, संज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'सुलतानी'।

सुल्फ—संज्ञा पुं० [देश०] १ बहुत चढ़ी या तेज लय। २ नाव। किश्ती। (लश०)।

सुल्फा—संज्ञा पुं० [अ० सुल्फह्] नाश्ता। जलपान। उपाहार [को०]।

सुल्स—संज्ञा पुं० [अ०] दे० 'सुलुस' [को०]।

सुवंश—संज्ञा पुं० [सं०] १ भागवत के अनुसार वसुदेव के एक पुत्र का नाम। २ सुंदर वंश। अच्छा कुल या खानदान।

सुवंशघोष—संज्ञा पुं० [सं०] वंशी की तरह मीठे स्वर का वाद्य [को०]।

सुवंशेक्षु—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद ईख या ऊख। श्वेतेक्षु।

सुवंस—संज्ञा पुं० [सं० सुवंश] दे० 'सुवंश'। उ०—गिरिधर अनुज सुवंस चल्यो जदुवंस बढावन।—गोपाल (शब्द०)।

सुव(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुत, प्रा० सुअ, अप० सुव] दे० 'सुअन'। उ०—हिंदुवान पुन्य गाहक वनिक तासु निवाहक साहि सुव। वरवाद वान किरवान धरि जस जहाज सिवराज तुव।—भूषण (शब्द०)।

सुवक्ता—वि० [सं० सु + वक्तृ] सुंदर बोलनेवाला। उत्तम व्याख्यान देनेवाला। वाक्पटु। व्याख्यानकुशल। वाग्मी।

सुवक्त्र¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २ स्कंद के एक पारिषद का नाम। ३ दंतवक्त्र के एक पुत्र का नाम। ४ वनतुलसी। वन बर्वरी। ५ सुंदर मुखाकृति (को०)। ६ सुंदर एवं सुस्पष्ट उच्चारण (को०)।

सुवक्त्र²—वि० सुंदर मुँहवाला। सुमुख।

सुवक्ष—वि० [सं० सुवक्षस्] सुंदर या विशाल वक्षवाला। जिसकी छाती सुंदर या चौड़ी हो।

सुवक्षा¹—वि० [सं० सुवक्षस्] दे० 'सुवक्ष'।

सुवक्षा²—संज्ञा स्त्री० [सं०] मय दानव की पुत्री और त्रिजटा तथा विभीषण की माता का नाम।

सुवच—वि० [सं०] सहज में कहा जानेवाला। जिसके उच्चारण में कोई कठिनता न हो।

सुवचन¹—वि० [सं०] १ सुंदर बोलनेवाला। सुवक्ता। वाग्मी। २ मधुरभाषी। मिष्टभाषी।

सुवचन²—संज्ञा पुं० सुंदर वचन। शुभ वचन। मीठी एवं प्रिय बात। उ०—सुनि सुवचन भूपति हरखाना।—मानस, १।१६४।

सुवचनि(पु)—वि० [सं० सुवचन] दे० 'सुवचनी'²। उ०—सुदरि सुलोचनि सुवचनि सुदति तैसे तेरे मुख आखर परुष रुख मानिए।—केशव (शब्द०)।

सुवचनी¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक देवी का नाम।

विशेष—बंगाल प्रदेश की स्त्रियों में इस देवी की पूजा का अधिक प्रचार है।

सुवचनी²—वि० [सं० सुवचना] सुंदर एवं प्रिय वचन बोलनेवाली। मधुरभाषिणी।



सुवचा¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक गंधर्वी का नाम।

सुवचा²—वि०, संज्ञा पुं० [सं० सुवचस्] सुंदर वचन बोलनेवाला। सुवक्ता [को०]।

सुवज्र—संज्ञा पुं० [सं०] सुंदर वज्रवाला, इंद्र का एक नाम।

सुवटा(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सुआ + टा (प्रत्य०)] दे० 'सुअटा'। उ०—पिंजर पिंड सरीर का सुवटा सहज समाइ।—दादू (शब्द०)।

सुवत्सा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह स्त्री जिसके वत्स सुंदर एवं सौम्य हों। २ एक दिक्कुमारी [को०]।

सुवण(पु)—संज्ञा पुं० [सं०] सोना। सुवर्ण। (डिं०)।

सुवदन¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुवदना] सुंदर मुखवाला। जिसका मुख सुंदर हो। सुमुख।

सुवदन²—संज्ञा पुं० वनतुलसी। वर्वरक।

सुवदना—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदरी स्त्री।

सुवदना—संज्ञा स्त्री० [सं०] ११ अक्षरों की एक वृत्ति जिसमें क्रमश न, ज, ज, लघु और गुरु होते हैं। इसे 'सुमुखी' भी कहते हैं [को०]।

सुवन¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य। २ अग्नि। ३ चंद्रमा।

सुवन(पु)²—संज्ञा पुं० [सं० सुत, प्रा० सुअ] १ दे० 'सुअन'। उ०—सुरसरि सुवन रणभूमि आए।—सूर (शब्द०)।

सुवन(पु)³—संज्ञा पुं० [सं० सुमन] दे० 'सुमन'। उ०—दामिनि दमक देखि दीप की दिपति देखि देखि शुभ सेज देखि सदन सुवन को।—केशव (शब्द०)।

सुवनारा(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सुअन + आर (प्रत्य०)] दे० 'सुअन' (पुत्र)। उ०—एक दिना तौ धर्म भुवारा। द्रुपदी हेतु संग सुवनारा।—सबलसिंह (शब्द०)।

सुवपु¹—संज्ञा स्त्री० [सं० सुवपुस्] एक अप्सरा का नाम।

सुवपु²—वि० सुंदर शरीरवाला। सुदेह।

सुवया—संज्ञा स्त्री० [सं० सुवयस्] १ प्रौढा स्त्री। मध्यमा स्त्री। २ वह जिसमें स्त्री पुरुष दोनों के चिह्न या लक्षण वर्तमान हों (को०)।

सुवरकोन्ना—संज्ञा पुं० [हिं० सूअर + कोना, अथवा कन्ना (= कान)] वह हवा जिसमें पाल नहीं उड़ता। (मल्लाह)।

सुवरण—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्ण] दे० 'सुवर्ण'।

सुवर्चक, सुवर्च्चक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सज्जी। स्वर्जिकाक्षार। २ एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सुवर्चना, सुवर्च्चना—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुवर्च्चला'।

सुवर्चल, सुवर्च्चल—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन देश का नाम। २. काला नमक। सौवर्चल लवण। ३ शिव (को०)।

सुवर्चला, सुवर्च्चला—संज्ञा [सं०] १ सूर्य की पत्नी का नाम। २ परमेष्ठी की पत्नी और प्रतीह की माता का नाम। ३ ब्राह्मी। ४ तीसी। अलसी। ५. हुरहुर। आदित्यभक्ता। ६ सूर्यमुखी नाम का फूल (को०)।

**सुवर्चस, सुवर्च्चस**—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव का एक नाम। २ वह जो अत्यंत दीप्तियुक्त हो (को०)।

**सुवर्चसी, सुवर्च्चसी**—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्च्चसिन्] १ शिव का एक नाम। २ स्वर्जिकाक्षार। सज्जी (को०)।

**सुवर्चस्क सुवर्च्चस्क**—वि० [सं०] दीप्तियुक्त। चमकता हुआ। कांतियुक्त (को०)।

**सुवर्चा, सुवर्च्चा¹**—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्च्चस्] १ गरुड के एक पुत्र का नाम। २ स्कंद के एक पारिषद नाम। ३ दसवें मनु के एक पुत्र का नाम। ४ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

**सुवर्चा, सुवर्च्चा²**—वि० तेजस्वी। शक्तिवान्।

**सुवर्चिक, सुवर्च्चिक**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुवर्च्चक'।

**सुवर्चिका, सुवर्च्चिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सज्जी। स्वर्जिकाक्षार। २ पहाड़ी लता। जतुका।

**सुवर्ची, सुवर्च्ची**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुवर्च्चक'।

**सुवर्जिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पहाड़ी लता। जतुका।

**सुवर्ण¹**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोना। स्वर्ण। २ धन। संपत्ति। दौलत। ३ प्राचीन काल की एक प्रकार की स्वर्णमुद्रा जो दस माशे की होती थी। ४ सोलह माशे का एक मान। ५ स्वर्णगैरिक। ६ हरिचंदन। ७ नागकेशर। ८ हलदी। हरिद्रा। ९ धतूरा। १० कणगुग्गुल। ११ पीला। धतूरा। १२ पीली सरसों। गौर सर्षप। १३ एक प्रकार का यज्ञ। १४ एक वृत्त का नाम। १५ एक देवगंधर्व का नाम। १६ दशरथ के एक मंत्री का नाम। १७ अंतरीक्ष के एक पुत्र का नाम। १८ एक मुनि का नाम। १९ उत्तम जाति या अच्छा वर्ण (को०)। २० सुवर्णालु कंद (को०)। २१ स्वर का शुद्ध उच्चारण (को०)। २२ एक तीर्थ (को०)। २३ उत्तम वर्ण। अच्छा रंग (को०)।

**सुवर्ण²**—वि० १ सुंदर वर्ण या रंग का। उज्वल। चमकीला (को०)। २ सोने के रंग का। स्वर्णिम। पीला। ३ उत्तम वंश या अच्छी जाति का (को०)। ४ ख्यात। प्रसिद्ध (को०)।

**सुवर्णक¹**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोना। २ सोने की एक प्राचीन तौल जो सोलह माशे की होती थी। सुवर्णकर्ष। ३ पीतल जो देखने में सोने के समान होता है। ४ अमलतास। आरग्वध वृक्ष। ५ सुवर्णक्षीरी। ६ सीसा धातु (को०)।

**सुवर्णक²**—वि० १ सोने का। २ सुंदर वर्ण या रंग का।

**सुवर्णकदली**—संज्ञा स्त्री० [सं०] चंपा केला। चंपक रंभा।

**सुवर्णकमल**—संज्ञा पुं० [सं०] लाल कमल। रक्तकमल।

**सुवर्णकरणी**—संज्ञा स्त्री० [सं० सुवर्ण + करण] एक प्रकार की जड़ी। इसका गुण यह बताया जाता है कि यह रोगजनित विवर्णता को दूर कर सुवर्ण अर्थात् सुंदर कर देती है।

**सुवर्णकरनी**(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सुवर्ण + हिं० करनी] दे० 'सुवर्ण करणी'। उ०—दक्षिण शिखर द्रोणगिरि माहीं। औषधि चारिहु अहै तहाँ ही। एक विशल्यकरनी सुखदाई। एक सुवर्णकरनी मनभाई। एक संजीवनकरनी जोई। एक संधानकरन मुदमोई।—रघुराज (शब्द०)।

**सुवर्णकर्ता**—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्णकर्तृ] सोने के गहने बनानेवाला। सुनार। स्वर्णकार।

**सुवर्णकर्ष**—संज्ञा [सं०] सोने की एक प्राचीन तौल जो सोलह माशे की होती थी।

**सुवर्णकार**—संज्ञा पुं० [सं०] सोने के गहने बनानेवाला, सुनार।

**सुवर्णकृत्**—संज्ञा पुं० [सं०] सुवर्णकार। सुनार (को०)।

**सुवर्णकेतकी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] लाल केतकी। रक्त केतकी।

**सुवर्णकेश**—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक नागासुर का नाम।

**सुवर्णक्षीरिणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कटेरी। सत्यानासी। कटुपर्णी। स्वर्णक्षीरी।

**सुवर्णक्षीरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुवर्णक्षीरिणी' (को०)।

**सुवर्णगणित**—संज्ञा पुं० [सं०] बीजगणित का वह अंग जिसके अनुसार सोने की तौल आदि मानी जाती है और उसका हिसाब लगाया जाता है।

**सुवर्णगर्भ¹**—संज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम।

**सुवर्णगर्भ²**—वि० जिसमें स्वर्ण भरा हो।

**सुवर्णगर्भा**—वि० [सं०] जहाँ सोने की खानें हों (भूमि)।

**सुवर्णगिरि**—संज्ञा पुं० [सं०] १ राजगृह के एक पर्वत का नाम। अशोक की एक राजधानी जो किसी के मत से पश्चिमी घाट में थी।

**सुवर्णगैरिक**—संज्ञा पुं० [सं०] लाल गेरू।

पर्या०—स्वर्णधातु। सुरक्तक। संध्याभ्र। बभ्रुधातु। शिलाधातु।

**सुवर्णगोत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक प्राचीन राज्य का नाम।

**सुवर्णघ्न**—संज्ञा पुं० [सं०] राँगा। वंग।

**सुवर्णचंपक**—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्णचम्पक] पीत चंपा (को०)।

**सुवर्णचक्रवर्ती**—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्णचक्रवर्तिन] नृपति। राजा।

**सुवर्णचूड**—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्णचूड] १ गरुड के एक पुत्र का नाम। २ एक प्रकार का पक्षी।

**सुवर्णचूल**—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्णचूड] दे० 'सुवर्णचूड'।

**सुवर्णचौरिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोना चुराना। सोने की चोरी। स्वर्ण की तस्करता (को०)।

**सुवर्णजीविक**—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल की एक वर्णसंकर जाति जो सोने का व्यापार करती थी।

**सुवर्णज्योति**—वि० [सं० सुवर्णज्योतिस्] स्वर्णिम कांतिवाला। सुनहली चमकवाला (को०)।

**सुवर्णता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुवर्ण का भाव या धर्म। सुवर्णत्व।

**सुवर्णतिलका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मालकगनी। ज्योतिष्मती लता।

**सुवर्णत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुवर्णता'।

**सुवर्णदुग्धी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कटेरी। भटकटैया। स्वर्णक्षीरिणी।

**सुवर्णद्वीप**—संज्ञा पुं० [सं०] सुमात्रा टापू का प्राचीन नाम।

**सुवर्णधेनु**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दान देने के लिये सोने की बनाई हुई गौ।

सुवर्णनकुली—संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ी मालकंगनी। महाज्योतिष्मती लता।

सुवर्णपक्ष¹—संज्ञा पुं० [सं०] गरुड़।

सुवर्णपक्ष²—वि० सोने के पखोंवाला। जिसके पर सोने के हों।

सुवर्णपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पक्षी।

सुवर्णपद्म—संज्ञा पुं० [सं०] लाल कमल। रक्त कमल।

सुवर्णपद्मा—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्गंगगा।

सुवर्णपर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुवर्णपक्ष'

सुवर्णपार्श्व—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जनपद का नाम।

सुवर्णपालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का सोने का बना हुआ पात्र।

सुवर्णपिंजर—वि० [सं० सुवर्णपिञ्जर] सोने के समान पीला। स्वर्णाभ [को०]।

सुवर्णपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ बड़ी सेवती। राजतरुणी। २ अम्लान पुष्प (को०)।

सुवर्णपुष्पित—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वर्ण से परिपूर्ण। सोने से भरपूर। २ दीप्त। तेजोमय [को०]।

सुवर्णपुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक पौधा [को०]।

सुवर्णपृष्ठ—वि० [सं०] जो सोने के पत्तर से मंडित हो। स्वर्णमंडित। जिसपर सोना चढ़ा हो [को०]।

सुवर्णप्रतिमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोने की मूर्ति।

सुवर्णप्रभास—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक यक्ष का नाम।

सुवर्णप्रसर—संज्ञा पुं० [सं०] एलुआ। एलवालुक।

सुवर्णप्रसव—संज्ञा पुं० [सं०] एलुआ। एलवालुक।

सुवर्णफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] चंपा केला। सुवर्ण कदली।

सुवर्णबिंदु—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्णबिन्दु] १ विष्णु का नाम। २ शिव का एक नाम (को०)।

सुवर्णभांड, सुवर्णभांडक—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्णभाण्ड, सुवर्णभाण्डक] सोना या रत्न रखने की पेटी।

सुवर्णभू—संज्ञा पुं० [सं०] ईशान कोण में स्थित एक देश का नाम।

विशेष—बृहत्संहिता के अनुसार सुवर्णभू, वसुवन, दिविष्ट, पौरव आदि देश रेवती, अश्विनी और भरणी नक्षत्रों में अवस्थित है।

सुवर्णभूमि—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुवर्ण द्वीप (सुमात्रा) का एक नाम। २ स्वर्ण से भरी भूमि।

सुवर्णमाक्षिक—संज्ञा पुं० [सं०] सोनामक्खी। स्वर्णमाक्षिक।

सुवर्णमाषक—संज्ञा पुं० [सं०] बारह धान का एक मान जिसका व्यवहार प्राचीन में काल में होता था।

सुवर्णमित्र—संज्ञा पुं० [सं०] सुहागा, जिसकी सहायता से सोना जल्दी गल जाता है।

सुवर्णमुखरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदी का नाम।

सुवर्णमेखली—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम।

सुवर्णमोचा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुवर्ण कदली। चंपा केला [को०]।

सुवर्णयूथिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोनजुही। पीली जुही। पीतयूथिका।

सुवर्णयूथी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुवर्णयूथिका' [को०]।

सुवर्णरंभा—संज्ञा स्त्री० [सं० सुवर्णरम्भा] चंपा केला। सुवर्ण कदली।

सुवर्णरूप्यक—संज्ञा पुं० [सं०] सुवर्ण द्वीप (सुमात्रा) का एक प्राचीन नाम। २ वह भूमि या स्थान जहाँ सोने चाँदी की बहुलता हो (को०)।

सुवर्णरेख—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दे० 'स्वर्णरेखा'। २ बिहार प्रदेश की एक नदी का नाम।

विशेष—यह नदी बिहार के राँची जिले से निकलकर मानभूम, सिंहभूम और उड़ीसा होती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती है। इसकी कई शाखाएँ है।

सुवर्णरेतस—संज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

सुवर्णरेता—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्णरेतस्] शिव का एक नाम।

सुवर्णरोमा¹—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्णरोमन्] १ भेड़। मेष। २ महारोम के एक पुत्र का नाम।

सुवर्णरोमा²—वि० सुनहरे रोएँ या बालोंवाला।

सुवर्णलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] मालकंगनी। ज्योतिष्मती लता।

सुवर्णवणिक्—संज्ञा पुं० [सं०] बंगाल की एक वणिक जाति।

विशेष—हिंदू राजत्वकाल में इस जाति के लोग सोने का कारबार करते थे और अब भी बहुतेरे करते है। यह जाति निम्न और पतित समझी जाती है। ब्राह्मण और कायस्थ इनके यहाँ का जल नहीं ग्रहण करते। बंगाल में इन्हें 'सोनारबेणे' कहते हैं।

सुवर्णवान्—वि० [सं० सुवर्णवत्] [वि० स्त्री० सुवर्णवती] १ स्वर्णिम। स्वर्णनिर्मित। सोने का। २ सोने की तरह कांतियुक्त। सौंदर्ययुक्त। शोभायुक्त [को०]।

सुवर्णवर्ण¹—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम।

सुवर्णवर्ण²—वि० सोने के रंग का। सुनहरा।

सुवर्णवर्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हलदी। हरिद्रा।

सुवर्णवृषभ—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्णनिर्मित वृषभ। सोने का बना हुआ बैल [को०]।

सुवर्णशिलेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

सुवर्णश्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] आसाम की एक नदी जो ब्रह्मपुत्र की मुख्य शाखा है।

सुवर्णष्ठीवी—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्णष्ठीविन्] महाभारत के अनुसार संजय के एक पुत्र का नाम।

सुवर्णसंज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुवर्णकर्ष'।

सुवर्णसिंदूर—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्णसिन्दूर] दे० 'स्वर्णसिंदूर'।

सुवर्णसिद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो इंद्रजाल या जादू के बल से सोना बना या प्राप्त कर सकता है।

सुवर्णसूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] सोने का तार। सोने की जंजीर या सिकड़ी [को०]।

सुवर्णस्तेय—संज्ञा पुं० [सं०] सोने की चोरी।

विशेष—मनु के अनुसार सोने की चोरी पाँच महापातकों में से एक है।

सुवर्णलोपी—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्णलोपिन्] सोना चुरानेवाला जो मनु के अनुसार महापातकी होता है।

सुवर्णस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन जनपद का नाम। २ सुमात्रा द्वीप का एक प्राचीन नाम।

सुवर्णहलि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का वृक्ष।

सुवर्णा[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक का नाम। २ इक्ष्वाकु की पुत्री और सुहोत्र की पत्नी का नाम। ३ हलदी। हरिद्रा। ४ काला अगर। कृष्णागुरु। ५ खिरैंटी। बरियारा। बला। ६ कटेरी। सत्यानासी। स्वर्णक्षीरी। ७ इंद्रायन। इंद्रवारुणी। ८ कटुतुंबी। तितलौकी (को०)।

सुवर्णा[2]—वि० स्त्री० सुंदर वर्णवाली। दे० 'सुवर्ण'[2]।

सुवर्णाकर—संज्ञा पुं० [सं०] सोने की खान जिससे सोना निकलता है।

सुवर्णाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

सुवर्णाख्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ नागकेसर। २ धतूरा। धुस्तूर। ३ एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

सुवर्णाभ[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ शंखपद के एक पुत्र का नाम। २ रेवटी। राजावर्तमणि।

सुवर्णाभ[2]—वि० सुनहला। स्वर्णिम। दीप्त [को०]।

सुवर्णाभिषेक—संज्ञा पुं० [सं०] सोने का टुकड़ा डालकर वरवधू के ऊपर जल छिड़कने की क्रिया [को०]।

सुवर्णारि—संज्ञा पुं० [सं०] कचनार। रक्तकांचन वृक्ष।

सुवर्णालु—संज्ञा पुं० [सं०] एक कंद का नाम [को०]।

सुवर्णाविभासा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक गंधर्वी का नाम।

सुवर्णाह्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पीली जूही। सोनजूही। स्वर्णयूथिका।

सुवर्णिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पीली जीवंती। स्वर्णजीवंती।

सुवर्णिम—वि० [सं०] दे० 'स्वर्णिम' [को०]।

सुवर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मूसाकानी। आखुपर्णी।

सुवर्तित—वि० [सं०] १ अच्छी तरह गोलाकार घुमाया हुआ। २ जो सुव्यवस्थित हो [को०]।

सुवर्तुल[1]—संज्ञा [सं०] तरबूज।

सुवर्तुल[2]—वि० पूर्णत गोलाकार [को०]।

सुवर्मा[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्मन्] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

सुवर्मा[2]—वि० उत्तम कवच से युक्त। जिसके पास उत्तम कवच हो।

सुवर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। २ एक बौद्ध आचार्य का नाम।

सुवर्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मोतिया। मल्लिका का पुष्प। २ अच्छी बरसात (को०)।

सुवल्लरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुत्रदात्री लता।

सुवल्लि—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुवल्लिका'।

सुवल्लिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जतुका नाम की लता। २ सोमराजी।

सुवल्लिज—संज्ञा पुं० [सं०] १ मूँगा। प्रवाल। २ जमीकंद (को०)।

सुवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बकुची। सोमराजी। २ कुटकी। कटुकी। ३ पुत्रदात्री लता।

सुवश्य—वि० [सं०] सुगमता से वश में करने योग्य [को०]।

सुवसंत—संज्ञा पुं० [सं० सुवसन्त] १ चैत्र पूर्णिमा। चंद्रावली। २ मदनोत्सव जो चैत्र पूर्णिमा को होता था। ३ सुंदर वसंत-ऋतु (को०)।

सुवसंतक—संज्ञा पुं० [सं० सुवसन्तक] १ मदनोत्सव जो प्राचीन काल में चैत्र पूर्णिमा को होता था। २ वासंती। नेवारी।

सुवसंता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ माधवीलता। २ चमेली। जातीपुष्प।

सुवस(पु)—वि० [सं० स्व + वश] जो अपने वश या अधिकार में हो। उ०—वरुण कुवेर अग्नि यम मारुत सुवस कियो क्षण मायें। —सूर (शब्द०)।

सुवस्त्रा[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक नदी का नाम। २ सुंदर वस्त्रों-वाली महिला।

सुवह[1]—वि० [सं०] १ सहज में वहन करने या उठाने योग्य। जो सहज में उठाया जा सके। २ धैर्यवान्। धीर। ३ अच्छी तरह उठाने या वहन करनेवाला (को०)।

सुवह[2]—संज्ञा पुं० एक प्रकार की वायु।

सुवहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वीणा। बीन। २ शेफालिका। ३. रासन। रास्ना। ४ सँभालू। नील सिंधुवार। ५ रुद्रजटा। ६ हंसपदी। ७ मूसली। तालमूली। ८ सलई। शल्लकी। ९ गंधनाकुली। नकुलकंद। १० निसोथ। त्रिवृत्ता।

सुवाँग—संज्ञा पुं० [सं० सु + अङ्ग या स्व + अङ्ग] दे० 'स्वाँग'।

सुवाँगी—संज्ञा पुं० [हिं० सुवाँग] दे० 'स्वाँगी'।

सुवा(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शुक, प्रा० सुअ] दे० 'सुआ'। उ०—सुवा चलि ता बन को रस पीजै। जा बन राम नाम अमृतरस श्रवणपात्र भरि लीजै।—सूर (शब्द०)।

सुवाक्य[1]—वि० [सं०] सुंदर वचन बोलनेवाला। मिष्ठभाषी। मधुर-भाषी। सुवाग्मी।

सुवाक्य[2]—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुंदर वचन [को०]।

सुवाग्मी—वि० [सं० सुवाग्मिन्] बहुत सुंदर बोलनेवाला। व्याख्यान-पटु। सुवक्ता।

सुवाच्य—वि० [सं०] सरलता से पढ़ा जाने योग्य।

सुवाजी—वि० [सं० सुवाजिन्] सुंदर पंखों से युक्त (तीर)।

सुवादिक—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम वाद्य। अच्छा बाजा [को०]।

सुवाना(पु)—क्रि० स० [सं० शयन] दे० 'सुलाना'। उ०—पांडव न्योते अधसुत घर के बीच सुवाय। अर्ध रात्रि चहुँ ओर ते दीनी आग लगाय।—लल्लूलाल (शब्द०)।

सुवामा--संज्ञा स्त्री० [सं०] वर्तमान रामगंगा नदी का प्राचीन नाम।

सुवार(पु)¹--संज्ञा पु० [सं० सूपकार] रसोइया। भोजन बनानेवाला। पाचक। उ०--पुनु नृप नाम जयत हमारा। राज युधिष्ठिर केर सुवारा।--सबलसिंह (शब्द०)।

सुवार(पु)†²--संज्ञा पु० [सं० सु + वार] उत्तम वार। अच्छा दिन। उ०--अगाढ की अँधियारी अष्टमी मगलवार सुवारी रामा।--हिंदी प्रदीप (शब्द०)।

सुवार्ता--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम। २ सुदर वार्ता या बातचीत (को०)। ३. शुभ सूचना या समाचार (को०)।

सुवाल(पु)†¹--संज्ञा पु० [फा० सवाल] दे० 'सवाल'।

सुवाल²--वि० जिसकी पूँछ बाल से युक्त हो। जैसे,--हाथी।

सुवालुका--संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की लता।

सुवास¹--संज्ञा पुं० [सं०] १ सुगध। अच्छी महक। खुशबू। २ उत्तम निवास। सुदर घर। ३ शिव जी का एक नाम। ४ एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे न, ज, ल (।।।, ।ऽ।, ।) होना है।

सुवास²--वि० [सं० सुवासस्] [वि० स्त्री० सुवासा] सुदर वस्त्रो से युक्त।

सुवास³--संज्ञा पुं० [सं० श्वास] श्वास। साँस। (डिं०)।

सुवासक--संज्ञा पु० [सं०] तरबूज।

सुवासन--संज्ञा पुं० [सं०] दसवें मनु के एक पुत्र का नाम।

सुवासरा--संज्ञा स्त्री० [सं०] हालों नाम का पौधा। चसुर। चद्रशूर।

सुवासिका--वि० स्त्री० [सं० सुवासिक] सुवास करनेवाली। सुगध करनेवाली। उ०--केशव सुगध श्वास सिद्धनि के गुहा किधौं परम प्रसिद्ध शुभ शोभत सुवासिका।--केशव (शब्द०)।

सुवासित--वि० [सं०] सुवासयुक्त। सुगधयुक्त। खुशबूदार।

सुवासिनी--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ युवावस्था मे भी पिता के यहाँ रहनेवाली स्त्री। चिरटी। २ सधवा स्त्री। ३ सधवा स्त्री के लिये प्रयुक्त आदरार्थक शब्द (को०)।

सुवासी--वि० [सं० सुवासिन्] उत्तम या भव्य भवन मे रहनेवाला।

सुवास्तु¹--संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी का नाम जिसे स्वात कहते हैं और जो प्राचीन भारत के उत्तरपश्चिमी सरहदी प्रदेश मे बहती है।

सुवास्तु²--संज्ञा पु० १ सुवास्तु नदी के निकटवर्ती देश का नाम। २ इस देश के रहनेवाले।

सुवास्तुक--संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक राजा का नाम।

सुवाह¹--संज्ञा पु० [सं०] १ स्कद के एक पारिषद का नाम। २. अच्छा घोडा।

सुवाह²--वि० १ सहज मे उठाने योग्य। २ सुदर घोडोवाला।

सुवाहन--संज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन मुनि का नाम।

सुविक्रम¹--सं० पुं० [सं०] १ वत्सप्री के एक पुत्र का नाम। २. प्रबल शक्ति अथवा पराक्रम (को०)।

सुविक्रम²--वि० १ अत्यत साहसी, शक्तिशाली या वीर। २ सुदर चाल। विशिष्ट गतिवाला (को०)।

सुविक्रात¹--वि० [सं० सुविक्रान्त] अत्यत विक्रमशाली। अतिशय पराक्रमी। अत्यत साहसी या वीर।

सुविक्रात²--संज्ञा पु० १ शूर। वीर। बहादुर। २ वीरता। बहादुरी।

सुविक्लव--वि० [सं०] १ अतिशय विह्वल। बहुत बेचैन। २ डरपोक। भीरु। कायर (को०)।

सुविख्यात--वि० [सं०] बहुत प्रसिद्ध। सुप्रसिद्ध। बहुत मशहूर।

सुविगुण--वि० [सं०] १ जिसमे कोई गुण या योग्यता न हो। गुणहीन। योग्यतारहित। २. अत्यत दुष्ट। नीच। पाजी।

सुविग्रह--वि० [सं०] सुदर शरीर या रूपवाला। सुदेह। सुरूप।

सुविचक्षण--वि० [सं०] कुशाग्रबुद्धि। अत्यत विद्वान् (को०)।

सुविचार--संज्ञा पु० [सं०] १ सूक्ष्म या उत्तम विचार। २ अच्छा फैसला। सुदर न्याय। ३ रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न कृष्ण के एक पुत्र का नाम।

सुविचारित--वि० [सं०] सूक्ष्म या उत्तम रूप से विचार किया हुआ। अच्छी तरह सोचा हुआ।

सुविचित--वि० [सं०] १ पूर्णत अन्वेषित। अच्छी तरह खोजा हुआ। २ जिसका अच्छी तरह परीक्षण किया गया हो (को०)।

सुविज्ञ--वि० [सं०] अतिशय विज्ञ या या बुद्धिमान्। बहुत चतुर।

सुविज्ञान--वि० [सं०] १ जो सहज मे जाना जा सके। २ विवेकी। विवेकशील (को०)। ३ अतिशय चतुर या बुद्धिमान्।

सुविज्ञापक--वि० [सं०] जो आसानी से समझाया या सिखाया जा सके (को०)।

सुविज्ञेय¹--वि० [सं०] जो सहज मे जाना जा सके। सहज मे जानने समझने योग्य।

सुविज्ञेय²--संज्ञा पुं० शिव जी का एक नाम।

सुवित¹--वि० [सं०] १ सहज मे पहुँचने योग्य। सहज मे पाने योग्य। २ उन्नतिशील (को०)।

सुवित²--संज्ञा पु० १ अच्छा मार्ग। सुमार्ग। सुपथ। २ कल्याण। शुभ। ३ सौभाग्य।

सुवितत--वि० [सं०] अच्छी तरह फैला हुआ। सुविस्तृत।

सुवितल--संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु की एक प्रकार की मूर्ति।

सुवित्त¹--वि० [सं०] बहुत धनी। बडा अमीर।

सुवित्त²--संज्ञा पु० अत्यत समृद्धि या ऐश्वर्य (को०)।

सुवित्ति--संज्ञा पुं० [सं०] एक देवता का नाम।

सुविद्--संज्ञा पुं० [सं०] पडित। विद्वान्।

सुविद--संज्ञा पु० [सं०] १ अत पुर या रनिवास का रक्षक। सौविद्। कचुकी। २ एक राजा का नाम। ३ तिलक। तिलकपुष्प या उसका वृक्ष।

**सुविदग्ध**—वि० [सं०] [स्त्री० सुविदग्धा] बहुत चतुर। बहुत चालाक।

**सुविदत्**—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।

**सुविदत्त**—वि० [सं०] १ अतिशय सावधान। २ सहृदय। ३ उदार। दयालु।

**सुविदत्र**—संज्ञा पुं० १ कृपा। दया। २ धन। संपत्ति। ४ कुटुंब। ४ ज्ञान।

**सुविदन्**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुविदत्त'।

**सुविदर्भ**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जाति का नाम।

**सुविदला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका ब्याह हो गया हो। विवाहिता स्त्री।

**सुविदल्ल**—संज्ञा पुं० [सं०] १ अंतःपुर। जनानखाना। जनाना महल। २ सौविदल्ल का असाधु प्रयोग। अंतःपुर का रक्षक [को०]।

**सुविदल्ला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुविदला' [को०]।

**सुविदा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुद्धिमती स्त्री। गुणवती नारी [को०]।

**सुविदित**—वि० [सं०] भली भाँति विदित। अच्छी तरह जाना हुआ।

**सुविद्य**—वि० [सं०] उत्तम विद्वान्। अच्छा पंडित।

**सुविद्युत्**—संज्ञा पुं० [सं०] एक असुर का नाम।

**सुविध**—वि० [सं०] १ अच्छे स्वभाव का। सुशील। नेकमिजाज। २ उत्तम प्रकार का। अच्छी किस्म का (को०)।

**सुविधा**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुभीता] दे० 'सुभीता'।

**सुविधान**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] सुंदर विधान या उत्तम व्यवस्था। सुप्रबंध [को०]।

**सुविधान**[2]—वि० जो सुंदर व्यवस्थायुक्त हो।

**सुविधि**[1]—संज्ञा [सं०] जैनियों के अनुसार वर्तमान अवसर्पिणी के नवें अर्हत् का नाम।

**सुविधि**[2]—संज्ञा स्त्री० सुंदर विधि या विधान। अच्छा नियम [को०]।

**सुविनय**—वि० [सं०] अनुशासित या सुशिक्षित [को०]।

**सुविनीत**—वि० [सं०] १ अतिशय नम्र। २ अच्छी तरह सिखाया हुआ। सुशिक्षित (जैसे घोड़ा या और कोई पशु)।

**सुविनीता**—वि० [सं०] वह गौ जो सहज में दूही जा सके।

**सुविनेय**—वि० [सं०] सरलतापूर्वक शिक्षित होने योग्य [को०]।

**सुविपिन**—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छा जंगल। घना जंगल [को०]।

**सुविभीषण**—वि० [सं०] अत्यंत भयंकर [को०]।

**सुविभु**—संज्ञा पुं० [सं०] एक राजा का नाम जो विभु का पुत्र था।

**सुविरज**—वि० [सं०] वासनाओं से सम्यक् मुक्त [को०]।

**सुविविक्त**—वि० [सं०] १ अकेला। जो बिल्कुल अलग हो। २ अत्यंत निर्जन या एकांत। ३ अलग अलग किया हुआ। निर्णीत [को०]।

**सुविशाल**—वि० [सं०] बहुत बड़ा [को०]।

**सुविशाला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

**सुविशुद्ध**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक लोक का नाम।

**सुविशुद्ध**[2]—वि० अत्यंत शुद्ध। पूर्णतः मार्जित या स्वच्छ [को०]।

**सुविषाण**—वि० [सं०] जिसके विषाण बड़े बड़े हों। बड़े दाँतोंवाला।

**सुविष्टंभी**[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुविष्टम्भिन्] शिव का एक नाम।

**सुविष्टंभी**[2]—वि० १ सहारा देनेवाला। सम्यक् रूप से पालन या वहन करनेवाला। २ विष्टंभ से युक्त [को०]।

**सुविस्तार**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ अत्यधिक विस्तार या फैलाव। २ आधिक्य। प्रचुरता [को०]।

**सुविस्तर**[2]—वि० १ अत्यंत विस्तृत या विशाल। २ अत्यधिक। प्रचुरतम। ३ अतीव उग्र। तीव्रतम।

**सुविस्मय**—वि० [सं०] अत्यंत विस्मययुक्त या चकित [को०]।

**सुविस्मित**—वि० [सं०] १ आश्चर्य पैदा करनेवाला। कौतूहलजनक। २ दे० 'सुविस्मय' [को०]।

**सुविहित**—वि० [सं०] १ अच्छी तरह रखा हुआ या स्थापित। सम्यक् न्यस्त। २ जिसे अच्छी तरह क्रमयुक्त या व्यवस्थित किया गया हो। ३ अच्छी तरह किया हुआ। सम्यक् कृत या संपन्न। ४ अच्छी तरह तुष्ट या तृप्त किया हुआ। अच्छी तरह तृप्त या संतुष्ट [को०]।

**सुवीज**—संज्ञा पुं० वि० [सं०] दे० 'सुबीज'।

**सुवीथीपथ**—संज्ञा पुं० [सं०] प्रासाद में जानेवाली विशिष्ट पद्धति या राह [को०]।

**सुवीर**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्कंद का एक नाम। २ शिव जी का एक नाम। ३ शिव जी के एक पुत्र का नाम। ४ द्युतिमान् के एक पुत्र का नाम। ५ देवश्रवा के एक पुत्र का नाम। ६ क्षेम्य के एक पुत्र का नाम। ७ एकवीर नामक वृक्ष। १० बेर का पेड़ (को०)। ११ छाछ की खड़ी (डिं०)।

**सुवीर**[2]—वि० १ अतिशय वीर। महान् योद्धा। २ जिसे अनेक पुत्र हों (को०)। ३ अनेक वीरों से युक्त (को०)।

**सुवीरक**—संज्ञा पुं० [सं०] १ बेर। बदरी। २ एकवीर नामक वृक्ष। ३ एक प्रकार का सुरमा। ४ कांजिक। काँजी (को०)।

**सुवीरज**—संज्ञा पुं० [सं०] सुरमा। सौवीरांजन।

**सुवीराम्ल**—संज्ञा पुं० [सं०] काँजी। कांजिक।

**सुवीर्य**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] बेर। बदरी फल।

**सुवीर्य**[2]—वि० महान् शक्तिशाली। बहुत बड़ा बहादुर।

**सुवीर्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वनकपास। वनकार्पासी। २ बड़ी शतावरी। महाशतावरी। ३ कलपत्ती हींग। डिकामाली। नाड़ी हींग।

**सुवृत्त**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूरन। जमीकंद। ओल। २ सत् चरित्र। सत् वृत्त या व्यवहार (को०)।

**सुवृत्त**[2]—वि० १ सच्चरित्र। २ गुणवान्। ३ साधु। ४ सुंदर गोलाकार। वर्तुलाकार (को०)। ५ सुंदर छंदोबद्ध (काव्य०)।

**सुवृत्ता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक अप्सरा का नाम। २ किशमिश। काकोली द्राक्षा। ३ सेवती। शतपत्री। ४ एक वृत्त का नाम

जिसके प्रत्येक चरण मे १६ अक्षर होते हैं, जिनमे १, ७, ८, ६, १०, ११, १४ और १७ वाँ अक्षर गुरु तथा अन्य अक्षर लघु होते हैं।

सुवृत्ति[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उत्तम वृत्ति। उत्तम जीविका। २ सदाचार। पवित्र जीवन। पवित्रता का जीवन (को०)। ३ ब्रह्मचर्य (को०)। ४ सद् व्यवहार या वृत्ति (को०)।

सुवृत्ति[2]—वि० १ जिसकी वृत्ति या जीविका उत्तम हो। २ सदाचारी। सच्चरित्र।

सुवृद्ध[1]—संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिण दिशा के दिग्गज का नाम।

सुवृद्ध[2]—वि० १ बहुत वृद्ध। २ बहुत प्राचीन।

सुवेग—वि० [सं०] अत्यंत वेगवान्। तीव्र गतिवाला।

सुवेगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मालकगनी। महाज्योतिष्मती लता। २ एक गिद्धनी का नाम।

सुवेणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हरिवंश के अनुसार एक नदी का नाम जिसका महाभारत मे भी उल्लेख है।

सुवेद—वि० [सं०] १ आध्यात्मिक ज्ञान मे पारगत। अध्यात्मशास्त्र का अच्छा ज्ञाता। २ सुखपूर्वक लभ्य। सुलभ (को०)।

सुवेदा—संज्ञा पुं० [सं० सुवेदस्] एक वैदिक ऋषि का नाम।

सुवेल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] त्रिकूट पर्वत का नाम, जो रामायण के अनुसार समुद्र के किनारे लका मे था और जहाँ रामचद्र सेना सहित ठहरे थे। उ०—कौतुक ही वारिधि बँधाइ उतरे सुवेल तट जाइ। तुलसीदास गढ देखि फिरे कपि प्रभु आगमनु सुनाइ। —तुलसी (शब्द०)।

सुवेल[2]—वि० १ बहुत झुका हुआ। प्रणत। २ शात। नम्र।

सुवेश[1]—वि० [सं०] १ भली भाँति या अच्छे कपडे पहने हुए। वस्त्रादि से सुसज्जित। सुदर वेशयुक्त। २ सुदर रूपवाला। रूपवान्।

सुवेश[2]—संज्ञा पुं० १ सफेद ईख। श्वेतेक्षु। २ सुदर वेश। भव्य वेशभूषा (को०)।

सुवेशता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुवेश का भाव या धर्म।

सुवेशी—वि० [सं० सुवेशिन्] दे० 'सुवेश'।

सुवेष—वि० [सं०] दे० 'सुवेश'।

सुवेषित—वि० [सं० सुवेष + इत] सुदर वेशयुक्त। दे० 'सुवेश'१। गलीचे पर एक सुवेषित यवन बैठा पान खा रहा है।—गदाधरसिंह (शब्द०)।

सुवेषी—वि० [सं० सुवेषिन्] दे० 'सुवेश'।

सुवेस(पु)—वि० [सं० सुवेश] दे० 'सुवेश'।

सुवेसल—वि० [सं० सुवेश + हिं० ल (प्रत्य०)] सुदर। मनोहर। उ०—सुभग सुसम बधुर रुचिर कात काम कमनीय। रम्य सुवेसल भव्य अरु दर्शनीय रमणीय।—अनेकार्थ०। (शब्द०)।

सुवैण(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सु + वचन, प्रा० वयण, हिं० वैन] मित्रता। दोस्ती। (डिं०)।

सुवैया—वि० [हिं० सोना + ऐया (प्रत्य०)] सोनेवाला। शयन करनेवाला।

सुवो(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शुक, प्रा० सुअ, सुव] शुक पक्षी। सुग्गा। तोता। (डिं०)।

सुव्यक्त—वि० [सं०] १ उत्तम रूप से व्यक्त। बहुत स्पष्ट। २. चमकदार। दीप्तियुक्त। सुप्रकाशित। ३ साफ। स्वच्छ (को०)।

सुव्यवस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम व्यवस्था उत्तम प्रबध। अच्छी योजना।

सुव्यवस्थित—वि० [सं०] उत्तम रूप से व्यवस्थित। जिसकी व्यवस्था भली भाँति की गई हो।

सुव्यस्त—वि० [सं०] छितराया हुआ। इतस्तत अस्तव्यस्त। छिन्न भिन्न। तितर बितर [को०]।

सुव्याहृत—वि० [सं०] १ अच्छी उक्ति सूक्ति। सुदर वचन। २ आधारवाक्य। सिद्धातवाक्य [को०]।

सुव्यूहमखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम।

सुव्यूहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुव्यूहमुखा'।

सुव्रत[1] संज्ञा पुं० [सं०] १ स्कद के एक अनुचर का नाम। २ एक प्रजापति का नाम। ३ रौच्य मनु के एक पुत्र का नाम। ४ उशीनर के एक पुत्र का नाम। ५ प्रियव्रत के एक पुत्र का नाम। ६ ब्रह्मचारी। ७ वर्तमान अवसर्पिणी के २०वें अर्हत् का नाम। इन्हें मुनि सुव्रत भी कहते है। ८ भावी उत्सर्पिणी के ११वें अर्हत् का नाम।

सुव्रत[2]—वि० १ दृढता से व्रत का पालन करनेवाला। २ धर्मनिष्ठ। ३ विनीत। नम्र (घोडा या गाय आदि पशुओ के लिये प्रयुक्त।)

सुव्रता[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गधपलाशी। कपूरकचरी। २ सहज मे दुही जानेवाली गाय। ३ गुणवती और पतिव्रता पत्नी। ४ एक अप्सरा का नाम। ५ दक्ष की पुत्री का नाम। ६ वर्तमान कल्प के १५वें अर्हत् की माता का नाम।

सुव्रता[2]—वि० सुदर व्रतवाली। पतिव्रता। साध्वी [को०]।

सुशंस—वि० [सं०] १ प्रसिद्ध। विख्यात। यशस्वी। २ प्रशसनीय। ३ शुभ शसा करनेवाला। शुभाकाक्षी [को०]।

सुशंसी - वि० [सं० सुशासिन्] शुभ शसा करनेवाला। शुभाकाक्षी। शुभाभिलाषी।

सुशक—वि० [सं०] सहज मे होने योग्य। सुकर। आसान।

सुशक्त—वि० [सं०] अच्छी शक्तिवाला। शक्तिशाली। समर्थ। ताकतवर।

सुशक्ति—वि० [सं०] दे० 'सुशक्त'।

सुशब्द—वि० [सं०] अच्छा शब्द या ध्वनि करनेवाला। जिसकी आवाज अच्छी हो।

सुशरण्य[1]—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

सुशरण्य[2]—वि० [सं०] शरण देनेवाला [को०]।

सुशरीर—वि० [सं०] जिसका शरीर सुदर हो। सुडौल। सुदेह।

**सुशर्मा[1]**—संज्ञा पुं० [सं० सुशर्मन्] १ एक मनु के एक पुत्र का नाम। २ एक वैशालि का नाम। ३ एक काण्व का नाम। ४ निंदित ब्राह्मण। ५ विषय का इच्छुक व्यक्ति (को०)। ६ एक देव-वर्ग (को०)। ७ एक असुर (को०)।

**सुशर्मा[2]**—वि० बहुत प्रसन्न। अत्यंत सुखी।

**सुशल्य**—संज्ञा पुं० [सं०] खैर। खदिर।

**सुशवी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ काला जीरा। कृष्णजीरक। २ करेला। कारवेल्ल। ३ काली जीरी। सूक्ष्म कृष्णजीरक। ४ करंज।

**सुशांत**—वि० [सं० सुशान्त] १ अत्यंत शांत। स्थिर। उ०—बहुत काल लौं विचरे जल मे तब हरि भए सुशांत। बीस प्रलय विविध नानाकर सृष्टि रची बहु भाँति।—सूर (शब्द०)। २ शांत। प्रशमित (को०)।

**सुशांता**—संज्ञा स्त्री० [सं० सुशान्ता] राजा शशिध्वज की एक पत्नी का नाम।

**सुशांति[1]**—संज्ञा पुं० [सं० सुशान्ति] १ तीसरे मन्वंतर के इंद्र का नाम। २ अजमीढ के एक पुत्र का नाम। ३ शांति के एक पुत्र का नाम।

**सुशांति[2]**—संज्ञा स्त्री० पूर्णत शांति [को०]।

**सुशाक**—संज्ञा पुं० [सं०] १ अदरक। आर्द्रक। २ चौलाई का साग। तडुलीय शाक। ३ चचु। चेंच। ४ भिंडी।

**सुशाकक**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुशाक'।

**सुशारद**—संज्ञा पुं० [सं०] १ शालकायन गोत्र के एक वैदिक आचार्य का नाम। २ शिव का एक नाम (को०)।

**सुशासन**—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम शासन। अच्छी राज्यव्यवस्था।

**सुशासित**—वि० [सं०] १ जिसका अच्छी तरह शासन किया गया हो। २ अच्छी तरह नियंत्रित।

**सुशास्य**—वि० [सं०] सहज मे शासित या नियंत्रित होने योग्य।

**सुशिबिका**—संज्ञा स्त्री० [सं० सुशिम्बिका] एक प्रकार की शिंबी।

**सुशिक्षित**—वि० [सं०] १ उत्तम रूप से शिक्षित। अच्छी तरह शिक्षा पाया हुआ। जिसने विशेष रूप से शिक्षा पाई हो। २ जो अच्छी तरह से सधाया हुआ हो। प्रशिक्षित। जैसे, घोडा आदि।

**सुशिख[1]**—संज्ञा [सं०] अग्नि का एक नाम।

**सुशिख[2]**—वि० १ सुंदर शिखावाला। २ जिसकी शिखा या लौ सुंदर हो। जैसे, दीप [को०]।

**सुशिखा**—संज्ञा [सं०] १ मोर की चोटी। मयूरशिखा। २ मुर्गे की कलँगी। कुक्कुटकेश।

**सुशिर[1]**—वि० [सं० सुशिरस्] सुंदर सिरवाला। जिसका सिर सुंदर हो।

**सुशिर[2]**—संज्ञा पुं० [सं० सुषिर] वह बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता हो। जैसे,—वंशी आदि। (संगीत)। दे० 'सुषिर'।

**सुशिष्ट[1]**—वि० [सं०] अच्छी तरह शासित [को०]।

**सुशिष्ट[2]**—संज्ञा पुं० विश्वसनीय अमात्य। वह मंत्री जिसपर भरोसा किया जाय [को०]।

**सुशीत[1]**—संज्ञा पुं० [सं०] १ पीला चंदन। हरिचंदन। २ पाकर। ह्रस्व प्लक्षवृक्ष। ३ जलबेंत। जलवेतस। ४ शीतलता। शैत्य (को०)।

**सुशीत[2]**—वि० अत्यंत शीतल। बहुत ठढा।

**सुशीतल[1]**—संज्ञा पुं० [सं०] १ गधतृण। २ सफेद चंदन। ३ नागदमनी। नागदवन। ४ शीतलता (को०)।

**सुशीतल[2]**—वि० अत्यंत शीतल। बहुत ठढा।

**सुशीतला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ खीरा। त्रपुष। २ ककडी। कर्कटिका।

**सुशीता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सेवती। शतपत्री। २ स्थलकमल।

**सुशीम**—संज्ञा पुं०, वि० [सं०] दे० 'सुषीम'।

**सुशील[1]**—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुशीला] १ उत्तम शीलवाला। २ उत्तम स्वभाववाला। शीलवान्। ३ सच्चरित्र। साधु। ४ विनीत। नम्र। ५ सरल। सीधा।

**सुशील[2]**—संज्ञा पुं० सुंदर शील। सत्स्वभाव।

**सुशीलता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुशील का भाव। सुशीलत्व। २ सच्चरित्रता। ३ नम्रता।

**सुशीलत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] सुशील का भाव। सुशीलता।

**सुशीला[1]**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ श्रीकृष्ण की आठ पटरानियों में से एक का नाम। २ राधा की एक अनुचरी का नाम। ३ यम की पत्नी का नाम। ४ सुदामा की पत्नी का नाम।

**सुशीला[2]**—वि० स्त्री० दे० 'सुशील'।

**सुशीली**—वि० [सं० सुशीलिन्] दे० 'सुशील'।

**सुशीविका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] गेंठी। वाराहीकंद।

**सुशृंग[1]**—वि० [सं०] सुंदर शृंगयुक्त। सुंदर सींगोवाला।

**सुशृंग[2]**—संज्ञा पुं० शृंगी ऋषि। उ०—कस्यपमुनि सुविभाडकै त्यहै सिष्य सुशृंग। ब्रह्मचरजरत वनहि मैं बनचारिन के ढग।—पद्माकर (शब्द०)।

**सुशृंगार**—वि० [सं० सुशृङ्गार] अच्छी तरह भूषित या सज्जित।

**सुशृत**—वि० [सं०] अत्यंत तप्त। बहुत गरम।

**सुशेव**—वि० [सं०] प्रसन्नता से परिपूर्ण।

**सुशोण**—वि० [सं०] गहरा लाल [को०]।

**सुशोभन**—वि० [सं०] १ अत्यंत शोभायुक्त। दिव्य। २ जो देखने मे बहुत भला मालूम हो। बहुत सुंदर। प्रियदर्शन।

**सुशोभित**—वि० [सं०] उत्तम रूप से शोभित। अत्यंत शोभायमान।

**सुश्रम**—संज्ञा पुं० [सं०] धर्म के एक पुत्र का नाम।

**सुश्रवा[1]**—संज्ञा पुं० [सं० सुश्रवस्] १ एक प्रजापति का नाम। २ एक ऋषि का नाम। ३ नागासुर का नाम।

**सुश्रवा[2]**—वि० १ उत्तम हवि से युक्त। २ प्रसिद्ध। कीर्तिमान। ३ जो हर्षपूर्वक श्रवण करता हो। ४ दयायुक्त (को०)।

सुश्रवा[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वैदर्भी का नाम जो जयत्सेन की पत्नी थी।

सुश्राव्य—वि० [सं०] जो सुनने में अच्छा जान पड़े।

सुश्री—वि० [सं०] १ बहुत सुंदर। शोभायुक्त। स्त्रियों के नाम के पूर्व आदरार्थ प्रयुक्त। सुशोभना स्त्री। (आधु० प्रयोग)। २ बहुत धनी। बड़ा अमीर।

सुश्रीक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] सलई। शल्लकी।

सुश्रीक[2]—वि० दे० 'सुश्री'।

सुश्रीका—संज्ञा स्त्री० [सं०] शल्लकी वृक्ष [को०]।

सुश्रुत[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ आयुर्वेदीय चिकित्साशास्त्र के एक प्रसिद्ध आचार्य।

विशेष—इनका रचा हुआ 'सुश्रुतसंहिता' नामक ग्रंथ बहुत मान्य समझा जाता है। गरुड पुराण में लिखा है कि ये विश्वामित्र के पुत्र थे और इन्होंने काशी के राजा दिवोदास से, जो धन्वंतरि के अवतार थे, शिक्षा पाई थी। आयुर्वेद के आचार्यों में इनका और इनके ग्रंथ का भी वही स्थान है, जो चरक और उनके ग्रंथ का।

२ सुश्रुत का रचा हुआ सुश्रुत संहितानामक ग्रंथ। ३. गोष्ठी श्राद्ध के अंत में ब्राह्मण से यह पूछना कि आप तृप्त हो गए न।

सुश्रुत[2]—वि० १ अच्छी तरह सुना हुआ। २ जिसे प्रसन्नतापूर्वक सुना गया हो। ३ प्रसिद्ध। मशहूर। ४ वेद में पारंगत (को०)।

सुश्रुतसंहिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] आचार्य सुश्रुत का बनाया हुआ आयुर्वेद का एक प्राचीन, प्रसिद्ध और सर्वमान्य ग्रंथ।

सुश्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार धर्म के एक पुत्र का नाम।

सुश्रुखा(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शुश्रूषा] दे० 'शुश्रूषा'।

सुश्रूषा—संज्ञा स्त्री० [सं० सुश्रूषा] दे० 'शुश्रूषा'।

सुश्रोणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हरिवंश के अनुसार एक नदी का नाम।

सुश्रोणि[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक देवी का नाम।

सुश्रोणि[2]—वि० सुंदर नितंबवाली।

सुश्लिष्ट—वि० [सं०] १. अच्छे ढंग से संयोजित। सुस्पष्ट। २ दृढ़ता से संलग्न या जुड़ा हुआ। सटा हुआ।

सुश्लेष—संज्ञा पुं० [सं०] १ घनिष्ठ या प्रगाढ़ संबंध। २ प्रगाढ़ आलिंगन [को०]।

सुश्लोक—वि० [सं०] १ पुण्यात्मा। पुण्यकीर्ति। २ ख्यात। सुप्रसिद्ध। मशहूर।

सुषंधि—संज्ञा पुं० [सं० सुषन्धि] १ रामायण के अनुसार मांधाता के एक पुत्र का नाम। २ पुराणानुसार प्रसुश्रुत के एक पुत्र का नाम।

सुष(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुख] दे० 'सुख'।

सुषद्मा—संज्ञा पुं० [सं० सुषद्मन्] एक ऋषि का नाम।

सुषम[1]—वि० [सं०] १ बहुत सुंदर। शोभायुक्त। २ सम। समान। ३. समझ में आने योग्य। बोधगम्य (को०)।

सुषम[2]—संज्ञा पुं० शुभ वर्ष [को०]।

सुषमदुःषमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जैन मतानुसार कालचक्र के दो आरे।

सुषमन, सुषमना(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सुषुम्ना] दे० 'सुषुम्ना'। उ०—(क) इंगला पिंगला सुषमना नारी। शून्य सहज में बसहिं मुरारी।—सूर (शब्द०)। (ख) गगनाल द्विराह एक सम राखिए। चढ़ो सुषमना यार अभी रस चाखिए।—कबीर (शब्द०)।

सुषमनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सुषुम्ना] दे० 'सुषुम्ना'। उ०—इंगला पिंगला सुषमनि नारी बंक नाल कै सुधि पावै।—कबीर (शब्द०)।

सुषमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ परम शोभा। अत्यंत सुंदरता। २ एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में दस अक्षर रहते जिनमें तीसरा, चौथा, आठवाँ और नवाँ गुरु तथा अन्य अक्षर लघु होते हैं। ३ एक प्रकार का पौधा। ४ जैनों के अनुसार काल का एक नाम। ५ एक देवांगना (को०)।

सुषमाशाली—वि० [सं० सुषमाशालिन्] जिसमें बहुत अधिक शोभा या सुंदरता हो।

सुषमित—वि० [सं०] शोभायुक्त। सुषमायुक्त।

सुषवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ करेला। कारवेल्ल। २ क्षुद्रका वेल्ल। करेली। ३ जीरा। जीरक।

सुषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] काला जीरा [को०]।

सुषाढ—संज्ञा पुं० [सं० सुषाढ] शिव जी का एक नाम।

सुषाना(पु)[1]—क्रि० अ० [हिं० सूखना] दे० 'सुखाना'। उ०—स्यामघन सींचिए तुलसी सालि सफल सुषाति।—तुलसी (शब्द०)।

सुषाना(पु)[2]—क्रि० स० शुष्क करना। सुखाना।

सुषारा(पु)—वि० [हिं० सुख] [वि० स्त्री० सुषारी] दे० 'सुखारा'। उ०—रावन वंश सहित संहारा। सुनत सकल जग भएउ सुषारा।—रामाश्वमेध (शब्द०)।

सुषि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छिद्र। छेद। सूराख। बिल। २ नलिका। नली (को०)।

सुषिक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] शीतलता। ठढक।

सुषिक[2]—वि० शीतल। ठंढा।

सुषिक्त—वि० [सं०] सुसिक्त।

सुषिमंदि—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णुपुराण के अनुसार एक राजा का नाम।

सुषिम—संज्ञा पुं०, वि० [सं०] दे० 'सुषीम' [को०]।

सुषिर[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. बाँस। २ बेंत। ३ अग्नि। आग। ४ चूहा। ५ संगीत में वह यंत्र जो वायु के जोर से बजता हो। ६ छेद। सूराख। ७ वायुमंडल। ८ लौंग। लवंग। ९ काठ। लकड़ी। १० वंशी आदि मुँह से फूँककर बजाए जानेवाली बाजों में से निकलनेवाली ध्वनि।

सुषिर²—वि० १ छिद्रयुक्त। छेदवाला। २ पोला। सावकाश। ३ उच्चारण मे मद या विलवित (कौ०)।

सुषिरच्छेद—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार की वशी।

सुषिरविवर—सज्ञा पुं० [स०] बिल, विशेषकर साँप का विल।

सुषित—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कलिका। विद्रुम लता। २. नदी।

सुषिलीका—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की चिडिया।

सुषीम¹—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का सर्प। २ चद्रकात मणि। ३ शैत्य। शीतलता (कौ०)।

सुषीम²—वि० १ शीतल। ठढा। २ मनोरम। मनोज्ञ। सुदर।

सुषुपु—वि० [स० सुषुपुस्] सोने की इच्छा करनेवाला। निद्रातुर।

सुषुप्त¹—वि० [सं०] गहरी नीद मे सोया हुआ। घोर निद्रित।

सुषुप्त²—सज्ञा स्त्री० दे० 'सुपुप्ति'।

सुषुप्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ घोर निद्रा। गहरी नीद। २ अज्ञान। (वेदात)। ३ पातजलिदर्शन के अनुसार चित्त की एक वृत्ति या अनुभूति।

विशेष—कहते हैं, इस अवस्था मे जीव नित्य ब्रह्म की प्राप्ति करता है परतु उसे इस वात का ज्ञान नही होता कि मैंने ब्रह्म की प्राप्ति की है।

सुषुप्स—वि० [स० सुपुप्सु] सोने की इच्छा करनेवाला। निद्रातुर।

सुषुप्सा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ शयन की अभिलाषा। सोने की इच्छा। २ तद्रा। ऊँघ (कौ०)।

सुषुप्सु—वि० [स०] दे० 'सुषुप्स'।

सुषुम्ण, सुषुम्न—सज्ञा पुं० [सं०] सूर्य की सप्तरश्मियो मे से एक का नाम।

सुषुम्णा, सुषुम्ना—सज्ञा स्त्री० [स०] हठयोग और तत्र के अनुसार शरीर के अतर्गत तीन प्रधान नाडियो मे से एक।

विशेष—दस नाडियो मे इडा, पिंगला और सुषुम्ना ये तीन प्रधान नाडियाँ मानी गई हैं। कहते हैं, इडा और पिंगला नाडियो के मध्य मे सुषुम्ना है, अर्थात् नासिका के वाम भाग मे इडा, दक्षिण भाग मे पिंगला और मध्य भाग (ब्रह्मरध्र) मे सुषुम्ना नाडी स्थित है। सुषुम्ना त्रिगुणमयी और चद्र, सूर्य तथा अग्निस्वरूपिणी है।

३ वैद्यक के अनुसार चौदह प्रधान नाडियो मे से एक जो नाभि के मध्य मे स्थित है और जिससे अन्य सब नाडियाँ लिपटी हुई है।

सुषेण—सज्ञा पुं० [स०] १ विष्णु का एक नाम। २ एक गधर्व का नाम। ३ एक यक्ष का नाम। ४ एक नागासुर का नाम। ५ दूसरे मनु के एक पुत्र का नाम। ६ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। ७ शूरसेन के एक राजा का नाम। ८ परीक्षित के एक पुत्र का नाम। ९ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। १० वसुदेव के एक पुत्र का नाम। ११ विश्वगर्भ के एक पुत्र का नाम। १२. शवर के एक पुत्र का नाम। १३ एक वानर का नाम।

विशेष—रामायण आदि के अनुसार यह वरुण का पुत्र, वाली का ससुर और सुग्रीव का वैद्य था। इसने राम रावण के युद्ध मे रामचद्र की विशेष सहायता की थी।

१४ करौंदा। करमर्दक। १५ वेंत। वेतस्।

सुषेणिका—सज्ञा स्त्री० [स०] काली निसोथ। कृष्ण त्रिवृता।

सुषेणी—सज्ञा स्त्री० [स०] निसोथ। त्रिवृता।

सुषोपति(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० सुषुप्ति] दे० 'सुषुप्ति'। उ०—सूत्रातमा प्रकाशित भोपति। तस्य अवस्था आहि सुषोपति।—विश्राम (शब्द०)।

सुषोप्ति(पु)—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सुषुप्ति'। उ०—जागृत नारी सुषोप्ति तुरिया, भौर गोपा मे घर छावै।—कवीर (शब्द०)।

सुषोमा—सज्ञा स्त्री० [स०] भागवत के अनुसार एक नदी का नाम।

सुष्कत—सज्ञा पुं० [स० सुष्कन्त] पुराणानुसार धर्मनेत्र के एक पुत्र का नाम।

सुष्ट—सज्ञा पुं० [सं० दुष्ट का अनु०, स० शिष्ट या सुष्ठु का विलोम] अच्छा। भला। दुष्ट का उलटा। जैसे,—वादशाह अपनी सेना लेकर सुष्ट अर्थात् तृणचर पशुओ की रक्षा के निमित्त दुष्ट अर्थात् मासाहारी जीवो के नाश करने को चढता था।—शिवप्रसाद (शब्द०)।

सुष्ठु¹—अव्य० [स०] १ अतिशय। अत्यत। २ भली भाँति। अच्छी तरह। ३. यथायोग्य। ठीक ठीक।

सुष्ठु²—सज्ञा पुं० १ प्रशसा। तारीफ। २ सत्य।

सुष्ठुता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ मगल। कल्याण। भलाई। २ सौभाग्य। ३ सुदरता। उ०—शब्दो की अनोखी सुष्ठुता द्वारा मन को चमत्कृत करने की शक्ति है।—निवधमालादर्श (शब्द०)।

सुष्मत—सज्ञा पुं० [सं० सुष्मन्त] दे० 'सुष्कत'।

सुष्म—सज्ञा पुं० [स०] रस्सी। रज्जु।

सुष्मना(पु)—सज्ञा स्त्री० [सं०सुषुम्ना] दे० 'सुषुम्ना'। उ०—चद सूरहि चद कै मग सुष्मनागत दीश। प्राणरोधन को करै जेहि हेत सर्व ऋपीश।—केशव (शब्द०)।

सुसकट¹—वि० [स० सुसङ्कट] १. दुर्बोध। जिसकी व्याख्या कठिन हो। २ सुयत्रित। मजवूती से वद किया हुआ (कौ०)।

सुसकट²—सज्ञा पुं० १ दुष्कर कार्य। कठिन काम। २. बाधा। कठिनता।

सुसकुल—सज्ञा पुं० [स० सुसङ्कुल] महाभारत के अनुसार एक राजा का नाम।

सुसक्षेप—सज्ञा पुं० [स०] शिव का एक नाम।

सुसग¹—सज्ञा पुं० [सं० सु + हिं० सग] उत्तम सगति। सत्संग। अच्छी सोहवत।

सुसग²—वि० [स० सुसङ्ग] जो अत्यत प्रिय हो। जिसके साथ बराबर सलग्न रहा जाय।

सुसगत—वि० [स० सुसङ्गत] उत्तम रूप से सगत। वहुत युक्तियुक्त। वहुत उचित।

सुसंगति—संज्ञा स्त्री० [सं० सु + हिं० संगत या सं० सुसङ्गति] अच्छी संगत। अच्छी सोहबत। सत्संग। साधुसंग।

सुसंगम—संज्ञा पुं० [सं० सुसङ्गम] १ उत्तम संगम या जमाव। २ उत्तम सभास्थल या मंडप [को०]।

सुसंगृहीत—वि० [सं० सुसङ्गृहीत] १ अच्छी तरह शासित या वशीभूत। जैसे, सुसंगृहीत राष्ट्र। २ जिसका सम्यक् रूप ग्रहण किया गया हो। ३ अच्छी तरह न्यस्त या रखा हुआ। ४ जिसका सम्यक् संक्षेप किया हुआ हो [को०]।

सुसंध—वि० [सं० सुसन्ध] अपने वचन का पक्का।

सुसंधि—संज्ञा पुं० [सं० सुसन्धि] दे० 'सुषंधि'।

सुसंगत—वि० [सं० सुसङ्गत] १ उपयुक्त। उचित। वाजिब। २ जिसे अच्छी तरह लक्ष्य पर रखा गया हो।

सुसंपत्, सुसंपद्—संज्ञा स्त्री० [सं० सुसम्पत्, सुसम्पद्] अतिशय संपन्नता। धनाढ्यता [को०]।

सुसंपन्न—वि० [सं० सुसम्पन्न] खूब धनाढ्य। संपत्तिशाली [को०]।

सुसंभाव्य¹—संज्ञा पुं० [सं० सुसन्भाव्य] रैवत मनु के एक पुत्र का नाम।

सुसंभाव्य²—वि० जो अधिक संभाव्य या होनेवाला हो [को०]।

सुसंस्कृत—वि० [सं०] १. उत्तम संस्कारवाला। सभ्य। शिष्ट। २. घृत आदि के साथ सुपक्व। ३ भली प्रकार शुद्ध किया हुआ [को०]।

सुस(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वसृ] दे० 'सुसा'। उ०—परी कामवश ताकी सुस जाके मुंड दश कीने हाव भाव चित्त चाव एक वद सो। दीप सुत नैन दै सुनैनन चलाय रही जानकी निहार मन रही न आनंद सो।—हनुमन्नाटक (शब्द०)।

सुसकना—क्रि० अ० [हिं० सिसकना] दे० 'सिसकना'। उ०—(क) पालने झूलो मेरे लाल पियारे। सुसकनि की हौं बलिबलि करौ तिल तिल हठ न करहु जे दुलारे।—सूर (शब्द०)। (ख) कपि पति काम सँवार, वाली अध सुसकत परयो। तब ताही की नार रघुपति सो बिनती करे।—हनुमन्नाटक (शब्द०)। (ग) अति कठोर दोउ काल से भरम्यो अति झझक्यो। जागि परयो तहँ कोउ नही जिय ही जिय सुसक्यो। —सूर (शब्द०)। (घ) घूँघट मैं सुसकै भरै साँसै ससै मुख नाह के सौहे न खोलै। —सुंदरीसर्वस्व (शब्द०)।

सुसकल्यो†—संज्ञा पुं० [सं० शश] खरगोश। खरहा। शशा (डिं०)।

सुसका†—संज्ञा पुं० [अनु०] हुक्का। (सुनार)।

सुसज्जित—वि० [सं०] भली भाँति सजा या सजाया हुआ। भली भाँति श्रृंगार किया हुआ। शोभायमान।

सुसताना—क्रि० अ० [फा० सुस्त + हिं० आना (प्रत्य०)] श्रम मिटाना। थकावट दूर करना। विश्राम करना। आराम करना। जैसे,—इतनी दूर से आते आते थक गए हैं, जरा सुसता लें, तो आगे चलें।

सुसती—संज्ञा स्त्री० [फा० सुस्ती] दे० 'सुस्ती'।

सुसत्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] कालिका पुराण के अनुसार राजा जनक की एक पत्नी का नाम।

सुसत्व—वि० [सं० सुसत्त्व] १. दृढ़। मजबूत। २ शूर। वीर। बहादुर [को०]।

सुसन, सुसना—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का साग। विच्छत्रक [को०]।

सुसनी†—संज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'सुसना'।

सुसबद(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुशब्द] कीर्ति। यश। (डिं०)।

सुसभेय—वि० [सं०] उत्तम सभासद्। सुसभ्य। सभाचतुर [को०]।

सुसम—वि० [सं०] १ समतल। भली प्रकार चौरस। २ सुचिक्कण। खूब चिकना। ३ आकार प्रकार में शुद्ध। सुडौल [को०]।

सुसमय—संज्ञा पुं० [सं०] वे दिन जिनमें अकाल न हो। अच्छा समय। सुकाल। सुभिक्ष।

सुसमा¹—संज्ञा स्त्री० [सं० उष्मा] अग्नि। (डिं०)।

सुसमा(पु)²—संज्ञा स्त्री० [सं० सुषमा] दे० 'सुषमा'।

सुसमाहित—वि० [सं०] १ अच्छे ढंग से एकत्र किया हुआ। अच्छी तरह भूषित। २ अत्यंत सुंदर। ३ पूरी तरह भारयुक्त अथवा पूरित। ४ अत्यंत एकनिष्ठ या अवहित [को०]।

सुसर—संज्ञा पुं० [सं० श्वसुर] दे० 'ससुर'। उ०—वधू ने स्वर्गवासी सुसर की दोनों रानियों की समान भक्ति से वंदना की। —लक्ष्मण सिंह (शब्द०)।

सुसरण—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

सुसरा—संज्ञा पुं० [सं० श्वसुर] दे० 'ससुर'। उ०—कोई कोई दुष्ट राजपूत अपनी लड़कियों को मार डालते हैं कि जिसमें किसी का सुसरा न बनना पड़े।—शिवप्रसाद (शब्द०)।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग प्रायः गाली में अधिक होता है। जैसे,—(क) सुसरे ने कम तौला है। (ख) सुसरा कहीं का।

सुसरार—संज्ञा स्त्री० [हिं० ससुराल] दे० 'ससुराल'।

सुसरारि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० ससुराल] दे० 'ससुराल'।

ससुराल—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वसुरालय] ससुर का घर। ससुराल।

सुसरित—संज्ञा स्त्री० [सं० सु + सरित] नदियों में श्रेष्ठ, गंगा। उ०—गे मुनि अवध बिलोकि सुसरित नहाएउ। सतानंद दस कोटि नाम फल पाएउ।—तुलसी (शब्द०)।

सुसरी¹—संज्ञा स्त्री० [हिं० ससुर] दे० 'ससुरी'।

सुसरी²—संज्ञा स्त्री० [अनु०] दे० 'सुरसुराहट', 'सुरसुरी'।

सुसर्तु—संज्ञा स्त्री० [सं०] ऋग्वेद के अनुसार एक नदी का नाम।

सुसर्मा—संज्ञा पुं० [सं० सुशर्मन्] दे० 'सुशर्मा'।

सुसह¹—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

सुसह²—वि० १ सहज में उठाने या सहने योग्य। जो सहज में उठाया या सहन किया जा सके। २. जो सहन कर सके। सहनशील [को०]।

सुसहाय—वि० [सं०] जिसके अच्छे साथी या सहायक हों [को०]।

**सुसा**(पु)¹—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ स्वसृ] बहन। भगिनी। स्वसा। उ॰—उ॰—पचवटी सुदर लखि रामा। मोहत भई सुपनखा वामा। रावन सुसा राम ते भाषा। पुनि सीता भोजन अभिलाषा।—गिरिधरदास (शब्द॰)।

**सुसा**²—संज्ञा पु॰ [देश॰] एक प्रकार का पक्षी। उ॰—हनत सुसा वुज्जर उतग।—सूदन (शब्द॰)।

**सुसाइटी**—संज्ञा स्त्री॰ [अ॰ सोसाइटी] दे॰ 'सोसाइटी'।

**सुसाधन**—वि॰ [सं॰] जो सरलता से साधा जा सके या प्रमाणित हो सके [को॰]।

**सुसाधित**—वि॰ [सं॰] १ अच्छी तरह साधा हुआ या शिक्षित। २ सम्यक् पाचित। पकाया या सिद्ध किया हुआ।

**सुसाध्य**—वि॰ [सं॰] [संज्ञा सुसाधन] जिसका सहज मे साधन किया जा सके। जो सहज मे किया जा सके। सुखसाध्य। सहजसाध्य। २ सरलता से नियत्रित करने योग्य। ३ सरल। आसान। साधारण।

**सुसाना**(पु)—क्रि॰ अ॰ [हिं॰ साँस] सिसकना। उ॰—रामहिं राज्य विदेश वसे सुत सोच कियो यह वात न चगी। एक उपाय करो सु फिरे मत ह्वै वर वेलेउ माँग सुरगी। भूपण डारत आँचर लेत है जात सुसात सुपाइन नगी। दौर चली पिय पै वर माँगत मानहु काल कराल भुजगी।—हनुमन्नाटक (शब्द॰)।

**सुसामुझि**(पु)—वि॰ [सं॰ सु + हिं॰ समझ] अच्छी समझवाला। सुबुद्धि। समझदार। उ॰—नाम रूप दुइ ईस उपाधी। अकथ अनादि सुसामुझि साधी।—तुलसी (शब्द॰)।

**सुसायटी**—संज्ञा स्त्री॰ [अ॰ सोसायटी] दे॰ 'सोसाइटी'।

**सुसार**¹—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ नीलम। इद्रनील मणि। २ लाल खैर। रक्त खदिर वृक्ष। ३ उत्तम सार या तत्व (को॰)। ४ क्षमता। सामर्थ्य (को॰)। ५ सारयुक्त वस्तुएँ। पक्वान्न आदि। उ॰—पठई जनक अनेक सुसारा।—मानस, १।३३३।

**सुसार**²—वि॰ अत्यत सारयुक्त [को॰]।

**सुसारना**†—क्रि॰ स॰ [हिं॰ सु + सारना] अच्छी तरह समझाना या सारना।

**सुसारवत्**¹—संज्ञा पुं॰ [सं॰] विल्लौर। स्फटिक।

**सुसारवत्**²—वि॰ उत्तम सार या तत्व से युक्त [को॰]।

**सुसिकता**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ चीनी। शर्करा। २ ककड। कँकरी। बजरी। ३ अच्छी रेत या वालू [को॰]।

**सुसिक्त**—वि॰ [सं॰] अच्छी तरह सीचा हुआ।

**सुसिद्ध**—वि॰ [सं॰] १ जिसे उत्तम सिद्धि प्राप्त हो। २ भली प्रकार सिद्ध किया हुआ। पका या पकाया हुआ [को॰]।

**सुसिद्धि**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] साहित्य मे एक प्रकार का अलकार। जहाँ परिश्रम एक मनुष्य करता है, पर उसका फल दूसरा ही भोगता है, वहाँ यह अलकार माना जाता है। उ॰—साधि साधि औरै मरै औरै भोगै सिद्ध। तासो कहत सुसिद्धि सब जे है वुद्धि समृद्ध।—केशव (शब्द॰)।

**सुसिर**—संज्ञा पु॰ [सं॰] दाँत का एक रोग।

**विशेष**—वाग्भट के अनुसार यह रोग पित्त और रक्त के कुपित होने से होता है। इसमे दाँतो की जड फूल जाती है, उसमे बहुत दर्द होता है, खून निकलता है और मास कटने या गिरने लगते है

**सुसीतलताई**(पु)—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ सुशीतलता] दे॰ 'सुशीतलता'।

**सुसीता**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] सेवती। शतपत्री।

**सुसीम**¹—वि॰ [सं॰ सुसम] शीतल। ठढा। (डि॰)।

**सुसीम**²—वि॰ [सं॰] जिसका सीमत या सीम शोभन हो।

**सुसीम**³—संज्ञा पुं॰ विंदुसार का एक पुत्र [को॰]।

**सुसीमा**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ जैनो के अनुसार छठे अर्हत् की माता का नाम। २ उत्तम सीमा। सुदर सीमा (को॰)।

**सुसुकना**†—क्रि॰ अ॰ [हिं॰ सिसकना] दे॰ 'सिसकना'।

**सुसुंडी**—संज्ञा स्त्री॰ [सुर सुर से अनु॰] एक प्रकार का कीडा जो जौ मे लगता है और उसके सार भाग को खा जाता है। सुरसुरी।

**सुसुनिया**—संज्ञा पुं॰ [देश॰] एक पहाड जो वगाल प्रदेश के वाँकुडा जिले मे है।

**विशेष**—यहाँ चौथी शताब्दी का एक शिलालेख है जिससे जाना जाता है कि पुष्कर के राजा चद्रवर्मा ने इस पहाड पर चक्रस्वामी की स्थापना की थी।

**सुसुपी**(पु)—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ सुषुप्ति] दे॰ 'सुषुप्ति'। उ॰—सुख दुख है मन के धरम नही आतमा माँहि। ज्यों सुसुपी मैं द्वदुख मन विन भासै नाँहि।—दीनदयाल (शब्द॰)।

**सुसुम**(पु)—वि॰ [सं॰ सुषमा] सुदर। उ॰—जहँ पिय सुसुम कुसुम लै मुकर गुही हे वेनी।—नद॰ ग्र॰, पृ॰ १६।

**सुसुरप्रिया**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] चमेली। जातीपुष्प।

**सुसूक्ष्म**¹—संज्ञा पुं॰ [सं॰] परमाणु।

**सुसूक्ष्म**²—वि॰ अत्यत सूक्ष्म। वहुत बारीक या छोटा। २ अत्यत कोमल। अतीव मृदु (को॰)। ३ तेज। तीव्र। तीक्ष्ण। प्रखर। जैसे सूक्ष्म वुद्धि (को॰)।

**सुसूक्ष्मपत्रा**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] आकाशमासी। जटामासी। वालछड।

**सुसूक्ष्मेश**—संज्ञा पु॰ [सं॰] (परमाणुओ के प्रभु या स्वामी) विष्णु का एक नाम।

**सुसृत**—वि॰ [सं॰] खूब तप्त।

**सुसेन**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सुषेण] दे॰ 'सुषेन'।

**सुसेव्य**—वि॰ [सं॰] १ अच्छी तरह सेवा करने योग्य। २ सरलता से गमन करने योग्य। जैसे, पथ, मार्ग [को॰]।

**सुसैंधवी**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ सुसैन्धवी] सिंध देश की अच्छी घोडी।

**सुसो**(पु)—संज्ञा पुं॰ [सं॰ शश] खरगोश। खरहा। (डि॰)।

**सुसौभग**—संज्ञा पु॰ [सं॰] दापत्य सुख। पति पत्नी सवधी सुख।

**सुस्कदन**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सुस्कन्दन] वर्वर वृक्ष।

**सुस्कंध**—वि॰ [सं॰ सुस्कन्ध] सुदर स्कध या तनेवाला।

सुस्नात—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसने यज्ञ के उपरांत स्नान किया हो। २ वह जिसने भली भाँति स्नान किया हो [को०]।

सुस्निग्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक लता का नाम।

सुस्पर्श—वि० [सं०] १ जिसका स्पर्श सुखद हो। २ नरम। मृदु। कोमल [को०]।

सुस्फीत—वि० [सं०] १ जो सम्यक् रूप से स्फीत हो। २ खूब उन्नति करनेवाला [को०]।

सुस्मित—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० स्त्री० सुस्मिता] हँसमुख। हँसोड़।

सुस्मिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] मधुर हासयुक्त महिला। प्रसन्न वदनवाली स्त्री [को०]।

सुस्रग्धर—वि० [सं०] सुंदर माला धारण करनेवाला [को०]।

सुस्रोता—संज्ञा स्त्री० [सं० सुस्रोतस्] हरिवंश के अनुसार एक नदी का नाम।

सुस्वध—संज्ञा पुं० [सं०] पितरों की एक श्रेणी या वर्ग।

सुस्वधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कल्याण। मंगल। २ सौभाग्य। खुशकिस्मती।

सुस्वन¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ शंख। २ सुंदर ध्वनि।

सुस्वन²—वि० १. उत्तम शब्द या ध्वनि से युक्त। २. बहुत ऊँचा। बुलंद। ३ सुंदर। ४ सुस्वर।

सुस्वप्न—संज्ञा पुं० [सं०] १ शुभ स्वप्न। अच्छा सपना। २ शिव जी का एक नाम।

सुस्वर¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुस्वरा] सुंदर या उत्तम स्वरयुक्त। जिसका सुर या कंठध्वनि मधुर हो। सुकंठ। सुरीला। २ अत्यंत ऊँचा या तीक्ष्ण। बुलंद। घोर (ध्वनि)।

सुस्वर²—संज्ञा पुं० १ सुंदर या उत्तम स्वर। २ गरुड के एक पुत्र का नाम। ३ शंख। ४ जैनों के अनुसार वह कर्म जिसमे मनुष्य का स्वर मधुर और सुरीला होता है।

सुस्वरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुस्वर का भाव या धर्म। २ वंशी के पाँच गुणों में से एक।

सुस्वरयंत्रक—संज्ञा पुं० [सं० सुस्वरयन्त्रक] एक प्रकार का मधुर स्वरयुक्त तंत्रवाद्य [को०]।

सुस्वांत—वि० [सं० सुस्वान्त] अच्छे अंतःकरणवाला। प्रसन्नचित्त।

सुस्वाद—वि० [सं०] दे० 'सुस्वादु'।

सुस्वादु¹—वि० [सं०] अत्यंत स्वादयुक्त। बहुत स्वादिष्ट। बहुत जायकेदार। खुशजायका।

सुस्वादु²—संज्ञा पुं० अच्छा जायका या स्वाद।

सुस्वाप—संज्ञा पुं० [सं०] गहरी नींद [को०]।

सुस्विन्न—वि० [सं०] १ अच्छी तरह उबाला या पकाया हुआ। २ अच्छी तरह सिक्त या तर [को०]।

सुहग(पु)—वि० [हिं० महँगा का अनु०] कम मूल्य का। सस्ता। महँगा का उलटा।

सुहगम(पु)—वि० [सं० सुगम] सहज। आसान।

सुहँगा—वि० [हिं० महँगा का अनु०] सस्ता। जो महँगा न हो। उ०—मुलतानी धर मन वसी सुहँगा नइ सेलार। —ढोला०, दू० २२६।

सुहटा(पु)—वि० [हिं० सुहावना, तुल० सुघटित] [वि० स्त्री० सुहटी] सुहावना। सुंदर। उ०—सुनु ए कपटी दशकंध हठी दोउ राम रटी न कछूक घटी। हर धूरजटी कमठी खपटी सम तारे रटी जनवाचकटी। न ठटी रतिनाथ छटी तिनको नित नाचत मुक्त नटी सुहटी।—हनुमन्नाटक (शब्द०)।

सुहड़—संज्ञा पुं० [सं० सुभट, प्रा० सुहड] सुभट। योद्धा। शूरवीर। (डिं०)।

सुहनी(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोहनी] दे० 'सोहनी'।

सुहनु¹—संज्ञा पुं० [सं०] एक असुर का नाम जिसका उल्लेख महाभारत मे है।

सुहनु²—वि० जिसकी ठुड्डी सुंदर या सुडौल हो [को०]।

सुहवत—संज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'सोहवत'।

सुहवती—वि० [अ० सुहवत] मेलजोल या दोस्ती रखनेवाला। साथ उठने बैठनेवाला।

सुहर—संज्ञा पुं० [सं०] एक असुर का नाम।

सुहराना—क्रि० स० [हिं० सहलाना] दे० 'सहलाना'।

सुहराब—संज्ञा पुं० [फा०] ईरान का एक प्रसिद्ध वीर जो अपने पिता रुस्तम के हाथों मारा गया।

सुहल(पु)¹—संज्ञा पुं० [अ० सुहैल] एक तारा।

सुहल²—वि० [सं०] अच्छे हलवाला।

सुहव—संज्ञा पुं० [हिं० सूहा] दे० 'सूहा' (राग)। उ०—सारंग गुंड मलार सोरठ सुहव सुघरनि बाजहीं। बहु भाँति तान तरंग सुनि गंधर्व किन्नर लाजहीं।—तुलसी (शब्द०)।

सुहवि¹—संज्ञा पुं० [सं० सुहविस्] १ एक आंगिरस का नाम। २ भुमन्यु के एक पुत्र का नाम।

सुहवि²—वि० सुंदर हवि देनेवाला। धार्मिक [को०]।

सुहवी(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सूहा' (राग)। उ०—राग रागिनी सींचि मिलाई गावैं सुघर मलार। सुहवी सारंग टोडी अरु भैरवी केदार।—सूर (शब्द०)।

सुहसानन—वि० [सं०] हँसमुख। विहसितवदन [को०]।

सुहस्त¹—संज्ञा पुं० [सं०] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

सुहस्त²—वि० [वि० स्त्री० सुहस्ता] १ सुंदर हाथोंवाला। २ कार्य मे कुशल हाथोंवाला।

सुहस्ती—संज्ञा पुं० [सं० सुहस्तिन्] एक जैन आचार्य का नाम।

सुहस्त्य¹—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।

सुहस्त्य²—वि० दे० 'सुहस्त²' [को०]।

सुहा—संज्ञा पुं० [हिं० सुआ] [स्त्री० सुही] लाल नामक पक्षी।

सुहाग¹—संज्ञा पुं० [सं० सौभाग्य] १ स्त्री की सधवा रहने की अवस्था। अहिवात। सौभाग्य।

मुहा०—सुहाग उजडना = पति की मृत्यु होना। वेवा होना। सुहाग उतरना = (१) दे० 'सुहाग उजडना'। (२) पति की मृत्यु पर सधवा स्त्री के सौभाग्यचिह्न सिंदूर, आभूषण आदि का उतारा जाना। सुहाग मनाना = अखंड भाग्य की कामना करना। पति-सुख के अखंड रहने के लिये कामना करना। सुहाग भरना = माँग भरना।

२ वह वस्त्र जो वर विवाह के समय पहनता है। जामा। ३ मंगल-गीत जो वरपक्ष की स्त्रियाँ विवाह के अवसर पर गाती हैं। ४ वे आभूषण, वस्त्र आदि जो सौभाग्यवती स्त्रियाँ पहनती हैं। ५ एक प्रकार का इत्र। ६ प्यार भरी बातें।

यौ०—सुहाग डला = वह डलिया जिसमें विवाह के समय की आवश्यक सामग्री जैसे,—रोली, मेहदी, नारा आदि रखकर वरपक्ष की ओर से कन्या के घर जाता है। सुहाग घोडी = विवाह के समय दूल्हे के घर पर गाए जानेवाले गीत। सुहाग पिटरिया, सुहाग पिटारा, सुहाग पिटारी = वह पेटी जिसमें गहने आदि तथा सोहाग की अन्य सामग्री विवाह के समय कन्या के लिये वरपक्ष से भेजी जाती है। सुहागपुडा या पुडिया = एक प्रकार की कागज की पुडिया जिसमें मांगलिक वस्तुएँ रखकर वरपक्ष की ओर से दी जाती हैं।

सुहाग²—संज्ञा पुं० [हिं० सुहागा] दे० 'सुहागा'।

सुहागन—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुहाग] दे० 'सुहागिन'।

सुहागा¹—संज्ञा पुं० [सं० सुभग] एक प्रकार का क्षार जो गरम गंधकी स्रोतों से निकलता है। कनकक्षार। टंकण।

विशेष—यह तिब्बत, लद्दाख और कश्मीर में बहुत मिलता है। यह छींट छापने, सोना गलाने तथा ओषधि के काम में आता है। इसे घाव पर छिडकने से घाव भर जाता है। मीना इसी का किया जाता है और चीनी के बर्तनों पर इसी से चमक दी जाती है। वैद्यक के अनुसार यह कटु, उष्ण तथा कफ, विष, खाँसी और श्वास को हरनेवाला है।

पर्या०—लोहद्रावी। टंकण। सुभग। स्वर्णपाचक। रसशोधन। कनकक्षार आदि।

सुहागा²—संज्ञा पुं० [सं० समभाग] १ हेंगा। २ दे० 'सोहागा'।

सुहागिन—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुहाग + इन (प्रत्य०)] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। सधवा स्त्री। सौभाग्यवती स्त्री। उ०—(क) मान कियो सपने में सुहागिन भौंहें चढी मतिराम रिसौंहै।—मतिराम (शब्द०)। (ख) तब मुरली नँदलाल पै भई सुहागिन आइ।—रसनिधि (शब्द०)।

सुहागिनि, सुहागिनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुहाग + इनी (प्रत्य०)] दे० 'सुहागिन'। उ०—जाय सुहागिनी वसति जो अपने पीहर धाम। लोग बुरी शंका करैं यदपि सती हू वाम।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)।

सुहागिल(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुहाग + इल (प्रत्य०)] दे० 'सुहागिन'। उ०—तोसों दुरावति हौं न कछू जिहि तें न सुहागिल सौति कहावै।—अगार्यकौमुदी (शब्द०)।

सुहागी—वि० [हिं० सुहाग] सौभाग्यशील। भाग्यशाली।

सुहाता—वि० [हिं० सहना] जो सहा जा सके। सहने योग्य। सह्य। उ०—वही (वायु) मध्याह्नकालीन सूर्य की तीक्ष्ण तपन को सुहाता करती है।—गोल विनोद (शब्द०)। (ख) तेल को तपाकर सुहाता सुहाता कान में डालो।—नूतनामृतसागर (शब्द०)।

सुहान—संज्ञा पुं० [सं० शोभन] १ वैश्यों की एक जाति। २ दे० 'सोहाल'।

सुहाना¹—क्रि० अ० [सं० शोभन] १ शोभायमान होना। शोभा देना। उ०—(क) शंकर शैल शिलातल मध्य किधौं शुक की अवली फिरि आई। नारद बुद्धि विशारद दीप किधौं तुलसीदल माल सुहाई।—केशव (शब्द०)। (ख) यज्ञ नाम हरि तव चलि आए। कोटि अर्क सम तेज सुहाए।—गि० दास (शब्द०)। (ग) कामदेव कहँ पूजती ऐसी रही सुहाय। नव पल्लव युत पेड जनु लता रही लपटाय।—बालमुकुंद गुप्त (शब्द०)। २ अच्छा लगना। भला मालूम होना। उ०—(क) भयो उदास सुहात न कछु ये छन सोवत छन जागे।—सूर (शब्द०)। (ख) फूली लता द्रुम कुंज सुहान लगे।—सुंदरीसर्वस्व (शब्द०)।

सुहाना²—वि० [वि० स्त्री० सुहानी] दे० 'सुहावना'। उ०—(क) सारी पृथ्वी इस वसंत की वायु से कैसी सुहानी हो रही है।—हरिश्चंद्र (शब्द०)। (ख) सौतिन दियो सुहाग ललन हू आजु सयानी। जामिनि कामिनि स्याम काम की समैं सुहानी।—व्यास (शब्द०)।

सुहाया(पु)—वि० [हिं० सुहाना] [वि० स्त्री० सुहाई] जो देखने में भला जान पडता हो। सुहावना। सुंदर। उ०—(क) सबै सुहाये ही लगैं बसे सुहाये ठाम। गोरे मुँह बेंदी लसे अरुन पीत सित स्याम।—बिहारी (शब्द०)। (ख) यमुना पुलिन मल्लिका मनोहर शरद सुहाई यामिनि। सुंदर शशि गुण रूप राग निधि अंग अंग अभिरामिनि।—सूर (शब्द०)। (ग) भयहु बतावत राह सुहाई। तब तिहि सौं बोले दुहु भाई।—पद्माकर (शब्द०)। (घ) मेरे तो नाहिंने चंचल लोचन नाहिंने केशव बानि सुहाई। जानो न भूपण भेद के भाव न भूलहू नैनहिं भौंह चढाई।—केशव (शब्द०)।

सुहारी—संज्ञा स्त्री० [सं० सु + आहार] सादी पूरी नामक पकवान जिसमें पीठी आदि नहीं भरी रहती।—उ०—(क) कान्ह कुँवर को कनछेदनो है हाथ सुहारी भेली गुर की।—सूर (शब्द०)। (ख) घी न लगे, सुहारी होय। (कहा०)।

सुहाल—संज्ञा पुं० [सं० सु + आहार] एक प्रकार का नमकीन पकवान जो मैदे का बनता है। यह बहुत मोयनदार होता है और इसका आकार प्रायः तिकोना होता है।

सुहाली—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुहारी] दे० 'सुहारी'।

सुहाव(पु)¹—वि० [हिं० सुहाना] सुहावना। सुंदर। भला। अच्छा। उ०—(क) सरवर एक अनूप सुहावा। नाना जंतु कमल बहु छावा।—सबल (शब्द०)। (ख) देखि मानसर रूप सुहावा। हिय हुलास पुरइन होइ छावा।—जायसी (शब्द०)।

सुहाव[2]—संज्ञा पुं० [सं० सु + हाव] सुदर हाव। उ०—किधौ यह केशव शृगार की है सिद्धि किधौं भाग की सहेली कै सुहाग को सुहाव है।—केशव (शब्द०)।

सुहावता—वि० [हिं० सुहाना] [वि० स्त्री० सुहावती] अच्छा लगनेवाला। सुहावना। भला। उ०—इस समय इसके मनभावती सुहावती बात कहूँ।—लल्लू (शब्द०)।

सुहावन(पु)—वि० [हिं० सुहाना] दे० 'सुहावना'। उ०—जगमगात नृप गात वरम वर परम सुहावन।—गिरिधर (शब्द०)।

सुहावना[1]—वि० [हिं० सुहाना] [वि० स्त्री० सुहावनी] जो देखने मे भला मालूम हो। सुदर। प्रियदर्शन। मनोहर। जैसे, सुहावना समय, सुहावना दृश्य, सुहावना रूप।

सुहावना[2]—क्रि० अ० दे० 'सुहाना'। उ०—कछु औरहु वात सुहावत है।—श्रीनिवास (शब्द०)।

सुहावनापन—संज्ञा पु० [हिं० सुहावना + पन (प्रत्य०)] सुहावना होने का भाव। सुदरता। मनोहरता।

सुहावला(पु)—वि० [हिं० सुहावना] दे० 'सुहावना'। उ०—पारसी पाँति की पीपर पत्र लिख्यौ किधो मोहिनी मत्र सुहावली।—सुदरीसर्वस्व (शब्द०)।

सुहास[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुहासा] चारु या मधुर हास्ययुक्त। सुदर या मधुर मुसकानवाला। उ०—उतते नेकु इतै चितै राति विर्तै तजि कोह। तेरो वदन सुहास से ससि प्रकास सो सोह।—शृगारसतसई (शब्द०)।

सुहास[2]—संज्ञा पु० सुदर हास्य। मोहक हँसी।

सुहासिनी[1]—वि० [सं०] सुदर हँसी हँसनेवाली। मधुर मुसकानवाली।

सुहासिनी[2]—संज्ञा स्त्री० सौभाग्यवती स्त्री। सधवा स्त्री।

सुहासी—वि० [सं० सुहासिन्] [स्त्री० सुहासिनी] सुदर हँसनेवाला। मधुर मुसकानवाला। चारुहासी।

सुहित—वि० [सं०] १ वहुत लाभकारी। उपयोगी। २ किया हुआ। सपादित। ३ तृप्त। सतुष्ट। ४ मित्र। स्नेही (को०)। ५ उपयुक्त। ठीक।

सुहिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक जिह्वा का नाम। २ रुद्रजटा।

सुहिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुआ] दे० 'सुहा'।

सुही—वि० [देश०] लाल। लाल रगवाला। उ०—इदीवर दलनि मिलाय सोनजुही गुही, सुही माल हाल रूप, गुन न परै गनै।—घनानद, पृ० १२३।

सुहू—संज्ञा पु० [सं०] उग्रसेन के एक पुत्र का नाम।

सुहूँ(पु)—वि० [सं० शुद्ध ?] ठीक। पूरा। उ०—धन आनँद जान सजीवन सो कहिये तौ समै लहिये न सुहूँ।—घनानद, पृ० ७४।

सुहृत्—संज्ञा पु० [सं०] १ अच्छे हृदयवाला। २ मित्र। सखा। वधु। दोस्त।

यौ०—सुहृत्याग = सुहृत् का परित्याग। सुहृत्प्राप्ति = मित्र का मिलना। सुहृत्प्रेम = मित्र के प्रति प्रेम।

३ ज्योतिष के अनुसार लग्न से चौथा स्थान जिससे यह जाना जाता है कि मित्र आदि कैसे होगे।

सुहृत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुहृत् होने का भाव या धर्म। २ मित्रता। दोस्ती।

सुहृत्व—संज्ञा पु० [सं०] सुहृत्ता। मैत्री।

सुहृद्—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुहृत्'।

यौ०—सुहृद्‌वल = मित्र राष्ट्र की सेना। सुहृद्‌भेद = (१) मित्र का अलग होना। मैत्री न रहना। (२) हितोपदेश का दूसरा परिच्छेद। सुहृद्वाक्य = मित्र की सलाह। अच्छी सलाह। उत्तम मत्र।

सुहृद—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव का एक नाम। २ मित्र। सखा। दोस्त।

सुहृदय—वि० [सं०] १ अच्छे हृदयवाला। उन्नतमना। २ सहृदय। स्नेहशील।

सुहेल—संज्ञा पु० [अ०] एक प्रसिद्ध चमकीला सितारा जो फारसी तथा अरवी के कवियो के अनुसार यमन देश मे उगता है। उ०—विछुरता जव भेटै सो जानै जेहि नेह। सुक्ख सुहेला उग्गवै दुख झरे जिमि मेह।—जायसी (शब्द०)।

विशेष—कहते हैं, इसके उदय होने पर सव कीडे मकोडे मर जाते हैं और चमडे मे सुगध उत्पन्न हो जाती है। यह शुभ और सौभाग्य का सूचक माना जाता है।

सुहेलरा(पु)—वि० [हिं० सुहेला + रा (प्रत्य०)] दे० 'सुहेला'। उ०—आज सुहेलरो सोहावन सतगुरु आए मोरे धाम।—कवीर (शब्द०)।

सुहेला[1]—वि० [सं० शुभ या सुखकेलि, प्रा० सुहेल्लि] १ सुहावना। सुदर। उ०—साँझ समै ललना मिलि आई खरो जहाँ नँदलाल अलवेलो। खेलन को निसि चाँदनी माँह वनै न मतो मतिराम सुहेलो।—मतिराम (शब्द०)। २ सुखदायक। सुखद। उ०—मरना मीत सुहेला। विछुरन खरा दुहेला।—दादू (शब्द०)।

सुहेला[2]—संज्ञा पु० १ मगलगीत। २ स्तुति। स्तव।

सुहेस‡—वि० [सं० शुभ] अच्छा। सुदर। भला।

सुहैल—संज्ञा पु० [अ०] एक वहुत ऊँचा तारा जिसका दर्शन शुभ माना जाता है।

सुहोता—संज्ञा पु० [सं० सुहोतृ] १ वह जो उत्तम रूप से हवन करता हो। अच्छा होता। २ अभिमन्यु के एक पुत्र का नाम। ३ वितथ के एक पुत्र का नाम।

सुहोत्र—संज्ञा पु० [सं०] १ एक वैदिक ऋषि का नाम। २ एक वार्हस्पत्य का नाम। ३ एक आत्रेय का नाम। ४ एक कौरव का नाम। ५ सहदेव के एक पुत्र का नाम। ६ भुमन्यु के एक पुत्र का नाम। ७ वृहत्क्षत्र के एक पुत्र का नाम। ८ वृहदिषु के एक पुत्र का नाम। ९ सुधन्वा के एक पुत्र का नाम। १० एक

दैत्य का नाम। ११ एक वानर का नाम। १२ वितथ के एक पुत्र का नाम। १३ क्षत्रवृद्ध के एक पुत्र का नाम।

सुह्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन प्रदेश का नाम जो गौड़ देश के पश्चिम में था। २ यवनों की एक जाति। ३ सुह्म प्रदेश का निवासी (को०)।

सुह्मक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुह्म'।

सूँ⁽ᵖ⁾—अव्य० [सं० सह, प्रा० सहुँ, सयँ० सउँ, सउ] करण और अपादान कारक का चिह्न। सो। से। उ०—(क) कह्यो द्विजन सूँ सुनहु पियारे।—रघुराज (शब्द०)। (ख) कहत थकी ये चरन की नई अरुनई बाल। जाके रँग रँगि स्याम सूँ विदित कहावत लाल।—शृंगारसतसई (शब्द०)।

सूँइस—संज्ञा स्त्री० [सं० शिशुमार] दे० 'सूँस'।

सूँघना—क्रि० स० [सं० √शिङ्घ (= आघ्राण) = शिङ्घति, प्रा० सिंघ, देशी सुघ] १ घ्राणेंद्रिय या नाक द्वारा किसी प्रकार की गंध का ग्रहण या अनुभव करना। आघ्राण करना। बास लेना। महक लेना।

मुहा०—सिर सूँघना = बड़ों का मंगलकामना के लिये छोटों का मस्तक सूँघना। बड़ों का गद्‌गद होकर छोटों का मस्तक सूँघना। जमीन सूँघना = (१) पिनक लेना। ऊँघना। (२) किसी अस्त्र के वार से जमीन पर गिर पड़ना।

२ बहुत अल्प आहार करना। बहुत कम भोजन करना। (व्यंग)। जैसे,—आप तो खाली सूँघकर उठ बैठे। ३ साँप का काटना। जैसे,—बोलता क्यों नहीं? क्या साँप सूँघ गया है?

सूँघा—संज्ञा पुं० [हिं० सूँघना] १ वह जो नाक से केवल सूँघकर यह बतलाता हो कि अमुक स्थान पर जमीन के अंदर पानी या खजाना आदि है। २ सूँघकर शिकार तक पहुँचनेवाला कुत्ता। ३ भेदिया। जासूस। मुखबिर।

सूँठ†—संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्ठि, हिं० सोंठ] दे० 'सोंठ'।

सूँड—संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्ड] हाथी की नाक जो बहुत लंबी होती है और नीचे की ओर प्रायः जमीन तक लटकती रहती है। शुंड। शुंडादंड।

विशेष—यह लंबाई में प्रायः हाथी की ऊँचाई तक होती है। इसमें दो नथने होते हैं। हाथी इसी से हाथ का भी काम लेता है। यह इतनी मजबूत होती है कि हाथी इससे पेड़ उखाड़ सकता है और भारी से भारी चीज उठाकर फेंक सकता है। इसी से वह खाने की चीजें उठाकर मुँह में रखता है और दमकल की तरह पानी फेंकता और पीता है। इससे वह जमीन पर से सूई तक उठा सकता है।

सूँडदंड†—संज्ञा पुं० [हिं० सूँड + दंड] हाथी। (डिं०)।

सूँडहल†—संज्ञा पुं० [सं० शुण्ड + हल (प्रत्य० ?)] हाथी। (डिं०)।

सूँडा†—संज्ञा पुं० [सं० शुण्डा] हाथी की सूँड या नाक। (डिं०)।

सूँडाल⁽ᵖ⁾—संज्ञा पुं० [सं० शुण्डाल] दे० 'शुंडाल'।

सूँडि†—संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्ड, प्रा० सुंड] दे० 'सूँड'।

सूँडी—संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्डी] एक प्रकार का सफेद कीड़ा जो कपास, अनाज, रेंडी, ऊख आदि के पौधों को हानि पहुँचाता है।

सूँतना†—क्रि० स० [सं० सहस्त + हिं० ना (प्रत्य०)] सैंतना। साफ करना। काछना। उ०—श्रीनाथ जी की गौंडन तरेंं की वह पटेल कीच सूँतत रहे।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० २१४।

सूँधी—संज्ञा स्त्री० [सं० शोधन] सज्जी मिट्टी।

सूँपना†—क्रि० स० [सं० समर्पण, प्रा० समप्पण, हिं० सउँपना, सौंपना] दे० 'सौंपना'। उ०—बनड़ा नूँ सूँपै बनी, हतलेवे मिल हाथ।—बाँकी० ग्र०, भा० २, पृ० ५८।

सूँब—वि० [हिं० सूम] दे० 'सूम'। उ०—सूँब सूँब कहै सरब दिन, जाचक पाडै बूँब।—बाँकी० ग्र०, भा० २, पृ० ३५।

सूँस¹—संज्ञा स्त्री० [सं० शिशुमार] एक प्रसिद्ध बड़ा जलजंतु जो लंबाई में ८ से १२ फुट तक होता है और जिसके हर एक जबड़े में तीस दाँत होते हैं। सूँस। सूसमार। उ०—लेन गया वह थाह सूँसि लै गा घिसिआई।—पलटू०, पृ० ८८।

विशेष—यह पानी के बहाव में पाया जाता है और एक जगह नहीं रहता। साँस लेने के लिये यह पानी के ऊपर आता है और पानी की सतह पर थोड़ी देर तक रहता है। शीतकाल में कभी कभी यह जल के बाहर निकल आता है। इसकी आँखें बहुत कमजोर होती हैं और यह मटमैले पानी में नहीं देख सकता। इसका आहार मछलियाँ और झिंगवा है। यह जाल में फँसाकर या बर्छियों से मार मारकर पकड़ा जाता है, इसका तेल जलाने तथा कई दूसरे कामों में आता है।

सूँस†²—संज्ञा स्त्री० [सं० शपथ] सौंह। उ०—सूँस करै कवडी सटै, ते गुण घटे तमाम।—बाँकी० ग्र०, भा० २, पृ० ४२।

सूँह¹—अव्य० [सं० सम्मुख पु०हिं० सौंहे] समुख। सामने। उ०—साध सती औ सूरमा, दई न मोडैं मूँह। ये तीनो भागे बुरे, साहेब जा की सूँह।—कबीर सा० सं०, भा० १, पृ० २४

सू¹—वि० [सं०] उत्पन्न करने या पैदा करनेवाला। (समासांत में प्रयुक्त)। जैसे, वीरसू।

सू²—संज्ञा स्त्री० १ उत्पत्ति। पैदाइश। प्रसव। जन्म। २ माता। जननी (को०)।

सू³—संज्ञा स्त्री० [फा०] ओर। तरफ। दिशा। उ०—नजर आती है हर सू सूरते ही सूरते मुझको।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ११६।

सू⁴—संज्ञा स्त्री० [तुर्की] शराब। मद्य। मदिरा (को०)।

सूअर—संज्ञा पुं० [सं० शूकर, सूकर, प्रा० सुअर, सूअर] [स्त्री० सुअरी, सूअरी] १ एक प्रसिद्ध स्तन्यपायी वन्य जंतु। वराह। शूकर।

विशेष—यह मुख्यतः दो प्रकार का होता है। (१) वन्य या जंगली और (२) ग्राम्य या पालतू। ग्राम्य सूअर घास आदि के सिवा विष्ठा भी खाता है, पर जंगली सूअर घास और कंद मूल आदि ही खाता है। यह ग्राम्य शूकर की अपेक्षा बहुत बड़ा और बलवान् होता है। यह प्रायः मनुष्यों पर ही आक्रमण करता है, और उन्हें मार डालता है। इसके कई भेद हैं। इसका लोग शिकार करते हैं और कुछ जातियाँ इसका मांस भी खाती

हैं। राजपूतों मे जंगली सूअरों के शिकार की प्रथा बहुत दिनों से प्रचलित है। इसके शिकार मे बहुत अधिक वीरता और साहस की आवश्यकता होती है। कहीं कहीं इसकी चरबी मे पूरियाँ पकाई जाती है, और इसका मांस पकाकर या अचार के रूप मे खाया जाता है। वैद्यक के मत से जंगली सूअर मेद, बल और वीर्यवर्धक है।

पर्या०—शूकर। सूकर। दंष्ट्री। भूदार। स्थूलनासिक। दंतायुध। वक्रवस्त्र। दीर्घतर। आखनिक। भूक्षित। स्तब्धरोमा। मुखलांगूल आदि।

२ निकृष्टता सूचक एक प्रकार की गाली। जैसे,—सूअर कहीं का।

**सूअरबियान**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूअर + बिआना (=जनना)] १ वह स्त्री जो प्रति वर्ष बच्चा जनती हो। बरस बियानी। बरसाइन। २ हर साल अधिक बच्चे जनने की क्रिया।

**सूअरमुखी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूअर + मुखी] ज्वार का एक प्रकार। बड़ी जोन्हरी या ज्वार।

**सूआ**[1]—संज्ञा पुं० [सं० शुक, प्रा० सूअ] सुग्गा। तोता। शुक। कीर। उ०—सूआ सरस मिलत प्रीतम सुख सिंधुवीर रस मान्यो। जानि प्रभात प्रभाती गायो भोर भयो दोउ जान्यो।—सूर (शब्द०)।

**सूआ**[2]—संज्ञा पुं० [सं० शूक (=नुकीला अग्रभाग)] १ बड़ी सूई। २ सीख। (लश०)।

**सूआन**—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।

विशेष—यह वृक्ष बरमा, चटगाँव और स्याम मे होता है इसके पत्ते प्रति वर्ष झड़ जाते हैं। इसकी लकड़ी इमारत और नाव के काम मे आती है। इससे एक प्रकार का तेल भी निकलता है।

**सूई**—संज्ञा स्त्री० [सं० सूची] १ पक्के लोहे का छोटा पतला तार जिसके एक छोर मे बहुत बारीक छेद होता है और दूसरे छोर पर तेज नोक होती है। छेद मे तागा पिरोकर इससे कपड़ा सिया जाता है। सूची।

यौ०—सूई तागा। सूई डोरा। सूई का काम = सूई से बनाई हुई कारीगरी जो कपड़ों पर होती है। सूई का नाका = सूई का छेद।

क्रि० प्र० पिरोना।—सीना।

मुहा०—सूई का फावड़ा बनाना = जरा सी बात को बहुत बड़ा बनाना। बात का बतगड़ करना। सूई का भाला बनाना = दे० 'सूई का फावड़ा बनाना'। उ०—जो लोग प्रिंस हुमायूँ फर के खिलाफ थे उन्होंने सूई का भाला और तिनके का झंडा बनाया।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ३०६।

२ पिन। ३ महीन तार का काँटा। तार या लोहे का काँटा जिससे कोई बात सूचित होती है। जैसे,—घड़ी की सूई, तराजू की सूई। ४ अनाज, कपास आदि का अँखुआ। ५ सूई के आकार का एक पतला तार जिससे गोदना गोदा जाता है। ६ सूई के आकार का एक तार जिससे पगड़ी की चुनन बैठाते है।

**सूईकार**—संज्ञा पुं० [सं० सूचीकार] सूई से सिलाई करनेवाला दर्जी। उ०—जरकसी सूईकार के बहु भाँति तन पै धारही।—प्रेमघन०, पृ० ११५।

**सूईडोरा**—संज्ञा पुं० [हिं० सूई + डोरा] मालखंभ की एक कसरत।

विशेष—पहले सीधी पकड़ के समान मालखंभ के ऊपर चढ़ने के समय एक बगल मे से पाँव मालखंभ को लपेटते हुए बाहर निकालना और सिर को उठाना पड़ता है। उस समय हाथ छूटने का बड़ा डर रहता है। इसमें पीठ मालखंभ की तरफ और मुँह लोगों की तरफ होता है। जब पाँव नीचे आ चुकता है, तब ऊपर का उलटा हाथ छोड़कर मालखंभ को छाती से लगाए रहना पड़ता है। यह पकड़ बड़ी ही कठिन है।

**सूक**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ तीर। बाण। २ वायु। हवा। ३ कमल। ४ रुद्र के एक पुत्र का नाम।

**सूक**(पु)†[2]—संज्ञा [सं० शुक्र] शुक्र नक्षत्र। शुक्र तारा। उ०—(क) जग सूझा एकै नयनाहाँ। उआ सूक जस नखतन्ह माहाँ।—जायसी (शब्द०)। (ख) नासिक देखि लजानेउ सूआ। सूक आइ बेसर होइ ऊआ।—जायसी ग्रं० (गुप्त), पृ० १८२।

**सूकछम**†—वि० [सं० सूक्ष्म, पु०हिं० सूक्षम, सूच्छम] दे० 'सूक्ष्म'। उ०—गुरु जी औ सूकछम का कुछ भेद पाऊँ। तुमारे चरन के तो बलिहार जाऊँ।—दक्खिनी०, पृ० २६०।

**सूकना**(पु)†—क्रि० अ० [सं० शुष्क, प्रा० सुक्क + हिं० ना (प्रत्य०)] दे० 'सूखना'। उ०—(क) माँगो वर कोटि चोट बदलो न चूकत है, सूकत है मुख सुधि आये वहाँ हाल है।—भक्तमाल (शब्द०)। (ख) जैसे सूकत सलिल के विकल मीन मति होय।—दीनदयाल (शब्द०)। (ग) सुनि कागर नृपराज प्रभु भी आनद सुभाइ। मानो बल्ली सूकते बीरा रस जल पाइ।—पृ० रा०, १२।६६।

**सूकर**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सूकरी] १ सूअर। शूकर। २ एक प्रकार का हिरन। ३ कुम्हार। कुंभकार। ४ सफेद धान। ५ एक नरक का नाम। ६ एक मछली (को०)।

**सूकर**[2]—संज्ञा पुं० [सं० सु + कर] सुकर्म करनेवाले। सुकर्मी। उ०—बहु न्हाइ न्हाइ जेहि जल स्नेह। सब जात स्वर्ग सूकर सुदेह।—राम च०, पृ० ४।

**सूकरकंद**—संज्ञा पुं० [सं० सूकर + कन्द] वाराहीकंद।

**सूकरक**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का शालिधान्य।

**सूकरक्षेत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम जो मथुरा जिले मे है और जो अब 'सोरो' नाम से प्रसिद्ध है।

**सूकरखेत**—संज्ञा पुं० [सं० सूकरक्षेत्र] दे० 'सूकरक्षेत्र'। उ०—मैं पुनि निज गुर सन सुनी कथा सो सूकरखेत। समुझी नहिं तस बालपन तब अति रहेउँ अचेत।—मानस, १।३०।

**सूकरगृह**—संज्ञा पुं० [सं०] शूकरों के रहने का स्थान। खोभार।

**सूकरता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूअर होने का भाव। सूअर की अवस्था। सूअरपन।

**सूकरदंष्ट्र**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का गुदभ्रंश (काँच निकलने का) रोग जिसमें खुजली और दाद के साथ बहुत दर्द होता है और ज्वर भी हो जाता है।

सूकरदंष्ट्रक—संज्ञा [सं०] दे० 'सूकरदंष्ट्र' (को०)।

सूकरनयन—संज्ञा पुं० [सं०] काठ मे किया जानेवाला एक प्रकार का छेद।

सूकरपादिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किवाँच। कपिकच्छु। कौंछ। २ सेम। कोलशिवी।

सूकरप्रिया, सूकरप्रेयसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथिवी का एक नाम।

सूकरमुख—संज्ञा पुं० [सं०] एक नरक का नाम।

सूकराक्रांता—संज्ञा स्त्री० [सं० सूकराक्रान्ता] वराहक्रांता।

सूकराक्षिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का नेत्र रोग।

सूकरास्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक बौद्ध देवी का नाम जिसे वाराही भी कहते है।

सूकराह्वया—संज्ञा पुं० [सं०] गठिवन। ग्रथिपर्ण।

सूकरिक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पौधा।

सूकरिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की चिड़िया।

सूकरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सूअरी। शूकरी। मादा सूअर। २ वराहक्राता। ३ वाराहीकद। गेठी। ४ एक देवी का नाम। वाराही। ५ एक प्रकार की चिडिया।।

सूकरेष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] १ कसेरू। २ एक प्रकार का पक्षी।

सूकशम ‡—वि० [सं० सूक्ष्म, पुं०हिं० सूक्षम, सूच्छम] दे० 'सूक्ष्म'। उ०—ना सूल सूँ ना सूकशम सूँ है काम। है मूल सूँ तुज मेरा सरजाम।—दक्खिनी०, पृ० १७२।

सूका[1]—संज्ञा पुं० [सं० सपादक (=चतुर्थांश सहित)] [स्त्री० सूकी] १ चार आने के मूल्य का सिक्का। चवन्नी। २ सिक्को के लिखने मे चवन्नी का चिह्न जो एक खडी रेखा (।) के रूप मे लगाते हैं।

सूका[2]—वि० [सं० शुष्क, पा० सुक्ख, प्रा० सुक्क] सूखा। शुष्क। नीरस। उ०—दादू सूका रूँखडा काहे न हरिया होइ। आवै खीचै अमीरस, सुफल फलिया सोइ।—दादू०, पृ० ४६१।

सूका[3]—संज्ञा पुं० अवर्षण। सूखा। उ०—अति काल सूका पडै, तौ निरफल कदे न जाइ।—कबीर ग्र०, पृ० ५८।

सूकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूका (=चवन्नी ?)] रिश्वत। घूस।

सूकूत—संज्ञा पुं० [अ०] चुप्पी। खामोशी। मौन। उ०—यह आपके बेजार होने का इजहार है और सूकूत के आलम का सुबूत है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २४।

सूकृत—संज्ञा पुं० [सं० सुकृत] पुण्य। पुण्य कार्य। उ०—जगजिवन दास गुरु चरन गहि, सत सूकृत धन धाम।—जग० श०, भा० २, पृ० ६६।

सूक्त[1]—संज्ञा [सं०] १ वेदमंत्रो या ऋचाओ का समूह। वैदिक स्तुति या प्रार्थना। जैसे—देवीसूक्त, अग्निसूक्त, श्रीसूक्त आदि। २ उत्तम कथन। उत्तम भाषण। ३ महद्वाक्य।

सूक्त[2]—वि० उत्तम रूप से कथित। भली भाति कहा हुआ।

यौ०—सूक्तद्रष्टा = सूक्तदर्शी। सूक्तभाक् = जिसके लिये सूक्त कहे जायें। सूक्तवाक = (१) मंत्र का पाठ। (२) एक यज्ञ। सूक्तवाक्य = उत्तम वाणी। सूक्ति।

सूक्तदर्शी—वि० [सं० सूक्तदर्शिन्] उत्तम वाक्य या परामर्श माननेवाला।

सूक्तदर्शी—संज्ञा पुं० [सं० सूक्तदर्शिन्] वह ऋषि जिसने वेदमंत्रो का अर्थ किया हो। मंत्रद्रष्टा।

सूक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] मैना। शारिका।

सूक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम उक्ति या कथन। सुंदर पद या वाक्य आदि। बढिया कथन।

सूक्तिक—संज्ञा पुं० [सं०] संगीत मे प्रयुक्त एक प्रकार का करताल या झाँझ।

सूक्षम[1]—वि० [सं० सूक्ष्म] दे० 'सूक्ष्म'। उ०—साँचे की सी ढारी अति सूक्षम सुधारि, कढी केशोदास अंग अंग भाइ के उतारी सी।—केशव (शब्द०)।

सूक्षम[2]—संज्ञा पुं० एक काव्यालंकार। सूक्ष्म नामक अलंकार। उ०—कौनहु भाव प्रभाव ते जानैं जिय की बा । इंगित ते आकार ते कहि सूक्षम अवदात।—केशव (शब्द०)।

सूक्ष्म[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सूक्ष्मा] १ बहुत छोटा। जैसे,—सूक्ष्मजंतु। २ बहुत बारीक या महीन। जैसे,—सूक्ष्म बात। ३ उत्तम। श्रेष्ठ। कलात्मक। उम्दा (को०)। ४ तेज। चोखा (को०)। ५ ठीक। सही (को०)। ६ कोमल। मृदु (को०)। ७ धूर्त। चालाक।

सूक्ष्म[2]—संज्ञा पुं० १ परमाणु। अणु। २ परब्रह्म। ३ लिंगशरीर। ४ शिव का एक नाम। ५ एक दानव का नाम। ६ एक काव्यालंकार जिसमे चित्तवृत्ति को सूक्ष्म चेष्टा से लक्षित कराने का वर्णन होता है। दे० 'सूक्ष्म'। ७ निर्मली। ८ जीरा। जीरक। ९ छल। कपट। १० रीठा। अरिष्टक। ११ सुपारी। पूग। १२ वह ओषधि जो रोमकूप के मार्ग से शरीर मे प्रविष्ट करे। जैसे—नीम, शहद, रेंडी का तेल, सेंधा नमक, आदि। १३ बृहत्संहिता के अनुसार एक देश का नाम। १४ जैनियो के अनुसार एक प्रकार का कर्म जिसके उदय से मनुष्य सूक्ष्म जीवो की योनि मे जन्म लेता है। १५ योग की तीन शक्तियो मे से एक (को०)। १६ दाँत का खोखला या खोढर (को०)। १७ सूक्ष्म होने का भाव। सूक्ष्मता (को०)। १८ बारीक, महीन या उत्तम डोरा (को०)।

सूक्ष्मकृशफला, सूक्ष्मकृष्णफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] कठजामुन। छोटा जामुन। क्षुद्र जंबू।

सूक्ष्मकोण—संज्ञा पुं० [सं०] वह कोण जो समकोण से छोटा हो।

सूक्ष्मघंटिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सूक्ष्मघण्टिका] सनई। क्षुद्र शणपुष्पी।

सूक्ष्मचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चक्र।

सूक्ष्मतंडुल—संज्ञा पुं० [सं० सूक्ष्मतण्डुल] १ पोस्त दाना। खसखस। २ सर्जरस। धूना।

सूक्ष्मतंडुला—संज्ञा स्त्री० [सं० सूक्ष्मतण्डुला] १ पीपल। पिप्पली। २ राल। सर्जरस। ३ एक प्रकार की घास (को०)।

सूक्ष्मता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूक्ष्म होने का भाव। बारीकी। महीनपन। सूक्ष्मत्व।

सूक्ष्मतुंड—संज्ञा पुं० [सं० सूक्ष्मतुण्ड] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का कीडा।

सूक्ष्मत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूक्ष्मता'।

सूक्ष्मदर्शक यंत्र—संज्ञा पुं० [सं० सूक्ष्मदर्शक + यन्त्र] एक यंत्र जिसके द्वारा देखने पर सूक्ष्म पदार्थ बड़े दिखाई देते है। अणुवीक्षण यंत्र। खुर्दबीन।

सूक्ष्मदर्शिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूक्ष्मदर्शी होने का भाव। सूक्ष्म या बारीक बात सोचने समझने का गुण।

सूक्ष्मदर्शी—वि० [सं० सूक्ष्मदर्शिन्] १ सूक्ष्म विषय को समझनेवाला। बारीक बात को सोचने समझनेवाला। कुशाग्रबुद्धि। २ अत्यंत बुद्धिमान्। ३ तीव्र या तीखी दृष्टिवाला (को०)।

सूक्ष्मदल—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की सरसों। देवसर्षप।

सूक्ष्मदला—संज्ञा स्त्री० [सं०] धमासा। दुरालभा।

सूक्ष्मदारु—संज्ञा पुं० [सं०] काठ की पतली पटरी या तख्ता।

सूक्ष्मदृष्टि¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह दृष्टि जिससे बहुत ही सूक्ष्म बातें भी दिखाई दें या समझ में आ जायँ।

सूक्ष्मदृष्टि²—संज्ञा पुं० वह व्यक्ति जो सूक्ष्म से सूक्ष्म बातें भी देख या समझ लेता है।

सूक्ष्मदेह—संज्ञा स्त्री० [सं०] लिंग शरीर। सूक्ष्म शरीर [को०]।

सूक्ष्मदेही¹—संज्ञा पुं० [सं० सूक्ष्मदेहिन्] परमाणु जो बिना अणुवीक्षण के दिखाई नहीं पड़ता।

सूक्ष्मदेही²—वि० सूक्ष्म शरीरवाला। जिसका शरीर बहुत ही सूक्ष्म या छोटा हो।

सूक्ष्मनाभ—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम।

सूक्ष्मपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ धनिया। धन्याक। २ काली जीरी। वनजीरक। ३ देवसर्षप। ४ छोटा बैर। लघु बदरी। ५ माचीपत्र। सुरपर्ण। ६ जंगली बर्बरी। वन बर्बरी। ७ लाल ऊख। लोहितेक्षु। ८ कुकरौंदा। कुकुंदर। ९ कीकर। बबूल। १०. धमासा। दुरालभा। ११ उड़द। माष। १२ अर्कपत्र।

सूक्ष्मपत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पित्तपापड़ा। पर्पटक। वनतुलसी। वनबर्बरी।

सूक्ष्मपत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वनजामुन। २ शतमूली। ३ वृहती। ४ धमासा। ५ अपराजिता या कोयल नाम की लता। ६ लाल अपराजिता। ७ जीरे का पौधा। ८ बला।

सूक्ष्मपत्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सौंफ। शतपुष्पा। २ सतावर। शतावरी। ३ लघु ब्राह्मी। ४ पोई। क्षुद्रपोदकी। ५ धमासा। दुरालभा (को०)। ६ आकाशमासी (को०)।

सूक्ष्मपत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आकाशमासी। २ सतावर। शतावरी।

सूक्ष्मपर्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विधारा। वृद्धदारु। २ छोटी शण-पुष्पी। छोटी सनई। ३ वनभटा। वृहती।

सूक्ष्मपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] रामतुलसी। रामदूती।

सूक्ष्मपाद—वि० [सं०] छोटे पैरोंवाला। जिसके पैर छोटे हों।

सूक्ष्मपिप्पली—संज्ञा स्त्री० [सं०] जंगली पीपल। वनपिप्पली।

सूक्ष्मपुष्पा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सनई। शणपुष्पी।

सूक्ष्मपुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शंखिनी। २ यवतिक्ता नाम की लता।

सूक्ष्मफल—संज्ञा पुं० [सं०] १ लिसोड़ा। २ भूकर्बुदार। सूक्ष्म बदर।

सूक्ष्मफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ भुईं आँवला। भूम्यामलकी। २ तालीसपत्र। ३ मालकँगनी। महाज्योतिष्मती लता।

सूक्ष्मबदर—संज्ञा पुं० [सं०] लघुबदर। झरबेर [को०]।

सूक्ष्मबदरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] झरबेर। भूबदरी।

सूक्ष्मबीज—संज्ञा पुं० [सं०] पोस्तदाना। खसखस।

सूक्ष्मबुद्धि¹—वि० [सं०] सूक्ष्म या तलस्पर्शी बुद्धिवाला [को०]।

सूक्ष्मबुद्धि²—संज्ञा स्त्री० दे० 'सूक्ष्ममति' [को०]।

सूक्ष्मभूत—संज्ञा पुं० [सं०] आकाशादि शुद्ध भूत जिनका पंचीकरण न हुआ हो।

विशेष—सांख्य के अनुसार पंचतन्मात्र अर्थात् शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध तन्मात्र, ये अलग अलग सूक्ष्मभूत हैं। इन्हीं पंच-तन्मात्र से पंचमहाभूतों की उत्पत्ति हुई है। पंचीकृत होने पर आकाशादि भूत स्थूलभूत कहलाते है। विशेष दे० 'तन्मात्र'।

सूक्ष्ममक्षिक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सूक्ष्ममक्षिका] मच्छड़। मशक।

सूक्ष्ममति—वि० [सं०] तीक्ष्णबुद्धि। जिसकी बुद्धि तेज हो।

सूक्ष्ममान—संज्ञा पुं० [सं०] १ ठीक ठीक तौल या नाप। स्थूलमान का उलटा। २ वह मान जिसमें सूक्ष्म अंतर भी ज्ञात हो सके [को०]।

सूक्ष्ममूला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जयंती। जियंती। २ ब्राह्मी।

सूक्ष्मलोभक—संज्ञा पुं० [सं०] जैन मतानुसार मुक्ति की चौदह अव-स्थाओं में से दसवीं अवस्था।

सूक्ष्मवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ताम्रवल्ली। २ जतुका नाम की लता। ३ करेली। लघु कारवेल्ल।

सूक्ष्मशरीर—संज्ञा पुं० [सं०] पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेंद्रियाँ, पाँच सूक्ष्म-भूत, मन और बुद्धि इन सत्रह तत्वों का समूह।

विशेष—सांख्य के अनुसार शरीर दो प्रकार का होता है—स्थूल शरीर और सूक्ष्म शरीर। हाथ, पैर, मुँह, पेट आदि अंगों से युक्त शरीर स्थूल शरीर कहलाता है। परंतु इस स्थूल शरीर के नष्ट हो जाने पर इसी प्रकार का एक और शरीर बच रहता है। जो उक्त सत्रह अंगों और तत्वों का बना हुआ होता है। इसी को सूक्ष्म शरीर कहते हैं। यह भी माना जाता है कि जब तक मुक्ति नहीं होती, तब तक इस सूक्ष्म शरीर का आवागमन बराबर होता रहता है। स्वर्ग और नरक आदि का भोग भी इसी सूक्ष्म शरीर को करना पड़ता है।

सूक्ष्मशर्करा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बालू। बालुका।

सूक्ष्मशाक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की बबुरी जिसे जलबबुरी भी कहते हैं।

सूक्ष्मशालि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का महीन सुगंधित चावल जिसे सोरो कहते है।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यह मधुर, लघु तथा पित्त, अर्श और दाहनाशक है।

**सूक्ष्मषट्चरण**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का सूक्ष्म कीडा जो पलको की जड मे रहता है।

**सूक्ष्मस्फोट**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का कोढ। विचर्चिका रोग।

**सूक्ष्मा[1]**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जूही। यूथिका। २ छोटी इलायची। ३. करुणी नाम का पौधा। ४. मूसली। तालमूली। ५ बालू। बालुका। ६ सूक्ष्म जटामासी। ७ विष्णु की नौ शक्तियो मे से एक।

**सूक्ष्मा[2]**—वि० स्त्री० दे० 'सूक्ष्म[1]'।

**सूक्ष्माक्ष**—वि० [सं०] सूक्ष्म दृष्टिवाला। तीव्रदृष्टि। तेज नजर का।

**सूक्ष्मात्मा**—संज्ञा पुं० [सं० सूक्ष्मात्मन] शिव। महादेव।

**सूक्ष्माह्वा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] महामेदा नामक अष्टवर्गीय ओषधि।

**सूक्ष्मेक्षिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूक्ष्म दृष्टि। तेज नजर।

**सूक्ष्मैला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटी इलायची।

**सूख**(पु)‡—वि० [सं० शुष्क] दे० 'सूखा'। उ०—(क) कद मूल फल असन, कबहुँ जल पवनहिं। सूख बेल के पात खात दिन गवनहिं। —तुलसी ग्र०, पृ० ३२। (ख) धर्मपाश और कालपाश पुनि दुव दारुन दोउ फाँसी। सूख ओद लीजै असनी युग रघुनदन सुखरासी।—रघुराज (शब्द०)। (ग) सूख सरोवर निकट जिमि सारस बदन मलीन।—शकरदिग्विजय (शब्द०)।

**सूखना**—क्रि० अ० [सं० शुष्क, हिं० सूख + ना (प्रत्य०)] १ आर्द्रता या गीलापन न रहना। नमी या तरी का निकल जाना। रसहीन होना। जैसे,—कपडा सूखना, पत्ता सूखना, फूल सूखना। उ०—बन मे रूख सूख हर हर ते। मनु नृप सूख बरूथ न करते।—गिरिधर (शब्द०)। २ जल का बिलकुल न रहना या बहुत कम हो जाना। जैसे,—तालाब सूखना, नदी सूखना। ३ उदास होना। तेज नष्ट होना। जैसे,—चेहरा सूखना। ४ नष्ट होना। बरबाद होना। जैसे,—फसल सूखना। ५ आर्द्रता न रहने से कडा होना। ६ डरना। सन्न होना। जैसे,—जान सूखना। ७. दुबला होना। कृश होना। जैसे,—लडका सूख गया।

मुहा०—सूखकर काँटा होना = अत्यत कृश होना। बहुत दुबला-पतला होना। उ०—बदन सूख के दो ही दिन मे काँटा हो गया। —फिसाना०, भा० ३, पृ० २३८। सूखे खेत लहलहाना = अच्छे दिन आना। सूखे धानो पानी पडना = पूर्णतः निराशा की हालत मे अकस्मात् इच्छा पूरी होना। ईप्सित की प्राप्ति होना। उ०—(क) सूखत धानु परा जनु पानी।—मानस, १।२६३। (ख) बेगम समझी थीं कि सूखे धानो पानी पडा।—फिसाना०, भा० ३, पृ० २२९।

सयो० क्रि०—जाना।

**सूखम**(पु)—वि० [सं० सूक्ष्म] दे० 'सूक्ष्म'। उ०—कवन सूखम कवन अस्थूला।—प्राण०, पृ० १।

**सूखमना**(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सुषुम्ना, पुं०हिं० सुषमन] दे० 'सुषुम्ना'। उ०—सूखमना सुर की सरिता अघ ओघहि दीनदयाल हरै।—दीन० ग्र०, पृ० १७४।

**सूखर**—संज्ञा पुं० [सं० सूक्ष्म (= शिव)] एक शैव सप्रदाय।

**सूखा[1]**—वि० [सं० शुष्क] [वि० स्त्री० सूखी] १ जिसमे जल न रह गया हो। जिसका पानी निकल, उड या जल गया हो। जैसे—सूखा तालाब, सूखी नदी, सूखी धोती। २ जिसका रस या आर्द्रता निकल गई हो। रसहीन। जैसे,—सूखा पत्ता, सूखा फूल। ३ उदास। तेजरहित। जैसे,—सूखा चेहरा। ४ हृदयहीन। कठोर। रूढ। जैसे,—वह बडा सूखा आदमी है। ५ कोरा। जैसे,— सूखा अन्न, सूखी तरकारी। ६ केवल। निरा। खाली। जैसे,—(क) वह सूखा शेखीबाज है। (ख) उसे सूखी तनखाह मिलती है।

मुहा०—सूखा टरकाना या टालना = आकाक्षी या याचक आदि को बिना उसकी कामना पूरी किए लौटाना। सूखा जवाब देना = साफ इनकार करना। उ०—वे भला आप सूख जाते क्या। मुझ न सूखा जवाब सूखा सुन।—चुभते०, पृ० १३। सूखी नसो मे लहू भरना = निराशो मे आशा का सचार करना। उ०—हम 'सूखी नसो मे लहू भरते थे। चुभते० (दो दो०), पृ० २।

**सूखा[2]**—संज्ञा पुं० १ पानी न बरसना। वृष्टि का अभाव। अवर्षण। अनावृष्टि। उ०—बारह मासउ उपजई तहाँ किया परवेस। दादू सूखा ना पडइ हम आए उस देस।—दादू (शब्द०)।

क्रि० प्र०—पडना।

२ नदी के किनारे की जमीन। नदी का किनारा। जहाँ पानी न हो।

मुहा०—सूखे पर लगना = नाव आदि का किनारे लगना।

३ ऐसे स्थान जहाँ जल न हो। ४ सूखा हुआ तबाकू का पत्ता जो चूना मिलाकर खाया जाता है। उ०—भग तमाखू सुलफा गाँजा, सूखा खूब उडाया रे।—कबीर० श०, भा० १, पृ० २५। ५ भाँग। विजया। ६ एक प्रकार की खाँसी जो बच्चो को होती है, जिससे वे प्राय मर जाते है। हब्बा डब्बा। ७ खाना अग न लगने से या रोग आदि के कारण होनेवाला दुबलापन।

मुहा०—सूखा लगना = सुखडी नामक रोग होना। ऐसा रोग लगना जिससे शरीर बिलकुल सूख जाय।

**सूखासण**(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० सुखासन] दे० 'सुखासन'। उ०—जाइ सूखासण बइठो छइ राय।—बी० रासो, पृ० २७।

**सूखिम**(पु)—वि० [सं० सूक्ष्म] दे० 'सूक्ष्म'। उ०—गई द्वारिका सूखिम वेषा।—नद० ग्र०, पृ० १२८।

**सूगध**(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्ध] दे० 'सुगध'। उ०—दरबार भीर बरनी न जाइ, सूगध बास नासा अघाइ। विगसत बदन छत्तीस वस, जदुनाथ जनम जनु जदुन वस।—पृ० रा०, १।७१५।

**सूघर**(पु)—वि० [सं० सुघट] दे० 'सुघड'।

**सूच[1]**—संज्ञा पुं० [सं०] कुश का अकुर। दर्भांकुर।

**सूच[2]**—वि० [सं० शुचि] निर्मल। पवित्र। (डिं०)। उ०—चारि बरण सो हरिजन ऊँचे। भए पवित्तर हरि के सुमिरे। मन के उज्ज्वल मन के सूचे।—शब्दवर्णन, पृ० ३०८।

सूचक¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सूचिका] १ सूचना देनेवाला। बतानेवाला। दिखानेवाला। ज्ञापक। बोधक। २ भेद की खबर देनेवाला।

सूचक²—संज्ञा पुं० १ सूई। सूची। २ सीनेवाला दरजी। ३ नाटककार। सूत्रधार। ४ कथक। ५ बुद्ध। ६ सिद्ध। ७ पिशाच। ८ कुत्ता। ९ बिल्ली। १० कौआ। ११ सियार। गीदड। १२. कटहरा। जँगला। १३ बरामदा। छज्जा। १४ ऊँची दीवार। १५ खल। विश्वासघातक। १६ गुप्तचर। भेदिया। १७ आयोगव माता और क्षत्रिय पिता से उत्पन्न पुत्र। १८ एक प्रकार का महीन चावल। सूक्ष्म शालिधान्य। सोरो। १९ चुगलखोर। पिशुन। २० शिक्षक (को०)।

यौ०- सूचक वाक्य = भेदिए द्वारा बनाई गई बात। भेदिए से मिलनेवाली सूचना।

सूचन—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सूचनी] १ बताने या जताने की क्रिया। ज्ञापन। २ सुगधि फैलाने की क्रिया। दे० 'सूचना'।

सूचना¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह बात जो किसी को बताने, जताने या सावधान करने के लिये कही जाय। प्रकट करने या जतलाने के लिये कही हुई बात। विज्ञापन। विज्ञप्ति।

क्रि० प्र०—करना।—देना।—पाना —मिलना।

२ वह पत्र आदि जिसपर किसी को बताने या सूचित करने के लिये कोई बात लिखी हो। विज्ञापन। इश्तहार। ३ अभिनय। ४ दृष्टि। ५ वेधना। छेदना। ६ भेद लेना। ७ हिंसा। मारना। ८ गधयुक्त करना।

सूचना(पु)²—क्रि० अ० [सं० सूचन] बतलाना। जतलाना। प्रकट करना। उ०—हृदय अनुग्रह इदु प्रकासा। सूचत किरन मनोहर हासा।—तुलसी (शब्द०)।

यौ०—सूचनापट्ट = वह पट्ट या तख्ती जिसपर आवश्यक निर्देश लगाए जायँ। नोटिस बोर्ड। सूचनापत्र। सूचनामत्री = सूचना विभाग का सर्वश्रेष्ठ अधिकारी। सूचना विभाग = आवश्यक जानकारी एकत्र करने और उन्हें सबद्ध जनो को विभिन्न प्रकारो से बतानेवाला विभाग।

सूचनापत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह पत्र या विज्ञप्ति जिसके द्वारा कोई बात लोगो को बताई जाय। वह पत्र जिसमे किसी प्रकार की सूचना हो। विज्ञापन। विज्ञप्ति। इश्तहार।

सूचनिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी ग्रथ मे क्या वर्णित है इसका सिलसिलेवार विवरण देनेवाली सूची। विषयनिर्देशिका। उ०—या मे इतनी कथा बखानी। ताकी सूचनिका यह जानी। —ब्रज०, पृ० ३।

सूचनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूचनिका। सूची। विषयसूची।

सूचनीय—वि० [सं०] सूचना करने के योग्य। जताने लायक।

सूचयितव्य—वि० [सं०] दे० 'सूचनीय'।

सूचा¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सूचना'।

सूचा†²—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूचित] जो होश मे हो। सावधान। उ०—नागमती कहँ अगम जनावा। गई तपनि बरषा जनु आवा। रही जो मुइ नागिन जस तूचा। जिउ पाएँ तन कै भइ सूचा। —जायसी (शब्द०)।

सूचा(पु)³—वि० [सं० शुद्ध] शुद्ध। साफ। सुच्चा। निखालिस। पवित्र। उ०—यह ससार सकल जग मैला। नाम गहे तेहि सूचा।—कबीर श०, भा०, पृ० ६।

सूचाचारी(पु)—वि० [हिं० सूचा + सं० आचारी] शुद्धता और आचार विचार माननेवाला। शौचाचारी। उ०—पडित मिसरा सूचाचारी। पाठ पढहिं अतरि अहकारी।—प्राण०, पृ० १८०।

सूचि¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सूई। २ एक प्रकार का नृत्य। ३ केवडा। केतकी पुष्प। ४ सेना का एक प्रकार का व्यूह जिसमे थोडे मे बहुत तेज और कुशल सैनिक अग्रभाग मे रखे जाते हैं और शेष पिछले भाग मे होते हैं। ५ कटहरा। जँगला। ६ दरवाजे की सिटकनी। ७ निषाद पिता और वैश्य माता से उत्पन्न पुत्र। ८ एक प्रकार का मैथुन। ९ सूप बनानेवाला। शूर्पकार। १० करण। ११ कुशा। श्वेतदर्भ। १२ दृष्टि। नजर। १३ कोई भी सूई की तरह नुकीला सिरा। जैसे, कुशसूचि (को०)। १४ दे० 'सूची'। १५ नाटकीय कर्म। नाटच अभिनय (को०)। १६ स्तूप (को०)। १७ अगचेष्टा द्वारा सकेत। हावभाव (को०)। १८ वेधन या छेदन क्रिया (को०)।

सूचि²—वि० [सं० शुचि] पवित्र। शुद्ध। (डि०)।

सूचिक—संज्ञा पुं० [सं०] सिलाई के द्वारा जीविका निर्वाह करनेवाला, दरजी। सौचिक।

सूचिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सूई। २ हाथी की सूँड। हस्तिशुड। ३ एक अप्सरा का नाम। ४ केवडा। केतकी।

सूचिकागृह, सूचिकागृहक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूचिगृहक'।

सूचिकाधर—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी। हस्ती।

सूचिकाभरण—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक मे एक प्रकार की ओषधि जो सनिपात, विसूचिका आदि प्राणनाशक रोगो की अतिम औषध मानी गई है।

विशेष—इस औषध का बिलकुल अतिम अवस्था मे ही प्रयोग किया जाता है। यदि इससे फल न हुआ तो, कहते हे, फिर रोगी नही बच सकता। इसके बनाने की कई विधियाँ है। एक विधि यह है कि रस, गधक, सीसा, काष्ठविष और काले साँप का विष इन सबको खरल कर क्रम से रोहित मछली, भैस, मोर, बकरे और सूअर के पित्त मे भावना देकर सरसो के बराबर गोली बनाई जाती हे, जो अदरक के रस के साथ दी जाती हे। दूसरी विधि यह है कि काष्ठविष, सर्पविष, दारुमुच प्रत्येक एक एक भाग, हिंगुल तीन भाग, इन सबको रोहित मछली, भैस, मोर, बकरे और सूअर के पित्त मे एक एक दिन भावना देकर सरसो के बराबर गोली बनाते हैं जो नारियल के जल के साथ देते है। तीसरी विधि यह हे कि विष एक पल और रस चार माशे, इन दोनो को एक साथ शरावपुट मे बद करके सुखाते है और बाद दो प्रहर तक बराबर आँच देते है। सनिपात के रोगी को–चाहे वह अचेत हो या मृतप्राय–सिर पर उस्तुरे से क्षत कर सूई की नोक से यह रस लेकर उसमे भर

देते है। साँप के काटने पर भी इसका प्रयोग किया जाता है। कहते है, इन सब प्रयोगो के कारण रोगी के शरीर मे बहुत अधिक गरमी आने लगती है, इसीलिये इनके उपरात अनेक प्रकार के शीतल उपचार किए जाते है।

**सूचिकामुख**—सज्ञा पुं० [सं०] शख।

**सूचिगृहक**—सज्ञा पु० [स०] सूई रखने का डब्बा या खोली [को०]।

**सूचित**—वि० [स०] १ जिसकी सूचना दी गई हो। जताया हुआ। बताया हुआ। कहा हुआ। ज्ञापित। प्रकाशित। २ बहुत उपयुक्त या योग्य। ३ जिसकी हिंसा की गई हो। ४ सकेतित (को०)। ५ वेधन किया हुआ। छिद्रित (को०)।

**सूचितव्य**—वि० [स०] सूचना के योग्य। सूच्य [को०]।

**सूचिनी**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सूई। सूचिका। २ रात्रि। रात [को०]।

**सूचिपत्र**—संज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार का ऊख। २ शिरियारी। चौपतिया। सिनिवार शाक। ३ दे० 'सूचीपत्र'।

**सूचिपत्रक**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सूचिपत्र'।

**सूचिपुष्प**—सज्ञा पु० [स०] केवडा का फूल या केतकी वृक्ष।

**सूचिभिन्न**—वि० [स०] फूलो की कली जो सूई जैसी नुकीली और ऊपर की ओर विभक्त हो [को०]।

**सूचिभेद्य**—वि० [स०] १ सूई से भेदने योग्य। २ बहुत घना। जैसे,—सूचिभेद्य अधकार।

**सूचिमल्लिका**—सज्ञा [स०] नेवारी। नवमल्लिका।

**सूचिमुख**—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सूचीमुख' [को०]।

**सूचिरदन**—सज्ञा पु० [स०] नेवला।

**सूचिरोमा**—सज्ञा पु० [स० सूचिरोमन्] सूअर। वराह।

**सूचिवत्**—सज्ञा पुं० [स०] १ गरुड। २ सूई की तरह नोकदार कोई वस्तु। नुकीली चीज (को०)।

**सूचिवदन**—सज्ञा पु० [स०] १ नेवला। नकुल। २ मच्छर। मशक।

**सूचिशालि**—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का महीन चावल। सूक्ष्म शालिधान्य। सोरो।

**सूचिशिखा**—सज्ञा स्त्री० [स०] सूई की नोक।

**सूचिसूत्र**—सज्ञा पुं० [स०] सूई मे पिरोने या सीने का धागा।

**सूची¹**—सज्ञा पुं० [स० सूचिन्] १ चर। भेदिया। २. पिशुन। चुगुलखोर। ३ खल। दुष्ट।

**सूची²**—सज्ञा स्त्री० १ कपडा सीने की सूई। २ दृष्टि। नजर। ३. केतकी। केवडा। ४ सेना का एक प्रकार का व्यूह, जिसमे सैनिक सूई के आकार मे रखे जाते है। दे० 'सूचि'। ५ सफेद कुश। ६ एक ही प्रकार की बहुत सी चीजो या उनके अगो, विषयो आदि की नामावली। तालिका। फेहरिस्त।

यौ०—सूचीपत्र।

७ साक्षी के पाँच भेदो मे से एक भेद। वह साक्षी जो बिना बुलाए स्वय आकर किसी विषय मे साक्ष्य दे। स्वयमुक्ति। ८ पिंगल के अनुसार एक रीति जिसके मात्रिक छदो की सख्या की शुद्धता और उनके भेदो मे आदि अत लघु या आदि अत गुरु की सख्या जानी जाती है। ९ सुश्रुत के अनुसार सूई के आकार का एक प्रकार का यत्र जिसके द्वारा शरीर के क्षतो मे टाँके लगाए जाते थे।

**सूची³**—वि० [स० सूचिन्] १ रहस्य खोज निकालनेवाला। भेद लेनेवाला। २ गुप्त बात, रहस्य या भेद बतानेवाला। ३ भेदन या छेदन करनेवाला। ४ बतानेवाला। जतानेवाला। व्यक्त या प्रकट करनेवाला। उ०—प्रधान सैनिक के आसन को छीन स्वय विजय सूची चिह्नो को लगा'।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २७०।

**सूचीक**—सज्ञा पु० [स०] मच्छर आदि ऐसे जतु जिनके डक सूई के समान होते है।

**सूचीकटाहन्याय**—सज्ञा पुं० [स०] सहज काम पूरा करके कठिन काम करने का दृष्टात। विशेष दे० 'न्याय' (१०४)।

**सूचीकर्म**—सज्ञा पु० [स० सूचीकर्मन्] सिलाई या सूई का काम जो ६४ कलाओ मे से एक है।

**सूचीतुड**—सज्ञा पु० [स० सूचीतुण्ड] मशक। मच्छर [को०]।

**सूचीदल**—सज्ञा पु० [स०] सितावर या सुनिषण्णक नामक शाक। शिरियारी।

**सूचीपत्र**—सज्ञा पुं० [स०] १ वह पत्र या पुस्तिका आदि जिसमे एक ही प्रकार की बहुत सी चीजो अथवा उनके अगो की नामावली हो। तालिका। २ व्यवसायियो का वह पत्र या पुस्तक आदि जिसमे उनके यहाँ मिलनेवाली सब चीजो के नाम, दाम और विवरण आदि दिए रहते है। तालिका। फेहरिस्त। ३ दे० 'सूचिपत्र'।

**सूचीपत्रक**—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सूचीपत्र'।

**सूचीपत्रा**—सज्ञा स्त्री० [स०] गाँडर दूब। गड दूर्वा।

**सूचीपद्म**—सज्ञा पुं० [स०] सेना का एक प्रकार का व्यूह।

**सूचीपाश**—सज्ञा पु० [स०] सूई का छेद या नाका जिसमे धागा पिरोया जाता है।

**सूचीपुष्प**—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सूचिपुष्प'।

**सूचीभेद्य**—वि० [स०] दे० 'सूचिभेद्य'। उ०—सूचीभेद्य अधकार मे छिपनेवाली रहस्यमयी का—प्रज्वलित कठोर नियति का—नील आवरण उठाकर झाँकनेवाला।—स्कद०, पृ० २५।

**सूचीमुख**—सज्ञा पु० [स०] १ सूई का नोक या छेद जिसमे धागा पिरोया जाता है। २ एक नरक का नाम। उ०—सूचीमुख नरकहि कर नाऊँ। ते तहँ जाइ बसावैं गाँऊ।—कबीर सा०, भा० ४, पृ० ४६५। ३ हीरक। हीरा। ४ श्वेत कुश। ५ हाथ की एक मुद्रा (को०)। ६ मशक। मच्छर (को०)। ७. पक्षी। चिडिया। (को०)।

**सूचीरोमा**—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सूचिरोमा'।

**सूचीवक्त्र¹**—सज्ञा पुं० [स०] १ स्कद के एक अनुचर का नाम। २. एक असुर का नाम।

**सूचीवक्त्र²**—वि० १ सूई की तरह मुखवाला। २ अत्यत सँकरा [को०]।

**सूचीवक्त्रा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह योनि जिसका छेद इतना छोटा हो कि वह पुरुष के समागम के योग्य न हो। वैद्यक के अनुसार यह बीस प्रकार के योनिरोगों में से एक है।

**सूचीव्यूह**—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य द्वारा निर्दिष्ट वह व्यूह जिसमें सैनिक एक दूसरे के पीछे खड़े किए गए हों।

**सूचीसूत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] धागा। दे० 'सूचिसूत्र' [को०]।

**सूच्छम**(पु)—वि० [सं० सूक्ष्म] दे० 'सूक्ष्म'। उ०—ब्रह्म लौं सूच्छम हे कटि राधे कि, देखी न काहू मुनी मुन राखी।—सुंदरीसर्वस्व (शब्द०)।

**सूच्य**—वि० [सं०] १ सूचना के योग्य। जनाने लायक। २ जो व्यंजित हो। व्यंग्य। जैसे, सूच्य अर्थ।

**सूच्यग्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुई का अग्रभाग। सूई की नोक। २ कंटक। काँटा (को०)। ३ सूई की नोक के बराबर कोई भी वस्तु। (लश०)।

**सूच्यग्रविद्ध**—वि० [सं०] काँटा या सूई की नोक से छेदा हुआ।

**सूच्यग्रस्तंभ**—संज्ञा पुं० [सं० सूच्यग्रस्तम्भ] मीनार।

**सूच्यग्रस्थूलक**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का तृण। जूर्णा। उलूक। उलप।

**सूच्याकार**—वि० [सं० सूची + आकार] सूई के आकार का। जो लंबा और नुकीला हो।

**सूच्यार्थ**—संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य में किसी पद आदि का वह अर्थ जो शब्दों की व्यंजना शक्ति से जाना जाता है।

**सूच्यास्य**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] चूहा। मूषिक।

**सूच्यास्य**[2]—वि० [सं०] जिसका मुँह सूई की तरह पतला और नुकीला हो।

**सूच्याह्व**—संज्ञा पुं० [सं०] शिरियारी। सितिवर। सुनिषण्णक शाक।

**सूछम**(पु)—वि० [सं० सूक्ष्म] दे० 'सूक्ष्म'।

यौ०—सूछमतर।

**सूछमतर**(पु)—वि० [सं० सूक्ष्मतर] अत्यंत सूक्ष्म। उ०—किधौं वासुकी वधू वासु कीनो रथ ऊपर। आदि शक्ति की शक्ति किधौं सोहनि सूछमतर।—गिरिधर (शब्द०)।

**सूछिम**(पु)—वि० [सं० सूक्ष्म] दे० 'सूक्ष्म'। उ०—जाके जैसी पीर है तैसी करइ पुकार। को सूछिम को सहज में को मिरतक तेहि वार।—दादू (शब्द०)।

**सूगंध**—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्ध] सुगंध। खशबू। (डिं०)।

**सूज**(पु)[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूझ] दे० 'सूझ'। उ०—मन माँही सब सूज ज गावै, बाहरि के बंधन सब नाषै।—रामानंद०, पृ० ५३।

**सूज**(पु)[2]—संज्ञा पुं० [सं० सूच (= दर्भांकुर)] सूजा का लघु रूप। सूई।

**सूजा**[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूजना] दे० 'सूजन'।

**सूजन**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूजना] १ सूजने की क्रिया या भाव। २ सूजने की अवस्था। फुलाव। शोथ।

**सूजना**[1]—क्रि० अ० [फा० सोजिश, तुल० सं० शोथ] रोग, चोट या वातप्रकोप आदि के कारण शरीर के किसी अंश का फूलना। शोथ होना।

**सूजना**(पु)[2]—क्रि० अ० [हिं० सूझना] सूझना। दिखाई देना। उ०—गुरुदेव बिना नहिं मारग सूजय, गुरु बिन भक्ति न जानै।—सुंदर ग्रं०, भा० १ (भू०), पृ० ११७।

**सूजनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सुजनी'।

**सूजा**—संज्ञा पुं० [सं० सूची, हिं० सूई, सूजी] १ बड़ी मोटी सूई। सूआ। उ०—तन कर गुन औ मन कर सूजा सब्द परोहन भारत।—कबीर श०, भा० ३, पृ० १०। २ लोहे का एक औजार जिसका एक सिरा नुकीला और दूसरा चिपटा और छिदा हुआ होता है। इससे कूचबंद लोग कूँचे को छेदकर बाँधते हैं। ३ रेशम फेरनेवालों का सूजे के आकार का लोहे का एक औजार जो 'मफेरू' में लगा रहता है। ४ खूँटा जो छकड़ा गाड़ी के पीछे की ओर उसे टिकाने के लिये लगाया जाता है।

**सूजाक**—संज्ञा पुं० [फा० सूजाक] मूत्रेंद्रिय का एक प्रदाहयुक्त रोग जो दूषित लिंग और योनि के संसर्ग से उत्पन्न होता है। औपसर्गिक प्रमेह।

विशेष—इस रोग में लिंग का मुँह और छिद्र सूज जाता है, ऊपर की खाल सिमट जाती है तथा उसमें खुजली और पीड़ा होती है। मूत्रनाली में बहुत जलन होती है और उसे दबाने से सफेद रंग का गाढ़ा और लसीला मवाद निकलता है। यह पहली अवस्था है। इसके बाद मूत्रनाली में घाव हो जाता है, जिससे मूत्रत्याग करने के समय अत्यंत कष्ट और पीड़ा होती है। इंद्रिय के छेद में से पीव के समान पीला गाढ़ा या कभी कभी पतला स्राव होने लगता है। शरीर के भिन्न भिन्न अंगों में पीड़ा होने लगती है। कभी कभी पेशाब बंद हो जाता है या रक्तस्राव होने लगता है। स्त्रियों को भी इससे बहुत कष्ट होता है, पर उतना नहीं जितना पुरुषों को होता है। इसका प्रभाव गर्भाशय पर भी पड़ता है जिससे स्त्रियाँ बंध्या हो जाती हैं।

**सूजी**[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शुचि (= शुद्ध) या सं० सूची (= सूई सा महीन)] गेहूँ का दरदरा आटा जो हलुआ, लड्डू तथा दूसरे पकवान बनाने के काम में आता है।

**सूजी**[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० सूची] १ सूई। उ०—ता दिन सों नेह भरे, नित मेरे गेह आइ गूथन न देत कहै मैं ही देऊँगी बनाय। बरज्यो न मानै केहू मोहि लागै डर यही कमल में कर कहूँ सूजी मति गडि जाय।—काव्यकलाप (शब्द०)। २ वह सूआ जिससे गड़ेरिए लोग कंबल की पट्टियाँ सीते हैं।

**सूजी**[3]—संज्ञा पुं० [सं० सूची] कपड़ा सीनेवाला। दरजी। सूचिक। उ०—एक सूजी ने आप दंडवत कर खड़े होकर जोड़ के कहा, महाराज ! ... दया कर कहिए तो बागे पहराऊँ।—लल्लू (शब्द०)।

**सूजी**[4]—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का सरेस जो माँड और चूने के मेल से बनता है और बाजों के पुर्जे जोड़ने के काम में आता है।

**सूझ**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूझना] १ सूझने का भाव। २ दृष्टि। नजर।

यौ०—सूझबूझ = समझ। अक्ल।

३ मन में उत्पन्न होनेवाली अनूठी कल्पना। उद्भावना। उपज। जैसे—कवियों की सूझ।

**सूझना**—क्रि॰ अ॰ [सं॰ सज्ञान] १ दिखाई देना। देख पडना। प्रत्यक्ष होना। नजर आना। जैसे,—हमे कुछ नही सूझ पडता। उ०—आँखि न जो सूझत न कानन तैं सुनियत केसोराइ जैसे तुम लोकन मे गाये हो।—केशव (शब्द०)। २ ध्यान मे आना। खयाल मे आना। जैसे,—(क) इतने मे उसे एक ऐसी बात सूझी जो मेरे लिये असभव थी। (ख) उसे कोई बात ही नही सूझती। उ०—असमजस मन को मिटै सो उपाइ न सूझै।—तुलसी (शब्द०)।

क्रि॰ प्र०—देना।—पडना।

३ छुट्टी पाना। मुक्त होना। उ०—राजा लियो चोर सो गोला। गोला देत चोर अस बोला। जो महि जनम कियो मैं चोरी। दहै दहन तौ मोरि गदोरी। अस कहि सो गोला दै सूझ्यौ। साहु सिपाही सो द्रुत बूझ्यौ।—रघुराज (शब्द०)।

**सूझबूझ**—सज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ सूझना + बूझना] देखने और समझने की शक्ति। समझ। अक्ल।

**सूझा**—सज्ञा पु॰ [देश०] फारसी सगीत मे एक मुकाम (राग) के पुत्र का नाम।

**सूट**—सज्ञा पु॰ [अ०] १ पहनने के सब कपडे, विशेषत कोट और पतलून आदि। उ०—तन अँगरेजी सूट, बूट पग, ऐनक नैनन।—प्रेमघन०, भा॰ १, पृ० १४।

यौ०—सूटकेस।

२ दावा। नालिश। जैसे,—उसने हाईकोट मे तुमपर सूट दायर किया है।

**सूटकेस**—सज्ञा पुं॰ [अ०] एक प्रकार का चिपटा बक्स जिसमे पहनने के कपडे रखे जाते है।

**सूटना**(पु)—क्रि॰ स॰ [देश०] चलाना। फेकना। उ०—हथियारन सूटै नेकु न हूटै खलदल कूटै लपटि लरै।—पद्माकर ग्र०, पृ० २७।

**सूटा**—सज्ञा पु॰ [अनु०] मूँह से तबाकू, चरस या गाँजे का धूँआ जोर से खीचना।

क्रि॰ प्र०—मारना।—लगाना।

**सूटन**(पु)—सज्ञा पुं॰ [स॰ शुक, प्रा॰ सुअ + ट (प्रत्य०), राज॰ सूट, सूडा, सूओ, सूअडो, सूवटो, सूअटो] सुग्गा। तोता। शुक। उ०—पाँच डार सूटन की आई, उतरे खेत मझारे।—कबीर श०, भा०, पृ० ३५।

**सूठरी**†—सज्ञा स्त्री॰ [देश०] भूसा। सठुरी।

**सूड**—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ शुण्ड] दे॰ 'सूँड'।

**सूडा, सूडो**(पु)†—सज्ञा पु॰ [स॰ शुक] शुक पक्षी। तोता। उ०—(क) सुणि सूडा सुदरि कहय, पखी पडगन पालि।—ढोला०, दू० ३६७। उ०—(ख) साल्ह कुँवर सूडउ कहइ मालवणी मुख जोइ।—ढोला०, दू० ४०२।

**सूत[1]**—सज्ञा पुं॰ [स॰ सूत्र, प्रा॰ सुत्त, हिं॰ सूत] १ रूई, रेशम आदि का महीन तार जिससे कपडा बुना जाता है। ततु। सूत्र।

क्रि॰ प्र०—कातना।



मुहा०—सूत सूत = जरा जरा। तनिक तनिक। सूत बराबर = बहुत सूक्ष्म। बहुत महीन।

२ रूई का बटा हुआ तार जिससे कपडा आदि सीते है। तागा। धागा। डोरा। सूत्र। ३ बच्चो के गले मे पहनने का गडा। ४ करधनी। उ०—कुजगृह मजु मधु मधुप अमद राजैं तामैं कालिह स्यामैं विपरीत रति राची री। द्विजदेव कीर कीलकठ की धुनि जैसी तैसियै अभूत भाई सूत धुनि माची री।—रसकुसुमाकर (शब्द०)।

क्रि॰ प्र०—पहनना।

५ नापने का एक मान। इमारती गज।

विशेष—चार सूत की एक पइन, चार पइन का एक तसू, और चौबीस तसू का एक इमारती गज होता है।

६ पत्थर पर निशान डालने की डोरी।

विशेष—सगतराश लोग इसे कोयला मिले हुए तेल मे डुबाकर इससे पत्थर पर निशान कर उसकी सीध मे पत्थर काटते है।

७ लकडी चीरने के लिये उस पर निशान डालने की डोरी।

मुहा०—सूत धरना = निशान करना। रेखा खीचना। बढई लोग जब किसी लकडी को चीरने लगते हैं, तब सीधी चिराई के लिये सूत को किसी रग मे डुबाकर उससे उस लकडी पर रेखा करते हैं। इसी को सूत धरना कहते है। उ०—मनहुँ भानु मडलहि सवारत, धरयो सूत विधिसुत विचित्र मति।—तुलसी (शब्द०)।

**सूत[2]**—सज्ञा पुं॰ [सं०] [स्त्री॰ सूती] १ एक वर्णसकर जाति, मनु के अनुसार जिसकी उत्पत्ति क्षत्रिय के औरस और ब्राह्मणी के गर्भ से है और जिसकी जीविका रथ हाँकना था। २ रथ हाँकनेवाला। सारथि। उ०—कर लगाम लै सूत धूत मजबूत विराजत। देखि वृहदरथपूत सुरथ सूरज रथ लाजत।—गि॰ दास (शब्द०)। ३ बदी जिनका काम प्राचीन काल मे राजाओ का यशोगान करना था। भाट। चारण। उ०—(क) मागध सूत और बदीजन ठौर ठौर यश गायो।—सूर (शब्द०)। (ख) बहु सूत मागध बदिजन नृप बचन गुनि हरषित चले।—रामाश्वमेध (शब्द०)। ४ पुराणवक्ता। पौराणिक। उ०—बाँचन लागे सूत पुराणा। मागध वशावली बखाना।—रघुराज (शब्द०)।

विशेष—सबसे अधिक प्रसिद्ध सूत लोमहर्षण हुए हैं, जो वेदव्यास के शिष्य थे और जिन्होने नैमिषारण्य मे ऋषियो को सब पुराण सुनाए थे।

५ विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम। ६ बढई। सूत्रकार। ७ सूर्य। ८ पारा। पारद। ६ सजय का एक नाम (को०)। १० क्षत्रिया स्त्री मे उत्पन्न वैश्य का पुत्र (को०)।

**सूत[3]**—वि॰ १. प्रसूत। उत्पन्न। उ०—राम नही, काम के सूत कहलाए।—अपरा, पृ० २०२। २ प्रेरणा किया हुआ। प्रेरित।

**सूति¹**—संज्ञा पुं० [सं०] १ विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम। २ हंस।

**सूतिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह स्त्री जिसने अभी हाल में बच्चा जना हो। सद्य प्रसूता। जच्चा। २ वह गाय जिसने हाल में बछड़ा जना हो। ३ दे० 'सूतिका रोग'।

**सूतिका काल**—संज्ञा पुं० [सं०] प्रसव का समय। जननकाल।

**सूतिकागार**—संज्ञा पुं० [सं०] वह कमरा या कोठरी जिसमें स्त्री बच्चा जने। सौरी। प्रसवगृह। अरिष्ट।

विशेष—वैद्यक के अनुसार सूतिकागार आठ हाथ लंबा और चार हाथ चौड़ा होना चाहिए तथा इसके उत्तर और पूर्व की ओर द्वार होने चाहिए।

**सूतिकागृह**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूतिकागार'।

**सूतिकागेह**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूतिकागार'।

**सूतिकाभवन**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूतिकागार'।

**सूतिकामारुत**—संज्ञा पुं० [सं०] प्रसव की पीड़ा [को०]।

**सूतिकारोग**—संज्ञा पुं० [सं०] प्रसूता को होनेवाले रोग।

विशेष—वैद्यक के अनुसार सूतिकारोग अनुचित आहार विहार, क्लेश, विषमासन तथा अजीर्णावस्था में भोजन करने से होते हैं। प्रसूता के अंगों का टूटना, अग्निमांद्य, निर्बलता, शरीर का काँपना, सूजन, ग्रहणी, अतिसार, शूल, खाँसी, ज्वर, नाक, मुँह से कफ निकलना आदि सूतिकारोग के लक्षण हैं।

**सूतिकाल**—संज्ञा पुं० [सं०] प्रसव करने या बच्चा जनने का समय।

**सूतिकावल्लभ रस**—संज्ञा पुं० [सं०] सूतिकारोग की एक औषध।

विशेष—यह रस पारे, गंधक, सोने, चाँदी, स्वर्णमाक्षिक, कपूर, अभ्रक, हरताल, अफीम, जावित्री और जायफल के संयोग से बनता है। ये सब चीजें बराबर बराबर लेकर इनमें मोथे, खिरैंटी और मोचरस की भावना दी जाती है। अनंतर दो दो रत्ती की गोलियाँ बनाई जाती हैं। वैद्यक के अनुसार इसके सेवन से सूतिकारोग शीघ्र दूर हो जाता है।

**सूतिकावास**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूतिकागार'।

**सूतिकाषष्ठी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] संतान के जन्म से छठे दिन होनेवाली पूजा तथा अन्य कृत्य। छठी।

**सूतिकाहर रस**—संज्ञा पुं० [सं०] सूतिकारोग का एक औषध।

विशेष—इस रस के निर्माण में हिंगुल, हरताल, शंखभस्म, लौह, खर्पर, धतूरे के बीज, यवक्षार और सुहागे का लावा बराबर बराबर पड़ता है। इन चीजों में बहेड़े के क्वाथ की भावना देकर मटर के बराबर गोली बनाते हैं। कहते हैं, इसके सेवन से सूतिकारोग दूर हो जाता है।

**सूतिग**†—संज्ञा पुं० [सं० सूतक] दे० 'सूतक'।

**सूतिगृह**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूतिकागार'।

**सूतिमारुत**—संज्ञा पुं० [सं०] बच्चा जनने की समय की पीड़ा। प्रसव-पीड़ा।

**सूतिमास**—संज्ञा पुं० [सं०] वह मास जिसमें किसी स्त्री को संतान उत्पन्न हो। प्रसवमास। वजनन।

**सूतिरोग**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूतिकारोग' [को०]।

**सूतिवात**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूतिमारुत'।

**सूती¹**—वि० [हिं० सूत + ई (प्रत्य०)] सूत का बना हुआ। जैसे—सूती कपड़ा। सूती गलीचा।

**सूती²**—संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ति प्रा० सुत्ति] १ सीपी। उ०—सूती मं नहिं सिंधु समाई।—विश्राम (शब्द०)। २ वह सीपी जिससे डोडे में की अफीम काछते हैं।

**सूती³**—संज्ञा स्त्री० [सं० सूत] सूत की पत्नी। भाटिन।

**सूतीगृह**—संज्ञा पुं० [सं०] बच्चा होने का स्थान। प्रसवगृह। उ०—अखुटत परत, सुविह्वल भयी। डरत डरत सूतीगृह गयौ।—नंद० ग्रं०, पृ० २३१।

**सूतीघर**—संज्ञा पुं० [हिं० सूती + घर] दे० 'सूतीगृह'।

**सूतीमास**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूतिमास'।

**सूत्कार**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सीत्कार'।

**सूत्तर**—वि० [सं०] १ बहुत श्रेष्ठ। बहुत बढ़कर। २ माकूल या उचित (जवाब)। ३ अत्यंत उत्तर। धुर उत्तर [को०]।

**सूत्थान¹**—वि० [सं०] चतुर। होशियार।

**सूत्थान²**—संज्ञा पुं० सम्यक् उत्थान या चेष्टा [को०]।

**सूत्पर**—संज्ञा पुं० [सं०] शराब चुवाने की क्रिया। सुरासंधान।

**सूत्पलावती**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मार्कंडेयपुराण के अनुसार एक नदी का नाम।

**सूत्य**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुत्य'।

**सूत्यशौच**—संज्ञा, पुं० [सं०] 'सूतकाशौच' [को०]।

**सूत्याशौच**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ यज्ञ के उपरांत होनेवाला स्नान। अवभृत। २ सोमरस निकालने की क्रिया। ३ सोमरस पीने की क्रिया।

**सूत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूत। तंतु। तार। तागा। डोरा। २ यज्ञसूत्र। यज्ञोपवीत। जनेऊ। ३ प्राचीन काल का एक मान। ४ रेखा। लकीर। ५ करधनी। कटिभूषण। ६ नियम। व्यवस्था। ७ थोड़े अक्षरों या शब्दों में कहा हुआ ऐसा पद या वचन जो बहुत अर्थ प्रकट करता हो। सारगर्भित संक्षिप्त पद या वचन। जैसे,—ब्रह्मसूत्र, व्याकरणसूत्र।

विशेष—हमारे यहाँ के दर्शन आदि शास्त्र तथा व्याकरण सूत्र रूप में ही ग्रथित हैं। ये सूत्र देखने में तो बहुत छोटे वाक्यों के रूप में होते हैं, पर उनमें बहुत गूढ़ अर्थ गर्भित होते हैं।

८ सूत्र रूप में रचित ग्रंथ। जैसे, अष्टाध्यायी, गृह्यसूत्र आदि (को०)। ९ कारण। निमित्त। मूल। १० पता। सुराग। संकेत। ११ एक प्रकार का वृक्ष। ११ सूत का टेर (को०)। १२ योजना। १३ तंतु। रेशा। जैसे, मृणालसूत्र (को०)। १४ कठपुतली में लगी हुई वह डोरी जिसके आधार पर उन्हें नचाते हैं (को०)।

**सूत्रकंठ**—संज्ञा पुं० [ सं० सूत्रकण्ठ ] १ ब्राह्मण।

विशेष—सूत्र कंठस्थ रहने के कारण अथवा गले में यज्ञसूत्र पहनने के कारण ब्राह्मण सूत्रकंठ कहलाते हैं।

२ कबूतर। कपोत। ३ खजन। खजरीट।

सूत्रक—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ सूत। ततु। तार। २ हार। ३ आटे या मैदे की बनी हुई सेवईं। ४ कौटिल्य के अनुसार लोहे के तारों का बना हुआ कवच।

सूत्रकर्ता—संज्ञा पुं० [ सं० सूत्रकर्तृ ] सूत्रग्रंथ का रचयिता। सूत्रों का प्रणेता।

सूत्रकर्म—संज्ञा पुं० [ सं० सूत्रकर्मन् ] १ बढ़ई का काम। २ मेमार या राज का काम।

सूत्रकर्मकृत—संज्ञा पुं० [ सं० ] १। २ गृहनिर्माणकारी। वास्तुशिल्पी। मेमार। राज।

सूत्रकार—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ वह जिसने सूत्रों की रचना की हो। सूत्रों का रचयिता। २. बढ़ई। ३ जुलाहा। ततुवाय। ४ मकड़ी।

सूत्रकृत्—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूत्रों का रचयिता। सूत्रकार। २ बढ़ई। ३ मेमार। राज।

सूत्रकोण—संज्ञा पुं० [ सं० ] डमरू।

सूत्रकोणक—संज्ञा पुं० [ सं० ] दे० 'सूत्रकोण'।

सूत्रकोश—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूत की अटी। पेचक। लच्छा।

सूत्रक्रीडा—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक प्रकार का सूत का खेल, जो ६४ कलाओं में से एक है।

सूत्रगडिका—संज्ञा स्त्री० [ सं० सूत्रगण्डिका ] एक प्रकार का लकड़ी का औजार जिसका उपयोग प्राचीन काल में ततुवाय लोग कपड़ा बुनने में करते थे।

सूत्रग्रंथ—संज्ञा पुं० [ सं० सूत्रग्रन्थ] सूत्र रूप में रचित ग्रंथ। वह ग्रंथ जो सूत्रों में हो। जैसे—सांख्यसूत्र।

सूत्रग्रह—वि० [ सं० ] सूत धारण या ग्रहण करनेवाला।

सूत्रग्राही—संज्ञा पुं० [ सं० सूत्रग्राहिन् ] राजगीर। वास्तुशिल्पी (को०)।

सूत्रण—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ सूत्र बनाने या रचने की क्रिया। २ सूत्र बटने की क्रिया। सूत्र बटने का काम। ३ क्रमबद्ध या सिलसिले से सजाना (को०)।

सूत्रतंतु—संज्ञा पुं० [ सं० सूत्रतन्तु] १ सूत। तार। २ अध्यवसाय। शक्ति (को०)।

सूत्रतर्कुटी—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] तकला। टेकुआ।

सूत्रदरिद्र—वि० [ सं० ] ( वस्त्र ) जिसमें सूत कम हो। सूत्रहीन। झँझरा। झिल्लड।

सूत्रधर—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ वह जो सूत्रों का पंडित हो। २ दे० 'सूत्रधार'—१। उ०—विधि हरि वंदित पाय, जग नाटक के सूत्रधर।—शकर दि० (शब्द०)।

सूत्रधर²—वि० सूत्र या सूत धारण करनेवाला।

सूत्रधार—संज्ञा पुं० [सं०] १ नाट्यशाला का व्यवस्थापक या प्रधान नट, जो भारतीय नाट्यशास्त्र के अनुसार, पूर्वरंग अर्थात् नांदीपाठ के उपरांत रंगभूमि में आकर नाटक की प्रस्तावना करता है। विशेष दे० 'नाटक'। २ बढ़ई। सुतार। काष्ठशिल्पी। ३ इंद्र का एक नाम। ४ पुराणानुसार एक वर्णसंकर जाति जो लकड़ी आदि बनाने और चीरने या गढ़ने का काम करती है।

विशेष—ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार इस जाति की उत्पत्ति शूद्रा माता और विश्वकर्मा पिता से है।

सूत्रधारी¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूत्रधार अर्थात् नाट्यशाला के व्यवस्थापक की पत्नी। नटी।

सूत्रधारी²—संज्ञा पुं० [सं० सूत्रधारिन्] सूत्र धारण करनेवाला।

सूत्रधृक्—संज्ञा पुं० [सं०] १ दे० 'सूत्रधार'। २ वास्तुशिल्पी। मेमार। राज।

सूत्रपदी—वि० स्त्री० [सं०] सूत्र के से अर्थात् पतले पैरोंवाली (डिं०)।

सूत्रपात—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रारंभ। शुरू। जैसे—इस काम का सूत्रपात हो गया। २ नापना। मापना (डिं०)।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

सूत्रपिटक—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्ध सूत्रों का एक प्रसिद्ध संग्रह (पालि० सुत्तपिटक)। विशेष दे० 'त्रिपिटक'।

सूत्रपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] कपास का पौधा।

सूत्रप्रोत—वि० [सं०] सूत्र में गुँथा या बद्ध (को०)।

सूत्रबद्ध—वि० [सं०] १ दे० 'सूत्रप्रोत'। २ सूत्र के रूप में लिखित या रचित (को०)।

सूत्रभिद्—संज्ञा पुं० [सं०] कपड़े सीनेवाला। दरजी।

सूत्रभृत्—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूत्रधार'।

सूत्रमध्यभू—संज्ञा पुं० [सं०] यक्षधूप। शल्लकी निर्यास। कुंदुरु। धूना।

सूत्रयंत्र—संज्ञा पुं० [सं० सूत्रयन्त्र] १ करघा। २ ढरकी। भरनी। ३ सूत का बना जाल।

सूत्रयी—वि० [सं० सूत्र] सूत्र जानने या रचनेवाला। उ०—त्रिवेद त्रिकाल त्रयी वेदकर्ता। त्रिशोभा सुनी सूत्रयी लोकभर्ता।—केशव (शब्द०)।

सूत्रला—संज्ञा स्त्री० [सं०] तकला। टेकुआ।

सूत्रवान कर्मांत—संज्ञा पुं० [सं० सूत्रवान कर्मान्त] कपड़ा बुनने का कारखाना।

विशेष—चंद्रगुप्त के समय में राज्य अपनी ओर से इस ढंग के कारखाने खड़ा करता था और लोगों को मजदूरी देकर उनसे काम लेता था।

सूत्रवाप—संज्ञा पुं० [सं०] सूत बुनने की क्रिया। वयन। बुनाई।

सूत्रविद्—संज्ञा पुं० [सं०] सूत्रों का ज्ञाता या पंडित।

सूत्रवीणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीन काल की एक प्रकार की वीणा जिसमें तार की जगह बजाने के लिये सूत्र लगे रहते थे।

सूत्रवेष्टन—संज्ञा पुं० [सं०] १ करघा। ढरकी। २ बुनने की क्रिया। वयन। बुनना। ३ सूत का बंधन।

सूत्रशाख--संज्ञा पुं० [सं०] शरीर।

सूत्रशाला--संज्ञा स्त्री० [सं०] सूत कातने या इकट्ठा करने का कारखाना।

विशेष--चंद्रगुप्त के समय मे यह नियम था कि जो स्त्रियाँ बडे तडके अपना काता हुआ सूत सूत्रशाला मे ले जाती थी, उनको उसी समय उसका मूल्य मिल जाता था। इस प्रकार स्त्रियो की जीविका का उपयुक्त प्रबध हो जाता था।

सूत्रसंग्रह--संज्ञा पुं० [सं० सूत्रसङग्रह] १ वह व्यक्ति जो लगाम पकडता है। अश्व के निश्चित स्थान पर रुकने के समय बागडोर को थामनेवाला जिससे सवार नीचे उतर सके। २ सूत्रो का संग्रह (को०)।

सूत्रस्थान--संज्ञा पुं० [सं०] सुश्रुत का प्रथम अध्याय जिसमे शरीर और रोगादि का विवरण है [को०]।

सूत्रांग--संज्ञा पुं० [सं० सूत्राङग] उत्तम कॉसा।

सूत्रांत--संज्ञा पुं० [सं० सूत्रान्त] बौद्ध सूत्र।

सूत्रांतक--संज्ञा पुं० [सं० सूत्रान्तक] बौद्ध सूत्रो का ज्ञाता या पडित।

सूत्रा--संज्ञा स्त्री० [सं० सूत्रकार] मकडी। (अनेकार्थ०)।

सूत्रात्मा--संज्ञा पुं० [सं० सूत्रात्मन्] १ जीवात्मा। २ एक प्रकार की परम सूक्ष्म वायु जो धनजय से भी सूक्ष्म कही गई है।

सूत्राध्यक्ष--संज्ञा पुं० [सं०] कपडो के व्यापार का अध्यक्ष।

सूत्रामा--संज्ञा पुं० [सं० सूत्रामन्] इद्र का एक नाम।

सूत्राली--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ माला। हार। २ गले मे पहनने की मेखला।

सूत्रिका--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हार। सूत्रक। २ सेवई [को०]।

सूत्रित--वि० [सं०] १. सूत्र रूप मे कथित या रचित। २ सूत से युक्त। ३ सिलसिलेवार लगाया हुआ [को०]।

सूत्री¹--संज्ञा पुं० [सं० सूत्रिन्] [वि० स्त्री० सूत्रिणी] १ कौआ। काक। २ दे० 'सूत्रधार'।

सूत्री²--वि० १ सूत्रयुक्त। जिसमे सूत्र हो। २ क्रम से युक्त। नियमयुक्त। सिलसिलेवार (को०)।

सूत्रीय--वि० [सं०] सूत्र सबधी। सूत्र का।

सूथन¹--संज्ञा स्त्री० [देश०] पायजामा। सुथना। उ०--बेनी सुभग नितबनि डोलत मदगामिनी नारी। सूथन जघन बाँधि नाराबँद तिरनी पर छविभारी।--सूर (शब्द०)।

सूथन²--संज्ञा पुं० बरमा, स्याम और मणिपुर के जगलो मे होनेवाला एक प्रकार का पेड।

विशेष--इसकी लकडी बहुत अच्छी होती है और इसका रस वारनिश का काम देता है। इसे 'खेऊ' भी कहते हैं।

सूथनी--संज्ञा स्त्री० [देश०] १ स्त्रियो के पहनने का पायजामा। सुथना। २ एक प्रकार का कद।

सूथार†--संज्ञा पुं० [सं० सूत्रकार प्रा० सुत्त+आर, पुंहिं० सुतार] बढई। सुतार। खाती। उ०--जब बोल्यो बीदो सूथारू। है स्वामी की गती अपारू।--राम० धर्म०, पृ० ३६५।

सूद¹--संज्ञा पुं० [फा०] १ लाभ। फायदा। २. ब्याज। वृद्धि।

क्रि० प्र०--चढना।--देना।--पाना।--लगना।--लेना।--होना।

मुहा०--सूद दर सूद = ब्याज पर ब्याज। चक्रवृद्धि। सूद पर लगाना = सूद लेकर रुपया उधार देना।

सूद²--संज्ञा पुं० [सं०] १ रसोइया। सूपकार। पाचक। २ पकी हुई दाल, रसा, तरकारी, आदि। ३ सारथि का काम। सारथ्य। ४ अपराध। पाप। ५ दोप। ऐब। ६ एक प्राचीन जनपद का नाम। ७ लोध्र। लोध। ८ विध्वस। विनाश (को०)। ९ कूप। कूआँ (को०)। १०. कीचड। कर्दम (को०)। ११ व्यजन। १२ स्रोत। चश्मा। झरना (को०)। १३ गिराना। चुआना। ढालना (को०)।

सूदक--वि० [सं०] विनाश करनेवाला।

सूदकर्म--संज्ञा पुं० [सं० सूदकर्मन्] रसोइए का काम। रधन। पाकक्रिया। भोजन बनाना।

सूदकशाला--संज्ञा स्त्री० [सं० सूदशाला] रसोईघर। पाकशाला। (डिं०)।

सूदखोर--संज्ञा पुं० [फा० सूदखोर] वह जो खूब सूद या ब्याज लेता हो।

सूदखोरी--संज्ञा स्त्री० [फा० सूदखोरी] सूदखोर का काम। सूद या ब्याज का कारोबार [को०]।

सूदता--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूदत्व'।

सूदत्व--संज्ञा पुं० [सं०] सूद या रसोइए का पद या काम। रसोईदारी।

सूदन¹--वि० [सं०] [वि० स्त्री० सूदनी] १ विनाश करनेवाला। जैसे--मधुसूदन। रिपुसूदन। उ०--नमो नमस्ते बारबार। मदन सूदन गोबिंद मुरार।--सूर (शब्द०)। २ प्यारा। प्रिय (को०)।

सूदन²--संज्ञा पुं० १ वध या विनाश करने की क्रिया। हनन। २ अगीकार या स्वीकार करने की क्रिया। अगीकरण। ३ फेंकने की क्रिया। ४ हिंदी के एक प्रसिद्ध कवि का नाम जो मथुरा के रहनेवाले थे और जिनका लिखा 'सुजानचरित्र' वीर रस का एक प्रसिद्ध काव्य है।

सूदना(पु)--क्रि० स० [सं० सूदन] नाश करना। उ०--मुदित मन वर वदन सोभा उदित अधिक उछाहु। मनहुँ दूरि कलक करि ससि समर सूदयो राहु।--तुलसी (शब्द०)।

सूदर†--संज्ञा पुं० [सं० शूद्र] शूद्र। (डिं०)।

सूदशाला--संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ भोजन बनता हो। रसोईघर। पाकशाला।

सूदशास्त्र--संज्ञा पुं० [सं०] भोजन बनाने की कला। पाकशास्त्र।

सूदा--संज्ञा पुं० [देश०] ठगो के गरोह का वह आदमी जो यात्रियो को फुसलाकार अपने दल मे ले आता है। (ठग०)।

सूदाध्यक्ष--संज्ञा पुं० [सं०] रसोइयो का मुखिया या सरदार। पाकशाला का अधिकारी।

सूदि--वि० स्त्री० [सं०] दे० 'सूदी'।

**सूदित**—वि० [सं०] १ आहत। घायल। जख्मी। २ जो नष्ट हो गया हो। विनष्ट। ३ जो मार डाला गया हो। निहत।

**सूदितृ[1]**—वि० [सं०] वध या विनाश करनेवाला।

**सूदितृ[2]**—संज्ञा पुं० रसोइया। पाककर्ता। पाचक।

**सूदी**—वि० [फ़ा० सूद] १ (पूँजी या रकम) जो सूद या ब्याज पर हो। ब्याजू। २ ब्याज पर लिया हुआ (रुपया)।

**सूदी[2]**—वि० [सं० सूदिन्] उफनकर या ऊपर से बहनेवाला [को०]।

**सूद्र**—संज्ञा पुं० [सं० शूद्र] दे० 'शूद्र'।

**सूध(पु)[1]**—वि० [सं० शुद्ध, प्रा० सुध्ध] दे० 'सूधा'। उ०—(क) नाथ करहु बालक पर छोहू। सूध दूधमुख करिय न कोहू।—तुलसी (शब्द०)। (ख) काहु करउँ सखि सूध सुभाऊ। दाहिन वाम न जानउँ काऊ।—तुलसी (शब्द०)।

**सूध[2]**—वि० दे० 'शुद्ध'। उ०—माया सो मन बीगडा ज्यो काँजी करि दूध। है कोई ससार मे मन करि देवइ सूध।—दादू (शब्द०)।

**सूध[3]**—क्रि० वि० सीधा। उ०—दूसर मारग सुनु मन लाई। देश विदर्भ सूध यह जाई।—सबलसिंह (शब्द०)।

**सूधना(पु)**—क्रि० अ० [सं० शुद्ध] सिद्ध होना। सत्य होना। ठीक होना। उ०—ऐसे सुतहि पिया जो दूधा गुन हरि तासु मनोरथ सूधा।—गिरिधरदास (शब्द०)।

**सूधरा(पु)**—वि० [सं० शुद्धतर] दे० 'सूधा'।

**सूधा**—वि० [सं० शुद्ध] [वि० स्त्री० सूधी] १ सीधा। सरल। भोला। निष्कपट। उ०—को अस दीन दयाल भयो दशरत्थ के लाल से सूधे सुभायन। दौरे गयद उबारिबे को प्रभु वाहन छोडि उवाहने पायन।—पद्माकर (शब्द०)। २ जो टेढा न हो। सीधा। उ०—इमि कहि सवन सहित तव ऊधो। गए नद गह गहि मग सूधो।—गिरिधरदास (शब्द०)। ३ इस प्रकार पडा हुआ कि मुँह, पेट आदि शरीर का अगला भाग ऊपर की ओर हो। चित। ४ समुख का। सामने का। उ०—मुदित मन वर वदन सोभा उदित अधिक उछाह। मनहु दूरि कलक करि ससि समर सूधो राहु।—तुलसी (शब्द०)। ५ जो उलटा न हो। जो ठीक और साधारण स्थिति मे हो। ६ जो सीधी रेखा मे चला गया हो। जिसमे वक्रता न हो। उ०—सूधी अँगुरि न निकसै घीऊ।—जायसी (शब्द०)।

मुहा—सूधी सूधी सुनाना = खरी खरी कहना। सूधी सहना = खरी खरी सुनना। उ०—कवहूँ फिर पाँव न दैहौ यहाँ भजि जैहौ तहाँ जहाँ सूधी सही।—पद्माकर (शब्द०)।

विशेष—और अधिक अर्थों तथा मुहावरो के लिये दे० 'सीधा'।

**सूधि**—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सुधि'। उ०—तातें इनको देखि कै श्रीठाकुर जी को श्रीस्वामिनी जी की सूधि आवति हैं।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १०८।

**सूधे**—क्रि० वि० [हिं० सूधा] सीधे से। उ०—(क) सूधे दान काहे न लेत।—सूर (शब्द०)। (ख) हौं बड हौं बड बहुत कहावत सूधे कहत न बात। योग न युक्ति ध्यान नहिं पूजा वृद्ध भए अकुलात।—सूर (शब्द०)। (ग) भावै सोतै करि वाको भामिनी भाग बडे वश चौकडि पायो। कान्ह ज्यो सूधे जू चाहत नाहिनै चाहति है अव पाइ लगायो।—केशव (शब्द)।

मुहा०—सूधे सूध = कोरा। साफ साफ। उ०—सूधै सूध जवाव न दीजै।—विश्राम (शब्द०)।

**सून[1]**—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रसव। जनन। २ कली। कलिका। ३ फूल। पुष्प। प्रसून। उ०—चुनते वे मुनि हेतु सून थे।—साकेत, पृ० ३४४। ४ फल। ५ पुत्र। उ०—(क) नद सून पद लालन लोभै। रमा रसिकिनी पावति छोभै।—घनानद, पृ० २६४। (ख) श्री वसुदेव सून है नद कुमार कहावत।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ६१।

**सून[2]**—वि० १ खिला हुआ। विकसित (पुष्प)। २ उत्पन्न। जात। ३ रिक्त। खाली। शून या शून्य (को०)।

**सून(पु)[3]**—संज्ञा पुं० [सं० शून्य, प्रा० सुण्ण (सून)] दे० 'शून्य'। उ०—(क) तुलसी निज मन कामना चहत सून कहँ सेइ। वचन गाय सवके विविध कहहु पयस केहि देइ।—तुलसी (शब्द०)। (ख) नाम राम को अक है सव साधन है सून। अक गए कछु हाथ नहिं अक रहे दस गून।—तुलसी (शब्द०)।

**सून[4]**—वि० १ निर्जन। जनशून्य। सूना। सुनसान। खाली। उ०—(क) इहाँ देखि घर सून चोर मूसन मन लायो। हीरा हेरि निकारि भवन वाहर धरि आयो।—विश्राम (शब्द०)। (ख) हनहु सक हमको एहि काला। अव मोहि लगत जगत जजाला। नहिं कल विना शेषपद देखे। विन प्रभु जगत सून मम लेखे।—रघुराज (शब्द०)। (ग) मँदिर सून पिउ अनतै वसा। सेज नागिनी फिर फिर डसा।—जायसी (शब्द०)। २ रहित। हीन। उ०—निरखि रावण भयावन अपावन महा जानकी हरण करि चलो शठ जात है। भन्यो अति कोप करि हनन की चोप करि लोप करि धर्म अव क्यो न ठहरात है। जानि थल सून नृप सूत रमणी हरी करी करणी कठिन अव न वचि जात है।—रघुराज (शब्द०)।

**सून[5]**—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बहुत बडा सदावहार पेड जो शिमले के आसपास के पहाडो पर बहुत होता है। इसकी लकडी बहुत मजबूत होती है और इमारतो मे लगती है। इसे 'चिन' भी कहते हैं।

**सूनशर**—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

**सूनसान**—वि० [सं० शून्य स्थान] दे० 'सुनसान'। उ०—पर तनक थिर होकर सुनने से ऐसे सूनसान और सन्नाटे मे भी किसी की दुखभरी रुलाई सुनाई पडती है।—ठेठ०, पृ० ३२।

**सूना[1]**—वि० [सं० शून्य] [वि० स्त्री० सूनी] जिसमे या जिसपर कोई न हो। जनहीन। निर्जन। सुनसान। खाली। जैसे—सूना घर, सूना रास्ता, सूना सिंहासन। उ०—(क) जात हुती निज गोकुल मे हरि आवै तहाँ लखिकै मग सूना। तासो कहौं पदमाकर यो अरे साँवरो बावरे तै हमैं छू ना।—पद्माकर

( शब्द० ) । (ख) राम कहाँ गए री माता । सून भवन सिंहासन सूनो नाही दशरथ ताता ।—सूर ( शब्द० ) ।

क्रि० प्र०—पडना ।—करना ।—होना ।

मुहा०- सूना लगना या सूना सूना लगना = निर्जीव मालूम होना । उदास मालूम होना ।

सूना³—सज्ञा पुं० [ सं० शून्य ] एकात । निर्जन स्थान ।

सूना⁴—सज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ पुत्री । बेटी । २ वह स्थान जहाँ पशु मारे जाते हैं । बूचडखाना । कसाईखाना । ३ मास का विक्रय । मास की बिक्री । ४ गृहस्थ के यहाँ ऐसा स्थान या चूल्हा, चक्की, ओखली, घडा, झाड़ मे से कोई चीज जिससे जीवहिंसा की सभावना रहती है । विशेष दे० 'पचसूना' । ५ गलशुडी । जीभी । ६ हाथी के अकुश का दस्ता । ७ हत्या । घात । विध्वसन । ८ प्रकाश की किरण (को०) । ९ नदी । सरिता (को०) । १० गले की ग्रथियो का शोथ (को०) । ११ हाथी की सूँड (को०) । १२ मेखला । शृखला (को०) ।

यौ०—सूनाध्यक्ष—बूचडखाने का निरीक्षक । सूनावत् = बूचडखाने का मालिक ।

सूनादोष—सज्ञा पुं० [स०] चूल्हा, चक्की, ओखली, मूसल, झाड और पानी के घडे से होनेवाली जीवहिंसा का दोष या पाप । विशेष दे० 'पचसूना' ।

सूनापन—संज्ञा पुं० [हिं० सूना + पन (प्रत्य०)] १ सूना होने का भाव । २ सन्नाटा । एकात ।

सूनिक—सज्ञा पुं० [स०] १ मास बेचनेवाला । व्याध । २ शिकारी । अहेरी (को०) ।

सूनी—सज्ञा पु० [स० सूनिन्] १ मास बेचनेवाला । व्याध । बूचड । २ शिकारी (को०) ।

सूनु—सज्ञा पुं० [सं०] १ पुत्र । सतान । २ छोटा भाई । अनुज । ३ नाती । दौहित्र । ४ एक वैदिक ऋषि का नाम । ५ सूर्य । ६ आक । अर्क वृक्ष । ७ वह जो सोमरस चुवाता हो ।

सूनू—सज्ञा स्त्री० [सं०] कन्या । पुत्री । बेटी । लडकी ।

सूनृत¹—संज्ञा पुं० [स०] १ सत्य और प्रिय भाषण (जो जैन धर्मानुसार सदाचरण के पाँच गुणो मे से एक है) । २ आनद । मगल । कल्याण ।

सूनृत²—वि० १ सत्य और प्रिय । २ अनुकूल । दयालु । ३ प्रिय (को०) । ४ सदाशापूर्ण (को०) ।

सूनृता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सत्य और प्रिय भाषण । २ सत्य । ३. धर्म की पत्नी का नाम । ४ उत्तानपाद की पत्नी का नाम । ५ एक अप्सरा का नाम । ६ ऊषा (को०) । ७. खाद्य । आहार (को०) । ८ उत्कृष्ट सगीत ।

सून्मद—वि० [सं०] दे० 'सून्माद' ।

सून्माद—वि० [सं०] जिसे उन्माद रोग हुआ हो । पागल ।

सून्य(पु)—सज्ञा पुं० [सं० शून्य] दे० 'शून्य' । उ० सून्य मे जोति जगमग जगाई ।—कबीर श०, भा० ४, पृ १६ ।

सूप¹—सज्ञा पुं० [सं०] १ मूँग, मसूर, अरहर आदि की पकी हुई दाल । २ दाल का जूस । रसा । ३ रसे की तरकारी आदि मसालेदार व्यजन । ४ बरतन । भाड । भाँडा । ५ रसोइया । पाचक । ६ बाण । तीर । ७ मनाना ।

सूप²—सज्ञा पुं० [सं० शूर्प] अनाज फटकने का बना हुआ पात्र । सरई या सीक का छाज । उ०—(क) देखो अद्भुत अविगति की गति कैसो रूप धरयो है हो । तीन लोक जाके उदरभवन सो सूप के कोन परयो है हो ।—सूर (शब्द०) । (ख) राजन दीन्हे हाथी रानिन्ह हार हो । भरिगे रतन पदारथ सूप हजार हो ।—तुलसी (शब्द०) ।

क्रि० प्र०—फटकना ।

मुहा०—सूपभर = बहुत सा । बहुत अधिक । सूप क्या कहे छलनी को जिसमे नौ सौ छेद = जिसमे खुद ऐब हो वह दूसरे के ऐब एव बुराई को दूर भगानेवाले से क्या कह सकता है । उ०—सूप क्या कहे छलनी को जिसमे नौ सौ छेद । तुम और हमको ललकारो ।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ४७१ ।

सूप³—सज्ञा पु० [देश०] १ कपडे या सन का झाड़ जिससे जहाज के डेक आदि साफ किए जाते हैं । (लश०) । २. एक प्रकार का काला कपडा ।

सूपक—सज्ञा पुं० [सं० सूप] रसोइया । उ०—धीर सूर विद्वान् जो मिष्ट बनावैं अन्न । सूपक कीजै ताहि जो पुत्र पौत्र सपन्न ।—सीताराम (शब्द०) ।

सूपकर्ता—सज्ञा पुं० [स० सूपकर्तृ] दे० 'सूपकार' ।

सूपकार—सज्ञा पुं० [स०] भोजन बनानेवाला । रसोइया । पाचक । उ०—तहाँ सूपकारन मुनिराई । मुनिन हेत किय पाक बनाई ।—रामाश्वमेध (शब्द०) ।

सूपकारी(पु)—सज्ञा पुं० [सं० सूपकारिन्] दे० 'सूपकार' । उ०—आमन उचित सबहि नृप दीन्हें । बोलि सूपकारी सब लीन्हें ।—तुलसी (शब्द०) ।

सूपकृत्—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सूपकार' ।

सूपच(पु)—सज्ञा पुं० [सं० श्वपच] दे० 'श्वपच' । उ०—सूपच रस स्वादै का जानै ।—विश्राम (शब्द०) ।

सूपगधि—वि० [स० सूपगन्धि] जिसमे मसाला न हो । सादा (को०) ।

सूपचर—वि० [सं०] १ शीघ्र नीरोग होनेवाला । २ शीघ्र आर्द्रचित्त होनेवाला (को०) ।

सूपचार—वि० [स०] दे० 'सूपचर' ।

सूपझरना—सज्ञा पुं० [हिं० सूप + झरना] सूप की तरह का सरई का एक बरतन ।

विशेष—सूप से इसमे अतर इतना ही है कि इसमे हर दो सरइयों के बीच मे एक सरई नही होती जिसके कारण सूप के बीच मे ही झरना सा बन जाता है । इससे बारीक अनाज नीचे गिर जाता है और मोटा ऊपर रह जाता है ।

**सूपट**⑤—संज्ञा पुं० [सं० सम्पुट] दे० 'सपुट'। उ०—प्रेम कँवल जल भीतरै, प्रेम भँवर लै वास। होत प्रात सूपट खुलै, भान तेज परगास।—सत० दरिया, पृ० ४३।

**सूपडा**—संज्ञा पुं० [हिं० सूप + डा (प्रत्य०] सूप। छाज। (डिं०)।

**सूपतीर्थ**—वि० [सं०] दे० 'सूपतीर्थ्य'।

**सूपतीर्थ्य**—वि० [सं०] स्नान के लिये अच्छी सीढियो से युक्त [को०]।

**सूपवूपक**—संज्ञा पुं० [सं०] हीग।

**सूपधूपन**—संज्ञा पुं० [सं०] हीग।

**सूपनखा**—संज्ञा स्त्री० [सं० शूर्पणखा] दे० 'शूर्पणखा'। उ०—सूपनखा रावण कै बहिनी। दुष्ट हृदय दारुन जसि अहिनी।—तुलसी (शब्द०)।

**सूपना**⑤—संज्ञा पुं० [सं० स्वप्न, प्रा० सुपण, पुं०हिं० सुपन] दे० 'सुपना'। उ०—जागत मे एक सूपना मुझको पडा है देख।—पलटू० पृ० ७।

**सूपपर्णी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बनमूँग। मुँगवन। मुद्गपर्णी।

**सूपरस**—संज्ञा पुं० [सं०] सूप का स्वाद। रसे का जायका।

**सूपशास्त्र**—संज्ञा पुं० [सं०] भोजन बनाने की कला। पाकशास्त्र।

**सूपश्रेष्ट**—संज्ञा पुं० [सं०] मूँग। मुद्ग।

**सूपससृष्ट**—वि० [सं०] मसालेदार। मसाले से युक्त।

**सूपसास्त्र**⑤—संज्ञा पुं० [सं० सूपशास्त्र] पाकशास्त्र। सूदशास्त्र। उ०—भाँति अनेक भई जेवनारा। सूपसास्त्र जस किछु व्यवहारा।—मानस, १।६६।

**सूपस्थान**—संज्ञा पुं० [सं०] पाकशाला। रसोईघर।

**सूपाग**—संज्ञा पुं० [सं० सूपाङ्ग] हीग। हिंगु।

**सूपा**†—संज्ञा पुं० [हिं० सूप] सूप। छाज। शूर्प।

**सूपाय**—संज्ञा पुं० [सं०] सुदर ढग, तरीका या उपाय [को०]।

**सूपिक**—संज्ञा पुं० [सं०] १ पकी हुई दाल या रसा आदि। २ सूपकार। रसोइया।

**सूपीय**—वि० [सं०] दे० 'सूप्य'।

**सूपोदन**—संज्ञा पुं० [सं० सूप + ओदन] दाल और भात। उ०—सूपोदन सुरभी सरपि सुदर स्वादु पुनीत। छन महुँ सबके परसि ये चतुर सुआर विनीत।—मानस, १।३२८।

**सूप्य**¹—वि० [सं०] १ दाल या रसे के लायक। २ सूप सबधी।

**सूप्य**²—संज्ञा पुं० रसेदार खाद्य पदार्थ।

**सूप्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मसूर या अरहर की दाल [को०]।

**सूफ**¹—संज्ञा पुं० [अ० सूफ] १ पशम। ऊन। २ वह लत्ता जो देशी काली स्याहीवाली दावात मे डाला जाता है। ३ गोटा बुनने के लिये बाना (को०)। ४ घाव के भीतर भरा जानेवाला वस्त्र जिसे वत्ती भी कहते हैं। ५ बकरी या भेड के बाल (को०)।

**सूफ**²—संज्ञा पुं० [हिं० सूप] दे० 'सूप'।

**सूफार**—संज्ञा पुं० [फा० सूफार] वाण का वह हिस्सा जिसे प्रत्यचा पर रखकर चुटकी से खीचकर चलाते हैं [को०]।

**सूफिया**—संज्ञा पुं० [अ० सूफिया] सूफी का बहुवचन।

**सूफियाना**—वि० [फा० सूफियानह्] १ सूफी लोगो की तरह। २ अच्छे ढग या प्रकृति का। ३ हलके रग का [को०]।

**सूफी**¹—संज्ञा पुं० [फा० सुफी] [बहुव० सुफिया] १ मुसलमानो का एक धार्मिक सप्रदाय। इस सप्रदाय के लोग एकेश्वरवादी होते हैं और साधारण मुसलमानो की अपेक्षा अधिक उदार विचार के होते है। २ इस सप्रदाय को माननेवाला व्यक्ति (को०)।

**सूफी**²—वि० १ ऊनी वस्त्र पहननेवाला। २ साफ। पवित्र। ३ निरपराध। निर्दोष।

**सूब**—संज्ञा पुं० [देश०] ताँबा। (सुनार)।

**सूबडा**—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्ण] वह चाँदी जिसमे ताँबे और जस्ते का मेल हो। (सुनार)।

**सूबडी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] पैसे का आठवाँ भाग। दमडी। (सुनार)।

**सूबस**⑤—वि० [सं० स्ववश] अपने वश या अधिकार मे। स्वाधीन। उ०—दादू रावत राजा राम का, कदे न विसारी नाँव। आत्मा राम सँभालिए तौ सूबस काया गाँव।—दादू०, पृ० ३६।

**सूबा**—संज्ञा पुं० [फा० सूबह्] १ किसी देश का कोई भाग या खड। प्रात। प्रदेश।

**यौ०**—सूबेदार।

२ दे० 'सूबेदार'। उ०—कीन्हो समर वीर परिपाटी। लीन्हों सूबा का सिर काटी।—रघुराज (शब्द०)।

**सूबेदार**—संज्ञा पुं० [फा० सूबह् + दार (प्रत्य०)] १ किसी सूबे या प्रात का बडा अफसर या शासक। प्रादेशिक शासक। २ एक छोटा फौजी ओहदा।

**सूबेदार मेजर**—संज्ञा पुं० [फा०] सूबेदार + अ० मेजर] फौज का एक छोटा अफसर।

**सूबेदारी**—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ सूबेदार का ओहदा या पद। २ सूबेदार का काम। ३ सूबेदार होने की अवस्था।

**सूभर**⑤—वि० [सं० शुभ्र] १ सुदर। दिव्य। उ०—दादू सहज सरोवर आत्मा, हसा करै कलोल। सुख सागर सूभर भरचा, मुक्ताहल मन मोल।—दादू० बानी, पृ० ६५। २ श्वेत। सफेद। उ०—हस सरोवर तहाँ रमैं सूभर हरि जल नीर। प्रानी आप पखालिए निर्मल सदा हो सरीर।—दादू (शब्द०)।

**सूम**¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ दूध। २ जल। ३. आकाश। ४ स्वर्ग।

**सूम**²—संज्ञा पुं० फूल। पुष्प। (डिं०)।

**सूम**³—वि० [अ० शूम (= अशुभ)] कृपण। कजूस। बखील। उ०—मरै सूम जजमान मरै कटखन्ना टट्टू। मरै कर्कसा नारि मरै की खसम निखट्टू।—गिरिधरदास (शब्द०)।

**सूम**⁴—संज्ञा पुं० [अ०] लशुन। लहसुन [को०]।

**सूमडा**—वि० [हिं० सूम + डा (प्रत्य०)]। दे० 'सूम'। उ०—सूमडे ताड आकाश मे जा अपने कलकलाए।—प्रेमघन०, भा० २ पृ० १६।

सूमलू—संज्ञा पुं० [ देश० ] चिल्ला या चीता नामक पौधा ।

सूयाँ†—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] टूटी हुई चारपाई की रस्सी ।

सूमारग(पु)—संज्ञा पुं० [ सं० सुमार्ग ] सत्पथ । अच्छा मार्ग । उ०—भक्त काम देखि चलहिं सूमारग, भजन नाहिं मन आनी ।—जग० श०, भा० २, पृ० ६१ ।

सूमी—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक बहुत बडा पेड जो मध्य तथा दक्षिण भारत के जगलो में होता है ।

विशेष—इसकी लकडी इमारतो मे लगती और मेज, कुर्सी आदि बनाने के काम मे आती है। इसे रोहन और सोहन भी कहते हैं।

सूय—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ सोमरस निकालने की क्रिया । २ यज्ञ ।

सूरजान—संज्ञा पुं० [ फा० मूरिन्जान ] केसर की जाति का एक पौधा जिसका कद दवा के काम मे आता है ।

विशेष—यह पश्चिमी हिमालय के समशीतोष्ण प्रदेशो मे पहाडो की ढाल पर घासो के बीच उगता है और एक बालिश्त ऊँचा होता है । फारस मे भी यह बहुत होता है । इसमे बहुत कम पत्ते होते है और प्राय फूलो के साथ निकलते हैं । फूल लबे होते है और सीका मे लगते हैं । इसकी जड मे लहसुन के समान, पर उससे बडा कद होता है जो कडवा और मीठा दो प्रकार का होता है । कडवे को 'सूरजान तल्ख' और मीठे को 'सूरजान शीरी' कहते है । मोटा कद फारस से आता है और खाने की दवा मे काम आता है । कडवा कद केवल तेल आदि मे मिलाकर मालिश के काम आता है । इसके बीज विषैले होते है, इससे बडी सावधानी से थोडी मात्रा मे दिए जाते है । यूनानी चिकित्सा के अनुसार सूरजान रूखा, रुचिकर तथा वात, कफ, पाडुरोग, प्लीहा, सधिवात आदि को दूर करनेवाला माना जाता है ।

सूर¹—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० सूरी ] १ सूर्य । उ०—सूर उदय आए रही दृगन साँझ सी फूलि ।—बिहारी (शब्द०) । २ अर्कवृक्ष । आक । मदार । ३ पडित । आचार्य । ४ सोम (को०) । ५ जैन धर्म मे वर्तमान अवसर्पिणी के सत्रहवे अर्हत् कुथु के पिता का नाम । ६ मसूर । ७ राजा । नायक (को०) ।

सूर²—संज्ञा पुं० [देशज] १ भक्त कवि सूरदास । उ०—कछु संछेप सूर बरनत अब लघु मति दुर्बल बाल ।—सूर (शब्द०) । २ नेत्रविहीन व्यक्ति । दृष्टिरहित व्यक्ति । अधा ।

विशेष—सूरदास अधे थे, इससे 'अधा' के अर्थ मे यह शब्द प्रचलित हो गया है ।

३ छप्पय छद के ७१ भेदो मे से ५५वे भेद का नाम जिसमे १६ गुरु, १२० लघु, कुल १३६ वर्ण और १५२ मात्राएँ होती है ।

सूर(पु)³—संज्ञा पुं० [ सं० शूर, प्रा० सूर, अथवा सं० सूर( =नायक)] शूरवीर । बहादुर । उ०—सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आप ।—तुलसी ( शब्द० ) ।

सूर(पु)⁴—संज्ञा पुं० [ सं० शूकर, प्रा० सूअर ] १ सूअर । २. भूरे रग का घोडा ।



सूर(पु)⁵—संज्ञा पुं० [ सं० शूल, प्रा० सूल (=सूर) ] दे० 'शूल' । उ०—(क) कर बरछी विष भरी सूरसुत सूर फिरावत ।—गोपाल ( शब्द० ) । ( ख ) दादू सिख स्रवनन सुना सुमिरत लागा सूर ।—दादू० (शब्द०) ।

सूर⁶—संज्ञा पुं० [ देश० ] पठानो की एक जाति । जैसे—शेरशाह सूर । उ०—जाति सूर औ खाँडै सूरा ।—जायसी (शब्द०) ।

सूर⁷—संज्ञा पुं० [ सं० सूर ( = सूर्य ) ] हठयोग साधना मे चद्रमा मे स्रवित होनेवाले अमृत का शोषण करनेवाला द्वादश कलायुक्त सूर्य । पिंगला नाडी का दूसरा नाम । उ०—उलटिबा सूर गगन भेदन किया, नवग्रह डक छेदन किया, पोविया चद जहाँ कला सारी ।—रामानद०, पृ० ४ ।

सूर⁸—संज्ञा पुं० [अ०] नरसिंहा नामक बाजा । उ०—कब्र मे सोए है महशर का नही खटका 'रसा' । चौकनेवाले है कब हम सूर की आवाज से ।

विशेष—मुसलमानो के अनुसार हजरत असाफील प्रलय या कयामत के दिन मुरदो को जिलाने के लिये इसे फूंककर बजाते है ।

सूर⁹—संज्ञा पुं० [ फा० ] १ लाल वर्ण । लाल रग । २ प्रसन्नता । मोद । हर्ष । ३. अफगानिस्तान का एक नगर और एक जाति [को०] ।

सूरकद—संज्ञा पुं० [ सं० सूरकन्द ] जमीकद । सूरन । ओल ।

सूरकात—संज्ञा पुं० [ सं० सूरकान्त ] दे० 'सूर्यकात' ।

सूरकुमार—संज्ञा पुं० [ सं० शूर (=सूरसेन ) कुमार (=पुत्र)] वसुदेव । उ०—तेज रूप ये सूरकुमारा । जिमि उदयस्थ सूर उजियारा ।—गि० दास (शब्द०) ।

सूरकृत—संज्ञा पुं० [ सं० ] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम ।

सूरचक्षा—वि० [ सं० सूरचक्षस् ] सूर्य की तरह ज्योतिवाला [को०] ।

सूरचक्षुष्—वि० [सं०] दे० 'सूरचक्षा' [को०] ।

सूरज¹—संज्ञा पुं० [ सं० सूर्य ] १ सूर्य । विशेष दे० 'सूर्य' । उ०—दरिया सूरज ऊगिया, नैन खुला भरपूर । जिन अधे देखा नही, तिन से साहब दूर ।—दरिया० बानी, ३७ ।

क्रि० प्र०—अस्त होना ।—उगना ।—उदय होना ।—निकलना ।—डूबना ।—छिपना ।

मुहा०—सूरज को चिराग दिखाना = दे० 'सूरज को दीपक दिखाना' । उ०—आगे मेरे फरोग पाना, सूरज को है चिराग दिखाना ।—फिसाना, भा० ३, पृ० ६२४ । सूरज पर थूकना = किसी निर्दोष या साधु व्यक्ति पर लाछन लगाना जिसके कारण स्वय लाछित होना पडे । सूरज को दीपक दिखाना = (१) जो स्वय अत्यत गुणवान् हो, उसे कुछ बतलाना । (२) जो स्वय विख्यात हो उसका परिचय देना । सूरज पर धूल फेकना = किसी निर्दोष या साधु व्यक्ति पर कलक लगाना ।

२. एक प्रकार का गोदना जो स्त्रियाँ दाहिने हाथ मे गुदाती है । ३ दे० 'सूरदास' ।

सूरज[२]—संज्ञा पुं० [सं० सूर + ज] १ शनि । २ सुग्रीव । उ०—(क) सूरज मुसल नील पट्टिस परिघ नल जामवत असि हनु तोमर प्रहारे ह । परसा सुखेन कुत केशरी गवय सूल विभीषण गदा गज भिदिपाल तारे है ।—रामच०, पृ० १३५ । (ख) करि आदित्य अदृष्ट नष्ट यम करौ अष्टवसु । रुद्रनि वोरि समुद्र करौ गधर्व सर्व पसु । वलित अवेर कुवेर वलिहिं गहि देहुँ इद्र अव । विद्याधरनि अविद्य करौं विन सिद्धि सिद्ध सव । लै करौं अदिति की दासि दिति अनिल अनल मिलि जाहि जल । सुनि सूरज सूरज उगत ही करौ असुर ससार सव ।—केशव (शब्द०) । ३ कर्ण का एक नाम । ४ यमराज ।

सूरज[३]—संज्ञा पुं० [सं० शूर + ज (प्रत्य०)] शूर या वीर का पुत्र। वहादुर का लडका। उ०—डारि डारि हथ्यार सूरज जीव लै लै भज्जही ।—केशव (शब्द०) ।

सूरजतनी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० सूर्यतनया] दे० 'सूर्यतनया' । उ०—सु दरि कथा कहै है अपनी । हौं कन्या हौं सूरजतनी । कालिंदी है मेरो नाम । पिता दियो जल मे विश्राम ।—लल्लूलाल (शब्द०) ।

सूरजनरायन—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यनारायण] हिं० सूरजनरायन, नारायण स्वरूप सूर्य । उ०—और सूर्यनारायण को सूरजनरायन कहने लग पडे थे ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३६२।

सूरजवंसी—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यवंशीय] दे० 'सूर्यवंशी' ।

सूरजभगत—संज्ञा पुं० [सं० सूर्य + भक्त] एक प्रकार की गिलहरी जो लवाई मे १६ इंच होती है और भिन्न भिन्न ऋतुओ के अनुसार रग बदलती है । यह नेपाल और आसाम मे पाई जाती है ।

सूरजमुख(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सूर्य, पु० हिं० सूरज + सं० मुख] सूर्यकात नाम का प्रस्तर (स्फटिक) । उ०—सूरजमुख पषान एक होई। रवि सनमुख तेहि पावक जोई ।—घट०, पृ० २१७ ।

सूरजमुखी—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यमुखिन्] १ एक प्रकार का पौधा जिसमे पीले रग का वहुत वडा फूल लगता है ।

विशेष—यह ४-५ हाथ ऊँचा होता है। इसके पत्ते डठल की ओर पतले तथा कुछ खुरदुरे और रोईदार होते हैं। फूल का मडल एक वालिश्त के करीव होता है। बीच मे एक स्थूल केंद्र होता है जिसके चारो ओर गोलाई मे पीले पीले दल निकले होते हैं। सूर्यास्त के लगभग यह फूल नीचे की ओर झुक जाता है और सूर्योदय होने पर फिर ऊपर उठने लगता है। इसमे कुसुम के से बीज पडते हैं। बीज हर ऋतु मे वोए जा सकते है, पर गरमी और जाडा इसके लिये अच्छा है। यह पौधा दूषित वायु को शुद्ध करनेवाला माना जाता है। वैद्यक मे यह उष्णवीर्य, अग्निदीपक, रसायन, चरपरा, कडुवा, कसैला, रूखा, दस्तावर, स्वर शुद्ध करनेवाला तथा कफ, वात, रक्तविकार, खाँसी, ज्वर, विस्फोटक, कोढ, प्रमेह, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, गुल्म आदि का नाशक कहा गया है ।

पर्या०—आदित्यभक्ता । वरदा । सुवर्चला । सूर्यलता । अर्ककाता । भास्करेष्टा । विक्रांता । सुतेजा । सौरि । अर्कहिता ।

२ एक प्रकार की आतिशवाजी । ३ एक प्रकार का छत्र या पखा। ४ वह हलकी वदली जो सध्या सवेरे सूर्य मडल के आसपास दिखाई पडती है ।

सूरजसुत—(पु)संज्ञा पुं० [हिं० सूरज + सं० सुत] सुग्रीव । उ०—अगद जो तुम पै वल होतो । तो वह सूरज को सुत को तो ।—केशव (शब्द०) ।

सूरजसुता(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूरज + सं० सुता] यमुना नदी । दे० 'सूर्यसुता' ।

सूरजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्य की पुत्री, यमुना । उ०—जै जै श्री सूरजा कलिंद नदिनी । गुल्म लता, तरु, सुगध, कुद कुसुम मोदमत्त भ्रमत मधुप, पुलिन सुरभि वायु नदिनी ।—छीत०, पृ० ८० ।

सूरण—संज्ञा पुं० [सं०] सूरन । जमीकद ।

सूरत[१]—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ रूप । आकृति । शक्ल । उ०—(क) उनकी सूरत तो राजकुमारी की सी है ।—वालमुकुद गुप्त (शब्द०) । (ख) मन धन लै दृग जौहरी, चले जात वह वाट। छवि मुकता मुकते मिलै जिहि सूरत की हाट ।—रसनिधि (शब्द०) ।

यौ०—सूरत शक्ल = चेहरा मोहरा । आकृति । सूरत सीरत = आकृति या रूप और गुण ।

मुहा०—सूरत विगडना = चेहरा विगडना । चेहरे की रगत फीकी पडना । सूरत विगाडना = (१) चेहरा विगाडना । कुरूप करना । वदसूरत वनाना । विद्रूप करना । (२) अपमानित करना । (३) दड देना । सूरत वनाना = (१) रूप वनाना । (२) भेस वदलना । (३) मुँह वनाना । नाक भौं सिकोडना। अरुचि प्रकट करना । (४) चित्र वनाना । सूरत दिखाना = सामने आना ।

२ छवि । शोभा । सौंदर्य । उ०—साँवली सूरत तुमारी साँवले । जव हमारी आँख मे है घूमती ।—चोखे०, पृ० १ । ३ उपाय । युक्ति । ढग । तदवीर । ढव । उ०—(क) कोई उम्मीद वर नही आती, कोई सूरत नजर नही आती । मौत का एक दिन मुऐयन है, नीद क्यो रात भर नही आती ।—कविता कौ०, पृ० ४७२ । (ख) जाडे मे उनके जीने की कौन सूरत थी ।—शिवप्रसाद (शब्द०) ।

क्रि० प्र०—देखना । जैसे,—वह उनसे छुटकारा पाने की कोई सूरत नही देखता ।—निकालना । जैसे—रुपया पैदा करने की कोई सूरत निकालो ।

४ अवस्था । दशा । हालत । जैसे—इस सूरत मे तुम क्या करोगे । उ०—आपको खयाल न गुजरे कि हमारी किसी सूरत मे तह-कीर हुई । —केशवराम (शब्द०) ।

सूरत[२]—संज्ञा पुं० [सं० सौराष्ट्र] ववई प्रदेश के अतर्गत एक नगर ।

सूरत[३]—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार जहरीला पौधा जो दक्षिण हिमा-लय, आसाम, वरमा, लका, पेराक और जावा मे होता है । इसे चोरपट्टा भी कहते है । विशेष दे० 'चोरपट्टा' ।

सूरत[४]—संज्ञा स्त्री० [अ० सूरह्] कुरान का कोई प्रकरण ।

सूरत(पु)¹—संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] सुध। स्मरण। ध्यान। याद। विशेष दे० 'सुरति'। जैसे,—सब आनंद मे ऐसे मग्न थे कि कृष्ण की सूरत किसी को भी न थी।—लल्लू (शब्द०)।

सूरत²—वि० [सं०] १ अनुकूल। मेहरबान। कृपालु। २ शात। सीधा [को०]।

सूरता(पु)¹—संज्ञा स्त्री० [सं० शूरता] दे० 'शूरता'। उ०—विश्वासी के ठगन मै नही निपुनता होय। कहा सूरता तासु हनि रह्यो गोद जो सोय।—दीनदयाल (शब्द०)।

सूरता²-संज्ञा स्त्री० [सं०] सीधी गाय।

सूरताई(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूरता + ई (प्रत्य०)] दे० 'शूरता'। उ०—गरजन घोर जोर पवन चलत जैसो अवर सो सोभित रहत मिलि कै अनेक। पुत्र जे धरत तिन्है तोषत है भली भाँति सूर सूरताई लोप करत सहित टेक।—गोपाल (शब्द०)।

सूरति(पु)¹—संज्ञा स्त्री० [फा० सूरत] छवि। दे० 'सूरत'। उ०—(क) मूरति की सूरति कही न परै तुलसी पै, जानै सोई जाके उर कसकै करक सी।—तुलसी (शब्द०)। (ख) चद भलो मुखचद सखी लखि सूरति काम की कान्ह की नीकी। कोमल पकज कै पदपकज प्राणप्रियारे की मूरति पी की।—केशव (शब्द०)।

सूरति(पु)²—संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] सुध। स्मरण ध्यान। याद। उ०—तुलसिदास रघुबीर की सोभा सुमिरि भई है मगन नहिं तन की सूरति।—तुलसी (शब्द०)।

सूरतीखपरा—संज्ञा पुं० [हिं० सूरती (= सूरत शहर का) + सं० खर्परी] खपरिया।

सूरदास—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तर भारत के प्रसिद्ध कृष्णभक्त महाकवि और महात्मा जो अंधे थे।

विशेष—ये हिंदी भाषा के दो सर्वश्रेष्ठ कवियो मे से एक है। जिस प्रकार रामचरित का गान कर गोस्वामी तुलसीदास जी अमर हुए है, उसी प्रकार श्रीकृष्ण की लीला कई सहस्र पदो मे गाकर सूरदास जी भी। ये अकबर के काल मे वर्त्तमान थे। ऐसा प्रसिद्ध है कि बादशाह अकबर ने इन्हे अपने दरबार मे फतहपुर सीकरी मे बुलाया, पर ये न आए। इन्होने यह पद कहा 'मोको कहा सीकरी सो काम'। इसपर तानसेन के साथ अकबर स्वय इनके दर्शन को मथुरा गया। इनका जन्म सवत् १५४० के लगभग ठहरता है। ये वल्लभाचार्य की शिष्यपरपरा मे थे और उनकी स्तुति इन्होने कई पदो मे की है जैसे,—'भरोसो दृढ इन चरनन केरो। श्रीवल्लभ नखचद्र छटा बिनु हो हिय माँझ अँधेरो'। इनकी गणना 'अष्टछाप' अर्थात् ब्रज के आठ महाकवियो और भक्तो मे थी। अष्टछाप मे ये कवि गिने गए है—कुभनदास, परमानददास, कृष्णदास, छीतस्वामी, गोविंद स्वामी, चतुर्भुजदास, नददास और सूरदास। इनमे से प्रथम चार कवि तो वल्लभाचार्य जी के शिष्य थे और शेष सूरदास आदि चार कवि उनके पुत्र विट्ठलनाथ जी के। अपने अष्टछाप मे होने का उल्लेख सूरदास जी स्वय करते है। यथा—'थापि गोसाई करी मेरी आठ मध्ये छाप'। विट्ठलनाथ के पुत्र गोकुलनाथ जी ने अपनी 'चौरासी वैष्णवो की वार्ता' मे सूरदास जी को सारस्वत ब्राह्मण लिखा है और उनके पिता का नाम 'रामदास' बताया है। सूरसारावली मे एक पद मे इनके वंश का जो परिचय है, उसके अनुसार ये महाकवि चद बरदाई के वशज थे और सात भाई थे। पर उक्त पद के असली होने मे कुछ लोग सदेह करते हैं।

इनका जन्मस्थान भी अनिश्चित है। कुछ लोग इनका जन्म दिल्ली के पास 'सीही' गाँव मे बतलाते है। जनश्रुति इन्हे जन्माध कहती है, पर ये जन्माध न थे। ऐसी भी किंवदती है कि किसी परस्त्री के सौदर्य पर मोहित हो जाने पर इन्होने नेत्रो का दोष समझ उन्हे फोड डाला था। भक्तमाल मे लिखा है कि आठ वर्ष की अवस्था मे इनका यज्ञोपवीत हुआ और ये एक बार अपने माता पिता के साथ मथुरा गए। वहाँ से वे घर लौटकर न आए, कहा कि यही कृष्ण की शरण मे रहूँगा। 'चौरासी वैष्णवो की वार्ता' के अनुसार ये गऊघाट मे रहते थे जो आगरा और मथुरा के बीच मे है। यही पर ये विट्ठलनाथ जी के शिष्य हुए और इन्ही के साथ गोकुलस्थ श्रीनाथ जी के मदिर मे बहुत काल तक रहे। इसी मदिर मे रहकर ये पद बनाया करते थे। यो तो पद बनाने का इनका नित्य नियम था, पर मदिर के उत्सवो पर उसी लीला के सबध मे बहुत सा पद बनाकर गाया करते थे। ऐसा प्रसिद्ध है कि ये एक बार कूएँ मे गिर पडे और छह दिन तक उसी मे पडे रहे। सातवे दिन स्वय भगवान् श्रीकृष्ण ने हाथ पकडकर इन्हें निकाला। निकलने पर इन्होने यह दोहा पढा—'बाँह छुडाए जात हौ निबल जानि कै मोहिं। हिरदै सो जब जायहौ मरद बदौगो तोहिं।'

इसमे सदेह नही कि व्रजभाषा के ये सर्वश्रेष्ठ कवि है, क्योकि इन्होने केवल व्रजभाषा मे ही कविता की है, अवधी मे नही। गोस्वामी तुलसीदास जी का दोनो भाषाओ पर समान अधिकार था और उन्होने जीवन की नाना परिस्थितियो पर रसपूर्ण कविता की है। सूरदास मे केवल शृगार और वात्सल्य की पराकाष्ठा है। सवत् १६०७ के पूर्व इनका सूरसागर समाप्त हो गया था, क्योकि उसके पीछे इन्होने जो 'साहित्य लहरी' लिखी है, उसमे सवत् १६०७ दिया हुआ है।

सूरन—संज्ञा पुं० [सं० सूरण] एक प्रकार का कद जो सब शाको मे श्रेष्ठ माना गया है। जमीकद। ओल। शूरण। सूरन।

विशेष—सूरन भारतवर्ष मे प्राय सर्वत्र होता है पर बगाल मे अधिक होता है। इसके पौधे २ से ४ हाथ तक के होते है। पत्तो मे बहुत से कटाव होते है। इसके दो भेद है। सूरन जगली भी होता है जो खाने योग्य नही होता और बेतरह कटैला होता है। खेत के सूरन की तरकारी, अचार आदि बनते है जिन्हें लोग बडे चाव से खाते है। वैद्यक मे यह अग्निदीपक, रूखा, कसैला, खुजली उत्पन्न करनेवाला, चरपरा, विष्टभकारक, विशद, रुचिकारक, लघु, प्लीहा तथा गुल्म नाशक और अर्श (बवासीर) रोग के लिये विशेष उपकारी माना गया है। दाद,

खाज, रक्तविकार और कोढवालो के लिये इसका खाना निषिद्ध है।

पर्या०—शूरण। सूरकद। कदल। अर्शोघ्नि, आदि।

सूरपनखा—सज्ञा स्त्री० [स० शूर्प (हिं० सूरप) + स० नखा] दे० 'शूर्पनखा'। उ०—सूरपनखहु तहँहि चलि आई। काटि श्रवन अरु नाक भगाई।—पद्माकर (शब्द०)।

सूरपुत्र—सज्ञा पु० [स०] (सूर्य के पुत्र) सुग्रीव। उ०—सूरपुत्र तव जीवन जान्यो। बालि जोर बहु भाँति बखान्यो।—केशव (शब्द०)। २ शनि (को०)। ३ कर्ण का एक नाम (को०)।

सूरबार—सज्ञा पु० [देशज] पायजामा। सूथन।

सूरबीर(पु)—सज्ञा पु० [स० शूरवीर] दे० 'शूरवीर'।

सूरबीरता—सज्ञा स्त्री० [स० शूरता + वीरता] दे० 'शूरता'। उ०—तब वा समै सूरबीरता को आवेस रहत है।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ९६।

सूरनस—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन जनपद और उसके निवासी।

सूरमा—सज्ञा पुं० [स० शूरमानी] योद्धा। वीर। बहादुर। उ०—और बहुत उमडे सुभट कहाँ कहाँ लगि नाउँ। उतै समद के सूरमा भिरे रोप रन पाउँ।—लालकवि (शब्द०)।

सूरमापन—सज्ञा पुं० [हिं० सूरमा + पन (प्रत्य०)] वीरत्व। शूरता। बहादुरी।

सूरमुखी(पु)—सज्ञा पु० [स०] सूर्यमुखी शीशा। उ०—बहु साँग भल्लगन मधि लसत, सूरमुखी रथ छत्रवर। मनु चले जात मुनि दड चढि उडगन मैं ससि दिवसकर।—गोपाल (शब्द०)।

सूरमुखीमनि(पु)—सज्ञा पु० [स० सूर्यमुखीमणि] सूर्यकातमणि। उ०—मुरछल चारहु ओर अमल बहु भृत्य फिरावहिं। सूरमुखीमनि जटिन अनेकन सोभा पावहिं।—गिरिधरदास (शब्द०)।

सूरय(पु)—सज्ञा पु० [स० सूर्य, प्रा० सूरिअ] दे० 'सूर्य'। उ०—(क) सूरय करि कै देखिए तब आरसी होय। सूरय सूरय सौ हसे सुदर समझे कोय।—सुदर० ग्र०, भा० २, पृ० ८१२। (ख) तीनि लोक मैं भया तमासा सूरय कियो सकल अधेर। मूरष होई सु अर्थहि पावै सुदर कहै शब्द मैं फेर।—सुदर ग्र०, भा० २, पृ० ५१३।

सूरवाँ(पु), सूरवा(पु)—सज्ञा पु० [हिं० सूरमा] दे० 'सूरमा'। उ०—जन हरिया गुरु सूरवा करै शब्द की चोट। सिख सूरा तन जो लहे आनि धरै नहिं ओट।—राम० धर्म०, पृ० ५४।

सूरस—सज्ञा पु० [देश०] परिया की लकडी। (जुलाहा)।

सूरसागर—सज्ञा पु० [हिं० सूर + सागर] हिंदी के महाकवि सूरदासकृत ग्रथ का नाम जिसमे भागवत के आधार पर श्रीकृष्णलीला अनेक राग रागिनियो मे वर्णित है।

सूरसावत, सूरसाँवत(पु)—सज्ञा पुं० [स० शूर + सामन्त] १ युद्धमत्री। २ नायक। सरदार। उ०—धनुविजुरी चमकाय बान जल वरपि अमोलो। गरजि जलद सम जलद सूरसावँत यह बोलो।—गिरिधरदास (शब्द०)।

सूरसुत—सज्ञा पुं० [स०] १ शनिग्रह। २ सुग्रीव।

सूरसुता—सज्ञा स्त्री० [स०] सूर्य की पुत्री यमुना। उ०—ज्योति जगै जमुना सी लगै जग लोचन लालित पाप विपोहै। सूरसुता शुभ सगम तुग तरग तरग तरग सी सोहै।—केशव (शब्द०)।

सूरसूत—सज्ञा पुं० [स०] सूर्य के सारथि अरुण।

सूरसेन(पु)—सज्ञा पुं० [सं० शूरसेन] दे० 'शूरसेन'।

सूरसेनपुर(पु)—सज्ञा पु० [स० शूरसेन + पुर] मथुरा। उ०—चित्रसेन नृप चल्यो सेन सह सूरसेन पुर। झपटि चलै जिमि सेन लेन जै देन चेन उर।—गोपाल (शब्द०)।

सूरा[1]—सज्ञा पुं० [हिं० सु डी] एक प्रकार का कीडा जो अनाज के गोले मे पाया जाता है। यह किसी प्रकार की हानि नही पहुँचाता। अनाज के व्यापारी इसे शुभ समझते हैं।

सूरा[2]—सज्ञा पु० [अ० सूरह्] कुरान का कोई एक प्रकरण।

सूराख—सज्ञा पु० [फा० सूराख] १ छेद। छिद्र। २. शाला। खाना। घर। (लश०)।

सूरातन(पु)—सज्ञा पु० [स० शूरत्व, प्रा० सूरत्तण] वीरता। उ०—(क) सुदर सूरातन बिना बात कहै मुख कोरि। सूरातन जब जाणिए जाइ देत दल मोरि।—सुदर ग्र०, भा० २, पृ० ७३६। (ख) सूरातन सूराँ चढे, सत सतिया मम दोप।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० ३।

सूरिजान—सज्ञा पु० [फा० सूरिन्जान] दे० 'सूरजान'।

सूरि—सज्ञा पु० [स०] १ यज्ञ करानेवाला। ऋत्विज्। २ पडित। विद्वान्। आचार्य। (विशेषकर जैनाचार्यो के नामो के पीछे यह शब्द उपाधिस्वरूप प्रयुक्त होता है)। ३ बृहस्पति का एक नाम। ४ कृष्ण का नाम। ५ यादव। ६ अर्चना, पूजन करनेवाला व्यक्ति। ७ सूर्य।

सूरिवाँ(पु)—सज्ञा पुं० [हिं० सूरमा] दे० 'सूरमाँ'। उ०—सतगुरु साँचा सूरिवाँ, सबद जु वाह्या एक। लागत ही मे मिलि गया, पडचा कलेजै धेक।—कबीर ग्र०, पृ० १।

सूरी[1]—सज्ञा पुं० [स० सूरिन्] [स्त्री० सूरिणी] १ विद्वान्। पडित्। आचार्य।

सूरी[2]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विदुषी। पडिता। २ सूर्य की पत्नी। ३ कुती। ४ राई। राजसर्षप।

सूरी(पु)[3]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सूली] दे० 'सूली'। उ०—नृप कह देहु चोर कहँ सूरी। सतवेप यह चोर कसूरी। तुरत दूत पुर बाहिर लाई। सूरी महँ दिय मुनिहिं चढ़ाई।—रघुराज (शब्द०)।

सूरी(पु)[4]—सज्ञा पु० [सं० शूल] भाला। उ०—पटक्यो कस ताहि गति रुरी। धेनुक भिर्‌यौ तबै गहि सूरी।—गोपाल (शब्द०)।

सूरुज(पु)†—सज्ञा पु० [स० सूर्य] दे० 'सूर्य'।

सूरुवाँ(पु)—सज्ञा पु० [हिं० सूरमा] दे० 'सूरमा'। उ०—जीवहिं का ससा पडा को काको तारहिं। दादू सोई सूरुवाँ जो आप उबारहिं।—दादू० (शब्द०)।

**सूरेठ**—संज्ञा पुं० [ देश० ] बाँस की हाथ भर की एक लकडी जिससे बहेलिए चोंगे मे से लासा निकालते है।

**सूर्क्षण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अनादर।

**सूक्ष्र्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] उडद। माप।

**सूक्ष्र्यण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दे० 'सूर्क्षण' [को०]।

**सूर्ज(पु)**—संज्ञा पुं० [ सं० सूर्य, प्रा० सूर, सूरिअ, सुज्ज ] दे० 'सूर्य'। उ०—चाँद सूर्ज तारागन नाही, मच्छ कच्छ औतारा।—कबीर श०, भा०३, पृ० ३।

**सूर्प**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दे० 'शूर्प'। सूप [को०]।

**सूर्पनखा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शूर्पणखा ] दे० 'शूर्पणखा'।

**सूर्मि, सूर्मी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लोहे की बनी स्त्री की प्रतिमूर्ति।

**विशेष**—मनु ने लिखा है कि गुरुपत्नी मे व्यभिचार करनेवाला अपने पाप को कहकर तपी हुई लोहे की शय्या पर शयन करे अथवा तपी हुई लोहे की स्त्री की प्रतिमूर्ति का आलिंगन करे। इस प्रकार मरने से उसका पाप नष्ट होता है—'सूर्मी ज्वलन्ती वाश्लिष्येन्मृत्युना स विशुद्ध्यति'।

२ पानी का नल। ३ गृह का स्तंभ (को०)। ४ कांति। प्रकाश (को०)। ५ ज्वाला (को०)।

**सूर्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० सूर्या, सूर्याणी ] १ अतरिक्ष मे पृथ्वी, मगल, शनि आदि ग्रहो के बीच सबसे बडा ज्वलत पिंड जिसकी सब ग्रह परिक्रमा करते है। वह बडा गोला जिससे पृथ्वी आदि ग्रहो को गरमी और रोशनी मिलती है। सूरज। आफताब।

**विशेष**—सूर्य पृथ्वी से चार करोड पैंसठ लाख मील दूर है। उसका व्यास पृथ्वी के व्यास से १०८ गुना अर्थात् ४,३३,००० कोस है। घनफल के हिसाब से देखे तो जितना स्थान सूर्य घेरे हुए है, उतने मे पृथ्वी के ऐसे ऐसे १२,५०,००० पिंड आएँगे। साराश यह कि सूर्य पृथ्वी से बहुत ही बडा है। परतु सूर्य जितना बडा है, उसका गुरुत्व उतना नही है। उसका सापेक्ष गुरुत्व पृथ्वी का चौथाई है। अर्थात् यदि हम एक टुकडा पृथ्वी का और उतना ही बडा टुकडा सूर्य का ले तो पृथ्वी का टुकडा तौल मे सूर्य के टुकडे का चौगुना होगा। कारण यह है कि सूर्य पृथ्वी के समान ठोस नही है। वह तरल ज्वलत द्रव्य के रूप मे है। सूर्य के तल पर कितनी गरमी है, इसका जल्दी अनुमान ही नही हो सकता। वह २०,००० डिग्री तक अनुमान की गई है। इसी ताप के अनुसार उसके अपरिमित प्रकाश का भी अनुमान करना चाहिए। प्राय हम लोगो को सूर्य का तल बिलकुल स्वच्छ और निष्कलक दिखाई पडता है, पर उसमे भी बहुत से काले धब्बे है। इनमे विचित्रता यह है कि एक निश्चित नियम के अनुसार ये घटते बढते रहते है, अर्थात् कभी इनकी सख्या कम हो जाती है, कभी अधिक। जिस वर्ष इनकी सख्या अधिक होती है, उस वर्ष मे पृथ्वी पर चुबक शक्ति का क्षोभ बहुत बढ जाता है और विद्युत् की शक्ति के अनेक काड दिखाई पडते है। कुछ वैज्ञानिको का अनुमान है कि इन लाछनो का वर्षा से भी सबध है। जिस साल ये अधिक होते है, उस साल वर्षा भी अधिक होती है। भारतीय ग्रथो मे सूर्य की गणना नव ग्रहो मे है। आधुनिक ज्योतिर्विज्ञान के अनुसार सूर्य ही मुख्य पिंड है जिसके पृथ्वी, शनि, मगल आदि ग्रह अनुचर है और उसकी निरतर परिक्रमा किया करते है। विशेष दे० 'खगोल'।

सूर्य की उपासना प्राय सब सभ्य प्राचीन जातियो मे प्रचलित है। आर्यो के अतिरिक्त असीरिया के असुर भी 'शम्श' ( सूर्य ) की पूजा करते थे। अमेरिका के मेक्सिको प्रदेश मे बसनेवाली प्राचीन सभ्य जनता के भी बहुत से सूर्यमदिर थे। प्राचीन आर्य जातियो के तो सूर्य प्रधान देवता थे। भारतीय और पारसीक दोनो शाखाओ के आर्यो के बीच सूर्य को मुख्य स्थान प्राप्त था। वेदो मे पहले प्रधान देवता सूर्य, अग्नि और इद्र थे। सूर्य आकाश के देवता थे। इनका रथ सात घोडो का कहा गया है। आगे चलकर सूर्य और सविता एक माने गए और सूर्य की गणना द्वादश आदित्यो मे हुई। ये आदित्य वर्ष के १२ महीनो के अनुसार सूर्य के ही रूप थे। इसी काल मे सूर्य के सारथि अरुण ( सूर्योदय की ललाई ) कहे गए जो लँगडे माने गए है। सूर्य का ही नाम विवस्वत् या विवस्वान भी था जिनकी कई पत्नियाँ कही गई है, जिनमे सज्ञा प्रसिद्ध है।

**पर्या०**—भास्कर। भानु। प्रभाकर। दिनकर। दिनपति। मार्तंड। रवि। तरणि। सहस्राशु। तिग्मदीधिति। मरीचिमाली। चडकर। आदित्य। सविता। सूर। विवस्वान। दिवाकर।

२ बारह की सख्या। ३ अर्क। आक। मदार। ४ बलि के एक पुत्र का नाम। ५ शिव का एक नाम (को०)।

**सूर्यक**—वि० [सं०] सूर्य के समान। सूर्य जैसा [को०]।

**सूर्यकमल**—संज्ञा पुं० [सं०] सूरजमुखी फूल।

**सूर्यकर**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य की किरण।

**सूर्यकरोज्ज्वल**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य की किरणो से दीप्त।

**सूर्यकांत**—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यकान्त] १ एक प्रकार का स्फटिक या बिल्लौर, सूर्य के सामने रखने से जिसमे से आँच निकलती है।

**पर्या०**—सूर्यमणि। तपनमणि। रविकात। सूर्याश्मा। ज्वलनाश्मा दहनोपम। दीप्तोपल। तापन। अर्कोपल। अग्निगर्भ।

**विशेष**—वैद्यक के अनुसार यह उष्ण, निर्मल, रसायन, वात और श्लेष्मा को हरनेवाला और बुद्धि बढानेवाला है।

२ सूरजमुखी शीशा। आतशी शीशा।

**विशेष**—यह विशेष बनावट का मोटे पेटे का गोल शीशा होता है जो सूर्य की किरनो को एक केंद्र पर एकत्र करता है, जिससे ताप उत्पन्न हो जाता है। इसके भीतर से देखने पर वस्तुएँ बडे आकार की दिखाई पडती है।

३ एक प्रकार का फूल। आदित्यपर्णी। ४ मार्कंडेयपुराण के अनुसार एक पर्वत का नाम।

**सूर्यकांति¹**—संज्ञा स्त्री० [सं० सूर्यकान्ति] १ सूर्य की दीप्ति या प्रकाश। २. एक प्रकार का पुष्प। ३ तिल का फूल।

**सूर्यकांति**(पु)[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सूर्यकान्ति] सूर्यकांत मणि। विशेष दे० 'सूर्यकांत'। उ०—चंद्रकांति अमृत उपजावै। सूर्यकांति में अग्नि प्रजावै।—रत्नपरीक्षा (शब्द०)।

**सूर्यकाल**—संज्ञा पुं० [सं०] १ दिन का समय। २ फलित ज्योतिष मे शुभाशुभ निर्णय के लिये एक चक्र।

**सूर्यकालानलचक्र**—संज्ञा पुं० [सं०] एक ज्योतिषचक्र जिससे मनुष्य का शुभाशुभ जाना जाता है।

**सूर्यक्रांत**—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यक्रान्त] १ संगीत मे एक प्रकार का ताल। २ एक प्राचीन जनपद।

**सूर्यक्षय**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्यमंडल।

**सूर्यगर्भ**—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक बोधिसत्व का नाम। २ एक बौद्ध सूत्र का नाम।

**सूर्यग्रह**—संज्ञा पुं० [सं०] १ नव ग्रहों मे से प्रथम ग्रह—सूर्य। २ सूर्यग्रहण। ३ राहु और केतु। ४ जलपात्र या घड़े का पेंदा।

**सूर्यग्रहण**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य का ग्रहण। विशेष दे० 'ग्रहण'।

**सूर्यचक्षु**—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यचक्षुस्] रामायण के अनुसार एक राक्षस का नाम।

**सूर्यज**—संज्ञा पुं० [सं०] १ शनि ग्रह। २ यम। ३ सावर्णि मनु। ४ रेवत। ५ सुग्रीव। ६ कर्ण।

**सूर्यजा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना नदी।

**सूर्यतनय**—संज्ञा पुं० [सं०] १ शनि। २ सावर्णि मनु। ३ रेवत। ४ सुग्रीव। ५ यम। ६ कर्ण।

**सूर्यतनया**—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना।

**सूर्यतपा**—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यतपस्] एक मुनि का नाम।

**सूर्यतापिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपनिषद् का नाम।

**सूर्यतीर्थ**—संज्ञा पुं० [सं०] एक तीर्थ का नाम। (महाभारत)।

**सूर्यतेज**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य का प्रकाश। धूप। घाम [को०]।

**सूर्यदास**—संज्ञा पुं० [सं०] १ संस्कृत के एक प्राचीन कवि का नाम। २ हिंदी के प्रसिद्ध कवि सूरदास।

**सूर्यदृक्**—वि० [सं० सूर्यदृश्] सूर्य की ओर देखनेवाला।

**सूर्यदेव**—संज्ञा पुं० [सं०] भगवान् सूर्य।

**सूर्यदेवत**—वि० [सं०] जिसके उपास्य सूर्य हों। जिसके देवता सूर्य हों [को०]।

**सूर्यद्वार**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य का मार्ग। उत्तरायण [को०]।

**सूर्यध्वज**—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

यौ०—सूर्यध्वजपताकी = शिव।

**सूर्यनंदन, सूर्यनक्षत्र**—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यनन्दन] १ शनि। २ कर्ण। दे० सूर्यज'।

**सूर्यनगर**—संज्ञा पुं० [सं०] काश्मीर के एक प्राचीन नगर का नाम।

**सूर्यनाभ**—संज्ञा पुं० [सं०] एक दानव का नाम। (हरिवंश)।

**सूर्यनारायण**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य देवता।

**सूर्यनेत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] गरुड के एक पुत्र का नाम।

**सूर्यपक्व**—वि० [सं०] सूर्यातप द्वारा पकाया हुआ [को०]।

**सूर्यपति**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य देवता।

**सूर्यपत्नी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ संज्ञा। २ छाया।

**सूर्यपत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १ डमरमूल। अर्कपत्री। २ हुरहुर। आदित्यभक्ता। ३ मदार का पौधा।

**सूर्यपर्णी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ डमरमूल। अर्कपत्री। २ मषवन। वन उड़दी। माषपर्णी।

**सूर्यपर्व**—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यपर्वन्] वह काल जिसमे सूर्य किसी नई राशि मे प्रवेश करता है।

**सूर्यपाद**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य की किरण।

**सूर्यपुत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १ शनि। २ यम। ३ वरुण। ४ अश्विनीकुमार। ५ सुग्रीव। ६ कर्ण।

**सूर्यपुत्री**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ यमुना। २ विद्युत्। ३ बिजली। (सब०)।

**सूर्यपुर**—संज्ञा पुं० [सं०] काश्मीर के एक प्राचीन नगर का नाम।

**सूर्यपुराण**—संज्ञा पुं० [सं०] एक छोटा ग्रंथ जिसमे सूर्यमाहात्म्य वर्णित है।

**सूर्यप्रदीप**—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्ध धर्मानुसार एक प्रकार का ध्यान या समाधि।

**सूर्यप्रभ**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य के समान दीप्तिमान्।

**सूर्यप्रभ**[2]—संज्ञा पुं० १ एक प्रकार की समाधि। २ श्रीकृष्ण की पत्नी लक्ष्मणा के प्रासाद या भवन का नाम। ३ एक बोधिसत्व का नाम। ४ एक नाग का नाम।

**सूर्यप्रभव**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य से उत्पन्न।

**सूर्यप्रभव**[2]—संज्ञा पुं० १ शनि। २ कर्ण।

**सूर्यप्रशिष्य**—संज्ञा पुं० [सं०] जनक का एक नाम।

**सूर्यफणिचक्र**—संज्ञा पुं० [सं०] एक ज्योतिश्चक्र जिससे कोई कार्य आरंभ करते समय उसका शुभाशुभ फल निकालते हैं।

**सूर्यबिंब**—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यबिम्ब] सूर्य का मंडल।

**सूर्यभ**—वि० [सं०] सूर्य की तरह ज्योतियुक्त [को०]।

**सूर्यभक्त**—संज्ञा पुं० [सं०] १. दुपहरिया। बधूक-पुष्प-वृक्ष। २ सूर्य का उपासक व्यक्ति।

**सूर्यभक्तक**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य का उपासना करनेवाला व्यक्ति। २ दुपहरिया। बधूक।

**सूर्यभक्ता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] हुरहुर। आदित्य भक्ता।

**सूर्यभा**—वि० [सं०] सूर्य के समान दीप्तिमान्।

**सूर्यभागा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी का नाम।

**सूर्यभानु**—संज्ञा पुं० [सं०] १ रामायण के अनुसार एक यक्ष का नाम। २ एक राजा का नाम।

**सूर्यभ्राता**—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यभ्रातृ] ऐरावत हाथी का नाम।

**सूर्यमंडल**—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यमण्डल] १ सूर्य का घेरा।

पर्या०—परिधि। परिवेश। मंडल। उपसूर्यक।

२ रामायण के अनुसार एक गधर्व का नाम ।

**सूर्यमणि**—सज्ञा पुं० [स०] १ सूर्यकात मणि । २ एक प्रकार का पुष्पवृक्ष ।

**सूर्यमाल**—सज्ञा पु० [स०] सूर्य की माला धारण करनेवाले अर्थात् शिव । महादेव ।

**सूर्यमास**—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सौरमास' ।

**सूर्यमुखी**—सज्ञा पुं० [स० सूर्यमुखिन्] दे० 'सूरजमुखी' । उ०—वह सूर्यमुखी प्रसन्न थी । —साकेत पृ० ३४८ ।

**सूर्ययत्र**—सज्ञा पु० [स० सूर्ययन्त्र] १ सूर्य की उपासना मे सूर्यस्थानीय प्रतिमा या चक्र । २ सूर्यवेध की प्रक्रिया मे व्यवहृत एक प्रकार का यत्र (को०) ।

**सूर्यरश्मि**—सज्ञा पुं० [स०] सूर्य की किरन । रविकिरण । २ सविता का एक नाम ।

**सूर्यरुच**—सज्ञा स्त्री० [स०] सूर्य की प्रभा या दीप्ति (को०) ।

**सूर्यर्क्ष**—सज्ञा पुं० [सं०] वह नक्षत्र जिसमे सूर्य की स्थिति हो ।

**सूर्यलता**—सज्ञा स्त्री० [स०] हुरहुर । हुलहुल । आदित्यभक्ता लता ।

**सूर्यलोक**—सज्ञा पुं० [स०] सूर्य का लोक ।

**विशेष**—कहते हैं, युद्ध मे मरनेवाले और काशीखड के अनुसार सूर्य के भक्त भी इसी लोक को प्राप्त होते हैं ।

**सूर्यलोचना**—सज्ञा स्त्री० [स०] एक गधर्वी का नाम ।

**सूर्यवश**—सज्ञा पुं० [स०] क्षत्रियो के दो आदि और प्रधान कुलो मे से एक जिसका आरभ इक्ष्वाकु से माना जाता है ।

**विशेष**—पुराणानुसार परमेश्वर के पुत्र ब्रह्मा, ब्रह्मा के मरीचि, मरीचि के कश्यप, कश्यप के सूर्य, सूर्य के वैवस्वत मनु और वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु थे। इक्ष्वाकु का नाम वैदिक ग्रथो मे भी आया है। ये इक्ष्वाकु त्रेता युग मे अयोध्या के राजा थे । त्रेता और द्वापर की सधि मे इसी वश मे दशरथ के यहाँ श्रीरामचद्र जी ने जन्म लिया था। द्वापर के प्रारभ मे श्रीरामचद्र के पुत्र कुश हुए । कुश के वश ने सुमित्र तक द्वापर मे एक हजार वर्ष राज्य किया । इसके वाद इस वश की विश्राति हुई ।

**सूर्यवंशी**—वि० [स० सूर्यवशिन्] सूर्यवश का । जो क्षत्रियो के सूर्यवश मे उत्पन्न हुआ हो ।

**सूर्यवश्य**—वि० [स०] सूर्यवश मे उत्पन्न ।

**सूर्यवक्त्र**—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार की ओषधि ।

**सूर्यवर**—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की ओषधि ।

**सूर्यवर्चस्**[१]—सज्ञा पु० [स०] १ एक देवगधर्व का नाम। २ एक ऋषि का नाम ।

**सूर्यवर्चस्**—वि० सूर्य के समान दीप्तिमान् ।

**सूर्यवर्मा**—सज्ञा पुं० [सं० सूर्यवर्मन्] महाभारत मे वर्णित त्रिगर्त के एक राजा का नाम ।

**सूर्यवल्लभा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ हुरहुर । आदित्यभक्ता । २ कमलिनी । पद्मिनी ।

**सूर्यवल्ली**—सज्ञा स्त्री० [स०] १. दधियार । अधाहुली । अर्कपुष्पी । २ क्षीर काकोली ।

**सूर्यवान**—सज्ञा पुं० [स० सूर्यवत्] रामायण के अनुसार एक पर्वत का नाम ।

**सूर्यवार**—सज्ञा स० [स०] रविवार । आदित्यवार ।

**सूर्यविकासी**—वि० [स० सूर्यविकासिन्] सूर्योदय होने पर विकसित या प्रसन्न होनेवाला (को०) ।

**सूर्यविघ्न**—सज्ञा पुं० [पु०] विष्णु ।

**सूर्यविलोकन**—सज्ञा पुं० [स०] एक मागलिक कृत्य जिसमे वच्चे को सूर्य का दर्शन कराया जाता है । यह वच्चे के चार महीने के होने पर किया जाता हे ।

**सूर्यवृक्ष**—सज्ञा पु० [स०] १ आक । मदार । अर्कवृक्ष । २ दधियार । अधाहुली । अर्कपुष्पी ।

**सूर्यवेश्म**—सज्ञा पु० [स० सूर्यवेश्मन्] सूर्यमडल ।

**सूर्यव्रत**—सज्ञा पुं० [स०] १ एक व्रत जो सूर्य भगवान् के प्रीत्यर्थ रविवार को किया जाता है । २ ज्योतिष मे एक चक्र ।

**सूर्यशत्रु**—सज्ञा पुं० [स०] रामायण मे वर्णित एक राक्षस का नाम ।

**सूर्यशिष्य**—सज्ञा पु० [स०] १ याज्ञवल्क्य का एक नाम । २ जनक का एक नाम ।

**सूर्यशिष्यातेवासी**—सज्ञा पु० [स० सूर्यशिष्यान्तेवासिन्] दे० 'सूर्य-प्रशिष्य' ।

**सूर्यशोभा**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सूर्य का प्रकाश । धूप । २ एक प्रकार का फूल ।

**सूर्यश्री**—सज्ञा पु० [स०] विश्वेदेवा मे से एक ।

**सूर्यसक्रम**—सज्ञा पुं० [स० सूर्यसङ्क्रम] दे० 'सूर्यसक्रमण' (को०) ।

**सूर्यसक्रमण**—सज्ञा पुं० [स० सूर्यसङ्क्रमण] सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि मे प्रवेश । सूर्य की सक्राति । विशेष दे० 'सक्राति' ।

**सूर्यसक्राति**—सज्ञा स्त्री० [स० सूर्यसङ्क्रान्ति] सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि मे प्रवेश । विशेष दे० 'सक्राति ।

**सूर्यसज्ञ**—सज्ञा पु० [स०] १ सूर्य । २ आक । अर्क वृक्ष । ३ केसर । कुकुम । ४ ताँवा । ताम्र । ४ एक प्रकार का मानिक या चुन्नी ।

**सूर्यसदृश**—सज्ञा पुं० [सं०] लीलावज्र का एक नाम । (वौद्ध) ।

**सूर्यसाम**—सज्ञा पु० [स० सूर्यसामन्] एक साम का नाम ।

**सूर्यसारथि**—सज्ञा पु० [सं०] सूर्य का सारथि—अरुण ।

**सूर्यसावर्णि**—सज्ञा पुं० [स०] मार्कंडेय पुराण के अनुसार आठवे मनु का नाम ।

**विशेष**—ये सूर्य के औरस हैं और सूर्य की पत्नी सज्ञा के गर्भ से उत्पन्न माने जाते हैं ।

**सूर्यसावित्र**—सज्ञा पु० [सं०] १ विश्वेदेवा मे से एक । २ एक प्रसिद्ध ग्रथ का नाम ।

**विशेष**—इसके तत्व का उपदेश पहले पहल सूर्य से प्राप्त कहा गया है ।

सूर्यसिद्धात—संज्ञा पुं० [स० सूर्यसिद्धान्त] गणित ज्योतिष का भास्कराचार्य द्वारा विरचित एक ग्रथ [को०]।

सूर्यसुत—संज्ञा पुं० [स०] १ शनि। २ कर्ण। ३ सुग्रीव। ४ यम।

सूर्यसूक्त—संज्ञा पुं० [स०] ऋग्वेद के एक सूक्त का नाम जिसमे सूर्य की स्तुति की गई है।

सूर्यसूत—संज्ञा पुं० [स०] सूर्य का सारथि, अरुण।

सूर्यस्तुत—संज्ञा पुं० [स०] एक दिन मे होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

सूर्यस्तुति—संज्ञा स्त्री० [स०] सूर्य का स्तवन। सूर्य की प्रार्थना [को०]।

सूर्यस्तोत्र—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूर्यस्तुति'।

सूर्यहृदय—संज्ञा पुं० [स०] सूर्य का एक स्तोत्र [को०]।

सूर्यांशु—संज्ञा पुं० [स०] सूर्य की किरण।

सूर्या—संज्ञा स्त्री० [स०] १ सूर्य की पत्नी सज्ञा।

विशष—कई मतो मे यह सूर्य की कन्या भी कही गई हैं। कही ये सविता या प्रजापति की कन्या और अश्विनी की स्त्री कही गई हैं और कही सोम की पत्नी। एक मत्र मे इनका नाम ऊर्जानी आया हैं और ये पूषा की भगिनी कही गई हैं। सूर्या सावित्री ऋग्वेद के सूर्यसूक्त की द्रष्टा मानी जाती हैं।

२ नवोढा। नवविवाहिता स्त्री। ३ इद्रवारुणी। ४ सूर्य के विवाह से सबद्ध सूक्त या ऋचाएँ (को०)।

सूर्याकर—संज्ञा पुं० [स०] रामायण मे वर्णित एक जनपद का नाम।

सूर्याक्ष¹—संज्ञा पुं० [स०] १ विष्णु। २ महाभारत मे एक राजा का नाम। ३ रामायण मे वर्णित एक बदर का नाम।

सूर्याक्ष²—वि० १ सूर्य के समान आँखोवाला। २ जिसकी आँख सूर्य हो (को०)।

सूर्याणी—संज्ञा स्त्री० [स०] सूर्य की पत्नी—सज्ञा।

सूर्यातप—संज्ञा पुं० [स०] सूर्य की गरमी। धूप। घाम। उ०—विद्रुम औ, मरकत की छाया, सोने चाँदी का सूर्यातप।—युगात, पृ० ८६।

सूर्यात्मज—संज्ञा पुं० [स०] १ शनि। २ कर्ण। ३ सुग्रीव। ४ यम (को०)।

सूर्याद्रि—संज्ञा पुं० [स०] मार्कडेय पुराण मे आगत एक पर्वत का नाम।

सूर्यापाय—संज्ञा पुं० [स०] सूर्यास्त।

सूर्यापीड—संज्ञा पुं० [स० सूर्यापीड] परीक्षित के एक पुत्र का नाम।

सूर्यायाम—संज्ञा पुं० [स०] सूर्यास्त का समय।

सूर्यार्घ्य—संज्ञा पुं० [स०] सूर्य को दिया जानेवाला अर्घ्य [को०]।

सूर्यालोक—संज्ञा पुं० [स०] १ सूर्य का प्रकाश। २ गरमी। आतप।

सूर्यावर्त—संज्ञा पुं० [स०] १ हुलहुल का पौधा। हुरहुर। आदित्यभक्ता। २ सूवर्चला। ब्रह्मसौचली। ३ गजपिप्पली। गजपीपल। ४ एक प्रकार की शिर की पीडा। आधासीसी।

विशेष—यह रोग वातज कहा गया है। इसमे सूर्योदय के साथ ही मस्तक मे दोनो भँवो के बीच पीडा आरभ होती है और सूर्य की गरमी बढने के साथ साथ बढती जाती है। सूरज ढलने के साथ ही पीडा घटने लगती है और शात हो जाती है।

५ बौद्ध मतानुसार एक प्रकार का ध्यान या समाधि। ६ एक प्रकार का जलपात्र।

सूर्यावर्तरस—संज्ञा पुं० [स०] श्वास रोग की एक रसौषध जो पारे, गधक और ताँबे के सयोग से बनती है।

सूर्यावर्ता—संज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सूर्यावर्त' [को०]।

सूर्याश्म—संज्ञा पुं० [स० सूर्याश्मन्] सूर्यकात मणि।

सूर्याश्व—संज्ञा पुं० [स०] सूर्य का घोडा। वाताट हरित।

सूर्यास्त—संज्ञा पुं० [स०] सूर्य का डूबना। सूर्य के छिपने का समय। सायकाल।

क्रि० प्र०—होना।

सूर्याह्व—संज्ञा पुं० [स०] १ ताँबा। ताम्र। २ आक। मदार। अर्कवृक्ष। ३ महेद्रवारुणी। बडी इद्रायन। ४ वह जो सूर्यसज्ञक हो (को०)।

सूर्येंदुसगम—संज्ञा [स० सूर्य + इन्दु + सङ्गम] सूर्य और चद्रमा का सगम या मिलन, अर्थात् दोनो की एक राशि मे स्थिति। अमावस्या।

सूर्योज्ज्वल—वि० [स०] सूर्य की तरह ज्योतित। उ०—भूत शिखर के चरम चूड सा, शत सूर्योज्ज्वल।—युगपथ, पृ० ११८।

सूर्योढ¹—वि० [स०] सूर्य द्वारा लाया हुआ। सूर्यास्त के समय आया हुआ।

सूर्योढ²—संज्ञा स० १ सूर्यास्त का समय। २ वह अतिथि जो सूर्यास्त होने पर अर्थात् सध्या समय आता है।

सूर्योत्थान—संज्ञा पुं० [स०] सूर्योदय। सूर्य का चढना।

सूर्योदय—संज्ञा पुं० [स०] १ सूर्य का उदय या निकलना। सूर्य के निकलने का समय। प्रातःकाल।

क्रि० प्र०—होना।

सूर्योदया गिरि—संज्ञा पुं० [स०] वह कल्पित पर्वत जिसके पीछे से सूर्य का उदित होना माना जाता है। उदयाचल।

सूर्योद्यान—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्यवन नामक तीर्थ।

सूर्योपनिषद्—संज्ञा स्त्री० [स०] एक उपनिषद् का नाम।

सूर्योपस्थान—संज्ञा पुं० [स०] सूर्य की एक प्रकार की उपासना।

विशेष—प्रात, मध्याह्न और सायकाल को सध्या करते समय सूर्याभिमुख हो एक पैर से खडे होकर सूर्य की उपासना करने का विधान है।

सूर्योपासक—संज्ञा पुं० [स०] सूर्य की उपासना करनेवाला। सूर्यपूजक। सौर।

सूर्योपासना—संज्ञा स्त्री० [स०] सूर्य की आराधना या पूजा।

सूल—संज्ञा पुं० [स० शूल, प्रा० सूल] १ बरछा। भाला। साँग। उ०—(क) वर्म चर्म कर कृपान सूल सेल धनुषबान, धरनि दलनि दानव दल रन करालिका।—तुलसी। ग्र०, पृ० ४६२। (ख) लिए सूल सेल पास परिघ प्रचड दड भाजन सनीर धीर धरे धनुबान है।—तुलसी ग्र०, पृ० १७१। २ कोई चुभनेवाली

नुकीली चीज। काँटा। उ०—(क) सर सो समीर लाग्यो सूल सो सहेली सब विष सो विनोद लाग्यो बन सो निवास री।—मतिराम (शब्द०)। (ख) ऐंती नचाइ कै नाच वा राँड को लाल रिझावन को फल येती। मेती सदा रसखानि लिए कुवरी के करेजनि सूल सी भेती।—रसखान (शब्द०)।

क्रि० प्र०—चुभना।—लगना।

३ भाला चुभने की सी पीड़ा। कसक। उ०—बसिहौं बन लखिहौं मुनिन भखिहौं फल दल मूल। भरत राज करिहै अवधि मोहि न कछु अब सूल।—पद्माकर (शब्द०)। ४ दर्द। पीड़ा। जैसे—पेट मे सूल।

क्रि० प्र०—उठना।—मिटना।

विशेष—इस शब्द का स्त्रीलिंग प्रयोग भी सूर आदि कवियो मे मिलता है। जैसे—मेरे मन इतनी सूल रही।—सूर (शब्द०)।

५ माला का ऊपरी भाग। माला के ऊपर का फुलरा। उ०—मनि फूल रचित मखतूल की झूल न जाके तूल कोउ। सजि सोहे उघारि दुकुल वर सूल सबै अरि शूल सोउ।—गोपाल (शब्द०)।

**सूलधर**—सज्ञा पु० [स०शूलधर] दे० 'शूलधर'।

**सूलधारी**—सज्ञा पु० [हिं० सूल+स० धारिन्] दे० 'शूलधर'।

**सूलना**[1]—क्रि० स० [हिं० सूल+ना(प्रत्य०)]। भाले से छेदना। २ पीडित करना।

**सूलना**[2]—क्रि० अ० भाले से छिदना। चुभना। २ पीडित होना। व्यथित होना। दुखना। उ०—फूलि उठ्यो वृदावन, भूलि उठे खग मृग, सूलि उठ्यो उर, विरहागि वगराई है।—देव (शब्द०)।

**सूलपानि**(पु)—सज्ञा पुं० [स० शूलपाणि] दे० 'शूलपाणि'।

**सूली**[1]—सज्ञा स्त्री० [स० शूल] १ प्राणदड देने की एक प्राचीन प्रथा जिसमे दडित मनुष्य एक नुकीले लोहे के डडे पर बैठा दिया जाता था और उसके ऊपर मुँगरा मारा जाता था। २ फाँसी।

क्रि० प्र०—चढना।—चढाना।—देना।—पाना।—मिलना।

३ एक प्रकार का नरम लोहा जिसकी छडे बनती है।—(लुहार)।

**सूली**[2]—सज्ञा पुं० [देश०] दक्षिण दिशा। (लश०)।

**सूली**(पु)[3]—सज्ञा पुं० [स० शूलिन्] महादेव। शिव। उ०—चदन की वर चौकी पै बैठि जु न्हाई जुन्हाई सी जोति समूली। अवर के धर अवर पूजि वरवर देव दिगवर सूली।—देव (शब्द०)।

**सूवना**(पु)[1]—क्रि० अ० [स० स्रवण] बहना। प्रवाहित होना। उ०—कहा करौ अति सूवै नयना उमगि चलत पग पानी। सूर सुमेर समाइ कहाँ धौ बुधिवासना पुरानी।—सूर (शब्द०)।

**सूवना**[2]—सज्ञा पु० [स० शुक] दे० सूआ। उ०—सेमर केरा सूवना सिहुले बैठा जाय। चोच चहोरे सिर धुनै यह वाही को भाव।—कबीर (शब्द०)।

**सूवर**†—सज्ञा पु० [स० शूकर] दे० 'सूअर'।

**सूवा**[1]—सज्ञा पु० [१] फारसी सगीत के अनुसार २४ शोभाओ मे से एक।

**सूवा**[2]—सज्ञा पुं० [स० शुक, प्रा० सुअ, सुव] १ तोता। सुग्गा। सूआ। उ०—(क) सूवा, एक सदेसडउ, वार सरेसी तुज्झ।—ढोला०, दू० ३६८। (ख) सारो सूवा कोकिल बोलत वचन रसाल। सुदर सबकौ कान दे वृद्ध तरुन अरु बाल।—सुदर ग्र०, भा० २, पृ० ७३६। २ शुक की तरह हरा रग। (लश०)। उ०—सूवा पाग केसरिया जामा जापर गजब किनारी।—नट०, पृ० १२३।

**सूलूल**—सज्ञा पु० [अ०] स्तनाग्र। चूचुक। कुचाग्र [को०]।

**सूस**[1]—सज्ञा पु० [अ०, मि०सं० शिशुमार] मगर की तरह का एक बडा जलजतु जो गगा मे बहुत होता है। सूइँस। उ०—सिर बिनु कवच सहित उतराही। जहँ तहँ सुभट ग्राह जनु जाही। बिनु सिर ते न जात पहिचाने। मनहुँ सूस जल मे उतराने।—सबल (शब्द०)।

विशेष—इसका रंग काला होता है और यह प्राय जल के ऊपर आया करता है, पर किनारे पर नही आता। यह घडियाल या मगर के समान जल के बाहर के जतु नही पकडता।

**सूस**[2]—सज्ञा पु० [अ०] १ रेशम के कपडो मे लगनेवाला कीट। २ मुलेठी का पेड [को०]।

**सूसतौ**(पु)—वि० [स० स्वस्थ, प्रा० सुस्थ] दे० 'स्वस्थ'। उ०—सूसतौ जी मे वीरा जोगिया। पदमणि आगलि घालइ छइ वाई।—बी० रासो, पृ० ९३१।

**सूसमार**—सज्ञा पु० [स० शिशुमार] सूस।

**सूसला**—सज्ञा पु० [स० शश] खरगोश।

**सूसि**(पु)—सज्ञा पुं० [अ० सूस] दे० 'सूस'। उ०—फिरत चक्र आवर्त्त अनेका। उदरहिं शीश सूसि ढिग एका।—रघुनाथदास (शब्द०)। २ जलीय जतु। मगर। नक्र। उ०—बीच मिला दरियाव अध को ठाढ कराई। लेन गया वह थाह सूसि लैगा घिसियाई।—पलटू० बानी, पृ० ८८।

**सूसी**—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का धारीदार या चारखानेदार कपडा।

**सूहटा**‡—सज्ञा पुं० [हिं० सुअटा, सुवटा, सूवटा] उ०—मुक्तिकरी नानक गुरू, रचक रामानद। ना पिंजर ना सूहटा, ना वाणी ना वद।—प्राण०, पृ० १९९।

**सूहर**†—सज्ञा पु० [स० शूकर, प्रा० सूअर(=सूहर)] शूकर। वराह। उ०—यह उल्लेख है कि उन्होने सूहर, हिरन, बकरे तथा निषिद्ध मोर का मास खाया था।—प्रा० भा० प०, पृ० १९८।

**सूहा**[1]—सज्ञा पु० [हिं० सोहना] १ एक प्रकार का लाल रग। २. सपूर्ण जाति का एक सकर राग।

विशेष--किसी के मन मे यह विभास और मालश्री के मेल से और किसी किसी के मत से विभास और वागीश्वरी के मेल से बना है। इसमे गाधार, धैवत और निषाद तीनो कोमल लगते हैं। इसके गाने का समय ६ दड से १० दड तक है। हनुमत् के मत मे यह दीपक राग का और अन्य मतो से हिंडोल या भैरव राग का पुत्र है। कुछ लोगो ने इसे रागिनी कहा है और भैरव की पुत्रवधू बताया है।

**सूहा²**--वि० [वि० स्त्री० सूही] विशेष प्रकार के लाल रग का। लाल। उ०--(क) सूहा चोला पहिर अमोला पिया घट पिया को रिझाओ रे।--कबीर श० भा० १, पृ० ७१। (ख) सजि सूहे दुकूल सबै सुख साधा।--पद्माकर (शब्द०)।

**सूहाकान्हडा**--सज्ञा पु० [हिं० सूहा + कान्हडा] सपूर्ण जाति का एक सकर राग जिसमे सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

**सूहाटोडी**--सज्ञा स्त्री० [हिं० सूहा + टोडी] सपूर्ण जाति की एक सकर रागिनी जिसमे सब कोमल स्वर लगते हैं।

**सूहाबिलावल**--सज्ञा पु० [हिं० सूहा + बिलावल] सपूर्ण जाति का एक सकर राग।

**सूहाश्याम**--सज्ञा पु० [स० सूहा + श्याम] सपूर्ण जाति का एक सकर राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते है।

**सूही**--वि० स्त्री० [हिं० सूहा] दे० 'सूहा'। उ०--गावत चढी हैं हिंडोरे सूही सारी सोहै।--नद० ग्र०, पृ० ३७५।

**सृका**--सज्ञा स्त्री० [स० सृङ्का] १ दीप्त या प्रकाशयुक्त रत्नो की माला। २ पथ। राह। रास्ता [को०]।

**सृखला**(पु)--सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्खला] दे० 'शृखला'। उ०--तुलसिदास प्रभु मोह सृखला छुटहि तुम्हारे छोरे।--तुलसी (शब्द०)।

**सृग**(पु)--सज्ञा पु० [स० शृङ्ग] दे० 'शृग'।

**सृगवेर**--सज्ञा पु० [स० शृङ्गवेर] दे० 'शृगवेर' [को०]।

**सृगवेरपुर**(पु)--सज्ञा पु० [सं० शृङ्गवेरपुर] दे० 'शृगवेरपुर'। उ०--सीता सचिव सहित दोउ भाई। सृगवेरपुर पहुँचे आई।--तुलसी (शब्द०)।

**सृगार**(पु)--सज्ञा पुं० [स० शृङ्गार] दे० 'शृगार'। उ०--महा सुघट्ट पट्टिय। सृगार भूमि फट्टिय।--ह० रासो, पृ० १३३।

**सृगी**(पु)--सज्ञा पु० [स० शृङ्गिन्] दे० 'शृगी'।

**सृजय**--सज्ञा पु० [स० सृञ्जय] १ ऋग्वेद मे देवरात के एक पुत्र का नाम। २ मनु के एक पुत्र का नाम। ३ पुराणोक्त एक वश जिसमे धृष्टद्युम्न हुए थे और जिस वश के लोग महाभारत युद्ध मे पाडवो की ओर से लडे थे। ४ ययातिवश के कालनर के एक पुत्र का नाम।

**सृजयी**--सज्ञा स्त्री० [स० सृञ्जयी] हरिवश मे वर्णित यजमान की दो पत्नियो का नाम।

**सृजरी**--सज्ञा स्त्री० [स० सृञ्जरी] दे० 'सृजयी'।

**सृकडु, सृकडू**--सज्ञा स्त्री० [स० सृकण्डु, सृकण्डू] खाज। खुजली। कडु।

**सृक¹**--सज्ञा पु० [स०] १ शूल। भाला। २ वाण। तीर। ३ वायु। हवा। ४ कैरव। कमल का फूल। ५ वज्र [को०]।

**सृक**(पु)²--सज्ञा पु० [स० स्रज्, स्रग्] माला। उ०--दरसन हू नासै जम सैनिक जिमि नह बालक सेनी। सूर परस्पर करत कुलाहल, गर सृक पहरावैनी।--सूर (शब्द०)।

**सृकाल**--सज्ञा पु० [स०] दे० 'शृगाल'। उ०--तुलसिदास हरिनाम सुधा तजि सठ हठि पियत विषम विष मागी। सूकर स्वान सृकाल सरिस जन जनमत जगत जननि दुख लागी।--तुलसी (शब्द०)।

**सृक्क, सृक्कन्**--सज्ञा पु० [स०] दे० 'सृक्व'।

**सृक्कणी, सृक्किणी**--सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सृक्व'।

**सृकथा**--सज्ञा स्त्री० [स०] जोक।

**सृक्की**--सज्ञा स्त्री० [सं०] जोक।

**सृक्व सृक्वन्**--सज्ञा पु० [स०] ओठो का छोर। मुँह का कोना।

**सृक्वणी सृक्विणी**--सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सृक्व'।

**सृक्वी सृक्वी**--सज्ञा पुं० [स० सृक्विन्, सृक्विन्] दे० 'सृक्व' [को०]।

**सृग¹**--सज्ञा पु० [स०] १ बरछा। भाला। भिदिपाल। २ तीर। वाण। शर।

**सृग**(पु)²--सज्ञा पु० [स० स्रक्, स्रज] माला। गजरा। हार। उ०--खेलत टूटि गए मुकता सृग मुकुतवृद छहराने। मनु अपार सुख लेन तारकन द्वार द्वार दरसाने।--रघुराज (शब्द०)।

**सृगाल**--सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० सृगाली] १ सियार। शृगाल। २ एक प्रकार का वृक्ष। ३ एक दैत्य का नाम। ४ हरिवश मे करवीरपुर के राजा वासुदेव का नाम। ५ प्रतारक। धूर्त। धोखेबाज। ६ कायर। भीरु। डरपोक। ७ दुःशील मनुष्य। बदमिजाज। आदमी।

**सृगालकटक**--सज्ञा पुं० [स० सृगालकण्टक] सत्यानासी का पौधा। कटेरी। स्वर्णक्षीरी। भडभाँड।

**सृगालकोलि**--सज्ञा पु० [सं०] बेर का पेड या फल।

**सृगालघटी**--सज्ञा स्त्री० [स० सृगालघण्टी] तालमखाना। कोकिलाक्ष।

**सृगालजबु**--सज्ञा पु० [स० सृगालजम्बु] १ तरबूज। गोडुब। २ झडबेरी। छोटा बेर।

**सृगालरूप**--सज्ञा पुं० [स०] शिव। महादेव।

**सृगालवदन**--सज्ञा पु० [स०] हरिवश मे वर्णित एक असुर का नाम।

**सृगालवास्तुक**--सज्ञा पु० [स०] बथुआ साग का एक भेद।

**सृगालविन्ना**--सज्ञा स्त्री० [स०] पिठवन। पृश्निपर्णी।

**सृगालवृंता**--सज्ञा स्त्री० [स० सृगालवृन्ता] दे० 'सृगालविन्ना'।

**सृगालिका**--सज्ञा स्त्री० [सं०] १ सियारिन। गीदडी। २ लोमडी। ३ विदारीकद। भूमिकुष्माड। ४ पलायन। भगदड। ५ दगा फसाद। हगामा।

**सृगालिनी**--सज्ञा स्त्री० [स०] सियारिन। गीदडी।

**सृगाली**--सज्ञा स्त्री० [स०] १ सियारिन। गीदडी। २ लोमडी। ३ पलायन। भगदड। ४ उपद्रव। हगामा। ५ तालमखाना। कोकिलाक्ष। ६ विदारीकद।

**सृग्विनी**--सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'स्रग्विणी'।

सृजक(पु)—संज्ञा पुं० [सं०√सृज्+हिं० क (प्रत्य०)] सृष्टि करनेवाला। उत्पन्न करनेवाला। सर्जक।

सृजन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० √सृज्>सर्जन] १ सृष्टि करने की क्रिया। उत्पादन। २ सृष्टि। उत्पत्ति। ३ छोड़ना। निकालना।
यौ०—सृजनधर्मा, सृजनधर्मी = दे० 'सृजनहार'। उ०—साहित्य उसी तरह सृजनधर्मी है। —सा० दर्शन, पृ० ५३। सृजनशीलता = निर्माण या सृजन की क्षमता।

सृजनहार(पु)—संज्ञा पुं० [सं०√सृज्>सर्जन+हिं० हार] सृष्टिकर्ता। सृष्टि रचनेवाला। उत्पन्न करनेवाला। बनानेवाला।

सृजना(पु)—क्रि स०[सं०√सृज्+हिं० ना (प्रत्य०)] सृष्टि करना। उत्पन्न करना। रचना करना। बनाना। उ०—(क) कत विधि सृजी नारि जग माहीं। पराधीन सपनेहु सुख नाहीं। —तुलसी (शब्द०)। (ख) जाके अंश मोर अवतारा। पालत सृजत हरत संसारा।—सबलसिंह (शब्द०)। (ग) मेरा सुंदर विश्राम बना सृजता हो मधुमय विश्व एक। —कामायनी, पृ० १४८।

सृजय—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पक्षी।

सृजया—संज्ञा स्त्री० [सं०] नीलमक्षिका।

सृजिकाक्षार—संज्ञा पुं० [सं०] सज्जीखार [को०]।

सृज्य—वि० [सं०] १ जो उत्पन्न किया जानेवाला हो। २ जो छोड़ा या निकाला जानेवाला हो।

सृणि¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ शत्रु। २ चंद्रमा।

सृणि²—संज्ञा पुं०, स्त्री० १. अंकुश। २ दाँती। हँसिया। हँसुआ [को०]।

सृणिक¹—संज्ञा पुं० [सं०] अंकुश।

सृणिक²—संज्ञा स्त्री० थूक। निष्ठीवन। लार।

सृणिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सृणीका'।

सृणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दाँती। हँसिया। २. अंकुश (को०)।

सृणीक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वायु। २. अग्नि। ३ वज्र। ४ मदोन्मत्त या उन्मत्त व्यक्ति।

सृणीका—संज्ञा स्त्री० [सं०] थूक। लार।

सृत¹—वि० [सं०] १ जो खिसक गया हो। सरका हुआ। २ विचलित। २ गत। जो चला गया हो।

सृत²—संज्ञा पुं० पलायन। गमन या विचलना [को०]।

सृता—संज्ञा स्त्री० [सं०] गमन। पलायन।

सृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मार्ग। रास्ता। २ जन्म। ३ आवागमन। ४. निर्माण। ५ गमन। संसरण। गति (को०)। ६ मारना। चोट पहुँचाना (को०)।

सृत्वन्—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रजापति। २ विसर्प रोग। ३. समरण। सरकना। ४ बुद्धि।

सृत्वर—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सृत्वरी] गमनोद्यत। गमनशील [को०]।

सृत्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ माता। २. प्रवाह। धारा। ३. नदी (को०)।

सृदर—संज्ञा पुं० [सं०] सर्प। साँप।

सृदाकु¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ वायु। २ अग्नि। ३ वनाग्नि। दावानल। ४ वज्र। ५ गोध। गोह। ६ मृग। हिरन। ७ परिधि। परिवेश। ८ सूर्यमंडल (को०)।

सृदाकु²—संज्ञा स्त्री० नदी। धारा।

सृप—संज्ञा पुं० [सं०] १ हरिवंश मे वर्णित एक असुर। २. चंद्रमा।

सृपमन्—संज्ञा पुं० [सं०] १ सर्प। २ शिशु। ३ तपस्वी।

सृपाट—संज्ञा पुं० [सं०] १ फूल के नीचे की छोटी पत्ती। २ एक प्रकार की माप (को०)।

सृपाटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] चोंच। चंचु।

सृपाटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चोंच। चंचु। २ एक प्रकार की माप (को०)। ३. उपानह। जूता (को०)। ४ मिश्रित धातु, काँसा आदि (को०)। ५ लघु पुस्तिका। छोटी पुस्तक (को०)।

सृप्त¹—वि० [सं०] सरका हुआ। फिसला हुआ [को०]।

सृप्त²—वि० [सं०] १ चिकना। चिक्कण। स्निग्ध। २ जिसपर हाथ या पैर फिसले।

सृप्मा—संज्ञा पुं० [सं० सृप्मन्] दे० 'सृपमन्' [को०]।

सृप्र—संज्ञा पुं० १ चंद्रमा। २ मधु। शहद।

सृप्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी का नाम। सिप्रा नदी।

सृबिंद—संज्ञा पुं० [सं० सृबिन्द] ऋग्वेद मे वर्णित एक दानव जिसे इंद्र ने मारा था।

सृम—संज्ञा पुं० [सं०] एक असुर का नाम।

सृमर¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का पशु। (किसी के मत से बाल मृग) २ एक असुर का नाम।

सृमर²—वि० गत्वर। गमनशील [को०]।

सृमल—संज्ञा पुं० [सं०] हरिवंश मे वर्णित एक असुर का नाम।

सृष्ट¹—वि० [सं०] १ उत्पन्न। पैदा। उ०—सदा सत्यमय सत्य व्रत सत्य एक पति इष्ट। विगत असूया सील सँ ज्यौं अनसूया सृष्ट। —सं० सप्तक, पृ० ३६६। २ निर्मित। रचित। ३ युक्त। ४ छोड़ा हुआ। निकाला हुआ। ५ त्यागा हुआ। ६ निश्चित। संकल्प मे दृढ। तैयार। ७ अगणित। बहुल। ८ अलंकृत। भूषित।

सृष्ट²—संज्ञा पुं० तेंदू। तिंदुक।

सृष्टमारुत—वि० [सं०] पेट की वायु को निकालनेवाला। (सुश्रुत)।

सृष्टमूत्रपुरीष—वि० [सं०] जिससे पेशाब और दस्त हो। मूत्र और दस्त लानेवाला [को०]।

सृष्टि¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उत्पत्ति। पैदाइश। बनाने या पैदा होने की क्रिया या भाव। २ निर्माण। रचना। बनावट। ३ संसार की उत्पत्ति। जगत् का आविर्भाव। दुनिया की पैदाइश। ४ उत्पन्न जगत्। संसार। दुनिया। चराचर पदार्थ। जैसे,—सृष्टि भर मे ऐसा कोई न होगा। ५ प्रकृति। निसर्ग। कुदरत। ६ दानशीलता। उदारता। ७ त्याग। विसर्ग। परित्याग

(को०)। ८ सतान (को०)। ६ गभारी का पेड। खभारी। १० एक प्रकार की ईंट जो यज्ञ की वेदी बनाने के काम मे आती थी।

**सृष्टि²**—सञ्ज्ञा पु० उग्रसेन के एक पुत्र का नाम।

**सृष्टिकर्ता**—सञ्ज्ञा पु० [स० सृष्टिकर्त्तृ] १ सृष्टि या ससार की रचना करनेवाला, ब्रह्मा। २ ईश्वर।

**सृष्टिकृत्**—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ दे० 'सृष्टिकर्ता'। २ पित्तपापडा। पर्पटक।

**सृष्टिदा**—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ ऋद्धि नामक एक अष्टवर्गीय ओषधि। २ दे० 'सृष्टिप्रदा'।

**सृष्टिपत्तन**—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार की मत्रशक्ति।

**सृष्टिप्रदा**—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] गर्भदात्री क्षुप। श्वेत कटकारी। सफेद भटकटैया।

**सृष्टिविज्ञान**—सञ्ज्ञा पु० [स०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमे सृष्टि की रचना आदि पर विचार किया गया हो।

**सृष्टिशास्त्र**—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'सृष्टिविज्ञान'।

**सृष्टिसृज्**—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'सृष्टिकर्ता' [को०]।

**सृष्ट्यतर**—सञ्ज्ञा पुं० [स० सृष्ट्यन्तर] वह सतान जो अन्य जाति के विवाह से हुई हो [को०]।

**सेंजी**—सञ्ज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास जो पजाब मे चौपायो को खिलाई जाती है। यह कपास के साथ बोई जाती है।

**सेंट**—सञ्ज्ञा पुं० [अ० सेन्ट] १ सुगधियुक्त द्रव्य। २ महक। गध। खुशबू। उ०—वेणी सेंट से महकाई सी, जरा रेडियो को ऊँचा कर दीजो, दुलहन।—वदनवार, पृ० ४४। ३ शत। सौ। ४ किसी बडे सिक्के का सौवाँ भाग।

**सेंटर**—सञ्ज्ञा पु० [अ० सेन्टर] १ गोलाई या वृत्त के बीच का विंदु। केंद्र। मध्यविंदु। २ प्रधान स्थान। जैसे,—परीक्षा का सेंटर।

**सेंटेंस**—सञ्ज्ञा पु० [अ० सेन्टेन्स] वाक्य। उ०—अग्रेजी का एक स्टेंस भी ठीक से नही बोल सकते।—सन्यासी, पृ० १७५।

**सेंट्रल**—वि० [अ० सेन्ट्रल] जो केंद्र या मध्य मे हो। केंद्रीय। प्रधान। मुख्य। जैसे,—सेंट्रल गवर्नमेंट, सेंट्रल कमेटी, सेंट्रल जेल।

**सेंद्रिय**—वि० [स० सेन्द्रिय] [वि० स्त्री० सेन्द्रिया] १ इद्रियसपन्न। जिसमे इद्रियाँ हो। सजीव। जैसे,—सेंद्रिय द्रव्य। उ०—सेंद्रिया मैं, अगुणता से नित्य उकता ही रही थी, सजन मैं आ ही रही थी।—क्वासि, पृ० ८५। २ पुरुषत्वयुक्त। जिसमे मरदानगी हो। पुसत्वयुक्त।

**सेंद्रियता**—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० सेन्द्रिय + ता (प्रत्य०)] इद्रियसपन्न होने का भाव, स्थिति या क्रिया। सजीवता। साकारता। उ०—नभ विहारिणी, अलख प्राण, निज जन की सुधि करिए। हे अतीद्रिये सेंद्रियता से क्यो इतना डरिए।—अपलक, पृ० २२।

**सेंसर**—सञ्ज्ञा पु० [अ० सेन्सर] वह सरकारी अफसर जिसे पुस्तक, पुस्तिकाएँ विशेषकर समाचारपत्र छपने या प्रकाशित होने, नाटक खेले जाने, फिलम दिखाए जाने, या तार कही भेजे जाने के पूर्व देखने या जाँचने का अधिकार होता है। यह जाँच इसलिये होती है कि कही उनमे कोई आपत्तिजनक या भडकानेवाली बात तो नही है।

विशेष—बायस्कोप के फिलमो या नाटको की जाँच और काट छाँट करने के लिये तो सेंसर बराबर रहता है, पर समाचारपत्रो और तारघरो मे उसी समय सेंसर बैठाए जाते है जब देश मे विद्रोह या किसी प्रकार की उत्तेजना फैली होती है अथवा किसी देश से युद्ध छिडा होता है। सेंसर ऐसी बातो को प्रकाशित नही होने देता जिनमे देश मे और भी उत्तेजना फैल सकती हो अथवा शत्रु या विरोधी को किसी प्रकार का लाभ पहुँचता हो।

यौ०—सेंसर बोर्ड = सेंसर करनेवाले अनेक अधिकारियो का समूह या समिति।

**सेंसस**—सञ्ज्ञा पुं० [अ० सेन्सस] दे० 'मर्दुमशुमारी'।

**सेँ**(पु)—अव्य० [स० स्वयम्, प्रा० सय, सइँ = से] स्वय। खुद। उ०—सेँ बुझ्झै सुरतान दूत पच्छिम सुविहान।—पृ०, रा०, १०१८।

**सेँक¹**—सञ्ज्ञा स्त्री० [हिं० सेकना] १ आँच के पास या दहकते अगारे पर रखकर भूनने की क्रिया। २ आँच के द्वारा गरमी पहुँचाने की क्रिया। जैसे,—दद मे सेँक से बहुत लाभ होगा।

क्रि० प्र०—करना।—देना।—होना।

यौ०—सेँकसाँक।

**सेँक²**—सञ्ज्ञा स्त्री० लोहे की कमाची जिसका व्यवहार छीपी कपडे छापने मे करते हैं।

**सेँकना**—क्रि० स० [स० श्रेपण (= जलाना, तपाना)] १ आँच के पास या आग पर रखकर भूनना। जैसे,—रोटी सेँकना। २ आँच के द्वारा गरमी पहुँचाना। आँच दिखाना। आग के पास ले जाकर गरम करना। जैसे,—हाथ पैर सेँकना।

सयो० क्रि०—डालना।—देना।—लेना।

मुहा०—आँख सेँकना = सुदर रूप देखना। नजारा करना। धूप सेँकना = धूप मे रहकर शरीर मे गरमी पहुँचाना। धूप खाना।

**सेँकी**†—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा० सीनी, हिं० सीनिकी, सनहकी] तश्तरी। रकाबी।

**सेँगर¹**—सञ्ज्ञा पु० [सं० शृङ्गार] १ एक पौधा जिसकी फलियो की तरकारी बनती है। २ इस पौधे की फली। ३ बबूल की फली या छीमी।

विशेष—ओषधिकार्य मे भी इसका प्रयोग विहित है। अधिकतर यह भैंस, बकरी, ऊँट आदि को खाने को दी जाती है। ४ एक प्रकार का अगहनी धान जिसका चावल बहुत दिनो तक रहता है।

**सेँगर²**—सञ्ज्ञा पुं० [स० शृङ्गीवर] क्षत्रियो की एक जाति या शाखा। उ०—कूरम, राठौर, गौड, हाडा, चहुवान, मौर, तोमर, चँदेल, जादौ जग जितवार है। पौरच, पुंडीर, परिहार और पँवार बैस, सेँगर, सिसोदिया, सुलकी दितवार हैं।—सूदन (शब्द०)। (ख) सेँगर सपूती सो भरे। जे सुद्ध जुद्धन मे लरे।—पद्माकर ग्र०, पृ० ८।

सेँगरा†—संज्ञा पुं० [देश०] पोखते बाँस का वह डंडा जिसमे लटकाकर भारी पत्थर या धरन एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते है।

सेँटा†—संज्ञा स्त्री० [स० स्रोत] धार। स्रोत। उ०—कुछ इधर उधर से अकस्मात्, जल की सेँटो के भी फुहार। हे खनक किए जा कूपखनन तू यहाँ बीच मे ही न हार।—दैनिकी, पृ० ३१। २ गाय की छीमी से निकली हुई दूध की धार।

सेँठा¹—संज्ञा पुं० [देश०] १ मूँज या सरकडे के सीके का निचला मोटा मजबूत हिस्सा जो मोढे आदि बनाने के काम मे आता है। कन्ना। २ एक प्रकार की घास जो छप्पर छाने के काम मे आती है। ३ जुलाहो की वह पोली लकडी जिसमे ऊरी फँसाई जाती है। डोँड।

सेँठा²—वि० [स० सुष्ठु या स्व + इष्ट] [स्त्री० सेँठी] १ दृढतापूर्वक। ठीक। मजबूत। श्रेष्ठ। उ०—सव सुख छाँड भज्यो इक साँई राम नाम लिव लागी। सूरवीर सेँठा पग रोप्या जरा मरण भव भागी।—राम० धर्म०, पृ० ४५। (ख) परगह ले वाँधी पगाँ, सेँठी गूजर साथ। हजारो सारो हुकम, हुओ रँगीली हाथ।—वाँकी० ग्र०, भा० २, पृ० ११। २ इच्छित। इष्ट। अभिलषित। उ०—खोजी खोज पकडिया सेँठा। सव सता माही मिलि वेठा।—राम० धर्म०, पृ० २०८।

सेँड़, सेँढ—संज्ञा पुं० [सं० सेन्न ( = वधन, निगड) अथवा देश०] एक प्रकार का खनिज पदार्थ जिसका व्यवहार सुनार करते है। उ०—राज्य के विभिन्न भागो मे कोयला, मैंगनीज, सिलिका, सेँड आदि अनेक खनिज पदार्थ विपुल मात्रा मे पाए जाते है।—शुक्ल अभि० ग्र०, पृ० १६।

सेँत—संज्ञा स्त्री० [स० सहति ( = किफायत, समूह, राशि) या देश०] १ कुछ व्यय का न होना। पास का कुछ न लगना। कुछ खर्च न होना। २ ⓤ†समूह। राशि। ढेर। उ०—अपनो गाँव लेहु नँदरानी। वडे वाप की वेटी तातेँ पूतहि भले पढावति वानी।··· सुनु मैया याके गुन मोसो, इन मोहि लियो वुलाई। दधि मे परी सेँति की चीटी, मोतैँ सवै कढाई।—सूर (शब्द०)।

मुहा०—सेँत का = (१) जिसमे कुछ दाम न लगा हो। जो विना मूल्य दिए मिले। जिसके मिलने मे कुछ खर्च न हो। मुफ्त का। जैसे—(क) सेँत का सौदा नही है। (ख) सेँत की चीज की कोई परवाह नही करता। २ वहुत सा। ढेर का ढेर। वहुत ज्यादा। उ०—चलहु जु मिलि उनही पैँ जैए, जिन्ह तुम टोकन पथ पठाए। सखा सग लीने जू सेँति के फिरत रैनि दिन वन मे पाए। नाहिन राज कस को जान्यौ वाट रोकते फिरत पराये।—सूर (शब्द०)।

विशेष—यह मुहावरा पूरवी अवधी का है और वस्ती, गोडा, फैजावाद आदि जिलो मे वोला जाता है। सेँत मे = (१) विना कुछ दाम दिए। विना कुछ खर्च किए। विना मूल्य के। मुफ्त मे। जैसे—यह घडी मुझे सेँत मे मिल गई। (२) व्यर्थ। निष्प्रयोजन। फजूल। जैसे—क्यो सेँत मे झगडा लेते हो।

सेँतनाⓤ—क्रि० स० [हिं० सेँतना] दे० 'सेँतना'।

सेँतमेँत—क्रि० वि० [हिं० सेत + मेँत (अनु०)] १ विना दाम दिए। मुफ्त मे। फोकट मे। सेत मे। उ०—(क) कलकी और मलीन वहुत मै सेँतमेँत विकाऊँ।—सूर (शब्द०)। (ख) नाम रतन धन मुज्झ मे, खान खुली घट माहिं। सेँतमेँत ही देत हौं, गाहक कोई नाहिं।—सतवानी०, पृ० ५। (ग) सेँतमेँत के यश का भागी प्रिये, तुम्हारा है भर्ता।—साकेत, पृ० ३७६। २ वृथा। फजूल। निष्प्रयोजन। वेमतलव। जैसे—क्यो सेँतमेँत झगडा मोल लेते हो ?

सेँति, सेँती¹—संज्ञा स्त्री०[हिं० सेँत] दे० 'सेत'। उ० साई सेँति न पाइए, वातन मिलै न कोय। कवीर सौदा नाम का, सिर विन कवहुँ न होय। (ख) एक तुम्है प्रभु चाही राज। भूपति रक सेँति नहिं पूँछी चरन तुम्हार रुवाँरचो काज।—मलूक०, पृ० ६।

सेँति, सेँती²—प्रत्य० [प्रा० सुतो, पचमी विभक्ति] पुरानी हिंदी की करण और अपादान की विभक्ति। से। उ०—(क) तोहि पीर जो प्रेम की पाका सेँती खेल।—कवीर (शब्द०)। (ख) हिंदू व्रत एकादसि साधैं दूध सिघाडा सेँती। कवीर (शब्द०)। (ग) राजा सेँति कुँवर सव कहही। अस अस मच्छ समुद मँह अहही।—जायसी (शब्द०)। (घ) सजीवन तव कचहिं पढाई। ता सेँती यो कह्यो समुझाई।—सूर (शब्द०)।

सेँथा†—संज्ञा पुं० [हिं० सेठा] दे० 'सेठा'।

सेँथी†—संज्ञा स्त्री० [स० शक्ति] वरछी। भाला। शक्ति शर्वला। उ०—इद्रजीत लीनी जव सेँथी देवन हहा करचो। छूटी विज्जु राशि वह मानो भूतल वधु परचो।—सूर (शब्द०)।

सेँद‡—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेंध] दे० 'सेँध'।

सेँदुरⓤ‡—संज्ञा पु० [स० सिंदूर] ईंगुर की वुकनी। सिंदूर। उ०—(क) माँग मै सेँदुर सोहि रह्यो गिरधारन है उपमा न तिहूँ पुर। मानो मनोज की लागी कृपान, परचो कटि वीच ते राहु वहादुर —सुदरीसर्वस्व (शब्द०)। (ख) विन सेँदुर जानउँ दिआ। उँजियर पथ रइनि मँह किआ।—जायसी (शब्द०)

विशेष—सौभाग्यवती हिंदू स्त्रियाँ इसे माँग मे भरती है। य सौभाग्य का चिह्न माना जाता है। विवाह के समय मे वर कन्य की माँग मे सिदूर डालता हे और उसी घडी से वह उसकी स्त्र हो जाती है।

क्रि० प्र०—पहनना।—देना।—भरना।—लगाना।

मुहा०—सेंदुर चढना = स्त्री का विवाह होना। सेँदुर देना विवाह के समय पति का पत्नी की माँग भरना। उ०—र। सीय सिर सेँदुर देही। सोभा कहि न जाय विधि केही।—तुल (शब्द०)।

सेँदुरदानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेदुर + फा० दानी] सिंदूर रखने डिविया। सिंदूरा।

सेँदुरवहोरा†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेदुर + वहोरना ( = पलटना या ० करना)] विवाह के अवसर पर वर द्वारा कन्या के शीश सिंदूर दान के वाद कन्या की कोई भी वडी वहन या कि

सौभाग्यवती स्त्री द्वारा सिंदूर को एक ढग से सज्जित करने की त्रिया।

सेँदुरा¹—वि० [हिं० सेंदुर] [वि० स्त्री० सेंदुरी] सिंदूर के रग का। लाल। जैसे,—सेँदुरी गाय। सेँदुरा ग्राम।

सेँदुरा²—सज्ञा पुं० [हिं० सिंदूर, सिंधोरा] सिंदूर रखने का डिब्बा। सिंदूरा।

सेँदुरिया—सज्ञा पुं० [स० सिन्दूरिका, सिन्दूरी] एक सदाबहार पौधा जिसमे सिंदूर के रग के लाल फूल लगते है।

विशेष—इसके पत्ते ६-७ अगुल लबे और ४-५ अगुल चौडे, नुकीले और अरबी के पत्ते से मिलते जुलते हैं। फूल दो ढाई अगुल के घेरे मे पाँच दलो के और सिंदूर के रग के लाल होते है। इस पौधे की गुलाबी, बैंगनी और सफेद फूलवाली जातियाँ भी होती हैं। गरमी के दिनो मे यह फूलता है और बरसात के अत मे इसमे फल लगने लगते हैं। फल लबोतरे, गोल, ललाई लिए भूरे तथा कोमल महीन महीन काँटो से युक्त होते हैं। गूदे का रग लाल होता है। गूदो के भीतर जो बीज होते हैं, उन्हें पानी मे डालने से पानी लाल हो जाता है। बहुत स्थानो पर रग के लिये ही इस पौधे की खेती होती है। शोभा के लिये यह बगीचो मे भी लगाया जाता है। आयुर्वेद मे यह कडवा, चरपरा, कसैला, हलका, शीतल तथा विषदोष, वातपित्त, वमन, माथे की पीडा, आदि को दूर करनेवाला माना गया है।

पर्या०—सिंदूरपुष्पी। सिंदूर। तृणपुष्पी। रक्तबीजा। रक्तपुष्पी। वीरपुष्पा। करच्छदा। शोणपुष्पी।

सेँदुरिया²—वि० सिंदूर के रग का। खूब लाल।

यौ०—सेँदुरिया आम = वह आम का फल जिसका छिलका लाल सिंदूर के रग का हो।

सेँदुरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सेंदुर + ई (प्रत्य०)] सिंदूर के रग की लाल गाय। उ०—कजरी धुमरी सेँदुरी धौरी मेरी गैया। दुहि ल्याऊँ मैं तुरत ही तू करि दै छैया।—सूर (शब्द०)।

सेँध¹—सज्ञा स्त्री० [स० सन्धि] चोरी करने के लिये दीवार मे किया हुआ वडा छेद जिसमे से होकर चोर किसी कमरे या कोठरी मे घुसता है। सधि। सुरग। सेन। नकब।

विशेष—सस्कृत के नाटक 'मृच्छकटिक' मे इसके अनेक प्रकार वर्णित हैं।

क्रि० प्र०—देना।—मारना।—लगना।

सेँध²—सज्ञा स्त्री० [देश०] १ गोरखककडी। फूट। मृगेर्वारु। २ पेहँटा। कचरी।

सेँधना¹—क्रि० स० [हिं० सेंध + ना (प्रत्य०)] सेंध या सुरग लगाना।

सेँधना²—क्रि० स० [स० सन्धान] सबधित करना। स्थापित करना। सधान करना। उ०—पज सो पज सनेह मिल कर सेँधिय दारि सुधारि सुध भिर।—पृ० रा०, १२। ३६६।

सेँधा¹—सज्ञा पुं० [स० सैन्धव] एक प्रकार का नमक जो खान से निकलता है। सैंधव। लाहौरी नमक।

विशेष—इसकी खाने खेवडा, शाहपुर, कालाबाग और कोहाट मे हैं। यह सब नमकों मे श्रेष्ठ है। वैद्यक मे यह स्वादु, दीपक, पाचक, हल्का स्निग्ध, रुचिकारक, शीतल, वीर्यवर्धक, सूक्ष्म, नेत्रों के लिये हितकारी तथा त्रिदोषनाशक माना गया है। इसे 'लाहौरी नमक' भी कहते हैं।

सेँधा²—वि० [स० सन्ध] १ सधान या सबधवाला। जानकार। उ०—(क) दे नेँह सेँधा नूं दगो, ग्रहे कुतो ही ज्ञान।—बाँकी० ग्र०, भा० २, पृ० ६८। २ मुलाकाती। मिलनेवाला। (ख) देवे सेँधा नू दगो साह करे सनमान।—बाँकी० ग्र०, भा०२, पृ० ६८।

सेँधानी—सज्ञा स्त्री० [सं० सज्जन, सज्ञान या सन्धान] दे० 'सहिदानी'। उ०—यह श्रीनाथ जी ने वा पटेल को हार की सेँधानी दीनी।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० २२१।

सेँधि(पु)—सज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'सेंध'। उ०—चोर पैठि जस सेँधि सवारी। जुआ पैंत जेउँ लाख जुआरी।—जायसी ग्र० (गुप्ता०), पृ० २६५। २ सेँधा नमक।

सेँधिया¹—वि० [हिं० सेंध] सेंध लगानेवाला। दीवार मे छेद करके चोरी करनेवाला। जैसे—सेँधिया चोर।

सेँधिया²—सज्ञा पुं० [सं० सेटु] १ ककडी की जाति की एक बेल जिसमे तीन चार अगुल के छोटे छोटे फल लगते हैं। कचरी। सेंध। पेहँटा। २ एक प्रकार की ककडी। फूट।

विशेष—यह खेतो मे प्राय आपसे आप उपजता है।

३ एक प्रकार का विष।

सेँधिया³—सज्ञा पुं० [मरा० शिंदे] ग्वालियर का प्रसिद्ध मराठा राजवश जिसके सस्थापक रणजी शिंदे थे।

सेँधी¹—सज्ञा स्त्री० [सिंध (देश, जहाँ खजूर बहुत होता है, मरा० शिंदी] १ खजूर। २ खजूर की शराब। मीठी शराब।

सेँधी²—सज्ञा स्त्री० [सं० सेटु] १. खेत की ककडी। फूट। २ कचरी। पेहँटा।

सेँधु—सज्ञा पुं० [स० सिन्धु] समुद्र। सिंधु। उ०—साधु के महिमा कहि नहि जाई। जैसे सेँधु जल थाह न पाई।—सत० दरिया, पृ० १२।

सेँधुर(पु)¹—सज्ञा पुं० [स० सिन्धु, हिं० सेंधु + र (प्रत्य०)] दे० 'समुद्र'। उ०—एह भव सेँधुर कत सभ खाई। भँवर तरग धार कठिनाई।—सत० दरिया, पृ० २०।

सेँधुर(पु)²—सज्ञा पुं० [स० सिन्धुर] दे० सिंधुर।

सेँधुर‡³—सज्ञा पुं० [स० सिन्दूर] दे० 'सेंदुर'।

सेँवल(पु)—सज्ञा पुं० [स० शाल्मली, हिं० सेँवर] दे० सेमल। उ०—यहु ससार सेँवल कै सुख ज्यूँ तापर तूँ जिनि फूलै।—सतबानी०, भा० २, पृ० ६२।

सेँभा—सज्ञा पुं० [देश०] घोडो का एक वात रोग।

सेँभु—सज्ञा पुं० [स० स्वयम्भू] दे० 'स्वयभू'। उ०—वर सिरदार बिभार सेँभु चहुआन नाह वर।—पृ० रा० २५-३०७।

**सेँभरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेँवई] दे० 'सेँवई'। उ०—घर घर ढूढे अम्मा मेरी सेँभरी जी, राजा आयौ तीजँन कौ त्यौहार।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ६४४।

**सेँमुष**—वि० [सं० सम्मुख] अनुकूल। अभिमुख। उपयुक्त। उ०—सेँमुष धनि धनि उच्चरै भल छोरचो चहुआन।—पृ० रा०, ६६।४०६।

**सेँलोटना**—क्रि० अ० [स० स० + लुठन] धराशायी होना। ढहना। लोट जाना। उ०—गढन कोट सेँलोट धममि, धम धम्म अरिनि पुर।—पृ० रा०, १।७१६।

**सेँवई**—संज्ञा स्त्री० [स० सेविका] मैदे के सुखाए हुए सूत के लच्छे जो घी मे तलकर और दूध मे पकाकर खाए जाते है।

मुहा०—सेँवई पूरना या वटना = गुँधे हुए मैदे को हथेलियो से से रगड रगडकर सूत के आकार मे वढाते जाना।

**सेँवर**Ⓟ—संज्ञा पु० [हिं० सेवल] दे० 'सेमल'। उ० - (क) वार वार निशि दिन अति आतुर फिरत दशो दिशि धाए। ज्यो शुक सेँवर फूल विलोकत जात नही विन खाए।—सूर (शब्द०)। (ख) राजै कहा सत्य कहु सूआ। विनु सत जस सेँवर कर भूआ।—जायसी (शब्द०)।

**सेँह**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेँध] दे० 'सेँध'।

**सेँहा**[1]—संज्ञा पु० [हिं० सेँध] कूआँ खोदनेवाला। कुइहाँ।

**सेँहा**[2]—संज्ञा पु० [देश०] दे० 'सेँधि'।

**सेँही**—संज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'सेँध'।

**सेँहुआ**—संज्ञा पुं० [हिं० सेहुआँ] दे० 'सेहुआँ'।

**सेँहुड**—संज्ञा पुं० [स० सेहुण्ड] थूहर। वि० दे० 'थूहर'। उ०—छतै नेह कागद हिये भई लखाइ न टाँक। विरह तचे उघरचो सु अब सेँहुड को सो आँक।—विहारी (शब्द०)।

**से**[1]—प्रत्य० [प्रा० सुतो, पु०हिं० सेँति] करण और अपादान कारक का चिह्न। तृतीया और पचमी की विभक्ति। जैसे—(क) मैंने अपनी आँखो से देखा। (ख) पेड से फल गिरा। (ग) वह तुमसे वढ जायगा।

**से**[2]—वि० [हिं० 'सा' का वहुवचन] समान। सदृश। सम। जैसे,—इसमे अनार से फल लगते हे। उ०—नासिका सरोज गधवाह से सुगधवाह, दारचो से दसन, कैसे वीजुरी सो हास है।—केशव (शब्द०)।

**से**Ⓟ[3]—सर्व० [हिं० 'सो' का वहुवचन] वे। उ०—अवलोकिही सोच विमोचन को ठगि सी रही, जो न ठगे धिक से।—तुलसी (शब्द०)।

**से**[4]—संज्ञा स्त्री० [स०] १ सेवा। खिदमत। चाकरी। २ कामदेव की पत्नी का नाम।

**से**‡[5]—वि० [फा० सेह] तीन। उ०—उन्हे से चहार दिन हो जजवे वहोश। आपस के जात कूँ कर कर फरामोश।—दक्खिनी०, पृ० १६६।

**सेई**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेर] अनाज नापने का काठ का एक गहरा वरतन।

**सेउ**Ⓟ†—संज्ञा पु० [हिं० सेव] दे० 'सेव'। उ०—किसिमिसि सेउ फरे नउ पाता। दारिउँ दाख देखि मन राता।—जायसी (शब्द०)।

**सेकड**[1]—संज्ञा पु० [अ० सेकन्ड] एक मिनट का ६० वाँ भाग।

**सेकड**[2]—वि० दूसरा। जैसे,—सेकड पार्ट। सेकड हैड।

**सेक**—संज्ञा पुं० [स०] १ जलसिचन। सिचाव। २ जलप्रक्षेप। सेचन। छिडकाव। छीटा। मार्जन। तर करना। उ०—और जु अनुसयना कही, तिनके विमल विवेक। वरनत कवि मतिराम यह रस सिंगार को सेक।—मतिराम ग्र०, पृ० २८६। ३ अभिषेक। उ०—वोली ना नवेली कछू वोल सतराय वह, मनसिज ओज को सुहानौ कछु सेक है।—मतिराम ग्र०, पृ० ३३७। ४ तैल सेचन या मर्दन। तेल लगाना या मलना। (वैद्यक)। ५ एक प्राचीन जाति का नाम। ६ (वीर्य का) पतन या स्राव (को०)। ७ स्नान करने का फुहारा (को०)। ८ किसी भी द्रव पदार्थ की वूँद (को०)।

**सेकट्टर**‡—संज्ञा पुं० [अ० सेक्रेटरी] दे० 'सेक्रटरी'। उ०—सेकट्टर साहव वोलटा है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ४५५।

**सेकड़ा**—संज्ञा पुं० [देश०] वह चावुक या छडी जिससे हलवाहे वल हाँकते है। पैना।

**सेकतव्य**Ⓟ—वि० [सं० सेक्तव्य] १ सीचने योग्य। २ जिसे सीचना या तर करना हो।

**सेकपात्र**—संज्ञा पुं० [स०] सीचने का वरतन। डोल। डोलची।

**सेकभाजन**—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'सेकपात्र'।

**सेकमिश्रान्न**—संज्ञा पु० [स०] वह खाद्य पदार्थ जिसमे दही पडा हो।

**सेकिम**[1]—वि० [सं०] १ सीचा हुआ। तर किया हुआ। २ ढाला हुआ (लोहा)।

**सेकिम**[2]—संज्ञा पुं० [स०] मूली। मूलक। गाजर।

**सेकुवा**—संज्ञा पुं० [देश०] काठ के दस्ते का लवा करछा या डौवा जिससे हलवाई दूध औटाते है।

**सेकूरी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] धान। (सुनार)।

**सेक्तव्य**—वि० [सं०] १ सीचने योग्य। २ जिसे सीचना या तर करना हो।

**सेक्ता**[1]—वि० [स० सेक्तृ] [वि० स्त्री० सेक्त्री] १. सीचनेवाला। २ वरदानेवाला। जो गाय, घोडी आदि को वरदाता है। ३ जल लानेवाला (को०)।

**सेक्ता**[2]—संज्ञा पु० १ पति। शौहर। २ जलवाहक व्यक्ति (को०)। ३ वह जो सेक करता हो (को०)।

**सेक्त्र**—संज्ञा पुं० [स०] सीचने का वरतन। जल उलीचने का वरतन। डोल। डोलची।

**सेक्रेटरी**—संज्ञा पुं० [अ०] १ वह उच्च कर्मचारी या अफसर जिसके अधीन सरकार या शासन का कोई विभाग हो। मंत्री।

सचिव । जैसे, —फारेन सेक्रटरी । स्टेट सेक्रेटरी । २ वह पदाधिकारी जिसपर किसी संस्था के कार्यसंपादन का भार हो। जैसे,—कांग्रेस सेक्रेटरी । ३ वह व्यक्ति जो दूसरे की ओर से उसके आदेशानुसार पत्रव्यवहार आदि करे । मुंशी । जैसे,—महाराज के सेक्रेटरी ।

सेक्रेटेरियट—संज्ञा पुं० [अं०] किसी सरकार के सेक्रेटरियों का कार्यालय या दफ्तर । शासक या गवर्नर का दफ्तर । उ०—तरक्की करते करते सेक्रेटेरियट की अँगनई में दाखिल हो बैठे थे ।—नई०, पृ० ८ ।

सेक्शन—संज्ञा पुं० [अं०] विभाग । जैसे,—इस दर्जे में दो सेक्शन हैं ।

सेख(पु)¹—संज्ञा पुं० [सं० शेष] १ शेषनाग । विशेष दे० 'शेष'—८ । उ०—महिमा अमित न सकहिं कहि सहस सारदा सेख ।—तुलसी (शब्द०) । २ समाप्ति । अंत । खातमा । उ०—पियत बात तन सेख कियो द्विज रात विहरि वन । मिटै वासना नाहिं बिना हरिपद रज के तन ।—सुधाकर (शब्द०) ।

सेख²—संज्ञा पुं० [अ० शैख] दे० 'शेख' । उ०—इनमें इते बलवान हैं । उत सेख मुगल पठान हैं ।—सूदन (शब्द०) ।

सेखर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शेखर] दे० 'शेखर' । उ०—मोर मुकुट की चंद्रिकन यौ राजत नँदनंद । मनु ससिसेखर को अकस किय सेखर सतचंद ।—बिहारी (शब्द०) ।

सेखवा†—संज्ञा पुं० [अ० शैख, हिं० सेख + वा (प्रत्य०)] दे० 'शेख' । उ०—ना हुवाँ ब्राह्मन सूद्र न सेखवा ।—कबीर श०, पृ० ४७ ।

सेखावत—संज्ञा पुं० [फा० शैख + हिं० सेख + आवत (प्रत्य०), अथवा 'शेखावाटी' नाम का एक स्थान] राजपूतों की एक जाति या शाखा । शेखावत ।

विशेष—इनका स्थान राजपूताने का शेखावाटी नाम का कसबा है । राजस्थान में स्थान, जाति, वंश और विशिष्ट व्यक्ति आदि के आगे यह संबंधवाचक प्रत्यय लगाते हैं । जैसे,—ऊदावत, कूपावत आदि ।

सेखी‡—संज्ञा स्त्री० [फा० शेखी] दे० 'शेखी' ।

सेगव—संज्ञा पुं० [सं०] केंकड़े का बच्चा ।

सेगा—संज्ञा पुं० [अ० सीगह] १ विभाग । महकमा । २ विषय । पढ़ाई या विद्या का कोई क्षेत्र । जैसे,—वह इम्तहान में दो सेगों में फेल हो गया ।

सेगुन†—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सागौन' ।

सेगोन, सेगौन—संज्ञा पुं० [देश०] मटमैले रंग की लाल मिट्टी जो नालों के पास पाई जाती है ।

सेच—संज्ञा पुं० [सं०] सेक । सिंचाई । छिड़काव [को०] ।

सेचक¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सेचिका] सींचनेवाला । छिड़कनेवाला । तर करनेवाला ।

सेचक²—संज्ञा पुं० मेघ । बादल ।

सेचन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सेचनीय, सेचित, सेच्य] १ जलसिंचन । सिंचाई । २ मार्जन । छिड़काव । छींटे देना । ३ अभिषेक । ४ ढलाई (धातु की) । ५ (नाव से) जल उलीचने का बरतन । लोहँड़ी । ६ दे० 'सेक' (को०) ।

सेचनक—संज्ञा पुं० [सं०] १ अभिषेक । २ स्नान का फुहारा [को०] ।

सेचनघट—संज्ञा पुं० [सं०] वह बरतन जिससे जल सींचा जाता है ।

सेचनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सींचने की छोटी बालटी [को०] ।

सेचनीय—वि० [सं०] सींचने योग्य । छिड़कने योग्य ।

सेचिका—वि० स्त्री० [सं०] दे० 'सेचक' ।

सेचित—वि० [सं०] १ जो सींचा गया हो । तर किया हुआ । २ जिसपर छींटे दिए गए हों ।

सेच्य—वि० [सं०] १ सींचने योग्य । जल छिड़कने योग्य । २ जिसे सींचना हो । जिसे तर करना हो ।

सेछागुन—संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का पक्षी ।

सेज—संज्ञा [सं० शय्या, प्रा० सज्जा, सिज्जा, सेज्ज, सेज्जा] शैया । पलंग और बिछौना । उ०—(क) सेज रुचिर रुचि राम उठाए । प्रेम समेत पलँग पौढ़ाए ।—तुलसी (शब्द०) । (ख) चाँदनी महल फैल्यो चाँदनी फरस सेज, चाँदनी बिछाय छवि चाँदनी रितै रही ।—प्रतापसाहि (शब्द०) ।

सेजदह—वि० [फा० सेज़दह] त्रयोदश । तेरह [को०] ।

सेजदहुम—वि० [फा० सेज़दहुम] तेरहवाँ [को०] ।

सेजपाल—संज्ञा पुं० [सं० शय्यापाल, हिं० सेज + पाल] राजा की शैया या सेज पर पहरा देनेवाला । शयनगृह पर पहरा देनेवाला । शयनागार का रक्षक । शैयापाल । उ०—राजा उस समय शैया पर पौढ़े थे और सेजपाल लोग अस्त्र बाँधे पहरा दे रहे थे ।—गदाधरसिंह (शब्द०) ।

सेजबंद(पु)—वि० [हिं० सेज + फा० बंद] दे० 'सेजबंध' । उ०—खासा पलँग सेजबंद तकिया, तोसक फूल बिछाया ।—कबीर० श०, भा०, पृ० २३ ।

सेजबंध(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सेज + बंध] वह रस्सी जिससे बिछौने की चादर को पायों में बाँधते हैं । उ०—सेजबंध बाँधि कै पान को चाभते ।—पलटू०, भा० २, पृ० ११ ।

सेजरिया(पु)‡—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेज] दे० 'सेज' । उ०—रस रँग पगी है देखो लाल की सेजरिया ।—कबीर (शब्द०) ।

सेजरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेज + री (प्रत्य०)] शय्या । दे० 'सेज' ।

सेजवार†—संज्ञा पुं० [सं० शय्यापाल, हिं० सेजपाल] दे० 'सेजपाल' । —वर्ण०, पृ० ६ ।

सेजा¹—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पेड़ जो आसाम और बंगाल में होता है और जिसपर टसर के कीड़े पाले जाते हैं ।

सेजा²—संज्ञा स्त्री० [सं० शय्या] दे० 'शय्या' । उ०—कुसुमे रचित सेजा दीप रहल तेजा, परिमल अगर चाँदने ।—विद्यापति, पृ० २५२ ।

सेजा†³—संज्ञा पुं० [सं० सह्य, प्रा० सेज्झ, सेझ (=सह्याद्रि पर्वत)] १ पर्वत । अद्रि । पहाड़ । २ सोता । प्रवाह । झरना । उ०—बाँसुरी समान मेरी पाँसुरी हरेक डोलैं, उठत असाध पीर मनो

घाव नेजा ज्यो। हाय नटनागर जू ग्राह तौ कढै है नीठि, लोयन वहै हैं दोऊ भरे जल सेजा ज्यो।—नट० वि०, पृ० ७७।

**सेजिया‡**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सेज + इया] दे० 'सेज'।

**सेज्या**Ⓟ—सज्ञा स्त्री० [सं० शय्या] दे० 'शय्या'। उ०—सूर श्याम सुख जानि मुदित मन सेज्या पर सँग लै पौढावति। - सूर (शब्द०)।

**सेझ**Ⓟ‡—सज्ञा स्त्री० [स० शय्या, हिं० सेज, राज० सेझ] शय्या। सेज। उ०—सुरति शब्द मिल एक एकठा ता विच रही न काण। जन हरिया सुन सेझ का सहजाँई सुख माण।—राम० धर्म०, पृ०, ६३।

**सेझड़ी**†—सज्ञा स्त्री० [स० शय्या, प्रा० सेज्ज, राज० सेझ + डी (प्रत्य०)] शय्या। सेजरी। सेज। उ०—मुख नीसाँसाँ मूँकती, नयणे नीर प्रवाह। सूली सिरखी सेझडी तो विण जाणो नाह।—ढोला०, दू० १६६।

**सेझदादि**Ⓟ—सज्ञा पु० [स० सह्याद्रि] दे० 'सह्याद्रि'। उ०—सेझदादि तैं गिरि वहु रहई। गगादिक सरिता वहु वहई।—रघुनाथदास (शब्द०)।

**सेझना**—क्रि० अ० [सं० √सिध्, सेधन (= दूर करना, हटाना)] दूर होना। हटना। उ०—सो दारु किस काम की जाने दरद न जाइ। दादू काटइ रोग को सो दारू ले लाइ। अनुभव काटइ रोग को अनहद उपजइ आइ। सेझै काजर निर्मला पीवइ रुचि लव लाइ।—दादू (शब्द०)।

**सेझा**—सज्ञा पु० [स० √सिध्, सेधन, प्रा० सेझण] प्रवाह। झरना। दे० 'सेजा'²। उ०—जहँ तन मन का मूल है, उपजै ओकार। अनहद सेझा सवद का, आतम करै विचार।—दादू० बानी, पृ० ८६।

**सेओफ**†—सज्ञा पु० [देश० तुल० स० शतपुष्पी] दे० 'सौंफ'।—वर्ण०, पृ० २।

**सेट¹**—सज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन तौल या मान।

**सेट²**—सज्ञा स० [देश०] काँख, नाक, उपस्थ आदि के वाल या रोएँ।

**सेट³**—सज्ञा पुं० [अ०] एक ही प्रकार मेल की कई चीजो का समूह। जैसे,—किताबो का सेट, खाने के बरतनो का सेट।

**सेटना**Ⓟ—क्रि० अ० [स० श्रुत (= विश्वास करना)] १ समझना। मानना। उ०—जो कलिकाल भुजंगभय मेटत। शरणागत भवरुज लघु सेटत।—रघुराज (शब्द०) २ कुछ समझना। महत्व स्वीकार करना। जैसे—अपने आगे वह किसी को नही सेटता।

**सेटिल**—वि० [अ० सेटिल्ड] जो निपट गया हो। जो तै हो गया हो। जैसे,—उन दोनो का मामला आपस मे सेटिल हो गया।

**सेटिलमेट**—सज्ञा पु० [अ० सेटिलमेन्ट] १ खेती के लिये भूमि को नापकर उसका राजकर निर्धारित करने का काम। जमीन नापकर उसका लगान नियत करने का काम। बदोवस्त। २ एक देश के लोगो की दूसरे देश मे वसी हुई वस्ती। उपनिवेश।

**सेटु**—सज्ञा पु० [स०] १ खेत की ककडी। फूट। २ कचरी। पेहँटा।

**सेठ**—सज्ञा पु० [स० श्रेष्ठि, प्रा० सिट्ठि] [सेट्ठि, स्त्री० सेठानी] १ बडा साहूकार। महाजन। कोठीवाल। २ वडा या थोक व्यापारी। ३ धनी मनुष्य। मालदार आदमी। लखपती। ४ धनी और प्रतिष्ठित वणिको की उपाधि। ५ खत्रियो की एक जाति। ६ दलाल। (डिं०)। ७ सुनार।

**सेठन**—सज्ञा पु० [देश०] झाड़ू। बुहारी।

**सेठा**—सज्ञा पु० [देश०] दे० 'सेँठा'।

**सेठिया**—सज्ञा पु० [स० श्रेष्ठिक, प्रा० सेट्ठिय, गुज० सेठिया] दे० 'सेठ'।

**सेड़ा**†—सज्ञा पु० [देश०] भादो मे होनेवाला एक प्रकार का धान।

**सेड़ी**—सज्ञा स्त्री० [स० चेटी, प्रा० चेडि, हिं० चेरी अथवा स० सखि, प्रा० सहि + हिं० ली (प्रत्य०), हिं० सहेली] सहेली। सखी। (डिं०)।

**सेढ**—सज्ञा पु० [अ० सेल] बादवान। पाल। (लश०)।

मुहा०—सेढ करना = पाल उडाना। जहाज खोलना। सेढ़ खोलना = पाल उतारना। सेढ वजाना = पाल मे से हवा निकालना जिसमे वह लपेटा जा सके। सेढ सपटाना = रस्से को खीचकर पाल तानना। (लश०)।

**सेढ़खाना**—सज्ञा पुं० [अ० सेल + फा० खाना] १ जहाज में वह कमरा या कोठरी जिसमे पाल भरे रहते हैं। २ वह कमरा या कोठरी जहाँ पाल काटे और वनाए जाते हे। (लश०)।

**सेढमसानी**Ⓟ—सज्ञा स्त्री० [स० सिद्ध + श्मशान] श्मशानवासी देवी। काली। उ०—(क) खर का सोर भूँस कूकर की देखादेखी चाली। तैसे कलुआ जाहिर भैंरो सेढमसानी काली।—चरण० बानी, पृ० ७२। (ख) सेढमसानी के दरवान, नौहवति वाजि रही।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ९२२।

**सेढा**†¹—सज्ञा पु० [हिं० सेडा] दे० 'सेडा'।

**सेढा²**—सज्ञा पु० [अ० सेल, हिं० सेढ] १ दे० 'सेढ'। उ०—कही सुबीते से नाव का सेढा नही लगा।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ११८। २ सिरा।

**सेढा**Ⓟ³—सज्ञा स्त्री० [देश०] नाक का मैल। उ०—थूक रु लार भरचो मुख दीसत आँखि मे गीज रु नाक मे सेढो।—सुदर ग्र०, भा० २, पृ० ४३६।

**सेण**Ⓟ†—सज्ञा पु० [स० स्वजन, प्रा० सयण] मित्रमडली। आत्मीय जन। स्वजन। उ०—ज्यों री जीभ न ऊपडै सेणाँ माँही सेत। वारॉ कर किम ऊपरै खलाँ घिरचा विच खेत।—बाँकी० ग्र०, भा० २, पृ० १७।

**सेणि**Ⓟ†—सज्ञा स्त्री० [स० श्रेणि, प्रा० सेणि] श्रेणी। कतार। उ०—कबीर तेज अनत का मानौं ऊगी सूरज सेणि। पति सँगि जागी सुदरी, कौतिग दीठा तेणि।—कबीर ग्र०, पृ० १२।

**सेत**†¹—सज्ञा पुं० [स० सेतु] दे० 'सेतु'। उ०—(क) सिला तरै जल बीच सेत मे कटक उतारी।—पलटू०, पृ० ८। (ख) काज कियो नहि समै पर पछतानै फिरि काह। सूखी सरिता सेत ज्यो जोवन विते विवाह।—दीनदयाल (शब्द०)।

सेत(पु)²—वि० [सं० श्वेत, प्रा० सेग्र, ग्रप० मेत्त] दे० 'श्वेत'। उ०—पैन्हें सेत मारी बैठी फानुम के पास प्यारी, कहत विहारी प्राणप्यारी धौं कितै गई।—दूलह (शब्द०)।

सेत(पु)³—वि० [स० श्वेत, प्रा० सेत] १ स्पष्ट। साफ। उ०—ज्यांरी जीभ न ऊपडे सेणां माँही सेत।—बाँकी ग०, भा० २, पृ० १७। २ कीर्ति। यश। मर्यादा। उ०- सबै सेतवधी रहे सेत मुक्के। गयौ हब्बसी रोम साध्रम चुक्के।—पृ० रा०, २४। २५७।

यौ०—सेतवधी = कीर्तिवाले। यशस्वी।

सेत†⁴—सज्ञा पु० [म० स्वेद, प्रा० सेग्र, सेद] दे० 'स्वेद'।

सेतकुली—सज्ञा पुं० [स० श्वेतकुलीय] सर्पो के ग्रप्टकुल मे से एक। सफेद जाति के नाग। उ०—मोको तुम अब यज्ञ करावहु। तक्षक कुटुँब समेत जरावहु। विप्रन सेतकुली जव जारी। तव राजा तिनसो उच्चारी।—सूर (शब्द०)।

सेतज(पु)†—वि० [सं० स्वेदज, प्रा० सेदज] दे० 'स्वेदज'। उ०—उन्मनि ध्यान न सेतज कीने।—प्राण०, पृ० ५८।

सेतदीप(पु)—सज्ञा पु० [स० श्वेतदीप] दे० 'श्वेतद्वीप'।

सेतदुति(पु)—सज्ञा पु० [सं० श्वेतद्युति] चद्रमा।

सेतना—क्रि० स० [हिं० सैंतना] दे० 'सैंतना'।

सेतवद(पु)—सज्ञा पुं० [स० सेतुबन्ध, प्रा० सेतवध] उ०—(क) सेतवद पुन कीन्ह ठिकाना। पुष्कर क्षेत्र ग्राय जम थाना।—कवीर सा०, पृ० ८०४। (ख) सेतवद पर जाय पूजि रामेस्वर नीकै।—ह० रासो, पृ० १६३।

सेतवध‡—सज्ञा पु० [सं० सेतुवन्ध] दे० 'सेतुवध'।

सेतवा—सज्ञा पुं० [स० शुक्ति, हिं० सितुही] पतले लोहे की करछी जिससे ग्रफीम काछते हैं।

सेतवारी†—सज्ञा स्त्री० [स० सिकता (= वालू) + हिं० वारी (प्रत्य०)] हरापन लिए हुए वलुई चिकनी मिट्टी।

सेतवाल—सज्ञा पु० [?शा०] वैश्यो की एक जाति।

सेतवाह(पु)—सज्ञा पुं० [स० श्वेतवाहन] १ ग्रर्जुन। २ चद्रमा (डिं०)।

सेतव्य—वि० [सं०] साथ रखने योग्य। सह वधन योग्य [को०]।

सेतिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] साकेत। ग्रयोध्या।

सेती(पु)†—प्रत्य० [हिं०] से। साथ। उ०—(क) नारी सेती नेह लगायौ।—रामानद०, पृ० ६। (ख) कर सेती माला जपे हिरदै वहै डँडूल। पग तौ पाला मैं गिल्या, भाजण लागी सूल।—कवीर ग्र०, पृ० ४५। (ग) जैसे भूखे प्रीत ग्रनाजा। तृणवत जल सेती काजा।—दक्खिनी०, पृ० ८४।

सेतु¹—सज्ञा पुं० [स०] १ वधन। वँधाव। २ मिट्टी का ऊँचा पटाव जो कुछ दूर तक चला गया हो। वाँध। धुस्स। ३ मेड। डाँड। ४ किसी नदी, जलाशय, गड्ढे, खाईं ग्रादि के ग्रार पार जाने का रास्ता जो लकडी, वाँस, लोहे ग्रादि विछाकर या पक्की जोडाई करके वना हो। पुल। उ०—ग्रावत जानि भानुकुल केतू। सरितन्ह जनक वँधाए सेतू।—तुलसी (शब्द०)।

क्रि० प्र०—वनाना।—वाँधना। उ०—सेतु वाँधि कपि सेन जिमि उतरी सागर पार।—मानस, ७।६७।

५ सीमा। हदवदी। ६ मर्यादा। नियम या व्यवस्था। प्रतिवध। उ०- ग्रसुर मारि थापहिं सुरन्ह राखहिं निज श्रुतिसेतु। जग विस्तारहिं विसद जस, रामजनम कर हेतु।—तुलसी (शब्द०)। ७ प्रणव। ग्रोकार। ८ टीका या व्याख्या। ९ वरुण वृक्ष। वरना। १० एक प्राचीन स्थान। ११ द्रुह्यु के एक पुत्र ग्रौर वभ्रु के भाई का नाम। १२ सकीर्ण पर्वतीय मार्ग। सँकरा पहाडी रास्ता (को०)। १३ वह मकान जिसमे धरनें छत के साथ लोहे की कीलो से जडी हो। १४ दे० 'सेतुबध'—४।

सेतु(पु)²—वि० [स० श्वेत, प्रा० सेग्र, ग्रप० सेत्त] दे० 'श्वेत'।

सेतुक¹—सज्ञा पुं० [सं०] १ पुल। २ वाँध। धुस्स। ३. वरुण वृक्ष। वरना। ४ दर्रा। तग पर्वतपथ (को०)।

सेतुक(पु)²—ग्रव्य० [हिं० सौंतुख] समुख। सामने।

सेतुकर—सज्ञा पु० [स०] सेतुनिर्माता। पुल वनानेवाला।

सेतुकर्म—सज्ञा पु० [स० सेतुकर्मन्] सेतु या पुल वनाने का काम।

सेतुज—सज्ञा पु० [स०] दक्षिणापथ के एक स्थान का नाम।

सेतुपति—सज्ञा पु० [स०] रामनद के (जो मद्रास प्रदेश के मदुरा जिले के ग्रतर्गत है) राजाग्रो की वशपरपरागत उपाधि।

सेतुपथ—सज्ञा पुं० [स०] दुर्गम स्थानो मे जानेवाली सडक। ऊँची नीची पहाडी घाटियो मे जानेवाली सडक।

सेतुप्रद—सज्ञा पु० [स०] कृष्ण का एक नाम।

सेतुवध—सज्ञा पु० [स० सेतुवन्ध] १ पुल की वँधाई। २ वह पुल जो लका पर चढाई के समय रामचद्र जी ने समुद्र पर वँधवाया था। उ०—सेतुवध भइ भीर ग्रति कपि नभ पथ उडाहिं।—मानस, ६।४।

विशेष—नल नील ने वदरो की सहायता से शिलाएँ पाटकर यह पुल वनाया था। वाल्मीकि ने यहाँ शिव की स्थापना का कोई उल्लेख नही किया है। केवल लका से लौटते समय रामचद्र ने सीता से कहा है—'यहाँ पर सेतु वाँधने के पहले शिव ने मेरे ऊपर ग्रनुग्रह किया था (युद्धकाड, १२५वाँ ग्रध्याय)। पर ग्रध्यात्म ग्रादि पिछली रामायणो मे शिव की स्थापना का वर्णन है। इस स्थान पर रामेश्वर महादेव का दर्शन करने के लिये लाखो यात्री जाया करते है। 'सेतुवध रामेश्वर' हिंदुग्रों के चार मुख्य धामो मे से एक है। ग्राजकल कन्याकुमारी ग्रौर सिंहल के वीच के छिछले समुद्र मे स्थान स्थान पर जो चट्टानें निकली है, वे ही उस प्राचीन सेतु के चिह्न वतलाई जाती है।

३ वाँध या पुल (को०)। ४ नहर।

विशेष—कौटिल्य मे नहरें दो प्रकार की कही है—ग्राहार्योदक ग्रौर सहोदक। ग्राहार्योदक वह है जिसमे पानी नदी, ताल ग्रादि से खीचकर लाया जाता है। सहोदक मे झरने से पानी ग्राता रहता है। इनमे से दूसरे प्रकार की नहर ग्रच्छी कही गई है।

सेतुबंधन—संज्ञा पुं० [सं० सेतुबन्धन] १ सेतुनिर्माण । पुल बाँधना । २ पुल । ३ बाँध । सीमा की मेंड ।

सेतुबंध रामेस्वर—संज्ञा पुं० [सं० सेतुबन्धरामेश्वर] दे० १ 'सेतुबंध' और २ 'रामेश्वर' ।

सेतुभेत्ता—संज्ञा पुं० [सं० सेतुभेत्तृ] वह व्यक्ति जो पुल, बाँध आदि को तोडता हो (को०) ।

सेतुभेद—संज्ञा पुं० [सं०] सेतु का भंग होना । पुल का टूटना । बाँध का टूटना ।

सेतुभेदी[1]—संज्ञा पुं० [सं० सेतुभेदिन्] दंती । उदुंबरपर्णी । तिरोफल ।

सेतुभेदी[2]—वि० १ मर्यादा, सीमा आदि का विनाशक । २ निरोधक । बाधक (को०) ।

सेतुवा†—संज्ञा पुं० [सं० सक्तु, सक्तुक, हिं० सतुआ], दे० 'सतुआ' और 'सत्तू' ।उ०—सोइ भुजाइ सेतुवा बनवायो । तामें चारिउ भाग लगायो । —रघुनाथदास (शब्द०) ।

सेतुवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] वरुण वृक्ष । बरना ।

सेतुशैल—संज्ञा पुं० [सं०] वह पहाड जो दो देशों के बीच में हो । सरहद का पहाड ।

सेतुषाम—संज्ञा पुं० [सं० सेतुषामन्] एक साम का नाम ।

सेत्र—वि० पुं० [सं०] बेडी । जजीर । बंधन । शृंखला ।

सेथिया—संज्ञा पुं० [तिलगू चेट्टि, चेट्टिया, हिं० सेठिया] नेत्रों की चिकित्सा करनेवाला । आँखों का इलाज करनेवाला ।

सेथी(पु)—अव्य० [सं० सहित] दे० 'सहित' । उ०—काया सेथी टूट कर जमी पडो वा जीह ।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० ५५ ।

सेद(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्वेद, प्रा० सेद] दे० 'स्वेद' । उ०—कान में कामिनी के यह आनिकै बोल परचो जनु वज्र सो नायो । सूखि गयो अँग, पीरो भयो रँग, सेद कपोलन में सँग धायो ।—रघुनाथ बदीजन (शब्द०) ।

सेदज(पु)—वि० [सं० स्वेदज] दे० 'स्वेदज' । उ०—बिन सनेह दुख होय न कैसे । शुक मूषक सुत सेदज जैसे ।—रघुनाथदास (शब्द०) ।

सेदरा—संज्ञा पुं० [फा० सेह (=तीन) + दर (=दरवाजा)] वह मकान जो तीन तरफ से खुला हो । तिदरी ।

सेदिवस्—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सेदुषी] बैठा हुआ । उपविष्ट (को०) ।

सेदुक—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत में वर्णित एक राजा का नाम ।

सेद्धव्य—वि० [सं०] १ निवारण योग्य । हटाने या दूर करने योग्य । २ जिसे हटाना या दूर करना हो ।

सेध[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ निषेध । निवारण । मनाही । २ जाना । पहुँचना । ३ दुम । पुच्छ । (को०) ।

सेध[2]—वि० दूर रखनेवाला । हटानेवाला (को०) ।

सेधक—वि० [सं०] प्रतिरोधक । हटाने या रोकनेवाला ।

सेधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] साही नाम का जानवर जिसकी पीठ पर काँटे होते हैं । खारपुश्त ।

सेन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरीर । तन । देह । २. जीवन । ३ बंगाल की वैद्य जाति की उपाधि ।

यौ०—सेनकुल = दे० 'सेनवंश' ।

४ एक भक्त नाई ।

विशेष—इसकी कथा भक्तमाल में इस प्रकार है । यह रीवाँ के महाराज की सेवा में था और बडा भारी भक्त था । एक दिन साधुसेवा में लगे रहने के कारण यह समय पर राजसेवा के लिये न पहुँच सका । उस समय भगवान् ने इसका रूप धरकर राजभवन में जाकर इसका काम किया । यह वृत्तांत ज्ञात होने पर यह विरक्त हो गया और राजा भी परम भक्त हो गए ।

५ एक राक्षस का नाम । ६ दिगबर जैन साधुओं के चार भेदों में से एक ।

सेन[2]—वि० [सं०] १. जिसके सिर पर कोई मालिक हो । सनाथ । २ आश्रित । अधीन । ताबे ।

सेन(पु)[3]—संज्ञा पुं० [सं० श्येन, प्रा० सेण, बाज पक्षी । उ०—ज्यों गच काँच बिलोकि सेन जड, छाँह आपने तन की । टूटत अति आतुर अहारवस, छति बिसारि आनन की ।—तुलसी (शब्द०)।

सेन(पु)[4]—संज्ञा स्त्री० [सं० सैन्य, प्रा० सेण] दे० 'सेना' । उ०—हय गय सेन चलै जग पूरी ।—जायसी (शब्द०) ।

सेन†[5]—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धि] दे० 'सेंध' ।

सेन†[6]—संज्ञा पुं० [हिं० सैन] सकेत । इशारा । उ०—(क) तासों वह ने सेन ही सों नाहीं करो ।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० २६० । (ख) अपने घर इन चारों को सेन दै कै पधराइ लै गई ।—दो सौ बावन०, भाग १, पृ० ७२ ।

सेन†[7]—संज्ञा पुं० [सं० शयन] दे० 'शयन' । उ०—(क) सो श्री गोवर्धननाथ जी को उत्थापन किए । पाछे सेन पर्यंत की सब सेवा ।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० २३ । (ख) श्री नवनीत प्रिय जी को उत्थापन ते सेन पर्यंत की सेवा सों पहोंचि · · · सुबोधिनी को कथा कहे ।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ६६ ।

यौ०—सेन आर्ति = शयनकाल की आरती । उ०—श्री ठाकुर जी की सेन आर्ति करि कै अपने घर तें चलतो ।—दो सौ बावन०, भा०, पृ० २६ । सेनभोग = शयनकालीन भोग । उ०—पाछें सेन भोग धरि श्री ठाकुर जी की रसोई पोति, भाग सराइ, आर्ति करि · · मुरारीदास सोवते ।—दो सौ बावन०, भा०, पृ० १०२ ।

सेनक—संज्ञा पुं० [सं०] १ हरिवंश वर्णित शबर के एक पुत्र का नाम । २ एक वैयाकरण का नाम ।

सेनजित्[1]—वि० [सं०] सेना को जीतनेवाला ।

सेनजित्[2]—संज्ञा पुं० १ एक राजा का नाम । २ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम । विश्वजित् के एक पुत्र का नाम । ४ बृहत्कर्मा के एक पुत्र का नाम । ५ कृशाश्व के एक पुत्र का नाम । ६ विशद के एक पुत्र का नाम ।

सेनजित्[3]—संज्ञा स्त्री० एक अप्सरा का नाम ।

**सेनप**—संज्ञा पुं० [सं० सेना+प (=पति)] सेनापति। उ०—सूर सचिव सेनप बहुतेरे। नृपगृह सरिस सदन सब केरे।—तुलसी (शब्द०)।

**सेनपति**Ⓤ—संज्ञा पुं० [सं० सेनापति] दे० 'सेनापति'। उ०—कपि पुनि उपवन वारिहु तोरी। पच सेनपति सेन मरोरी।—पद्माकर (शब्द०)।

**सेनयार**—संज्ञा पुं० [इटा०] [स्त्री० सेनयोरा] इटली में नाम के आगे लगाया जानेवाला आदरसूचक शब्द। अँगरेजी 'मर' या 'मिस्टर' शब्द का समानार्थवाची शब्द। महाशय। महोदय।

**सेनवश**—संज्ञा पुं० [सं०] बगाल का एक हिंदू राजवश जिसने ११ वीं शताब्दी से १४ वीं शताब्दी तक राज्य किया था। इसे 'सेनकुल' भी कहा जाता है।

**सेनस्कध**—वि० पुं० [सं० सेनस्कन्ध] हरिवश मे शबर का एक नाम।

**सेनहा**—संज्ञा पुं० [सं० सेनाहन्] शबर का एक पुत्र [को०]।

**सेनाग**—संज्ञा पुं० [सं० सेनाङ्ग] १ सेना का कोई एक अग। जैसे,—पैदल, हाथी, घोड़े, रथ।

२ फौज का हिस्सा। सिपाहियों का दल या टुकडी।

**यौ०**—सेनागपति = सिपाहियों की टुकडी का अधिकारी।

**सेना**[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ युद्ध की शिक्षा पाए हुए और अस्त्र-शस्त्र से सजे मनुष्यों का बडा समूह। सिपाहियों का गरोह। फौज। पलटन।

**विशेष**—भारतीय युद्धकला मे सेना के चार अग माने जाते थे—पदाति, अश्व, गज और रथ। इन अगों से पूर्ण समूह सेना कहलाता था। सैनिकों या सिपाहियों को समय पर वेतन देने की व्यवस्था आजकल के समान ही थी। यह वेतन कुछ तो भत्ते या अनाज के रूप मे दिया जाता था और कुछ नकद। महाभारत के सभापर्व मे नारद ने युधिष्ठिर को उपदेश दिया है कि 'कच्चिद्बलस्य भक्त च वेतन च यथोचितम्। सम्प्राप्तकाले दातव्य ददासि न विकर्षसि'। चतुरग दल के अतिरिक्त सेना के और चार विभाग होते थे—विष्टि, नौका, चर और देशिक। सब प्रकार के सामान लादने और पहुँचाने का प्रबध 'विष्टि' कहलाता था। 'नौका' का भी लडाई मे काम पडता था। 'चरों' के द्वारा प्रतिपक्ष के समाचार मिलते थे। 'देशिक' स्थानीय सहायक हुआ करते थे जो अपने स्थान पर पहुँचने पर सहायता पहुँचाया करते थे। सेना के छोटे छोटे दलों को 'गुल्म' कहते थे।

**पर्या०**—चतुरग। बल। ध्वजिनी। वाहिनी। पृतना। चमू। अनीकिनी। सैन्य। वरूथिनी। अनीक। चक्र। वाहना। गुल्मिनी। वरचक्षु।

२ भाला। बरछी। शक्ति। साँग। ३ इद्र का वज्र। ४ इद्राणी। ५ वर्तमान अवसर्पिणी के तीसरे अर्हत् शभव की माता का नाम (जैन)। ६ एक उपाधि जो पहले अधिकतर वेश्याओं के नामों मे लगी रहती थी। जैसे,—वसतसेना। ७ सेना की छोटी टुकडी जिसमे ३ हाथी, ३ रथ, ६ अश्व और १५ पदाति रहते हैं (को०)।

**सेना**[2]—क्रि० स० [सं० सेवन] १ सेवा करना। खिदमत करना। किसी को आराम देना या उसका काम करना। नौकरी बजाना। टहल करना। उ०—सेइय ऐसे स्वामि को जो राखै निज मान।—कबीर (शब्द०)।

मुहा०—चरण सेना = तुच्छ से तुच्छ चाकरी बजाना।

२ आराधना करना। पूजना। उपासना करना। उ०—(क) ताते सइय श्री जदुराई। (ख) सेवत सुलभ उदार कल्पतरु पारवतीपति परम सुजान।—तुलसी (शब्द०)। ३ नियमपूर्वक व्यवहार करना। काम मे लाना। इस्तेमाल करना। नियम के साथ खाना पीना या लगाना। उ०—(क) आसव सेइ मिखाए सखीन के सुदरि मदिर मे सुख सोवै।—देव (शब्द०)। (ख) निपट लजीली नवल तिय बहँकि वारुनी सेइ। त्यों त्यों अति मीठी लगै ज्यों ज्यों ढीठो देइ।—बिहारी (शब्द०)। ४ किसी स्थान को लगातार न छोडना। पडा रहना निरतर वास करना। जैसे,—चारपाई सेना, कोठरी सेना, तीर्थ सेना। उ०—(क) सेइय सहित सनेह देह भरि कामधेनु कलि कासी।—तुलसी (शब्द०)। (ख) उत्तम थल सेवै सुजन, नीच नीच के वस। सेवत गीध मसान को, मानसरोवर हस।—दीनदयाल (शब्द०)। ५ लिए बैठे रहना। दूर न करना। जैसे,—फोडा सेना। ६ मादा चिडिया का गरमी पहुँचाने के लिये अपने अडों पर बैठना।

**सेनाकक्ष**—संज्ञा पुं० [सं०] सेना का पार्श्व। फौज का बाजू।

**सेनाकर्म**—संज्ञा पुं० [सं० सेनाकर्मन्] १. सेना का सचालन या व्यवस्था। २ सेना का काम।

**सेनाकल्प**—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

**सेनागोप**—संज्ञा पुं० [सं०] सेना का सरक्षक। सेना का एक विशेष अधिकारी।

**सेनाग्र**—संज्ञा पुं० [सं०] सेना का अग्रभाग। फौज का अगला हिस्सा।

**सेनाग्रग**—संज्ञा पुं० सेना का प्रधान। सेनापति।

**सेनाचर**—संज्ञा पुं० [सं०] सेना के साथ जानेवाला सैनिक। योद्धा। सिपाही।

**सेनाजीव**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सेनाजीवी'।

**सेनाजीवी**—संज्ञा पुं० [सं० सेनाजीविन्] वह जो सेना मे रहकर अपनी जीविका चलावे। सैनिक। सिपाही। योद्धा।

**सेनादार**—संज्ञा पुं० [सं० सेना+फा० दार] सेनानायक। फौजदार। उ०—मल्हारराव हुल्कर भाग्य के बल से पेशवा बहादुर की सेना का सेनादार हो गया।—शिवप्रसाद (शब्द०)।

**सेनाधिकारी**—संज्ञा पुं० [सं० सेनाधिकारिन्] सेनानायक। फौज का अफसर।

**सेनाधिनाथ**—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति। फौज का अफसर। सिपहसालार।

**सेनाधिप**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सेनाधिपति'।

**सेनाधिपति**—संज्ञा पुं० [सं०] फौज का अफसर। सेनापति।

सेनाधीश—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति।

सेनाध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] फौज का अफसर। सेनापति।

सेनानायक—संज्ञा पुं० [सं०] सेना का अफसर। फौजदार।

सेनानिवेश—संज्ञा पुं० [सं०] सेना का पडाव। सैन्यशिविर [को०]।

सेनानी—संज्ञा पुं० [सं०] १ सेनापति। फौज का अफसर। उ०—आँधी मे उडते पत्तो से, दलित हुए सब सेनानी।—साकेत, पृ० ३९५। २ कार्तिकेय का एक नाम। ३ एक रुद्र का नाम। ४ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ५ शवर के एक पुत्र का नाम। ६ एक विशेष प्रकार का पासा।

सेनापति—संज्ञा पुं० [सं०] १ सेना का नायक। फौज का अफसर। २ कार्तिकेय का एक नाम। ३ शिव का नाम। ४ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ५ हिंदी के एक प्रसिद्ध कवि का नाम।

यौ०—सेनापतिपति = सेनापतियो का प्रधान अधिकारी। प्रधान सेनापति।

सेनापत्य—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति का कार्य या पद। सेनापति का अधिकार।

सेनापरिच्छद्—वि० [सं०] सेनाओ से घिरा हुआ या आवृत [को०]।

सेनापाल—संज्ञा पुं० [सं० सेना + पाल] सेनापति। उ०—हरखे बोल्यो भूप तब सेनापाल बुलाय। धाइ सुसर्मा वीर जे सुरभी लेहु छुडाय।—सबलसिंह (शब्द०)।

सेनापृष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] सेना का पिछला भाग।

सेनाप्रणेता—संज्ञा पुं० [सं० सेनाप्रणेतृ] सेनानायक। सेनापति। फौज का मुखिया।

सेनावेध†—संज्ञा पुं० [सं० सेना + वेध] सैन्य दल का भेदन करनेवाला। सेना को वेधनेवाला—शूरवीर। (डिं०)।

सेनाभग—संज्ञा पुं० [सं० सेनाभङ्ग] सेना का अस्तव्यस्त, छिन्न भिन्न या तितर बितर होना [को०]।

सेनाभक्त—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के अनुसार सेना के लिये रसद और बेगार।

सेनाभिगोप्ता—संज्ञा पुं० [सं० सेनाभिगोप्तृ] सेनारक्षक। सेनापति।

सेनामुख—संज्ञा पुं० [सं०] १ सेना का अग्रभाग। २ सेना का एक खड जिसमे ३ या ९ हाथी, ३ या ९ रथ, ९ या २७ घोडे और १५ या ४५ पैदल होते थे। ३ नगरद्वार के सामने का ढका हुआ या गुप्त रास्ता। ४ नगर द्वार के सामने निर्मित सेतु (को०)।

सेनायोग—संज्ञा पुं० [सं०] सैन्यसज्जा, फौज की तैयारी।

सेनारक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] पहरुआ। संतरी। प्रहरी [को०]।

सेनावास—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह स्थान जहाँ सेना रहती हो। छावनी।

विशेष—बृहत्संहिता के अनुसार जहाँ राख, कोयला, हड्डी, तुष, केश, गड्ढे न हो, जो स्थान ऊसर न हो, जहाँ हिंसक जतुओ और चूहो के बिल और वल्मीक न हो तथा जिस स्थान की भूमि घनी, चिकनी, सुगधित मधुर और समतल हो ऐसे स्थान पर राजा को सेनावास या छावनी बनानी चाहिए।

२ डेरा। खेमा शिविर। कैप।

सेनावाह—संज्ञा पुं० [सं०] सेनानायक।

सेनाव्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध के समय भिन्न भिन्न स्थानो पर की हुई सेना के भिन्न भिन्न अगो की स्थापना या नियुक्ति। सैन्यविन्यास। विशेष दे० 'व्यूह'।

सेनासमुदय—संज्ञा पुं० [सं०] सम्मिलित सेना। एकत्र हुई सेना।

सेनास्थ—संज्ञा पुं० [सं०] सिपाही। फौजी आदमी।

सेनास्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १ छावनी। २. शिविर। खेमा। डेरा।

सेनाहन्—संज्ञा पुं० [सं०] हरिवश के अनुसार शवर के एक पुत्र का नाम।

सेनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रेणि, प्रा० सेणि] दे० 'श्रेणी'। उ०—जनु कलिदनदिनि मनि नील सिखर पर सिध सति लसति हस सेनि सकुल अधिकी है।—तुलसी (शब्द०)।

सेनिका—संज्ञा स्त्री० [सं० श्येनिका] १ बाज पक्षी। उ०—श्यामदेह दुकूल दुति छवि लसत तुलसी माल। तडित घन सयोग मानो सेनिका शुक जाल।—सूर (शब्द०)। २ एक छद। विशेष दे० 'श्येनिका'। उ०—आठ और आठ दीठि दै रह्यो। लोक नाथ आश्चर्य वै रह्यो।—गुमान (शब्द०)।

सेनी[1]—संज्ञा स्त्री० [फा० सीनी] १ तश्तरी। रकाबी। २ नक्काशीदार छोटी छिछली थाली।

सेनी(पु)[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० श्येनी] १ बाज की मादा। मादा बाज पक्षी। २ दक्ष प्रजापति की कन्या और कश्यप की पत्नी ताम्रा से उत्पन्न पाँच कन्याओ मे से एक।

सेनी(पु)[3]—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रेणी] १ पक्ति। कतार। उ०—जोवन फूल्यो बसत लसै तेहि अगलता अलि सेनी।—वेनी (शब्द०)। २ सीढी। जीना।

सेनी(पु)[4]—संज्ञा पुं० विराट के यहाँ अज्ञातवास करते समय का सहदेव का रखा हुआ नाम। उ०—नाम धनजय को कह्यो बृहन्नला ऋषि व्यास। सेनी सहदेवहि कह्यो सकल गुनन की रास।—सबल (शब्द०)।

सेनीटोरियम—संज्ञा पुं० [अं०] स्वास्थ्यगृह। चिकित्सालय।

सेन्दुर†, सेन्हुर—संज्ञा पुं० [सं० सिन्दूर] दे० 'सिंदूर'।

सेनेट—संज्ञा स्त्री० [अं०] १ प्रधान व्यवस्थापिका सभा या का बनानेवाली सभा। २ विश्वविद्यालय की प्रबधकारिणी सभा विश्वविद्यालयो मे पुराने कोर्ट का नाम। ३. अमेरिका व्यवस्थापिका सभा का एक भाग। ४ प्राचीन काल मे रो साम्राज्य की शासक सभा।

सेनेटर—संज्ञा पुं० [अं०] १ सेनेट या देश की प्रधान का सदस्य। २ जज या मजिस्ट्रेट।

विशेष—अमेरिका, फ्रास, इटली आदि देशो की बडी व्यवस्थापिका सभाएँ 'सेनट' कहलाती है और उनके सदस्य 'सेनेटर' कहलाते है।

**सेनेट हाउस**—सज्ञा पुं० [अं०] वह मकान जिसमे सेनेट का अधिवेशन होता है।

**सेफ**[1]—सज्ञा पु० [स० शेफ, सेफ, प्रा० सेफ] दे० 'शेफ'।

**सेफ**[2]—सज्ञा पुं० [अं०] लाहे का बडा मजबूत बक्स जिसमे रोकड और बहुमूल्य पदार्थ रखे जाते हैं।

**सेफालिकी**—सज्ञा स्त्री० [स० शेफालिका, प्रा० सफालिश्रा, सेहालिया, सेहाली] दे० 'शेफालिका'।

**सेव**—सज्ञा पु० [फा०] नाशपाती की जाति का मझोले आकार का एक पेड जिसका फल मेवो मे गिना जाता है।

विशेष—यह पेड पश्चिम का है, पर बहुत दिनो से भारतवर्ष मे भी हिमालय प्रदेश (काश्मीर, कुमाऊँ, गढवाल, कांगडा आदि), पजाव आदि मे लगाया जाता है, और अब सिंध, मध्यभारत और दक्षिण तक फैल गया है। काश्मीर मे कहीं कही यह जगली भी देखा जाता है। इसके पत्ते कुछ कुछ गोल और पीछे की ओर कुछ सफेदी लिए और रोईं दार होते हैं। फूल सफेद रग के होते है जिन पर लाल लाल छीटे से होते है। फल गोल और पकने पर हलके हरे रग के होते है, पर किसी किसी का कुछ भाग बहुत सुदर लाल रग का होता है जिससे देखने मे बडा सुदर लगता है। गूदा इसका बहुत मुलायम और मीठा होता है। मध्यम श्रेणी के फलो मे कुछ खटास भी होती है। सेव फागुन से वैशाख के अत तक फूलता है और जेठ से फल लगने लगते है। भादो मे फल अच्छी तरह पक जाते है। ये फल बडे पाचक माने जाते है। भावप्रकाश के अनुसार सेव वात-पित्त-नाशक, पुष्टिकारक, कफकारक, भारी, पाक मे मधुर, शीतल तथा शुक्रकारक है। भावप्रकाश के अतिरिक्त किसी प्राचीन ग्रथ मे सेव का उल्लेख नही मिलता। भावप्रकाश ने सेव, सिंचितिका फल आदि इसके कुछ नाम दिए हैं।

**सेवाट**(पु)—वि० [देशी या हिं० सपाट] दे० 'सपाट'। उ०—ऊँचे-ऊँचे परवत विषय के घाट। तिहाँ गोरखनाथ कै लिया सेवाट।—गोरख०, पृ० १३४।

**सेभ्य**[1]—सज्ञा पु० [स०] शीतलता। शैत्य। ठढक।

**सेभ्य**[2]—वि० शीतल। ठढा।

**सेभतिका**—सज्ञा स्त्री० [स० सेमन्तिका] दे० 'सेमती'।

**सेभती**—सज्ञा स्त्री० [स० सेमन्ती] सफेद गुलाब का फूल। सेवती।

**सेम**—सज्ञा स्त्री० [स० शिम्बी] एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी खाई जाती है।

विशेष—इसकी लता लिपटती हुई बढती है। पत्ते एक एक सीके पर तीन तीन रहते है और वे पान के आकार के होते हैं। सेम सफेद, हरी, मजटा आदि कई रगो की होती है। फलियां लबी, चिपटी और कुछ टेढी होती हैं। यह हिंदुस्तान मे प्राय सर्वत्र बोई जाती है। वैद्यक मे सेम मधुर, शीतल, भारी, कसैली, बलकारी, वातकारक, दाहजनक, दीपन तथा पित्त और कफ का नाश करनेवाली मानी गई है।

यौ०—सेम का गोद = एक प्रकार के कचनार का गोद जो देहरादून की ओर से आता है और इद्रिय जुलाब या रज स्रावन के लिये दिया जाता है। विशेष दे० 'कचनार'।

**सेमई**[1]—सज्ञा पुं० [हिं० सेम + ई (प्रत्य०)] हलका सब्ज रग।

**सेमई**[2]—वि० हलके हरे रग का।

**सेमई**(पु)[3]—सज्ञा स्त्री० [सं० सेविका, हिं० सेंवई] दे० 'सेवई'। उ०—मोतीचूर मूर के मोदक आदक की उजियारी जी। सेमई सेव सँजना सूरन साबा सरस सोहारी जी।—विश्राम (शब्द०)।

**सेमर**[1]—सज्ञा पुं० [देश०] दलदली जमीन।

**सेमर**[2]—सज्ञा पुं० [स० शाल्मली, हिं० सेमल] दे० 'सेमल'।

**सेमल**—सज्ञा पुं० [सं० शिम्बल (= शाल्मलि (सायण)] पत्ते झाडनेवाला एक बहुत बडा पेड जिसमे बडे आकार और मोटे दलो के लाल फूल लगते है, और जिसके फलो या डोडो मे केवल रूई होती है गूदा नही होता।

विशेष—इस पेड के धड और डालो मे दूर दूर पर काँटे होते हैं, पत्ते लबे और नुकीले होते है तथा एक एक डाडी मे पजे की तरह पांच पांच छह छह लगे होते हैं। फूल मोटे दल के, बडे बडे और गहरे लाल रग के होते है। फूलो मे पांच दल होते है और उनका घेरा बहुत बडा होता है। फागुन मे जब इस पेड की पत्तियां बिल्कुल झड जाती हैं और यह ठूठा हो जाता है तब यह इन्ही लाल फूलो से गुछा हुआ दिखाई पडता है। दलो के झड जाने पर डोडा या फल रह जाता है जिसमे बहुत मुलायम और चमकीली रूई या घूए के भीतर बिनौले से बीज बद रहते है। सेमल के डोडे या फलो की निस्सारता भारतीय कविपरपरा मे बहुत काल से प्रसिद्ध है और यह अनेक अन्योक्तियों का विषय रहा है। 'सेमर सेइ सुवा पछताने' यह एक कहावत सी हो गई है। सेमल की रूई रेशम सी मुलायम और चमकीली होती है और गद्दो तथा तकियो मे भरने के काम मे आती है, क्योंकि काती नहीं जा सकती। इसकी लकडी पानी मे खूब ठहरती है और नाव बनाने के काम मे आती है। आयुर्वेद मे सेमल बहुत उपकारी ओषधि मानी गई है। यह मधुर, कसैला, शीतल, हलका, स्निग्ध, पिच्छिल तथा शुक्र और कफ को बढानेवाला कहा गया है। सेमल की छाल कसैली और कफनाशक, फूल शीतल, कडवा, भारी, कसैला, वातकारक, मलरोधक, रूखा तथा कफ, पित्त और रक्तविकार को शात करनेवाला कहा गया है। फल के गुण फूल ही के समान हैं। सेमल के नए पौधे की जड को सेमल का मूसला कहते हैं, जो बहुत पुष्टिकारक, कामोद्दीपक और नपुसकता को दूर करनेवाला माना जाता है। सेमल का गोद मोचरस कहलाता है। यह अतिसार को दूर करनेवाला

और बलकारक कहा गया है। इसके बीज स्निग्धताकारक और मदकारी होते हैं, और काँटो मे फोडे, फुसी, घाव, छीप आदि दूर करने का गुण होता है।

फलो के रग के भेद से सेमल तीन प्रकार का माना गया है—एक तो साधारण लाल फूलोवाला, दूसरा सफेद फूलो का और तीसरा पीले फूलो का। इनमे से पीले फूलो का सेमल कही देखने मे नही आता। सेमल भारतवर्ष के गरम जगलो मे तथा बरमा, सिंहल और मलाया मे अधिकता से होता है।

पर्या०—शाल्मलि। शाल्मली। पिच्छला। मोचा। स्थिराह। तूलिफला। दूरारोहा। शाल्मलिनी। शाल्मल। अपूरणी। पूरणी। निर्गंधपुष्पी। तुलनी। कुक्कुटी। रक्तपुष्पा। कटकारी। मोचनी। शीमूल। कदला। चिरजीवी। पिच्छल। रक्तपुष्पक। तूलवृक्ष। मोचाख्य। कटकद्रुम। कुकुटी। रक्तोत्पल। वन्यपुष्प। बहुवीर्य। यमद्रुम। दीर्घद्रुम। स्थूलफल। दीर्घायु। कटकाष्ठ। निस्सारा। दीर्घपादपा।

सेमलमूसला—सज्ञा पु० [स० शिम्वलमूल] सेमल की जड जो वैद्यक मे वीर्यवर्धक, कामोद्दीपक और नपुसकता नष्ट करनेवाली मानी गई है।

सेमलसफेद—सज्ञा पु० [स० श्वेतशिम्वल] सेमल का एक भेद जिसके फूल सफेद होते हैं।

विशेष—यह सेमल के समान ही विशाल होता है। इसका उत्पत्तिस्थान मलाया है। यह हिंदुस्तान के गरम जगलो और सिंहल मे पाया जाता है। नए वृक्ष की छाल हरे रग की और पुराने की भूरे रग की होती है। पत्ते सेमल के समान ही एक साथ पाँच पाँच सात सात रहते है। फूल सेमल के फूल से छोटे और मटमैले सफेद रग के होते हैं। इसके फल कुछ बडे गोल, धुँधले और पाँच फाँकवाले होते हैं। फलो के अदर बहुत कोमल रूई होती है और रुई के बीच मे चिपटे बीज होते है। वैद्यक मे सेमल के समान ही इसके भी गुण बताए गए हैं।

सेमा—सज्ञा पु० [हिं० सेम] बडी सेम।

सेमिटिक—सज्ञा पु० [अ० शाम (=एक देश का नाम तथा इसराईल की सतति मे से एक)] १ मनुष्यो के आधुनिक वर्ग विभाग मे वह वर्ग जिसके अतर्गत यहूदी, अरब, सीरियन, मिस्री आदि लाल समुद्र के आस पास बसनेवाली, नई पुरानी जातियाँ है।

विशेष—मूसा, ईसा और मुहम्मद इसी वर्ग के थे जिन्होने पैगबरी मत चलाए। यह वर्ग आर्य वर्ग से भिन्न है जिसमे हिंदू, पारसी, युरोपियन आदि हैं।

२ उक्त वर्ग के लोगो द्वारा बोली जानेवाली भाषाओ का वर्ग।

विशेष—इस भाषावर्ग के इबरानी और अरबी तथा असीरियन, फिनीशियन आदि प्राचीन भाषाएँ है। यह वर्ग आर्यवर्ग से सर्वथा भिन्न है जिसके अतर्गत सस्कृत, पारसी, लैटिन, ग्रीक आदि प्राचीन भाषाएँ और हिंदी, मराठी, बँगाली, पजाबी, पश्तो, गुजराती आदि उत्तर भारत की भाषाएँ तथा अँगरेजी, फ्रासीसी, जर्मन आदि योरप की आधुनिक भाषाएँ है।

सेमिनरी—सज्ञा स्त्री० [अ०] शिक्षालय। स्कूल। विद्यालय। मदरसा।

सेमिनार—सज्ञा पु० [अ०] किसी विषय पर निर्देश ग्रहण करते हुए व्यवस्थित रूप से कालिज या विश्वविद्यालयीय छात्रो का अनुसधान कार्य। विचारगोष्ठी। शोधगोष्ठी।

सेमीकोलन—सज्ञा पु० [अ०] एक विराम जिसका चिह्न इस प्रकार है—;।

सेयन—सज्ञा पु० [स०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

सेर¹—सज्ञा पु० [स० ('लीलावती' मे प्रयुक्त)] १ एक मान या तौल जो सोलह छँटाक या अस्सी तोले की होती है। मन का चालीसवाँ भाग। २ १०६ टोली पान (तमोली)।

सेर²—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

सेर³—सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का धान जो अगहन महीने मे तैयार हो जाता है और जिसका चावल बहुत दिनो तक रह सकता है।

सेर(पु)⁴—संज्ञा पु० [फा० शेर] दे० 'शेर'। उ०—(क) गएन राए तौ बधिअ, तौन सेर बिहार चायिअ।—कीर्ति०, पृ० ५८। (ख) अरि अजा जूथ पै सेर हौ।—गोपाल (शब्द०)।

यौ०—सेर बच्चा = एक प्रकार की बदूक। भोका। उ०—छुटे सेर बच्चे। भजे वीर कच्चे।—हिम्मत०, पृ० १०।

सेर(पु)⁵—वि० [फा०] तृप्त। उ०—रे मन साहसी साहस राखु सुसाहस सो सब जेर फिरेंगे। ज्यो पदमाकर या सुख मे दुख त्यो दुख मे सुख सेर फिरेंगे।—पद्माकर (शब्द०)।

सेरन—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक घास जो राजपूताना, बुंदेलखड और मध्य भारत के पहाडी हिस्सो मे होती है।

सेरवा†¹—सज्ञा पु० [स० शणपट] वह कपडा जिससे हवा करके अन्न बरसाते समय भूसा उडाया जाता है। झूली। परती।

सेरवा†²—सज्ञा पुं० [हिं० सिर] चारपाई की वे पाटियाँ जो सिरहाने की ओर रहती है।

सेरवा³—सज्ञा पु० [हिं० सेराना (=ठढा करना, शात करना)] दीवाली के प्रात काल 'दरिद्दर' (दरिद्रता) भगाने की रस्म जो सूप बजाकर की जाती है।

सेरवाना†—क्रि० स० [हिं० सेराना] दे० 'सेराना²'। उ०—उसी कजरहिया पोखरे पर जाती, नहाती और जयी (जई) सेरवाती, अर्थात् पानी मे छोड देती हैं।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३२९।

सेरसाहि—सज्ञा पु० [फा० शेरशाह] दिल्ली का बादशाह शेरशाह। उ०—सेरसाहि देहली सुलतानू।—जायसी (शब्द०)।

सेरही—सज्ञा स्त्री० [हिं० सेर] एक प्रकार का कर या लगान जो किसान को फसल की उपज के अपने हिस्से पर देना पडता है।

सेरा¹—सज्ञा पुं० [हिं० सिर] चारपाई की वे पाटियाँ जो सिरहाने की ओर रहती हैं।

सेरा²—सज्ञा पुं० [फा० सेराब] आबपाशी की हुई जमीन। सीची हुई जमीन।

सेरा†³—सज्ञा पु० [अ० सल, लश० सेढ] दे० 'सेढ'।

**सेराना**Ⓟ¹—क्रि० अ० [सं० शीतल, प्रा० सीअड, हिं० सीयर सीरा] १ ठढा होना। शीतल होना। उ०—नैन सेराने, भूखि गइ, देखे दरस तुम्हार।—जायसी (शब्द०)। २ तृप्त होना। तुष्ट होना। ३ जीवित न रहना। जीवन समाप्त होना। ४ समाप्त होना। खतम होना। उ०—उठचो अखारा नृत्य सेराना। अपने गृह सुर कियो पयाना।—सबल (शब्द०)। ५ चुकना। तै करना। करने को न रह जाना। उ०—पथी कहाँ कहाँ सुसताई। पथ चलै तब पथ सेराई।—जायसी (शब्द०)।

**सेराना**²—क्रि० स० १ ठढा करना। शीतल करना। २ मूर्ति, प्रतीक आदि जल मे प्रवाहित करना या भूमि मे गाडना। जैसे,—ताजिया सेराना।

**सेराब**—वि० [फ़ा०] १ पानी से भरा हुआ। २ सीचा हुआ। तराबोर।
क्रि० प्र०—होना।
यौ०—सेराब हासिल = जरखेज। उपजाऊ। लाभकर।

**सेराबी**—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ भराव। सिंचाई। २ तरी।

**सेराल**¹—सज्ञा पु० [स०] हलका पीलापन।

**सेराल**²—वि० हलका पीला। पीताभ।

**सेराह**—सज्ञा पुं० [स०] दूध के समान सफेद रग का घोडा। दुग्ध वर्ण का अश्व।

**सेरी**Ⓟ¹—सज्ञा स्त्री० [देशी] रथ्या। वीथी। तग गली। उ०—(क) ढोलउ नरवर सेरियाँ धण पूगल गलियाँह।—ढोला०, दू० १८६। (ख) सेरी कबीर साँकडी चचल मनवाँ चोर।—कबीर ग्र०, पृ० २२७।

**सेरी**†²—सज्ञा स्त्री० [सं० श्रेणी, सेणी, सेढि, सेढी, हिं० सीढी] दे० 'सीढी'। उ०—बाह्य लक्ष्य और बहुतेरी। सो जानै जो पावै सेरी।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० १०४।

**सेरी**³—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ तृप्ति। सतोष। २ मन भरना। अघाने का भाव। ३ ऊबने की स्थिति या भाव। ऊब।

**सेरीना**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सेर] अनाज या चारे का वह हिस्सा जो असामी जमीदार को देता है।

**सेरु**—वि० [स०] बाँधनेवाला। जकडनेवाला।

**सेरुआ**¹—सज्ञा पु० [सं० सेर (= एक तौल) + हिं० उवा (प्रत्य०)] वैश्य। (सुनार)।

**सेरुआ**²—सज्ञा पुं० [देशज] दे० 'सेरवा'।

**सेरुराह**—सज्ञा पु० [स०] वह सफेद घोडा जिसके माथे पर दाग हो।

**सेरुवा**—सज्ञा पुं० [स० स्वैर, प्रा० सेर (= स्वतत्र)] १ स्वेच्छाचारी। स्वैराचारी। २ मुजरा सुननेवाला या वेश्यागामी। (वेश्या)।

**सेरू**†—सज्ञा पु० [स० शेलु] लिसोडे का पेडा। लसेडा।

**सेर्ष्य** वि० [स०] १ ईर्ष्यायुक्त। ईर्ष्यालु। डाह करनेवाला। २ ईर्ष्यापूर्वक (को०)।

**सेल**—सज्ञा पुं० [सं० शल्य, प्रा० सेल अथवा देश० सेल्ल] बरछा। भाला। साँग। उ०—(क) बरसहिं बान सेल घनघोरा।—जायसी। (शब्द)। (ख) देखि ज्वालाजाल हाहाकार दसकध सुनि, कह्यो धरो धरो धाए बीर बलवान है। लिए सूल सेल पास परिघ प्रचड दड, भाजन सनीर धीर धरे धनुबान हैं।—तुलसी (शब्द०)।
विशेष—यद्यपि यह शब्द कादबरी मे आया है, तथापि प्राकृत ही जान पडता है, सस्कृत नहीं।

**सेल**²—सज्ञा स्त्री० [देशी० सेल्लि (= रज्जु)] रस्सी। माला। उ०—साँपो की सेल पहने मुडमाल गले में डाले रहने लगे।—लल्लू (शब्द०)।

**सेल**†³—सज्ञा पुं० [देश०] नाव मे पानी उलीचने का काठ का बरतन।

**सेल**⁴—सज्ञा पुं० [सं० सिकता (= एक घास जिसके रेशो से रस्से बनते थे) अथवा देशी सेल्लि (= रज्जु)] १ एक प्रकार का सन का रस्सा जो पहाडो मे पुल बनाने के काम मे आता है। २ हल मे लगी हुई वह नली जिसमे से होकर कूँड मे का बीज जमीन पर गिरता है।

**सेल**⁵—सज्ञा पुं० [अ० शेल] तोप का वह गोला जिसमे गोलियाँ आदि भरी रहती है। (फौज)।
यौ०—सेल का गोला।

**सेलखडी**—सज्ञा स्त्री० [देश० सेटिका] दे० 'सिलखडी', 'खडिया'। उ०—मूर्ति बनाने के लिये सेलखडी लाई जाती थी।—हिंदु० सभ्यता, पृ० १६।

**सेलग**—सज्ञा पुं० [सं०] लुटेरा। डाकू।

**सेलना**†—क्रि० अ० [स० शेल, सेल (= जाना)] मर जाना। चल बसना। जैसे—वह सेल गया। (बाजारू)।

**सेला**¹—सज्ञा पु० [सं० शलक, सा० क (= छिलका, मछली का सेहरा)] १ रेशमी चादर या दुपट्टा। २ साफा। रेशमी सिरोबध। उ०—कोऊ कुद रेजा भूषन नवेजा धरै कोऊ पाग सेला कोऊ सजै साज छैला सो।—गोपाल (शब्द०)।

**सेला**²—सज्ञा पु० [स० शालि] वह धान जो भूसी छाटने के पहले कुछ उबाल लिया गया हो। भुँजिया धान।

**सेलान**Ⓟ—वि० [हिं० सैर (= घूमना), अथवा सं० शैल, प्रा० सेल, सेल्ल] १ घुमक्कड। स्वच्छदी। मनमौजी। २ ठिकाना। टिकान। उ०—आँखो मे दीसै नही, शब्द न पावै जान। मन बुध तहाँ पहुँचै नही, कौन कहै सेलान।—दरिया० बानी, पृ० २२।

**सेलानी**Ⓟ—वि० [हिं० सैलानी] दे० 'सैलानी'। उ०—मन तूँ निपट भयो सेलानी। तै मन सोच नहिं मानी।—राम० धर्म०, पृ० ४३।

**सेलार**Ⓟ¹—सज्ञा पुं० [सं० सेराल (= हलका पीला)] अश्व की एक उत्तम जाति। उ०—मुलताणी थर मन बसी मुहँगा नई सेलार। हिरणाखी हसि नइ कहइ आँगणि हेकि तुखार।—ढोला०, दू० २२३।

**सेलार**²—सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का छदबध या गीत।—रघु० रू०, पृ० १३४।

सेलिया¹—संज्ञा पुं० [देश०] घोडे की एक जाति। उ०—सिरगा समँदा स्याह सेलिया सूर सुरगा। मुसकी पँचकल्यान कुमेदा केहरि रँगा।—सुजान०, पृ० ८।

सेलिया²—संज्ञा स्त्री० [सं०] बिल्ली।

सेलिस—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का सफेद हिरन।

सेलि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेल] छोटा भाला। दे० 'सेली'। उ०—लहलहे जोवन लुहारिनि लुहारी मैं ही सारसी लहलहाति लोहसार सेलि सी। भृकुटी कमान खरी देव दृगन वान भरी जोवन की सान धरी धार विष मेलि सी।—देव (शब्द०)।

सेली¹—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेल + हिं० ई (प्रत्य०)] छोटा भाला। बरछी। उ०—सेलियाँ बाँकियाँ देख अवधूत की जीवत मरै सोइ ठौड पावै।—राम० धर्म०, पृ० ३८३।

सेली²—संज्ञा स्त्री० [सं० शूल, हिं० सूली] दे० 'सूली'। उ०—उठे कवीर करम किया, बरसे फूल अकास। गरीबदास सेली चले, चाँवर करे रैदास।—कबीर ग्र०, पृ० १२१।

सेली³—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेला] १ छोटा दुपट्टा। उ०—मगलदास रहे गुरुभाई। टोपी सेली तेहि पहिराई।—घट०, पृ० १९२। २ गाँती। ३. सूत, ऊन, रेशम या बालो की बद्धी या माला जिसे योगी यती गले मे डालते या सिर मे लपेटते है। उ०—सीस सेली केस, मुद्रा कनक बीरी बीर। विरह भस्म चढाइ बैठी, सहज कथा चीर।—सूर (शब्द०)। ४ स्त्रियो का एक गहना। उ०—मनि इंद्रनील सु पद्मराग कृत सेली भली।—रघुराज (शब्द०)।

सेली⁴—संज्ञा स्त्री० [सं० शल्क (=मछली का सेहरा)] एक प्रकार की मछली।

सेली⁵—संज्ञा स्त्री० [देश०] दक्षिण भारत का एक छोटा पेड जिसकी लकडी कडी और मजबूत होती है और खेती के औजार बनाने के काम मे आती है।

सेलु—संज्ञा पुं० [सं०] १ लिसोडा। श्लेष्मातक। लमेडा। सेरू। २ एक संख्या (बौद्ध)।

सेलून—संज्ञा पुं० [अ०] १ जहाज का प्रधान कमरा। २ बढिया कमरे के समान सजा हुआ रेल का बडा लंबा डब्बा जिसमे अत्यत महत्वपूर्ण व्यक्ति और बडे बडे अफसर सफर करते है। ३ सार्वजनिक आमोद प्रमोद का स्थान। ४ अँगरेजी ढग के बाल बनानेवाले हज्जामो की दुकान। ५ जलपान का स्थान ६ वह स्थान जहाँ अँगरेजी शराब बिकती है। ७ जगह। (लश०)।

सेलो†—संज्ञा पुं० [देश०] सायादार जमीन।

सेल्ल—संज्ञा पुं० [सं० शल्य या शल] दे० 'सेल्ला', 'सेल्हा'।—वर्ण०, पृ० ३।

सेल्ला—संज्ञा पुं० [सं० शल्य या शल] एक प्रकार का अस्त्र। भाला। सेल।



सेल्ह—संज्ञा पुं० [सं० शल्य या शल] दे० 'सेल'। उ०—गोलिन तीरन की झर लाई। मची सेल्ह समसेरन घाई। त्यौं लच्छे रावत प्रभु आगै। सेल्हन मार करी रिस पागै।—लाल कवि (शब्द०)।

सेल्हना†—क्रि० अ० [हिं० सेलना] मर जाना। जीवित न रहना। (बोल०)।

सेल्हरा†—संज्ञा पुं० [सं० शल्क, हिं० सरहना, सेहरा] मछलियो के ऊपर की पर्त। सेहरा। चोई। उ०—सेल्हरो की परो की थी गड्डियाँ।—कुकुर०, पृ० १५७।

सेल्हा¹—संज्ञा पुं० [सं० शालि] एक प्रकार का अगहनी धान जिसका चावल बहुत दिनो तक रह सकता है।

सेल्हा²—संज्ञा पुं० [हिं० सेला] दे० 'सेली'।

सेल्ही—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेला, सेल्हा] १ छोटा दुपट्टा। २ गाँती। ३ रेशम, सूत बाल आदि की बद्धी या माला। उ०—ओझरी की झोरी काँधे, आँतनि की सेल्ही बाँधे, मूँड के कमडल, खपर किए कोरि कै। जोगिनी झुटुग झुड झुड बनी तापसी सी तीर तीर बैठी सो समर सरि खोरि कै।—तुलसी (शब्द०)। दे० 'सेली'³।

सेव—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का ऊँचा पेड जिसकी लकडी कुछ पीलापन या ललाई लिए सफेद रंग की, नरम, चिकनी, चमकीली और मजबूत होती है। कुमार।

विशेष—इसकी आलमारी, मेज, कुरसी और आरायशी चीजें बनती है। बरमा मे इसपर खुदाई का काम अच्छा होता है। इसकी छाल और जड औषध के काम आती है और फल खाया जाता है। इसकी कलम लगती है और बीज भी बोया जाता है। यह वृक्ष पहाडो पर तीन हजार फुट की ऊँचाई तक मिलता है। यह बरमा, आसाम, अवध, बरार और मध्य प्रांत मे बहुत होता है।

सेवँई¹—संज्ञा स्त्री० [सं० सेविका] गुँधे हुए मैदे के सूत के लच्छे जो घी मे तलकर और दूध मे पकाकर खाए जाते है।

सेवँई²—संज्ञा स्त्री० [सं० श्यामक, हिं० सावाँ] एक प्रकार की लंबी घास जिसमे सावे की सी बालें लगती हैं जो चारे के काम मे आती है।

सेवँढी†—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का धान जो उत्तर प्रदेश मे होता है।

सेवत—संज्ञा पुं० [सं० सामन्त] एक राग जो हनुमत के अनुसार मेघ राग का पुत्र है।

सेवँर(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० शिम्बल, हिं० सेमल] दे० 'सेमल'। उ०—राजै कहा सत्य कहु सूआ। बिनु सत जस सेँवँर कर भूआ।—जायसी (शब्द०)।

सेव¹—संज्ञा पुं० [सं० सेविका] सूत या डोरी के रूप मे बेसन का एक पकवान।

विशेष—गुँधे हुए बेसन को छेददार चौकी या झरने मे दबाते हैं जिससे उसके तार से बनकर खौलते घी या तेल की कढ़ाई

मे गिरते और पकते जाते हैं। यह अधिकतर नमकीन होता है। पर गुड मे पागकर मीठे सेव भी बनाते हैं।

**सेव**Ⓤ[२]—संज्ञा स्त्री० [स० सेवा] दे० 'सेवा' उ०—करै जो सेव तुम्हारी सो सेइ भो विष्णु, शिव, ब्रह्म मम रूप सारे।—सूर (शब्द०)।

**सेव**[३]—संज्ञा पु० [स० सेव, सेवि, मि० फा० सेब] दे० 'सेब'। उ०—कहुँ दारव दाडिम सेव कटहल तूत अरु जभीर हैं।—भूषण ग्र०, पृ० १५।

**सेव**[४]—संज्ञा पु० [स०] दे० 'सेवन' (को०)।

**सेवक**[१]—संज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० सेविका, सेवकनी, सेवकिन, सेवकिनी] १ सेवा करनेवाला। खिदमत करनेवाला। भृत्य। परिचारक। नौकर। चाकर। उ०—(क) मन्त्री, भृत्य, सखा मो सेवक याते कहत सुजान।—सूर (शब्द०)। (ख) सिसुपन तें पितु, मातु, बधु, गुरु, सेवक, सचिव सुखाउ। कहत राम विधु बदन रिसौहैं सपनेहु लखेउ न काउ।—तुलसी (शब्द०)। (ग) ब्याहि कै आई है जा दिन सो रवि ता दिन सो लखी छाँह न वाकी। हैं गुरु लोग सुखी रघुनाथ, निहालन है सेवकनी सुखदा की।—रघुनाथ (शब्द०)। (घ) उन्होने क्षीरोद नामक एक सेवकिन से कहवा भेजा।—गदाधरसिंह (शब्द०)। (च) अष्टसिद्धि नवनिद्धि देहुँ मथुरा घर घर को। रमा सेवकिनी देहुँ करि कर जोरै दिन जाम।—सूर (शब्द०)। २ भक्त। आराधक। उपासक। पूजा करनेवाला। जैसे,—देवी का सेवक। उ०—मानिए कहै जो वारिधार पर दवारि औ अँगार वरसाइवो वतावै वारि दिन को। मानिए अनेक विपरीत की प्रतीति, पैन भीति आई मानिए भवानी सेवकन को।—चरणचद्रिका (शब्द०)। ३ व्यवहार करनेवाला। काम मे लानेवाला। इस्तेमाल करनेवाला। जैसे,—मद्यसेवक। ४ पडा रहनेवाला। छोडकर कही न जानेवाला। वास करनेवाला। जैसे,—तीर्थसेवक। ५ सीनेवाला। दरजी। ६ बोरा।

**सेवक**[२]—वि० १ सेवा करनेवाला। समान करनेवाला। २ अभ्यास या अनुगमन करनेवाला। ३ परतत्र। आश्रित (को०)।

**सेवकाई**—संज्ञा स्त्री० [सं० सेवक + आई (प्रत्य०)] सेवक का काम। सेवा। टहल। खिदमत। उ०—(क) करि पूजा सब विधि सेवकाई। गयउ राउ गृह विदा कराई।—तुलसी (शब्द०)। (ख) नाना भाँति करहु सेवकाई। अस कहि अग्र चले जदुराई।—सवलसिंह (शब्द०)।

**सेवकालु**—संज्ञा पुं० [स०] दुग्धपेया नामक पौधा। निशाभग।

**सेवकी**Ⓤ—संज्ञा स्त्री० [स० सेवक + ई (प्रत्य०)] १ सेवावृत्ति। सेवकता। सेवक धर्म। उ०—ताके पास तीन तूँबा, काँधे पर तो खासा कौ, पीछे पीठ पर तो मर्यादी सेवकी कौ, आगे कटि पर वाहिर कौ, या भाँति सो रहै आवें।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ४३। २. दासी। सेविका। टहलुई। उ०—(क) दायज बसन मनि धेनु धन हय गय सुसेवक सेवकी।—तुलसी (शब्द०)। (ख) सेवकी सदा की बारवधू दस बीस आई ए हो रघुनाथ छकी वारुनी अमल सो।—रघुनाथ (शब्द०)।

**सेवग**Ⓤ—संज्ञा पुं० [सं० सेवक] दे० 'सेवक'। उ०—यह विचारि सिव कै मदिर गए और आप एक सेवग कनै राखि सिव को षोडस प्रकार पूजन करयौ।—ह० रासो०, पृ० १६१।

**सेवडा**[१]—संज्ञा पु० [स० श्वेतपट, प्रा० सेअवड, सेवड, अथवा सं० श्वेताम्बर प्रा० सेअवर, सेँवर, सेवरा, सेवडा] १ जैन साधुओ का एक भेद। उ०—श्री शकराचार्य जी ने उस काम कौतुक वाद को इस ढग से समझ के कुवादी सेवडो को वाद मे परास्त किया।—भक्तमाल, पृ० ४६७। २ एक ग्राम देवता।

**सेवडा**[२]—संज्ञा पुं० [हिं० सेव + डा (प्रत्य०)] मैदे का एक प्रकार का मोटा सेव या पकवान जो खस्ता और मुलायम होता है।

**सेवति**Ⓤ‡—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वाति, सेवाति] दे० 'स्वाति' (नक्षत्र)। उ०—शशिहिं चकोर रविहिं अरविंदा। पपिहा को सेवति कर विंदा।—गोपाल (शब्द०)।

**सेवती**—संज्ञा स्त्री० [सं०] गुलाब का एक भेद जिसके फूल सफेद रग के होते है। सफेद गुलाब। चैती गुलाब।

विशेष—वैद्यक मे यह शीतल, तिक्त, कटु लघु ग्राहक, पाचक, वर्णप्रसाधक, त्रिदोषनाशक तथा वीर्यवर्धक कही गई है।

पर्या०—शतपत्री। सेमती। कर्णिका। चारुकेशा। महाकुमारी। ग घाढ्या। लक्षपुष्पा। अतिमजुला।

**सेवधि**—संज्ञा पु० [स०] दे० 'शेवधि'।

**सेवन**[१]—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सेवनीय, सेवित, सेव्य, सेवितव्य] १ परिचर्या। खिदमत। २, उपासना। आराधना। पूजन। ३ प्रयोग। उपयोग। नियमित व्यवहार। इस्तेमाल। जैसे,—सुरासेवन, औषधसेवन। ४ छोडकर न जाना। वास करना। लगातार रहना। जैसे,—तीर्थसेवन, गगा-तट-सेवन। ५ सयोग। उपभोग। जैसे,—स्त्रीसेवन। ६ सीना। गूँथना। ७ बोरा। ८ बाँधने की क्रिया। बाँधना (को०)। ९ दूर दूर पर सीना या टाँके लगाना (को०)।

**सेवन**†[२]—संज्ञा पुं० [हिं० सावाँ] सावाँ की तरह की एक घास जो चारे के काम मे आती है और जिसके महीन दाने बाजरे मे मिलाकर मरुस्थल मे खाए भी जाते हैं। सेवँई। सवँई।

**सेवना**Ⓤ†[१]—क्रि० स० [सं० सेव + हिं० ना (प्रत्य०)] दे० 'सेना'। उ०—हम सेवत वारी वागसर सरिता वापी कूपतट। खोवत हैं यों ही आपु कौ भए निपट ही निघरघट।—ब्रज० ग्र०, पृ० १२५।

**सेवना**[२]—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सेवन' (को०)।

**सेवनी**[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सूई। सूची। सिवनी। २ सीवन। जोड। टाँका। सधिस्थान। ३ शरीर के वे अग जहाँ सीवन सी दिखाई देती हो। (ऐसे स्थान सात हैं पाँच मस्तक मे), एक जीभ मे और लिंग मे एक। ४ जुही। जूही।

**सेवनी**Ⓤ[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० सेविन्, सेविनी] दासी। उ०—निज सेविनी पहिचानि कै वहई अनुग्रह आनिहै। करिहैं पवित्र चरित्र मेरी जीभ अवगुण बानि है।—गुमान (शब्द०)।

सेवनी[3]—संज्ञा पुं० [सं० सेवनिन्] खेत जोतनेवाला। हलवाहा [को०]।

सेवनीय—वि० [सं०] १ सेवा योग्य। २ पूजा के योग्य। ३ व्यवहार करने या रखने योग्य। ४ सीने योग्य।

सेवर[1]—संज्ञा पुं० [सं० शवर] दे० 'शवर'। उ०—हरिजू तिनको दुखित देख। कियो तुरत सेवरि को भेष।—(शब्द०)।

सेवर(पु)[2]—संज्ञा पुं० [सं० शिम्बल] दे० 'सेमल'।

सेवर[3]—वि० [देशी] जो कम पका हुआ हो। जो पूरी तौर से पका हुआ न हो (बोल०)।

सेवरा(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० सेवड़ा] दे० 'सेवड़ा'। उ०—सेवरा, खेवरा, वानपरस्ती, सिध साधक अवधूत। आसन मारे बैठ सब जारि आतमा भूत।—जायसी ग्र० (गुप्त), पृ० ३०।

सेवरी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शवरी] दे० 'शबरी'। उ०—बहुरि कवधहि निरखि प्रभु गीध कीन्ह उद्धार। सेवरी भवन प्रवेश करि पपासरहि निहार।—रामाश्वमेघ (शब्द०)।

सेवल—संज्ञा पुं० [देश०] व्याह की एक रस्म।

विशेष—इसमे वर की कोई सधवा आत्मीया वर के हाथ मे पीतल की एक थाली देती है जिसपर एक दिया रहता है, अनतर उसके दुपट्टे के दोनो छोर पकडकर पहले उस थाली से वर का माथा और फिर अपना माथा छूती है।

सेवांजलि—संज्ञा स्त्री० [सं० सेवाञ्जलि] १ भक्त या सेवक का दोनो हथेलियो के जुडे हुए सपुट मे स्वामी या उपास्य को कुछ अर्पण। २ सेवाभाव को व्यक्त करने की अजलि या सपुट।

सेवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दूसरे को आराम पहुँचाने की क्रिया। खिदमत। टहल। परिचर्या। जैसे—हमारी बीमारी मे इसने बडी सेवा की।

यौ०—सेवा शुश्रूषा। सेवा टहल।

२ दूसरे का काम करना। नौकरी। चाकरी।

विशेष—राज्य की सेवा के अतिरिक्त और प्रकार की सेवावृत्ति अधम कही गई है।

३ आराधना। उपासना। पूजा। जैसे,—ठाकुर जी की सेवा।

मुहा०—सेवा मे=पास। समीप। सामने। जैसे—(क) मैं कल आपकी सेवा मे उपस्थित हूँगा। (ख) मैंने आपकी सेवा मे एक पत्र भेजा था। (आदरार्थ प्राय बडो के लिये)।

४ आश्रय। शरण। जैसे,—आप मुझे अपनी सेवा मे ले लेते तो बहुत अच्छा था। ५. रक्षा। हिफाजत जैसे,—(क) सेवा बिना ये पौधे सूख गए। (ख) वे अपने शरीर की बडी सेवा करते है। उ०—वे अपने वालो की बडी सेवा करती हैं।—महावीरप्रसाद द्विवेदी (शब्द०)। ६ सप्रयोग। सभोग। मैथुन। जैसे,—स्त्रीसेवा। ७ प्रयोग। व्यवहार (को०)। ८. लगाव। आसक्ति (को०)। ९. चापलूसी। चाटु (को०)।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

सेवाकाकु—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेवाकाल मे स्वरपरिवर्तन या आवाज बदलना, (अर्थात् कभी जोर से बोलना, कभी मुलायमियत से, कभी क्रोध से और कभी दुख भाव से)।

सेवाजन—संज्ञा पुं० [सं०] नौकर। सेवक। दास।

सेवाटहल—संज्ञा [सं० सेवा+हिं० टहल] परिचर्या। खिदमत। सेवाशुश्रूषा। उ०—इस प्रकार पिता का उपदेश सुन, वह बडभागिन सप्रेम सेवाटहल दिन रात करने लगी।—भक्तमाल, पृ० ४७०।

क्रि प्र०—करना। होना।

सेवाती—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वाति] दे० 'स्वाति'। उ०—(क) रातुरग जिमि दीपक वाती। नैन लाउ होइ सीप सेवाती।—जायसी (शब्द०)। (ख) नयन लागु तेहि मारग पदुमावति जेहि दीप। जइस सेवातिहि सेवई बन चातक जल सीप।—जायसी (शब्द०)।

सेवादक्ष—वि० [सं०] जो परिचर्या के काम मे कुशल हो [को०]।

सेवाधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] सेवक का धर्म या कर्तव्य।

सेवाधारी—संज्ञा पुं० [सं० सेवा+धारिन्] वह जो किसी मदिर मे ठाकुर जी या मूर्ति की पूजा सेवा करता हो। पुजारी। (साधुओ की परि०)।

सेवापन—संज्ञा पुं० [सं० सेवा+हिं० पन (प्रत्य०)]। दासत्व। सेवावृत्ति। नौकरी। टहल।

सेवाबंदगी—संज्ञा स्त्री० [सं० सेवा, फा० वदगी]। आराधना। पूजा। उ०—यह मसीति यह देवहरा सतगुरु दिया दिखाइ। भीतर सेवाबदगी बाहर काहे जाइ।—दादू (शब्द०)।

सेवाभिरत—वि० [सं०] १. सेवाकार्य मे रत या लीन। २ सेवा मे आनद प्राप्त करने या माननेवाला [को०]।

सेवाभृत्—वि० [सं०] सेवा करता हुआ। सेवाकार्य मे सलग्न [को०]।

सेवाय[1]—वि० [अ० सिवा] अधिक। ज्यादा।

सेवाय[2]—अव्य० दे० 'सिवा', 'सिवाय'।

सेवार—संज्ञा स्त्री० [सं० शैवाल] १ बालो के लच्छो की तरह पानी मे फैलनेवाली एक घास। उ०—(क) संबुक भेक सेवार समाना। इहाँ न विषय कथा रस नाना।—तुलसी (शब्द०)। (ख) राम और जादवन सुभट ताके हते रुधिर की नहर सरिता बहाई। सुभट मनो मकर अरु केस सेवार ज्यो, धनुप त्वच चर्म कूरम बनाई।—सूर (शब्द०)।

विशेष—यह अत्यत निम्न कोटि का उद्भिद् है, जिसमे जड आदि अलग नही होती। यह तृण नदियो और तालो मे होता है और चीनी साफ करने तथा औषध के काम मे आता है। वैद्यक मे सेवार कसैली, कडवी, मधुर, शीतल, हलकी, स्निग्ध, दस्तावर, नमकीन, घाव भरनेवाली तथा त्रिदोषनाशक बताई गई है।

२ मिट्टी की तहँ जो किसी नदी के आसपास जमी हो।

सेवार[2]—संज्ञा पुं० [फा० सेह (=तीन)] पान। (सुनार)।

सेवारा—संज्ञा पुं० [हिं० सेवरा] दे० 'सेवड़ा'।

सेवाल—संज्ञा स्त्री० [सं० शैवाल] दे० 'सेवार'। उ०—दूब वश कुवलय नलिन अनिल व्योम तृणवाल। मरकत मणि हय सूर के नील वर्ण सेवाल।—केशव (शब्द०)।

सेवावलंब—वि० [सं० सेवावलम्ब] सेवा या परिचर्या पर निर्भर रहनेवाला [को०]।

सेवाविलासिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेवा करनेवाली। सेवकिनी। दासी। टहलुई [को०]।

सेवावृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] नौकरी। दासत्व। चाकरी की जीविका।

सेवाव्यवहार—संज्ञा पुं० [सं०] सेवा या परिचर्या का काम [को०]।

सेविंग बैंक—संज्ञा पुं० [अं० सेविंग्स बैंक] वह बैंक जो छोटी छोटी रकमें व्याज पर ले।

विशेष—ऐसे बैंक डाकखानों में भी होते हैं जहाँ गरीब और मध्य वित्त के लोग अपनी बचत के लिये रुपए जमा करते हैं।

सेवि¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ बदर फल। बेर। २ सेव (इस अर्थ में पीछे प्रयुक्त हुआ है)।

सेवि²—संज्ञा पुं० 'सेवी' का वह रूप जो समास में होता है।

सेवि(पु)³—वि० [सं० सेव्य] दे० 'सेव्य', 'सेवित'। उ०—जय जय जगजननि देवि, सुरनर मुनि असुर सेवि, भुक्ति मुक्तिदायिनि दुखहरन कालिका।—तुलसी (शब्द०)।

सेविका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सेवा करनेवाली। दासी। परिचारिका। नौकरानी। २ सेवँई नामक पकवान।

सेवित¹—वि० [सं०] १ जिसकी सेवा टहल की गई हो। वरिवस्यित। उपचरित। २ जिसकी पूजा की गई हो। पूजित। उपासित। आराधित। उ०—जटाजूट रवि कोटि समाना। मुनिगन सेवित ज्ञान निधाना।—गिरिधरदास (शब्द०)। ३ जिसका प्रयोग या व्यवहार किया गया हो। व्यवहृत। ४ आश्रित। ५ युक्त या सपन्न (को०)। ६ उपभोग किया हुआ। उपभुक्त।

सेवित²—संज्ञा पुं० १ बदर फल। बेर। २ सेब।

सेवितमन्मथ—वि० [सं०] प्रेमासक्त। कामुक [को०]।

सेवितव्य—वि० [सं०] १ सेवा के योग्य। उपासना के योग्य। सेवनीय। उपासनीय। २ आश्रय के योग्य। आश्रयणीय। ३ सीने के योग्य। ४ प्रयोग या व्यवहार के योग्य।

सेविता¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सेवक का कर्म। सेवा। दासवृत्ति। चाकरी। २ उपासना। ३—आश्रय। सहारा। शरण।

सेविता²—संज्ञा पुं० [सं० सेवितृ] सेवा करनेवाला। सेवक।

सेविता³—वि० १ अनुगमन अथवा अनुसरण करनेवाला। २ पूजा या आराधना करनेवाला [को०]।

सेवी—वि० [सं० सेविन्] १ सेवा करनेवाला। सेवारत। २ पूजा करनेवाला। आराधना करनेवाला। पूजक। आराधक। ३ संभोग करनेवाला। मैथुन करनेवाला। ३ आदी। व्यसनी (को०)।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग प्राय यौगिक शब्द के अंत में हुआ करता है। जैसे,—साहित्यसेवी, स्वदेशसेवी, चरणसेवी, स्त्रीसेवी।

सेवुम¹—वि० [फा०] तीसरा, तृतीय [को०]।

सेवुम²—संज्ञा पुं० मृतक का तीसरा दिन। तीजा [को०]।

सेव्य—वि० [सं०][वि० स्त्री० सेव्या] १ सेवा के योग्य। जिसकी सेवा करना उचित हो। खिदमत के लायक। जैसे,—गुरु, स्वामी, पिता। उ०—नाते सबै राम के मनियत सुहृद सुसेव्य जहाँ लौं।—तुलसी (शब्द०)। २ जिसकी सेवा करनी हो या जिनकी सेवा की जाय। जैसे,—वे तो हर प्रकार से हमारे सेव्य हैं। ३ पूजा के योग्य। आराधना योग्य। जिसकी पूजा या उपासना कर्तव्य हो। जैसे,—ईश्वर। ४ व्यवहार योग्य। काम में लाने लायक। इस्तेमाल करने लायक। ५ रक्षण करने के योग्य। जिसकी हिफाजत मुनासिब हो। ६ सभोग के योग्य। ७ अध्ययन मनन के योग्य (को०)। ८ सचय करने या रखने के योग्य (को०)।

सेव्य²—संज्ञा पुं० १ स्वामी। मालिक।

यौ०—सेव्यसेवक।

२ खस। उशीर। ३ अश्वत्थ। पीपल का पेड़। ४ हिज्जल वृक्ष। ५ लामज्जक तृण। लामज घास। ६ गौरैया नामक पक्षी। चटक पक्षी। ७ एक प्रकार का मद्य। ८ सुगधवाला। ९ लाल चदन। १० समुद्री नमक। ११. दही का थक्का। १२ जल। पानी।

सेव्यसेवक—संज्ञा पुं० [सं०] स्वामी और सेवक।

यौ०—सेव्य-सेवक-भाव = स्वामी और सेवक के बीच जो भाव होना चाहिए, वह भाव। उपास्य को स्वामी या मालिक के रूप में समझना।

विशेष—भक्ति मार्ग में उपासना जिन जिन भावों से की जाती है, यह उनमें से एक है। इसे सेवक-सेव्य-भाव के रूप में भी प्रयुक्त किया गया है। जैसे,—सेवक-सेव्य-भाव बिनु भव न तरिय उरगारि।—मानस।

सेव्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बदा या बाँदा नामक पौधा जो दूसरे पेड़ों के ऊपर उगता है। बदाक। २ आँवला। आमलकी। ३ एक प्रकार का जगली अनाज या धान।

सेशन—संज्ञा पुं० [अं०] १ न्यायालय, पार्लमेंट, व्यवस्थापिका सभा आदि सस्थाओं का एक बार निरतर कुछ दिनों तक होनेवाला अधिवेशन। लगातार कुछ दिन चलनेवाली बैठक। जैसे,—(क) हाईकोर्ट का सेशन शुरू हो गया। (ख) पार्लमेंट का सेशन अक्टूबर में शुरू होगा।

मुहा०—सेशन सुपुर्द करना = दौरा सुपुर्द करना। (आसामी या मुकदमे को) विचार या फैसले के लिये सेशन जज के पास भेजना, (डाकेजनी, खून आदि के मामले सेशन जज के पास भेजे जाते हैं)। सेशन सुपुर्द होना = दौरा सुपुर्द होना। सेशन जज के पास विचारार्थ भेजा जाना।

२ स्कूल या कालेज की एक साथ निरंतर कुछ दिनों तक होनेवाली पढ़ाई। जैसे,—कालेज का सेशन जुलाई से शुरू होगा। ३ दौरा अदालत।

सेशन कोर्ट—संज्ञा पुं० [अं०] जिले की वह बड़ी अदालत जहाँ जूरी या अफसरों की सहायता से डाकेजनी, खून आदि फौजदारी के बड़े मामलों पर विचार होता है। दौरा अदालत।

सेशन जज—संज्ञा पुं० [अं०] वह जज जो खून आदि के बड़े बड़े मामलों का फैसला करता है। दौरा जज।

सेशुम—वि० [फा०] छठा। उ०—सेशुम रात को शहर देखा अजब। मकानदार वहाँ के है बीमार सब।—दक्खिनी०, पृ० ३०१।

सेश्वर—वि० [सं०] १ ईश्वरयुक्त। २ जिसमे ईश्वर की सत्ता मानी गई हो। जैसे,—न्याय और योग सेश्वर दर्शन हैं।

सेष(पु)[1]—संज्ञा पुं० [सं० शेष] दे० 'शेष'—८। उ०—तपबल सभु करहि सहारा। तपबल शेष धरइ महि भारा।—तुलसी (शब्द०)।

सेष[2]—संज्ञा पुं० [अ० शेख] दे० 'शेख'। उ०—भूला जोगी और सेष औलिया मुनि जन कोटि अठासी।—रामानंद०, पृ० ३५।

सेषु—वि० [सं०] इषुयुक्त। बाणयुक्त [को०]।

सेषुक—वि० [सं०] इषु सहित। बाणयुक्त [को०]।

सेस(पु)[1]—संज्ञा पुं०, वि० [सं० शेष, प्रा० सेस] दे० 'शेष'। उ०—(क) सेस छवीहि न कहि सकै अगम कवीहि सुधीर। स्याम सवीहि विलोकि कै वाम भई तसवीर।—शृंगार सतसई (शब्द०)। (ख) तबहिं सेस रहि जात पार नहिं कोऊ पावत। या सो जग मैं सेस नाम सुर नर मुनि गावत।—गोपाल (शब्द०)।

सेस†[2]—संज्ञा पुं० [सं० शेष (=बचा हुआ)] सीरणी। प्रसाद। उ०—सूफ हमेस बाँटणो सेस।—बाँकी ग्रं०, भा० ३, पृ० ११०।

सेस[3]—संज्ञा पुं० [अं०] कर। टैक्स। जैसे, रोड सेस।

सेसनाग(पु)‡—संज्ञा पुं० [सं० शेषनाग] दे० 'शेषनाग'।

सेसरँग(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शेष+रंग] सफेद रंग। (शेष नाग का रंग श्वेत माना गया है।) उ०—गहि कर केस हमेस परहि दायक कलेस को। बेस सेसरँग बसन तेज मोहत दिनेस को।—गोपाल (शब्द०)।

सेसर—संज्ञा पुं० [फा० सेह (=तीन)+सर (=बाजी)] १ ताश का एक खेल जिसमे तीन ताश हर एक आदमी को बाँटे जाते है और बिंदियों को जोड़कर हारजीत होती है। नौ बिंदी आने पर 'सेसर' होता है। आठवाले को दाँव का दूना और नौवाले को तिगुना मिलता है। २ जालसाजी। ३ जाल। उ०—मदमाती मनोज के आसव सो, अँग जासु मनो रँग केसरि को। सहजै नथ नाक ते खोलि धरी, करचो कौन धो फंद या सेसरि को।—सुंदरीसर्वस्व (शब्द०)।

सेसरिया—वि० [हिं० सेसर+इया (प्रत्य०)] छल कपट करके दूसरो का माल मारनेवाला। जालिया।

सेसी—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बहुत ऊँचा पेड जिसकी लकडी के सामान बनते हे। पगूर।

विशेष—इसकी लकडी भीतर से काली निकलती है। यह आसाम और सिलहट की पूर्वी और दक्षिणपूर्वी पहाडियो मे बहुत होता है। लकडी से कई तरह की सजावट की और कीमती चीजें तैयार की जाती है। इसे आग मे जलाने से बहुत अच्छी गंध निकलती है।

सेह[1]—संज्ञा पुं० [सं० सन्धि, हिं० सेंध] दे० 'सेहा'।

सेह[2]—वि० [फा०] तीन। (हिंदी मे यह शब्द फारसी के कुछ यौगिक शब्दों के साथ ही मिलता है।

सेहखाना—संज्ञा पुं० [फा० सेह (=तीन)+खाना (=घर)] तीन मंजिल का मकान। तिमंजिला मकान।

सेहत—संज्ञा स्त्री० [अ० सेह्हत] १ सुख। चैन। राहत। २ रोग से छुटकारा। रोगमुक्ति। बीमारी से आराम।

क्रि० प्र०—पाना।—मिलना।—होना।

यौ०—सेहतनामा (१) शुद्धिपत्र। (२) स्वास्थ्य का प्रमाणपत्र। सेहतबख्श=स्वास्थ्यप्रद।

सेहतखाना—संज्ञा पुं० [अ० सेहत+फा० खानह्] पेशाब आदि करने और नहाने धोने के लिये जहाज पर बनी एक छोटी सी कोठरी। (लश०)।

सेहथना†—क्रि० स० [सं० सह+हस्त=महस्य+हिं० ना (प्रत्य०)] १ हाथ से लीपकर साफ करना। सैंतना। २ झाड़ना। बुहारना।

सेहर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शेखर, शिखर, प्रा० सेहर, सिहर] १ दे० 'शिखर'। उ०—पथी एक सँदेसडइ, लग ढोलइ पैहच्वाइ। विरह बाघ बनि तनि बसइ, सेहर माजइ आइ।—ढोला०, दू० १२८। २ सेहरा। विजयमुकुट। युद्ध मे जाने के पूर्व सिर मे बँधी हुई पगडी। उ०—लरै सिर सेहर बाँधि सजोर।—ह० रासो, पृ० ६२।

सेहरा—संज्ञा पुं० [सं० शीर्षहार, हिं० सिरहार, सिरहरा] १ फूल की या तार और गोटों की बनी मालाओं की पंक्ति या जाल जो दूल्हे के मौर के नीचे लटकता रहता है। उ०—तीन गुनन के सेहरा दुलह पहिरावहिं हो।—धरम० श०, पृ० ४८। २ विवाह का मुकुट। मौर। उ०—(क) लटकत सिर सेहरो मनो शिखी शिखंड सुभाव।—सूर (शब्द०)। (ख) मानिक सुपन्ना पदिक मोतिन जाल सोहत सेहरा।—रघुराज (शब्द०)।

क्रि० प्र०—पहिराना।—बँधना।—बाँधना।

मुहा०—किसी के सिर सेहरा बँधना=किसी का कृतकार्य होना। औरो से अधिक यश या कीर्ति होना। श्रेय मिलना। सेहरा बँधाई=वह नेग जो दूल्हे को सेहरा बाँधने पर दिया जाता है। सेहरे के फूल खिलना=विवाह की अवस्था को प्राप्त होना। विवाह योग्य होना। सेहरे जलवे की=जो विधिपूर्वक ब्याह कर आई हो। (मुसल०)।

३ वे मांगलिक गीत जो विवाह के अवसर पर वर के यहाँ गाए जाते हैं।

सेहरी—संज्ञा स्त्री० [सं० शफरी] छोटी मछली। सहरी।

सेहवन—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का रोग जो गेहूँ के छोटे छोटे पौधे को होता है।

सेहहजारी—संज्ञा पुं० [फा०] एक उपाधि जो मुसलमान बादशाहों के समय मे सरदारों और दरबारियो को मिलती थी।

विशेष—ऐसे लोग या तो तीन हजार सवार या सैनिक रख सकते थे या तीन हजार सैनिकों के नायक बनाए जाते थे।

सेहा—संज्ञा पुं० [सं० सन्धि, हिं० सेंध] कूआँ खोदनेवाला।

सेहिथान†—संज्ञा पुं० [हिं० सेहथना] वह बुहारी या कूचा जिससे खलिहान साफ किया जाता है।

सेही—संज्ञा स्त्री० [सं० सेधा, सेधी, प्रा० सेह] लोमडी के आकार का एक जंतु जिसकी पीठ पर कडे और नुकीले काँटे होते हैं। साही। खारपुश्त। उ०—सेही सियाल लंगूर बहु कुंड कदम भरि तर रहिय। पिप्पें सु जीव कवि चंद नें तुच्छ नाम चौपद कहिय।—पृ० रा०, ६।६४।

विशेष—क्रुद्ध होने पर यह जंतु काँटों को खडे कर लेता है और इनसे चोट करता है। लंबाई में ये काँटे एक बालिश्त तक होते हैं।

सेहुंड, सेहुंडा—संज्ञा स्त्री० [सं० सेहुण्ड, सेहुण्डा] थूहर। सेहुड।

सेहुँड(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० सेहुण्ड] थूहर का पेड। उ०—छतो नेह कागद हिए भई लखाय न टाँक। विरह तचे उघरचो सु अब सेहुँड को सो आँक।—बिहारी (शब्द०)।

सेहुआँ—संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का चर्मरोग जिसमें शरीर पर भूरी भूरी महीन चित्तियाँ सी पड जाती हैं।

सेहुआन—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का करमकल्ला जिसके बीज से तेल निकलता है।

सेह्न—संज्ञा पुं० [अ०] १ इंद्रजाल। कीमियागरी। २ यंत्र मंत्र। जादू टोना।

यौ०—सेह्नबयान = ललित एवं मुग्ध करनेवाली भाषा का व्यवहार करनेवाला। सेह्नसाज = कीमियागर। जादूगर। सेह्नसाजी = इंद्रजाल। जादूगरी।

सैंदूर—वि० [सं०] सिंदूर से रँगा हुआ। २ सिंदूर के रंग का। सिंदूरी।

सैंदेही(पु)—वि० [सं० सह + देहिन] सदेह। सशरीर। प्रत्यक्ष। उ०—करसी तप्ति मगहर गया कबीर भरोसे राम। सैंदेही साँई मिल्या दादू पूरे काम। दादू० पृ० ३४६।

सैंध(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धि] दे० 'संधि'। उ०—ता पच्छै सामंत नाथ मिलि एक सुवत्तिय। भोरा राइ दिसान सैंध संगपन की कथ्थिय।—पृ० रा०, १२। पृ० ४५५।

सैंधव¹—संज्ञा पुं० [सं० सैन्धव] १ सेंधा नमक। विशेष दे० 'सेंधा'। २ सिंध देश का घोडा। सिंधी घोडा। ३ सिंध के राजा जयद्रथ का नाम। ४ एक प्रदेश का नाम। सिंधु देश (को०)। ५ प्राकृत भाषा में निबद्ध एक प्रकार की गीत संरचना (को०)। ६ सिंध देश का निवासी।

यौ०—सैंधवखिल्य, सैंधवघन = नमक का डला। सैंधवचूर्ण = नमक का चूरा। सैंधव शिला = एक प्रकार का पत्थर जो मुलायम होता है।

सैंधव²—वि० १ सिंध देश में उत्पन्न। २ सिंध देश का। सिंधुदेशीय। ३. समुद्र संबंधी। समुद्रीय। ४ समुद्र में उत्पन्न।

सैंधवक—वि० [सं० सैन्धवक] [वि० स्त्री० सैंधविकी] सैंधव संबंधी।

सैंधवपति—संज्ञा पुं० [सं० सैन्धव (= सिंध निवासी) + पति (= राजा)] सिंधवासियों के राजा, जयद्रथ। उ०—सोमदत्त शशिबिंदु सुवेशा। सैंधवपति अरु शल्य नरेशा।—सबलसिंह (शब्द०)।

सैंधवादिचूर्ण—संज्ञा पुं० [सं० सैन्धवादि चूर्ण] एक अग्निदीपक चूर्ण जिसमें सेंधा नमक, हर्रे, पीपल और चीतामूल बराबर पडता है।

सैंधवायन—संज्ञा पुं० [सं० सैन्धवायन] १ एक ऋषि का नाम। २ उनके वंशज।

सैंधवारण्य—संज्ञा पुं० [सं० सैन्धवारण्य] महाभारत में वर्णित एक वन का नाम।

सैंधवी—संज्ञा स्त्री० [सं० सैन्धवी] संपूर्ण जाति की एक रागिनी।

विशेष—यह भैरव राग की पुत्रवधू मानी गई है। यह दिन के दूसरे पहर की दूसरी घडी में गाई जाती है। इसकी स्वरलिपि इस प्रकार है—धा सा रे म म प प ध ध। सा नि ध ध प प म ग ग ग ग रे सा। धा सा रे म म ग रे ग रे म प ग रे। नि नि ध म प म ग रे। प प म रे ग ग ग रे सा। किसी किसी के मत से यह षाडव है और इसमें रि वर्जित है।

सैंधी—संज्ञा स्त्री० [सं० सैन्धी] एक प्रकार की मदिरा जो खजूर या ताड के रस से बनती है। ताडी।

विशेष—वैद्यक में यह शीतल, कषाय, अम्ल, पित्तदाहनाशक तथा वातवर्धक मानी गई है।

सैंधुक्षित—संज्ञा पुं० [सं० सैन्धुक्षित] एक साम भेद का नाम।

सैंधू—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धू, सैन्धवी] दे० 'सैंधवी'। उ०—करि लावदार दीरघ दवान। गहि सेल साँग हुव सावधान। केतेक धीर सधी कमान। केतेन तेग राखी भुजान। गुन गाइक किय बीरनु बखान। सैंधू सुर पूरिय तिहीं थान।—सूदन (शब्द०)।

सैंपुल—संज्ञा पुं० [अं० सेम्पुल] नमूना। जैसे,—कपडे का सैंपुल।

सैंह¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सैंही] १ सिंह संबंधी। सिंह का। २ सिंह के समान।

सैंह(पु)†²—क्रि० वि० [हिं० सौंह] दे० 'सौंह'¹।

सैंहल—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सैंहली] १ सिंहल द्वीप संबंधी। सिंहल द्वीप का। २ सिंहली। सिंहल में उत्पन्न।

सैंहलक—संज्ञा पुं० [सं०] पीतल [को०]।

सैंहली—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की पीपल। सिंहली पीपल।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यह कटु, उष्ण, दीपन, कोष्ठशोधक, कफ, श्वास और वायुनाशक है।

पर्या०—सर्पदंडा। सर्पाक्षी। उत्कटा। पार्वती। शैलजा। ब्रह्मभूमिजा। लवबीजा। ताम्रा। अद्रिजा। सिंहलस्था। जीवला। लवदंडा। जीवनेत्री। जीवाला। कुरुबी।

सैंहाद्रिक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जाति का नाम।

सैंहिक¹—संज्ञा पुं० [सं०] सिंहिका से उत्पन्न, राहु। सिंहिका का पुत्र। सैंहिकेय।

**सैंहिक¹**—वि॰ सिंह के समान। सिंह तुल्य। सिंह जैसा।

**सैंहिकेय**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ सिंहिका का पुत्र राहु। २ दानवों का एक वर्ग [को॰]।

**सैंगर**—संज्ञा पुं॰ [हिं॰] दे॰ 'सेंगर' ३।

**सैंजल**Ⓤ‡—वि॰ [सं॰ सम + जल] जल के समान। जलयुक्त। जल या पानी के साथ। उ॰—झिरिमिरि झिरिमिरि वरषिया पाँहण ऊपरि मेह। माँटी गलि सैंजल भई पाहण वोही तेह।—कबीर ग्र॰, पृ॰ ५५।

**सैंणर**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ स्वामी + नर, हिं॰ साईंनर, या स॰ स्वजन, प्रा॰ सजण, सयण, पु॰ हिं॰ सैंण + अर (प्रत्य॰)] पति। खाविंद (डिं॰)।

**सैंतना**—क्रि॰ स॰ [सं॰ सञ्चयन या हिं॰ सँचय + ना (प्रत्य॰)] १ संचित करना। एकत्र करना। बटोरना। इकट्ठा करना। उ॰—(क) सोई पुरुष दरब जेइ सैंती। दरबहि तें सुनु बातें एती।—जायसी (शब्द॰)। (ख) कहा होत जल महा प्रलय को राख्यो सैंति सैंति है जेह। भुव पर एक बूँद नहिं पहुँची निझरि गए सब मेह।—सूर (शब्द॰)। २ हाथों से समेटना। इधर उधर से सरकाकर एक जगह करना। बटोरना। उ॰—सखि वचन सुनि कौसिला लखि सुढरपासे ढरनि। लेति भरि भरि अंक, सैंतति पैंत जनु दुहुँ करनि।—तुलसी (शब्द॰)। ३ सहेजना। सँभालकर रखना। सावधानी से अपनी रक्षा में करना। सवाचना। जैसे,—जो रुपया मैंने दिया है, उसे सैंतकर रखना। ४ मार डालना। ठिकाने लगाना। (बाजारू)। ५ घन मारना। चोट लगाना।

**सैंतालिस**—वि॰, संज्ञा पुं॰ [हिं॰] दे॰ 'सैंतालीस'।

**सैंतालीस¹**—वि॰ [सं॰ सप्तचत्वारिंशत्, पा॰ सत्तचत्तालीसति, प्रा॰ सत्तालिस] जो गिनती में चालीस से सात अधिक हो। चालिस और सात।

**सैंतालीस²**—संज्ञा पुं॰ चालिस से सात अधिक की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—४७।

**सैंतालीसवाँ**—वि॰ [हिं॰ सैंतालीस + वाँ (प्रत्य॰)] जो क्रम में छियालिस और वस्तुओं के उपरांत हो। क्रम में जिसका स्थान सैंतालिस पर हो।

**सैंतिस**—वि॰ [स॰ सप्तत्रिंशत्] दे॰ 'सैंतीस'।

**सैंतीस¹**—वि॰ [सं॰ सप्तत्रिंशत्, पा॰ सप्ततिंसति, प्रा॰ सत्तिसइ] जो गिनती में तीस से सात अधिक हो। तीस और सात।

**सैंतीस²**—संज्ञा पुं॰ तीस से सात अधिक का अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—३७।

**सैंतीसवाँ**—वि॰ [हिं॰ सैंतीस + वाँ (प्रत्य॰)] जो क्रम में छत्तीस और वस्तुओं के उपरांत हो। क्रम में जिसका स्थान सैंतीस पर हो।

**सैंथी**Ⓤ†—संज्ञा पुं॰ [स॰ शक्ति] एक प्रकार का शस्त्र। उ॰—इंद्रजीत लीनी जब सैंथी देवन हहा करयो।—सूर॰, ६।१४४।

**सैंपना**†—क्रि॰ स॰ [स॰ समर्पण पु॰ हिं॰ सउँपना, सौंपना] दे॰ 'सौंपना'। उ॰—भारी कठोर हियो करि कै तिय सैंपि विदा मो विदेस के ईछे।—पजनेस॰, पृ॰ ३२।

**सैंबल**Ⓤ†—संज्ञा पुं॰ [सं॰ शिम्बल] दे॰ 'सेमर'। उ॰—विष ताको अमृत करि जानै सो सँग आवै गाय। सैंबल के फूलन परि फूल्यौ चूको अबकी घात।—दादू॰, पृ॰ ६२६।

**सैंयाँ**—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ सैयाँ] दे॰ 'सैयाँ'।

**सैंवर**†—संज्ञा पु॰ [हिं॰] दे॰ 'साँभर'। उ॰—सज्जी मीचर सैंवर सोरा। साँखाहूली सीप सिकोरा।—सूदन (शब्द॰)।

**सैंवार**†—संज्ञा पुं॰ [स॰ शैवाल या पुं॰ शत + वाट्] १ दे॰ 'सेवार।' २ शतधा। टुकड़े टुकड़े। उ॰—कबीर देवल ढहि पड्या ईंट भई सैंवार।—कबीर ग्र॰, १२, पद्य १८।

**सैंहथी**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ शक्ति] दे॰ 'सँथी'।

**सैंहुड़**—संज्ञा पुं॰ [स॰ सेहुण्ड] दे॰ 'सेहुँड'।

**सैंहूँ**—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ गेहूँ का अनु॰] गेहूँ के वे दाने जो छोटे काले और बेकार होते हैं।

**सै**†¹—वि॰, संज्ञा पु॰ [सं॰ शत, प्रा॰ सय, सइ] सौ। उ॰—संवत सोरह सै इकतीसा। करउँ कथा हरिपद धरि सीसा।—तुलसी (शब्द॰)।

**विशेष**—इसका प्रयोग अधिकतर किसी संख्या के आगे होता है।

**सै²**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ सत्व, प्रा॰ सत्त] १ तत्व। सार। माद्दा। २ वीर्य। शक्ति। ओज। उ॰—विनती सो परसन्न सद ती सो प्रसन्न मन। विनसै देखत सबु अहै यह सै जाके तन।—गोपाल (शब्द॰)। ३ बढती। बरकत। लाभ।

**सै**Ⓤ‡³—वि॰ [स॰ सदृश, प्रा॰ सदिस, सइस] समान। तुल्य। उ॰—लखण बतीसे मारुवी निधि चंद्रमा निलाट। काया कूँ कूँ जेहवी कटि केहरि सै घाट।—ढोला॰, दू॰ ४६६।

**सैकट**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ शतकण्टक] बबूल की जाति का एक पेड़ जिसकी छाल सफेद होती है। धौला खैर। कुमतिया।

**विशेष**—यह बंगाल, बिहार, आसाम तथा दक्षिण और मध्यप्रदेश आदि में विंध्य की पहाड़ियों पर होता है।

**सैकड़ा**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ शतकाण्ड, प्रा॰ सयकंड] १. सौ का समूह। शत की समष्टि। जैसे,—२ सैकड़े आम। २ १०६ ढोली पान। (तबोली)।

**सैकड़े**—क्रि॰ वि॰ [हिं॰ सैकड़ा] प्रति सौ के हिसाब से। प्रतिशत। फीसदी। जैसे,—५) सैकड़े ब्याज।

**सैकड़ों**—वि॰ [हिं॰ सैकड़ा] १ कई सौ। २ बहुसंख्यक। गिनती में बहुत। जैसे,—सैकड़ों आदमी।

**सैकत¹**—वि॰ [सं॰] [वि॰ स्त्री॰ सैकती] १ रेतीला। बलुआ। बालुकामय। २ बालू का बना।

**सैकत²**—संज्ञा पुं॰ १ बलुआ किनारा। रेतीला तट। २ तट। किनारा (को॰)। ३. रेतीली मिट्टी। बलुई जमीन। ४ बालू का ढेर

सिकतापुज (को०)। ५ एक ऋषिवश या सप्रदाय जिन्हे वानप्रस्थियो का भेद भी माना गया है।

**सैकतिक¹**—सज्ञा पुं० [सं०] १ साधु। सन्यासी। क्षपणक। २ वह सूत्र या सूत जो मगल के लिये कलाई या गले मे धारण किया जाता है। मगलसूत्र। गडा या रक्षा।

**सैकतिक²**—वि० [स०] [वि० स्त्री० सैकतिकी] १ सैकत सबधी। २ भ्रम या सदेह मे रहनेवाला। सदेहजीवी। भ्रातिजीवी।

**सैकतिनी**—वि० स्त्री० [स०] दे० 'सैकती' [को०]।

**सैकती**—वि० [स० सैकतिन्] [वि० स्त्री० सैकतिनी] सिकतायुक्त। रेतीला। बलुआ (तट या किनारा)।

**सैकतेष्ट**—सज्ञा पु० [स०] आर्द्रक। अदरक (जो बलुई जमीन मे अधिक होता है)।

**सैकयत**—सज्ञा पु० [स०] पाणिनि के अनुसार एक प्राचीन जनपद या जाति का नाम।

**सैकल**—सज्ञा पु० [अ० सैक्ल] १ हथियारो को साफ करने और उनपर सान चढाने का काम। २ सफाई। स्वच्छता। जिला (को०)।

**सैकलगर**—सज्ञा पुं० [अ० सैकल + गर] तलवार, छुरी आदि पर बाढ़ रखनेवाला। सान धरनेवाला। चमक देनेवाला। सिकलीगर।

**सैका‡¹**—सज्ञा पु० [स० सेक (=पात्र)] १ घडे की तरह का मिट्टी का एक बरतन जिससे कोल्हू से गन्ने का रस निकालकर कडाहे मे डाल देते हैं। २ मिट्टी का छोटा बरतन जिससे रेशम रँगने का रग ढाला जाता है। ३ खेत से कटकर आई हुई रबी की फसल का अटाला। राशि।

**सैका²**—सज्ञा पुं० [सं० शतक, प्रा० सय, हिं० सै(=सौ)] १ दस ढोके। २ एक सौ पूले।

**सैकी**(पु)‡—सज्ञा स्त्री० [हिं० सैका] छोटा सैका।

**सैक्य¹**—वि० [स०] १ एकतायुक्त। २ सिंचाई पर निर्भर। ३ सिंचन सबधी। सिंचन के लायक।

**सैक्य²**—सज्ञा पु० सोनपीतल। शोणपित्तल।

**सैक्षव**—वि० [स०] जिसमे चीनी हो। मीठा।

**सैक्सन**—सज्ञा पुं० [अ०] योरप की एक जाति जो पहले जर्मनी के उत्तरी भाग मे रहती थी। फिर पाँचवी और छठी शताब्दी मे इसने इगलैड पर धावा किया और वहाँ बस गई।

**सैजन**—सज्ञा पुं० [हिं० सहिजन] दे० 'सहिजन'।

**सैढा**†—सज्ञा पु० [देश०] गेहूँ की कटी हुई फसल जो दाँई गई हो, पर ओसाई न गई हो।

**सैण**†—सज्ञा पुं० [स० स्वजन, प्रा० सयण] १ मित्र। साजन। प्रिय। उ०—ढोला खिल्यौरी कहइ, सुणे कुढगा वैण। म्हारु म्हाँजी गोठणी, सै मारूदा सैण।—ढोला०, दू० ४३८। २ स्वजन। इष्टमित्र। बधुबाधव। उ०—(क) वातां वैर विसावणा, सैणाँ तोडे नेह।—बाकी० ग्र०, भा० १, पृ० ६६। (ख) ज्यारै थोडी सैण जग, वैरी घणा वसत।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० ६६।

**सैणाचार**†—सज्ञा पु० [सं० सजन + आचार] मैत्री व्यवहार। स्वजनाचरण। मित्रता। उ०—किण मूँ राख केहरी, सैणाचार सनेह।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० २१।

**सैतव**—वि० [सं०] सेतु सबधी।

**सैतवाहिनी**—सज्ञा स्त्री० [स०] बाहुदा नदी का नाम।

**सैत्य**—सज्ञा पुं० [सं०] धवलिमा। श्वेतता। शुफेदी [को०]।

**सैथी**—सज्ञा स्त्री० [स० शक्ति, प्रा० सत्ति अथवा सहस्न, प्रा० सहत्थ, पु० हिं० सैथी, सैहथी] बरछी। साँग। छोटा भाला। उ०—पहर रात भर भई लराई। गोलिन सर सैथिन झर लाई। खाइ घाइ सब खान अघानै। लोह मानि तजि कोह परानै।—लाल कवि (शब्द०)।

**सैद**(पु)‡¹—सज्ञा पु० [अ० सैयद] दे० 'सैयद'। उ०—सुन्यो बहुरि सुरभी वतवाना। शेख सैद अरु मुगल पठाना।—रघुराजसिंह (शब्द०)।

**सैद²**—सज्ञा पु० [अ०] १ शिकार। आखेट। उ०—जुल्फ के हलके मे देखा जब से दाना खाल का। मुर्ग दिल आशिक का तब से सैद है इस जाल का।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० २३। २ शिकार का पशु। वह जानवर जिसका शिकार किया जाय (को०)।

यौ०—सैदगाह = शिकार करने का स्थान। सैदे हरम = जनानखाने का जानवर जिसका शिकार करना वर्जित है।

**सैदपुरी**—सज्ञा स्त्री० [सैदपुर स्थान] एक प्रकार की नाव जिसके आगे पीछे दोनो ओर के सिक्के लबे होते हैं।

**सैदानी**—सज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'सैयदा'।

**सैद्धातिक¹**—सज्ञा पु० [स० सैद्धान्तिक] १ सिद्धात को जाननेवाला। सिद्धातज्ञ। विद्वान्। तत्वज्ञ। २ तात्रिक।

**सैद्धातिक²**—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सैद्धान्तिकी] सिद्धात सबधी। तत्व सबधी।

**सैध्रक**—वि० [सं०] सिध्रक वृक्ष की लकडी का बना हुआ।

**सैध्रिक**—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का वृक्ष।

**सैन¹**—सज्ञा स्त्री० [स० सज्ञपन, प्रा० सण्णवन] १ अपना भाव प्रकट करने के लिये आँख या उँगली आदि से किया हुआ इगित या इशारा। उ०—(क) जदपि चवायनि चीकनी, चलति चहूँ दिस सैन। तदपि न छाँडत दुहुनि के हँसी रसीले नैन।—बिहारी (शब्द०)। (ख) सुनि श्रवण दशवदन दशन अभिमान कर नैन की सैन अगद बुलायो। देखि लकेश कपि भेश दर दर हँस्यो सुन्यो भट कटक को पार पायो।—सूर (शब्द०)। (ग) सीतहि सभय देखि रघुराई। कहा अनुज सन सैन बुझाई।—तुलसी (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना।—देना।—मारना।

२ चिह्न। निशान। सूचक वस्तु। परिचायक लक्षण। उ०—यह श्रमकन नख खतन की सैन जुदी अँग मैन। नील निचोल चितै भए तरुनि चोल रँग नैन।—शृंगार सतसई (शब्द०)।

सैन(पु)‡[1]—संज्ञा पुं० [सं० शयन, प्रा० सयण] दे० 'शयन'। उ०—भटन बिदा करि रैन मुख जाइ कीन्ह गृह सैन।—गोपाल (शब्द०)। (ख) साजि सैन भूषण बसन सबकी नजर बचाय। रही पौढ़ि मिस नींद के दृग दुवार से लाय।—पद्माकर (शब्द०)। (ग) जानि परैगी जात हो रात कहूँ करि सैन। लाल ललौहैं नैन लखि सुनि अनखौहैं बैन।—शृंगार सतसई (शब्द०)।

सैन(पु)‡[3]—संज्ञा स्त्री० [सं० सेना या सैन्य] दे० 'सेना'। उ०—(क) सप्त दीप के कपि दल आए जुरी सैन अति भारी। सीता की सुधि लेन चले कपि ढूँढ़त बिपिन मँझारी।—सूर (शब्द०)। (ख) सजी सैन छवि बरनि न जाई। मनु बिधि करामाति सब आई।—गोपाल (शब्द०)।

सैन(पु)‡[4]—संज्ञा पुं० [सं० श्येन] दे० 'श्येन'। बाज पक्षी। उ०—चल्यो प्रसैन ससैन सैन जिमि अपर खगन पर।—गोपाल (शब्द०)।

सैन[5]—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बगला।

सैनक—संज्ञा पुं० [फा० सनी, सहनक] थाली। रिकाबी। तश्तरी।

सैनपति(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सेनापति] दे० 'सेनापति'। उ०—चहूँ सैनपतीनु बुलाइ लिए। तिन सौं यह आइसु आपु दिए।—सूदन (शब्द०)।

सैनभोग(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शयन + भोग] शयन के समय का भोग। रात्रि का नैवेद्य जो मंदिरों में चढ़ता है। उ०—भए दिन तीनि ये तौ भूख के अधीन नहिं, रहे हरि लीन प्रभु शोच परे उभारिए। दियो सैनभोग आप लक्ष्मी जू लै पधारी, हाटक की थारी झनझन पाँव धारिए।—भक्तमाल (शब्द०)।

सैना(पु)‡[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सैन्य] दे० सेना'। उ०—मीत नीत की चाल ये चल जानतहू रैन। छवि सैना सजि धावहीं अबलन पै तुव नैन।—रसनिधि (शब्द०)।

सैना(पु)[2]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सैन] संकेत। इशारा।

सैना[3]—संज्ञा पुं० [अ०] एक पर्वत जो शाम में है। कहते हैं, इसी पर हजरत मूसा को ईश्वरदर्शन हुआ था [को०]।

सैनानिक—वि० [सं०] सेना के अग्रभाग का।

सैनानीक—वि० [सं०] दे० सैनानिक'।

सैनान्य—संज्ञा पुं० [सं०] सेनानी या सेनापति का कार्य। सैनापत्य। सेनापतित्व।

सैनापति(पु)‡—संज्ञा पुं० [सं० सैन्यपति] दे० 'सेनापति'।

सैनापत्य[1]—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति का पद या कार्य। सेनापतित्व।

सैनापत्य[2]—वि० सेनापति संबंधी।

सैनिक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ सेना या फौज का आदमी। सिपाही। लश्करी। तिलंगा। २ सैन्यरक्षक। प्रहरी। संतरी। ३ समवेत सेना का भाग। व्यूहबद्ध दल। ४ वह जो किसी प्राणी का वध करने के लिये नियुक्त किया गया हो। ५ शंबर के एक पुत्र का नाम।

सैनिक[2]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सैनिकी] सेना संबंधी। सेना का।

यौ०—सैनिकवाद। सैनिकवादी। सैनिकीकरण = किसी राष्ट्र की पूरी आबादी को युद्ध करनेवाली सेना के रूप में संयोजित करना या सबल बनाना। समर्थ जनसाधारण को सैनिक प्रशिक्षण देने का कार्य। उ०—मार्च, १९३४ में हिटलर ने सैनिकीकरण का कार्य कर दिया।—आ० अ० रा०, पृ० १९।

सैनिकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सेना या सैनिक का कार्य। सैनिकों का जीवन। २ युद्ध। लड़ाई भिड़ाई।

सैनिकवाद—संज्ञा पुं० [सं० सैनिक + वाद] दे० सामरिकवाद'।

सैनिका—संज्ञा स्त्री० [सं० श्येनिका] एक छंद का नाम। यथा—सो सुजाननंद सोचि वा घरी। आइयो अजेस पास ता घरी। सीख माँगि श्री अजेस सों तबै। दै निसान कूँच कै चमू सबै।—सूदन (शब्द)।

सैनिटरी—वि० [अं०] सार्वजनिक स्वास्थ्य, शुद्धता, रक्षा और उन्नति से संबंध रखनेवाला। जैसे—सैनिटरी डिपार्टमेंट, सैनिटरी कमिश्नर।

सैनिटेरियम—संज्ञा पुं० [अं०] दे० 'सैनेटोरियम'।

सैनिटेशन—संज्ञा पुं० [अं०] स्वास्थ्यरक्षा संबंधी विज्ञान [को०]।

सैनी(पु)[1]—संज्ञा पुं० [सं०√ष्णा शौचे ? अथवा हिं० सेना भगत (जो जाति के नाई थे)] नाई। हजाम। उ०—दरशन हूँ नाशै यम सैनिक जिमि नह बालक सैनी। एकै नाम लेत सब भाजै पीर सुभूमि रसैनी।—सूर (शब्द०)।

सैनी(पु)‡[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० सेना] दे० 'सेना'। उ०—जानि कठिन कलिकाल कुटिल नृप संग सजी अघ सैनी। जनु ता लगि तरवार त्रिविक्रम धरि करि कोप उपैनी।—सूर (शब्द)।

सैनी(पु)[3]—संज्ञा स्त्री० [सं० शयनीया (= शय्या)] शय्या। सेज। उ०—नंददास प्रभु को नेह देखि हाँसी आवै, वे बैठे री रचि रचि सैनी।—नंद० ग्रं०, पृ० ३६८।

सैनी(पु)[4]—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रेणी] श्रेणी। पंक्ति। कतार। उ०—आगे चलि पुनि अवलोकी नवपल्लव सैनी। जहँ पिय सुसुम कुसुम लै सुकर गुही है बैनी।—नंद० ग्रं०, पृ० १९।

सैनी†[5]—संज्ञा पुं० [सं० सेना ?] एक सैनिक जाति। एक युद्धक जाति जो अपने को शूरसेन से संबंधित बतलाती है।

सैनू—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बूटेदार कपड़ा। नैनू।

सैनेटोरियम—संज्ञा पुं० [अं०] वह स्थान जहाँ लोग स्वास्थ्यसुधार के लिये जाकर रहते हैं। स्वास्थ्यनिवास।

सैनेय(पु)—वि० [सं० सेना + इय (प्रत्य०)] सेना के योग्य। लड़ने के योग्य। उ०—कृतवेय नृप चल्यो श्रेय गुनि बल अमेय तन। संग अजेय सैनेय सैन पर प्रान तेय रन।—गोपाल (शब्द०)।

सैनेश—संज्ञा पुं० [सं० सैन्य + ईश > सैन्येश] सेनापति। उ०—हँसि बोले सैनेशकुमारा। कहिए नाथ सहित बिस्तारा।—सबलसिंह (शब्द०)।

सैनेस(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सैन्येश, प्रा० सैनेस] दे० 'सैनेश'।

सैन्य[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ सैनिक। सिपाही। २. सेना। फौज। ३ सेनादल। पलटन। ४ प्रहरी। संतरी। ५ शिविर। छावनी।

सैन्य२—वि० सेना संबंधी। फौज का। फौजी।

सैन्यकक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] सेना का पार्श्व भाग। दे० 'सेनाकक्ष'।

सैन्यक्षोभ—संज्ञा पुं० [सं०] सेना का विद्रोह। फौज की बगावत।

सैन्यघातक—वि० [सं०] सेना का विनाश करनेवाला [को०]।

सैन्यघातकर—वि० [सं०] दे० 'सैन्यघातक'।

सैन्यनायक—संज्ञा सं० [सं०] सेना का अध्यक्ष। सेनापति।

सैन्यनिवेशभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ सेना पड़ाव डाले। शिविर। पड़ाव। छावनी।

सैन्यपति—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति।

सैन्यपाल—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति।

सैन्यपृष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] फौज का पिछला हिस्सा। सेना का पश्चात् भाग। प्रतिग्रह। परिग्रह। चदावल।

सैन्यमुख—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सेनामुख'।

सैन्यवास—संज्ञा पुं० [सं०] पड़ाव। छावनी।

सैन्यशिर—संज्ञा पुं० [सं० सैन्यशिरस्] सेना का अग्रभाग।

सैन्यसज्जा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेना की तैयारी [को०]।

सैन्यहंता—संज्ञा पुं० [सं० सैन्यहन्तृ] शबर के एक पुत्र का नाम [को०]।

सैन्याधिपति—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति।

सैन्याध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति।

सैन्योपवेशन—संज्ञा पुं० [सं०] सेना का पड़ाव।

सैफ—संज्ञा स्त्री० [अ० सैफ] तलवार। उ०—(क) यो छवि पावत हैं लखौ अंजन आँजे नैन। सरस बाढ सैफन धरी जनु सिकलीगर मैन।—रसनिधि (शब्द०)। (ख) कोउ कहीत भामिनि भ्रुकुटि विकट विलोकि श्रवण समीप लौं। ये साफ सैफ करै कतल नहिं छमै जानि तिय सजनी पलौ।—रघुराज (शब्द०)।

यौ०—सैफ जबान = वह जिसकी जबान सत्य हो। जिसकी वाणी या कथन पुर असर हो। सैफवान = तलवार लटकानेवाला परतला।

सैफग—संज्ञा पुं० [सं० शतफल ?] लाल देवदार।

विशेष—इसका सुंदर पेड़ चटगाँव से सिक्किम तक और कोकण तथा दक्षिण से मैसूर, मालाबार और लंका तक के जंगलों में पाया जाता है। इसकी लकड़ी पीलापन लिए भूरे रंग की होती है और मेज, कुरसी, बाजों के संदूक आदि बनाने के काम आती है।

सैफा—संज्ञा पुं० [अ० सैफह्] जिल्दसाजों का वह औजार जिससे वे किताबों का हाशिया काटते हैं।

सैफी१—वि० [अ० सैफ (= तलवार)] तिरछा। तिर्यक्। उ०—नेहनि उर आवत लखौ जबही धीरज सैन। सैफी हेरन में पटे कैफी तेरे नैन।—रसनिधि (शब्द०)।

सैफी२—संज्ञा स्त्री० [अ० सैफी] १ माला। सबीह। २ एक अभिचार। मारण का एक प्रयोग [को०]।

सैमंतिक—संज्ञा पुं० [सं० सैमन्तिक] सिंदूर। सेंदुर।

विशेष—सधवा स्त्रियों के सीमंत अर्थात् माँग में लगाने के कारण सिंदूर का यह नाम पड़ा।

सैम—संज्ञा पुं० [देश०] धीवरों के एक देवता या भूत।

सैयद—संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० सैयदा, सैयदानी, सैदानी] १. मुहम्मद साहब के नाती हुसैन के वंश का आदमी। २ मुसलमानों के चार वर्गों या जातियों में दूसरी जाति। उ०—सैयद असरफ पीर पियारा। जेइ मोहि दीन्ह पथ उजियारा।—जायसी (शब्द०)।

सैयदा, सैयदानी—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ सैयद वर्ग या जाति की स्त्री। २ सैयद की पत्नी। सैदानी [को०]।

सैयाँ(पु)‡—संज्ञा पुं० [सं० स्वामी, हिं० साईं, या सं० स्वजन, प्रा० सयण] स्वामी। पति। उ०—(क) सैयाँ भये तिलंगवा बहुअरि चली नहाय।—गिरिधर (शब्द)। (ख) अपने सैयाँ बाँधी पाट। लै रे बेचौ हाट हाट।—कबीर (शब्द०)।

सैया(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शय्या] दे० 'शय्या'। उ०—सैया असन बसन सुभ्र होई। कल्पवृक्ष नामक तरु सोई।—गोपाल (शब्द०)।

सैयाद—संज्ञा पुं० [अ०] १ व्याध। बहेलिया। शिकारी। २ मछुआ। मल्लाह। उ०—यक लोक यक वेद दो दरिया के किनारे। सैयाद के काबू में हैं सब जीव बेचारे।—कबीर मं०, पृ० १५०।

सैयार१—वि० [अ०] घूमनेवाला। भ्रमण करनेवाला [को०]।

सैयार२—संज्ञा पुं० ग्रह। नक्षत्र। तारक [को०]।

सैयारा—संज्ञा पुं० [अ० सैयारह्] वह ग्रह जो सूर्य की परिक्रमा करे। नक्षत्र। तारक [को०]।

सैयाल—वि० [अ०] जो ठोस न हो। द्रव। तरल। जैसे—जल, तैल आदि पदार्थ [को०]।

सैयाह—संज्ञा पुं० [अ०] पर्यटक या घुमतू व्यक्ति।

सैयाही—संज्ञा स्त्री० [अ०] घूमना। फिरना। सैरसपाटा करना। पर्यटन [को०]।

सैरंध्र—संज्ञा पुं० [सं० सैरन्ध्र] [स्त्री० सैरन्ध्री] १ गृहदास। घर का नौकर। २. एक संकर जाति जो स्मृतियों में दस्यु और अयोगवी से उत्पन्न कही गई है।

सैरंध्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सैरन्ध्रिका] परिचारिका। दासी।

सैरंध्री—संज्ञा स्त्री० [सं० सैरन्ध्री] १ सैरंध्र नामक संकर जाति की स्त्री। २ अंतःपुर या जनाने में रहनेवाली दासी। अंतःपुर की परिचारिका। महल्लिका। ३ वह कारीगर स्त्री जो दूसरों के घरों में काम करे। स्वतंत्र शिल्पजीवनी। ४. द्रौपदी का एक नाम।

विशेष—जब पाँचों पांडवों ने छद्मवेश में मत्स्य देश के राजा विराट् के यहाँ सेवावृत्ति स्वीकार कर ली थी, तब द्रौपदी ने भी उनके साथ एक वर्ष तक 'सैरंध्री' का काम किया था। इसी से द्रौपदी का नाम सैरंध्री पड़ा।

**सैर¹**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १ मन बहलाव के लिये घूमना फिरना। मनोरंजन या वायुसेवन के लिये भ्रमण। उ०—शहर की सैर करते हुए राजा के महलों के नीचे आए। —लल्लू (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना। होना।

२ बहार। मौज। आनंद। ३ मित्रमंडली का कहीं बगीचे में खानपान और नाचरंग। ४ किसी पुस्तक का मनोरंजन की दृष्टि से अध्ययन वा अवलोकन (लाक्ष०)। ५ घूमना फिरना। पर्यटन। चंक्रमण। भ्रमण (को०)। ६ मनोरंजक दृश्य, कौतुक। तमाशा। उ०—मम बधु को तैं हने शक्ति, विशेष लेहौ बैर। तव पुत्र, पौत्र सँहारि मैं दिखराय हौं रन सैर। —रघुराज (शब्द०)।

यौ०—सैरसपाटा = मन बहलाव के लिये घूमना, फिरना।

**सैर²**—वि० [स०] सीर या हल संबंधी।

**सैर³**—संज्ञा पुं० कार्तिक का महीना [को०]।

**सैरगाह**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १ सैर करने की जगह या स्थान। २ एक प्रकार का कंदील जिसमें कागजी चित्रों की चलती फिरती छाया दिखाई पड़ती है।

**सैरबीन**—संज्ञा पुं० [अ० सैर (= तमाशा) + फ़ा० बीन (= जिससे देखने में मदद मिले)] १ देखना भालना। निरीक्षण। २ एक प्रकार का दो तालों से युक्त यंत्र जिसे आँखों से लगाकर चित्र देखे जाते हैं। उ०—जिस तरह आप और अनेक कौतुक देखते हैं, कृपापूर्वक इस प्रजा के चित्तरूपी आतशी शीशे से (क्योंकि वह आपके वियोग और अपनी दुर्दशा से संतप्त हो रहा है), बनी हुई सैरबीन की भी सैर कीजिए।—भारतेंदु ग्रं०, भा० ३, पृ० ७२२।

**सैरिंध्र¹**—संज्ञा पुं० [सं० सैरिन्ध्र] बृहत्संहिता में वर्णित एक प्राचीन जनपद का नाम।

**सैरिंध्र²**—संज्ञा पुं० दे० 'सैरंध्र'।

**सैरिंध्री**—संज्ञा स्त्री० [सं० सैरिन्ध्री] दे० 'सैरन्ध्री'।

**सैरि**—संज्ञा पुं० [सं०] १ कार्तिक महीना। २ बृहत्संहिता के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम।

**सैरिक¹**—संज्ञा पुं० [सं०] १ हलवाहा। हलधर। किसान। कृषक। २ हल में जुतनेवाला बैल। ३ आकाश।

**सैरिक²**—वि० सीर संबंधी। हल संबंधी।

**सैरिभ**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सैरिभी] १ भैंसा। महिष। २ स्वर्ग। ३ आकाश। व्योम।

**सैरिभी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] भैंस। महिषी।

**सैरिष्ठ**—संज्ञा पुं० [सं०] मार्कंडेय पुराण में वर्णित एक प्राचीन जनपद का नाम।

**सैरीय**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सफेद कटसरैया। श्वेत झिंटी। २ नीली कटसरैया। नील झिंटी।

**सैरीयक**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सैरीय'।

**सैरेय**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सफेद फूलवाली कटसरैया। श्वेत झिंटी। २ दे० 'सैरीय'।

**सैरेयक**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सैरेय'।

**सैर्य**—संज्ञा पुं० [सं०] अश्ववाल नामक तृण।

**सैल(पु)‡¹**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सैर] दे० 'सैर'। उ०—(क) गोप अथाइन तें उठे गोरज छाई गैल। चलि बलि अलि अभिसार की भली सँझोखी सैल।—बिहारी (शब्द०)। (ख) मोहि मधुर मुसकान सों सबै गाँव के छैल। सकल शैल वनकुंज में तरुनि सुरति की सैल।—मतिराम (शब्द०)।

**सैल²**—संज्ञा पुं० [सं० शैल, प्रा० सैल] पर्वत। दे० 'शैल'।

**सैल³**—संज्ञा स्त्री० [सं० शल्य] दे० 'सेल'।

**सैल⁴**—संज्ञा स्त्री० [अ० सैल, फ़ा० सैलाव] १ बाढ़। जलप्लावन। २ स्रोत। बहाव।

**सैलकुमारी**—संज्ञा स्त्री० [सं० शैलकुमारी] पार्वती। दे० 'शैलकुमारी'।

**सैलग**—संज्ञा पुं० [सं०] लुटेरा। डाकू।

**सैलजा(पु)**—संज्ञा स्त्री० [सं० शैलजा] दे० 'शैलजा'। उ०—जाइ बियाहहु सैलजहि यहि मोहि मागें देहु।—मानस, १।७६।

**सैलतनया(पु)**—संज्ञा स्त्री० [सं० शैलतनया] पार्वती। शैलजा।

**सैलवेशन आर्मी**—संज्ञा स्त्री० [अ०] यूरोपियन समाजसेवकों का एक संघटन जिसका उद्देश्य जनता की धार्मिक और सामाजिक उन्नति करना है। मुक्ति फौज।

विशेष—इस संघटन के कार्यकर्ता फौज के ढंग पर जेनरल, मेजर, कप्तान आदि कहलाते हैं। ये लोग गेरुआ साफा, गेरुआ धोती और लाल रंग का कोट पहनते हैं। ईसाई होने के कारण ये लोग ईसाई मजहब का ही प्रचार करते हैं। इनका प्रधान कार्यालय इंगलैंड में है और शाखाएँ प्रायः समस्त संसार में फैली हुई हैं।

**सैलसुता(पु)**—संज्ञा स्त्री० [सं० शैलसुता] दे० 'शैलसुता'।

**सैला¹**—संज्ञा स्त्री० [सं० शल्य] [स्त्री० अल्पा० सैली] १ लकड़ी की गुल्ली या गच्चड़ जो किसी छेद या संधि में ठोंका जाय। किसी छेद में डालने या फँसाने का टुकड़ा। मेख। २ लकड़ी का छोटा डंडा या मेख। ३ लकड़ी का छोटा डंडा या मेख जो हल के जूए के दोनों सिरों के छेदों में इसलिये डालते हैं जिसमें जूआ बैलों के गले में फँसा रहे। ४ नाव की पतवार की मुठिया। ५ वह मुँगरी जिससे कटी हुई फसल के डंठल दाना झाड़ने के लिये पीटते हैं।

**सैला²**—संज्ञा पुं० [सं० शाकल, प्रा० सागल] [स्त्री० अल्पा० सैली] चीरा हुआ टुकड़ा। चैला। जैसे,—लकड़ी का सैला।

**सैलात्मजा(पु)**—संज्ञा स्त्री० [सं० शैलात्मजा] पार्वती।

**सैलानी**—वि० [फ़ा० सैर, हिं० सैल] १ जिसे सैर करने में आनंद आवे। सैर करनेवाला। मनमाना घूमनेवाला। २ आनंदी। मनमौजी।

**सैलाव**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] बाढ़। जलप्लावन।

सैलावा—संज्ञा पुं० [फा० सैलाव] वह फसल जो पानी मे डूब गई है।

सैलावी¹—वि० [फ़ा०] जो बाढ आने पर डूब जाता हो। बाढवाला। जैसे,—सैलावी जमीन।

सैलावी² संज्ञा स्त्री० १ तरी। सील। सीड। २ बाढ के समय डूब जानेवाली भूमि।

सैलि—संज्ञा पुं० [सं०] बृहत्संहिता के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम।

सैली¹—संज्ञा स्त्री० [हिं० सैला] १ छोटा सैला। २ ढाक की जड के रेशो की बनी रस्सी।

सैली²—संज्ञा स्त्री० [देश०] वह टोकरी जिसमे किसान तिन्नी का चावल इकट्ठा करते है।

सैली(पु)³—संज्ञा स्त्री० [सं० शैली] परिपाटी। ढग। चाल। परपरा। दे० 'शैली'। उ०—यो कवि भूषन भाखत हैं यक तो पहिले कलिकाल की सैली।—भूषण ग्रं०, पृ० ६६।

सैली(पु)†⁴—संज्ञा स्त्री० [हिं० सहेली] दे० 'सहेली'। उ०—सैली मेरी गोद ममोला। दिल मेरा बाँई लिया माँ।—दक्खिनी०, पृ० ३६०।

सैलूख(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शैलूष] १ बेल का वृक्ष। २ बिल्वफल। दे० 'शैलूष'।

सैलूष(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शैलूष] १ नट। अभिनेता। २ धूर्त। ३ बेल का वृक्ष या फल। उ०—नहिं दाडिम सैलूप यह सुक न भूलि भ्रम लागि।—दीन० ग्रं०, पृ० १०२। दे० 'शैलूप'।

सैव(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० शैव] दे० 'शैव'। उ०—माधौदास के माता पिता सैव बहिर्मुख हते।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १६५।

सैवल(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शैवल] दे० 'शैवाल'। उ०—नाभि सरसि त्रिवली निसेनिका रोमराजि सैवल छवि पावति।—तुलसी (शब्द०)।

सैवलिनी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शैवलिनी] दे० 'शैवलिनी'।

सैवाल(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शैवाल] दे० 'शैवाल'। उ०—कहुँ सैवालन मध्य कुमुदिनी लगि रहि पाँतिन।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० ४५५।

सैवी(पु)†—वि० [सं० शैविन् > शैवी] शैव मतानुयायी। उ०—घर मे मा बाप सैवी हैं।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १६४।

सैवुम—वि० [फा०] तीसरा। तृतीय [को०]।

सैव्य(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शैव्य] दे० 'शैव्य'।

सैसगी(पु)—वि० [सं० सत्सङ्गिन्] सत्सग करनेवाला। साथी। सतसगी। उ०—प्रेम के साथ लगे सैसगी।—इंद्रा०, पृ० १६८।

सैस—वि० [सं०] १ सीसे का बना हुआ। २ सीसा सबधी।

सैसक—वि० [सं०] [स्त्री० सैसकी] दे० 'सैस'।

सैसव(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शैशव] दे० 'शैशव'। उ०—पत्त पुरातन झरिग पत्त अकुरिय उट्ठ तुछ। ज्यी सैसव उत्तरिय चढिय वैसव किसोर कुछ।—पृ० रा०, २५।६६।

सैसवता(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सैसव + ता (प्रत्य०)] दे० 'शैशव'। उ०—सैसवता मे हे सखी जोवन कियो प्रवेस। कहीं कहीं छवि रूप की नखशिख अग सुदेस।—(शब्द०)।

सैसाजल(पु)‡—संज्ञा पुं० [सं० शेष] लक्ष्मण। उ०—सैसाजल हनुमत जिमि ही सरसाई। वीराँ अवरोधी कीधी वडाई।—रघु० रू०, पृ० २४४।

सैसिकत—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत मे वर्णित एक प्राचीन जनपद।

सैसिराध्र—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सैसिकत'।

सैह—वि० [फा०] तीन।

सैहचरी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० सहचरी] दे० 'सहचरी'। उ०—कहि उपदेस सैहचरी मोसों, कहाँ जाउ कहाँ पाऊँ।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० २३६।

सैहज(पु)†—वि० [सं० सहज] दे० 'सहज'। उ०—सैहज सिंघासन बैठे स्वामी, आगे सेव करै गुलामी।—रामानद०, पृ० ५३।

सैहजानद(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० सहज + आनन्द] दे० 'सहजानद'। उ०—ब्रह्मानद ममता टरी सदगुरु सैहजानद सो।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ४२६।

सैहत(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० सहित] दे० 'सहित'। उ०—सील भाव छम्या उर धारै। धीरज सैहत दया व्रत पारै।—रामानद०, पृ० ५३।

सैहथी—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति, प्रा० सत्ति अथवा सं० सहस्त, प्रा० सहत्थ] शक्ति। बरछी। साँग। उ०—(क) ब्रह्ममत्र पढ़ि सैहथी रावण कर चमकाय। काल जलद मे बीजुरी जनु प्रगटी है आय।—हनुमन्नाटक (शब्द०)। (ख) कह्यो लकपति मारो तोही। दीन्ही कपट सैहथी मोहीं।—हनुमन्नाटक (शब्द०)। (ग) आपुस माँझ इसारत कीनी। कर उलछारि सैहथी लीनी।—लाल कवि (शब्द०)।

सैहा†—संज्ञा पुं० [सं० सेक या सेचन (= सिंचाई) + हिं० हा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० सैही] पानी, रस आदि ढालने का मिट्टी का बरतन।

सैही†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सैहा] छोटा सैहा।

सैहैर‡—संज्ञा पुं० [फा० शहर] दे० शहर। उ०—दिसि पस्चम गुरजर सुघर, सैहैर अहमदावाद।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ४२१।

सों(पु)‡¹—प्रत्य० [प्रा० सुन्तो] करण और अपादान कारक का चिह्न। द्वारा। उ०—(क) विद्यापति मन उगना सों काज नहिं हितकर मोर त्रिभुवन राज।—विद्यापति, पृ०, ५१४। (ख) बार बार करतल कहँ मलिके। निज कर पीठ रदन सों दलिकै।—गोपाल (शब्द०)। (ग) गिरत सिंदूर मतवारिन की माँगनि सों, चहुँ ओर फैलि रही जासु अरुनाई है।—बालमुकुद गुप्त (शब्द०)।

सों(पु)‡²—वि० [सं० सम] तुल्य। समान। दे० 'सा'। उ०—तीर सों धीर समीर लगे पद्माकर बूझि हू बोलत नाही।—पद्माकर (शब्द०)।

सों(पु)³—अव्य० [हिं० सौंह] दे० 'सौं'। उ०—मथुरा मैं भैम बढे राम। श्याम बल पाय, मारचो कंस राय करे करम अलीके सों। तौ

को वैर लैहों मारि मवून नसैहों महि, जामे फरै पापिन के मुख फेरि फीके सो। घनी घरनी के नीके ग्रापुनी ग्रनी के सग ग्रावै जर जी के मोन जी के गरजी के सो।—गोपाल (शब्द०)।

**सौं**(पु)[२]—क्रि० वि० [स० सह] सग। साथ। उ०—मन हरि सों तनु घर हि चलावति। ज्यों गजमत्त जाल ग्रकुश कर गुरुजन सुधि ग्रावति।—सूर (शब्द०)।

**सौं**(पु)[३]—सर्व० [सं० स] दे० 'सो'। उ०—राज समाज खवर सों वरनी। ग्रागे नृपदल सों भरि भरनी।—गोपाल (शब्द०)।

**सौं**(पु)[४]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सौंह] दे० 'सौंह'। उ०—वात सुने ते वहुत हँसोगे चरण कमल की सों। मेरी देह छुटत यम पठए जितक दूत घर मों।—सूर (शब्द०)।

**सौंइटा**‡—संज्ञा पुं० [हिं० सटना ?] चिमटा। दस्तपनाह।

**सौंच**—सज्ञा पुं० [हिं० सोच] दे० 'सोच'। उ०—' इधर उधर से सोंच सांच कही से जवाव के वदले कुछ कह देना।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २४।

**सौंचर नमक**—सज्ञा पुं० [स० सौवर्चल + फा० नमक] एक प्रकार का नमक। काला नमक।

**विशेष**—यह मामूली नमक तथा हड, वहेडे ग्रौर सज्जी के संयोग मे वनाया जाता है। वैद्यक मे यह उष्णवीर्य, कटु, रोचक, भेदक, दीपक, पाचक, स्नेहयुक्त, वातनाशक, ग्रत्यत पित्तजनक, विशद हलका, डकार को शुद्ध करनेवाला, सूक्ष्म तथा विवध, ग्रानाह तथा शूल का नाश करनेवाला माना गया है।

पर्या०—ग्रक्ष। सौवर्चल। रुच्य। दुर्गंध। शूलनाशन। रुचक। कृष्णलवण, ग्रादि।

**सौंज**†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सौंज] दे० 'सौज'। उ०—सब सोंज रूपचद नदा के ही घर लै ग्राए।—दो सौ वावन०, भा०, पृ० १९३।

**सौंझ**†—सज्ञा स्त्री० [स० सार्द्ध] ग्राधा साझा। साझेदारी।

**सौंझा**†—वि० [स० शुद्ध, सुज्झ, हिं० सोझ] सीधा।

**सौंटा**†—सज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सोंटा'।

**सौंटा**†—सज्ञा पुं० [सं० शुराड या सुवृत्त > सुवट्ट > सुग्रट, हिं० सटना] मोटी लवी सीधी लकडी या वाँस जिसे हाथ मे ले सकें। मोटी छडी। डडा। लाठी। लट्ठ। उ०—मार मार सोंटन प्रान निकासत।—कवीर श०, पृ० १९।

क्रि० प्र०—चलाना। —जमाना। —वाँधना। —मारना। उ०—वहाँ से ग्राज्ञा हुई कि ऐ मूसा तू नदी मे सोटा मार तब मूसा ने सोंटा मारा।—कवीर ग्र०, पृ० ५४।

मुहा०—सोंटा चलना = सोंटे से मार पीट होना। सोंटा चलाना = सोंटे से प्रहार करना। सोंटा जमाना = दे० 'सोंटा चलाना'।

**सौंटा**[२]—सज्ञा पुं० १ भग घोटने का मोटा डडा। भगघोटना। उ०—तन कर कूंडी मन कर सोंटा प्रेम की भँगिया रगरि पियावै।—कवीर (शब्द०)। २ लोविया का पौधा। रदास। ३ मस्तूल वनाने लायक लकडी।

**सौंटाबरदार**—सज्ञा पुं० [हिं० सोंटा + फा० वरदार] सोंटा या ग्रासा लेकर किसी राजा या ग्रमीर की सवारी के साथ चलनेवाला। ग्रासावरदार। वरलमदार।

**सौंटिग्रा**(पु)—सज्ञा पुं० [हिं० सोंटा + इया (प्रत्य०)] दे० सोंटिया'। उ०—चहुँदिसि ग्रावि सोंटि ग्रन्हि फेरी। मै कटकाई राजा केरी।—जायसी ग्र० (गुप्त), पृ० २०६।

**सौंठ**—सज्ञा स्त्री० [सं० शुराठी] १ सुखाया हुग्रा ग्रदरक। शठि। शुठी।

विशेष—वैद्यक के ग्रनुसार सोंठ रुचिकर, पाचक, हलकी, स्निग्ध, उष्णवीर्य, पाक मे मधुर वीर्यवर्धक, सारक, कफ, वात, विवध, हृद्रोग, श्लीपद, शोक, ववासीर, ग्रफारा, उदर रोग तथा वात रोग का नाशक है।

२ शुष्क। खुक्ख। खोखला। निर्धन या कजूस। (लाक्ष०)। उ०—' जान पडता है ससुरालवाले पूरे सोंठ हैं।—शरावी, पृ० १६५।

**सौंठमिट्टी**—सज्ञा स्त्री० [सोंठ ? + हिं० मिट्टी] एक प्रकार की पीले रग की मिट्टी जो ताल या धान के खेत मे पाई जाती है। यह काविस वनाने के काम मे ग्राती है।

**सौंठराय**—सज्ञा पुं० [हिं० सोंड + राय (= राजा)] कजूसो का सरदार। भारी मक्खीचूस। (व्यग्य)।

**सौंठौरा**†—सज्ञा पुं० [हिं० सोंठ + ग्रौरा (प्रत्य०)] शर्करा या गुड, हरिद्रा ग्रादि से युक्त एक प्रकार का सूजी का लड्डू जिसमे मेवों के सिवा सोंठ भी पडती है। यह लड्डू प्राय: प्रसूता स्त्री को खिलाया जाता है।

**सौंड़**‡—सज्ञा पुं० [स० शुराड, प्रा० सुड] दे० 'सूंड'। उ०—करै गजेद्र सोंड की चोट। नामा उभरे हर की ग्रोट।—दक्खिनी०, पृ० २०।

**सौंड़कहा**—सज्ञा पुं० [देश०] घी। घृत। (सुनार)।

**सौंध**(पु)—क्रि० वि० [हिं० सौंह] दे० 'सौंह'।

**सौंध**(पु)[२]—सज्ञा पुं० [सं० सौध] महल। ग्रटारी। उ०—यह श्यामा है कौन की छविधामा मुसकाय। सोंध यहि कोंध सी चोध गई चख छाय।—शृगार सतसई (शब्द०)।

**सौंधा**†[३]—वि०, सज्ञा पुं० [स० सुगन्ध, हिं० सौधा] सुगधयुक्त। दे० 'सोंधा'।

**सौंधा**[१]—वि० [सं० सुगन्ध] [वि० स्त्री० सोंधी] १. सुगधयुक्त। सुगंधित। खुशवूदार। महकनेवाला। उ०—(क) सोंधे समीरन को सरदार मलिदन को मनसा फलदायक। किंसुक जालन को कलपद्रुम मानिनी वालक हूँ को मनायक।—रस कुसुमाकर (शब्द०)। (ख) सहर सहर सोंधी सीतल समीर डोलै घहर घहर घन घोरि कै घहरिया।—देव (शब्द०)। (ग) सोंधे कैसी सोंधी देह सुधा सो सुधारी, पाउँधारी देवलोक तैं कि सिंधु ते उधारी सी।—केशव (शब्द०)। २ मिट्टी के नए वरतन या सूखी जमीन पर पानी पडने या चना, वेसन ग्रादि भुनने से निकलनेवाली सुगध के समान। जैसे,—सोंधी मिट्टी, सोंधा चना।

**सौंधा¹**—संज्ञा पुं० १ एक प्रकार का सुगंधित मसाला जिससे स्त्रियाँ केश धोती हैं। उ०—(क) आइ हुती अन्हवावन नाइनि सोंधो लिए कर सूधे सुभाइनि। कंचुकि छोरि उतै उपटैवे की ईंगुर से अंग की सुखदाइनि। (ख) सोंधे की सुवास आस पास भरि भवन रह्यो भरत उसास बास बासन बसात है।—देव (शब्द०)। (ग) देखी है गुपाल एक गोपिका मैं देवता सी सोनो सो सरीर सब सोंधे की सी बास है।—केशव (शब्द०)। २ इत्र। फुलेल। अतर। उ०—लेइ के फूल बैठि फुलहारी। पान अपूरब धरे सँवारी। सोंधा सबै बैठले गाँधी। फूल कपूर खिरौरी बाँधी।—जायसी (शब्द०)। ३ एक प्रकार का सुगंधित मसाला जो बंगाल में स्त्रियाँ नारियल के तेल में उसे सुगंधित करने के लिये मिलाती हैं।

**सौंधा²**—संज्ञा पुं० सुगंध। महक। खुशबू। उ०—(क) सूरदास प्रभु की बानक देखे गोपी ग्वाल टारे न टरत निपट आवै सोंधे की लपट।—सूरदास (शब्द०)। (ख) गढी सो सोने सोंधै भरी सो रूपै भाग। सुनत रूखि भइ रानी हिये लोन अस लाग।—जायसी (शब्द०)।

**सौंधिया**—संज्ञा पुं० [हिं० सोंधा (=सुगंध) + इया (प्रत्य०)] सुगंध तृण। रोहिष तृण। गंधेज घास।

**सौंधी**—संज्ञा पुं० [हिं० सोंधा] एक प्रकार का बढ़िया धान जो दलदली जमीन में होता है।

**सौंधु**Ⓟ—वि० [हिं० सोंधा] उ०—सोंधु सुरद्रुम विद्रुम बिदुलै फली दल फूलन दारचो दरे रे।—देव (शब्द०)।

**सौंपना**—क्रि० स० [हिं० सौंपना] समर्पण करना। सौंपना। उ०—(क) राम को राज्य लक्ष्मी सौंपो।—लक्ष्मण सिंह (शब्द०)। (ख) तुम यह हुंडी चाँपाभाई भंडारी को सौंपि आश्रो।—दो सौ बावन०, भा०, पृ० २०२।

**सौंवन**†—संज्ञा पुं० [स० स्वर्ण] सोना। स्वर्ण। हेम।

**सौंवनिया**—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्ण, प्रा० सुवण्ण, सोवण्ण + हिं० इया (प्रत्य०)] एक प्रकार का आभूषण जो नाक में पहना जाता है। उ०—पहुँची करनी पदिक उर हरिनख कँठुला कंठ मंजु गजमनिया। रुचि रुचि शुक द्विज अधर नासिका सुंदर राजत सोंवनिया।—सूर (शब्द०)।

**सौंह**Ⓟ†¹—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंह] दे० 'सौंह'। उ०—प्यारे को प्यार परोसिनी सो है कह्यो तुम सो तब साचु न लेखौ। मोही को झूठी कहौ झगरी करि सौंह करौं तब औरऊ तेखौ।—काव्य कलाधर (शब्द०)।

**सौंह²**—अव्य० दे० 'सौंह'। उ०—बाउर अंध प्रेम कर लागू। सौंह धसा कछु सूझ न आगू।—जायसी (शब्द०)।

**सौंहट**†—वि० [सं० सुघट, प्रा० सुहट ?] सीधा सादा। सरल।

**सौंहना**Ⓟ†—वि० [सं० शोभन, प्रा० सोहण] सुंदर। सुहावना। उ०—सखि सोभित मदन गुपाल कटि बाँधे पट सौंहनो।—नंद० ग्र०, पृ० ३८४।

**सौंहनी**Ⓟ†—वि० स्त्री० [स० शोभनीय] शोभनीय। शोभन। उ०—इहि कन्या मैं स्याम को, माँगों गोद पसारि, कि जोरी सौंहनी।—नंद० ग्र०, पृ० १९४।

**सौंहीं**—अव्य० [हिं०] दे० 'सौंह'। उ०—(क) आज रिसौंहीं न सौंहीं चितौवि किती न सखी प्रति प्रीति बढावै।—देव (शब्द०)। (ख) इतने मे सौंही आ एक वोली ब्रजनारी।—लल्लू (शब्द०)।

**सो¹**—सर्व० [स० स] वह। उ०—(क) व्याही सो सुजान शील रूप वसुदेव जू कौ विदित जहान जाकी अतिहि बडाई है।—गोपाल (शब्द०)। (ख) सो मो सन कहि जात न कैसे। साक बनिक मनि गन गुन जैसे।—तुलसी (शब्द०)। (ग) अरे दया मैं जो मजा सो जुलमन मैं नाह।—रसलीन (शब्द०)।

**सो²**—वि० [हिं०] दे० 'सा'। उ०—(क) विधि हरि हर मय वेद प्रान सो। अगुन अनूपम गुन निधान सो।—तुलसी (शब्द०)। (ख) नासिका सरोज गंधवाह से सुगंधवाह, दारचो से दशन कैसो बीजुरी सो हास है।—केशव (शब्द०)।

**सो³**—अव्य० अत। इसलिये। निदान। जैसे,—पराधीनता सब दु खों का कारण है, सो, भाइयो, इससे मुक्त होने के उद्योग में लगे रहिए। उ०—सो जब हम तुम सो मिले जुद्ध। नव अग लहहु खै समर सुद्ध।—गोपाल (शब्द०)।

**सो⁴**—संज्ञा स्त्री० [स०] पार्वती का एक नाम।

**सो**Ⓟ†⁵—संज्ञा पुं० [स० शत, प्रा० सय, सउ] दे० 'सौ'। उ०—सो वरस अट्ठ तप राज कीन। आनद मेव सिर छत्र दीन।—पृ० रा०, १। पृ० १२।

**सोऽहम्**—पद [स० स + अहम्] वही मैं हूँ—अर्थात् मैं ब्रह्म हूँ।
विशेष—वेदांत का सिद्धांत है कि जीव और ब्रह्म एक ही हैं, दोनों में कोई अंतर नही है। जीव और कुछ नही, ब्रह्म ही है। इसी सिद्धांत का प्रतिपादन करने के लिये वेदांती लोग कहा करते हैं—सोऽहम्, अर्थात् मैं वही ब्रह्म हूँ। उपनिषदो में भी यह बात 'अहं ब्रह्मास्मि' और 'तत्त्वमसि' रूप मे कही गई है।

**सोऽहमस्मि**—पद [स० स + अहम् + अस्मि] वही मैं हूँ—अर्थात् मैं ही ब्रह्म हूँ। विशेष दे० 'सोऽहम्'।

**सोअना**Ⓟ—क्रि० अ० [सं० स्वपन] दे० 'सोना'। उ०—(क) गोरे गात कपोल पर अलक अडोल सोहाय। सोअति है साँपिनि मनो पंकज पात बिछाय।—मुबारक (शब्द०)। (ख) सुक्लजीत जहाँ वसत जे जागत सोअत रामै राम बके।—देवस्वामी (शब्द०)।

**सोअर**‡—संज्ञा स्त्री० [स० सूतिगृह] दे० 'सौरी'।

**सोआ**—संज्ञा पुं० [स० मिश्रेया] एक प्रकार का साग।
विशेष—इसका क्षुप १ से ३ फुट तक ऊँचा होता है। इसकी पत्तियाँ बहुत सूक्ष्म और फूल पीले होते हैं। वैद्यक के अनुसार यह चरपरा, कडवा, हलका, पित्तजनक, अग्निदीपक, गरम, मेधाजनक, वस्तिकर्म में प्रशस्त तथा कफ, वात, ज्वर, शूल, योनिशूल, आध्मान, नेत्ररोग, व्रण और कृमि का नाशक है।
पर्या०—शताह्वा। शतपुष्पा। शताक्षी। शतपुष्पिका। कारवी। तालपर्णी। माधवी। शोफका। मिसी।

**सोइ**Ⓟ—सर्व० [हिं० सँव] वही । वह ही । उ०—(क) मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोइ । जा तन की झाईं परे स्याम हरित दुति होइ ।—बिहारी (शब्द०) । (ख) सातो द्वीप कहे शुक मुनि ने सोइ कहत अब सूर ।—सूर (शब्द०) । (ग) सोइ रघुवर सोइ लछिमन सीता । देखि सती अति भई सभीता ।—तुलसी (शब्द०) ।

**सोई**[1]—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० स्रोत, स्रोतिका, हिं० सोता] वह जमीन या गड्ढा जहाँ बाढ या नदी का पानी रुका रह जाता है और जिसमे अगहनी धान की फसल रोपी जाती है । डाबर ।

**सोई**[2]—सर्व० [सं० सैव] दे० 'वही' । उ०—बहुरि आइ देखा सुत सोई । हृदय कप मन धीर न होई ।—मानस, १।२०१ ।

**सोई**[3]—अव्य० [हिं०] दे० 'सो' । उ०—सोई मैं स्वशुरालय जाती थी ।—प्रताप (शब्द०) ।

**सोक**[1]—सञ्ज्ञा पुं० [देश०] चारपाई बुनने के समय बुनावट मे का वह छेद जिसमे से रस्सी या निवार निकाल कर कसते है ।

**सोक**[2]—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शोक, प्रा० सोक] दे० 'शोक' । उ०—समन पाप सताप सोक के । प्रिय पालक परलोक लोक के ।—तुलसी (शब्द०) ।

**सोकड़ली**Ⓟ†—सञ्ज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'सौत' । उ०—सोकडल्यां चख माँहि करै कडवाइयां ।—बाँकी० ग्र०, भा० ३, पृ० ३१ ।

**सोकन**—सञ्ज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सोखन' ।

**सोकना**[1]Ⓟ—क्रि० स० [सं० शोक प्रा० सोक + हिं० ना (प्रत्य०)] शोक करना । दुःख करना । रंज करना । उ०—तुव पन पालि विपिन करि दैहौं । पुनि तुव पद पकज सिर नैहौं । यो सुनि नृपति मनहिं मन सोक्यौ । पुनि पुनि रामवदन अवलोक्यौ ।—पद्माकर (शब्द०) ।

**सोकना**[2]—क्रि० स० [सं० शोषण] दे० 'सोखना' । उ०—(क) आठ मास जो सूर्य जल सोकता है, सोई चार महीने बरसता है ।—लल्लू० (शब्द०) । (ख) बुद सोकिगो कुहा महासमुद्र छीजई ।—केशव (शब्द०) ।

**सोकनी**†—वि० [हिं० सोकन] कालापन लिए सफेद रंग का (बैल) ।

**सोकरहा**†—सञ्ज्ञा पुं० [हिं० सोकार] वह आदमी जो कूएँ पर खडा होकर पानी से भरे हुए चरसे या मोट को नाली मे उलटकर खाली करता है । बारा ।

**सोकार**†—सञ्ज्ञा पुं० [हिं० सोकना, सोखना ] वह स्थान जहाँ खेत सीचनेवाले कूएँ से मोट निकालकर गिराते है । सिंचाई के लिये पानी गिराने की कूएँ पर की नाली । छिउलारा । चौढा ।

**सोकित**Ⓟ—वि० [सं० शोकित] शोकयुक्त । उ०—मूँहि स्वारथ ढीठ बनायो तुमको जब सोकित देख्यो ।—प्रताप (शब्द०) ।

**सोक्कन**—सञ्ज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सोखन' ।

**सोख**Ⓟ†[1]—वि० [फा० शोख] दे० 'शोख' ।

**सोख**[2]—वि० [सं० शुष्क, प्रा० सुक्क] शुष्क करनेवाला या सुखानेवाला । जैसे—स्याही सोख ।

**सोखक**Ⓟ—वि० [सं० शोषक] १ शोषण करनेवाला । २ नाश करनेवाला । उ०—चाल चलि चद्रमुखी साँवरे सखा पै बेगि, सोखक जु केसोदास अरि सुख साज के । चढि चढि पवन तुरगन गगन घन, चाहत फिरत चद योधा यमराज के ।—केशव (शब्द०) ।

**सोखता**—वि० [फा० सोख्ता] दे० 'सोख्ता' । उ०—मैं मुहदा तन सोखता विरहा दुख जारै । जिय तरसै दीदार को दादू न विसारै ।—दादू० बनी, पृ० ५०४ ।

**सोखता**[2]—सञ्ज्ञा पुं० दे० 'सोख्ता' ।

**सोखन**[1]—सञ्ज्ञा पुं० [देश०] १ स्याही लिए सफेद रंग का बैल । २ एक प्रकार का जगली धान जो नदी की घाटी मे बलुई जमीन मे बोया जाता है ।

**सोखन**Ⓟ[2]—सञ्ज्ञा पुं० [सं० शोषण] काम का एक बाण । दे० 'शोषण' । उ०—सोखन दहन उचाटन छोभन । तिन मैं निपट बुरौ समोहन ।—नद० ग्र०, पृ० १४० ।

**सोखना**—क्रि० स० [सं० शोषण] १ शोषण करना । रस खीच लेना । चूस लेना । सुखा डालना । उ०—(क) यह मिट्टी......पानी को खूब सोखती है ।—खेतीविद्या (शब्द०) । (ख) सेर भर चावल सेर ही भर घी सोखता है ।—शिवप्रसाद (शब्द०) । (ग) उदित अगस्त पथजल सोखा । जिमि लोभहि सोखइ सतोषा ।—तुलसी (शब्द०) । (घ) उतै रुखाई है घनी थोरो मो पै नेह । जाही अग लगाइए सोई सोखै लेह ।—रसनिधि (शब्द०) । (ङ) वाही हाथ कुच गहि पूतना के प्राण सोखे पाय ऊँचो पद निज धाम को सिधारी है ।—ब्रजचरित्र०, पृ० १३ । २ पीना । पान करना । (व्यग्य) ।

संयो० क्रि०—जाना ।—डालना ।—लेना ।

**सोखरी**†—सञ्ज्ञा स्त्री० [हिं० सोखना या सुखाना या सं० शुष्कफली] पेड का सूखा हुआ महुआ ।

**सोखा**†—सञ्ज्ञा पुं० [सं० सूक्ष्म या चोखा ?] १ चतुर मनुष्य । होशियार आदमी । २ जादूगर । ३ झाड फूक, जतर मतर करनेवाला व्यक्ति ।

**सोखाई**[1]—सञ्ज्ञा स्त्री० [हिं० सोखा + ई (प्रत्य०)] जादू । टोना ।

**सोखाई**[2]—सञ्ज्ञा स्त्री० [हिं० सोखना] १ सोखने की क्रिया या भाव । २ सोखने या सोखाने की मजदूरी ।

**सोखाना**†—क्रि० स० [हिं० सुखाना] दे० 'सुखाना' ।

**सोखावना**Ⓟ†—क्रि० स० [हिं० सुखाना] दे० 'सुखाना' । उ०—मघवानल वहि अगिन समानी । अगिन अगस्त सोखावत पानी ।—हिंदी प्रेमा०, पृ० २७५ ।

**सोखीन**†—वि० [अ० शौक, शौकीन] दे० 'शौकीन' । उ०—घर भर अमल सब जने खावे सोखीन माही उनर प्यावे ।—दक्खिनी०, पृ० १२४ ।

**सोख्त**—सञ्ज्ञा स्त्री० [फा० सोख्त] जलन । दाह [को०] ।

**सोख्तनी**—वि० [फा० सोख्तनी] दाह या जलन योग्य । जलनशील । जलाने लायक [को०] ।

**सोख्ता¹**—संज्ञा पुं० [फा० सोख्तह्] १ जला हुआ कोयला। २ एक प्रकार का मोटा खुरदुरा कागज जो स्याही सोख लेता है। स्याही सोख। स्याही चट। (अं० ब्लाटिंग पेपर)]। ३ बारूद से सपृक्त या रंजित वस्त्र जो शीघ्र जल उठता है (को०)।

**सोख्ता²**—वि० १ जला हुआ। २ विषादयुक्त। खिन्नमनस्क [को०]। ३ प्यार करनेवाला। प्रेमी (को०)।

**सोगद**—संज्ञा स्त्री० [सं० सौगन्ध, हिं० सौगद] दे० 'सौगद'।

**सोग**Ⓟ—संज्ञा पुं० [सं० शोक, प्रा० सोक, सोग] शोक। दुख। रंज। उ०—(क) जाके बल गरजे महि काँपे। रोग सोग जाके सिमाँ न चाँपे —रामानद०, पृ० ७। (ख) निसि दिन राम राम की भक्ति, भय रुज नहिं दुख सोग।—सूर (शब्द०)। (ग) चिन पितु घातक जोग लखि भयौ भएँ सुत सोग। फिर हुलस्यौ जिय जोयसी समुझ्यो जारज जोग।—बिहारी (शब्द०)।

मुहा०—सोग मनाना = किसी प्रिय या संबंधी के मर जाने पर शोकसूचक चिह्न धारण करना और किसी प्रकार के उत्सव या मनोविनोद आदि मे सम्मिलित न होना।

**सोगन**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौगद] सौगंद। कसम। (डिं०)। उ०—(क) नयणाँरा सोगन करै, भैं मानै सुण भूत। रामत दूला री रमै राडूला री पूत।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० १३। (ख) लेखण तोला ताकडी, सोगन नै जीकार।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० ६६।

**सोगिनी**Ⓟ—वि० स्त्री० [हिं० सोग + इनी (प्रत्य०)] शोक करनेवाली। शोकार्ता। शोकाकुला। शोकमग्ना। उ०—मुख कहत आजु वधि धृष्ट अरि तरपहुँ चौसठ जोगिनी। बिललात फिरैं वन पात प्रति मगध सुंदरी सोगनी।—गोपाल (शब्द०)।

**सोगी**—वि० [सं० शोकिन्, हिं० सोग] [स्त्री० सोगिनी] १ शोक मनानेवाला। शोकात। शोकाकुल। दुखित। २ सोच विचार करता हुआ। चिंतित। उदास।

**सोच¹**—संज्ञा पुं० [सं० शोच] १ सोचने की क्रिया या भाव। जैसे,—तुम अच्छी तरह सोच लो कि तुम्हारे इस काम का क्या फल होगा।

यौ०—सोचसमझ। सोचविचार। सोचसाच = दे० 'सोचविचार'। उ०—हमे भी बहुत सोच साच के धन्यवाद देना पडा।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २३।

२ चिंता। फिक्र। जैसे,—(क) तुम सोच मत करो, ईश्वर भला करेंगे। (ख) तुम किस सोच मे बैठे हो ? उ०—(क) चल्यो अनखाइ समझाइ हारे बातनि सो, 'मन ! तू समझ, कहा कीजै ? सोच भारी है !'—भक्तमाल (प्रिया०), पृ० ५०५। (ख) नारि तजी सुत सोच तज्यो तब।—केशव (शब्द०)। ३ शोक। दुख। रंज। अफसोस। उ०—(क) तुलसी के दुहूँ हाथ मोदक हैं, ऐसी ठाउँ जाके मुए जिए सोच करिहैं न लरिको।—तुलसी (शब्द०)। (ख) नेह कै मोहिं बुलायो इतै अब बोरत मेह महीतल को हैं। आई मझार महावत मैं तन मैं श्रम सीकर की झलको है। न मिले अब नील किसोर पिया हियो बेनी प्रवीन कहै कलको है। सोच नही धन पावन को सखि सोच यहै उनके छल को है।—बेनी प्रवीन (शब्द०)। ४ पछतावा। पश्चात्ताप। उ—देखिकै उमा को रुद्र लज्जित भए, कह्यो मैं कौन यह काम कीनो। इद्रिजित हौं कहावत हुतो आपु कौं, समुझि मन माहिं ह्वै रह्यो खीनो। चतुरभुज रूप धरि आइ दरसन दियौ कह्यौ शिव सोच दीजै बिहाई।—सूर०, ७।२०।

**सोचक**Ⓟ—संज्ञा पुं० [सं० सौचिक] दरजी। (डिं०)। उ०—गुरु गीत वाद वाजिन्न नृत्य। सोचक सु वाच्य सविचार कृत्य। मनि मंत्र जंत्र वास्तुक विनोद। नैपथ विलास सुनि तत्त मोद।—पृ० रा०, १।७३२।

**सोचना**—क्रि० अ० [सं० शोचन, शोचना (= दुख, शोक, अनुताप)] १ किसी प्रकार का निर्णय करके परिणाम निकालने या भवितव्य को जानने के लिये बुद्धि का उपयोग करना। मन मे किसी बात पर विचार करना। गौर करना। जैसे,—(क) मैं यह सोचता हूँ कि तुम्हारा भविष्य क्या होगा। (ख) कोई बात कहने से पहले सोच लिया करो कि वह कहने लायक है या नही। (ग) इस बात का उत्तर मैं सोचकर दूगा। (घ) तुम तो सोचते सोचते सारा समय बिता दोगे। उ०—सोचत है मन ही मन मैं अब कीजै कहा बतियाँ जगछाई। नीचो भयो ब्रज को सब सीस मलीन भई रसखानि दुहाई।—रसखान (शब्द०)। २ चिंता करना। फिक्र करना। उ०—(क) अब हरि आइहैं जिन सोचैं। सुन विधुमुखी बारि नयनन ते अब तू काहे मोचै।—सूर (शब्द०)। (ख) कौनहुँ हेतन आइयो प्रीतम जाके धाम। ताको सोचति सोच हिय केशव उक्ताधाम।—केशव (शब्द०) ३ खेद करना। दुख करना। उ०—माथे हाथ मूँदि दोउ लोचन। तनु धरि सोचु लाग जनु सोचन।—तुलसी (शब्द०)।

**सोचविचार**—संज्ञा पुं० [हिं० सोच + सं० विचार] समझबूझ। गौर। जैसे,—(क) सोचविचार कर काम करो। (ख) अच्छी तरह सोचविचार लो।

**सोचाना**—क्रि० स० [हिं० सोचना] दे० 'सूचाना'। उ०—सुदिन सुनखत सुघरी सोचाई। बेगि बेदविधि लगन धराई।—तुलसी (शब्द०)।

**सोचु**Ⓟ—संज्ञा पुं० [हिं० सोच] दे० 'सोच'। उ०—सती सभीत महेस पहिं चली हृदय बड सोचु।—तुलसी (शब्द०)।

**सोच्छ्वास¹**—वि० [सं०] १ प्रसन्न। खुश। २ उच्छ्वासयुक्त। जोरो से साँस लेता हुआ। ३. शिथिल। सुस्त। ढीला [को०]।

**सोच्छ्वास²**—क्रि० वि० आराम। प्रसन्नतापूर्वक [को०]।

**सोछ**Ⓟ—क्रि० वि० [सं० स्वच्छ प्रा० सुच्छ] साफ साफ। सुस्पष्ट स्वच्छ। उ०—ऐसा इष्ट सँभारिये चरनदास कहि सोछ।—चरण० बानी, पृ० ४६।

**सोज¹**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूजना] १ सूजने की क्रिया, भाव या अवस्था। सूजन। शोथ। २ दे० 'सौज'। उ०—तुलसी

ममिध सोज लक जग्यकुड लखि जातधान पुग फल जव तिल धान है।—तुलसी (शब्द०)।

**सोज[2]**—सज्ञा पुं० [फा० सोज] १ जलन। ज्वाला। उ०—अगन कूँ दिया सोज सो रोशनी। जमीन कूँ दिया खिलग्रत गुलशनी। —दक्खिनी, पृ० ११७। २ वेदना। मनस्ताप। पीडा [को०]।

**सोजन[1]**—सज्ञा पुं० [फा० सोजन] १ सूई। उ०—अरे निरदई मालिया कहुँ जताय यह बात। केहि हित सुमनन तोरि तैं छेदत सोजन गात।—रसनिधि (शब्द०)। २ कटक। काँटा। (लश०)।

**सोजन[2]**—सज्ञा पु० [फा० सोजनी] बिछाने का विस्तर। उ०—भाई साहेब, अपने तो ऊ पछी काम का जे भोजन सोजन दूनो दे। —भारतेदु ग्र०, भा० १, पृ० ३२८।

**सोजनकारी**—सज्ञा स्त्री० [फा० सोज़नकारी] सूई का काम। सूईकारी। उ०—लहँगे के खूब दाव देकर सिए पल्लो पर फूलो और पक्षियो की सोजनकारी की हुई थी।—जनानी०, पृ० ३।

**सोजनी**—सज्ञा स्त्री० [फा० सोज़नी] दे० 'सुजनी'।

**सोजाँ**—वि० [फा० सोज़ाँ] १ ज्वलनशील। दाहक। २ पीडादायक। दु खद [को०]।

**सोजाक**—सज्ञा पुं० [फा० सूजाक] दे० 'सूजाक'।

**सोजिश**—सज्ञा स्त्री० [फा० सोजिश] १ सूजन। फुलाव। शोथ। २ दे० 'सोज[2]'।

**सोझ**(पु)—वि०, क्रि० वि० [हिं० सोझा] १ दे० 'सोझा'। उ०—(क) काहु ओ वहल भार वोझ, काहु वाट कहल सोझ।—कीर्ति०, पृ० २४। (ख) कहै कवीर नर चलै न सोझ। भटकि मुए जस वन के रोझ।—कवीर (शब्द०)। २ ठीक सामने की ओर गया हुआ। सीधा। उ०—सोझ वान अस आवहि राजा। वासुकि डरै सीस जनु वाजा।—जायसी (शब्द०)।

**सोझना**(पु)†—क्रि० स० [सं० शोधन] शोधना। खोजना। उ०—(क) वारड वहतई आपणई। कुँवर परणावौ, सोझउ वीद। —वी० रासो, पृ० ६। (ख) अवधेसरा मे सुभट आया सोझवा सीता।— रघु० रू०, पृ० १६१।

**सोझा[1]**—वि० [स० सम्मुख, म०प्रा० ममुज्झ ?, अथवा स० शुद्ध, प्रा० सुद्ध, सुज्झ] [वि० स्त्री० सोझी] १ सीधा। सरल। उ०—(क) दादू सोझा राम रस अम्रित काया कूल।—दादू (शब्द०)। (ख) है वहँ डोर सुरति कर सोझी गुरु के शब्द चढि जइए हो।—धरम० श०, पृ० ११। २ ठीक सामने की ओर गया हुआ। दे० 'सोझ'—२।

**सोझा[2]**—सज्ञा स्त्री० [सं० शोध (=अन्वेषण), शुद्ध, प्रा० सुज्झ] सुधि। शोध। स्मृति। स्मरण। याद। उ०—ईत ऊत की सोझो परै। कौन कर्म मेरा करि करि मरै।—कवीर ग्र०, पृ० ३२७।

**सोझोवा**—सज्ञा पु० [सं० सोढव्य (=सहनशील)] जवान वछडा।

**सोटा[1]**—सज्ञा पु० [स० शुण्ड] दे० 'सोँटा'।

**सोटा[2]**—सज्ञा पुं० [हिं० सुग्रटा] दे० 'सुग्रटा'। उ०—लै सँदेस सोटा गा तहाँ। सूली देहि रतन को जहाँ।—जायसी (शब्द०)।

**सोठ**—सज्ञा स्त्री० [स० शुण्ठि] दे० 'सोँठ'।

**सोठ मिट्टी**—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोठ+मिट्टी] दे० 'सोँठ मिट्टी'।

**सोडा**—सज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का क्षार पदार्थ जो सज्जी को रासायनिक क्रिया से साफ करके बनाया जाता है।

विशेष—इसके कई भेद है। जिसे लोग सिर धोने के काम मे लाते है, उसे अँगरेजी मे 'सोडा क्रिस्टल' कहते है। यह सज्जी को उबालकर बनाते हैं। ठढा होने पर साफ सोडा नीचे बैठ जाता है। जो सोडा साबुन, कागज, काँच आदि बनाने के काम मे आता है, उसे 'सोडा कास्टिक' कहते है। यह चूने और सज्जी के सयोग से बनता है। दोनो को पानी मे घोल और उबालकर पानी उडा देते है। इसी प्रकार 'बाइकारबोनेट आफ सोडियम' भी साबुन, काँच आदि बनाने के काम मे आता है। यह नमक को अमोनिया मे घोलकर कारबोनिक गैस की भाप का तरारा देने से निकलता है। इसे एकत्र करके तपाने से पानी और कारबोनिक गैस उड जाता है। जो सोडा खाने के काम मे आता है, उसे 'बाइकारबोनेट आफ सोडा' कहते हैं। यह सोडे पर कारबोनिक गैस का तरारा देने से बनता है।

**सोडावाटर**—सज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का पाचक पानी जो प्राय. मामूली पानी मे कारबोनिक एसिड का सयोग करके बनाते हैं और बोतल मे हवा के जोर से वद करके रखते हैं। विलायती पानी। खारा पानी।

**सोढ**—वि० [स०] १ सहनशील। सहिष्णु। २ जो सहन किया गया हो। ३ (पु) समर्थ। शक्तिमान्। उ०—सोढ हुग्री तूं भाँण सुत रावाँ सिरहर राव।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० ८३।

**सोढर**—वि० [देश०] भोंदू। बेवकूफ। उ०—(क) गदहो मे हम सोढर गन्हा है।—वालकृष्ण भट्ट (शब्द०)। (ख) भगति मुतिय के हाथ सुमिरिनी सोहत टोडर। सोढर खोडर बूढ ऊढ द्विज खोँडर ओडर।—सुधाकर (शब्द०)।

**सोढवत्**—वि० [स०] जिसने सहन किया हो। सहनेवाला।

**सोढव्य**—वि० [सं०] सहन करने के योग्य। सह्य।

**सोढा**—वि० [सं० सोढृ] १ दे० सहनशील। 'सोढ'। २ शक्तियुक्त। ताकतवर [को०]।

**सोढी**—वि० [स० सोढिन्] जिसने सहन किया हो। सहनकारी।

**सोणक**—वि० [सं० शोण] लाल रग का। रक्त।

**सोणत**—सज्ञा पुं० [सं० शोणित] खून। लोहू। रक्त। (डिं०)।

**सोत**—सज्ञा स० [स० स्रोत] दे० 'स्रोत' या 'सोता'। उ०—(क) लोल लोचनी कठ लखि सख समुद के सोत। अरु उडि कानन को गए केकी गोल कपोत।—शृगारसतसई (शब्द०)। (ख) धन कुल की मरजाद कछु प्रेम पथ नहिं होत। राव रक सब एक से लगत प्रेम रस सोत।—हरिश्चद्र (शब्द०)। (ग)

वैरिवधुवरन कलानिधि मलीन भयो सकल सुखानो परपानिप को सोत है।—मतिराम (शब्द०)।

सोता¹—संज्ञा पुं० [सं० स्रोत] १ जल की बराबर बहनेवाली या निकलनेवाली छोटी धारा। झरना। चश्मा। जैसे—पहाड़ का सोता, कूएँ का सोता। उ०—(क) भूख लगे सोता मिले उथरे अरु बिन मैल। पी तिनको पानी तुरत लीजो अपनी गैल।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)। (ख) दस दिसा निर्मल मुदित उडगन भूमिमंडल सुख छयो। सागर सरित सोता सरोवर सवन उज्वल जल भयो।—गिरिधरदास (शब्द०)। २ नदी की शाखा। नहर। उ०—जिसका (जमना की नहर का) एक सोता पश्चिम में हरियाने तक पहुँचकर रेगिस्तान में खप जाता है।—शिवप्रसाद (शब्द०)। ३ मूल। उद्गम। परंपरा।

सोता²—वि० [सं० सोतृ] उत्पन्न करनेवाला। संतान उत्पन्न करनेवाला [को०]।

सोतिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोता + इया (प्रत्य०)] सोता। उ०—नौ दस नदिया अगम बहे सोतिया, बिचे में पुरइन दहवा लागल रे री।—कबीर (शब्द०)।

सोतिहा†—संज्ञा पुं० [हिं० सोता + इहा (प्रत्य०)] कूआँ जिसमें सोते का पानी आता है।

सोती¹—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोता] स्रोत। धारा। सोता। उ०—तेहि पर पूरि धरी जो मोती। जवुँना माँझ गाँग कइ सोती।—जायसी (शब्द०)।

सोती²—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वाति] दे० 'स्वाती'। उ०—एक वर्ष बरष्यो नहिं सोती। भयो न मानसरोवर मोती।—रघुराजसिंह (शब्द०)।

सोती³—संज्ञा पुं० [सं० श्रोत्रिय, प्रा० सोत्तिय] दे० 'श्रोत्रिय'।

सोतु—संज्ञा पुं० [सं०] सोम निकालने की क्रिया।

सोत्कंठ—वि० [सं० सोत्कण्ठ] १ उत्कंठायुक्त। लालसायुक्त। २ शोक या पश्चात्तापयुक्त। उनमना।

सोत्कंप—वि० [सं० सोत्कम्प] काँपता हुआ। हिलता डुलता हुआ। कंपित [को०]।

सोत्क—वि० [सं०] जिसे उत्कंठा हो। उत्कंठापूर्ण। सोत्कंठ।

सोत्कर्ष—वि० [सं०] उत्कर्षयुक्त। उत्तम। दिव्य।

सोत्तरपणव्यवहार—संज्ञा पुं० [सं०] पाराशर स्मृति के अनुसार इस प्रकार की शर्त कि वाद विवाद में जो जीते, वह हारनेवाले से इतना धन ले।

सोत्प्रास¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ चाटु। प्रिय बात। २ व्याजस्तुति। ३ शब्दयुक्त हास्य। सशब्द हास्य। यथा—सोत्प्रास आच्छुरित-कमवच्छुरितक तथा अट्टहासो महाहासो हास प्रहास इत्यादि।—शब्दरत्नावली (शब्द०)। ४ व्यंग्यवाक्य या कथन (को०)।

सोत्प्रास²—वि० १ बढाकर कहा हुआ। अतिरंजित। २ अतीव। अत्यंत। ३ व्यंग्ययुक्त। जिसमें व्यंग्य हो।

सोत्प्रेक्ष—वि० [सं०] १ उपेक्षा के योग्य। २ उदासीनतापूर्वक।

सोत्संग—वि० [सोत्सङ्ग] शोकाकुल। दुःखित।

सोत्सर्ग समिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] मल मूत्र आदि का इस प्रकार यत्नपूर्वक त्याग करना जिससे किसी व्यक्ति को कष्ट या जीव को आघात न पहुँचे। (जैन)।

सोत्सव—वि० [सं०] १ उत्सवयुक्त। उत्सवसहित। २ प्रफुल्ल। प्रसन्न। खुश। ३ हर्ष या उल्लासयुक्त। उत्साहसहित।

सोत्सुक—वि० [सं०] १ उत्सुकतायुक्त। उत्सुकतासहित। उत्कंठित। २ जिज्ञासायुक्त। जानने की कामना से युक्त। जिज्ञासु (को०)। ३ शोकयुक्त। शोकार्त। शोकान्वित (को०)।

सोत्सेक—वि० [सं०] अभिमानी। घमंडी। ऐंठू।

सोत्सेध—वि० [सं०] ऊँचाईयुक्त। उच्च। ऊँचा।

सोथ—संज्ञा पुं० [सं० शोथ] दे० 'शोथ'।

सोदकुंभ—संज्ञा पुं० [सं० सोदकुम्भ] एक प्रकार का श्राद्ध जो पितरों के उद्देश्य से किया जाता है।

सोदवित्व—वि० [सं०] लघु। अल्प। थोड़ा। कम।

सोदन—संज्ञा पुं० [देश०] कसीदे के काम में कागज का एक टुकड़ा जिसपर सूई से छेदकर बेल बूटे बनाए होते हैं।

विशेष—जिस कपड़े पर बेल बूटा बनाना होता है, उसपर उसे रखकर बारीक रंग छिड़क देते हैं, जिससे कपड़े पर निशान बन जाता है। जिसके आधार पर बेल बूटे काढ़े जाते हैं।

सोदय¹—वि० [सं०] १ ब्याज या सूद समेत। वृद्धियुक्त। २ भाग्य योग ग्रहों के उदय से संबद्ध (को०)। ३ [illegible] उगनेवाला (को०)।

सोदय²—संज्ञा सं० ब्याज सहित मूल धन। असल मय सूद।

सोदर¹—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सोदरा, सोदरी] सहोदर भ्राता। सगा भाई।

सोदर²—वि० एक गर्भ में उत्पन्न।

सोदरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सहोदरा भगिनी। सगी बहिन।

सोदरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सोदरा'। उ०—काम की दुहाई कै सुहाई सखी माधुरी की इंदिरा के मंदिर में झाँई उपजनि है। सुरनि की सूरी किधौं मोदहू की सोदरी कि चातुरी की माता ऐसी बातनि सिजति है। केशव (शब्द०)।

सोदरीय—वि० [सं०] दे० 'सोदर'।

सोदर्क¹—वि० [सं०] १ परिणाम से युक्त। फलयुक्त। २ कँगूरे या बुर्जियों से युक्त (को०)।

सोदर्क²—संज्ञा पुं० गान का पूरक जो अंतिम हो [को०]।

सोदर्य—वि० संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सहोदर'।

सोदागर†—संज्ञा पुं० [फा० सौदागर] दे० 'सौदागर'। उ०—ना साथ में सोदागर बोहोत आए।—दो सौ बावन०, पृ० १६८।

सोद्यम—वि० [सं०] १ सचेष्ट। सक्रिय। २ युद्धार्थ कृतनिश्चय [को०]।

सोद्योग—वि० [सं०] १ उद्योगी। कर्मशील। उद्योग में लगा हुआ। २ शक्तिशाली। मजबूत। हिंसक। ३ खतरनाक (को०)।

सोन[४]—वि० [सं० शोण] लाल। अरुण। रक्त। उ०—सुभग सोन सरसीरुह लोचन। वदन मयक तापत्रय मोचन।—तुलसी (शब्द०)।

सोन[५]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोना] एक प्रकार की वेल जो वारहो महीने वरावर हरी रहती है। इसके फूल पीले रग के होते है।

सोन[६]—संज्ञा पुं० [सं० रसोनक या सोनह] लहसुन। (डिं०)।

सोनकिरवा‡—संज्ञा पुं० [हिं० सोना + किरवा (=कीडा)] १ एक प्रकार का कीडा जिसके पर पन्ने के रग के चमकीले होते है। २ खद्योत। जुगनूँ।

सोनकीकर—संज्ञा पुं० [हिं० सोना + कीकर] एक प्रकार का वहुत वडा पेड।

विशेष—यह वृक्ष उत्तर वगाल, दक्षिण भारत तथा मध्यभारत मे वहुत होता है। इसके हीर की लकडी मूसली सी, पर वहुत ही कडी और मजवूत होती है। यह इमारत और खेती के औजार वनाने के काम मे आती है। इसका गोद कीकर के गोद के समान ही होता है और प्राय औषध आदि मे काम आता है।

सोनकेला—संज्ञा पुं० [हिं० सोना + केला] चपा केला। सुवर्ण कदली। पीला केला।

विशेष—वैद्यक मे यह शीतल, मधुर, अग्निदीपक, वलकारक, वीर्यवर्धक, भारी तथा तृषा, दाह, वात, पित्त और कफ का नाशक माना गया है।

सोनगढी†—संज्ञा पुं० [सोनगढ (स्थान)] एक प्रकार का गन्ना।

सोनगहरा—संज्ञा पुं० [हिं० सोना + गहरा] गहरा सुनहरा रग।

सोनगेरू—संज्ञा पुं० [हिं० सोना + गेरू] दे० 'सोनागेरू'।

सोनचपा—संज्ञा पुं० [हिं० सोना + चपा] पीला चपा। सुवर्ण चपक। स्वर्ण चपक।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यह चरपरा, कडुवा, कसैला, मधुर, शीतल तथा विष, कृमि, मूत्रकृच्छ्र, कफ, वात और रक्तपित्त को दूर करनेवाला है।

सोनचिरई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोना + चिरई] दे० 'सोनचिरी'।

सोनचिरी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सोना + चिरी (=चिडिया)] नटी। उ०—पातरे अग उडै विनु पाँखरी कोमल भापनि प्रेम फिरी की। जोवन रूप अनूप निहारि कै लाज मरै निधिराज सिरी की। कौल से नैन कलानिधि सो मुख को गनै कोटि कला गहिरी की। वाँस कै सीस अकास मे नाचत को न छकै छवि सोनचिरी की।—देव (शब्द०)।

सोनजरद—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोना + फा० जर्द] दे० 'सोनजर्द'। उ०—कोइ गुलाल सुदरसन कूजा। कोइ सोनजरद पाव भल पूजा।—जायसी (शब्द०)।

सोनजर्द—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोना + फा० जर्द] पीली जूही। स्वर्णयूथिका।

सोनजुही(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्ण + हिं० जूही] दे० 'सोनजूही'। उ०—(क) देखी सोनजुही फिरति सोनजुही से अग। दुति लपटनि पट सेत हूँ करति वनौटी रग।—विहारी (शब्द०) (ख) हौ रीझी लखि रीझिहौ छविहि छवीले लाल। सोनजुही सी होति दुति मिलत मालती माल।—विहारी (शब्द०)।

सोनजूही—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोना + जूही] एक प्रकार की जूही जिसके फूल पीले रग के होते है पर जिसमे सफेद जूही से सुगधि अधिक होती है। पीली जूही। स्वर्णयूथिका। उ०—सोनजूही की पँखुरियो से गुँथे ये दो मदन के वान, मेरी गोद मे। हो गए वेहाश दो नाजुक, मृदुल तूफान, मेरी गोद मे।—ठडा०, पृ० ११।

सोनपटीला(पु)—वि० [हिं० सोना + सं० पत्र या पत्रिल] सोने के पत्र (वर्क) के समान चमकनेवाला। उ०—वारह माम दामिनी दमकै। सोनपटीला जुगनू झमकै।—चरण० वानी, पृ० ७६।

सोनपेडुकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोना + पेडुकी] एक प्रकार का पक्षी जो सुनहलापन लिए हरे रग का होता है। इसकी चोच सफेद तथा पैर लाल होते है।

सोनभद्र—संज्ञा पुं० [सं० शोणभद्र] दे० 'सोन'। उ०—सोनभद्र तट देश नवेला। तहाँ बसै वहु अवुध वघेला।—रघुराज (शब्द०)।

सोनवाना†—वि० [सं० स्वर्णवर्णक ? अथवा हिं० सोना + वाना (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सोनवानी] सोने का। सुनहला। उ०—राखा आनि पाट सोनवानी। विरह वियोगिनी वैठी रानी।—जायसी (शब्द०)।

सोनह—संज्ञा पुं० [सं०] लशुन। लहसुन [को०]।

सोनहटा(पु)‡—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ण, हिं० सोन + हाट] सोनारो का वाजार। स्वर्ण हाट। सराफा। उ०—प्रचूर पौर जनपद सम्हार सम्हीन, धनहटा, सोनहटा, पनहटा, पक्वानहटा, मछहटा करेआ सुखरव कथा कहते।—कीर्ति०, पृ० ३०।

सोनहटिया‡—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वान या शुन + हाट (=हटिया)] वह वस्ती जहाँ श्वान हो। चर्मकार, मेहतर, डोम आदि का मुहल्ला या निवास। (वोल०)।

सोनहला[१]—संज्ञा पुं० [हिं० सोना + हला (प्रत्य०)] भटकटैया का काँटा। (कहार)।

विशेष—पालकी ले[जा]ति है। [स]मय जव कही रास्ते मे भटकटैया के काँटे पडते हैं, तव ... ने के लिये आगे के कहार 'सोनहुला' या 'सोनहला है' ... 'सोदर' ... छे के कहारो को सचेत करते है। ये काँटे पीले होते है। ... णाम से

सोनहला[२]—वि० [वि० स्त्री० सो... दे० सुनहला'। उ०—उसपर वहाँ के राजा के पैर की जो ...हली छाप थी।—भारतेंदु ग्र०, भा० ३, पृ० २८३। ... सह।

सोनहा—संज्ञा पुं० [सं० शुन (=कु[क्कु]र)] १ कुत्ते की जाति का एक छोटा जगली जानवर। ... —दो

विशेष—यह जानवर झुड मे रहता है और वडा हिंसक होता है। यह शेर को भी मार डालता है। कहते हैं, जहाँ यह रहता है, वहाँ शेर नही रहते। इसे 'कोगी' भी कहते

हैं। उ०—डाइन डारे सोनहा डोरे सिंह रहे वन घेरे। पाँच कुटुंब मिलि जूझन लागे बाजन बाज घनेरे।—कबीर (शब्द०)। २ शिकारी श्वान। कुत्ता। उ०—किए डोर सब सोनहा ताजी। भल भल गुरजी और सिराजी।—चित्रा०, पृ० २३।

सोनहार(पु)—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का समुद्री पक्षी। उ०—और सोनहार सोन कै डाँडी। सारदूल रूपे के कांडी।—जायसी (शब्द०)।

सोना¹—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्ण, स्वर्ण, प्रा० सोण्ण (=सोण)] १ सुंदर उज्वल पीले रंग की एक प्रसिद्ध बहुमूल्य धातु जिसके सिक्के और गहने आदि बनते हैं।

विशेष—यह खानों में या स्लेट अथवा पहाडों की दरारों में पाया जाता है। यह प्राय कंकड के रूप में मिलता है। कंकड को चूर कर और पानी का तरारा देकर धूल, मिट्टी आदि बहा दी जाती है और सोना अलग कर लिया जाता है। कभी कभी सोना विशुद्ध अवस्था में भी मिल जाता है। पर प्राय लोहे, ताँबे तथा अन्य धातुओं में मिली हुई अवस्था में ही पाया जाता है। यह सीसे के समान नरम होता है पर चाँदी, ताँबे आदि के मेल से यह कडा हो जाता है। यह बहुत वजनी होता है। भारीपन में प्लैटिनम और इरिडियम धातुओं के बाद इसी का स्थान है। यह पीटकर इतना पतला किया जा सकता है कि पारदर्शक हो जाता है। इस प्रकार का इसका बहुत पतला तार भी बनाया जा सकता है। सोने पर जंग नहीं लगता। इसपर कोई खास तेजाब असर नहीं करता। हाँ, गंधक और शोरे के तेजाब में आँच देने से यह गल जाता है। हिंदुस्तान में प्राय सभी प्रांतों में सोना पाया जाता है, पर मैसूर और हैदराबाद की खानों में अधिक मिलता है। पिछली शताब्दी में कैलिफोर्निया और आस्ट्रेलिया में भी इसकी बहुत बडी खानें मिली हैं।

सोना सब धातुओं में श्रेष्ठ माना गया है। हिंदू इसे बहुत पवित्र और लक्ष्मी का रूप मानते हैं। कमर और पैर में सोना पहनने का निषेध है। सोना कितनी ही रसौषधों में भी पडता है। वैद्यक में यह त्रिदोषनाशक तथा बलवीर्य, स्मरण शक्ति और कांतिवर्धक माना गया है।

पर्या०—स्वर्ण। कनक। कांचन। हेम। गांगेय। हिरण्य। तपनीय। चांपेय। शातकुंभ। हाटक। जातरूप। रुक्म। महारजत। भर्म्म। गैरिक। लोहवर। चामीकर। कार्तस्वर। मनोहर। तेज। दीप्तक। कर्व्वूर। कर्च्चूर। अग्निवीर्य। मुख्यधातु। भद्रधातु। भद्र। उद्धसारुक। शातकौंभ। भूरि। कल्याण। स्पर्शमणि। प्रभव। अग्नि। अग्निशिख। भास्कर। मांगल्य। आग्नेय। भरु। चंद्र। उज्वल। भृंगार। कलधौत। पिंजान। जांबव। अग्निबीज। द्रविण। अग्निभ। दीप्त। सौमजक। जांबुनद। जाबूनद। निष्क। रुग्म। अष्टापद। अपिंजर।

मुहा०—सोना कसना=परखने के लिये कसौटी पर सोने की लकीर खींचना। सोना कसवाना या कसाना=कसौटी पर सोने की जाँच कराना। परखवाना। सोने का कौर खिलाना=अत्यधिक सुखी रखना। उ०—तुम रहते ही हो तो कौन सोने का कौर खिला देते हो।—मान०, भा० ५, पृ० १६७। सोने का घर मिट्टी होना=लाख का खाक होना। सारा वैभव नष्ट होना। सोने का पानी=किसी धातु पर चढाया हुआ सोने का आब। मुलम्मा। सोने का महल उठाना=(१) अत्यंत धनी होना। (२) किसी कार्य में अत्यधिक व्यय करना। सोने का होना=बहुमूल्य होना। गुणी होना। उ०—उनके यहाँ ब्याह करने में ही हमारी पत रहेगी, देवकीनंदन सोने का भी हो तो, हमारे काम का नहीं है।—ठेठ०, पृ० ११। सोने की चिडिया=वह जिससे सदा लाभ ही लाभ होता रहे। मालदार आदमी। उ०—अम्मा दस दिन में झख मार के आप ही मिलेंगी। सोने की चिडिया को कोई छोडता है भला।—सैर०, पृ० २८। सोने की चिडिया हाथ से उड जाना या निकल जाना=किसी मालदार आदमी का चंगुल में न आना। सोने की चिडिया हाथ आना या लगना=(१) कोई ईप्सित वस्तु अकस्मात् प्राप्त होना। उ०—सुब्हान अल्ला सुब्हान अल्ला! सोने की चिडिया हाथ आई। कहा, हुजूर खुदा के लिये चिक उठवा दें।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ६८। (२) जिससे अत्यधिक लाभ हो उसका एकाएक मिल जाना। सोने की तौल तौलना=साधारण वस्तु भी सोने की तरह तौलना कि बाल बराबर भी फर्क न रहे। सोने के मोल होना=अत्यधिक मूल्य का होना। बहुमूल्य होना। सोने में घुन लगना=असंभव बात का होना। अनहोनी होना। उ०—काहू चींटी लगे पाँख, काहू यम मारे काख, सुनो है न देख्यो घुन लागो है कनक को।—हनुमन्नाटक (शब्द०)। सोने में सुगंध=किसी बहुत बढिया चीज में और अधिक विशेषता होना। सोने में सुहागा=रंग में निखार आना आना। और भी उत्कृष्ट होना। सोने से लदे रहना=(१) अत्यधिक स्वर्णभूषण पहनना। (२) ऐश्वर्य का उपभोग करना।

क्रि० प्र०—गलना।—गलाना। तपना।—तपाना।

२ अत्यंत बहुमूल्य वस्तु। बहुत महँगी चीज। ३ अत्यंत सुंदर वस्तु। उज्वल या कांतिमान् पदार्थ। जैसे,—शरीर सोना हो जाना। ४ एक प्रकार का हंस। राजहंस।

सोना²—संज्ञा पुं० मझोले कद का एक वृक्ष जो बरार और दारजिलिंग की तराइयों में होता है। कोलपार।

विशेष—इस वृक्ष में कलियाँ लगती हैं जिनका मुरब्बा बनता है। इसकी लकडी मजबूत होती है और इमारत तथा खेती के औजार बनाने के काम में आती है। चीरने के समय लकडी का रंग अंदर से गुलाबी निकलता है, पर हवा लगने से वह काला हो जाता है।

सोना³—संज्ञा स्त्री० प्राय: एक हाथ लंबी एक प्रकार की मछली जो भारत और बरमा की नदियों में पाई जाती है।

सोना⁴—क्रि० अ० [सं० शयन] १. उस अवस्था में होना जिसमें चेतन क्रियाएँ रुक जाती हैं और मन तथा मस्तिष्क दोनों विश्राम

करते हैं। नींद लेना। शयन करना। आँख लगना। २ लेटना। आराम करना।

संयो० क्रि०—जाना।

मुहा०—सोते जागते = हर घडी। हर समय।

२ शरीर के किसी अग का सुन्न होना। जैसे,—मेरे पैर सो गए। उ०—आगे किसू के क्या करे दस्ते तमादराज। वह हाथ सो गया है सिर्हाने धरे धरे।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० १६३।

विशेष—यह क्रिया प्राय एक अग को एक ही अवस्था मे कुछ अधिक समय तक रखने पर हो जाती है।

**सोनागेरू**—सज्ञा पुं० [हिं० सोना + गेरू] गेरू का एक भेद जो जो मामूली गेरु से अधिक लाल और मुलायम होता है।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यह स्निग्ध, मधुर, कसैला, नैनो को हितकर, शीतल, बलकारक, व्रणशोधक, विशद, कातिजनक तथा दाह, पित्त, कफ, रक्तविकार ज्वर, विप, विस्फोटक, वमन, अग्निदग्धव्रण, ववासीर और रक्तपित्त को नाश करनेवाला है।

पर्या०—सुवर्णगैरिक। सुरक्त। स्वर्णधातु। शिलाधातु। सध्याभ्र। वभ्रु धातु। सुरक्तक।

**सोनाचाँदी**—सज्ञा पुं० [हिं० सोना + चाँदी] धन दौलत। माल सपत्ति।

**सोनापाठा**—सज्ञा पुं० [स० शोण + हिं० पाठा] १ एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष जिसकी छाल, बीज और फल औषधि के काम आते है।

विशेष—यह वृक्ष भारत और लका मे सर्वत्र होता है। इसकी छाल चौथाई इच तक मोटी, हरापन लिए पीले रग की, चिकनी, हलकी और मुलायम होती है। काटने से इसमे से हरा रस निकलता है। लकडी पीलापन लिए सफेद रग की हलकी और खोखली होती है तथा जलाने के सिवा और किसी काम मे नही आती। पेड की टहनियो पर तीन से पाँच फुट तक लबी झुकी हुई सीकें होती है जो भीतर से पोली होती है। प्रत्येक प्रधान सीक पर पाँच पाँच गाँठें होती हैं और उन गाँठो के दोनो ओर एक एक और सीक होती है। पहली सीक की चार गाँठें सीको सहित क्रम क्रम से छोटी रहती हैं। इनमे पहली गाँठ पर तीन जोडे पत्ते, दूसरी और तीसरी गाँठ पर एक एक जोडा और चौथी गाँठ पर तीन पत्ते लगे रहते हैं। दूसरी और तीसरी सीँको पर भी इसी क्रम से पत्ते रहते है। चौथी गाँठवाली सीक पर पाँच पाँच पत्ते (दो जोडे और एक छोर पर) होते हैं। पाँचवी पर तीन पत्ते (एक जोडा और एक छोर पर) होते हैं। इसी प्रकार अत मे तीन पत्ते होते हैं। पत्ते करज के पत्ते के समान २॥ से ४॥ इच तक चौडे, लबोतरे और कुछ नुकीले होते हैं। फूल १–२ फुट लबी डडी पर २॥–३ इच लबोतरे और सिलसिलेवार आते हैं। फूलो के भीतर का रग पीलापन लिए लाल और बाहर का रग नीलापन लिए लाल होता है। फूलो मे पाँच पखडियाँ और भीतर पीले रग के पाँच केसर होते हैं। फूल बहुधा गिर जाया करते है, इसलिये जितने फूल आते हैं, उतनी फलियाँ नही लगती। फलियाँ २–२॥ फुट लबी और ३–४ इच चौड़ी, चिपटी तथा तलवार की तरह कुछ मुडी हुई टेढी नोकवाली होती हैं। इनके अदर भोजपत्र के समान तहदार पत्ते सटे रहते हैं और इन पत्तो के बीच मे छोटे, गोल और हलके बीज होते हैं। कलियाँ और कोमल फलियाँ प्राय कच्ची ही गिर जाया करती है। कार्तिक और अगहन के आरभ तक इसके वृक्ष पर फूल फल आते रहते है और शीतकाल के अत और वसत ऋतु मे फलियाँ पककर गिर जाती है और बीज हवा मे उड जाते हैं। इन बीजो के गिरने से वर्षा ऋतु मे पौधे उत्पन्न होते हैं। वैद्यक के अनुसार यह कसैला, कडुवा, चरपरा, शीतल, रुक्ष, मलरोधक, बलकारी, वीर्यवर्धक, जठराग्नि को दीपन करनेवाला तथा वात, पित्त, कफ, त्रिदोष, ज्वर, सनिपात, अरुचि, आमवात, कृमि रोग, वमन, खाँसी, अतिसार, तृपा, कोढ, श्वास और वस्ति रोग का नाश करनेवाला है। इसकी छाल, फल और बीज औपध के काम मे आते है, पर छाल का ही अधिक उपयोग होता है। इसका कच्चा फल कसैला, मधुर, हलका, हृदय और कठ को हितकारी, रुचिकर, पाचक, अग्निदीपक, गरम, कटु, क्षार तथा वात, गुल्म, कफ और ववासीर तथा कृमिरोग का नाश करनेवाला है।

पर्या०—श्योनाक। शुकनास। कट्वग। कटभर। मयूरजघ। अरलुक। प्रियजीवी। कुटन्नट।

२ इसी वृक्ष का एक और भेद जो सयुक्त प्रदेश (उत्तर प्रदेश), पश्चिमोत्तर प्रदेश, ववई, कर्नाटक, कारमडल के किनारे तथा विहार मे अधिकता से होता है और राजपूताने मे भी कही कही पाया जाता है।

विशेष—यह पेड ६० से ८० फुट तक ऊँचा होता है और पत्तेवाली सीक प्राय ८ इच से १ फुट तक लबी होती है, और कही कही सीको की लबाई २–३ फुट तक होती है। सीको पर आठ से चौदह जोडे समवर्ती पत्ते होते हैं। इसके फूल वडे और कुछ पीले होते हैं। फलियाँ ताँबे के रग की, दो इच लबी तथा चौथाई इच चौडी, गोल, दोनो ओर नुकीली और जड की ओर ऐंठी सी रहती हैं। पेड की छाल सफेद रग की होती है और गुण भी सोनापाठा—'१' के समान ही है।

पर्या०—टुटुक। दीर्घवृत। टिंटुक। कीरनाशन। पूतिवृक्ष। पूतिनारा। भूतिपुष्पा। मुनिद्रुम, आदि।

**सोनापेट**—सज्ञा पुं० [हिं० सोना + पेट ( = गर्भ) सोने की खान।

**सोनाफूल**—सज्ञा पुं० [हिं० सोना + फूल] एक प्रकार की झाडी जो आसाम और खासिया पहाडियो पर होती है। गुलावजम।

विशेष—इस झाडी की पत्तियो से एक प्रकार का भूरा रग निकलता है और इसकी छाल के रेशो से रस्सियाँ भी वनती हैं। इसे गुलावजम भी कहते हैं।

**सोनामक्खी**—सज्ञा स्त्री० [स० स्वर्णमाक्षिक] १ एक खनिज पदार्थ जो भारत मे कई स्थानो मे पाया जाता है।

विशेष—आयुर्वेद मे इसकी गणना उपधातुओ मे है। इसमे सोने का कुछ अश और गुण वर्तमान रहने के कारण इसका नाम

स्वर्णमाक्षिक पडा है। सोने के अभाव मे ओषधियो मे इसका उपयोग किया जाता है। सोने के सिवा अन्य धातुओ का समिश्रण रहने से इसमे और भी गुण आ गए हैं। उपधातु होने के कारण, यथोचित रीति से शोधन कर इसका व्यवहार करना चाहिए, अन्यथा यह मदाग्नि, बलहानि, विष्टभिता, नेत्ररोग, कोढ, गडमाला, क्षय, आध्मान, कृमि आदि अनेक रोग उत्पन्न करती है। शोधितावस्था मे यह वीर्यवर्धक, नेत्रो के लिये हितकर, स्वरशोधक, व्यवायी, कोढ, सूजन, प्रमेह, बवासीर, बस्ति, पाडुरोग, उदरव्याधि, विषविकार, कठरोग खुजली, क्षय, भ्रम, हुल्लास, मूर्छा, खाँसी, श्वास आदि रोगो का नाश करनेवाली मानी गई है।

पर्या०—स्वर्णमाक्षिक। माक्षिक। हेममाक्षिक। धातुमाक्षिक। स्वर्णवर्ण। स्वर्णाह्वय। पीतमाक्षिक। माक्षिकधातु। तापीज। मधुमाक्षिक। तीक्ष्ण। मधुधातु।

२ एक प्रकार का रेशम का कीडा।

**सोनामाखी**—सज्ञा स्त्री० [स० स्वर्णमाक्षिक] दे० 'सोनामक्खी'।

**सोनामुखी**—[स० स्वर्णमुखी] दे० 'स्वर्णपत्री'।

**सोनार**—सज्ञा पुं० [स० स्वर्णकार, प्रा० सोण्णार, सोणार] [स्त्री० सोनारिन] दे० 'सुनार'। उ०—कहाँ सोनार पास जेहि जाऊँ। देइ सोहाग करै एक ठाऊँ।—जायसी ग्र० (गुप्त) पृ० ८६।

**सोनारी**†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोनार + ई (प्रत्य०)] सुनार का काम। सोने आदि के गहने बनाने का काम।

**सोनिजरद**(पु)—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोना + फा० जर्द] दे० 'सोनजर्द'।

**सोनित**(पु)—सज्ञा पुं० [सं० शोणित] दे० 'शोणित' उ०—नव सोनित को प्यास तृपित राम सायक निकर।—मानस, ६।३२।

**सोनी**(पु)[1]—सज्ञा पुं० [हिं० सोना] सुनार। स्वर्णकार। उ०—(क) देव दिखावति कचन से तन औरन को मन तावै अगोनी। सुदरि साँचे मे दै भरि काढी सी आपने हाथ गढी विधि सोनी।—देव (शब्द०)। (ख) सुदर काढै सोधि करि सदगुरु सोनी होइ। शिवसुवर्ण निर्मल करै टाँका रहै न कोइ।—सुदर० ग्र०, भा० २, पृ० ६७३।

**सोनी**[2]—सज्ञा पुं० [देश०] १ एक जातिविशेष का नाम। २ तुन की जाति का एक वृक्ष।

**सोनेइया**—सज्ञा पु० [देश०] वैश्यो की एक जाति।

**सोनैया**—सज्ञा स्त्री० [देश०] देवदाली। घघरबेल। बदाल। विशेष दे० 'देवदाली'।

**सोन्मद, सोन्माद**—वि० [स०] उन्मादयुक्त। पागल। विक्षिप्त [को०]।

**सोप**[1]—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की छपी हुई चादर।

**सोप**[2]—सज्ञा पुं० [अ०] साबुन।

**सोप**[3]—सज्ञा पुं० [अ० स्वाब] बुहारी। झाडू। (लश०)।

**सोपकरण**—वि० [स०] साधन या उपकरण से युक्त [को०]।

**सोपाकर**—सज्ञा पु० [स०] १ व्याज सहित मूलधन। असल मै सूद। २ उपकृत व्यक्ति (को०)।

**सोपकार**[1]—वि० १ सहायताप्राप्त। उपकृत। २ लाभकर। लाभ देनेवाला। ३ उपकरण या साधन से युक्त। ४ सूद देनेवाला। जिससे सूद प्राप्त हो। सूद पर लगाया या दिया हुआ [को०]।

**सोपकार आधि**—सज्ञा स्त्री० [स०] वह धरोहर जो किसी फायदे के काम मे (जैसे रुपए का सूद पर दे दिया जाना, आदि) लगा दी गई हो।

**सोपचार**—वि० [सं०] आदर और समानपूर्वक व्यवहार करनेवाला [को०]।

**सोपत**(पु)—सज्ञा पुं० [सं० सूपपत्ति] सुबीता। सुपास। आराम का प्रबध। उ०—बन बन वागत बहुत दिनन ते कृश तनु ह्वैहैं प्यारे। करत रह्यो ह्वैहै को सोपत दूध वदन दोउ वारे।—रघुराज (शब्द०)।

क्रि० प्र०—बँधना।—बाँधना।—बैठना।—बैठाना।—लगना। लगाना।

**सोपध**—वि० [स०] १ झूठ और कपट से भरा हुआ। २ उपात्य सहित। अतिम से पूर्ववाले वर्ण के साथ [को०]।

**सोपधान**—वि० [स०] १ गद्दा आदि से युक्त। सज्जित। २ उत्तम कोटि का [को०]।

**सोपधि**[1]—वि० [स०] कपटी। झूठा। छली।

**सोपधि**[2]—क्रि० वि० झूठा मूठा। छलयुक्त या कपटपूर्ण ढग से [को०]।

**सोपधि प्रदान**—सज्ञा पुं० [स०] ऋण लेनेवाले या धरोहर रखनेवाले से किसी बहाने से ऋण की रकम बिना दिए गिरवी की वस्तु वापस ले लेना।

**सोपधिशेष**—सज्ञा पु० [सं०] वह व्यक्ति जिसमे छल, कपट शेष हो। वह व्यक्ति जो निश्छल न हो [को०]।

**सोपप्लव**—वि० [स०] १ उपप्लव अर्थात् बाढ, उपद्रव आदि से युक्त। २ ग्रहण से युक्त [को०]।

**सोपाक**—सज्ञा पुं० [स०] १ वह व्यक्ति जो चाडाल पुरुष और पुक्कसी के गर्भ से उत्पन्न हुआ हो। चडाल। श्वपाक। २ काष्ठौषधि बेचनेवाला। वनौषधि बेचनेवाला।

**सोपाधि**—वि० [स०] १ परिणाम एव इयत्ता से युक्त। नाम और गुणयुक्त। सीमित। सगुण। सीमा या गुण विशिष्ट। उ०—व्यवहार पक्ष मे शकराचार्य ने जिस उपासनागम्य ब्रह्म का अवस्थान किया है वह सोपाधि या सगुण ब्रह्म है, अव्यक्त पारमार्थिक सत्ता नही।—चितामणि भा० २, पृ० ८०। २ कुछ विशिष्टता या खासियत रखनेवाला। ३ विशिष्ट। प्रधान। श्रेष्ठ (को०)।

**सोपाधिक**—वि० [स०] [वि० स्त्री० सोपाधिकी] दे० 'सोपाधि'। उ०—किंतु यह सब व्यापार सोपाधिक आकार ग्रहण करने पर ही सभव है।—सपूर्णा० अभि० ग्र०, पृ० ११२।

**सोपान**—सज्ञा पुं० [स०] १ सीढी। जीना। २ जैनो के अनुसार मोक्षप्राप्ति का उपाय।

यौ०—सोपानकूप = वह कुआँ जिसमे सीढियाँ बनी हैं। सोपानपथ, सोपानपथ, सोपानपद्धति, सोपानपरंपरा = सीढियो का क्रम या सिलसिला। जीना। सापानमार्ग = जीना। सोपानमाला = चक्करदार सीढियाँ, जो प्राय बुर्ज, मीनार आदि मे होती है।

सोपानक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोने के तार मे पिरोई हुई मोतियो की माला। २ दे० 'सोपान'।

यौ०—सोपानक पद्धति = सीढियो का क्रम, सिलसिला।

सोपानिक—वि० [सं०] सोपान से युक्त। सीढियो से युक्त। उ०—सरयू तीर हेम सोपानित सब थल करहिं प्रकासा।—रघुराज (शब्द०)।

सोपारी‡—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुपारी] दे० 'सुपारी'।

सोपाश्रय¹—वि० [सं०] उपाश्रय या अवलंब से युक्त।

सोपाश्रय²—संज्ञा पुं० योग का एक आसन [को०]।

सोपासन—वि० [सं०] १ उपासनायुक्त। २ जो पवित्र अग्नि से युक्त हो। होमाग्नियुत।

सोपि, सोपी—वि० [सं० स + अपि, सोऽपि] १ वही। उ०—आकर चारि जीव जग अहही। कासी मरत परम पद लहही। सोपि राम महिमा मुनिराया। सिव उपदेश करत करि दाया।—तुलसी (शब्द०)। २ वह भी। उ०—सब ते परम मनोहर गोपी। नदनंदन के नेह मेह जिनि लोक लीक लोपी। हरि कुबजा के रंगहि राचे तदपि तजी सोपी। तदपि न तजै भजै निसि वासर नैकहु न कोपी।—सूर (शब्द०)।

सोफ—संज्ञा पुं० [अ० सोफ] दावात मे डालनेवाला कपडा। उ०—मन मसिदानी साँच की स्याही, सुरति सोफ भरि डोरी।—धरनी० बानी०, पृ० ३।

सोफता—संज्ञा पुं० [सं० सुविधा] १ एकात स्थान। निराली जगह। उ०—(क) इनका मन किसी और बात मे लगा हुआ है, तुम कडो की बात फिर कभी सोफते मे पूछ लेना।—श्रद्धाराम (शब्द०)। (ख) वह उसे सोफते मे ले गया। २ रोग आदि मे कुछ कमी होना।

सोफा—संज्ञा पुं० [अ०] लबी, दो तीन व्यक्तियो के बैठने योग्य, प्राय गद्दीदार, कुरसी।

सोफियाना—वि० [अ० सूफी + फा० इयाना] (प्रत्य०)] १ सूफियो का। सूफी सबधी। २ जो देखने मे सादा पर बहुत भला लगे। जैसे,—सोफियाना कपडा, सोफियाना ढग।

विशेष—सूफी लोग प्राय बहुत सादे, पर सुदर ढग से रहते थे, इसी से इस शब्द का इस अर्थ मे व्यवहार होने लगा।

सोफी—संज्ञा पुं० [फा० सूफी] स्त्री० सोफनि, सोफिन] दे० 'सूफी'। उ०—दादू, सोइ जोगी सोइ जगमा, सोइ सोफी सोइ सेख। जोगिणि ह्वै जोगी गहे, सोफणि ह्वै करि सेख।—दादू० बानी, पृ० २३९।

सोब—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सोप'।

सोबरन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्ण] दे० 'सुवर्ण'। उ०—उदित अँधेरी मे आज भृगु है, कि जिनमे आभा है सोबरन की।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ८८९।

सोबरि, सोबरी†—संज्ञा स्त्री० [सं० सूति + गृह] सूतिकागृह। सौरी। उ०—आवौ, आवौ, सासु मेरी आवौ, मेरी सोबरि के बीच चरुआ धरावौ।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ६१३।

सोब्रन†, सोब्रन्न(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्ण, स्वर्ण] दे० 'सुवर्ण'।

सोभ(पु)¹—संज्ञा स्त्री० [सं० शोभा] उ०—(क) अग अग आनँद उमगि उफनत बैनन माझ। सखी सोभ सब बसि भई मनो कि फूली साँझ।—पृ० रा०, १४।५५। उ०—अति सुदर शीतल सोभ बसै। जहँ रूप अनेकन लोभ लसै।—केशव (शब्द०)।

सोभ²—संज्ञा पुं० [सं०] गधर्वों के नगर का नाम।

सोभन—संज्ञा पुं०, वि० [सं० शोभन] दे० 'शोभन'।

सोभना(पु)†—क्रि० अ० [सं० शोभन] सोहना। शोभित होना। उ०—(क) सिधु मे बडवाग्नि की जनु ज्वाल माल विराजई। पद्मरागनि सो किधौ दिवि धूरि पूरित सोभई।—केशव (शब्द०)। (ख) कुडल सुदर सोभिजै स्याम गात छबि दान।—केशव (शब्द०)।

सोभनीक—वि० [सं० शोभन] शोभायुक्त। सुदर। दे० 'शोभित'। उ०—और काहू रति कै स्वरूप होइ सोभनीक, ताहू कौ तौ देखि करि निकट बुलाइए।—सुदर ग्र०, भा० २, पृ० ४८०।

सोभर—संज्ञा पुं० [सं० सूतिगृह ?] वह कोठरी या कमरा जिसमे स्त्रियाँ प्रसव करती है। सौरी। जच्चाखाना। सूतिकागार।

सोभरि—संज्ञा पुं० [सं०] एक वैदिक ऋषि।

सोभाजन—संज्ञा पुं० [सं० सोभाञ्जन] दे० 'शोभाजन'।

सोभा(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शोभा, प्रा० सोभा] दे० 'शोभा'। उ०—(क) सब सोभा ससि सानि कै साँची इछिनि एक।—पृ० रा०, १४।५६। (ख) राधा दामिनि के सँग सोभा सरस्यो करै।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २०१।

सोभाकारी—वि० [सं० शोभाकर] जो देखने मे अच्छा हो। सुदर। बढिया। उ०—शीश पर धरे जटा मानौ रूप कियो त्रिपुरारि। तिलक ललित ललाट केसर बिंद सोभाकारि।—सूर (शब्द०)।

सोभायमान—वि० [सं० शोभायमान] दे० 'शोभायमान'।

सोभार—वि० [सं० स (= सह) + हिं० + उभार] उभार के साथ। उभरा हुआ। उ०—मुक्त नभ वेणी मे सोभार, सुहाती रक्त पलाश समान।—गुजन, पृ० ४६।

सोभित(पु)—वि० [सं० शोभित] दे० 'शोभित'।

सोभिल(पु)†—वि० [सं० शोभिल, प्रा० सोहिल्ल] शोभायुक्त। शोभित। उ०—गुजत ग्राम सोभिल कुँआरि। तिहि हरत हरनि मनमत्थ रारि।—पृ० रा०, १४।९७।

सोम—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राचीन काल की एक लता का नाम।

विशेष—इस लता का रस पीले रग का और मादक होता था और इसे प्राचीन वैदिक ऋषि पान करते थे। इसे पत्थर से कुचल

कर रस निकालते थे और वह रस किसी ऊनी कपडे मे छान लेते थे। यह रस यज्ञ मे देवताओ को चढाया जाता था और अग्नि मे इसकी आहुति भी दी जाती थी। इसमे दूध या मधु भी मिलाया जाता था। ऋक् सहिता के अनुसार इसका उत्पत्ति स्थान मूजवान पर्वत है, इसी लिये इसे 'मौजवत्' भी कहते थे। इसी सहिता के एक दूसरे सूक्त मे कहा गया है कि श्येन पक्षी ने इसे स्वर्ग से लाकर इद्र को दिया था। ऋग्वेद मे सोम की शक्ति और गुणो की बडी स्तुति है। यह यज्ञ की आत्मा और अमृत कहा गया है। देवताओ को यह परम प्रिय था। वेदो मे सोम का जो वर्णन आया है, उससे जान पडता है कि यह बहुत अधिक बलवर्धक, उत्साहवर्धक, पाचक और अनेक रोगो का नाशक था। वैदिक काल मे यह अमृत के समान बहुत ही दिव्य पेय समझा जाता था, और यह माना जाता था कि इसके पान से हृदय से सब प्रकार के पापो का नाश तथा सत्य और धर्मभाव की वृद्धि होती है। यह सब लताओ का पति और राजा कहा गया है। आर्यो की ईरानी शाखा मे भी इस लता के रस का बहुत प्रचार था। पर पीछे इस लता के पहचाननेवाले न रह गए। यहाँ तक कि आयुर्वेद के सुश्रुत आदि आचार्यों के समय मे भी इसके सबध मे कल्पना ही कल्पना रह गई जो सोम (चद्रमा) शब्द के आधार पर की गई। पारसी लोग भी आजकल जिस 'होम' का अपने कर्मकाड मे व्यवहार करते हैं, वह असली सोम नही है। वैद्यक मे सोमलता की गणना दिव्यौषधियो मे है। यह परम रसायन मानी गई है और लिखा गया है कि इसके पद्रह पत्ते होते हैं जो शुक्लपक्ष मे—प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक—एक एक करके उत्पन्न होते है और फिर कृष्ण पक्ष मे—प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक—पद्रह दिनो मे एक एक करके वे सब पत्ते गिर जाते हैं। इस प्रकार अमावस्या को यह लता पत्रहीन हो जाती है।

पर्या०—सोमवल्ली। सोमा। क्षीरी। द्विजप्रिया। शणा। यज्ञश्रेष्ठा। धनुलता। सोमाह्वी। गुल्मवल्ली। यज्ञवल्ली। सोमक्षीरा। यज्ञाह्वा।

२ एक प्रकार की लता जो वैदिक काल के सोम से भिन्न है।

विशेष—यह दूसरी सोम लता दक्षिण की सूखी पथरीली जमीन मे होती है। इसका क्षुप झाडदार और गाँठदार तथा पत्रहीन होता है। इसकी शाखा राजहस के पर के समान मोटी और हरी होती है और दो गाँठो के बीच की शाखा ४ से ६ इच तक लबी होती है। इसके फूल ललाई लिए बहुत हलके रग के होते हैं। फलियाँ ४-५ इच लबी और तिहाई इच गोल होती हैं। बीज चिपटे और ¼ से ½ इच तक लबे होते है।

३ वैदिक काल के एक प्राचीन देवता जिनकी ऋग्वेद मे बहुत स्तुति की गई है। इद्र और वरुण की भाँति इन्हे मानवी रूप नही दिया गया है।

विशेष—ये सूर्य के समान प्रकाशमान, बहुत अधिक वेगवान्, जेता, योद्धा और सबको सपत्ति, अन्न तथा गौ, बैल आदि देनेवाले माने जाते थे। ये इद्र के साथ उसी के रथ पर बैठकर लडाई मे जाते थे। कही कही ये इद्र के सारथी भी कहे गए है। आर्यो की ईरानी शाखा मे इनकी पूजा होती थी और अवस्ता मे इनका नाम 'हओम' या 'होम' आया है।

४ चद्रमा। ५ सोमवार। ६ सोमरस निकालने का दिन। ७ कुवेर। ८ यम। ९ वायु। १० अमृत। ११ जल। १२. सोमयज्ञ। १३ एक बानर का नाम। १४ एक पर्वत का नाम। १५ एक प्रकार की ओषधि। १६ स्वर्ग। आकाश। १७ अष्ट वसुओ मे से एक। १८ पितरो का एक वर्ग। १९ माँड। २० कांजी। २१ हनुमत के अनुसार मालकोश राग के एक पुत्र का नाम। (सगीत)। २२ विवाहित पति।—सत्यार्थप्रकाश। २३ एक बहुत बडा ऊँचा पेड।

विशेष—इस पेड की लकडी अदर से बहुत मजबूत और चिकनी निकलती है। चीरने के बाद इसका रग लाल हो जाता है। यह प्राय इमारत के काम मे आती है। आसाम मे इसके पत्तो पर मूँगा रेशम के कीडे पाले जाते हैं।

२४ एक प्रकार का स्त्रीरोग। सोमरोग। २५ यज्ञद्रव्य। यज्ञ की सामग्री। २६ सुग्रीव (को०)। २७ (पदात मे) श्रेष्ठ। उत्कृष्ट। प्रधान। जैसे, नृसोम।

**सोम²**—सज्ञा पुं० [स० सोमन्] १ वह जो सोमरस चुआता या बनाता हो। २ सोमयज्ञ करनेवाला। ३ चद्रमा।

**सोमक**—सज्ञा पुं० [सं०] १ एक ऋषि का नाम। २ एक राजा का नाम। ३ भागवत के अनुसार कृष्ण के एक पुत्र का नाम। ४ द्रुपद वश या इस वश का कोई राजा। ५ स्त्रियो का सोम नामक रोग। ६ एक देश या जाति। ७ सहदेव के एक पुत्र का नाम।

**सोमकन्या**—सज्ञा स्त्री० [सं०] चद्र या सोम की पुत्री (को०)।

**सोमकर**—सज्ञा पुं० [स० सोम+कर] चद्रमा की किरण। उ०—मधुर प्रिया घर सोमकर माखन दाख समान। बालक बातै तोतरी कवि कुल उक्ति प्रमान।—(शब्द०)।

**सोमकर्म**—सज्ञा पुं० [सं० सोमकर्मन्] सोम प्रस्तुत करने की क्रिया। सोम रस तैयार करना।

**सोमकलश**—सज्ञा पुं० [स०] वह कलश जो सोमयुक्त हो। सोम का घडा (को०)।

**सोमकल्प**—सज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार २१वें कल्प का नाम।

**सोमकात¹**—सज्ञा पुं० [स० सोमकान्त] चद्रकात मणि।

**सोमकात²**—वि० १ चद्रमा के समान प्रिय या सुदर। २ जिसे चद्रमा प्रिय हो।

**सोमकाम¹**—वि० [स०] सोमपान करने का इच्छुक। सोमकामी।

**सोमकाम²**—सज्ञा पुं० सोमपान करने की इच्छा।

**सोमकामी**—वि०, सज्ञा पुं० [सं० सोमकामिन्] दे० 'सोमकाम' (को०)।

**सोमकीर्ति**—सज्ञा पुं० [सं०] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

सोमकुल्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] मार्कंडेय पुराण के अनुसार एक नदी का नाम।

सोमकेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १ वामन पुराण के अनुसार एक राजर्षि का नाम जो भरद्वाज के शिष्य थे। २ सोमक जाति या देश का राजा।

सोमक्रतवीय—संज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम।

सोमक्रतु—संज्ञा पुं० [सं०] सोमयज्ञ।

सोमक्रयण—संज्ञा पुं० [सं०] सोम के मूल्य पर कार्य करनेवाला (को०)।

सोमक्रयणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोममूल्य के रूप मे प्राप्त गो।

सोमक्षय—संज्ञा पुं० [सं०] अमावस्या तिथि, जिसमे चद्रमा के दर्शन नही होते।

सोमक्षीरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोमवल्ली। सोमराजी। वकुची।

सोमक्षीरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वकुची। सोमवल्ली।

सोमखडा—संज्ञा स्त्री० [सं० सोमखण्डा] वकुची। सोमवल्ली।

सोमखड्डक—संज्ञा पुं० [सं०] नेपाल के एक प्रकार के शैव साधु।

सोमगधक—संज्ञा पुं० [सं० सोमगन्धक] रक्त पद्म। लाल कमल।

सोमगति(पु)†—वि० [अ० शूम, हिं० सूम] सूम का आचरण करनेवाला। कृपण। उ०—अजा कठ कुच पै नही क्या पीवै दुहि ग्वाल। ज्यो रज्जव सिख सोमगति गुरु भेपा वेहाल।—रज्जव० वानी, पृ० १४।

सोमगर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम।

सोमगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वकुची। सोमराजी। सोमवल्ली।

सोमगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत के अनुसार एक पर्वत का नाम। २ मेरुज्योति। ३ एक आचार्य का नाम।

सोमगृष्टिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पेठा। कुष्माड लता।

सोमगोपा संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि।

सोमग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १ चद्रमा का ग्रहण। २ घोडो का एक ग्रह जिससे ग्रस्त होने पर वे काँपा करते हैं। ३ सोमपात्र। सोम रस का पात्र (को०)।

सोमग्रहण—संज्ञा पुं० [सं०] १ चद्रमा का ग्रहण। चद्रग्रहण। २ वह जो सोमरस को ग्रहण या धारण करे (को०)।

सोमघृत—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रीरोगो की एक औषध।

विशेष—इसके वनाने की विधि इस प्रकार है—सफेद सरसो, वच, ब्राह्मी, शखाहुली, पुनर्नवा, दूधी (क्षीर काकोली) खिरैटी, कुटकी, खभारी के फल (जरिश्क), फालसा, दाख, अनतमूल, काला अनतमूल, हलदी, पाठा, देवदारु, दालचीनी, मुलैठी, मजीठ, त्रिफला, फूल प्रियगु, अडूसे के फूल, हुरहुर, सोचर नमक और गेरू ये सब मिलाकर एक सेर घृतपाक विधि के अनुसार चार सेर गौ के घी मे पाक करना चाहिए। गर्भवती स्त्री को दूसरे महीने से छह महीने तक इसका सेवन कराया जाता है। इससे गर्भ और योनि के समस्त दोषो का निवारण होता है, रजवीर्य शुद्ध होता है और स्त्री वलिष्ठ तथा सुदर सतान उत्पन्न करती है। पुरुषो को भी दूषित वीर्य की शुद्धि के लिये यह दिया जा सकता है।

सोमचमस—संज्ञा पुं० [सं०] सोम पान करने का पात्र।

सोमज¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोम का पुत्र, वुध ग्रह। २ दूध।

सोमज²—वि० चद्रमा से उत्पन्न।

सोमजाजी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सोमयाजिन्] दे० 'सोमयाजी'। उ०—व्याध अपराध की साध राखी कौन ? पिंगला कौन मति भक्ति भेई। कौन धौ सोमजाजी अजामिल अधम ? कौन गजराज धौं वाजपेई।—तुलसी (शब्द०)।

सोमतीर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] एक तीर्थ का नाम जिसका उल्लेख महाभारत मे है। इसे प्रभास क्षेत्र भी कहते है।

सोमदर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] एक यक्ष का नाम। (बौद्ध)।

सोमदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रामायण के अनुसार एक गधर्वी का नाम। २ गधपलाशी। कपूरकचरी।

सोमदिन—संज्ञा पुं० [सं० सोम + दिन] सोमवार। चद्रवार। उ०—रस गोरस खेती सकल विप्र काज सुभ साज। राम अनुग्रह सोम दिन प्रमुदित प्रजा सुराज।—तुलसी (शब्द०)।

सोमदेव—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोम देवता। २ चद्रमा देवता। ३ कथासरित्सागर के रचयिता का नाम जो काश्मीर मे ११वी शताब्दी मे हुए थे।

सोमदेवत—वि० [सं०] जिसके देवता सोम हो।

सोमदेवत्य—वि० [सं०] दे० 'सोमदेवत'।

सोमदैवत—संज्ञा पुं० [सं०] मृगशिरा नक्षत्र।

सौमदैवत्य—वि० [सं०] दे० 'सोमदेवत'।

सोमधान—वि० [सं०] जिसमे सोम हो। सोमयुक्त।

सोमधारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आकाश। आसमान। २ स्वर्ग।

सोमधेय—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद और जाति।

सोमनदी—संज्ञा पुं० [सं० सोमनन्दिन्] १. महादेव के एक अनुचर का नाम। २ एक प्राचीन वैयाकरण का नाम।

सोमनदीश्वर—संज्ञा पुं० [सं० सोमनन्दीश्वर] शिव जी के एक लिंग का नाम।

सोमन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सौमन] एक प्रकार का अस्त्र। उ०—तथा पिशाच अस्त्र अरि मोहन लेहु राज दुलहेटे। तामस सोमन लेहु वार बहु शत्रुन को दरभेटे। —रघुराज (शब्द०)।

सोमनस(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सौमनस्य] दे० 'सौमनस्य'। उ०—पारिभाद्र सोमनस अरु अविज्ञात सुरवर्ष। रमणक अप्याजन सहित देउ सुरोवन हर्ष।—केशव (शब्द०)।

सोमनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रसिद्ध द्वादश ज्योतिर्लिंगो मे से एक। २ काठियावाड के पश्चिम तट पर स्थित एक प्राचीन नगर जहाँ उक्त ज्योतिर्लिंग का मदिर है।

विशेष—इतिहासज्ञो के अनुसार इस मदिर के विपुल धन, रत्न की प्रसिद्धि सुनकर सन् १०२४ ई० मे महमूद गजनवी ने इस-

पर चढाई की और यहाँ से करोडों की सपत्ति उसके हाथ लगी। मूर्ति तोडने पर उसमे से भी बहुमूल्य हीरे पन्ने आदि रत्न निकले थे। आस पास के लोगो ने महमूद के काम मे बाधा दी थी, पर वे सफल नही हुए। अनतर वह देवशर्मा नामक एक ब्राह्मण को वहाँ का शासक नियुक्त कर गजनी लौट गया। चौलुक्यराज दुर्लभराज ने उसमे सोमनाथ का उद्धार किया। इसके बाद राठौरो ने उसपर अधिकार जमाया। पर सन् १३०० मे यह फिर मुसलमानो के अधिकार मे आ गया। सन् १६४८ के पहले तक यह जूनागढ के नवाब वश के शासनाधीन रहा। इसे सोमनाथ पट्टन या सोमनाथ पत्तन भी कहते हैं। सन् १६४८ मे देश की स्वतत्रता घोषित होने पर विभिन्न देशी राज्यो की तरह यह भी भारत सघ मे समिलित कर लिया गया।

**सोमनाथरस**—सज्ञा पुं० [स०] वैद्यक मे एक रसौषध जिसके सेवन से प्रमेह की अनेक प्रकार की व्याधियाँ दूर होती हैं।

**विशेष**—इसके बनाने की विधि इस प्रकार है—फरहद (पारिभद्र) के रस मे शोधा हुआ पारा दो तोले और मूसाकानी के रस मे शोधी हुई गधक दो तोले, दोनो की कज्जली कर उसमे आठ तोले लोहा मिलाकर घीकुआर के रस मे घोटते हैं। फिर अभ्रक, वग, खपरिया, चाँदी, सोनामक्खी तथा सोना एक एक तोला मिलाकर घीकुआर के रस मे भावना देते है। इसकी दो दो रत्ती की गोली बनाई जाती है जो शहद के साथ खाई जाती है। इसके सेवन से सब प्रकार के प्रमेह और सोमरोग का निवारण होता है।

**सोमनेत्र**—वि० [स०] १ सोम जिसका नेता या रक्षक हो। २ सोम के समान नेत्रोवाला।

**सोमप¹**—वि० [सं०] १ जिसने यज्ञ मे सोमरस का पान किया हो। २. सोमरस पीनेवाला। सोमपायी। सोमपा।

**सोमप²**—सज्ञा पुं० १ सोमयज्ञ करनेवाला। २ विश्वेदेवा मे से एक का नाम। ३ स्कद के एक पारिषद का नाम। ४ हरिवश के अनुसार एक असुर का नाम। ५ एक ऋषिवश का नाम। ६ पितरो की एक श्रेणी। ७ वृहत्सहिता के अनुसार एक जनपद का नाम।

**सोमपति**—सज्ञा पुं० [सं०] सोम के स्वामी इद्र का एक नाम।

**सोमपत्र**—सज्ञा पुं० [स०] कुश जाति की एक घास। डाभ। दर्भ।

**सोमपद**—सज्ञा पुं० [सं०] १ हरिवश के अनुसार एक लोक का नाम। २ एक तीर्थ का नाम जिसका उल्लेख महाभारत मे है।

**सोमपरिश्रयण**—सज्ञा पुं० [सं०] सोम निचोडने का कपडा। वह वस्त्र जिससे सोम निचोडते हैं [को०]।

**सोमपर्याणहन**—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सोमपरिश्रयण'।

**सोमपर्व**—सज्ञा पुं० [स० सोमपर्वन्] सोम उत्सव का काल। सोमपान करने का उत्सव या पुण्यकाल।

**सोमपा¹**—वि० [सं०] १ जिसने यज्ञ मे सोमपान किया हो। २ सोमपान करनेवाला। सोमपायी।

**सोमपा²**—सज्ञा पुं० १ सोमयज्ञ करनेवाला। २ पितरो की, विशेषकर ब्राह्मणो के पितृपुरुषो की एक श्रेणी। ३ ब्राह्मण।

**सोमपात्र**—सज्ञा पुं० [स०] १ सोम रखने का वरतन। २ सोम पीने का वरतन।

**सोमपान**—सज्ञा पु० [सं०] सोम पीने की क्रिया। सोम पीना।

**सोमपायी**—वि० [स० सोमपायिन्] [वि० स्त्री० सोमपायिनी] सोम पीनेवाला। सोमपान करनेवाला।

**सोमपाल**—सज्ञा पु० [स०] १ सोम का रक्षक। २ गधर्व, जो सोम की रक्षा करनेवाले माने गए हैं।

**सोमपावन**—वि० [स०] सोमपान करनेवाला। जो सोमपान करता हो।

**सोमपिती**—सज्ञा स्त्री० [स० सोम + पात्री] रगडा हुआ चदन रखने का वरतन।

**सोमपीति**—सज्ञा स्त्री० [स०] १. सोमपान। २ सोमयज्ञ।

**सोमपीती**—सज्ञा पु० [स० सोमपीतिन्] सोमपान करनेवाला। सोम पीनेवाला।

**सोमपीथ**—सज्ञा पुं० [स०] सोमपान। सोम पीने की क्रिया।

**सोमपीथी**—वि० [स० सोमपीथिन्] सोमपान करनेवाला। सोमपायी।

**सोमपुत्र**—सज्ञा पु० [सं०] सोम या चद्रमा के पुत्र। वुध।

**सोमपुर**—सज्ञा पु० [स०] १ सोम का नगर। २ पाटलिपुत्र का एक नाम [को०]।

**सोमपुरुष**—सज्ञा पुं० [स०] १ सोम का रक्षक। २ सोम का अनुचर या दास।

**सोमपृष्ठ**—वि० [सं०] (पर्वत) जिस पर सोम हो।

**सोमपेय**—सज्ञा पु० [स०] १ एक यज्ञ जिसमे सोमपान किया जाता था। २ सोमपान। सोम पीने की क्रिया।

**सोमप्रदोष**—सज्ञा पु० [स०] सोमवार को किया जानेवाला एक व्रत। सोमव्रत।

**विशेष**—इस व्रत मे दिन भर उपवास करके सध्या को शिव जी की पूजा कर भोजन किया जाता है। स्कदपुराण मे लिखा है कि यह व्रत मनस्कामना पूर्ण करनेवाला है। आजकल लोग प्राय श्रावण के सोमवारो को ही यह व्रत करते है।

**सोमप्रभ**—वि० [सं०] सोम या चद्रमा के समान प्रभावाला। कातिवान्।

**सोमप्रवाक**—सज्ञा पु० [स०] सोमयज्ञ मे घोषणा करनेवाला।

**सोमबधु**—सज्ञा पुं० [स० सोमबन्धु] १ कुमुद। २ सूर्य। ३ वुध।

**सोमबसी**—सज्ञा पु० [स० सोमवशीय] दे० 'सोमवशीय'। उ०—परी भीर सोमेस सोमवसी सहाय भय। मार मार उच्चरत सेन चतुरग हयगय।—पृ० रा०, १।६५६।

**सोमबेल**—सज्ञा स्त्री० [स० सोम + हिं० वेल] गुलचाँदनी या चाँदनी का पौधा।

**सोमभक्ष**—सज्ञा पुं० [स०] सोम का पीना। सोमपान।

**सोमभवा**—सज्ञा स्त्री० [स०] नर्मदा नदी का एक नाम।

सोमभू¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ चद्रमा के पुत्र बुध। २ चौथे कृष्ण वासुदेव का नाम। (जैन)।

सोमभू²—वि० १ सोम से उत्पन्न। २ चद्रवशीय।

सोमभृत—वि० [सं०] सोम लानेवाला।

सोमभोजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ गरुड के एक पुत्र का नाम। २ सोमपान।

सोममख—संज्ञा पुं० [सं०] सोमयज्ञ।

सोममद—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोम का नशा। २ सोम का रस जिसके पीने से नशा होता है।

सोमयज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सोमयाग'।

सोमयाग—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक त्रैवार्षिक यज्ञ जिसमे सोमरस पान किया जाता था।

सोमयाजी—संज्ञा पुं० [सं० सोमयाजिन्] वह जो सोमयाग करता हो। सोमयाग करनेवाला।

सोमयोगी—वि० [सं० सोमयोगिन्] जिसमे सोम या चद्र का योग हो। चद्रमा के योगवाला।

सोमयोनि—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवता। २ ब्राह्मण। ३ पीत चदन। हरिचदन।

सोमरक्ष—वि० [सं०] सोम का रक्षक।

सोमरक्षी—वि० [सं० सोमरक्षिन्] दे० 'सोमरक्ष'।

सोमरस—संज्ञा पुं० [सं०] सोमलता का रस। विशेष दे० 'सोम'।

यौ०—सोमरसोद्भव = दुग्ध। दूध।

सोमरा¹—संज्ञा पुं० [देश०] १. जुते हुए खेत का दुबारा जोता जाना। दो चरस। २ समचतुर्भुज खेत का चौडाई मे जोता जाना।

सोमराग—संज्ञा पुं० [सं०] सगीत मे एक प्रकार का राग।

सोमराज—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रमा।

सोमराजसुत—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रमा का पुत्र बुध।

सोमराजिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सोमराजी'।

सोमराजी¹—संज्ञा पुं० [सं० सोमराजिन्] वाकुची। बकुची। विशेष दे० 'बकुची'।

सोमराजी²—संज्ञा स्त्री० १ बकुची। २ एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे छह वर्ण होते हैं। यह दो यगण का वृत्त है। इसे शखनारी भी कहते हैं। उ०—चमू वाल देखो सुरगी सुभेखो। धरे याहि ग्राजी। कहैं सोमराजी।—छद प्रभाकर (शब्द०)।

सोमराजी तैल—संज्ञा पुं० [सं०] कुष्ठादि चर्मरोगो की एक तैलौषध।

विशेष—इस औषध के बनाने की विधि इस प्रकार है—बकुची का काढा, हलदी, दारुहलदी, सफेद सरसो, कुट, करज, पँवार के बीज, अमलतास के पत्ते, ये सब चीजे एक सेर लेकर चार सेर सरसो के तेल और सोलह सेर पानी मे पकाते है। इस तेल के लगाने से अठारहो प्रकार के कोढ, नासूर, दुष्ट व्रण, नीलिका व्यग, फुसी, गभीरसज्ञक वातरक्त, कड्डु, कच्छु, दाद और खाज का निवारण होता है। इसका एक और भेद होता है जो महासोमराजी तैल कहलाता है। यह कुष्ठ रोग के लिये परम उपकारी माना गया है। इसके बनाने की विधि इस प्रकार है—चित्रक, कलियारी, सोठ, कुट, हलदी, करज, हरताल, मैनसिल, विष्णुक्राता, आक, कनेर, छतिवन, गाय का गोबर, खैर, नीम के पत्ते, मिर्च, रसौदी ये सब चीजें दो दो तोले लेकर इनका काढा कर १२॥ सेर बकुची के काढे और ६४ सेर पानी और १६ सेर गोमूत्र मे पकाते हैं।

सोमराज्य—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रलोक।

सोमराष्ट्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जनपद का नाम।

सोमरोग—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रियो का एक रोग।

विशेष—इस रोग मे वैद्यक के अनुसार अति मैथुन, शोक, परिश्रम आदि कारणो से शरीरस्थ जलीय धातु क्षुब्ध होकर योनि मार्ग से निकलने लगती है। यह पदार्थ श्वेत वर्ण, स्वच्छ और गधरहित होता है। इसमे कोई वेदना नही होती, पर वेग इतना प्रवल होता है कि सहा नही जाता। रोगिणी अत्यत कृश और दुर्बल हो जाती है। रग पीला पड जाता है। शरीर शिथिल और अकर्मण्य हो जाता है। सिर मे दर्द हुआ करता है। गला और तालू सूखा रहता है। प्यास बहुत लगती है। खाना पीना नही रुचता और मूर्छा आने लगती है। यह रोग पुरुषो के बहुमूत्र रोग के सदृश होता है।

सोमर्षि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सोमल—संज्ञा पुं० [देश०] सखिया का एक भेद जिसे सफेद सखल भी कहते हैं।

सोमलता¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गिलोय। गुडूची। २ ब्राह्मी। ३ सोम नाम की वैदिक लता। ४ गोदा या गोदावरी नदी का नाम (को०)।

सोमलतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गिलोय। गुडूची। गुरुच। २ दे० 'सोम'।

सोमलदेवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] राजतरगिणी के अनुसार एक राजपुत्री का नाम।

सोमलोक—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रमा का लोक। चद्रलोक।

सोमवश—संज्ञा पुं० [सं०] १. युधिष्ठिर का एक नाम। २ चद्रवश। उ०—सोमदत्त भरि जोम चलेउ भट सोमवश वर। पुलकि रोमवल तोम महत मुदरोम रोमधर।—गिरिधर (शब्द०)।

सोमवशीय—वि० [सं०] १ चद्रवश मे उत्पन्न। २ चद्रवश सबधी। चद्रवश का।

सोमवश्य—वि० [सं०] दे० सोमवशीय'।

सोमवत्—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सोमवती] १ सोमयुक्त। चद्रयुक्त। २ चद्रमा के समान।

सोमवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोमवार को पडनेवाली अमावस्या। सोमवती अमावस्या।

**सोमवती अमावस्या**—संज्ञा स्त्री० [स०] सोमवार को पडनेवाली अमावस्या जो पुराणानुसार पुण्यतिथि मानी जाती है। प्राय लोग इस दिन गगास्नान और दान पुण्य करते हैं। विशेषत स्त्रियाँ इस तिथि पर वासुदेव का पूजन और उनकी १०८ परिक्रमा किसी फल, मिष्ठान्न, अन्न आदि से करती है।

**सोमवती तीर्थ**—संज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

**सोमवचस्¹**—संज्ञा पु० [स०] १ विश्वेदेवाओं मे से एक का नाम। २ हरिवंश के अनुसार एक गधर्व का नाम।

**सोमवर्चस्²**—वि० सोम के समान तेजयुक्त।

**सोमवल्क**—संज्ञा पु० [स०] १ सफेद खैर। श्वेत खदिर। २ कायफल। कटफल। ३ करज। ४ रीठा करज। गुच्छपुष्पक। ५ बबूर। बबूर।

**सोमवल्लरी**—संज्ञा स्त्री० [स०] १ ब्रह्मा। २ एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे रगण, जगण, रगण, जगण और रगण होते हैं। इसे 'चामर' और 'तूण' भी कहते हैं। उ०—रोज रोज राधिका सखीन सग आइकै। खेल रास कान्ह सग चित्त हर्ष लाइकै। बाँसुरी समान बोल सप्त ग्वाल गाइकै। कृष्णही रिझावही सु चामरै डुलाइकै। —छद प्रभाकर (शब्द०)। ३ दे० 'सोम'—१।

**सोमवल्लिका**—संज्ञा स्त्री० [स०] बकुची। सोमराजी। २ दे० 'सोम'।

**सोमवल्ली**—संज्ञा स्त्री० [स०] १ गिलोय। गुडूची। २ बकुची। सोमराजी। ३ छिरेंटी। पाताल गारुडी। ४ ब्राह्मी। ५ सुदर्शन। ६ लताकरज। कठकरजा। ७ गजपीपल। गज पिप्पली। ८ वन कपास। वनकार्पास। दे० 'सोम'।

**सोमवामी¹**—वि० [स० सोमवामिन्] सोम वमन करनेवाला। जो खूब सोमपान करता हो।

**सोमवामी²**—संज्ञा पु० वह ऋत्विज् जो खूब सोमपान करता हो।

**सोमवायव्य**—संज्ञा पुं० [स०] एक ऋषिवश का नाम।

**सोमवार**—संज्ञा पु० [स०] सात वारो मे से एक वार जो सोम अर्थात् चद्रमा का माना जाता है। यह रविवार के बाद और मगलवार के पहले पडता है। चद्रवार।

**सोमवारी¹**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोमवार + ई (प्रत्य०)] दे० 'सोमवती अमावस्या'।

**सोमवारी²**—वि० सोमवार सवधी। सोमवार का। जैसे,—सोमवारी बाजार, सोमवारी अमावस्या।

**सोमवासर**—संज्ञा पुं० [स०] सोमवार। चद्रवार।

**सोमविक्रयी**—संज्ञा पु० [स० सोमविक्रयिन्] सोमरस बेचनेवाला।

विशेष—मनु मे सोमरस बेचनेवाला दान के अयोग्य कहा गया है। उसे दान देने मे दाता दूसरे जन्म मे विष्ठा खानेवाली योनि मे उत्पन्न होता है।

**सोमवीथी**—संज्ञा स्त्री० [स०] चद्रमडल। चद्रमा की वीथी।

**सोमवीर्य**—वि० [स०] सोम की तरह वीर्य अर्थात् शक्तिवाला [को०]।

**सोमवृक्ष**—संज्ञा पु० [स०] १ कायफल। कटफल। २. सफेद खैर। श्वेत खदिर।

**सोमवृद्ध**—वि० [स०] जो खूब सोमपान करता हो। जिसकी उमर सोमपान करने मे ही बीती हो।

**सोमवेश**—संज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन मुनि का नाम।

**सोमव्रत**—संज्ञा पु० [स०] १ एक साम का नाम। २ दे० 'सोमप्रदोष'।

**सोमशकला**—संज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की ककडी।

**सोमशुष्म**—संज्ञा पु० [स०] एक वैदिक ऋषि का नाम।

**सोमसज्ञ**—संज्ञा पुं० [स०] कपूर। कर्पूर।

**सोमसभवा**—संज्ञा स्त्री० [स० सोमसम्भवा] १ नर्मदा। सोमोद्भवा। २ गधपलाशी। कपूरकचरी।

**सोमसस्था**—संज्ञा स्त्री० [स०] सोमयज्ञ का का एक प्रारम्भिक कृत्य।

**सोमसद**—संज्ञा पु० [स०] मनु के अनुसार विराट् के पुत्र और साध्यगण के पितर।

**सोमसलिल**—संज्ञा पु० [संज्ञा] सोम का जल। सोमरस।

**सोमसव**—संज्ञा पु० [स०] यज्ञ मे किया जानेवाला एक प्रकार का कृत्य जिसमे सोम का रस निकाला जाता था।

**सोमसवन**—संज्ञा पु० [स०] १ वह जिससे सोम का रस तैयार किया जाय। २ दे० सोमसव' [को०]।

**सोमसाम**—संज्ञा पुं० [स० सोमसामन्] एक साम का नाम।

**सोमसार**—संज्ञा पु० [स०] १ सफेद खैर। श्वेत खदिर। २ बबूल। कीकर। बबर।

**सोमसिंधु**—संज्ञा पुं० [स० सोमसिन्धु] विष्णु का एक नाम।

**सोमसिद्धात**—संज्ञा पु० [स० सोमसिद्धान्त] १ एक बुद्ध का नाम। २ वह शास्त्र जिससे भविष्य की बातें जानी जाती हैं। ३ शैव कापालिको का एक मत या सिद्धात (को०)।

**सोमसुदर**—वि० [स० सोमसुन्दर] चद्रमा के समान सुदर। बहुत सुदर।

**सोमसुत्**—संज्ञा पुं० [स०] १ सोमरस निकालनेवाला। २ यज्ञ मे सोम रस चढानेवाला ऋत्विज्।

**सोमसुत**—संज्ञा पुं० [स०] चद्रमा का पुत्र बुध।

**सोमसुता**—संज्ञा स्त्री० [स०] चद्रमा की पुत्री, नर्मदा नदी।

**सोमसुति**—संज्ञा स्त्री० [स०] सोम का रस निकालने की क्रिया।

**सोमसुत्या**—संज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सोमसुति'।

**सोमसुत्वा**—संज्ञा पुं० [स० सोमसुत्वन्] वह जो यज्ञ मे सोमरस चढ़ाता हो। सोमरस चढानेवाला।

**सोमसूक्त**—संज्ञा पु० [स०] सोम से सवधित ऋचाएँ या मत्र।

**सोमसूक्ष्म**—संज्ञा पु० [स० सोमसूक्ष्मन्] एक प्राचीन वैदिक ऋषि का नाम।

**सोमसूत्र**—संज्ञा पु० [स०] शिवलिंग की जलधरी से जल निकलने का स्थान या नाली।

यौ०—सोमसूत्र प्रदक्षिणा = इस प्रकार परिक्रमा करना जिससे सोमसूत्र का लघन न हो।

**सोमसेन**—संज्ञा पु० [स०] शबर के एक पुत्र का नाम।

**सोमहार**—वि० [स०] सोमहरण या निष्पीडन करनेवाला।

**सोमहारी**—वि० [स० सोमहारिन्] दे० 'सोमहार'।

**सोमहूति**—संज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सोमांग—संज्ञा पुं० [सं० सोमाङ्ग] सोम याग का एक अंग।

सोमांश, सोमांशक—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा का अंश।

सोमांशु—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा की किरण। २ सोमलता का अंकुर। ३ सोमयाग का एक अंग।

सोमा¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सोमलता। २ महाभारत के अनुसार एक अप्सरा का नाम। ३ मारकंडेय पुराण के अनुसार एक नदी का नाम।

सोमा²—संज्ञा पुं० [सं० सोमन्] १. सोम यज्ञ का कर्ता। २ सोम को निचोड़नेवाला व्यक्ति। ३ यज्ञ का उपकरण। ४ चंद्रमा। सोम [को०]।

सोमाख्य—संज्ञा पुं० [सं०] लाल कमल।

सोमाद—वि० [सं०] सोम भक्षण करनेवाला।

सोमाधार—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार के पितर।

सोमापि—संज्ञा पुं० [सं०] पुराण के अनुसार सहदेव के एक पुत्र का नाम।

सोमापूषण—संज्ञा पुं० [सं०] सोम और पूषण नामक देवता।

सोमापौष्ण—वि० [सं०] सोम और पूषण का। सोम और पूषण संबंधी।

सोमाभ—वि० [सं०] चंद्र की तरह दीप्तिमान् [को०]।

सोमाभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] चंद्रावली। चंद्ररश्मि।

सोमाभिषव—संज्ञा पुं० [सं०] सोम के रस को चुआना [को०]।

सोमायन—संज्ञा पुं० [सं०] महीने भर का एक व्रत जिसमें २७ दिन दूध पीकर रहने और ३ दिन तक उपवास करने का विधान है।

विशेष—याज्ञवल्क्य के अनुसार यह व्रत करनेवाला पहले सप्ताह (सात रात) गौ के चार स्तनों का, दूसरे सप्ताह तीन स्तनों का, तीसरे सप्ताह दो स्तनों का और ६ रात एक स्तन का दूध पीए और तीन दिन उपवास करे।

सोमार(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० सोमवार, प्रा० सोम + आर या सोमार] सोमवार का दिन। उ०—सं० १६६२ शाके १४६३ मार्ग वदी ५ सोमार गंगादास सुत महाराजा बीरबल श्री तीर्थराज प्रयाग की यात्रा सुफल लिखित।—अकबरी०, पृ० ७६।

सोमारुद्र—संज्ञा पुं० [सं०] सोम और रुद्र नामक देवता।

सोमारौद्र—वि० [सं०] सोम और रुद्र का। सोम और रुद्र संबंधी।

सोमार्चि, सोमार्ची—संज्ञा पुं० [सं० सोमार्च्चिस्] वाल्मीकि रामायण वर्णित देवताओं के एक प्रासाद का नाम।

सोमार्थी—वि० [सं० सोमार्थिन्] सोम की कामना करनेवाला या इच्छुक [को०]।

सोमार्धधारी—संज्ञा पुं० [सं० सोमार्द्धधारिन्] मस्तक पर अर्ध चंद्र धारण करनेवाले, शिव।

सोमार्धहारी—संज्ञा पुं० [सं० सोमार्द्धहारिन्] शिव [को०]।

सोमार्ह—वि० [सं०] सोम के योग्य। सोमपान का अधिकारी [को०]।

सोमाल—वि० [सं०] कोमल। नरम। मुलायम। स्निग्ध। चिक्कण।

सोमालक—संज्ञा पुं० [सं०] पुखराज। पुष्पराग मणि।

सोमावती—संज्ञा स्त्री० [सं०] चंद्रमा की माता का नाम। उ०—विनता सुत खगनाथ चंद्र सोमावति केरे। सुरावती के सूर्य रहत जग जासु उजेरे।—विश्राम (शब्द०)।

सोमावर्त—संज्ञा पुं० [सं०] वायुपुराण के अनुसार एक स्थान का नाम।

सोमाश्रम—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक तीर्थ का नाम।

सोमाश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। रुद्र।

सोमाश्रयायण—संज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत के अनुसार एक तीर्थ का नाम। २ शिव जी का स्थान।

सोमाष्टमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोमवार को पड़नेवाली अष्टमी तिथि।

सोमाष्टमी व्रत—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का व्रत जो सोमवार को पड़नेवाली अष्टमी को किया जाता है।

सोमास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अस्त्र जो चंद्रमा का अस्त्र माना जाता है। उ०—सोमास्त्रहु सौरास्त्र सु निज निज रूपनि धारैं। रामहिं सो कर जोरि सब बोलैं इक बारैं।—पदमाकर (शब्द०)।

सोमाह—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा का दिन। सोमवार।

सोमाहुत—वि० [सं०] जिसकी सोमरस द्वारा तृप्ति की गई हो।

सोमाहुति¹—संज्ञा पुं० [सं०] भार्गव ऋषि का नाम। ये मंत्रद्रष्टा थे।

सोमाहुति²—संज्ञा स्त्री० सोम की आहुति।

सोमाह्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] महासोमलता।

सोमित्रि—संज्ञा पुं० [सं० सौमित्र] लक्ष्मण।—(डिं०)।

सोमी¹—वि० [सं० सोमिन्] १ जिसमें सोम हो। सोमयुक्त। २ सोमयज्ञ करनेवाला (को०)।

सोमी²—संज्ञा पुं० १ सोम की आहुति देनेवाला। २ सोमयज्ञ करनेवाला। सोमयाजक।

सोमीय—वि० [सं०] सोम संबंधी। सोम का।

सोमेंद्र—वि० [सं० सोमेन्द्र] सोम और इंद्र का। सोम और इंद्र संबंधी।

सोमेज्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोम यज्ञ।

सोमेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक शिवलिंग जो काशी में स्थापित है। कहते हैं, भगवान् सोम ने यह शिवलिंग प्रतिष्ठित किया था। २ दे० 'सोमनाथ'—१। ३ श्रीकृष्ण का एक नाम। ४ राजतरंगिणी में वर्णित एक देवता का नाम। ५ संगीत शास्त्र के एक आचार्य का नाम। ६ चौहान नरेश पृथ्वीराज के पिता का नाम जो नागौर के नरेश थे।

सोमेश्वररस—संज्ञा पुं० [सं०] एक रसौषधि जो 'भैषज्य रत्नावली' के अनुसार सब प्रकार के प्रमेह, मूत्रघात, सन्निपातिक ज्वर, भगंदर, यकृत, प्लीहा, उदररोग तथा सोमरोग का शीघ्र शमन करनेवाली है।

विशेष—इसके बनाने की विधि इस प्रकार है—सेमल की छाल, कोह(अर्जुन) की छाल, लोध, अगर, गनियारी की छाल, रक्त चदन, हलदी, दारुहलदी, आँवला, अनारदाना, गोखरू के बीज, जामुन की छाल, खस और गुग्गुल प्रत्येक चार चार तोले और पारा, गधक, लोहा, धनियाँ, मोथा, इलायची, तेजपत्ता, पद्मक (पद्मकाष्ठ), पाढ (पाठा), रसौत, वायविडग, सुहागा और जीरा आध आध तोला, इन सबका खूब बारीक चूर्ण कर दो दो रत्ती की गोली बनाते है। बकरी के दूध या नारियल के जल के साथ इसका सेवन किया जाता है।

सोमोत्पत्ति—सज्ञा पुं० [सं०] १ चद्रमा का जन्म। २ अमावस्या के उपरात चद्रमा का फिर से निकलना।

सोमोद्गीत—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का साम।

सोमोद्भव[1]—सज्ञा पु० [स०] (चद्रमा को उत्पन्न करनेवाले) श्री कृष्ण का एक नाम।

सोमोद्भव[2]—वि० चद्रमा से उत्पन्न।

सोमोद्भवा—सज्ञा स्त्री० [सं०] नर्मदा नदी का एक नाम।

सोमोती†—सज्ञा स्त्री० [स० सोमवती] दे० 'सोमवती अमावस्या'।

सोम्य[1]—वि० [स०] १ सोमयुक्त। २ सोम सबधी। ३ सोम का। ४ सोमपान के योग्य। ५ सोम की आहुति देनेवाला। ६ मृदु। कोमल। चिक्कण (को०)।

सोम्य(पु)[2]—वि० [स० सौम्य] दे० 'सौम्य'। उ०—इपु अर्ध अरगा को प्रसिद्ध। रवि अयन सोम्य जान्यौ प्रसिद्ध।—ह० रासो, पृ० १४।

सोय(पु)[1]—सर्व० [हिं० सो + ही, ई] वही।

सोय[2]—सर्व० दे० 'सो'। उ०—कै लघु कै बड मीत भल, सम सनेह दुख सोय। तुलसी ज्यो घृत मधु सरिस, मिले महा विष होय।—तुलसी (शब्द०)।

सोयम—वि० [फा०] तृतीय। तीसरा। उ०—सोयम जब मौत आवेगा उसे पेश, होवे सूरत मे ओ तवदील सरकश।—दक्खिनी०, पृ० ११४।

सोया—सज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सोआ'।

सोरजान—सज्ञा स्त्री० [फा० सूरन्जान्] दे० 'सूरजान', 'सुरजान'।

सोरभ(पु)—वि०, सज्ञा पु० [स० सौरभ या सौरम्य, प्रा० सौरभ] दे० 'सौरभ'।

सोरंभना(पु)—क्रि० अ० [स० सौरभ, प्रा० सौरभ + हिं० ना(प्रत्य०)] सुरभित या सुगधियुक्त होना। उ०—ढोलउ मन आणदियउ, चतुर तणे वचनेह। मारू मुख सोरभियउ, आवि भमर भण केह।—ढोला०, दू० ४४०।

सोर(पु)—सज्ञा पुं० [फा० शोर, मिला० स० स्वर, सोर] १. शोर। हल्ला। कोलाहल। उ०—(क) भएउ कोलाहल अवध अति सुनि नृप राउर सोर।—तुलसी (शब्द०)। (ख) सोर भयौ घोर चारो ओर नभ मडल मे आए घन, आए घन आयकै उनरिगे। २ ख्याति। प्रसिद्धि। नाम। उ०—तुम अनियारे दृगन को सुनियत जग मे सोर।—रसनिधि (शब्द०)।

सोर†[2]—सज्ञा स्त्री० [स० शटा, प्रा० सड] जड। मूल।

सोर[3]—सज्ञा पुं० [स०] वक्र गति। टेढी चाल।

सोर[4]—सज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सौरी'।

सोर[5]—सज्ञा पुं० [अ० शोर] तट। किनारा।

मुहा०—सोर पडना = (जहाज का) किनारे लगना।

सोर(पु)[6]—सज्ञा पुं० [अ० शोरह्] दे० 'शोरा'। उ०—(क) उडै सोर प्याले निराले चमकै। घटा जोट मैं दामिनी सो दमकै।—हम्मीर०, पृ० ३२। (ख) उठै सोर झालाँ अनल, आभ धुआँ अँधियार।—बाँकी० ग्र०, भा० २, पृ० ६८।

सोरठ्ठ—सज्ञा पुं० [स० सौराष्ट्र, प्रा० सोरट्ठ] दे० 'सोरठ'।

सोरठ[1]—सज्ञा पुं० [सं० सौराष्ट्र, प्रा० सोरट्ठ] १ भारत का एक प्रदेश जो राजस्थान के दक्षिणपश्चिम पडता है। गुजरात और दक्षिणी काठियावाड का प्राचीन नाम। २. सोरठ देश की राजधानी, सूरत। उ० नृप इक वीरभद्र अस नामा। सोरठ नगर माँहि तेहि धामा।—विश्राम (शब्द०)।

सोरठ[2]—सज्ञा पुं०, स्त्री० [देश०] ओडव जाति का एक राग जो हिंडोल का पुत्र कहा गया है।

विशेष—इसमे गाधार और धवत स्वर वर्जित हैं। यह पचम, भैरवी, गुर्जरी, गाधार और कल्याण के सयोग से बना माना जाता है। इसके गाने का समय रात १६ दड से २० दड तक है। कोई सोरठ को षाडव जाति की रागिनी मानते हैं।

मुहा०—खुली सोरठ कहना = खुले आम कहना। कहने मे सकोच या भय न करना।

सोरठ मल्लार—सज्ञा पुं० [हिं० सोरठ + मल्लार] सपूर्ण जाति का एक राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते है।

सोरठा—सज्ञा पुं० [स० सौराष्ट्र, हिं० सोरठ (देश)] अडतालीस मात्राओ का एक छद जिसके पहले और तीसरे चरण मे ग्यारह ग्यारह और दूसरे तथा चौथे चरण मे तेरह तेरह मात्राएँ होती हैं। इसके सम चरणो मे जगण का निषेध है। दोहे को उलट देने से सोरठा हो जाता है। जैसे,—जेहि सुमिरत सिधि होइ, गननायक करिवर वदन। करउ अनुग्रह सोइ, बुद्धिरासि सुभ गुन सदन। उ०—छद सोरठा सुदर दोहा। सोइ बहुरग कमल कुल सोहा।—मानस, १।३७।

विशेष—जान पडता है, इस छद का प्रचार अपभ्रश काल में पहले पहल सोरठ या सौराष्ट्र देश मे हुआ था, इसी से यह नाम पडा।

सोरठी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोरठ (देश)] एक रागिनी जो सिंधूडा और बडहस के सयोग से बनी है। हनुमत के मत से यह मेघ राग की पत्नी है।

सोरण[1]—वि० [स०] कुछ कसैला, मीठा, खट्टा और नमकीन। चरपरा। २ शीतल। ठढा। ३. रक्तस्राव रोधक (को०)।

सोरण[2]—सज्ञा पुं० दे० 'सोल[3]' [को०]।

सोरन†—सज्ञा पुं० [स० शूरण] जमीकद। सूरन।

सोरनी†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सँवरना + ई (प्रत्य०)] १ झाड़। बुहारी। कूँचा। २. मृतक का एक सस्कार जो तीसरे दिन होता है और

जिसमें उसकी चिता की राख बटोरकर नदी या जलाशय मे फेंक दी जाती है। विराति।

**सोरवा**—संज्ञा पुं० [फा० शोरवा] दे० 'शोरवा'।

**सोरभखी**†—संज्ञा स्त्री० [सं० शूरभक्षी] तोप या बदूक। (डिं०)।

**सोरस**Ⓟ—वि० [सं० सुरस] रसीला। सुंदर। दे० 'सरस'। उ०—रग भूमि को 'कोरस' सोरस कत्र वरसावैं।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ४६।

**सोरसती**‡—संज्ञा स्त्री० [सं० सरस्वती] सरस्वती नदी। विशेष दे० 'सरस्वती'। उ०—गगा जमुना सोरसती जहाँ अमी का वास। —सत० दरिया०, पृ० ३।

**सोरह**Ⓟ‡—वि०, संज्ञा पुं० [सं० षोडश, प्रा० सोलस, सोलह] दे० 'सोलह'। उ०—सवत् सोरह सै इकतीसा। करउँ कथा हरि-पद धरि सीसा।—तुलसी (शब्द०)।

**सोरहिया**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोरह + इया (प्रत्य०)] १ दे० 'सोरही'। २ भाद्र शुक्ल अष्टमी (राधाष्टमी) से सोलह दिन तक चलनेवाला लक्ष्मीपूजन एवं व्रतविधान जिसकी समाप्ति आश्विन कृष्ण अष्टमी (जीवत्पुत्रिका या जिउतिया व्रत) के दिन होती हैं। इस दिन स्त्रियाँ २४ घटे का निर्जल उपवास, व्रत एव लक्ष्मीपूजन करती ह। इसे १६ दिन तक चलने के कारण सोरहिया भी कहते हे। यह व्रत वाराणसी मे बहुप्रचलित हे जहाँ लक्ष्मीकुंड पर विशाल मेला भी लगता है। दे० 'जिउतिया'।

**सोरही**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोलह + ई (प्रत्य०)] १ जूआ खेलने के लिये सोलह चित्ती कौडियो का समूह। २ वह जूआ जो सोलह कौडियो से खेला जाता है। ३ कटी हुई फसल की सोलह अँटियो या पूलो का बोझ, जिससे खेत की पैदावार का अदाज लगाते हैं। जैसे,—फी बीघा सौ सोलही। ४ वैश्यो के कुछ वर्गो मे मृतक के लिये उसकी मृत्यु के सोलहवें दिन किया जानेवाला ब्राह्मणभोज आदि कर्म।

**सोरा**Ⓟ‡—संज्ञा पुं० [फा० शोरह्] दे० 'शोरा'। उ०—सीतलता रु सुगध की घटै न महिमा मूर। पीनसवारे ज्यौ तजैं सोरा जानि कपूर।—बिहारी (शब्द०)।

**सोराना**†—क्रि० अ० [हिं० सोर (= जड) से नाम०] जड पकडना। उ०—तब क्या करोगे मधुवन! अभी एक पानी और चाहिए। तुम्हारा आलू सोरा कर ऐसा ही रह जायगा? ढाई रुपए के बिना।—तितली, पृ० ३३।

**सोरावास**—संज्ञा पुं० [सं०] बिना नमक का मास का रसा। बिना नमक का शोरवा।

**सोराष्ट्रिक**—संज्ञा पुं० [सं० सौराष्ट्रिक] दे० 'सौराष्ट्रिक'।

**सोरी**†—संज्ञा स्त्री० [सं० स्रवण (= बहना या चूना)] बरतन मे महीन छेद जिसमे से होकर पानी आदि टपककर बह जाता हो।

**सोर्णभ्रू**—वि० [सं०] जिसकी दोनो भवों के बीच रोएँ की भँवरी सी हो।

**सोर्मि, सोर्मिक**—वि० [सं०] लहरो से युक्त। तरंगमय [को०]।

**सोलकी**—संज्ञा पुं० [देश०] क्षत्रियो का एक प्राचीन राजवंश जिसका अधिकार गुजरात पर बहुत दिनो तक था।

विशेष—ऐसा माना जाता है कि सोलकियो का राज्य पहले अयोध्या मे था जहाँ से वे दक्षिण की ओर गए और वहाँ से फिर गुजरात, काठियावाड, राजपूताने और बघेलखंड मे उनके राज्य स्थापित हुए। उत्तरी भारत मे जिस समय थानेश्वर और कन्नौज के परम प्रतापी सम्राट् हर्षवर्धन का राज्य था, उस समय दक्षिण मे सोलकी सम्राट् द्वितीय पुलकेशी का राज्य था, जिससे हर्षवर्धन ने हार खाई थी। रीवाँ का बघेलवंश इसी सोलकी वश की एक शाखा है। इस समय सोलकी और बघेल अपने को अग्निवशी बतलाते हैं और अपने मूल पुरुष चालुक्य को वशिष्ठ ऋषि द्वारा आबू पर के यज्ञकुंड से उत्पन्न कहते है। पर यह बात पृथ्वीराज रासो आदि पीछे के ग्रंथो के आधार पर ही कल्पित जान पडती है, क्योंकि विक्रम स० ६३५ से लेकर १६०० तक के अनेक शिलालेखों, दानपत्रों आदि मे इनका चद्रवंशी और पाडवो का वशधर होना लिखा है। बहुत दिनो तक इनका मुख्य स्थान गुजरात था।

**सोल**[1]—वि० [म०] १ शीतल। ठंढा। २ कसैला, खट्टा और तीता। चरपरा।

**सोल**[2]—संज्ञा पुं० १ शीतलता। ठंढापन। २ कसैलापन, खट्टापन, तीतापन, चरपापन आदि। ३ स्वाद। जायका।

**सोल**Ⓟ†[3]—वि० [सं० षोडश] दे० 'सोलह'। उ०—सुदर सोल सिंगार सजि गई सरोवर पाल। चद मुलक्यउ, जल हँस्यउ, जलहर कपी पाल।—ढोला०, दू० ३६४।

**सोल**[4]—संज्ञा पुं० [अ०] जूते मे लगाने का चमडे का तल्ला।

**सोलपगो**†—संज्ञा पुं० [देशी] केकडा। (डिं०)।

**सोलपोल**†—वि० [हिं० पोल + अनु० सोल] बेफायदा। व्यर्थ का। उ०—ना से सोलपोल तुम लाई। पकरैं तो कुछु ज्वाब न आई। —घट०, पृ० १६३।

**सोलवाँ**†—वि० [हिं० सोलह + वाँ (प्रत्य०)] दे० 'सोलहवाँ'।

**सोलह**[1]—वि० [सं० षोडश, प्रा० सोलस, सोलह] जो गिनती मे दस से छह अधिक हो। षोडश।

**सोलह**[2]—संज्ञा पुं० दस और छह की सख्या या अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१६।

मुहा०—सोलह आने, सोलहो आने = सपूर्ण। पूरा पूरा। जैसे,—तुम्हारी बात सोलहो आने सही है। उ०—अरे न सोलह आने तो पाई ही सही।—प्रेमघन०, पृ० ४५८। सोलह सोलह गडे सुनाना = खूब गालियाँ देना।

**सोलहनहाँ**—संज्ञा पुं० [हिं० सोलह + नहँ (= नख)] वह हाथी जिसके सोलह नख या नाखून हो। सोलह नाखूनवाला हाथी जो ऐबी समझा जाता है।

**सोलहवाँ**—वि० [हिं० सोलह + वाँ (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सोलहवीं] जिसका स्थान पद्रहवे स्थान के बाद हो। जिसके पहले पद्रह और हों।

**सोलह सिंगार**—संज्ञा पुं० [हिं० सोलह + सिंगार] सिंगार की एक विधि जिसमे १६ उपकरण ह।

विशेष—इसके अतर्गत अग मे उबटन लगाना, नहाना, स्वच्छ वस्त्र धारण करना, बाल सँवारना, काजल लगाना

सेंदुर से माँग भरना, महावर लगाना, भाल पर तिलक लगाना, चिबुक पर तिल बनाना, मेहदी लगाना, सुगध लगाना, आभूषण पहनना, फूलो की माला पहनना, मिस्सी लगाना, पान खाना और होठो को लाल करना ये सोलह बातें है। (विशेष विवरण के लिये 'शृगार' और 'षोडश शृगार' शब्द भी देखिए)।

**सोलही**—सज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ सोलह + ई (प्रत्य॰)] दे॰ 'सोरही'।

**सोला**[1]—सज्ञा पुं॰ [देश॰] एक प्रकार का ऊँचा झाड।

विशेष—यह प्राय सारे भारत की दलदली भूमि मे पाया जाता है। यह वर्षा ऋतु मे फूलता है। इसकी डालियाँ बहुत सीधी और मजबूत होती हैं। सोला हैट नाम की अग्रेजी ढग की टोपी इन्हीं डालियो के छिलको से बनती है।

**सोला**‡[2]—वि॰ [हिं॰ सोलह] दे॰ 'सोलह'। उ॰—बारा कला सोषै सोला कला पोषै। चारि कला साधै अनत कला जीवै।—गोरख॰, पृ॰ ३१।

**सोलाना**—क्रि॰ सं॰ [हिं॰ सुलाना] दे॰ 'सुलाना'।

**सोलाली**—सज्ञा स्त्री॰ [देश॰] पृथ्वी। (डिं॰)।

**सोलिक**—वि॰, सज्ञा पुं॰ [सं॰] दे॰ 'सोल'।

**सोल्लास**[1]—वि॰ [सं॰] उल्लासयुक्त। प्रसन्न। आनदित।

**सोल्लास**[2]—क्रि॰ वि॰ उल्लास के साथ। आनंदपूर्वक।

**सोल्लुठ**[1]—वि॰ [सं॰ सोल्लुण्ठ] परिहासयुक्त। व्यग्य, हास्य से युक्त। चुटकी के साथ।

यौ॰—सोल्लुठकथन, सोल्लुठभाषण, सोल्लुठभाषित, सोल्लुठवचन = परिहासयुक्त। व्यग्य, हास्य से युक्त वाक्य।

**सोल्लुठ**[2]—सज्ञा पुं॰ व्यग्य। परिहास। चुटकी।

**सोल्लुठन**—वि॰, सज्ञा पुं॰ [सं॰ सोल्लुण्ठन] दे॰ 'सोल्लुठ'।

**सोल्लुठोक्ति**—सज्ञा स्त्री॰ [सं॰ सोल्लुण्ठोक्ति] परहासयुक्त वचन। व्यग्योक्ति। दिल्लगी। बोली ठोली। ठट्ठा। चुटकी।

**सोल्लेख**—क्रि॰ वि॰ [स॰] अलग अलग उल्लेखपूर्वक। स्पष्टत [को॰]।

**सोवज**—सज्ञा पुं॰ [हिं॰ सावज] दे॰ 'सावज', 'सौजा'। उ॰—जब सोवज पिंजर घर पाया बाज रह्या बन माही।—दादू (शब्द॰)।

**सोवड**†—सज्ञा पुं॰ [स॰ सूतका, प्रा॰ सूडआ] वह कोठरी जिसमे स्त्रियाँ बच्चा जनती है। सूतिकागार। सौरी।

**सोवणी**—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ शोधनी] बुहारी। झाडू। (डिं॰)।

**सोवन**Ⓤ†[1]—संज्ञा पुं॰ [स॰ स्वपन, प्रा॰ सोवण, हिं॰ सोवना] सोने की क्रिया या भाव। उ॰—सुरापान करि सोवन जानै। कबहुँ न जान्यो गहन कमानै।—रघुराज (शब्द॰)।

**सोवन**Ⓤ[2]—सज्ञा पुं॰ [सं॰ स्वर्ण, प्रा॰ सोवण्ण, अप॰ सोवण] स्वर्ण। सोना। उ॰—सु दरि सोवन वर्ण तसु अहर अलत्ता रगि। केसरि लकी खीण कटि कोमल नेत्र कुरगि।—ढोला॰, दू॰ ८७।

यौ॰—सोवनवानी = स्वर्णिम। सोने के वर्णवाला। सुनहरा। उ॰—सोवनवानी घूघरा चालण रइ परियाण।—ढोला॰, दू॰ ३४३। सोवनसिंगी = स्वर्णमडित शृगवाली। सोने से मढी सींगोवाली। उ॰—सोवनसिंगी कपिला गाई।—वी॰ रासो, पृ॰ २५।

**सोवना**Ⓤ†—क्रि॰ अ॰ [स॰ स्व पू, प्रा॰ सुव, सोव + हिं॰ ना (प्रत्य॰)] दे॰ 'सोना'। उ॰—(क) क्योकरि झूठी मानिये सखि सपने की बात। जो हरि हरयो सोवत हियो सो न पाइयत प्रात।—पद्माकर (शब्द॰)। (ख) पथ थकित मद मुकित मुखित सर सिंधुर जोवत। काकोदर कर कोश उदर तर केहरि सोवत।—केशव (शब्द॰)।

**सोवनार**Ⓤ—सज्ञा पुं॰ [स॰ स्वपनागार] शयनकक्ष। शयनागार। उ॰—औ बड जूड तहाँ सोवनारा।—जायसी ग्र॰, पृ॰ १४६।

**सोवा**—सज्ञा पुं॰ [हिं॰ सोआ] एक शाक। दे॰ 'सोआ'। उ॰—साग चना सँग सब चौराई। सोवा अरु सरसो सरसाई।—सूर (शब्द॰)।

**सोवाक**—सज्ञा पुं॰ [स॰] सुहागा।

**सोवाना**—क्रि॰ स॰ [हिं॰ सोवना का प्रे॰ रूप] दे॰ 'सुलाना'। उ॰—प्रभुहि सोवाय समाल उतारी। लियो आपने गल महँ धारी।—रघुराज (शब्द॰)।

**सोवारी**[1]—सज्ञा पुं॰ [?] पद्रह मात्राओ का एक ताल जिसमे पाँच आघात और तीन खाली होते है। इसका बोल यह है,—

धिन धा धिन धा कत तागे दिनतो तेटे कता गदिघेन धा।

**सोवारी**Ⓤ‡[2]—सज्ञा स्त्री॰ [देशी] सवारी। उ॰—सोवारी रहट घाट की सीस प्रकार पुर विन्यास कथा कहुलो का।—कीर्ति॰, पृ॰ २८।

**सोवाल**[1]— वि॰ [स॰] काले या धूँए के रग का। धुँधला। धूमला।

**सोवाल**[2]—सज्ञा पुं॰ धूम्र वर्ण। धुँधला रग। धूएँ का रंग।

**सोवियत**—सज्ञा पुं॰ [रू॰ सोवियत्] १ रूस का आधुनिक शासनतत्र। २ रूस मे किसी भी प्रदेश, गाँव या जिले की वह सभा जो मजदूरो, सिपाहियो, निर्वाचित प्रतिनिधियो से तैयार की गई हो।

**सोवैया**Ⓤ†—सज्ञा पुं॰ [हिं॰ सोवना + इया (प्रत्य॰)] सोनेवाला। उ॰—धमकै कछु यो भ्रम कै उठि आवै छपावति छाह सोवैयन तें।—(शब्द॰)।

**सोन्नन, सोन्नन्न**Ⓤ—सज्ञा पुं॰ [स॰ स्वर्ण] दे॰ 'सुवर्ण'। सोना। उदा॰—दसै रती सोन्नन के खरीचा।—कबीर सा॰, पृ॰ ८८३।

**सोशल**—वि॰ [अ॰] १ समाज सबधी। सामाजिक। जैसे,—सोशल कानफरेंस। २ समाज मे मिलने जुलनेवाला। मिलनसार।

**सोशलिज्म**—सज्ञा पुं॰ [अ॰] दे॰ 'समाजवाद'।

**सोशलिस्ट**—सज्ञा पुं॰ [अ॰] 'समाजवादी'।

**सोष**—वि॰ [स॰] खारी मिट्टी मिला हुआ। क्षार मृत्तिका से मिश्रित।

**सोषक**—सज्ञा पुं॰ [स॰ शोषक] १ दे॰ 'शोषक'। उ॰—सम प्रकास तम पाख दुहुँ नाम भेद विधि कीन्ह। ससि पोषक सोषक समुझि जग जस अपजस दीन्ह।—मानस, १।७। २ समाज का वह व्यक्ति या वर्ग जो न्यूनतम पारिश्रमिक एव सुविधा देकर मजदूरो, मेहनत कश वर्ग का शोषण करता है। (आधु॰)। विशेष दे॰ 'शोषक'—६।

सोषण, सोषन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शोषण] दे० 'शोषण'। उ०—मोहन बसीकरन उच्चाटन। सोषन दीपन थभन घातन।—गोपाल (शब्द०)।

सोषना(पु)—क्रि० अ० [सं० शोषण] दे० 'सोखना'। उ०—पुनि अतहकोप निर्मल चोप नाँही धोष गुन सोष।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० २४३।

सोषु, सोसु(पु)—वि० [हिं० सोखना] सोखनेवाला। उ०—दभ हू कलि नाम कुभज सोच सागर सोषु।—तुलसी (शब्द०)।

सोऽणीष[1]—संज्ञा पुं० [सं०] बृहत्संहिता मे उल्लिखित वास्तु विद्या के अनुसार एक प्रकार का भवन जिसके पूर्व भाग मे वीथिका हो।

सोऽणीष[2]—वि० उष्णीषयुक्त। पाग धारण करनेवाला [को०]।

सोऽम[1]—वि० [सं० सोष्मन्] १ ऊष्मा से युक्त। ऊष्म (वर्ण अक्षर)। २ ऊष्ण। गरम। तप्त [को०]।

सोष्म[2]—संज्ञा पु० उष्म वर्ण।

सोष्यती—संज्ञा स्त्री० [सं० सोष्यन्ती] वह स्त्री जो प्रसव करनेवाली हो। आसन्नप्रसवा।

सोष्यती कर्म—संज्ञा पुं० [सं० सोष्यन्ती कर्मन्] आसन्नप्रसवा (प्रसूता) स्त्री के सबध मे किया जानेवाला कृत्य या सस्कार।

सोष्यती सवन—संज्ञा पुं० [सं० सोष्यन्ती सवन] एक प्रकार का सस्कार।

सोष्यती होम—संज्ञा पुं० [सं० सोष्यन्ती होम] एक प्रकार का होम जो आसन्नप्रसवा स्त्री की ओर से किया जाता है।

सोस(पु)—संज्ञा पु० [सं० शोच] दे० 'सोच'। उ०—बार बार यातें कहत यह मेरे जिय सोस। क्यो सैहै सुकुमार वह तुमरो आतप रोस।—स० सप्तक, पृ० ३६७। (ख) जफा इस अँदेशे का ना सोस कर, कहे मन मे यूँ आह अफसोस कर।—दक्खिनी०, पृ० १३६।

सोसन—संज्ञा पुं० [फा० सौसन] फारस की ओर का एक प्रसिद्ध फूल का पौधा जो भारतवर्ष मे हिमालय के पश्चिमोत्तर भाग अर्थात् काश्मीर आदि प्रदेशो मे भी पाया जाता है।

विशेष—इसकी जड मे से एक साथ ही कई डठल निकलते हैं। पत्ते कोमल, रेशेदार, हाथ भर के लबे, आध अगुल चौडे और नोकदार होते हैं। फूलो के दल नीलापन लिए लाल, छोर पर नुकीले और आध अगुल चौडे होते हैं। बीजकोश ५ या ६ अगुल लबे, छहपहले और चोचदार होते हैं। हकीमी मे इसके फूल और पत्ते औषध के काम मे आते हैं और गरम, रूखे तथा कफ और वातनाशक माने जाते हैं। इसके पत्तो का रस सिरदर्द और आँख के रोगो मे दिया जाता है। इसे शोभा के लिये बगीचे मे लगाते है। फारसी के शायर जीभ की उपमा इसके दल से दिया करते हैं।

सोसनी—वि० [फा० सौसन] सोसन के फूल के रग का। लाली लिए नीला। उ०—(क) सोसनी दुकूलनि दुराए रूप रोसनी है, बूटेदार घाँघरी की घूमनि घुमाइकै। कहै पदमाकर त्यो उन्नत उरोजन पै तग अँगिया है तनी तननि तनाइकै।—पद्माकर ग्र०, पृ० १२६। (ख) अग अनग की रोसनी मैं सुभ सोसनी चीर चुभ्यो चित चाइन। जानि चली बृज ठाकुर मैं ठमका ठमका ठुमकी ठकुराइन।—पदमाकर ग्र० १३०।

सोसाइटी, सोसायटी—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ समाज। गोष्ठी। जैसे—हिंदू सोसायटी। बगाली सोसाइटी। २ सगत। सोहबत। जैसे—उसकी सोसायटी अच्छी नही है।

सोसि(पु)—पद [सं० स + असि] सो हो। वह हो। उ०—जोसि सोसि तन चरन नमामी।—मानस, १।१६१।

सोस्मि(पु)—पद [सं० स + अस्मि] दे० 'सोऽहमस्मि'। उ०—निग शरीर नाम तब पावै। जब नर अजपा मे मन लावै। अजपा कि जो सोस्मि उमासा। सुमिरै नाम सहित विश्वासा।—विश्राम (शब्द०)।

सोह—पद [सं० सोऽहम्] दे० 'सोऽहम्'। उ०—मानन लगे ब्रह्म जिय काही। सोह रटन मची चहुँ घाही।—रघुराज (शब्द०)।

सोहग‡—पद [सं० सोऽहम + हिं० ग (प्रत्य०)] दे० 'सोऽहम्'। उ०—साधु सजे मिलि बैठे आई। वह बिधि भक्ति करो चित लाई। कहैं कबीर सुनो भइ साधो। बोहग सोहग शब्द अराधो।—कबीर (शब्द०)।

सोहंगम—पद [हिं० सोहग + म] दे० 'सोऽहम्'। उ०—सुरति सोहगम डेरि है, अग्र सोहगम नाम। सार शब्द टकसार है, कोइ बिरले पावै नाम।—कबीर (शब्द०)।

सोहंजि—संज्ञा पुं० [सं० सोहञ्जि] भागवत वर्णित कुतिभोज के एक पुत्र का नाम।

सोहँ(पु)‡—क्रि० वि० [हिं०] दे० 'सौहँ'। उ०—सोहँहु मोहन ऐंठति है कैसो तुम हिरदय। सुकवि लखी नहिं सुनी बात ऐसी कहुँ निरदय।—व्यास (शब्द०)।

सोहँग(पु)‡—पद [हिं० सोहग] दे० 'सोऽहम्'। उ०—जब नहिं पाँच अमी निर्माया, नहिं सोहँग विस्तारा।—कबीर म०, पृ० १६४।

सोहँगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोहाग] १ तिलक चढ़ने के बाद की एक रस्म जिसमे लडकेवाले के यहाँ से लडकी के लिये कपडे, गहने, मिठाई, मेवे, फल, खिलौने, आदि सजाकर भेजे जाते हैं। उ०—अति उत्तम बिचारि कै जोरी। भए मुदित सवधहि जोरी। भेज्यो तिलक दाम भरि बहँगी। तुमहु सुता हित साजहु सोहँगी।—(शब्द०)।

सोहगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोहाग] १ दे० 'सोहँगी'। उ०—कदाचित् बारात वा सोहगी निकलने का समय है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ११६। २ सिंदूर, मेंहदी आदि सुहाग की वस्तुएँ।

सोहगैला†—संज्ञा पुं० [हिं० सुहाग या सोहाग + ऐला (प्रत्य०)] [स्त्री० सोहगैली] लकडी की कगूरेदार डिबिया जिसमें विवाह के दिन सिंदूर भरकर देते हैं। सिंदूरा।

सोहड‡—संज्ञा, पुं० [सं० सुभट, प्रा० सुहड, राज० सोहड] दे० 'सुभट'। उ०—पिंगल बोलावा दिया, सोहड सो असवार।—ढोला०, दू० ५६७।

**सोहण**(पु)‡—संज्ञा पुं० [सं० स्वप्न, प्रा० सोहण] दे० 'स्वप्न'। उ०—सोहण याई फर गया मईं सर भरिया रोइ। आव सोहागण नीदडी वलि प्रिय देखूं सोइ।—ढोला०, दू० ५१०।

**सोहणा**‡—संज्ञा पुं० [सं० स्वप्न, प्रा० सुहिणा] सपना। स्वप्न। उ०—(क) जउ सोहणो साचेइ होग्रइ सोहणो वडी वसत्त।—ढोला०, दू० ५०६।

**सोहदा**—संज्ञा पुं० [फा० शुहदह्] दे० 'शोहदा'।

**सोहन**[1]—वि० [सं० शोभन, प्रा० सोहण] [वि० स्त्री० सोहनी] अच्छा लगनेवाला। सुदर। सुहावना। मनभावना। मनोहर। उ०—(क) तहँ मोहन सोहन राजत है। जिमि देखि मनोभव लाजत हैं। (ख) हीर जराऊ मुकुट सीस कचन को सोहन।—गोपाल (शब्द०)। (ग) चित चोरना विवि खभ वातक रतन डाँडी सोहनी।—नंद० ग्र०, पृ० ३७५।

**सोहन**[2]—संज्ञा पुं० सुदर पुरुष। नायक। उ०—प्यारी की पीक कपोल मे पीके विलोकि सखीन हँसी उमडी सी। सोहन सौह न लोचन होत सुलोचन सुदरि जाति गडी सी।—देव (शब्द०)।

**सोहन**[3]—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक वडी चिडिया जिसका शिकार करते है।

**विशेष**—यह विहार, उडीसा, छोटा नागपुर और वगाल को छोड हिंदुस्तान मे सर्वत्र पाई जाती है। यह कीडे, मकोडे, अनाज, फल, घास के अकुर आदि सब कुछ खाती है। पूँछ से लेकर चोंच तक इसकी लवाई डेढ हाथ तक होती है और वजन भी बहुत भारी, प्राय दस सेर तक, होता है। इसका मास बहुत स्वादिष्ट कहा जाता है।

**सोहन**[4]—संज्ञा पुं० एक वडा पेड जो मध्यभारत तथा दक्षिण के जगलो मे बहुत होता है।

**विशेष**—इसके हीर की लकडी वहुत कडी, मजवूत, चिकनी, टिकाऊ तथा ललाई लिए काले रग की होती है। यह मकानो मे लगती है तथा मेज, कुरसी आदि सजावट के सामान वनाने के काम मे आती है। सोहन शिशिर मे झाड पत्ते देनेवाला पेड है। इसे रोहन और सूमी भी कहते हैं।

**सोहन**[5]—संज्ञा पुं० [फा० सोहान] एक प्रकार की वढइयो की रेती या रदा।

**यौ०**—तिकोनिया सोहन = तीन कोने की रेती।

**सोहन चिड़िया**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोहन + चिडिया] दे० 'सोहन'–३।

**सोहन पपड़ी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोहन + पपडी] एक प्रकार की मिठाई जो जमे हुए कतरो के रूप मे होती है।

**सोहन हलवा**—संज्ञा पुं० [हिं० सोहन + अ० हलवा] एक प्रकार की स्वादिष्ट मिठाई जो जमे हुए कतरो के रूप मे और घी से तर होती है।

**सोहना**[1]—क्रि० अ० [सं० शोभन, प्रा० सोहण] १ शोभित होना। सुदरता के साथ होना। सजना। उ०—(क) नासिक कीर, कँवल मुख सोहा। पदमिनि रूप देखि जग मोहा।—जायसी (शब्द०)। (ख) काक पच्छ सिर सोहत नीके।—तुलसी (शब्द०)। (ग) रत्न जटित ककन वाजूवँद नगन मुद्रिका सोहै।—सूर (शब्द०)। (घ) सोहत ओढ़े पीत पट स्याम सलोने गात।—विहारी (शब्द०)। २. अच्छा लगना। उपयुक्त होना। फवना। जैसे,—(क) यह टोपी तुम्हारे सिर पर नही सोहती। (ख) ऐसी वातें तुम्हे नही सोहती। उ०—(क) यह पाप क्या हम लोगो को सोहता है।—प्रताप (शब्द०)। (ख) ऐसी नीति तुम्हैं नहिं सोहत।—गोपाल (शब्द०)।

**सोहना**†[2]—वि० [वि० स्त्री० सोहनी] १ सोहन। सुहावना। शोभायुक्त। उ०—को है सरद ससि मुख रहे लसि चपल नैना सोहना।—नंद० ग्र०, पृ० ३७५। २ सुदर। मनोहर। जैसे,—सोहनी लकडी, सोहना वगीचा।

**सोहना**[3]—क्रि० स० [सं० शोधन, प्रा० सोहण] खेत मे उगी घास निकालकर अलग करना। निराना।

**सोहना**[4]—संज्ञा पुं० [फा० सोहान] कसेरो का एक नुकीला औजार जिससे वे घरिया या कुठाली मे, साँचे मे गली धातु गिराने के लिये, छेद करते है।

**सोहनाइत**‡—संज्ञा पुं० [देशी] एक ओहदा या पद। उ०—गोसाञिन्ह माझिहे–रनाहे–मलिक्ह सोहनाइत महामालिक वोनओ, अगुआडी।—वर्ण०, पृ० २।

**सोहनी**[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शोधनी] १ झाड़ू। वुहारी। सरहट। २ खेत मे से उगी घास खोदकर निकालने की क्रिया। निराई।

**सोहनी**[2]—वि० स्त्री० [हिं० सोहना] सुदर। सुहावनी। मनभावनी। उ०—साँवरी सी रही सोहनी सूरवि हेरत को जुवती नहिं मोहैं?—सुदरीसर्वस्व (शब्द०)।

**सोहनी**[3]—संज्ञा स्त्री० सोहिनी नाम की रागिनी।

**सोहबत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ सग साथ। सगत। २ सभोग। स्त्रीप्रसग।

**सोहबती**—वि० [फा०] सगी। साथी। सोहवतवाला।

**सोहमस्मि**—पद [सं० स + अहम् + अस्मि, सोऽहमस्मि] दे० 'सोऽहमस्मि'। उ०—सोहमस्मि इति वृत्ति अखडा। दीप सिखा सोइ परम प्रचडा।—तुलसी (शब्द०)।

**सोहर**[1]—संज्ञा पुं० [सं० सूतिगृह। हिं० सोहना, सोहला] १ एक प्रकार का मगलगीत जो स्त्रियाँ घर मे वच्चा पैदा होने पर गाती है। सोहला। उ०—रानि कौसिला ढोटा जायो रघुकुल कुमुद जुन्हैया। सोहर सोर मनोहर नोहर माचि रह्यौ चहुँ घैया।—रघुराज (शब्द०)। २ मागलिक गीत। उ०—कौसिल्यै सीतै करि आगे। चली अवध मदिर अनुरागे। सहसन सग सहचरी भावै। महामनोहर सोहर गावै।—रघुराज (शब्द०)।

**सोहर**[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० सूतका, अथवा सं० सूतिगृह, सूतागृह, प्रा० सुइहर, सूअाहर] सूतिकागृह। सौड। सौरी।

**सोहर**[3]—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ नाव के भीतर की पाटन या फर्श। २ नाव का पाल खीचने की रस्सी।

**सोहरना**†—क्रि० अ० [सं० सु + √स्तृ > स्तर, स्तार] ऊपर से नीचे तक फैलकर लटकना। फैल जाना। फैलना। विस्तृत होना। जैसे,—पहिरे के आँटे न सोहरा जाय (लोकोक्ति)।

**सोहरा**(पु)†[1]—वि० [सं० शोभन] शोभायुक्त। उपयुक्त। अच्छा। उ०—लेखा देणाँ सोहरा, जे दिल साँचा होइ। उस चगे दीवान मैं पला न पकडै कोइ।—कवीर ग्र०, पृ० ४२।

सोहरा†[२]—वि० [सं० शोभित, प्रा० सोहिर] शोभनेवाला। सुखी। उ०—द्वे इकोतरासई सवनि को ताही तें भये सोहरा। ऊँचो महल रच्यो अविनाशी तज्यो परायो नोहरा।—सुदर० ग्र०, भा० २, पृ० ६१४।

सोहराना[१]—क्रि० स० [हिं० सहलाना] दे० 'सहलाना'। उ०—कुचन्ह लिये तरवा सोहराई। भा जोगी कोउ सग न लाई।—जायसी (शब्द०)।

सोहराना†[२]—क्रि० स० [हिं० सोहराना] किसी वस्तु को फैलाना या नीचे तक लटकाना।

सोहला—सज्ञा पु० [हिं० सोहना] १ वह गीत जो घर मे बच्चा पैदा होने पर स्त्रियाँ गाती है। उ०—गौरि गनेस मनाऊँ हो देवी सारद तोहि। गाऊँ हरि जू को सोहलो मन और न आवै मोहि।—सूर (शब्द०)। २ मागलिक गीत। उ०—डोमनियो के रूप मे सारगियाँ छेड छेड सोहले गावो।—इशाअल्ला (शब्द०)। ३ किसी देवी देवता की पूजा मे गाने का गीत। जैसे,—माता के सोहले।

सोहलो†—सज्ञा पुं० [अ० सुहैल] तारा की आकृति का ललाट पर पहनने का एक आभूषण। उ०—भुमुहाँ ऊपर सोहलो, परि ठिउ जाँण क चग। ढोला एही मारुवी, नव नेही नव रग। ढोला०, दू० ४६५।

सोहाइन(पु)‡—वि० [हिं०] दे० 'सुहावना'। उ०—सँग गाउँ को गोधन ले सिगरो रघुनाथ भरे मन चाइन मे। नहिं जानि ये जात रहे कितको वन भीतर कुज सोहाइन मे।—रघुनाथ (शब्द०)।

सोहाई(पु)[१]—वि० स्त्री० [हिं० सोहाना का कृदत रूप] दे० 'सोहाया'।

सोहाई†[२]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोहना] १ खेत मे उगी घास निकालने का काम। निराई। २ इस काम की मजदूरी।

सोहाओन‡—वि० [हिं० सुहावन, सोहावन] [वि० स्त्री० सोहाउनी] दे० 'सुहावन'। उ०—(क) अछल सोहाओन कितए गेल, भूसन कएले दूसन भेल।—विद्यापति, पृ० ३१७। (ख) विरह सोस भेले भल हो अधर देले रौप सुहाउनि छाया।—विद्यापति, पृ० २२५।

सोहाग†[१]—सज्ञा पुं० [स० सौभाग्य, प्रा० सोहग्ग] १ दे० 'सुहाग'। उ०—(क) धाइ सो पूछति बातें बिनै की सखीनि सो सीखै सोहाग की रीतहिं।—देव (शब्द०)। (ख) लागि लागि पग सवनि सिय भेटति अति अनुराग। हृदय असीसहिं प्रेमबस रहिहहु भरी सोहाग।—तुलसी (शब्द०)।

क्रि० प्र०—देना।—लेना। उ०—तुम तो ऐसा धमकाते हो जैसे हम राजा साहब के हाथो बिक गए हो। रानी रूठेगी, अपना सोहाग लेंगी। अपनी नौकरी ही न लेंगे, ले जायँ।—काया०, पृ० २२२।

२ एक प्रकार का मागलिक गीत। उ०—गावत सबै सोहाग छबीली मिलि सब बृज की बाम।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ४४४।

सोहाग[२] सज्ञा पु० [हिं० सुहागा] दे० 'सुहागा'।

सोहाग[३]—सज्ञा पु० [देश०, तुल० स० सौभाग्य] मझोले आकार का एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष।

विशेष—इस वृक्ष के पत्ते बहुत लबे लबे होते हैं। यह आसाम, बगाल, दक्षिणी भारत और लका मे पाया जाता है। इसके बीजो से एक प्रकार का तेल निकलता है जो जलाया और ओषधि के रूप मे काम मे लाया जाता है। इसे हीरन हर्रा भी कहते है।

२ एक प्रकार का नमकीन पक्वान्न। दे० 'सुहाल'।

सोहागा[१]—सज्ञा पुं० [सं० समभाग, प्रा० सवँहग] जुते हुए खेत की मिट्टी बराबर करने का पाटा। मैंडा। हेगा।

सोहागा[२]—सज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सुहागा'। उ०—कहि सन भाउ भएउ कँठलागू। जनु कचन मो मिला सोहागू।—जायसी ग्र० (गुप्त), पृ० ३३४।

सोहागिन†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुहागिन] दे० 'सुहागिन'। उ०—अति सप्रेम सिय पायँ परि बहु विधि देहिं असीस। सदा सोहागिनि होहु तुम्ह जब लग महि अहि सीस।—तुलसी (शब्द०)।

सोहागिल—सज्ञा स्त्री० [हिं० सोहाग + इल (प्रत्य०)] दे० 'सुहागिन'। उ०—सिय पद सुमिरि सुतीय पहि तस गुन मगल जानु। स्वामि सोहागिल भागु बड पुत्र काजु कल्यानु।—तुलसी (शब्द०)।

सोहाता—वि० [हिं० सोहना] [वि० स्त्री० सोहाती] सुहावना। शोभित। सुदर। अच्छा। उ०—माधुरी मूरत देखे बिना पद्माकर लागै न भूमि सोहाती।—पद्माकर (शब्द०)।

सोहान—सज्ञा पुं० [फा०] रेतने का औजार। रेती [को०]।

सोहाना[१]—क्रि० अ० [स० शोभन, प्रा० सोहण] १ शोभित होना। शोभायमान होना। सुदरता के साथ होना। सजना। उ०—(क) आवहिं झुड सो पाँतिहि पाँती। गवन सोहाइ सो भाँतिहि भाँती।—जायसी (शब्द०)। (ख) गोरे गात कपोल पर अलक अडोल सोहाय।—मुबारक (शब्द०)। (ग) वन उपबन सर सरित सोहाए।—तुलसी (शब्द०)। २ रुचिकर होना। अच्छा लगना। प्रिय लगना। रुचना। जैसे,—तुम्हारी बातें हमे नहीं सोहाती। उ०—(क) भएउ हुलास नवल ऋतु माँहाँ। खन न सोहाइ धूप औ छाहाँ।—जायसी (शब्द०)। (ख) पिय बिनु मनहिं अटरिया मोहिं न सोहाइ।—रहीम (शब्द०)। (ग) राम सोहाता तोहि तौ तू सबहिं सोहातो।—तुलसी (शब्द०)।

सोहाना[२]—सज्ञा पुं० वि० सुहावना। सुदर। मनोहर। उ०—साहि तनै सिव साहि निसा मैं निसांक लियो गढ सिंह सोहानो।—भूषण ग्र०, पृ० ७२।

सोहाया—वि० [हिं० सोहाना का कृदत रूप] [वि० स्त्री० सोहाई] शोभित। शोभायमान। सुदर। उ०—(क) सरद सोहाई आई राति। दस दिसि फूलि रही बनजाति।—सूर (शब्द०)। (ख) एहि प्रकार बल मनहिं देखाई। करिहउँ रघुपति कथा सोहाई।—तुलसी (शब्द०)।

सोहायो(पु)†—वि० [हिं० सोहाया] दे० 'सोहाया'।

सोहारद(पु)‡—सज्ञा पुं० [सं० सौहार्द] दे० 'सौहार्द'।

सोहारी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोहाना (= रुचना) अथवा सं० सु + √ स्तृ > स्तर, स्तार] पूरी। उ०—(क) मोती चूर मूर के मोदक श्रोदक की उजियारी जी। समई सेव सँजना सूरन सोवा सरस सोहारी जी।—विश्राम (शब्द०)। (ख) लुचुई पूरि सोहारी परी। एक ताती औ सुठि कोवरी। —जायसी ग्रं० (गुप्त), पृ० ३१३।

सोहाल—संज्ञा पुं० [हिं० सुहाल] दे० 'सुहाल'।

सोहाली¹—संज्ञा स्त्री० [सं० शोभावलि ?] ऊपर के दाँतो का मसूडा। ऊपरी दाँतो के निकलने की जगह।

सोहाली†²—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुहारी] दे० 'सुहारी'।

सोहावन(पु)†—वि० [हिं० सुहावना] दे० 'सुहावना'। उ०—(क) दडक वनु प्रभु कीन्ह सोहावन। जनमन अमिति नाम किय पावन।—तुलसी (शब्द०)। (ख) कुहकहिं मोर सोहावन लागा। होइ कुराहर वोलहिं कागा।—जायसी ग्रं०, पृ० ११।

सोहावना¹—वि० [हिं० सुहावना] दे० 'सुहावना'।

सोहावना²—क्रि० अ० [सं० शोभन] दे० 'सोहाना'। उ०—(क) कज्जल सो रग मोहै सज्जल जलद जोहि उज्जल बरन वर रदन सोहावने।—गोपाल (शब्द०)। (ख) वीर लै कमान हाथ मोद सा फिरावते। गावते बजावते सोहावते देखावते। —गोपाल (शब्द०)।

सोहासित(पु)—वि० [सं० सुभाषित (= सुदर वचन), अथवा हिं० सोहाना (= रुचना)] १ प्रिय लगनेवाला। रुचिकर। २ ठकुरसोहाती। उ०—राजसूय ह्वैहै नहिं तेरी। मानहु हस बात सति मेरी। वैसे कहौ सोहासित भाखै। पै मन महँ सका हठि राखै।—रघुराज (शब्द०)।

सोहिं‡—क्रि० वि० [हिं० सौह] दे० 'सौह'। उ०—वेदवती दशशीश ते कह्यो रहै मैं तोहि। तव पुर पैठि विनाशिहै। हेतु गई तेहि सोहि।—विश्राम (शब्द०)।

सोहिण, सोहीण(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० स्वप्न, प्रा० सुहिणा, सोहणा] स्वप्न। उ०—जो हूँ सोहोणइँ जाणतो साँच।—वी० रासो०, पृ० ६५।

सोहिनी¹—वि० स्त्री० [हिं० सोहना] सुहावनी। शोभायमान सुदर। उ०—सग लोने वहु अच्छोहिनी। गज रथ तुरगन्ह सोहिनी। गोपाल (शब्द०)।

सोहिनी²—संज्ञा स्त्री० करुण रस की एक रागिनी।

विशेष—यह पाडव जाति की है और इसमे पचम वर्जित है। कोई इसे भैरो राग की और कोई मेघ राग की पुत्रवधू मानते हैं। हनुमत के अनुसार यह मालकोस राग की पत्नी है। इसके गाने का समय रात्रि २६ दड से २९ दड तक है।

सोहिनी³—संज्ञा स्त्री० [सं० शोधनी] झाडू। वुहारी।

सोहिल—संज्ञा पुं० [अ० सुहैल] एक तारा जो चदमा के पास दिखाई पडता है। अगस्त्य तारा। उ०—(क) हीर फूल पहिरे उजियारा। जनहु सरद ससि सोहिल तारा।—जायसी (शब्द०)। (ख) सोहिल सरिस उवौ रन माही। कटक घटा जेहि पाइ उडाही। —जायसी (शब्द०)।

सोहिला—संज्ञा पुं० [हिं० सोहला] दे० 'सोहला'। उ०—(क) आजु इद्र अछरी सौ मिला। सब कैलास होहि सोहिला।—जायसी (शब्द०)। (ख) सहेली सुनु सोहिलो रे —तुलसी (शब्द०)। (ग) सदन सदन शुभ सोहिलो सुहावनी तें गाइ उठी भाइ उठी क्षण क्षिति छै गए। —रघुराज (शब्द०)। (घ) सुख सोहिले मनाऊँ सदा। या ब्रज यह आनद सपदा। —घनानद, पृ० ३०३।

सोही—क्रि० वि० [सं० सम्मुख, प्रा० सम्मुह, हिं० सौह] सामने। आगे। उ०—उग्रसन का स्वरूप वन रानी के सोही जा बोला—तू मुझसे मिल।—लल्लू (शब्द०)।

सोहैं(पु)†¹—क्रि० वि० [हिं० सौह] दे० 'सौह', 'सौहैं'।

सोहैं(पु)²—क्रि० वि० [सं० सम्मुख, प्रा० सम्मुह, हिं० सौहें] सामने। आगे। उ०—घूँघट मे मुसकै भरे सासै ससै मुख नाहके सोहैं न खोलै।—वेनी (शब्द०)।

सोहौटी—संज्ञा स्त्री० [देश०] ६ या ७ इच चौडी एक लकडी जो 'अपती' के सामने 'लेवा' के नीचे नाव की लबाई मे लगाई जाती है। (मल्लाह)।

सौदर्ज—संज्ञा पुं० [सं० सौन्दर्य] दे० 'सौदर्य'। उ०—नयन कमल कल कुडल काना। वदन सकल सौदर्ज निधाना।—तुलसी (शब्द०)।

सौदर्य, सौदर्य्य—संज्ञा पुं० [सं० सौन्दर्य, सौन्दर्य्य] सुदर होने का भाव या धर्म। सुदरता। रमणीयता। खूबसूरती। जैसे,—युवती का सौंदर्य, नगर का सौदर्य। उ०—उज्वल वरदान चेतना का, सौदर्य जिसे सब कहते हैं।—कामायनी, पृ० १०२।

यौ०—सौदर्यगर्विता = अपने सौंदर्य के गर्व से भरी हुई। जिसे अपनी सुदरता का अभिमान हो (स्त्री)। उ०—सौंदर्यगर्विता सरिता के अति विस्तृत वक्षस्थल मे।—अपरा, पृ० १४। सौदर्यप्रिय = जिसे सौदर्य प्रिय हो। सौदर्यप्रेम = रमणीयता के प्रति अनुराग।

सौंदर्यता—संज्ञा स्त्री० [सं० सौन्दर्य + ता (प्रत्य०)] सुदरता। रमणीयता। खूबसूरती। उ०—उस समय की सौंदर्यता का क्या पूछना।—अयोध्यासिह (शब्द०)।

विशेष—व्याकरण के नियम से 'सौंदर्यता' शब्द अशुद्ध है। शुद्ध रूप सौदर्य या सुदरता ही है।

सौंदर्यबोध—संज्ञा पुं० [सं० सौन्दर्यबोध] दे० 'सौदर्यानुभूति'। उ०—रवीद्र तथा सरोजनी नायडू की कविताओ से उनके भीतर एक नवीन प्रकार के अस्पष्ट सौंदर्यबोध तथा माधुर्य का जन्म हुआ।—युगात, पृ० (ड)।

सौंदर्यवाद—संज्ञा पुं० [सं० सौन्दर्य + वाद] वह साहित्यिक विधा जिसमे प्रकृतिसौदर्य को प्रमुखता दी गई हो। उ०—पत जी का सौंदर्यवाद ही उनके प्रारभिक रचनाकाल मे उन्हें व्याकरण की कडियाँ तोडने के लिये वाध्य करता रहा है।—हिं० का० प्र०, पृ० २११।

**सौंदर्यशास्त्र**—संज्ञा पुं० [सं० सौन्दर्य + शास्त्र] सौदर्यसबधी शास्त्र। (अं० एड्स्थेटिक्स)। उ०—कुछ दिन पहले जब विदेश के सौदर्यशास्त्र का छायाप्रभाव हिंदी पर पडा।—आचार्य०, पृ० १३२।

**सौंदर्यानुभूति**—संज्ञा स्त्री० [सं० सौन्दर्यानुभूति] प्राकृतिक सुदरता के अवलोकन एव विवेचन से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान या अनुभव। उ०—वह अपनी सौदर्यानुभूति को बरबस कविता का रूप प्रदान कर देता है।—हिं० का० प्र०, पृ० १६५।

**सौं**(पु)[१]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोह] दे० 'सौंह'। उ०—(क) सुदर स्याम हंसत सजनी सो नद बबा की सौं री।—सूर (शब्द०)। (ख) बाभन की सौं बबा की सौं मोहन मोह गऊ की सौं गोरस की सौं।—देव (शब्द०)। (ग) मारे लात तोरे गात भागे जात हा हा खात कहै तुलसी सराषि राम की सौं टेरि कै।—तुलसी (शब्द०)।

**सौं**[२]—अव्य० [हिं०] दे० 'सा' या 'सा'। उ०—याही तै यह आदरं जगत मांहि सब कोइ। बोले जबै बुलाइए अनबोले चुप होइ। हुक्का सौं कहु कौन पै जात निबाहो साथ। जाकी स्वासा रहत है लगी स्वास के साथ।—रसनिधि (शब्द०)।

**सौं**[३]—प्रत्य० [हिं०] दे० 'सा' या 'सें' उ०—लै बाम बाहुबल ताहि राखत कठ सौं खसि खसि परै। तिमि धरे दक्षिन बाहु कोहूँ गोद मे बिच लै गिरै।—हरिश्चद्र (शब्द०)।

**सौंकारा, सौंकेरा**†—संज्ञा पुं० [सं० सकाल] प्रात काल। सवेरा। तडका।

**सौंकेरे**‡ क्रि० वि० [सं० सकाल या सु + काल, पु० हिं० सकारे] १ तडके। सवेरे। २ समय से कुछ पहले। जल्दी।

**सौंधा**[१]—वि० [सं० सु + अर्घ] सस्ता।

**सौंधा**†[२]—वि० [सं० सुगन्धित] सुगध युक्त। उ०—केसर सौंधं बसन, सकल उमरावन सज्जे।—ह० रासो, पृ० १२५।

**सौंघाई**—संज्ञा स्त्री० [सं० समर्घता या हिं० सौंघा ?] अधिकता। बहुतायत। ज्यादती। उ०—काक कक लेइ भुजा उडाही। एक ते छीन एक लेइ खाही। एक कहहिं ऐसिउ सौंघाई। सठहु तुम्हार दरिद्र न जाई।—तुलसी (शब्द०)।

**सौंधी**—वि० [सं० सुभग] १ अच्छा। उ०—जौ चितवति सौंघी लगै चितइऐ सबेरे। तुलसीदास अपनाइऐ कीजै न ढील अब जीवन नित नेरे।—तुलसी (शब्द०)। २ उचित। ठीक।

**सौंचन**†—संज्ञा स्त्री० [सं० शौच] मलत्याग। शौच।

**सौंचना**†—क्रि० स० [सं० शौच] १ शौच करना। मलत्याग करना। २ मल त्याग के उपरात हाथ पैर आदि धोना।

**सौंचर**—संज्ञा पुं० [सं० सौवर्चल] दे० 'सोंचर नमक'। उ०—सज्जी सौंचर सेंवर सोरा। सांखाहूली सीप सकोरा।—सूदन (शब्द०)।

**सौंचर नमक**—संज्ञा पुं० [हिं० सौंचर + नमक] दे० 'सोंचर नमक'।

**सौंचाना**—क्रि० स० [हिं० सौंचना का प्रे० रूप] शौच कराना। मलत्याग कराना। हगाना। उ०—काची रोटी कुच कुची परती माछी बार। फूहर वही सराहिए परसत टपकै लार। परसत टपकै लार झपटि लरिका सौंचावे। चूतर पोछै हाथ दोऊ कर सिर खजुवावै।—गिरिधर (शब्द०)।

**सौंज**(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौज] दे० 'सौज'। उ०—(क) हरि को दर्शन करि सुख पायो पूजा बहु विधि कीन्ही। अति आनद भए तन मन मे सौंज बहुत विधि दीन्ही।—सूर (शब्द०)। (ख) आए नाथ द्वारका नीके रच्यो मांडचो छाय। ब्याह केलि विधि रची सकल सुख सौंज गनी नहिं जाय।—सूर (शब्द०)। (ग) बिनती करत गोविंद गोसाई। दै सब सौंज अनत लोक पति निपट रक की नाई।—सूर (शब्द०)।

**सौंजाई**(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंज + आई (प्रत्य०)] सौंज। सामग्री। उ०—स्याम भजन बिनु कौन बडाई ? बल, विद्या, धन, धाम, रूप गुन और सकल मिथ्या सौजाई।—सूर०, १ २४।

**सौंड, सौंड़ा**†—संज्ञा पुं० [हिं० सोना + ओढना या सं० शुण्ड (= सूंड की तरह लबा या भारी)] ओढने का भारी कपडा। जैसे,—रजाई, लिहाफ आदि।

**सौंडी**—संज्ञा स्त्री० [सं० सौण्डी] पीपल। पिप्पली। शौडी।

**सौंण**†—संज्ञा पुं० [सं० शकुन, प्रा० सउण, हिं० सगुन] शकुन। शुभ।

मु०—सौंण वंदाना = शकुन बदाना। एक रीति जिसमे सवेरे कोई पक्षी (नीलकठ आदि) लेकर सामने आते है। उ०—एक बासउँ श्री (र) बाटइ बसउँ। उठी प्रभातै सौंण वदाई।—वी० रासो, पृ० १३।

**सौंतना**(पु)†—क्रि० स० [सं० समावर्तन, प्रा० समावट्टण] १ जमा करना। इकट्ठा या सचित करना। २ तलवार आदि को म्यान से बाहर खीचना। दे० 'सँतना'।

**सौंतुख**(पु)[१]—संज्ञा पुं० [सं० सम्मख] प्रत्यक्ष। समुख। उ०—दृग भौंर से ह्वै कै चकोर भए जेहि ठौर पै पायो बडो सुख है। लहरै उठै सौरभ की सुखदा मच्यो पून्यो प्रकास चहूँ रुख है। ठगि से रहे सेवक स्याम लखे सपनो है किधौं यह सौंतुख है। बन अवर मे अरबिंद किधौ सुचि इदु कै राधिका को मुख है।

**सौंतुख**[२]—क्रि० वि० आँखो के आगे। प्रत्यक्ष। सामने। उ०—तेरी परतीति न परत अब सौंतुख हू छयल छबीले मेरी छुवै जनि छहियाँ। राति सपने मैं जनु बैठि मैं सदन सूने मदन गोपाल, तुम गहि लीन्ही बहियाँ।—तोष (शब्द०)। (ख) मकु तुव भाग जागि कै जाई। सौंतुख हाथ चढ कहुँ आई।—चित्रा०, पृ० ५६।

**सौंदन**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंदना] धोबियो का वह कृत्य जिसमे वे कपडो को धोने से पहले रेह मिले पानी मे भिगोते है। उ०—नैहर मे दाग लगाय आइ चुनरी। मन को कूँडी ज्ञान को सौंदन साबुन महँग बिकाय या नगरी।—कबीर० श०, भा० १, पृ० २३।

**सौंदना**—क्रि० स० [सं० सन्धम् (= मिलना)] आपस मे मिलाना। सानना। ओतप्रोत करना। आप्लावित करना। उ०—(क)

ये उस अज्ञता के कीचड के बाहर न होंगे, दक्षिणा के लोभ से उसी मे सौंदे पडे रहेंगे ।—बालकृष्ण (शब्द०) । (ख) सत-सगत मे सौंद ज्ञान सबुन दीजै ।—पलटू० बा०, पृ० १३ ।

**सौंध**(पु)[1]—संज्ञा पुं० [सं० सौध] दे० 'सौध' । उ०—(क) नृप सध्या विधि वदि राग वारुणी अधर रचि, मदिर गयो अनदि खड सांतयें सौंध पर ।—गुमान (शब्द०) । (ख) एक महातरु हेरि वहेरो । सौंध ममीप रहै नल केरो ।—गुमान (शब्द०) ।

**सौंध**[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्ध] सुगध । खुशबू । उ०—सौंध सी सनियै लसै बिच बीच मोतिन की कली ।—गुमान (शब्द०) ।

**सौंधना**[1]—क्रि० स० [हिं० सौंदना] दे० 'सौंदना' ।

**सौंधना**[2]—क्रि० स० [सं० सुगन्ध, प्रा० सुअध, पुं०हिं० सौंध + हिं० ना (प्रत्य०)] सुगधित करना । सुवासित करना । बासना ।

**सौंधा**[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्ध, प्रा० सुअध] दे० 'सौंधा' । उ०—(क) सौंधे की सी सौंधी देह सुधा सों सुधारी पांवधारी देव-लोक ते कि सिंधु ते उवारी सी ।—केशव (शब्द०) । (ख) कचुकी चोवा के सौंधे सों बोरि कै स्याम सुगधन देह भरी है । —पद्माकर (शब्द०) । (ग) सौंधे सनी सुथरी बिथुरी अलकै हरि के उर आली ।—बेनी (शब्द०) । (घ) गधी को सौंधो नही, जन जन हाथ विकाय ।—नद० ग्र०, पृ० १३३ । (ङ) तिल तालिब गुल पीर मिलि सुहबति सौंधा होय ।—रज्जब०, पृ० ८ ।

**सौंधा**[2]—वि० १ दे० 'सोंधा' । उ०—सुठि सौंधे औवर्न, जनक सुख युक्त घरी के । सकल मनोहरता वारे प्यारे सबही के ।—श्रीधर (शब्द०) । २ रुचिकर । अच्छा । उ०—जो चितवन सौंधी लगै चितइए सबेरे ।—तुलसी (शब्द०) ।

**सौंनमक्खि**(पु), **सौंनमक्खी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोनामक्खी सं० स्वर्ण-मक्षिका] दे० 'सोनामक्खी' । उ०—सौनमक्खि सखिया सुहागा । सूल सम्हालू सवरस सागा ।—सूदन (शब्द०) ।

**सौंनी**—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ण] स्वर्णकार । सुनार ।

**सौंपना**—क्रि० स० [सं० समर्पण, प्रा० सउप्पण] १ किसी व्यक्ति या वस्तु को दूसरे के अधिकार मे करना । सुपुर्द करना । हवाले करना । जिम्मे करना । समर्पण करना । जैसे,—(क) मैं इस लडके को तुम्हें सौंपता हूँ, इसे तुम अपनी देखभाल मे रखना । (ख) सरकार ने उन्हें एक महत्व का काम सौंपा । (ग) जहाँ लडके ने होश सँभाला, बाप ने उसे अपना घर सौंपा । (घ) लोगो ने उसे पकडकर पुलिस को सौंप दिया । उ०—(क) चितचोरन कर सौंप चित अब काहे पछताइ ।—रसनिधि (शब्द०) । (ख) जब लग सीस न सौंपिए तब लग इस्क न होइ ।—दादू (शब्द०) । (ग) सो सौंपि सुत को राज नृप तप करन हिमगिरि कों गए ।—पदमाकर (शब्द०) । (घ) उन हरकी हँसि कै उतै इन सौंपी मुसकाय । नैन मिले मन मिलि गयौ दोऊ मिलवत गाय ।—बिहारी (शब्द०) । (च) सौंपे भूप रिषिहि सुत बहु विधि देइ असीस । जननी भवन गए प्रभु, चले नाइ पद सीस ।—तुलसी (शब्द०) । (छ) चचल चरित्र चित चेटिकी चेटका गायो चोरी कै चितन अभि-सार सौंपियतु है ।—केशव (शब्द०) । (ज) स्याम विना ये चरित करै को यह कहि क तनु सौंपि दई ।—सूर (शब्द०) ।

क्रि० प्र० -देना ।

२ सहेजना ।

**सौंफ**—संज्ञा स्त्री० [सं० शतपुष्पा] १ औषध और मसाले आदि मे प्रयुक्त होनेवाला पांच छह फुट ऊँचा एक पौधा और उसके फल जिसकी खेती भारत मे सर्वत्र होती है ।

विशेष—इस पौधे की पत्तियाँ सोए की पत्तियो के समान ही बहुत बारीक और फूल सोए के समान ही कुछ पीले होते हैं । फूल लबे सीको मे गुच्छो के रूप मे लगते है । फल जीरे के समान पर कुछ बडे और पीले रग के होते है । कातिक महीने मे इसके बीज बो दिए जाते हैं और पांच सात दिन मे ही अकुरित हो जाते है । माघ मे फूल और फागुन मे फल लग जाते हैं । फागुन के अत या चैत के पहले पखवाडे तक, फलो के पकने पर मजरी काटकर धूप मे सुखा और पीटकर बीज अलग कर लेते हैं । यही बीज सौंफ कहलाते हैं । सौंफ स्वाद मे तेजी लिए मीठी होती है । औषध के अतिरिक्त मसाले मे भी इसका व्यवहार करते हैं । इसका अर्क और तेल भी निकाला जाता है जो औषध और सुगधि के काम मे आता है । वैद्यक मे यह चरपरी, कडुवी, मधुर, गर्भदायक, विरेचक, वीर्यजनक, अग्निदीपक, तथा वात, ज्वर, दाह, तृष्णा, व्रण, अतिसार, आम तथा नेत्ररोग को दूर करनेवाली मानी गई है । इसका अर्क शीतल, रुचिकर, चरपरा, अग्निदीपक, पाचक, मधुर तथा तृषा, वमन, पित्त और दाह का शमन करनेवाला कहा गया है ।

पर्या०—शतपुष्पा । मधुरिका । माधुरी । मिता । मिश्रेया । मधुरा । सुगधा । तृषाहरी । शतपत्रिका । वनपुष्पा । माधवी । छत्रा । भूरिपुष्पा । तापसप्रिया । घोषवती । शीतशिवा । तालपर्णी । मगल्या । सघातपत्रिका । अवाक्पुष्पी ।

२ सौंफ की तरह का एक प्रकार का जगली पौधा जो कश्मीर मे अधिकता से पाया जाता है ।

विशेष—इस पौधे की पत्तियाँ और फूल सौंफ के समान ही होते हैं । फल झुमको मे चौथाई से तीन चौथाई इच तक के घेरे मे होते हैं । बीज गोल और कुछ चिपटे से होते हैं । हकीम लोग इसका व्यवहार करते है । इसे बडी सौंफ, मौरी, मेउडी या मोडी भी कहते है ।

**सौंफिया**[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंफ + इया (प्रत्य०)] सौंफ की बनी हुई शराब । २ एक प्रकार की बीडी ।

**सौंफिया**[2]—वि० सौंफ के सुगध या योग से युक्त ।

**सौंफी**[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंफ] वह शराब जो सौंफ से बनाई जाती हैं । सौंफिया । २ एक तरह की बीडी जिसमें सौंफ सी सुगध रहती है ।

**सौंफी**[2]—वि० सौंफ के सुगध या योग मे युक्त ।

**सौंभरि**(पु)[1]—संज्ञा पुं० [सं० सौभरि] दे० 'सौभरि' । उ०—वृदावन महँ मुनि रहे सौंभरि सो जल माँहु । अयुत अब्द अति तप

कियो भख विहार लखि ताहूँ। करि इच्छा विवाह कहँ कीन्हा। शतमधात सुता कहँ लीन्ह।—गिरिधर (शब्द०)।

सौंभरि(पु)² क्रि० वि० [सं० सम्भृत] (किसी से) भरी हुई। उ०—मन के सकल मनोरथ पूरन, सौंभरि भार नई। सूरदास फल गिरिधर नागर, मिलि रस रीति ठई। सूर०, १०।१७६२।

सौमुंह(पु)† अव्य० [सं० सम्मुख, प्रा० सउमुंह] दे० 'सम्मुख'। उ०—जैसें देखा सपन सब, सौंमुह पाए चीन्ह। कुँअर कहा सब सुबुधि सों, जस कौतुक विधि कीन्ह।—चित्रा०, पृ० ४०।

सौंर¹—संज्ञा पुं० [हिं० सौरी] मिट्टी के बरतन, भाँडे आदि जो सतानोत्पत्ति के दसवें दिन (अर्थात् सूतक हटने पर) तोड दिए जाते है।

सौंर²—संज्ञा स्त्री० दे० 'सौरी'।

सौंरई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० साँवरा] साँवलापन। उ०—पीत पट छांह प्रकटत मुख माँह सौंरई को भाव मोहन मोरि झलकाइयतु है।—देव (शब्द०)।

सौंरना(पु)¹—क्रि० स० [सं० स्मरण, हिं० सुमरना] स्मरण करना। चिंतन करना। ध्यान करना। उ०—(क) सोइ अन्न तोडो भेजि लाखन जेवांये सत सौंरि भगवत नहिं अतता को ह्वै गयो।—रघुराज (शब्द०)। (ख) श्री हरि गुरुपद पकज सौंरी। सैन्य सहित वृंदावन ओरी।—रघुराज (शब्द०)। २ याद करना। स्मरण करना। उ०—कहा कहों कछु कही न जाई। हिय सौंरत बुधि जाइ हेरई।—चित्रा०, पृ० ४०।

सौंरना²—क्रि० अ० [हिं० सँवरना] दे० 'सँवरना'।

सौंरा(पु)—वि० [सं० श्यामल] साँवला।

सौंसार(पु)‡—संज्ञा पुं० [सं० ससार] दे० 'ससार'। उ०—(क) सौंसार मडल सारा मार चलाया। गरीब निवाज रघुराज मैं पाया।—दक्खिनी०, पृ० १३५। (ख) हमा जाय मिले करतारा। बहुरि न आवहि एहि सौंसारा।—सत० दरिया, पृ० ६४।

सौंसे‡—वि० [सं० समस्त] सब। कुल। पूरा। तमाम। (पूर्वी हिं०)।

सौंह(पु)†¹—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौगंद] सौगंद। शपथ। कसम। किरिया। उ०—(क) जो कहिए घर दूरि तुम्हारे बोलत सुनिए टेर। तुमहिं सौंह वृषभानु बवा की प्रात साँझ एक फेर।—सूर (शब्द०)। (ख) तुलसी न तुम्ह सों राम प्रीतम कहत हौं सौंहे किए। परिनाम मगल जानि अपने आनिए धीरज हिए।—तुलसी (शब्द०)। (ग) जब जब होत भेंट मेरी भटू तब तब ऐसी सौंहैं दिन उठि खाति न अघाति है।—केशव। (घ) धमहि की कर सौंह कहौं हौ। तुव सुख चाहि न और चहौं हौं।—पद्माकर (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना।—खाना।—देना।—लेना।

सौंह²—संज्ञा पुं० [सं० सम्मुख, प्रा० सम्मुह] समुख। सामने। समक्ष। उ०—(क) लरत सौंह जो आय निघनु तेहि करत सघनु कर।—गोपाल (शब्द०)। (ख) गहत धनुष अरि बहुत त्रास तें पास रहत नहिं। गहन गर्व जो गहत सौंह मर दहत ताहि तहिं।—गोपाल (शब्द०)।

सौंहें¹—क्रि० वि० सामने। समुख। उ०—(क) कपट सतर भौंहैं करी मुख सतरौहैं बैन। सहज हँसौहें जानि कै सौंहैं करति न नैन।—बिहारी (शब्द०)। (ख) तही रगीलें रति जगें जगी पगी सुख चैन। अलसौंहैं सौहैं किएँ कहैं हँसौहैं नैन।—बिहारी र०, दो० ५११। (ग) प्रेमक लुबुध पियादे पाऊँ। ताकैं सोंह चलै कर ठाऊँ।—जायसी (शब्द०)।

सौंहन—संज्ञा पुं० [फा० सोहान, हिं० सोहन] दे० 'सोहन'। उ०—कुदरा खुरपा बेल गुल नफा छुरा कतरनी। नहनी सौंहन परी डरी यह भरना भरनी।—सूदन (शब्द०)।

सौंहीं¹—संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार का हथियार। उ०—यह सौंहीं केहि देशहि केरी। कह नृप अहै फिरग केरेरी। सुनतहुँ नरपति मन मुसक्याई। सौंही दै वाणी यह गाई। तुन हथियारहि केवल तरैं। सदा रहे हम विन अवसरैं।—बघेलवश० (शब्द०)।

सौंहीं²—क्रि० वि० दे० 'सौंह'। उ०—आठौ सिद्धि जहाँ कर जोरैं। सौंही ताकैं मुख नहिं मोरैं।—चरण० बानी०, पृ० ६२।

सौ¹—वि० [सं० शत] जो गिनती में पचास का दूना हो। नब्बे और दस। शत। २. †संख्या में अधिक। बहुत।

सौ²—संज्ञा पुं० नब्बे और दस की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१००।

मुहा०—सौ बात की एक बात = साराश। तात्पर्य। निष्कर्ष। निचोड। उ०—(क) सौ बातन की एकै बात। सब तजि भजो जानकीनाथ।—सूर (शब्द०)। (ख) सौ बातन की एकै बात। हरि हरि हरि सुमिरहु दिन राति।—सूर (शब्द०)। सौ की सीधी एक = साराश। सब का सार। निचोड। उ०—रोम रोम जीभ पाय कहै तो कह्यो न जाय, जानत ब्रजेश सब मर्दन मयन के। सूधी यह बात जानो गिरधर ते बखानो सौ कि सीधी एक यही दायक चयन के।—गिरधर (शब्द०)। सौ का सवाया = पचीस प्रतिशत मुनाफा। सौ कोस भागना = एक दम दूर रहना। अलग रहना। सौ जान से आशिक, कुर्बान या फिदा होना = अत्यंत प्रेम करना या मुग्ध होना। पूरी तरह मुग्ध होना। उ०—और उसकी चटक मटक पर हमारा हिंदोस्तान सौ जान से कुर्बान है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २५६। सौ सौ बार = बहुत बार। अनगिनत मर्तबा। उ०—जो निगुरा सुमिरन करै, दिन मैं सौ सौ बार। नगर नायका सत करै, जरै कौन की लार।—कबीर सा० स०, भा० १, पृ० १७।

सौ(पु)³—वि० [सं० सम (= समान) प्रा० सउँ], दे० 'सा'। उ०—(क) हे मुंदरी तेरो सुकृत मेरो ही सौ हीन।—लक्ष्मण (शब्द०)। (ख) वर बीरन जुद्ध इतौ सँपज्यो, तिहि ठौर भयानक सौ उपज्यो।—पृ० रा०, २४।१६६।

सौक¹—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौत] किसी स्त्री के पति या प्रेमी की दूसरी स्त्री या प्रेमिका। किसी स्त्री की प्रेमप्रतिद्वंद्विनी। सौत। सपत्नी।

सौक¹—वि० [हिं० सौ + एक] एक सौ। उ०—नैन लगे निहिं लगनि सौं छूटैं न छूटे प्रान। काम न आवत एकहू तेरे सौक सयान। —बिहारी (शब्द०)।

सौक²—सज्ञा पुं० [फा० शौक] दे० 'शौक'।

सौकन†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सौक या सौतन] दे० 'सौत'।

सौकन्य—वि० [सं०] सुकन्या सबधी। सुकन्या का।

सौकर¹—वि० [स०] [वि० स्त्री० सौकरी] १ सूकर या सूअर का। २ सूकर या सूअर सबधी। ३ वाराह अवतार सबधी।

सौकर²—सज्ञा पुं० दे० 'सौकर तीर्थ'।

सौकरक¹—सज्ञा पुं० [सं०] सौकर तीर्थ।

सौकरक²—वि० सूअर सबधी। सूअर का। दे० 'सौकर'।

सौकर तीर्थ—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

सौकरायण—सज्ञा पुं० [स०] १ शिकारी। शिकार करनेवाला। व्याध। अहेरी। २ वैदिक आचार्य का नाम।

सौकरिक—सज्ञा पुं० [स०] १ सूअर का शिकार करनेवाला। २ शिकारी। व्याध। ३ सूअर का व्यापार करनेवाला।

सौकरीय—वि० [सं०] सूअर सबधी। सूअर का।

सौकर्य—सज्ञा पुं० [स०] १ सुकर का भाव। सुकरता। सुसाध्यता। २ सुविधा। सुभीता। ३ सूकर का भाव या धर्म। सूकरता। सुअरपन। ४ निपुणता। कुशलता (कौ०)। ५ किसी भोज्य पदार्थ या ओषधि की सरल तयारी (कौ०)।

सौकीन—सज्ञा पुं० [फा० शौकीन] दे० 'शौकीन'।

सौकीनी—सज्ञा स्त्री० [फा० शौकीनी] दे० 'शौकीनी'।

सौकुमारक—सज्ञा पुं० [स०] सुकुमार का भाव या धर्म। सुकुमारता। सौकुमार्य।

सौकुमार्य¹—सज्ञा पुं० [स०] १ सुकुमार का भाव। सुकुमारता। कोमलता। नाजुकपन। २ यौवन। जवानी। ३ काव्य का एक गुण जिसके लाने के लिये ग्राम्य और श्रुतिकटु शब्दो का प्रयोग त्याज्य माना गया है।

सौकुमार्य²—वि० सुकुमार। कोमल। नाजुक।

सौकृति—सज्ञा पुं० [स०] १. एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम। २ उक्त ऋषि के गोत्र का नाम।

सौकृत्य—सज्ञा पुं० [स०] १ याग, यज्ञादि पुण्यकर्म का सम्यक् अनुष्ठान। २ दे० 'सौकर्म'।

सौकृत्यायन—सज्ञा पुं० [स०] वह जो सुकृत्य के गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो।

सौक्ति—सज्ञा पुं० [स०] १ एक गोत्र का नाम। २ एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सौक्तिक¹—वि० [सं०] सूक्त सबधी। सूक्त का।

सौक्तिक²—सज्ञा पुं० वह जो सिरका आदि बनाता हो। शौक्तिक।



सौक्ष्म—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सौक्ष्म्य'।

सौक्ष्मक—सज्ञा पुं० [सं०] बारीक कीडा। सूक्ष्म कीट।

सौक्ष्म्य—सज्ञा पुं० [स०] सूक्ष्म का भाव। सूक्ष्मता। बारीकी।

सौख¹—सज्ञा पुं० [स०] १ सुख का भाव या धर्म। सुखता। सुख। आराम। २ सुख का अपत्य।

सौख(पु)†²—सज्ञा पुं० [फा० शौक] दे० 'शौक'।

सौखप्रश्निक—सज्ञा पुं० [सं०] भाट। बदी। स्तावक।

सौखरात्रिक—सज्ञा पुं० [सं०] बदी। वैतालिक। स्तुतिपाठक। अर्थिक।

सौखशय्यिक सज्ञा पुं० [स०] वैतालिक। स्तुतिपाठक। बदी। अर्थिक।

सौखशायनिक—सज्ञा पुं० [स०] १ वैतालिक। स्तुतिपाठक। अर्थिक। बदी। २ सुखपूर्वक शयन की वार्ता पूछनेवाला। वह जो किसी से उसके सुखशयन की बात पूछे (कौ०)।

सौखशायिक—सज्ञा पुं० [स०] १. वैतालिक। स्तुतिपाठक। अर्थिक। बदी। २ दे० 'सौखशायनिक' (कौ०)।

सौखसुप्तिक—सज्ञा [स०] १ वैतालिक। स्तुतिपाठक। बदी। २ दे० सौखशायनिक' (कौ०)।

सौखा† वि० [हिं० सुख] सहज। सरल।

सौखिक—वि० [स०] १. सुख चाहनेवाला। सुखार्थी। २. सुख से सबधित। ३ आनदप्रद (कौ०)।

सौखी‡ सज्ञा पुं० [फा० शोख या शौकीन] गुडा। बदमाश।

सौखीन‡—सज्ञा पुं० [फा० शौकीन] दे० 'शौकीन'।

सौखीय—वि० [स०] १ दे० 'सौखिक'। २ सुख या आनद सबधी। सुखदायक (कौ०)।

सौख्य—सज्ञा पुं० [स०] १ सुख का भाव। सुखता। सुखत्व। २. सुख। आराम। आनदमगल।

सौख्यद—वि० [स०] सुख देनेवाला। आनद देनेवाला। सुखद।

सौख्यदायक¹—सज्ञा पुं० [स०] मूँग। मुद्ग।

सौख्यदायक²—वि० सुख देनेवाला (कौ०)।

सौख्यदायी—वि० [स० सौख्यदायिन्] सुख देनेवाला। सुखद।

सौख्यशायनिक—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सौखशायनिक' (कौ०)।

सौगद—सज्ञा स्त्री० [सं० सौगन्ध] शपथ। कसम। सौंह। उ०—(क) नगर नारि को यार भूलि परतीति न कीजै। सो सो सौगद खाय चित्त मे एक न दीजै।—गिरिधर (शब्द०)। (ख) वस्ताद की सौगद मुझे हम तो बाबा हारे। कहत केशव गगन मगन सोइ अल्ला के प्यारे।—दक्खिनी०, पृ० १२३। (ग) प्राणधन! सच तुमको सौगद, तुम्हारा यह अभिनव है साज। —झरना, पृ० ४३।

क्रि० प्र०—खाना।—देना।

सौगध¹—सज्ञा पुं० [सं० सौगन्ध] १ सुगधित तैल, इत्र आदि का

व्यापार करनेवाला। गधी। २ सुगध। खुशबू। ३ अगिया घास। भूतृण। कतृण। ४ एक वर्णसकर जाति जिसका उल्लेख महाभारत मे है।

सौगध¹—वि० सुगधयुक्त। सुगधित। खुशबूदार।

सौगध²—सज्ञा स्त्री० दे० 'सौगद'।

सौगधक -सज्ञा पुं० [स० सौगन्धक] नीला कमल। नील कमल।

सौगधिक¹—सज्ञा पुं० [स० सौगन्धिक] १ नील कमल। नील पद्म। २ लाल कमल। रक्त कमल। ३ सफेद कमल। श्वेत कमल। कह्लार। ४ गधतृण। भूतृण। रामकपूर। ५ रूसा घास। रोहिप तृण। ६ गधक। गधपाषाण। ७ पुखराज। पद्मराग मणि। ८ एक प्रकार का कीडा जो श्लेष्मा से उत्पन्न होता है। (चरक)। ९ सुगधित तेल, इत्र आदि का व्यवसाय करनेवाला। गधी। उ०—सौगधिक नव नव सुगधियाँ प्रभु के लिये निकाल रहे।—साकेत, पृ० ३७४। १० एक प्रकार का नपुसक जिसे किसी पुरुष की इद्रिय अथवा स्त्री की योनि सूँघने से उद्दीपन होता है। नासायोनि। (वैद्यक)। ११ दालचीनी, इलायची और तेजपत्ता इन तीनो का समूह। त्रिसुगधि। १२ भागवत मे वर्णित एक पर्वत का नाम। १३ हीरक। हीरा।—वृहत्सहिता, पृ० ३७७।

सौगधिक²—वि० सुगधित। सुवासित। खुशबूदार।

सौगधिक वन—सज्ञा पुं० [सं० सौगन्धिक वन] १ कमल का घना झुड। कमल का वन या जगल। २ एक तीर्थ का नाम।—(महाभारत)।

सौगधिका—सज्ञा स्त्री० [सं० सौगन्धिका] १ एक प्रकार की पद्मिनी। २ वाल्मीकि रामायण मे वर्णित कुबेर की नगरी की नदी का नाम।

सौगधिपत्रक—सज्ञा पुं० [स० सौगन्धिपत्रक] सफेद बर्बरी। श्वेतार्जका।

सौगध्य—सज्ञा पुं० [स० सौगन्ध्य] सुगधि का भाव या धर्म। सुगधता। सुगधत्व।

सौगत¹—सज्ञा पुं० [स०] १ सुगत (बुद्ध) का अनुयायी। बौद्ध। २ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

सौगत²—वि० १ सुगत सबधी। २ सुगत मत का।

सौगतिक -सज्ञा पुं० [स०] १ बौद्ध धर्म का अनुयायी। २ बौद्ध भिक्षु। ३ नास्तिक। शून्यवादी। ४ अनीश्वरवादी।

सौगम्य—सज्ञा पुं० [स०] सुगम का भाव। सुगमता। आसानी।

सौगरिया—सज्ञा पु० [हिं० सौगर+इया (प्रत्य०)] क्षत्रियो की एक जाति या वश। उ०—गौर सुगोकुल रामसिंह परताप कमठ कुल। रामचद्र कुल पाडु भेद चहुँवान खग्ग खुल। सूरत राम प्रसिद्ध कुसल तन अरु पाखरिया। पैम सिंह प्रथिसिंह अमरवाला सौगरिया।—सुजान०, पृ० २१।

सौगात—सज्ञा स्त्री० [तु० सौगात] वह वस्तु जो परदेश से इष्ट मित्रो को देने के लिये लाई जाय। भेट। उपहार। नजर। तोहफा। जैसे—हमारे लिये बबई से क्या सौगात लाए हो ?

क्रि० प्र०—देना। —मिलना। —लाना।

सौगाती—वि० [हिं० सौगात+ई (प्रत्य०)] १ सौगात के लायक। उपहार के योग्य। २ उत्तम। बढिया। उमदा।

सौघा†—वि० [हिं० महँगा का अनु०] सस्ता। अल्प मूल्य का। कम दाम का। महँगा का उलटा। उ०—महँगे मनि कचन किए सौंघो जग जल नाज।—तुलसी ग्र०, पृ० ९७।

सौच(पु)—सज्ञा पुं० [स० शौच] दे० 'शौच'। उ०—सकल सौच करि जाइ नहाए। नित्य निवाहि मुनिहि सिर नाए।—तुलसी (शब्द०)। (ख) मन उनमेख छुटत नहिं कबही सौच तिलक पहिरे गल माला।—भीखा० श०, पृ० ३१।

सौचि—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सौचिक'।

सौचिक—सज्ञा पु० [सं०] सूची कर्म या सिलाई द्वारा जीविका निर्वाह करनेवाला। दरजी। सूचिक। सूत्रभित्।

सौचिक्य—सज्ञा पुं० [सं०] सूचिक का कार्य। दरजी का काम। सीने का काम।

सौचित्ति—सज्ञा पु० [सं०] वह जो सुचित्त का अपत्य हो। सुचित्त का पुत्र।

सौचिक्कि—सज्ञा पु० [सं०] यज्ञ मे एक प्रकार की अग्नि।

सौचुक—सज्ञा स० [स०] भूतिराज के पिता का नाम।

सौचुक्य—सज्ञा पुं० [स०] सूचक का भाव या कर्म। सूचकता।

सौज—सज्ञा स्त्री० [सं० शय्या, मि० फा०, साज] उपकरण। सामग्री। साज सामान। उ०—(क) कहाँ लगि समुझाऊँ सूर सुनि जाति मिलन की औधि टरी। लेहु सँभारि देहु पिय अपनी बिन प्रमान सब सौज धरी।—सूर (शब्द०)। (ख) जन पुकारे हरि पै जाइ। जिनकी यह सब सौज राधिका तेरे तनु सब लई छँडाइ।—सूर (शब्द०)। (ग) जिन हरि सौज चोरि जग खाई। विगत दसन ते होंहि बनाई।—रामाश्वमेध (शब्द०)। (घ) अलि सुगध बस रहे लुभाई। भोग सौज सब सजी बनाई।—रामाश्वमेध (शब्द०)।

सौज²—वि० [स० सौजस्] दे० 'सौजा'।

सौज(पु)³—सज्ञा पुं० [स० श्वापद, प्रा० सावज्ज, साउज] दे० 'सौजा'।

सौजना(पु)†—क्रि० अ० [हिं० सजना] शोभा देना। भला जान पडना। उ०—बरुनि बान अस ओपहँ बेधे रन बन ढाँख। सौजहिं तन सब रोवाँ पखिहि तन सब पाँख।—जायसी (शब्द०)।

सौजन्य—सज्ञा पुं० [स०] सुजन का भाव। सुजनता। भलमनसत। उ०—उसके उदार सौजन्य के अभाव मे ग्रथ का भली प्रकार से सपन्न हो सकना कठिन ही था।—अकबरी०, पृ० १०। २ उदारता। औदार्य। ३ कृपा। करुणा। अनुकपा (को०)। ४ मित्रता। सौहार्द (को०)।

सौजन्यता—सज्ञा स्त्री० [सं० सौजन्य+हिं० ता (प्रत्य०)] दे० 'सौजन्य'। उ०—क्यो महाशय, यही सौजन्यता है।—अयोध्या सिंह (शब्द०)।

विशेष—शुद्ध भाववाचक शब्द 'सौजन्य' ही है। उसमे भी 'ता' प्रत्यय लगाकर जो 'सौजन्यता' रूप बनाया जाता है, वह अशुद्ध है।

सौजस्क—वि० [स०] दे० 'सौजा'।

सौजा[1]—वि० [सं० सौजस्] ओजयुक्त। ताकतवर। बलवान्। बली। शक्तिशाली [को०]।

सौजा[2]—सज्ञा पुं० [स० श्वापद, प्रा० सावज्ज, साउज, हिं० सावज] वह पशु या पक्षी जिसका शिकार किया जाय। उ०—आपुहि बन और आपु पखेरू। आपुहि सौजा आपु अहेरू।—जायसी (शब्द०)। उ०—(ख) भाँति भाँति के सौजे दौरत रहत जहाँ नित।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ४६४।

सौजात—सज्ञा पुं० [स०] सुजात के वंश मे उत्पन्न व्यक्ति।

सौजामि—सज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सौजोर(पु)—वि० [फा० शहजोर] दे० 'शहजोर'। उ०—रद छद अधर न कीजिए नागर नद किसोर। सास ननद सौजोर मुख कहा कहौगी भोर।—स० सप्तक, पृ० ३७२।

सौड़—सज्ञा पुं० [हिं० सौंड] दे० 'सौंड'।

सौडि(पु), सौड़ी(पु)—सज्ञा स्त्री० [हिं० सौंड] १ चादर।

सौड़ो(पु)—सज्ञा स्त्री० [हिं०] रजाई। उ०—(क) ममिता मेरा क्या करै, प्रेम उघाडी पौलि। दरसन भया दयाल का, सूल भई सुखसौडि।—कबीर ग्र०, पृ० १६। (ख) गग जमुन मोरी पाटलडी रे, हसा गवन तुलाई जी। धरणि पायरणौ नै आम पछेवडौ तौ भी सौडी न माई जी।—गोरख०, पृ० ६३। २ शय्या। सेज?

सौडल—सज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन आचार्य का नाम।

सौत[1]—सज्ञा स्त्री० [सं० सपत्नी] किसी स्त्री के पति या प्रेमी की दूसरी स्त्री या प्रेमिका। किसी स्त्री की प्रेमप्रतिद्वद्विनी। सपत्नी। सौक। सवत। उ०—(क) देह दुलहैया की बढै ज्यो ज्यो जोवन जोति। त्यो त्यो लखि सौतै सबै बदन मलिन दुति होति।—बिहारी (शब्द०)। (ख) काल ब्याही नई हो तो घाम हू न गई पुनि आजहू ते मेरे सीस सौत को बसाई हे।—हनुमन्नाटक (शब्द०)।

मुहा०—सौतिया डाह = (१) दो सौतो मे होनेवाली डाह या ईर्ष्या। (२) द्वेष। जलन। सौत ला के बिठाना = पत्नी के होते हुए दूसरी स्त्री को घर बैठाना या घर मे डाल लेना। उ०—मतलब यह कि कोई सौत ला के नही बिठाएँगे।—सैर०, पृ० २५।

सौत[2]—वि० [स०] १ सूत से उत्पन्न। २ सूत सबधी। सूत का।

सौतन(पु)—सज्ञा स्त्री० [हिं० सौत] दे० 'सौत'। उ०—कान्ह भए बस बाँसुरी के अब कौन सखी हमको चहिहै। निस द्यौस रहै सँग साथ लगी यह सौतन तापन क्यो सहिहै।—रसखान (शब्द०)।

सौतनि(पु)—सज्ञा [स० सपत्नी] दे० 'सौत'। उ०—बाढत तो उर उरज भर भरि तरुनई विकास। बोभनि सौतनि के हिये आवत रूँध उसास।—बिहारी (शब्द०)।

सौति[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ सूत के अपत्य, कर्ण। २ महाभारत के प्रवक्ता एक मुनि।

सौति(पु)[2]—सज्ञा स्त्री० [हिं० सौत] दे० 'सौत'। उ०—(क) बिथुरो जावक सौति पग निरखि हँसी गहि गाँस। सलज हँसौही लखि लियौ आधी हँसी उसास।—बिहारी (शब्द०)। (ख) गुर लोगनि के पग लागति प्यार सो प्यारी बहू लखि सौति जरी।—देव (शब्द०)।

सौतिन(पु)—सज्ञा स्त्री० [हिं० सौत] दे० 'सौत'। उ०—(क) चौक चौक चकई सी सौतिन की दूती चली सो तै भई दीन अरबिंद गति मद ज्यो।—केशव (शब्द०)। (ख) नायक के नैननि मै नाइए सुधा सो सब सौतिन के लोचननि लौन सो लगाइए।—मतिराम (शब्द०)। (ग) के मोरा जाएत दुरहुक दूर, सहस सौतिनि बस माधव पुर।—विद्यापति, पद ५७४।

सौतुक(पु)—सज्ञा पुं० [हिं० सोँतुख] दे० सौँतुख। उ०—(क) देखि चकृत भई सौतुक की सपने।—सूर (शब्द०)। (ख) सौतुक सो सपनो भयो, सपनो सौतुक रूप।—मतिराम, ग्र० पृ० ३३१।

सौँतुख(पु)—सज्ञा पुं० [हिं० सौँतुख] दे० 'सौँतुख'। उ०—पिय मिलाप को सुख सखी कह्यो न जाय अनूप। सौतुख सो सपनो भयो सपनो सौतुख रूप।—मतिराम (शब्द०)।

सौतुष(पु)—सज्ञा पुं० [हिं० सौँतुख] दे० 'सौँतुख'। उ०—पुनि पुनि करै प्रनामु न आवत कछु कहि। देखौ सपन कि सौतुष ससि-सेषर सहि।—तुलसी (शब्द०)।

सौतेला—वि० [हिं० सौत + एला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सौतेली] १ सौत से उत्पन्न। सौत का। जैसे,—सौतेला लडका। २ जिसका सबध सौत के रिश्ते से हो। जैसे,—सौतेला भाई (अर्थात् माँ की सौत का लडका)। सौतेली माँ (अर्थात् माँ की सौत)। सौतेले मामा (अर्थात् नानी की सौत का लडका या सौतेली माँ का भाई)।

सौत्य[1]—सज्ञा पुं० [स०] सूत या सारथि का काम।

सौत्य[2]—वि० १ सूत या सारथि सबधी। २ सुत्य सबधी। सोमाभिषव सबधी।

सौत्र[1]—सज्ञा पुं० [स०] ब्राह्मण।

सौत्र[2]—वि० १ सूत का। २ सूत्र सबधी। सूत्र का। ३ सूत्र मे उल्लिखित या कथित। श्रौत सूत्रग्रथो से सबद्ध या उनका अनुसरण करनेवाला।

सौत्रांतिक—सज्ञा पुं० [स० सौत्रान्तिक] बौद्ध दर्शन की एक शाखा या बौद्धो का एक भेद।

विशेष—इनके मत से अनुमान प्रधान है। इनका कहना है कि बाहर कोई पदार्थ सागोपाग प्रत्यक्ष नही होता, केवल एकदेश के प्रत्यक्ष होने से शेष का ज्ञान अनुमान से होता है। ये कहते है कि सब पदार्थ अपने लक्षण से लक्षित होते है और लक्षण सदा लक्ष्य मे वर्तमान रहता है।

सौत्रामण[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० सौत्रामणी] इद्र सबधी। इद्र का।

सौत्रामण[2]—सज्ञा पुं० एक दिन मे होनेवाला एक प्रकार का याग। एक एकाह्न यागविशेष।

सौत्रामणधनु—संज्ञा पुं० [सं० सौत्रामणधनुस्] इंद्रधनुष।

सौत्रामणिक—वि० [सं०] सौत्रामणी यज्ञ से संबद्ध या उक्त यज्ञ में उपस्थित [को०]।

सौत्रामणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ इंद्र के प्रीत्यर्थ किया जानेवाला एक प्रकार का यज्ञ। २ पूर्व दिशा का एक नाम जिसके स्वामी इंद्र हैं (को०)।

सौत्रि—संज्ञा पुं० [सं०] तंतुवाय। जुलाहा [को०]।

सौत्रिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ जुलाहा। तंतुवाय। २ वह जो बुना जाय। बुनी हुई वस्तु।

सौत्वन—संज्ञा पुं० [सं०] सुत्वन के अपत्य या वंशज।

सौदंति—संज्ञा पुं० [सं० सौदन्ति] सुदंत के अपत्य या वंशज।

सौदंतेय—संज्ञा पुं० [सं० सौदन्तेय] सुदंत के अपत्य।

सौदक्ष—वि० [सं०] १ सुदक्ष संबंधी। सुदक्ष का। २ सुदक्ष से उत्पन्न।

सौदक्षेय—संज्ञा पुं० [सं०] सुदक्ष के अपत्य या वंशज।

सौदत्त—वि० [सं०] १ सुदत्त संबंधी। सुदत्त का। २ सुदत्त से उत्पन्न।

सौदर्य¹—वि० [सं०] १ सहोदर या सगे भाई संबंधी। २ सोदर या भाई का सा।

सौदर्य²—संज्ञा पुं० भ्रातृत्व। भाईपन।

सौदर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] वाहीक जाति के एक गाँव का नाम।

सौदा—संज्ञा पुं० [अ०] १ वह चीज जो खरीदी या बेची जाती हो। क्रय विक्रय की वस्तु। चीज। माल। जैसे,—(क) चलो बाजार से कुछ सौदा ले आवें। (ख) तुम्हारा सौदा अच्छा नहीं है। (ग) आप क्या क्या सौदा लीजिएगा? उ०—(क) व्योपार तो याँ का बहुत किया, अब वाँ का भी कुछ सौदा लो। —नजीर (शब्द०)। २. लेन देन। व्यवहार। उ०—(क) क्या खूब सौदा नक्द है उस हाथ दे इस हाथ ले।—नजीर (शब्द०)। (ख) दरजी को खुरपी दरकार नहीं, वह गेहूँ लेना चाहता है, अत उन दोनों का सौदा नहीं हो सकता।—मिश्रबंधु (शब्द०)। (ग) प्राय सभी बैंके एक दूसरे से हिसाब रखती हैं। इस प्रकार सौदे का काम कागजी घोड़ों (चेकों) द्वारा चलता है। —मिश्रबंधु (शब्द०)। (घ) जरासुत सों और कोउ नहिं मिलै मोहि दलाल। जो करै सौदा समर को सहज इमि या काल।—गोपाल (शब्द०)।

मुहा०—सौदा पटना = क्रयविक्रय की बातचीत ठीक होना। जैसे,—तुमसे सौदा नहीं पटेगा। उ०—आखिर इसी बहाने मिला यार से नजीर। कपड़े बला से फट गए सौदा तो पट गया।—नजीर (शब्द०)।

३ क्रय विक्रय। खरीद फरोख्त। व्यापार। उ०—और वनिज मैं नाही लाहा होत मूल में हानि। सूर स्वामि को सौदो साँचो कहो हमारो मानि।—सूर (शब्द०)। ४ खरीदने या बेचने की बातचीत पक्की करना। जैसे,—उन्होंने पचास गाँठ का सौदा किया। उ०—राजा खुद तिजारत करता है, बिना उसकी आज्ञा के राँगा, हाथीदाँत, सीसा इत्यादि का कोई सौदा नहीं कर सकता।—शिवप्रसाद (शब्द०)।

यौ०—सौदागर = व्यापारी। सौदासुलुफ = खरीदने की चीज। वस्तु। सौदासूत = व्यवहार। उ०—सुहृद समाजु दगाबाजी ही को सौदासूत जब जाको काजु तब मिलै पायँ परि सो।—तुलसी (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना।—पटना।—लेना।—होना।

सौदा²—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १ पागलपन। बावलापन। दीवानापन। उन्माद। २ उर्दू के एक प्रसिद्ध कवि का नाम। ३ प्रेम। मुहब्बत। इश्क (को०)। ४ यूनानी चिकित्सा शास्त्र में कथित चार दोषों में एक जो स्याह या काला रंग का होता है (को०)।

सौदा†³—संज्ञा पुं० [देश०] वे काट छाँटकर साफ किए हुए पान के पत्ते जो ढोली में सड़ गए हों। (तंबोली)।

सौदाई—संज्ञा पुं० [अ० सौदा + ई (प्रत्य०)। जिसे सौदा या पागलपन हुआ हो। पागल। बावला। उ०—भाँग पड़ी कूएँ में जिसने पिया बना सौदाई है।—भारतेंदु ग्रं०, भा० २, पृ० ५५१।

मुहा०—किसी का सौदाई होना = किसी पर बहुत अधिक आसक्त होना। सौदाई बनाना = अपने ऊपर किसी को आसक्त करना।

सौदागर—संज्ञा पुं० [फ़ा०] व्यापारी। व्यवसायी। तिजारत करनेवाला। जैसे,—कपड़ों का सौदागर, घोड़ों का सौदागर।

सौदागर बच्चा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सौदागर + हिं० बच्चा] सौदागर अथवा सौदागर का लड़का।

सौदागरी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सौदागर का काम। व्यापार। व्यवसाय। तिजारत। रोजगार।

सौदामनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बिजली। विद्युत्। २ एक प्रकार की विद्युत् या बिजली। मालाकार विद्युत्। ३ विष्णुपुराण में उल्लिखित कश्यप और विनता की एक पुत्री का नाम। ४ एक अप्सरा का नाम। (बाल रामायण)। ५ एक रागिनी जो मेघ राग की सहचरी मानी जाती है। ६ एक यक्षिणी (को०)। ७ हाहा गंधर्व की एक कन्या का नाम (को०)। ८ ऐरावत हाथी की स्त्री (को०)।

सौदामनीय—वि० [सं०] १ सौदामनी या विद्युत् के समान। सौदामनी या विद्युत् सा। २ सौदामनी या विद्युत् संबंधी।

सौदामिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सौदामनी'। उ०—वर्षा बरनहुँ हंस बक दादुर चातक मोर। केतक कंज कदंब जल सौदामिनि घनघोर।—केशव (शब्द०)।

सौदामिनीय—वि० [सं०] दे० 'सौदामनीय'।

सौदामेय—संज्ञा पुं० [सं०] सुदामा के अपत्य या वंशज।

सौदाम्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सौदामनी'।

सौदायिक¹—संज्ञा पुं० [सं०] वह धन आदि जो स्त्री को उसके विवाह के अवसर पर उसके पिता माता या पति के यहाँ से मिले।

विशेष—दायभाग के अनुसार इस प्रकार मिला हुआ धन स्त्री का हो जाता है। उसपर उसी का सोलहो आने अधिकार होता है, और किसी का कोई अधिकार नही होता।

२ दहेज। दायज। दाइज।

सौदायिक[२]—वि० दाय सबधी। दाय का।

सौदावी—वि० [अ०] वात के कारण उत्पन्न। वातजन्य। सौदा या उन्मादजन्य [को०]।

सौदास—सज्ञा पुं० [सं०] इक्ष्वाकु वशी एक राजा का नाम। ये राजा सुदास के पुत्र और ऋतुपर्ण के पौत्र थे। इन्हें मित्रसह और कल्मषपाद भी कहते है।

सौदासि—सज्ञा पु० [स०] १ एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम। २ इन ऋषि के गोत्र का नाम।

सौदेव—सज्ञा पुं० [सं०] सुदेव के पुत्र, दिवोदास।

सौद्युम्नि—सज्ञा पुं० [स०] सुद्युम्न के अपत्य या वशज।

सौध[१]—सज्ञा पुं० [सं०] १ भवन। प्रासाद। अट्टालिका। महल। उ०—जहाँ विमान वनितान के श्रमजल हरत अनूप। सौध पताकनि के वसन होइ विजन अनुरूप। —मतिराम (शब्द०)। २ चाँदी। रजत। ३ दुधिया पत्थर। दुग्धपाषाण। ४ एक प्रकार का रत्न (को०)। ५ चूना (को०)। ६ चूने से धवलित गृह (को०)।

सौध[२]—वि० १ सफेदी, पलस्तर या अस्तरकारी किया हुआ। २ सुधा से युक्त (को०)। ३ सुधा सबधी (को०)।

सौधक—सज्ञा पु० [सं०] परावसु गधर्व के नौ पुत्रो मे से एक। उ०—ब्रह्म कल्प महँ हो गधर्वा। नाम परावसु तेहि सुत सर्वा। मदर मवर मदी सौधक। सुधन सुदेव महावलि नामक।—गोपाल (शब्द०)।

सौधकार—सज्ञा पुं० [स०] सौध वनानेवाला। प्रासाद या भवन वनानेवाला। राज। मेमार।

सौधतल—सज्ञा [स०] महल या प्रासाद का निचला हिस्सा [को०]।

सौधना(पु)—क्रि० स० [स० शोधन, हिं० सोधना] दे० 'सोधना'। उ०—ताते लेनौ सौधौ या कौ। तव उपाय करिहौ मैं ताकौ। —सूदन (शब्द०)।

सौधन्य—वि० [स०] सुधन से उत्पन्न।

सौधन्वन—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सौधन्वा'।

सौधन्वा—सज्ञा पु० [स० सौधन्वन्] १ सुधन्वा के पुत्र, ऋभु। २ एक वर्णसकर जाति।

सौधमौलि—सज्ञा पु० [स०] सौध का सिरा या सवसे ऊँचा भाग [को०]।

सौधम—सज्ञा पुं० [स०] जैनियो के देवताओ का निवासस्थान। कल्पभवन।

सौधर्मज—सज्ञा पु० [स०] सौधर्म अर्थात् कल्पभवन मे उत्पन्न एक प्रकार के देवता। —(जैन)।

सौधर्म्य—सज्ञा पुं० [स०] १ सुधर्म का भाव। २ साधुता। भलमनसत।

सौधशिखर—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सौधमौलि' [को०]।

सौधाकार—वि० [स०] सुधाकर या चद्रमा सवधी। चद्रमा का।

सौधात—सज्ञा पुं० [स०] ब्राह्मण और भृज्जकठी से उत्पन्न सतान।

विशेष—भृज्जकठ एक वर्णसकर जाति थी जो व्रात्य ब्राह्मण और ब्राह्मणी से उत्पन्न थी।

सौधातकि—सज्ञा पुं० [स०] सुधाता के अपत्य।

सौधार—सज्ञा पु० [स०] नाट्य शास्त्र के अनुसार नाटक के चौदह भागो मे से एक का नाम।

सौधाल—सज्ञा पु० [सं०] शिव का मदिर। शिवालय।

सौधावति—सज्ञा पुं० [सं०] सुधावति के अपत्य।

सौधृतेय—सज्ञा पुं० [स०] सुधृति के अपत्य या वशज।

सौधोतकि—सज्ञा पु० [स०] दे० 'सौधातकि'।

सौनद—सज्ञा पुं० [स० सौनन्द] वलराम के मूषल का नाम।

सौनदा—सज्ञा स्त्री० [स० सौनन्दा] मार्कंडेय पुराण के अनुसार वत्सप्री की पत्नी का नाम।

सौनदी—सज्ञा पु० [सं० सौनन्दिन्] वलराम का एक नाम जो अपने पास सौनद नामक मूसल रखते थे।

सौन(पु)[१]—क्रि० वि० [स० सम्मुख] सामने। प्रत्यक्ष। उ०—व्याह कियो कुल इष्ट वसिष्ट अरिष्ट टरे घर को नृप धाए। लै सुत चार विवाहत ही घरी जानकी तात सबै समुदाए। सौन भए अपसौन सबै पथ काँप उठे जिय मे दुख पाए।—हनुमन्नाटक (शब्द०)।

सौन[२]—सज्ञा पु० [स०] १ कसाई। बूचड। २ वह ताजा मांस जो विक्री के लिये रखा हो।

यौ०—सौनधर्म्य = कसाई और पशु की सी शत्रुता। प्राणघातक दुश्मनी। सौनपालक = वह व्यक्ति जिसके यहाँ रक्षा के काम मे कसाई नियुक्त किए गए हो।

सौन[३]—वि० पशुबधशाला या कसाईखाने का। पशुवधशाला सवधी।

सौन[४]—सज्ञा पुं० [स० श्रवण] दे० 'स्रोन'। उ०—भर्म भूत सवही छुटेरी हेली सौन नछतर नाल।—चरण० वानी०, भा० २, पृ० १४५।

सौनक[१]—सज्ञा पु० [स० शौनक] दे० 'शौनक'। उ०—सौनक मुनि आसीन तहँ अति उदार तप रासि। मगन राम सिय ध्यान महँ, वेद रूप आभासि।—रामाश्वमेध (शब्द०)।

सौनक(पु)[२]—सज्ञा पु० [स० सौन या सौनिक] कसाई। वधिक। उ०—जिहि विस्वास सुसा के तात। सौनक ज्यो मैं कीनी घात। —नद० ग्र०, पृ० २३२।

सौनन†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सौंदना] कपडो को धोने से पहले उनमे रेह आदि लगाना। रेह की नाँद मे कपडे भिगोना। सौंदना। (धोवी)। उ०—तन मन लाय के सौनन कीन्हा धोअन जाय साधु की नगरी। कहहिं कवीर सुनो भाइ साधू, विन सतसँग कवहूँ नहिं सुघरी।—कवीर (शब्द०)।

सौनव्य—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सौनव्यायनी] सुनु के अपत्य।

सौनहोत्र—संज्ञा पुं० [सं० शौनहोत्र] १ वह जो शुनहोत्र के गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो। शुनहोत्र का अपत्य। २ गृत्समद ऋषि।

सौना(पु)¹—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ण, हिं० सोना] दे० 'सोना'। उ०—धरि सोनें कँ पींजरा राखौ अमृत पिवाइ। विष को कीरा रहत है विष ही मैं सुख पाइ।—रसनिधि (शब्द०)।

सौना†²—संज्ञा पुं० [हिं० सौंदन, सौनन] दे० 'सौंदन'।

सौनाग—संज्ञा पुं० [सं०] वैयाकरणो की एक शाखा का नाम, जिसका उल्लेख पतजलि के महाभाष्य मे है।

सौनामि—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सुनाम के गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो।

सौनि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ण, हिं० सोना] सोने (कुदन) का लाल वर्ण। उ०—केलि की कलानिधान सुदरि महा सुजान आन न समान छवि छाँह पैं छिपैए सौनि।—घनानद, पृ० १२।

सौनिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ मास बेचनेवाला। कसाई। वैंतसिक। मासिक। २ कौटिक। बहेलिया। व्याध। शिकारी।

सौनीतेय—संज्ञा पुं० [सं०] सुनीति के पुत्र, ध्रुव।

सौपथि—संज्ञा पुं० [सं०] सुपथ के अपत्य।

सौपना(पु)—क्रि० स० [हिं० सौंपना] दे० 'सौंपना'।

सौपर्ण¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ पन्ना। मरकत। २ सोंठ। शुठी। ३ गरुड जी के अस्त्र का नाम। गरुत्म अस्त्र। ४ ऋग्वेद का एक सूक्त। ५ गरुड पुराण।

सौपर्ण²—वि० सुपर्ण अथवा गरुड सबधी। गरुड का।

सौपर्णकेतव—वि० [सं०] विष्णु सबधी। विष्णु का।

सौपर्णव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का व्रत। गरुडव्रत।

सौपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पातालगारुडी लता। जलजमती।

सौपर्णेय—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुपर्णी के पुत्र, गरुड़। २ गायत्री आदि छद (को०)।

सौपर्ण्य—संज्ञा पुं० [सं०] सुपर्ण (बाज या चील) पक्षी का स्वभाव या धर्म।

सौपर्ण्य²—वि० दे० 'सौपर्ण'।

सौपर्व—वि० [सं०] सुपर्व सबधी। सुपर्व का।

सौपस्तबि—संज्ञा पुं० [सं० सौपस्तम्बि] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

सौपाक—संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णसकर जाति जिसका उल्लेख महाभारत मे है।

सौपातव—संज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि।

सौपमायवि—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सुपामा के गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो। सुपामा का गोत्रज।

सौपिक—वि० [सं०] १ सूप या व्यजन डाला हुआ। २ सूप या व्यजन सबधी।

सौपिष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सुपिष्ट के गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो। सुपिष्ट का गोत्रज।

सौपिष्टी—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सौपिष्ट'।

सौपुष्पि—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सुपुष्प के गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो। सुपुष्प का गोत्रज।

सौप्तिक¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ रात को सोते हुए मनुष्यो पर आक्रमण। रात्रियुद्ध। निशारण। रात्रिमारण। २ महाभारत के दसवें पर्व का नाम। सौप्तिक पर्व।

विशेष—इस पर्व मे पाडवो की अनुपस्थिति मे उनके सोते हुए विजयी दल पर अश्वत्थामा की प्रधानता मे कृतवर्मा, कृपाचार्य आदि द्वारा आक्रमण करने का वर्णन है। द्रौपदी के गर्भ से उत्पन्न पाडवो के पाँचो पुत्र, धृष्टद्युम्न आदि और महाभारत से बचे अनेक वीर इसी युद्ध मे मार डाले गए थे।

सौप्तिक²—वि० सुप्त सबधी।

सौप्रजास्त्व—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छी सतानो का होना। अच्छी औलाद होना।

सौप्रतीक—वि० [सं०] १ सुप्रतीक दिग्गज सबधी। २ हाथी का। हाथी सबधी।

सौफ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंफ] दे० सौंफ'।

सौफिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंफ] रूसा नाम की घास जब कि वह पुरानी और लाल हो जाती है।

सौफियाना—वि० [हिं० सोफियाना] दे० 'सोफियाना'।

सौफी(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सूफी, सोफी] दे० 'सूफी'। उ०—षवरि सबै लीनी नृपति, चलिय दूत निज मग्ग। आतुर पति गज्जन नमिय, सौफी वेसह जग्ग।—पृ० रा०, १९।९७।

सौबल—संज्ञा पुं० [सं०] गाधार देश के राजा सुबल का पुत्र, शकुनि। उ०—(क) जात भयो ताही समय सभा भवन कुरुनाथ। विकरण, दुश्शासन, करण, सौबल शकुनी साथ। (ख) गधार धरापति सुत सुभग मगधराज हित रस रसो। भट सौबल सौबल सग लै जग रग करिवै लसो।—गोपाल (शब्द०)।

सौबलक¹—संज्ञा पुं० [सं०] सुबल का पुत्र, शकुनि।

सौबलक²—वि० सौबल (शकुनि) सबधी। सौबल (शकुनि) का।

सौबली¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुबल की पुत्री, गाधारी। धृतराष्ट्र की पत्नी।

सौबली²—वि० सौबल (शकुनी) सबधी। सौबल।

सौबलेय—संज्ञा पुं० [सं०] सुबल के पुत्र शकुनि का एक नाम।

सौबलेयी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुबल की पुत्री और धृतराष्ट्र की पत्नी गाधारी का एक नाम।

सौबल्य—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत मे वर्णित एक प्राचीन जनपद का नाम।

सौबिगा—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बुलबुल।

विशेष—यह बुलबुल पश्चिमी भारत को छोडकर प्राय शेष समस्त भारत मे पाई जाती और ऋतु के अनुसार रग बदलती है। यह लबाई मे प्राय एक बालिश्त से कुछ कम होती है। इसके ऊपर के पर सदा हरे रहते है। यह कीडे मकोडे खाती और एक बार मे तीन अडे देती है।

**सौवीर**—संज्ञा पु० [स० सौवीर] दे० 'सौवीर'।

**सौव्रन्न**(पु)—संज्ञा पुं० [स० सुवर्ण, प्रा० सोवण्ण] सोना। स्वर्ण। उ०—आना नरिंद अजमेर वास। सभरिय कीन सौव्रन्न रास।—पृ० रा०, १।६०५।

**सौभ**—संज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत मे वर्णित राजा हरिश्चंद्र की उस कल्पित नगरी का नाम जो आकाश मे मानी गई है। कामचारिपुर। २ महाभारत मे वर्णित शाल्वो के एक नगर का नाम। ३ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम। ४ उक्त जनपद के राजा। उ०—अभिमान सहित रिपु प्रानहर वर कृपान चमकावतो। नृप सौभ लख्यो मगधेस हित सिंह समान हिंमावतो।—गोपाल (शब्द०)।

यौ०—सौभपति, सौभराज = शाल्वनरेश।

**सौभकि**—संज्ञा पुं० [सं०] द्रुपद का एक नाम।

**सौभग**[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुभग होने का भाव। सौभाग्य। खुशकिस्मती। खुशनसीबी। २ सुख। आनद। मगल। ३ ऐश्वर्य। सपदा। धन दौलत। ४ सुदरता। सौंदर्य। खूबसूरती। ५ भागवत मे वर्णित बृहच्छ्लोक के एक पुत्र का नाम।

यौ०—सौभगमद = सौभाग्यगर्व। सौभाग्य का अहकार। उ०—अवधि भून नागर नगधर कर पारस पायो। अधिक अपनपौ जानि तनक सौभगमद छायो।—नद० ग्र०, पृ० ४३।

**सौभग**[2]—वि० सुभग वृक्ष से उत्पन्न या बना हुआ। (चरक)।

**सौभगत्व**—संज्ञा पुं० [स०] सुख। आनद। मगल।

**सौभद्र**[1]—संज्ञा पुं० [स०] १ सुभद्रा के पुत्र, अभिमन्यु। २ एक तीर्थ का नाम जिसका उल्लेख महाभारत मे है। ३ वह युद्ध जो सुभद्राहरण के कारण हुआ था।

**सौभद्र**[2]—वि० सुभद्रा सबधी।

**सौभद्रेय**—संज्ञा पुं० [स०] १ सुभद्रा के पुत्र, अभिमन्यु। २ बहेडा। विभीतक वृक्ष। ३ एक तीर्थ।

**सौभर**[1]—संज्ञा पु० [सं०] १ एक वैदिक ऋषि का नाम। २ एक साम का नाम।

**सौभर**[2]—वि० सोभरि सबधी। सोभरि का।

**सौभरायण**—संज्ञा पुं० [स०] वह जो सौभर के गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो। सौभर का गोत्रज।

**सौभरि**—संज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम, जो बड़े तपस्वी थे।

विशेष—भागवत मे इनका वृत्त वर्णित है। कहते है, एक दिन यमुना मे एक मत्स्य को मछलियो से भोग करते देखकर इनमे भी भोगलालसा उत्पन्न हुई। ये सम्राट मांधाता के पास पहुँचे, जिनके पचास कन्याएँ थीं। ऋषि ने उनसे अपने लिये एक कन्या माँगी। मांधाता ने उत्तर दिया कि यदि मेरी कन्याएँ स्वयवर मे आपको वरमाल्य पहना दें, तो आप उन्हे ग्रहण कर सकते हैं। सौभरि ने समझा कि मेरी बुढौती देखकर सम्राट् ने टालमटोल की है। पर मैं अपने आपको ऐसा बनाऊगा कि राजकन्याओ की तो बात ही क्या, देवागनाएँ भी मुझे वरण करने को उत्सुक होगी। तपोबल से ऋषि का वैसा ही रूप हो गया। जब वे सम्राट् मांधाता के अत पुर मे पहुँचे, तब राजकन्याएँ उनका दिव्य रूप देख मोहित हो गई और सब ने उनके गले मे वरमाल्य डाल दिया। ऋषि ने अपनी मत्रशक्ति से उनके लिये अलग अलग पचास भवन बनवाए और उनमे बाग लगवाए। इस प्रकार ऋषि जी भोगविलास मे रत हो गए और पचास पत्नियों से उन्होने पाँच हजार पुत्र उत्पन्न किए। बह्वृचाचार्य नामक एक ऋषि ने उन्हे इस प्रकार भोगरत देख एक दिन एकात मे बैठकर समझाया कि यह आप क्या कर रहे है। इससे तो आपका तपोतेज नष्ट हो रहा है। ऋषि को आत्मग्लानि हुई। वे ससार त्याग भगवच्चिंतन के लिये वन मे चले गए। उनकी पत्नियाँ उनके साथ ही गईं। कठोर तपस्या करने के उपरात उन्होने शरीर त्याग दिया और परब्रह्म मे लीन हो गए। उनकी पत्नियो ने भी उनका सहगमन किया।

**सौभव**—संज्ञा पुं० [सं०] सस्कृत के एक वैयाकरण का नाम।

**सौभाजन**—संज्ञा [स० सौभाञ्जन] दे० 'शोभाजन'।

**सौभागिनी**—संज्ञा स्त्री० [स० सौभाग्य] सधवा स्त्री। सोहागिन। उ०—सौभागिनी करे क्रम खोय। तऊ ताहि बडि पति की ओय।—विश्राम (शब्द०)।

**सौभागिनेय**—संज्ञा पुं० [सं०] उस स्त्री का पुत्र जो अपने पति को प्रिय हो। सबसे प्रिय परिणीता का पुत्र। सुभगा या सुहागिन का पुत्र।

**सौभाग्य**—संज्ञा पुं० [स०] १ अच्छा भाग्य। अच्छा प्रारब्ध। अच्छी किस्मत। खुशकिस्मती। खुशनसीबी। २ सुख। आनद। ३ कल्याण। कुशलक्षेम। ४ स्त्री के सधवा रहने की अवस्था। पति के जीवित रहने की अवस्था। सुहाग। अहिवात। ५ अनुराग। ६ ऐश्वर्य। वैभव। ७ सुदरता। सौंदर्य। खूबसूरती। ८ मनोहरता। ९ शुभकामना। मगलकामना। १० सफलता साफल्य। कामयाबी। ११ ज्योतिष मे विष्कभ आदि सत्ताइस योगो मे से चौथा योग जो बहुत शुभ माना जाता है। १२. सिंदूर। १३ सुहागा। टकण। १४ एक प्रकार का पौधा। १५ एक प्रकार का व्रत।

यौ०—सौभाग्यचिह्न = (१) सधवा होने का चिह्न। सुहाग का बोध करानेवाली वस्तुएँ। (२) भाग्यवान होने का प्रतीक। सौभाग्यतंतु = विवाह के समय वर द्वारा कन्या के गले मे पहनाई जानेवाली सिकडी या डोरा। मगलसूत्र। सौभाग्यफल = आनदप्रदायक फल या परिणामो से युक्त। सौभाग्यमजरी = एक देवागना। सौभाग्यशयन व्रत = एक व्रत जो फाल्गुन शुक्ल पक्ष की तृतीया को होता है। विशेष दे० 'सौभाग्य व्रत'।

**सौभाग्य चिंतामणि**—संज्ञा पु० [सं० सौभाग्यचिन्तामणि] सनिपात ज्वर की एक औषध।

विशेष—इसके बनाने की विधि इस प्रकार है। सुहागे का लावा, विष, जीर, मिर्च, हड़, बहेडा, आँवला, सेंधा, कर्कच, विट,

सोंचर और सांभर नमक, अभ्रक और गधक ये सब चीजें बराबर लेकर खरल करते है फिर सँभालू (निर्गुडी), शेफालिका, भँगरा (भृगराज), अडूसा (वासक) और लटजीरा (अपामार्ग) के पत्तो के रस मे अच्छी तरह भावना देने के उपरात एक एक रत्ती की गोली बनाते हैं। सनिपातिक ज्वर की यह उत्तम औषध मानी गई है।

**सौभाग्य तृतीया**—संज्ञा स्त्री० [सं०] भाद्र शुक्ल पक्ष की तृतीया जो वहुत पवित्र मानी गई है। हरितालिका। तीज।

**सौभाग्यफल**—वि० [स०] जिसका फल सौभाग्य हो।

यौ०—सौभाग्यफलदायक = सौभाग्य, कल्याणरूपी फल देनेवाला।

**सौभाग्य व्रत**—संज्ञा पुं० [सं० सौभाग्यव्रत] एक व्रत जिसके फागुन शुक्ल तृतीया को करने का विधान है।

विशेष—वाराह पुराण मे इसका वडा माहात्म्य वर्णित है। यह व्रत स्त्री पुरुष दोनो के लिये सौभाग्यदायक वताया गया है।

**सौभाग्य मडन**—संज्ञा पु० [सौभाग्यमण्डन] हरताल।

**सौभाग्य मद** संज्ञा पुं० [स०] सौभाग्य, समृद्धि, कल्याण आदि के कारण उत्पन्न उल्लास या गौरव।

**सौभाग्यवती**—वि० स्त्री० [स०] १ (स्त्री) जिसका सौभाग्य या सुहाग बना हो। जिसका पति जीवित हो। सधवा। सुहागिन। २ अच्छे भाग्यवाली।

**सौभाग्यवान्**—वि० [सं० सौभाग्यवत्] [वि० स्त्री० सौभाग्यवती] १ जिसका भाग्य अच्छा हो। अच्छे भाग्यवाला। खुशकिस्मत। खुशनसीब। २ सुखी और सपन्न। खुशहाल।

**सौभाग्यविलोपी**—वि० [स० सौभाग्यविलोपिन्] सौदर्य नष्ट करनेवाला। अच्छे भाग्य या सौभाग्य को नष्ट करनेवाला [को०]।

**सौभाग्यशयन व्रत**—संज्ञा पुं० [स०] सौभाग्यदायक एक व्रतविशेष। दे० 'सौभाग्य व्रत'।

**सौभाग्य शुठी**—संज्ञा स्त्री० [सं० सौभाग्यशुण्ठी] आयुर्वेद मे एक प्रसिद्ध पाक जो सूतिका रोग के लिये वहुत उपकारी माना गया है।

विशेष—इसके वनाने की विधि इस प्रकार है—घी ८ तोले, दूध १२८ तोले, चीनी २०० तोले, इनको एक मे मिला ३२ तोले सोठ का चूर्ण डाल गुडपाक की विधि से पाक करते हैं। फिर इसमे घनिया १२ तोले, सौंफ २० तोले, तेजपत्ता, वायविडग, सफेद जीरा, काला जीरा, सोंठ, मिर्च, पीपल, नागरमोथा, नागकेसर, दालचीनी और छोटी इलायची ४–४ तोले डालकर पाक करते है। 'भावप्रकाश' के अनुसार इसका सेवन करने से सूतिका रोग, तृषा, वमन, ज्वर, दाह, शोष, श्वास, खाँसी, प्लीहा आदि का नाश होता है और अग्नि प्रदीप्त होती है।

इसके निर्माण की दूसरी विधि यह है – कसेरू, सिंघाडा, कमलगट्टा, नागरमोथा, नागकेसर, सफेद जीरा, कालाजीरा, जायफल, जावित्री, लौग, भूरि छरीला (शैलज), तेजपत्ता, दालचीनी, धौ के फूल, इलायची, सोया, धनिया, सतावर, अभ्रक और लोहा आठ आठ तोले, सोठ का चूर्ण एक सेर, मिश्री तीस पल, घी एक सेर और गाय का दूध आठ सेर इन सवको मिलाकर पाक विधि के अनुसार पाक करते हैं। माला एक तोला है।

**सौभासिक**—वि० [स०] चमकीला। प्रकाशवान्। समुज्वल।

**सौभासिनिक**—संज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का समुज्वल रत्न [को०]।

**सौभिक**—संज्ञा पु० [स०] जादूगर। इद्रजालिक।

**सौभिक्ष¹**—वि० [स०] सुभिक्ष या सुसमय लानेवाला।

**सौभिक्ष²**—संज्ञा पु० घोडो को होनेवाला एक प्रकार का शूल रोग जो भारी और चिकने पदार्थ खाने से होता है।

**सौभिक्ष्य**—संज्ञा पु० [स०] खाद्य पदार्थ की प्रचुरता। अन्न की अधिकता आदि के विचार मे अच्छा समय। सुकाल।

**सौभेय**—संज्ञा पुं० [स०] सौभ जनपद के निवासी जन।

**सौभेषज**—वि० [सं०] जिसमे सुभेषज या उत्तम ओषधियाँ हो। उत्तम ओषधियो से युक्त।

**सौभ्रात्र**—संज्ञा पुं० [स०] सुभ्राता का भाव या धर्म। सुभ्रातृत्व। अच्छा भाईचारा।

**सौमगल्य**—संज्ञा पुं० [स० सौमङगल्य] १ सुमगल। कल्याण। २ मगल सामग्री।

**सौमत्रिण**—संज्ञा पुं० [स० सौमन्त्रिण] अच्छे मत्रियो से युक्त। अच्छे सलाहकारो से युक्त। वह जिसके अच्छा मत्री हो।

**सौम¹**—वि० [स०] १ सोमलता सवधी। २ चद्र सवधी।

**सौम²**(पु)—वि० [स० सौम्य] दे० 'सौम्य'।

**सौम³**—संज्ञा पु० [अ०] अरवी रमजान मास का व्रत। रोजा [को०]।

**सौमक्रतव**—संज्ञा पु० [स०] एक साम का नाम।

**सौमदत्ति**—संज्ञा पु० [स०] सोमदत्त के पुत्र, जयद्रथ।

विशेष—यह दुर्योधन का वहनोई था और अभिमन्यु को मारने मे प्रमुख था। महाभारत युद्ध मे अभिमन्यु के निधन के दूसरे दिन के घमासान युद्ध मे यह अर्जुन के हाथो मारा गया।

**सौमन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ रामायण मे वर्णित एक प्रकार का अस्त्र। उ०—ता सम सवर्तास्त्र बहुरि मौसल सौमन हूँ। सत्यास्त्रहु, मायास्त्र, त्वाष्ट्र अस्त्रहु पुनि गनहू।—रघुराज (शब्द०)। २ फूल। पुष्प।

**सौमनस¹**—वि० [सं०] १ फलो का। प्रसून या पुष्प सवधी। २ मनोहर। रुचिकर। अनुकूल अच्छा लगनेवाला। प्रिय।

**सौमनस²**—संज्ञा पु० १ प्रफुल्लता। आह्लाद। आनद। खुशदिली। २ पश्चिम दिशा का हाथी। (पुराण) ३ कर्म मास या सावन की आठवी तिथि। ४ एक पर्वत का नाम। ५ अनुग्रह। कृपा। प्रसन्नता। इनायत। ६ जातीफल। जायफल। ७ सतुष्टि। सतोष (को०)। ८ अस्त्रो का एक सहार। अस्त्र निष्फल करने का एक अस्त्र। उ०—अरु विनीद्र तिमि मत्तहि प्रसमन तैसहि सारचिवाली। रुचिर वृत्ति मत पितृ सौमनस धन धानहु घृति माली। अस्त्रन को सहार सफल ये लीजै राजकुमार।—रघुराज (शब्द०)।

**सौमनसा**—संज्ञा स्त्री० [स०] १ जावित्री। जातीपत्री। २ रामायण मे वर्णित एक नदी का नाम।

सौमनसायनी--संज्ञा स्त्री० [सं०] जावित्री। जातीपत्री।

सौमनसी--संज्ञा स्त्री० [सं०] कर्म मास अर्थात् सावन मास की पाँचवी रात।

सौमनस्य¹--संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रसन्नचित्तता। प्रसन्नता। आनंद। २ श्राद्ध में पुरोहित या ब्राह्मण के हाथ में फूल देना। (भागवत)। ३ भागवतोक्त प्लक्ष द्वीप के अंतर्गत एक वर्ष का नाम जहाँ के देवता सौमनस्य माने जाते हैं। ४ विवेकशीलता। सुबोधता।

सौमनस्य²--वि० आनंद देनेवाला। प्रसन्नता देनेवाला।

सौमनस्यायनी--संज्ञा स्त्री० [सं०] मालती का फूल।

सौमना--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ फूल। पुष्प। २ कली। कलिका। ३ एक दिव्यास्त्र का नाम।

सौमपौष--संज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम जिसमें सोम और पूषा की स्तुति है।

सौमापौष्ण¹--संज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम।

सौमापौष्ण²--वि० सोम और पूषण का।

सौमायन--संज्ञा पुं० [सं०] सोम अर्थात् चंद्रमा के पुत्र बुध

सौमारौद्र--वि० [सं०] सोम और रुद्र संबंधी। सोम और रुद्र का।

सौमिक¹--वि० [सं०] १ सोम रस से किया जानेवाला (यज्ञ)। २ सोमयज्ञ संबंधी। ३ सोम अर्थात् चंद्रमा संबंधी। ४. सोमायण या चांद्रायण व्रत करनेवाला। ५ सोम रस संबंधी (कौ०)।

सौमिक²--संज्ञा पुं० [सं० सौमिकम्] १ सोम रस रखने का पात्र। २ मदारी।--आ० भा०, पृ० २६६।

सौमिकी--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का यज्ञ। दीक्षणीयेष्टि। २ सोम लता का रस निचोड़ने की क्रिया।

सौमितिक--संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य द्वारा उल्लिखित एक प्रकार का ऊनी कपड़ा (कौ०)।

सौमित्र--संज्ञा पुं० [सं०] १ सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण। उ०--सिय दिशि मुनि वहँ जात, लखि सौमित्र उदार मति। कछुक स्वस्ति अवदात निज चित मैं आनत भए।--मिश्रबंधु (शब्द०)। २ लक्ष्मण के छोटे भाई शत्रुघ्न। ३ कई सामों के नाम। ४ मित्रता। मैत्री। दोस्ती।

सौमित्रा(पु)--संज्ञा स्त्री० [सं० सुमित्रा] दे० 'सुमित्रा'। उ०--अति फूले दशरथ मनही मन कौशल्या सुख पायो। सौमित्रा कैकेयी मन आनँद यह सबहिन सुत जायो।--सूर (शब्द०)।

सौमित्रि--संज्ञा पुं० [सं०] १ सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण। उ०--एहि विधि रघुकुल कमल रवि मग लोगन्ह सुख देत। जाहिं चले देखत विपिन सिय सौमित्रि समेत।--तुलसी (शब्द०)। २ लक्ष्मण के भाई शत्रुघ्न। ३ एक आचार्य का नाम।

सौमित्रीय--वि० [सं०] सौमित्रि संबंधी।

सौमिलिक--संज्ञा पुं० [सं०] बौद्ध भिक्षुकों का एक प्रकार का दंड जिसमें रेशम का गुच्छा लगा रहता है।

सौमिल्ल--संज्ञा पुं० [सं०] कालिदास द्वारा उल्लिखित एक प्रसिद्ध नाटककार।

सौमी--संज्ञा स्त्री० [सं० सौम्यी] दे० 'सौम्यी'।

सौमुख्य--संज्ञा पुं० [सं०] १ सुमुखता। २. प्रसन्नता। खुशी।

सौमेंद्र--वि० [सं० सौमेन्द्र] सोम और इंद्र का। सोम और इंद्र संबंधी।

सौमेचक--संज्ञा पुं० [सं०] सोना। सुवर्ण।

सौमेध--संज्ञा पुं० [सं०] कई सामों के नाम।

सौमेधिक¹--वि० [सं०] १ दिव्य ज्ञान से संपन्न। जिसे दिव्य ज्ञान हो। जिसकी धारणावती बुद्धि शोभन हो। उत्कृष्ट एवं शोभन मेधायुक्त या तत्संबंधी।

सौमेधिक²--संज्ञा पुं० दिव्य ज्ञानयुक्त सिद्ध। मुनि।

सौमेरव¹--संज्ञा पुं० [सं०] १ सुवर्ण। २ इलावृत्त खंड का एक नाम।

सौमेरव²--वि० [वि० स्त्री० सौमेरवी] सुमेरु संबंधी। सुमेरु का।

सौमेरुक¹--संज्ञा पुं० [सं०] सोना। सुवर्ण।

सौमेरुक²--वि० [वि० स्त्री० सौमेरुकी] सुमेरु संबंधी। सुमेरु का।

सौमोंती†--संज्ञा स्त्री० [सं० सोमवती] सोमवती अमावस्या। उ०--सौमोंती को न्हाँनु परयो ऐ, परमी न्हाइबे जाऊँ मेरी बीर।--पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ९६६।

सौम्य¹--वि० [सं०] [वि० स्त्री० सौम्या, सौम्यी] १ सोम लता संबंधी। २ सोमदेवता संबंधी। ३ चंद्रमा संबंधी। ४ शीतल और स्निग्ध। ठंढा और रसीला। ५ गंभीर और कोमल स्वभाव का। सुशील। शांत। नम्र। ६ उत्तर की ओर का। ७ मांगलिक। शुभ। ८ प्रफुल्ल। प्रसन्न। ९ मनोहर। प्रियदर्शन। सुंदर। १० उज्वल। चमकीला।

सौम्य²--संज्ञा पुं० १ सोम यज्ञ। २ चंद्रमा के पुत्र, बुध। ३ ब्राह्मण। ४ भक्त। उपासक। ५ बायाँ हाथ। ६ गूलर। उदुंबर। ७ यज्ञ के यूप का नीचे से पंद्रह अरत्नि का स्थान। ८ लाल होने के पूर्व की रक्त की अवस्था। (आयुर्वेद)। ९ पित्त। १० मार्गशीर्ष मास। अगहन। ११ साठ संवत्सरों में से एक।

विशेष--इस संवत्सर में अनावृष्टि, चूहे, टिड्डों आदि से फसल को हानि पहुँचती, रोग फैलता और राजाओं में शत्रुता होती है।

१२ ज्योतिष में सातवें युग का नाम। १३ ब्राह्मणों के पितरों का एक वर्ग। १४ एक कृच्छ्र या कठिन व्रत। १५ वृष, कर्कट, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन राशि। १६ एक द्वीप का नाम। (पुराण)। १७ सुशीलता। सज्जनता। भलमनसाहत। १८ मृगशिरा नक्षत्र। १९ बाईं आँख। वाम नेत्र। २० हथेली का मध्य भाग। २१ दिव्यास्त्र। उ०--सत्य अस्त्र मायास्त्र महाबल घोर तेज तनुकारी। पुनि पर तेज विकर्षण लीजैं सौम्य अस्त्र भयहारी।--रघुराज (शब्द०)।

सौम्यकृच्छ्र--संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का व्रत जिसमें पाँच दिन क्रम से खली (पिण्याक), भात, मट्ठे, जल और सत्तू पर रहकर छठे दिन उपवास करना पड़ता है। २ एक व्रत जिसमें एक रात दिन खली, मट्ठा, पानी और सत्तू खाकर रहते हैं।

सौम्यगंधा--संज्ञा स्त्री० [सं० सौम्यगन्धा] सेवती। शतपत्री।

सौम्यगंधी--संज्ञा स्त्री० [सं० सौम्यगन्धी] सेवती। शतपत्री।

सौम्यगिरि संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम। (हरिवंश)।

सौम्यगोल—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तरी गोलार्ध।

सौम्यग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] शुभ ग्रह। जैसे,—चंद्र, बुध, वृहस्पति और शुक्र। फलित ज्योतिष मे ये चारो शुभ माने गए है।

सौम्यज्वर—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का ज्वर जिसमे कभी शरीर गरम हो जाता है और कभी ठढा।

विशेष—चरक द्वारा यह वात और पित्त अथवा वात और कफ के प्रकोप से उत्पन्न कहा गया है।

सौम्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सौम्य होने का भाव या धर्म। २ शीतलता। ठढक। ३ सुशीलता। शातता। साधुता। ४ सुदरता। सौदर्य। ५ परोपकारिता। उदारता। दयालुता।

सौम्यत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सौम्यता'।

सौम्यदर्शन—वि० [सं०] जो देखने मे सुदर हो। प्रियदर्शन।

सौम्यधातु—संज्ञा पुं० [सं०] बलगम। कफ। श्लेष्मा।

सौम्यनाम, सौम्यनामा—वि० [सं० सौम्यनामन्] जिसका नाम प्रिय हो। जिसका नाम सुनने मे भला लगे [को०]।

सौम्यप्रभाव—वि० [सं०] जिसका प्रभाव सौम्य हो। कोमल स्वभाव-वाला [को०]।

सौम्यमुख—वि० [सं०] जिसकी मुखाकृति सुदर या प्रियदर्शन हो।

सौम्यरूप—वि० [सं०] १ सुदर रूप एव आकृतियुक्त। २ जिसका व्यवहार सौम्य हो।

सौम्यवपु—वि० [सं० सौम्यवपुस्] जिसके शरीर की गठन या स्वरूप सुदर एव आह्लादक हो।

सौम्यवार—संज्ञा पुं० [सं०] बुधवार।

सौम्यवासर—संज्ञा पुं० [सं०] बुधवार।

सौम्यशिखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] छद शास्त्र मे मुक्तक विषम वृत्त के दो भेदो मे से एक जिसके पूर्व दल मे १६ गुरु वर्ण और उत्तर दल मे ३२ लघु वर्ण होते हैं। उ०—आठौ यामा शभू गावो। भव फदा ते मुक्ती पावो। सिख मम धरि हिय भ्रम सब तजि-कर भज नर हर हर हर हर हर हर। इसका दूसरा नाम अनगक्रीडा भी है।

सौम्यश्री—वि० [सं०] श्रीसपन्न। सौदर्यशाली।

सौम्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्गा का एक नाम। २ बडी इद्रायन। महेंद्रवारुणी लता। ३ रुद्रजटा। शकरजटा। ४ बडी माल-कगनी। महाज्योतिष्मती लता। ५ पातालगारुडी। महिष-वल्ली। ६ घुँघुची। गुजा। चिरमटी। ७ सरिवन। शाल-पर्णी। ८ ब्राह्मी। ९ कचूर। शटी। १० मल्लिका। मोतिया। ११ मोती। मुक्ता। १२ मृगशिरा नक्षत्र। १३ मृगशिरा नक्षत्र पर रहनेवाले पाँच तारो का नाम। १४ आर्या छद का एक भेद।

सौम्याकृति—वि० [सं०] सुदर आकृति या आकार प्रकारवाला [को०]।

सौम्यो—संज्ञा स्त्री० [सं०] चाँदनी। चद्रिका।

सौयवस—संज्ञा पुं० [सं०] १ कई सामो के नाम। २, तृण या घास की प्रचुरता।

सौरभ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सौरभ] दे० 'सौरभ'। उ०—मनो कमल सौरभ काज, प्रति प्रीति भ्रमर विराज।—पृ० रा०, १४।१५७।

सौर[1]—वि० [सं०] १ सूर्य सबधी। सूर्य का। २ सूर्य से उत्पन्न। ३ सूर्य के निमित्त अर्पित (को०)। ४ सूर्य की भक्ति या उपा-सना करनेवाला। सूर्योपासक (को०)। ५ मदिरा या सुरा सबधी (को०)। ६ सूर्य का अनुसारी। जैसे,—सौर मास। ७ दिव्य सुर या देवता सबधी।

सौर[2]—संज्ञा पुं० १ सूर्य के पुत्र, शनि। २ वह जो सूर्य का पूजक या उपासक हो। सूर्य का भक्त। ३ बीसवें कल्प का नाम। ४ तुबुरु नामक पौधा। ५ धनिया। ६ एक साम का नाम। ७ सौर दिवस (को०)। ८ सौर मास (को०)। ९ सूर्य के पुत्र, यम (को०)। १० सूर्य सबधी ऋग्वेद के मन्त्रो का सग्रह। सूर्य सबधी सूक्त (को०)। ११ दाहिनी आँख।

सौर(पु)[3]—संज्ञा स्त्री० [सं० शाट, हिं० सौड] चादर। ओढना। उ०—अपनी पहुँच विचारि कै करतब करिए दौर। तेतो पाँव पसा-रिए जेती लाँबी सौर।—रहीम (शब्द०)।

सौर[4]—संज्ञा स्त्री० [सं० शफरी] सौरी मछली।

विशेष—यह मझोले आकार की होती है और इसके शरीर मे एक ही काँटा होता है। दे० 'सौरी[3]' का विशेष।

सौर[5]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौरी] सूतिकागृह। सौरी। उ०—सौर से एक तीखी चीख सुनकर एक चेतना लौट आई।—वो दुनियाँ, पृ० २१।

सौरऋण—संज्ञा पुं० [सं०] वह ऋण जो मद्य पीने के लिये लिया जाय।

सौरग्रीव—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन देश का नाम। (बृहत्सहिता)।

सौरज[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ तुबुरु। तुबरू। २ धनिया। धान्यक।

सौरज(पु)†[2]—संज्ञा पुं० [सं० शौर्य] दे० 'शौर्य'। उ०—सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ ध्वजा पताका।—मानस, ६।७९।

सौरठवाल—संज्ञा पुं० [सं० सौराष्ट्र, हिं० सोरठ + वाला] वैश्यो की एक जाति।

सौरण—वि० [सं०] सूरन सबधी।

सौरत[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ रतिक्रीडा। केलि। सभोग। २ वीर्य। रेतस् (को०)। ३ धीमी हवा। मद वायु। मद समीरण (को०)।

सौरत[2]—वि० सुरत सबधी। रतिक्रीडा सबधी।

सौरतीर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] एक तीर्थ [को०]।

सौरत्य—संज्ञा पुं० [सं०] रतिसुख। सभोग।

सौरथ—संज्ञा पुं० [सं०] वीर। योद्धा [को०]।

सौर दिन, सौर दिवस—संज्ञा पुं० [सं०] एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय। ६० दड का समय।

सौर द्रोणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटी तलैया।

सौरध्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का तबूरा या सितार।

सौरनक्त—संज्ञा पुं० [सं०] एक व्रत जो रविवार को हस्त नक्षत्र होने पर सूर्य के प्रीत्यर्थ किया जाता है। (नरसिंह पुराण)।

**सौरपत**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्योपासक । सूर्यपूजक ।

**सौरपरिकर**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य के चारो ओर भ्रमण करनेवाले ग्रहों का मंडल । सौर जगत् ।

**सौरर्षि**—संज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि ।

**सौरभ[1]**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुरभि का भाव या धर्म । सुगंध । खुशबू । महक । उ०—विविध समीर सुमन सौरभ मिलि मत्त मधुप गुंजार ।—सूर (शब्द०) ।

यौ०—सौरभवाह = पवन । उ०—नहीं चल सकते गिरिवर राह । न रुक सकता है सौरभवाह ।—पल्लव० पृ० १२ । सौरभश्लथ = सुगंध की अधिकता से थकित । उ०—सौरभश्लथ हो जाते तन मन, बिछते झर झर मृदु सुमन शयन ।—युगांत, पृ० ३५ ।

२ केसर । कुंकुम । जाफरान । ३ तुंबुरु नामक गंधद्रव्य । तुंबरु । ४ धनिया । धान्यक । ५ बोल । हीराबोल । बीजाबोल । ६ एक प्रकार का मसाला । ७ आम । आम्र । उ०—सौरभ पल्लव मदन बिलोका । भयउ कोप कंपेउ त्रयलोका ।—तुलसी (शब्द०) । ८ एक साम का नाम । ९ मदगंध (को०) ।

**सौरभ[2]**— वि० १ सुगंधित । सुगंधयुक्त । खुशबूदार । २ सुरभि (गाय) से उत्पन्न ।

**सौरभक**—संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त का नाम जिसके पहले चरण में सगण, जगण, सगण और लघु, दूसरे में नगण, सगण, जगण और गुरु, तीसरे में रगण, नगण, भगण और गुरु तथा चौथे में सगण, जगण, सगण, जगण और गुरु होता है । उ०—सब त्यागिये असत काम । शरण गहिए सदा हरी । दु ख भी जनित जायँ टरी । भजिए अहो निशि हरी हरी हरी ।

**सौरभमय**—वि० [सं०] सौरभयुक्त । सुगंधयुक्त । सुगंधित ।

**सौरभित**—वि० [सं० सौरभ + इत] सौरभयुक्त । महकनेवाला । सुगंधित । खुशबूदार ।

**सौरभी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ धेनु । गाय । २ सुरभि गाय की पुत्री (को०) ।

**सौरभुवन**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्यलोक ।

**सौरभेय[1]**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुरभि का पुत्र, साँड । वृषभ । २ पशुओं का झुंड (को०) ।

**सौरभेय[2]**—वि० १ सुरभि संबंधी । सुरभि का । २ महक । सुगंध । खुशबू (को०) ।

**सौरभेयक**—संज्ञा पुं० [सं०] साँड । वृष ।

**सौरभेयी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गाय । गो । २ महाभारत के अनुसार एक अप्सरा का नाम । ३ सुरभि गाय की पुत्री (को०) ।

**सौरभ्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुगंध । खुशबू । २ मनोज्ञता । सुंदरता । खूबसूरती । ३ गुण गौरव । कीर्ति । प्रसिद्धि । नेकनामी । ४ सदाचरण । सद्व्यवहार । ५ कुबेर का एक नाम ।

**सौरभ्यद**—संज्ञा पुं० [सं०] सुगंधित द्रव्य । एक गंधद्रव्य (को०) ।

**सौरमास**—संज्ञा पुं० [सं०] वह महीना जो सूर्य के किसी एक राशि में रहने तक माना जाता है । उतना काल जितने तक सूर्य किसी राशि में रहे । एक संक्राति से दूसरी संक्राति तक का समय ।

विशेष—सूर्य एक वर्ष में क्रम से मेष, वृष आदि बारह राशियों का भोग करता है । एक राशि में वह प्राय ३० दिन तक रहता है । प्राय इतने दिन का ही एक सौरमास होता है । दे० 'दिन' शब्द का विशेष ।

**सौरवर्ष**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सौर संवत्सर' ।

**सौरसंवत्सर**—संज्ञा पुं० [सं०] उतना काल जितना सूर्य को मेष, वृष आदि बारह राशियों पर घूम आने में लगता है । एक मेष संक्राति से दूसरी मेष संक्राति तक का समय ।

**सौर संहिता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्योतिष विद्या का सिद्धांतग्रंथ (को०) ।

**सौरस[1]**—संज्ञा पुं० [सं०] १ वस्तु, पदार्थ आदि जो सुरसा नामक पौधे से निकला या बना हुआ हो । २ सुरसा का अपत्य या पुत्र । ३ जूँ । ४ नमकीन रसा या शोरवा ।

**सौरस[2]**—वि० सुरसा संबंधी । सुरसा नामक पौधे का (को०) ।

**सौरसा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] जंगली बेर । पहाड़ी बेर (को०) ।

**सौर सिद्धांत**—संज्ञा पुं० [सं० सौर सिद्धान्त] ज्योतिष विद्या का एक सिद्धांतग्रंथ ।

**सौरसूक्त**—संज्ञा पुं० [सं०] ऋग्वेद के एक सूक्त का नाम जिसमें सूर्य की स्तुति है । सूर्यसूक्त ।

**सौरसेन**—संज्ञा पुं० [सं० शूरसेन] दे० 'शूरसेन' और 'शौरसेन' ।

**सौरसेनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक भाषा । विशेष दे० 'शौरसेनी' ।

**सौरसेय**—संज्ञा पुं० [सं०] स्कंद का एक नाम । कार्तिकेय ।

**सौरसैंधव[1]**—वि० [सं० सौरसैन्धव] १ गंगा का । गंगा संबंधी । २. गंगा से उत्पन्न । (जैसे, भीष्म) ।

**सौरसैंधव[2]**—संज्ञा पुं० सूर्य का घोड़ा ।

**सौरस्य**—संज्ञा पुं० [सं०] सुरसता । रसीला होने का भाव ।

**सौराज्य**—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छा राज्य । सुराज्य । सुशासन ।

**सौराटी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रागिनी । (संगीत) ।

**सौराव**—संज्ञा पुं० [सं०] नमकीन रसा या शोरवा ।

**सौराष्ट्र[1]**—संज्ञा पुं० [सं०] १ गुजरात काठियावाड़ का प्राचीन नाम । सूरत (सुराष्ट्र) के आसपास का प्रदेश । सोरठ देश । २ उक्त प्रदेश का निवासी । ३ कुंदुरु नामक गंधद्रव्य । शल्लकी निर्यास । ४. काँसा । कांस्य । ५ एक वर्णवृत्त का नाम ।

**सौराष्ट्र[2]**—वि० सोरठ प्रदेश का ।

**सौराष्ट्रक[1]**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सौराष्ट्र या सोरठ प्रदेश का रहनेवाला । २ पंचलौह । ३ एक प्रकार का विष ।

**सौराष्ट्रक[2]**—वि० १ सौराष्ट्र या सोरठ प्रदेश संबंधी । २ सोरठ देश में उत्पन्न ।

**सौराष्ट्र मृत्तिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] गोपीचंदन ।

**सौराष्ट्रा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] गोपीचंदन ।

**सौराष्ट्रिक[1]**—वि० [सं०] सौराष्ट्र या सोरठ देश संबंधी । गुजरात काठियावाड़ संबंधी ।

**सौराष्ट्रिक[2]**—संज्ञा पुं० १ सोरठ देश का निवासी । २ काँसा नाम की धातु । ३ एक प्रकार का विषैला कंद ।

विशेष—इसके पत्ते पलाश के पत्तो से मिलते जुलते होते हैं। यह कद काले अगर के समान काला और कछुए की तरह चिपटा और फैला हुआ होता है।

**सौराष्ट्री**—सज्ञा स्त्री० [स०] गोपी चदन।

**सौराष्ट्रिय**—वि० [स०] सोरठ प्रदेश का। गुजरात काठियावाड का।

**सौरास्त्र**—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का दिव्यास्त्र। उ०—सोमास्त्रहु सौरास्त्र सु निज निज रूपनि धारै। रामहिं सों कर जोरि सबै बोले इक वारै।—पद्माकर (शब्द०)।

**सौरिध्र**—सज्ञा पु० [स० सौरिन्ध्र] [स्त्री० सौरिध्री] १ बृहत्सहिता के अनुसार ईशान कोण मे स्थित एक प्राचीन जनपद। २ उक्त जनपद का निवासी।

**सौरि[१]**—सज्ञा पु० [स०] १ (सूर्य के पुत्र) शनि। २ विजैसार। असन वृक्ष। ३ हुलहुल का पौधा। आदित्यभक्ता। ४ एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि। ५ बृहत्सहिता के अनुसार दक्षिण का एक प्राचीन जनपद। ६ यम का नाम (को०)। ७ कर्ण का एक नाम (को०)। ८ सुग्रीव का एक नाम (को०)।

**सौरि[२]**—सज्ञा पुं० [स० शौरि] कृष्ण। दे० 'शौरि'। उ०—अत पुर मे तुरत ही भयो सोर चहुँ ओर। बैठायो पर्यंक मे रकहि सौरि किशोर।—रघुराज (शब्द०)।

**सौरि[३]**—सज्ञा स्त्री० [हि० साँवरि] श्यामा। रात्रि। रात। (लाक्ष०)। उ०—भूख न मानै लावन सेती। नीद न मानै सौरि सपेती।—चित्रा०, पृ० २७।

**सौरि[४]**—सज्ञा स्त्री० [हि० सौर] लिहाफ। रजाई। दे० 'सौर[३]'। उ०—भैना कू सौरि भरावैगी, लाला कू टोपा भरावैगी।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ६२५।

**सौरिक[१]**—सज्ञा पुं० [स०] १ शनैश्चर ग्रह। २ स्वर्ग। ३ शराब वेचनेवाला। कलाल (को०)।

**सौरिक[२]**—वि० १ स्वर्गीय। २ सुरा या मद्य सबधी (ऋण)। शराब के कारण होनेवाला (कर्ज)। ३ सुरा या मदिरा पर लगनेवाला कर (को०)।

**सौरिकीर्ण**—सज्ञा पुं० [स०] बृहत्सहिता के अनुसार दक्षिण का एक प्राचीन जनपद।

**सौरिरत्न**—सज्ञा पुं० [स०] नीलम नामक मणि।

**सौरी[१]**—सज्ञा स्त्री० [स० सूतिका] वह कोठरी या कमरा जिसमे स्त्री बच्चा जने। सूतिकागार। जापा। जच्चाखाना।

**सौरी[२]**—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सूर्य की पत्नी। २ सूर्य की पुत्री और कुरु की माता तपती। तापती। वैवस्वती। ३ गाय। गौ। ४ हुलहुल पौधा। आदित्यभक्ता।

**सौरी[३]**—सज्ञा स्त्री० [स० शफरी] एक प्रकार की मछली। शप्कुली मत्स्य। उ०—मारत मछरी सहरी अरु सौरी गगरिन भरि।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ४८।

विशेष—भावप्रकाश के अनुसार इसका मास मधुर, कसैला और हृद्य है।

**सौरीय[१]**—वि० [स०] सूर्य सबधी। सूर्य का।

**सौरीय[२]**—सज्ञा पु० १ एक वृक्ष जिसमे से विषैला गोद निकलता है। २ इस वृक्ष से निकला हुआ विष।

**सौरेय, सौरेयक**—सज्ञा पुं० [स०] सफेद कटसरैया। श्वेत झिंटी।

**सौर्य[१]**—वि० [स०] सूर्य सबधी। सूर्य का।

**सौर्य[२]**—सज्ञा पुं० १ सूर्य का पुत्र, शनि। २ एक नगर का नाम। ३ एक सवत्सर का नाम। ४ हिमालय के दो शृगो का नाम।

**सौर्यपृष्ठ**—सज्ञा पुं० [स०] एक साम का नाम।

**सौर्यप्रभ**—वि० [स०] सूर्य की प्रभा या दीप्ति सवधी (को०)।

**सौर्यभगवत्**—सज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन वैयाकरण का नाम जिनका उल्लेख पतजलि के महाभाष्य मे है।

**सौर्ययाम**—सज्ञा पु० [स०] सूर्य और यम सबधी। सूर्य और यम का।

**सौर्यी**—सज्ञा पु० [स० सौर्यिन्] हिमालय का एक नाम।

**सौर्योदयिक**—वि० [स०] सूर्योदय सवधी।

**सौर्वल**—सज्ञा पु०, वि० [सं०] दे० 'सौवर्चल'।

**सौलकी**—सज्ञा पु० [हिं०] दे० 'सोलकी'।

**सौल, सौला**—सज्ञा पुं० [हिं० साहुल] १ राजगीरो का शाकुल। साहुल। २ हल के जूए के ऊपर की गाँठ।

**सौलक्षण्य**—सज्ञा पुं० [स०] शुभ या अच्छे लक्षणो का होना। सुलक्षणता।

**सौलभ्य**—सज्ञा पुं० [स०] सुलभता। प्राप्ति की सुविधा।

**सौल्विक**—सज्ञा पु० [सं०] ठठेरा। ताम्रकुट्टक।

**सौव[१]**—सज्ञा पुं० [स०] अनुशासन। आदेश।

**सौव[२]**—वि० १ अपने सबध का। अपना। निज का। २ स्वर्गीय।

**सौवग्रामिक**—वि० [सं०] [स्त्री० सौवग्रामिकी] अपने निजी गाँव से सवध रखनेवाला (को०)।

**सौवर**—वि० [स०] स्वर सबधी। किसी ध्वनि या सगीत के स्वर से सबध रखनेवाला (को०)।

**सौवर्चल[१]**—सज्ञा पुं० [स०] १ सोचर नमक। २ सज्जी मिट्टी। सर्जिका क्षार।

**सौवर्चल[२]**—वि० सुवर्चल नामक देश सबधी।

**सौवर्चला**—सज्ञा स्त्री० [स०] रुद्र की पत्नी का नाम।

**सौवर्ण[१]**—सज्ञा पुं० [स०] १ एक कर्ष भर सोना। २ सोने की बाली। ३ सोना। सुवर्ण।

**सौवर्ण[२]**—वि० [वि० स्त्री० सौवर्णी, सौवर्णी] १ सोने क। सोने का वना। २ तौल मे कर्ष भर। १६ माशे भर।

**सौवर्णकड्यका**—सज्ञा स्त्री० [सं०] कौटिल्य के अनुसार एक प्रकार के सिल्क का परिधान।

**सौवर्णपर्ण**—वि० [सं०] जिसके पख स्वर्णिम हो (को०)।

**सौवर्णभेदिनी**—सज्ञा स्त्री० [सं०] फूलफेन। फूलप्रियगु। प्रियगु।

**सौवर्णहर्म्य**—सज्ञा पुं० [स०] रजत का हर्म्य या सभामडप (को०)।

**सौवर्णिक[१]**—सज्ञा पु० [सं०] सुनार। स्वर्णकार।

**सौवर्णिक[2]**—वि० एक सुवर्ण भर। १ एक कर्ष या १६ माशे भर। २ सोने का बना हुआ। स्वर्णनिर्मित।

**सौवर्णिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का विषैला कीडा। (सुश्रुत)।

**सौवर्ण्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोना होने का भाव। २ वर्णों या अक्षरो का शुद्ध शुद्ध उच्चारण। ३ वह सुदर रग जिसमे ताजापन हो [को०]।

**सौवश्व्य**—संज्ञा पुं० [सं०] घुडदौड।

**सौवस्तिक[1]**—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुरोहित। कुलपुरोहित। २ दे० 'स्वस्त्ययन'।

**सौवस्तिक[2]**—वि० स्वस्ति कहनेवाला। मगल चाहनेवाला। मगलाकाक्षी।

**सौवाध्यायिक**—वि० [सं०] जो स्वाध्याय करता हो। वेदपाठ करनेवाला। स्वाध्यायी।

**सौवास**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की सुगधित तुलसी।

**सौवासिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुवासिनी'।

**सौवास्तव**—वि० [सं०] १ सुवास्तुयुक्त। भवननिर्माण की कुशलता से युक्त। अच्छी कारीगरी का (मकान)। २ अच्छे स्थान पर बना हुआ (मकान)।

**सौविद**—संज्ञा पुं० [सं०] अत पुर या रनिवास का रक्षक। कचुकी। सुविद।

**सौविदल्ल**—संज्ञा पुं० [सं०] १ राजा का वह प्रधान कर्मचारी जिसके पास राजा की मुद्रा आदि रहती हो। २. कचुकी। अत पुर का रक्षक (को०)।

**सौविदल्लक**—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सौविदल्ल'।

**सौविष्टकृत्**—वि० [सं०] स्विष्टकृत् नामक अग्नि सबधी। (गृह्यसूत्र)।

**सौवीर**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सिंधु नद के आस पास के एक प्राचीन प्रदेश का नाम। उ०—सिंधु और सोवीरहु सोरठ जे भूपत रनधीरा। न्योति पठावहु सकल महीपन, बाकी रहै न वीरा।—रघुराज (शब्द०)। २ उक्त प्रदेश का निवासी या राजा। ३ बेर का पेड या फल। बदर। ४ जौ को सडाकर बनाई हुई एक प्रकार की काँजी।

विशेष—वैद्यक मे यह अग्निदीपक, विरेचक तथा कफ, ग्रहणी, अर्श, उदावर्त, अस्थिर शूल आदि दोषो मे उपकारी माना जाता है।

५ अजन। सुरमा (को०)।

**सौवीरक**—संज्ञा पुं० [सं०] १ दे० 'सौवीर'। २ जयद्रथ का एक नाम।

**सौवीरपाण**—संज्ञा पुं० [सं०] वाह्लीक देशवासी। वाह्लीक।

विशेष—उक्त देशवासी जौ या गेहूँ की काँजी बहुत पिया करते थे, इसी से उनका यह नाम पडा है।

**सौवीरभक्त**—वि० [सं०] सौवीरो द्वारा बसा हुआ। जहाँ सौवीर लोग रहते हो।

**सौवीरसार**—संज्ञा पुं० [सं०] सुरमा। स्रोतोजन।

**सौवीराजन**—संज्ञा पुं० [सं० सौवीराञ्जन] सुरमा।

**सौवीरा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सौवीरी'।

**सौवीराम्ल**—संज्ञा पुं० [सं०] जो या गेहूँ की काँजी।

**सौवीरिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बेर का पेड या फल।

**सौवीरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सगीत मे एक प्रकार की मूर्छना जिसका स्वरग्राम इस प्रकार है—म, प, ध, नि, स, रे, ग, नि, स, रे, ग, म, प, ध, नि, म, रे, ग, म। २ सोवीर की राजकुमारी।

**सौवीर्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सौवीर का राजा। २ महान् वीरता। बहुत अधिक पराक्रम।

**सौवीर्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सौवीर की राजपुत्री।

**सौव्रत्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुव्रत का भाव। एकनिष्ठा। भक्ति। २ आज्ञापालन।

**सौशब्द, सौशब्द्य**—संज्ञा पुं० [सं०] संज्ञा और क्रिया के रूपो की व्याकरणसमत रचना [को०]।

**सौशल्य**—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारतवर्णित एक प्राचीन जनपद का नाम। २ उक्त जनपद का निवासी।

**सौशाम्य**—संज्ञा पुं० [सं०] सुशमता। सुशाति।

**सौशील्य**—संज्ञा पुं० [सं०] सुशीलता। सच्चरित्रता। साधुता।

**सौश्रवस[1]**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुश्रवा के अपत्य, उपगु। २ सुयश। सुकीर्ति। ३ दौडने की प्रतिस्पर्धा (को०)। ४ दो सामो के नाम।

**सौश्रवस[2]**—वि० जिसका अच्छा नाम या यश हो। कीर्तिमान्। यशस्वी।

**सौश्रिय**—संज्ञा पुं० [सं०] ऐश्वर्य। वैभव।

**सौश्रुत[1]**—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सुश्रुत के गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो। सुश्रुत का गोत्रज।

**सौश्रुत[2]**—वि० १ सुश्रुत का रचा हुआ। २ सुश्रुत सबधी।

**सौषाम**—संज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम।

**सौषिर**—संज्ञा पुं० [सं०] १ मसूडा का एक रोग।

विशेष—इसमे कफ और पित्त के विकार से मसूडे सूज जाते है, उनमे दर्द होता है और लार गिरती है।

२ वह यत्र जो वायु के जोर से बजता हो। फूककर या हवा भरकर बजाया जानेवाला बाजा। जैसे,—वसी, तुरही, शहनाई आदि।

**सौषिर्य**—संज्ञा पुं० [सं०] पोलापन।

**सौषुम्ण**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य की किरणो मे से एक।

**सौष्ठव**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुडौलपन। उपयुक्तता। २ सुदरता। सौदर्य। ३ तेजी। फुरती। क्षिप्रता। लाघव। ४ नृत्य मे शरीर की एक मुद्रा। ५ नाटक का एक अग। ६ चातुर्य। परम कौशल (को०)। ७ बाहुल्य। अधिकता (को०)। ८ लचक। हल्कापन (को०)।

**सौसन**—संज्ञा पुं० [फा०] दे० 'सोसन'।

**सौसनी**—संज्ञा पुं० [फा०] दे० 'सोसनी' उ०—पहिरौ री बेहूनरी सुरँग चूनरी ल्याय। पहिरे सारी सौसनी कारी देहु दिखाय।—शृंगारसतसई (शब्द०)।

**सौसुक**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन स्थान का नाम जिसका उल्लेख महाभाष्य मे है।

सौसुराद—संज्ञा पुं० [सं०] विष्ठा में होनेवाला एक प्रकार का कीडा।

सौस्थित्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ अच्छी स्थिति। २ ग्रहों का शुभ स्थान में होना।

विशेष—बृहत्संहिता में लिखा है कि ग्रहों का सौस्थित्य, अर्थात् शुभ स्थान में स्थिति, देखकर राजा यदि आक्रमण करे तो वह अल्प पौरुषवाला होने पर भी पराया धन पाता है।

सौस्थ्य—संज्ञा पुं० [सं०] कुशल। क्षेम। कल्याण।

सौस्नातिक—वि० [सं०] यह प्रश्न कि यज्ञ के उपरांत स्नान सफल हुआ या नहीं।

सौस्वर्य—संज्ञा पुं० [सं०] सुस्वर या उत्तम स्वर होने का भाव। सुस्वरता। सुरीलापन।

सौहँ[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शपथ, प्रा० सवह या सं० सौगन्ध] शपथ। कसम। उ०—हम रीझे मनभावते लखि तव सुंदर गात। दीठ रूप वर लाल सिर नैना सौहैं खात।—रसनिधि (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना।—खाना।

सौहँ[2]—क्रि० वि० [सं० सम्मुख, प्रा० सम्मुह] सामने। आगे। उ०—रंग भरे अंग अरसौहैं सरसौहैं सोहैं सौहैं करि भौंहैं रस भावनि भरत हैं।—देव (शब्द०)

सौहन—संज्ञा पुं० [देश०] पैसे का चौथाई भाग। छदाम। दुकडा। (सुनार)।

सौहनी(पु)—वि० [हिं० सुहावनी] सोहनी। शोभन। अच्छी। सुंदर। उ०—अति आछी तनक कनक की दौंहनी सौहनी गढाइ दै री मैया।—नंद ग्रं०, पृ० ३४०।

सौहर—संज्ञा पुं० [अ० शौहर] दे० 'शौहर'।

सौहरा†—संज्ञा पुं० [हिं ससुर] ससुर। (पश्चिम)।

सौहविष—संज्ञा पुं० [सं०] कई सामों के नाम।

सौहाँग—संज्ञा पुं० [देश०] दो भर का बाट या बटखरा। (सुनार)।

सौहार्द—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुहृद का भाव। मित्रता। मैत्री। सख्य। दोस्ती। २ सुहृद या मित्र का पुत्र। ३ मन की ऋजुता। हृदय की सरलता (को०)। ४ सद्‌भाव (को०)।

सौहार्दनिधि—संज्ञा पुं० [सं०] राम का एक नाम।

सौहार्दव्यंजक—वि० [सं० सौहार्दव्यञ्जक] सौहार्द को व्यक्त करनेवाला। मैत्री प्रकट करनेवाला [को०]।

सौहार्द्य—संज्ञा पुं० [सं०] सौहार्द। मित्रता। बंधुत्व। दोस्ती।

सौहित्य—संज्ञा पुं० [सं०] तृप्ति। संतोष। २ मनोरमता। मनोज्ञता। सुंदरता। ३ पूर्णता। ४ कृपालुता। सद्‌भावना (को०)।

सौही—संज्ञा स्त्री० [फा० सोहन] १ एक प्रकार की रेती। २. एक प्रकार का हथियार।

सौहीं—क्रि० वि० [हिं० सौहैं] सामने। आगे। उ०—कहि आवति हे जु कहावत हौ तुम वाही तौं ताकि सकै हम सौहीं। तेहि पैंडे कहा चलिये कबहूँ जिहि काटो लगै पग पीर दुखौहीं।—केशव (शब्द०)।

सौहृद[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ मित्रता। स्नेहसबंध। सख्य। दोस्ती। २ सुहृद्। मित्र। दोस्त। ३ एक प्राचीन जनपद। (महाभारत)। ४ रुचि।

सौहृद[2]—वि० सुहृद या मित्र संबंधी।

सौहृदय, सौहृदय्य—संज्ञा पुं० [सं०] सौहार्द। मित्रता। दोस्ती।

सौहृद्य—संज्ञा पुं० [सं०] सौहार्द। मित्रता। बंधुता। दोस्ती।

सौहोत्र—संज्ञा पुं० [सं०] सुहोत्र के अपत्य अजमीड और पुरुमीड नामक वैदिक ऋषि।

सौह्म—संज्ञा पुं० [सं०] सुह्म देश का राजा।

— ० —